HIKAYATEN AUR NASIHATEN (HINDI)

56 इस्लाही बयानात का मदनी गुलदस्ता

तर्जमा बनाम

हिकायतें और नसीहतें

मुसन्निफ़ :- मुबल्लिग़े इस्लाम अशैख़ शोऐब हरीफ़ीश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه

(मुतवफ़्फ़ा सि. 810 हि.)

मुतर्जिमीन : मदनी उ-लमा (शो'बए तराजिमे कुतुब)

MAKTABATUL MADINA

421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID

DELHI - 110006, PH : 011-23284560

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

किताब पढ़ने की दुआ़

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکربیروت)

तालिबे ग़मे
मदीना
बक़ीअ़ व
मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

(अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी इस इल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عَساکِر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکربیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये।

मजलिसे तराजिम (हिन्दी–गुजराती)

दा'वते इस्लामी

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ तबलीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** ने येह किताब **"ह़िकायतें और नसीह़तें"** उर्दू ज़बान में पेश की है। मजलिसे तराजिम, बरोडा **(हिन्दी–गुजराती)** ने इस किताब को हिन्द (INDIA) की **राष्ट्रिय भाषा "हिन्दी"** में रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** या'नी ज़बान (या'नी बोली) तो उर्दू ही है जब कि लीपि (या'नी लिखाई) हिन्दी रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब का **हिन्दी रस्मुल ख़त़** करते हुए दर्जे ज़ैल मुआ़मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :–

﴾1﴿ कमो बेश दस(10) मराह़िल सर अन्जाम दिये गए हैं, जो येह हैं :–

(1) कम्पोज़िंग (2) सेटिंग (3) कम्पयूटर तक़ाबुल (4) तक़ाबुल बिल किताब (5) सिंगल रीडिंग (6) कम्पयूटर करेक्शन (7) करेक्शन चेकिंग (8) फ़ाइनल रीडिंग (9) फ़ाइनल करेक्शन (10) फ़ाइनल करेक्शन चेकिंग।

﴾2﴿ क़रीबुस्सौत़ (या'नी मिलती झुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इमतियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस हुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का खुसूसी एहतिमाम किया गया है जिस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **तराजिम चार्ट** का बग़ौर मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

﴾3﴿ हिन्दी पढ़ने वालों को सह़ीह़ उर्दू तलफ़्फ़ुज़ भी हिन्दी पढ़ने ही में ह़ासिल हो जाएं इस लिये आसान मगर **अस्ल उर्दू लुग़त के तलफ़्फ़ुज़** के ऐन मुताबिक़ ही **हिन्दी–जोडणी** रखी गई है और बत़ौरे ज़रूरत ब्रेकेट में उर्दू लफ़्ज़ हिज्जे के साथ ऐ'राब लगा कर रखा गया है। नीज़ उर्दू के मफ़्तूह़ (ज़बर वाले) ह़र्फ़ को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के अक्षर (ह़र्फ़) के पहले डेश (–) और साकिन (जज़्म वाले) ह़र्फ़ को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के अक्षर के नीचे खोड़ा (्) इस्ति'माल किया गया है। मषलन **उ़–लमा** (عُلَمَاء) में "–ल" मफ़्तूह़ और **रह़्म** (رَحْم) में "ह़्" साकिन है।

﴾4﴿ उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां कहीं ऐन साकिन (عْ) आता है उस की जगह पर हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। जैसे : **दा'वत** (دَعْوَت)

﴾5﴿ अ़रबी–फ़ारसी मतन के साथ साथ अ़रबी किताबों के ह़वालाजात भी अ़रबी ही रखे गए हैं जब कि "عَزَّوَجَلَّ", "صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم" और "رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ" वग़ैरा को भी अ़रबी ही में रखा गया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी–बेशी** या **ग़–लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, e-mail या sms) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर षवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी तराजिम चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	ष = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ

अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = عْ
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
् = ْ	ु = ُ	ि = ِ	– = َ	ी = ئِ	ू = وُ	ा = آ

–: राबित़ा :–
मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना
(दा'वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,
नागर वाड़ा, मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द
Mo. + 91 9327776311
E-mail:translation.baroda@dawateislami.net

56 इस्लाही़ बयानात का मदनी गुलदस्ता

اَلرَّوۡضُ الۡفَائِق فِی الۡمَوَاعِظِ وَالرَّقَائِق

तर्जमा बनाम

हि़कायतें और नसीह़तें

-: मुसन्निफ़ :-

मुबल्लिगे़ इस्लाम अश्शैख़ शोऐब ह़रीफ़ीश رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه

(अल मुतवफ़्फ़ा 810 हि.)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (शोबए तराजुमे कुतुब)

-: नाशिर :-

मक्तबतुल मदीना

421, उर्दू मार्केट, मटया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद,

देहली–110006 फ़ोन : 011-23284560

الصلوة والسلام علیک یا رسول اللہ وعلی الک واصحابک یا حبیب اللہ

नाम किताब : اَلرَّوْضُ الْفَائِق فِی الْمَوَاعِظِ وَالرَّقَائِق
तर्जमा बनाम : हिकायतें और नसीहतें
मुअल्लिफ़ : मुबल्लिग़े इस्लाम अश्शैख़ शोऐब हरीफ़ीश رَحْمَةُ اللهِ تعالٰی عَلَیْه
मुतर्जिमीन : मदनी उ़-लमा शो'बए तराजुमे कुतुब
(अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)
सिने तबाअ़त : 1, रबीउ़ल आख़िर, सि.1435 हि.
नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली-6, फ़ोन : 011-23284560
क़ीमत : - - -

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 27 शव्वालुल मुकर्रम सि. 1429 हि. हवाला : 153

الحمد للّٰہ رب العٰلمین و الصلوٰۃ و السلام علٰی سید المرسلین وعلٰی الہٖ واصحابہٖ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि अ़रबी किताब
"اَلرَّوْضُ الْفَائِق فِی الْمَوَاعِظِ وَالرَّقَائِق" के उर्दू तर्जमे
"हिकायतें और नसीहतें"

(मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़्रे षानी की कोशिश की गई है । मजलिस ने इसे मत़ालिब व मफ़ाहीम के ए'तिबार से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं ।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
(दा'वते इस्लामी)
27-10-2008

E - mail : ilmia@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं ।

याद दाश्त

(दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।)

उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

''वा'ज़ व नसीहत सुन्नते मुस्तफ़ा है'' के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की 19 निय्यतें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ

या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (معجم کبیر طبرانی ج ٦ ص ١٨٥ حدیث ٥٩٤٢ بیروت)

दो मदनी फूल : (1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का षवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना षवाब भी ज़ियादा।

﴿1﴾ हर बार ह़म्द व ﴿2﴾ सलात और ﴿3﴾ तअ़व्वुज़ व ﴿4﴾ तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़्ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴿5﴾ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। ﴿6﴾ ह़त्तल वस्अ़ इस का बावुज़ू और ﴿7﴾ क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा ﴿8﴾ क़ुरआनी आयात और ﴿9﴾ अह़ादीषे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴿19﴾ जहां जहां ''अल्लाह'' का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴿11﴾ जहां जहां ''सरकार'' का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा और ﴿12﴾ जहां जहां किसी सह़ाबी का नामे मुबारक आएगा वहां رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ पढ़ूंगा ﴿13﴾ इस किताब का मुत़ालआ़ शुरूअ़ करने से पहले इस के मोअल्लिफ़ को ईसाले षवाब करूंगा **﴿14﴾ अपनी इस्लाह़ के लिये इस किताब के ज़रीए़ इल्म ह़ासिल करूंगा** ﴿15﴾ (अपने ज़ाती नुस्ख़े के) ''याद दाश्त'' वाले सफ़्ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा ﴿16﴾ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा ﴿17,18﴾ इस ह़दीषे पाक ''تَھَادَوْا تَحَابُّوْا'' एक दुसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। ﴿مؤطا امام مالک ج٢ ص ٤٠٧ حدیث ١٧٣١﴾ पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा ﴿19﴾ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्तलअ़ करूंगा।

(नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़्लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

الحمد للّٰه علٰى اِحْسَانِهٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صلی اللّٰه تعالٰی علیه وسلم

तबलीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और **इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त** को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये **मुतअ़द्दद मजालिस** का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰه تَعَالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
﴾2﴿ शो'बए तराजुमे कुतुब
﴾3﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾4﴿ शो'बए इस्लाह़ी कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
﴾6﴿ शो'बए तख़रीज

"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शमए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम **इस्लामी भाई** और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं ।

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ **"दा'वते इस्लामी"** की तमाम मजालिस ब शुमूल **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰی علیه واٰله وسلّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

पहले इसे पढ़ लीजिये !

हज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی इरशाद फ़रमाते हैं : ''وَأَمَّا الْمَوْعِظَةُ فَهِيَ الْكَلَامُ الَّذِي يُفِيْدُ الزَّجْرَ عَمَّا لَا يَنْبَغِيْ فِيْ طَرِيْقِ الدِّيْن'' या'नी नसीहत वोह कलाम है जो राहे दीन में ना रवा और ना मुनासिब बातों से रोके।'' (تفسیر کبیر،سورۃ ال عمران،تحت الایۃ ۱۳۸،ج۳ص ۳۷۰)

वा'ज़ व नसीहत की अहम्मिय्यत व अफ़ादिय्यत एक मुसल्लमा ह़क़ीक़त है। हर दौर में इस की ज़रूरत पेश आई। इस के फ़वाइद व षमरात बे शुमार व बे हिसाब हैं। खुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद का एक नाम मौइज़त या'नी नसीहत रखा है। चुनान्चे, इरशादे बारी तआला है :

(1) هٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ (پ ٤،ال عمران:١٣٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *येह लोगों को बताना और राह दिखाना और परहेज़गारों को नसीहत है।*

(2) يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ٥ (پ ١١،یونس:٥٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की त़रफ़ से नसीहत आई और दिलों की सिह़्हत और हिदायत और रह़मत ईमान वालों के लिये।*

मुफ़स्सिरे शहीर, सदरुल अफ़ाज़िल, फ़ख़रुल अमाषिल हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی इस आयते मुबारका के तह़्त ''ख़ज़ाइनुल इरफ़ान'' में इरशाद फ़रमाते हैं : ''इस आयत में कुरआने करीम के आने और इस के मौइज़त (مَوعِظت या'नी नसीहत) व शिफ़ा व हिदायत व रह़मत होने का बयान है कि येह किताब इन फ़वाइदे अ़ज़ीमा की जामेअ़ है। मौइज़त के मा'ना हैं वोह चीज़ जो इन्सान को मरग़ूब की त़रफ़ बुलाए, और ख़त़रे से बचाए। ख़लील ने कहा कि मौइज़त नेकी की नसीहत करना है जिस से दिल में नरमी पैदा हो। (خزائن العرفان،سورۃ یونس ،تحت الایۃ ۵۷)

वा'ज़ व नसीहत हज़राते अम्बियाए किराम व मुर्सलीने इज़ाम عَلٰی نَبِیِّنَا وعَلَیْھِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام की अ़ज़ीम सुन्नत है जिस को तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रोबर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने कमाल की बुलन्दियों पर पहुंचाया और क्यूं न हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें जवामिउ़ल कलिम अ़त़ा फ़रमाए या'नी ऐसे कलिमात जो इ़बारत के लिह़ाज़ से मुख़्तसर और मआ़नी व मत़ालिब के लिह़ाज़ से जामेअ़ हों। बुख़ारी शरीफ़ की पहली ह़दीष (اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّیَّات या'नी आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है।) (صحیح البخاری، الحدیث ۱،ص ۱) इस पर गवाह है। हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के वा'ज़ व नसीहत का अन्दाज़ इन्तिहाई दिल नशीन हुवा करता। कभी ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ का बयान होता तो कभी रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ की बिशारतें, कभी जन्नत की खुश ख़बरियां सुनाते तो कभी दोज़ख़ से डराते और कभी साबिक़ा उम्मतों के ह़ालात से आगाह फ़रमाते तो कभी आने वाले फ़ित्नों की ख़बर इरशाद फ़रमाते

अल ग़रज़ कलाम हाज़िरीन की हालत और वक़्त के तक़ाज़े के ऐन मुताबिक़ होता। सिर्फ़ एक हदीषे पाक और इस की मुख़्तसर शर्ह मुलाहज़ा फ़रमाएं। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना इरबाज़ बिन सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि एक दिन नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें नमाज़ पढ़ाई फिर अपना चेहरए मुबारक हमारी तरफ़ कर के ऐसा बयान फ़रमाया कि जिस से आंसू बह पड़े और दिल ख़ौफ़ज़दा हो गए तो एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم! यूं लगता है कि येह बयान, अल वदाअ़ कहने वाले की नसीहत की तरह है। आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमें किस चीज़ की वसिय्यत फ़रमाते हैं ?" आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं तुम्हें **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से डरने और अमीर की बात सुन कर इताअ़त करने की वसिय्यत करता हूं अगर्चे वोह अमीर हब्शी ग़ुलाम ही क्यूं न हो। तुम में से जो शख़्स ज़िन्दा रहेगा वोह कषीर इख़्तिलाफ़ात देखेगा तो (उस वक़्त) तुम पर मेरी सुन्नत और मेरे हिदायत याफ़्ता, राहनुमाई करने वाले ख़ुलफ़ा की पैरवी लाज़िम है, पस सुन्नत का दामन मज़्बूती से थाम लेना इस तरह कि जैसे कोई चीज़ दाढ़ों से पकड़ते हो और ख़ुद को नए पैदा होने वाले कामों से बचा कर रखना क्यूंकि हर नया (ख़िलाफ़े शरीअ़त) काम बिदअ़त है और हर बिदअ़त गुमराही है और हर गुमराही जहन्नम में (ले जाने वाली) है।"

(سنن ابوداؤد، کتاب السنة، باب فی لزوم السنة، رقم الحدیث ٤٦٠٧، ج٤، ص٢٦٧)

इमामे जलील, आ़रिफ़ बिल्लाह हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल ग़नी नाबलुसी عَلَیۡہِ رَحۡمَةُ اللّٰہِ الۡقَوِی इस हदीषे पाक की शर्ह में इरशाद फ़रमाते हैं : "हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अल वदाअ़ कहने वाले की तरह नसीहत फ़रमाई या'नी ऐसे शख़्स की वसिय्यत की तरह जो अपनी क़ौम को छोड़ कर जा रहा हो और चाहता हो कि अपने जाने से पहले इन्हें उन बातों की वसिय्यत कर जाए कि इस के बाद उन्हें उन बातों की इन्तिहाई ज़रूरत पड़ेगी। तो वोह इन्हें वसिय्यत व नसीहत करता है, ख़ौफ़ दिलाता है और ज़ज्रो तौबीख़ करता है और अपनी मुख़ालफ़त से डराता है। और येह सिर्फ़ उन की भलाई की इन्तिहाई चाहत के सबब करता है कि कहीं वोह इस के बा'द गुमराह न हो जाएं। (मज़ीद फ़रमाते हैं) इस हदीषे पाक में येह इशारा भी है कि वाइज़ को चाहिये कि ब वक़्ते वा'ज़ अपने पास मौजूद हाज़िरीन को नसीहत करने में पूरी कोशिश सर्फ़ करे और ऐसी कोई भी फ़ाइदा मन्द बात तर्क न करे जिस के मुतअ़ल्लिक़ जानता हो कि हाज़िरीन उस के लिये दूसरी मजलिस के मोहताज होंगे क्यूंकि दूसरी मजलिस तक ज़िन्दा रहने का कोई भरोसा नहीं। और वाइज़ के लिये येह जाइज़ है कि बिग़ैर कोई मशक़्क़त उठाए हाज़िरीन की हालत के मुताबिक़ कभी कभार उन को डराए और ज़ज्रो तौबीख़ करे, अलबत्ता ! इस की आ़दत न बनाए जैसा कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक अ़मल था कि कभी डराते और कभी न डराते।

(الحدیقة الندیة شرح الطریقة المحمدیة،الباب الاول فی الاعتصام بالکتاب والسنة ---الخ،ج١،ص٩٥)

वा'ज़ व नसीहत के बेशुमार फ़वाइद हैं, इस के ज़रीए कुफ़्फ़ार दौलते इस्लाम से मुशर्रफ़ होते, मुसलमानों के दिल ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से लबरेज़ और इश्क़े मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से सरशार होते, ईमान को ताज़गी मिलती, इस्लाम की महब्बत में तरक़्क़ी आती, नेकियों का जज़्बा मिलता, गुनाहों से नफ़रत पैदा होती, षवाब की तलब में इज़ाफ़ा होता, गुनाह से बचने का ज़ेह्न बनता और दीन सीखने सिखाने के लिये राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र का जज़्बा मिलता है। अल ग़रज़ वा'ज़ व नसीहत हर तरह से फ़ाइदा मन्द है। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِیْنَ ○
(پ۲۷،الذّٰریٰت:۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और समझाओ कि समझाना मुसलमानों को फ़ाइदा देता है।*

हज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی ने इस की तफ़्सीर में इरशाद फ़रमाया : "अगर समझाना किसी काफ़िर को शर्फ़े ईमान का फ़ाइदा दे तो येह मुसलमान ही को नफ़्अ़ देना है क्यूंकि वोह मुसलमान हो चुका है।" (تفسیر کبیر،سورۃالذّٰریٰت،تحت الایۃ۵۵،ج۱۰،ص۱۹۱)

फिर येह कि वा'ज़ व नसीहत के कुछ आदाब हैं अगर इन्हें मद्दे नज़र रख कर इस फ़रीज़े को अन्जाम दिया जाए तो मक़्सूद हासिल होगा वरना सारी कोशिश राइगां जाएगी। लिहाज़ा यहां शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी **हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه के फ़रामीन की रोशनी में इनफ़िरादी व इज्तिमाई वा'ज़ व नसीहत, अम्र बिल मा'रूफ़ और वाइज़ीन व मुबल्लिग़ीन के **26** आदाब बयान किये जाते हैं :

(1)....मुबल्लिग़ बा अ़मल हो। क्यूंकि बा अ़मल की बात जल्द अषर करती है। (2)....उ़-लमाए अहले सुन्नत की किताबों का मुतालआ़ करते रहें। (3)....जब किसी को नेकी की दा'वत दें (या'नी नसीहत करें) तो उस के साथ महब्बत से पेश आएं और गुनाह करते देखें तो निहायत ही नरमी के साथ उसे मन्अ़ करें और बड़ी महब्बत के साथ उसे समझाएं। (4)....बेजा जज़्बाती न बनें। अगर झिड़क कर समझाने की कोशिश करेंगे तो उल्टा ज़िद पैदा हो जाने का अन्देशा है। लोग आप से नफ़रत करने लगेंगे। किसी को डांट कर समझाने की मिषाल यूं समझें कि गोया जिस बरतन में कुछ डालना था उस में पहले ही से आप ने छेद कर डाला। (5)....अगर कोई ग़लती कर दे तो उसे सब के सामने हरगिज़ न टोकें। इस से आप की बात बे अषर हो जाएगी और उस की दिल आज़ारी हो जाने का भी क़वी इम्कान है। लिहाज़ा मौक़अ़ पा कर समझाएं। हज़रते सय्यिदुना अबू दर्दा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है : "जिस ने अपने भाई को सब के सामने नसीहत की उस ने उस को ज़लील कर दिया और जिस ने तन्हाई में नसीहत की उस ने उस को मुज़य्यन (आरास्ता) कर दिया। (تنبیه الغافلین،باب الامربالمعروف والنهی عن المنکر،ص۴۹) या'नी ज़ाहिर है उसे अकेले में महब्बत के साथ समझाएंगे तो क़वी उम्मीद है कि वोह अपनी ग़लती की इस्लाह़ कर लेगा। और यूं वोह इस्लाह़ के साथ मुज़य्यन हो जाएगा। (6)....वालिदैन अपनी औलाद को, शौहर अपनी बीवी को, और उस्ताद अपने शागिर्द को ज़रूरतन सख़्ती से भी समझाएं तो हरज नहीं। (7)....कोई बुराई

में मसरूफ़ है, गुनाह कर रहा है और हमारा गुमान ग़ालिब है कि अगर हम समझाएंगे तो बुराई से बाज़ आ जाएगा। ऐसी सूरत में اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْىٌ عَنِ الْمُنْكَر वाजिब है। अगर हम ने येह न किया तो गुनाहगार होंगे। (बहारे शरीअ़त हिस्सा 16, स. 259) (8)....अम्र बिल मा'रूफ़ करने वाले मुबल्लिग़ के पास इल्म होना ज़रूरी है वरना किस त़रह़ समझाएगा ? इस लिये इस्लामी किताबों का मुत़ालआ़ करना ज़रूरी है। (अ़वाम मुबल्लिग़ीन) जितना किताब में पढ़ें या उ़लमाए ह़क़्क़ा से सुनें वोही बयान करें। अपनी त़रफ़ से आयात व अह़ादीष की तफ़्सीर व तशरीह़ न करें। (9)....मुबल्लिग़ की निय्यत सिर्फ़ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ का ह़ुसूल और इस्लाम की सरबुलन्दी हो। (10)....मुबल्लिग़ का बा अख़्लाक़ और मिलनसार और बाकिर्दार होना बेह़द ज़रूरी है। (11)....मुबल्लिग़ साबिर और बुर्दबार भी हो, हो सकता है जिस को समझाया जा रहा है वोह बिफर जाए या गाली वग़ैरा बक दे। मुबल्लिग़ के लिये येह मौक़अ़ इम्तिह़ान का होता है। अगर दामने सब्र हाथ से जाता रहा और आप ने भी ख़ुदा न ख़्वास्ता ग़ुस्से का मुज़ाहरा किया तो आप बाज़ी हार गए। (12)....मुबल्लिग़ के मिज़ाज में बे जा ग़ुस्सा हो ही ना, नरमी ही नरमी होनी चाहिये। (13)....अ़वाम (या'नी जो आ़लिम न हो) हरगिज़ मश्हूर व मा'रूफ़ उ़-लमाए ह़क़्क़ा और मुफ़्तियाने किराम की टोह में न रहें। उन की ग़लति़यां न निकालें। उन को اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْىٌ عَنِ الْمُنْكَر न करें कि येह बे अदबी है हो सकता है कि वोह ह़ज़रात किसी ख़ास मस्लेह़त के तह़त ऐसा कर रहे हों और अ़वाम की नज़र वहां तक न पहुंचे।

(الفتاوی الهندية، كتاب الكراهة،الباب السابع عشرفی الغناء ......الخ،ج٥،ص٣٥٣)

(14)....किसी को गुनाह करता देखें और مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَل ख़ुद भी वोही गुनाह करते हैं फिर भी उसे गुनाह से मन्अ़ करें। क्यूंकि आप के ज़िम्मे तो दो चीज़ें वाजिब हैं : (1) बुरे काम से बचना और (2) दूसरे को बुरे काम से मन्अ़ करना। अगर एक वाजिब के तारिक हैं तो दूसरे के तारिक क्यूं बनें ?

(الفتاوی الهندية، كتاب الكراهة،الباب السابع عشرفی الغناء ......الخ،ج٥،ص٣٥٣) सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "بَلِّغُوْا عَنِّیْ وَلَوْ اٰيَةً पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो।" (مشكوٰة المصابيح، كتاب العلم، الحديث١٩٨، ج١، ص٥٩) (15)....जो कुछ दूसरों को कहें सब से पहले अपने आप को उस का मुख़ात़ब बनाएं। (16)....ऐश कोशियों से इज्तिनाब करते रहें और अपनी ज़िन्दगी सादगी के साथ गुज़ारें। (17)....ख़ुशी, ग़मी और बीमारी वग़ैरा के मवाक़ेअ़ पर लोगों के साथ हमदर्दाना रवय्या इख़्तियार करें। (18)....लोगों को उन की नफ़्सियात के मुत़ाबिक़ मह़ब्बत भरे लहजे में समझाएं। (19)....दक़ीक़ मज़ामीन और पेचीदा मसाइल न छेड़ें। **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का फ़रमाने आ़लीशान है : اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ (پ١٤،النحل:١٢٥) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब्ब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से।" (और) मन्क़ूल है : كَلِّمُوا النَّاسَ عَلٰى قَدْرِ عُقُوْلِهِمْ **तर्जमा :** लोगों से उन की अ़क़्लों के मुत़ाबिक़ कलाम करो।" (और) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : "मैं ने सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से कुछ बातें ऐसी भी सुनी हैं कि अगर तुम्हारे सामने ज़ाहिर कर दूं तो तुम मेरा गला काट दो।" (صحيح البخاری ، كتاب العلم،باب حفظ العلم ، الحديث: ١٢٠، ص ١٣) (20)....नेकी की दा'वत देने की राह में

पेश आने वाली मुश्किलात, तकालीफ़ और आज़माइशों का ख़न्दा पेशानी से इस्तिक़बाल करें और सब्रो इस्तिक़ामत का पहाड़ बन जाएं। (चुनान्चे) ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस पर मुसीबत आए और सब्र करना दुश्वार मा'लूम हो वोह मेरे मसाइब को याद कर ले।" (تنبیہ الغافلین،باب الصبر علی البلاء و الشدۃ ص۱۳۸) ज़ाहिर है जब सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में तकालीफ़ उठाना याद करेंगे तो हमें अपनी तकालीफ़ इस के आगे हेच नज़र आएंगी। (21)....इह्याए सुन्नत की ख़ातिर हर क़िस्म की कुरबानी देने के लिये अपने आप को तय्यार रखें। (22)....सुन्नतें सीखने और सिखाने की पाकीज़ा आरज़ू और इस राह में इख़्लास व ईषार का जज़्बा अपने अन्दर बेदार रखें (23)....आ़मी मुबल्लिग़ीन को चाहिये कि वोह बह़ष व मबाह़षा (जदलो मुनाज़रा) में न पड़ें बल्कि ऐसे मौक़अ़ पर उ़-लमाए ह़क़्क़ा की त़रफ़ रुजूअ़ करें कि येह इन्हीं ह़ज़रात का शो'बा है। अलबत्ता ! अपने अ़क़ाइद व आ'माल में पुख़्ता ज़रूर रहें। (24)....अपने बयान में हमेशा इस अम्र का एहतिमाम रखें कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बे पायां रह़मत से उम्मीद की कैफ़िय्यत भी त़ारी रहे और क़ह्र व ग़ज़ब की भी। (25)....अपने बाल बच्चों की इस्लाह़ भी करते रहें। (चुनान्चे) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है : "يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا (پ۲۸،التحریم:٦) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ।" (26)....वालिदैन या बड़े बहन भाई अगर ख़त़ा के मुर्तकिब हों तो हरगिज़ उन पर शिद्दत न करें, निहायत ही आ़जिज़ी और नरमी के साथ इस्लाह़ की दरख़्वास्त करें। उन से उल्झा न करें।

हु़ज़ूर सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द ख़ुलफ़ाए राशिदीन, सहा़बए किराम, औलियाए उ़ज़्ज़ाम और उ़-लमाए ज़ुल एह़तिराम رِضْوَانُ اللّٰهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने भी वा'ज़ व नसीह़त के अ़मल को बरक़रार रखा। जिन की मुसल्सल कोशिशों से चमने इस्लाम की बहारें अब भी क़ाइम हैं। चुनान्चे,

उस्ताज़ुल उ़-लमा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद मन्शा ताबिश क़ुसूरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى फ़रमाते हैं : "दुन्याए इस्लाम में बड़े बड़े अ़ज़ीमुल बयान मुक़र्रिरीन व वाइज़ीन और ख़ुत़बा ने अपनी फ़साह़तो बलाग़त और ख़ुदादाद ताषीर से यगानों और बेगानों को इस अन्दाज़ से मुतअष्षिर किया कि वोह इस्लाम और बानिये इस्लाम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये हमेशा हमेशा के लिये शैदाई व फ़िदाई बने। जिन्हें तारीख़ ने ख़ूब ख़ूब पज़ीराई बख़्शी और सफ़ह़ाते दहर में उन का नाम ज़िन्दा व पाइन्दा हो गया। मगर लिसानी मवाइज़ व तब्लीग़ का दाइरा, वाइज़ व ख़त़ीब और मुक़र्रिर व मुबल्लिग़ की ह़याते ज़ाहिरी तक मह़दूद रहता है। जब आंख बन्द हुई उन के पन्द व नसाएह़ का सिल्सिला मुन्क़तेअ़ हो गया। इस के बर अ़क्स उन मुबल्लिग़ीन व वाइज़ीन, ख़ुत़बा और मुक़र्रिरीन के कारनामे हमेशा ज़िन्दा रहते हैं जिन्हों ने अपने मवाइज़े ह़सना के लिये क़लम को वसीला बनाया और इस सिल्सिले में निहायत नुक्ता रस, ईमान अफ़रोज़, रूह़ परवर और दिलकश ख़ुत़बात व मवाइज़ को किताबों की सूरत दी। तसानीफ़ को मन्सए शुहूद पर जल्वागर किया और न सिर्फ़ उन की

ह़सीन ह़यात से लोगों ने इस्तिफ़ादा किया बल्कि सदियां गुज़र गईं, ज़माने बीत गए, मगर उन की क़लमी तब्लीग़ से अहले इ़ल्मो अ़मल, ख़ासो आ़म सभी मुस्तफ़ीद होते आ रहे हैं।" (مقدمه دُرّة الناصحين (مترجم)، ج ١، ص ٣)

ज़ेरे नज़र किताब "हि़कायतें और नसीह़तें" अपने ज़माने के मुम्ताज़ वाइ़ज़ व मुबल्लिग़े इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना शोऐ़ब ह़रीफ़ीश رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (मुतवफ़्फ़ा : हि. 810) की तसनीफ़ "اَلرَّوْضُ الْفَائِقُ فِى الْمَوَاعِظِ وَالرَّقَائِق" का उर्दू **तर्जमा** है। ख़ैरुद्दीन ज़रकली की "**अल आ'लाम**" में ह़ज़रते मुसन्निफ़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة के मुतअ़ल्लिक़ सिर्फ़ इतना ज़िक्र मिलता है : नाम : शोऐ़ब बिन अ़ब्दुल्लाह बिन सा'द बिन अ़ब्दुल काफ़ी। कुन्यत : अबू मदयन। उ़र्फ़ : ह़रीफ़ीश। क़ाहिरा मिस्र के सूफ़िया से थे, मक्कए मुकर्रमा (زَادَهَا اللهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا) में रिहाइश इख़्तियार फ़रमाई। उन्हों ने एक किताब "مَنْ ذَاقَ طَعْمَ شَرَابِ الْقَوْمِ يَدْرِيه" "اَلرَّوْضُ الْفَائِقُ فِى الْمَوَاعِظِ وَالرَّقَائِق" और औक़ाफ़े बग़दाद के मुतअ़ल्लिक़ क़सीदा की शर्ह़ लिखी। 810 हि. में विसाल हुवा। (الاعلام للزركلى، ج ٣ ص ١٦٧) और "मो'जमुल मुअल्लिफ़ीन" में इस तरह़ है : शोऐ़ब बिन सा'द बिन अ़ब्दुल काफ़ी मिस्री मक्की ह़रीफ़ीशी सूफ़ी, उन्हों ने एक किताब "اَلرَّوْضُ الْفَائِقُ فِى الْمَوَاعِظِ وَالرَّقَائِق" तसनीफ़ फ़रमाई और "اَلرَّوْضَةُ النَّضِرَةُ فِىْ خَصَائِصِ الْعَشَرَة" का ततिम्मा लिखा। 801 हि. में इन्तिक़ाल फ़रमाया।[1] (मो'जमुल मुअल्लिफ़ीन जि. 1, स. 815)

ह़ज़रते सय्यिदुना शोऐ़ब ह़रीफ़ीश رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की वा'ज़ व नसीह़त पर मुश्तमिल पेशे नज़र किताब "اَلرَّوْضُ الْفَائِق" ज़ाहिर की तत़्हीर और बात़िन की सफ़ाई के लिये इन्तिहाई अहम है। येह नादिर किताब **56 इस्लाह़ी बयानात** पर मुश्तमिल है। जिन में आयाते क़ुरआनिय्या, अह़ादीषे मुबारका और सह़ाबए किराम व औलियाए उ़ज़्ज़ाम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के दिलों को जिला देने वाले फ़रामीने मुबारका बयान किये गए हैं। नीज़ जा बजा ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام, सह़ाबए किराम, अइम्मए अरबआ़ और औलियाए उ़ज़्ज़ाम عليهم الرحمة والرضوان के फ़ज़ाइल और उन के ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ से भरपूर और नसीह़त आमेज़ वाक़िआ़त व ह़िकायात मौजूद हैं। मषलन : ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इम्तिह़ान, ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ की नसीह़त, तज़्किरए इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ, ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى के वाक़िआ़त वग़ैरा और येह बात दुरुस्त है कि जिस त़रह़ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मुक़र्रब बन्दों की ज़ियारत और उन की ख़िदमत में ह़ाज़िरी इन्सान की ज़ाहिरी व बात़िनी इस्लाह़ के लिये इक्सीर का दरजा रखती है इसी त़रह़ इन बुज़ुर्गों के अक़्वाल व अह़वाल को पढ़ना और सुनना भी इन्तिहाई मुफ़ीद है। नीज़ इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या का ज़िक्रे ख़ैर तो इ़बादत और कफ़्फ़ारए सय्यिआत का दरजा रखता है। जैसा कि,

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ السَّلَام) का ज़िक्र इ़बादत, सालिह़ीन (औलियाए किराम) का ज़िक्र (गुनाहों का) कफ़्फ़ारा और मौत का ज़िक्र सदक़ा है और क़ब्र का ज़िक्र तुम्हें जन्नत से क़रीब कर देगा।" (الجامع الصغير، الحديث: ٤٣٣١، ص ٢٦٤)

"**मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने इस किताब की इन्ही ख़ूबियों को मद्दे नज़र रखते हुए "**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**" के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त इस का इन्तिख़ाब किया और **शो'बए तराजुमे कुतुब** के मदनी उ़-लमा كَثَّرَهُمُ اللّٰه تعالٰی को इस के उर्दू तर्जमे का काम सोंपा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! इन मदनी उ़-लमा كَثَّرَهُمُ اللّٰه تعالٰی की दिन रात मुसल्सल कोशिशों और अन्थक काविशों से इस का उर्दू **तर्जमा** बनाम "**हिकायतें और नसीह़तें**" आप के हाथों में है। इस में जो भी ख़ूबियां हैं वोह यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के **प्यारे ह़बीब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ताओं, **औलियाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की इनायतों और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा है और जो ख़ामियां हैं उन में हमारी कोताह फ़हमी का दख़्ल है।

मुसन्निफ़े किताब ह़ज़रते सय्यिदुना शोऐ़ब ह़रीफ़ीश رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने चूंकि इस किताब को बयानात (या'नी तक़रीरों) की शक्ल में तरतीब दिया था। लिहाज़ा इन का अन्दाज़ बर क़रार रखने की पूरी कोशिश की गई है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ येह किताब उ़-लमाए किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰه تعالٰی वाइज़ीन, ख़ुत़बा और आ़म मुबल्लिग़ीन इस्लामी भाइयों के लिये बहुत मुआ़विन षाबित होगी। तर्जमे के लिये "دَارُاِحْيَاءِ التُّرَاثِ الْعَرَبِی" (बैरूत, लबनान) का नुस्ख़ा इस्ति'माल किया गया है।

तर्जमा करते हुए दर्जे ज़ैल उमूर का ख़ास ख़याल रखा गया है :

★....सलीस और बा मुहा़वरा **तर्जमा** किया गया है ताकि कम पढ़े लिखे इस्लामी भाई भी अच्छी त़रह़ समझ सकें।

★....आयाते मुबारका का **तर्जमा** आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के तर्जमए कुरआन कन्ज़ुल ईमान से लिया गया है।

★....बयान कर्दा अह़ादीषे मुबारका की तख़रीज का ह़त्तल मक़्दूर एहतिमाम किया गया है। बा'ज़ तख़ारीज इन्तिहाई कोशिश के बा वुजूद न मिल सकीं।

★....बा'ज़ मक़ामात पर मुफ़ीद ह़वाशी का एहतिमाम किया गया है, बिलख़ुसूस "**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" से कई आयाते मुबारका की तफ़्सीर ह़ाशिय्या में लिख दी गई है।

★....कई मक़ामात पर मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी ब्रेकेट में लिख दिये गए हैं। नीज़ कई अल्फ़ाज़ पर ए'राब भी लगाए गए हैं।

★....अ़लामते तरक़ीम (रुमूज़े अवक़ाफ़) का भी ख़याल रखा गया है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ है कि हमें "**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**" करने के लिये **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल "**मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या**" को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّم

शो'बए तराजुमे कुतुब (मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

ज़िमनी फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़्हा
बयान 1 : दुरूदे पाक और बिस्मिल्लाह शरीफ़ के फ़ज़ाइल	20
बयान 2 : इल्म का बयान	31
बयान 3 : मौत और ज़ियारते कुबूर वग़ैरा का बयान	49
बयान 4 : फ़ज़ाइले औलिया رضي الله عنهم	68
बयान 5 : फ़ैज़ाने रमज़ान	77
बयान 6 : रुख़्सते माहे रमज़ान	93
बयान 7 : शबे क़द्र के फ़ज़ाइल	100
बयान 8 : हाजियों के फ़ज़ाइल और उन पर इन्आम का बयान	108
बयान 9 : ख़ानए का'बा की शानें	120
बयान 10 : ख़ौफ़े ख़ुदा में रोने वालों का बयान	129
बयान 11 : फ़ुक़राए किराम के फ़ज़ाइल	138
बयान 12 : बा'ज़ सलफ़े सालिहीन رضي الله عنهم के वाक़िआत	144
बयान 13 : जहन्नम का बयान	150
बयान 14 : अम्बियाए किराम व औलिया की मुबारक ज़िन्दगियां	165
बयान 15 : औलियाए किराम رضي الله عنهم के औसाफ़	176
बयान 16 : मौत की सख़्तियां	182
बयान 17 : करामाते औलिया رضي الله عنهم का षुबूत	194
बयान 18 : क़ियामत की सख़्तियां	201
बयान 19 : मनाक़िबे सालिहीन رضي الله عنهم	208
बयान 20 : ख़ौफ़े महशर का बयान	216
बयान 21 : माल की मज़म्मत	224
बयान 22 : नफ़्ली सदक़े का बयान	233
बयान 23 : स-दक़ए फ़ित्र के फ़ज़ाइल	241
बयान 24 : मे'राजुन्नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	250
बयान 25 : सालिहीन की हिकायात	263
बयान 26 : सालिहीन के फ़ज़ाइल	274
बयान 27 : नेक औरतों का ज़िक्र	282
बयान 28 : सूर फूंकने का बयान	293
बयान 29 : नेकों के वाक़िआत	304
बयान 30 : औलियाए किराम رضي الله عنهم के अहवाले ज़िन्दगी	310
बयान 31 : क़ुर्बे हक़ीक़ी का बयान	316
बयान 32 : तज़्किरए इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ	324
बयान 33 : करामाते औलिया رضي الله عنهم	337
बयान 34 : तज़्किरए मा'रूफ़ करख़ी	345
बयान 35 : नेक लोगों की निराली शानें	359
बयान 36 : मुबारक "दरयाए नील" का ज़िक्रे ख़ैर	371
बयान 37 : फ़ज़ाइले सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़	378
बयान 38 : तज़्किरए इमाम शाफ़ेई رضي الله عنه	394
बयान 39 : तज़्किरए इमाम मालिक رضي الله عنه	409
बयान 40 : तज़्किरए इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ	427
बयान 41 : चन्द हिकायात	434
बयान 42 : आशूरा के फ़ज़ाइल	449
बयान 43 : मीलादे मुस्तफ़ा صلى الله عليه وسلم	463
बयान 44 : अल्लाह वालों की बातें	475
बयान 45 : महब्बते इलाही का बयान	484
बयान 46 : विसाले मुस्तफ़ा صلى الله عليه وسلم	501
बयान 47 : अनोखे वाक़िआत	516
बयान 48 : निकाहे अली व फ़ातिमा	531
बयान 49 : मौत और इस में ग़ौरो फ़िक्र का बयान	544
बयान 50 : आली रुत्बा ख़वातीन	558
बयान 51 : ईदों की ईद	569
बयान 52 : ज़ियारते रौज़ए रसूल صلى الله عليه وسلم	586
बयान 53 : मनाक़िबे ख़ुलफ़ाए राशिदीन	596
बयान 54 : सलातो सलाम का बयान	608
बयान 55 : لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहने के फ़ज़ाइल व कमालात	620
बयान 56 : रहमते इलाही عَزَّوَجَلَّ की वुस्अत का बयान	629
माख़ज़ो मराजेअ़	644
इल्मिय्या कुतुब	648

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़्हा	मज़ामीन	सफ़्हा	मज़ामीन	सफ़्हा
पहले इसे पढ़ लीजिये !	4	गुनाहों की नुहूसत	44	शबे क़द्र में इबादत की फ़ज़ीलत	81
इब्तिदाइय्या	19	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर से डरते रहो	45	रोज़ेदार के लिये दो खुशियां	82
बयान 1 : दुरूदे पाक और बिस्मिल्लाह		रिक़्क़त अंगेज़ दुआ	47	सय्यिदे आलम ﷺ की सख़ावत	83
शरीफ़ के फ़ज़ाइल	20	बयान 3 : मौत और ज़ियारते क़ुबूर वग़ैरा		रमज़ानुल मुबारक की बिशारत और शबे क़द्र की	
उम्मे अबी बक्र का क़बूले इस्लाम	24	का बयान	49	फ़ज़ीलत	84
दुरूदे पाक पढ़ने वाले पर इन्आमे खुदावन्दी	26	हम्दे बारी तआला	49	रोज़ेदार की सांसें और शैतान का डरना	85
ईसाले षवाब ने अज़ाबे क़ब्र से बचा लिया	27	फ़िक्रे मदीना (मुहासबा) करने वाला खुश नसीब	52	माहे रमज़ान में अहलो इयाल पर ख़र्च करने की	
शाने मुस्तफ़ा ﷺ	27	हुस्ने ज़न की बरकत	53	फ़ज़ीलत	88
बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में		आख़िरत की पहली मन्ज़िल	53	रोज़ेदारों की शान	88
हदिय्यए दुरूदो सलाम	28	मिले ख़ाक में अहले शां कैसे कैसे ?	57	मलाइकए अर्श की नमाज़े तरावीह में हाज़िरी	89
बिस्मिल्लाह शरीफ़ की फ़ज़ीलत	29	मय्यित क़ब्र पर आने वाले को देखती है	61	अवामो ख़वास की ईद की ज़रूरिय्यात	90
बयान 2 : इल्म का बयान	31	मलकुल मौत का ए'लान	62	हरीसा खाने की ख़्वाहिश	91
हम्दे बारी तआला	31	मुर्दे की बेटियों की रिक़्क़त अंगेज़ दुआ काम आ गई	64	बयान 6 : रुख़्सते माहे रमज़ान	93
सांप ने नरगिस के फूलों का गुलदस्ता पेश किया	33	बयान 4 : फ़ज़ाइले औलिया का बयान	68	हम्दे बारी तआला	93
महब्बत की हक़ीक़त	34	हम्दे बारी तआला	68	शव्वाल के छे रोज़ों की फ़ज़ीलत	94
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर	35	उबैद मजनून की मा'रिफ़त भरी बातें	71	रोज़े की जज़ा	94
रब्ब عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करने का अनोखा तरीक़ा	35	एक दिन में साल का सफ़र तै कर लिया	73	मरने के बा'द नेक आ'माल मदद करते हैं	94
बुढ़े आबिद की शक्ल में शैतान	38	बयान 5 : फ़ैज़ाने रमज़ान	77	रोज़े का षवाब दीदारे इलाही है	95
दो अम्रद पसन्द मुअज़्ज़िनों की बरबादी	39	हम्दे बारी तआला	77	ताइबीन के लिये बख़्शिश की नवीद	96
बद निगाही का वबाल	42	शयातीन ज़न्जीरों में जकड़ दिये जाते हैं	80	रोज़ाना दस लाख गुनहगारों की दोज़ख़ से रिहाई	97
अच्छी निय्यत का फल और बुरी का वबाल	42	जन्नत के दरवाज़े खुल जाते हैं	80	बयान 7 : शबे क़द्र के फ़ज़ाइल	100
शैतान का ख़तरनाक जाल	43	सग़ीरा गुनाहों का कफ़्फ़ारा	81	हम्दे बारी तआला	100

लैलतुल क़द्र कहने की वजह	100	एक महबूब बन्दी के तुफ़ैल सब का हज क़बूल हो गया	119	औलियाए किराम के लिये ज़मीन सिमट जाती है	147
क्या लैलतुल क़द्र अब भी बाक़ी है ?	101	**बयान 9: ख़ानए का'बा की शानें**	120	**बयान 13 : जहन्नम का बयान**	150
कौन सी रात लैलतुल क़द्र है ?	101	हम्दे बारी तआ़ला	120	हम्दे बारी तआ़ला	150
शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है	101	अ़तीक़ कहने की वजह	125	जहन्नम तारीक रात की त़रह सियाह है	152
आख़िरी सात रातों में तलाश करो	102	ज़बान और आंखों वाला बादल	126	जहन्नम की आग दुन्या की आग से सत्तर गुना तेज़ है	152
शबे क़द्र की अ़लामात	103	ख़ानए का'बा शरीफ़ शफ़ाअ़त फ़रमाएगा	127	जहन्नम की सत्तर हज़ार लगामें होंगी	152
लैलतुल क़द्र की दुआ़	103	**बयान 10 : ख़ौफ़े ख़ुदा में रोने वालों का**		समाअ़ते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم	153
सत्ताईसवीं रात शबे क़द्र है	103	**बयान**	129	जहन्नमी अहले जन्नत से खाना और पानी मांगेंगे	153
शबे क़द्र के नूर के मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ अक़्वाल	104	हम्दे बारी तआ़ला	129	जहन्नम में काफ़िर की हालत	154
शबे क़द्र फ़िरिश्ते झन्डे ले कर उतरते हैं	105	**बयान 11 : फ़ुक़राए किराम के**		जहन्नमियों का गोश्त झड़ जाएगा	155
बयान 8 : हाजियों के फ़ज़ाइल और		**फ़ज़ाइल**	138	जहन्नमियों की पुकार का जवाब	156
इन पर इन्आ़म का बयान	108	हम्दे बारी तआ़ला	138	हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की नसीहत	157
हम्दे बारी तआ़ला	108	फ़क़्र क्या है ?	139	ख़च्चर जैसे बिच्छू और ऊंट जैसे सांप	157
हज की फ़ज़ीलत	109	अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ السَّلَام और फ़ुक़रा की		पुर असरार आ'राबी	159
यौमे अ़रफ़ा जहन्नम से आज़ादी का दिन	109	तख़्लीक़ जन्नत की मिट्टी से हुई	139	फ़क़ीर के औसाफ़	162
फ़ुज़ूल सुवालात से बचो	109	उ़-लमा हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के वारिस		जन्नत का ख़ज़ाना	164
हज व उ़मरह इकठ्ठा करने की फ़ज़ीलत	110	और फ़ुक़रा दोस्त हैं	140	छे कामों में जल्दी करो	164
हज्जे मबरूर की ता'रीफ़	110	फ़क़ीर, ग़नी के लिये त़बीब, धोबी, क़ासिद और		**बयान 14 : अम्बियाए किराम** عَلَیْهِمُ السَّلَام **व**	
वालिदैन की त़रफ़ से हज करो	111	निगहबान है	140	**औलिया की मुबारक ज़िन्दगियां**	165
हज और उ़मरह औरतों का जिहाद है	111	**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वली क़ब्र से ग़ाइब हो गया	141	हम्दे बारी तआ़ला	165
इ़ल्मे ग़ैबे मुस्त़फ़ा ﷺ	111	नौजवान बुज़ुर्ग	141	हज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلَیْهِ السَّلَام का इम्तिहान	166
हज के दो हुरूफ़ से मुराद	114	हंसने वाला मुख़्लिस नौजवान	142	हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام	
किन लोगों की दुआ़ रद नहीं होती ?	114	एक नौजवान की मुनाजात	142	का परन्दों को ज़िन्दा करना	168
नेकियां कमाने और गुनाह धोने का नुस्ख़ा	115	**बयान 12 : बा'ज़ सलफ़े सालिहीन**		मक़ामे फ़ना	170
अफ़्आ़ले हज की हिक्मतें	115	رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی **के वाक़िआ़त**	144	फ़रमांबरदार बेटे की मौत से मां भी फ़ौत हो गई	171
वुक़ूफ़े अ़रफ़ात करने वालों की मग़फ़िरत हो गई	118	हम्दे बारी तआ़ला	144	इब्लीस को ख़ुश करने वाले काम	173
छे के सदक़े छे लाख का हज क़बूल कर लिया गया	118	पूरा शहर मुसलमान हो गया	145	फ़ुक़रा को नसीहत	173

फ़क़ीर के तीन अवसाफ़	173	दाइरे से पानी रवां हो गया !	196	मीज़ान पर मुक़र्रर फ़िरिश्ते का ए'लान	219
तमाम मख़्लूक़ की नेकियों के बराबर नेकियां	174	दरिन्दा भी ताबेअ़ हो गया !	197	औलिया رَحِمَهُمُ اللّٰه का क़ाफ़िला और समन्दर की मौजें	220
फ़क्र में चार चीज़ों का होना ज़रूरी है	174	फ़ुक़रा पर सदक़ा न करने की सज़ा	197	हज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का विसाल	221
एक क़मीस दुखूले जन्नत का सबब बनी	174	मय्यित ने हाथ पकड़ लिया !	197	नफ़्स के मुहासबे का अनोखा तरीक़ा	221
फ़िरिश्ते फ़ुक़रा के हाथों पर पानी डालते हैं	175	दरख़्त बोल उठा !	198	**बयान 21 : माल की मज़म्मत**	224
बयान 15 : औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰه के		ऊंट ज़िन्दा हो गया !	198	हम्दे बारी तआला	224
औसाफ़	176	हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र का खाना खिलाना	199	**बयान 22 : नफ़्ली सदक़े का बयान**	233
हम्दे बारी तआला	176	वली की हिफ़ाज़त का खुदाई इन्तिज़ाम	199	सदक़े के फ़ज़ाइल पर आयाते मुबारका	233
अल्लाह वालों के आ'माल	176	फ़रमां बरदार गधा	199	सदक़े के फ़ज़ाइल पर अहादीषे तृय्यिबा	233
नाफ़रमान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वली बन गया	177	रैत सत्तू बन गई !	199	इम्तिहान में कामयाब होने वाला नौजवान	236
ज़मीन से दीनार निकल आए	179	**बयान 18 : क़ियामत की सख़्तियां**	201	खुदा तरस औरत को डूबे हुवे बच्चे कैसे मिले ?	237
बयान 16 : मौत की सख़्तियां	182	हम्दे बारी तआला	201	अहले हक़ का बे मिषाल गुरोह	239
हम्दे बारी तआला	182	भेड़ियों और बकरियों में सुल्ह	204	दो रोटियां सदक़ा करने की बरकत	239
क़ब्र जन्नत का बाग़ या जहन्नम का गढ़ा है	183	क़ब्र की दिल हिला देने वाली कहानी	206	**बयान 23 : सदक़ए फ़ित्र के फ़ज़ाइल**	241
सकराते मौत	184	**बयान 19 : मनाक़िबे सालिहीन**	208	हम्दे बारी तआला	241
मौत की कड़वाहट	184	हम्दे बारी तआला	208	सदक़ए फ़ित्र नमाज़े ईद से पहले अदा करना	242
आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्तों की ज़ियारत	185	वसीलए औलिया ज़रीअए शिफ़ा	208	ईदुल फ़ित्र के मुस्तहब्बात	243
मोमिन और काफ़िर की मौत में फ़र्क़	185	मुतवक्किलीन का हाल	209	ईद में रोज़े महशर की याद है	244
मौत के बा'द भी सत्तर हौलनाकियां हैं	188	एक आबिद की आरिफ़ाना गुफ़्तगू	211	आंखों का कुफ़्ले मदीना	245
बयान 17 : करामाते औलिया का षुबूत	194	समन्दर पर चलने वाला शख़्स	211	इन्आमो इकराम की रात	248
हम्दे बारी तआला	194	सियाहफ़ाम मुत्तक़ी गुलाम का तवक्कुल	213	**बयान 24 : मे'राजुन्नबी** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	250
गाय बोल उठी !	195	जब दिल भर जाए तो ज़िक्रुल्लाह ज़बान पर	214	हम्दे बारी तआला	250
ज़मीन सोना बन गई !	195	**बयान 20 : ख़ौफ़े महशर का बयान**	216	**बयान 25 : सालिहीन رَحِمَهُمُ اللّٰه की हिकायात**	
वादी के पथ्थर जवाहिरात बन गए !	195	हम्दे बारी तआला	216	**व वाक़िआत**	263
सब से बड़ी करामत	195	क़ियामत का मन्ज़र	218	घर में क़ब्र	263
मग़फ़िरत का परवाना	196	अ़ज़ाबे जहन्नम की कैफ़िय्यत	218	ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ से रोने वाला मदनी मुन्ना	264
कीकर के दरख़्त से खजूरें	196	हौज़े कौषर से मायूस लौटने वाले	219	**अल्लाह** के नाम पर वक़्फ़ कर के वापस न लो	264

वासिल बिल्लाह नौजवान	265	मिष्लिय्यत से पाक ज़ात	296	ज़ोहदो तक़्वए इमामे आ'ज़म رحمۃ اللہ علیہ	327
एक राहिब का क़बूले इस्लाम	265	एक मुरीद की तौबा	302	आप का इल्मी मक़ाम	328
मरीज़े इश्क़े इलाही عَزَّوَجَلَّ	268	रिक़्क़त अंगेज़ दुआ	302	ख़ारिजी गुरौह ताइब हो गया	329
वज़ारत क्यूं तर्क की ?	269	**बयान 29 : नेकों के वाक़िआत**	304	मजालिसे उ-लमा का अदब	331
दुन्या व आख़िरत की पसन्दीदा चीज़ें	269	हम्दे बारी तआला	304	क़ियामे हक़ के लिये कोशिशें	331
शराब ख़ाना और सदाए हक़	270	ग़ैबी अशरफ़ियां	305	जूदो करमे इमामे आ'ज़म رحمۃ اللہ علیہ	332
बयान 26 : सालिहीन رحمہم اللہ के फ़ज़ाइल	274	चोर वली बन गया	305	कपड़ों की क़ीमत सदक़ा कर दी	333
हम्दे बारी तआला	274	अस्माए हुस्ना का वसीला काम आ गया	307	विसाले इमामे आ'ज़म رحمۃ اللہ علیہ	335
कामयाब नौमुस्लिम	275	रिक़्क़त अंगेज़ दुआ	308	इमामे आ'ज़म को बख़्श दिया गया	336
गुदड़ी में ला'ल	276	**बयान 30 : औलियाए किराम के अहवाले**		**बयान 33 : करामाते औलिया رحمہم اللہ**	337
एक जन्नती नौजवान	277	**ज़िन्दगी**	310	हम्दे बारी तआला	337
सल्तनत दे कर दुरवेशी ख़रीदी	279	हम्दे बारी तआला	310	तज़्किरए इदरीस बिन अबी ख़ौला رحمۃ اللہ علیہ	338
बयान 27 : नेक औरतों का ज़िक्र	282	लकड़ी का बुरादा मैदा बन गया	311	हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी رحمۃ اللہ علیہ और काले	
हम्दे बारी तआला	282	दिल होश में न रहा	312	रंग का आदमी	339
तज़्किरए हज़रते सय्यिदतुना राबिआ बसरिया	283	राहिबों का क़बूले इस्लाम	313	मक़ामे मा'रूफ़ رحمۃ اللہ علیہ	340
दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ की तालिबा	284	रिक़्क़त अंगेज़ दुआ	314	सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رحمۃ اللہ علیہ की तौबा	340
हज़रते सय्यिदतुना राबिआ बसरिया के		**बयान 31 : क़ुर्बे हक़ीक़ी का बयान**	316	राज़ी ब रिज़ाए इलाही रहने वाला आबिद	341
चार सुवालात	285	हम्दे बारी तआला	316	**बयान 34 : तज़्किरए मा'रूफ़ करख़ी**	345
सितार बजाने वाली की तौबा	286	सियाहफ़ाम ग़ुलाम	316	हम्दे बारी तआला	345
ज़ियारते बैतुल्लाह शरीफ़ का अनोखा शौक़	286	चट्टान से चश्मा बह निकला	319	इब्तिदाई हालात	345
चार मक़्बूल लड़कियां	287	फ़नाफ़िल्लाह नौजवान	320	आप से मरविय्यात	347
एक ख़ाइफ़ा का ख़ौफ़े ख़ुदा	289	हमेशा दीदारे इलाही करने वाला लड़का	321	आप की करामात	348
एक ख़ुदा शनास मजनूना	290	**बयान 32 : तज़्किरए इमामे आ'ज़म**		आप के इरशादाते आलिया	349
एक आरिफ़ा का आरिफ़ाना कलाम	290	**अबू हनीफ़ा** رحمۃ اللہ علیہ	324	आप का ख़ौफ़े ख़ुदा	351
एक आबिदा की नसीहत भरी बातें	291	हम्दे बारी तआला	324	एक नौजवान की हिकायत	351
बयान 28 : सूर फूंकने का बयान	293	ता'रूफ़े इमामे आ'ज़म رحمۃ اللہ علیہ	326	दुआए मा'रूफ़ की बरकात	353
हम्दे बारी तआला	293	इबादते इमामे आ'ज़म رحمۃ اللہ علیہ	326	ईसाई वालिदैन का क़बूले इस्लाम	354

मज़ाराते औलिया की बरकात	356	विलादते बा सआदत	378	हम्दे बारी तआला	394
जिस का अमल हो बे गरज़ उस की जज़ा कुछ और है	356	ज़माने का बेहतरीन शख्स	379	ता'रूफ़े इमामे शाफ़ेई رضی اللہ عنہ	395
आप का विसाले बा कमाल	358	आप رضی اللہ عنہ का मुहासबए नफ़्स	380	आप رضی اللہ عنہ का नाम व नसब	395
बयान 35 : नेक लोगों की निराली		दुन्या को तीन तलाक़	380	आप رضی اللہ عنہ की तिलावत	395
शानें	359	आप رضی اللہ عنہ की दुन्या से बे रग़बती	381	इमामे मालिक رضی اللہ عنہ से इक्तिसाबे फ़ैज़	396
हम्दे बारी तआला	359	आप رضی اللہ عنہ की फ़िक्रे आख़िरत	382	सख़ावते इमाम शाफ़ेई رضی اللہ عنہ	398
शाने औलिया ब ज़बाने इमामुल अम्बिया	361	आंसूओं से परनाला बह पड़ा	382	मज़ाक़ करने वाले दरज़ी को भी दुआए ख़ैर	398
सय्यिदुना अबू यज़ीद का ज़ौक़े इबादत	362	आप رضی اللہ عنہ का तक़्वा	383	आप رضی اللہ عنہ का ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी	399
जहन्नम की आग से बराअत नामा	363	आप رضی اللہ عنہ का फ़क़्र	384	एक नौजवान को नसीहत	401
एक नौजवान की तौबा	363	हदिय्या क़बूल करने से इजतिनाब	385	आप رضی اللہ عنہ की दुन्या से बे रग़बती	402
सारंगी बजाने वाली लड़की की तौबा	365	आप ने लोगों को ग़नी कर दिया	385	इमामे शाफ़ेई رضی اللہ عنہ के चन्द अश्आर	404
हज़रते सय्यिदुना आदम की तौबा	367	नोकरानी को पंखा झलने वाला ख़लीफ़ा	385	इमामे शाफ़ेई رضی اللہ عنہ की चन्द दुआएं	405
रहमते ख़ुदावन्दी मां की महब्बत से बढ़		आप رضی اللہ عنہ को ज़हर दिया गया	386	मौला अली رضی اللہ عنہ ने अंगूठी अता फ़रमाई	406
कर है	368	ज़हर पिलाने वाला ग़ुलाम आज़ाद	387	इमामे शाफ़ेई رضی اللہ عنہ की दुआ	406
बयान 36 : मुबारक "दरयाए नील" का		ख़्वाब में अच्छे ख़ातिमे की बिशारत	387	इमामे शाफ़ेई رضی اللہ عنہ का सोना हमारी इबादत	
ज़िक्रे ख़ैर	371	आप के ख़ानदान का वसी	389	से बेहतर है	407
हम्दे बारी तआला	371	बा'दे विसाल चेहरा जगमगा उठा	389	**बयान 39 : तज़्किरए इमाम मालिक رضی اللہ عنہ**	409
दरयाए नील के मुतअल्लिक़ हिकायत	373	आप رضی اللہ عنہ के कफ़न की क़ीमत	390	हम्दे बारी तआला	409
रोज़ेदार पर ख़ास इनायते ख़ुदावन्दी	374	आप के मक़ामे दफ़्न की क़ीमत	391	तआरुफ़े इमाम मालिक رضی اللہ عنہ	410
दरयाए नील के नाम एक ख़त	375	मुद्दते ख़िलाफ़त और विसाले बा कमाल	391	फ़तावा नवेसी	410
क़िब्तियों की मकरूह चाल	376	आप رضی اللہ عنہ के विसाल पर अहले बसरा का ग़म		आलिमे मदीना कौन हैं ?	411
बयान 37 : फ़ज़ाइले सय्यिदुना उमर बिन		व अलम	391	इमाम मालिक رضی اللہ عنہ पर सरकार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم	
अब्दुल अज़ीज़ رضی اللہ عنہ	378	अइम्मए हुदा के साथ ठिकाना	392	का करम	413
हम्दे बारी तआला	378	सब्ज़ पर्चा	392	मुअत्ता इमाम मालिक رضی اللہ عنہ की अज़मत व शान	414
आप رضی اللہ عنہ का नाम व नसब	378	**बयान 38 : तज़्किरए इमाम शाफ़ेई رضی اللہ عنہ**	394	इमाम मालिक और इल्म की क़द्र	415

सरकारे दो आ़लम ﷺ ने अंगूठी पहनाई 419
इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और ता'ज़ीमे ख़ाके मदीना 421
जहन्नम से नजात की बिशारत 422
रूए ज़मीन का सब से बड़ा आ़लिम 423
एक कलिमे के सबब बख़्शिश 423
आप का विसाल व तजहीज़ व तक्फ़ीन 423
आप के विसाल पर अहले इराक़ का सदमा 424
आदमी का नसब ही उस का मकान है 424
इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मकान न बनाया 425
अइम्मए अरबआ़ और मज़ाहिबे अरबआ़ हक़ हैं 426
बयान 40 : तज़्किरए इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ 427
ह़म्दे बारी तआ़ला 427
तआ़रुफ़े इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ 427
सय्यिदुना शैबान राई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ का जवाबे ला जवाब 429
मश्अ़ल की रोशनी में सूत न कातो 430
इमाम अह़मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का आंखों का क़ुफ़्ले मदीना 431
आठ लाख, साठ हज़ार शुरकाए जनाज़ा 432
दस लाख अह़ादीष लिखने वाला इमाम 432
बयान 41 : चन्द हिकायात 434
ह़म्दे बारी तआ़ला 434
शेर से पर्दा करने वाली वलिय्या 435
आबे ज़म ज़म सत्तू, दूध और शहद बन गया 436
तीन चीज़ों के सबब बख़्शिश हो गई 436
अंगूरों की ग़ैबी टोकरी 437
हम अपने आप को खिलाते तो येह मछली न निकलती 438
दरया पर चलने वाला क़ुतुब 439
बनी इसराईल का एक गुनहगार 441
ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब आंख निकाल दी 443
नदामत हो तो ऐसी हो 443
ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِ पर एक रुक्ए का अषर 445
बयान 42 : आ़शूरा के फ़ज़ाइल 449
ह़म्दे बारी तआ़ला 449
"या ह़ुसैन, या शहीदे करबला हो दूर हर रन्जो बला" के इकत्तीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से यौमे आ़शूरा की इकत्तीस ख़ुसूसिय्यात 450
यौमे आ़शूरा के मुस्तह़ब्बात 454
आ़शूरा सदक़े का दिन है 455
आ़शूरा में सदक़े की बरकत से यहूदी मुसलमान हो गया 455
शबे आ़शूरा का वसीला काम आ गया 457
सेब से जन्नती पोशाक बर आमद हुवा 458
ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام का मो'जिज़ा 459
बयान 43 : मीलादे मुस्त़फ़ा ﷺ 463
ह़म्दे बारी तआ़ला 463
नूरे मुह़म्मदी ﷺ की ज़ौफ़िशानियां 468
सरकार ﷺ का पाकीज़ा नसब 470
नूरे मुस्त़फ़ा ﷺ की मुन्तक़िली पर जश्न का समां 472
हर चोपाया बोलने लगा 472
विलादते मुबारक और अ़जाइबाते विलादत 473
बयान 44 : अल्लाह वालों की बातें 475
ह़म्दे बारी तआ़ला 475
हम ने तेरी ख़ातिर शराबी का दिल धो दिया 476
एक आ़शिक़े इलाही 477
दानिशमन्दाना जवाब 477
ऐसी जन्नत क़ैद ख़ाना है जिस में क़ुर्बे इलाही न हो 478
सय्यिदुना ह़बीब नज्जार की ईमान अफ़रोज़ हिकायत 478
क़ुरआन सुन कर रूह़ निकल गई 480
बरगद के दरख़्त से खजूरें उतार लीं 481
बयान 45 : मह़ब्बते इलाही का बयान 484
ह़म्दे बारी तआ़ला 484
मह़ब्बत क्या है ? 485
काफ़िर और मोमिन की मह़ब्बत का मुवाज़ना 485
मह़बूबाने ख़ुदा मह़बूबाने औलिया 488
अ़ज़ीम ख़ादिमा 489
अनोखी मुनाजात 490
जन्नत में याक़ूत का घर 491
भेड़िये बकरियों के मुह़ाफ़िज़ बन गए 492
मैं तेरी मह़ब्बत में कमज़ोर नहीं 494
रूह़ानी बदन और आस्मानी अ़क़्लें 494
सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِ का रिक़्क़त अंगेज़ बयान 496
दिल की सियाही कैसे दूर हो ? 498
सय्यिदुना उ़तबा ग़ुलाम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ السَّلَام की हिकायत 500
बयान 46 : विसाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم 501
ह़म्दे बारी तआ़ला 501

सरकार ﷺ ने कब पर्दा फ़रमाया ?	506
सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर को इमामत का हुक्म	507
प्यारे आक़ा ﷺ का आख़िरी ख़ुत्बा	508
मलकुल मौत का इजाज़त तलब करना	508
सरकारे आ़ली वक़ार ﷺ का पसीनए ख़ुश्बूदार	510
अ़ज़मते सय्यिदा आइशा رضی اللہ تعالٰی عنہا	510
उम्मते मुस्तफ़ा पर ख़ुसूसी करम	511
सरकार का विसाल और सहाबए किराम का हुज़्नो मलाल	513
बयान 47 : अनोखे वाक़िआत	516
ह़म्दे बारी तआ़ला	516
कषरते इबादत करने वाला जन्नती	516
सरकार ﷺ का वसीला राहिबों के काम आ गया	520
राहिब के 62 सुवालात और अबू यज़ीद बिस्तामी के जवाबात	521
एक महफ़ूज़ क़ल्आ़ और उ़म्दा ज़िरह	530
बयान 48 : निकाहे अ़ली व फ़ातिमा	531
ह़म्दे बारी तआ़ला	531
इन्सानी हूर	531
सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ تعالٰی عنہا का निकाह	532
हज़रते अ़ली رضی اللہ عنہ की बारगाहे मुस्तफ़ा ﷺ में ह़ाज़िरी	534
आस्मान पर निकाह और फ़िरिश्तों की बारात	535
ख़ुत्बए निकाह	537
सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ تعالٰی عنہا का जहेज़	538
सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ تعالٰی عنہا की रुख़्सती	539
हज़रते सय्यिदुना अ़ली رضی اللہ عنہ का वलीमा	540
इबादत हो तो ऐसी	541
हज़रते अ़ली رضی اللہ عنہ को आक़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلم की नसीहत	542
बयान 49 : मौत और इस में ग़ौरो फ़िक्र का बयान	544
ह़म्दे बारी तआ़ला	544
मलकुल मौत علیہ السلام का ए'लान	545
हर उ़म्र मौत का शिकार	546
ख़ौफ़नाक सूरत	548
क़ब्र की डांट (क़ब्र की पुकार)	550
गिर्यए उ़षमानी	550
रूह़ की दर्दनाक बातें	551
इब्ने आदम की ह़िर्स	552
बयान 50 : आ़ली रुत्बा ख़वातीन	558
ह़म्दे बारी तआ़ला	558
दोनों हाथ सोने की अशरफ़ियों से भर गए	560
इश्क़े इलाही में दीवानी	563
बयान 51 : ईदों की ईद	569
ह़म्दे बारी तआ़ला	569
नूरे मुह़म्मदी की चमक दमक	571
जिस सुहानी घड़ी चमका तृयबा का चांद	573
सय्यिदतुना ह़लीमा सा'दिय्या की सआ़दत मन्दी	580
प्यारी प्यारी दुआ़	584
बयान 52 : ज़ियारते रौज़ए रसूल	586
ह़म्दे बारी तआ़ला	586
जन्नत की क्यारी	589
आ'राबी को नवीदे बख़्शिश मिल गई	590
सरकार ﷺ ने रोटी अ़ता फ़रमाई	591
ज़ियारते रौज़ए अक़्दस करने के दस फ़वाइद	593
तमन्नाए ज़ियारत की दुआ़	594
बयान 53 : मनाक़िबे ख़ुलफ़ाए राशिदीन	596
ह़म्दे बारी तआ़ला	596
इन्सानी चेहरे वाला जानवर	605
बयान 54 : सलातो सलाम का बयान	608
ह़म्दे बारी तआ़ला	608
रुख़े मुस्तफ़ा ﷺ की नूरानिय्यत	610
हज़रते सय्यिदतुना ह़व्वा का ह़क़्क़े महर	614
ऊंट बोल उठा	615
ब आवाज़े बुलन्द दुरूद पढ़ने वालों की बख़्शिश हो गई	616
सरकार ﷺ ने चेहरे की सियाही दूर फ़रमा दी	617
बयान 55 : لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहने के फ़ज़ाइल व कमालात	620
ह़म्दे बारी तआ़ला	620
बाज़ार में दाख़िल होने की दुआ़	626
बयान 56 : रह़मते इलाही की वुस्अ़त का बयान	629
ह़म्दे बारी तआ़ला	629
सय्यिदुना वह़्शी और उन के दोस्तों का क़बूले इस्लाम	632
बे अ़मल लोगों पर भी रह़मते ख़ुदावन्दी	636
क़ब्र की तन्हाई और रह़मते ख़ुदावन्दी	640
रह़मते इलाही हर गुनहगार व नेकूकार को शामिल है	641
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पांच पसन्दीदा कलिमात	642
माख़ज़ो मराजेअ़	644
अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की कुतुबो रसाइल का तआ़रुफ़	648

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

इब्तिदाइय्या

(ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा शोऐ़ब ह़रीफ़ीश رَحْمَةُ اللهِ تعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं) येह किताब (الروض الفائق فی المواعظ والرقائق) चन्द तक़ारीर, अह़ादीष, क़साइद, हि़कायात, नसीह़त आमोज़ बातों, सालिह़ीन के उ़म्दा आ़दात व ख़साइल, मशाइख़ व आ़रिफ़ीन के ज़िक्र और ग़फ़्लत की नींद सोने वाले गुनहगारों को ज़िक्रे इलाही याद दिलाने नीज़ इन को बेदार करने पर मुश्तमिल है । मैं ने इस किताब को सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़िक्रे ख़ैर से मुज़य्यन किया है। और क़साइद या'नी औलियाए किराम رحمہم اللہ تعالیٰ اجمعین की नज़्मों और फ़ु-ज़लाए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के कलाम के इशारों से आरास्ता किया है, जो सुनने वाले को ख़ुश करते हैं, उसे लज़्ज़त देते हैं और ख़ुशूअ़ पैदा करने और आंसू बहाने का सबब बनते हैं। इस से अपनी जान पर ज़ुल्म करने वाले, अपने गुनाहों का ए'तिराफ़ करने वाले, अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ की रह़मत की उम्मीद रखने वाले कि लिये अरह़मुर्राह़िमीन की रह़मत और तमाम मुसलमानों के लिये नफ़्अ़ मक़्सूद है। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस को, उस के वालिदैन को और उस शख़्स को बख़्शिश अ़त़ा फ़रमाए जो इन सब के लिये रह़मत व मग़फ़िरत की दुआ़ करे ।

(اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰی علیه واٰلهٖ وسلَّم)

बयान 1 : दुरूदे पाक और बिस्मिल्लाह शरीफ़ के फ़ज़ाइल

प्यारे इस्लामी भाइयो !

जान लीजिये ! येह किताब मेरा सरमाया है, मैं तुम्हें पेश करता हूं, इसे क़बूल कर लीजिये। जो शख़्स इस में अच्छी बात पाए तो उसे चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द बजा लाए और हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक की कषरत करे और जो इस के इलावा देखे तो उसे "لَا حَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّابِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم" पढ़ना चाहिये क्यूंकि येह कोताहियों की कमी और टूटे हुए दिलों की दुरुस्तगी का बाइष है। सहीह ह़दीषे पाक में है कि "येह (या'नी لَا حَوْلَ शरीफ़) जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है।"

(صحيح البخاری،كتاب الدعوات،باب الدعاء،الحديث ٦٣٨٤،ص ٥٣٦)

जान लीजिये ! कोई शख़्स कमी, फ़साद, ख़ता और लग़्ज़िश से मह़फ़ूज़ नहीं, सिवाए फ़ज़ीलत वाले नबी और इ़ज़्ज़त वाले रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के जो वस्फ़े कामिल के मालिक, दरमियाने क़द वाले, फ़ज़्लो कमाल वाले और आ'ला ख़साइल के जामेअ़ हैं, जिन्हें जवामिउ़ल कलिम[1] अ़ता किये गए और इ़ल्मो फ़ज़्ल, अ़क़्ल और इन्आ़म के साथ ख़ास किया गया।

وَهُوَ الَّذِىْ قَدْ حَازَ كُلَّ الْكَمَالِ ❊ وَخُصَّ بِالْفَضْلِ وَحُسْنِ الْمَقَالِ
وَهُوَ الَّذِىْ قَدْ جَآءَ نَا رَحْمَةً ❊ مُفَرِّقًا بَيْنَ الْهُدٰى وَالضَّلَالِ
مُحَمَّدُنِ الْمَبْعُوْثُ مِنْ هَاشِمٍ ❊ اَفْضَلُ مَنْ حَازَ جَمِيْعَ الْخِصَالِ
صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ طُوْلَ الْمُدٰى ❊ مَا عَطَّرَ الْكَوْنَ نَسِيْمُ الشِّمَالِ

तर्जमा : (1)....हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ही वोह हस्ती हैं जो हर कमाल की जामेअ़ है और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़ज़्लो कमाल और उ़म्दा कलाम के साथ ख़ास हैं।

(2)....और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हिदायतो गुमराही के दरमियान फ़र्क़ करते हुए हमारे पास रह़मत बन कर तशरीफ़ लाए।

(3)....ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم (क़बीलए) बनू हाशिम से मबऊ़ष हुए, आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अफ़्ज़ल हैं जिन्हों ने तमाम अच्छी आ़दात को जम्अ़ फ़रमा लिया।

(4)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर अ़रसए दराज़ तक रह़मत नाज़िल फ़रमाए जब तक कि शुमाल की ख़ुशगवार हवा काइनात को मुअ़त्तर करती रहे।

ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है :
जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है।"

(صحيح مسلم،كتاب الصلاة،باب الصلاة على النبی صلی اللّٰه عليه وسلم بعدالتشهد،الحديث ٩١٢، ص٧٤٣)

1...जवामिउ़ल कलिम से मुराद ऐसे कलिमात हैं जो इ़बारत के लिह़ाज़ से मुख़्तसर और मआ़नी व मत़ालिब के लिह़ाज़ से जामेअ़ हों। (कौषरुल ख़ैरात, स. 55)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अपने दिलों को ह़ाज़िर रख कर ख़ूब ग़ौरो फ़िक्र करो, और अपनी अ़क़्लों से इम्तियाज़ करो और देखो ! वोह हस्ती जो तुम पर रह़्म फ़रमाए, तुम्हें किफ़ायत करे और एक दुरूद के बदले दस रह़्मतों की जज़ा अ़त़ा फ़रमाए तो कौन सा नफ़्अ़ इस से बढ़ कर है ? और इस से ज़ियादा नफ़्अ़ बख़्श कौन सा सौदा है ? ऐ ताजिरों के वोह गुरौह जो दिरहमो दीनार कमाने में रग़बत रखते हो ! अगर तुम में से किसी से कहा जाए कि फ़ुलां शहर में एक दिरहम के सामान से दो दिरहम कमा सकते हो और एक दीनार के सामान से दो दीनार तो तुम लोग वहां जाने में जल्दी करोगे, तकलीफ़ बर्दाश्त करोगे, एक दूसरे से बढ़ कर कोशिश करोगे, इस लिये कि इस में नफ़्अ़ व फ़ाइदा है (येह तो दुन्यवी तिजारत है) पस उस नफ़्अ़ बख़्श (उख़्रवी) सामान और सहल व आसान तिजारत के इ़वज़ कैसा नफ़्अ़ मिलेगा ? जिस के मुतअ़ल्लिक़ तुम्हें सादिक़ो अमीन ज़ात ने रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ के ह़वाले से ख़बर दी कि जब भी तुम अपने नबी (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ोगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर इस के बदले दस रह़्मतें नाज़िल फ़रमाएगा। तो ज़रा इस नफ़्अ़ को भी देखो और हाथ बढ़ा कर इस फल को भी तोड़ कर चखो।

इस मा'ना में चन्द अश्आ़र हैं, जिन का मफ़्हूम येह है : "जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुआ़मला किया उस की तिजारत में घाटा नहीं, हर वीरान दिल अपनी उ़म्र में तक़्वा से आबाद होता है और तू नबिय्ये मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ता है मगर रब्ब عَزَّوَجَلَّ तुझ पर दस रह़्मतें नाज़िल फ़रमाता है। ऐ शख़्स ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर अपने दुरूदे पाक पढ़ने को ग़नीमत जान ! तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां नफ़्अ़ पाने में कामयाब हो जाएगा कि कामयाब वोही है जो उस का शुक्र बजा लाता है।"

ऐ अ़ज़ीम सच्चे फ़ुक़राए किराम के गुरौह ! हम ने तुम से फ़ाइदा उठाया और तुम से अह़ादीष रिवायत कीं, तुम्हारी वजह से हम पर रह़्म किया गया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तुम्हारा ज़िक्रे ख़ैर इस लिये नहीं कर रहा कि तुम्हें भलाई का हुक्म दूं और बुराई से मन्अ़ करूं। बल्कि मेरे सामने तो किसी कहने वाले का येह क़ौल है : "اِحْيَآءَ الْقُلُوْبِ اِرْحَمُوْا اَمْوَاتَ الْقُلُوْب या'नी ऐ ज़िन्दा दिल वालो ! मुर्दा दिल वालों पर रह़्म करो।" और तुम्हारे लिये शर्फ़ व फ़ख़्र के त़ौर पर येही फ़ज़ीलत काफ़ी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी किताब में तुम्हारी ता'रीफ़ फ़रमाई और तुम्हें अपने ख़ित़ाब से मुशर्रफ़ फ़रमाया। चुनान्चे इरशादे बारी तआ़ला है :

لِلْفُقَرَآءِ الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا فِي الْاَرْضِ ﴿1﴾ (پ۳،البقرۃ:۲۷۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन फ़क़ीरों के लिये जो राहे ख़ुदा में रोके गए ज़मीन में चल नहीं सकते।*[1]

1...मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका ......(**बक़िय्या ह़ाशिय्या अगले सफ़्ह़े पर**)

और तुम्हें मुबारक हो कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने तुम्हारा ज़िक्र करते हुए इरशाद फ़रमाया : "ऐ फ़ुक़रा के गुरौह ! सब्र करो यहां तक कि तुम हौज़े (कौषर) पर मुझ से मिलो और बेशक तुम सब से पहले मेरे पास आओगे ।"

(فضائل الصحابة لابن حنبل،الحديث ١٤٤٩،الجزء٢،ص٨٠٥،بدون"يامعشرالفقراء")

पस पाक है वोह ज़ात जिस ने तुम्हें ख़ुशी व मसर्रत और कमाल अ़ता फ़रमाया ! तुम से मह़ब्बत की और तुम्हें फ़क्र इख़्तियार करने की तरग़ीब दी और नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने आ़लीशान के साथ तुम्हें इस के मांगने का हुक्म फ़रमाया कि "मेरी उम्मत के फ़ुक़रा, अमीरों से निस्फ़ दिन पहले जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे और वोह (निस्फ़ दिन) पांच सो साल का होगा, वोह खाएंगे, पियेंगे, ने'मतें लूटेंगे, और लोग ह़िसाब के ग़म में होंगे ।" (المسندللامام احمد بن حنبل،مسند ابی هريرة،الحديث١٠٧٣٥،ج٣،ص٦٠٥)

(جامع الترمذی،ابواب الزهد،باب ما جاء ان فقراء......الخ، الحديث٢٣٥٤، ص١٨٨٨)

पाक है वोह ज़ात जिस ने फ़ुक़रा के मक़ाम को बुलन्द किया ! उन के ज़िक्र को आ़म किया, सब्र अ़ता किया, उन के लिये अज्र व षवाब दुगना कर दिया । और क्या ही अच्छा कलाम है जो उन के ग़ुलाम ह़रीफ़ीश رَحۡمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه ने उन की शान में कहा है :

هُمُ الْفُقَرَآءُ اَهْلُ اللّٰهِ حَقًّا ۔۔۔ وَقَدْ حَازُوْا بِضِيْقِ الْفَقْرِ فَخْرًا

هُمُ الْفُقَرَآءُ قَدْ صَبَرُوْا وَاُوْذُوْا ۔۔۔ فَعَوَّضَهُمْ بِذَاكَ الصَّبْرِ اَجْرًا

هُمُ الْفُقَرَآءُ وَالسَّادَاتِ حَقًّا ۔۔۔ وَّمِنْهُمْ تَكْتَسِى الْاَكْوَانُ عِطْرًا

هُمُ الْفُقَرَآءُ عَنْهُمْ فَارَ وَذِكْرًا ۔۔۔ وَحَدَثَ عَنْهُمُوْ سِرًّا وَّجَهْرًا

فَكَمْ صَبَرُوْا عَلٰى ضَيْمِ اللَّيَالِىْ ۔۔۔ فَعَوَّضَهُمْ بِذَاكَ الْكَسْرِ جَبْرًا

وَقَدْ زَارُوْا الْحَبِيْبَ وَشَاهَدُوْهُ ۔۔۔ وَقَدْ سَجَدُوْا لَهٗ حَمْدًا وَّشُكْرًا

तर्जमा : (1).....यक़ीनन फ़ुक़रा ही अल्लाह वाले हैं, तह़क़ीक़ फ़क्र की तंगी के बदले उन्हों ने फ़ख़्र (या'नी बुलन्द मक़ाम) को पा लिया ।

(2)....उन्हों ने सब्र किया और अज़िय्यतें झेलीं तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें इस सब्र पर अज्र अ़ता फ़रमाया ।

(3).....येही लोग ह़क़ीक़ी फ़ुक़रा और सरदार हैं और इन्ही की ब दौलत काइनात ख़ुश्बू में लिपटी हुई है ।

(**बक़िय्या ह़ाशिया**)....... के तह़्त फ़रमाते हैं : "या'नी सदक़ाते मज़्कूरा जो आयए "وَمَا تُنفِقُوا۟ مِنۡ خَيۡرٍ" में ज़िक्र हुए इन का बेहतरीन मस्रफ़ वोह फ़ुक़रा हैं जिन्हों ने अपने नुफ़ूस को जिहाद व ताअ़ते इलाही पर रोका । **शाने नुज़ूल :** येह आयत अहले सुफ़्फ़ा के ह़क़ में नाज़िल हुई, इन ह़ज़रात की ता'दाद चार सो के क़रीब थी, येह हिजरत कर के मदीनए त़य्यिबा ह़ाज़िर हुए थे । न यहां इन का मकान था, न क़बीला, न कुम्बा, न इन ह़ज़रात ने शादी की थी । इन के तमाम अवक़ात इबादत में सर्फ़ होते थे, रात में क़ुरआने करीम सीखना दिन में जिहाद के काम में रहना । आयत में इन के बा'ज़ औसाफ़ का बयान है ।"

(4)....येही फ़ुक़रा हैं कि जिन से ख़ुश्बू फैली और येह लोग सिर्रन व जहरन (या'नी आहिस्ता और बुलन्द आवाज़ से) ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल रहते हैं।

(5)....कितनी ही बार इन्हों ने ज़माने की सख़्तियों पर सब्र किया लिहाज़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस सब्र के इ़वज इन को दुरुस्ती अ़ता फ़रमा दी।

(6)....इन्हों ने अल्लाह तआ़ला का मुशाहदा और दीदार किया और उस की ह़म्द और शुक्र बजा लाते हुए उस की बारगाह में सजदा रेज़ हो गए।

ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुक़र्रब बन्दो ! उस ज़ात की क़सम जिस ने तुम पर इन्आ़म और एह़साने अ़ज़ीम फ़रमाया ! बेशक हम चाहते हैं कि तुम हमारी ख़ामियां दूर करो, हमारी मदद करो, और नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ने में हमारे साथ अपनी आवाज़ों को बुलन्द करो। बेशक जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है, तो येह नव (9) गुना मज़ीद रह़मत नाज़िल होगी, तो क्या कोई नफ़्अ़ या फ़ाइदा इस से बढ़ कर है ?

हु़ज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है : "जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है, और जिस ने दस बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें भेजता है, और जिस ने सो बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर हज़ार रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है, और जिस ने हज़ार बार दुरूदे पाक पढ़ा मैं और वोह जन्नत के दरवाज़े पर एक साथ होंगे।" (المعجم الاوسط،الحديث٧٢٣٥،ج٥، ص٢٥٢، مختصر۔ القول البديع فی الصلاۃ علی الحبيب الشفيع للسخاوی،الباب الثانی فی ثواب الصلاۃ والسلام علی رسول اللّٰہ،ص٢٤١)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अब क्या कोई दुरूदे पाक पढ़ने वाले ख़ुश नसीब के फ़ज़ाइल बयान कर सकता है ? जब कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रोबर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि "जिस ने हज़ार बार मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ा मैं और वोह जन्नत के दरवाज़े पर एक साथ होंगे।"

صَلُّوْا عَلَى الْهَادِيِّ الْبَشِيْرِ مُحَمَّدٍ   تَحَظُّوْا مِنَ الرَّحْمٰنِ بِالْغُفْرَانِ

فَاللّٰهُ قَدْ اَثْنٰى عَلَيْهِ مُصَرِّحًا   فِیْ مُحْكَمِ الْاٰيَاتِ وَالْقُرْاٰنِ

तर्जमा : (1)....तुम हिदायत और ख़ुश ख़बरी देने वाले ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ो रह़मान عَزَّوَجَلَّ से मग़फ़िरत का ह़िस्सा पाओगे।

(2)....तह़क़ीक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वाज़ेह़ निशानियों और क़ुरआने पाक में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सराह़तन ता'रीफ़ फ़रमाई।

मन्क़ूल है कि जो शख़्स आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर खड़ा हो कर दुरूदे पाक पढ़े तो बैठने से पहले और अगर बैठ कर पढ़े तो खड़े होने से पहले बख़्श दिया जाता है। और जो नींद की ह़ालत में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़े बेदार होने से पहले बख़्श दिया जाता है।

और येह इस त़रह़ है कि बन्दा जब तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे कुफ़्र की ह़ालत में ज़िन्दगी बसर करता रहता है, और जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उस को कलिमए शहादत इल्हाम कर देता है, और कोई मुसलमान उस के पास जा कर उसे कलिमए शहादत की तल्क़ीन करता है और उस के सामने बार बार कलिमा पढ़ता है। फिर वोह (मुसलमान) उस को कहता है : ''ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़।'' जब वोह ऐसा करता है और अपने इस्लाम में हुस्न पैदा करता है और नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ता है, तो अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले बख़्श दिया जाता है।

صَلُّوا عَلٰی خَیرِ الْاَنَامِ مُحَمَّدٍ اِنَّ الصَّلٰوۃَ عَلَیۡہِ نُوْرٌ یَعۡقِدُ
مَنۡ کَانَ صَلَّی قَاعِدًا یُّغۡفَرُ لَہٗ قَبۡلَ الۡقِیَامِ وَلِلۡمَتَابِ یُجَدَّدُ
وَ کَذَاكَ اِنۡ صَلَّی عَلَیۡہِ قَآئِمًا یُغۡفَرُ لَہٗ قَبۡلَ الۡقُعُوۡدِ وَیُرۡشَدُ

तर्जमा : (1)....मख़्लूक़ में सब से बेहतर ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ो, बेशक उन पर दुरूदे पाक पढ़ना ऐसा नूर है जो ज़ामिन है। या'नी बख़्शिश की गेरंटी है।

(2)....जो बैठने की ह़ालत में दुरूदे पाक पढ़े उसे खड़ा होने से पहले बख़्श दिया जाता है। और तौबा करने वाले को गुनाहों से पाक कर दिया जाता है।

(3)....और ऐसे ही अगर खड़े हो कर दुरूदे पाक पढ़े तो बैठने से पहले बख़्श दिया जाता और उस की रहनुमाई की जाती है।

उम्मे अबी बक्र رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنہا का क़बूले इस्लाम :

ह़दीषे पाक में है कि ''जो शख़्स ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, स़ाह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर नींद की ह़ालत में दुरूदे पाक पढ़ता है उसे बेदार होने से पहले बख़्श दिया जाता है।'' जैसा कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنہُ की वालिदए माजिदा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنہا के साथ हुवा (आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنہُ की वालिदा ह़ज़रते सय्यिदतुना सलमा बिन्ते सुख़्र رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنہا अभी मुसलमान नहीं हुई थीं) आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنہُ रात के इब्तिदाई ह़िस्से में अपनी वालिदए मोह़तरमा के साथ सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنہُ से कुछ गुफ़्त्गू फ़रमाई, उन्हें आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बातें बहुत भली लगीं, रात त़वील हो गई और आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنہُ की वालिदए माजिदा सो गईं। जब उन्हों ने लौटने का इरादा किया तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنہُ से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''तुम्हारा क्या ह़ाल है ?'' अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं तो ख़ैरियत से हूं मगर येह मेरी मां है, इस के बिग़ैर मेरा कोई चारा नहीं, ऐ तमाम लोगों के सरदार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इन के लिये दुआ फ़रमाइये कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इन को इस्लाम की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दे।" पस आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने हाथों को कुशादा किया, होंटों से धीमी धीमी आवाज़ निकाली, और उन के लिये दुआ की, तो वहां मौजूद एक सहाबिये रसूल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) का कहना है कि "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! हम ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वालिदए माजिदा को हालते नींद में कलिमए शहादत पढ़ते सुना।" और जब वोह बेदार हुईं तो बुलन्द आवाज़ से पढ़ा : "اَشْھَدُاَنْ لَّاۤاِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ" या'नी मैं गवाही देती हूं कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और (हज़रते सय्यिदुना) मुहम्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं।" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वालिदए माजिदा को ह़दीषे रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की तस्दीक़ में बेदारी से पहले ही बख़्श दिया गया।

इसी की मिष्ल कई लोगों के बे शुमार वाक़िआत हैं, जो पहले मुसलमान न थे फिर उन्हों ने ख़्वाब में सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर दगार صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم का दीदार किया, और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हाथ पर इस्लाम क़बूल कर लिया, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ा फिर जब वोह बेदार हुए तो उन की बख़्शिश हो चुकी थी :

هَنِيْأً لِعَيْنٍ قَدْ رَأَتْ نُوْرَ اَحْمَدَ ... وَفَازَتْ جِهَارًا مِنْهُ بِالْحُسْنِ وَالرُّؤْيَا
وَقَدْ اَسْعَدَ الرَّحْمٰنُ عَبْدًا دَعَا لَهٗ ... فَاَضْحٰى سَعِيْدًا فِى الْمُمَاتِ وَفِى الْمَحْيَا
وَبَدَّلَ دِيْنَ الشِّرْكِ بِالنُّوْرِ وَالْهُدٰى ... بَلَغَ مَا يَهْوٰى مِنَ الدِّيْنَ وَالدُّنْيَا
وَفَازَ بِرُؤْيَا الْمُصْطَفٰى سَيِّدِ الْوَرٰى ... نَبِىٌّ حَبَاهُ اللّٰهُ بِالرُّتْبَةِ الْعُلْيَا
عَلَيْهِ صَلَاةُ اللّٰهِ مَا طَافَ طَائِفٌ ... بِمَكَّةَ بَيْتِ اللّٰهِ قَصْدًا أَتٰى سَعْيَا
صَلَاةٌ شَذَاهَا عِطْرُ الْكَوْنِ جَهْرَةً ... فَمَنْ قَاسَهَا بِالْمِسْكِ يَوْمًا فَمَا اسْتَحْيَا

तर्जमा : (1)....मुबारक हो उस आंख को जिस ने नूरे मुहम्मदी عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का जल्वा देखा और ख़्वाब में हुज़ूर पुरनूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हुस्ने सरमदी (या'नी दाइमी हुस्न) को बिला हिजाब देखने में कामयाब हो गई।

(2)....रह़मान عَزَّ وَجَلَّ ने उस बन्दे को नेक बख़्त किया जिस ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये दुआ की (या'नी आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ा) तो वोह ज़िन्दगी और मौत में सआदत मन्द हो गया।

(3)....और उस ने शिर्क वाले दीन को नूर व हिदायत से बदल लिया और दीनो दुन्या की बुलन्दियों को पा लिया।

(4)....और वोह मख़्लूक़ के सरदार मुस्तफ़ा करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दीदार की ब दौलत कामयाब हो गया, जो ऐसे नबी عَلَیْہِ السَّلَام हैं जिन्हें **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने बिग़ैर किसी बदले के बुलन्द व बाला मरतबा अ़ता फ़रमाया।

(5)....आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की रह़मतें नाज़िल होती रहें जब तक मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में त़वाफ़ करने वाले बैतुल्लाह शरीफ़ के त़वाफ़ का क़स्द करते रहें।

(6)....दुरूदे पाक की ख़ुश्बू वाज़ेह तौर पर काइनात का इत्र है, तो जिस ने किसी दिन कस्तूरी के साथ इस का मुवाज़ना किया तो क्या उस को शर्म न आई।

दुरूदे पाक पढ़ने वाले पर इन्आमे ख़ुदावन्दी :

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मेरा एक गुनाहगार पड़ोसी था, नशे की वजह से उसे सुब्हो शाम का इल्म न होता, मैं उसे वा'ज़ व नसीहत करता लेकिन वोह क़बूल न करता, तौबा की तरग़ीब देता मगर वोह तौबा न करता, उस के इन्तिक़ाल के बा'द मैं ने उस को ख़्वाब में बुलन्द मक़ाम पर फ़ाइज़ देखा, उस पर जन्नत के ए'ज़ाज़ो इकराम का लिबास था। मैं ने उस से दर्याफ़्त किया : "किस काम के सबब तू ने येह मक़ामो मर्तबा पाया ?" तो उस ने जवाब दिया : "मैं एक दिन महफ़िले ज़िक्र में हाज़िर हुवा तो मैं ने एक मुहद्दिष (या'नी हदीष बयान करने वाले) को कहते हुए सुना कि "जिस शख़्स ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تعَالٰی عَلَیْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم पर बुलन्द आवाज़ से दुरूदे पाक पढ़ा उस के लिये जन्नत लाज़िम हो गई।" फिर उन्हों ने प्यारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تعَالٰی عَلَیْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم पर ब आवाज़े बुलन्द दुरूदे पाक पढ़ा, मैं ने भी उन के साथ बुलन्द आवाज़ से दुरूदे पाक पढ़ा और दीगर लोगों ने भी अपनी आवाज़ों को बुलन्द किया तो उसी दिन हम सब को बख़्श दिया गया। मग़फ़िरत का मेरा येह हिस्सा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने मुझे इस ने'मत (या'नी दुरूदे पाक के पढ़ने) की बरकत से अता किया है।"

يَا فَوْزَ مَنْ صَلّٰى عَلَيْهِ فَاِنَّهٗ يَحْوِى الْاَمَانِىْ بِالنَّعِيْمِ السَّرْمَدِىْ
اِنْ شِئْتَ بَعْدَ الضَّلَالَةِ تَهْتَدِىْ صَلِّ عَلَى الْهَادِىْ النَّبِيِّ مُحَمَّدِ
يَا قَوْمَنَا صَلُّوْا عَلَيْهِ لِتَظْفَرُوْا بِالْبِشْرِ وَالْعَيْشِ الْهَنِيِّ الْاَرْغَدِ
وَيَخُصَّكُمْ رَبُّ الْاَنَامِ بِفَضْلِهٖ وَالْفَوْزِ بِالْجَنَّاتِ يَوْمَ الْمَوْعِدِ
صَلّٰى عَلَيْهِ اللّٰهُ جَلَّ جَلَالُهٗ مَا لَاحَ فِى الْاٰفَاقِ نَجْمُ الْفَرْقَدِ

तर्जमा : (1)....कामयाब वोह है जिस ने आप صَلَّى اللهُ تعَالٰی عَلَیْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ा इस लिये कि वोह हमेशा रहने वाली और ने'मत वाली जगह (या'नी जन्नत) में ख़्वाहिशात जम्अ़ करता है।

(2)....अगर तू गुमराही के बा'द हिदायत हासिल करना चाहे तो हिदायत देने वाले नबी हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّى اللهُ تعَالٰی عَلَیْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़।

(3)....ऐ लोगो ! दुरूदे पाक पढ़ो ताकि कुशादा रूई और आराम देह मुबारक ज़िन्दगी पा कर कामयाबी हासिल कर लो।

(4)....और ताकि तुम्हें रब्बुल अनाम عَزَّ وَجَلَّ बरोज़े क़ियामत अपने फ़ज़्ल और जन्नत (को हासिल करने) की कामयाबी के साथ ख़ास कर दे।

(5)....आप صَلَّى اللهُ تعَالٰی عَلَیْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم पर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ दुरूदे पाक भेजे जब तक आसमान के कनारों में फ़रक़द (या'नी क़ुत्बी) सितारा चमकता रहे।

ईसाले षवाब ने अज़ाबे क़ब्र से बचा लिया :

सरकारे दो आलम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ने के फ़ज़ाइल में बयान किया गया है कि "एक औरत का बेटा था जो बहुत गुनहगार था। वोह उस को नेकी का हुक्म देती, बे हयाई और बुरे कामों से मन्अ करती (लेकिन वोह बाज़ न आता) आख़िरे कार तक़दीर उस पर ग़ालिब आई और वोह गुनाहों की हालत में मर गया। उस की मां को बहुत सदमा हुवा कि उस का बेटा बिग़ैर तौबा किये मर गया। उस ने तमन्ना की, कि उसे ख़्वाब में देखे। एक दफ़्आ उस ने ख़्वाब में अपने बेटे को अज़ाब में मुब्तला देखा तो वोह मज़ीद ग़मगीन हो गई। जब कुछ मुद्दत के बा'द उस ने दोबारा अपने बेटे को देखा तो उस की हालत अच्छी थी और वोह ख़ुश व ख़ुर्रम था। उस ने अपने बेटे से इस हालत के मुतअ़ल्लिक़ पूछा कि "ऐ मेरे बेटे ! मैं ने तुझे अ़ज़ाब में मुब्तला देखा था, येह मरतबा व मक़ाम कैसे मिला ?" तो उस ने जवाब दिया : "ऐ मेरी मां ! एक गुनहगार शख़्स हमारे क़ब्रिस्तान से गुज़रा, उस ने क़ब्रों की तरफ़ देखा और दोबारा ज़िन्दा उठाए जाने के मुतअ़ल्लिक़ ग़ौरो फ़िक्र किया। मुर्दों से नसीहत हासिल की, अपनी लग़्ज़िश पर रोया और अपनी ख़ताओं पर नादिम हो कर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में तौबा की, कि अब वोह कभी गुनाहों की तरफ़ न पलटेगा। तो उस की तौबा से आसमान के फ़िरिश्ते बहुत ख़ुश हुए और कहने लगे : سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! इस शख़्स ने अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ के साथ क्या ही ख़ूब सुल्ह की है। जब उस ने सच्ची तौबा कर ली तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने उस की तौबा क़बूल फ़रमा ली, फिर उस ने कुछ क़ुरआने हकीम पढ़ा और हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर बीस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा और उस का षवाब हम सब क़ब्रिस्तान वालों को पहुंचाया। उस का षवाब हम पर तक़्सीम किया गया तो मुझे भी उस से भलाई मिली जिस के सबब **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया और मुझे वोह मक़ाम अ़ता किया गया जो आप मुलाहज़ा फ़रमा रही हैं। ऐ अम्मी जान ! याद रखिये ! हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ना दिलों का नूर, गुनाहों का कफ़्फ़ारा और ज़िन्दों और मुर्दों के लिये रहमत है।"

शाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم :

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उस फ़ज़ीलत के मालिक हैं जो हद्दो शुमार से बाहर है, और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शान मख़्लूक़ के दरमियान हमेशा बुलन्द होती रहेगी। क़ुरशी व हाशिमी नबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक सैर की, पस जब आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ज़ाते बारी तआला के क़रीब हुए तो दो हाथ जितना फ़ासिला भी न था, पाक है वोह ज़ात जिस ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को अ़ता फ़रमाया जो कुछ भी अ़ता फ़रमाया। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की तरफ़ ऐसी बेहद व बे शुमार रहमतें नाज़िल हों जिन रहमतों की ता'रीफ़ की इन्तिहा नहीं। पाक है वोह ज़ात जिस ने हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन

صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को तमाम मख़्लूक़ पर शर्फ़ बख़्शा और मोअमिनीन पर मेहरबान बनाया, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़ज़्ले अज़ीम और ख़ुल्क़े करीम अ़ता फ़रमाया, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़रीए दिलों और जिस्मों की जहालतो गुमराही के अमराज़ से शिफ़ा अ़ता फ़रमाई और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को मक़्सद तक पहुंचाया और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़रीए बन्दों को सीधे रास्ते की हिदायत दी और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ हमें ता'ज़ीम का हुक्म फ़रमाया और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ही के लिये तकरीम और ता'ज़ीम है।

﴿2﴾ اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

(پ۲۲،الاحزاب:۵۶)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर ऐ ईमान वालो ! उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो।* (1)

बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में हदिय्यए दुरूदो सलाम

اَللّٰهُ زَادَ مُحَمَّدًا تَكْرِيْمًا ... حَبَاهُ فَضْلًا مِنْ لَّدُنْهُ عَظِيْمًا

وَاخْتَارَهٗ فِي الْمُرْسَلِيْنَ كَرِيْمًا ... ذَا رَأْفَةٍ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا

صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

يَا اُمَّةَ الْهَادِيْ خُصِّصْتُمْ بِالْوَفَا ... بَيْنَ الْوَرٰى وَالصِّدْقِ اَيْضًا وَالصَّفَا

صَلُّوْا عَلَى النَّبِيِّ الْهَادِيِّ الْمُصْطَفٰى ... فَاللّٰهُ قَدْ صَلّٰى عَلَيْهِ قَدِيْمًا

صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

---

(1)....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : "सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम भेजना वाजिब है, हर एक मजलिस में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्र करने वाले पर भी और सुनने वाले पर भी एक मरतबा, और इस से ज़ियादा मुस्तहब है। येही क़ौल मो'तमद है और इस पर जम्हूर हैं, और नमाज़ के क़ा'दए अख़ीरा में बा'दे तशह्हुद दुरूद शरीफ़ पढ़ना सुन्नत है, और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ताबेअ़ कर के आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के आल व अस्हाब व दूसरे मोअमिनीन पर भी दुरूद भेजा जा सकता है या'नी दुरूद शरीफ़ में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के नामे अक़्दस के बा'द इन को शामिल किया जा सकता है और मुस्तक़िल तौर पर हुज़ूर के सिवा इन में से किसी पर दुरूद भेजना मकरूह है। **मस्अला :** दुरूद शरीफ़ में आल व अस्हाब का ज़िक्र मुतवारिष है। और येह भी कहा गया है कि आल के ज़िक्र के बिग़ैर मक़्बूल नहीं। दुरूद शरीफ़ **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की तकरीम है। उ़-लमा ने اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ के मा'ना येह बयान किये हैं कि या रब्ब ! मुहम्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अ़ज़मत अ़ता फ़रमा, दुन्या में उन का दीन बुलन्द और उन की दा'वत ग़ालिब फ़रमा कर और उन की शरीअ़त को बक़ा इनायत कर के और आख़िरत में उन की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा कर और उन का षवाब ज़ियादा कर के और अव्वलीनो आख़िरीन पर उन की फ़ज़ीलत का इज़्हार फ़रमा कर और अम्बिया, मुर्सलीन व मलाइका और तमाम ख़ल्क़ पर उन की शान बुलन्द कर के। **मस्अला :** दुरूद शरीफ़ की बहुत बरकतें और फ़ज़ीलतें हैं, **ह़दीष शरीफ़** में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब दुरूद भेजने वाला मुझ पर दुरूद भेजता है तो फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत करते हैं। मुस्लिम की ह़दीष शरीफ़ में है : जो मुझ पर एक बार दुरूद भेजता है **अल्लाह** तआ़ला उस पर दस बार भेजता है। तिरमिज़ी की ह़दीष शरीफ़ में है : बख़ील वोह है जिस के सामने मेरा ज़िक्र किया जाए और वोह दुरूद न भेजे।"

فَمَتٰی اَرٰی الْحَادِیَّ یُبَشِّرُ بِاللِّقَا   وَیَضُمُّنَا بَابَ الْمُحَصَّبِ وَالنَّقَا
وَاَرٰی ضَرِیْحَ الْمصطفٰی قَدْ اَشْرَقَا   مَوْلٰی رَحِیْمًا لَا یَزَالُ حَلِیْمًا
صَلُّوْا عَلَیْہِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا
ثُمَّ الرِّضَا عَنْ آلِہِ الْکُرَمَاءِ   وَکَذَاکَ عَنْ اَصْحَابِہِ الْخُلَفَاءِ
فَهُمُوْ هُمُوْ دِیْنِیْ وَعَقْدُ وِلَائِیْ   قَوْمًا تَرَاهُمْ فِی الْمَعَادِ نَجُوْمًا
صَلُّوْا عَلَیْہِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا

तर्जमा : (1)....अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़त बढ़ाई और अपनी त़रफ़ से फ़ज़्ले अ़ज़ीम फ़रमाया और आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को तमाम रसूलों में करम वाला बनाया। येह मोअमिनीन के साथ मेहरबान और रह़ीम हैं, पस उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो।

(2)....ऐ हादी صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत ! तुम्हें तमाम मख़्लूक़ में से वफ़ा और सिदक़ो सफ़ा के साथ ख़ास किया गया है पस तुम हिदायत देने वाले नबी صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ो, क्यूंकि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ भी आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर हमेशा दुरूद भेजता है लिहाज़ा तुम भी उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो।

(3)....मैं कब ह़बीबे ख़ुदा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दीदार की ख़ुशख़बरी देने वाले सुवार को पाऊंगा जो हमें बाबे मुह़स्सब और रेत के टीलों की जानिब ले जाएगा और मैं मज़ारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का दीदार कर लूंगा जिस को रह़ीम व ह़लीम मौला ने मुनव्वर फ़रमा दिया है। पस उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो।

(4)....फिर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की करीम आल और आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ुलफ़ाए राशिदीन सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان से राज़ी हो, वोह मेरा दीन और मेरी मह़ब्बत की गिरह हैं, वोह ऐसे लोग हैं कि तुम उन्हें बरोज़े क़ियामत सितारों की त़रह़ देखोगे। पस उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो।

बिस्मिल्लाह शरीफ़ की फ़ज़ीलत :

बेशक सब से पहले जिस कलाम से ज़बान गुफ़्तगू का आग़ाज़ करे, वोह येह है कि इन्सान बादशाहे ह़क़ीक़ी عَزَّ وَجَلَّ के नाम से इब्तिदा करे। जिस की हमें काइनात के सरदार, मह़बूबे परवरदगार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने इस फ़रमान से ख़बर दी कि "जो भी अहम काम بِسْمِ اللہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ से शुरूअ़ नहीं किया जाता वोह ना मुकम्मल रहता है।

(الدر المنثور، سورۃ الفاتحہ، ج۱ ص۲٦)

या'नी वोह काम हर आन बरकत से ख़ाली होता है क्यूंकि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के नाम में ऐसी बरकत है कि हर जगह उस के ज़रीए ख़ुश्बू ह़ासिल की जाती है, और वोह ज़ाहिरो पोशीदा ख़ूबसूरत नूर है और रुकावटें दूर करता और अमान देता है।"

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि "अल्लाह के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो भी अहम काम بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ से शुरूअ़ नहीं किया जाता वोह अधूरा रह जाता है।" (المرجع السابق)

एक रिवायत में اَقْطَعُ की जगह اَجْذَمُ का लफ़्ज़ है। इस का मा'ना है, नाक़िस और कम बरकत वाला।

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُمَا से मरवी है, फ़रमाते हैं कि मैं ने हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم को येह इरशाद फ़रमाते सुना : "लोगों में और रूए ज़मीन पर चलने वालों में सब से बेहतर इल्म सिखाने वाले हैं। क्यूंकि जब से दीन ज़ाहिर हुवा इन्हों ने इस की तजदीद की, लोगों को दीन सिखाया लेकिन इन से उजरत तलब न की। और जब उस्ताज़ बच्चे को कहता है : "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस बच्चे, उस के वालिदैन और उस्ताज़ के लिये जहन्नम से बराअत (या'नी रिहाई) लिख देता है।" (تفسير القرطبی،البقرة،تحت الآية ٤١،الجزء الاول تحت ج ١،ص ٢٧٧)

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُمَا ने इरशाद फ़रमाया : जब بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ नाज़िल हुई तो बादल मश्रिक़ से मग़रिब की सम्त दौड़े, हवाएं साकिन हो गईं, समन्दर जोश में आ गया, चोपायों ने ग़ौर से सुनने के लिये अपने कान लगा दिये, शैतानों पर पथ्थर बरसाए गए, और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! जिस शै पर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ी गई मैं उस में बरकत डाल दूंगा, और जिस ने بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ी वोह जन्नत में दाख़िल होगा।" (الدر المنثور، الفاتحه ، ج ١، ص ٢٦،مختصراً)

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि "जब कोई शख़्स अपने घर में दाख़िल होते वक़्त بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ता है तो शैतान अपने आप से कहता है : "तुम्हारे लिये यहां न रात बसर करने की जगह है और न ही रात का खाना।" और जब कोई शख़्स दाख़िल होते वक़्त बिस्मिल्लाह न पढ़े तो शैतान अपने आप से कहता है : "तुम्हें रात गुज़ारने की जगह मिल गई।" और जब खाने के वक़्त बिस्मिल्लाह न पढ़े तो कहता है : "तुम्हें रात गुज़ारने की जगह भी मिल गई और रात का खाना भी मिल गया।" (صحيح مسلم،كتاب الاشربة،باب آداب الطعام والشراب واحكامهما،الحديث ٢٠١٨،ص ١٠٣٨)

अल्लाह तबारक व तआ़ला का नाम शैतान को भगाता और मकान में बरकत ज़ियादा करता है, और بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ के फ़ज़ाइलो बरकात बहुत ज़ियादा हैं, अगर आस्मानो ज़मीन वाले इन को लिखना शुरूअ़ कर दें तो इस के फ़ज़ाइल के दसवें हिस्से को भी नहीं पहुंच सकते।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَبَارِکْ وَسَلِّمْ

बयान 2 :

इ़ल्म का बयान

﴾اَلرَّحْمٰنُ0 عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ0 (پ ٢٧،الرحمن:١-٢) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** रह़मान ने अपने मह़बूब को क़ुरआन सिखाया।﴿

ह़म्दे बारी तआ़ला :

तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जो बहुत रह़ीम व करीम, बहुत ज़ियादा एह़सान फ़रमाने वाला, इ़ज़्ज़त वाला, हमेशा रहने वाला, बुलन्द, ग़नी, क़ुव्वत वाला, सुल्त़ान, सब से अव्वल कि जब ज़माना भी न था, सब से आख़िर कि जब काइनात न होगी, बाक़ी रहने वाला कि जब न इन्सान होगा, न जिन्न, वोह जिस ने लौह़े मह़फ़ूज़ में क़लम से मख़्लूक़ की अरवाह़ के मुतअ़ल्लिक़ अह़काम और तौह़ीदो ईमान की आयात को लिखा।

जिस ने तौफ़ीक़ के चराग़ों को अहले तस्दीक़ के दिलों के लिये जिलाया तो उन्हों ने वोह जमाल देखा जिस की मिष्ल किसी इन्सान की आंख ने न देखा और न ही जिन्नों को उस का ख़याल हुवा। उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की औलाद को ने'मतों वाली ज़मीन में पैदा किया, फिर उन ने'मतों को वुरषा के माबैन तक़्सीम किया। कितने ही ह़क़ीर अफ़राद को इ़ज़्ज़त का ताज पहनाया और कितने ही मुअ़ज़्ज़िज़ीन को ज़लील किया। उस ने एक क़ौम को उ़म्दा आ़दातो ख़साइल से नवाज़ा तो दूसरी क़ौम को ग़ैर मुहज़्ज़ब ख़साइल वाला बनाया। जो लोग ग़ैर मुहज़्ज़ब थे और जिन के दिलों में कजी थी, वोह ह़द से तजावुज़ कर गए, जब कि उ़म्दा ख़ूबियों वाले अफ़राद मुहज़्ज़ब और हिदायत याफ़्ता हुए, और एक दूसरे को भाइयों की त़रह़ बुलाते हैं वत़न दूर भी हों तब भी ख़ुलूसे दिल से एक दूसरे से मुलाक़ात करते हैं। और बिन देखे एक दूसरे को पहचानते हैं और उन के दिल एक दूसरे के लिये मुश्ताक़ रहते हैं। एक दूसरे को गुनाह और ख़सारे की जगहों से बचाते हैं, नेकी, ईषार और फ़ज़्लो एह़सान में एक दूसरे की मदद करते हैं, जिस त़रह़ ख़ालिक़े काइनात عَزَّوَجَلَّ ने उन को इस का ह़ुक्म दिया। चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَتَعَاوَنُوْا عَلَی الْبِرِّ وَالتَّقْوٰی ص وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَی الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ص (پ٦،المآئدۃ:٢) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और नेकी और परहेज़गारी पर एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न दो।(1)

पाक है वोह ज़ात जो रह़मान عَزَّوَجَلَّ है, जिस ने अपने मह़बूब को क़ुरआन सिखाया और अपनी ता'ज़ीम की ता'लीम में बयान के राज़ ज़ाहिर किये, जिस ने इन्सानिय्यत की जान ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم को पैदा किया, उन्हें ماکان وما یکون (या'नी जो कुछ हो चुका और जो आयन्दा होगा) का बयान सिखाया, उन की ता'लीम के लिये इल्हाम की लगी हुई लाइनों को अफ़्हाम के क़लम से लिखा, उस ने तमाम ज़मानों का इन्तिज़ाम अन्दाज़े से किया, दिन रात में से एक के बा'द दूसरे को रखा, सूरज और चांद ह़िसाब से रखे, पथ्थर और मिट्टी के ढेर उस की पाकी बोलते हैं, शम्सो क़मर

1...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान** में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : ''बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : जिस का ह़ुक्म दिया गया उस का बजा लाना بِر, और जिस से मन्अ़ फ़रमाया गया उस को तर्क करना تقوٰی, और जिस का ह़ुक्म दिया गया उस को न करना اثم (गुनाह), और जिस से मन्अ़ किया गया उस का करना عُدْوَان (ज़ियादती) कहलाता है।''

और नज्मो शजर उस की बारगाह में सजदा रेज़ हैं। येह ज़ाहिर निशानियां हैं जिन को अहले मा'रिफ़त की आंखों के लिये आरास्ता किया, उस ने बड़े बड़े अ़क़्ल वालों को अपनी क़ुदरत के बयाबान (या'नी जहन्नम) में औंधा गिरा दिया। पस डरने वाले मेहरबानियों के क़दमों पर खड़े हैं, अच्छे औसाफ़ के साथ मुत्तसिफ़ हैं और अ़द्लो इन्साफ़ क़ाइम करने वाली ज़ात ए'लान फ़रमा रही है : "وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ۝ (پ۲۷،الرحمٰن:۴۶) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो अपने रब्ब के हुज़ूर खड़े होने से डरे, उस के लिये दो जन्नतें हैं।" और आ़रिफ़ीन हमेशा वा'दे की तस्दीक़ो तह़क़ीक़ की ख़िदमत पर मुह़ाफ़िज़ हैं : "هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ۝ (پ۲۷،الرحمٰن:۶۰) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** नेकी का बदला क्या है मगर नेकी।

जिस त़रह़ दरख़्त टेहनियों की वजह से ज़मीन पर झुक जाते हैं इसी त़रह़ वोह अपने इ़बादत ख़ानों में सह़री के वक़्त झुकते हैं। शौक़ उन के दिलों की सीधी शाख़ को हिलाता है तो वोह शाखें बिखर जाती हैं, ज़बान कमज़ोर होती है, दिल आ़जिज़ी का इज़्हार करता है, आंखें बहने लगती हैं, उन का अपने मह़बूब के साथ ख़ल्वत में होना उन को दुन्यावी ने'मतों से ग़ाफ़िल कर देता है, उन का सुरूर ही उन के कंगन हैं, ख़ुशूअ़ ही उन के ताज हैं, उन का ख़ुज़ूअ़ ही उन को मोतियों और मरजान से आरास्ता करता है, उन्हों ने ह़िर्स को बेच कर क़नाअ़त को ले लिया तो अब बादशाह कौन है? क्या नौशीरवान? (नहीं! उस वक़्त तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब बन्दे, बादशाह होंगे) उन की ज़िन्दगी के अय्याम त़वील हो गए और मुह़िब्ब मह़बूब के दीदार का प्यासा होता है। जब क़ियामत में आएंगे तो उन्हें बिशारत देने वाले आक़ा मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपना जल्वा दिखाएंगे, अगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم न होते तो जन्नत आरास्ता न की जाती। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने मह़बूब बन्दों के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाता है : "يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ (پ۱۰،التوبة:۲۱) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उन का रब्ब उन्हें ख़ुशी सुनाता है अपनी रह़मत और अपनी रिज़ा की।"

ऐ इन्सान! ज़रा बसीरत की आंख से देख और दिल के आईने को साफ़ कर ताकि तू दलील देख पाए, तुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मक़्बूल बन्दों से क्या निस्बत है? सोने वाला बेदार रहने वाले की त़रह़ नहीं हो सकता, तेरे और उन के दरमियान कितना फ़र्क़ है? बुज़्दिल को बहादुरी से क्या निस्बत है? तुझ में वा'ज़ व नसीह़त के लिये कोई जगह नहीं क्यूंकि तेरा दिल ख़्वाहिशात से भरा हुवा है, ह़बीब की बारगाह में शिद्दते ग़म से ह़ैरानी के आ़लम में खड़े होने वाले की त़रह़ खड़ा हो जा और अपनी जबीने नियाज़ को ऐसे झुका जैसे शर्मसार झुका कर खड़े होते हैं और सच्चाई की कश्ती पर सुवार हो जा क्यूंकि येह मौत तूफ़ान है और ख़्वाहिशात के ख़ुमार से निकल आ। कब तक तू ख़्वाहिशात के नशे में बे होश रहेगा? क्या तू बाक़ी रहने वाली शै को फ़ानी शै के इ़वज़ बेच देगा? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम! येह तो घाटा ही घाटा है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम! अगर तू उम्मीद की वादी पर बुलन्द हो जाए तो ज़रूर बहादुरों और घुड़ सुवारों को देख लेगा, अगर अह़बाब की सुवारियों पर तेरा गुज़र हो तो ज़रूर ऊंटों के ह़ुदीख़्वानों (या'नी मख़्सूस नग़्मों के ज़रीए ऊंटों को हांकने वालों) को सुनेगा और अगर तू अह़बाब के रास्ते पर ठहर जाए तो ज़रूर सुवारों का मुशाहदा करेगा।

सांप ने नरगिस के फूलों का गुलदस्ता पेश किया :

हज़रते सय्यिदुना अबू इस्हाक़ इब्राहीम ख़व्वास عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : "मैं मक्का के रास्ते में अकेला ही चला जा रहा था कि रास्ता भूल गया, दो दिन और दो रातें चलता रहा, यहां तक कि शाम हो गई, वुज़ू के लिये मैं परेशान हुवा क्यूंकि पानी मौजूद न था। चांदनी रात थी कि अचानक मैं ने एक हल्की सी आवाज़ सुनी, कोई कह रहा था : "ऐ अबू इस्हाक़ ! मेरे क़रीब आइये।" मैं उस के क़रीब गया तो क्या देखता हूं कि वोह साफ़ सुथरे कपड़ों में मल्बूस एक ख़ूबसूरत नौजवान है, उस के सर के क़रीब दो मुख़्तलिफ़ रंग के ख़ुश्बूदार फूल पड़े हैं। मुझे उस से बहुत तअ़ज्जुब हुवा कि इस बयाबान में इस के पास फूल कहां से आए ? हालांकि येह रेत पर पड़ा है और ह़रकत भी नहीं कर सकता, उस ने मुझे मुख़ात़ब करते हुए फ़रमाया : "ऐ अबू इस्हाक़ ! मेरी वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सुवाल किया कि मेरी वफ़ात के वक़्त अपने औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی में से किसी वली की ज़ियारत करा दे।" तो एक आवाज़ आई कि अभी तेरी वफ़ात के वक़्त तुझे अबू इस्हाक़ ख़व्वास की ज़ियारत होगी। मुझे यक़ीन है कि वोह आप ही हैं और मैं आप का मुन्तज़िर था।"

मैं ने दर्याफ़्त किया : "ऐ मेरे भाई ! तेरा क्या मुआ़मला है ?" उस ने जवाबन कहा : "मैं अपने घर वालों में इ़ज़्ज़त और आसूदगी की ज़िन्दगी बसर कर रहा था कि मुझे एक सफ़र दरपेश हुवा, वत़न से दूरी की ख़्वाहिश हुई तो मैं ह़ज के इरादे से शहरे शम्शात़ से निकला लेकिन एक माह से यहां पड़ा हूं और अब वफ़ात का वक़्त क़रीब आ गया है।" मैं ने उस नौजवान से पूछा : "क्या तेरे वालिदैन हैं ?" उस नौजवान ने कहा : "जी हां ! और एक नेक बख़्त बहन भी है।" मैं ने पूछा : "क्या कभी अपने घर वालों को मिलना भी पसंद किया या उन्हों ने कभी तुम्हारे बारे में जानने की कोशिश की ?" उस नौजवान ने कहा : "नहीं, मगर आज मैं उन की महक सूंघना चाहता था तो मेरे पास बहुत से दरिन्दे आए और येह ख़ुश्बूदार फूल लाए और मेरे साथ मिल कर रोने लगे।" मैं उस नौजवान के मुआ़मले में हैरान व मुतफ़क्किर था क्यूंकि वोह मेरे दिल में उतर गया था। और मेरा दिल भी उस की त़रफ़ माइल हो चुका था कि इतने में एक बहुत बड़ा सांप नरगिस के फूलों का एक गुलदस्ता ले कर आया कि उस से ज़ियादा ख़ूबसूरत और ख़ुश्बूदार गुलदस्ता मैं ने कभी न देखा था। सांप ने वोह गुलदस्ता उस नौजवान के सर के क़रीब रख दिया और बड़ी फ़सीह़ ज़बान में बोला : "ऐ इब्राहीम ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली के पास से लौट जा क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ग़यूर है।" येह सब कुछ देख कर मेरी ह़ालत अ़जीब हो गई, मैं ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी फिर मुझ पर ग़शी त़ारी हो गई, जब होश आया तो वोह नौजवान इस दुन्या से कूच कर चुका था। मैं ने पढ़ा : اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّاۤ اِلَیۡہِ رٰجِعُوۡنَ O (پ۲،البقرۃ:۱۵٦) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हम **अल्लाह** के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना।" और कहा : येह बहुत बड़ी आज़माइश है, मैं इस के ग़ुस्ल और कफ़न दफ़न का इन्तिज़ाम कैसे करूंगा। तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ पर ऊंघ त़ारी कर दी जिस के ग़लबे की वजह से मैं सो गया।

तुलूए आफ़ताब के वक़्त मुझे होश आया तो देखा कि मैं तो उसी हालत पर था लेकिन उस नौजवान का कोई नामो निशान बाक़ी न था, मैं परेशान हो गया। बहर हाल जब हज अदा कर के शम्शात् पहुंचा तो चन्द निक़ाब पोश औरतें मेरे पास आईं, उन में सब से आगे एक लम्बे बालों वाली औरत थी, जिस के हाथ में एक छागल थी और वोह मुसलसल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र कर रही थी। जब मैं ने उस को ग़ौर से देखा तो उन तमाम औरतों में उस के इलावा किसी औरत को उस नौजवान के मुशाबेह न पाया। उस ने मुझे पुकार कर कहा : "ऐ अबू इस्हाक़ ! मैं कई दिनों से आप के इन्तिज़ार में हूं, आप मुझे मेरी आंखों की ठंडक, मेरे भाई के मुतअ़ल्लिक़ बताइये।"

फिर वोह बुलन्द आवाज़ से रोने लगी, उस के रोने की वजह से मुझे भी रोना आ गया, फिर मैं ने उस को नौजवान और जो कुछ मैं ने देखा था, सब कुछ बता दिया, और जब मैं उस के भाई की इस बात कि "**आज मैं उन की ख़ुश्बू सूंघना चाहता था**" पर पहुंचा तो उस औरत ने कहा : "भाईजान ! ख़ुश्बू पहुंच गई, ख़ुश्बू पहुंच गई।" फिर ज़मीन पर गिरी और उस की रूह क़फ़्से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। उस के साथ आने वाली औरतों ने जम्अ़ हो कर कहा : "ऐ अबू इस्हाक़ ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए।" जब उस को दफ़्न किया गया तो मैं उस की क़ब्र के क़रीब रात तक खड़ा रहा, मैं ने रात ख़्वाब में उसे एक सर सब्ज़ो शादाब बाग़ में देखा और उस का भाई भी उस के क़रीब खड़ा था, वोह दोनों कुरआने पाक की येह आयते मुबारका पढ़ रहे थे :

لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ۝
(پ۲۳، الصّٰفّٰت:۶۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐसी ही बात के लिये कामियों को काम करना चाहिये।*

قَوْمٌ اِذَا عَبِثَ الزَّمَانُ بِاَهْلِهٖ ۔۔۔ كَانَ الْمَفَرُّ مِنَ الزَّمَانِ اِلَيْهِمُ
وَاِذَا اَتَيْتَهُمْ لِدَفْعِ مُلِمَّةٍ ۔۔۔ جَادُوْا عَلَيْكَ بِمَا يَكُوْنُ لَدَيْهِمُ

तर्जमा : (1)....वोह ऐसी क़ौम है कि जब ज़माना लोगों को मसाइब में मुब्तला करे तो उस के मज़ालिम से बचने के लिये उन की पनाह ली जाती है।

(2)....जब तू किसी मुसीबत को दूर करने के लिये उन के पास आएगा तो वोह अपने माल से तुझ पर सख़ावत करेंगे।

मह़ब्बत की ह़क़ीक़त :

ह़ज़रते सय्यिदुना शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : एक दफ़्अ़ा मैं ने एक मज्ज़ूब (या'नी मजनून, दीवाना) देखा जिसे बच्चे पथ्थर मार रहे थे, उस का चेहरा और सर लहू लुहान और शदीद ज़ख़्मी था। ह़ज़रते सय्यिदुना शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى उन बच्चों को डांटने लगे तो उन्हों ने कहा : "हमें छोड़ दो ! हम इसे क़त्ल करेंगे क्यूंकि येह काफ़िर है और कहता है कि उस ने अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ को देखा है और वोह उस से कलाम भी करता है।" तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बच्चों से फ़रमाया : इसे छोड़ दो, फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उस के पास तशरीफ़ ले गए तो वोह मुस्कुरा कर बातें कर रहा था

और कहने लगा : ''ऐ ख़ूबसूरत नौजवान ! आप का एह़सान है, येह बच्चे तो मुझे बुरा भला कह रहे थे ।'' इस के बा'द उस ने पूछा : ''वोह मेरे मुतअ़ल्लिक़ क्या कह रहे थे ?'' आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि मैं ने उस को बताया : ''वोह कहते हैं कि तुम अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ को देखने का दा'वा करते हो और येह कि वोह तुम से कलाम भी करता है ।'' येह सुन कर उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी, फिर कहने लगा, ''ऐ शिब्ली ! ह़क़ तआ़ला की मह़ब्बत व क़ुर्बत से मुझे सुकून मिलता है, अगर लम्ह़े भर भी वोह मुझ से छुप जाए तो मैं दर्दे फ़िराक़ से पारा पारा हो जाऊं ।''

ह़ज़रते सय्यिदुना शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं मैं समझ गया कि येह मज्ज़ूब इख़्लास वाले ख़ास बन्दों में से है । मैं ने उस से पूछा : ''ऐ मेरे दोस्त ! मह़ब्बत की ह़क़ीक़त क्या है ?'' तो उस ने जवाब दिया : ''**ऐ शिब्ली ! अगर मह़ब्बत का एक क़त़रा समन्दर में डाल दिया जाए** (तो वोह ख़ुश्क हो कर) **या पहाड़ पर रख दिया जाए तो वोह ग़ुबार के बिखरे हुए बारीक ज़र्रे हो जाएं ।**'' लिहाज़ा उस दिल पर कैसा तूफ़ान गुज़रेगा जिस को मह़ब्बत ने इज़्तिराब और गिर्या व ज़ारी का लिबास पहना दिया हो, और सख़्त प्यास ने उस के अन्दर जलन और ह़सरते दीदार को बढ़ा दिया हो ।''

मेरे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मह़ब्बत एक ऐसा दाना है जिस को दिलों की ज़मीन में बोया जाता है, गुनाहों से तौबा के पानी से सैराब किया जाता है, फिर वोह मह़ब्बत की बालियों को उगाता है । हर बाली में सो दाने लगते हैं, अगर उन में से एक दाना दिलों के परन्दों के लिये रख दिया जाए तो वोह मह़बूब की मह़ब्बत में सख़्त प्यासे हो जाएं । **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ही के लिये सब ख़ूबियां हैं कि उस के ऐसे बन्दे भी हैं जिन्हों ने अपने दिल में अपने मह़बूब के सिवा किसी के लिये कोई जगह न छोड़ी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ही के लिये उन लोगों की ख़ूबियां हैं जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की त़रफ़ माइल हुए, मालो दौलत को छोड़ दिया, दुन्यावी माल की मश्ग़ूलिय्यत से ए'राज़ किया, माज़ी और ह़ाल की तब्दीली से इ़ब्रत ह़ासिल की और ह़लाल खाने ने जागने में उन की मदद की ।

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर

रब्ब عَزَّ وَجَلَّ को राज़ी करने का अनोखा त़रीक़ा :

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि ''एक दिन मैं एक बाज़ार से गुज़रा तो मैं ने चार आदमियों के कन्धों पर एक जनाज़ा देखा, उन के साथ और कोई न था ।'' मैं ने कहा : ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! मैं इन का पांचवां रफ़ीक़ बन कर ज़रूर अज्रो षवाब ह़ासिल करूंगा ।'' जब वोह क़ब्रिस्तान पहुंचे तो मैं ने कहा : ''ऐ लोगो ! इस शख़्स का वली कहां है ?'' जो कि इस पर नमाज़े जनाज़ा पढ़े ।'' तो उन्हों ने जवाब दिया : ''ऐ मोह़तरम बुज़ुर्ग ! हम में से कोई इस को नहीं जानता ।'' फिर मैं आगे बढ़ा और उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई । हम ने उसे लह़द में उतार कर उस पर मिट्टी डाल दी, जब उन्हों ने लौटने का इरादा किया तो मैं ने कहा : ''इस मय्यित का क्या मुआ़मला है ?'' तो उन्हों ने बताया कि ''हम इस के मुतअ़ल्लिक़ कुछ नहीं जानते, हां ! एक औ़रत

ने इस को यहां तक पहुंचाने के लिये हमें किराए पर लिया और वोह अब आने ही वाली है। इतने में वोह औ़रत आ गई जब वोह रोते हुए और परेशान दिल के साथ क़ब्र के क़रीब रुकी तो अपने चेहरे से पर्दा हटाया, बाल फैलाए, अपने हाथ आसमान की त़रफ़ बुलन्द कर के गिर्या व ज़ारी करने लगी। फिर उस ने दुआ़ मांगी और बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर गई। कुछ देर के बा'द जब होश आया तो हंसने लगी।

मैं ने उस से पूछा : ''मुझे अपने और इस मय्यित के मुतअ़ल्लिक़ बताइये ! इतना शदीद रोने के बा'द येह हंसना कैसा ?'' तो उस ने मुझ से पूछा :''आप कौन हैं ?'' मैं ने जवाब दिया : ''ज़ुन्नून।'' तो वोह कहने लगी : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर आप सालिह़ीन में से न होते तो मैं आप को कभी न बताती, येह मेरा बेटा और मेरी आंखों की ठंडक है, येह अपनी जवानी को ज़ाएअ़ करता और फ़ख़्रिया लिबास पहना करता, कोई बुराई ऐसी नहीं जिस का इस ने इर्तिकाब न किया हो और कोई गुनाह ऐसा नहीं जिसे करने की इस ने कोशिश न की हो। इस के गुनाहों को जानने वाले मौला عَزَّوَجَلَّ ने इसे गुनाहों की सज़ा येह दी कि एक दिन इसे शदीद दर्द हुवा, जो तीन दिन रहा, जब इस को अपनी मौत का यक़ीन हो गया तो कहने लगा : ऐ मेरी मां ! मैं तुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वासित़ा देता हूं मेरी वसिय्यत क़बूल करना, जब मैं मर जाऊं तो मेरी मौत की ख़बर मेरे दोस्तों, भाइयों, घर वालों और पड़ौसियों में से किसी को न देना क्यूंकि वोह मेरे बुरे अफ़्आ़ल, गुनाहों की कषरत, और जहालत की वजह से मुझ पर रह़्म नहीं करेंगे। फिर उस ने रोते हुए येह अश्आ़र पढ़े :

لِیْ ذُنُوْبٌ شَغَلَتْنِیْ عَنْ صِیَامِیْ وَصَلَاتِیْ
تَرَکْتُ جِسْمِیْ عَلِیْلًا مَاتَ مِنْ قَبْلِ وَفَاتِیْ
لَیْتَنِیْ تُبْتُ لِرَبِّیْ مِنْ جَمِیْعِ السَّیِّئَاتِ
اَنَا عَبْدٌ یَا اِلٰهِیْ! هَآئِمٌ فِی الْفَلَوَاتِ
بَحُتَ جَهْرًا بِعُیُوْبِیْ وَذُنُوْبِیْ قَاتِلَاتِیْ
قَدْ تَوَالَتْ سَیِّئَاتِیْ وَتَلَاشَتْ حَسَنَاتِیْ

तर्जमा : (1)....मेरे गुनाहों ने मुझे नमाज़ रोज़े से ग़ाफ़िल कर दिया।
(2)....मैं ने अपने जिस्म को इतना अ़लीलो कमज़ोर कर दिया कि वोह मौत से पहले ही मर चुका है।
(3)....काश ! मैं अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तमाम गुनाहों से तौबा कर लेता।
(4)....ऐ मेरे मा'बूद عَزَّوَجَلَّ ! वसीअ़ बयाबान में तेरा येह बन्दा ह़ैरत ज़दा है।
(5)....मेरे उ़यूब सब पर ज़ाहिर हो गए गुनाहों ने मेरी कमर तोड़ डाली।
(6)....मेरी बुराइयां बहुत ज़ियादा हो चुकी हैं और नेकियां बरबाद हो चुकी हैं।

फिर वोह रोते हुए कहने लगा : "ऐ मेरी मां ! अफ़्सोस है इस पर कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाफ़रमानों में हृद से बढ़ गया अफ़्सोस इस दिल पर जिसे मैं सख़्त करता रहा, ऐ मेरी मां ! तुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब मैं मर जाऊं तो मेरे रुख़्सार को ज़मीन और मिट्टी पर रख कर मेरे दूसरे रुख़्सार पर अपना क़दम रख देना और कहना कि येह जज़ा है उस बन्दे की जिस ने अपने मौला की नाफ़रमानी व मुख़ालफ़त की, उस के हुक्म को तर्क किया, अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला। जब आप मुझे दफ़्न कर लें तो अपने हाथों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की जनाब में बुलन्द कर के कहना : "اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ رَضِیۡتُ عَنۡہُ فَارۡضِ عَنۡہُ" या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं इस से राज़ी हूं तू भी इस से राज़ी हो जा।" जब येह मरा तो मैं ने इस की तमाम वसिय्यतों को पूरा किया। अब जब मैं ने अपना सर आस्मान की तरफ़ उठाया तो मुझे एक आवाज़ सुनाई दी : "ऐ मेरी मां ! अब लौट जा, मैं अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर इस हाल में आया कि वोह मुझ पर नाराज़ न था।" जब मैं ने येह आवाज़ सुनी तो मुस्कुराने लगी।"

हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अम्मार عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَفَّار फ़रमाते हैं : "जब बन्दे की मौत का वक़्त क़रीब आता है तो मरने वाले की हालत पांच तरह की होती है : (1)....माल वारिष के लिये (2)....रूह मलकुल मौत عَلَیۡہِ السَّلَام के लिये (3)....गोश्त कीड़ों के लिये (4)....हड्डियां मिट्टी के लिये और (5)....नेकियां ख़ुसूम या'नी क़ियामत के दिन अपने हक़ का मुतालबा करने वालों के लिये होती हैं।

मज़ीद फ़रमाते हैं कि "वारिष माल ले जाए तो क़ाबिले बर्दाश्त है, इसी तरह मलकुल मौत عَلَیۡہِ السَّلَام रूह ले जाएं तो भी दुरुस्त है मगर ऐ काश ! मौत के वक़्त शैतान ईमान न ले जाए वरना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से जुदाई हो जाएगी, हम इस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह तलब करते हैं क्यूंकि अगर सब फ़िराक़ एक तरफ़ जम्अ हो जाएं और रब्ब عَزَّوَجَلَّ का फ़िराक़ एक तरफ़ हो तो येह तमाम फ़िराक़ों से ज़ियादा भारी है जिसे कोई बर्दाश्त नहीं कर सकता।

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन नईम عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الرَّحِیۡم से मरवी है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइषे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिब्राईले अमीन (عَلَیۡہِ السَّلَام) जब भी मेरे पास हाज़िर होते तो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से कांप रहे होते। जब शैतान की मुख़ालफ़त ज़ाहिर हुई और क़ुर्ब, बुलन्द मर्तबा और इबादत के बा'द उसे धुत्कारा गया तो जिब्रील व मीकाईल (عليهما السلام) दोनों रोने लगे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम्हें क्या हुवा ?" क्यूं रोते हो ? हालांकि मैं किसी पर ज़ुल्म नहीं करता।" तो उन्हों ने अर्ज़ की : "ऐ हमारे रब्ब عَزَّوَجَلَّ ! हम तेरी ख़ुफ़्या तदबीर या'नी तेरी क़ज़ा, तेरे क़ुर्ब के बा'द दूरी और सआदत मन्दी के बा'द शक़ावत से ख़ौफ़ ज़दा हैं।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन से इरशाद फ़रमाया : "इसी तरह मेरी ख़ुफ़्या तदबीर से डरते रहो।"

(العظمة لابی الشیخ الاصبهانی، ذکر میکائیل علیه السلام، الحدیث ۳۸۵، ص ۱۳۶، مختصر)

बूढ़े आ़बिद की शक्ल में शैता़न :

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इरशाद फ़रमाते हैं कि एक दफ़्आ़ मैं नमाज़े जुमुआ़ के लिये निकला तो मुझे एक बूढ़े आ़बिद की शक्ल में इब्लीस मिला, उस ने मुझ से पूछा : "ऐ उ़मर ! कहां का इरादा है ?" मैं ने कहा : "नमाज़ के लिये जा रहा हूं ।" कहने लगा : "नमाज़ तो हो चुकी, अब आप की नमाज़े जुमुआ़ फ़ौत हो गई है ।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने उस को पहचान लिया और उसे गर्दन और गुद्दी से पकड़ कर कहा : "तेरा सत्यानास हो ! क्या तू आ़बिदों और ज़ाहिदों का सरदार न था ? तुझे एक सजदे का हुक्म दिया गया मगर तू ने इन्कार किया, तकब्बुर किया, और काफ़िरों में से हुवा, अब क़ियामत तक तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दूर रहेगा ।" तो वोह कहने लगा : "ऐ उ़मर ! ज़रा ख़याल से बोल, क्या फ़रमांबरदारी मेरे बस में है या बद बख़्ती मेरी मशिय्यत के तह़त है ? मैं ने अ़र्श के नीचे बहुत सजदे किये, यहां तक कि आस्मान का कोई ह़िस्सा ऐसा नहीं जिस पर मैं ने रुकूअ़ व सुजूद न किये हों । इतने क़ुर्ब के बावुजूद मुझे कहा गया :

﴾2﴿ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّکَ رَجِیْمٌO وَّاِنَّ عَلَیْکَ اللَّعْنَةَ اِلٰی یَوْمِ الدِّیْنِO (پ۱۴،الحجر:۳۴۔۳۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तू जन्नत से निकल जा कि तू मरदूद है । और बेशक क़ियामत तक तुझ पर ला'नत है ।* (1)

(फिर कहने लगा) "ऐ उ़मर ! क्या तुम्हें यक़ीन है कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर से अम्न में हो ?"

﴾3﴿ فَلَا یَاْمَنُ مَکْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَO (پ۹،الاعراف:۹۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो* ***अल्लाह*** *की ख़ुफ़ी तदबीर से निडर नहीं होते मगर तबाही वाले ।* (2)

तो मैं ने उस से कहा : "मेरी नज़रों से ओझल हो जा ! मुझे ताक़त नहीं कि (इस मस्अले में) तुझ से कलाम करूं ।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! कहां हैं वोह लोग जो लज़्ज़तों से लुत्फ़ अन्दोज़ हुवा करते थे, मख़्लूक़ पर ज़ुल्म व ग़ुरूर व तकब्बुर किया करते थे ? उन को मौत के जाम दिये गए तो वोह उन जामों को घूंट घूंट पीते रहे, उन्हों ने उस माल को तर्क कर दिया जो वोह जम्अ़ किया करते थे, इस ऐ़श व इ़श्रत

---

❶....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "आस्मानो ज़मीन वाले तुझ पर ला'नत करेंगे और जब क़ियामत का दिन आएगा तो उस ला'नत के साथ हमेशगी के अ़ज़ाब में गिरफ़्तार किया जाएगा जिस से कभी रिहाई न होगी ।"

❷ .....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "और उस के मुख़्लिस बन्दे उस का ख़ौफ़ रखते हैं । रबीअ़ बिन ख़ुषैम की साहिबज़ादी ने उन से कहा : क्या सबब है, मैं देखती हूं सब लोग सोते हैं और आप नहीं सोते हैं ? फ़रमाया : ऐ नूरे नज़र ! तेरा बाप शब को सोने से डरता है या'नी येह कि ग़ाफ़िल हो कर सो जाना कहीं सबबे अ़ज़ाब न हो ।"

से मुफ़ारक़त व जुदाई इख़्तियार कर ली जिस से लुत़्फ़ अन्दोज़ हुवा करते थे। काश ! तू उन्हें नदामत के ज़ुब्बों में हांके जाते हुए देखता कि वोह मौत की त़रफ़ हांके जा रहे हैं हा़लांकि वोह देख रहे हैं।

اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ ۚ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿4﴾ (پ۹، الاعراف:۹۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या अल्लाह की ख़फ़ी तदबीर से बे ख़बर हैं ? तो अल्लाह की ख़फ़ी तदबीर से निडर नहीं होते मगर तबाही वाले।

दो अम्रद पसन्द मुअज़्ज़िनों की बरबादी :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद मुअज़्ज़िन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं त़वाफ़े का'बा में मश्ग़ूल था कि एक शख़्स पर नज़र पड़ी जो ग़िलाफ़े का'बा से लिपट कर एक ही दुआ़ की तकरार कर रहा था : "या अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ! मुझे दुन्या से मुसलमान ही रुख़्सत करना" मैं ने उस से पूछा : तुम इस के इ़लावा कोई और दुआ़ क्यूं नहीं मांगते ? उस ने कहा : "काश ! आप को मेरे वाक़िए़ का इ़ल्म होता।" मैं ने दर्याफ़्त किया : "तुम्हारा क्या वाक़िआ़ है ?" तो उस ने बताया : "मेरे दो भाई थे, बड़े भाई ने चालीस साल तक मस्जिद में बिला मुआ़वज़ा अज़ान दी, जब उस की मौत का वक़्त आया तो उस ने क़ुरआने पाक मांगा। हम ने उसे दिया ताकि उस से बरकतें हा़सिल करे मगर क़ुरआन शरीफ़ हाथ में ले कर कहने लगा : तुम सब गवाह हो जाओ कि मैं क़ुरआन के तमाम ए'तिक़ादातो अह़कामात से बेज़ारी और नस्रानी (ईसाई) मज़हब इख़्तियार करता हूं फिर वोह मर गया। इस के बा'द दूसरे भाई ने तीस बरस तक मस्जिद में फ़ी सबीलिल्लाह अज़ान दी मगर उस ने भी आख़िरी वक़्त नस्रानी होने का ए'तिराफ़ किया और मर गया। लिहाज़ा मैं अपने ख़ातिमे के बारे में बेह़द फ़िक्रमन्द हूं और हर वक़्त ख़ातिमा बिलख़ैर की दुआ़ मांगता रहता हूं तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद मुअज़्ज़िन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम्हारे दोनों भाई ऐसा कौन सा गुनाह करते थे ? उस ने बताया : "**वोह ग़ैर औ़रतों में दिलचस्पी लेते थे और अम्रदों** (बेरीश लड़कों) **को** (शहवत से) **देखा करते थे।**"(1)

---

(1)....शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस हि़कायत को नक़्ल करने के बा'द फ़रमाते हैं : "मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ज़ब हो गया ! क्या अब भी ग़ैर औ़रतों से बेपर्दगी और बे तकल्लुफ़ी से बाज़ नहीं आएंगे ? क्या अब भी ग़ैर औ़रतों नीज़ अपनी भाभी, चची, ताई, मुमानी (कि येह भी शरअ़न सब ग़ैर औ़रतें ही हैं इन) से अपनी निगाहों को नहीं बचाएंगे ? इसी त़रह़ चचाज़ाद, तायाज़ाद, मामूंज़ाद, फूफीज़ाद और ख़ालाज़ाद का नीज़ बीवी की बहन और बहनोई का आपस में पर्दा है। ना मह़रम पीर और मुरीदनी का भी पर्दा है। मुरीदनी अपने ना मह़रम पीर का हाथ नहीं चूम सकती। ख़बरदार ! अम्रद तो आग है आग ! अम्रद का क़ुर्ब, उस की दोस्ती उस के साथ मज़ाक़ मस्ख़री, आपस में कुश्ती, खींचातानी और लपटा लपटी जहन्नम में झोंक सकती है। अम्रद से दूर रहने ही में आ़फ़िय्यत है अगर्चे उस बेचारे का कोई क़ुसूर नहीं, अम्रद होने के सबब उस की दिल आज़ारी भी मत कीजिये। मगर उस से अपने आप को बचाना बेह़द ज़रूरी है। हरगिज़ अम्रद को स्कूटर पर अपने पीछे मत बिठाइये, ख़ुद भी उस के पीछे मत बैठिये कि आग आगे हो या पीछे उस की तपिश हर सूरत में पहुंचेगी। शहवत न हो जब भी अम्रद से गले मिलना मह़ल्ले फ़ित्ना (या'नी फ़ित्ने की जगह) है, और शहवत होने की सूरत में गले मिलना बल्कि हाथ मिलाना बल्कि फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام...... (बक़िय्या अगले सफ़ह़े पर)

ऐ अपनी नज़र को शहवतों में मुस्तग़रक़ रखने वाले ! ऐ महरमात के चाहने वाले ! ऐ फ़ना होने वाली लज़्ज़तों से धोका खाने वाले ! तू ने उन क़ौमों से नसीहत हासिल क्यूं न की जिन को उन के घरों से निकाला गया और उन्हों ने ग़फ़्लत की रस्सी को पकड़े रखा। पस उन का येह उ़ज़्र क़बूल नहीं किया जाएगा कि हमें तो किसी ने डराया न था।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ ﴿5﴾ (پ۱۸،النور:۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुसलमान मर्दों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें। (1)

हज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद बिस्तामी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی के बारे में मन्क़ूल है कि "आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه जब वुज़ू फ़रमाते तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के आ'ज़ा पर एक कपकपी सी तारी हो जाती यहां तक कि जब नमाज़ के लिये खड़े हो कर तकबीर कहते तो कपकपी ख़त्म होती। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से इस के मुतअ़ल्लिक़ अ़र्ज़ की गई तो इरशाद फ़रमाया : "मैं इस बात से ख़ौफ़ खाता हूं कि कहीं मुझे बदबख़्ती न घेर ले और मैं यहूदो नसारा के गिर्जों में न जा पड़ूं।" نَعُوْذُ بِاللهِ مِنْ مَکْرِ اللهِ या'नी हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से उस की पनाह मांगते हैं।

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के मुतअ़ल्लिक़ मन्क़ूल है कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه हज के इरादे से मक्कए मुकर्रमा रवाना हुए, और पूरी रात कजावे में रोते रहे, हज़रते सय्यिदुना शैबान राई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अ़र्ज़ की : "ऐ सुफ़्यान ! आप के रोने की वजह क्या है ?

(**बक़िय्या हाशिया**)....फ़रमाते हैं : अम्रद की त़रफ़ शहवत के साथ देखना भी ह़राम है। (تفسیراتِ احمدیہ ص۵۵۹) उस के बदन के हर हिस्से हत्ता कि लिबास से भी निगाहों को बचाइये। उस के तसव्वुर से अगर शहवत आती हो तो उस से भी बचिये, उस की तह़रीर या किसी चीज़ से शहवत भड़कती हो तो उस से निस्बत रखने वाली हर चीज़ से नज़र की हिफ़ाज़त कीजिये, ह़त्ता कि उस के मकान को भी मत देखिये। अगर उस के वालिद या बड़े भाई वग़ैरा को देखने से उस का तसव्वुर क़ाइम होता है और शहवत चढ़ती है तो उन को भी मत देखिये। अम्रद के ज़रीए किये जाने वाले शैतृाने अ़य्यारो मक्कार के तबाहकार वार से ख़बरदार करते हुए मेरे आक़ा, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मन्क़ूल है, औरत के साथ दो शैतृान होते हैं और अम्रद के साथ सत्तर। (फ़तावा रज़विय्या जि. 23, स. 721) बहरहा़ल अजनबिय्या औ़रत (या'नी जिस से शादी जाइज़ हो) उस से और अम्रद से अपनी आंखों और अपने वुजूद को दूर रखना सख़्त ज़रूरी है वरना अभी आप ने उन दो भाइयों की अम्वात के तशवीशनाक मुआ़मलात पढ़े जो ब ज़ाहिर नेक थे। मेहरबानी फ़रमा कर मक्तबतुल मदीना का मत़्बूआ़ रिसाला अम्रद पसन्दी की तबाहकारियां का मुतालआ़ फ़रमा लीजिये।"

नफ़्से बे लगाम तो गुनाहों पे उक्साता है तौबा तौबा करने की भी आ़दत होनी चाहिये

(बुरे ख़ातिमे के अस्बाब स.17)

❶....मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی **तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तह़त "**मदारिक व अह़मदी**" के ह़वाले से फ़रमाते हैं : "इस त़रह़ कि जिन चीज़ों का देखना जाइज़ नहीं उन्हें न देखें। ख़याल रहे कि अम्रद लड़के को शहवत से देखना ह़राम है। इसी त़रह़ अजनबिय्या का बदन देखना ह़राम, अलबत्ता ! त़बीब (के लिये ज़रूरतन) मरज़ की जगह को और जिस औ़रत से निकाह़ करना हो, उसे छुप कर देखना जाइज़ है।"

अगर मा'सिय्यत की वजह से है तो आप तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाफ़रमान नहीं।" हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَیْه ने येह सुन कर फ़रमाया : "ऐ शैबान ! गुनाह छोटे हों या बड़े, वोह तो कभी मेरे दिल में नहीं खटके, मेरा रोना मा'सिय्यत के सबब नहीं बल्कि मैं तो बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़ से रो रहा हूं क्यूंकि मैं ने एक बहुत ही नेक बुज़ुर्ग को देखा, जिस से हम ने इल्म हासिल किया, उस ने लोगों को चालीस साल तक इल्म सिखाया, बैतुल्लाह शरीफ़ की कई साल मुजावरत करता और बरकतें लूटता रहा, उस शख़्स के वसीले से बारिश तलब की जाती, मगर वोह काफ़िर हो कर मरा और उस का चेहरा क़िब्ले से फिर कर मशरिक़ की तरफ़ हो गया। लिहाज़ा मुझे बुरे ख़ातिमे के सिवा किसी चीज़ का ख़ौफ़ नहीं।" हज़रते सय्यिदुना शैबान ने अ़र्ज़ की : "अगर ऐसा नाफ़रमानी और गुनाहों पर इसरार की नुहूसत की वजह से है तो आप एक लम्हे के लिये भी अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी न कीजियेगा।"

हज़रते सय्यिदुना हम्ज़ा बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मैं हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शाशी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی के विसाल के वक़्त उन के पास हाज़िर हुवा और पूछा : "अपने आप को कैसा महसूस करते हैं ?" तो उन्हों ने जवाबन इरशाद फ़रमाया : "उस कश्ती की तरह जो ग़र्क़ होने से पहले चकरा रही होती है। मैं नहीं जानता कि क्या मेरी नजात होगी ? क्या मलाइका येह ख़ुशख़बरी ले कर आएंगे : اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا (پ ٢٤،حم السجدة: ٣٠) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** कि न डरो और न ग़म करो।" या कश्ती ग़र्क़ हो जाएगी और फ़िरिश्ते येह कहते हुए आएंगे : لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَيَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ۝ (پ ١٩،الفرقان: ٢٢) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह दिन मुजरिमों की कोई ख़ुशी का न होगा और कहेंगे इलाही ! हम में उन में कोई आड़ कर दे रुकी हुई।" या'नी दूर हो जा, तू हम से सुल्ह के क़ाबिल नहीं।"

ऐ ना फ़रमान ! अपने दिल की तारीकी पर रोता कि वोह रोशन हो जाए क्यूंकि जब बादल टीले पर बरसते हैं तो वोह चमक जाता है, हलाकत है तेरे लिये ! तू कहता है : मैं तौबा करने वाला और हक़ को पूरा करने वाला हूं। खड़ा हो और जल्दी कर, नेकियों को ज़ाएअ़ न कर, फिर मौक़अ़ न मिलेगा। जब बन्दा अपनी तौबा में सच्चा होता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! किरामन कातिबीन (या'नी बन्दे के आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्तों) को उन के लिखे हुए आ'माल भुला देता है और ज़मीन को हुक्म फ़रमाता है कि मेरे बन्दे पर वसीअ़ हो जा।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! शैतान तमाम मक़ासिद में तुम्हारी ताक में है।

﴾6﴿ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا حِذْرَكُمْ (پ ٥،النسآء: ٧١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो ! होशियारी से काम लो।*

तो तुम उस की बात न सुनना इस लिये कि वोह झूटा और शरीर है और उस की नसीहत क़बूल न करना क्यूंकि वोह धोके बाज़ है :

﴾7﴿ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۝ (پ ٢٢،فاطر: ٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह तो अपने गुरोह को इसी लिये बुलाता है कि दोज़ख़ियों में हों।*

इब्ने आदम पर तअ़ज्जुब है कि (जब शैतान ने उस के बाप को सजदा करने से इन्कार किया उस वक़्त) वोह अपने बाप की पुश्त में था, तो वोह कैसे उस जहन्नम में दाख़िल हो जाएगा जिस का ईन्धन आदमी और पथ्थर हैं, **ऐ इब्ने आदम !** हम ने इब्लीस को धुत्कारा इस लिये कि उस ने तेरे बाप को सजदा करने से इन्कार किया, तुझ पर तअ़ज्जुब है कि तू ने उस से सुल्ह़ कैसे कर ली और हमें छोड़ दिया।

बद निगाही का वबाल :

एक मुअज़्ज़िन जिस ने चालीस साल तक मनारे पर चढ़ कर अज़ान दी, एक दिन अज़ान देने के लिये मनारे पर चढ़ा, अज़ान देते हुए जब حَیَّ عَلَی الْفَلَاح पर पहुंचा तो उस की नज़र एक नस्रानी औ़रत पर पड़ी। उस की अ़क़्ल और दिल जवाब दे गए। अज़ान छोड़ कर नस्रानी औ़रत के पास जा पहुंचा और उसे निकाह़ का पैग़ाम दिया तो वोह कहने लगी : "मेरा महर तुझ पर भारी होगा।" उस ने कहा : "तेरा महर क्या है ?" नस्रानी औ़रत ने कहा : "दीने इस्लाम को छोड़ कर मेरे मज़्हब में दाख़िल हो जा।" तो मुअज़्ज़िन ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का इन्कार कर के उस औ़रत का मज़्हब इख़्तियार कर लिया। नस्रानी औ़रत ने उसे कहा : "मेरा बाप घर के सब से निचले कमरे में है, तुम उस से निकाह़ की बात करो।" जब वोह उतरने लगा तो उस का पाउं फिसल गया जिस की वजह से वोह कुफ़्र की ह़ालत में गिर कर मर गया और अपनी शहवत भी पूरी न कर सका। نَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ سُوْءِ الْخَاتِمَۃِ या'नी हम बुरे ख़ातिमे से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करते हैं। (आमीन)

अच्छी निय्यत का फल और बुरी का वबाल :

मन्क़ूल है कि "दो भाई थे, उन में से एक आ़बिद और दूसरा फ़ासिक़ था। आ़बिद की आरज़ू थी कि वोह शैत़ान को अपनी मेह़राब में देखे, एक दिन उस के पास इन्सानी शक्ल में इब्लीस आया और कहने लगा : "अफ़्सोस है तुझ पर ! तू ने अपनी उ़म्र के चालीस साल नफ़्स को क़ैद और बदन को मशक़्क़त में डाल कर ज़ाएअ़ कर दिये। तुम्हारी जितनी उ़म्र गुज़र चुकी उतनी अभी बाक़ी है, अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात पूरी कर के लज़्ज़त ह़ासिल कर ले, इस के बा'द दोबारा तौबा कर लेना और वापस इ़बादत की त़रफ़ लौट आना। बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बख़्शने वाला मेहरबान है। येह सुन कर आ़बिद ने अपने दिल में कहा : "मैं नीचे जा कर अपने भाई के पास बीस साल लज़्ज़ात ह़ासिल करूंगा और ख़्वाहिशात पूरी करूंगा फिर तौबा कर लूंगा और अपनी उ़म्र के बक़िय्या बीस साल इ़बादत में सर्फ़ कर दूंगा अब येह नीचे उतरने लगा। इधर उस के गुनहगार भाई ने अपने नफ़्स से कहा : "तू ने अपनी उ़म्र को नाफ़रमानी में ज़ाएअ़ कर दिया और तेरा भाई जन्नत में जब कि तू जहन्नम में जाएगा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ज़रूर तौबा करूंगा और अपने भाई के साथ ऊपर वाले कमरे में जा कर अपनी बक़िय्या उ़म्र इ़बादत में गुज़ारूंगा, शायद ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे बख़्श दे।" इधर वोह तौबा की निय्यत ले कर ऊपर को चढ़ने लगा और उस का आ़बिद भाई ना फ़रमानी की निय्यत ले कर उतरने लगा कि अचानक उस का पाउं फिसला और वोह अपने भाई पर गिर पड़ा और दोनों सीढ़ीयों पर इकट्ठे मर गए। अब आ़बिद का ह़श्र नाफ़रमानी की निय्यत पर होगा और गुनहगार का ह़श्र तौबा की निय्यत पर होगा।"

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दिन रात होने वाले वाक़िआत से इब्रत पकड़ने के लिये अपने दिलों को फ़ारिग़ कर लो, कितने ही लोग जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दूर थे, क़रीब हो गए और बहुत से कुर्ब वाले दूर कर दिये गए। उन के घर वालों और पड़ोसियों ने उन से जफ़ा की। कुर्ब हासिल करने वालों के लिये जन्नत और दूरी इख़्तियार करने वालों के लिये दोज़ख़ है तो ऐ अक़्ल वालो ! इब्रत हासिल करो। बिलाशुबा जब आबिद ठोकर खा कर फिसला तो अपनी निय्यत तब्दील करने और इबादत के बा'द हद से बढ़ने और गुनाह करने पर रोया, वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से महब्बत तो करता था लेकिन अगर उस की महब्बत ख़ालिस होती तो वोह ज़रूर वफ़ा की तरफ़ लौटता और अन क़रीब जान लेगा कि उस ने गिरने वाले कनारे पर बुन्याद रखी। पस ऐ अक़्ल वालो ! नसीहत हासिल करो।

शैतान का ख़तरनाक जाल :

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू मुहम्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد फ़रमाते हैं : "तीन ज़ाहिद दौराने साल फ़क़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के भरोसे पर ज़ादे राह लिये बिग़ैर हज के इरादे से बैतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ रवाना हुए। रास्ते में उन्हों ने ईसाइयों की एक बस्ती में क़ियाम किया, तीनों (ज़ाहिदों) में से एक की नज़र एक ख़ूबसूरत नस्रानी औरत पर पड़ी तो उस का दिल उस की तरफ़ माइल हो गया, जब तीनों ने सफ़र का इरादा किया, तो उस ने ह़ीले बहाने से उन को टाल दिया और ख़ुद वहीं बैठ गया, उस के दोनों रफ़ीक़ चले गए और उस को बस्ती ही में छोड़ दिया, अब उस ने अपने दिल की बात उस औरत के वालिद से की, उस ने कहा : "उस का महर तुझ पर बहुत भारी है तुम उस की ताक़त नहीं रखते।" उस ने पूछा : "क्या महर है ?" उस के वालिद ने कहा : "तू दीने इस्लाम को छोड़ कर ईसाइय्यत में दाख़िल हो जा।" चुनान्चे उस ज़ाहिद ने नस्रानी हो कर उस औरत से निकाह कर लिया और दो बच्चे भी पैदा हुए। आख़िर कार वोह नस्रानिय्यत पर ही मर गया। जब उस के दोनों साथी सफ़र से वापस आए तो उस के मुतअ़ल्लिक़ दर्याफ़्त किया तो उन्हें बताया गया कि वोह तो नस्रानिय्यत पर मर चुका है और नसरानियों ने उसे अपने क़ब्रिस्तान में दफ़्न कर दिया है तो वोह उस की क़ब्र पर तशरीफ़ ले गए, वहां एक औरत और दो बच्चों को क़ब्र पर रोते हुए पाया। वोह दोनों भी दूर से रोने लगे। औरत ने उन से पूछा : "आप क्यूं रो रहे हैं ?" उन्हों ने उस की इबादत, नमाज़, और ज़ोहद का तज़्किरा किया। जब औरत ने येह सुना तो उस का दिल इस्लाम की तरफ़ माइल हो गया और वोह अपने दोनों बच्चों समेत इस्लाम ले आई। हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू मुहम्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد येह वाक़िआ बयान करने के बा'द फ़रमाते हैं : "سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! जो मुसलमान था कुफ़्र पर मरा और जो काफ़िर था इस्लाम ले आया। तो मुसलमान को चाहिये कि अपने अन्जाम से डरता रहे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से हुस्ने ख़ातिमा का सुवाल करता रहे।"

गुनाहों की नुहूसत :

हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار इरशाद फ़रमाते हैं : "मेरा एक दीनी भाई था जो कि मेरा बहुत मो'तक़िद था।" वोह हर दुख सुख में मुझ से मुलाक़ात करता। मैं उस को इन्तिहाई इ़बादत गुज़ार, तहज्जुद गुज़ार, और गिर्या व ज़ारी करने वाला समझता था। मैं ने कुछ दिनों तक उसे न पाया और मुझे बताया गया कि वोह तो बेहद कमज़ोर हो गया है। मैं ने उस के घर के मुतअ़ल्लिक़ दर्याफ़्त कर के उस के दरवाज़े पर दस्तक दी तो उस की बेटी आई और पूछा : "किस से मिलना चाहते हैं ?" मैं ने कहा : "फ़ुलां से।" वोह मेरे आने की इजाज़त त़लब करने अन्दर गई, फिर लौट कर आई और कहने लगी : "आप अन्दर आ जाएं।" मैं ने दाख़िल हो कर देखा कि वोह घर के वस्त़ में बिस्तर पर लेटा हुवा है। चेहरा सियाह, आंखें नीली और होंट मोटे हो चुके हैं। मैं ने उसे डरते डरते कहा : "ऐ मेरे भाई ! لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ की कषरत करो।" उस ने अपनी आंखें खोलीं और बड़ी मुश्किल से मेरी त़रफ़ देखा, फिर उस पर ग़शी त़ारी हो गई। मैं ने दूसरी मरतबा येही तल्क़ीन की तो उस ने मुझे ब मुश्किल आंखें खोल कर देखा लेकिन दोबारा उस पर ग़शी त़ारी हो गई।

जब मैं ने तीसरी मरतबा कलिमा पढ़ने की तल्क़ीन की और कहा कि "अगर तू ने येह कलिमा न पढ़ा तो मैं तुझे ग़ुस्ल दूंगा, न कफ़न और न ही तेरा नमाज़े जनाज़ा पढ़ूंगा।" येह सुन कर उस ने अपनी आंखें खोलीं और कहने लगा : "ऐ मेरे भाई ! ऐ मन्सूर ! इस कलिमे के और मेरे दरमियान रुकावट खड़ी कर दी गई है।" मैं ने कहा : "لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْم" कहां गईं वोह नमाज़ें, वोह रोज़े, तहज्जुद और रातों का क़ियाम ?" तो उस ने मुझे ह़सरत से बताया : "ऐ मेरे भाई ! येह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये नहीं थे, बल्कि मैं येह इ़बादतें इस लिये किया करता था ताकि लोग मुझे नमाज़ी, रोज़ेदार, और तहज्जुद गुज़ार कहें और मैं लोगों को दिखाने के लिये ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ किया करता था। जब मैं तन्हाई में होता तो दरवाज़ा बन्द कर लेता, बरहना हो कर शराब पीता, और नाफ़रमानियों से अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ का मुक़ाबला करता। एक अ़र्से तक मैं इसी त़रह़ करता रहा फिर ऐसा बीमार हुवा कि बचने की उम्मीद न रही, मैं ने अपनी इसी बेटी से कहा कि क़ुरआने पाक ले कर आओ, उस ने ऐसा ही किया, मैं मुस्ह़फ़ शरीफ़ के एक एक ह़र्फ़ को पढ़ता रहा यहां तक कि जब सूरए यासिन तक पहुंचा तो मुस्ह़फ़ शरीफ़ को बुलन्द कर के बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस क़ुरआने अ़ज़ीम के सदक़े मुझे शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा, मैं आयन्दा गुनाह नहीं करूंगा।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से बीमारी को दूर कर दिया। जब मैं शिफ़ायाब हुवा, तो दोबारा लह्व व ला'ब और लज़्ज़ात व ख़्वाहिशात में पड़ गया। शैत़ान लईन ने मुझे वोह अ़हद भुला दिया जो मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ के और मेरे दरमियान हुवा था, अ़र्सए दराज़ तक गुनाह करता रहा, फिर अचानक उसी बीमारी में मुब्तला हो गया जिस में मैं ने मौत के साए देखे तो घर वालों से कहा कि मुझे मेरी आ़दत के मुत़ाबिक़ वस्त़े मकान में निकाल दें। मैं ने मुस्ह़फ़ शरीफ़ मंगवा कर पढ़ा और बुलन्द कर के अ़र्ज़ की : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस की अ़ज़मत का वासित़ा जो इस मुस्ह़फ़ शरीफ़ में है, मुझे इस मरज़ से नजात अ़त़ा फ़रमा।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी दुआ क़बूल फ़रमाई और दोबारा उस बीमारी से मुझे शिफ़ा अ़ता फ़रमा दी। लेकिन मैं फिर इसी त़रह़ नफ़्सानी ख़्वाहिशात और नाफ़रमानियों में पड़ गया यहां तक कि अब इस मरज़ में मुब्तला यहां पड़ा हूं, मैं ने अपने घर वालों को हुक्म दिया कि इस दफ़्आ़ भी मुझे वस्त़े मकान में निकाल दो जैसा कि आप मुझे देख रहे हैं। फिर जब मैं मुस्ह़फ़ शरीफ़ मंगवा कर पढ़ने लगा तो एक ह़र्फ़ भी न पढ़ सका। मैं समझ गया कि अल्लाह तबारक व तआ़ला मुझ पर सख़्त नाराज़ है, मैं ने अपना सर आस्मान की त़रफ़ उठा कर अ़र्ज़ की : ''या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस मुस्ह़फ़ शरीफ़ की अ़ज़मत का सदक़ा ! मुझ से इस मरज़ को ज़ाइल फ़रमा दे।'' तो मैं ने हातिफ़े ग़ैबी की आवाज़ सुनी मगर उसे देख न सका। येह आवाज़ अश्आ़र की सूरत में थी, जिन का मफ़्हूम येह है :

''जब तू बीमारी में मुब्तला होता है तो अपने गुनाहों से तौबा कर लेता है और जब तन्दुरस्त होता है तो फिर गुनाह करने लग जाता है। तू जब तक तकलीफ़ में मुब्तला रहता है तो रोता रहता है और जब क़ुव्वत ह़ासिल कर लेता है तो बुरे काम करने लगता है। कितनी ही मुसीबतों और आज़्माइशों में तू मुब्तला हुवा मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुझे उन सब से नजात अ़त़ा फ़रमाई। उस के मन्अ़ करने और रोकने के बावुजूद तू गुनाहों में मुस्तग़रक़ रहा और अ़र्सए दराज़ तक उस से ग़ाफ़िल रहा क्या तुझे मौत का ख़ौफ़ न था ? तू अ़क़्ल और समझ रखने के बावुजूद गुनाहों पर डटा रहा। और तुझ पर जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्लो करम था, तू ने उसे भुला दिया और कभी भी तुझ पर न कप कपी त़ारी हुई, न ही ख़ौफ़ लाह़िक़ हुवा। कितनी मरतबा तू ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ अ़हद किया लेकिन फिर तोड़ दिया, बल्कि हर भली और अच्छी बात को तू भूल चुका है। इस जहाने फ़ानी से मुन्तक़िल होने से पहले पहले जान ले कि तेरा ठिकाना क़ब्र है, जो हर लम्ह़े तुझे मौत की आमद की ख़बर सुना रही है।''

ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं उस से इस ह़ाल में जुदा हुवा कि मेरी आंखों से आंसू बह रहे थे और अभी घर के दरवाज़े तक भी न पहुंचा था कि मुझे बताया गया कि वोह शख़्स इन्तिक़ाल कर चुका है। हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हुस्ने ख़ातिमा की दुआ़ करते हैं क्यूंकि बहुत से रोज़ेदार और रातों को क़ियाम करने वाले बुरे ख़ातिमे से दो चार हो गए।''

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से डरते रहो !

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह मोसिली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى फ़रमाते हैं : हमारे ज़माने में एक ग़मज़दा शख़्स था, जिस को क़ज़ीबुल बान (या'नी बान नामी दरख़्त की शाख़) के नाम के पुकारा जाता था। उस के एह़तिराम और रो'बो दबदबे के बाइ़स कोई उस से कलाम करने की जुरअत नहीं करता था। वोह बहुत ज़ियादा रोया करता। तक़दीर उस शख़्स की तन्हाई में मुझे उस के पास ले गई तो मैं ने उस से पूछा : ''ऐ मेरे मोह़तरम ! उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को अपनी ज़ात के सिवा हर चीज़ से बे नियाज़ कर दिया है ! आप के ग़म और लोगों से जुदा रहने का सबब क्या है ?'' उस

ने मुझे देखा और बहुत ज़ियादा रोया फिर उस का रंग मुतग़य्यिर हो गया। कुछ इज़्तिराब के बा'द उस पर ग़शी त़ारी हो गई। मुझे गुमान हुवा कि वोह इन्तिक़ाल कर गया है। बहरहाल जब उसे होश आया तो मैं ने बातों ही बातों में उसे मानूस कर लिया और उसे मुख़ात़ब कर के उस का दिल बहलाया और उसे क़सम दे कर उस की ह़ालत के मुतअ़ल्लिक़ दर्याफ़्त किया तो वोह रोते रोते अपना वाक़िआ़ बयान करने लगा : "मैं अपने शैख़ की ख़िदमत किया करता था, वोह अब्दाल में से था, मैं ने चालीस साल उस की ख़िदमत की, वोह बहुत इ़बादत गुज़ार था। उस ने अपनी वफ़ात से तीन दिन क़ब्ल मुझे बुला कर कहा : "ऐ मेरे बेटे ! ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! मेरा तुझ पर और तेरा मुझ पर ह़क़ है। और तुझ पर मेरे मुकम्मल हुक़ूक़ में से एक येह है कि तू मेरी बातें ग़ौर से सुने और मेरी वसिय्यत को पूरा करे।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "मह़ब्बत और इ़ज़्ज़त से आप की वसिय्यत पूरी करूंगा।" तो उस ने कहा : "मेरी उ़म्र के तीन दिन बाक़ी हैं और मैं काफ़िर मरूंगा। जब मैं मर जाऊं तो मुझे मेरे कपड़ों समेत रात की तारीकी में एक ताबूत में रख शहर से बाहर फ़ुलां जगह ले जाना और त़ुलूए़ आफ़्ताब तक वहीं ठहरे रहना, जब तू किसी क़ाफ़िले को आते हुए देखे कि जिन के पास भी एक ताबूत होगा वोह उस को मेरे ताबूत के पहलू में रख देंगे और मेरा ताबूत ले जाएंगे, तुम वोह दूसरा ताबूत ले कर वापस आ जाना। फिर उस ताबूत को खोल कर उस में मौजूद शख़्स को निकालना और उस के साथ वोही सुलूक करना जो तुम पर लाज़िम था कि तुम मेरे साथ करते (या'नी उस की तजहीज़ो तक्फ़ीन और तदफ़ीन वग़ैरा करना)।" येह सुन कर मैं रो रो कर पूछने लगा : "ऐसा मुआ़मला होने की वजह क्या है ?" तो उन्हों ने जवाब दिया : "ऐ मेरे बेटे ! येह सब कुछ लोहे़ मह़फ़ूज़ में लिखा हुवा है, और पहले भी और बा'द में भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही का हुक्म है।"

لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ (پ۱۷،الانبیآء:۲۳) ﴿8﴾ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उस से नहीं पूछा जाता जो वोह करे।*** (1)

जब तीन दिन गुज़र गए तो मेरा शैख़ मुज़्त़रिब हो गया, रंग मुतग़य्यिर हो गया और उस का चेहरा सियाह हो कर मशरिक़ की त़रफ़ घूम गया और वोह औंधे मुंह गिर कर मर गया। मैं बहुत रोया और मुझे इतना ग़म लाह़िक़ हुवा जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं जानता। फिर मुझे वसिय्यत याद आई तो मैं ने उन को एक ताबूत में रखा और जब रात हुई तो मैं ने ताबूत को उस मक़ाम पर ले जा कर रख दिया जिस का मेरे शैख़ ने नाम लिया था और ठहरा रहा यहां तक कि जब सूरज त़ुलूअ़ हुवा तो एक जमाअ़त गिर्या व ज़ारी करते हुए आई, उन के पास भी एक ताबूत था, उन्हों

---

(1)....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "क्यूंकि वोह मालिके ह़क़ीक़ी है जो चाहे करे, जिसे चाहे इ़ज़्ज़त दे, जिसे चाहे ज़िल्लत दे, जिसे चाहे सआ़दत दे, जिसे चाहे शक़ी करे। वोह सब का ह़ाकिम है, कोई उस का ह़ाकिम नहीं जो उस से पूछ सके।"

ने अपना ताबूत इस ताबूत की एक जानिब रख दिया। उन में से एक शख़्स आगे बढ़ा और मेरे लाए हुए ताबूत को उठा कर जाने लगा तो मैं ने उसे पकड़ लिया और कहा : "जब तक तुम मुझे अपने मुतअ़ल्लिक़ कुछ न बताओगे मैं तुम्हें नहीं छोडूंगा।" तो उस ने बताया : "मैं इस पादरी का चालीस साल से ख़ादिम रहा हूं।" इस ने अपनी मौत से तीन दिन क़ब्ल मुझे बुला कर कहा : "ऐ मेरे बच्चे ! मेरा तुझ पर और तेरा मुझ पर हक़ है, तुझ पर मेरे मुकम्मल हुक़ूक़ में से एक येह है कि जब मैं तीन दिन बा'द मर जाऊं तो तुम मुझे एक ताबूत में रख देना और उठा कर फ़ुलां जगह रख देना और इस जगह का ज़िक्र किया और कहा कि अगर तू वहां रखा हुवा कोई दूसरा ताबूत पाए तो मेरे ताबूत को उस की जगह रख देना और उस को उठा कर गिर्जे में ले जाना और मेरे साथ जो मुआ़मला करना तुझ पर वाजिब है वोही उस के साथ करना (या'नी ईसाइयों के त़रीक़े पर दफ़्न करना)।" जब तीन दिन गुज़र गए तो इन का चेहरा ख़ुशी से खिल उठा, कलिमए शहादत पढ़ा और मुसलमान हो कर इन्तिक़ाल कर गए। फिर मैं ने इन के हुक्म के मुत़ाबिक़ अ़मल किया और इन को यहां ले आया।"

(वोह बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि) जो ताबूत वोह लोग ले कर आए थे मैं ने उसे उठाया और घर के एक कोने में रख कर खोला तो देखा कि उस में एक ऐसे बुज़ुर्ग थे, जिन के चेहरे पर अन्वार की बारिश बरस रही थी, उन के सारे बाल सफ़ेद थे। मैं ने उन को ताबूत से निकाला, उन के कपड़े उतारे और फिर फ़ुक़रा के साथ मिल कर उन को ग़ुस्ल दिया, हम ने उन पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और एक कोने में दफ़्न कर दिया। वोह दिन गवाह है कि मैं जब भी बाहर निकलता हूं तो मेरे चेहरे पर बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़ से ग़म के बादल बरसने लगते हैं। मेरा लोगों से जुदा रहने का सबब येही है।"

रिक़्क़त अंगेज़ दुआ :

हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हुस्ने ख़ातिमा का सुवाल करते हैं और उस की ख़ुफ़्या तदबीर से डरते हैं, बेशक ह़द से बढ़ने वाले ही उस की ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ रहते हैं। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम तेरी बारगाह में तेरे मह़बूब صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का वसीला पेश करते हैं, और हमारा ईमान है कि तेरे मह़बूब صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तेरी बारगाह में हम आ़सियों और गुनाहगारों की शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम को ख़ौफ़ से अम्न अ़त़ा फ़रमा दे, हमारे ड़यूब की पर्दा पोशी फ़रमा और हमारे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दे। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू भी सिर्फ़ उन्हें ही अपनी बारगाह में शर्फ़े क़बूलिय्यत अ़त़ा फ़रमाएगा जो तेरे नेक बन्दे हैं तो फिर हमें बता कि हम जैसे गुनाहगारों को कौन क़बूल करेगा ? **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू इत़ाअ़त गुज़ार बन्दों पर ही रह़मो करम की बारिश नाज़िल फ़रमाएगा तो कोताही करने वालों और आ़सियों पर कौन करम करेगा ? **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम अपने नफ़्सों की बुराई को अच्छी त़रह़ जान चुके लिहाज़ा हम पर नज़रे करम फ़रमा और हमारी तौबा क़बूल फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर ऐसा फ़ज़्लो करम

फ़रमा जो हमें तेरी ज़ात के सिवा हर चीज़ से बे परवाह कर दे, हमें इता़अ़त की तौफ़ीक़, मा'सिय्यत से नफ़रत और पुर ख़ुलूस निय्यत की दौलत से नवाज़ दे, हमें अपनी ऐसी रह़मत से नवाज़ कि जो हमारी कमी और कोताही को पूरा कर दे हमारे फ़क़्र को ग़ना से बदल दे, हमारे गुनाहों को मिटा दे और हमारी क़द्रो मन्ज़िलत में इज़ाफ़ा फ़रमा दे, हमें अपने और अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक फ़रामीन सुन कर उन से नफ़्अ़ हा़सिल करने की सआ़दत अ़ता फ़रमा और हम ख़ता़कारों के ह़क़ में आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा कि जिस दिन माल काम आएगा, न औलाद। ऐ सब से बढ़ कर रह़म फ़रमाने वाले ! हम पर अपनी ख़ास रह़मत नाज़िल फ़रमा। (आमीन)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

हुक्मरानों पर हि़साब की सख़्तियां

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : ''बरोज़े क़ियामत लोग जम्अ़ होंगे, तो कहा जाएगा : ''इस उम्मत के फ़ुक़रा और मसाकीन कहां हैं ?'' तो वोह खड़े हो जाएंगे पूछा जाएगा : ''तुम ने क्या अ़मल किये ?'' वोह अ़र्ज़ करेंगे : ''ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू ने हमें आज़माइश में मुब्तला किया तो हम ने सब्र किया और हुक्मरानी व सल्त़नत का वाली हमारे इ़लावा दूसरों को बना दिया।'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : ''तुम ने सच कहा।'' या इसी की मिष्ल इरशाद फ़रमाएगा (येह रावी का शक है) फिर वोह दूसरे लोगों से बहुत पहले जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे और हि़साब की सख़्तियां हुक्मरानों और साहि़बे सल्त़नत लोगों पर बाक़ी रह जाएंगी।'' सहा़बए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِين ने अ़र्ज़ की : ''उस दिन मोअमिनीन कहां होंगे ?'' हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''उन के लिये नूर के मिम्बर रखे जाएंगे और उन पर बादलों से साया किया जाएगा।''

(صحیح ابن حبان ،باب وصف الجنه واهلها ، الحدیث ۷۳۷٦، ج۹، ص ۲۵۳)

बयान 3 : मौत और ज़ियारते क़ुबूर वग़ैरा का बयान

हम्दे बारी तआला :

सब ख़ूबियां उस ज़ात के लिये हैं जो हम्द की मुस्तहिक़ है, अपनी किब्रियाई में वाहिद है, उस का न कोई हम पल्ला है और न ही उस की कोई हद है, बुलन्द है, क़वी है, मददगार है, हमीद है, ग़नी है, ग़नी करने वाला है, पैदा करने और लौटाने वाला है, ऐसा अ़ता करने वाला है जिस की अ़ता कभी फ़ना और ख़त्म होने वाली नहीं, ऐसा रोकने वाला है कि जिस से वोह रोक ले उसे कोई देने वाला नहीं और अपने इरादे में किसी का मोहताज नहीं, मख़्लूक़ को पैदा कर के अहसन त़रीक़े से राहे रास्त पर चलाने वाला है और उस ने मख़्लूक़ की सूरतों को अच्छा बनाया और उन को जन्नत में ने'मतों और हमेशा रहने की ख़ुशख़बरी दी और इब्रत वाली आंखों से नवाज़ा और अ़ज़ाबे नार और वईद से डराया और शुक्र को लाज़िम किया और उस ने उन के लिये अपने मज़ीद फ़ज़्ल के ख़ज़ाने का ज़िम्मा लिया और उन पर मौत को मुसल्लत़ किया पस कोई भी उस से बरियुज़्ज़िम्मा नहीं, कितने ही लोगों को मौत ने अपने दोस्तों की जुदाई में रुलाया ? कितनों को नौ मौलूद छोड़ा और उन सब को गिर्या व ज़ारी में मश्ग़ूल कर दिया, ह़ालांकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किसी को ग़मज़दा पैदा किया, न ग़मज़दा लोटाएगा। मौत के सबब मज़्बूत़ इमारतें बरबाद हो गईं और मौत ने फ़ना के सबब उस घर के रहने वालों पर हुकूमत की और रूहों के परन्दे अपने घोंसलों से उड़ गए और उन की ऐ़श की ज़िन्दगी को तंगी में बदल दिया तो अब बे आबो गियाह ज़मीन में बादशाहों, ग़ुलामों, ग़नियों और मोह़ताजों की क़ब्रें एक जैसी हैं।

पाक है वोह ज़ात ! जिस ने मौत के ज़रीए़ मग़रूरों में से हर एक को मुसलसल ज़लील किया और मौत के ज़रीए़ बड़े बड़े बहादुर बादशाहों को शिकस्त दी और उन को वसीअ़ महल्लात से उठा कर अन्धेरी क़ब्रों में पहुंचा दिया और उन की लम्बी लम्बी उम्मीदों को काट कर रख दिया, मौत ने उन के आबा व अज्दाद को पकड़ लिया। और बच्चों को झूलों से उठा कर क़ब्रों को उन का घर बना दिया और चेहरों को ख़ाक में मिला कर रख दिया, मौत छोटे बड़े, अमीर फ़क़ीर, ह़ाकिम मह़कूम और बाप औलाद सब के लिये बराबर है और उस ने मर्दों औ़रतों सब को फ़ना कर दिया और अब क़ियामत तक उन की याद बाक़ी है।

क्या **ग़ाफ़िल इन्सान** उन की हलाकतो बरबादी से इब्रत ह़ासिल नहीं करेगा ? ह़ालांकि मौत ने उन सब को फ़ना और उन की जमइय्यत को तित्तर बित्तर कर दिया। इन्सान कैसे धोके में रहता है ह़ालांकि वोह जानता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़ालिम को मोहलत देता है मगर जब वोह गिरिफ़्त फ़रमाता है तो कोई उस से नहीं बचा सकता। क्या लोग येह बात नहीं जानते ? और उन की जानें मौत से मह़फ़ूज़ नहीं। (जैसा कि फ़रमाने इलाही عَزَّوَجَلَّ है :)

وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِىَ ظَالِمَةٌ ط اِنَّ اَخْذَهٗٓ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ0 (پ۱۲،ھود:۱۰۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ऐसी ही पकड़ है तेरे रब्ब की जब बस्तियों को पकड़ता है उन के ज़ुल्म पर बेशक उस की पकड़ दर्दनाक करीं (सख़्त) है।*

कहां हैं शहरों और मज़्बूत़ क़िल्ओं वाले ? कहां हैं मआनी और फ़ुनून वाले ? कहां है वोह मज़्बूत़ क़िलए़ जिन के रहने वाले मज़्बूत़ थे ? कहां हैं साबिक़ा उम्मतें ? कहां हैं ऊंचे ऊंचे मह़ल्लात में रहने वाले ? उन पर मौत का वा'दा सच हुवा पस अगर तू उन की क़ब्रों को बग़ौर देखे तो ज़रूर उन के अन्जाम से तअ़ज्जुब करेगा कि अभी उन के अह़वाल बोसीदा न हुए थे कि क़ब्र ने उन के जोड़ जोड़ को बिखेर कर रख दिया और अब ह़ालत येह है कि न उन में से आज़ाद पहचाने जाते हैं, न ग़ुलाम। बहरह़ाल वोह उन्सिय्यत और क़ुर्ब ह़ासिल करने के बा'द क़ब्र की तारीकी में बदह़ाल पड़े हैं। ह़ालांकि मौत ख़ुश रहने वालों, बदनसीबों, क़रीब और दूर वालों को पकड़ कर उन्हें नसीह़त करती रही और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान से ख़बरदार करती रही :

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ط ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ O (پ۲۶،ق:۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती ह़क़ के साथ येह है जिस से तू भागता था।*

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हम दस आदमी सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर हुए, एक अन्सारी ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों में सब से अ़क़्लमन्द कौन है ?'' आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''मौत को सब से ज़ियादा याद करने वाला और उस के लिये सब से अच्छी तय्यारी करने वाला, येही लोग अ़क़्लमन्द हैं जो दुन्या की भलाई और आख़िरत की इ़ज़्ज़त ले गए।''

(مکارم الاخلاق لابن ابی الدنیا،الحدیث۳،ص۵۔۶۔رواہ ابن عمررضی اللہ تعالی عنہما۔سنن ابن ماجۃ،ابواب الزھد،باب ذکر الموت والا ستعداد لہ ، الحدیث ۴۲۵۹ ، ص ۲۷۳۵ ۔رواہ ابن عمررضی اللّٰہ تعالی عنہما)

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہَا से मरवी है, ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात पसन्द करता है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी उस की मुलाक़ात को पसन्द करता है और जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात को ना पसन्द करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी उस की मुलाक़ात को ना पसन्द फ़रमाता है।'' तो मैं ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم क्या आप मौत को ना पसन्द करने की बात कर रहे हैं ? इसे तो हम सब नापसन्द करते हैं।'' तो आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''ऐसा नहीं ! बल्कि जब मोमिन को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत, रिज़ा और जन्नत की ख़ुशख़बरी दी जाती है तो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात पसन्द करता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की मुलाक़ात को पसन्द करता है और जब काफ़िर को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब और उस की नाराज़ी की ख़बर दी जाती है तो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात को ना पसन्द करता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की मुलाक़ात को नापसन्द फ़रमाता है।''

(صحیح مسلم ، کتاب الذکر والدعا ، باب من احب لقاء اللّٰہ......الخ،الحدیث ۲۶۸۴ ، ص ۱۱۴۵)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ से मरवी है, ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ बयान है : ''तुम में से

कोई किसी ऐसी मुसीबत की वजह से मौत की तमन्ना न करे जो उस पर उतरी।'' मज़ीद इरशाद फ़रमाया : ''अगर तमन्ना करना ही है तो यूं कहे : اَللّٰھُمَّ اَحْیِنِیْ مَاکَانَتِ الْحَیَاۃُ خَیْرًا لِّیْ وَتَوَفَّنِیْ مَا کَانَتِ الْوَفَاۃُ خَیْرًا لِّیْ'' या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! जब तक ज़िन्दगी मेरे लिये बेहतर हो मुझे ज़िन्दा रख और जब मौत मेरे लिये बेहतर हो तो मुझे मौत अ़ता फ़रमा दे।'' (आमीन)

(المرجع السابق، باب کراھة تمنی الموت ...... نزل به، الحدیث ٢٦٨٠، ص ١١٤٥)

मेरे मीठे मीठे इस्लामी भाई ! ज़ियादा से ज़ियादा अ़मले सालेह़ कर, और उस मौत के प्याले से डर जिस को तू ज़रूर चखने वाला है, और ऐसी ऐ़शो इ़श्रत को तर्क कर दे जिस से तू लाज़िमी त़ौर पर जुदा होने वाला है, ऐ मौत को भूलने वाले ! मौत ने तो बड़े बड़े पहलवानों को पछाड़ दिया है, उन से इ़ब्रत ह़ासिल कर जो तुझ से पहले मौत का जाम पी चुके हैं।

मिले ख़ाक में अहले शां कैसे कैसे | *मकीं हो गए ला मकां कैसे कैसे*
हुए नाम वर बे निशां कैसे कैसे | *ज़मीं खा गई नौजवां कैसे कैसे*
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है | *येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है*

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''मय्यित अपनी क़ब्र में ऐसे है जैसे ग़र्क़ होने वाला मदद का त़ालिब, वोह अपने बेटे, भाई या दोस्त की त़रफ़ से पहुंचने वाली दुआ़ की मुन्तज़िर होती है। जब उसे दुआ़ पहुंचती है तो वोह उसे दुन्या व मा फ़ीहा (या'नी दुन्या और जो कुछ इस में है) से ज़ियादा मह़बूब होती है।''

(شعب الایمان للبیهقی، باب فی الصلاة علی من مات ......الخ، الحدیث ٩٢٩٥، ج٧، ص١٦، بدون"ابنه")

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रोबर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जब मय्यित को क़ब्र में रखा जाता है तो क़ब्र कहती है : ''ऐ इब्ने आदम ! तेरे लिये ख़राबी है, तुझे किस चीज़ ने मुझ से धोके में रखा ? क्या तुझे इ़ल्म न था कि मैं आज़्माइश का घर हूं ? तारीकी, तन्हाई और कीड़े मकोड़ों का घर हूं, जब तू मेरे पास से गुज़रता था तो किस चीज़ ने तुझे मेरे मुतअ़ल्लिक़ फ़रेब में मुब्तला रखा ?'' अगर मुर्दा नेक हो तो एक जवाब देने वाला उस की त़रफ़ से जवाब देता है : ''क्या तू देखती नहीं कि येह भलाई का हुक्म देता और बुराई से मन्अ़ करता था।'' तो क़ब्र कहती है : ''तब तो मैं इस की ख़ात़िर सर सब्ज़ो शादाब बाग़ बन जाती हूं, उस का जिस्म नूर बन जाता है और उस की रूह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हो जाती है।''

(المعجم الکبیر، الحدیث ٩٤٢، ج٢٢، ص٣٧٧)

ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन मुह़म्मद عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللہِ الصَّمَد ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत फ़रमाते हैं कि हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ग़ैब निशान है : जब कोई शख़्स क़ब्रिस्तान से गुज़रता है तो क़ब्र वाले उस को पुकार कर कहते हैं : ''**ऐ ग़ाफ़िल इन्सान** ! अगर तू वोह जानता जो हम जानते हैं तो तेरा गोश्त और जिस्म यूं पिघल जाता जैसे बर्फ़ आग पर पिघलती है।''

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरोबर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "जो क़ब्र की ज़ियारत करना चाहे उसे चाहिये कि उस की ज़ियारत करे, लेकिन वहां अच्छी बात के इलावा कुछ न कहे, क्यूंकि मय्यित को भी उन चीज़ों से अज़िय्यत होती है जिन से ज़िन्दा को अज़िय्यत होती है।" (السنن الكبرى للنسائى، كتاب الجنائز، باب زيارة القبور، الحديث ٢١٦٠، ج١، ص٦٥٤ مختصر)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि "कोई भी शख़्स जब अपने किसी जानने वाले मोमिन भाई की क़ब्र पर से गुज़रता है और उसे सलाम करता है तो वोह उसे पहचानता और सलाम का जवाब देता है ।" (تفسير ابن كثير، سورة الروم، تحت الآية ٥٢، ج٦، ص ٢٩١)

ख़लीफ़ा सुलैमान बिन अब्दुल मलिक ने हज़रते सय्यिदुना अबू हाज़िम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से दर्याफ़्त किया : "**ऐ अबू हाज़िम** ! हम मौत को क्यूं नापसन्द करते हैं ?" तो आप ने इरशाद फ़रमाया : "इस लिये कि तुम ने दुन्या को आबाद और आख़िरत को बरबाद कर दिया है, और तुम आबादी से बरबादी की तरफ़ मुन्तक़िल होने को ना पसन्द करते हो।" फिर पूछने लगा : "**ऐ अबू हाज़िम** ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सामने हाज़िरी कैसे होगी ?" तो आप ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अमीरुल मोअमिनीन ! नेक आदमी गुमशुदा शख़्स की तरह है जो अपने घर वालों के पास ख़ुशी ख़ुशी आता है और गुनहगार शख़्स भागे हुए ग़ुलाम की तरह है जो अपने आक़ा के पास ख़ौफ़ज़दा और ग़मज़दा आता है।"

हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने इबादत गुज़ार ख़ातून उम्मे हारून رحمة الله تعالى عليها से पूछा : "क्या आप मरना पसन्द करती हैं ?" तो उन्हों ने फ़रमाया : "नहीं।" मैं ने पूछा : "वोह क्यूं ?" तो कहने लगीं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मैं मख़्लूक़ की नाफ़रमानी करूं तो उस से मिलना पसन्द नहीं करती तो ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ (की नाफ़रमानी कर के उस) से मिलना कैसे पसन्द करूंगी।"

फ़िक्रे मदीना (मुहासबा) करने वाला ख़ुश नसीब :

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र कत्तानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِى फ़रमाते हैं : "एक शख़्स बुराइयों और ख़ताओं पर अपने नफ़्स का मुहासबा किया करता था। एक दिन उस ने अपनी ज़िन्दगी के सालों का हिसाब लगाया तो साठ साल बने फिर दिनों का हिसाब किया तो इक्कीस हज़ार पांच सो दिन (21,500) बने तो उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और बे होश हो कर गिर पड़ा। जब होश में आया तो कहने लगा : "हाए अफ़्सोस ! अगर रोज़ाना एक गुनाह भी किया हो तो अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर इक्कीस हज़ार पांच सो गुनाह ले कर हाज़िर होउंगा तो उन गुनाहों का क्या हाल होगा जिन का शुमार ही नहीं ? हाए अफ़्सोस ! मैं ने अपनी दुन्या आबाद की और आख़िरत बरबाद की और अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी करता रहा, मैं दुन्या में तो आबादी से बरबादी की तरफ़ मुन्तक़िल होना पसन्द नहीं करता तो बरोज़े क़ियामत बिग़ैर षवाबो अमल के हिसाब व किताब कैसे दूंगा ? और अज़ाब का सामना कैसे करूंगा ? फिर उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और ज़मीन पर गिर गया, जब हरकत दी गई तो उस की जान जाने आफ़रीं के सिपुर्द हो चुकी थी।"

مَنَازِلُ دُنْيَایَ عَمَّرْتُهَا　　وَخَرَبْتُ دَارِیْ فِی الْاٰخِرَة

اَصْبَحْتُ اَنْکَرُ دَارِی الْخَرَاب　　وَاَرْغَبُتُ فِیْ دَارِی الْعَامِرَة

तर्जमा : (1)....मैं ने अपनी दुन्या के घरों को आबाद किया और आख़िरत के घर को वीरान कर दिया।

(2)....अब मैं अपने वीरान घर को नापसन्द करने लगा हूं और अपने आबाद घर में रग़बत रखता हूं।

हुस्ने ज़न की बरकत :

हज़रते सय्यिदुना अबू उ़मर ज़रीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِير फ़रमाते हैं कि मुझे हज़रते सय्यिदुना हाज़िम رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه के भाई हज़रते सय्यिदुना सहल رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه ने बताया कि "मैं ने हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار को विसाल के बा'द ख़्वाब में देखा तो पूछा : "ऐ अबू यह़या رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه ! आप अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में किस ह़ालत में ह़ाज़िर हुए ? हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ने इरशाद फ़रमाया : "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में बहुत ज़ियादा गुनाहों के साथ ह़ाज़िर हुवा जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुतअ़ल्लिक़ मेरे हुस्ने ज़न ने ख़त्म कर दिया।"

एक ज़ाहिद से सुवाल किया गया : "आप कैसे हैं ?" तो उन्हों ने येह ह़िक्मत भरा जवाब इरशाद फ़रमाया : "उस शख़्स का ह़ाल कैसा होगा जो बिला ज़ादे राह सफ़र का इरादा रखता है, वह़शत नाक क़ब्र में बिग़ैर मूनिसो ग़मख़्वार के रहेगा और अपने क़ादिर मालिक की बारगाह में बिग़ैर हुज्जत के ह़ाज़िर होगा।"

आख़िरत की पहली मन्ज़िल :

हज़रते सय्यिदुना उ़षमान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के बारे में है कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ क़ब्र पर खड़े हो कर रो रहे थे। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से अ़र्ज़ की गई : "जन्नत व दोज़ख़ का ज़िक्र कर के तो आप नहीं रोते मगर क़ब्र को याद कर के रोते हैं ?" तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि "क़ब्र आख़िरत की मनाज़िल में से पहली मन्ज़िल है, अगर कोई इस से नजात पा गया तो बा'द वाला मुआ़मला इस से आसान होगा और अगर इस से नजात न हुई तो बा'द वाला मुआ़मला इस से भी ज़ियादा मुश्किल होगा।"

(جامع الترمذی،ابواب الزھد،باب ماجاء فی فظاعة القبر وانه اول منازل الآخرة، الحديث ۲۳۰۸ ، ص ۱۸۸٤)

एक क़ब्र पर चन्द अश्आ़र लिखे हुए थे, जिन का मफ़्हूम येह है :

"बोसीदा और टूटी फूटी क़ब्रों में रहनेवालों पर सलाम हो, उन की ह़ालत ऐसी हो चुकी है गोया वोह दुन्या की मजालिस में कभी नहीं बैठे, कभी भी उस का ठन्डा पानी नहीं पिया और न ही

कभी कुछ मजे़दार खाना खाया है, ज़िन्दगी में उन का मद्दे मुक़ाबिल कोई न था, त़वील उम्मीदें दुन्या में बांध रखी थी, लेकिन उन उम्मिदों में भी बहुत से तो शैत़ानी वस्वसे थे, **ऐ इन्सान**! सुन लो ! मैं नहीं जानता कि तुम्हारी क़ब्र कहां होगी ? और वोह जो बड़े दाना और अ़क़्लमन्द हैं उन की क़ब्र कहां होगी ? बस इतना जान लो कि सब को मिट्टी तले तन्हाई व वह़शत के घर में बसेरा करना है, हाए ! वोह लोग जो हमेशा उम्मीद व ना उम्मीदी की दरमियानी कैफ़िय्यत से दो चार रहे, अगर दुन्या में रह जाने वाले मालो मताअ़ में बढ़ चढ़ कर एक दूसरे से मुक़ाबला करने वाले लोग अ़क़्ल रखते तो (इस फ़ानी दुन्या में) कभी एक दूसरे से मुक़ाबला न करते।"

हज़रते सय्यिदुना यज़ीद रक़्क़ाशी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡكَافِی अपने आप से फ़रमाया करते थे : "हलाकत हो तुझ पर ऐ यज़ीद ! तेरे मरने के बा'द कौन तेरी त़रफ़ से नमाज़ पढ़ेगा ? कौन रोज़े रखेगा ? कौन वुज़ू करेगा ?" फिर फ़रमाते : "ऐ लोगो ! तुम अपनी बक़िय्या ज़िन्दगी में अपने आप पर क्यूं नहीं रोते ? वोह शख़्स जिस से मौत का वा'दा किया गया हो, जिस का घर क़ब्र हो, जिस का बिछौना मिट्टी हो, और जिस के साथी कीड़े मकोड़े हों और उस के साथ साथ वोह बड़ी घबराहट के दिन का भी इन्तिज़ार कर रहा हो तो उस का ह़ाल कैसा होगा ? और उस का अन्जाम कैसा होगा ?" फिर आप रोने लग जाते यहां तक कि बे होश हो कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आते।"

मरवी है कि एक औ़रत ने उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا से क़सावते क़ल्बी (या'नी दिल की सख़्ती) का ज़िक्र किया तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا ने इरशाद फ़रमाया : "मौत को कषरत से याद किया कर तेरा दिल नर्म हो जाएगा।" जब उस औ़रत ने ऐसा किया तो उस का दिल नर्म हो गया पस उस ने उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا का शुक्रिया अदा किया।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दर्दा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ बीमार हो गए तो लोगों ने अ़र्ज़ की : "किसी चीज़ की ख़्वाहिश हो तो फ़रमाइये।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ ने इरशाद फ़रमाया : "जन्नत की।" तो उन्हों ने फिर अ़र्ज़ की : "क्या हम आप के लिये त़बीब लाएं ?" तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ ने इरशाद फ़रमाया : "त़बीब ने ही तो मुझे मरज़ लाह़िक़ फ़रमाया है।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ के किसी दोस्त ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू दर्दा ! क्या आप चाहते हैं कि मैं आप के साथ रात भर जागता रहूं ?" तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ ने इरशाद फ़रमाया : "तुम्हें मरज़ से आ़फ़िय्यत है जब कि मैं मरज़ में मुब्तला हूं, लिहाज़ा आ़फ़िय्यत तुम्हें जागने नहीं देगी और बला मुझे सोने नहीं देगी। फिर फ़रमाया : "मैं **अल्लाह** वह़दहू ला शरीक की बारगाह में दुआ़ करता हूं कि वोह अहले आ़फ़िय्यत को शुक्र और अहले बला को सब्र की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।" (आमीन)

एक ख़ुत़्बे में है : "**ऐ लोगो**! उम्मीदें लपेट दी जाएंगी, उ़म्रें फ़ना हो जाएंगी, जिस्म मिट्टी के नीचे बोसीदा हो जाएंगे, जब कि रात और दिन (मौत के) क़ासिद की त़रह़ तेज़ी से दौड़े चले जा रहे हैं। हर दूर को क़रीब करते और नए को पुराना करते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे तो वोह हैं जो ख़्वाहिशात से ग़ाफ़िल, लज़्ज़ात से कनाराकश और बाक़ी रहने वाले आ'माल की त़रफ़ राग़िब होते हैं।"

हदीषे पाक में है : “नेक बन्दा जब मौत की सख़्तियों से दो चार होता है तो उस के आ'ज़ा एक दूसरे को कहते हैं : اَلسَّلَامُ عَلَيْک या'नी तुम पर सलामती हो।”

(تفسیر القرطبی، سورۃ ق، تحت الآیۃ:١٩، الجزء السابع عشر، ج٩، ص١١)

हज़रते सय्यिदुना हस्सान बिन अबी सिनान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से पूछा गया : “अपने आप को कैसा महसूस करते हैं? तो आप ने फ़रमाया : अगर मैं जहन्नम से नजात पा जाऊं तो ख़ैरिय्यत है।” फिर अर्ज़ की गई : “आप की ख़्वाहिश क्या है? तो आप ने इरशाद फ़रमाया : “मुझे एक तवील रात की ख़्वाहिश है कि जिस में सारी रात नमाज़ अदा करता रहूं।”

(حلیۃ الاولیاء، حسان بن ابی سنان، الحدیث٣٤٦٧، ج٣، ص١٣٩، بتغیر قلیل)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उत्बा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : “मैं ने एक मरीज़ की इयादत की। जब मैं उस के पास बैठा तो मैं ने उस से पूछा : “अपने आप को कैसा महसूस करते हैं?” तो उस ने जवाब में चन्द अश्आर पढ़े :

خَرَجْتُ مِنَ الدُّنْيَا وَقَامَتْ قِيَامَتِيْ غَدَاةً اَقَلَّ الْحَامِلُوْنَ جَنَازَتِيْ

وَعَجَّلَ اَهْلِيْ حَفْرَ قَبْرِيْ وَصَيَّرُوْا خُرُوْجِيْ وَتَعْجِيْلِيْ اِلَيْهِ كَرَامَتِيْ

كَاَنَّهُمُوْ لَمْ يَعْرِفُوْا قَطُّ صُحْبَتِيْ غَدَاةَ اَتٰى يَوْمِيْ عَلَيْهِ وَسَاعَتِيْ

तर्जमा : (1)....मेरे कूच का वक़्त आ गया और मैं दुन्या से निकल खड़ा हुवा, कल थोड़े से लोग मेरे जनाज़े की चारपाई उठाए होंगे।

(2)....मेरे घर वाले जल्दी जल्दी मेरी क़ब्र खुदवाएंगे फिर मेरी ता'ज़ीम करते हुए जल्दी जल्दी मुझे क़ब्र की त़रफ़ ले जाएंगे।

(3)....जिस सुब्ह मेरी मौत की घड़ी आई तो ऐसा लगा जैसे मेरी सोहबत को वोह कभी पहचानते ही न थे।

हज़रते सय्यिदुना मुज़नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى ने हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى के मरज़ुल मौत में उन की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की : “ऐ अबू अब्दुल्लाह ! आप की हालत कैसी है?” आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : “मैं दुन्या से कूच करने वाला, भाइयों से जुदा होने वाला, अपने बुरे आ'माल की सज़ा पाने वाला, मौत का प्याला पीने वाला और रब्ब عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में हाज़िर होने वाला हूं और मैं नहीं जानता कि मेरी रूह जन्नत में जाएगी कि मैं उसे मुबारक बाद दूं या जहन्नम में जाएगी कि उस से ता'ज़िय्यत करूं।”

(الزهد الكبير للبيهقى، فصل آخر فى قصر الامل والمبادرة......الخ، الحديث٥٧٥، ص٢٢٢)

फिर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कुछ अश्आर पढ़े जिन का मफ़्हूम येह है :

“ऐ मेरे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ! जब मेरा दिल सख़्त हो गया और रास्ते तंग हो गए तो मैं ने अपनी उम्मीद तुझी से बांध ली ताकि तेरे अफ़्वो करम के सदक़े महफ़ूज़ रहूं, ऐ मेरे परवर दगार عَزَّ وَجَلَّ ! मेरे गुनाह मुझ पर संगीन सूरते हाल इख़्तियार कर गए तो मैं ने इन को तेरे अफ़्वो करम से मिला दिया, पस तेरा अफ़्वो करम इन पर अपनी अज़मत में ग़ालिब आ गया। अब मैं ऐसा शख़्स

बन गया हूं जिस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये गए हैं और तू ने मह़ज़ अपने फ़ज़्लो करम से मुआ़फ़ फ़रमा दिया, ऐ काश ! मैं जान सकता कि मैं जन्नत में जाऊंगा कि मुबारक बाद वुसूल करूं या जहन्नम में जाऊंगा कि शर्मसार किया जाऊं।"

मन्क़ूल है कि एक शख़्स किसी क़ब्र के क़रीब दो रकअ़त नमाज़ अदा करने के बा'द लैट गया। ख़्वाब में उस ने साह़िबे क़ब्र को येह कहते हुए सुना : "ऐ शख़्स ! तुम अ़मल कर सकते हो लेकिन इ़ल्म नहीं रखते, हमारे पास इ़ल्म है लेकिन हम अ़मल नहीं कर सकते, ख़ुदा की क़सम ! मेरे नामए आ'माल में नमाज़ की दो रकअ़तें मुझे दुन्या व मा फ़ीहा (या'नी दुन्या और जो कुछ इस में है) से ज़ियादा मह़बूब है।"

मन्क़ूल है कि "एक आ़बिद अपने एक दोस्त की क़ब्र पर आया जिस से उसे मह़ब्बत थी और चन्द अश्आ़र पढ़े, जिन का मफ़्हूम येह है :

"मुझे क्या हुवा कि जब मैं क़ब्रों पर सलाम करते हुए अपने दोस्त की क़ब्र से गुज़रता हूं तो वोह मेरे सलाम का जवाब नहीं देता, ऐ मेरे ह़बीब ! तुझे क्या हुवा कि पुकारने वाले का जवाब नहीं देता ? क्या तू मुझ से जुदा होने के बा'द दोस्तों से उक्ता गया ? अगर वोह जवाब देने के लिये बोल सकता तो मुझ से येही कहता कि मिट्टी मेरे ख़ूबसूरत आ'ज़ा और जवानी को खा गई। वोह आ़बिद कहता है कि क़ब्र से एक ग़ैबी आवाज़ आई, वोह कह रहा था : ह़बीब ने कहा : मैं कैसे तुम्हारा जवाब दूं ? ह़ालांकि मैं मिट्टी और एक त़ाक़तवर के हां क़ैद हूं। मिट्टी मेरे ह़सीन जिस्म को खा गई पस मैं तुम को भूल गया और मिट्टी ने मुझे अपने घर वालों और दोस्तों से पोशीदा कर दिया। पस तुम पर मेरा सलाम हो, हमारी और तुम्हारी दोस्तियां ख़त्म हो गईं, मेरी जिल्द और रुख़्सार गल सड़ गए, मैं ने दुन्या में कितनी ही बार आ'ला क़िस्म के लिबास ज़ैबेतन किये, मेरे हाथ की उंगलियां जुदा हो गईं जो तह़रीर के लिये कितनी ही ख़ूबसूरत थीं, मोतियों जैसे दांत गिर गए जो जवाब देने के लिये कितने ही अच्छे थे और मेरी आंखें रुख़्सारों पर बह गईं, मैं ने कितनी ही बार उन से अपने दोस्तों का दिदार किया।"

ह़ज़रते सय्यिदुना षाबित बुनानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि "मैं क़ब्रों की ज़ियारत, मुर्दों से इ़ब्रत ह़ासिल करने, दोबारा जी उठने के मुआ़मले में ग़ौरो फ़िक्र करने और अपने नफ़्स को नसीह़त करने के लिये एक क़ब्रिस्तान में दाख़िल हुवा ताकि मेरा नफ़्स सरकशी और गुनाहों से रुक जाए, मैं ने क़ब्र वालों को इतना तन्हा और ख़ामोश पाया कि वोह एक दूसरे से मिलते हैं, न आपस में हम कलाम होते हैं। लिहाज़ा मैं उन की गुफ़्तगू सुनने से मायूस हो गया और उन के अह़वाल देख कर इ़ब्रत ह़ासिल की। जब मैं ने निकलने का इरादा किया तो एक आवाज़ सुनाई दी : "**ऐ षाबित** ! क़ब्र वालों की ख़ामोशी तुझे धोके में न डाले, इन में कितने ही ऐसे हैं जिन को उन की क़ब्रों में अ़ज़ाब दिया जा रहा है।"

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद त़ाई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक औ़रत के पास से गुज़रे जो एक क़ब्र पर बैठी रो रही थी और येह अश्आ़र पढ़ रही थी :

عَدِمْتَ الْحَیَاۃَ فَلَا نِلْتَھَا   اِذْ اَنْتَ فِی الْقَبْرِ قَدْ اَوْسَدُوْکَا

وَکَیْفَ اَلُذُّ بِطُعْمِ الْکَرٰی   وَھَا اَنْتَ فِی الْقَبْرِ قَدْ اَفْرَدُوْکَا

तर्जमा : (1)....तुम्हारी ज़िन्दगी ख़त्म हो गई, अब तू उस को न पा सकेगा जब कि तू क़ब्र में है और लोगों ने तुझे यहां पहुंचाने में जल्दी की।

(2)....और मैं क्यूंकर सुकून की नींद से लुत्फ़ अन्दोज़ हो सकती हूं, अब जब कि तू अपनी क़ब्र में है और लोगों ने तुझे तन्हा छोड़ दिया।

इस के बा'द उस औरत ने कहा : "हाए, मेरे बाप ! तेरे किस रुख़्सार से कीड़ों ने इब्तिदा की ?" ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद ताई رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَيْه येह सुन कर बेहोश हो गए और ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए।"

प्यारे इस्लामी भाइयो ! सुकून की नींद से बेदार हो जाओ और आ़जिज़ी व इन्किसारी के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर पनाह त़लब करो। यूं समझो कि तुम्हें मौत आ चुकी है जिस ने इज्तिमाइय्यत को ख़त्म कर के रख दिया और मह़ल्लात और मकानात को ख़ाली कर दिया और उन लोगों पर आसूंओं के बादलों ने बारिश बरसाई और उन के गिरवीदा लोगों ने रोती आंखों और दिले पुर दर्द से उन्हें पुकारा।

मिले ख़ाक में अहले शां कैसे कैसे ?

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं कि मैं एक क़ब्रिस्तान में ज़ियारत व नसीह़त और मौत के मुतअ़ल्लिक़ ग़ौरो फ़िक्र और इ़ब्रत ह़ासिल करने की ख़ातिर आया। मैं ने तमन्ना की, कि कोई शख़्स मुझे इन के मुतअ़ल्लिक़ कुछ बताए या इन का कोई इ़ब्रत नाक वाक़िआ़ बयान करे। चुनान्चे, मैं ने ऐसी ग़म भरी आवाज़ में दर्जे ज़ैल शे'र पढ़ा कि जिस ने ग़ौरो फ़िक्र से मेरे ग़मों के चक़माक़ को आग लगा दी (चक़माक़ एक मख़्सूस पथ्थर है जिस को रगड़ने से आग पैदा होती है) :

أَتَيْتُ الْقُبُوْرَ فَنَدَيْتُهَا　　　فَأَيْنَ الْمُعَظَّمُ وَالْمُحْتَقَر

وَأَيْنَ الْمُدِلُّ بِسُلْطَانِهِ　　　وَأَيْنَ الْعَزِيْزُ إِذَا مَا افْتَخَر

तर्जमा : (1)....मैं क़ब्रों का पास आया और उन्हें पुकार कर कहा : कहां हैं वोह लोग, दुन्या में जिन की इ़ज़्ज़त की जाती थी और वोह जिन को ह़क़ीर समझा जाता था ?

(2)....और कहां हैं वोह जिन्हें अपनी सल्त़नत पर बहुत भरोसा था ? कहां हैं वोह इ़ज़्ज़तदार जो फ़ख़्र किया करते थे ?

आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं वज्द से बेहोश था कि मुझे एक क़ब्र से जवाब मिला जिस का मफ़्हूम येह है :

"वोह सब फ़ना हो गए, अब उन की ख़बर देने वाला भी कोई नहीं, वोह सब मर कर इ़ब्रत का निशान बन गए और बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में ह़ाज़िर हो गए। ऐ गुज़रे हुए लोगों के बारे में मुझ से पूछने वाले ! क्या तेरे पास उन गुज़रे हुओं की इ़ब्रत वाली कोई बात नहीं।" ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : "जब मैं वापस आया तो मुसल्सल आंसू बहा रहा था और मुझे इस से बहुत इ़ब्रत ह़ासिल हुई।"

एक मर्दे सालेह़ फ़रमाते हैं : ‘‘एक मरतबा मैं ने क़ब्रों की ज़ियारत की तो मेरे दिल में नारे जहन्नम के ख़ौफ़ का शो’ला भड़क उठा। मैं एक लम्हे के लिये क़ब्रों के पास ठहर गया और निगाहे इ़ब्रत से उन को देखने लगा और इस के बा’द सुब्ह़ो शाम के दोनों कनारों में अहले क़ब्र से सर गोशियां करता और बैठा रहता। पस मेरी सोच ग़ौरो फ़िक्र और इ़ब्रत के मैदान में घूमने लगी तो मैं ने उन को मुख़ात़ब कर के कुछ बातें की जिन्हें मैं ने प्यारे प्यारे अश्आ़र की लड़ी में इस त़रह़ पिरो दिया :

أَحْبَابُنَا فَارَقْتُمُوْنَا فَاَوْحَشَتْ　　قُلُوْبٌ لَنَا مِنْ بَعْدِكُمْ وَدِيَارُ
فَكَمْ قَدْ تَذَاكَرْنَا مَحَاسِنَ مَنْ مَضٰى　　فَجَاءَتْ دُمُوْعٌ لِلْفِرَاقِ غِزَارُ
قَضَوْا وَقَضَيْتُمْ ثُمَّ نَقْضِیْ فَلَا بَقَا　　لِحَيٍّ وَكَاسَاتُ الْمُنُوْنِ تَدَارُ
وَكُنَّا وَاِيَّاكُمْ نَزُوْرُ مَقَابِرًا　　وَمُتُّمْ فَزُرْنَاكُمْ وَسَوْفَ نُزَارُ
سَقَتْ دِيْمَةُ الرِّضْوَانِ رِيًّا ثَرَاكُمُوْ　　وَسَحَتْ لَهَا فِیْ سَاحَتَيْهِ بِحَارُ

तर्जमा : (1)....ऐ हमारे अ़ज़ीज़ो ! तुम हमें छोड़ कर चले गए तुम्हारे बा’द हमारे दिल और घर वीरान हो गए।

(2)....जितनी मरतबा भी हम ने चले जाने वालों की ख़ूबियां याद कीं तो उन दोस्तों की जुदाई की वजह से हमारे आंसू कषरत से बहने लगे।

(3)....तुम से पहले लोगों को भी मौत ने आ लिया तुम भी चल बसे और हम भी फ़ना के घाट उतर जाएंगे। पस किसी भी ज़िन्दा के लिये बक़ा नहीं क्यूंकि मौत के प्याले घूमते रहते हैं।

(4)....हम और तुम क़ब्रिस्तान की ज़ियारत करते थे पस तुम मर गए तो हम तुम्हारी (क़ब्रों की) ज़ियारत कर रहे हैं अ़न क़रीब (हम भी मर जाएंगे और) लोग हमारी (क़ब्रों की) ज़ियारत करेंगे।

(5)....तुम पर बख़्शिश की बारिश हमेशा हमेशा बरसती रहे इस त़रह़ कि इस में समन्दर समा जाएं।

वोह सालेह़ बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं :

‘‘पस उसी वक़्त ज़बाने ह़ाल ने जवाब दिया जिन को मैं अश्आ़र में बयान करता हूं :

يَقُوْلُ لِسَانُ الْحَالِ اِذْ اَخْرَسَ الرَّدٰى　　لِسَانًا لَهُمْ مِنْهُ الْفَصِيْحُ يُغَارُ
شَرِبْنَا بِكَاْسٍ اَسْكَرَتْنَا مَرِيْرَةً　　اَلَا رُبَّ سُكْرٍ مَا حَوَاهُ عِقَارُ
فَلَا يَغْتَرِرْ بِاللّٰهِ مَنْ عَاشَ بَعْدَنَا　　بِعَيْشٍ فَاَيَّامُ الْحَيَاةِ قِصَارُ
وَإِنَّا وَجَدْنَا خَيْرَ اَزْوَادِنَا التُّقٰى　　هُوَ الرِّبْحُ حَقًّا مَا عَدَاهُ خَسَارُ
وَمَا الْعَيْشُ اِلَّا زَوْرَةُ الطَّيْفِ فِی الْكَرٰى　　وَمَا هٰذِهِ الدُّنْيَا الدَّنِيَّةُ دَارُ

तर्जमा : (1)....जब मौत ने उन की ज़बान को बन्द कर दिया तो उस की त़रफ़ से फ़सीह़ ज़बाने ह़ाल जवाब देती है कि,

(2)....हम ने एक प्याला पिया जिस ने हमें ज़बरदस्त नशा दिया। ख़बरदार ! कितने ही नशे ऐसे हैं जिन को शराब ने अपनी लपेट में लिया हुवा है।

(3)....हमारे बा’द ज़िन्दा रहने वाला ज़िन्दगी के ऐ़शो इ़श्रत की वजह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ग़फ़्लत न बरते पस ज़िन्दगी के दिन बहुत ही कम हैं।

(4)....और हम ने अपने ज़ादे राह में से तक़्वा को सब से बेहतर पाया, येही ह़क़ीक़ी नफ़्अ़ है, इस के इलावा सब कुछ ख़सारा है।

(5)....और ज़िन्दगी तो सिर्फ़ नींद में आने वाले ख़्वाब की त़रह़ है और येह ज़लील दुन्या (मुस्तक़िल) घर नहीं।

ऐ दुन्या में रहने वाले! मौत के शेर से डर, बेशक येह ह़म्ला आवर होगा, फिर येह लज़्ज़ात की त़रफ़ माइल होना कैसा? और तह़क़ीक़ मौत तेरी तलाश में है, ऐ शख़्स! इन हलाक होने वाले पहलवानों से इब्रत पकड़ पस इन में ग़ौर करने वाले के लिये नसीह़तें हैं।

لَقَدْ زُرْتُ اَقْوَامًا كِرَامًا اُحِبُّهُمْ ‏ وَهُمْ تَحْتَ اَطْبَاقِ الثَّرٰى فِيْهِ اَمْوَاتٌ

وَوَاصَلْتُهُمْ مِنْ بَعْدِ بَيْنٍ وَفُرْقَةٍ ‏ فَكَانَ لَنَا فِيْهِمْ عِظَاتٌ وَاِنْصَاتٌ

وَاَعْجَبُ شَيْءٍ فِي الْوُجُوْدِ اِجْتِمَاعُنَا ‏ وَنَحْنُ عَلٰى ذَاكَ التَّوَاصِلِ اَشْتَاتٌ

तर्जमा : (1)....बेशक मैं बहुत से मुअ़ज़्ज़ज़ लोगों से मिला जिन से मुझे मह़ब्बत थी और अब वोह मिट्टी के ढ़ेर तले मुर्दा पड़े हैं।

(2)....कुछ अ़र्से बा'द मैं भी उन से जा मिलूंगा, पस उन में हमारे लिये नसीह़तें और ग़ौर से सुनने वाली बातें हैं।

(3)....और मौत इन्तिहाई तअ़ज्जुब ख़ेज़ चीज़ है कि मरने में तो हम सब इकठ्ठे हैं मगर उसे पाने में (वक़्त के ए'तिबार से) हम सब मुख़्तलिफ़ हैं।

मन्क़ूल है कि उसी सालेह़ बुज़ुर्ग ने एक क़ब्र पर इस त़रह़ लिखा हुवा पाया :

اِصْبِرْ لِدَهْرٍ نَالَ مِنْ ‏ كَ فَهٰكَذَا مَضَتِ الدُّهُوْرُ

فَرَحًا وَحُزْنًا مَرَّةً ‏ لَا الْحُزْنُ دَامَ وَلَا السُّرُوْرُ

तर्जमा : (1).....उस ज़माने पर सब्र कर जिस ने तुझे रुस्वा किया, इसी त़रह़ बहुत सारे ज़माने गुज़र चुके हैं।

(2)....ख़ुशी और ग़मी एक ही मरतबा होती है, न ग़मी हमेशा रहती है, न ही ख़ुशी।

ह़ज़रते सय्यिदुना इस्मई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ‘‘मैं ह़ैरत अंगेज़ उमूर और ह़श्रो नश्र में बड़ा ग़ौरो फ़िक्र किया करता था और मैं क़ब्रों पर लिखा हुवा पढ़ कर सुकून ह़ासिल करता था पस इस दौरान मैं ने तीन क़ब्रें देखीं उन पर तख़्तियां थीं जिन पर येह लिखा हुवा था :

اَلَا قُلْ لِمَاشٍ عَلٰى قَبْرِنَا ‏ غُفُوْلٌ لِاَشْيَاءَ حُلَّتْ بِنَا

سَيَنْدَمُ يَوْمًا لِتَفْرِيْطِهٖ ‏ كَمَا قَدْ نَدِمْنَا لِتَفْرِيْطِنَا

तर्जमा : (1)....सुन लो! हमारी क़ब्र के पास से गुज़रने वाले के लिये कम मुद्दत है, वोह उन चीज़ों से बहुत ज़ियादा ग़ाफ़िल है जो हमें पहनाई गई हैं।

(2)....अ़न क़रीब एक दिन वोह अपनी ग़फ़्लत की वजह से शर्मसार होगा जैसा कि हम अपनी ग़फ़्लत की वजह से शर्मिन्दा हुए।

और आप رَحْمَةُ اللهِ تعالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ‘‘इसी त़रह़ मैं ने क़ब्र पर लगे हुए एक पथ्थर पर भी येह लिखा हुवा पाया :

وَقَفْتُ عَلَى الْاَحِبَّةِ حِيْنَ صُفَّتْ ‏ قُبُوْرُهُمُوْ كَاَفْرَاسِ الرِّهَانِ

فَلَمَّا اَنْ بَكَيْتُ وَفَاضَ دَمْعِيْ ‏ رَاَتْ عَيْنَايَ بَيْنَهُمُوْ مَكَانِيْ

तर्जमा : (1)....मैं दोस्तों के पास रुका, उन की क़ब्रें दौड़ लगाने वाले घुड़ सुवारों की तरफ़ सफ़ बस्ता थीं।

(2)....पस जब मैं रोया और मेरे आंसू बहने लगे तो मेरी आंखों ने उन के दरमियान मेरा मकान देख लिया।

आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه मज़ीद फ़रमाते हैं : ''इसी त़रह़ मैं थोड़ा सा चला मेरे आंसू बह रहे थे और मेरा दिल फ़िराक़े अह़बाब से छलनी था, मैं ने एक क़ब्र पर लगी तख़्ती पर येह अश्आ़र लिखे हुए देखे :

يَا اَيُّهَا النَّاسُ كَانَ لِیُ اَمَلٌ   قَصَرَ بِیُ عَنُ بُلُوُغِهِ الْاَجَلُ
فَلْيَتَّقِ اللّٰهُ رَبَّهٗ رَجُلَ   اَمُكَنَهٗ فِیُ حِيَاتِهِ الْعَمَلُ
مَا اَنَا وَحُدِیُ جُعِلْتُ حَيْثُ تَرَی   كَلٌّ اِلٰی مَا نُقِلْتُ يَنْتَقِلُ

तर्जमा : (1)...ऐ लोगो ! मेरी बहुत सी उम्मीदें थीं मेरे मर जाने से वोह ना मुकम्मल रह गईं।

(2)....पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस शख़्स पर रह़म फ़रमाता है उसे दुन्यावी ज़िन्दगी में अ़मल का मौक़अ़ अ़त़ा फ़रमा देता है।

(3)....सिर्फ़ मुझे ही यहां नहीं रखा गया बल्कि तू देखेगा कि जिधर मुझे भेजा गया हर एक उधर ही मुन्तक़िल होगा।

और आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ''इसी त़रह़ मैं ने एक और क़ब्र पर लिखा हुवा देखा :

قِفُ وَاعْتَبِرُ فَقَرِيْبًا   تَحِلُّ هٰذَا الْمَحَلَّا
هٰذَا مَكَانٌ يُسَاوِی   فِيُهِ الْاَعَزُّ الْاَذَلَّا

तर्जमा : (1)....(ऐ गुज़रने वाले !) ज़रा ठहर जा ! और इब्रत ह़ासिल कर, अ़न क़रीब तुझे भी इस मकान में उतरना है।

(2)....येह ऐसा मकान है जिस में इ़ज़्ज़तो ज़िल्लत वाले सब बराबर हैं।

और फ़रमाते हैं : ''मैं ने एक औ़रत को देखा जो अपने बेटे की क़ब्र पर रो रो कर येह अश्आ़र पढ़ रही थी :

بِاللّٰهِ يَاقَبُرُ هَلْ زَالَتْ مَحَاسِنُهٗ   وَهَلْ تَغَيَّرَ ذَاكَ الْمَنْظَرُ النَّضِرُ
يَاقَبُرُ مَا اَنْتِ لَا رَوُضٌ وَلَا فَلَكٌ   فَكَيُفَ يَجُمَعُ فِيُكِ اَلشَّمُسُ وَالْقَمَرُ

तर्जमा : (1)....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ऐ क़ब्र ! क्या इस के ख़ूबसूरत आ'ज़ा बरबाद हो गए ? और क्या इस का पुर कशिश और तरो ताज़ा (चेहरा) तब्दील हो गया ?

(2)....ऐ क़ब्र ! तू क्या है ? तू बाग़ है, न आस्मान फिर कैसे तुझ में चांद सूरज (जैसे लोग) जम्अ़ हो जाते हैं।

और फ़रमाते हैं : ''इसी त़रह़ एक दिन मैं कुछ ऐसी क़ब्रों के पास से गुज़रा जिन को मैं पहचानता था और वोह सब ऐसे थे जिन्हों ने बहुत ख़ुश व ख़ुर्रम, ऐ़शो इ़श्रत और लज़्ज़ातो शहवात में ज़िन्दगी गुज़ारी। मैं ने उन की क़ब्रों की एक तख़्ती पर येह अश्आ़र लिखे हुए पाए :

اَيُّهَا الْمَاشِیْ بَيْنَ هٰذِی الْقُبُوْرِ غَافِلًا عَنْ مُعَقَّبَاتِ الْاُمُوْرِ
اُدْنُ مِنِّیْ اُنَبِّيكَ عَنِّیْ وَلَا يُنْ بِيكَ عَنِّیْ يَا صَاحِ مِثْلَ خَبِيْرِ
اَنَا مَيِّتٌ كَمَا تَرَانِیْ طَرِيْحٌ بَيْنَ اَطْبَاقِ جُنْدَلِ وَصُخُوْرِ
اَنَا فِیْ بَيْتِ غُرْبَةٍ وَانْفِرَادٍ مَعْ قُرْبِیْ مِنْ جِيْرَتِیْ وَعَشِيْرِیْ
لَيْسَ لِیْ فِيْهِ مُؤْنِسٌ غَيْرَ سَعْيِ مِنْ صَلَاحٍ سَعَيْتُهٗ اَوْ فُجُوْرِ
فَكَذَا اَنْتَ فَاعْتَبِرْ بِیْ وَاِلَّا صِرْتَ مِثْلِیْ رَهِيْنٌ يَوْمَ النُّشُوْرِ

तर्जमा : (1)....ऐ उमूरे आख़िरत से ग़ाफ़िल हो कर इन क़ब्रों के दरमियान चलने वाले !

(2)....मेरे क़रीब आ कि मैं तुझे अपने ह़ालात से बा ख़बर करूं, ऐ मोह़तरम ! जानने वाले की त़रह़ तुझे कोई नहीं बताएगा।

(3)....मैं मुर्दा हूं जैसा कि तू देख रहा है कि मुझे बन्जर और चटियल मैदान में डाल दिया गया है।

(4)....अपने पड़ोसियों और घर वालों के बा वुजूद मैं इस वीरान घर में अकेला हूं।

(5)....नेकियों और गुनाहों के इलावा क़ब्र में मेरे साथ कोई नहीं।

(6)....इसी त़रह़ तुझे भी यौमे क़ियामत के लिये यहां गिरवी रखा जाएगा लिहाज़ा मुझ से इब्रत ह़ासिल कर, वरना तेरा भी मेरे जैसा ह़ाल होगा।

मय्यित क़ब्र पर आने वाले को देखती है :

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق से मन्क़ूल है, बा'ज़ ने कहा है कि इब्ने मुवफ़्फ़क़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "मैं अपने वालिद साह़िब की क़ब्र की अकषर ज़ियारत किया करता था, एक दिन मैं एक जनाज़े के हमराह उस क़ब्रिस्तान की त़रफ़ गया जिस में मेरे वालिद मदफ़ून थे मुझे कोई काम था जिस की वजह से मैं ने वापसी में जल्दी की और अपने वालिद की क़ब्र की ज़ियारत न कर सका, रात ख़्वाब में वालिद साह़िब को देखा, उन्हों ने फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! कल तू क़ब्रिस्तान आया था लेकिन मेरे पास न आया।" मैं ने कहा : "अब्बाजान ! क्या आप जानते हैं कि मैं आप के पास आया था ?" तो उन्हों ने फ़रमाया : "जी हां ! अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! तू मेरे पास आता है तो मैं तुझे लगातार देखता रहता हूं यहां तक कि तू पुल पार कर के मेरे पास पहुंचता है और मेरे पास बैठता है फिर खड़ा होता है तो वापसी में भी मैं तुम्हें देखता रहता हूं यहां तक कि तू पुल पार कर जाता है।"

मन्क़ूल है कि "एक घुड़ सुवार एक लड़के के क़रीब से गुज़रा तो उस से पूछा : "ऐ लड़के ! आबादी कहां है ? लड़के ने कहा : "उस घाटी पर चढ़ जाएं।" जब वोह घाटी पर चढ़ा तो उसे एक क़ब्रिस्तान नज़र आया, कहने लगा : यक़ीनन येह लड़का या तो जाहिल है या फिर कोई दाना व अ़क़्लमन्द। वोह उस की त़रफ़ वापस आया और कहा : "मैं ने तुझ से आबादी के मुतअ़ल्लिक़ पूछा था लेकिन तू ने मुझे क़ब्रिसातन वालों का रास्ता दिखाया।" तो उस लड़के ने कहा : "मैं ने इस त़रफ़

के अफ़राद को उधर जाते तो देखा है लेकिन उधर वालों को इस त़रफ़ आते कभी नहीं देखा बल्कि येह वीराना (या'नी क़ब्रिस्तान) तो अब आबादी में बदल चुका हैं। अगर आप मुझ से पूछते कि मुझे और मेरे जानवर को ठिकाना कहां मिल सकता है तो मैं आप को उस आबादी का पता बताता।'' फिर उस ने चन्द अश्आ़र पढ़े :

نَفْسُ زُوْرِی الْقُبُوْرَ وَاعْتَبِرِیْهَا حَیْثُ فِیْهَا لِمَنْ یَزُوْرُ عِظَاتُ
وَانْظُرِی کَیْفَ حَالُ مَنْ حَلَّ فِیْهَا بَعْدَ عِزٍّ وَهُمْ بِهَا اَمْوَاتُ
حَرَصُوْا اَمَلُوْا کَحِرْصِکَ یَا نَفْسُ وَوَافَاهُمُ الْحِمَامُ فَمَاتُوْا
فَالسُّرَاةُ الْعِظَامُ مِنْهُمْ عِظَامٌ فِیْ بَطُوْنِ الثَّرٰی حِطَامٌ رُفَاتُ
فَکَاَنَّ قَدحَلَلْتَ فِیْ مَصْرِعِ الْقَوْ مِ وَحُلَّتْ بِجِسْمِکَ الْمُثَلَاتُ

तर्जमा : (1)....ऐ नफ़्स ! क़ब्रों की ज़ियारत कर के इ़ब्रत ह़ासिल किया कर क्यूंकि इन में ज़ियारत करने वाले के लिये बहुत नसीह़तें हैं।

(2)....और देख कि इन में उतरने वाले इ़ज़्ज़त के बा'द कैसी ज़िल्लत में हैं और वोह इस में मुर्दा पड़े हैं।

(3)....ऐ नफ़्स ! वोह भी तेरी त़रह़ लम्बी लम्बी उम्मीदों वाले और ह़रीस थे लेकिन मौत ने उन के दिन पूरे कर दिये पस वोह मर गए।

(4)....बहुत शानदार और मज़्बूत़ जिस्म वालों की हड्डियां मिट्टी के पेट में रेज़ा रेज़ा हो गईं।

(5)....गोया तू लोगों के मैदाने कारज़ार में आ चुका है और तेरे जिस्म का मुस्ला कर दिया गया (या'नी नाक, कान वग़ैरा काट कर शक्ल बिगाड़ दी गई) है।

मलकुल मौत का ए'लान :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर दगार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''कोई दिन ऐसा नहीं कि जिस में मलकुल मौत (عَلَیْہِ السَّلام) क़ब्रिस्तान में येह ए'लान न करता हो : ''ऐ क़ब्र वालो ! आज तुम्हें किन लोगों पर रश्क है ?'' तो वोह जवाब देते हुए कहते हैं : ''हमें मस्जिद वालों पर रश्क है कि वोह मस्जिदों में नमाज़ पढ़ते हैं और हम नमाज़ नहीं पढ़ सकते। वोह रोज़े रखते हैं और हम नहीं रख सकते। वोह सदक़ा करते हैं और हम नहीं कर सकते। वोह अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का ज़िक्र करते हैं और हम नहीं कर सकते।'' फिर अहले क़ब्र अपने गुज़श्ता ज़माने पर नादिम (या'नी शर्मसार) होते हैं।''

एक महीने में चार ह़ज :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मैसरा बिन हु़सैन رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ एक दिन क़ब्रिस्तान के रास्ते से गुज़रे, आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ की नज़र

कमज़ोर थी जिस की वजह से एक शख़्स आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का हाथ पकड़ कर आगे आगे जा रहा था यहां तक कि क़ब्रिस्तान आ गया। उस शख़्स ने अ़र्ज़ की : "ऐ मैसरा ! येह क़ब्रिस्तान है।" तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने कहा :

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ یَآ اَھْلَ الْقُبُوْرِ! اَنْتُمْ لَنَاسَلَفٌ وَّنَحْنُ لَکُمْ خَلَفٌ فَرَحِمَنَااللّٰهُ وَاِیَّاکُمْ وَغَفَرَ لَنَا وَلَکُمْ وَبَارَکَ لَنَاوَلَکُمْ فِی الْقُدُوْمِ عَلَیْهِ اِذَا صِرْنَا اِلٰی مَا صِرْتُمْ اِلَیْهِ

या'नी ऐ क़ब्र वालो ! तुम पर सलामती हो तुम हमारे अगले हो और हम तुम्हारे बा'द आने वाले हैं। हम यहां आएं तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ हम पर और तुम पर रह़म फ़रमाए, हमारी और तुम्हारी बख़्शिश फ़रमाए और अपनी बरकत से नवाज़े जब हम भी वहां पहुंचें जहां तुम पहुंचे हो।"

हज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने क़ब्र वालों में से एक शख़्स की रूह़ लौटा दी तो उस ने फ़सीह़ ज़बान में जवाब देते हुए कहा : "**ऐ दुन्या वालो** ! तुम्हें मुबारक हो ! तुम एक माह में चार मरतबा ह़ज करते हो।" हज़रते सय्यिदुना मैसरा رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने दर्याफ़्त फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम पर रह़म फ़रमाए, चार मरतबा कैसे ?" तो जवाब मिला : "नमाज़े जुमुआ़ अदा करना, क्या तुम नहीं जानते कि येह ह़ज्जे मक़्बूल है।"

फिर हज़रते सय्यिदुना मैसरा رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने पूछा : **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम पर रह़म फ़रमाए, मुझे उस अ़मल के मुतअ़ल्लिक़ बताओ जो तुम ने दुन्या में किया हो और उस ने तुम को नफ़्अ़ दिया हो ?" तो उस ने जवाब दिया : "बख़्शिश की दुआ़ करना दुन्या वालों के लिये आख़िरत में सब से ज़ियादा नफ़्अ़ बख़्श है।" आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फिर उस से पूछा : किस चीज़ ने तुम्हें हमारे सलाम का जवाब देने से रोक रखा है ?" तो उस ने जवाब दिया : "सलाम का जवाब देना एक नेकी है और अब हम नेकियां नहीं कर सकते, हमारी नेकियां न तो बढ़ती हैं और न ही बुराइयां कम होती हैं। और हम तुम्हारी इस दुआ़ से ख़ुश होते हैं : "رَحِمَ اللّٰهُ فُلَانًا الْمُتَوَفّٰی" या'नी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़ुलां मरने वाले पर रह़म फ़रमाए।" **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम पर रह़म फ़रमाए ! नेक आ'माल में जल्दी करो और बुरे आ'माल से इज्तिनाब करो और फ़ना होने वाली इमारत से नई ता'मीर होने वाली इमारत की त़रफ़ पलटने की तय्यारी करो गोया तुम मौत का प्याला पीने वाले हो क्यूंकि मौत का जाम हर मर्द व औ़रत पर गर्दिश करता रहता है।"

हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा अन्दलुसिय्या رحمۃاللہ تعالی علیھا एक नेक सिफ़त और सालिह़ा ख़ातून थीं, आप رحمۃاللہ تعالی علیھا फ़रमाती हैं : "मेरा बेटा इन्तिक़ाल कर गया और मैं हफ़्ते में एक बार उस की (क़ब्र की) ज़ियारत[1] करने जाती। जब मैं उस की क़ब्र के क़रीब पहुंचती तो उस के पड़ोसी मुर्दों को कहते हुए सुनती : "ऐ फ़ुलां ! येह तेरी मां है, तेरे पास आई है।" मैं अपने बेटे की क़ब्र को देखती तो ऐसा लगता जैसे वोह हंस रहा हो, मैं उस से बहुत ख़ुश होती।"

1....औ़रतों की क़ब्रों पर ह़ाज़िरी के मस्अले की वज़ाह़त करते हुए, हज़रते सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ के ह़वाले से तह़रीर फ़रमाते हैं : "और अस्लम येह है कि औ़रतें मुत़्लक़न मन्अ़ की जाएं कि अपनों की क़ुबूर की ज़ियारत में तो वोही जज़्अ़ व फ़ज़्अ़ है और सालिह़ीन की क़ुबूर पर या ता'ज़ीम में ह़द से गुज़र जाएंगी या बे अदबी करेंगी कि औ़रतों में येह दोनों बातें ब कषरत पाई जाती हैं।" (बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा 4, स. 89)

मुर्दे को बेटियों की रिक्क़त अंगेज़ दुआ़ काम आ गई :

हज़रते सय्यिदुना हारिष बिन नब्हान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : "मैं क़ब्रिस्तान जाया करता, क़ब्र वालों के लिये रह़्म की दुआ़ मांगता और ग़ौरो फ़िक्र करता, उन के अह़वाल से नसीह़त ह़ासिल करता। मैं उन्हें देखता कि वोह ख़ामोश हैं, कलाम नहीं करते और न ही उन (मरने वालों) के पड़ोसी उन की मुलाक़ात को आते हैं, ज़मीन का पेट उन का बिछौना है और ज़मीन की पीठ उन का ओढ़ना है और मैं उन्हें पुकारा करता : "ऐ क़ब्र वालो ! दुन्या से तुम्हारे नामो निशान मिट चुके हैं लेकिन तुम्हारे गुनाह नहीं मिटे। तुम ने बोसीदा घरों में डेरे लगा लिये हैं पस तुम्हारे पाउं वरम ज़दा हैं।" फिर मैं बहुत ज़ियादा रोता और उस के बा'द एक गुम्बद की त़रफ़ चला जाता जिस में एक क़ब्र थी और उस के साए में सो जाता। एक मरतबा मैं एक क़ब्र के पास सोया हुवा था कि अचानक साह़िबे क़ब्र को देखा कि उस की गरदन में ज़न्जीर थी, आंखें नीली और चेहरा सियाह हो चुका था और कह रहा था : "हाए ! मेरी बरबादी व हलाकत ! अगर दुन्या वाले मुझे देख लें तो कभी भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी न करें। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझ से उन लज़्ज़ात औरउन ख़त़ाओं के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया जिन्हों ने मुझे इन ज़न्जीरों में जकड़वाया और मुझे ग़र्क़ कर दिया है, तो है कोई मेरी फ़रियाद सुनने वाला ? या मेरे घर वालों को मेरी इस ह़ालत की ख़बर देने वाला ?"

हज़रते सय्यिदुना हारिष رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जब मैं बेदार हुवा तो बहुत ख़ौफ़ज़दा था क़रीब था कि इस हौलनाक मन्ज़र से मेरा दिल निकल जाता जो मैं ने देखा था, मैं घर गया, और सारी रात उसी के मुतअ़ल्लिक़ ग़ौरो फ़िक्र करता रहा। जब सुब्ह़ हुई तो घर वालों को कहा : "मैं कल जहां गया था मुझे दोबारा वहां जाने दो, शायद ! कोई क़ब्र की ज़ियारत करने के लिये आए तो जो मैं ने देखा उस को बताऊं।" जब मैं वहां गया तो किसी को न पाया, मैं सो गया, मैं ने फिर देखा कि क़ब्र वाले को चेहरे के बल घसीटा जा रहा है और वोह कह रहा है : "हाए हलाकत ! दुन्या में मेरे आ'माल बुरे और उ़म्र त़वील थी, मुझ पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सख़्त नाराज़ है, अगर रब्ब عَزَّوَجَلَّ ने मुझ पर रह़्म न किया और मुझे अ़ज़ाब से न बचाया तो मेरे लिये हलाकत व बरबादी है।" जब मैं बेदार हुवा तो उस आंखों देखे इ़ब्रतनाक वाक़िए़ की वजह से ख़ौफ़ज़दा था, बहर ह़ाल मैं घर वापस आ गया और रात बसर की, जब सुब्ह़ हुई तो मैं फिर क़ब्र के पास चला गया कि शायद ! कोई क़ब्र की ज़ियारत के लिये आया हो तो मैं उस को येह सारा वाक़िआ़ सुनाऊं लेकिन मैं ने क़ब्र की ज़ियारत करने वाले किसी शख़्स को न पाया। मुझे नींद आ गई, तो मैं ने इस दफ़्आ़ साह़िबे क़ब्र को देखा कि उस के दोनों क़दमों को बांधा जा रहा है और वोह कह रहा है : "दुन्या वाले मुझ से कितने बे ख़बर हो चुके हैं, मुझ पर अ़ज़ाब बढ़ाया जा रहा है, अस्बाब और ह़ीले सब मुन्क़तेअ़ हो गए, रब्ब عَزَّوَجَلَّ मुझ से नाराज़ है, मुझ पर हर सम्त से (रह़्मत के) दरवाज़े बन्द हैं, हलाकत है मेरे लिये ! अगर रब्ब عَزَّوَجَلَّ मुझ पर रह़्म न करे।"

हज़रते सय्यिदुना हारिष رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं ख़ौफ़ के आ़लम में नींद से बेदार हुवा, मैं ने लौटने का इरादा ही किया था कि चांद जैसी तीन लड़कियां आईं, मैं उन से दूर हो गया

और क़ब्र की आड़ में छुप गया ताकि मैं उन की गुफ़्त्गू सुन सकूं। उन में से सब से छोटी लड़की आगे बढ़ी और क़ब्र के पास रुक कर कहा : "اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ आप पर सलामती हो।" ऐ अब्बाजान ! आप ने सुब्ह् कैसे की ? आप अपनी आराम गाह में कैसे हैं ? और आप का अपने ठिकाने में ठहरना कैसा है ? आप हमारे पास अपनी मह्ब्बत छोड़ कर चले गए और आप की ख़बरगीरी करना हम से मुन्क़तेअ़ हो गई, आप पर हमें बहुत ज़ियादा ग़म है और आप से मिलने का बहुत शौक़ है।" फिर वोह बहुत ज़ियादा रोई। उस के बा'द दूसरी दोनों लड़कियां आगे बढ़ीं, सलाम कर के कहने लगीं : "येह हमारे उस बाप की क़ब्र है जो हम पर बहुत शफ़ीक़ और बहुत मेहरबान था। अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ आप को अपनी रह्मत से ख़ुश रखे, आप को अपने अ़ज़ाब के शर और सज़ा से बचाए। ऐ अब्बाजान ! हमें आप के बा'द ऐसी तकालीफ़ और ग़म लाहिक़ हुए कि अगर आप उन्हें देख लेते तो ग़मगीन हो जाते और अगर आप उन से आगाह हो जाते तो वोह आप को रन्जीदए ख़ातिर कर देते। मर्दों ने हमारे चेहरों को बेपर्दा कर दिया है जिन्हें आप ढांपा करते थे।"

हज़रते सय्यिदुना हारिष رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "उन की येह बातें सुन कर मुझे रोना आ गया फिर मैं तेज़ी से उन के पास गया और सलाम करने के बा'द कहा : "ऐ लड़कियों ! बेशक बा'ज़ अवक़ात आ'माल क़बूल किये जाते हैं और बा'ज़ अवक़ात रद्द कर दिये जाते हैं, मैं इस क़ब्र में रहने वाले तुम्हारे बाप के आ'माल को देख कर दुख में मुब्तला हो गया हूं और बुरे आ'माल के सबब इस की इब्रतनाक हालत ने मुझे मज़ीद ग़मज़दा कर दिया है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि जब उन लड़कियों ने मेरी गुफ़्त्गू सुनी तो कहने लगीं : "ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के नेक बन्दे ! आप ने क्या देखा ? मैं ने बताया : "मैं तीन दिन से बार बार यहां आ रहा हूं और लोहे के गुर्ज़ और ज़न्जीरों की आवाज़ सुनता हूं।" जब उन्हों ने येह सुना तो कहने लगीं : "इस से बढ़ कर भी कोई दुख और मुसीबत हो सकती है कि हम अपनी हाजात को पूरा करने और घरों को आबाद करने में मश्ग़ूल हैं जब कि हमारे बाप को आग का अ़ज़ाब दिया जा रहा है। अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! हमें चैन आएगा, न नींद और न ही सब्र यहां तक कि हम अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में गिर्या व ज़ारी करेंगी, शायद ! वोह हमारे बाप को आग से आज़ाद कर दे।" फिर वोह अपनी चादरों में गिरती पड़ती चली गईं।

हज़रते सय्यिदुना हारिष رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं घर लौटा और रात गुज़ारी। जब सुब्ह् हुई तो मैं फिर क़ब्र के पास चला गया और उसी शख़्स की क़ब्र के पास बैठ कर उस के हाल के मुतअ़ल्लिक़ ग़ौरो फ़िक्र करने लगा कि अचानक मुझ पर नींद का ग़लबा हुवा और मैं सो गया, मैं ने क़ब्र वाले को हसीनो जमील सूरत में देखा, उस के पाउं में सोने के जूते हैं और उस के पास ख़ुद्दाम और ग़ुलाम हैं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने उस को सलाम किया और कहा : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ आप पर रह्म करे, आप कौन हैं ?" उस ने जवाब दिया : "मैं वोही शख़्स हूं जिस के मुआ़मले को देख कर आप ग़मगीन हो गए थे, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ आप को जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए।" (आमीन)

मैं ने पूछा : "आप का येह ह़ाल कैसे हुवा ?" तो उस ने कहा : "जब आप ने मुझे देखा था और कल मेरी बेटियों को मेरे बारे में बताया था तो वोह अपने घरों को जा कर आंसू बहाने लगीं, बालों को बिखेर दिया, अपने रुख़्सारों को ज़मीन पर रख दिया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गिर्या व ज़ारी करने लगीं और मेरे लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से बख़्शिश की दुआ़ मांगने लगीं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरे गुनाहों की बख़्शिश फ़रमा कर मुझे आग से आज़ाद कर दिया और मुझे दिलों के चैन, सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस अ़ता फ़रमाया। जब आप मेरी बेटियों से मिलें तो उन को मेरी इस ह़ालत के मुतअ़ल्लिक़ बता दें ताकि वोह ग़मगीन न हों। उन को बताएं कि मैं बाग़ात व मह़ल्लात, हूरो ग़िल्मां, मुश्को काफ़ूर और फ़र्ह़ो सुरूर में हूं और येह भी बता दें कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दिया है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिष رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "पस जब मैं बेदार हुवा तो उस मन्ज़र से बहुत खुश था घर वापस आया, रात गुज़ारी जब सुब्ह़ हुई तो फिर सूए क़ब्रिस्तान चल पड़ा, वहां पहुंचा तो क्या देखता हूं कि वोह लड़कियां नंगे पाउं मौजूद हैं और उन के ऊपर ग़म के आषार नुमायां हैं। मैं ने उन को सलाम किया और कहा : "तुम्हें मुबारक हो ! मैं ने तुम्हारे बाप को बहुत बड़ी भलाई और वसीअ़ मुल्क में देखा है, और तुम्हारे बाप ने मुझे बताया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारी दुआ़ क़बूल फ़रमा ली और तुम्हारी कोशिशों को रद्द नहीं किया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारी ख़ातिर तुम्हारे बाप को बख़्श दिया है। लिहाज़ा तुम इस की ह़क़दार हो कि उस का शुक्रिया अदा करो।" येह सुनते ही उन में सब से छोटी लड़की ने दुआ़ शुरूअ़ कर दी : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! ऐ दिलों को खुश करने वाले ! ऐ़बों को छुपाने वाले ! हमारे ग़मों को दूर करने वाले ! गुनाहों को बख़्शने वाले ! ग़ैबों के जानने वाले ! तू मेरी ह़ाजत को इसी त़रह़ जानता है जिस त़रह़ तन्हाई में मेरे गुनाहों से मुआ़फ़ी मांगने को जानता है, तू मेरे इरादे, मेरी निय्यत और दिल को बेहतर जानता है। तू ही मेरा मालिको मौला है, मेरी पकड़ फ़रमाने वाली ज़ात भी तेरी ही है, मेरी मुसीबतों का ह़ाजत रवा भी तू ही है, मेरी तन्हाई का मूनिसो ग़मख़्वार, मेरी लग़्ज़िशों को मिटाने वाला और मेरी दुआ़ओं को क़बूल फ़रमाने वाला भी तू ही है। अगर मैं अपनी त़ाअ़त में कोई कोताही करूं और तेरे मन्अ़ कर्दा कामों का इर्तिकाब कर बैठूं तो अपना फ़ज़्लो करम करते हुए मुझे मह़फ़ूज़ रख और मेरी पर्दापोशी फ़रमा। ऐ सब से बड़े करीम ! ऐ मांगने वालों की आख़िरी उम्मीद और रोज़े जज़ा के मालिक ! तू अच्छी त़रह़ जानता है जो मैं अपने दिल में छुपाए हुए हूं, अगर तू ने मह़ज़ अपने फ़ज़्लो करम से मेरी ह़ाजत को क़बूल फ़रमाया है और मेरे बाप के ह़क़ में मेरी शफ़ाअ़त को क़बूल फ़रमा लिया है तो मेरी रूह़ भी क़ब्ज़ फ़रमा ले कि तू हर चाहे पर क़ादिर है।" फिर उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी से जा मिली।

फिर दूसरी आगे बढ़ी, उस ने भी बुलन्द आवाज़ से पुकारा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! ऐ गरदनों को आग के अ़ज़ाब से आज़ाद करने वाले ! मेरी मुसीबत भी दूर कर दे, मेरे दिल से तमाम शुकूको शुब्हात मिटा दे, ऐ वोह ज़ात जिस ने मुझे सहारा दिया जब मैं लड़खड़ा गई, और मेरी रहनुमाई फ़रमाई जब मैं ह़ैरानी के आ़लम में सरगर्दां थी और मुसीबतो तंगदस्ती के वक़्त मेरी

दस्तगीरी फ़रमाई, अगर तू ने मेरी दुआ़ को क़बूल फ़रमा लिया है और मेरी ह़ाजत पूरी कर दी है और मेरे दिल को अपने ज़िक्र से आबाद कर दिया है तो मुझे भी मेरी बहन से मिला दे।'' उस ने भी एक ज़ोरदार चीख़ मारी और अपनी जान जाने आफ़रीं के सिपुर्द कर दी।

फिर तीसरी आगे बढ़ी उस ने भी बुलन्द आवाज़ से दुआ़ की : ''ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू हर एक की ख़ामोशी और गुफ़्तगू को जानने वाला है और तू ही फ़ज़्ले अ़ज़ीम का मालिक है, इ़ज़्ज़त वाला वोही है जिस को तू इ़ज़्ज़त दे, ज़िल्लत वाला वोही है जिस को तू ज़िल्लत का लिबास पहना दे, शराफ़त उसी का ख़ास्सा है जिस को तू अ़त़ा करे, सआ़दत मन्दी व बदबख़्ती उसी के ह़िस्से में है जिस के मुक़द्दर में जो तू लिख दे, क़ुर्ब की लज़्ज़ात वोही ह़ासिल कर सकता है जिस को तू क़ुर्ब अ़त़ा फ़रमाए, दूरी व जुदाई का ग़म वोही जानता है जिस को तू अपनी रह़मत से दूर कर दे, तेरे फ़ज़्लो करम से वोही मह़रूम हो सकता है जिसे तू ख़ुद मह़रूम रखे, जिस को तू नवाज़ दे वोह नफ़्अ़ ह़ासिल करने वाला और जिस को न नवाज़े वोह नुक़्सान उठाने वाला हो जाता है। मैं तुझ से तेरे उस इस्मे आ'ज़म के वासित़े से सुवाल करती हूं कि जिस को तू ने रात पर रखा तो वोह तारीक हो गई, दिन पर रखा तो वोह रोशन हो गया, पहाड़ों पर रखा तो वोह गिर कर हमवार हो गए, हवाओं पर रखा तो वोह चलने लगीं, आस्मानों पर रखा तो वोह बुलन्द हो गए, ज़मीन पर रखा तो वोह बिछौना बन गई, और फ़िरिश्तों पर रखा तो वोह सजदा रेज़ हो गए, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू ने मेरी ह़ाजत पूरी कर दी है और मेरी दुआ़ क़बूल फ़रमा ली है तो मुझे भी मेरी बहनों से मिला दे।'' फिर उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और उस की रुह़ भी क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिष رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मुझे उन के अह़वाल से और उन की मौत के इस त़रह़ एक दूसरे के क़रीब क़रीब होने से तअ़ज्जुब हुवा।

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! उन लोगों को देखो ! जिन को हुक्म दिया गया तो उन्हों ने इत़ाअ़त की और अ़मल किये तो उन के आ'माल क़बूल किये गए, उन्हें अपनी मुराद मिली, उन्हों ने विसाल त़लब किया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन को अपनी मह़ब्बत की रस्सी से विसाल अ़त़ा फ़रमाया, दुआ़ की तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की दुआ़ क़बूल फ़रमाई, वोह उस की बारगाह में क़ौलन फ़े'लन मुख़्लिस रहे, उस की इत़ाअ़त में फ़राइज़ो नवाफ़िल पूरे पूरे अदा किये, उन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात पसन्द की तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने भी उन से मिलना पसन्द किया और उन को क़ुर्बो वस्ल अ़त़ा फ़रमा कर उन पर बड़ा एह़सान फ़रमाया पस वोह उस के प्यारे दीन पर इन्तिक़ाल कर गए क्यूंकि वोह इसी के अहल थे।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ نَّبِیِّکَ الْعَظِیْمِ وَرَسُوْلِکَ الْکَرِیْمِ وَالدَّاعِیْ اِلَی الصِّرَاطِ الْمُسْتَقِیْم

बयान 4 : फ़ज़ाइले औलिया رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تعَالٰی का बयान

हम्दे बारी तआला :

तमाम ता'रीफ़ें उस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने अपने बन्दों में से उन को चुना जो इबादत के क़ाबिल थे और उन को ख़िदमतगार बनाया, उन के कई गुरोह बनाए, उन्हें अपनी ख़ास नज़रे इनायत से नवाज़ा, उन से पुख़्ता अ़हद लिया, उन को साफ़ किया और उन्हें चुन लिया, उन को बुला कर क़रीब किया और उन को वस्ल और लिक़ा के साथ ज़िन्दगी बख़्शी, उन को नफ़्स की पस्ती से बारगाहे उन्सिय्यत में बुलन्द किया, तस्बीह़ व तक़दीस के जाम में शराबे त़हूर (या'नी पाकीज़ा शराब) से उन्हें सैराब किया तो उन में से हर एक उस शराब के सुरूर में खुश और उस का ख़ित़ाब सुनने में मदहोश है और उन में से हर एक अपने ह़ल्क़ए अह़बाब में बुलन्द रुत्बा हुवा और उस ने अपने प्यारों के लिये सह़री के वक़्त तजल्ली फ़रमाई पस मुह़िब्ब ने ज़िन्दगी का मज़ा उठाया और दीदार करने में कामयाब हो गया जब कि उन में से वज्द का ज़ख़्मी किया हुवा कांप कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन के ज़ाहिरी वुजूद को फ़ना किया और हमेशा की बक़ा से नवाज़ा, और उन्हों ने आख़िरी सांस भी उस के नाम पर क़ुरबान कर दिया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन को अपनी मह़ब्बत के राज़ अ़त़ा किये तो उन्हों ने उस की ग़ैरत से ख़ौफ़ खाते हुए अपने ऊपर ग़ैर के दरवाज़े बन्द कर दिये, पस उस की मुश्क दिलों के मशाम की त़रफ़ से महकी तो दिलों ने अपने मह़बूब की त़रफ़ से उस मुश्क को सूंघ लिया, और एक ख़फ़ी राज़ और उस की पाकीज़ा महक ह़ज़रते सय्यिदुना सिर्री सक़ती عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ القَوِی के राज़ की त़रफ़ से गुज़र गई तो वोह उस के आषार पर सीधे चलते गए, और ह़ज़रते सय्यिदुना शिब्ली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ القَوِی की त़रफ़ से गुज़री तो वोह मह़ब्बत की दुल्हनों की त़रह़ आरास्ता हो कर रात गुज़ारने लगे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِید की त़रफ़ से गुज़री तो उन्हों ने मज़ीद की सदा लगाई और उन की ह़रारत बढ़ गई और ह़ज़रते सय्यिदुना जुनेद बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی की त़रफ़ से गुज़री तो वोह मह़ब्बते इलाही की क़ैद में मज़ीद पुख़्ता हो गए और ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ की त़रफ़ से गुज़री तो पूरी रात डाकाज़नी के बा'द तौफ़ीक़ के घोड़ों पर सुवार हो गए और उन्हों ने अपनी तमाम तर कोशिश इबादते इलाही में लगा दी, और ह़ज़रते सय्यिदुना ख़व्वास عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق की त़रफ़ से गुज़री तो वोह इख़्लास के समन्दरों में ग़ोत़ा ज़न हो कर ख़ालिस जवाहिर चुनने लगे, ह़ज़रते सय्यिदुना समनून عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقُدُّوس की त़रफ़ से गुज़री तो उन पर मह़ब्बत और वज्द के त़रीक़े ज़ाहिर हो गए और वोह पहाड़ में दीवानों की त़रह़ फिरने लगे और मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ में आवाज़ें लगाने और सिस्कियां ले कर मुसलसल आंसू बहाने लगे। (शाइर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सच्चे मुह़िब्बीन को मुख़ात़ब कर के कहता है :)

اَطْعَمْتُمُوْنِیْ فِی الْوِصَالِ وَفِی اللِّقَا   وَھَجَرْتُمُوْنِیْ فَالْتَھَبْتُ تَحَرُّقَا

یَا مَالِکِیْ رِقِّیْ وَغَایَۃَ مَطْلَبِیْ   رِفْقًا فَقَدْذَابَ الْفُؤَادُ تَشَوُّقَا

حَاشَاکُمُوْ اَنْ تَطْرُدُوْنِیْ سَادَتِیْ   وَبِحُبِّکُمْ قَلْبِیْ غَدَا مُتَعَلِّقَا

يَا سَادَتِی لَمْ يَهِنْ لِیْ مِنْ بَعْدِكُمْ ‎ عَيْشٌ وَلَا عَايَنْتُ شَيْئًا مُوْنِقَا

اِنْ مِتُّ مِنْ وَجْدِیْ وَفَرْطِ صَبَابَتِیْ ‎ شَوْقًا اِلٰی رُؤْيَاكُمْ لَكُمُ الْبَقَا

يَا نَفْسُ قَدْ زَالَ الْعَنَا فَتَمَتَّعِیْ ‎ بِوِصَالِ مَنْ تَهْوِیْ فَقَدْ زَالَ الشِّقَا

وَجَلَا الْحَبِيْبُ جَمَالَهٗ فَلِاَجْلِ ذَا ‎ اَصْبَحْتُ مِنْ وَجْدِیْ بِهٖ مُتَمَزِّقَا

هَاكُمْ فُؤَادِیْ فَتَشُوْهُ فَاِنْ تَرَوْا ‎ فِيْهِ لِغَيْرِكُمُوْ هَوٰی وَتَشَوُّقَا

فَتَحَكَّمُوْا فِيْهِ بِمَا يَرْضِيْكُمُوْ ‎ يَا مَنِيَّتِیْ اِنْ خَانَ يَوْمًا مُوْثِقَا

وَاِذَا فَنِيْتُ بِحُبِّكُمْ فَيَحِقُّ لِیْ ‎ اِنَّ الْفَنَاءَ بِحُبِّكُمْ عَيْنُ الْبَقَا

तर्जमा : (1)....तुम ने मुझे विसाल और मुलाक़ात का शर्फ़ बख़्शा फिर मुझे छोड़ दिया तो मैं मह़ब्बत की आग में जलने लगा।

(2)....ऐ मेरे मालिको और मेरे मक़्सद की इन्तिहा ! मेहरबानी फ़रमाओ क्यूंकि मेरा दिल शौक़े दीदार से पिघल रहा है।

(3)....ऐ मेरे सरदारो ! मैं **अल्लाह** तआला से पनाह त़लब करता हूं कि तुम मुझे धुत्कार दो क्यूंकि मेरे दिल को तुम से मह़ब्बत हो चुकी है।

(4)....ऐ मेरे सरदारो ! तुम्हारे बा'द मेरे लिये कोई मज़ा नहीं और न ही मुझे कोई चीज़ दिलकश लगी।

(5)..अगर मैं तेरे दीदार की शदीद मह़ब्बत और अपने वज्द से मर जाऊं तो येह तेरे लिये बक़ा है।

(6)....ऐ नफ़्स ! अब मशक़्क़त और शक़ावत ज़ाइल हो चुकी है इस लिये तू अपने मह़बूब के विसाल से लुत़्फ़ उठा ले।....

(7)....ह़बीब ने अपना जमाल ज़ाहिर किया तो उस जमाल को देख कर मैं उस की मह़ब्बत की वजह से तार तार हो गया।

(8).....(ऐ मह़बूबो !) येह मेरा दिल ह़ाज़िर है, अगर इस में अपने ग़ैर की मह़ब्बत पाओ तो जला डालो।

(9)....और अगर उस में किसी और की मह़ब्बत पाओ तो अपनी मर्ज़ी के मुत़ाबिक़ जो चाहो सज़ा दो। हाए काश ! मैं मर जाऊं अगर मेरा दिल किसी दिन (मह़ब्बत के) पुख़्ता वा'दे में ख़ियानत करे।

(10)....अगर मैं तुम्हारी मह़ब्बत में फ़ना हो जाऊं तो मैं उस का सज़ावार हूं क्यूंकि तुम्हारी मह़ब्बत में फ़ना होना ह़क़ीक़त में बक़ा है।

बिकने वाला ग़ुलाम मजनून नहीं, मज्ज़ूब था :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुहज़्ज़ब رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "एक दफ़्आ़ मैं ग़ुलामों के बाज़ार से गुज़रा, दलाल को देखा कि वोह एक ग़ुलाम को बेचते हुए कह रहा था : "मैं इस को इस के ऐ़ब पर बेचता हूं।" मैं ने दलाल से पूछा : "इस में क्या ऐ़ब है ?" उस ने कहा :

"इसी से पूछ लीजिये।" मैं ने ग़ुलाम के क़रीब जा कर उस से दर्याफ़्त किया : "तुझ में क्या ऐब है?" उस ने बताया : "ऐ मेरे आक़ा ! मेरे उ़यूब बहुत ज़ियादा हैं, मुझे नहीं मा'लूम कि मैं लोगों में किस ऐब से मश्हूर हूं।" मैं ने दलाल से कहा : "मुझे येह बताओ कि इस में क्या ऐब है ?" उस ने कहा : "इसे जुनून की बीमारी है।" मैं ने ग़ुलाम से पूछा : "तुझे मिर्गी कब होती है? क्या हर साल या हर माह या हर जुमुआ़ ?" उस ने कहा : "ऐ मेरे आक़ा ! जब मह़ब्बत की बीमारी दिल पर ग़ालिब होती है तो तमाम आ'ज़ा में सरायत कर जाती है और जब दूसरे आ'ज़ा पर ग़ालिब आती है तो मह़ब्बत का ख़ुमार तमाम जिस्म में फैल जाता है और अ़क़्ल मह़बूब की याद में खो जाती है, दिल मुस्तग़रक़ हो जाता है, बदन साकिन हो जाता है और जाहिल उस को जुनून समझते हैं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं मुझे मा'लूम हो गया कि येह ग़ुलाम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के औलिया में से है। मैं ने दलाल से कहा : "येह ग़ुलाम कितने में बेचोगे?" उस ने दो सो (200) दिरहम बताए तो मैं ने दो सो बीस दिरहम दे दिये और ग़ुलाम को घर के क़रीब ला कर उस से कहा : "अन्दर दाख़िल हो जाओ।" उस ने इन्कार करते हुए पूछा : "क्या आप के घर वाले हैं?" मैं ने कहा : "जी हां।" उस ने कहा : "ग़ैर मह़रम की त़रफ़ कौन देख सकता है?" मैं ने उसे कहा : "तुझे इजाज़त है।" उस ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पनाह अ़त़ा फ़रमाए ! जब भी आप की कोई ह़ाजत होगी तो मैं उस को दरवाज़े के बाहर ही से पूरा कर दूंगा।" बहर ह़ाल मैं ख़ामोश हो गया और उसे उस के ह़ाल पर छोड़ दिया फिर उस के लिये खाना लाया तो उस ने कहा : "मैं रोज़ेदार हूं।" जब रात हुई, मैं रात का खाना लाया तो उस ने कहा : "मुझे भूक नहीं।" और वोह घर की चोखट पर ही ठहर गया, आधी रात को जब मैं उस के पास गया तो देखा कि वोह क़ियाम की ह़ालत में नमाज़ पढ़ रहा है और उसे मेरे आने का इ़ल्म न हुवा, जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुवा तो सजदा किया और बहुत रोया। मैं ने उस की मुनाजात सुनीं, वोह कह रहा था : "ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ ! सब बादशाहों ने अपने दरवाज़े बन्द कर दिये हैं लेकिन तेरा दरवाज़ा साइलों के लिये खुला हुवा है। ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! सितारे डूब रहे हैं, आंखें सो गई हैं, तू ऐसा ज़िन्दा और दूसरों को क़ाइम रखने वाला है जिस को न ऊंघ आती है, न नींद। ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ ! तू ने ज़मीन बिछा कर हर मह़बूब को उस के मुह़िब्ब से मिला दिया और तू ख़ुद सारे मह़ब्बत के मारों का मह़बूब है। ऐ तन्हाई के मारों के ग़मगुसार ! ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू ने मुझे अपने दरवाज़े से दूर कर दिया तो फिर किस के दरवाज़े पर जा कर इल्तिजा करूंगा। या इलाहल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू मुझे अ़ज़ाब दे तो बेशक मैं मुस्तह़िक़े अ़ज़ाब हूं और अगर तू मुआ़फ़ फ़रमा दे तो तू जूदो करम वाला है।" फिर वोह ग़ुलाम बैठ गया, अपने हाथों को बुलन्द कर के रोया और कहा : "ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! तेरे फ़ज़्ल से ही सालिह़ीनो आ़रिफ़ीन ने नजात ह़ासिल की, कोताही करने वालों ने तेरी ही रह़मत के बाइ़स तौबा की। ऐ मुआ़फ़ फ़रमाने वाले ! मुझे भी अपने अ़फ़्व व मग़फ़िरत का ज़ाइक़ा चखा दे, अगर्चे मैं इस का अहल नहीं मगर तू तो मुआ़फ़ फ़रमाने वाला है।"

फिर मैं कमरे में दाखिल हो गया और किसी क़िस्म की हैरत का इज़्हार न किया, जब सुब्ह हुई तो मैं ने उस के पास जा कर कहा : "रात को कैसी नींद आई ?" तो उस ने जवाब दिया : "ऐ मेरे आक़ा ! क्या वोह शख़्स सो सकता है ? जिस को आग के अ़ज़ाब, ख़ुदाए जब्बार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेशी और गुनाहों पर मलामत का ख़ौफ़ हो।" फिर वोह बहुत देर तक रोता रहा तो मैं ने कहा : "जा, तू रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये आज़ाद है।" तो वोह दोबारा रो कर कहने लगा : "ऐ मेरे आक़ा ! पहले मेरे लिये दो अज्र थे, एक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बन्दगी का और दूसरा आप की ख़िदमत का। अब सिर्फ़ एक अज्र है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को अ़ज़ाबे नार से आज़ादी अ़ता फ़रमाए।" हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "फिर मैं ने उस को कुछ ख़र्च दिया मगर उस ने क़बूल न किया और कहने लगा : "रिज़्क़ की ज़िम्मेदार वोह ज़िन्दा हस्ती है जिस को मौत नहीं।" फिर वोह निकल खड़ा हुवा इस ह़ाल में कि उस के चेहरे पर ग़म का अषर इयां था। मैं नहीं जानता कि वोह कहां गया।

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! उस ग़ुलाम को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात का किस क़दर शौक़ था और मत्लूब के फ़ौत होने पर किस क़दर ग़म। ऐ ग़फ़्लत की क़ैद में जकड़े हुए ! अगर तू उम्मीद की वादी में झांके तो देखेगा कि इबादत गुज़ारों के ख़ैमे समन्दर के साहिल पर टूटे हुए हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿1﴾ كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ ۝

(پ٢٦،الذريت:١٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह रात में कम सोया करते।

और तू ग़मज़दा परन्दों को ग़म की टहनियों पर मस्हूर कुन आवाज़ में येह गुनगुनाते हुए सुनेगा :

﴿2﴾ وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ۝

(پ٢٦،الذّريت:١٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और पिछली रात इस्तिग़फ़ार करते।

रात पवे ते बे दर्दां नूं नींद प्यारी आवे
दर्दमन्दां नूं याद सजन दी सुतियां आन जगावे

उ़बैद मजनून की मा'रिफ़त भरी बातें :

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन फुज़ैल رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मैं ने एक नौजवान को ज़मीन पर लैटे हुए देखा, वोह बहुत ज़ियादा रो रहा था, मैं ने अपने एक दोस्त से कहा : "आओ ! उस के पास चलें, यक़ीनन येह बीमार है।" तो मेरे दोस्त ने कहा : "येह बीमार नहीं, बल्कि बातिन में आशिक़ और ज़ाहिरन मजनून है। इस का दिल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की महब्बत में डूबा हुवा है और इसे उ़बैद मजनून के नाम से पुकारा जाता है। हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन फुज़ैल رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मैं उस के क़रीब हुवा तो देखा कि उस नौजवान का जिस्म कमज़ोर था, और उस पर ऊन का एक जुब्बा था और वोह कह रहा था, "तअ़ज्जुब है उस पर जिस ने तेरी महब्बत की ह़लावत को चख लिया ! वोह कैसे तेरी बारगाह से दूर हो सकता है ? फिर वोह उसी बात को दोहराता रहा

यहां तक कि बेहोश हो गया, मैं ने अपने दोस्त को कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मजनून वोह होता है जो इस मक़ाम तक न पहुंचा हो, जब उस को होश आया तो पूछने लगा : "आप मुझे क्यूं देख रहे हैं ?" हम ने कहा : "शायद आप को दवा की ज़रूरत है जो आप को इस बीमारी से शिफ़ायाब कर दे।" उस ने कहा : "जिस ज़ात ने मुझे इस बीमारी में मुब्तला किया है दवा भी उसी के पास है, लेकिन जो भी इस बीमारी का इलाज कराना चाहता है वोह मज़ीद बीमार हो जाता है।" मैं ने कहा : "वोह इलाज क्या है ?" तो उस ने बताया कि "इस बीमारी का इलाज ह़राम को तर्क करने, गुनाहों से इज्तिनाब करने, मुराक़बा करने, रात को नमाज़े तहज्जुद अदा करने में है जब कि लोग सोए हुए हों। येह कहने के बा'द वोह बहुत ज़ियादा रोया और हम भी उस के साथ रोने लगे फिर हम ने उस से कहा : "हम आप के मेहमान हैं, हमारे लिये दुआ फ़रमाइये।" तो उस ने कहा : "मैं इस मैदान के शहसुवारों में से नहीं हूं।" हम ने उस को क़सम दी तो उस ने दुआ की : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारे और आप के आ'माले सालिहा क़बूल फ़रमाए और मग़फ़िरत के साथ तुम्हारी मेज़बानी फ़रमाए, जन्नत को तुम्हारा ठिकाना बनाए और तुम्हारे और मेरे दिल में मौत की याद डाल दे।" फिर हम उस से जुदा हो गए इस ह़ाल में कि हमें उस की अच्छे अल्फ़ाज़ पर मुश्तमिल दुआ बड़ी भली लगी और उस के कलाम व नसीह़त से हमारे दिल ज़िन्दा हो गए।"

प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह तो एक दीवाने की ह़ालत है जो कि ह़बीब से मह़ब्बत करता है। तो तुम जैसे अ़क़्लमन्द और दाना का क्या ह़ाल होना चाहिये ? तुम्हारा रब्ब عَزَّوَجَلَّ तुम्हें बुलाता है लेकिन तुम जवाब नहीं देते, तुम्हें तौबा का हुक्म देता है मगर तुम तौबा नहीं करते। वोह चाहता है कि तुम उस की बारगाह में ह़ाज़िर रहो और तुम हो कि हर वक़्त ग़ाइब रहते हो, कब तक तुम अपनी उ़म्र ज़ाएअ़ करते रहोगे ? ह़ालांकि इस से तुम्हें कुछ नहीं मिला, कब तक अपनी लग़्ज़िश का बहाना बनाते रहोगे ? और तुम्हारे गले में अटकने वाली मौत के मुआ़मले को त़बीब के पास नहीं लाया जाएगा। तुम्हारी हलाकतो बरबादी ! उस की बारगाह में तौबा के लिये जल्दी करो, वोह तुम्हारे क़रीब है तुम उस से हिदायतो तौफ़ीक़ का सुवाल करो, ग़मो तंगी को दूर करने में उसी का क़स्द करो कि वोह अपनी बारगाह का इरादा करने वालों को रुस्वा नहीं फ़रमाता, और उस अ़मल के ज़रीए क़ुर्ब ह़ासिल करो जो उस को पसन्द हो, उस की नाफ़रमानियों से डरो इस लिये कि वोह ह़ाज़िर है, ग़ाइब नहीं, और उसी से मांगो इस लिये कि वोह अपने मांगने वालों को अ़त़ा फ़रमाता है, इसी वक़्त उस की बारगाह में तौबा करो और उस के सामने गिर्या व ज़ारी करो, क़रीब है कि वोह तुम्हें अपनी इत़ाअ़त के लिये चुन ले और तुम्हें हिदायत की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा दे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَللّٰهُ يَجْتَبِيْۤ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْۤ اِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ ﴿3﴾ (پ۲۵، الشورٰی ۱۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह अपने क़रीब के लिये चुन लेता है जिसे चाहे और अपनी त़रफ़ राह देता है उसे जो रुजूअ़ लाए।

एक दिन में साल का सफ़र तै कर लिया :

हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : "मैं अपने दोस्तों के दरमियान बैठा हुवा था और हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों का तज़्किरा कर रहे थे तो हज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने बताया कि "एक दफ़्आ़ मैं बैतुल मुक़द्दस में एक चट्टान के पास बैठा हुवा था और उस साल ह़ज की सआ़दत न मिलने पर अफ़्सोस कर रहा था क्यूंकि ह़ज में सिर्फ़ दस दिन बाक़ी रह गए थे, जब मैं ने अपने दिल में सोचा कि लोगों का रुख़ बैतुल्लाह शरीफ़ की त़रफ़ है और दिन भी बहुत थोड़े हैं जब कि मैं यहां ठहरा हुवा हूं।" पस मैं पीछे रह जाने पर रोने लगा। अचानक मैं ने एक ग़ैबी आवाज़ सुनी, कोई कहने वाला कह रहा था : "ऐ सरी सक़ती ! मत रो ! बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ऐसे लोगों को तुम्हारे लिये मुक़र्रर कर दिया है जो तुम्हें मक़ामे ह़ज तक पहुंचा देंगे।" मैं ने सोचा : "येह कैसे होगा ह़ालांकि मैं बैतुल मुक़द्दस में हूं और दिन भी थोड़े रह गए हैं।" तो उस ग़ैबी आवाज़ ने कहा : "ग़मगीन न हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर मुश्किल काम को आसान फ़रमा देगा।" मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सजदए शुक्र अदा किया और उस ग़ैबी आवाज़ की सच्चाई जानने के लिये इन्तिज़ार में बैठ गया। अचानक मैं ने देखा कि मस्जिद के दरवाज़े से चार नौजवान दाख़िल हुए (उन के चेहरे इतने नूरानी थे) गोया सूरज उन के चेहरों से तुलूअ़ हो रहा था और नूर उन की पेशानियों से चमक रहा था। उन में एक बा रो'ब और बा जलाल नौजवान आगे बढ़ा और बाक़ी उस के पीछे हो गए, उन सब ने बालों का लिबास और पाउं में खजूर के पत्तों के जूते पहने हुए थे, वोह चट्टान के क़रीब हुए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ की तो उन के अन्वार से मस्जिद भर गई। मैं भी उन के साथ जा कर खड़ा हो गया और अ़र्ज़ की : "ऐ रब्ब عَزَّوَجَلَّ ! शायद येह वोही लोग हैं जिन की वजह से तू मुझ पर रह़्म फ़रमाएगा और जिन की सोह़बत मुझे इनायत करेगा।"

वोह गुम्बद में दाख़िल हुए, नौजवान उन के आगे आगे था और वोह उस के पीछे थे, हर एक ने दो दो रकअ़तें अदा कीं, फिर वोह नौजवान अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात करने लगा, मैं उस की मुनाजात सुनने की ख़ात़िर उस के क़रीब हो गया फिर उस ने गिर्या व ज़ारी की और तक्बीर कही और ऐसी नमाज़ पढ़ी जिस ने मेरा दिल और दिमाग़ सल्ब कर लिया, जब वोह फ़ारिग़ हुवा तो बैठ गया, बाक़ी तीन उस के सामने बैठ गए तो मैं ने उन के क़रीब जा कर सलाम पेश किया, नौजवान ने कहा : "وَعَلَيْكَ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ ऐ सरी सक़ती ! ऐ वोह शख़्स जिसे आज ग़ैबी आवाज़ के ज़रीए ख़ुशख़बरी दी गई कि उस का ह़ज इस साल फ़ौत नहीं होगा।" उस की येह बात सुन कर मैं बेहोश होने के क़रीब पहुंच गया, मेरा दिल ख़ुशी से भर गया, मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे आक़ा ! जी हां ! आप की आमद से कुछ देर पहले मुझे ग़ैब से बताया गया है।" तो उस ने कहा : "ऐ सरी सक़ती ! आप को हातिफ़े ग़ैबी के आवाज़ देने से एक लम्ह़ा पहले हम ख़ुरासान शहर से बग़दाद की त़रफ़ जा रहे थे, वहां हम ने अपनी ज़रूरियात पूरी कीं और बैतुल्लाह शरीफ़ जाने का इरादा हुवा फिर ख़्वाहिश हुई कि शाम में अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के मज़ारात की ज़ियारत कर लें। फिर मक्कए

मुकर्रमा ह़ाज़िरी देंगे, हम मज़ारात की ज़ियारत करने के बा'द अब यहां बैतुल मुक़द्दस की ज़ियारत के लिये आए हैं।" मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे सरदार ! आप ख़ुरासान में क्या कर रहे थे ?" उस नौजवान ने बताया : "हम अपने दीनी भाइयों ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم और ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عليه رحمة الله الجلى के साथ इकट्ठे बैतुल ह़राम के इरादे से बग़दाद आए, मैं बैतुल मुक़द्दस की ज़ियारत करने आ गया और वोह दोनों देहात के रास्ते से चले गए।" मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए, ख़ुरासान से बैतुल मुक़द्दस तक एक साल की मसाफ़त है।" उस ने कहा : "अगर्चे एक हज़ार साल की मसाफ़त हो, बन्दा उस का हो, ज़मीन भी उस की हो, आस्मान भी उस का हो, ज़ियारत भी उस के घर की हो और इरादा भी उसी की बारगाह में ह़ाज़िरी का हो तो फिर पहुंचाना और क़ुव्वतो क़ुदरत मुहय्या करना भी उसी के ज़िम्मए करम पर है। क्या तुम नहीं देखते कि सूरज कैसे मशरिक़ से मग़रिब तक का सफ़र एक दिन में तै कर लेता है ? क्या वोह अपनी क़ुव्वत से इतनी मसाफ़त तै करता है या क़ादिर عَزَّوَجَلَّ की क़ुव्वतो इरादे से ? जब एक बे जान जामिद सूरज जिस पर न ह़िसाब है, न अ़ज़ाब, एक दिन में मशरिक़ से मग़रिब तक पहुंच जाता है तो येह कोई ह़ैरानगी की बात नहीं कि उस का एक बन्दा एक दिन में ख़ुरासान से बैतुल मुक़द्दस पहुंच जाए। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही क़ुदरतो क़ुव्वत का मालिक है, और ख़िलाफ़े आ़दत काम उसी से सादिर होता है जो उस का मह़बूब और मुख़्तार हो, ऐ सरी सक़ती ! दुन्या व आख़िरत की इ़ज़्ज़त इख़्तियार कर और दुन्या व आख़िरत की ज़िल्लत तक पहुंचने से बच।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए ! दुन्या व आख़िरत की इ़ज़्ज़त की त़रफ़ मेरी रहनुमाई फ़रमा दीजिये ?" तो उस ने कहा : "जो बिग़ैर माल के अमीरी, बिग़ैर सीखे इ़ल्म, बिग़ैर ख़ानदान के इ़ज़्ज़त चाहता हो तो उसे चाहिये कि अपने दिल से दुन्या की मह़ब्बत निकाल दे, उस की त़रफ़ माइल न हो,और न उस से मुत़मइन हो, इस लिये कि दुन्या की सफ़ाई में मैल की मिलावट, और उस के मीठे पन में कड़वाहट है।" मैं ने फिर अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे सरदार ! उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को अपने अन्वार के साथ ख़ास किया और अपने असरार से आगाह फ़रमाया ! अब कहां का इरादा है ?" उस ने बताया : "अब ह़ज्जे बैतुल्लाह और सय्यिदुल अनाम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार की ज़ियारत मक़्सूद है।" मैं ने अ़र्ज़ की : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं आप से जुदा नहीं होऊंगा क्यूंकि आप से जुदा होना, रूह़ के जिस्म से जुदा होने से भी ज़ियादा सख़्त है।" उस ने बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ी और मैं भी उन के हमराह बैतुल मुक़द्दस से बस्ती की त़रफ़ चल पड़ा, हम चलते रहे यहां तक कि उस ने कहा : "ऐ सरी सक़ती ! ज़ोहर का वक़्त हो गया है तो क्या नमाज़ न पढ़ लें ?" मैं ने कहा : "क्यूं नहीं।" मैं ने मिट्टी से तयम्मुम का इरादा किया तो उस ने कहा : "यहां पानी का एक चश्मा है।" फिर वोह रास्ते से कुछ हटा और ऐसे चश्मे पर ले गया जिस का पानी शहद से भी ज़ियादा मीठा था। मैं ने वुज़ू किया और पानी पी कर कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं इस रास्ते से कई मरतबा गुज़रा लेकिन पानी का चश्मा यहां कभी नहीं पाया।"

उस ने कहा : ''सब ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने अपने बन्दों पर करम फ़रमाया। हम ने नमाज़े ज़ोहर अदा की, फिर अ़स्र तक चलते रहे। फिर अचानक हिजाज़ के पहाड़ और दीवारें हमारे सामने ज़ाहिर हो गए, मैं ने कहा : ''येह तो हिजाज़े मुक़द्दस की ज़मीन है।'' ''उस ने मुझ से कहा : ''आप मक्कए मुकर्रमा में पहुंच चुके हैं।'' मैं गिर्या व ज़ारी करने लगा, फिर उस ने मुझ से पूछा : ''ऐ सरी सक़ती ! क्या तुम हमारे साथ दाख़िल होगे ?'' मैं ने कहा : ''जी हां।'' जब हम बाबुन्नदवह से दाख़िल हुए तो मैं ने दो शख़्स देखे, उन में से एक बुढ्ढा और दूसरा जवान था। जब उन्हों ने उस को देखा तो मुस्कुराए और खड़े हो कर मुआ़नक़ा किया, और कहा : ''اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلَى السَّلَامَةِ.'' मैं ने अपने रफ़ीक़ नौजवान से पूछा : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए ! येह कौन हैं ?'' उस ने जवाब दिया : ''उ़म्र रसीदा बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم और जवान ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी علیہ رحمۃ اللہ الجلی हैं।'' फिर हम ने मग़रिब व इ़शा की नमाज़ पढ़ी, हम सब अपनी त़ाक़त के मुत़ाबिक़ नमाज़ के लिये खड़े हुए, मैं उन के साथ नमाज़ पढ़ता रहा यहां तक कि ह़ालते सजदे में मुझे नींद आ गई। जब मैं बेदार हुवा तो वहां कोई न था, मैं ग़मज़दा शख़्स की त़रह़ तन्हा रह गया, उन को मस्जिदे ह़राम, मक्कए मुकर्रमा और मिना शरीफ़ में बहुत तलाश किया लेकिन कहीं न मिले। मैं उन से बिछड़ने की वजह से रोता हुवा वापस आ गया।''

प्यारे इस्लामी भाइयो ! उन लोगों की सिफ़ात सुनो जिन्हों ने इ़श्क़ को छुपाया और हमेशा इ़श्क़ करते भी रहे, सलाम आ़म किया, खाना ख़ैरात किया, हमेशा रोज़े रखे, रातों में नमाज़ पढ़ते रहे जब कि लोग सोए हुए होते, गुनाहों से इज्तिनाब करते रहे, मख़्लूक़ से कनाराकश रहे और मौला عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात के लिये ख़ल्वत इख़्तियार की और ख़ल्वतो तन्हाई में भी इत़ाअ़त करते रहे लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की ख़त़ाएं मुआ़फ़ फ़रमा दीं, उन के दरजात बुलन्द किये। जब वोह नदामत के समन्दर पर सुवार हुए, और मलामत की हवा से बचते हुए सलामती की सर ज़मीन में पहुंचे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन के दिलों को पाक कर दिया और उन के ऐ़बों पर पर्दा डाल दिया, उन के गुनाह बख़्श दिये और उन्हें उन के मत़्लूब तक पहुंचा दिया तो उन्हों ने उस को पहचान लिया और उस को इ़बादत के लाइक़ समझा तो उस की इ़बादत करने लगे, और उन्हों ने उस से मुआ़मला करने में नफ़्अ़ पाया तो उस से मुआ़मला किया, और सिद्क़ो वफ़ा पर उस की बैअ़त की, उन्हों ने क़त्ल करने वाले और क़ैदी के दरमियान तक़दीर के फ़ैसले से ह़ैरान हो कर रुख़्सारों पर आंसू बहाए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में निदा दी : ''ऐ अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाने और बुराइयों को मिटाने वाले ! ऐ वोह ज़ात सम्तें जिस का इह़ात़ा नहीं कर सकतीं और जिस पर आवाज़ें मुख़्तलिफ़ नहीं होतीं ! हमें आफ़ात की तारीकी से निकाल कर सिफ़ात के इदराक का नूर अ़त़ा फ़रमा। (आमीन)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''اَلشَّابُّ التَّائِبُ حَبِيْبُ اللّٰهِ या'नी जवानी में तौबा करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़बीब है।'' (حلية الاولياء،عبد المالك بن عمر بن عبد العزيز،الحديث ٧٤٩٦،ج٥،ص ٣٩٤،مفهوما)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बन्दे से येह महब्बत उस वक़्त होती है जब कि वोह जवानी में तौबा करने वाला हो क्यूंकि नौजवान तर और सर सब्ज़ टहनी की तरह होता है। जब वोह अपनी जवानी और हर तरफ़ से शहवातो लज़्ज़ात से लुत्फ़ उठाने और उन की रग़बत पैदा होने की उम्र में तौबा करता है, और येह ऐसा वक़्त होता है कि दुन्या उस की तरफ़ मुतवज्जेह होती है। इस के बावुजूद महज़ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये वोह उन तमाम चीज़ों को तर्क कर देता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की महब्बत का मुस्तहिक़ बन जाता है और उस के मक़्बूल बन्दों में उस का शुमार होने लगता है।

मन्क़ूल है कि "एक नौजवान जब तौबा कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ रुजूअ़ करता है तो उस के लिये ज़मीनो आस्मान के दरमियान सत्तर क़िन्दीलें रोशन की जाती हैं और मलाइका सफ़ बस्ता हो कर बुलन्द आवाज़ से तस्बीह़ तक़दीस करते हुए उसे मुबारकबाद देते हैं। जब इब्लीसे लईन उस को सुनता है तो कहता है : "क्या ख़बर है?" आस्मान से एक मुनादी निदा देता है : "एक बन्दे ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सुल्ह़ कर ली है।" तो इब्लीस मल्ऊ़न इस तरह़ पिघलता है जिस तरह़ नमक पानी में पिघलता है।"

मन्क़ूल है कि जब बन्दे का गुनाहों से भरा हुवा नामए आ'माल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश होता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों से फ़रमाता है : "मेरे बन्दे के नामए आ'माल में क्या है?" ह़ालांकि वोह सब से ज़ियादा जानता है। तो फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : "ऐ हमारे मा'बूद عَزَّوَجَلَّ ! उस का नामए आ'माल तेरी बारगाह में पेश करने के क़ाबिल नहीं।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "अगर उस का नामए आ'माल मेरी बारगाह में पेश किये जाने के लाइक़ नहीं (तो क्या हुवा) मेरी रह़मत तो उस के लाइक़ है, ऐ फ़िरिश्तो ! गवाह हो जाओ ! बेशक मैं ने उस को बख़्श दिया और मुआ़फ़ फ़रमा दिया और मैं तौबा क़बूल करने वाला, मेहरबान हूं।"

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَبَارِکْ وَسَلِّمْ

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तर्बिय्यत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दा'वते इस्लामी के) ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से **पाबन्दे सुन्नत** बनने, **गुनाहों से नफ़रत** करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

बयान 5 :

फ़ैज़ाने रमज़ान

ह़म्दे बारी तआला :

तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो अपने अ़ज़ीमुश्शान होने, और हमेशा रहने में यक्ता है, ज़वालो फ़ना से पाक है, मां बाप और औलाद से मुनज़्ज़ह है। अ़ज़मतो किब्रियाई की चादर वाला है, तमाम अश्या को जानने वाला है, इब्तिदा व इन्तिहा से पाक है, वोह ऐसा सुनने वाला है कि दुआ़एं करने वालों की मुख़्तलिफ़ आवाज़ें उस पर मुश्तबा नहीं होतीं, वोह ऐसा देखने वाला है कि रात की तारीकी में रैत पर रेंगती च्यूंटी को भी देख लेता है, ऐसा अ़लीम है कि ज़मीनो आस्मान में कोई ज़र्रा बराबर चीज़ भी उस के इ़ल्म से पोशीदा नहीं और ऐसा ह़लीम है कि अपने नाफ़रमान की बेहतरीन पर्दापोशी फ़रमाता है, वोह अपना ख़ौफ़ रखने वालों को बहुत ज़ियादा ने'मतें देने वाला है, वोह ऐसा ह़कीम (या'नी ह़िक्मत वाला) है जिस ने आस्मान को बिग़ैर सुतून के फ़ज़ा में बुलन्द किया और अपनी ह़िक्मत से फ़र्शे ज़मीं को जारी पानी पर बिछाया। वोह किसी मद्दे मुक़ाबिल, ज़िद्द और नज़ीर से पाक है, वोह बीवी, औलाद और शरीकों से पाक है। वोह ऐसा जानने वाला है कि जिस से दिलों के राज़ किसी भी वक़्त पोशीदा नहीं रहते और न उस पर ज़मीनो आस्मान में कोई शै मख़्फ़ी है।

पाक है वोह जिस ने ज़मानों को एक ह़िसाब से रखा और मोसिमों को मुक़र्रर फ़रमाया, उस ने अपनी मा'रिफ़त के समन्दर में अ़क़्लों और सोचों को मुस्तग़रक़ किया। उस की ह़क़ीक़त में अ़क़्लें ह़ैरान हैं। उस की बुलन्दी की मा'रिफ़त तक पहुंचने वाला कोई नहीं। उस ने माहे रमज़ान को अ़फ़्व, मग़फ़िरत, बिशारत, रिज़ा, सुरूर और क़बूलिय्यत के साथ ख़ास किया, उस ने रोज़े रखने वाले को उस की मुराद तक पहुंचाने का वा'दा किया, उस के लिये ख़ुशख़बरी है जिस ने अपने आ'ज़ा को शको शुबा से पाक किया और नेक आ'माल के साथ माहे रमज़ान का इस्तिक़्बाल किया।

ऐ ग़ाफ़िल इन्सान ! ग़फ़्लत की नींद से बेदार हो जा और जल्दी कर। अभी वक़्त है इस से पहले कि दरे रह़मत बन्द हो जाए, पाक है वोह जिस ने लोगों को अपने दीन की ख़िदमत और उस की मह़ब्बत में मश्ग़ूल रखा, अब उस के सिवा उन की कोई और मस्रूफ़िय्यत नहीं, वोह शहवात से बचते रहे तो उन को गुनाहों को मिटा दिया और उन को उन के मक़ासिद और उम्मीदों तक पहुंचाया। उन की रोज़े रखने पर मदद की तो उन्हों ने रोज़े रखे, उन को तारीकियों में खड़ा किया तो वोह उस की इ़बादत में लम्बी लम्बी रातें क़ियाम करते रहे। उन्हों ने ह़दीषे पाक सुनी कि ''أَنَّ الصَّومَ جُنَّةٌ **या'नी रोज़ा ढाल है।''** (الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب الصوم، باب فضل الصوم، الحديث ٣٤١٨، ج٥، ص١٨٠)

तो वोह बुरे अफ़्आ़लो अक़्वाल से अपनी जानों को बचाते रहे। कितनी बड़ी सआ़दत है उस शख़्स के लिये जिस के माहे रमज़ान में आ'माल क़बूल हुए और कितनी बड़ी बदबख़्ती है उस के लिये जिस ने रोज़ों में ग़फ़्लतो कोताही बरती, उस शख़्स का सदक़ए फ़ित्र क़बूल नहीं अगर्चे ह़लाल चीज़ से दे। वोह हमेशा सीधी राह से हट कर बुराइयों में पड़ा रहा तो ऐसी ख़स्लतों वाला शख़्स सुन ले कि उस की मौत क़रीब है और वोह लह्व व ला'ब में पड़ा हुवा है।

اَيَا مَنْ عُمْرُہٗ طَالَ — اِلٰی کَمْ اَنْتَ بَطَّالُ — جَمِیْعُ الدَّھْرِ نَقَّالُ — عَلٰی ظَھْرِكَ اَثْقَالُ

تُبَارِزُ بِالْمَعَاصِیْ — وَعَنَّا اَنْتَ قَاصِیْ — وَتَدْعُوْ بِالْخَلَاصِ — وَمَا عِنْدَكَ اِقْبَالُ

اِلَی الْغِیْبَةِ تَرْتَاحُ — وَمَا عِنْدَكَ اِصْلَاحُ — وَمَا یُرْضِیْكَ یَا صَاحُ — سِوٰی قِیْلٍ وَقَالَ

تَمُدُّ الطَّرْفَ فِی الصَّوْمِ — وَلَا تَخْشٰی مِنَ اللَّوْمِ — لَیُکْتَبُ مِنْكَ فِی الْیَوْمِ — وَفِی اللَّیْلَةِ اَفْعَالُ

فَتُبْ ذَا الشَّھْرِ کَیْ تَحْظٰی — وَکَمِّلْ صَوْمَہٗ فَرْضًا — لَعَلَّ اللّٰہَ اَنْ یَرْضٰی — وَیُصْلِحُ مِنْكَ اَحْوَالَ

तर्जमा : (1)....ऐ लम्बी उ़म्र वाले ! तू कब तक बेकार रहेगा । तमाम ज़िन्दगी तेज़ी से गुज़र जाएगी मगर तेरी पीठ पर बोझ रह जाएगा ।

(2)....तू नाफ़रमानियों के ज़रीए़ मुक़ाबला करता है । तू हम से दूर रह जाएगा और नजात के लिये फ़रियाद करेगा मगर तेरे पास कोई नहीं आएगा ।

(3)....तुझे ग़ीबत से सुकून मिलता है और तू इस्लाह़ नहीं चाहता और ऐ मुह़तरम ! तुझे सिवाए क़ीलो क़ाल के कोई चीज़ ख़ुश नहीं करती ।

(4)....तू रोज़े में भी आंखों को बुराई से नहीं रोकता और न ही मलामत से डरता है । बिलाशुबा दिन रात तेरे आ'माल लिखे जा रहे हैं ।

(5)....पस तू इस महीने में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा कर ले ताकि तू बुलन्द रुत्बा पा ले और अपने फ़र्ज़ रोज़े मुकम्मल कर । शायद ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ से राज़ी हो जाए और तेरे अह़वाल दुरुस्त फ़रमा दे ।

पाक है वोह जिस ने उम्मते मुस्लिमा पर माहे रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ फ़रमाए और मज़ीद फ़ज़्लो एह़सान से नवाज़ने के साथ इसी माह उन्हें जहन्नम से आज़ादी का परवाना भी अ़त़ा किया । चुनान्चे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है : یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَیْكُمُ الصِّیَامُ (پ۲، البقرۃ: ۱۸۳)
तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमानवालो तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गये ।[1]

रोज़े जिस्म की सिह़ह़त का सबब और दिलो ज़बान को गुनाहो मा'सिय्यत से पाक करने का ज़रीआ़ हैं और इस महीने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर उस शख़्स के लिये रोज़ों की रुख़्सत नाज़िल फ़रमाई जिसे कोई मरज़ या तकलीफ़ पहुंची हो ।

1....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : ''इस आयत में रोज़ों की फ़र्ज़िय्यत का बयान है । रोज़ा शरअ़ में इस का नाम है कि मुसलमान ख़्वाह मर्द हो या ह़ैज़ या निफ़ास से ख़ाली औ़रत सुब्ह़े सादिक़ से ग़ुरूबे आफ़ताब तक ब निय्यते इ़बादत ख़ुर्दो नोश व मुजामअ़त तर्क करे । (आ़लमगीरी वग़ैरा) रमज़ान के रोज़े 10 शा'बान 2 हि. को फ़र्ज़ किये गए । (درمختار وخازن) इस आयत से षाबित होता है कि रोज़े इ़बादते क़दीमा हैं, ज़मानए आदम عَلَیْهِ السَّلَام से तमाम शरीअ़तों में फ़र्ज़ होते चले आए । अगर्चे अय्याम व अह़काम मुख़्तलिफ़ थे मगर अस्ल रोज़े सब उम्मतों पर लाज़िम रहे ।''

فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَط (پ۲،البقرہ:۱۸۴) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो तुम में जो कोई बीमार या सफ़र में हो तो उतने रोज़े और दिनों में।[1]

पाक है वोह जिस ने इस उम्मत पर एहसान फ़रमाया और इस को बहुत ज़ियादा फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई और माहे रमज़ान को इस की मग़्फ़िरत के साथ ख़ास कर दिया : شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ فِیْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَیِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ج (پ۲،البقرہ:۱۸۵) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** रमज़ान का महीना जिस में क़ुरआन उतरा लोगों के लिये हिदायत और रहनुमाई और फ़ैसले की रोशन बातें।[2]

قَدْ جَاءَ شَهْرُ الصَّوْمِ فِيْهِ الْاَمَان ... وَالْعِتْقُ وَالْفَوْزُ بِسُكْنَى الْجِنَان
شَهْرٌ شَرِيْفٌ فِيْهِ نَيْلُ الْمُنٰى ... وَهُوَ طِرَازٌ فَوْقَ كَمِّ الزَّمَان
طُوْبٰى لِمَنْ صَامَهٗ وَاتَّقٰى ... مَوْلَاهُ فِي الْفِعْلِ وَنُطْقِ اللِّسَان
وَيَا هَنَا مَنْ قَامَ فِيْ لَيْلِهٖ ... وَدَمْعُهٗ فِي الْخَدِّ يَحْكِي الْجُمَان
ذَاكَ الَّذِيْ قَدْ خَصَّهٗ رَبُّهٗ ... بِجَنَّةِ الْخُلْدِ وَحُوْرِ الْحُسَّان

तर्जमा : (1)....बेशक रमज़ान का महीना आ गया, इस में अम्न, जहन्नम से आज़ादी और जन्नत में ठहरने के साथ कामयाबी है।

(2)....इस माहे मुबारक में बन्दा अपनी आरज़ूएं पूरी करता है और येह कितने ही ज़मानों से बेहतर नुमूना है।

---

❶.... मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : ''सफ़र से वोह मुराद है जिस की मसाफ़त तीन दिन से कम न हो। इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने मरीज़ व मुसाफ़िर को रुख़्सत दी कि अगर उस को रमज़ान मुबारक में रोज़ा रखने से मरज़ की ज़ियादती या हलाक का अन्देशा हो या सफ़र में शिद्दतो तकलीफ़ का तो वोह मरज़ व सफ़र के अय्याम में इफ़्तार करे और बजाए इस के (या'नी उस की जगह) अय्यामे मन्हिय्या (या'नी मम्नूअ़ दिनों) के सिवा और दिनों में उस की क़ज़ा करे। अय्यामे मन्हिय्या पांच दिन हैं जिन में रोज़ा रखना जाइज़ नहीं। दोनों ईदें और ज़िलहिज्जा की ग्यारहवीं, बारहवीं, तेरहवीं तारीख़ें। **मस्अला :** मरीज़ को मह़्ज़ वहम पर रोज़े का इफ़्तार जाइज़ नहीं जब तक दलील या तजरिबा या ग़ैर ज़ाहिरुल फ़िस्क़ त़बीब (या'नी जो ज़ाहिरी त़ौर पर फ़ासिक़ न हो) की ख़बर से उस का ग़लबए ज़न्न ह़ासिल न हो कि रोज़ा मरज़ के तूल या ज़ियादती का सबब होगा। **मस्अला :** जो बिल फे़'ल बीमार न हो लेकिन मुसलमान त़बीब येह कहे कि वोह रोज़े रखने से बीमार हो जाएगा वोह भी मरीज़ के हुक्म में है। **मस्अला :** ह़ामिला या दूध पिलाने वाली औ़रत को अगर रोज़ा रखने से अपनी या बच्चे की जान का या उस के बीमार हो जाने का अन्देशा हो तो उस को भी इफ़्त़ार (या'नी छोड़ देना) जाइज़ है। **मस्अला :** जिस मुसाफ़िर ने तुलूए़ फ़ज्र से क़ब्ल सफ़र शुरूअ़ किया उस को तो रोज़े का इफ़्त़ार जाइज़ है लेकिन जिस ने बा'दे तुलूअ़ सफ़र किया उस को उस दिन का इफ़्त़ार जाइज़ नहीं।''

❷......मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : ''इस के मा'ना में मुफ़स्सिरीन के चन्द अक़्वाल हैं। येह कि रमज़ान वोह है जिस की शानो शराफ़त में क़ुरआने पाक नाज़िल हुवा। येह कि क़ुरआने करीम में नुज़ूल की इब्तिदा रमज़ान में हुई। येह कि क़ुरआने करीम बित्तमामेह (या'नी मुकम्मल) रमज़ानुल मुबारक की शबे क़द्र में लौहे मह़्फ़ूज़ से आस्माने दुन्या की त़रफ़ उतारा गया और बैतुल इ़ज़्ज़त में रहा येह उसी आस्मान पर एक मक़ाम है यहां से वक़्तन फ़ वक़्तन ह़स्बे इक़्तिज़ाए ह़िक्मत जितना जितना मन्ज़ूरे इलाही हुवा जिब्रीले अमीन लाते रहे। येह नुज़ूल तेईस साल के अ़र्से में पूरा हुवा।''

(3)....उस के लिये खुशख़बरी है जिस ने माहे रमज़ान के रोज़े रखे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे बुरे कामों और ज़बान की लग़्ज़िश से मह़फ़ूज़ फ़रमाया।

(4)....ऐ वोह शख़्स जिस ने उस की रातों में क़ियाम किया और जिस के रुख़्सारों पर आंसू मोतियों की मानिन्द हैं।

(5)....येह वोह शख़्स है जिसे रब्ब عَزَّوَجَلَّ जन्नते ख़ुल्द और इन्तिहाई ह़सीनो जमील हूरें अ़ता फ़रमाएगा।

हर क़िस्म के इन्आ़माते एह़सानात पर मैं अपने रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द करता हूं और मैं गवाही देता हूं कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं, वोह यक्ता है, उस का कोई शरीक नहीं, ऐसी गवाही जो ज़बान पर हल्की है लेकिन मीज़ान में भारी बहुत भारी है। और मैं गवाही देता हूं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के ख़ास बन्दे और रसूल हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर, आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आल, सह़ाबए किराम, तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात رِضۡوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡهِمۡ اَجۡمَعِين पर, आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की औलाद और भलाई के साथ उन की पैरवी करने वालों पर दुरूद भेजे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "شَهۡرُ رَمَضَانَ الَّذِیۡۤ اُنۡزِلَ فِیۡهِ الۡقُرۡاٰنُ هُدًی لِّلنَّاسِ وَبَیِّنٰتٍ مِّنَ الۡهُدٰی وَالۡفُرۡقَانِ ج (پ۲،البقرہ:۱۸۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : रमज़ान का महीना जिस में क़ुरआन उतरा लोगों के लिये हिदायत और रहनुमाई और फ़ैसले की रोशन बातें।

(ह़ज़रते सय्यिदुना शोऐ़ब ह़रीफ़ीश رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه इस आयत के तह़त फ़रमाते हैं कि) महीने को मश्हूर होने की वजह से शहर कहा जाता है और माहे रमज़ान को रमज़ान इस लिये कहते हैं कि येह गुनाहों को मिटा देता है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़रमाने आ़लीशान "اُنۡزِلَ فِیۡهِ الۡقُرۡاٰنُ" से मुराद येह है कि इस के फ़र्ज़ रोज़ों में क़ुरआने करीम उतारा गया।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास व इब्ने शिहाब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُم फ़रमाते हैं : "मुकम्मल क़ुरआने ह़कीम लौह़े मह़फ़ूज़ से आस्माने दुन्या पर एक ही दफ़्आ़ माहे रमज़ान, शबे क़द्र में नाज़िल किया गया। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيۡهِ السَّلَام वक़्तन फ़ वक़्तन वाक़िआ़ते ह़वादिषात के मुत़ाबिक़ इसे ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास लाते रहे।"

शयात़ीन ज़न्जीरों में जकड़ दिये जाते हैं :

ह़ुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जब माहे रमज़ान आता है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शयात़ीन ज़न्जीरों में जकड़ दिये जाते हैं।" (صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب فضل شهر رمضان الحدیث ۱۰۷۹، ص ۸۵۰)

जन्नत के दरवाज़े खुल जाते हैं :

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब माहे रमज़ान की पहली रात आती है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और उन में से कोई दरवाज़ा बन्द नहीं होता और जहन्नम

के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और उन में से कोई दरवाज़ा नहीं खुलता। और एक मुनादी निदा करता है : "**ऐ अच्छाई मांगने वाले !** (अल्लाह तआला की इताअत की तरफ़) आगे बढ़ और **ऐ शरीर !** (शर से) बाज़ आ जा।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ माहे रमज़ान की हर रात में कई लोगों को आग से आज़ादी अता फ़रमाता है। (جامع الترمذی،ابواب الصوم،باب ماجاء فی فضل شهر رمضان،الحدیث ٦٨٢، ص١٧١٤۔

شعب الایمان للبیهقی، باب فی الصیام، فضائل شهر رمضان، الحدیث ٣٦٠٦، ج ٣، ص ٣٠٤)

सग़ीरा गुनाहों का कफ़्फ़ारा :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने ईमान की वजह से और षवाब के लिये माहे रमज़ान का रोज़ा रखा तो उस के अगले पिछले सब गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।" (السنن الکبری للنسائی،کتاب الصیام،باب ثواب من قام رمضان وصامه......الخ،الحدیث٢٥١٣، ج٢، ص٨٨)

शबे क़द्र में इबादत की फ़ज़ीलत :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमेना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो ईमान की वजह से और षवाब के लिये शबे क़द्र का क़ियाम करे उस के गुज़श्ता गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।"(1)

(صحیح البخاری، کتاب الصوم، باب من صام رمضان ایمان واحتساب وفیه، الحدیث ١٩٠١، ص ١٤٨)

मैं रोज़ादार हूं :

सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, बिइज़्ने परवर दगार صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیه واٰله وسلَّم इरशाद फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है : "रोज़े के इलावा बन्दे की हर नेकी दस से सात सो गुना तक बढ़ा दी जाती है क्यूंकि रोज़ा मेरे लिये है और मैं ही उस की जज़ा दूंगा। बन्दा अपनी ख़्वाहिश और खाने पीने को मेरे लिये तर्क कर देता है। रोज़ा जहन्नम से ढाल है और रोज़ेदार के मुंह की बू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के

---

(1)...शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना **मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه फ़रमाते हैं : "سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ रमज़ानुल मुबारक में रहमतों की छमाछम बारिशें और गुनाहे सग़ीरा के कफ़्फ़ारे का सामान हो जाता है। गुनाहे कबीरा तौबा से मुआफ़ होते हैं। **तौबा करने का तरीक़ा** येह है कि जो गुनाह हुवा ख़ास उस गुनाह का ज़िक्र कर के दिल की बेज़ारी और आयन्दा इस से बचने का अहद कर के तौबा करे। मषलन झूट बोला, तो बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अर्ज़ करे, **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं ने जो येह झूट बोला इस से तौबा करता हूं और आयन्दा नहीं बोलूंगा। तौबा के दौरान दिल में झूट से नफ़रत हो और "आयन्दा नहीं बोलूंगा" कहते वक़्त दिल में येह इरादा भी हो कि जो कुछ कह रहा हूं ऐसा ही करूंगा जभी तौबा है। अगर बन्दे की हक़ तलफ़ी की है तो तौबा के साथ साथ उस बन्दे से मुआफ़ करवाना भी ज़रूरी है।" (फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब फ़ैज़ाने रमज़ान, जिल्द अव्वल, स. 855)

नज़्दीक मुश्क से ज़ियादा पाकीज़ा है। जब तुम में से किसी के रोज़े का दिन हो तो वोह न बेहूदा बके, न ही जाहिलाना काम करे। अगर कोई उस से लड़ाई करे या उसे गाली दे तो वोह कह दे कि मैं रोज़े से हूं।''(1) (جامع الترمذی، ابواب الصوم، باب ماجاء فی فضل الصوم، الحدیث ٧٦٤، ص ١٧٢٢ ـ سنن ابن ماجة، ابواب الصیام، باب ما جاء فی فضل الصیام ،الحدیث ١٦٣٨، ص ٢٥٧٥ ـ صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب فضل الصیام، الحدیث ١١٥١، ص ٨٦٢)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबूव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़्मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जो बुरी बात कहना और उस पर अ़मल करना न छोड़े तो उस के भूका प्यासा रहने की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को कुछ ह़ाजत नहीं।''

(صحیح البخاری، کتاب الصوم ،باب من لم یدع قول الزور والعمل به فی الصوم، الحدیث ١٩٠٣، ص ١٤٩)

ह़दीषे पाक में है कि ''ग़ीबत रोज़ेदार का रोज़ा ख़त्म कर देती है।''(2)

(فتح الباری لابن حجر العسقلانی شرح صحیح البخاری، کتاب الصوم، باب فضل الصوم، تحت الحدیث ١٨٩٤، ج ٥، ص ٩٢)

रोज़ेदार के लिये दो ख़ुशियां :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم का फ़रमाने फ़रह़त निशान है : ''रोज़ेदार के लिये दो ख़ुशियां हैं : एक इफ़्तार के वक़्त और दूसरी अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात के वक़्त।''

(صحیح مسلم ،کتاب الصیام ، باب فضل الصیام، الحدیث ١١٥١، ص ٨٦٢)

وَقَدْ صُمْتُ عَنِ اللَّذَّاتِ دَهْرِی كُلَّهَا وَيَوْمَ لِقَاكُمْ ذَاكَ فِطْرُ صِيَامِی

तर्जमा : (1)....बेशक मैं ने अपनी सारी ज़िन्दगी लज़्ज़ात से रोज़ा रखा (या'नी उन्हें छोड़े रखा) और तेरे दीदार के दिन ही मेरा रोज़ा इफ़्तार होगा।

---

❶....शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتۡ بَرَکَاتُھُمُ الۡعَالِیَہ फ़रमाते हैं : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! आज कल तो मुआ़मला ही उल्टा हो गया है या'नी अगर कोई किसी से लड़ भी पड़ता है तो गरज कर यूं गोया होता है, ''चुप हो जा ! वरना याद रखना ! मैं रोज़े से हूं और रोज़ा तुझ ही से खोलूंगा।'' या'नी तुझे खा जाऊंगा। (مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) तौबा ! तौबा ! इस क़िस्म की बात हरगिज़ ज़बान से न निकलनी चाहिये बल्कि आ़जिज़ी का मुज़ाहरा करना चाहिये। (फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब फ़ैज़ाने रमज़ान, जिल्द अव्वल, स. 968)

❷....**सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी** عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی तह़रीर फ़रमाते हैं : ''एह़तिलाम हुवा या ग़ीबत की तो रोज़ा न गया अगर्चे ग़ीबत बहुत सख़्त कबीरा (गुनाह) है क़ुरआने मजीद में ग़ीबत करने की निस्बत फ़रमाया ''जैसे अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाना।'' (پ٢٦، الحجرات:١٢) और ह़दीष में फ़रमाया : ''ग़ीबत ज़िना से भी सख़्त तर है।'' (المعجم الاوسط، الحدیث ٦٥٩٠، ج٥، ص ٦٣) अगर्चे ग़ीबत की वजह से रोज़े की नूरानिय्यत जाती रहती है।''

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 5, स. 119)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! माहे रमज़ान दिल की सफ़ाई, मुआमला और वफ़ा का महीना है, उन लोगों को मुबारक हो जो ख़्वाहिशाते नफ़्सानी से बचते रहे और तन्हाई में आयाते कुरआन की तिलावत करते रहे, उन के लिये उन के रोज़ों के इवज़ षवाब दुगना कर दिया गया और उन से जन्नती महल्लात और बालाख़ानों का वा'दा किया गया। उन के थोड़े से अच्छे आ'माल भी क़बूल कर लिये गए और बुरे अफ़्आल से दर गुज़र कर दिया गया। हाए अफ़्सोस ! ग़ाफ़िलों की महरूमी ! उन्हों ने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात को हराम कर लिया और क़त्ए तअल्लुक़ी व वा'दा ख़िलाफ़ी करने वाले हो गए :

يَا نَاقِضِينَ الْعَهْدَ كَمْ هٰذَا الْجَفَا ... تُوْبُوْا فَقَدْ وَافَاكُمُو شَهْرُ الصَّفَا

شَهْرُ الرِّضَا وَالْعَفْوِ عَنْ زَلَاتِكُمْ ... وَاللّٰهُ فِيْهِ عَنِ الْجَرَائِمِ قَدْ عَفَا

شَهْرٌ عَلَى الْاَيَّامِ فَضُلَ قَدْرُهٗ ... وَعَلَا عَلٰى كُلِّ الشُّهُوْرِ مُشَرَّفَا

فَاَحْيُوْا لَيَالِيْهِ الْمُنِيْرَةِ كُلِّهَا ... وَاَجْرُوْا لِفُرْقَتِهِ الدُّمُوْعَ تَاَسُّفَا

فَعَسَى الْاِلٰهُ يَجُوْدُ فِيْهِ بِفَضْلِهٖ ... فَهُوَ الَّذِىْ يَهَبُ الذُّنُوْبَ تَلَطُّفَا

तर्जमा : (1)....ऐ अहद तोड़ने वालो ! कब तक जफ़ा करते रहोगे अब तौबा कर लो तहक़ीक़ तुम्हारे पास पाक करने वाला महीना तशरीफ़ ला चुका है।

(2)....येह रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ और तुम्हारी लग़्ज़िशों से अफ़्व व दरगुज़र का महीना है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस महीने में जुर्मों को मुआफ़ फ़रमाता है।

(3)....येह वोह महीना है जिस की क़द्रो मन्ज़िलत तमाम महीनों से बढ़ कर है और जो अज़मत के ए'तिबार से तमाम महीनों से बुलन्द है।

(4)....इस की तमाम नूरानी रातें जाग कर गुज़ारो और इस की जुदाई में अफ़्सोस कर के आंसू बहाओ।

(5)....क़रीब है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपना फ़ज़्लो करम फ़रमाए और वोह ऐसा मेहरबान है जो अपनी मेहरबानी से तमाम गुनाहों को मिटा देता है।

सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सख़ावत :

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم भलाई में तमाम लोगों से ज़ियादा सख़ी थे और रमज़ानुल मुबारक में जब हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से मुलाक़ात करते तो और ज़ियादा सख़ावत फ़रमाया करते, और हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से माहे रमज़ान की हर रात मुलाक़ात किया करते यहां तक कि पूरा महीना गुज़र जाता। हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उन के साथ कुरआने पाक का दौर फ़रमाते। जब हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से मिलते तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तेज़ चलने वाली हवा से भी ज़ियादा भलाई में सख़ावत फ़रमाते।"

(صحيح البخارى، كتاب الصوم، باب اجود ما كان النبى صلى الله تعالى عليه وسلم يكون فى رمضان، الحديث ١٩٠٢، ص١٤٨)

रमज़ानुल मुबारक की बिशारत और शबे क़द्र की फ़ज़ीलत :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइषे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़े गंजीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان को बिशारत देते हुए इरशाद फ़रमाया : "तुम्हारे पास बरकत वाला महीना आ चुका है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम पर इस के रोज़े फ़र्ज़ फ़रमाए हैं और तुम्हारे लिये इस महीने का क़ियाम (या'नी नमाज़े तरावीह) सुन्नत है। जब माहे रमज़ान आता है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, जहन्नम के दरवाज़े बंद कर दिये जाते हैं, शयातीन जकड़ दिये जाते हैं और इस में एक रात ऐसी है जो हज़ार महीनों से अफ़्ज़ल है।"

(مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الصیام، باب ۱، ماذکرفی فضل رمضان و ثوابه، الحدیث ۱، ج ۲، ص ۴۱۹)

(جامع الترمذی، ابواب الصوم، باب ماجاء فی فضل شهر رمضان، الحدیث ۶۸۲، ص ۱۷۱۴)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मोअमिनीन के लिये जन्नत की येह बिशारत रोज़ों के ज़रीए शहवात के तर्क करने और ताआत पर सब्र करने का इन्आम है, जो सब्र करेगा उसे अज्र मिलेगा, जो शुक्र करेगा उसे तंगी के बा'द आसानी मिलेगी, जो सदक़ा करेगा उसे फ़ज़्ल व नेकी मिलेगी, जिस ने लोगों से नेकी की उस ने अपनी आख़िरत के लिये नेकियों का ज़ख़ीरा कर लिया और जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये रोज़े रखे और क़ियाम किया उस के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे और जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को अपने दिल में याद किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने फ़िरिश्तों में उस का चर्चा करेगा और जिस ने तक़्वा इख़्तियार किया उस ने कामयाबी और बिशारत को पा लिया :

﴿1﴾ وَمَنۡ یَّتَّقِ اللّٰہَ یَجۡعَلۡ لَّہٗ مِنۡ اَمۡرِہٖ یُسۡرًا ۝ (پ۲۸، الطلاق: ۴)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो **अल्लाह** से डरे **अल्लाह** उस के काम में आसानी फ़रमा देगा।*

ऐ भाई ! ज़मानए रहमत को ग़नीमत जान कि येह ख़ुशगवार अय्याम गिनती के हैं। रोज़े की रातों में नजात तलब कर कि उस की घड़ियां बरोज़े क़ियामत गवाही देंगी, और बिला मशक़्क़त हासिल होने वाली नेकियां पाने की कोशिश कर पस रोज़ेदार के आ'माल का अज्र फ़ौरन मिलता है। चुनान्चे मन्क़ूल है कि "**रोज़ेदार की नींद इबादत और उस का सांस तस्बीह है, उस की दुआ क़बूल होती है और उस के अमल** (के षवाब) **को कई गुना बढ़ा दिया जाता है।**"

(شعب الایمان للبیهقی، باب فی الصیام، الحدیث ۳۹۳۷، ج ۳، ص ۴۱۵ "ونفسه" بدله "وصمته")

उस पर इतना करम क्यूं न हो जब कि उस ने अपने नफ़्स को शहवात से रोका और लज़्ज़ात को तर्क किया और अपने मौला عَزَّوَجَلَّ के हिस्से को अपनी लज़्ज़ातो शुब्हात के हिस्से पर तरजीह दी और उस के अहकाम की इताअत और रुकूअ व सुजूद से लज़्ज़त हासिल की। जैसा कि

मन्क़ूल है : “बन्दा जब सजदे में सो जाता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के इस ह़ाल पर मलाइका के सामने फ़ख़्र करता है और फ़रमाता है : **“ऐ मेरे फ़िरिश्तो !** मेरे इस बन्दे को देखो, इस की रूह़ मेरे पास है और उस का जिस्म मेरे सामने है, गवाह हो जाओ कि मैं ने उसे बख़्श दिया।”

(الزهد للامام احمد بن حنبل،اخبار الحسن بن ابی الحسن، الحدیث١٦٠٦، ص٢٨٨، مختصر)

कितने ही अच्छे हैं साजिदीन के सजदे ! कितनी ही इ़ज़्ज़त वाली हैं रोज़ेदारों की सांसें ! और कितनी ही फ़ाइदामन्द हैं क़ियाम करने वालों की मुनाजात ! कितना ही नफ़्अ़ बख़्श है इ़बादत करने वालों का सरमाया ! कितनी ही अच्छी है मह़ब्बत करने वालों की नदामत ! और कितनी ही नफ़्अ़ बख़्श है रोज़ेदारों की भूक ! जैसा कि मन्क़ूल है कि बन्दा जब भूक की ह़ालत में सोता है तो शैत़ान उस से भाग जाता है।”

जब रोज़ेदार जाग रहा होता है उस वक़्त शैत़ान का क्या ह़ाल होता होगा ? और बन्दा जब सैरी की ह़ालत में जाग रहा होता है तो शैत़ान उस की रगों में ख़ून की त़रह़ गर्दिश करता है तो जब बन्दा पेट भर कर सोता होगा तो उस वक़्त उस का क्या ह़ाल होता होगा ? ऐ बन्दे ! भूक की बरकत और उस में इन्सान का फ़ाइदा देख ! शैत़ान उस से कैसे भागता है।

रोज़ेदार की सांसें और शैत़ान का डरना :

एक नेक शख़्स मस्जिद की त़रफ़ जा रहा था, उस ने मस्जिद में दो आदमी देखे जिन में से एक नमाज़ पढ़ रहा था और दूसरा मस्जिद के दरवाज़े पर सोया हुवा था जब कि शैत़ान बाहर ह़ैरानो परेशान खड़ा, आग में जल रहा था। उस मर्दे सालेह़ ने शैत़ान से पूछा : “मैं तुझे ह़ैरान क्यूं देख रहा हूं ?” शैत़ान ने जवाब दिया : “इस मस्जिद में एक शख़्स नमाज़ पढ़ रहा है जब भी मैं उस को नमाज़ से बहकाने और ग़ाफ़िल करने के लिये दाख़िल होने का इरादा करता हूं तो मस्जिद के दरवाज़े पर सोने वाले शख़्स के सांस मुझे रोक देते हैं।”

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! देखो ! रोज़ेदारों की सांसें कैसे शैत़ान के मक्र से दिलों और जिस्मों की निगेहबानी करती हैं कि शैत़ान उन तक नहीं पहुंच सकता और न उन के पास आ सकता है। पाक है वोह जिस ने अपने पसन्दीदा बन्दों को हिदायत व सवाब (या'नी दुरुस्तगी) की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाई :

اَنْتَ وَفَّقْتَ مَنْ اِلَيْكَ اَنَابَا ۔۔۔ اَنْتَ اَصْلَحْتَ مَنْ اَصَابَ الصَّوَابَا
اَنْتَ حَبَّبْتَ مَا تُحِبُّ اِلَيْهِمْ ۔۔۔ ثُمَّ اَعْطَيْتَهُمْ عَلَيْهِ ثَوَابَا
اَنْتَ عَرَّفْتَهُمْ كُنُوْزَ الْمَعَالِىْ ۔۔۔ فَغَدُوْا يَبْحَثُوْنَ عَنْهَا طَلَابَا

तर्जमा : (1)....ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू ने अपनी त़रफ़ रुजूअ़ करने वाले को तौबा की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाई, तू ने ही ह़क़ तक पहुंचने वाले को हिदायत अ़त़ा फ़रमाई।

(2)....जो चीज़ (या'नी तौबा) तुझे पसन्द है उस की महब्बत तू ने बन्दों के दिलों में डाल दी फिर उस पर इन्हें अज्रो षवाब भी अ़ता फ़रमा दिया।

(3)....तू ने उन को इ़ज़्ज़त व मर्तबे के ख़ज़ानों की पहचान कराई पस वोह उन ख़ज़ानों की बहुत ज़ियादा जुस्तुजु करने लगे।

मन्कूल है कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने माहे रमज़ान को बहुत सी ख़ुसूसिय्यात के साथ ख़ास फ़रमाया, उन में से एक येह कि इस को अ़ज़मत और बरकत वाला महीना बनाया, इस में एक रात ऐसी है जो हज़ार महीनों से बेहतर है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस महीने के रोज़े फ़र्ज़ फ़रमाए और रातों के कियाम को नफ़्ल बनाया, जिस ने माहे रमज़ान में नेकी के ज़रीए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब चाहा गोया उस ने ग़ैरे रमज़ान में फ़र्ज़ अदा किया। येह महीना सब्र का है और सब्र का षवाब जन्नत है। जिस ने इस में फ़र्ज़ अदा किया गोया उस ने ग़ैरे रमज़ान में सत्तर फ़र्ज़ अदा किये, येह एक दूसरे की मदद करने का महीना है, येह ऐसा महीना है जिस में मोमिन का रिज़्क़ बढ़ा दिया जाता है, जिस ने इस में रोज़ेदार को इफ़्तार कराया गोया उस ने एक गुलाम आज़ाद किया और जिस ने उसे पेट भर कर खाना खिलाया और पिलाया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को मोहर लगी हुई साफ़ शफ़्फ़ाफ़ पाकीज़ा शराब पिलाएगा जिस के बा'द वोह कभी प्यासा न होगा और येह षवाब उस शख़्स को मिलेगा जो रोज़ेदार को दूध, पानी या खजूर से इफ़्तार कराए। येह ऐसा महीना है जिस का पहला अ़शरा रहमत, दरमियाना मग़्फ़िरत और आख़िरी जहन्नम से आज़ादी है। लिहाज़ा तुम इस में चार चीज़ों की कषरत करो, दो वोह हैं जिन से तुम अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ को राज़ी कर सकते हो : (1) इस बात की गवाही देना कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं (2) हर वक़्त उस की बारगाह में इस्तिग़्फ़ार करते रहना। और दो ऐसी हैं जिन से तुम बे नियाज़ नहीं हो सकते : (1) तुम्हारा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से जन्नत का सुवाल करना और (2) जहन्नम से पनाह मांगना।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अफ़्सोस उस पर जिस का ठिकाना जहन्नम है, जिस ने अपने मौला عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी की, जिस ने अपनी आख़िरत को दुन्या के बदले बेच दिया और जिस का अन्जाम अ़ज़ाब है। अफ़्सोस उस पर जो गुमराही के जाल में फंस कर ख़्वाहिशात का गुलाम बन गया, अफ़्सोस उस पर जिसे इस मुबारक महीने में भी रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से धुत्कार दिया गया फिर उस की पनाह चाहे।

آه عَلَى الْمُذْنِبِيْنَ اَوَّاهُ — آه عَلٰى مَنْ جَفَاهُ مَوْلَاهُ
آه عَلٰى مَنْ عَصَا بِغَفْلَتِهٖ — جَهْرًا وَمَا تَابَ مِنْ خَطَايَاهُ
آه عَلَى الْمُذْنِبِ الْحَزِيْنِ اِذَا — لَمْ يَخَفِ اللّٰهَ ثُمَّ يَخْشَاهُ
آه عَلٰى مَنْ يَفُوْتُهٗ اَسَفًا — فِيْ مِثْلِ هٰذَا الشَّهْرِ عَفْوَ مَوْلَاهُ
آه مَنْ يَبِيْعُ مُغْتَبِنًا — بِدَارِ دُنْيَاهُ دَارِ آخِرَاهُ

سُبُحَانَ مَنُ تَصَدَّقَ عَلَيُكُمُوُ بِصِيَامِكُمُ وَخَصَّكُمُ بِالُعَطَايَا يَا اُمَّةَ الُمُخُتَار
تَأْتُوُنَ يَوُمَ الُقِيَامَةِ وَصَوُمُكُم مِنُ فَوُقِكُمُ حَيُثُ إِتَّجَهتُمُ تَوَجَّهَ وَحَيُثُ سِرُتُمُ سَار
مَحُمُوُلٌ فَوُقَ الُغَنَائِمِ عَلٰى يَدِ الُمَلٰئِكَةِ شُعَاعُهُ يَتَلَالَاُ مِنُ كَثُرَةِ الُاَنُوَار
وَتُقَدِّمُوُنَ الُمَؤقَفَ تَجَلُّوُا عَلٰى كُلِّ الُاُمَمِ مِثُلَ الشُّمُوُسِ وَفِيُكُمُ مَنُ يُشُبِهُ الُاَقُمَار
وَقَدُ صَفَا الُوَقُتُ لِمَا نَادَاكُمُوُ مَوُلَاكُمُ قُوُمُوُا تَعَالَوُا تَمَلُّوُا بِالُوَصُلِ يَا زَوَّار
هٰذَا جَمَالِىُ تُبُدِىُ وَالُحُبُّ عَنُكُمُ رَفَعُتُ وَنُوُرُنَا قَدُ تَجَلّٰى وَزَالَتِ الُاَكُدَار

तर्जमा : (1)....अफ़्सोस ना फ़रमानों पर कि (नाफ़रमानी के बावुजूद) रब्ब की पनाह त़लब करते हैं, अफ़्सोस उस पर जिस का रब्ब उस से नाराज़ हो।

(2)....अफ़्सोस उस पर जिस ने अपनी ग़फ़्लत के सबब खुले आ़म नाफ़रमानी की और अपनी ख़त़ाओं से तौबा न की।

(3)....अफ़्सोस उस ग़मज़दा गुनहगार पर जो (गुनाह करते वक़्त) तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से नहीं डरता फिर ख़ौफ़ज़दा होता है।

(4)....अफ़्सोस उस पर जो ऐसे बा बरकत महीने में भी अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह से मुआ़फ़ी न पा सका।

(5)....अफ़्सोस उस पर जिस ने धोके में दारे आख़िरत को दुन्या के घर के बदले बेच दिया।

(6)....ऐ उम्मते मुह़म्मदिय्या ! पाक है वोह ज़ात जिस ने तुम पर रोज़ों के सबब एह़सान फ़रमाया और तुम्हें अपनी ख़ास इनायात से नवाज़ा।

(7)....क़ियामत के दिन तुम आओगे और तुम्हारा रोज़ा तुम्हारे ऊपर इस त़रह़ होगा कि तुम जिधर मुतवज्जेह होगे वोह भी होगा और तुम जिधर चलोगे वोह भी चलेगा।

(8)....फ़िरिश्ते अपने हाथों में इन्आ़मात उठाए होंगे और उन की, किरनें कषरते अन्वार से जगमगा रही होंगी।

(9)....तुम सब से पहले मैदाने मह़शर में पहुंचोगे और तमाम उम्मतों के सामने सूरज की त़रह़ चमक रहे होगे और तुम में से बा'ज़ के चेहरे चांद की त़रह़ रोशन होंगे।

(10)....जब तुम्हारा रब्ब عَزَّ وَجَلَّ तुम्हें फ़रमाएगा : ऐ मेरा दीदार करने वालो ! खड़े हो जाओ और आ कर मेरे दीदार से लुत़्फ़ अन्दोज़ हो जाओ।

(11)....मैं ने अपना जमाल तुम पर ज़ाहिर कर दिया है और तुम्हारे सामने से तमाम पर्दे उठा दिये। पस उस वक़्त हमारा नूर चमक उठेगा और तमाम कषाफ़तें ख़त्म हो जाएंगी।

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! कहां हैं ह़राम से बचने और ह़लाल इख़्तियार करने वाले ? कहां हैं अपनी ज़बान को ग़ीबतो चुग़ली से बचाने वाले और ए'तिराज़ात से ए'राज़ करने वाले ? कहां है अपनी नज़र को शहवात से रोकने और ह़लाल की पैरवी करने वाले ? कहां हैं रिज़ाए इलाही عَزَّ وَجَلَّ के लिये रोज़े रखने वाले और रातों के क़ियाम करने वाले ?

माहे रमज़ान में अहलो इयाल पर ख़र्च करने की फ़ज़ीलत :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْھُما से मरवी है, जब माहे रमज़ान की पहली रात आती तो आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ फ़रमाया करते : "रमज़ानुल मुबारक के पूरे महीने को मरहबा ! इस के दिन में रोज़े हैं और रातों में क़ियाम और इस में बीवी बच्चों पर ख़र्च करना अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की राह में ख़र्च करने की तरह है।"

रोज़ेदारों की शान :

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ से मरवी है, आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "बरोज़े क़ियामत रोज़ेदार अपनी क़ब्रों से निकलेंगे तो अपने रोज़े की ख़ुश्बू से पहचाने जाएंगे और उन के मूंहों से मुश्क से भी तेज़ ख़ुश्बू निकल रही होगी। उन के पास दस्तरख़्वान और सुराहियां लाई जाएंगी जिन के मुंह मुश्क से बंधे हुए होंगे, फिर उन से कहा जाएगा : "खाओ कि तुम उस वक़्त भूके रहते थे जब लोग पेट भर कर खाते थे और पियो कि तुम उस वक़्त प्यासे रहते थे जब लोग सैराब होते थे और आराम करो कि तुम उस वक़्त थकते थे जब लोग आराम कर रहे होते थे। तो वोह खाएं पियेंगे और आराम करेंगे हालांकि लोग थके मांदे और प्यासे हिसाब किताब में मश्ग़ूल होंगे।" (كنز العمال، كتاب الصوم، الباب الاول، الفصل الاول، الحديث ٢٣٦٣٩، ج٨، ص ٢١٣، بتغير قليل)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह माहे रमज़ान के रोज़ादारों के लिये बिशारत है जब तक कि वोह अपने आप को ख़ताओं और नाफ़रमानियों से बचाते रहेंगे और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा के लिये रोज़े रखेंगे। पस उस गुनहगार का क्या हाल होगा जो रोज़ा रखने के बावुजूद अपने भाइयों का गोश्त खाता है और नमाज़ इस तरह पढ़ता है कि उस का जिस्म एक जगह होता है और दिल दूसरी जगह। ज़बान से तो ज़िक्रे इलाही عَزَّ وَجَلَّ करता है मगर दिल फ़ुलां फ़ुलां की याद में मश्ग़ूल होता है ? और ऐ वोह शख़्स जो इस हाल में सुब्ह करता है कि ख़सारे का सबब बनने वाले आ'माल का इर्तिकाब करता है और शाम इस उम्मीद पर करता है जिस की दीवार मौत के हाथों गिरने वाली होती है पस अ़न क़रीब तू जान लेगा कि कल बरोज़े क़ियामत कौन शर्मिन्दा हो कर आएगा और इस माहे मुबारक में गुनाह की वजह से वोह उस वक़्त ख़ून के आंसू रो रहा होगा।

ऐ रोज़े तर्क करने वाले ! क्या तू ने अपनी तंग क़ब्र के लिये तय्यारी कर ली है ? या तेरे पास कोई ऐसा अ़मल है जो हश्र में तेरी नजात का ज़रीआ़ बने ? या माहे रमज़ान में रोज़े की हुदूद की हिफ़ाज़त की है या इस की हुर्मत पामाल कर दी ? कितने ही रोज़े फ़ासिद हो गए लेकिन फ़र्ज़ साक़ित न हुवा ? कितने ही रोज़ेदार हैं जिन्हें बरोज़े क़ियामत हिसाबो किताब ज़लीलो ख़्वार करेगा। कितने ही ना फ़रमान हैं जिन से इस महीने में ज़मीन पनाह मांगती है और आस्मान उस के आ'माल का शिकवा करता है। **ऐ काश ! मुझे मा'लूम होता** कि मैं बारगाहे इलाही عَزَّ وَجَلَّ में मक़्बूल हूं या मरदूद, बदबख़्त हूं या ख़ुशबख़्त। मगर येह मुआ़मला पोशीदा है। अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की क़सम !

सआदत मन्द है वोह जिस ने इस महीने की क़द्र की और अपने आ'ज़ा को गुनाहों से बाज़ रखा। और **बदबख़्त है वोह** जिसे अपने रोज़ों से भूक व प्यास के सिवा कुछ न मिला :

شَهْرُالصِّيَامِ لَقَدْ عَلَوْتَ مُكَرَّمًا وَغَدَوْتَ مِنْ بَيْنِ الشُّهُوْرِ مُعَظَّمًا
يَا صَائِمِىْ رَمْضَانَ هٰذَا شَهْرُكُمْ فِيْهِ اَبَاحَكُمُ الْمُهَيْمِنُ مَغْنَمَا
يَا فَوْزَ مَنْ فِيْهِ اَطَاعَ اِلٰهَهُ مُتَقَرِّبًا مُتَجَنِّبًا مَا حَرَّمَا
فَالْوَيْلُ كُلُّ الْوَيْلِ لِلْعَاصِى الَّذِىْ فِىْ شَهْرِهِ اَكَلَ الْحَرَامَ وَاَجْرَمَا

तर्जमा : (1)....ऐ माहे रमज़ान ! तू इ़ज़्ज़तो शान के साथ बुलन्द हुवा और तमाम महीनों से ज़ियादा अ़ज़मत वाला हो गया।

(2)....ऐ माहे रमज़ान के रोज़े रखने वालो ! येह तुम्हारा महीना है, इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे लिये अपनी ने'मतें आ़म फ़रमा दी हैं।

(3)....ऐ कामयाब शख़्स ! जिस ने इस महीने अपने रब्ब का क़ुर्ब ह़ासिल करते हुए उस की इत़ाअ़त की और उस की ह़राम कर्दा चीज़ों से इज्तिनाब किया।

(4)....पस उस नाफ़रमान की हलाकतो बरबादी है जिस ने इस महीने में भी ह़राम खाया और जुर्म का मुर्तकिब हुवा।

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! क्या शान है उन लोगों की ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन को तौफ़ीक़ दी तो उन्हों ने रोज़े रखे और क़ियाम की त़ाक़त दी तो उन्हों ने त़वील क़ियाम किया, उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये अपने कलेजों को प्यासा रखा तो उस ने उन्हें हर परेशानी से राह़त बख़्शी और उन की मुरादों को पूरा करने के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें काफ़ी हो गया और वोह सब कुछ छोड़ कर इत़ाअ़ते इलाही عَزَّوَجَلَّ में मसरूफ़ हो गए। ख़ुश नसीब हैं वोह जिन्हों ने त़ाअ़ते इलाही में रातें बसर कीं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन को उ़म्दा मुनाजात की लज़्ज़ात से ताज़गी अ़त़ा फ़रमाई यहां तक कि उन्हों ने बहुत बड़े अज्र को पा लिया। ऐ लोगो ! तुम माहे रमज़ान की जुदाई में अफ़सुर्दा हो और तहज्जुद और तरावीह़ की रातें ख़त्म हो जाने पर ग़मज़दा हो क्यूंकि येह ऐसा मोसिम है जिस में तुम रह़मत की बारिश और दुआ़ओं की क़बूलिय्यत पाते हो।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! माहे रमज़ान के रोज़ों और रातों के क़ियाम में क्यूंकर रग़बत न की जाए ? उस महीने के जाने पर क्यूंकर अफ़्सोस न किया जाए जिस में तमाम गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं ? और उस महीने पर क्यूंकर न रोया जाए जिस में नेकी करने वाले का नफ़्अ़ और ग़नीमत का मौक़अ़ फ़ौत हो जाए ?

मलाइकए अ़र्श की नमाज़े तरावीह़ में ह़ाज़िरी :

मन्क़ूल है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के गिर्द "ह़ज़ीरतुल क़ुदस" नामी एक जगह है जो कि नूर की है, उस में इतने फ़िरिश्ते हैं कि जिन की ता'दाद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही जानता है, वोह

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की इबादत करते हैं और एक लम्हा भी ग़ाफ़िल नहीं होते, जब रमज़ान की रातें आती हैं तो वोह अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ से ज़मीन पर उतरने की इजाज़त त़लब करते हैं और आक़ाए दो जहां صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत के साथ नमाज़े तरावीह़ में ह़ाज़िर होते हैं, अगर कोई उन को छूए या वोह उस को मस करें तो वोह ऐसा सआ़दत मन्द हो जाएगा कि उस के बा'द कभी बद बख़्त न होगा।" जब अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تعَالٰی عَنۡہُ ने येह ह़दीष सुनी तो इरशाद फ़रमाया : हम इस फ़ज़्लो अज्र के ज़ियादा ह़क़दार हैं। चुनान्चे आप رَضِیَ اللہُ تعَالٰی عَنۡہُ ने माहे रमज़ान में लोगों को बा जमाअ़त नमाज़े तरावीह़ का हुक्म फ़रमाया।

अ़वामो ख़वास की ई़द की ज़रूरिय्यात :

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अबी फ़रज رَحۡمَۃُاللہِ تعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : "मुझे माहे रमज़ान में एक ख़ादिमा की ज़रूरत पड़ी जो हमें खाना तय्यार कर दे, मैं ने बाज़ार में एक ख़ादिमा को देखा जिस की कम क़ीमत में बोली दी जा रही थी, उस का चेहरा ज़र्द, बदन कमज़ोर और जिल्द ख़ुश्क थी। मैं उस पर तरस खाते हुए उसे ख़रीद कर घर ले आया और कहा : "बरतन पकड़ो और रमज़ान की ज़रूरी अश्या की ख़रीदारी के लिये मेरे साथ बाज़ार चलो।" तो वोह कहने लगी : "ऐ मेरे आक़ा ! मैं तो ऐसे लोगों के पास थी जिन का पूरा ज़माना रमज़ान हुवा करता था।" उस की येह बात सुन कर मैं समझ गया कि येह ज़रूर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की नेक बन्दी होगी। वोह माहे रमज़ान में सारी रात इबादत करती और जब आख़िरी रात आई तो मैंने उस को कहा : "ई़द की ज़रूरी अश्या ख़रीदने के लिये हमारे साथ बाज़ार चलो।" तो वोह पूछने लगी : "ऐ मेरे आक़ा ! आ़म लोगों की ज़रूरियात ख़रीदेंगे या ख़ास लोगों की ?" मैं ने उस से कहा : "अपनी बात की वज़ाह़त करो ?" तो उस ने कहा : "आ़म लोगों की ज़रूरियात तो ई़द के मश्हूर खाने हैं, जब कि ख़ास लोगों की ज़रूरियात मख़्लूक़ से कनारा कश होना, ख़िदमत के लिये फ़ारिग़ होना, नवाफ़िल के ज़रीए अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का कुर्ब ह़ासिल करना और आ़जिज़ी व इन्किसारी करना है।"

येह सुन कर मैं ने कहा : "मेरी मुराद खाने की ज़रूरी अश्या हैं।" उस ने फिर पूछा : "कौन सा खाना ? जो जिस्मों की ग़िज़ा है या दिलों की ?" तो मैं ने कहा : "अपनी बात वाज़ेह़ करो।" तो उस ने मुझे बताया : "जिस्मों की ग़िज़ा तो मा'रूफ़ खाना और ख़ूराक है जब कि दिलों की ग़िज़ा गुनाहों को छोड़ना, अपने ऐ़ब दूर करना, मह़बूब के मुशाहदे से लुत़्फ़ अन्दोज़ होना और मक़्सूद के ह़ुसूल पर राज़ी होना लेकिन इन चीज़ों के लिये ख़ुशूअ़, परहेज़गारी, तकब्बुर को छोड़ना, मौला عَزَّ وَجَلَّ की त़रफ़ रुजूअ़ करना और ज़ाहिरो बात़िन में उस पर भरोसा करना ज़रूरी है।" फिर वोह लोंडी नमाज़ के लिये खड़ी हो गई, उस ने पहली रकअ़त में पूरी सूरए बक़रह पढ़ी, फिर आले इमरान

शुरूअ़ कर दी, फिर एक सूरत ख़त्म कर के दूसरी सूरत शुरूअ़ करती रही यहां तक कि सूरए इब्राहीम की इस आयत तक पहुंच गई :

﴿2﴾ يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ۝

(پ۱۳، ابراهيم:۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ब मुश्किल उस का थोड़ा थोड़ा घूंट लेगा और गले से नीचे उतारने की उम्मीद न होगी और उसे हर त़रफ़ से मौत आएगी और मरेगा नहीं और उस के पीछे एक गाढ़ा अ़ज़ाब ।* (1)

फिर वोह रोती हुई इसी आयत को दोहराती रही यहां तक कि बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर पड़ी जब मैं ने उसे ह़रकत दी तो उस की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर चुकी थी ।

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! **उन लोगों** की ख़ूबियां हैं जिन्हों ने अपने चेहरों को ग़म व हुज़्न के आसूंओं से धोया, ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ और तिलावते कलामे बारी तआ़ला से रातों में अपनी आंखों को बेदार रखा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपने क़दमों पर खड़े रहे और अच्छे आ'माल बजा लाने की कोशिश करते रहे । पस उन का हर लम्ह़ा रमज़ानुल मुबारक की मुबारक साअ़तों जैसा है ।

मेरे प्यारे इस्लामी भाइयो ! कितना नेक बख़्त है वोह शख़्स ! जिस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़बूलिय्यत की ख़िल्अ़त बख़्शी, कितना इन्आ़मो इकराम है उस शख़्स पर ! जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने इन्तिहाए मक़्सूद तक पहुंचाया और कितना बदबख़्त है वोह शख़्स ! जिस के रोज़े मरदूद हो गए और गुनाहों पर उस की पकड़ हो गई, उस के माहो साल बेकार गुज़र गए और उस ने अपने नफ़्स की ख़्वाहिश को रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िरी पर तरजीह़ दी यहां तक कि उस की मौत का वक़्त आ गया ।

हरीसा खाने की ख़्वाहिश :

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى ने पचास साल तक हरिसा (जो आटे में घी और शकर मिला कर बनाया जाता है) तनावुल न फ़रमाया, एक दिन आप رَحْمَةُ اللهِ تعالٰى عَلَيْه के पास एक दिरहम था जिस से हरीसा ख़रीदने के लिये बाज़ार गए तो हरीसा बेचने वाले को येह कहते हुए सुना कि : "रोज़ेदारों के लिये कौन सी चीज़ छुपाई गई है ? तो आप رَحْمَةُ اللهِ تعالٰى عَلَيْه रोते हुए वापस लौट आए और हरीसा न ख़रीदा । कुछ अ़र्से के बा'द नफ़्स फिर मुत़ालबा करने लगा, चुनान्चे फिर बाज़ार हरीसा ख़रीदने गए तो मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि वोही हरीसा बेचने वाला कह रहा था : "बहुत थोड़ा बाक़ी रह गया है ।" तो आप फिर रोते हुए वापस हो गए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अ़हद कर लिया कि आयन्दा कभी भी इस को न चखूंगा ।

1...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "ह़दीष शरीफ़ में है कि जहन्नमी को पीप का पानी पिलाया जाएगा । जब वोह मुंह के पास आएगा तो उस को बहुत ना गवार मा'लूम होगा । जब और क़रीब होगा तो उस से चेहरा भुन जाएगा और सर तक की खाल जल कर गिर पड़ेगी । जब पियेगा तो आंतें कट कर निकल जाएंगी । (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह) या'नी हर अ़ज़ाब के बा'द उस से ज़ियादा शदीदो ग़लीज़ अ़ज़ाब होगा । نَعُوْذُ بِاللهِ مِنْ عَذَابِ النَّارِ وَمِنْ غَضَبِ الْجَبَّارِ.

یا اِلٰہ العٰلَمِین عَزَّوَجَلَّ ! मांगने वाले तेरे दरवाज़े पर खड़े हैं और फ़ुक़रा तेरी बारगाह की पनाह लिये हुए हैं, साइलीन की कश्ती तेरे बह़रे करम के साह़िल पर खड़ी है, सब उस इजाज़त नामे की उम्मीद किये हुए हैं जो तेरी रह़मत के कनारे तक पहुंचा दे। **या इलाही** عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू इस महीने सिर्फ़ उन लोगों की ही इ़ज़्ज़त बुलन्द फ़रमाएगा जिन्हों ने तेरी रिज़ा की ख़ातिर रोज़े रखे तो गुनाहों के समन्दर में डूबे हुए गुनहगार कहां जाएंगे ? अगर तू सिर्फ़ इताअ़त शिआ़रों पर रह़म फ़रमाएगा तो ना फ़रमानों का क्या बनेगा ? अगर तू सिर्फ़ अ़मल करने वालों को क़बूल फ़रमाएगा तो कोताहियां करने वालों को कौन सहारा देगा ? **या इलाही** عَزَّوَجَلَّ ! रोज़ेदार नफ़्अ़ ह़ासिल कर गए, रातों को क़ियाम करने वाले कामयाबी की चोटी पर पहुंच गए, इख़्लास वाले नजात पा गए। हम तेरे गुनहगार बन्दे हैं, हम पर रह़म फ़रमा और हमें अपने फ़ज़्लो एह़सान से नवाज़ दे और हम सब को मह़ज़ अपनी रह़मत से बख़्श दे। یَااَرْحَمَ الرّٰحِمِیْنَ عَزَّوَجَلَّ.

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَبَارِکْ وَسَلِّمْ

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सात अश्ख़ास को अपने अ़र्श के साए में जगह अ़ता फ़रमाएगा जिस दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के साए के इ़लावा कोई साया न होगा (1) आ़दिल हुक्मरान (2) वोह नौजवान जिस की जवानी इ़बादते इलाही में गुज़री (3) वोह शख़्स जिस का दिल मस्जिद से निकलते वक़्त मस्जिद में लगा रहे ह़त्ता कि वापस लौट आए (4) वोह दो शख़्स जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मह़ब्बत करते हुए जम्अ़ हुए और मह़ब्बत करते हुए जुदा हो गए (5) वोह शख़्स जो ख़ल्वत में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता हो और उस की आंखों से आंसू बह निकलें (6) वोह शख़्स जिसे कोई मालो जमाल वाली औ़रत गुनाह के लिये बुलाए और वोह कहे कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरता हूं (7) वोह शख़्स जो इस त़रह़ छुपा कर सदक़ा दे कि उस के बाएं हाथ को ख़बर न हो कि दाएं ने क्या सदक़ा किया।"

(صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ،باب فـل اخفاء الصدقۃ،الحدیث ۲۳۸۰، ص ۸۴۰بتقدمٍ وتاخرٍ)

बयान नम्बर 6 : **रुख़्सते माहे रमज़ान**

ह़म्दे बारी तआ़ला :

सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस की मा'रिफ़त बुलन्दो बाला है, तुझे अ़क़्ली दलाइल से उस के राज़ों का इदराक नहीं हो सकता और उस की सिफ़त वाज़ेह़ है जिसे नक़्ली दलाइल से कोई गदला नहीं कर सकता और उस का फ़ैसला मुकम्मल हो चुका जिसे कोई टाल नहीं सकता, उस की बादशाहत बहुत बुलन्द और वोह बुज़ुर्ग व बरतर है, उस की अज़लिय्यत दाइमी है जिस का मुक़ाबला कोई नहीं कर सकता, उस ने तन्हा तमाम काइनात, उस के मुतअ़ल्लिक़ात, ज़मीनो आस्मान और सितारों को बनाया और माहो साल और दिन रात को एक मिक़्दार के मुताबिक़ बनाया। और तमाम ख़ूबियां उस के लिये हैं जिस ने माहे रमज़ान को सब दिनों से अफ़्ज़ल बनाया, इस को अ़ज़मत से नवाज़ा और इस में अपनी ला रैब किताब नाज़िल फ़रमाई और इ़ज़्ज़त का दरवाज़ा खोला। चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी पुख़्ता व वाज़ेह़ आयाते बय्यिनात में इस उम्मत की फ़ज़ीलत बयान करते हुए इरशाद फ़रमाता है : يٰۤاَيُّهَاالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ (پ۲،البقرۃ:۱۸۳) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गए। क्यूंकि इस उम्मत के इ़लावा किसी उम्मत को अय्यामे रमज़ान जैसे अफ़्ज़ल दिन और रातें अ़ता न की गईं। क्या साबिक़ा उम्मतें इस फ़रमान पर फ़ख़्र कर सकती हैं ? "اَلصَّوْمُ لِيْ وَاَنَا اُجْزٰى بِهٖ या'नी रोज़े मेरे लिये है और मैं ही इस की जज़ा हूं।"
(صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب قول اللہ تعالی "یُرِیْدُوْنَ اَنْ یُّبَدِّلُوْا کَلَامَ اللہ" الحدیث ۷۴۹۲، ص ۶۲۴)

इस की जज़ा येह है कि आंखें नूरे बारी तआ़ला के दीदार से लुत्फ़ अन्दोज़ होंगी। क्या साबिक़ा उम्मतों के लिये येह ए'लान किया गया ? जिसे हर दूरो नज़्दीक वाले ने सुना : "لِلصَّائِمِ فَرْحَتَانِ या'नी रोज़ादार के लिये दो ख़ुशियां हैं।"

(صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب قول اللہ تعالی "یُرِیْدُوْنَ اَنْ یُّبَدِّلُوْا کَلَامَ اللہ" الحدیث ۷۴۹۲، ص ۶۲۴)

क्या उम्मते मुह़म्मदिय्या علٰی صاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इ़लावा किसी उम्मत को शबे क़द्र की ख़ुशख़बरी दी गई कि जिस में जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام और दीगर फ़िरिश्ते ज़मीन पर तशरीफ़ लाते हैं ? क्या साबिक़ा उम्मतों को माहे रमज़ान जैसे अफ़्ज़ल दिन और रातें अ़ता की गईं ? इस महीने की पहली रात में जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं जिस के अत़राफ़ से हूरें और जन्नती बच्चे दौड़ते चले आते हैं और रिज़्वाने जन्नत (या'नी जन्नत के दरबान) से पूछते हैं : "ऐ रह़मान عَزَّوَجَلَّ के अमीन ! जन्नत को क्या हुवा कि उस के बालाख़ाने बुलन्द हो रहे हैं ?" रिज़्वाने जन्नत की त़रफ़ से जवाब मिलता है : "येह माहे रमज़ान की पहली रात है जिस में हर जान की ख़्वाहिश पूरी होती है।" फिर जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और सरकश शयात़ीन को जकड़ दिया जाता है और उन्हें इधर उधर फिरने से रोक दिया जाता है, जहन्नम से आज़ाद होने वालों के नाम

लिख दिये जाते हैं, फ़िरिश्ते इस उम्मत को बिशारतें और मुबारकें देने के लिये तशरीफ़ लाते हैं, इस की हर रात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ खुद रोज़ेदारों पर सलाम भेजता है और जब लैलतुल क़द्र तशरीफ़ लाती है तो ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام नाज़िल हो कर फ़िरिश्तों से फ़रमाते हैं : "रोज़ेदारों को खुशख़बरी सुना दो कि उन के परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने उन को इस क़दर नेकियां अ़ता फ़रमाई हैं जिन को कोई शुमार भी नहीं कर सकता। उस रात आस्मानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और शुरूअ़ रात से ही फ़िरिश्ते नाज़िल हो जाते हैं और पूरी रात ज़मीन में ही ठहरते और इबादत करते हैं, और रात की तारीकी में क़ियाम करने वाले रोज़ेदारों से मुसाफ़ह़ा करते और अल्लाह तबारक व तआ़ला की तस्बीह़ो तक़्दीस बयान करते हैं।"

शव्वाल के छे रोज़ों की फ़ज़ीलत :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने रमज़ान के रोज़े रखे और फिर शव्वाल के छे रोज़े रखे गोया उस ने सारा ज़माना रोज़े रखे।"

(السنن الکبری للنسائی، کتاب الصیام، باب ذکر اختلاف ......الخ، الحدیث ۲۸۶۲۔ ۶۳، ج۲، ص۱۶۳)

रोज़े की जज़ा :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "इब्ने आदम का हर अ़मल उसी के लिये है सिवाए रोज़े के क्यूंकि येह मेरे लिये है और इस की जज़ा भी मैं ही दूंगा।"

(صحیح البخاری، کتاب الصوم ، باب ھل یقول انی صائم اذا شتم ، الحدیث ۱۹۰۴، ص۱۴۹)

ऐ नाफ़रमानियों से रब्ब عَزَّوَجَلَّ का मुक़ाबला करने वाले और निगहबान से शर्मो ह़या न करने वाले ! बेशक माहे रमज़ान की जुदाई क़रीब आ चुकी है और तू अभी तक अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से सुल्ह़ करने में कामयाब न हुवा। क़बूलिय्यत की हवा चल चुकी है और इरफ़ाने इलाही عَزَّوَجَلَّ की महक मह़सूस हो रही है, क्या तू ने माहे रमज़ान की शान में रह़मानो मन्नान عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान नहीं सुना : **"रोज़ा मेरे लिये है और मैं ही उस की जज़ा हूं।"**

(صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب قول اللہ تعالی "یُرِیْدُوْنَ اَنْ یُّبَدِّلُوْا کَلٰمَ اللہ" الحدیث ۷۴۹۲، ص۶۲۴)

मरने के बा'द नेक आ'माल मदद करते हैं :

मन्क़ूल है कि एक शख़्स को नज़्अ़ के आ़लम में शयातीन ने घेर लिया तो ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ ने उसे बचा लिया। जब इन्तिक़ाल हुवा और क़ब्र में अ़ज़ाब नाज़िल हुवा तो वुज़ू ने उसे अ़ज़ाब से बचा लिया। और जब अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते आए तो नमाज़ ने बचा लिया। और जब प्यास से तड़पने लगा तो माहे रमज़ान के रोज़े ने आ कर उस को सैराब कर दिया।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दुन्या व आख़िरत में माहे रमज़ान की बरकात और उस के नफ़्अ़ की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो जाओ। दुन्यवी बरकतो नफ़्अ़ येह है कि येह तुम्हें अ़ज़ाब और जहन्नम का मूजिब बनने वाली ख़्वाहिशात से बचाता है और उख़रवी बरकतो नफ़्अ़ येह है कि तुम मालिके वह्हाब عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह से मुआ़फ़ी और रिज़ा की ख़ैरात पाने में कामयाब हो जाओगे।

रोज़े का षवाब दीदारे इलाही (عَزَّ وَجَلَّ) है :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने एक मरतबा गर्मियों में रोज़ा रखा फिर सो गए। ख़्वाब में एक शख़्स को देखा जो येह कह रहा था : ''ऐ अबू सुलैमान दारानी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ! क्या आप आज के रोज़े का षवाब एक हज़ार दीनार के इ़वज़ बेचते हैं ?'' आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जवाबन फ़रमाया : ''मेरे रब्ब عَزَّ وَجَلَّ की इ़ज़्ज़त की क़सम ! मैं नहीं बेचता।'' फिर पूछा गया : ''किस चीज़ के इ़वज़ बेचेंगे ?'' आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : ''मैं येह षवाब दुन्या व मा फ़ीहा (या'नी दुन्या और जो कुछ इस में है) के बदले भी नहीं बेचता। अलबत्ता ! अपने मौला عَزَّ وَجَلَّ के दीदार के इ़वज़ बेच दूंगा।'' आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से कहा गया : ''फिर रोज़ा रखिये ! اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़न क़रीब आप अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ का दीदार करेंगे।''

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने आस्मानी किताबों में इरशाद फ़रमाया : ''ऐ मेरे बन्दे ! मेरी मुलाक़ात के लिये तय्यार हो जा, अ़न क़रीब तू मुझ से मिलेगा। और मेरी बन्दगी बजा ला क्यूंकि मैं ही तेरा मालिक हूं, वोह शख़्स मुझे किस आंख से देखेगा जिस ने मेरी नाफ़रमानी की ? या वोह शख़्स किस मुंह से मिलेगा जो मेरी अ़ज़मते शान को भूल चुका है ? वोह बन्दा ख़सारे में है जिसे मैं अपने दीदार से मह़रूम कर दूंगा। जब सच्चाई के पैकर मेरे क़रीब होंगे और बदबख़्त मेरी बारगाह से धुत्कार दिये जाएंगे, फिर मैं ह़िजाब उठा कर उन परहेज़गारों पर तजल्ली फ़रमाऊंगा जो मुझे मह़बूब रखते हैं। ऐ मेरे बन्दे ! मेरे दरवाज़े पर खड़ा हो जा कि मैं करीम हूं और मेरी पनाह मांग कि मेरा रास्ता ही सीधा है।''

प्यारे इस्लामी भाइयो ! रमज़ान शरीफ़ का येह मुबारक महीना अब तुम से लौटना चाहता है और कूच का इरादा किये हुए है, येह **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में तुम्हारे ह़क़ में या तुम्हारे ख़िलाफ़ उन आ'माल की गवाही देगा जो तुम ने किये या छोड़ दिये, अगर इस महीने से तुम्हारे दिल आबाद हो गए और गुनाहों के अषरात ख़त्म हो गए तो येह तुम्हारा कितना अच्छा मेहमान है ? तो क्या तुम ने इस का ह़क़ ज़ाएअ़ कर दिया या इस की ऐसी इ़ज़्ज़त की जो तुम पर वाजिब

थी ? शायद ! तौबा करने वाले को येह साल दोबारा न मिले और अगर मौत ने ग़ाफ़िल को मोहलत न दी तो वोह उस वक़्त नादिम होगा जब नदामत कोई फ़ाइदा न देगी, और जब क़ियामत के दिन उस के क़दम डगमगा जाएंगे तो अपने गुनाहों पर अफ़्सोस करेगा।

यक़ीनन मुक़द्दर का सिकन्दर है वोह शख़्स जिस ने बक़िय्या ज़िन्दगी को ग़नीमत जान कर नेकियों में जल्दी की और बदबख़्त है वोह शख़्स जिस ने अपनी ज़िन्दगी ग़फ़्लत में गुज़ार दी, उस शख़्स को भलाई क्यूं कर न मिलेगी जो लैलतुल क़द्र में क़ियाम करता है ? क्या येह क़बूलिय्यत की रात नहीं ? पस ऐ ग़ाफ़िल ! तू क्यूं ग़फ़्लत में है ? क्या येह क़द्र की रात नहीं ? तू कब तक नींद में पड़ा रहेगा ?

ताइबीन के लिये बख़्शिश की नवीद :

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं माहे रमज़ान के आख़िरी जुमुआ हज़रते मन्सूर बिन अ़म्मार वाइज़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की महफ़िल में हाज़िर हुवा। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उस के रोज़ों की फ़ज़ीलत, रातों की इबादत और मुख़्लिसीन के लिये जो अज्र तय्यार किया गया है उस के मुतअ़ल्लिक़ बयान फ़रमाया तो ऐसे लग रहा था गोया आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के बयान के अषर से ठोस पथ्थरों से आग ज़ाहिर हो रही है। बिलाशुबा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! (ऐसा हो सकता है) क्यूंकि, इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿1﴾ وَاِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُ ط
(پ۱، البقرہ:۷٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और पथ्थरों में तो कुछ वोह हैं जिन से नदियां बह निकलती हैं।*

लेकिन आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की महफ़िल में न किसी ने ह़रकत की, न ही किसी ने अपने गुनाहों की शिकायत की जब आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने महफ़िल की ख़ामोशी को मुलाहज़ा फ़रमाया तो इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! क्या अपने उ़यूब से आगाह हो कर कोई भी रोने वाला नहीं ? क्या येह महीना तौबा व बख़्शिश का नहीं ? क्या येह महीना अ़फ़्वो रिज़ा का सर चश्मा नहीं ? क्या इस में जन्नत के दरवाज़े नहीं खोले जाते ? क्या इस में जहन्नम के दरवाज़े बन्द नहीं किये जाते ? क्या इस में शयात़ीन को जकड़ा नहीं जाता ? क्या इस में इन्आ़मो इकराम की बारिश नहीं होती ? क्या इस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तजल्ली नहीं फ़रमाता ? क्या इस में हर रात इफ़्तारी के वक़्त दस लाख जहन्नमी जहन्नम से आज़ाद नहीं किये जाते ? तुम्हें क्या हो गया है कि इस षवाब से मह़रूम होते हो ? और मुख़ालफ़त के लिबादे में तकब्बुर करते हो। इरशादे रब्बानी है :

﴿2﴾ اَفَسِحْرٌ هٰذَآ اَمْ اَنْتُمْ لَا تُبْصِرُوْنَ ۝
(پ۲۷، الطور:۱۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो क्या येह जादू है या तुम्हें सूझता नहीं।*

(इस के बा'द आप ने फ़रमाया :) सब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हाज़िर हो कर तौबा

करो, तो सब अहले मजलिस बुलन्द आवाज़ से गिर्या व ज़ारी करने लगे और एक नौजवान अपने गुनाहों की वजह से रोता हुवा ग़म की हालत में खड़ा हो गया और अ़र्ज़ की : "या सय्यिदी ! बताइये कि क्या मेरे रोज़े मक़्बूल हैं ? क्या मेरा रातों का क़ियाम दूसरे क़ियाम करने वालों के साथ लिखा जाएगा ? ह़ालांकि मुझ से बहुत गुनाह सरज़द हुए, मैं ने अपनी उ़म्र नाफ़रमानियों में बरबाद कर दी, अ़ज़ाब के दिन से ग़ाफ़िल रहा ।" तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰى عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ लड़के ! अल्लाह عَزَّوَجَلّ की बारगाह में तोबा करो, क्यूंकि उस ने कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया है :

وَاِنِّیْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ ﴿3﴾ (پ١٦،طٰهٰ:٨٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और बेशक मैं बहुत बख़्शने वाला हूं उसे जिस ने तौबा की ।*

आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰى عَلَيْه ने क़ारी को येह आयते मुबारका पढ़ने का हुक्म फ़रमाया :

وَهُوَ الَّذِیْ یَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَیَعْفُوْا عَنِ السَّیِّاٰتِ ﴿4﴾ (پ٢٥،الشورٰى:٢٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता और गुनाहों से दरगुज़र फ़रमाता है ।* (1)

उस नौजवान ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और कहा : "मेरी ख़ुश नसीबी है कि उस का एह़सान मुझ तक पहुंचता रहा लेकिन इस के बावुजूद मैं नाफ़रमानियों में इज़ाफ़ा करता रहा और गुमराही के रास्ते से न लौटा । क्या गुज़रे हुए वक़्त की जगह कोई और वक़्त होगा कि जिस में अल्लाह तआ़ला ने दरगुज़र फ़रमाया ।" उस ने दोबारा चीख़ मारी और अपनी जान जाने आफ़रीं के सिपुर्द कर दी ।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! माहे रमज़ान के फ़िराक़ पर क्यूं न रोया जाए ? और अ़फ़्वो मग़फ़िरत के महीने पर क्यूं न अफ़्सोस किया जाए ? इस महीने की जुदाई पर क्यूं न ग़म किया जाए जिस में जहन्नम से आज़ादी नसीब होती है ?

रोज़ाना दस लाख गुनहगारों की दोज़ख़ से रिहाई :

मन्क़ूल है कि जब माहे रमज़ान आता है तो जन्नत को एक कनारे से दूसरे कनारे तक सजाया जाता है यहां तक कि जब उस की पहली रात आती है तो अ़र्श के नीचे "मुषीरह" नामी तेज़ हवा चलती है तो जन्नती दरख़्तों के पत्ते फड़फड़ाते हुए जन्नत के दरवाज़ों पर लगते हैं तो उन की

1...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "**मस्अला :** तौबा हर एक गुनाह से वाजिब है और तौबा की ह़क़ीक़त येह है कि आदमी बदी व मा'सिय्यत से बाज़ आए और जो गुनाह उस से सादिर हुवा उस पर नादिम हो और हमेशा गुनाह से मुज्तनिब रहने का पुख़्ता इरादा करे और अगर गुनाह में किसी बन्दे की ह़क़ तलफ़ी भी थी तो उस ह़क़ से ब त़रीक़े शरई ओ़हदा बरआ हो ।"

ऐसी आवाज़ सुनाई देती है कि किसी सुनने वाले ने उस से ज़ियादा दिलकश आवाज़ न सुनी होगी। फिर ज़ीनत से आरास्ता बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरें जन्नत के बालाख़ानों में खड़ी हो कर पुकारती हैं : "क्या कोई ख़ुश नसीब है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को हमारे निकाह़ का पैग़ाम दे ताकी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारा निकाह़ उस से कर दे।" फिर दरबाने जन्नत से पूछती हैं : "ऐ रिज़्वान ! येह कौन सी रात है ?" तो वोह उन को लब्बैक कहते हुए जवाब देता है : "ऐ ह़सीन सूरतो सीरत वालियो ! येह माहे रमज़ान की पहली रात है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया है कि "ऐ रिज़्वान ! मेरे मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के रोज़ेदारों के लिये जन्नत के दरवाज़े खोल दो। ऐ जिब्रील ! ज़मीन की त़रफ़ जाओ मरदूद शयात़ीन को ज़न्जीरों में जकड़ दो और उन के गले में तौक़ डाल कर उन्हें समन्दर की गहराई में फेंक दो ताकि येह मेरे मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के रोज़े फ़ासिद करने की कोशिश न करें।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ माहे रमज़ान की हर रात तीन मरतबा इरशाद फ़रमाता है : "है कोई तौबा करने वाला कि मैं उस की तौबा क़बूल करूं ? है कोई मग़फ़िरत त़लब करने वाला कि मैं उसे मुआ़फ़ कर दूं ? है कोई सुवाल करने वाला कि उसे अ़त़ा करूं ? है कोई दुआ़ करने वाला कि उस की दुआ़ क़बूल फ़रमाऊं ?" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ माहे रमज़ान की हर रात इफ़्त़ार के वक़्त **दस लाख जहन्नमी** कि जिन पर अ़ज़ाब वाजिब हो चुका होता है, दोज़ख़ से आज़ाद फ़रमाता है। जब माहे रमज़ान का आख़िरी दिन आता है तो उस दिन महीने के शुरूअ़ से आख़िर तक आज़ाद किये हुओं की ता'दाद के बराबर जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां अज्रो षवाब में रग़बत करो और माहे रमज़ान को अलवदाअ़ करो, रह़मत का दरवाज़ा बन्द होने से पहले ही आ'माले सालिह़ा बजा लाने में जल्दी करो, येह माहे रमज़ान है, अब इस की रुख़्सती का वक़्त आ चुका है, इस का क़ियाम रात को आने वाले मेहमान जैसा है, या उस मह़बूब जैसा है जो थोड़ी देर क़ियाम कर के जुदा होने वाला हो, पस इस महीने अ़मले सालेह़ की कषरत करो, आख़िरत का तोशा तय्यार कर लो, अफ़्सोस और गिर्या व ज़ारी करते हुए इसे अलवदाअ़ करो।

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! वोह लोग ख़ूब हैं जो शहवात को छोड़ कर तन्हाई में क़ियाम करते हैं, क़ुरआने ह़कीम ठहर ठहर कर पढ़ते हैं, अगर तुम उन्हें सह़री के वक़्त देखो तो रोता हुवा पाओगे, बार बार क़ुरआन पढ़ते हैं, सुरीली आवाज़ में क़ुरआने पाक की तिलावत कर के कानों को राह़तो सुकून पहुंचाते हैं, वोह ग़मों की चादरो लिह़ाफ़ ओढ़ लेते हैं और जब रोते हैं तो उन की आंखों से सैले अश्क रवां हो जाता है।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! माहे रमज़ान तो ऐसे गुज़र गया जैसे वोह आया ही न था, वोह कोताहों की कोताहियों और नेकोकारों की नेकियों पर गवाह बन चुका है, जिस के हिस्से में नफ़्अ़ या नुक़्सान आया वोह उसे हासिल होगा, हाए ! गुनहगार की ह़सरत ! उस ने वक़्त ज़ाएअ़ कर दिया। हाए ! इख़्तियार रखने वाले की मह़रूमी ! ऐसा लगता है गोया उस ने मौत से अमान ले रखी है या शायद तक़्दीर उसे दूसरे रमज़ान तक मोहलत दे देगी। येह तुम्हारा महीना रुख़्सत हो रहा है कि जिस ने तुम्हारे आंसू ख़त्म कर दिये हैं और ख़ुद बड़ी तेज़ी से जा रहा है, अब जुदा होने वाले के लिये रोना कहां है ? भलाई करने वाले और उस की त़रफ़ रहनुमाई करने वाले की पैरवी कहां हो रही है ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! माहे रमज़ान के रोज़ों और शब बेदारी का ज़माना कितना अच्छा है, उस के अवक़ात मैल कुचैल की आफ़ात से कितने साफ़ो शफ़्फ़ाफ़ हैं, इस में तिलावते कलामे पाक में मश्ग़ूल होने में कितनी लज़्ज़त है।

ऐ काश ! मैं जान लेता कि किस ने माहे रमज़ान में वाजिबात और सुन्नतों का एहतिमाम किया ? किस ने इस में अपने अ़मल की इमारत को ता'मीर करने की कोशिश की ? किस ने लोगों के सामने और छुप कर इख़्लास से इ़बादत की ? और कौन रोज़े की आफ़ात और आज़्माइश से मह़फ़ूज़ रहा ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिस का घर नहीं उस की राह़त गिर्या व ज़ारी में है। उस शख़्स की ह़ालत कैसी होगी जिसे उस के घर वाले, भाई और पीछे वाले भूल जाएंगे ? गुनाहों ने हमारे चेहरों को सियाह कर दिया है, येह कब नेकियों से सफ़ेद होंगे ? अब वक़्त है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गिर्या व ज़ारी की कषरत कर लो और बुलन्द आवाज़ से इस त़रह़ दुआ़ करो : "या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! **हमें अपने शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन नबी** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **की शफ़ाअ़त से मह़रूम न कर** और तक़्वा को हमारे लिये सब से ज़ियादा नफ़्अ़ बख़्श सामान बना दे और इस माहे ग़ुफ़रान में हमें गुनाहगारों में शुमार न कर और ऐ अरह़मर्राह़िमीन ! बरोज़े क़ियामत हमें ख़ौफ़ से अम्न अ़त़ा फ़रमा।"

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तर्बिय्यत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दा'वते इस्लामी के) ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

बयान 7 :

शबे क़द्र के फ़ज़ाइल

ह़म्दे बारी तआला :

सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के लिये हैं जिस ने दिलोंको पाक और मुनव्वर किया, सितारों को रोशनी दी, हवाओं को मुसख़्ख़र किया, बादलों को फैलाया फिर उन को बरसा दिया, बाग़ात में बारिश भेज कर दरख़्तों को ज़िन्दगी बख़्शी, फलों को पैदा किया। उस ने इबादात के दिनों को दीगर तमाम अवक़ात पर फ़ज़ीलत दी, ख़ैरात व बरकात के हुसूल को आसान फ़रमा दिया और माहे रमज़ान को तमाम महीनों पर शर्फ़ बख़्शा और उस की रातों को फ़ज़ीलत अ़त़ा फ़रमाई और इस महीने को शबे क़द्र के ज़रीए मुमताज़ फ़रमा दिया जो हज़ार महीनों (या'नी तिरासी साल और चार माह) से बेहतर है। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का इरशादे रह़मत बुन्याद है : اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ فِیْ لَیْلَةِ الْقَدْرِ ٥ (پ۳۰، القدر:۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने इसे शबे क़द्र में उतारा।[1]

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने लोहे मह़फ़ूज़ से बैतुल इ़ज़्ज़त की त़रफ़ एक ही दफ़्आ़ पूरा क़ुरआने ह़कीम माहे रमज़ान, शबे क़द्र में नाज़िल फ़रमाया।" मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : "बैतुल इ़ज़्ज़त आस्माने दुन्या में है।"

लैलतुल क़द्र कहने की वजह :

इसे लैलतुल क़द्र कहने की पांच वुजूहात हैं :

(1)......क़द्र का मा'ना अ़ज़्मत है, और चूंकि येह रात भी अ़ज़्मत वाली है इस लिये इसे लैलतुल क़द्र कहा जाता है।

(2)......क़द्र का मा'ना तंगी है, चूंकि इस रात ज़मीन अपनी वुस्अ़त के बावुजूद फ़िरिश्तों की कषरत की वजह से तंग हो जाती है, इस लिये इसे लैलतुल क़द्र कहा जाता है।

1.....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْهَادِی **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "शबे क़द्र शर्फ़ व बरकत वाली रात है। इस को शबे क़द्र इस लिये कहते हैं कि इस शब में साल भर के अह़काम नाफ़िज़ किये जाते हैं और मलाइका को साल भर के वज़ाइफ़ व ख़िदमात पर मामूर किया जाता है। येह भी कहा गया है कि इस रात की शराफ़त व क़द्र के बाइ़ष इस को शबे क़द्र कहते हैं। और येह भी मन्क़ूल है कि चूंकि इस शब में आ'माले सालेहा मन्क़ूल होते हैं और बारगाहे इलाही में इन की क़द्र की जाती है इस लिये इस को शबे क़द्र कहते है। अह़ादीष में इस शब की बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हुई हैं, बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीष में है कि जिस ने इस रात में ईमान व इख़्लास के साथ शब बेदारी कर के इबादत की **अल्लाह** तआ़ला उस के साल भर के गुनाह बख़्श देता है। आदमी को चाहिये कि इस शब में कषरत से इस्तिग़फ़ार करे और रात इबादत में गुज़ारे। साल भर में शबे क़द्र एक मरतबा आती है और रिवायाते कषीरा से षाबित है कि वोह रमज़ानुल मुबारक के अ़शरए अख़ीरा में होती है। और अकषर इस की भी त़ाक़ रातों में से किसी रात में। बा'ज़ उ़-लमा के नज़्दीक रमज़ानुल मुबारक की सत्ताईसवीं रात शबे क़द्र होती है। येही ह़ज़रते इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है।"

(3)......क़द्र का मा'ना हुक्म है, चूंकि इस रात अश्या के मुतअ़ल्लिक़ उन की ह़क़ीक़तों के मुताबिक़ फ़ैसले किये जाते हैं इस लिये इसे लैलतुल क़द्र कहा जाता है।

(4)......क़द्र का मा'ना इ़ज़्ज़त है या'नी जिस की कोई क़द्रो क़ीमत न हो वोह भी इस रात की बरकत से साहिबे क़द्र हो जाता है। इस लिये इस का नाम लैलतुल क़द्र है।

(5)......या इस की वजह येह है कि इस में क़द्र वाली किताब नाज़िल हुई, या येह कि इस में क़द्र वाले फ़िरिश्ते नाज़िल होते हैं।

क्या लैलतुल क़द्र अब भी बाक़ी है ?

इस में उ़-लमा का इख़्तिलाफ़ है कि क्या शबे क़द्र अब भी बाक़ी है या येह सिर्फ़ हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने के साथ ख़ास थी ? इस बारे में दो अक़्वाल हैं जिन में से सह़ीह़ तरीन येही है कि येह अब भी बाक़ी है और माहे रमज़ान में आती है।

कौन सी रात लैलतुल क़द्र है ?

इस में इख़्तिलाफ़ है कि शबे क़द्र कौन सी रात है, इस के मुतअ़ल्लिक़ छे अक़्वाल हैं : (1)......रमज़ानुल मुबारक की पहली रात (2)......इक्कीसवीं रात (3)......तेईसवीं रात (4)......पच्चीसवीं रात (5)...... सत्ताईसवीं रात और (6)......उन्तीसवीं रात। और बा'ज़ का क़ौल है कि शबे क़द्र माहे रमज़ान के आख़िरी अ़शरे की ताक़ रातों में मुन्तक़िल होती रहती है।

शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है :

इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿1﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۝ لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ۝ (پ ۳۰، القدر: ۲۔۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम ने क्या जाना क्या शबे क़द्र, शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर।* (1)

---

❶.....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : ''(या'नी ऐसे हज़ार महीनों से बेहतर) जो शबे क़द्रसे ख़ाली हों। इस एक रात में नेक अ़मल करना हज़ार रातों के अ़मल से बेहतर है। ह़दीष शरीफ़ में है कि ''नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उममे गुज़श्ता के एक शख़्स का ज़िक्र फ़रमाया जो तमाम रात इ़बादत करता था और तमाम दिन जिहाद में मस्रूफ़ रहता था। इस त़रह़ उस ने हज़ार महीने गुज़ारे थे। मुसलमानों को इस से तअ़ज्जुब हुवा तो **अल्लाह** तआ़लाने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को शबे क़द्र अ़त़ा फ़रमाई और येह आयत नाज़िल की, कि शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है (اخرجه ابن جرير عن طريق مجاهد) येह **अल्लाह** तआ़ला का अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर करम है कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के उम्मती शबे क़द्र की एक रात इ़बादत करें तो उन का षवाब पिछली उम्मत के हज़ार माह इ़बादत करने वालों से ज़ियादा हो।''

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं कि शबे क़द्र में इबादत और नेक अ़मल ऐसे हज़ार महीनों की इबादत और नेक अ़मल से बेहतर है जिस में शबे क़द्र न हो।

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास बनी इस्राईल के एक शख़्स का तज़्किरा हुवा, जिस ने एक हज़ार माह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में **जिहाद** किया। सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को उस से बहुत तअ़ज्जुब हुवा और तमन्ना करने लगे : "काश ! उन के लिये भी ऐसा मुमकिन होता।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ ! तू ने मेरी उम्मत को कम उ़म्र अ़ता फ़रमाई अब इन के आ'माल भी कम होंगे।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को शबे क़द्र अ़ता फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया : "ऐ मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है जो मैं ने तुझे और तेरी उम्मत को हर साल अ़ता फ़रमाई है। येह रात माहे रमज़ान में तुम्हारे लिये और क़ियामत तक आने वाले तुम्हारे उम्मतियों के लिये है जो हज़ार महीनों से बेहतर है।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿2﴾ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِکَۃُ وَالرُّوْحُ فِیْہَا بِاِذْنِ رَبِّہِمْ ۚ مِنْ کُلِّ اَمْرٍ ۛ سَلٰمٌ ۛ ہِیَ حَتّٰی مَطْلَعِ الْفَجْرِ

(پ ۳۰،القدر:٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *इस में फ़िरिश्ते और जिब्रील उतरते हैं, अपने रब्ब के हुक्म से हर काम के लिये। वोह सलामती है सुब्ह चमकने तक।*

मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : "इस रात फ़िरिश्ते अगले साल तक के लिये हर वोह हुक्म ले कर उतरते हैं जिस का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़ैसला फ़रमा दिया है।" और येह रात तुलूए फ़ज्र तक ऐसी सलामती वाली है कि इस में न कोई बीमारी होगी, न कोई शैतान भेजा जाएगा।

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जो ईमान की वजह से और षवाब के लिये शबे क़द्र में क़ियाम करे उस के गुज़श्ता गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।"

(صحیح البخاری ، کتاب فضل لیلۃ القدر باب فضل لیلۃ القدر ، الحدیث ۲۰۱٤،ص ۱۵۷)

आख़िरी सात रातों में तलाश करो :

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि "कुछ सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने आख़िरी सात रातों में ख़्वाब में शबे क़द्र देखी तो हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं देखता हूं कि तुम्हारे ख़्वाब रमज़ान की आख़िरी सात रातों में मुत्तफ़िक़ हो गए हैं पस जो इसे तलाश करना चाहे वोह आख़िरी सात रातों में तलाश करे। (صحیح البخاری ، کتاب فضل لیلۃ القدر ، باب التماس لیلۃ القدر......الخ، الحدیث ۲۰۱۵، ص۱۵۷)

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنہَا से मरवी है कि "नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी दस दिनों में इबादत के लिये कमर बस्ता हो जाते, ख़ुद भी तमाम रातें जाग कर गुज़ारते और घर वालों को भी जगाते।"

(صحیح البخاری، کتاب فضل لیلۃ القدر، باب العمل فی العشر الاواخرمن رمضان، الحدیث ٢٠٢٤، ص١٥٨۔صحیح ابن خزیمۃ، کتاب الصیام، باب استحباب احیاء لیالی العشر الاواخرمن شہر رمضان......الخ، الحدیث ٢٢١٤، ج٣، ص٣٤١)

शबे क़द्र की अ़लामात :

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "मैं ने शबे क़द्र को देखा फिर मुझे भुला दी गई। लिहाज़ा तुम इसे रमज़ान के आख़िरी अ़शरे की ताक़ रातों में तलाश करो और (इस की पहचान येह है कि) येह एक ख़ुशगवार रात है, न गर्म, न सर्द, इस रात चांद के साथ शैत़ान नहीं निकलता यहां तक कि फ़ज्र तुलूअ़ हो जाती है।"

(صحیح ابن خزیمۃ ،کتاب الصیام ،باب صفۃ لیلۃالقدر بنفی الحرو البرد ......الخ، الحدیث ٢١٩٠، ج٣، ص ٣٣٠، مختصر)

लैलतुल क़द्र की दुआ़ :

ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنہَا ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अगर मुझे शबे क़द्र का इल्म हो जाए तो मैं क्या दुआ़ करूं ? तो हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम येह दुआ़ करो : "اَللّٰھُمَّ اِنَّکَ عَفُوٌّ کَرِیْمٌ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّیْ" या'नी ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ! तू बहुत मुआ़फ़ करने वाला, करम फ़रमाने वाला है। मुआ़फ़ करने को पसन्द फ़रमाता है पस मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दे।"

(جامع الترمذی ،کتاب الدعوات، باب فی فضل سؤال العافیۃ والمعافاۃ، الحدیث ٣٥١٣، ص٢٠١٣)

सत्ताईसवीं रात शबे क़द्र है :

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ मुहाजिरीन सह़ाबा के गुरौह में तशरीफ़ फ़रमा थे। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھُمَا भी मौजूद थे कि शबे क़द्र का तज़्किरा हुवा, पस उन ह़ज़रात ने शबे क़द्र के मुतअ़ल्लिक़ जो कुछ सुन रखा था, कह दिया लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھُمَا ख़ामोश रहे। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ! आप गुफ़्तुगू क्यूं नहीं कर रहे ? आप भी कुछ बोलिये ! बोलने पर पाबन्दी नहीं।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ कुछ यूं गोया हुए : "बेशक अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ताक़ है और ताक़ को पसन्द फ़रमाता है। उस ने अय्यामे दुन्या को इस त़रह़ बनाया कि वोह सात के गिर्द चक्कर

लगा रहे हैं (या'नी हफ़्ते में सात दिन हैं), इन्सान को भी सात चीज़ों से पैदा किया। हमारे रिज़्क़ को भी सात चीज़ों से पैदा किया, हमारे ऊपर सात आस्मान बनाए और नीचे सात ज़मीनें बिछाईं, सात समन्दर बनाए, सजदे में ज़मीन पर लगने वाले आ'ज़ा सात बनाए, क़ुरआने मजीद में सात क़िस्म के रिश्तेदारों से निकाह़ ह़राम फ़रमाया और सात क़िस्म के वुरषा पर विराषत तक़्सीम फ़रमाई, हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को सूरए फ़ातिह़ा की सात आयात अ़ता फ़रमाईं और शयातीन को भी सात कंकरियां मारी जाती हैं। लिहाज़ा मेरा ख़याल है कि शबे क़द्र रमज़ान की सत्ताईसवीं रात है और अल्लाह तआ़ला ज़ियादा बेहतर जानता है।" अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ मुतअ़ज्जिब हुए और इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! इब्ने अ़ब्बास की त़रह़ कौन रिवायत बयान कर सकता है ?" (حلية الاولياء،عبدالله بن عباس، الحديث ١١٢٣، ج١، ص٣٩٢،بتغير)

मन्क़ूल है कि इस सूरत के कलिमात की ता'दाद तीस है और حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ पर इस का इख़्तिताम है और "هِيَ" सत्ताईसवां कलिमा है, येह इस बात पर दलील है कि शबे क़द्र सत्ताईसवीं रात है। (تفسير ابن كثير، سورة القدر، تحت الآية ٥، ج٨، ص ٤٣١)

शबे क़द्र के नूर के मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ अक़्वाल :

एक क़ौल येह है कि इस रात को नूर के साथ ख़ास किया गया और फ़ज़ीलत दी गई है जो आस्मान से अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के नूरी झन्डे की मिष्ल नाज़िल होता है। एक क़ौल येह है कि वोह नूर बड़े ख़ैमे की मिष्ल है, बा'ज़ ने कहा कि वोह तूबा दरख़्त का नूर है, बा'ज़ ने कहा कि रह़मत का नूर है, बा'ज़ ने कहा कि ह़म्द के झन्डे का नूर है, बा'ज़ का क़ौल है कि मलाइका के परों का नूर है, एक क़ौल येह भी है कि इ़बादते इलाही عَزَّ وَجَلَّ का नूर है, एक क़ौल येह है कि अहले मा'रिफ़त के असरार का नूर है। एक क़ौल येह है कि येह हैबत का नूर है।

फिर शबे क़द्र ऐसी पसन्दीदा रात है जो तमाम रातों से अफ़्ज़ल है। बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के इस फ़रमान : "لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ" की येह तफ़्सीर की है कि इस से मुराद है कि इस एक रात में हज़ार महीनों से ज़ियादा रह़मत होती है। इस का मत़लब येह है (गोया अल्लाह तआ़ला फ़रमा रहा है) इस एक रात में नाफ़रमानों और गुनाहगारों पर मेरी इस से ज़ियादा रह़मत होती है जितनी हज़ार महीनों में उन पर होती है। इस रात को शबे क़द्र कहने की एक वजह येह भी है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के हां इस की क़द्रो मन्ज़िलत और अ़ज़मत बहुत ज़ियादा है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल फ़ज़्ल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़ौल है कि शबे क़द्र में रिज़्क़, मौत, अमराज़, मसाइब, बलाएं, आ़फ़िय्यत, फ़रह़त, सुरूर, नफ़्अ़ व नुक़्सान और आयन्दा साल की शबे क़द्र तक की तमाम बातें लिख दी जाती हैं।

शबे क़द्र फ़िरिश्ते झन्डे ले कर उतरते हैं :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा और अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم से मरवी है कि शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जब शबे क़द्र आती है तो सिद्रतुल मुन्तहा में रहने वाले फ़िरिश्ते अपने साथ चार झन्डे ले कर उतरते हैं। हज़रते जिब्राईल (عَلَیۡہِ السَّلَام) भी उन के साथ होते हैं। उन में से एक झन्डा मेरे दफ़्न की जगह पर, एक तूरे सीना पर, एक मस्जिदे हराम पर और एक बैतुल मुक़द्दस पर नस्ब करते हैं, फिर वोह हर मोमिन और मोमिना के घर दाखि़ल हो कर उन्हें सलाम कहते हैं : "ऐ मोमिन मर्द और औ़रत ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें सलाम भेजता है।" (تفسیرقرطبی،سورۃالقدر،تحت الآیۃ٥،الجزء العشرون،ج١٠،ص٩٧) और जब फ़ज्र तुलूअ़ होती है तो सब से पहले हज़रते जिब्राईल (عَلَیۡہِ السَّلَام) ज़मीनो आस्मां के दरमियान बुलन्दी पर चले जाते हैं और अपने बाज़ू फैला देते हैं और सूरज बिग़ैर शुआ़ओं के तुलूअ़ होता है, फिर जिब्राईल अमीन (عَلَیۡہِ السَّلَام) फ़िरिश्तों को एक एक कर के बुलाते हैं और फ़िरिश्तों का नूर और जिब्राईल के परों का नूर इकठ्ठा हो जाता है और बिग़ैर शुआ़ओं के दूधिया सूरज तुलूअ़ होता है पस जिब्राइले अमीन और दीगर फ़िरिश्ते मोअमिनीन व मोअमिनात के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करने के लिये ज़मीनो आस्मां के दरमियान ठहर जाते हैं। जब शाम होती है तो आस्माने दुन्या पर जाते हैं तो आस्मान के फ़िरिश्ते उन से पूछते हैं : "हमारे क़ाबिले एह़तिराम फ़िरिश्तों को मरह़बा ! कहां से आ रहे हो ?" तो येह कहते हैं : "हम उम्मते मुह़म्मदिय्या (عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) के पास से आ रहे हैं।"

आस्माने दुन्या के फ़िरिश्ते पूछते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया है ?" तो वोह जवाब देते हैं : "**उम्मते मुह़म्मदिय्या** (عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) **के नेक लोगों को बख़्श दिया गया और गुनहगारों के ह़क़ में उन की शफ़ाअ़त क़बूल कर ली गई।** तो वोह फ़िरिश्ते सुब्ह़ तक उस ने'मत के शुक्र में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तस्बीहो तह़मीद और पाकी बयान करते रहते हैं जो उस ने उम्मते मुह़म्मदिय्या (عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) को अ़ता फ़रमाई। फिर आस्माने दुन्या के फ़िरिश्ते उन से एक एक मर्दो औ़रत के मुतअ़ल्लिक़ पूछते हुए कहते हैं : "फ़ुलां मर्द ने क्या किया ?", "फ़ुलां औ़रत ने क्या किया ?" तो वोह कहते हैं : "हम ने फ़ुलां शख़्स को गुज़श्ता साल इबादत करते हुए पाया था और इस साल बिदअ़त पर अ़मल करते पाया।" तो आस्माने दुन्या के फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करना छोड़ देते हैं। फिर वोह कहते हैं : "गुज़श्ता साल हम ने फ़ुलां शख़्स को बिदअ़ती पाया था मगर इस साल इबादत करते हुए पाया।" तो फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ व इस्तिग़्फ़ार करने लगते हैं। फिर कहते हैं : "हम ने देखा कि कोई ज़िक्रे इलाही कर रहा है, कोई रुकूअ़ में है, कोई सजदे में है, कोई तिलावते कुरआन में मगन है और कोई रो रहा है।" तो फ़िरिश्ते उन के लिये भी दुआ़ व इस्तिग़्फ़ार शुरूअ़ कर देते हैं।

फिर वोह दूसरे आस्मान की त़रफ़ जाते हैं और इस त़रह़ वोह हर आस्मान में एक दिन रात उम्मते मुह़म्मदिय्या के लिये इस्तिग़्फ़ार करते रहते हैं यहां तक कि अपने क़ियाम की जगह सिद्रतुल मुन्तहा में पहुंच जाते हैं। सिद्रतुल मुन्तहा उन से पूछता है : "आज कल कहां ग़ाइब हो ?" तो वोह कहते हैं : "हम शबे क़द्र में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत के नुज़ूल के वक़्त अहले ज़मीन के पास थे।" सिद्रतुल मुन्तहा कहता है : "रब्ब عَزَّوَجَلَّ ने उन के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" कहते हैं : "नेकों को बख़्श दिया गया और बुरों के ह़क़ में उन की शफ़ाअ़त क़बूल कर ली गई।" तो सिद्रतुल मुन्तहा ख़ुशी से झूमने लगता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ और हर ऐ़ब से उस की पाकी बयान करता है, और उस पर शुक्र करता है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उम्मते मुह़म्मदिय्या (عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) को अ़त़ा फ़रमाया। तो जन्नतुल मावा झांक कर पूछती है : "ऐ सिद्रतुल मुन्तहा ! क्यूं झूम रहा है ?" वोह जवाब देता है : "मुझे मेरे रहने वालों ने ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام के ह़वाले से ख़बर दी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उम्मते मुह़म्मदिय्या (عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) को बख़्श दिया और बुरों के ह़क़ में नेकों की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा ली है।" तो जन्नतुल मावा बुलन्द आवाज़ से अल्लाह तआ़ला की तस्बीह़ व तह़मीद और तक़्दीस करती है, और इस पर शुक्र अदा करती है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस उम्मत को अ़त़ा फ़रमाया।

जब "जन्नते नईम" सुनती है तो झांक कर पूछती है : "ऐ जन्नतुल मावा ! क्या हुवा ?" तो वोह कहती है : "मुझे सिद्रतुल मुन्तहा ने अपने रहने वालों के ह़वाले से ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से सुन कर ख़बर दी है कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उम्मते मुह़म्मदिय्या (عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) को बख़्श दिया और गुनहगारों के ह़क़ में नेकों की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा ली है।" तो जन्नते नईम भी इसी त़रह़ पुकारती है फिर जन्नते अ़द्न फिर इस से कुर्सी सुनती है तो इसी त़रह़ कहती फिर अ़र्श सुनता है तो पुछता है ऐ कुर्सी क्या हुवा ? तो कुर्सी कहती है मुझे जन्नते अ़द्न ने जन्नते नईम के ह़वाले से, जन्नतुल मावा से सुन कर कि उस ने सिद्रतुल मुन्तहा से, उस ने अपने रहने वालों से, उन्हों ने ह़ज़रते जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) से सुन कर ख़बर दी कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उम्मते मुह़म्मदिय्या (عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) को बख़्श दिया और नाफ़रमानों के ह़क़ में नेकों की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा ली है।" येह सुन कर अ़र्श भी ख़ुशी से झूमने लगता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पूछता है : "क्या हुवा ?" ह़ालांकि वोह जानता है। अ़र्श कहता है : "या रब्ब عَزَّوَجَلَّ ! मुझे कुर्सी ने ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام के ह़वाले से ख़बर दी कि तू ने उम्मते मुह़म्मदिय्या عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को बख़्श दिया और बुरों के ह़क़ में नेकों की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा ली है।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है जिब्राईल ने सच कहा, सिद्रतुल मुन्तहा ने सच कहा, जन्नतुल मावा ने सच कहा, जन्नते नईम, जन्नते अ़द्न, कुर्सी और ऐ अ़र्श ! तू ने भी सच कहा। मैं ने उम्मते मुह़म्मदिय्या (عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) के लिये वोह अज्रो षवाब तय्यार किया है जो न तो किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न ही किसी के दिल में इस का ख़याल गुज़रा।"

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम पर अपना ख़ास इन्आमो इकराम फ़रमाया और बिग़ैर किसी बदले के बड़ी बड़ी ने'मतें अ़ता फ़रमाईं और अपने मह़बूब, नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से नवाज़ा और इन की बरकत से हलाकत से बचाया और गुनाहगारों को बख़्श कर नेकों में शामिल फ़रमाया और हिदायत अ़ता फ़रमाई। अल्लाह तआ़ला तुम पर रह़म फ़रमाए ! अपनी ज़िन्दगी के अय्याम में रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ ह़ासिल करने की कोशिश करो क्यूंकि मौत के फ़िरिश्ते ने कूच का ए'लान कर दिया है और शबे क़द्र को ग़नीमत जानो, शायद ! तुम सआ़दत मन्दों के गुरौह में शामिल हो जाओ इस लिये कि येह रात ज़माने की तमाम रातों से अफ़्ज़ल है और हज़ार महीनों से बेहतर है। जो भी इस रात में दुआ़ करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की दुआ़ क़बूल फ़रमाता और उस की आरज़ू और मक़्सद पूरा फ़रमाता है। जो भी कुछ मांगता है अल्लाह तआ़ला उस को अ़ता करता और उस पर फ़ज़्लो करम फ़रमाता है। जिस ने शबे क़द्र को इ़बादत में गुज़ारा वोह कामयाब हो गया। कितना सआ़दत मन्द है वोह शख़्स जिस ने इस को देख लिया बिला शुबा उस ने क़ाबिले फ़ख़्र भलाई को पा लिया। सह़ीह़ सनद के साथ मरवी है कि शबे क़द्र त़ाक़ रातों में तलाश की जाती है पस इसे त़ाक़ रातों में तलाश करो तो कामयाब हो जाओगे।

ऐ सीधी राह से भटकने वाले ! क्या तू हलाकत के अंजाम से नहीं डरता ? क्या मौत की आवाज़ नहीं सुनता ? क्या तू अब भी सीधे रास्ते का सुवाल नहीं करेगा ? क्या तू शबे क़द्र को ग़नीमत नहीं समझता जो तेरे दिल से ज़ंग को दूर कर दे।

ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! सुवाली तेरी रह़मत के दरवाज़े पर खड़े हैं और फ़ुक़रा तेरी बारगाह में ह़ाज़िर हैं और मसाकीन का सफ़ीना तेरे बह़रे करम के साह़िल पर खड़ा है जो तेरी वसीअ़ रह़मत की उम्मीद रखते हैं। **या इलाहल आ़लमीन** عَزَّوَجَلَّ इस महीने अगर तू सिर्फ़ उन लोगों की ही इ़ज़्ज़त बुलन्द करेगा जिन्हों ने तेरी रिज़ा के लिये रोज़े रखे और क़ियाम किया तो गुनाहों के समन्दर में ग़र्क़ लोग कहां जाएंगे ? अगर तू सिर्फ़ इत़ाअ़त करने वालों पर रह़म फ़रमाएगा तो नाफ़रमानों का क्या बनेगा ? अगर तू सिर्फ़ नेकों को क़बूल फ़रमाएगा तो नाफ़रमानों को कौन सहारा देगा ? या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! रोज़ेदार कामयाब हो गए, रातों को क़ियाम करने वाले कामयाबी की चोटी पर पहुंच गए और इख़्लास वाले नजात पा गए, يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْن عَزَّوَجَلَّ ! हम तेरे गुनहगार बन्दे हैं, हम पर रह़म फ़रमा और हमें अपने फ़ज़्लो एह़सान से नवाज़ दे और हम सब को अपनी रह़मत के ज़रीए़ बख़्श दे। (आमीन)

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَبَارِکْ وَسَلِّمْ

बयान 8 : हाजियों के फ़ज़ाइल और इन पर इन्आम का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **हम सब को उन लोगों में शामिल फ़रमा दे जो ह़ज्जे बैतुल्लाह और ज़ियारते रोज़ए अक़्दस** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **की सआ़दत से बहरामन्द हुए । (आमीन)**

ह़म्दे बारी तआ़ला :

सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह खुद ज़िन्दा और दूसरों का क़ाइम रखने वाला है, वोह पाक और बुलन्द है, उसे न ऊंघ आती है, न नींद, उसे फ़ना नहीं, आस्मानों और ज़मीन में जो कुछ है सब उसी का है, ज़मीनो आस्मां की हर चीज़ उस की अ़ज़मत पर गवाह है, अ़क़्ल उस की मिष्ल या शबीह नहीं पा सकती, कौन है जो उस की इजाज़त के बिग़ैर उस के यहां सिफ़ारिश करे, उस की बारगाह में किसी को सुवालो जवाब करने की जुरअत नहीं, मख़्लूक़ के आगे पीछे दाएं बाएं, ऊपर नीचे हर चीज़ का उस को इ़ल्म है, और उस के इ़ल्म में से इतना ही पा सकते हैं जितना वोह चाहे, कोई उस के इ़ल्म में से उस की ह़क़ीक़त की तमषील भी नहीं पा सकता, ज़मीनो आस्मां उस की कुर्सी में समाए हुए हैं, उस की हैबत से हर चीज़ का ख़ौफ़ ज़ाहिर है, और उन की निगहबानी उसे भारी नहीं, और वोह उन की ह़िफ़ाज़त से नहीं थकता, वोही है बुलन्द बड़ाई वाला जो बुलन्द व बरतर अ़ज़मत वाला है ।

पाक है वोह ज़ात जिस ने अपने बन्दों पर ह़ज्जे बैतुल्लाह फ़र्ज़ फ़रमाया तो इन्हों ने अपनी सुवारियों को तय्यार कर लिया । इन को अपने कुर्ब में बुलाया तो इन्हों ने उस की मह़ब्बत में दूरी को दूर न समझा और न ही मसाइब की परवाह की, इन के चेहरे रात की तारीकी में चमकते हैं । पाक है वोह ज़ात जिस ने ख़ानए का'बा को रुक्ने इस्लाम (या'नी ह़ज) से मुशर्रफ़ फ़रमाया तो जिस ने इस रुक्न को अदा किया वोह ग़म और तंगी से नजात पा गया । जो उस के दरवाज़े से दाख़िल हुवा वोह अमान पा गया, भलाई करने और सीधे रास्ते पर चलने वालों पर उस के मीज़ाब से रह़मत का नुज़ूल होता है और ह़जरे अस्वद उस शख़्स की गवाही देगा जो उसे सिद्क़ो वफ़ा के साथ बोसा देगा ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًاؕ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ۝ (پ٤،ال عمران:٩٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** के लिये लोगों पर उस घर का ह़ज करना है जो उस तक चल सके और जो मुन्किर हो तो **अल्लाह** सारे जहान से बे परवाह है ।[1]

1.....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "**मस्अला :** इस आयत में ह़ज की फ़र्ज़िय्यत का बयान है और इस का कि इस्तिताअ़त शर्त़ है । ह़दीष शरीफ़ में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस की तफ़्सीर ज़ाद व राह़िला से फ़रमाई । ज़ाद या'नी तोशा, खाने पीने का इन्तिज़ाम इस क़दर होना चाहिये कि जा कर वापस आने तक इस के लिये काफ़ी हो और येह वापसी के वक़्त तक अहलो इ़याल के नफ़क़े के इ़लावा होना चाहिये । राह का अम्न भी ज़रूरी है क्यूंकि बिग़ैर इस के इस्तिताअ़त षाबित नहीं होती । इस (ومن كفر) से **अल्लाह** तआ़ला की नाराज़ी ज़ाहिर होती है और येह मस्अला भी षाबित होता है कि फ़र्ज़े क़त़ई का मुन्किर काफ़िर है ।"

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْھُمَا इरशाद फ़रमाते हैं : "سبیل" का मा'ना येह है कि बदन तन्दुरुस्त हो, ज़ादे राह मौजूद हो और ऐसी सुवारी पर हो जो उस को हलाक न करे।" और "وَمَنْ کَفَر" का मत़लब येह है कि जो ह़ज करने को नेकी न समझे और न करने को गुनाह न जाने।

ह़ज की फ़ज़ीलत :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : "जिस ने ह़ज किया और फ़ुह़्श कलामी न की और फ़िस्क़ न किया तो वोह (गुनाहों से पाक हो कर) ऐसा लौटा जैसे उस दिन कि मां के पेट से पैदा हुवा था।" (صحیح مسلم ،کتاب الحج ، باب فضل الحج ولعمرہ ، الدیث ۱۳۵۰ ، ص ۱۹۰۳)

यौमे अ़रफ़ा जहन्नम से आज़ादी का दिन :

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं, रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "यौमे अ़रफ़ा से ज़ियादा किसी दिन जहन्नमियों को आज़ाद नहीं किया जाता फिर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ क़रीब (या'नी अपनी रह़मत के साथ मुतवज्जेह) होता है और फ़िरिश्तों के सामने अपने बन्दों पर फ़ख़्र करता है और इस्तिफ़्सार फ़रमाता है कि "मेरे बन्दे क्या चाहते हैं ?" फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : "या रब्ब عَزَّ وَجَلَّ ! येह अ़फ़्वो मग़फ़िरत चाहते हैं।" **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "ऐ फ़िरिश्तो ! गवाह हो जाओ ! मैं ने इन सब को बख़्श दिया और इन से दरगुज़र किया।"

(صحیح سلم، کتاب الحج، باب فـل یوم عرفہ، الحدیث۱۳۴۸، ص۹۰۲ـ شعب الایمان للبیھقی، باب فی المناسك، فـل الوقوف بعرفات، الحدیث۴۰۶۸، ج۳، ص ۴۶۰)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उन लोगों को भलाई अ़त़ा फ़रमाता है जिन्हों ने दुन्या में उस की इ़बादत को नफ़्अ़ और ग़नीमत ख़याल किया और जिन्हों ने येह देखा कि नाफ़रमानियों में सरासर वक़्त बरबाद करने से बहुत ज़ियादा नुक़्सान है तो इन को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने अ़रफ़े के दिन अपने क़रीब किया। जिन्हों ने उस की मह़ब्बत की रस्सी को मज़्बूत़ी से थाम लिया तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने इन के गुनाहों से दरगुज़र फ़रमा कर इन की मग़फ़िरत फ़रमा दी और इन के सबब इ़ल्म को फैलाया ताकि वोह सआ़दतमन्द हो जाएं।

फ़ुज़ूल सुवालात से बचो :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें ख़ुत़बा देते हुए इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने तुम पर ह़ज फ़र्ज़ किया है पस तुम ह़ज करो।" एक शख़्स ने अ़र्ज़

की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم क्या हर साल ?” तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाई, उस ने फिर अ़र्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم क्या हर साल ?” तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “नहीं, अगर मैं हां कह देता तो वाजिब हो जाता और अगर (हर साल) वाजिब हो जाता तो तुम इस्तिताअ़त न रखते।”

(صحیح مسلم ،کتاب الحج ، باب فرض الحج مرۃ فی العمر ، الحدیث ۱۳۳۷، ص ۹۰۱)

हज व उमरह इकट्ठा करने की फ़ज़ीलत :

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “हज व उमरह इकठ्ठा करो कि येह मोहताजी और गुनाहों को इस तरह दूर कर देता है जिस तरह भट्टी लोहे के मैल को।” (سنن النسائی،کتاب مناسك الحج ، باب فضل المتا بعہ بین الحج والعمرہ ،الحدیث ۲۶۳۱ ، ص ۲۲۵۸)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गंजीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : “हज और उमरह करने वाले अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का गुरौह हैं, अगर वोह उस से कोई दुआ़ करें तो वोह क़बूल फ़रमाता है और अगर मग़फ़िरत तलब करें तो बख़्श देता है।” (سنن ابن ماجۃ،ابواب المناسك ،باب فضل دعاء الحج ، الحدیث ۲۸۹۲، ص ۲۶۵۲)

दूसरी रिवायत यूं है कि “हज व उमरह करने वाले अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का गुरौह हैं, अगर वोह उस से कोई चीज़ मांगें तो वोह अ़ता फ़रमाता है, और अगर उस से मग़फ़िरत तलब करें तो वोह उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा देता है, अगर वोह उस से दुआ़ करें तो क़बूल फ़रमाता है और अगर सिफ़ारिश करें तो भी क़बूल फ़रमाता है।” (احیاء علوم الدین،کتاب اسرارالحج،الباب الاول،الفصل الاول،فی فضائل الحج،ج۱، ص۳۲۲)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “एक उमरह दूसरे उमरह के माबैन गुनाहों का कफ़्फ़ारा है और हज्जे मबरूर की जज़ा जन्नत ही है।”

(صحیح البخاری ،کتاب العمرہ ، باب وجوب العمرہ وفضلها ،الحدیث ۱۷۷۳، ص ۱۳۹)

हज्जे मबरूर की ता'रीफ़ :

उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی **फ़रमाते हैं** कि हज्जे मबरूर वोह है जिस के बा'द गुनाह न हो, जैसा कि हज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने एक हाजी से फ़रमाया : “ऐ हाजी ! बिलाशुबा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ हाजी के अ़मल पर नूर की मुहर लगा देता है, लिहाज़ा तू इस से बच कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की नाफ़रमानी कर के इस मुहर को तोड़ दे।”

वालिदैन की त़रफ़ से ह़ज करो :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू रज़ीन अक़ीली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गंजीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे वालिद बूढ़े हैं और ह़ज की इस्तित़ाअ़त नहीं रखते।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अपने बाप की त़रफ़ से ह़ज व उ़मरह कर लो।"

(جامع الترمذی ،ابواب الحج ، باب منه ٨٧، الحديث ٩٣٠، ص ١٧٤٠)

ह़ज और उ़मरह औ़रतों का जिहाद है :

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से मरवी है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم क्या औ़रतों पर भी जिहाद फ़र्ज़ है ?" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हां ! उन पर ऐसा जिहाद है जिस में लड़ना नहीं (या'नी) ह़ज व उ़मरह।"

(سنن ابن ماجة، ابواب المناسك ،باب الحج جهاد النساء، الحديث ٢٩٠١ ،ص ٢٦٥٢)

ऐ मेरे मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तुम कैसे ह़ज से पीछे रह जाते हो ह़ालांकि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने तुम पर ह़ज फ़र्ज़ किया है और तुम इस में रग़बत क्यूं नहीं रखते ह़ालांकि येह तुम्हारे लिये रोज़े मह़शर का ज़ख़ीरा है और क्यूंकर इस का एहतिमाम नहीं करते ह़ालांकि मन्क़ूल है कि "सिर्फ़ **एक ह़ज की बरकत से तीन अफ़राद जन्नत में दाख़िल होंगे** : (1)......ह़ज की वसिय्यत करने वाला (2)......वसिय्यत पूरी करने वाला और (3)......मरने वाले की त़रफ़ से ह़ज करने वाला।"

इ़ल्मे ग़ैबे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से मरवी है कि एक अन्सारी ने सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! चन्द अश्या के मुतअ़ल्लिक़ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछने के लिये ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा हूं।" आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बैठ जाओ।" थोड़ी देर में क़बीला षक़ीफ़ से भी एक शख़्स ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! चन्द अश्या के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल करना चाहता हूं।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अन्सारी तुझ पर सबक़त ले गया है।" तो उस अन्सारी ने अ़र्ज़ की : "येह शख़्स मुसाफ़िर है और मुसाफ़िर ज़ियादा ह़क़दार है। आप इसी से इब्तिदा कीजिये।" आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم षक़फ़ी

की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए और इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम चाहो तो मैं ही तुम्हें बता दूं कि क्या पूछने आए हो और अगर चाहो तो तुम्हीं सुवाल करो मैं जवाब देता हूं।" उस ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं जो पूछने आया हूं आप खुद ही फ़रमा दीजिये क्यूंकि येह ज़ियादा ह़ैरान कुन है।" आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम मुझ से रुकूअ़ व सुजूद और नमाज़ रोज़े के मुतअ़ल्लिक़ पूछने आए हो।" तो उस ने अ़र्ज़ की : "उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को ह़क़ के साथ भेजा ! आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने **वोह बताने में कुछ भी ख़त़ा न की जो मेरे दिल में था।"** फिर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम रुकूअ़ करो तो हथेलियों को घुटनों पर रख कर उंगलियों को कुशादा करो फिर इतना ठहरो कि हर उ़ज़्व अपनी जगह क़रार पकड़ ले। सजदा करने वक़्त पेशानी को अच्छी त़रह़ जमाओ और चोंच न मारो और दिन के अव्वलो आख़िर में नमाज़ अदा करो।" अ़र्ज़ की : "या नबिय्यल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! अगर मैं उन के दरमियान (वक़्त) पाउं ?" तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तो उस वक़्त नमाज़ पढ़ लो और हर महीने की तेरह, चौदह और पन्दरह तारीख़ का रोज़ा रखो। रात के पहले ह़िस्से में आराम, दरमियाने में क़ियाम और आख़िरी में फिर सो जाओ,अगर तुम दरमियान से आख़िर तक जागते रहो तो भी नमाज़ पढ़ते रहो।" वोह षक़फ़ी उठ खड़ा हुवा।

फिर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अन्सारी की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए और उसे भी इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम चाहो तो मैं ही तुम्हें बता दूं कि क्या पूछने आए हो और अगर चाहो तो तुम्ही सुवाल करो मैं जवाब देता हूं।" उस ने अ़र्ज़ की : "या नबिय्यल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं जो पूछने आया हूं आप खुद ही फ़रमा दीजिये।" तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम येह पूछने आए हो कि ह़ाजी के लिये क्या अज्रो षवाब है जब वोह घर से निकले ? वुक़ूफ़े अ़रफ़ा का षवाब क्या है ? रमिये जिमार करने (या'नी शैत़ान को कंकरियां मारने) का अज्र क्या है ? सर का ह़ल्क़ करवाने का अज्र क्या है ? और आख़िरी त़वाफ़ करने का क्या षवाब मिलेगा ?" तो उस ने अ़र्ज़ की : "क़सम उस ज़ात की जिस ने आप को ह़क़ के साथ मबऊ़ष फ़रमाया ! आप ने मेरे दिल की बात बताने में कुछ ख़त़ा न की।" फिर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब ह़ाजी घर से निकलता है तो उस के हर क़दम के इ़वज़ एक ह़सना (नेकी) लिख दी जाती और गुनाह मिटा दिया जाता है। वुक़ूफ़े अ़रफ़ा के वक़्त **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ आस्माने दुन्या पर ख़ास तजल्ली फ़रमा कर इरशाद फ़रमाता है : "मेरे ग़ुबार आलूद और परागन्दा सर बन्दों को देखो ! गवाह हो जाओ कि मैं ने उन के गुनाहों को बख़्श दिया अगर्चे बारिश के क़त़रों और रैत के ज़र्रों के बराबर हों।" और जब वोह जमरों पर कंकरियां मारता है तो कोई नहीं जानता कि उस का क्या अज्र है ? यहां तक कि रोज़े क़ियामत उस को पूरा बदला दिया जाएगा और जब आख़िरी त़वाफ़ करता है तो वोह गुनाहों से ऐसा पाक हो जाता है जैसे उस दिन कि उस की मां ने उसे जना था।"

(الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان ، كتاب الصلاة ، باب صفة الصلاة،الحديث ١٨٨٤،ج٣،ص ١٨١)

येही ह़दीष ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इन अल्फ़ाज़ में मरवी है कि एक अन्सारी हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में कुछ पूछने के लिये ह़ाज़िर हुवा, इसी अष्ना में एक षक़फ़ी भी इस ग़रज़ से ह़ाज़िर हुवा, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ षक़फ़ी भाई ! अन्सारी तुझ से सबक़त ले गया है लिहाज़ा तुम बैठ जाओ, हम पहले अन्सारी की ह़ाजत से इब्तिदा करेंगे।" उस षक़फ़ी का चेहरा मुतग़य्यिर हो गया तो अन्सारी ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पहले इस षक़फ़ी की ह़ाजत पूछ लीजिये क्यूंकि मैं इस के चेहरे को बदलता हुवा देख रहा हूं, मुझे ख़ौफ़ है कि कहीं येह आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ ऐसी बात न कह दे जो मुझे नागवार गुज़रे।" सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर दगार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस अन्सारी के लिये भलाई की दुआ़ फ़रमाई। फिर इरशाद फ़रमाया : "ऐ षक़फ़ी भाई ! तुम सुवाल करो जो चाहो और अगर चाहो तो मैं तुम्हारा सुवाल बता कर उस का जवाब दूं।" उस ने अ़र्ज़ की : "मुझे येह बात ज़ियादा पसन्द है कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم खुद ही इरशाद फ़रमा दें।" चुनान्चे आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम येह पूछने आए हो कि तुम किस माह रोज़े रखो ? किस रात क़ियाम करो ? रुकूअ़ किस त़रह़ करो ? और सजदे में तुम्हारी ह़ालत कैसी हो ?" उस ने अ़र्ज़ की : "उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ मबऊ़ष फ़रमाया ! मैं इन्हीं चीज़ों के मुतअ़ल्लिक़ पूछना चाहता हूं।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हर महीने की तेरह, चौदह और पन्दरह तारीख़ का रोज़ा रखो। रात के पहले और तीसरे हि़स्से में आराम और दूसरे हि़स्से में क़ियाम करो और अगर दूसरे से आख़िर रात तक तुम बेदार रहो तो भी नमाज़ पढ़ सकते हो। रुकूअ़ के वक़्त हाथों को घुटनों पर रख कर उंगलियां कुशादा रखो। सजदे के वक़्त पेशानी को ज़मीन पर जमा कर रखो और ठोंगें न मारो।"

फिर इरशाद फ़रमाया : "ऐ अन्सारी ! अब तुम सुवाल करो और अगर चाहो तो मैं खुद तुम्हारा सुवाल बता कर जवाब दूं।" तो उस ने भी अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم खुद ही बता दीजिये जिस त़रह़ मेरे रफ़ीक़ को बताया है, मुझे भी येही पसन्द है।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम घर से मस्जिदे ह़राम के इरादे से निकलने का अज्र पूछने आए हो और वुक़ूफ़े अ़रफ़ा, रमिये जिमार, सर मुन्डवाने और त़वाफ़ वग़ैरा का अज्रो षवाब पूछना चाहते हो।" अन्सारी सह़ाबी ने भी इसी त़रह़ अ़र्ज़ की : "उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ मबऊ़ष फ़रमाया ! मैं इन्हीं चीज़ों के बारे में पूछना चाहता था।" फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम्हारे मस्जिदे ह़राम के लिये घर से निकलने पर हर क़दम पर एक ह़सना (नेकी) लिखी जाएगी, एक गुनाह मिटा दिया जाएगा और एक दर्जा बुलन्द कर दिया जाएगा और तेरा त़वाफ़ की दो रकअ़तें पढ़ना गुलाम आज़ाद करने के बराबर है, और सफ़ा व मरवह के दरमियान सअ़्य सत्तर गुलाम

आज़ाद करने की त़रह़ है और तेरा अ़रफ़ात में ठहरने की फ़ज़ीलत येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अहले अ़रफ़ात पर ख़ास तजल्ली फ़रमाता और इरशाद फ़रमाता है : "मेरे बन्दे दूर दूर से परागन्दा सर और गुबार आलूद मेरी बारगाह में ह़ाज़िर हुए हैं।" पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने फ़िरिश्तों के सामने उन पर फ़ख़्र फ़रमाता और इरशाद फ़रमाता है : "अगर्चे तुम्हारे गुनाह रैत के ज़र्रों, आस्मान के सितारों, समन्दर और बारिश के क़त़रों के बराबर भी हों तब भी मैं इन्हें बख़्श दूंगा।" और रमिये जिमार तेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ के हां तेरे लिये ज़ख़ीरा है जिस की तुझे सब से ज़ियादा बरोज़े क़ियामत ह़ाजत होगी। सर का ह़ल्क़ करवाने में हर बाल के इवज़ क़ियामत के दिन नूर होगा। और इस के बा'द तू त़वाफ़े सदर (या'नी त़वाफ़े ज़ियारत जो अ़रफ़ात से वापसी के बा'द किया जाता है) इस ह़ाल में करेगा कि तुझ पर कोई गुनाह बाक़ी न होगा और एक फ़िरिश्ता आ कर अपना हाथ तेरे कन्धों के दरमियान रख देगा फिर कहेगा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरे गुज़श्ता गुनाहों को बख़्श दिया है पस आयन्दा दिनों में अच्छे आ'माल कर और वापस लौट जा क्यूंकि तुझे भी बख़्श दिया गया और उसे भी बख़्श दिया जाएगा जिस की तू शफ़ाअ़त करेगा।"

(المعجم الکبیر، الحدیث ١٣٥٦٦، ج١٢،ص٣٢٥۔الترغیب والترھیب،کتاب الحج،باب الترغیب فی الحج و العمرۃ، الحدیث ١٧١٧، ج٢، ص٧٨۔مجمع الزوائد،کتاب الحج،باب فضل الحج، الحدیث ٥٦٥٠، ج٣، ص ٦٠١)

ह़ज के दो ह़ुरूफ़ से मुराद :

ह़ज़रते सय्यिदुना शिब्ली رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज के दो ह़ुरूफ़ हैं : पहला ح और दूसरा ج। ح से मुराद ह़िल्म और ج से मुराद जुर्म है। इस से मुराद येह है कि गोया बन्दा कहता है : "ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ! मैं तेरे ह़िल्म और तेरी रह़मत की उम्मीद ले कर तेरी बारगाह में अपने जुर्म के साथ ह़ाज़िर हूं अगर तू भी मेरे जुर्म न बख़्शेगा तो कौन बख़्शेगा ?"

मेरे मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर मुसाफ़िर ह़ाजी नहीं, हर पहाड़ का नाम अ़रफ़ात नहीं, हर बैत का नाम बैतुल्लाह नहीं और न ही हर ज़ादे राह मन्ज़िल तक पहुंचाने वाला है। मह़बूबाने बारगाह पुख़्ता इरादे की रात में चले और तुम सोए रहे। उन्हों ने अपने मुआ़मलात में नफ़्अ़ पाया मगर तुम ने कुछ ह़ासिल न किया। अगर तुम इस की फ़िक्र करते जो तुम ने ज़ाएअ़ कर दिया तो ज़रूर नादिम होते। ऐ लोगों से पीछे रह जाने वालो ! अगर तुम ने अपने भाइयों को पा लेने की तय्यारी न की तो अपनी मह़रूमी और बदबख़्ती पर मेरे साथ मिल कर आंसू बहाओ।

किन लोगों की दुआ़ रद्द नहीं होती ?

मन्क़ूल है कि "तीन क़िस्म के लोगों की दुआ़ रद्द नहीं होती : (1)......रोज़ादार यहां तक कि इफ़्त़ार करे (سنن ابن ماجۃ، ابواب الصیام،باب فی الصائم لا ترد دعوتہ ، الحدیث١٧٥٢،ص٢٥٨١) (2)......मरीज़ यहां तक कि तन्दुरुस्त हो जाए और (3)......ह़ाजी यहां तक कि वापस आ जाए।

(شعب الایمان للبیھقی، باب فی الرجاء من اللہ،الحدیث ١١٢٥،ج٢،ص٤٦)

नेकियां कमाने और गुनाह धोने का नुस्ख़ा :

मन्कूल है कि जो अच्छी त़रह़ वुज़ू करे फिर रुक्ने यमानी के पास आए और बोसा दे कर कहे : "بِسْمِ اللهِ وَاللهُ اَكْبَرُ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ तो रह़मत उसे ढांप लेती है और जब वोह बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये हर क़दम के इ़वज़ सत्तर हज़ार नेकियां लिखता और सत्तर हज़ार गुनाह मिटा देता है।"

(الترغیب والترھیب، کتاب الحج، باب الترغیب فی الطواف ......الخ، الحدیث ۱۷۷۳، ج۲، ص۹۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान किये गए फ़वाइदो मनाफ़ेअ़ को ग़नीमत जानो। जिस ने मेह़नत व कोशिश की उस ने पा लिया। बेदार शख़्स सोने वाले की त़रह़ नहीं और इन फ़ज़ाइलो फ़वाइद को पाने के लिये शेर की त़रह़ चोकन्ना होना ज़रूरी है। जिस ने ज़िक्र का चराग़ रोशन किया उस के सामने रास्ते के निशानात ज़ाहिर हो गए और जो शौक़ के जंगल में परदेसी बन गया उस के लिये मकानात ज़ाहिर हो गए।

अफ़्आ़ले ह़ज की ह़िक्मतें :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھُمَا से अफ़्आ़ले ह़ज की ह़िक्मतों और मनासिके ह़ज के बारीक मआ़नी के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : "अफ़्आ़ले ह़ज और लवाज़िमे ह़ज में से हर एक में ह़िक्मते बालिग़ा, ने'मते कामिला और कई राज़ हैं जिन की ता'रीफ़ करने से हर ज़बान आ़जिज़ है।

एह़राम के वक़्त (सिला हुवा) **लिबास न पहनने की ह़िक्मत येह है** कि लोगों की आ़दत है कि जब मख़्लूक़ के पास जाते हैं तो उ़म्दा और फ़ख़्रिया लिबास ज़ेबेतन कर लेते हैं गोया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "मेरी बारगाह में ह़ाज़िरी का इरादा मख़्लूक़ के पास जाने के इरादे के ख़िलाफ़ हो ताकि मैं उन के लिये अज्रो षवाब बढ़ा दूं और इस में एक ह़िक्मत येह भी है कि बन्दा एह़राम के वक़्त कपड़ों की कमी से मौत के वक़्त दुन्या से रुख़्सती की ह़ालत को याद करे जैसा कि पहले दिन था जब मां के पेट से बरह्ना पैदा हुवा था। और इस ह़ालत में ह़िसाब के दिन बरह्ना खड़ा होने से मुशाबहत भी है (और येह कोई ज़ुल्म नहीं) चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿1﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا یَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ (پ ۵، النسآء: ۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह एक ज़र्रा भर ज़ुल्म नहीं फ़रमाता।

﴾2﴿ وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ (پ ٧،الانعام:٩٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और बेशक तुम हमारे पास अकेले आए जैसा हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था।*

एह्राम के वक़्त (या'नी बांधने से पहले) ग़ुस्ल करने की हिक्मत बिल्कुल ज़ाहिर और वाज़ेह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहता है कि हुज्जाज को मलाइका पर ज़ाहिर करे ताकि इन के सबब फ़ख़्र करे, लिहाज़ा हुज्जाज मलाइकए किराम के सामने गुनाहों और मैल कुचैल से पाको साफ़ कर के पेश किये जाते हैं। इस में दूसरी हिक्मत येह है कि हुज्जाज अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के क़दमों की जगह अपने क़दम रखते हैं तो इस से पहले ग़ुस्ल कर लेते हैं ताकि इन आषार की बरकात हासिल कर लें। जैसा कि,

असदक़ुस्सादिक़ीन (या'नी सब से ज़ियादा सच्चा) रब्ब عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴾3﴿ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ۝ (پ ٢،البقرة:٢٢٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक **अल्लाह** पसन्द रखता है बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को।*

तल्बिय्या कहने में हिक्मत :

तल्बिय्या कहने में हिक्मत येह है कि एक इन्सान को जब कोई मुअ़ज़्ज़ज़ इन्सान बुलाता है तो वोह उस को लब्बैक और अच्छे कलाम से जवाब देता है। लिहाज़ा उस शख़्स का जवाब क्या होना चाहिये जिस को ख़ुद मलिकुल अ़ल्लाम عَزَّوَجَلَّ पुकारे और उसे अपनी जानिब बुलाए ताकि उस के गुनाह और बुराइयां मिटा दे। जब बन्दा लब्बैक कहता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : ''हां ! मैं तेरे क़रीब हूं और तुझ पर तजल्ली फ़रमाने वाला हूं, पस तू जो चाहता है मांग ले, मैं तेरी शह रग से भी ज़ियादा क़रीब हूं।''

क़ियामे अ़रफ़ात में हिक्मत :

मुज़्दलिफ़ा से कंकरियां लेने और अ़रफ़ा में ठहरने में हिक्मत येह है कि इस में साहिबे इल्मो मा'रिफ़त के लिये पोशीदा बातें हैं। इस का मत़लब येह है कि गोया बन्दा अ़र्ज़ करताहै : मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ मैं ने गुनाहों और ख़त़ाओं की कंकरियां उठाईं और तेरे हुक्म पर अ़मल करते हुए जमरों को कंकरियां मारीं। बेशक तू करम व बख़्शिश वाला है।

मश्अ़रे ह़राम के पास ज़िक्र की हिक्मत और अज्रे अ़ज़ीम के मुतअ़ल्लिक़ गोया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमा रहा है : ''तुम मेरी याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करूंगा, जो मुझे अकेला याद करे मैं भी उसे अकेला याद करता हूं और जो मुझे किसी इजतिमाअ़ में याद करे तो मैं उसे उस से बेहतर इजतिमाअ़ में याद करता हूं। पस जब तुम मश्अ़रे ह़राम के पास मुझे याद करते हो तो मैं तुम्हें मुअ़ज़्ज़ज़ फ़िरिश्तों में याद करता हूं और तुम्हारे लिये इन्तिक़ाम के बदले अमान की मुहर लगा देता हूं।''

मिना में सर मुन्डवाने में ऐसी हिक्मत है जिस से बन्दे की तमाम उम्मीदें पूरी होती हैं। इस की वजह येह है कि इस में बेदारी और नसीहत है जिसे सिर्फ़ आलिम ही समझ सकता है, क्यूंकि हाजी जब अरफ़े में ठहरता है, मश्अ़रे ह़राम के पास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता, मिना में कुरबानी कर के ह़ल्क़ करवाता और अपने बदन को मैल कुचेल और गुनाहों से पाको साफ़ करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये षवाब लिख देता, दर्जे बढ़ा देता और जहन्नम से पनाह दे देता है और बरोज़े क़ियामत उस के हर बाल के इवज़ एक नूर बनाएगा और उसे अम्न का परवाना अ़ता फ़रमाएगा। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

﴾4﴿ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ لا لَا تَخَافُوْنَ ط (پ۲۶، الفتح: ۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अपने सरों के बाल मुन्डवाते या तरशवाते बे ख़ौफ़।*

त़वाफ़ में कई हिक्मतें और लत़ीफ़ इशारे हैं, बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ करने वाला गिड़गिड़ाते और दुआ़ करते वक़्त ज़बाने ह़ाल से कहता है : "ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! तू ही मक़्सूद है, तू ही मर्तबए कमाल तक पहुंचाने वाला मा'बूदे ह़क़ीक़ी है। मैं तमाम लोगों के साथ तेरी बारगाह में ह़ाज़िर हुवा, तेरे घर का त़वाफ़ किया और तेरी रह़मत के दरवाज़े पर जूदो करम की उम्मीद लिये खड़ा हूं और तू खुद अपने ख़लील ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अपनी ला रैब किताब में फ़रमा चुका है :

﴾5﴿ وَطَهِّرْ بَيْتِىَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْقَآئِمِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ O (پ۱۷، الحج:۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और मेरा घर सुथरा रख त़वाफ़ वालों और ए'तिकाफ़ वालों और रुकूअ़ सजदे वालों के लिये।*

वुक़ूफ़े अ़रफ़ात में हिक्मत और अनोखे मआ़नी हैं, बिलाशुबा इस में बन्दे के लिये तम्बीह है और येह कि बन्दे बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में नंगे पाउं, नंगे बदन और बरह्ना सर ह़सरतो नदामत के क़दमों पर खड़े होंगे, गिर्या व ज़ारी करते होंगे और अपने मौला عَزَّوَجَلَّ से इस त़रह़ दुआ़ करते होंगे जिस त़रह़ एक ज़लील ग़ुलाम दुआ़ करता है।

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन लोगों को देखो जिन्हें उन के मौला عَزَّوَجَلَّ ने अपने घर की त़रफ़ बुलाया तो उन्हों ने वजदो शोक़ के आ़लम में उस की दा'वत पर लब्बैक कहा और तस्दीक़ के क़दमों पर उस की त़रफ़ पैदल चल पड़े, और हर दुबली ऊंटनी पर दूर दूर से ह़ाज़िर हो गए।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन मुवफ़्फ़क़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने बैतुल्लाह का ह़ज किया का'बा मुशर्रफ़ा के गिर्द सात चक्कर लगाए, ह़ज्रे अस्वद को बोसा दिया, दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी, का'बा की दीवार के साथ टेक लगाई और रोते हुए अ़र्ज़ की : "मैं ने इस बैतुल्लाह के कितने चक्कर लगाए लेकिन मा'लूम नहीं कि क़बूल हुए या नहीं।" फिर मुझ पर हल्की सी नींद ग़ालिब आ गई। मैं सोने और जागने की दरमियानी ह़ालत में था कि मैं ने एक ग़ैबी आवाज़ सुनी :

"ऐ अ़ली बिन मुवफ़्फ़क़ ! हम ने तेरी बात सुन ली है। क्या तू अपने घर में उसी को नहीं बुलाता जिस से तू मह़ब्बत करता है।"

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना बक्र और ह़ज़रते सय्यिदुना मुत़र्रफ़ رَحْمَةُ اللهِ تعالٰى عَلَيْهِمَا ने अ़रफ़ात में वुक़ूफ़ किया। जब ह़ाजियों ने गिर्या व ज़ारी और चीख़ो पुकार शुरूअ़ की तो ह़ज़रते सय्यिदुना बक्र رَحْمَةُ اللهِ تعالٰى عَلَيْه रो रो कर कहने लगे : "येह कितना बड़ा मर्तबा है, ऐ काश ! मैं इन लोगों में से होता।" और ह़ज़रते सय्यिदुना मुत़र्रफ़ رَحْمَةُ اللهِ تعالٰى عَلَيْه ने इस ह़ाल में अ़र्ज़ की, कि आप के चेहरे का रंग मुतग़य्यिर हो चुका था : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी (नाफ़रमानियों की) वजह से इन को मरदूद न करना।

वुक़ूफ़े अ़रफ़ात करने वालों की मग़फ़िरत हो गई :

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुन्कदिर رَحْمَةُ اللهِ تعالٰى عَلَيْه से मरवी है कि उन्हों ने तैंतीस (33) ह़ज किये जब आख़िरी ह़ज किया तो अ़रफ़ात के मक़ाम पर अ़र्ज़ की : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू जानता है कि मैं ने अ़रफ़ात में तैंतीस (33) बार वुक़ूफ़ किया। एक मरतबा अपनी त़रफ़ से, एक मरतबा अपने बाप की त़रफ़ से और एक मरतबा अपनी मां की त़रफ़ से, या रब्ब عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझे गवाह बनाता हूं कि मैं ने बाक़ी तीस उस शख़्स को हिबा कर दिये जो यहां अ़रफ़ात में ठहरा लेकिन उस का वुक़ूफ़े अ़रफ़ात क़बूल न किया गया।" जब आप رَحْمَةُ اللهِ تعالٰى عَلَيْه अ़रफ़ात से मुज़्दलिफ़ा पहुंचे तो ख़्वाब में निदा दी गई : "ऐ इब्ने मुन्कदिर ! क्या तू उस पर करम करता है जिस ने करम को पैदा किया ? क्या तू उस पर सख़ावत करता है जिस ने सख़ावत को पैदा किया ? ह़ालांकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तो तुझ से फ़रमाता है : "मुझे अपनी इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम ! मैं ने वुक़ूफ़े अ़रफ़ात करने वालों को अ़रफ़ात पैदा करने से दो हज़ार साल पहले ही बख़्श दिया था।

छे के सदके़ छे लाख का ह़ज क़बूल कर लिया गया :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन मुवफ़्फ़क़ رَحْمَةُ اللهِ تعالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि एक साल फ़रीज़ए ह़ज अदा करने के बा'द मैं मस्जिदे ख़ैफ़ व मिना के दरमियान सो गया। मैं ने आस्मान से उतरते दो फ़िरिश्ते देखे, एक ने दूसरे से कहा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! क्या तू जानता है कि इस साल कितने लोगों ने बैतुल्लाह शरीफ़ का ह़ज किया ? तो उस ने कहा : "नहीं।" फिर पहले ने ख़ुद ही बताया : "छे लाख अफ़राद ने।" फिर उस ने पूछा : "क्या तू जानता है कि कितने अफ़राद का ह़ज क़बूल हुवा ?" उस ने जवाब दिया : "नहीं।" तो उस ने बताया कि इस बार सिर्फ़ छे अफ़राद का ह़ज क़बूल हुवा है। फिर वोह दोनों फ़ज़ा में परवाज़ कर गए। मैं बेदार हुवा इस ह़ाल में कि मैं डर रहा था। मैं ने कहा : "हाए अफ़्सोस ! मैं उन छे में से कहां होऊंगा ?" जब मैं ने अ़रफ़ात में वुक़ूफ़ किया और मुज़्दलिफ़ा में रात गुज़ारी तो इन्हीं दोनों फ़िरिश्तों को देखा कि वोह ह़स्बे आ़दत आस्मान से नाज़िल हुए। एक ने दूसरे को सलाम किया और कहा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! क्या तू

जानता है कि तेरे रब्ब ने इस रात क्या फ़ैसला फ़रमाया ?" उस ने कहा : "नहीं" तो पहले ने बताया कि अल्लाह तआ़ला ने उन छे मक़्बूलीन में से हर एक की वजह से एक एक लाख को बख़्श दिया और तमाम का ह़ज क़बूल फ़रमा लिया है। फिर मैं बेदार हो गया और मुझे इतनी खुशी थी कि जिस को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं जानता, क्यूंकि तमाम हुज्जाज का ह़ज क़बूल फ़रमा लिया गया और जूदो करम से नवाज़ा गया और किसी को बदबख़्त व मह़रूम न किया गया।

एक मह़बूब बन्दी के तुफ़ैल सब का ह़ज क़बूल हो गया :

ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ अ़दविय्या رحمۃاللہ تعالی علیها ने नंगे पाउं पैदल बैतुल्लाह शरीफ़ का ह़ज किया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन को जो भी खाना अ़ता फ़रमाता उस को ईषार कर देतीं। का'बा मुशर्रफ़ा पहुंचते ही बेहोश हो कर गिर पड़ीं। होश में आने के बा'द अपने रुख़्सार को बैतुल्लाह शरीफ़ पर रख कर अ़र्ज़ की : "येह तेरे बन्दों की पनाहगाह है और तू इन से मह़ब्बत करता है अब तो आंखों में आंसू ख़त्म हो गए हैं।" फिर त़वाफ़ किया, सअ़्य करने के बा'द जब वुक़ूफ़े अ़रफ़ा का इरादा किया तो ह़ाइज़ा हो गईं। रोते हुए अ़र्ज़ गुज़ार हुईं : "ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! अगर येह मुआ़मला तेरे ग़ैर की त़रफ़ से होता तो मैं ज़रूर तेरी बारगाह में शिकायत करती अब जब कि येह सब कुछ तेरी मशिय्यत से हुवा है तो अब कैसे शिकायत कर सकती हूं ?" पस उन्हों ने हातिफ़े ग़ैबी को येह कहते सुना : "ऐ राबिआ़ ! हम ने तेरे सबब तमाम ह़ाजियों का ह़ज क़बूल कर लिया और तेरी इस कमी की वजह से उन के नक़ाइस भी पूरे कर दिये।"

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَبَارِکْ وَسَلِّمْ

मिस्वाक की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइषे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है : اَلسِّوَاکُ مَطْھَرَۃٌ لِلْفَمِ مَرْضَاۃٌ لِلرَّبِّ या'नी "मिस्वाक मुंह की पाकीज़गी और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की खुशनूदी का सबब है।"

(سنن ابن ماجه،ابواب الطَّهارَةِ وَسُنَنِها،باب السِّوَاكِ،الحديث:٢٨٩،ص٢٤٩٥)

बयान 9 :

ख़ानए का'बा की शानें

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **हम सब को उन लोगों में शामिल फ़रमा दे जो इस साल ह़जे बैतुल्लाह और ज़ियारते रौज़ए अक़्दस** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **की सआदत से बहरामन्द हों । (आमीन)**

ह़म्दे बारी तआ़ला :

सब ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने अ़क़्लों की अपनी तौह़ीद की त़रफ़ रहनुमाई फ़रमाई और उन्हें हिदायत दी और अपनी तौह़ीद को सलामती के सफ़ीने में नजात का सबब बनाया पस **अल्लाह** तआ़ला को यक्ता मानने वाला कहता है : "उस (सलामती की) कश्ती का चलना और ठहरना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से है ।" पस वोह अपने मह़बूब तक पहुंच गई और मक़्सूद को पाने में कामयाब हो गई और उस ज़ाते इलाही عَزَّوَجَلَّ के मुशाहदों के समन्दर में तैरने लगी पस जब उस ज़ात ने उसे निदा दी तो वोह उस की लज़्ज़त में मुन्हमिक हो गई ।

पाक है वोह ज़ात जिस ने का'बा मुशर्रफ़ा को शानो शौकत अ़त़ा फ़रमाई और उसे अपनी अ़ज़मत और जलाल के साथ ख़ास किया और उसे दाख़िल होने वालों के लिये अम्न वाला घर बना दिया । और येह वोही मुबारक घर है जिस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हिजरत फ़रमाई मगर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे छोड़ा, न उस से तअ़ल्लुक़ तोड़ा और न ही आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का दिल इस से हट कर दूसरे क़िब्ले की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर येह आयाते मुबारका नाज़िल फ़रमाईं जिन्हें आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सुना और तिलावत फ़रमाया :

قَدْ نَرٰی تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِی السَّمَآءِ فَلَنُوَلِّیَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰهَا ص (پ۲،البقرة:۱۴۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *हम देख रहे हैं बार बार तुम्हारा आस्मान की त़रफ़ मुंह करना तो ज़रूर हम तुम्हें फेर देंगे उस क़िब्ले की त़रफ़ जिस में तुम्हारी ख़ुशी है ।* (1)

और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बैतुल्लाह शरीफ़ की अ़ज़मतो शान यूं बयान फ़रमाता है :

"اِنَّ اَوَّلَ بَیْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِیْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًی لِّلْعٰلَمِیْنَ ۝ فِیْهِ اٰیٰتٌۢ بَیِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِیْمَ ج وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ط وَلِلّٰهِ عَلَی النَّاسِ حِجُّ الْبَیْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَیْهِ سَبِیْلًا ط وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِیٌّ عَنِ الْعٰلَمِیْنَ ۝ (پ۴،ال عمران:۹۶-۹۷)

---

(1)......मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "**शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को का'बा का क़िब्ला बनाया जाना पसन्दे ख़ात़िर था और हुज़ूर इस उम्मीद में आस्मान की त़रफ़ नज़र फ़रमाते थे, इस पर येह आयत नाज़िल हुई । आप صَلَّى اللّٰه عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ ही में का'बा की त़रफ़ फिर गए, मुसलमानों ने भी आप صَلَّى اللّٰه عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ इसी त़रफ़ रुख़ किया । **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला को आप صَلَّى اللّٰه عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा मन्ज़ूर है और आप صَلَّى اللّٰه عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ही की ख़ात़िर का'बा को क़िब्ला बनाया गया ।"

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक सब में पहला घर जो लोगों की इबादत को मुक़र्रर हुवा वोह है जो मक्का में है बरकत वाला और सारे जहान का राहनुमा। इस में खुली निशानियां हैं, इब्राहीम के खड़े होने की जगह और जो इस में आए अमान में हो और अल्लाह के लिये लोगों पर इस घर का हज करना है जो उस तक चल सके और जो मुन्किर हो तो अल्लाह सारे जहान से बे परवाह है। (1)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "इस आयते मुबारका में "बैत" से मुराद का'बातुल्लाह शरीफ़ है। जिस को अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने बैतुल मा'मूर की सीध में ज़मीन में रखा। जैसा कि मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को जन्नत से (ज़मीन पर) उतारा गया और आप عَلَیْہِ السَّلَام ने हज्जे बैतुल्लाह फ़रमाया फिर फ़िरिश्तों से मुलाक़ात हुई तो उन्हों ने अर्ज़ की : "ऐ आदम عَلَیْہِ السَّلَام ! आप का हज क़बूल हो गया। और हम ने आप से दो हज़ार साल पहले बैतुल्लाह शरीफ़ का हज किया था। आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उन से दर्याफ़्त फ़रमाया : "तुम हज में क्या पढ़ते थे ?" उन्हों ने अर्ज़ की : "हम سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَر पढ़ा करते थे।" फिर हज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام भी तवाफ़ में येही पढ़ते और अल्लाह तआला की बारगाह में अर्ज़ करते : "ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ! मेरी अवलाद में इस घर को ता'मीर करने वाला बना। तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने वह्य फ़रमाई कि "मैं अपना घर तेरी अवलाद में से अपने ख़लील (हज़रते) इब्राहीम (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) से बनवाऊंगा। मैं उस के हाथों इस की ता'मीर का फ़ैसला कर चुका हूं।" जब हज़रते सय्यिदुना नूह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के अ़हद में तूफ़ान आया तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने बैतुल्लाह शरीफ़ को चौथे आस्मान पर उठा लिया, वोह सब्ज़ ज़ुमुर्रद का था और उस में जन्नत के चराग़ों में से एक चराग़ था।

1.....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی **तफ्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : **शाने नुज़ूल :** यहूद ने मुसलमानों से कहा था कि बैतुल मुक़द्दस हमारा क़िब्ला है, का'बा से अफ़्ज़ल और उस से पहला है। अम्बिया का मक़ामे हिजरत व क़िब्लए इबादत है। मुसलमानों ने कहा कि का'बा अफ़्ज़ल है। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इस में बताया गया कि सब से पहला इमकान जिस को अल्लाह तआला ने ताअ़तो इबादत के लिये मुक़र्रर किया, नमाज़ का क़िब्ला, हज और तवाफ़ का मौज़ेअ़ बनाया जिस में नेकियों के षवाब ज़ियादा होते हैं, वोह का'बए मुअ़ज़्ज़मा है जो शहरे मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में वाक़ेअ़ है। हदीष शरीफ़ में है कि का'बए मुअ़ज़्ज़मा बैतुल मुक़द्दस से चालीस साल क़ब्ल बनाया गया। (उस में ऐसी निशानियां हैं) जो उस की हुर्मतो फ़ज़ीलत पर दलालत करती हैं। इन निशानियों में से बा'ज़ येह है कि परन्दे का'बा शरीफ़ के ऊपर नहीं बैठते और उस के ऊपर से परवाज़ नहीं करते बल्कि परवाज़ करते हुए आते हैं तो इधर उधर हट जाते हैं और जो परन्द बीमार हो जाते हैं वोह अपना इलाज येही करते हैं कि हवाए का'बा में हो कर गुज़र जाएं, उसी से उन्हें शिफ़ा होती है। और वुहूश एक दुसरे को हरम में ईज़ा नहीं देते हत्ता कि कुत्ते उस सर ज़मीन में हरन पर नहीं दोड़ते और वहां शिकार नहीं करते और लोगों के दिल का'बए मुअ़ज़्ज़मा की तरफ़ खिंचते हैं और उस की तरफ़ नज़र करने से आंसू जारी होते हैं और हर शबे जुमुआ़ को अरवाहे औलिया उस के गिर्द हाज़िर होती हैं और जो कोई उस की बेहुर्मती का क़स्द करता है बरबाद हो जाता है। इन्हीं आयात में से मक़ामे इब्राहीम वग़ैरा वोह चीज़ें हैं जिन का आयत में बयान फ़रमाया गया। और मक़ामे इब्राहीम वोह पथ्थर है जिस पर हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام का'बा शरीफ़ की ता'मीर के वक़्त खड़े होते थे और उस में आप के क़दम मुबारक के निशान थे जो बा वुजूद तवील ज़माना गुज़रने और ब कषरत हाथों से मस होने के अभी तक कुछ बाक़ी हैं। यहां तक कि अगर कोई शख़्स क़त्लो जिनायत कर के हरम में दाख़िल हो तो वहां न उस को क़त्ल किया जाए, न उस पर हद क़ाइम की जाए। हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि अगर मैं अपने वालिद ख़त्ताब के क़ातिल को भी हरम शरीफ़ में पाऊं तो उस को हाथ न लगाऊं यहां तक कि वोह वहां से बाहर आए।"

हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **हजरे अस्वद** को उठा कर **जबले अबू कुबैस** में छोड़ आए ताकि ग़र्क़ होने से महफ़ूज़ हो जाए। हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ज़माने तक बैतुल्लाह की जगह ख़ाली रही। जब आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के हां हज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और हज़रते सय्यिदुना इस्हाक़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पैदा हुए तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को बैतुल्लाह शरीफ़ की बुन्याद रखने का हुक्म दिया। आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : "**या अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! मुझे इस की निशानी बयान फ़रमा दे।" तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने बैतुल्लाह शरीफ़ की मिक़्दार एक बादल भेजा जो आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के साथ साथ चलता रहा यहां तक कि आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا पहुंचे तो बैतुल्लाह शरीफ़ के मक़ाम पर वोह बादल रुक गया। आप को पुकारा गया : "ऐ इब्राहीम (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) ! इस बादल के साए पर बुन्याद रखो, न कम करना न ज़ियादा।" हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को बताते जाते और वोह इमारत बनाते जाते। हज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को पथ्थर उठा उठा कर पकड़ाते।"

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के मज़्कूरा फ़रमान में "اٰیٰتٌ بَیِّنٰتٌ" से मुराद वाज़ेह आयात हैं जो अज्रो षवाब के इज़ाफ़े पर दलालत करती हैं। और "وَمَن دَخَلَہٗ کَانَ اٰمِنًا" से मुराद येह है कि वोह जहन्नम से अम्न में हो गया, बा'ज़ ने कहा कि बड़ी घबराहट से अम्न में हो गया, बा'ज़ ने कहा कि शिर्क से महफ़ूज़ हो गया। और "**इस्तिताअ़त**" से मुराद येह है कि ज़ादे राह और सफ़र पर क़ादिर हो और बदन सहीह हो नीज़ रास्ता भी पुर अम्न हो। और "وَمَنْ کَفَرَ" का मतलब येह है कि जो हज करने को नेकी और न करने को गुनाह न समझे।

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : "जिस ने हज किया और फ़ोह़श कलामी न की और फ़िस्क़ न किया तो वोह गुनाहों से ऐसा निकल गया जैसे उस दिन कि मां के पेट से पैदा हुवा था।"

(صحیح البخاری ،کتاب الحج ، باب قول اللہ" فلا رفث"الحدیث ۱۸۱۹، ص ۱۴۲)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो ह़रमैने शरीफ़ैन (या'नी मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरा) में से किसी ह़रम में मरे उसे क़ियामत के दिन अम्न वालों में से उठाया जाएगा।" (شعب الایمان للبیہقی،باب فی المناسک،فضل الحج و العمرۃ،الحدیث۴۱۵۸،ج۳،ص۴۹۰)

ह़दीषे पाक में है कि "बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ कषरत से करो क्यूंकि तुम बरोज़े क़ियामत अपने नामए आ'माल में उसे सब से अफ़्ज़ल और सब से क़ाबिले रश्क अ़मल पाओगे।" और एक रिवायत में है कि "जो बारिश में त़वाफ़ के सात चक्कर लगाए उस के गुज़श्ता गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।" (احیاء علوم الدین،کتاب اسرار الحج،الفصل الاول،فی فضائل الحج، ج ۱، ص۳۲۳)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنھُما से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने पचास बार बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ किया तो वोह गुनाहों से ऐसा निकल गया जैसे उस दिन कि मां के पेट से पैदा हुवा था।" (جامع الترمذی ،ابواب الحج ، باب ماجاء فی فضل الطواف ، الحدیث ٨٦٦،ص ١٧٣٣)

मन्क़ूल है कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बैतुल्लाह से वा'दा फ़रमाया कि हर साल छे लाख अफ़राद इस का ह़ज करेंगे, अगर कम हुए तो अल्लाह तआ़ला फ़िरिश्तों से उन की कमी पूरी फ़रमा देगा और बरोज़े क़ियामत का'बए मुशर्रफ़ा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا पहली रात की दुल्हन की त़रह़ उठाया जाएगा तो जिन लोगों ने इस का ह़ज किया वोह इस के पर्दों के साथ लटके होंगे और इस के गिर्द चक्कर लगा रहे होंगे यहां तक कि येह जन्नत में दाख़िल होगा तो वोह भी उस के साथ दाख़िल हो जाएंगे।" (احیاء علوم الدین،کتاب اسرار الحج،الباب الاول،الفصل الاول،فضیلۃ البیت ومکۃ المشرفۃ،ج١،ص٣٢٤)

ह़दीषे पाक में है कि "ह़जरे अस्वद एक जन्नती पथ्थर है। उसे क़ियामत के दिन उठाया जाएगा। उस की दो आंखें और ज़बान होगी जिस से वोह कलाम करेगा और हर उस शख़्स की गवाही देगा जिस ने उसे ह़क़ व सदाक़त के साथ बोसा दिया होगा। नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस को अकषर बोसा दिया करते थे। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने एक बार उसे बोसा देते हुए इरशाद फ़रमाया : "मैं जानता हूं कि तू एक पथ्थर है, न नुक़्सान देता है न नफ़्अ़, अगर मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को तुझे बोसा देते हुए न देखा होता तो तुझे कभी बोसा न देता। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہ تعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मोअमिनीन ! येह नफ़्अ़ भी देता है और नुक़्सान भी।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबल ह़सन ! यहां आंसू बहाए जाते हैं और दुआ़एं क़बूल होती हैं।"

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہ تعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मोअमिनीन ! येह नफ़्अ़ व नुक़्सान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इज़्न से देता है।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने पूछा : "वोह कैसे ?" तो अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہ تعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने अ़र्ज़ की : "वोह यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जब ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की अवलाद से अ़हद लिया तोउस अ़हदनामे की एक तह़रीर लिख कर इस पथ्थर को खिला दी। अब येह मोमिनों के लिये वफ़ाए अ़हद की गवाही देगा और काफ़िरों के ख़िलाफ़ इन्कार की।" ह़जरे अस्वद को बोसा देते वक़्त लोग जो कलिमात पढ़ते हैं, उन का येही मा'ना है (और वोह येह हैं) :

اَللّٰھُمَّ اِیْمَانًا بِکَ وَتَصْدِیْقًا بِکِتَابِکَ وَوَفَآءً بِعَھْدِکَ وَاتِّبَاعًا لِّسُنَّۃِ نَبِیِّکَ مُحَمَّدٍصلَّی اللّٰہ علیہ وسلَّم

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ पर ईमान लाते हुए, तेरी किताब की तस्दीक़ करते हुए, तेरे अ़हद को पूरा करते हुए और तेरे नबी ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी करते हुए (इसे बोसा देता हूं)।" और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मक्कए मुकर्रमा में एक नमाज़ एक लाख नमाज़ों के बराबर है, एक रोज़ा एक लाख रोज़ों के बराबर है और एक दिरहम सदक़ा करना एक लाख दिरहम सदक़ा करने की त़रह़ है। इसी त़रह़ हर नेकी एक लाख नेकियों के बराबर है।" (احياء علوم الدين ، كتاب اسرار الحج، الباب الاول، الفصل الاول، فضيلة البيت ومكة المشرفة، ج ١، ص ٣٢٤ـ٣٢٥)

ह़दीषे पाक में है कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर रात अहले ज़मीन की त़रफ़ नज़रे रह़मत फ़रमाता है और सब से पहले अहले ह़रम की त़रफ़ नज़रे रह़मत फ़रमाता है और अहले ह़रम में भी सब से पहले मस्जिदे ह़राम वालों पर नज़रे रह़मत फ़रमाता है। फिर जिस को त़वाफ़ करते हुए पाता है उसे बख़्श देता है और जिसे नमाज़ में मश्ग़ूल पाता है उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है और जिसे का'बे की त़रफ़ रुख़ किये हुए पाता है उसे भी मुआ़फ़ फ़रमा देता है।"

(احياء علوم الدين ، كتاب اسرار الحج، الباب الاول، الفصل الاول، فضيلة البيت ومكة المشرفة، ج ١، ص ٣٢٥)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "इस बैतुल्लाह शरीफ़ पर हर दिन एक सो बीस रह़मतें नाज़िल होती हैं। साठ त़वाफ़ करने वालों के लिये, चालीस नमाज़ पढ़ने वालों के लिये और बीस उसे देखने वालों के लिये।"

(احياء علوم الدين، كتاب اسرار الحج، الباب الاول، الفصل الاول، فى فضائل الحج ، ج ١ ، ص ٣٢٢ـ المعجم الكبير ، الحديث ١١٤٧٥، ج ١١ ، ص ١٥٦)

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त बयान है : "ह़जून और बक़ीअ़ को उन के अत़राफ़ से पकड़ा जाएगा और जन्नत में बिखेर दिया जाएगा और येह दोनों मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरा के क़ब्रिस्तान हैं।"

(كشف الخفاء، حرف الحاء المهملة، الحديث ١١١٠، ج ١، ص ٣١٢، الحجر بدله الحَجون)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, बिइज़्ने परवर दगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم क़ब्रिस्तान के कनारे तशरीफ़ फ़रमा थे जब कि उस वक़्त वहां क़ब्रिस्तान न था, और इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़मीन के इस टुकड़े और इस ह़रम से सत्तर हज़ार ऐसे अफ़राद उठाएगा जिन के चेहरे चौदहवीं के चांद की त़रह़ होंगे, वोह सब बिला ह़िसाब जन्नत में दाख़िल होंगे, उन में से हर एक सत्तर हज़ार अफ़राद की शफ़ाअ़त करेगा।"

(اخبار مكة للفاكهى، ذكر فضل مقبرة......الخ، الحديث ٢٣٧٠، ج ٤، ص ٥١)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो मक्के की गरमी पर एक घड़ी सब्र करेगा जहन्नम उस से एक सो साल की मसाफ़त दुर हो जाएगी।"

(اخبار مکة للفاکھی،ذکر الصبر علی حر مکة،الحدیث١٥٦٥/١٥٦٦،ج٢،ص٣١٠-٣١١)

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "येह घर इस्लाम का सुतून है, जो ह़ज या उ़मरह करने वाला अपने घर से बैतुल्लाह शरीफ़ के इरादे से निकले, अगर उस की रूह़ क़ब्ज़ हो जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे, और अगर वोह (ह़ज कर के) पलटा तो अज्रो ग़नीमत के साथ लौटेगा।"

(المعجم الاوسط،الحدیث٩٠٣٣،ج٦،ص٣٥٢-فردوس الاخبار للدیلمی، باب الھاء، الحدیث٧٢٠٨، ج٢،ص٣٨٢)

तवाफ़े का'बा के बारे में इरशादे बारी तआ़ला है :

وَلْيَطَّوَّفُوْا بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ۝ ﴿1﴾

(پ ١٧،الحج:٢٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उस आज़ाद घर का त़वाफ़ करें।*

अ़तीक़ कहने की वजह :

बैतुल्लाह शरीफ़ को अ़तीक़ इस लिये कहते हैं कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे ज़मीन से दो हज़ार साल पहले पैदा फ़रमाया और इस को ज़ालिम और जाबिर लोगों के क़ब्ज़े से आज़ाद रखा और इस पर किसी ज़ालिमो जाबिर को मुसल्लत़ न किया बल्कि जिस ने भी बुरा इरादा किया वोह हलाक हो गया।" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र वासिती عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि इस को अ़तीक़ कहने की वजह येह भी है कि जिस ने भी इस का त़वाफ़ किया वोह जहन्नम से आज़ाद हो गया।"

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को भी अ़तीक़ कहा जाता है। पस जो शख़्स नमाज़ में क़िब्ला शरीफ़ की त़रफ़ रुख़ न करे उस की नमाज़ क़बूल नहीं और जो अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की विलायत की गवाही न दे उस की ज़कात क़बूल नहीं।

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सुलैमान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं कि "जब ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام ज़मीन पर जल्वा फ़रमा हुए तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने बैतुल्लाह शरीफ़ के सात चक्कर लगाए, फिर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ कर मुल्तज़िम के पास आए और अ़र्ज़ की : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू मेरे ज़ाहिरो बात़िन को जानता है, मेरी मा'ज़िरत क़बूल फ़रमा ले और तू जानता है जो कुछ मेरे दिल में है पस मेरे गुनाहों को बख़्श दे और तू मेरी ह़ाजत भी जानता है लिहाज़ा वोह भी पूरी फ़रमा दे। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से ऐसे ईमान और यक़ीने सादिक़ का

सुवाल करता हूं जो मेरे दिल में बस जाए यहां तक कि मैं यक़ीन कर लूं कि मुझे वोही तकलीफ़ पहुंच सकती है जो तू ने मेरे लिये लिख दी है और उस पर राज़ी रहने का सुवाल करता हूं जिस का तू ने मेरे बारे में फ़ैसला फ़रमा दिया है।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वह्य फ़रमाई : "ऐ आदम (عَلَیْہِ السَّلَام) ! मैं ने तेरी तमाम दुआएं क़बूल फ़रमाईं और तेरी अवलाद में से जो शख़्स भी दुआ करेगा मैं उस के ग़मो अलम और तंगी दूर कर दूंगा, उस के दिल से फ़क्र का ग़म निकाल कर उसे बे नियाज़ कर दूंगा और उसे वहां से रिज़्क़ दूंगा जहां उसे गुमान भी न होगा और दुन्या उस के पास ज़लील हो कर आएगी अगर्चे वोह उस की ख़्वाहिश न रखता हो।"

(اخبار مکۃ للازرقی، باب ما جاء فی الملتزم والقیام فی ظھر الکعبۃ، الحدیث ٤٩٤، ج٢، ص٩٢ _ المعجم الاوسط، الحدیث ٥٩٧٤، ج٤، ص٢٧٥)

ज़बान और आंखों वाला बादल :

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि "जब तूफ़ाने नूह़ के बा'द बैतुल मा'मूर जिस की बुन्याद हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام ने रखी थी, को छटे आस्मान पर उठाया गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को हुक्म दिया कि वोह बैतुल्लाह शरीफ़ की जगह आ कर उस के निशानात पर बुन्याद रखें। हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام वहां तशरीफ़ ले गए मगर वोह आप عَلَیْہِ السَّلَام से पोशीदा था और आप عَلَیْہِ السَّلَام को उस का कोई निशान दिखाई न दे रहा था तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक बादल भेजा जो लम्बाई, चौड़ाई में बैतुल्लाह शरीफ़ की मिक़्दार के बराबर था, उस का सर, ज़बान और दो आंखें थीं। वोह बैतुल्लाह शरीफ़ के मक़ाम पर खड़ा हो गया और अ़र्ज़ की : "ऐ इब्राहीम (عَلَیْہِ السَّلَام) ! मेरी मिक़्दार के बराबर बुन्याद रख दें।" हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने उस के कहने के मुताबिक़ बुन्याद रखी फिर बादल चला गया। जब आप عَلَیْہِ السَّلَام उस के बनाने से फ़ारिग़ हुए तो त़वाफ़ किया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वह्य फ़रमाई कि "लोगों में ह़ज का ए'लान करें।" आप عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : "मेरी आवाज़ कैसे पहुंचेगी ?" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ इब्राहीम (عَلَیْہِ السَّلَام) ! तेरा काम है निदा करना पहुंचाना हमारे ज़िम्मे है।" तो हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने जबले अबू क़ुबैस पर चढ़ कर बुलन्द आवाज़ से पुकारा :

"ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! तुम्हारे रब्ब عَزَّوَجَلَّ ने घर बनाया और तुम्हें उस का ह़ज करने का हुक्म दिया है।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सब ज़मीन वालों को आप عَلَیْہِ السَّلَام की आवाज़ सुनाई तो जिन्नों, इन्सानों, पथ्थर और मिट्टी के ढेलों, पहाड़ों और रेतिले मैदानों और हर ख़ुश्को तर ने जवाब दिया। मश्रिक़ो मग़रिब वालों को आवाज़ पहुंचाई तो माओं के पेटों से और मर्दों की पुश्तों से सब ने येह कहते हुए जवाब दिया : لَبَّیْکَ اَللّٰھُمَّ لَبَّیْکَ لَبَّیْکَ لَا شَرِیْکَ لَکَ لَبَّیْکَ اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَۃَ لَکَ وَالْمُلْکَ لَا شَرِیْکَ لَکَ

तो आज वोही शख़्स ह़ज करेगा जिस ने उस दिन जवाब दिया था। जिस ने एक मरतबा लब्बैक कहा तो वोह एक मरतबा ह़ज करेगा, जिस ने दो मरतबा कहा वोह दो मरतबा और जिस ने तीन मरतबा लब्बैक कहा वोह तीन मरतबा ह़ज करेगा और जिस ने इस से भी ज़ियादा बार लब्बैक कहा वोह उतनी ही बार ह़ज करेगा।"

(شعب الایمان للبیهقی،باب فی المناسك، حیث الکعبة و المسجد الحرام، الحدیث ۳۹۸۹، ج۳،ص۴۳۶ ،مفهومًا۔اخبار مکة للفاکهی،ذکر ابراهیم علیه السلام علی المقام ......الخ، الحدیث۹۷۳، ج۱، ص ۴۴۵۔فردوس الاخبار للدیلمی، باب اللام، الحدیث۵۳۴۳،ج۲،ص۲۱۷)

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि "मैं ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ कर रहा था। मैं ने अ़र्ज़ की : "मेरे मां बाप आप (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) पर क़ुरबान ! इस घर की शान क्या है ?" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़ली ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी उम्मत के गुनाहों के कफ़्फ़ारे के लिये दुन्या में अपना घर बनाया।" मैं ने अ़र्ज़ की : "मेरे मां बाप आप (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) पर क़ुरबान ! इस ह़जरे अस्वद का मक़ामो मर्तबा क्या है ?" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "येह क़ीमती पथ्थर जन्नत में था, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे दुन्या में उतारा तो इस की रोशनी सूरज जैसी थी लेकिन जब से इसे मुश्रिकीन के (नापाक) हाथ लगे इस का रंग तब्दील हो गया और अब येह सख़्त सियाह हो गया है।" (اخبار مکة للفاکهی، ذکر المقام وفضله، الحدیث۹۶۸،ج۱، ص۴۴۳ ،مختصر وبتغیر)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर घर बैतुल्लाह नहीं और न ही हर पहाड़ अ़रफ़ात है, न हर तोशा मक्के तक पहुंचाता है। ऐ वोह शख़्स जिस ने ह़ज फ़ौत कर दिया। उस की त़रफ़ रास्ता न पाया। अपनी उ़म्र खेल कूद में गुज़ार दी और गुनाहों का भारी बोझ उठाए रखा। इस्यां के मैदान में ग़फ़्लत से अपने दामन को घसीटा, नजात त़लब की लेकिन उस तक न पहुंचा लिहाज़ा तू ह़ज में जल्दी कर और अपने लिये इस्लाम को रहनुमा बना जिस का इदराक न कोई आंख कर सकती है और न ही अ़क़्लें और फ़िक्रें उस की मिषाल व नज़ीर ला सकती हैं।

ख़ानए का'बा शरीफ़ शफ़ाअ़त फ़रमाएगा :

ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, तौरात शरीफ़ में है कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत अपने सात लाख मुक़र्रब फ़िरिश्तों को भेजेगा, जिन में से हर एक के हाथ में सोने की एक ज़न्जीर होगी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "जाओ ! और बैतुल्लाह शरीफ़ को इन ज़न्जीरों में बांध कर मह़शर की त़रफ़ ले आओ।" फ़िरिश्ते जाएंगे, उन ज़न्जीरों से बांध कर खींचेंगे और एक फ़िरिश्ता पुकारेगा : "ऐ का'बतुल्लाह ! चल।" तो का'बए मुबारका कहेगा : "मैं नहीं चलूंगा जब तक मेरा सुवाल पूरा न हो जाए।" फ़ज़ाए आस्मानी से एक फ़िरिश्ता

पुकारेगा : "तू सुवाल कर।" तो का'बा अ़र्ज़ करेगा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू मेरे पड़ोस में दफ़्न मोअमिनीन के ह़क़ में मेरी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा।" तो का'बा शरीफ़ को एक आवाज़ सुनाई देगी : "मैं ने तेरी दरख़्वास्त क़बूल फ़रमा ली।"

ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "फिर मक्के के मुर्दों को उठाया जाएगा जिन के चेहरे सफ़ेद होंगे। वोह सब एह़राम की ह़ालत में का'बा के गिर्द जम्अ़ हो कर तल्बिया (या'नी लब्बैक) कह रहे होंगे। फिर फ़िरिश्ते कहेंगे : "ऐ का'बा ! अब चल।" तो वोह कहेगा : "मैं नहीं चलूंगा यहां तक कि मेरी दरख़्वास्त क़बूल हो जाए।" तो फ़ज़ाए आस्मानी से एक फ़िरिश्ता पुकारेगा : "तू मांग, तुझे दिया जाएगा।" तो का'बा शरीफ़ कहेगा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तेरे गुनहगार बन्दे जो इकट्ठे हो कर दूर दूर से ग़ुबार आलूद हो कर मेरे पास आए। उन्हों ने अपने अहलो इ़याल और अह़बाब को छोड़ा। उन्हों ने फ़रमां बरदारी और ज़ियारत के शौक़ में निकल कर तेरे हुक्म के मुत़ाबिक़ मनासिके ह़ज अदा किये। तो मैं तुझ से सुवाल करता हूं कि उन के ह़क़ में मेरी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा, उन को क़ियामत की घबराहट से अम्न में रख और उन्हें मेरे गिर्द जम्अ़ फ़रमा दे।"

तो एक फ़िरिश्ता निदा देगा : "उन में ऐसे लोग भी होंगे जिन्हों ने तेरे त़वाफ़ के बा'द गुनाहों का इर्तिकाब किया होगा और उन पर इसरार कर के अपने ऊपर जहन्नम वाजिब कर ली होगी।" तो का'बा अ़र्ज़ करेगा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से उन गुनहगारों के ह़क़ में शफ़ाअ़त क़बूल होने का सुवाल करता हूं जिन पर जहन्नम वाजिब हो चुकी है।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "मैं ने उन के ह़क़ में तेरी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाई।" तो वोही फ़िरिश्ता निदा करेगा : "जिस ने का'बे की ज़ियारत की थी वोह लोगों से अलग हो जाए।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन सब को का'बे के गिर्द जम्अ़ कर देगा। उन के चेहरे सफ़ेद होंगे और वोह जहन्नम से बे ख़ौफ़ हो कर त़वाफ़ करते हुए तल्बिया कहेंगे। फिर फ़िरिश्ता पुकारेगा : ऐ का'बतुल्लाह ! चल तो का'बा शरीफ़ तल्बिय्या कहेगा :

لَبَّیۡکَ اَللّٰھُمَّ لَبَّیۡکَ، وَالۡخَیۡرُ کُلُّهٗ بِیَدَیۡکَ، لَبَّیۡکَ لَا شَرِیۡکَ لَکَ لَبَّیۡکَ، اِنَّ الۡحَمۡدَ وَالنِّعۡمَةَ لَکَ وَالۡمُلۡکَ لَا شَرِیۡکَ لَکَ

फिर फ़िरिश्ते उस को खींच कर मह़शर तक ले जाएंगे।

(احیاء علوم الدین، کتاب اسرار الحج، الباب الثانی، ج ۱، ص ۳۲۳، مختصر)

पाक है वोह ज़ात जिस ने का'बा मुशर्रफ़ा को अम्न और इ़ज़्ज़त वाला घर बनाया और उस में रहने वाले इन्सानों और जानवरों को अमान दी और आबे ज़मज़म के साथ ख़ास किया और मक़ामे इब्राहीम عَلَیْهِ السَّلَام को फ़र्ज़ो वाजिब और नवाफ़िल की अदाएगी के लिये क़ाइम किया और सअ़्य के लिये सफ़ा व मरवह का इन्तिख़ाब फ़रमाया और जफ़ा के बदले सिलए रह़्मी को पैदा फ़रमाया।

وَصَلَّى اللهُ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ وَ سَلَّمَ تَسْلِیْمًا کَثِیْرًا

बयान 10 : ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ में रोने वालों का बयान

ह़म्दे बारी तआ़ला :

सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के लिये हैं जिस ने ख़ाइफ़ीन की आंखों को ख़ौफ़े वईद से रुलाया तो उन की आंखों से चश्मों की मानिन्द आसूं जारी हो गए और उन हस्तियों की आंखों से आंसूंओं के बादल बरसाए जिन के पहलू बिस्तरों से जुदा रहते हैं, उन्हों ने "तक़्वा" को अपना फ़ख़्रिया लिबास बनाया, ख़ौफ़ ने उन की नींद और ऊंघ उड़ा दी, जब लोग खुश होते हैं तो वोह ग़मगीन होते हैं। आसूंओं ने उन की नींद और सुकून ख़त्म कर दिया पस वोह ग़मगीन और दर्द भरे दिल से रोते हैं, उन्हों ने आहो बुका को अपनी आ़दत और आसूंओं को पानी बना लिया। उन के दिन ग़म में कटते और रातें फूट फूट कर रोने में गुज़रती हैं, वोह आहो ज़ारी से सैर नहीं होते। पाक है वोह ज़ात जिस ने इन्सान को हंसाया और रुलाया और ज़िन्दगी और मौत अ़ता फ़रमाई और माज़ी व मुस्तक़्बिल का इ़ल्म सिखाया। उन्हों ने अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ से अ़हद किया तो उस को वफ़ा करने वाला पाया। उस से मुआ़मला किया तो सारी ज़िन्दगी नफ़्अ़ देने वाला पाया। येही वोह लोग हैं जिन के बारे में रब्बे अ़ज़ीम عَزَّ وَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ۝ (پ۱۶،مریم:۵۸) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जब उन पर रह़मान की आयतें पढ़ी जातीं गिर पड़ते सजदा करते और रोते।(1) (येह आयते सजदा है इसे पढ़ने, सुनने वाले पर सजदा करना वाजिब है)

उन में से हर एक अपना चेहरा ख़ाक पर रख देता है और जब वोह अपने आप को रन्जीदगी से ख़ाली पाते हैं तो रोते और गिर्या व ज़ारी करते हैं और जब अपने गुनाहों के मुतअ़ल्लिक़ सोचते हैं तो ख़ूब गिड़गिड़ाते हैं और आसूंओं से उन की पलकें ज़ख़्मी हो जाती हैं। वोह सब बादशाहे ह़क़ीक़ी की बारगाह में पलकों के बादलों से आसूं बहाते और रोते रोते ठोड़ी के बल गिर पड़ते हैं और अहल सिद्क़ो वफ़ा के मुतअ़ल्लिक़ सरकार عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का येह फ़रमान कि "अगर तुम्हें रोना न आए तो रोने वाली सूरत बना लो।" (سنن ابن ماجة ، ابواب الزهد،باب الحزن والبكاء،الحديث ٤١٩٦،ص ٢٧٣٢) सुनते हैं तो रोने से नहीं उक्ताते। और उन में से हर एक अपनी लग़्ज़िश पर रोता है। सभी उस की सत्वतो इक़्तिदार से ख़ौफ़ ज़दा रहते हैं जैसा कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया : وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ۝ (پ۱۷، الانبیآء:۲۸) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह उस के ख़ौफ़ से डर रहे हैं।

---

(1)....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** तआ़ला ने इन आयात (ये और गुज़श्ता आयात) में ख़बर दी कि अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **अल्लाह** तआ़ला की आयतों को सुन कर ख़ुज़ूअ़ व ख़ुशूअ़ और ख़ौफ़ से रोते और सजदे करते थे। **मस्अला :** इस से षाबित हुवा कि क़ुरआने पाक ब ख़ुशूए क़ल्ब सुनना और रोना मुस्तह़ब है।"

पाक है वोह ज़ात जिस ने अपने बन्दों को हर त़रह़ की आज़्माइशों में मुब्तला फ़रमाया यहां तक कि अपने मुक़र्रब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को भी आज़्माया और ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام को जन्नत से उतारा गया तो अबुल बशर होने के बा वुजूद चालीस साल तक रोते रहे। ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के ग़म में इस क़दर रोए कि आप عَلَيْهِ السَّلَام की आंखें सफ़ेद हो गईं और जब दूसरे बेटों ने उन को आप عَلَيْهِ السَّلَام से दूर कर दिया तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उन से फ़रमाया : اِنَّمَآ اَشْكُوْا بَثِّيْ وَحُزْنِيْٓ اِلَى اللّٰهِ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ (پ١٣،يوسف:٨٦) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मैं तो अपनी परेशानी और ग़म की फ़रियाद **अल्लाह** ही से करता हूं और मुझे **अल्लाह** की वोह शानें मा'लूम हैं जो तुम नहीं जानते।(1)

जब भाइयों ने देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام सिर्फ़ ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام से ही ज़ियादा मह़ब्बत करते हैं तो उन्हों ने आप عَلَيْهِ السَّلَام को गहरे कुंवें में डाल दिया, وَجَآءُوْٓ اَبَاهُمْ عِشَآءً يَّبْكُوْنَ ۝ (پ١٢،يوسف:١٦) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और रात हुए अपने बाप के पास रोते हुए आए।"

ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपनी लग़्ज़िश पर चालीस साल तक रोते रहे, आप عَلَيْهِ السَّلَام ने इतना अ़र्सा नदामत से अपना सर ऊपर न उठाया फिर निदा दी गई : "ऐ दावूद ! हम ने तेरी लग़्ज़िश मुआ़फ़ फ़रमा दी और मह़ब्बत दुन्या में एक बार मिलती है दोबारा नहीं मिलती।"

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़े गंजीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ को कोई शै दो क़त़रों से ज़ियादा पसन्द नहीं : (1)......ख़ौफ़े इलाही عَزَّ وَجَلَّ से बहने वाला आंसूओं का क़त़रा और (2)......**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की राह में बहने वाला ख़ून का क़त़रा।"

(جامع الترمذی،ابواب فضائل الجهاد، باب ماجاء فی فضل المرابط، الحدیث ١٦٦٩،ص١٨٢٣)

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "बरोज़े क़ियामत हर आंख रोएगी मगर वोह आंख जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की ह़राम कर्दा अश्या से बची और वोह आंख जो रात भर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की राह में जागती रही और वोह कि जिस से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ख़ौफ़ से मख्खी के सर की मिष्ल आंसू बहा।"

(حلية الاولياء،صفوان بن سليم،الحديث٣٦٦٣،ج٣،ص١٩٠)

1...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "इस से मा'लूम होता है कि ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जानते थे कि यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ज़िन्दा हैं और उन से मिलने की तवक़्क़ोअ़ रखते थे और येह भी जानते थे कि उन का ख़्वाब ह़क़ है, ज़रूर वाक़ेअ़ होगा। एक रिवायत येह भी है कि आप ने ह़ज़रते मलकुल मौत से दर्याफ़्त किया कि तुम ने मेरे बेटे यूसुफ़ की रूह़ क़ब्ज़ की है ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : नहीं। इस से भी आप को उन की ज़िन्दगानी का इत़्मीनान हुवा और आप ने अपने फ़रज़न्दों से फ़रमाया।"

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم येह दुआ फ़रमाया करते : “ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे रोने वाली आंखें अ़ता फ़रमा जो तेरे ख़ौफ़ से आंसू बहाती रहें इस से पहले कि ख़ून के आंसू रोना पड़े और दाढ़ें पथ्थर हो जाएं।” (الزهد للامام احمد بن حنبل،الحديث٤٨،ص٣٤)

रोने वाली आंखें मांगो रोना सब का काम नहीं
ज़िक्रे मह़ब्बत आ़म है लेकिन सोज़े मह़ब्बत आ़म नहीं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपनी किसी आस्मानी किताब में इरशाद फ़रमाया : “मेरे इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम ! जो बन्दा मेरे ख़ौफ़ से रोएगा मैं उस के बदले मुक़द्दस नूर से उसे ख़ुशी अ़ता करूंगा। मेरे ख़ौफ़ से रोने वालों को बिशारत हो कि जब रह़मत नाज़िल होती है तो सब से पहले उन्ही पर नाज़िल होती है और मेरे गुनहगार बन्दों से कह दो कि वोह मेरे ख़ौफ़ से आहो बुका करने वालों की मह़फ़िल इख़्तियार करें ताकी जब रोने वालों पर रह़मत नाज़िल हो तो उन को भी रह़मत पहुंचे।”

(موسوعة للامام ابن ابی الدنيا،كتا ب الرقة والبكاء، الحديث٢٧/١٨/٨،ج٣،ص١٧١تا١٧٤)

हज़रते सय्यिदुना नज़्र बिन सा’द رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि किसी की आंख से ख़शिय्यते इलाही عَزَّوَجَلَّ से आंसू बहते हैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के चेहरे को जहन्नम पर ह़राम फ़रमा देता है। अगर उस के रुख़्सार पर बह जाए तो क़ियामत के दिन न वोह ज़लील होगा और न उस पर कोई ज़ुल्म होगा। और अगर कोई ग़मगीन शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से कुछ लोगों में रोए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के रोने के सबब उन लोगों पर भी रह़्म फ़रमाता है। आंसू के इ़लावा हर अ़मल का वज़्न किया जाएगा और आंसूओं का एक क़त़रा आग के समन्दरों को बुझा देता है।”

(المرجع السابق،الحديث١٤،ج٣،ص١٧٢)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھُمَا ने इरशाद फ़रमाया : “अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से आंसू का एक क़त़रा बहाना मुझे एक हज़ार दीनार सदक़ा करने से ज़ियादा पसन्द है।” (احياء علوم الدين،كتاب الخوف والرجاء، بيان فضيلة الخوف،ج٤، ص٢٠١)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब दिलों की ज़मीन से ख़ौफ़ पैदा हो, आंसू बह कर ख़शिय्यत के बाग़ीचे को सैराब करें तो नदामत की कली खिल उठती है और तौबा का फल नसीब हो जाता है। हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपनी लग़्ज़िश पर दिन रात रोते रहते थे गोया आप عَلَیْہِ السَّلَام ने ख़ुशी का हुल्ला उतार कर ग़म का लिबास ज़ेबेतन कर लिया था, कबूतर आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की आवाज़ से ख़ामोश हो जाते, दिल आप عَلَیْہِ السَّلَام की चीख़ों से मुज़्तरिब हो जाते, आप عَلَیْہِ السَّلَام के आंसूओं से घास सैराब हो जाती। आप عَلَیْہِ السَّلَام अपनी मुनाजात में अ़र्ज़ करते : “मैं तेरे बन्दों के त़बीबों से इ़लाज कराने के लिये निकला कि वोह मेरे दिल की बीमारी का इ़लाज

करें लेकिन सब ने तेरी राह बताई। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरी आंखों को आंसू बहाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और मेरी कमज़ोरी को कुव्वत से बदल डाल ताकि मैं तुझे राज़ी कर सकूं।"

हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि रोना ख़ौफ़ से आता है और बेक़रारी रिज़ा व शौक़ से होती है। जब हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुन्कदिर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه रोया करते तो अपने चेहरे और दाढ़ी पर आसूं मल लिया करते। उन से इस के मुतअ़ल्लिक़ अ़र्ज़ की गई तो इरशाद फ़रमाया : "मुझे पता चला है कि आग उस जगह को न खाएगी जिसे आसूं छूएं।" (سير اعلام النبلاء، الرقم٧٧٧، محمدبن مكندربن عبد الله،ج٦،ص١٥٩) ऐ मेरे अ़ज़ीज़ ! येह रोना गुनाहों की आग को बुझाता, दिलों की खेती को ज़िन्दा करता और मत़्लूब तक पहुंचाता है। अपनी तन्हाइयों में बे वफ़ाइयों पर रोता रह और दिन रात लग़्ज़िशों और गुनाहों पर आंसू बहाता रह।

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र किनानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़्वाब में एक ऐसा नौजवान देखा जिस से ज़ियादा ख़ूबसूरत किसी को न देखा था। मैं ने उस से पूछा : "तू कौन है ?" तो उस ने जवाब दिया : "मैं तक़्वा हूं।" मैं ने उस से इस्तिफ़्सार किया : "तू कहां रहता है ?" तो उस ने बताया : "हर ग़मगीन रोने वाले के दिल में।"

मन्क़ूल है कि हज़रते सय्यिदुना यज़ीद रक़्क़ाशी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ख़्वाब में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने क़िराअत की तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "येह क़िराअत है तो रोना कहां है ?" हज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन अबी ह़वारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى इरशाद फ़रमाते हैं : "मैं ने अपनी लौंडी को ख़्वाब में देखा कि उस से ज़ियादा ह़सीन कोई औ़रत न देखी थी। उस का चेहरा ह़ुस्नो जमाल से दमक रहा था। मैं ने उस से पूछा : "तेरा चेहरा इतना रोशन क्यूं है ?" तो वोह कहने लगी : "आप को वोह रात याद है जब आप (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से रोए थे ?" मैं ने कहा : "जी हां।" उस ने कहा : "आप के आंसूओं का एक क़त़रा मैं ने उठा कर अपने चेहरे पर मल लिया तो चेहरा ऐसा हो गया जैसा कि आप मुलाह़ज़ा फ़रमा रहे हैं।"

हज़रते सय्यिदुना अ़त़ा सुलमी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के बारे में मन्क़ूल है कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बहुत ज़ियाद गिर्या व ज़ारी फ़रमाते। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से इस के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "मैं क्यूं न रोऊं ह़ालांकि मौत के फन्दे मेरी गरदन में हैं, क़ब्र मेरा घर है और क़ियामत मेरा ठिकाना है और अपना अपना ह़क़ मांगने वाले मेरे इर्द गिर्द खड़े हो कर पुकार रहे हैं : "ऐ शख़्स ! हमारे और तुम्हारे दरमियान मैदाने मह़शर में फ़ैसला होगा।"

हज़रते सय्यिदुना यज़ीद रक़्क़ाशी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी मौत के वक़्त रोने लगे तो उन से अ़र्ज़ की गई : "आप क्यूं रोते हैं ?" तो इरशाद फ़रमाया : "मैं इस वजह से रोता हूं कि अब मुझे रातों के क़ियाम, दिन के रोज़ों और ज़िक्र की मजालिस में ह़ाज़िरी का मौक़अ़ न मिलेगा।"

हज़रते सय्यिदुना आमिर बिन कैस رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का वक़्ते विसाल क़रीब आया तो रोने लगे। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से अ़र्ज़ की गई : "कौन सी चीज़ आप को रुला रही है?" तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "मैं सख़्त गर्मियों के रोज़ों और सर्दियों में क़ियाम पर रो रहा हूं।" (क्यूंकि अब दोबारा येह मौक़अ़ हाथ न आएगा)

हज़रते सय्यिदुना अबू शा'शा رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपनी मौत के वक़्त रोने लगे। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से दर्याफ़्त किया गया : "कौन सी चीज़ आप को रुला रही है?" तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे रातों के क़ियाम का शौक़ था।"

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं कि एक इबादत गुज़ार शख़्स बीमार हो गया तो हम उस की इ़यादत के लिये उस के पास गए। वोह लम्बी लम्बी सांसें ले कर अफ़्सोस करने लगा। मैं ने उस को कहा : "किस बात पर अफ़्सोस कर रहे हो?" तो उस ने बताया : "उस रात पर जो मैं ने सो कर गुज़ारी और उस दिन पर जिस दिन मैं ने रोज़ा न रखा और उस घड़ी पर जिस में मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से ग़ाफ़िल रहा।"

एक आ़बिद अपनी मौत के वक़्त रोने लगा। उस से वजह दर्याफ़्त की गई तो उस ने जवाब दिया कि "मैं इस बात पर रोता हूं कि रोज़ेदार रोज़े रखेंगे लेकिन मैं उन में न होऊंगा। ज़ाकिरीन ज़िक्र करेंगे लेकिन मैं उन में न होऊंगा। नमाज़ी नमाज़ें पढ़ेंगे लेकिन मैं उन में न होऊंगा।"

ऐ ग़ाफ़िल इन्सान! इन बुज़ुर्गों को देख! मरने पर कैसे अफ़्सुर्दा और नादिम हो रहे हैं कि मौत के बा'द अ़मले सालेह़ न कर सकेंगे। अपनी बक़िय्या उ़म्र से कुछ ह़ासिल कर ले और जान ले कि जैसा करेगा वैसा भरेगा। क्या तू इन लोगों की क़ब्रों से गुज़रते हुए इ़ब्रत ह़ासिल नहीं करता? क्या तूं नहीं देखता कि वोह अपनी क़ब्रों में इत़मीनान से हैं लेकिन फिर भी तुम्हारी त़रफ़ लौटने की ख़्वाहिश करते हैं, वोह फ़ौतशुदा आ'माल की तलाफ़ी चाहते हैं। कितने वाइ़ज़ीन ने वा'ज़ किया, डराया और मौत ने कितनी मिट्टी को आबाद कर दिया? क्या तेरे पास ऐसा कान नहीं जो नसीह़त को सुनें? क्या तू ऐसी आंख नहीं रखता जो अपने मह़बूब के जुदा होने पर आंसू बहाए? क्या तेरे पास ऐसा दिल नहीं जो ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से गिड़गिड़ाए? क्या तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करने की त़म्अ़ नहीं?

मन्क़ूल है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना शोऐ़ब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई : "ऐ शोऐ़ब (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام)! मेरे लिये अपनी गरदन आ़जिज़ी से झुका ले और अपने दिल में ख़ुशूअ़ पैदा कर, अपनी आंखों से आंसू बहा और मुझ से दुआ़ कर कि मैं तेरे क़रीब हूं।" मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना शोऐ़ब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सो साल रोते रहे यहां तक कि उन की बीनाई चली गई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दोबारा बीनाई अ़त़ा फ़रमाई तो फिर सो साल रोते रहे यहां तक

कि आप عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बीनाई फिर जा़एअ़ हो गई तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वह़्य फ़रमाई : "ऐ शोऐ़ब (عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ! येह रोना अगर जहन्नम के ख़ौफ़ से है तो मैं ने तुझे जहन्नम से अमान अ़ता कर दी और अगर जन्नत के शौक़ में है तो मैं ने तुझे जन्नत बख़्श दी।" तो आप عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : "ऐ रब्ब عَزَّوَجَلَّ ! तेरे इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं न तेरे जहन्नम के ख़ौफ़ से और न ही तेरी जन्नत के शौक़ में रो रहा हूं बल्कि तेरी मह़ब्बत की गिरह मेरे दिल में लगी हुई है। इसे तेरे दीदार के इ़लावा कोई चीज़ नहीं खोल सकती।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "जब ऐसा है तो मैं तुझे ज़रूर अपना दीदार कराऊंगा और (वोह यूं कि) मैं तेरे पास अपना एक बन्दा भेजूंगा जो दस साल तेरी ख़िदमत करेगा फिर उसे तेरी मुनाजात की बरकत से कलीम बना दूंगा।" (कलीम से मुराद ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام हैं)

आह ! वोह दिल जिस को ग़म की गर्मी ने पिघला दिया। आह ! वोह लोग जिन्हें गिर्या व ज़ारी ने फ़ना कर दिया। आह ! वोह आ'ज़ा जिन्हों ने बुरे कामों के बदले अच्छे कामों को क़बूल किया। आह ! वोह जिगर कि मलिके जलील عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से टुकड़े टुकड़े हो गए। हाए ! वोह दिल जिन को कूच और मौत के दिन की फ़िक्र नहीं ? हाए ! वोह दिल की सख़्ती जिस ने दिल को जहन्नम की बुरी राह पर चलाया। हाए ! वोह दिल जो गुनाहों से बीमार हुवा। जिस ने इत़ाअ़त के लिये कमर बांधी तो वोह कामयाब हो गया। ऐ मिस्कीन ! क्या अब भी तू अपनी ख़्वाहिश से बाज़ न आएगा ? क्या अब भी अपने मौला عَزَّوَجَلَّ के दरवाज़े की त़रफ़ न लौटेगा ? क्या तू भूल गया कि तेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ने तुझे क्या क्या ने'मतें अ़ता कीं ? क्या तुझ पर दिलों को मेहरबान न किया ? क्या तुझे रिज़्क़ से ग़िज़ा न बख़्शी ? क्या तेरे दिल में इस्लाम डाल कर तुझे हिदायत न दी ? क्या तुझे अपने फ़ज़्ल से क़रीब न किया ? क्या उस का एह़सान लम्ह़ा भर भी तुझ से हटा ? लेकिन तू ने ग़फ़्लत को क़बूल किया, ख़्वाहिशात पर सुवार हुवा, ख़त़ाओं में जल्दी की, उस का अ़हद तोड़ डाला, उस के हुक्म की ना फ़रमानी की, गुनाहों पर डटा रहा, अपने नफ़्स की इत़ाअ़त और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मुख़ालफ़त की। क्या तुझे ह़या नहीं कि वोह तेरी ना फ़रमानी को देख रहा है। इस मह़रूमी व दूरी के बा वुजूद अगर तू उस की त़रफ़ रुजूअ़ करेगा तो वोह तुझे क़बूल फ़रमा लेगा, तुझ से राज़ी हो जाएगा। अगर तू हमेशा उस की इत़ाअ़त में रहे तो वोह तुझे अपना कुर्ब अ़ता फ़रमाएगा। (अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَكَاتُهُمُ الۡعَالِيَه फ़रमाते हैं)

गुनाहों ने मेरी कमर तोड़ डाली — मेरा ह़श्र में होगा क्या या इलाही عَزَّوَجَلَّ
तू अपनी विलायत की ख़ैरात दे दे — मेरे ग़ौष का वासित़ा या इलाही عَزَّوَجَلَّ

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन अबी ह़वारी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡبَارِى फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी رَحۡمَةُ اللّٰهِ تعالٰى عَلَيۡه के पास गया और उन को रोता हुवा पा कर रोने की वजह दर्याफ़्त की तो उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अह़मद ! मेरी आंखें पुरनम क्यूं न हों जब कि मुझे येह बात पहुंची है कि जब रात तारीक हो जाती है, लोग सो जाते हैं और हर दोस्त अपने दोस्त के साथ तन्हाई इख़्तियार कर लेता है, तो अहले मा'रिफ़त के दिल रोशन हो जाते हैं। वोह अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से लुत़्फ़ अन्दोज़ होते हैं, उन के अ़ज़्म मालिके अ़र्श عَزَّوَجَلَّ तक बुलन्द होते हैं और अहले

महब्बत मुनाजात में अपने मालिक عَزَّوَجَلَّ के सामने क़दम बिछा देते हैं, पुर दर्द आवाज़ से उस के कलाम को दोहराते हैं, उन के आंसू रुख़्सारों पर बह पड़ते हैं, ख़ौफ़ और उस की मुलाक़ात के इश्तियाक़ में रफ़्ता रफ़्ता मेहराबों में गिरते रहते हैं। मालिक عَزَّوَجَلَّ उन की त़रफ़ नज़रे रह़मत फ़रमाते हुए पुकारता है : "ऐ मेरे अहले मा'रिफ़त अह़बाब ! तुम्हारे दिल मेरी ज़ात में मश्ग़ूल हैं और तुम ने अपने दिलों से मेरे इलावा सब को निकाल दिया है। तुम्हें बशारत हो ! जिस दिन तुम मुझ से मिलोगे तो सुरूर व क़ुर्ब पाओगे। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाता है : ऐ जिब्राईल ! जिन्हों ने मेरे कलाम से लज़्ज़त ह़ासिल की, मुझ से राह़त चाही मैं उन की ख़ल्वतों में उन से बाख़बर होता हूं, उन की गिर्या व ज़ारी और आहो बुका सुनता हूं, उन के बे चैनी से चेहरा फेरने और कोशिश करने को देखता हूं। फिर अल्लाह तआ़ला उन से पूछता है : येह रोना कैसा है जो मैं सुन रहा हूं ? येह गिर्या व ज़ारी क्यूं है जो मैं देख रहा हूं ? क्या तुम ने कभी सुना है या तुम्हें किसी ने कहा है कि मुह़िब्ब अपने मह़बूबों को आग का अ़ज़ाब देगा ? क्या तुम्हें किसी ने बताया है कि मैं अपने पनाह मांगने वालों को धुत्कार दूंगा ? मेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! मैं तुम्हें ज़रूर जन्नत अ़ता करूंगा। तुम्हारे लिये ह़िजाब और पर्दे उठा दूंगा और आंसूओं के इ़वज़ ख़ुशियां और बिशारतें अ़ता करूंगा।

हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस बन्दे की आंखों से ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के सबब आंसू निकल कर चेहरे तक पहुचते हैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को आग पर ह़राम फ़रमा देता है अगर्चे वोह मख्खी के सर के बराबर हों।"

(سنن ابن ماجة،ابواب الزهد ، باب الحزن والبکاء، الحديث ٤١٩٧ ، ص ٢٧٣٢)

ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बे رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हिन्द के पहाड़ पर सो साल सजदे में रोते रहे यहां तक कि आप के आंसू सरनदीब (सीलोन, श्रीलंका) की वादी में बहने लगे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस वादी में आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के आंसूओं से दारचीनी और लौंग वग़ैरा की फ़स्लें उगाईं और उस वादी में मोर पैदा किये। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : अपना सरे अन्वर उठाइये, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) को बख़्श दिया है।" आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपना सर उठाया। फिर ख़ानए का'बा के पास आ कर त़वाफ़ किया, अभी त़वाफ़ के सात चक्कर मुकम्मल न किये थे कि आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आंसूओं में भीग गए।"

(موسوعة للامام ابن ابی الدنيا، کتا ب الرقة والبکاء، الحديث ٣٢٤، ج٣، ص٢٣٥)

ऐ गुनहगार इन्सान ! अपने जद्दे अमजद की ह़ालत में ग़ौरो फ़िक्र कर और जो कुछ उन के साथ मुआ़मला हुवा उसे याद कर तेरे लिये इतना ही काफ़ी होगा। ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام चालीस दिन तक सजदे की ह़ालत में रोते रहे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ह़या के सबब कभी (आस्मान की त़रफ़) अपना सर न उठाया और इतना रोए कि आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के आंसूंओं से घास उग आई और आप عَلَيْهِ السَّلَام के सर को ढांप लिया। फिर आप عَلَيْهِ السَّلَام को आवाज़ दी गई : "ऐ दावूद ! क्या तू भूका है कि तुझे

खाना खिलाया जाए या प्यासा है कि तुझे सेराब किया जाए या बे लिबास है कि तुझे कपड़े पहनाए जाएं या मज़्लूम है कि तेरी मदद की जाए ?'' तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने बुलन्द आवाज़ से ऐसी गिर्या व ज़ारी की जिस की तपिश से घास सूख गई। फिर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने आप عَلَیْہِ السَّلَام की तौबा क़बूल फ़रमाई और लग़्ज़िश मुआफ़ फ़रमा दी। फिर आप عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : ''ऐ रब्ब عَزَّ وَجَلَّ ! तू मेरी लग़्ज़िश मेरी हथेली में ज़ाहिर फ़रमा दे।''

तो आप عَلَیْہِ السَّلَام की लग़्ज़िश हथेली में लिख दी गई। जब आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपनी हथेली खाने वग़ैरा के लिये दराज़ करते तो आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के सामने बैठा हुवा शख़्स उस को देख लेता। आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास गिलास लाया जाता जिस में दो तिहाई पानी होता। उसे पकड़ने के लिये अपना हाथ दराज़ करते और अपनी लग़्ज़िश देखते तो गिलास न रखते यहां तक कि वोह आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के आंसूओं से भर जाता। फिर आप عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : ''**या अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! क्या तू मेरे रोने पर रह़्म नहीं फ़रमाएगा ?'' अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने वह़्य फ़रमाई : ''ऐ दावूद (عَلَیْہِ السَّلَام) ! तुझे अपनी लग़्ज़िश याद नहीं और रोना याद है ? तो आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : ''या इलाही عَزَّ وَجَلَّ ! मैं अपनी लग़्ज़िश कैसे भूल सकता हूं। जब मैं ज़बूर की तिलावत करता था तो पानी का बहाऊ रुक जाता, तेज़ हवा साकिन हो जाती, परन्दे मेरे सर पर साया करते और जंगली जानवर मेरे मेह़राब के पास आ जाया करते थे। या इलाही عَزَّ وَجَلَّ ! क्या येह मेरे और तेरे दरमियान दूरी नहीं ?'' अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने वह़्य फ़रमाई : ''ऐ दावूद (عَلَیْہِ السَّلَام) ! वोह इत़ाअ़त की मह़ब्बत थी और येह मा'सिय्यत की वह़्शत है। ऐ दावूद (عَلَیْہِ السَّلَام) ! आदम (عَلَیْہِ السَّلَام) को मैं ने अपने दस्ते क़ुदरत से बनाया, उस में अपनी त़रफ़ से ख़ास रूह़ फूंकी, मलाइका से उस को सजदा करवाया, उसे इ़ज़्ज़त का लिबास पहनाया और ताज अ़त़ा किया। जब मेरी बारगाह में उस ने तन्हाई की शिकायत की तो मैं ने उस से अपनी बन्दी ह़व्वा का निकाह़ कर दिया, उसे जन्नत में ठहराया ह़त्ता कि उस से लग़्ज़िश हुई तो मैं ने उसे बे सरो सामानी की ह़ालत में जन्नत से उतार दिया कि वोह अपनी समझ से नहीं जानता था कि कहां जाए, वोह चालीस साल तक रोता रहा अगर उस के आंसूओं का वज़्न किया जाए तो तमाम मख़्लूक़ के आंसूओं के बराबर हो जाए।''

(الموسوعة للامام ابن ابی الدنیا، کتاب الرقة والبکاء، الحدیث ٣٨٥، ج٣، ص٢٤٧، مختصراً)

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़त्ह़ मूसिली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَلِی ख़ून के आंसू रोया करते थे जब आप رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی عَلَیْہ का इन्तिक़ाल हुवा तो किसी ने ख़्वाब में देख कर अ़र्ज़ की : ''अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?'' तो आप رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی عَلَیْہ ने जवाब दिया : ''अल्लाह तआ़ला ने मुझे अपनी बारगाह में खड़ा कर के पूछा : ''ऐ फ़त्ह़ ! तेरे रोने की वजह क्या थी ? मैं ने अ़र्ज़ की : ''या रब्ब عَزَّ وَجَلَّ ! तेरे वाजिब ह़क़ से पीछे रह जाने पर।'' तो उस ने फिर इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''तू ख़ून के आंसू क्यूं रोता था ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''या रब्ब عَزَّ وَجَلَّ ! अपने आंसूओं पर ख़ौफ़ था कि येह सह़ीह़ नहीं।'' अल्लाह तआ़ला ने फिर इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''इस से तेरा क्या

इरादा था ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! इस से मेरा मक़्सद सिर्फ़ तेरा दीदार था कि तू मुझे अपना जल्वा दिखा दे, इस के बा'द तेरी मरज़ी जो भी मुआ़मला फ़रमाए।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे अपनी इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम ! तेरे मुहा़फ़िज़ फ़िरिश्ते चालीस साल से मेरी बारगाह में तेरा नामए आ'माल ला रहे हैं जिस में एक गुनाह भी नहीं। पस मैं ज़रूर तुझे इ़ज़्ज़त का लिबास पहनाऊंगा और अपने दीदार से तेरी आंखें ठंडी करूंगा।"

खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह रब्बे मजीद عَزَّوَجَلَّ के ख़ास और पसन्दीदा बन्दे हैं। मक़्सूद की त़रफ़ सबक़त लेने वाले और रब्ब عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक पाको साफ़ हैं। ऐ धुत्कारे हुए बदबख़्त शख़्स ! तेरा क्या बनेगा कि तू मा'बूदे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी करने की वजह से इन से जुदा है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुझे अपने नफ़्स पर गिर्या व ज़ारी करनी चाहिये और उस शख़्स की त़रह़ आहो बुका करनी चाहिये जिसे रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से धुत्कार कर दूर कर दिया गया हो।

وَصَلَّى اللّٰه عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ وَ سَلَّم تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا

चार नसीहतें

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम *عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم* ***इरशाद फ़रमाते हैं :***

"मैं कोहे लुबनान में कई औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى की सोह़बत में रहा उन में से हर एक ने मुझे यही वसिय्यत की कि जब लोगों में जाओ तो इन चार बातों की नसीह़त करना : (1) जो ***पेट भर कर*** *खाएगा उसे इ़बादत की लज़्ज़त नसीब नहीं होगी। (2) जो* ***ज़ियादा सोएगा*** *उस की उ़म्र में बरकत न होगी। (3) जो सिर्फ़* ***लोगों की ख़ुश्नूदी*** *चाहे वोह रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ से मायूस हो जाएगा। (4) जो ग़ीबत और* ***फ़ुज़ूल गोई*** *ज़ियादा करेगा वोह दीने इस्लाम पर नहीं मरेगा।"*

(मिन्हाजुल आ़बिदीन स. 107)

बयान 11: फ़ुक़राए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن के फ़ज़ाइल

ह़म्दे बारी तआला :

सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने अपनी मख़्लूक़ में से औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی को पसन्द फ़रमाया पस वोह उस की मुलाक़ात के मुश्ताक़ हैं। उस की मह़ब्बत उन के दिलों में मह़फ़ूज़ है। उन के चेहरे तेरे सामने उन के दिलों के अन्वार ज़ाहिर करेंगे। वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नूरे जमाल से मा'रिफ़त ह़ासिल करते हैं। उन की सांसों की कस्तूरी से पूरी काइनात मुअ़त्तर है। वोह गोशा नशीनी के ख़ैमों में रिहाइश पज़ीर हैं। सह़री की मीठी हवा उन की ख़ुश्बू को उठा ले जाती है और तमाम मख़्लूक़ उस मुअ़त्तर हवा में सांस लेती है। अगर बादशाह उन की मए इश्क़ का एक क़त़रा चख लें तो दुन्या को ठुकरा दें। जब वोह अपनी नग़मगी आवाज़ में रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ का कलाम पढ़ते हैं तो तू उन्हें बेदार, मदहोश और ग़ाईबो ह़ाज़िर की त़रह़ पाएगा। जब उन का इश्क़ जोश मारता है तो वोह पहाड़ों में मारे मारे फिरते हैं। अगर तू उन में से किसी को देखेगा तो दीवाना समझेगा बिला शुबा वोह अपने मौला عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत में गिरवीदा हैं। पस पहाड़ ज़मीन की मैख़ें और वोह पहाड़ों की मैख़ें हैं। अगर वोह न हों तो लोगों की नाफ़रमानियों की वजह से ज़मीन हिलने लगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन को उन से ख़ाली नहीं रखा और न ही नेक लोग हम से अलग होते हैं। पहाड़ उन पर सलामती भेजते हैं। वह़शी जानवर उन से मानूस होते हैं। चोपाए उन से बरकत ह़ासिल करते, दरख़्त उन का क़ुर्ब पाते हैं। नसीमे सह़र उन से मुलाक़ात करती है। उन की सांसें शयात़ीन को जला देती हैं। शैत़ान उन की सजदागाहों की त़रफ़ नहीं जाता और न ही उन के क़रीब जाता है। अहले दुन्या उन्हें दुन्या के ख़ज़ाने पेश करते हैं मगर वोह उन की त़रफ़ आंख उठा कर भी नहीं देखते। जिन पहाड़ों पर उन के क़दम पड़ते हैं वोह दीगर पहाड़ों पर फ़ख़्र करते हैं। **उन के क़दमों की ख़ाक आंखों का सुर्मा है।**

जब फ़िरिश्ते उन के आ'माल नामे ले कर आसमान की त़रफ़ बुलन्द होते हैं तो उन की ख़ुश्बू से आस्मान मुअ़त्तर हो जाते हैं, फ़िरिश्ते उन को देख कर मुतअ़ज्जिब होते हैं और उन के असरारे मा'रिफ़त पर मुक़र्रब फ़िरिश्ते और ख़ास इन्सान भी आगाह नहीं होते। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन से इरशाद फ़रमाता है : "तुम्हारे पास मेरी मह़ब्बत के सिवा कुछ नहीं, मैं ह़बीब हूं और तुम मुझ से मह़ब्बत करते हो।" जब वोह दुन्या से तशरीफ़ ले जाते हैं तो अहले दुन्या उन की जुदाई पर ग़मगीन होते हैं लेकिन जन्नत उन के इश्तियाक़ में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अ़र्ज़ करती है, "तेरे मह़बूब बन्दे कब मुझ में जल्वा अफ़रोज़ होंगे।" वोह जन्नत के मह़ल्लात में रहेंगे। उस के बरतनों में मशरूब पिएंगे। उस की हूरों से नफ़्अ़ ह़ासिल करेंगे। उस के बाग़ात में सैर करेंगे। उस के बालाख़ानों में रहेंगे। उ़म्दा क़िस्म की सुवारियों पर सुवार होंगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कलाम को सुनेंगे और उस के दीदार से

मुशर्रफ़ होंगे। येह उन हस्तियों का मक़ामो मर्तबा है। ऐ सुस्ती और ग़फ़्लत बरतने वालो ! तुम ने क्या ज़ख़ीरा किया ? अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का फ़रमाने अ़ज़ीम है :

لِمِثْلِ هٰذَا فَلْیَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ O (٣٢، الصّٰفّٰت:٦١) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐसी ही बात के लिये कामियों को काम करना चाहिये।

सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, बिइज़्ने परवर दगार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तीन चीज़ें अफ़्ज़ल हैं : (1)......फ़क्र (2)......इ़ल्म और (3)......ज़ोहद।"

फ़क्र क्या है ?

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि एक शख़्स नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़क्र क्या है ?" आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है।" उस ने दोबारा अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم! फ़क्र क्या है ?" तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की अ़ताओं में से एक अ़ता है।" उस ने तीसरी बार फिर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! फ़क्र क्या है ?" तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "येह वोह चीज़ है जो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ अपने नबी, रसूल और मुअ़ज़्ज़ज़ व मुकर्रम बन्दे के सिवा किसी को अ़ता नहीं फ़रमाता।"

अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ السَّلَام और फ़ुक़रा की तख़्लीक़ जन्नत की मिट्टी से हुई :

हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया व मुर्सलीन, जनाबे रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "फ़क़ीर वोह है जिस की भूक और मरज़ का लोगों को इ़ल्म न हो। अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने मख़्लूक़ को ज़मीन की मिट्टी से और अम्बिया व फ़ुक़रा को जन्नत की मिट्टी से पैदा फ़रमाया। तो जो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की अमान चाहे उसे चाहिये कि फ़ुक़रा की इ़ज़्ज़त करे।"

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रोबर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त बयान है : "जन्नत के आठ दरवाज़े हैं, उन में से सात फ़ुक़रा के लिये और एक अग़्निया के लिये है और जहन्नम के सात दरवाज़े हैं, उन में से छे फ़ुक़रा पर ह़राम और अग़्निया के लिये ह़लाल हैं और एक दरवाज़ा फ़ुक़रा के लिये है।"

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के नज़्दीक सब से पसन्दीदा लोग फ़ुक़रा हैं। क्यूंकि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ को सब से ज़ियादा मह़बूब अम्बियाए किराम हैं और उस ने उन्हें फ़क्र में मुब्तला फ़रमाया।"

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ रिवायत फ़रमाते हैं : "ऐ लोगो ! तुम्हें फ़ाक़ा व तंगदस्ती इस बात पर न उभारे कि तुम हराम तरीक़े पर रिज़्क़ तलब करने लगो । बेशक मैं ने शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमेना के लाल صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह दुआ फ़रमाते हुए सुना : "اَللّٰھُمَّ تَوَفَّنِیْ فَقِیْرًا وَلَا تَتَوَفَّنِیْ غَنِیًّا وَاحْشُرْنِیْ فِیْ زُمْرَۃِ الْمَسَاکِیْن" या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे फ़क़ीरी में मौत अता फ़रमा, अमीरी में मौत न दे और मुझे मसाकीन की जमाअत में उठा ।"

(شعب الایمان للبیہقی، باب فی قبض الید عن الا موال المحرمۃ، الحدیث ۵۴۹۹، ج۴، ص۳۸۹)

उ-लमा हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के वारिष और फ़ुक़रा दोस्त हैं :

सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, बिइज़्ने परवर दगार صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस उम्मत के उ-लमा और फ़ुक़रा की तरफ़ नज़रे रहमत फ़रमाता है । उ-लमा मेरे वारिष और फ़ुक़रा मेरे दोस्त हैं ।"

(فردوس الاخبار للدیلمی،باب الطاء،الحدیث ۳۷۵۱،ج۲،ص۴۷،مختصر)

हज़रते सय्यिदुना शफ़ीक़ ज़ाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد से मरवी है कि "**फ़ुक़रा ने तीन चीज़ें इख़्तियार कीं :** (1)......राहते नफ़्स (2)......दिल की फ़रागत और (3)......हल्का हिसाब । **और अग़निया ने भी तीन चीज़ें इख़्तियार कीं** (1)......नफ़्स की थकावट (2)......दिल की मश्ग़ूलिय्यत और (3)......हिसाब की सख़्ती ।"

(احیاء علوم الدین،کتاب الفقر والزھد،بیان فضیلۃ الفقر علی الغنی، ج۴، ص۲۰۱)

एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ इरशाद फ़रमाते हैं : फ़ुक़रा की फ़ज़ीलत पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने आलीशान दलील है, चुनान्चे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

وَاَقِیْمُوا الصَّلٰوۃَ وَاٰتُوا الزَّکٰوۃَ (پ۱،البقرۃ:۴۳) ﴿1﴾ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो ।*[1]

या'नी नमाज़ मेरे लिये क़ाइम करो और ज़कात फ़ुक़रा को दो । यहां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने हक़ के साथ फ़ुक़रा का हक़ मिला दिया ।

फ़क़ीर, ग़नी के लिये तबीब, धोबी, क़ासिद और निगहबान है :

मन्क़ूल है कि फ़क़ीर ग़नी के लिये तबीब, धोबी, क़ासिद और निगहबान है । तबीब इस लिये कि जब ग़नी बीमार होता है तो फ़क़ीर पर सदक़ा करता है और जब फ़क़ीर उस के लिये दुआ करता है तो वोह मरज़ से बरी हो जाता है । धोबी इस लिये कि ग़नी जब फ़क़ीर पर सदक़ा करता है तो येह उस के लिये दुआ करता है तो ग़नी गुनाहों से पाक हो जाता है और उस का माल भी साफ़ हो

---

❶....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : "इस आयत में नमाज़ व ज़कात की फ़र्ज़िय्यत का बयान है और इस तरफ़ भी इशारा है कि नमाज़ों को उन के हुक़ूक़ की रिआयत और अरकान की हिफ़ाज़त के साथ अदा करो । **मस्अला :** जमाअत की तरग़ीब भी है, हदीष शरीफ़ में है : जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना तन्हा पढ़ने से सत्ताईस दर्जा ज़ियादा फ़ज़ीलत रखता है ।"

जाता है। क़ासिद इस लिये कि ग़नी जब फ़क़ीर पर अपने मर्हूम वालिदैन या अक़रबा की त़रफ़ से सदक़ा करता है और इस का षवाब मुर्दों को पहुंचता है तो यूं फ़क़ीर उस का क़ासिद बन जाता है। निगहबान इस लिये कि ग़नी जब सदक़ा करता है और फ़क़ीर उस के लिये दुआ़ करता है तो उस की दुआ़ से ग़नी का माल मह़फ़ूज़ हो जाता है।

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का वली क़ब्र से ग़ाइब हो गया :

जब ह़ज़रते सय्यिदुना षाबित बुनानी رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه का विसाल हुवा और उन्हें दफ़्न किया गया तो ईंटें बराबर करते हुए एक ईंट गिर गई। ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन हुसैन رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि मैं ने ईंट निकालने के लिये क़ब्र में हाथ डाला तो किसी को न पाया। मैं बड़ा ह़ैरान हुवा लेकिन किसी को येह बात न बताई और इसी सोच में ह़ज़रते सय्यिदुना षाबित बुनानी رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه के घर आ गया। मैं ने आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه की बेटी से ता'ज़िय्यत की और उस से दर्याफ़्त किया : "वोह कौन सी दुआ़ या बात अकषर कहा करते थे।" तो उन की बेटी ने जवाब दिया : "मैं उन्हें अकषर रोते और येह आयते करीमा तिलावत करते हुए देखती थी : "رَبِّ لَا تَذَرْنِیْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَیْرُ الْوٰرِثِیْنَ ۝ (پ۱۷، الانبیآء: ۸۹) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ मेरे रब्ब ! मुझे अकेला न छोड़ और तू सब से बेहतर वारिष।" तो मैं ने कहा : यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना षाबित رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه की दुआ़ क़बूल फ़रमा ली है।

नौजवान बुज़ुर्ग :

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैं ने एक पहाड़ के दामन में परेशान ह़ाल नौजवान देखा जिस के आंसू रुख़्सारों पर बह रहे थे। मैं ने उस से पूछा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़म फ़रमाए, तुम कौन हो ?" उस ने जवाब दिया : "मैं अपने आक़ा से भागा हुवा एक ग़ुलाम हूं।" तो मैं ने उस से कहा : "वापस लौट जा और मुआ़फ़ी मांग ले।" तो उस ने कहा : "मा'ज़िरत के लिये कोई दलील होनी चाहिये एक ना फ़रमान कौन सा उ़ज़्र पेश करे ?" तो मैं ने उसे मश्वरा दिया : "ऐसे शख़्स से राबित़ा क़ाइम कर जो उस के हां तेरी सिफ़ारिश करे।" तो वोह कहने लगा : "सब सिफ़ारिश करने वाले उस से डरते हैं।" उस की येह बात सुन कर मैं ने उस से पूछा : "वोह कौन है ?" तो उस ने बताया कि "कि वोह मेरा मौला عَزَّوَجَلَّ है जिस ने बचपन में मुझे पाला लेकिन जवान हो कर मैं ने उस की ना फ़रमानी की। मुझे उस से शर्मिन्दगी होती है कि मैं उस से ख़ूबसूरत शक्ल और बुरे फ़े'ल से मिलूंगा।" फिर उस ने एक चीख़ मारी और उस के साथ ही उस की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। उसी वक़्त एक बुढ़ी औ़रत कहीं से आ पहुंची और कहने लगी : "इस ग़म और मुसीबत के मारे हुए इन्सान की मरने पर किस ने मदद की ?" मैं ने उस से अ़र्ज़ की : "इस की तजहीज़ो तक्फ़ीन पर मैं आप की मदद करूंगा।" तो वोह बोली : "इस को अपने मारने वाले के सामने इसी ह़ालत में छोड़ दो, मुमकिन है कि इस ह़ालत में देख कर वोह उस पर रह़म फ़रमा दे।"

हंसने वाला मुख़्लिस नौजवान :

हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन हुसैन رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की बारगाह में हाज़िर था और आप इर्द गिर्द बैठे हुए लोगों को बयान फ़रमा रहे थे। सब लोग रो रहे थे मगर एक नौजवान हंस रहा था। हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने उस से पूछा : "ऐ नौजवान ! तुझे क्या है ?" लोग रो रहे और तुम हंस रहे हो ?" तो उस ने जवाब दिया : "लोग या तो जहन्नम के ख़ौफ़ से इबादत करते हैं और नजात को ही अपना अज्र समझते हैं या जन्नत में जाने के लिये इबादत करते हैं ताकि उस के बाग़ों में रहें और उस की नहरों से पियें। लेकिन मेरा ठिकाना न तो जन्नत है और न ही जहन्नम। मैं अपनी महब्बत का बदला नहीं चाहता।" हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने दोबारा उस से पूछा : "अगर उस ने तुम्हें धुत्कार दिया तो क्या करोगे ?" तो उस ने चन्द अश्आर सुनाए जिन का मफ़्हूम येह है : "जब मैं ने महब्बत के बावुजूद विसाल हासिल न किया तो दोज़ख़ में ठिकाना बना लूंगा। फिर जब मुझे सुब्हो शाम अ़ज़ाब होगा तो मेरी चीख़ो पुकार से अहले दोज़ख़ भी तंग आ जाएंगे। जब मैं विसाले यार पाने की कोई राह न पा सका तो गुनहगारों की टोलियां भी मुझ पर गिर्या व ज़ारी करेंगी। ऐ मेरे मालिक عَزَّ وَجَلَّ ! चाहे तू मुझे अ़ज़ाब में मुब्तला कर दे या आज़ाद कर दे, मुझे तेरी मर्ज़ी क़बूल है। अगर मैं अपने दा'वए महब्बत में सच्चा हूं तो मह्ज़ अपने करम से मेरी हालत को तब्दील कर दे और अगर मेरा दा'वए महब्बत झूटा है तो मुझे इस की सज़ा में तवील अ़ज़ाब से दो चार कर दे।" जब वोह चुप हुवा तो एक ग़ैबी आवाज़ आई : "ऐ ज़ुन्नून ! मुख़्लिसीन की अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ से ऐसी महब्बत होती है कि वोह ख़ुशहाली व तंगदस्ती में भी उस से महब्बत करते, ने'मतों और मुसीबतों पर भी उस का शुक्र अदा करते हैं।"

नेक लोग इस लिये सआदत मन्द हो गए क्यूंकि उन्हों ने दुन्या को छोड़ कर अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ को मक़्सूद बनाया जब उन्हों ने इस मक़्सद में रग़बत इख़्तियार की तो इन्हें उस तक पहुंचने से बीवी बच्चों की महब्बत न रोक सकी, उन्हों ने इस राह में आने वाली मशक़्क़त को शहद से ज़ियादा मीठा पाया, उन के लिये शहद भी उन तकालीफ़ जैसा मीठा नहीं, वोह हमेशा अपने महबूब की महब्बत में मसाइब झेलते रहे फिर भी क़ुर्ब की तलब से पीछे न हटे, और उन की अ़ज़मत का येह आ़लम है कि जब वोह किसी शहर से कूच करते हैं तो वोह शहर भी उन के फ़िराक़ में आंसू बहाता है।

एक नौजवान की मुनाजात :

हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि मैं एक पहाड़ पर चल रहा था। अचानक मुझे किसी के रोने और फ़रियाद करने की आवाज़ सुनाई दी मैं उस आवाज़ के पीछे चल पड़ा। येह आवाज़ मोटे कपड़ों में मल्बूस एक नौजवान की थी, जो ज़मीन पर राख बिछा कर

उस पर लोट पोट हो कर यूं मुनाजात कर रहा था : "ऐ मेरे मा'बूद और मेरे मालिक ! तेरी इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम ! मैं ने हरगिज़ तेरी मुख़ालफ़त करते हुए तेरी नाफ़रमानी न की बल्कि उस वक़्त मैं तुझ से ग़ाफ़िल था और मैं तेरे अ़ज़ाब को हल्का भी नहीं समझता। मेरे नफ़्स की सरकशी के सबब शक़ावत व बदबख़्ती मुझ पर ग़ालिब आ गई। तू ने मेरे गुनाहों पर पर्दा डाला तो मैं धोके में पड़ गया और अपनी जहालत और बे वक़ूफ़ी के सबब तेरी ना फ़रमानी की।" अब मुझे तेरे अ़ज़ाब से कौन बचाएगा ? जब तू अपनी रस्सी मुझ से क़त्अ़ कर देगा और मुझे अपनी बारगाह से दूर कर देगा तो मैं किस की रस्सी थामूंगा ? हाए अफ़्सोस ! तेरी बारगाह में खड़ा होना पड़ेगा, हाए नदामत ! तेरी बारगाह में पेशी होगी, मैं ने कितनी बार तौबा की लेकिन फिर गुनाहों की त़रफ़ लौट आया, कितनी बार अ़हद किया फिर अ़हद तोड़ दिया।"

कर के तौबा फिर गुनाह करता है जो
मैं वोही बदकार हूं कर दे करम !

وَصَلَّى اللّٰه عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ وَ سَلَّم تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا

__दा'वते इस्लामी__ के सुन्नतों की तर्बिय्यत के __मदनी क़ाफ़िलों__ में सफ़र और रोज़ाना __फ़िक्रे मदीना__ के ज़रीए __मदनी इन्आ़मात__ का रिसाला पुर कर के हर मदनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दा'वते इस्लामी के) ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से __पाबन्दे सुन्नत__ बनने, __गुनाहों से नफ़रत__ करने और __ईमान की ह़िफ़ाज़त__ के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

बयान 12 : बा'ज़ सलफ़े सालिहीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تعالٰی के वाक़िआत

(इस बाब में ह़ज़रते सय्यिदुना शोऐब हरीफ़ीश رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی علیہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ज़्ज़ुद्दीन मक़्दसी علیہ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی का कलाम नक़्ल फ़रमाया है।)

ह़म्दे बारी तआ़ला :

सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो ह़क़ को ज़ाहिर फ़रमाने वाला है, अपने वा'दों को पूरा करने वाला है। बन्दे की सआ़दत व शक़ावत उसी के दस्ते क़ुदरत में है, गुनाहों को मिटाने वाला, पर्दापोशी फ़रमाने वाला, दिलों की प्यास बुझाने वाला, अपने इ़श्क़ की बीमारी लगाने वाला और शिफ़ा देने वाला है, ग़मों को दूर करने वाला है, बादल को पैदा करने वाला और उसे भेजने वाला है। बिजली को चमकाने वाला और उस से रोशनी ज़ाहिर करने वाला है, बिजली को गरज की आवाज़ देने वाला है, दरख़्तों को पत्ते देने वाला और उन्हें परवान चढ़ाने वाला है, कलियों को ह़ुस्न और ख़ूबसूरती देने वाला है, फलों को कड़वा और मीठा बनाने वाला है, मां के पेट में बच्चे की तस्वीर बनाने वाला और उसे ग़िज़ा देने वाला है, ह़क़ को षाबित करने वाला और उसे बाक़ी रखने वाला है, बात़िल को ग़लत़ षाबित करने वाला मिटाने वाला है। उस ने मख़्लूक़ को अपनी पहचान कराई तो उस के बन्दे ह़ैरानो परेशान हो गए और उस की मा'रिफ़त की राहें दुश्वार हो गईं और सालिकीन ने मैदानों में बिस्तर जमा दिये और फिर अ़क़्लों की त़रफ़ माइल हुए तो अ़क़्लों ने जवाब दिया : हम तो येह भी नहीं जानतें कि हम कहां से आएं, तो सालिकीन ने फ़िक्रों की त़रफ़ अपना क़ासिद भेजा मगर वोह ऐसी जगह भटक गया जहां हर समझदार भी भटक जाता है। फिर उन्हों ने अ़क़्लों के साथ बसीरतों के चराग़ रोशन किये और नूरे ईमान के साथ रहनुमाई ह़ासिल की, जब भी चराग़ उन के लिये रोशन होते हैं तो वोह चलने लगते हैं। जब वोह इरफ़ान की मन्ज़िल तक पहुंचे तो **अल्लाह** तआ़ला की बड़ाई उन के लिये ग़ैर मानूस हो गई और उस की किब्रियाई उन से छुप गई। फिर वोह दिलों की त़रफ़ पलटे तो दिलों ने कहा : हम तो हर ऐ़ब से मुनज़्ज़ा व मुबर्रा عَزَّوَجَلَّ के घर हैं, और घर वाला ही उस में मौजूद शै के मुतअ़ल्लिक़ ज़ियादा जानता है।

फिर उन्हों ने अस्माए इलाहिय्या عَزَّوَجَلَّ से रहनुमाई चाही तो अस्मा ने जवाब दिया : हम तो उस को नाम देने की त़ाक़त नहीं रखते फिर वोह सिफ़ात की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए तो सिफ़ात ने भी येही कहा कि हम उसे ज़ाहिर करने की त़ाक़त नहीं रखतें फिर वोह कलिमात की त़रफ़ बढ़े तो कलिमात ने कहा : हम तो सिर्फ़ कलिमात हैं जो वह़्य किये जाते हैं। इस के बा'द उन्हों ने अ़र्श से इल्तिमास करते हुए अ़र्ज़ की : "क्या तू अपने क़ुर्ब के सबब उस की ज़ात तक पहुंचा सकता है या उस के क़रीब कर सकता है?" तो मदहोशी में डूबे हुए और ह़ैरत में फ़ना अ़र्श ने उन्हें पुकार कर कहा : "मैं उस का इह़ात़ा नहीं कर सकता कि उस की पहचान ह़ासिल कर सकूं, और मैं उस को

उठाए हुए नहीं कि उस के मुतअ़ल्लिक़ कुछ बता सकूं, मैं उस के साथ मिला हुवा भी नहीं कि मेरा मक़ाम उस से क़रीब हो और न उस से जुदा हूं कि मेरा मक़ाम उस से दूर हो। यक़ीनन तुम ने मुझ से ऐसे अम्र का सुवाल किया है जो मैं नहीं जान सकता और तुम ने ऐसे राज़ से पर्दा उठाया है कि मैं भी हमेशा उस की तलाश और सुराग़ में रहा मगर मुझे ह़ैरत और भटकने के सिवा कुछ न मिला।'' येह सुन कर सालिकीन कहने लगे : ''अगर तू भी उस की मा'रिफ़त ह़ासिल न कर सका तो उस बुलन्द व बरतर ज़ात से तेरे क़ुर्ब का क्या फ़ाइदा ! हालांकि लोगों ने तो तुझे बुलन्द रुत्बा क़रार दिया है ?''

तो अ़र्श बोला : ''मेरा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ऐसा ही क़ुर्ब है जैसा सांस का अपनी नालियों से है और मेरी उस से ऐसी ही दूरी है जैसी तीर चलाने वाले से तीर की होती है, मैं उस की बारगाह में ऐसा ही ह़क़ीर हूं जैसे ग़ुलाम अपने मालिकों के सामने होता है, मुझे भी उस का इतना ही इश्तियाक़ है जितना आ़शिक़ को अपने मह़बूब से मुलाक़ात के अय्याम का शौक़ होता है।'' उन्हों ने दोबारा कहा : ''फिर तू रब्ब عَزَّوَجَلَّ के मुतअ़ल्लिक़ क्या कहता है ?'' तो अ़र्श कहने लगा : मैं वोही कहता हूं जो उस की तलाश में सर गर्दां और अपनी उम्मीदें न पाने वाला कहता है।'' सालिकीन ने कहा : ''जब तू उस की ता'रीफ़ करे तो हर ऐ़ब से उस की पाकी बयान कर और किसी शै को उस के मुशाबे क़रार देने से बच और यूं कह : वोह ऐसा अव्वल है कि कोई अव्वल उस का षानी नहीं और ऐसा आख़िर है कि कोई आख़िर उस के क़रीब नहीं, ऐसा ज़ाहिर है कि कोई ज़ाहिर उस के मुशाबे नहीं, ऐसा बात़िन है कि कोई बात़िन उस की बराबरी नहीं कर सकता, ऐसा दूर है कि कोई मसाफ़त उस जितनी नहीं हो सकती, ऐसा क़रीब है कि तू जब चाहे उस से मुलाक़ात कर ले, ऐसा वाह़िद है कि कोई वाह़िद उस के मुक़ाबिल नहीं, वोह ऐसा यक्ता है जिस की कोई इन्तिहा नहीं कि उस की ह़द ख़त्म हो जाए, अगर तू उस से ख़ालिस दोस्ती रखे तो वोह तुझे अपने पसन्दीदा जाम से पाको साफ़ शरबत पिलाएगा और अगर उस की मह़ब्बत का जाम पी लिया जाए तो पीने वाला दूसरों को पिलाने वाला बन जाता है।

या इलाही ! मेरा मक़्सूद बस तू ही तू है, और तारीकियों में मेरे लिये नूर और रोशनी है। या इलाही ! तेरे तो मेरे इ़लावा भी बहुत बन्दे हैं मगर मेरे लिये तेरे सिवा कोई नहीं, मैं ने जहालत के सबब तेरी ना फ़रमानी की और बुरे अफ़आ़ल के बा वुजूद तुझ से दुआ़ की फिर भी तू ने अपने फ़ज़्लो करम से मेरी दुआ़ क़बूल फ़रमाई और मैं ने तेरी त़रफ़ रुजूअ़ किया तो तू ने मेरी उम्मीद पूरी कर दी, मैं ने तेरी बारगाह में अपने दिल की बीमारी का शिकवा किया तो तू ने मेरी तकलीफ़ ज़ाइल फ़रमा दी और मुझे फ़ौरन शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा दी, कितने ही ख़त़रात और मुश्किलात ने मुझे घेरा मगर तू ने मेरी भरपूर इआ़नत की और दुश्मनों के ख़िलाफ़ मेरी मदद फ़रमाई। ऐ मुश्किलात और तकालीफ़ में मेरी उम्मीदगाह ! तेरे लिये ही सब ता'रीफ़ें हैं।

पूरा शहर मुसलमान हो गया :

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं कि ''मैं ने एक साल ह़ज का अ़ज़्म किया। जब ऊंटनी पर सुवार हुवा तो उस का रुख़ का'बा की त़रफ़ ही था लेकिन जब मैं ने

उस की गरदन पर हाथ मारा तो वोह कुसतुनतुन्या (इस्तम्बूल) की त़रफ़ मुड़ गई। मैं ने कई मरतबा उस का रुख़ मोड़ा मगर वोह क़िब्ला की त़रफ़ न मुड़ी, मैं ने अपने दिल में कहा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस में ज़रूर कोई राज़ पोशीदा है।" मैं ने उस की मर्ज़ी के मुत़ाबिक़ उसे जाने दिया और अल्लाह तआला की बारगाह में अ़र्ज़ की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू मुझे अपने घर न जाने दे तो मेरे पास उस का कोई ह़ल नहीं, तमाम मुआ़मला तेरे ही पास है।" फ़रमाते हैं कि ऊंटनी तेज़ी से चलती हुई कुस्तुनतुन्या में दाख़िल हो गई। जब मैं शहर में दाख़िल हुवा तो देखा कि लोग फ़ित्ना व फ़साद में मुब्तला हैं। मैं ने एक शख़्स से दर्याफ़्त किया कि इस का सबब क्या है ? तो उस ने बताया : "बादशाह की बेटी की अ़क़्ल ज़ाइल हो गई है और लोग कोई ऐसा त़बीब तलाश कर रहे हैं जो उस का इ़लाज कर सके।"

मैं ने दिल में कहा : "मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ की इ़ज़्ज़त की क़सम ! इसी काम के लिये मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे इस साल ह़ज से रोक दिया है।" मैं ने उन लोगों को बताया : "मैं त़बीब हूं।" उन्हों ने पूछा : "क्या आप इ़लाज करेंगे ?" मैं ने कहा : "हां ! اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ ।" लोगों ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे बादशाह के पास ले गए। उस ने अपनी बेटी का इ़लाज मेरे ज़िम्मे लगा दिया। मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मदद त़लब की और कमरे में दाख़िल हो गया, मैं ने वहां लोहे की खनक सुनी और कोई कहने वाला कह रहा था : "ऐ जुनैद (رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْه) ! ऊंटनी ने तुझे हमारी त़रफ़ लाने की कितनी कोशिश की जब कि तू उसे का'बए मुशर्रफ़ा की त़रफ़ फैरता रहा।" इस कलाम से मेरी अ़क़्ल खो गई फिर मैं अन्दर दाख़िल हुवा तो ऐसी लड़की देखी कि देखने वालों ने उस से ज़ियादा ह़सीन लड़की न देखी होगी, वोह ज़न्जीरों में जकड़ी हुई थी, मैं ने उस से पूछा : "येह कैसी ह़ालत है ?" तो उस ने जवाब दिया : "ऐ दिलों के त़बीब ! मुझे कोई ऐसा काम बताइये जिस से मैं ग़म से नजात पा जाऊं।" "मैं ने उसे कहा : لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ (صَلَّى الله تعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) पढ़।" उस ने बुलन्द आवाज़ से कलिमा पढ़ा तो हथकड़ियां और बेड़ियां खुल गईं। जब उस के बाप ने देखा तो कहने लगा : "आप कितने अच्छे त़बीब हैं और आप की दवा कितनी अच्छी है। मेरा इ़लाज भी इसी दवा से कर दीजिये जिस से इस का इ़लाज किया है।"

तो मैं ने कहा : "तुम भी पढ़ो : لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ (صَلَّى الله تعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) फिर उस की मां आई, वोह भी देख कर बहुत ख़ुश हुई और मुसलमान हो गई। फिर उस शहर में रहने वाले सब लोग मुसलमान हो गए। इस पर मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द की और रवानगी का इरादा किया तो वोह लड़की कहने लगी : "ऐ जुनैद (رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْه) ! जाने की जल्दी न कीजिये, मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की है कि आप की मोजूदगी में मेरा इन्तिक़ाल हो, आप मेरी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाएं और दफ़्न करें।" फिर उस ने कलिमए शहादत पढ़ कर मौत का जाम नोश कर लिया।

औलियाए किराम के लिये ज़मीन सिमट जाती है :

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "मैं बसरा में पांचों नमाज़ें मक़ामी मस्जिद में पढ़ा करता था जो "मस्जिदुल ख़श्शाबीन या'नी लकड़ियां बेचने वालों की मस्जिद" के नाम से मा'रूफ़ थी और उस के इमाम मग़रिब से तअ़ल्लुक़ रखते थे, जिन को अबू सईद कहा जाता था जो नेकी के कामों में मश्हूर थे और मस्जिद में नमाज़े फ़ज्र के बा'द बयान किया करते थे। एक साल मैं ह़ज के लिये रवाना हुवा। वोह शदीद गरमी का साल था। आ़म तौ़र पर रात को मैं अपने रुफ़क़ा से आगे निकल जाता और सो जाता फिर मेरे दोस्त मुझे आ मिलते, एक रात इसी त़रह़ मैं रास्ते से हट कर सोया हुवा था कि क़ाफ़िला आगे निकल गया और मेरे दोस्तों को मेरी ख़बर तक न हुई, मैं सोया रहा यहां तक कि सूरज तुलूअ़ हो गया। जब बेदार हुवा तो मैं नहीं जानता था कि येह कौन सा रास्ता है, मैं ने अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! तू मुझे कहां ले आया और अपने घर से भी दूर कर दिया।" बहर ह़ाल मैं चलता रहा यहां तक कि थक गया। गरमी भी शदीद थी, मैं ज़िन्दगी से मायूस हो गया और रैत के टीले पर मौत का इन्तिज़ार करने लगा। अचानक मैं ने देखा कि एक शख़्स मुझे पुकार रहा है, मैं खड़ा हुवा, देखा तो वोह हमारे इमामे मस्जिद ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू सईद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمَجِیْد थे। उन्हों ने पूछा : "क्या आप भूके हैं ? मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां।" तो उन्हों ने मुझे एक गरमा गरम रोटी दी, मैं ने खाई तो मेरी सांस बह़ाल हो गई, मुझे प्यास लगी तो उन्हों ने मुझे एक चमड़े का थेला दिया जिस में शहद से ज़ियादा मीठा और बर्फ़ से ज़ियादा ठंडा पानी था। मैं ने पिया और चेहरे को भी धोया तो मेरी ताज़गी और राह़त लौट आई।

फिर उन्हों ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : "मेरे पीछे चलो।" मैं थोड़ी देर तक आप के पीछे चला तो मक्कए मुकर्रमा जा पहुंचा। उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : "यहीं ठहर जाओ, तीन दिन बा'द तुम्हारे दोस्त यहां पहुंच जाएंगे।" फिर मुझे एक रोटी दे कर चले गए मैं ने उस रोटी का एक ही लुक़्मा खाया तो सैर हो गया। मैं ने वोह रोटी तीन दिन अपने पास रखी यहां तक कि मेरे रुफ़क़ा आ गए। जब मैं ने अ़रफ़ा में वुक़ूफ़ किया तो ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू सईद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمَجِیْد को एक चट्टान के क़रीब दुआ़ में मश्ग़ूल खड़े हुए देखा। मैं ने सलाम अ़र्ज़ किया, आप رَحْمَۃُاللہِ تعالٰی عَلَیْہ ने फ़ारिग़ हो कर सलाम का जवाब दिया और पूछा : "किसी चीज़ की ज़रूरत तो नहीं ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "दुआ़ फ़रमा दें।" उन्हों ने दुआ़ की फिर हम पहाड़ से उतर आए। इस के बा'द आप رَحْمَۃُاللہِ تعالٰی عَلَیْہ मुझे नज़र न आए। मैं ह़ज अदा कर के बसरा वापस आ गया और घर में रात गुज़ारी। जब सुब्ह़ हुई तो ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू सईद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمَجِیْد के पीछे मस्जिद में सुब्ह़ की नमाज़ पढ़ी। जब आप رَحْمَۃُاللہِ تعالٰی عَلَیْہ नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो मैं ने सलाम और मुसाफ़ह़ा किया। आप رَحْمَۃُاللہِ تعالٰی عَلَیْہ ने मुझ से मुसाफ़ह़ा किया और मेरे हाथ को दबाया। मैं समझ गया कि राज़ को ज़ाहिर नहीं करना। मस्जिद का मुअज़्ज़िन आप رَحْمَۃُاللہِ تعالٰی عَلَیْہ की बहुत ख़िदमत किया करता था,

में ने उस से अय्यामे ह़ज में मस्जिद से ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू सईद عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡمَجِيۡد की अ़दमे मौजूदगी के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो उस ने क़सम खाई कि आप رَحۡمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَيۡه ने पांचों नमाज़ें इसी मस्जिद में अदा फ़रमाईं । तो मैं ने जान लिया कि येह बुज़ुर्ग, इन्सानों के सरदार अब्दाल में से हैं ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुस्समद बग़दादी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡهَادِى फ़रमाते हैं : "मैं बग़दाद से यमन समन्दर के रास्ते सफ़र करता था और हर साल ह़ज किया करता । एक साल मिना व अ़रफ़ा के दरमियान रास्ते में ख़ूबसूरत, साफ़ सुथरे लिबास में मल्बूस एक नौजवान को देखा गोया उस का चेहरा रोशन चराग़ था । वोह सर के नीचे पथ्थर रख कर रैत पर लैटा हुवा मौत से लड़ रहा था या'नी मरने के क़रीब था । मैं ने आगे बढ़ कर उसे सलाम किया और पूछा : "क्या आप को किसी चीज़ की ज़रूरत है ?" तो उस ने जवाब दिया : "हां ! आप मेरे पास खड़े रहें यहां तक कि मैं सांस पूरे कर के अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से जा मिलूं ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "आप मुझ से क्या चाहते हैं ?" उस ने कहा : "जब मैं मर जाऊं तो मुझे दफ़्न कर देना और मेरे कन्धे से येह थेली ले लेना, जब आप यमन में मक़ामे सनआ़ पर पहुंचें तो "दारुल वज़ारह" के मुतअ़ल्लिक़ पूछना । वहां से एक बुढ़िया और उस की बेटियां निकलेंगी, उन को येह थेली दे कर कहना कि मुसाफ़िर उ़ष्मान ने आप को सलाम भेजा है । फिर वोह नौजवान बेहोश हो गया । कुछ देर बा'द जब होश में आया तो येह आयते मुबारका तिलावत कर रहा था :

﴾1﴿ هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحۡمٰنُ وَصَدَقَ الۡمُرۡسَلُوۡنَ ۝ (پ ٢٣، يٰسٓ: ٥٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *येह है वोह जिस का रह़मान ने वा'दा दिया था और रसूलों ने ह़क़ फ़रमाया ।*

फिर उस ने एक चीख़ मारी और दुन्या से कूच कर गया, मैं ने उस को ग़ुस्ल दिया और कफ़न पहनाया, उस का चेहरा नूर से दमक रहा था । मैं ने लोगों के साथ मिल कर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और उसे दफ़्न कर दिया । उस के बा'द थेली ली और यमन पहुंच कर जब उस के बताए हुए घर के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो एक बुढ़ी औ़रत और उस की बेटियां बाहर आईं, मैं ने उन को वोह थेली दी तो वोह उसे देख कर रोने लगीं । बुढ़िया बेहोश हो कर गिर पड़ी । जब उसे होश आया तो मुझ से पूछने लगी : "इस थेली का मालिक कहां है ?" मैं ने उस के मुतअ़ल्लिक़ सब कुछ बता दिया तो वोह कहने लगी : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह मेरा बेटा उ़ष्मान (عَلَيۡهِ رَحۡمَةُالرَّحۡمٰن) था और येह उस की बहनें हैं, उस ने अपने घर वालों, अ़ज़ीज़ों और ख़ादिमों को छोड़ा और चेहरे पर निक़ाब कर के निकल गया, मा'लूम नहीं कहां गया । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें मेरी और मेरे बेटे की त़रफ़ से जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमाए ।" फिर वोह रोने लगी ।

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू सिर्फ़ इ़बादत गुज़ारों पर रह़्म फ़रमाएगा तो इ़बादत में कोताही करने वालों का वाली कौन होगा ? अगर तू सिर्फ़ इख़्लास वालों को क़बूल करेगा तो ख़त़ाकारों का वारिष कौन बनेगा ? अगर तू सिर्फ़ नेकूकारों पर करम करेगा तो आ़सियों पर करम कौन

करेगा ? **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी ह़सरत कितनी बड़ी है कि मैं दूसरों को नसीह़त करता हूं और खुद तुझ से गा़फ़िल हूं। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी मुसीबत कितनी शदीद है कि मैं दूसरों को बेदार करता हूं और खुद गफ़्लत की नींद सोया हुवा हूं। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरा कि़स्सा व माजरा कितना अ़जीब है कि मैं राहे ह़क़ की त़रफ़ दूसरों की रहनुमाई करता हूं और खुद उस की तलाश में ह़ैरान व सर गर्दां हूं। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अपने इस बन्दे पर जूदो करम की बारिश बरसा दे। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जब मैं किसी को तेरी बारगाह का रास्ता दिखाऊं और वोह वहां तक रसाई ह़ासिल कर ले तो क्या तू उसे क़बूल कर लेगा जिस की रहनुमाई की गई है और रहनुमाई करने वाले को धुत्कार देगा ? **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अगर मेरा कलाम ख़ालिसतन तेरी रिज़ा के लिये नहीं तो मेरे इजतिमाअ़ में कोई ऐसा शख़्स भी तो होगा जो सिर्फ़ और सिर्फ़ तेरी रिज़ा के लिये आया होगा। ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! उस के सदक़े मेरी तक़्सीरो कोताही मुआ़फ़ फ़रमा दे और हम सब पर अपना रह़मो करम फ़रमा।

وَصَلَّى اللّٰه عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ وَ سَلَّم تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا

नरमी की फ़ज़ीलत

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم *ने उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा* رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهَا *से इरशाद फ़रमाया : "जिस शख़्स को नरमी से ह़िस्सा मिला उसे दुन्या व आख़िरत की भलाई से ह़िस्सा मिला और जो शख़्स नरमी से मह़रूम रहा वोह दुन्या व आख़िरत की भलाई से मह़रूम रहा।"* (مسند ابى يعلىٰ الموصلى ،مسند عائشه ،الحديث٤٥١٣،ج٤،ص١١٨)

बयान 13 : **जहन्नम का बयान**

हम्दे बारी तआला :

तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने इताअत गुज़ार बन्दों से जन्नत की ने'मतों का वा'दा फ़रमाया और मुन्किरीन को अज़ाबे जहन्नम की वईद सुनाई और जिस ने उस की मज़्बूत बादशाहत का इन्कार किया उस पर अपना ग़ज़ब फ़रमाया, नाफ़रमानों की पर्दापोशी फ़रमाई, अपने गुनाहों का उ़ज़्र पेश करने वालों का उ़ज़्र क़बूल फ़रमाया, जिस ने उस की बारगाह में आंसू बहाए उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दी, जो उस की रिज़ा के लिये शिकस्ता दिल हुवा रब्ब عَزَّوَجَلَّ ने उसे दुरुस्त कर दिया, जो कामयाब हुवा उसी की मदद से हुवा, जिस ने उस के अ़ज़ीम एह़सानात को याद रखा उस को अच्छा बदला अ़ता फ़रमाया। तमाम नूरी मख़्लूक़, दाइरे में घूमता आस्मान, बिजली अपनी चमक दमक के साथ, चलते हुए बादल और हवा, बहती नहरें, दरख़्तों की टहनियां, रंगबेरंगी कलियां, परन्दे अपनी ग़मज़दा आवाज़ में, बाग़ात अपने सब्ज़े के साथ, ख़ुश्क मैदान अपने टीलों के साथ और समन्दर अपनी मछलियों के साथ उस की पाकी बयान करते हैं, हर एक अपनी अनोखी ज़बान में उस की पाकी बयान करता है।

पाक है वोह ज़ात जो मा'बूदे अ़ज़ीम, ज़िन्दा और क़ाइम रखने वाला है, जिस ने रिज़्क़ की तक़्सीम, तै शुदा मौत और हर चीज़ के लिये मुक़र्ररा वक़्त का अन्दाज़ा लगाया, जिस की मा'रिफ़त पाने में अ़क़्ल व समझ ह़ैरान व शशदर है, जिस ने अपने नूरे रह़मत से अपने ख़ास बन्दों के लिये जन्नत बनाई जिन्हें वोह मुहर लगी हुई साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ पाकीज़ा शराब से सैराब करेगा और जहन्नम को अपने शदीद ग़ज़ब से उन नाफ़रमान बन्दों के लिये पैदा किया जिन के लिये शक़ावत लिख दी गई थी, उस में इन्हें हलाकत व बरबादी, अलमनाक अ़ज़ाब और सख़्त डांट डपट होगी, उस के सात दरवाज़े हैं हर दरवाज़े के लिये जहन्नम का एक ह़िस्सा तक़्सीम किया हुवा है। पाक है वोह ज़ात जो सब का ख़ुदा है, हमेशा से अ़ज़ीम, क़ुव्वत वाला, शानो शोकत और ह़ुस्नो जमाल वाला है, अपनी बादशाही में यक्ता है, और वोह हमेशा रहेगा। अपने इताअ़त गुज़ार के लिये जन्नत बनाई अगर्चे वोह ह़ब्शी ग़ुलाम ही हो, और नाफ़रमान के लिये जहन्नम बनाई अगर्चे वोह क़ुरैश का आज़ाद शख़्स ही क्यूं न हो और उस को मुशरिकीन व कुफ़्फ़ार का ठिकाना, बदबख़्तों और फ़ासिक़ों के रहने की जगह बना दिया। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ج (پ٢٤، المؤمن: ٤٦) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *आग जिस पर सुब्ह़ो शाम पेश किये जाते हैं।*(1)

---

1 ......**मुफ़स्सिरे शहीर**, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "उस (आग) में जलाए जाते हैं। ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : "फ़िरऔ़नियों की रूहें सियाह परन्दों के क़ालिब में हर रोज़ दो मरतबा सुब्ह़ो शाम आग पर पेश की जाती हैं और उन से कहा जाता है कि येह आग तुम्हारा मक़ाम है और क़ियामत तक उन के साथ येही मा'मूल रहेगा। **मस्अला :** इस आयत से अ़ज़ाबे क़ब्र के षुबूत पर इस्तिदलाल किया जाता है। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीष में है कि हर मरने वाले पर उस का मक़ाम सुब्ह़ो शाम पेश किया जाता है। जन्नती पर जन्नत का और दोज़ख़ी पर दोज़ख़ का, और उस से कहा जाता है कि येह तेरा ठिकाना है ता आंकि रोज़े क़ियामत **अल्लाह** तआ़ला तुझ को उस की त़रफ़ उठाए।"

इस से छुटकारा भी कैसे हो सकता है क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ج كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا0 (پ١٦، مريم:٧١) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो तुम्हारे रब्ब के ज़िम्मे पर येह ज़रूर ठहरी हुई बात है। [1]

जहन्नम रंजो अलम और ज़िल्लतो रुस्वाई का घर है, इस का इन्कार करने वालों को भी इस से अमान नहीं होगी, उन के लिये हमेशा उस में रहना और उसे भूले रहना लिख दिया गया है, उन्हें उस में निदा दी जाएगी और वोह सुन रहे होंगे :

هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِیْ یُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُوْنَ0 یَطُوْفُوْنَ بَیْنَهَا وَبَیْنَ حَمِیْمٍ اٰنٍ0 (پ٢٧، الرحمٰن٤٣،٤٤) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येह है वोह जहन्नम जिसे मुजरिम झुटलाते हैं, फेरे करेंगे उस में और इन्तिहा के जलते खोलते पानी में।

हाए ! अफ़्सोस ! वोह ऐसा घर है जिस की तकालीफ़ पहुंच कर रहने वाली हैं, जिस की उम्मीदें पूरी नहीं होतीं, जिस के रास्ते तारीक हैं, जिस की हलाकतें ग़ैर वाज़ेह़ हैं, उस के रहने वाले जलता, खोलता हुवा पानी पियेंगे, और हमेशा उस के अ़ज़ाब में मुब्तला रहेंगे, उस में अपनी हलाकत व बरबादी को पुकारेंगे मगर उस में उन की उम्मीदें भी हलाक हो जाएंगी, उन्हें उस की क़ैद से कभी रिहाई न मिलेगी, पे दर पे अ़ज़ाब के सबब वोह उस के कुशादा रास्तों और मुख़्तलिफ़ ह़िस्सों से फ़रियाद करेंगे : ऐ मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! हम पर तेरी वईद षाबित हो गई, ऐ हमारे रब्ब عَزَّوَجَلَّ ! लोहे के गुर्जों ने हमारे टुकड़े टुकड़े कर दिये। ऐ हमारे ख़ालिक़ो मालिक عَزَّوَجَلَّ ! अ़ज़ाब से हमारी खालें पक गई हैं। ऐ मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! हमें जहन्नम से निकाल दे, हम दोबारा नाफ़रमानी नहीं करेंगे। तह़क़ीक़ वोह क़ैद जहन्नमियों का कचूमर निकाल देगी, फिर उन्हें उस में हमेशा रहने का यक़ीन हो जाएगा, वोह मा'बूदे ह़क़ीक़ी के ग़ज़ब में लौटेंगे क्यूंकि दुन्या में उन्हों ने फ़िस्क़ो फ़ुजूर का बाज़ार गर्म किया, कुफ़्फ़ार के साथ मेल जोल बढ़ाया लिहाज़ा जहन्नम को उन का ठिकाना बना दिया जाएगा, येह कितना बुरा ठिकाना है, मुन्किरीन और शुकूको शुब्हात की वादियों में भटकने वालों के लिये कितनी बुरी जगह है, उस में उन का खाना ज़क़्क़ूम (जहन्नम का कांटेदार दरख़्त), पीना जहन्नमियों की पीप और पिघला हुवा सीसा होगा :

كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَیْرَهَا لِیَذُوْقُوا الْعَذَابَ ط (پ٥،النسآء:٥٦) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *जब कभी उन की खालें पक जाएंगी हम उन के सिवा और खालें उन्हें बदल देंगे कि अ़ज़ाब का मज़ा लें।*

1......मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "नेक हो या बद। मगर नेक सलामत रहेंगे और जब उन का गुज़र दोज़ख़ पर होगा तो दोज़ख़ से सदा उठेगी कि ऐ मोमिन गुज़र जा कि तेरे नूर ने मेरी लपट सर्द कर दी। ह़सन व क़तादा से मरवी है कि दोज़ख़ पर गुज़रने से पुल सिरात़ पर गुज़रना मुराद है जो दोज़ख़ पर है।"

जहन्नम तारीक रात की त़रह़ सियाह है :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने ह़ज़रते जिब्राईल (عَلَیْہِ السَّلَام) को बुला कर जन्नत की त़रफ़ भेजा और इरशाद फ़रमाया कि जन्नत और अहले जन्नत के लिये मेरी तय्यार कर्दा ने'मतें देख। जब ह़ज़रते जिब्राईल (عَلَیْہِ السَّلَام) ने देखा तो वापस आ कर अ़र्ज़ की : "मुझे तेरी इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम ! जो कोई इस के मुतअ़ल्लिक़ सुनेगा ज़रूर इस में दाख़िल होने की कोशिश करेगा।" तो उसे नफ़्स पर गिरां गुज़रने वाली बातों से ढांप दिया गया। फिर इरशाद फ़रमाया : "दोबारा जाओ।" तो ह़ज़रते जिब्राईल (عَلَیْہِ السَّلَام) ने वापस आ कर अ़र्ज़ की : "तेरी इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम ! मुझे डर है कि अब कोई भी इस में दाख़िल न हो सकेगा।" फिर ह़ज़रते जिब्राईल (عَلَیْہِ السَّلَام) को जहन्नम की त़रफ़ भेज कर इरशाद फ़रमाया : "दोज़ख़ और अहले दोज़ख़ के लिये मेरा तय्यार कर्दा अ़ज़ाब देख।" जब ह़ज़रते जिब्राईल (عَلَیْہِ السَّلَام) ने देखा तो अ़र्ज़ की : "मुझे तेरी इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम ! कोई शख़्स उस में दाख़िल न हो सकेगा।" तो उसे नफ़्सानी ख़्वाहिशात से घेर दिया गया। फिर इरशाद फ़रमाया : "दोबारा जा कर देख।" वोह दोबारा गए और लौट कर अ़र्ज़ की : "तेरी इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम ! मुझे ख़ौफ़ है कि सभी उस में दाख़िल हो जाएंगे।

(جامع الترمذی ،ابواب صفة الجنة ، باب ماجاء حفت الجنة بالمکارہ......الخ،الحدیث ۲۵٦۰ ، ص ۱۹۰۹)

फिर जहन्नम को हज़ार साल जलाया गया यहां तक कि सफ़ेद हो गई, फिर हज़ार साल जलाया गया तो सुर्ख़ हो गई, फिर हज़ार साल जलाया गया ह़त्ता कि सियाह हो गई, अब येह तारीक रात की त़रह़ सियाह है।" (سنن ابن ماجة،ابواب الزھد، باب صفه النار، الحدیث ۴۳۲۰، ص ۲۷۴۰)

जहन्नम की आग दुन्या की आग से सत्तर गुना तेज़ है :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "दुन्या की आग जहन्नम की आग से सत्तर दर्जे कम है और अगर इस को दो मरतबा समन्दर में न डाला गया होता तो तुम इस से कुछ भी नफ़्अ़ न उठा सकते।"

(سنن ابن ماجة، ابواب الزھد، باب صفة النار، الحدیث۴۳۱۸، ص ۲۷۴۰، بتغیرٍ قلیلٍ)

जहन्नम की सत्तर हज़ार लगामें होंगी :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रोबर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ग़ैब निशान है : "क़ियामत के दिन जहन्नम को लाया जाएगा, उस की सत्तर हज़ार लगामें होंगी, हर लगाम के साथ सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते होंगे जो उस को खींच रहे होंगे।"

(صحیح مسلم، کتاب الجنة، باب جھنم اعا ذنا اللہ منھا، الحدیث۲۸۴۲، ص ۱۱۷۱)

समाअ़ते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हम हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ थे, हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक गरजदार आवाज़ सुनी तो हम से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो कि येह आवाज़ कैसी थी ?" हम ने अ़र्ज़ की : "اَللّٰہُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बेहतर जानते है।" तो आप صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "येह एक पथ्थर था जिस को सत्तर साल पहले जहन्नम में फेंका गया था वोह अब तक उस में गिर रहा था यहां तक कि अब उस की तह में पहुंच गया।"

(صحیح مسلم ،کتاب الجنۃ ، باب جہنم اعا ذنا اللہ منہا ، الحدیث ۲۸۴۴، ص ۱۱۷۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क्या तुम्हें इन अह़वाल से इ़ब्रत ह़ासिल नहीं होती ? क्या तुम जहन्नम की आग और उस की होलनाकियों से नहीं डरते ? क्या उस की ज़न्जीरों और त़ोक़ों से तुम्हें ख़ौफ़ नहीं आता ? तअ़ज्जुब है उस शख़्स पर जो जन्नत में अपने बाप ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की पुश्ते मुबारक में था फिर भी वोह कैसे उस जहन्नम में दाख़िल हो जाएगा जिस का ईंधन आदमी और पथ्थर हैं।

जहन्नमी अहले जन्नत से खाना और पानी मांगेंगे :

मरवी है : "आग के शो'ले जहन्नमियों को बुलन्द करेंगे यहां तक कि वोह चिंगारियों की त़रह़ उड़ने लगेंगे, जब वोह बुलन्द होंगे तो अहले जन्नत पर झांकेंगे, उन के दरमियान पर्दा होगा, जन्नती, जहन्नमियों से कहेंगे : "हम ने पा लिया जिस का हमारे रब्ब عَزَّوَجَلَّ ने हम से वा'दा फ़रमाया था तो क्या तुम ने भी पा लिया जिस का तुम्हारे रब्ब عَزَّوَجَلَّ ने तुम से वा'दा किया था ?" वोह कहेंगे : "हां हम ने भी पा लिया।" फिर एक ए'लान करने वाला ए'लान करेगा : "ज़ालिमों पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ला'नत है।" जहन्नमी जब बहती नहरें देखेंगे तो अहले जन्नत से कहेंगे : "हमें पानी या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जो रिज़्क़ तुम्हें अ़त़ा फ़रमाया है उस में से कुछ दो।" तो अहले जन्नत कहेंगे : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने येह दोनों चीज़ें काफ़िरों पर ह़राम फ़रमा दी हैं।" फिर अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते उन्हें लोहे के गुर्ज़ों से जहन्नम की तह तक लौटा देंगे।" बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान के तह़्त मज़्कूरा रिवायत नक़्ल फ़रमाई है :

كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَآ اُعِيْدُوْا ﴿1﴾ فِيْهَا وَقِيْلَ لَهُمْ ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّذِىْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ۝ (پ۲۱،السجدۃ:۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जब कभी उस में से निकलना चाहेंगे फिर उसी में फेर दिये जाएंगे और उन से कहा जाएगा चखो उस आग का अ़ज़ाब जिसे तुम झुटलाते थे।*

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रंजो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमेना के लाल صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

﴿2﴾ يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَ لَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝ (پ٤،اٰل عمران:١٠٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरो जैसा उस से डरने का ह़क़ है और हरगिज़ न मरना मगर मुसलमान ।

फिर इरशाद फ़रमाया : "अगर ज़क़ूम (जहन्नम के एक कांटेदार ज़हरीले दरख़्त के फल) का एक क़त़रा दुन्या में उन्डेल दिया जाए तो सारी दुन्या को तबाहो बरबाद कर दे और अहले ज़मीन पर उन की ज़िन्दगी अजीरन कर दे तो उन की ह़ालत कैसी होगी जिन का खाना ही येह होगा ।"

(جامع الترمذی ،ابواب صفة جهنم ، باب ماجاء فی صفة ثراب اهل النار ، الحدیث ٢٥٨٥ ، ص ١٩١٢)

जहन्नम में काफ़िर की ह़ालत :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, बिइज़्ने परवर दगार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : "काफ़िर की खाल की मोटाई बहत्तर (72) गज़ होगी, उस की दाढ़ उहुद पहाड़ जितनी होगी और जहन्नम में उस के बैठने की जगह मक्का व मदीना के दरमियानी फ़ासिले जितनी होगी ।"

(جامع الترمذی ،ابواب صفة جهنم ، باب ماجاء فی...... اهل النار، الحدیث ٢٥٧٧ ، ص ١٩١١)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ हम सब को जहन्नम की आग और उस में कुफ़्फ़ारो फ़ुज्जार के ठिकाने से बचाए । काश ! तू जहन्नमियों को और उन के खोलते पानी को देख लेता तो ज़रूर उस से बहुत ज़ियादा पनाह त़लब करता । जब भी उन की भूक सख़्त होगी तो उन के लिये आग के कांटों के सिवा कोई खाना न होगा । ऐ गुनहगारो ! क्या तुम जहन्नम की आग बर्दाश्त कर सकोगे ? हरगिज़ नहीं बल्कि वोह तो भड़कती आग है कि लोग जिस की त़रफ़ हर सम्त से हांके जाएंगे ।

﴿3﴾ اِذَا رَاَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍۭ بَعِیْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَیُّظًا وَّ زَفِیْرًا ۝ وَ اِذَاۤ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَیِّقًا مُّقَرَّنِیْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ۝ لَا تَدْعُوا الْیَوْمَ ثُبُوْرًا وَّاحِدًا وَّ ادْعُوْا ثُبُوْرًا كَثِیْرًا ۝ (پ١٨،الفرقان:١٢تا١٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जब वोह उन्हें दूर जगह से देखेगी तो सुनेंगे उस का जोश मारना और चिंघाड़ना, और जब उस की किसी तंग जगह में डाले जाएंगे ज़न्जीरों में जकड़े हुए तो वहां मौत मांगेंगे । फ़रमाया जाएगा : आज एक मौत न मांगो और बहुत सी मौतें मांगो । [1]

---

1 ......मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "(वोह जहन्नम को) एक बरस की राह से या सो बरस की राह से (देखेंगे) दोनों क़ौल हैं और आग का देखना कुछ बईद नहीं । अल्लाह तआ़ला तो उस को ह़यात व अ़क़्ल और रूयत अ़त़ा फ़रमाए और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि मुराद मलाइकए जहन्नम का देखना है । (इस त़रह़ जकड़े होंगे कि) उन के हाथ गरदनों से मिला कर बांध दिये गए हों या इस त़रह़ कि हर हर काफ़िर अपने अपने शैत़ान के साथ ज़न्जीरों में जकड़ा हुवा हो और واثبوراه واثبوراه का शोर मचाएंगे बईमा'ना कि हाए ऐ मौत आ जा । ह़दीष शरीफ़ में है कि पहले जिस शख़्स को आतशी (या'नी आग का) लिबास पहनाया जाएगा वोह इब्लीस है और उस की ज़ुर्रिय्यत उस के पीछे होगी और येह सब मौत मौत पुकारते होंगे ।"

और अगर उस दिन तू लोगों को देखता :

﴾4﴿ يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَ السَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ○ (پ۱۳، ابراهيم: ۴۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जिस दिन बदल दी जाएगी ज़मीन उस ज़मीन के सिवा और आस्मान और लोग सब निकल खड़े होंगे एक* ***अल्लाह*** *के सामने जो सब पर ग़ालिब है।* (1)

जहन्नमियों पर सख़्त मसाइब नाज़िल होंगे और गर्दो गुबार छा जाएगा, उन की पल्कों के पर्दों से बारिश की त़रह़ ख़ून बरसेगा और बेचैनी व आज़ुर्दगी उन्हें हर जानिब से घेर लेगी।

जहन्नमियों का गोश्त झड़ जाएगा :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब अहले दोज़ख़ को दोज़ख़ की त़रफ़ हांका जाएगा तो जहन्नम उन से सख़्ती से पेश आएगी और उन पर ऐसी भड़केगी कि किसी हड्डी पर गोश्त न रहने देगी यहां तक कि कूचों तक जा पहुंचेगी ।"

(المعجم الاوسط، الحديث۲۷۸، ج۱، ص۹۲-بتغير)

उस वक़्त जहन्नमी इस ह़ाल में होंगे कि उन्हें गुनाहों की वजह से डांटा जा रहा होगा, वोह शदीद इ़ताब में होंगे, उन की क़ैद और अ़ज़ाब में हर लम्ह़ा इज़ाफ़ा होता जाएगा और वोह शदीद दुख और तकलीफ़ में होंगे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी सच्ची किताब में इरशाद फ़रमाता है :

﴾5﴿ اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِیْهِمْ نَارًاؕ كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَیْرَهَا لِیَذُوْقُوا الْعَذَابَؕ (پ۵، النساء: ۵۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जिन्हों ने हमारी आयतों का इन्कार किया अ़न क़रीब हम उन को आग में दाख़िल करेंगे जब कभी उन की खालें पक जाएंगी हम उन के सिवा और खालें उन्हें बदल देंगे कि अ़ज़ाब का मज़ा लें।*

वोह दुन्यवी ज़िन्दगी पर ख़ुश हो गए, सूर फूंके जाने को भूल बैठे और झूटी उम्मीदों के धोके में आ गए।

---

(1).....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْهَادِی **तफ़्सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "उस दिन से रोज़े क़ियामत मुराद है। ज़मीनो आस्मान की तब्दीली में मुफ़स्सिरीन के दो क़ौल हैं :

एक येह कि उन के औसाफ़ बदल दिये जाएंगे, मषलन ज़मीन एक सत़ह़ हो जाएगी न उस पर पहाड़ बाक़ी रहेंगे, न बुलन्द टीले, न गहरे ग़ार, न दरख़्त, न इमारत, न किसी बस्ती और अक़लीम का निशान। और आस्मान पर कोई सितारा न रहेगा और आफ़्ताबो माहताब की रोशनियां मा'दूम (या'नी न) होंगी। येह तब्दीली औसाफ़ की है ज़ात की नहीं।

दूसरा क़ौल येह है कि आस्मानो ज़मीन की ज़ात ही बदल दी जाएगी। उस ज़मीन की जगह एक दूसरी चांदी की ज़मीन होगी सफ़ेद व साफ़। जिस पर न कभी ख़ून बहाया गया हो, न गुनाह किया गया हो। और आस्मान सोने का होगा। येह दो क़ौल अगर्चे बज़ाहिर बाहम मुख़्तलिफ़ मा'लूम होते हैं मगर इन में से हर एक सह़ीह़ है और वजहे जम्अ़ येह है कि अव्वल तब्दील सिफ़ात होगी और दूसरी मरतबा बा'द ह़िसाब तब्दीले षानी होगी। इस में ज़मीनो आस्मान की ज़ातें ही बदल जाएंगी।

﴿6﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِىْ كُلَّ كَفُوْرٍ ۝ (پ۲۲،فاطر:۳۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जिन्हों ने कुफ़्र किया उन के लिये जहन्नम की आग है न उन की क़ज़ा आए कि मर जाएं और न उन पर उस का अ़ज़ाब कुछ हल्का किया जाए हम ऐसी ही सज़ा देते हैं हर बड़े ना शुक्रे को।

उन के लिये जहन्नम में रोना ही रोना और भड़कने वाली आग का अ़ज़ाब है।

﴿7﴾ وَهُمْ يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا ۚ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِىْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَجَآءَكُمُ النَّذِيْرُ ؕ فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ۝ (پ۲۲،فاطر:۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह उस में चिल्लाते होंगे ऐ हमारे रब्ब ! हमें निकाल कि हम अच्छा काम करें उस के ख़िलाफ़ जो पहले करते थे। और क्या हम ने तुम्हें वोह उ़म्र न दी थी जिस में समझ लेता जिसे समझना होता और डर सुनाने वाला तुम्हारे पास तशरीफ़ लाया था तो अब चखो कि ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम्हारी येह आग जहन्नम की आग से सत्तर दर्जे कम है और येह (दुन्या की आग) भी जहन्नम की आग से रोज़ाना सत्तर मरतबा पनाह मांगती है।"

(سنن ابن ماجة، ابواب الزهد، باب صفة النار، الحديث ۴۳۱۸، ص ۲۷۴۰، مختصر)

नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जहन्नम की आग को तुम जितना चाहो बयान करो तुम उस को जितना भी बयान करोगे येह उस से भी सख़्त होगी।" (سیر اعلام النبلاء،الرقم ۵۲۵ ابو جعفر الباقر،ج۵،ص۳۴۵)

जहन्नमियों की पुकार का जवाब :

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि : "जहन्नमी दारोग़ए जहन्नम को पुकारेंगे लेकिन उन्हें चालीस साल तक कोई जवाब न मिलेगा फिर जवाब दिया जाएगा : "اِنَّكُمْ مّٰكِثُوْنَ (پ۲۵،الزخرف:۷۷) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम्हें तो ठहरना है।" या'नी हमेशा यहीं रहना है। वोह दोबारा अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पुकारते हुए इल्तिजा करेंगे :

﴿8﴾ قَالُوْا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَآلِّيْنَ ۝ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوْنَ ۝ (پ۱۸،المؤمنون:۱۰۶۔۱۰۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कहेंगे ऐ हमारे रब्ब ! हम पर हमारी बदबख़्ती ग़ालिब आई और हम गुमराह लोग थे। ऐ रब्ब हमारे ! हम को दोज़ख़ से निकाल दे फिर अगर हम वैसे ही करें तो हम ज़ालिम हैं।(1)

---

(1) ......**मुफ़स्सिरे शहीर**, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى तफ़्सीर ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : "तिरमिज़ी की ह़दीष में है कि दोज़ख़ी लोग जहन्नम के दारोग़ा मालिक को चालीस बरसों तक पुकारते रहेंगे। उस के बा'द वोह कहेगा कि तुम जहन्नम ही में पड़े रहोगे फिर वोह परवर दगार को पुकारेंगे और कहेंगे, ऐ रब्ब हमारे ! हमें दोज़ख़ से निकाल और येह पुकार उन की दुन्या से दूनी उ़म्र की मुद्दत तक जारी रहेगी। इस के बा'द उन्हें येह जवाब दिया जाएगा जो अगली आयत में है (ख़ाज़िन) और दुन्या की उ़म्र कितनी है, इस में कई क़ौल हैं। बा'ज़ ने कहा कि दुन्या की उ़म्र सात हज़ार बरस है, बा'ज़ ने कहा बारह हज़ार बरस, बा'ज़ ने कहा तीन लाख साठ बरस। (تذکرہ قرطبی) واللّٰہ تعالٰی اعلم

قَالَ اخْسَئُوْا فِيْهَا وَلَا تُكَلِّمُوْنِ ۝ ﴿9﴾

(پ۱۸،المؤمنون:۱۰۸)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** रब्ब फ़रमाएगा : धुत्कारे (ख़ाइबो ख़ासिर) पड़े रहो उस में और मुझ से बात न करो ।* (1)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस के बा'द वोह एक कलिमा भी न कहेंगे, फिर उन के लिये जहन्नम में चीख़ना चिल्लाना ही रह जाएगा, उन की आवाज़ गधों जैसी होगी, पहले चीख़ें चिल्लाएंगे और आख़िर में रेंकेंगे ।"

(جامع الترمذی،ابواب صفة جهنم،باب ماجاء فی صفة طعام اهل النار،الحدیث۲۵۸۶،ص۱۹۱۲۔الترغیب والترهیب، کتاب صفة الجنة والنار،فصل فی بکا ئهم وشهیقهم، الحدیث ۵۶۸۵ ،ج ٤، ص۲۹۲، بتغیرٍ قلیلٍ مختصر)

हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ की नसीहत :

हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते : "ऐ लोगो ! क्या तुम में इस की ताक़त है ? क्या तुम जहन्नम की आग बर्दाश्त कर सकते हो ? ऐ लोगो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त तुम्हारे लिये इस से बहुत आसान है लिहाज़ा तुम उस की इत़ाअ़त करो ।"

(حلیة الاولیاء ، کعب الاحبار،الحدیث۷۵٤۲،ج۵،ص٤۰۸)

हज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : "जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई : "وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ (پ۱٤،الحجر،٤۳) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक जहन्नम उन सब का वा'दा है ।" तो हज़रते सय्यिदुना सुलैमान رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपना हाथ सर पर रख लिया, फिर तीन दिन तक इस त़रह़ ह़ैरानी व परेशानी के आ़लम में घर से बाहर रहे कि कोई भी आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ को संभाल न सकता था, यहां तक कि आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ को लाया गया ।"

ख़च्चर जैसे बिच्छू और ऊंट जैसे सांप :

मरवी है कि अहले दोज़ख़ हज़ार साल जज़्अ़ व फ़ज़्अ़ करते रहेंगे लेकिन उन के अ़ज़ाब में कोई कमी न होगी तो कहेंगे :

سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ ۝ ﴿10﴾ (پ۱۳،ابراهیم:۲۱)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हम पर एक सा है चाहे बे क़रारी करें या सब्र से रहें हमें कहीं पनाह नहीं ।*

---

(1)......मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْهَادِی **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "अब उन की उम्मीदें मुन्क़त़ेअ़ हो जाएंगी और येह अहले जहन्नम का आख़िर कलाम होगा । फिर इस के बा'द उन्हें कलाम करना नसीब न होगा रोते चीख़ते डकराते भोंकते रहेंगे ।"

फिर प्यास और शिद्दते अ़ज़ाब के सबब हज़ार साल पुकारते रहेंगे ताकि उन की प्यास में कुछ कमी हो जाए लेकिन बारिश न आएगी तो वोह मज़ीद हज़ार साल रोते चिल्लाते रहेंगे जब वोह रोएंगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْهِ السَّلَام से इस्तिफ़्सार फ़रमाएगा : "ऐ जिब्राईल (عَلَیْهِ السَّلَام) ! येह क्या मांगते हैं ?" ह़ालांकि वोह बेहतर जानता है। ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْهِ السَّلَام अ़र्ज़ करेंगे : "ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ ! येह बारिश त़लब करते हैं।" तो उन के लिये एक सुर्ख़ बादल ज़ाहिर होगा वोह ख़याल करेंगे कि इस बादल से हम पर बारिश बरसेगी लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस में से उन पर ख़च्चरों जैसे बड़े बड़े बिच्छू मुसल्लत़ कर देगा वोह उन को ऐसा डंक मारेंगे जिस का दर्द एक हज़ार साल तक नहीं जाएगा फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से बारिश का सुवाल करेंगे तो उन के लिये सियाह बादल ज़ाहिर होगा तो वोह कहेंगे : येह बारिश वाला बादल है लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस में से उन की त़रफ़ ऊंट जैसे बड़े बड़े सांप भेज देगा। जब भी वोह उन को डसेंगे तो उस का दर्द एक हज़ार साल तक न जाएगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान का येही मा'ना है :

زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يُفْسِدُوْنَ ﴿11﴾ (پ ١٤، النحل : ٨٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हम ने अ़ज़ाब पर अ़ज़ाब बढ़ाया बदला उन के फ़साद का।

"بِمَا كَانُوْا يُفْسِدُوْنَ" से मुराद येह है कि येह (अ़ज़ाब की ज़ियादती) उन के कुफ़्र और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी करने का बदला है। तो जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से नजात और षवाब पाना चाहे तो उसे चाहिये कि दुन्या की तकालीफ़ पर सब्र करे क्यूंकि (ह़दीषे पाक का मफ़्हूम है कि) "जन्नत को नफ़्स के नापसन्दीदा उमूर से घेर दिया गया है और जहन्नम को शहवात के साथ ढांप दिया गया है।" (جامع الترمذی، ابواب صفة الجنة، باب ماجاء حفت الجنة بالمكاره و حفت النار بالشهوات، الحديث ٢٥٥٩، ص ١٩٠٩)

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! तसव्वुर करो गोया कि तुम जहन्नम में खड़े यूं कह रहे हो :

يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا ﴿12﴾ (پ٧، الانعام، ٢٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : काश ! किसी त़रह़ हम वापस भेजे जाएं और अपने रब्ब की आयतें न झुटलाएं।

يٰحَسْرَتَنَا عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا ﴿13﴾ (پ٧، الانعام، ٣١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हाए ! अफ़्सोस हमारा इस पर कि इस के मानने में हम ने तक़्सीर की।

और तुम ने अपनी सारी कोशिश त़लबे दुन्या में सर्फ़ कर दी और अपनी आख़िरत से बिल्कुल मुंह मोड़ लिया। तो तुम्हारी ह़ालत कैसी होगी :

اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ وَاَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ ﴿14﴾ (پ٧، الانعام، ٤٦)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अगर **अल्लाह** तुम्हारे कान, आंख ले ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर कर दे।*

पुर असरार आ'राबी :

एक दफ़्आ़ ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद ने ह़रमे मक्का में दाख़िल हो कर त़वाफ़ शुरूअ़ किया और आ़म लोगों को त़वाफ़ से मन्अ़ कर दिया लेकिन एक आ'राबी ख़लीफ़ा के आगे आगे चलते हुए उस के साथ त़वाफ़ करने लगा, ख़लीफ़ा पर येह बात ना गवार गुज़री, अपने दरबान की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा गोया कि येह इशारा था कि इस को मन्अ़ करे, दरबान ने आगे बढ़ कर उस आ'राबी से कहा : "ऐ बद्दू ! त़वाफ़ न कर ताकि मुसलमानों का अमीर त़वाफ़ कर ले।" आ'राबी ने जवाब दिया : "इस मक़ाम और बैते ह़राम में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब लोग बराबर हैं। चुनान्चे, अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

سَوَآءَنِ الْعَاكِفُ فِيهِ وَالْبَادِط وَمَنْ يُّرِدْ فِيهِ بِاِلْحَادٍ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ ﴿15﴾

(پ۱۷،الحج:۲۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कि उस में एक सा ह़क़ है वहां के रहने वाले और परदेसी का और जो उस में किसी ज़ियादती का ना ह़क़ इरादा करे हम उसे दर्दनाक अ़ज़ाब चखाएंगे।

जब हारूनुर्रशीद ने आ'राबी का येह जवाब सुना तो दरबान को रोकने से मन्अ़ कर दिया फिर बोसा देने के लिये ह़जरे अस्वद के पास आया तो आ'राबी ने उस से पहले बोसा दे लिया, जब मक़ामे इब्राहीम पर नमाज़ पढ़ी तो आ'राबी ने फिर आगे बढ़ कर उस से पहले नमाज़ अदा कर ली। जब हारुनुर्रशीद नमाज़ व त़वाफ़ से फ़ारिग़ हुवा तो दरबान को हुक्म दिया : "आ'राबी को मेरे पास लाओ।" दरबान आ'राबी के पास आया और कहने लगा : "अमीरुल मोअमिनीन के पास चलो।" आ'राबी ने जवाब दिया : "मुझे उस की ह़ाजत नहीं, अगर उसे कोई ह़ाजत है तो वोह ख़ुद ही पूरी करने की कोशिश करे।" दरबान ग़ुस्से में पलटा और ख़लीफ़ा को उस की बात बताई। येह सुन कर हारुनुर्रशीद ने कहा : "उस ने सच कहा है, हम ह़ाजतमन्द हैं तो हमें ही उस के पास जाना चाहिये।" फिर हारुनुर्रशीद उठा जब कि दरबान उस के सामने खड़ा था और आ'राबी के पास जा कर उसे सलाम किया, उस ने जवाब दिया। ख़लीफ़ा ने उस से पूछा : "ऐ अ़रबी भाई ! क्या मैं तुम्हारी इजाज़त से यहां बैठ सकता हूं ?" तो आ'राबी ने बिला ख़ौफ़ो ख़त़र जवाब दिया : "येह घर मेरा नहीं, न ही ह़रम मेरा है, येह घर भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का है और ह़रम भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का, यहां हम सब बराबर हैं। तू अगर चाहे तो बैठ जा और चाहे तो लौट जा।"

हारुनुर्रशीद ने जब ऐसी बात सुनी जो उस के ज़ेह्न में खटकी भी न थी तो उसे इन्तिहाई नागवार गुज़रा, वोह सोच भी न सकता था कि कोई शख़्स मेरे साथ यूं गुफ़्त्गू करेगा। बहरह़ाल वोह उस आ'राबी के पहलू में बैठ गया और उस से पूछने लगा : "ऐ आ'राबी ! मैं तुम से तुम्हारे फ़र्ज़ के मुतअ़ल्लिक़ पूछता हूं, अगर तुम उसे बजा लाते हो तो दीगर फ़राइज़ को भी अच्छी त़रह़ अदा करते होगे और अगर उसे ही अदा नहीं करते तो दीगर फ़राइज़ में भी कोताही करते होगे।" आ'राबी ने उल्टा ख़लीफ़ा से सुवाल कर दिया : "तुम येह सुवाल सीखने के लिये कर रहे हो या शरारत के

लिये ?'' हारुनुर्रशीद उस के फ़ौरन जवाब देने से बहुत हैरान हुवा और कहने लगा : ''नहीं, मैं ने तो हुसूले इल्म के लिये सुवाल किया है।'' येह सुन कर आ'राबी बोला : ''तो फिर उठ और सुवाल करने वाले के मक़ाम पर बैठ जा।'' ख़लीफ़ा हारुनुर्रशीद खड़ा हुवा और आ'राबी के सामने दो ज़ानू बैठ गया तो आ'राबी ने कहा : ''अब तू सहीह़ जगह बैठा अब जो पूछना है पूछ।'' तो हारुनुर्रशीद ने सुवाल किया : ''मुझे इस के मुतअ़ल्लिक़ बताइये जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप पर फ़र्ज़ किया है।'' आ'राबी कहने लगा : ''तुम किस फ़र्ज़ के मुतअ़ल्लिक़ पूछ रहे हो ? एक फ़र्ज़ के मुतअ़ल्लिक़ या पांच के मुतअ़ल्लिक़ ? या सत्तरह के मुतअ़ल्लिक़ ? या चौंतीस के मुतअ़ल्लिक़ ? या चोरानवे के मुतअ़ल्लिक़ ? या चालीस में से एक के मुतअ़ल्लिक़ ? या ज़िन्दगी भर में एक के मुतअ़ल्लिक़ ? या दो सो में से पांच के मुतअ़ल्लिक़ ?'' हारुनुर्रशीद बत़ौरे मुज़ाह़ हंस पड़ा, फिर कहने लगा : ''मैं ने तुम से सिर्फ़ फ़र्ज़ के मुतअ़ल्लिक़ पूछा और तुम ने मुझे पूरे ज़माने का ह़िसाब दे दिया।'' आ'राबी बोला : ''ऐ हारुन ! अगर दीन में ह़िसाब न होता तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत तमाम मख़्लूक़ से ह़िसाब न लेता। चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴾16﴿ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ؕ وَ اِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ؕ وَ كَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ۝ (پ۱۷، الانبیآء:۴۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो किसी जान पर कुछ ज़ुल्म न होगा और अगर कोई चीज़ राई के दाने के बराबर हो तो हम उसे ले आएंगे और हम काफ़ी हैं ह़िसाब को।*

जब आ'राबी ने ख़लीफ़ा को ''या हारून'' कह कर मुख़ात़ब किया और ''या अमीरल मोअमिनीन'' न कहा तो हारूनुर्रशीद के चेहरे पर गुस्से के आसार नुमायां हो गए, उस की ह़ालत मुतग़य्यिर हो गई और उसे सख़्त तकलीफ़ पहुंची मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ग़ज़ब से उस की ह़िफ़ाज़त फ़रमाई और जब उस ने जान लिया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस आ'राबी को इस कलाम की त़ाक़त व तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाई है तो वोह अपनी ह़ालत पर लौट आया। फिर हारुनुर्रशीद ने कहा : ''मेरे आबा व अज्दाद की मिट्टी की क़सम ! अगर तूने अपनी बात की वज़ाह़त न की तो सफ़ा व मरवा के दरमियान मैं तेरी गरदन मारने का हुक्म दे दूंगा।'' दरबान ने गुज़ारिश की : ''ऐ अमीरल मोअमिनीन ! इस मुक़द्दस मक़ाम की अ़ज़्मत के पेशे नज़र अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये इसे मुआ़फ़ कर दीजिये।'' आ'राबी उन दोनों की बात सुन कर हंसने लगा ह़त्ता कि वोह चित लैट गया, हारूनुर्रशीद ने पूछा : ''क्यूं हंस रहे हो ?'' तो उस ने जवाब दिया : ''तुम दोनों पर ह़ैरत करते हुए हंस रहा हूं कि एक यक़ीनी मौत को बख़्शवाना चाहता है और दूसरा उस मौत के लाने में जल्दी कर रहा है जिस का वक़्त नहीं आया।'' जब हारूनुर्रशीद ने उस की येह बात सुनी तो दुन्या को ह़क़ीर समझने लगा। फिर उस ने कहा : ''मैं तुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वासित़ा देता हूं कि अपनी बात की वज़ाह़त कर दे, मेरा दिल इस की वज़ाह़त सुनने के लिये बेचैन है।''

तो आ'राबी ने जवाब देते हुए कहा : ''तुम ने पूछा था कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझ पर क्या फ़र्ज़ किया है तो सुनो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझ पर कसीर उमूर फ़र्ज़ किये हैं। जो मैं ने तुम्हें एक

फ़र्ज़ के मुतअ़ल्लिक़ कहा है तो वोह दीने इस्लाम है, पांच फ़राइज़ से मुराद पांच नमाजें हैं, सत्तरह फ़राइज़ से मुराद दिन रात की नमाज़ों की सत्तरह रकअ़तें हैं, चौंतीस फ़राइज़ से मुराद इन रकअ़तों के चौंतीस सजदे हैं, चोरानवे फ़राइज़ से मुराद इन नमाज़ की तक्बीरात हैं और चालीस में से एक से मुराद चालीस दीनार में से एक दीनार ज़कात है और ज़िन्दगी भर में एक फ़र्ज़, ह़ज है और दो सो में से पांच से मुराद चांदी की ज़कात है।" ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद इन मसाइल की वज़ाह़त और आ'राबी की उ़म्दा गुफ़्त्गू से बहुत ख़ुश हुवा और उस को बहुत ज़हीन समझा और आ'राबी उस की नज़र में बहुत अ़ज़ीम हो गया। फिर आ'राबी ने कहा : "तुम ने मुझ से सुवाल किया, मैं ने जवाब दे दिया, अब मैं सुवाल करता हूं और तुम जवाब दो।"

हारूनुर्रशीद ने कहा : "आप पूछिये।" आ'राबी ने सुवाल किया : "मुसलमानों का अमीर उस शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ क्या कहता है जिस पर सुब्ह़ के वक़्त एक औ़रत को देखना ह़राम हो लेकिन जब ज़ोहर हो तो वोह औ़रत उस पर ह़लाल हो जाए और जब अ़स्र हो तो फिर ह़राम हो जाए, जब मग़रिब हो तो ह़लाल हो जाए और इ़शा के वक़्त फिर ह़राम हो जाए और फ़ज्र के वक़्त फिर ह़लाल, इसी त़रह़ ज़ोहर के वक़्त ह़राम, अ़स्र के वक़्त ह़लाल, मग़रिब के वक़्त ह़राम और इ़शा के वक़्त फिर ह़लाल हो जाए ?" आ'राबी का सुवाल सुन कर हारूनुर्रशीद ने कहा : "आप ने मुझे ऐसे समन्दर में डाल दिया है जिस से आप के इ़लावा कोई नहीं निकाल सकता।" आ'राबी ने कहा : "तुम तो मुसलमानों के अमीर हो, तुम से बढ़ कर कोई नहीं हो सकता और तुम्हें किसी बात में ला जवाब नहीं होना चाहिये फिर मेरे सुवाल से कैसे आ़जिज़ आ गए हो ?" हारूनुर्रशीद अ़र्ज़ करने लगा : "आप के इ़ल्म की क़द्रो मन्ज़िलत अ़ज़ीम है और आप का ज़िक्र बुलन्द है, इस बैतुल्लाह शरीफ़ की इ़ज़्ज़त का सदक़ा ! मैं चाहता हूं कि आप ख़ुद इस की वज़ाह़त फ़रमा दें।" उस आ'राबी ने कहा : "मैं बसद मह़ब्बतो एह़तिराम बयान किये देता हूं। मैं ने एक शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया कि उस का सुब्ह़ के वक़्त एक औ़रत को देखना ह़राम है तो येह वोह है जो ग़ैर की लौंडी को देखे कि येह लौंडी उस पर ह़राम है और जब ज़ोहर हो तो उस को ख़रीद ले, अब वोह उस के लिये ह़लाल हो गई लेकिन जब अ़स्र हो तो आज़ाद कर दे अब वोह उस पर ह़राम हो गई लेकिन जब मग़रिब हो तो उस से निकाह़ कर ले तो वोह फिर उस पर ह़लाल हो गई। जब इ़शा हो तो त़लाक़ दे दे अब फिर वोह ह़राम हो गई लेकिन जब फ़ज्र हो तो रुजूअ़ कर ले वोह दोबारा ह़लाल हो गई। जब ज़ोहर हो तो वोह शख़्स इस्लाम से फिर जाए तो वोह उस पर ह़राम हो गई लेकिन जब अ़स्र हो तो तौबा कर के औ़रत से रुजूअ़ कर ले तो वोह उस के लिये ह़लाल हो गई। जब मग़रिब हो तो औ़रत मुरतद हो जाए तो वोह उस पर ह़राम हो गई लेकिन जब इ़शा हो तो तौबा कर के रुजूअ़ कर ले तो फिर ह़लाल हो गई।" हारूनुर्रशीद आ'राबी के इस सुवाल और फिर ख़ुद ही जवाब देने से इन्तिहाई मुतअ़ज्जिब और ख़ुश हुवा फिर उस ने उस आ'राबी को दस हज़ार दिरहम देने का हुक्म दिया जब वोह दिरहम लाए गए तो आ'राबी ने कहा : "मुझे इस की ज़रूरत नहीं।" और दिरहम वापस कर दिये। हारूनुर्रशीद ने कहा : "क्या आप चाहते हो कि मैं आप का वज़ीफ़ा मुक़र्रर कर दूं जो सारी ज़िन्दगी आप को काफ़ी हो ?" तो आ'राबी ने कहा : "जो ज़ात तुम्हें रोज़ी देती है वोही मुझे भी देती

है।" ख़लीफ़ा ने कहा : "अगर आप पर कोई क़र्ज़ हो तो हम अदा कर देते हैं।" बहर ह़ाल आ'राबी ने उस से कुछ क़बूल न किया फिर उस ने चन्द अश्आ़र कहे, जिन का मफ़्हूम येह है :

"दुन्या के अ़तिय्यात कई सालों से लगातार हमारे पास आ रहे हैं कभी तो मैले कुचेले होते हैं और कभी लज़्ज़त बख़्श होते हैं लेकिन मैं उन में से किसी भी ऐसी शै को क़बूल करने को तय्यार नहीं जो मेरे मरने के बा'द बाक़ी न रहे और मैं कल उसे अपने वारिषों के लिये छोड़ जाऊं, गोया क़ब्र में मुझ पर मिट्टी डाली जा रही है और मेरे दोस्त अह़बाब मेरे इर्द गिर्द खड़े नोह़ा कनां हैं और गोया वोह दिन आ चुका जिस में आग के शो'ले भड़क कर लोगों को अपनी लपेट में ले रहे हैं और वोह दिन सुनने वालों को क़सम दे रहा है कि मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ की इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं तुम सब से ज़रूर इन्तिक़ाम लूंगा।"

जब आ'राबी अश्आ़र कह चुका तो हारूनुर्रशीद ने अफ़्सोस नाक आह खींची और उस से उस के घर और शहर के मुतअ़ल्लिक़ दर्याफ़्त किया तो लोगों ने बताया कि येह ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा रज़ा बिन जा'फ़र सादिक़ बिन मुह़म्मद बिन अ़ली बिन हुसैन बिन अ़ली बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡھُم हैं, देहातियों के लिबास में मल्बूस रहते हैं और ज़ोहदो वरअ़ के पैकर हैं। येह सुन कर ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद खड़ा हो गया और उन की आंखों के दरमियान बोसा दिया फिर (हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ निस्बत करते हुए) येह आयते मुबारका तिलावत की :

اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ ﴿17﴾

(پ۸،الانعام: ۱۲۴)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** ख़ूब जानता है जहां अपनी रिसालत रखे।* (1)

येह ऐसे बरगुज़ीदा बन्दे हैं जो लोगों के दरमियान अपनी ह़ालत मख़्फ़ी रखते हैं, वोह परागन्दा सर और गुबार आलूद होते हैं, लोग उन की परवाह नहीं करते ह़ालांकि उन का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां बहुत बुलन्द मक़ाम होता है। येह तो मक़्बूल बन्दों की सिफ़ात हैं तो ऐ रान्दए दरगाह ! तेरी कैसी सिफ़ात हैं ? येह तो मुक़र्रबीन की सिफ़ात हैं तो ऐ रब्ब की बारगाह से धुत्कारे हुए शख़्स ! तेरी सिफ़ात कैसी हैं ? येह तो नेक बन्दों की सिफ़ात हैं तो ऐ मह़रूम शख़्स ! अपने नफ़्स पर रो। ऐ मिस्कीन ! तेरा बुरा हो कि तू दिन के वक़्त बेकार कामों में मसरूफ़ रहता और रात सोने में गुज़ारता है।

फ़क़ीर के औसाफ़ :

दुन्या में फ़क़ीर के औसाफ़ येह होने चाहियें : दिन को रोज़ा रखे, रात को क़ियाम करे, रुकूअ़ व सुजूद करने वाला, रब्ब عَزَّوَجَلَّ की रह़मत का त़ालिब, उस की बख़्शिश में रग़बत रखने वाला, सब्रो शुक्र करने वाला, दूसरों से नरमी व शफ़्क़त से पेश आने वाला, तन्हाई इख़्तियार करने वाला, कम गुफ़्तगू करने वाला, कम खाने वाला और ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ की कषरत करने वाला,

1 .....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہ الۡھَادِی **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "या'नी **अल्लाह** जानता है कि नबुव्वत की अहलिय्यत और उस का इस्तिह़क़ाक़ किस को है, किस को नहीं। उ़म्र व माल से कोई मुस्तह़िक़े नबुव्वत नहीं हो सकता।"

अच्छी सोच का मालिक हो, लोगों से दूर रहे, दोस्त कम बनाए और हुज़्नो मलाल की कषरत करे, दुन्या के मालो मताअ़ और उस के शुब्हात से बचने वाला हो। ख़्वाहिशात और दुन्या की ह़ीला साज़ी और मक्रो फ़रेब से इज्तिनाब करने वाला हो और ख़रीदो फ़रोख़्त में मश्ग़ूल रहने वाला न हो, उस के लिये किसी से लिया जाए, न ही किसी को दिया जाए, अगर मौजूद हो तो पहचाना न जाए और अगर ग़ाइब हो तो याद न किया जाए, बहुत ज़ियादा तन्हाई इख़्तियार करने वाला, कषरत से आंसू बहाने वाला हो, खुद भी किसी चीज़ का मालिक न हो, और कोई दूसरा भी उस पर इख़्तियार न रखता हो, अपने नफ़्स का मुह़ासबा करने वाला, रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ को पेशे नज़र रखने वाला हो।

उस की सांसे ह़राम सूंघने से मह़फ़ूज़ हों, दिल इत़ाअ़ते इलाही عَزَّوَجَلَّ से मानूस हो, बहुत ज़ियादा दुन्यवी फ़िक्रें न करे बल्कि दुन्या को इब्रत की निगाह से देखे, कम ख़्वाहिशात रखने वाला और शुबा वाली चीज़ों को तर्क करने वाला हो, हमेशा इबादत पर कमरबस्ता, बहुत ज़ियादा क़नाअ़त करने वाला, ह़ीलों को छोड़ देने वाला, बन्दों के वसीलों का बहुत कम मोह़ताज हो, उसे कभी भी लोगों की ज़रूरत व ह़ाजत न पड़े, अपने मौला عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा करते हुए कल पर नज़र न रखे, सिर्फ़ उसी की इबादत करे, दुन्या से मुकम्मल त़ौर पर कनाराकश रहे और अपने आप को सिर्फ़ रब्ब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह रखे, उस के पास बक़द्रे ज़रूरत माल भी न हो और न ही ज़र्रा बराबर किसी शै का मालिक हो, सिर्फ़ रब्ब عَزَّوَجَلَّ की इबादतो त़ाअ़त में मसरूफ़ रहे और उस के ग़ैर से मुस्तग़नी हो जाए, उसे मुनाफ़क़त की हवा भी न लगी हो और न ही बाज़ारों में घूमता फिरता हो, रुकावट बने बिग़ैर रास्ते पर चलने वाला हो। उस का बदन कमज़ोर, जिस्म हल्का फुल्का, नज़र पाक हो, इल्मो अ़मल का पैकर और दुन्या से कनाराकश हो, मुजाहदात में मगन रहे और ज़ाते बारी तआ़ला के जल्वों में मुस्तग़रक़ रहने वाला और मलकूत की त़रफ़ सबक़त ले जाने वाला हो, उस ज़ाते ह़क़ को हर लम्ह़ा पेशे नज़र रखे जो ज़िन्दा है जिसे कभी फ़ना नहीं, अकड़ कर न चलने वाला और न ही खुश व खुर्रम नज़र आने वाला हो।

लोगों से दूर रहने वाला, उन पर उम्मीदें न रखने वाला, तकब्बुर न करने वाला, सच्ची बात कहने वाला, अच्छे काम करने वाला हो। दुन्या वालों से अ़लाह़िदगी में सुकून मह़सूस करे, जंगलात के दरन्दों से मानूस हो, मैदानों और पहाड़ों में घूमने वाला हो, दुन्या की मह़ब्बत से ख़ाली हो और मह़ब्बत की आंख से उसे कभी न देखे, अपने अ़ज़ीज़ो अक़रबा और अह़बाब को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर छोड़ दे, अपने नफ़्स पर ह़द क़ाइम करे और मेह़नत को लाज़िम पकड़े, इस बात का यक़ीन रखे कि दिल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का घर है लिहाज़ा उस की पाकी व त़हारत का ख़याल रखे ताकि वोह उस में ज़ाते बारी तआ़ला की तजल्लियात पाए और उस के दिल में खुदा के सिवा कोई न हो और अगर उसे दुन्या और उस की तमाम ने'मतें दे दी जाएं तो उन की त़रफ़ आंख उठा कर भी न देखे। मज़्कूरा औसाफ़ का ह़ामिल शख़्स ही फ़क़ीर हो सकता है।

जन्नत का ख़ज़ाना :

मन्क़ूल है कि चार चीज़ें जन्नत का ख़ज़ाना हैं : (1)......मुसीबत को छुपाना (2)......फ़ाक़ा कशी को छुपाना (3)......छुपा कर सदक़ा देना और (4)......दुख तकलीफ़ को छुपाना। एक क़ौल येह है कि कामिल इन्सान में दो ख़ूबियां होती हैं : (1)......वोह बातिल से राज़ी नहीं होता और (2)......हक़ से मुंह नहीं मोड़ता।

छे कामों में जल्दी करो :

मन्क़ूल है कि जल्दबाज़ी शैतान की तरफ़ से है मगर इन छे कामों में जल्दी करना शैतान की तरफ़ से नहीं, वोह येह हैं : (1)......जब नमाज़ का वक़्त हो जाए तो उस में जल्दी करना (2)......मेहमान आए तो उस की मेहमान नवाज़ी करना (3)......किसी के मरने पर उस की तज्हीज़ व तक्फ़ीन करना (4)......बच्ची के बालिग़ होने पर उस की शादी करना (5)......क़र्ज़ की अदाएगी का वक़्त आ जाए तो उसे जल्दी जल्दी अदा करना और (6)......कोई गुनाह हो जाए तो फ़ौरन तौबा करना।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَبَارِکْ وَسَلِّمْ

जन्नत से महरूम

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ *से मरवी है, नबिय्ये करीम* صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم *ने इरशाद फ़रमाया :* لَا یَدْخُلُ الْجَنَّۃَ قَتَّاتٌ *या'नी "चुग़लख़ोर जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।"*

(صحیح البخاری،حدیث ٦٠٥٦،ص ٥١٢)

बयान 14 : अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ السَّلام व औलिया की मुबारक जिन्दगियां

हम्दे बारी तआला :

सब ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने सारी काइनात को पैदा फ़रमाया और मुख़्तलिफ़ चीज़ों को मुख़्तलिफ़ सूरतें अ़ता फ़रमाईं। इन्सान को पानी से बनाया और उसे कुव्वते समाअ़त व बसारत अ़ता की और अपनी कुदरत से तक़दीर को मुक़र्रर फ़रमाया और अपनी हिक्मत से अपनी निशानियों से इब्रतें ज़ाहिर फ़रमाईं और नेक अ़मल करने वालों को आ'माल का क़ाबिले फ़ख़्र लिबास पहनाया जो उस की बारगाह में खुशूअ़ व खुज़ूअ़ और शिकस्ता दिली के साथ खड़ा हुवा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस के दिल को जोड़ दिया, जिस ने उस की रस्सी को मज़्बूती से थामे रखा और मोह़ताजी में उस की त़रफ़ रुजूअ़ किया उस ने उसे अपने फ़ज़्ल से माला माल कर दिया।

पाक है वोह ज़ात जिस की कुदरत से न कोई आगे बढ़ सकता है, न ही उस की वह़दानिय्यत के क़रीब पहुंच सकता है, वोह समीओ़ बसीर है जो सुनता और देखता है, उस ने पानी की त़रफ़ नज़र फ़रमाई तो वोह उस की हैबतो जलाल से पथ्थर बन गया, पथ्थरों की त़रफ़ नज़र फ़रमाई तो वोह उस की रह़मत से सैलाब की त़रह़ बहने लगे। उस ने निलगूं आस्मान को बिग़ैर सुतूनों के बुलन्द किया और उस में सूरज, चांद को बनाया और उसे चमकते हुए सितारों से सजाया वोह चमकदार मोतियों के मुशाबेह हैं और अपनी रह़मत से हवाएं भेजीं, और सितारे को रात के वक़्त चलने का हुक्म दिया तो वोह चलने लगा, और बादल को बारिश बरसाने का हुक्म दिया, और आस्मानी क़ल्ए की ह़िफ़ाज़त पर शहाबे षाक़िब को मामूर फ़रमाया लिहाज़ा अब चोरी छुपे सुनने वाले शयात़ीन कुछ नहीं सुन सकते। इन्सानी फ़िक्र उस ज़ात को न समझ सकी और नाकाम हो कर वापस लौट आई और चटीयल मैदान में ह़ैरान परेशान भटकने लगी, जिस ने उस का इन्कार किया और सरकशी की उसे उस ने अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमा दिया, और जिस ने उस की त़रफ़ रुजूअ़ किया, उस की वह़दानिय्यत का ए'तिराफ़ किया, आ़जिज़ी की और तकब्बुर न किया तो उस ने उसे अपना कुर्ब अ़ता फ़रमा दिया। नाफ़रमानों को सज़ा देने से पहले इब्रत के लिये कड़क भेजी, और बारिश की खुशख़बरी देते हुए बिजली चमकाई और अपनी कुदरत की तेज़ हवाओं से बादल को गर्ज अ़ता फ़रमाई, अपने करम के ख़ज़ानों से अपनी ने'मत की ठंडी हवाएं चलाईं तो अहले मा'रिफ़त ने उस से मुश्को अ़म्बर को सूंघ लिया और उन्हें नेकी और बुराई का खुफ़्या राज़ मा'लूम हो गया।

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡمَجِيۡد को नुसरते खुदावन्दी की वोह दौलते सरमदी अ़ता हुई कि आप رَحۡمَةُ اللهِ تعَالٰی عَلَيۡه ने अपने तक़्वा की बदौलत दुन्या को ताबेअ़ कर लिया। ह़ज़रते सय्यिदुना शिब्ली عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی ने मह़ब्बत की दुल्हनों के लिये आरास्ता व पेरास्ता रात गुज़ारी तो मह़ब्बते इलाही में दीवाने और टुकड़े टुकड़े हो गए। और ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡهَادِی ने अपने सिपाहियों के साथ दुश्मन के ख़िलाफ़ चढ़ाई की और इबादते इलाही عَزَّوَجَلَّ

के लिये तय्यार हो गए और ह़सरत के आ़लम में रोते रोते तमाम रात बसर कर दी। जब अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने अपने वली ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ القَوِى पर अपना पोशीदा राज़ ज़ाहिर किया तो वोह मह़ब्बते इलाही عَزَّ وَجَلَّ में दीवानावार फिरने लगे। और ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर ह़ल्लाज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق ने मह़ब्बते इलाही عَزَّ وَجَلَّ का ख़ालिस जाम पिया तो उन की ज़बां पर اَنَا لَاحَقُّ जारी हो गया।(1) जब औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى ने मह़ब्बत का मज़ा चख लिया तो उन पर शौक़े दीदार की हवाएं चलने लग गईं, और उन्हें ख़बर दी गई कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उन पर निगाहे करम और दिलकश तजल्ली फ़रमा रहा है। येह सुन कर उम्मीद रखने वालों ने तारीक रात में आ़जिज़ी व इन्किसारी करते हुए अपने हाथ फैला दिये और मुजरिम ने उ़ज़्र पेश करते हुए ह़क़ीर दिल के साथ अपना सर झुका लिया और गुनहगार पेशानियों से पकड़े जाने वाले दिन से ख़ौफ़ज़दा हो गया और अल्लाह तआ़ला से ह़या और ख़ौफ़ करते हुए निगाहें नीचे कर लीं, अपने गुनाहों पर गिर्या व ज़ारी करने लगा और अपने ऐ़बों पर रोने धोने और आहो बुका करने में रातें काट दीं।

ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इम्तिह़ान :

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की आज़माइश का वक़्त क़रीब आया तो ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "ऐ अय्यूब (عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ! अ़न क़रीब आप का रब्ब عَزَّ وَجَلَّ आप पर ऐसी आज़माइश और हौलनाक मुआ़मला नाज़िल फ़रमाएगा कि जिसे पहाड़ भी बर्दाश्त नहीं कर सकते।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "अगर मैं मह़बूब के साथ तअ़ल्लुक़ में षाबित क़दम रहा तो ज़रूर सब्र करूंगा यहां तक कि कहा जाएगा : "येह इन्तिहाई तअ़ज्जुब ख़ेज़

1.....अ़वाम में मश्हूर है कि ह़ज़रते सय्यिदुना हुसैन बिन मन्सूर ह़ल्लाज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق ने "اَنَا الْحَقّ" (या'नी मैं ह़क़ हूं) कहा था इस का रद्द करते हुए आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत अश्शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या शरीफ़** में तह़रीर फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदी हुसैन बिन मन्सूर ह़ल्लाज قُدِّسَ سِرُّهٗ जिन को अ़वाम "**मन्सूर**" कहते हैं, मन्सूर इन के वालिद का नाम था, और इन का इस्मे गिरामी हुसैन। (आप) अकाबिरे अहले ह़ाल से थे, उन की एक बहन उन से ब दरजहा मर्तबए विलायतो मा'रिफ़त में ज़ाइद थीं। वोह आख़िर शब को जंगल तशरीफ़ ले जातीं और यादे इलाही (عَزَّ وَجَلَّ) में मस्रूफ़ होतीं। एक दिन उन की आंख खुली, बहन को न पाया, घर में हर जगह तलाश किया, पता न चला, उन को वस्वसा गुज़रा, दूसरी शब में क़स्दन सोते में जान डाल कर जागते रहे। वोह अपने वक़्त पर उठ कर चलीं, येह आहिस्ता आहिस्ता पीछे हो लिये, देखते रहे। **आस्मान से सोने की ज़न्जीर में याक़ूत का जाम उतरा और उन के दहने मुबारक (या'नी मुंह शरीफ़) के बराबर आ लगा, उन्हों ने पीना शुरूअ़ किया**, इन से सब्र न हो सका कि येह जन्नत की ने'मत न मिले। बे इख़्तियार कह उठे कि बहन ! तुम्हें अल्लाह (عَزَّ وَجَلَّ) की क़सम कि थोड़ा मेरे लिये छोड़ दो, उन्हों ने एक जुरआ़ (या'नी एक घूंट) छोड़ दिया, उन्हों ने पिया, उस के पीते ही हर जड़ी बूटी, हर दरो दीवार से उन को येह आवाज़ आने लगी कि कौन उस का ज़ियादा मुस्तह़िक़ है कि हमारी राह में क़त्ल किया जाए। उन्हों ने कहना शुरूअ़ किया, "اَنَا لَاحَقُّ" बेशक मैं सब से ज़ियादा इस का सज़ावार (या'नी ह़क़दार) हूं।" लोगों के सुनने में आया, "اَنَا الْحَقّ" (या'नी मैं ह़क़ हूं) वोह (लोग) दा'वए ख़ुदाई समझे, और येह (या'नी ख़ुदाई का दा'वा) कुफ़्र है। और मुसलमान हो कर जो कुफ़्र करे मुरतद्द है और मुरतद्द की सज़ा क़त्ल है।"

(صحیح البخاری، کتاب استتابة المرتدین والمعاندین وقتالهم، ص٥٧٧، حدیث نمبر ٦٩٢٢ पर है कि) रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : "مَنْ بَدَّلَ دِيْنَهٗ فَاقْتُلُوْهُ" **तर्जमा :** जो अपना दीन बदल दे उसे क़त्ल करो।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 26, स. 400)

बन्दा है।" तो उन्हें एक आवाज़ सुनाई दी : "ऐ अय्यूब (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) ! मेरी आज़माइश के लिये तय्यार हो जाओ और मेरा हुक्म व फ़ैसला नाज़िल होने तक सब्र करते रहो।" आप की आज़माइश का सबब येह था कि इब्लीसे लईन ने ह़सद की वजह से त़रह़ त़रह़ के मक्रो ह़ीले से आप पर ग़ालिब होना चाहा लेकिन न हो सका तो कहने लगा : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अय्यूब शुक्र गुज़ार बन्दा है और इस लिये तेरा फ़रमां बरदार है कि तू ने उसे माल, रिज़्क़ और अवलाद में वुस्अ़त अ़त़ा फ़रमाई और सिह़्ह़त बख़्शी है, अगर तू येह सब कुछ वापस ले ले तो एक लम्ह़ा भी तेरी इत़ाअ़त न करेगा।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "जा, मैं ने तुझे उस पर मुसल्लत़ कर दिया और वोह अपनी ह़ालत हरगिज़ तब्दील न करेगा।" पस पहले दिन अवलाद ले कर आज़माइश हुई तो आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और ज़ियादा मेह़नत करने लगे। दूसरे दिन माल को जला दिया गया तो ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : "तमाम अ़त़ाएं उसी की हैं, चाहे तो ले ले और चाहे तो अ़त़ा कर दे।" तीसरे दिन इब्लीस मल्ऊ़न ने आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के जिस्म में फूंक मारी जब कि आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام नमाज़े फ़ज्र अदा फ़रमा रहे थे कि आप जिस्मानी बीमारी में मुब्तला हो गए, सारे बदन में आबले पड़ गए लेकिन आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ज़ाहिरो बात़िन में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते रहे। मालो अवलाद चले जाने के बा'द जब आप जिस्म की आज़माइश में मुब्तला हुए तो फ़रमाया : "तमाम ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने मुझे अपनी इ़बादत के लिये चुन लिया और मुझ पर अपना ख़ास फ़ज़्ल और भलाई फ़रमाई और मुझे अपने इ़लावा किसी चीज़ में मश्ग़ूल न रखा।" ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हमेशा ज़िक्र करते रहे और अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द और शुक्र बजा लाते रहे।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आज़माइश इन्सान के अह़वाल को ज़ाहिर कर देती है और मह़ब्बत के दा'वेदार की ह़ालत बहुत जल्द वाज़ेह़ कर देती है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे नबी ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर सत्तर हज़ार क़िस्म की आजमाइशें नाज़िल फ़रमाईं लेकिन आप عَلَیْہِ السَّلَام ने सब्रो शुक्र किया और शिक्वा न किया। तो सुन लो, ऐ भाइयो ! तुम तो एक कांटा भी बर्दाश्त नहीं कर सकते जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को अवलाद ले कर आज़माया गया मगर आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इ़बादत में इज़ाफ़ा कर दिया, माल ले लिया गया मगर मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ में ज़र्रा बराबर कमी न आई, ज़ियादा से ज़ियादा इ़बादत करते रहे और तमाम आज़माइशों पर राज़ी रहे और ज़ाहिरी व बात़िनी त़ौर पर बिल्कुल कोई शिक्वा न किया। चुनान्चे, आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को निदा दी गई : "ऐ अय्यूब (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) ! तू ने हमारी आज़माइशों पर सब्र किया तो हम तुझे तेरा माल और अवलाद लौटा देंगे और तेरे जिस्म को आज़माइश से आ़फ़िय्यत बख़्श देंगे और तेरा नाम अपनी आख़िरी किताब में लिख देंगे और तेरा ज़िक्र मह़बूब बन्दों के रजिस्टर में फैला देंगे।"

(चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है)

﴿1﴾ اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّشَرَابٌ ۝ (پ٢٣،صٓ:٤٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *हम ने फ़रमाया ज़मीन पर अपना पाउं मार, येह है ठंडा चश्मा नहाने और पीने को।*

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का परन्दों को ज़िन्दा करना :

मन्क़ूल है कि जब हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! मुझे दिखा तू मुर्दों को कैसे ज़िन्दा फ़रमाता है ?" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : "ऐ इब्राहीम (عَلَيْهِ السَّلَام) ! तुझे हमारी कुदरत में शक है जो तू दलील त़लब करते हुए कहता है कि मुझे दिखा ?" तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ ! तू ने मुझे दिल की आंख से दिखाया, अब मैं ज़ाहिरी आंख से देखना चाहता हूं ताकि मैं ज़ाहिरी व बात़िनी निगाह से देख लूं।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म फ़रमाया : "चार परन्दे पकड़ कर ज़ब्ह़ कर और उन्हें टुकड़े टुकड़े कर के हर पहाड़ पर एक एक टुकड़ा रख दे और उन के सरों को अपनी उंगलियों के दरमियान रख कर उन को बुला।"

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ऐसा ही किया तो कुदरते ख़ुदावन्दी से एक ऐसी हवा चली कि बिखरे हुए अज्ज़ा और टुकड़े टुकड़े किया हुवा गोश्त जम्अ़ हो कर हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास ह़ाज़िर हो गए और उन में से हर एक परन्दे ने अपना सर आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की उंगलियों से ले लिया। जब वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की कुदरत से ज़िन्दा हो गए तो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास रुक कर अ़र्ज़ करने लगे : "ऐ इब्राहीम (عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ! आप हम से क्या चाहते थे कि आप ने हमें ज़ब्ह़ कर दिया ? याद रखें ! जो कुछ आप ने हमारे साथ किया है हो सकता है आप के साथ भी ऐसा ही हो। चुनान्चे उसी रात आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ख़्वाब में अपने बेटे को ज़ब्ह़ करते हुए देखा, गोया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमा रहा है : "ऐ इब्राहीम (عَلَيْهِ السَّلَام) ! हम ने तुझे मुर्दे ज़िन्दा कर के दिखाए अब तुम हमें ज़िन्दों को मार कर दिखाओ।" तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से इरशाद फ़रमाया :

﴿2﴾ يٰبُنَيَّ اِنِّیْۤ اَرٰى فِی الْمَنَامِ اَنِّیْۤ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى ؕ (پ٢٣،الصّٰفّٰت:١٠٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ मेरे बेटे मैं ने ख़्वाब देखा मैं तुझे ज़ब्ह़ करता हूं अब तू देख तेरी क्या राए है।*

तो उन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ैसले के आगे सर झुका दिया और सब्र करते हुए अ़र्ज़ की :

﴿3﴾ قَالَ يٰۤاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ؗ سَتَجِدُنِیْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِیْنَ ۝ (پ٢٣،الصّٰفّٰت:١٠٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *कहा : ऐ मेरे बाप ! कीजिये जिस बात का आप को हुक्म होता है ख़ुदा ने चाहा तो क़रीब है कि आप मुझे साबिर पाएंगे।*

ऐ मेरे बाप ! कौन है जो हाकिमे आ'ला عَزَّوَجَلَّ के हुक्म पर ए'तिराज़ करने की ताक़त रखता हो। ऐ मेरे बाप ! अगर मेरा मौला عَزَّوَجَلَّ मुझ से राज़ी हो जाए तो आप वोह काम कर गुज़रिये जिस का आप को हुक्म दिया गया। बेशक मौत बड़ी अच्छी और मीठी है।

मन्कूल है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने कलामे खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ का लज़ीज़ जाम नोश फ़रमा लिया और आग लेने के लिये निकले तो जब्बार की इनायत से आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की क़द्र बढ़ गई और जब आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام दरख़्त के पास पहुंचे जब कि आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का दिल अन्वारे खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ का मुन्तज़िर था कि एक निदा सुनी : "ऐ मूसा।" तो उस से आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को मज़ीद कुर्ब और उन्स मिला। चुनान्चे, आप उस पर ग़ौरो फ़िक्र करते हुए हर सम्त की तरफ़ बढ़ने लगे। तो आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को फिर एक निदा सुनाई दी : "ऐ मूसा ! फ़िक्र न कीजिये।" फिर इरशाद हुवा :

﴾4﴿ فَاخْلَعْ نَعْلَیْکَ ج اِنَّکَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًی ؕ (پ۱۶، طٰہٰ:۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो तू अपने जूते उतार डाल, बेशक तू पाक जंगल तुवा में है।*

जो ऐसा मक़ाम है जहां गुनाहों से आलूदा बन्दा नहीं आ सकता और वह्शत ज़दा आए तो मानूस हो जाता है आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फिर निदा सुनी : "ऐ मूसा ! اِنَّنِیْۤ اَنَا اللّٰہُ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعْبُدْنِیْ ۙ (پ۱۶، طٰہٰ:۱۴) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक मैं ही हूं **अल्लाह** कि मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, तू मेरी बन्दगी कर।" लिहाज़ा मुझे पहचान, मैं तेरा अज़ीम मा'बूद हूं, मुझे ही अ़ज़मत वाला जान, और मैं रिज़्क़ देने वाला मालिक हूं लिहाज़ा मेरे सिवा किसी से सुवाल न कर बल्कि मुझ से मांग, और मैं शदीद सज़ा देने वाला हूं लिहाज़ा मेरे अ़ज़ाब से डर, और जो मुझे याद करे मैं उस के क़रीब होता हूं लिहाज़ा मुझे याद कर।

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! तू ने अपनी तरफ़ मेरी रहनुमाई फ़रमाई और मुझे अपना कुर्ब अ़ता फ़रमाया, (फिर आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की :)

﴾5﴿ رَبِّ اَرِنِیْۤ اَنْظُرْ اِلَیْکَ ط قَالَ لَنْ تَرٰىنِیْ وَلٰکِنِ انْظُرْ اِلَی الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَکَانَہٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِیْ ج فَلَمَّا تَجَلّٰی رَبُّہٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَہٗ دَکًّا وَّخَرَّ مُوْسٰی صَعِقًا ج (پ۹، الاعراف:۱۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ रब्ब मेरे ! मुझे अपना दीदार दिखा कि मैं तुझे देखूं। फ़रमाया : तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा हां ! उस पहाड़ की तरफ़ देख येह अगर अपनी जगह पर ठहरा रहा तो अ़न क़रीब तू मुझे देख लेगा फिर जब उस के रब्ब ने पहाड़ पर अपना नूर चमकाया उसे पाश पाश कर दिया और मूसा गिरा बेहोश।* [1]

1.....**मुफ़स्सिरे शहीर,** ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "لَنْ تَرٰىنِیْ" का मा'ना येह है कि तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा या'नी इन आंखों से सुवाल कर के। बल्कि दीदारे इलाही बिग़ैर सुवाल के मह़ज़ उस की..... **(बक़िय्या अगले सफ़्ह़े पर)**

प्यारे इस्लामी भाइयो ! राहे सुलूक बहुत दुश्वार गुज़ार और सालिक के लिये बहुत मुश्किल है। इसी राह में हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आंसू बहाते रहे, हज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने गिर्या व ज़ारी की, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के ख़लील हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को आग में डाला गया, हज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ज़ब्ह़ किया गया, हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को फ़रोख़्त किया गया, हज़रते सय्यिदुना ज़करिय्या عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर आरा चलाया गया, हज़रते सय्यिदुना यह़्या عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को शहीद किया गया, हज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को आज़्माया गया, हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ख़ौफ़े इलाही में घूमते रहे और नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुज्तबा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सारी ज़िन्दगी फ़क़्र अपनाया।

ऐ मेरे भाई ! इस राह में पहला क़दम रूह़ को फ़ना करना है। शाहराह तो मौजूद है सालिक कहां है ? क़मीस तो मौजूद है पहनने वाले कहां है ? तूरे सीना तो मौजूद है उस पर फ़ाइज़ होने वाले कहां है ? ऐ जुनैद बग़दादी की सी तड़प रखने वालो ! आओ और इस राह पे चलो, ऐ शैख़ अबू बक्र शिब्ली की मह़ब्बत के दा'वेदारो ! हमारी बात सुनो और ऐ इब्राहीम बिन अदहम के दीवानो ! इधर मुतवज्जेह हो जाओ। (رحمہم اللہ تعالٰی علیہم اجمعین)

मक़ामे फ़ना :

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि मैं ने एक पहाड़ पर रैह़ाना आ़बिदा رحمۃاللہ تعالی علیہا को येह शे'र पढ़ते सुना :

اَحضَرتَنِی فِیكَ وَلٰكِن   غَيَّبتَنِی فِی التَّجَلِّی

तर्जमा : (ऐ मेरे रब्ब !) तू ने मुझे अपनी बारगाह में हुज़ूरी अ़त़ा फ़रमाई मगर मैं तेरी तजल्लियात में गुम हो गई।

मैं ने उसे दाएं बाएं तलाश किया तो नज़र आई मैं ने सलाम किया उस ने सलाम का जवाब दिया। मैं ने कहा : "ऐ रैह़ाना !" उस ने जवाब दिया : "ऐ शिब्ली (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى) ! मैं ह़ाज़िर

(**बक़िय्या ह़ाशिया**)......अ़त़ा व फ़ज़्ल से ह़ासिल होगा वोह भी इस फ़ानी आंख से नहीं बल्कि बाक़ी आंख से या'नी कोई बशर मुझे दुन्या में देखने की त़ाक़त नहीं रखता। अल्लाह तआ़ला ने येह नहीं फ़रमाया कि मेरा देखना मुमकिन नहीं। इस से षाबित हुवा कि दीदारे इलाही मुमकिन है अगर्चे दुन्या में न हो क्यूंकि सह़ीह़ ह़दीषों में है कि रोज़े क़ियामत मोअमिनीन अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ के दीदार से फ़ैज़याब किये जाएंगे इ़लावा बरीं येह कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आ़रिफ़ बिल्लाह हैं। अगर दीदारे इलाही मुमकिन न होता तो आप हरगिज़ सुवाल न फ़रमाते। और पहाड़ का षाबित रहना अम्रे मुमकिन है क्यूंकि उस की निस्बत फ़रमाया, "جَعَلَهٗ دَكًّا" उस को पाश पाश कर दिया तो जो चीज़ अल्लाह तआ़ला की मजऊ़ल (बनी हुई) हो और जिस को वोह मौजूद फ़रमाए मुमकिन है कि वोह न मौजूद हो अगर उस को न मौजूद करे क्यूंकि वोह अपने फ़े'ल में मुख़्तार है। इस से षाबित हुवा कि पहाड़ का इस्तिक़रार अम्रे मुमकिन है, मुह़ाल नहीं और जो चीज़ अम्रे मुमकिन पर मुअ़ल्लक़ की जाए वोह भी मुमकिन ही होती है मुह़ाल नहीं होती। लिहाज़ा दीदारे इलाही जिस को पहाड़ के षाबित रहने पर मुअ़ल्लक़ फ़रमाया गया वोह मुमकिन हुवा तो उन का क़ौल बात़िल है जो अल्लाह तआ़ला का दीदार मुह़ाल बताते हैं।"

हूं।" मैं ने पूछा : "किस को ढूंड रही हो ?" तो उस ने जवाब दिया : "रैहाना को।" मैं ने हैरान हो कर उस से पूछा : "क्या तू रैहाना नहीं ?" उस ने जवाब दिया : "ऐ शिब्ली (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ! क्यूं नहीं, मगर जब से मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब मिला है मैं क़ैद हो गई हूं और मुझे येह भी ख़बर नहीं कि मैं कहां हूं ? मैं अपने आप से ग़ाइब हो चुकी और अपने आप को भूल चुकी हूं, और अब मुसाफ़िरों से अपने मुतअ़ल्लिक़ पूछती रहती हूं मगर मैं ने कोई शख़्स ऐसा न पाया जो मुझे मेरे बारे में बता दे।" येह सुन कर मैं ने उसे कहा : "अब मैं भी तेरी त़रफ़ रुजूअ़ करता हूं क्यूंकि तुझ पर निशानियां ज़ाहिर हो चुकी हैं।" तो वोह कहने लगी : "ऐ शिब्ली (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی) ! मैं ने इस सिल्सिले में अपने अ़नासिर से पूछा तो किसी को अपना मददगार न पाया। मैं ने ह़वास से पूछा तो उन को बिग़ैर जामे मह़ब्बत पिये मदहोश पाया। अपनी फ़हम से पूछा तो उस ने वहम की त़रफ़ मेरी रहनुमाई की। मैं ने अपने राज़ से पूछा तो उस ने कहा : मैं नहीं जानता। मैं ने दिल से पूछा तो उस ने भी मुझे मेरी मुराद तक न पहुंचाया। अपने क़ल्ब से पूछा तो वोह गहरी सोच में डूब गया फिर कहने लगा : मुझे इजाज़त नहीं, मैं न तो बता सकता हूं और न ही ज़ाहिर कर सकता हूं।"

फिर रैह़ाना आ़बिदा رحمۃاللہ تعالی علیہا कहने लगी : "ऐ शिब्ली (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی) ! मैं ने हर ज़िन्दा से कहा कि मुझे मेरी ज़ात तक पहुंचा दे और मुझ पर मेरी रहनुमाई कर दे लेकिन कोई भी मेरी बातें न समझ सका, ऐ शिब्ली (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی) ! अगर तुझे मेरा ठिकाना मा'लूम है तो मेरे तर्जुमान को इधर ले आ।" मैं ने उसे कहा : "तेरा ठिकाना रह़ीम व रह़मान के कुर्ब में है।" येह सुनते ही उस ने एक चीख़ मारी और उस के बा'द लम्बा सांस लिया। मैं ने उसे ह़रकत दी तो उस की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर चुकी थी। मैं ने उसे एक चट्टान के सहारे लिटाया और ख़ुद इस उम्मीद पर वसीओ़ अ़रीज़ मैदान में चला गया ताकि कोइ ऐसा शख़्स पाऊं जो इस की तज्हीज़ो तक्फ़ीन पर मेरी मदद करे मगर मुझे कोई न मिला। मैं वापस आया तो उस का कुछ पता न चला कि कहां गई। हां ! मैं ने वहां एक नूर देखा जो शुआएं दे रहा था और बिजली चमक रही थी। मैं दिल में कहने लगा : काश ! मैं जान लेता कि इस नेक बन्दी के साथ क्या हुवा तो मुझे निदा दी गई : "ऐ शिब्ली ! हम जिस को उस की ज़िन्दगी में उस से ले लेते हैं तो मौत के बा'द भी उसे लोगों की आंखों से छुपा देते हैं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं, मैं ने उसी रात उस को ख़्वाब में देखा और पूछा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरे साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" उस ने जवाब दिया : "ऐ नौ जवान ! क़ैद ख़त्म हो गई, मैं ने अपनी मुराद और ने'मतें पा लीं और मेरा मक़्सद पूरा हो गया। अगर तुम भी हमेशा की इ़ज़्ज़त चाहते हो तो मेरी त़रह़ मौत को गले लगा लो।"

फ़रमांबरदार बेटे की मौत से मां भी फ़ौत हो गई :

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का बयान है कि एक साल मैं ने बैतुल्लाह शरीफ़ का ह़ज किया। जब लौटने का इरादा किया तो देखा कि एक नौजवान जिस का जिस्म दुबला पतला, रंग ज़र्द, ऊंट

के क़रीब खड़ा ग़म के सांस लेते हुए कह रहा था : "क्या तुम में कोई ऐसा शख़्स है जो मेरा पैग़ाम उस बुढ्ढी औरत तक पहुंचा दे जिस ने सारी ज़िन्दगी मेरी तर्बिय्यत फ़रमाई, अब वोह मुझे देखने की मुश्ताक़ है।" क्या तुम में से कोई शख़्स मेरे अह़बाब को मेरा पैग़ाम पहुंचा कर अज्रो षवाब लेना चाहता है ?" फिर कहने लगा : "मैं तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम देता हूं, जब तुम आ़फ़िय्यत के साथ पहुंच जाओ तो मेरा ख़त़ फ़ुलां बुढ़िया को पहुंचा देना और उसे मेरे मुतअ़ल्लिक़ बताना कि हम ने "आ़मिरी" को इश्क़ की आग में जलते हुए छोड़ा, वोह अपना मक़्सूद पा चुका है और अगर वोह तुम से मेरी हालत के मुतअ़ल्लिक़ पूछे तो उन से कहना : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से किया हुवा अ़हद नहीं तोड़ा।" वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि मुझे उस पर बड़ा तरस आया मैं ने उस से ख़त़ ले लिया और पूछा : "आप को अपनी वालिदा के पास जाने में क्या रुकावट है ?" तो उस ने कहा : "ऐ मेरे मोह़तरम ! जब तक़्दीर साथ न दे तो मख़्लूक़ क्या करे। मैं इस उम्मीद पर निकला था कि लौट आऊंगा लेकिन येह न जानता था कि कब लौटूंगा। अगर्चे मैं ने अपने महबूब को पा कर अपनी अजनबिय्यत में सुरूर ह़ासिल किया लेकिन मैं आने वाले उस कल की उम्मीद बांधे हुए हूं जब हम मिलेंगे जिस त़रह़ जुदा हुए थे।"

जब उस ने अपनी बात मुकम्मल कर ली तो एक ज़ोरदार चीख़ मारी और बेहोश हो कर गिर पड़ा। क़ाफ़िले वाले उस के इर्द गिर्द जम्अ़ हो गए फिर कुछ देर के बा'द उसे होश आया तो कहने लगा : "हाए अफ़्सोस ! जिस मौत का तुम से वा'दा किया गया है वोह आने वाली है, क़ब्र क़रीब है और दारुल बक़ा की त़रफ़ कूच करने का वक़्त आ गया है।" फिर उस ने दोबारा एक ज़ोरदार चीख़ मारी और उस की रूह़ ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी से जा मिली। वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि हम ने उस की तज्हीज़ो तक्फ़ीन की और नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर दफ़्न कर दिया। फिर बसरा की जानिब रुख़ किया। जब हम शहर के क़रीब पहुंचे तो वहां के लोग दूर से आने वालों के इस्तिक़्बाल और अपने दोस्तों को सलामती की मुबारक बाद देने के लिये निकल आए।

सब लोगों से पीछे एक बुढ़िया आ रही थी जिस की नज़र कमज़ोर थी, उस का दिल ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल था, वोह चलते हुए कांप रही थी और कह रही थी : "क्या उस के आने का वक़्त नहीं आया जिस का मैं इन्तिज़ार कर रही हूं या क़ाफ़िले में कोई ऐसा शख़्स है जो उस के मुतअ़ल्लिक़ बताए ?" फिर उस ने निदा दी : "ऐ क़ाफ़िले वालो ! तुम में कोई मेरे बेटे का ख़त़ लाने वाला है जिस में उस की ख़ैर ख़बर हो ?" फिर उस ने चन्द अश्आ़र पढ़े, जिन का मफ़्हूम येह है :

"वत़न से दूर जाने वाला हर शख़्स आख़िर वापस आता है लेकिन मेरा बेटा दूर जाने वालों के साथ अभी तक न आया। बहुत ज़ियादा रोने से मेरी आंखें चली गईं और उस की जुदाई के ग़म में मेरे दिल की आग तेज़ हो गई। मैं तो उस की वापसी और मुलाक़ात की तमन्ना कर रही थी लेकिन लगता है कि मेरी उम्मीद बहुत दूर है।"

वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تَعالٰی عليه फ़रमाते हैं कि मैं ने आगे बढ़ कर कहा : "ऐ कमज़ोर और ग़मगीन बुढ़िया ! मेरे पास उस नौजवान का ख़त़ है, वोह दूरी का शिक्वा कर रहा था और कह रहा था कि इस शहर में उस के घर वाले हैं, वोह अपनी वालिदा के दीदार का बहुत मुश्ताक़ था जो उस से काफ़ी मह़ब्बतो मुवद्दत रखती है।" उस वक़्त उस बुढ़ी ख़ातून ने एक चीख़ मारी और कहने लगी : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! येह मेरे ही मुसाफ़िर बेटे की सिफ़त है।" उस ने मुझ से ख़त़ लिया ताकि अपने शिकस्ता दिल को जोड़े। वोह बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि वोह मुझ से ख़त़ ले कर चूमने लगी और अपने दिल और आंखों पर रख कर पूछा : "ऐ मेरे परदेसी बेटे के क़ासिद ! मेरे मह़बूब बेटे का क्या हुवा ?" मैं ने उसे बताया कि "वोह अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ से जा मिला है।" जब उस ने सुना कि उस का बेटा तन्हा राहे ह़क़ का मुसाफ़िर हो गया है तो बहुत ज़ियादा रोई फिर अपना सर आस्मान की त़रफ़ उठा कर कहने लगी :

"ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّ وَجَلَّ ! मुझे दुन्या में ज़िन्दा रहना इस लिये पसन्द था कि अपने बेटे से मुलाक़ात की उम्मीद थी लेकिन अब मुझे दुन्या में रहने की कोई ह़ाजत नहीं।" फिर उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और ज़मीन पर गिर गई और अपनी जान जाने आफ़रीं के सिपुर्द कर दी। मैं ने उस की तज्हीज़ो तक्फ़ीन का इरादा किया तो कोई कहने वाला जिस की सूरत नज़र न आई कह रहा था : "ऐ शख़्स ! ठहर जा, इस का मुआ़मला तेरे ज़िम्मे नहीं।"

इब्लीस को ख़ुश करने वाले काम :

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू मुह़म्मद फ़र्रा رَحْمَةُاللهِ تَعالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जब इब्लीसे लईन और उस का लश्कर इकठ्ठा होता है तो वोह किसी शै पर इतने ख़ुश नहीं होते जितने तीन चीज़ों पर ख़ुश होते हैं : (1)......मुसलमान मुसलमान को क़त्ल करे (2)......कोई शख़्स कुफ़्र पर मर जाए और (3)......ऐसा शख़्स जिस के दिल में फ़क़्र का ख़ौफ़ हो।"

फ़ुक़रा को नसीह़त :

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ जुनैद رَحْمَةُاللهِ تَعالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "ऐ गुरौहे फ़ुक़रा ! अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से तुम्हारे तअ़ल्लुक़ की वजह से तुम्हारी इ़ज़्ज़त की जाती है और इसी वजह से तुम पहचाने जाते हो लिहाज़ा अपने आप को देखो कि जब तुम अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में तन्हा होते हो तो तुम्हारा उस के साथ कैसा तअ़ल्लुक़ होता है ?"

फ़क़ीर के तीन औसाफ़ :

मन्क़ूल है कि फ़क़ीर के तीन औसाफ़ हैं :

(1) अपना राज़ छुपाना (2) अपना फ़र्ज़ अदा करना और (3) अपने फ़क़्र की ह़िफ़ाज़त करना।

तमाम मख़्लूक़ की नेकियों के बराबर नेकियां :

मन्क़ूल है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई : "क्या तुम चाहते हो कि बरोज़े क़ियामत तुम्हारी नेकियां तमाम मख़्लूक़ की नेकियों के बराबर हों ?" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ !" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "मरीज़ों की इ़यादत कर और फ़ुक़रा के कपड़ो का एहतिमाम कर।" पस ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपने ऊपर लाज़िम कर लिया कि हर माह सात दिन फ़ुक़रा के लिबास का एहतिमाम करते और मरीज़ों की इ़यादत फ़रमाते।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "फ़क़्र में ग़ना को ज़ाहिर करना फ़क़्र ज़ाहिर करने से अफ़्ज़ल है।"

फ़क़्र में चार चीज़ों का होना ज़रूरी है :

मन्क़ूल है कि फ़क़ीर के पास फ़क़्र में कम अज़ कम चार चीज़ों का होना ज़रूरी है : (1)......ऐसा इ़ल्म जो उसे मुज़य्यन कर दे (2)......ऐसा तक़्वा जो उस की ह़िफ़ाज़त करे (3)......ऐसा यक़ीन जो उसे ख़ुश अख़्लाक़ बना दे और (4)......ऐसा ज़िक्र जो उसे मानूस करे।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़फ़्स رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "किसी का फ़क़्र उस वक़्त तक सह़ीह़ नहीं हो सकता जब तक कि वोह लेने से ज़ियादा देने को मह़बूब न रखे और सख़ावत इस चीज़ का नाम नहीं कि माल पाने वाला न पाने वाले को दे।" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने जलाल رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "अगर आ़जिज़ी व इन्किसारी क़ाबिले फ़ख़्र शै न होती तो फ़क़ीर को हुक्म दिया जाता कि वोह मुतकब्बिराना चाल चले।"

एक क़मीस दुख़ूले जन्नत का सबब बनी :

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : मैं ने ख़्वाब में देखा कि क़ियामत क़ाइम हो गई और कोई कहने वाला कह रहा है : "ऐ मालिक बिन दीनार ! ऐ मुह़म्मद बिन वासेअ़ (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا) ! जन्नत में दाख़िल हो जाओ।" मैं देखने लगा कि दोनों में से कौन पहले जाता है तो ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन वासेअ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जन्नत में पहले दाख़िल हुए। मैं ने इस का सबब दर्याफ़्त किया तो मुझे बताया गया : "मुह़म्मद बिन वासेअ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास एक क़मीस थी और मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار दो क़मीसों के मालिक थे।"

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "कल मीज़ान में फ़क़्रो ग़ना नहीं रखा जाएगा बल्कि सब्रो शुक्र रखा जाएगा लिहाज़ा आओ ! हम सब्रो शुक्र करने वाले बन जाएं।"

ऐ प्यारे इस्लामी भाई ! जो शख़्स इन बुज़ुर्गों के औसाफ़ अपनाए हुए हो लेकिन इन की पैरवी न करे तो वोह इन से मह़ब्बत करने वाला नहीं।

फ़िरिश्ते फ़ुक़रा के हाथों पर पानी डालते हैं :

मन्क़ूल है कि एक बुज़ुर्ग के साथ मुसलमान सूफ़िया व फ़ुक़रा का एक गुरोह था। उस ने ख़्वाब में देखा कि गोया आस्मान शक़ हो गया और ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام और उन के साथ दीगर फ़िरिश्ते सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए। फ़िरिश्तों के हाथों में थाल और जग थे और वोह फ़ुक़रा के हाथों और पाउं पर पानी डाल रहे थे। जब वोह मेरे क़रीब आए तो मैं ने भी अपना हाथ दराज़ किया ताकि वोह पानी डालें। उन्हों ने मुझ पर और मेरे साथ मौजूद फ़ुक़रा के हाथों पर पानी डाला।

ह़ज़रते सय्यिदुना सहल رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : "अगर किसी शख़्स में सह़ीह़ तौ़र पर सिफ़ते फ़क़्र सिर्फ़ एक ही दिन के लिये पाई जाए। फिर वोह चोरी या कोई और जुर्म करे तो फिर भी मुझ पर उस की मदद करना लाज़िम है अगर्चे ऐसा करने पर मेरा हाथ काट दिया जाए।"

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ وَ سَلَّم تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا

जन्नत में दाख़िला

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस मुसलमान के तीन बच्चे बालिग़ होने से पहले मर जाएं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी रह़मत से उसे और उन बच्चों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।" और एक रिवायत में यूं है कि "जिस के तीन बच्चों का इन्तिक़ाल हो जाए वोह जन्नत में दाख़िल होगा।"

(بخاری، کتاب الجنائز، باب ماقیل فی اولاد المسلمین الخ، رقم ۱۳۸۱، ج ۱، ص ۵۶۵)

बयान 15 : औलियाए किराम رضی اللہ عنھم के औसाफ़

ह़म्दे बारी तआ़ला :

तमाम ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने अपनी मख़्लूक़ में से औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تعالٰی को पसन्द फ़रमाया और उन को बुलन्द मक़ाम व मर्तबा अ़त़ा फ़रमाया जिन्हों ने उस से किये हुए अ़हद को पूरा किया तो उस ने उन का तज़्किरा पूरी काइनात में फैला दिया, ज़माने को उन की बरकत से ज़ीनत अ़त़ा फ़रमाई, उन के इरफ़ान की महक से तमाम आ़लम को मुअ़त्तर फ़रमा दिया, उन्हें अपना क़ुर्ब अ़त़ा फ़रमा कर उन का मुत़ालबा पूरा कर दिया, उन की मह़ब्बत को उन के टूटे हुए दिलों को जोड़ने वाला बना दिया, उन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपने सर झुका दिये और अपनी ख़्वाहिशात की क़ुरबानी दे दी तो उस ने भी उन्हें अज्रो षवाब के ख़ज़ाने अ़त़ा फ़रमा दिये, उन्हों ने अपने मह़बूबे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये बख़ुशी तकालीफ़ बर्दाश्त कीं और कड़वी चीज़ को मीठा समझा, रब्ब عَزَّوَجَلَّ की तलाश में दीवानों की त़रह़ घूमते रहे और उस को पाने में अपनी जान तक क़ुरबान कर दी और मह़ब्बत की बेड़ियों में असीर हो गए, उन को ख़ज़ाने पेश किये गए मगर उन्हों ने ठुकरा दिये, दुन्या उन पर फ़िदा होने की कोशिश करती रही लेकिन उन्हों ने उस से कनाराकशी इख़्तियार कर ली, उन्हों ने फ़क़्रो फ़ाक़ा इख़्तियार किया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें आज़्माइश में मुब्तला फ़रमाया तो उन्हों ने उन एह़सानात पर शुक्र अदा किया और सब्र का दामन मज़्बूती से थामे रखा। शैत़ान ने उन पर अपने मक्रो फ़रैब का जाल डालने की कोशिश की लेकिन उस का उन पर कोई बस न चल सका और वोह उन्हें धोका देने की त़ाक़त नहीं रखता। येह सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मोह़ताज हैं और उस की अ़त़ा से ग़नी हो गए जिन्हें ग़ैरे ख़ुदा से मुस्तग़नी कर दिया गया और सह़री के वक़्त उन के लिये पर्दे उठा दिये गए।

अल्लाह वालों के आ'माल :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू शहल साएह़ رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मैं ने मक्कए मुकर्रमा زادھا اللہ تعالٰی شرفًا وتکریمًا से चन्द मील के फ़ासिले पर एक नौजवान को नमाज़ पढ़ते हुए देखा, वोह क़ाफ़िले से बिछड़ गया था। मैं उस के नमाज़ से फ़ारिग़ होने का इन्तिज़ार करने लगा लेकिन उस की नमाज़ त़वील हो गई। जब उस ने सलाम फेरा तो मैं ने उसे اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ कहा। उस ने وعَلَیْکَ السَّلَام कहते हुए सलाम का जवाब दिया। मैं ने उस से पूछा : "मा'लूम होता है कि आप अपने हम सफ़रों से पीछे रह गए हैं, क्या आप का कोई रफ़ीक़ है जो आप को उन से मिलाने में मदद करे ?" तो वोह रो दिया और कहने लगा : "हां, है।" मैं ने पूछा : "कहां है ?" तो उस ने जवाब दिया : "वोह मेरे आगे पीछे और दाएं बाएं मौजूद है।" आप फ़रमाते हैं कि मैं ने पहचान लिया कि येह आ़रिफ़ है।" फिर

मैं ने उस से पूछा : "क्या आप के पास कोई तोशा है ?" तो उस ने जवाब दिया : "हां, है।" मैं ने पूछा : "कहां है ?" तो उस ने जवाब दिया : "मेरे दिल में मेरे मालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ के लिये इख़्लास है।" मैं ने कहा : "क्या मैं आप का रफ़ीक़ बन सकता हूं ?" तो उस ने कहा : "रफ़ीक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ग़ाफ़िल कर देता है और मैं किसी ऐसे शख़्स को पसन्द नहीं करता जो मुझे एक लम्हे के लिये भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़ाफ़िल करे।" फिर मैं ने उस से पूछा : "आप कहां से खाते हैं ?" तो उस ने जवाब दिया : "वोह ख़ुदा जिस ने मुझे मां के पेट की तारीकी में और बचपन में गिज़ा दी वोही जवानी में मेरे रिज़्क़ का कफ़ील है, जब मुझे खाने पीने की ह़ाजत होती है तो खाना मेरे सामने ह़ाज़िर हो जाता है।" मैं ने अ़र्ज़ की : "क्या आप को किसी क़िस्म की ह़ाजत है ?" तो उस ने जवाब में कहा : "मेरी ह़ाजत येह है कि आज के बा'द आप मुझे सलाम न करें।" मैं ने अ़र्ज़ की : "मेरे लिये दुआ़ फ़रमाएं।" तो वोह मुझे दुआ़ देने लगा कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को हर गुनाह से मह़फ़ूज़ फ़रमाए और अपना क़ुर्ब बख़्शने वाले आ'माल में मश्ग़ूल फ़रमा दे।" फिर मैं ने उस से पूछा : "आज के बा'द कहां मुलाक़ात होगी ?" जवाब मिला : "आज के बा'द हमारी मुलाक़ात नहीं होगी, अगर आप मुक़र्रबीन में से हैं तो मुझे कल बरोज़े क़ियामत मुक़र्रबीन के मरातिब में तलाश करना।" फिर वोह ग़ाइब हो गया और उस के बा'द मैं ने उसे नहीं देखा, उस के अचानक नज़रों से ओझल हो जाने पर मैं अ़र्सए दराज़ तक अफ़्सोस करता रहा।"

नाफ़रमान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वली बन गया :

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं कि मेरा एक इन्तिहाई शरीर पड़ोसी था उस की शिकायत ले कर अहले मह़ल्ला मेरे पास आए ताकि मैं उसे समझाऊं। जब मैं उस के पास गया और उस से कहा : "तेरी ना फ़रमानियां ज़ियादा हो गई हैं या तो तू तौबा कर ले या फिर इस मह़ल्ले से चला जा।" तो उस ने जवाब दिया : "मैं अपने मुल्क में ही रहूंगा और यहां से नहीं निकलूंगा।" मैं ने कहा : "हम ह़ाकिमे वक़्त से तेरी शिकायत करेंगे ?" तो वोह कहने लगा : "मेरी उस से दोस्ती है।" तो मैं ने कहा : "हम तेरे ख़िलाफ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ करेंगे ?" येह सुन कर उस ने कहा : "मेरा रब्ब عَزَّوَجَلَّ तुम से ज़ियादा मुझ पर रह़्म फ़रमाने वाला है।" फिर वोह मेरे पास से उठ खड़ा हुवा। मैं ने रात सह़री के वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ के लिये हाथ उठा दिये और अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : ऐ मेरे मालिके ह़क़ीक़ी ! फ़ुलां शख़्स ने हमें तकलीफ़ दी है लिहाज़ा तू उसे उस की सज़ा दे।" तो हातिफ़े ग़ैबी ने पुकार कर कहा : "उसे बद दुआ़ न दे क्यूंकि येह हमारे औलिया में से है।" मैं उसी वक़्त उठा और जा कर उस के दरवाज़े पर दस्तक दी। जब वोह शख़्स बाहर आया तो समझा कि शायद मैं उसे मह़ल्ले से निकालने आया हूं तो वोह रोने लगा और मा'ज़िरत करते हुए कहने लगा : "ऐ मेरे मुह़तरम ! मैं ने आप की बात मान ली है और अब मैं इस मह़ल्ले से निकल जाऊंगा।" तो मैं ने कहा : "मैं इस लिये नहीं आया बल्कि येह बताने आया हूं कि जब मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तुम्हारे ख़िलाफ़ दुआ़ के लिये हाथ उठाए तो एक

पुकारने वाले ने निदा दी : "उसे बद दुआ न दे क्यूंकि येह हमारे औलिया में से है।" जब उस ने येह सुना तो बहुत रोया और सच्चे दिल से ताइब हो गया। लोग उस की ज़ियारत करने और उस से बरकत हासिल करने के लिये कषरत से जम्अ़ होने शुरूअ़ हो गए। फिर वोह पैदल मक्कए मुकर्रमा زادها الله تعالى شرفًا وتكريمًا चला गया और वहीं मुक़ीम हो गया। अगले साल मैं ने हज किया। ज़ोहर के वक़्त मस्जिदे ह़राम की दीवार के साए में बैठा था कि मैं ने मस्जिद के कोने में एक गुरौह देखा। मैं खड़ा हुवा और देखा कि लोग एक शख़्स के गिर्द जम्अ़ हैं। ग़ौर करने पर मा'लूम हुवा कि वोह तो मेरा वोही पड़ोसी था। वोह मिट्टी पर लैटा हुवा लम्बी लम्बी सांसें ले रहा था। मैं उस के सर के क़रीब बैठ कर रोने लगा। उस ने अपनी आंखें खोलीं और मुझे देख कर कहने लगा : "ऐ मालिक (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق) ! देखो ! वोह रब्ब عَزَّوَجَلَّ बुराइयों से दरगुज़र करता है और आंसू बहाने वालों पर रह़्म फ़रमाता है। मैं उस मह़ल्ले से निकला और तुझ से ह़या करते हुए अपने वत़न और घरवालों को छोड़ दिया ह़ालांकि तू भी मेरी त़रह़ मख़्लूक़ है, (मगर मैं ने ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ से ह़या न की तो) मैं कल बरोज़े क़ियामत उस की बारगाह में कैसे खड़ा होऊंगा ? फिर उस ने एक आहे सर्द दिले पुर दर्द से खींची और उस के साथ ही उस का त़ाइरे रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गया।

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं कि "मैं एक साल बैतुल्लाह शरीफ़ के सफ़र पर था। रास्ते में एक शख़्स की इन्तिहाई पुर सोज़ आवाज़ सुनाई दी। मैं जल्दी से उस की त़रफ़ गया और जा कर उसे सलाम किया। उस ने मेरा नाम ले कर मुझे जवाब दिया तो मैं ने उस से पूछा : ऐ मेरे दोस्त ! आप को मेरा नाम किस ने बताया ?" उस ने जवाब दिया : "आ़लमे मलकूत में मेरी और आप की रूह़ की मुलाक़ात हुई थी लिहाज़ा मुझे आप का नाम हमेशा रहने वाली उस ज़ात ने बताया जिस को मौत नहीं।" फिर उस ने कहा : "ऐ जुनैद (رَحْمَةُ اللهِ تعالٰى عَلَيْه) ! जब मैं मर जाऊं तो मुझे ग़ुस्ल देना और इन्हीं कपड़ों में कफ़न दे कर उस टीले पर चढ़ कर ए'लान करना : "اَلصَّلاَةُ عَلَى الْغَرِيْبِ يَرْحَمُكُمُ الله" या'नी ऐ लोगो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाए, इस अजनबी और ग़रीबुद्दियार की नमाज़े जनाज़ा पढ़ लो।" उस के बा'द उस नौजवान की पेशानी पर पसीना आ गया, वोह ज़ारो क़ित़ार रो कर कहने लगा : "आप को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब ह़ज कर के वापस पलटो तो बग़दाद ज़रूर जाना और ज़ा'फ़रानी के घर के मुतअ़ल्लिक़ दर्याफ़्त कर के मेरी मां और मेरे बेटे के मुतअ़ल्लिक़ पूछना और फिर उन्हें कहना कि "तुम्हें एक ऐसे मुसाफ़िर ने सलाम भेजा है जिस को न तो उस के घर पहुंचाया गया और न ही तुम्हारे पास छोड़ा गया।" उस के बा'द वोह नौजवान इस दुन्या से कूच कर गया।

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं कि "मैं ने उस को ग़ुस्ल व कफ़न दे कर उस टीले पर चढ़ कर जब येह ए'लान किया : "اَلصَّلاَةُ عَلَى الْغَرِيْبِ يَرْحَمُكُمُ الله" तो मैं ने देखा कि एक जमाअ़त पहाड़ों से आ रही है, हम सब ने उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर उसे दफ़्न कर दिया। मैं ने ह़ज अदा करने के बा'द बग़दाद जा कर जब ज़ा'फ़रानी के घर से मुतअ़ल्लिक़

दर्याफ़्त किया तो मुझे जो रास्ता बताया गया था मैं ने उस पर चन्द बच्चों को खेलते हुए देखा, उन में से एक बच्चा मेरे पास आया और कहने लगा : ऐ मेरे बुज़ुर्ग ! शायद आप हमारे वालिद की मौत की ख़बर देने आए हैं।" हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : मुझे उस बच्चे के कलाम से बड़ा तअ़ज्जुब हुवा, उस ने मेरा हाथ पकड़ा और घर जा कर दरवाज़ा खट खटाया तो एक बूढ़ी औ़रत बाहर आई और कहने लगी : """ऐ जुनैद (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) ! मेरे बेटे का इन्तिक़ाल कहां हुवा ? शायद अ़रफ़ा में।" तो मैं ने कहा : "नहीं।" येह सुन कर कहने लगी : "तो फिर शायद किसी वादी में दरख़्त के नीचे या किसी जंगल में।" तो मैं ने कहा : "जी हां।" तो बोली : "हाए अफ़्सोस उस लड़के पर ! जिसे न तो उस के घर पहुंचाया गया और न हमारे पास छोड़ा गया।" फिर उस के मुंह से एक आह निकली और उस ने चन्द अश्आ़र पढ़े, जिन का मफ़्हूम येह है :

"क्या तू नहीं देख रहा कि ज़माने ने मुझ पर कैसे कैसे सितम ढाए और जुदाई के तीर मारे और मेरे दोस्त, अह़बाब को मुझ से दूर कर दिया। वोह सब मेरे दिल में मुअ़ज़्ज़ज़ मक़ामो मर्तबा रखते थे। उन की जुदाई के बा'द मैं ने ख़ुद को बड़ा मजबूरो बेकस पाया कि मेरे दिल के राज़ छुपाने के सारे उसूल भी ख़त्म हो गए। जिस दिन वोह मुझ से जुदा हुए थे उस दिन मेरी आंख ने ख़ून के आंसू बहाए और उन की जुदाई ने मुझे सख़्त दिल न बनाया तो लोगों ने गहरा सांस ले कर कहा : "ऐ नौजवान ! तू अपनी आंखों की पलकों को रो रो कर वरम आलूद बना रहा है। तू पहला इन्सान नहीं कि जिस के अह़बाब उस से बिछड़ गए और जो ह़वादिषाते ज़माना का शिकार हुवा। ज़माना हमेशा एक ह़ाल पर नहीं रहता बल्कि उस में ख़ुशी, ग़मी आती रहती है।"

फिर उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और अपनी जान जाने आफ़रीं के सिपुर्द कर दी।

ज़मीन से दीनार निकल आए :

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन फ़ज़्ल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि "मैं ने अपने एक रूमीयुन्नस्ल दोस्त से इस्लाम लाने का सबब पूछा तो उस ने बयान करने से इन्कार कर दिया। जब मैं ने इसरार किया तो उस ने बताया कि हमारे मुल्क पर मुसलमानों का लश्कर ह़म्ला आवर हुवा, उन्हों ने चन्द साल तक हमारा मुह़ासरा किये रखा। आख़िरे कार हम ने बाहर निकल कर उन से जंग की, हमारे कुछ लोग क़त्ल हुए और कुछ उन के। हम ने उन की एक जमाअ़त को क़त्ल कर दिया और एक को क़ैदी बना लिया। और मैं ने अकेले दस मुसलमानों को घर में क़ैद कर लिया। रूम में मेरा बहुत बड़ा घर था लिहाज़ा मैं ने उन सब को अपने ख़ादिमीन के सिपुर्द कर दिया। उन्हों ने उन को बेड़ियों में बांध कर ख़च्चरों पर सामान लादने के काम पर लगा दिया। एक दिन मैं ने उन क़ैदियों पर मुक़र्रर एक ख़ादिम को देखा कि उस ने एक क़ैदी से कुछ लिया और उस को नमाज़ पढ़ने के लिये छोड़ दिया, मैं ने उस ख़ादिम को पकड़ कर मारा और पूछा : "बताओ ! तुम इस क़ैदी से क्या लेते हो ?" तो उस ने बताया : "येह हर नमाज़ के वक़्त मुझे एक दीनार देता है और मैं इसे नमाज़ पढ़ने के लिये छोड़ देता हूं।" मैं ने उस से पूछा : "क्या इस के पास दीनार हैं ?" तो उस ख़ादिम ने बताया : "नहीं, मगर जब येह नमाज़ से फ़ारिग़ होता है तो अपना हाथ ज़मीन पर मारता है और उस

से एक दीनार निकाल कर मुझे दे देता है।" मुझे शौक़ हुवा कि मैं उस की ह़क़ीक़त जानूं। लिहाज़ा जब दूसरा दिन हुवा तो मैं उस निगरान के कपड़े पहन कर उस की जगह खड़ा हो गया और उसे कहा : "तुम जाओ ! आज इस की निगरानी मैं खुद करूंगा ताकि इस बात की ह़क़ीक़त जानूं जो तुम ने मुझे बताई थी।" जब ज़ोहर का वक़्त हुवा तो उस ने मुझे इशारा किया कि मुझे नमाज़ पढ़ने दे तो मैं तुझे एक दीनार दूंगा।" मैं ने कहा : "मैं दो दीनार से कम नहीं लूंगा।" उस ने कहा : "ठीक है।" मैं ने उसे छोड़ दिया, उस ने नमाज़ पढ़ी। जब फ़ारिग़ हुवा तो मैं ने देखा कि उस ने अपना हाथ ज़मीन पर मारा और वहां से नए दो दीनार निकाल कर मुझे दे दिये। जब अ़स्र का वक़्त हुवा तो उस ने मुझे पहली मरतबा की त़रह़ इशारा किया। मैं ने उसे इशारा किया कि "मैं पांच दीनार से कम नहीं लूंगा।" उस ने मान लिया। फिर जब मग़रिब का वक़्त हुवा तो ह़स्बे मा'मूल मुझे इशारा किया तो मैं ने कहा : "मैं दस दीनार से कम नहीं लूंगा।" उस ने मेरी बात मान ली। और जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुवा तो जमीन से दस दीनार निकाल कर मुझे दे दिये और फिर जब इ़शा की नमाज़ का वक़्त हुवा तो ह़स्बे आ़दत उस ने मुझे इशारा किया, मैं ने कहा : "मैं बीस दीनार से कम नहीं लूंगा।" फिर भी उस ने मेरी बात तस्लीम कर ली और नमाज़ से फ़रागत पा कर उस ने ज़मीन से बीस दीनार निकाले और मुझे थमा कर कहने लगा : "जो मांगना है मांगो ! मेरा मौला عَزَّوَجَلَّ बहुत ग़नी और करीम है, मैं उस से जो मांगूंगा वोह बुख़्ल नहीं करेगा।" मैं ने वोह रात रो कर गुज़ारी, उस का येह मुआ़मला देख कर मुझे बड़ा धचका लगा और मुझे यक़ीन हो गया कि येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वली है, मुझ पर उस का रो'ब त़ारी हो गया और मैं ने उस को ज़न्जीरों से आज़ाद कर दिया।

जब सुब्ह़ हुई तो मैं ने उसे बुला कर उस की ता'ज़ीमो तकरीम की, उसे अपना पसन्दीदा नया लिबास पहनाया। मैं ने उसे इख़्तियार दिया कि वोह चाहे तो हमारे शहर में इ़ज़्ज़त वाले मकान या मह़ल में रहे और उस की इन्तिहाई ता'ज़ीमो तकरीम की जाएगी और चाहे तो अपने शहर चला जाए। उस ने अपने शहर जाना पसन्द किया। लिहाज़ा मैं ने एक ख़च्चर मंगवाया और ज़ादे राह दे कर उसे ख़च्चर पर खुद सुवार किया। उस ने मुझे दुआ़ दी : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने पसन्दीदा दीन पर तेरा ख़ातिमा फ़रमाए।" उस का येह जुम्ला मुकम्मल न हुवा था कि मेरे दिल में दीने इस्लाम घर कर गया फिर मैं ने उस के साथ अपने दस ग़ुलाम और ख़ादिम भेजे। उन्हें हुक्म दिया कि वोह सब उस की बहुत ज़ियादा ता'ज़ीमो तकरीम करें और उसे किसी क़िस्म की कोई तकलीफ़ न होने दें और येह कि वोह लोग उस के हुक्म की इत़ाअ़त करें, और वोही करें जो येह पसन्द करे और उस की मुख़ालफ़त बिल्कुल न करें। फिर उस को एक दवात और काग़ज़ दिया और एक निशानी मुक़र्रर कर ली कि जब वोह अपने मक़ाम पर मह़फ़ूज़ पहुंच जाए तो वोह निशानी लिख कर मेरी त़रफ़ भेज दे। हमारे और उस के शहर के दरमियान पांच दिन की मसाफ़त थी। जब छट्टा दिन आया तो मेरे ख़ुद्दाम मेरे पास आए, उन के पास रुक़्आ़ भी था जिस में उस का ख़त़ और वोह अ़लामत भी थी। मैं ने अपने ग़ुलामों से जल्दी पहुंचने का सबब दर्याफ़्त किया तो उन्हों ने बताया कि जब हम उस के

साथ यहां से निकले तो हम किसी थकावट और मशक़्क़त के बिग़ैर एक घड़ी के अन्दर अन्दर वहां पहुंच गए लेकिन वापसी पर वोही सफ़र की थकावट और तकलीफ़ के साथ पांच दिनों में तै हुवा। उन की येह बात सुनते ही मैं ने उसी वक़्त पढ़ा : "اَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰہِ وَاَنَّ دِیْنَ الْاِسْلَامِ حَقٌّ." फिर मैं रूम से निकल कर मुसलमानों के शहर आ गया।

ऐ मेरे मौला ! अगर तू सिर्फ़ बा अ़मल लोगों पर रह़म फ़रमाएगा तो हमारे जैसे कोताह किधर जाएंगे, अगर तू सिर्फ़ मुख़्लिसीन की नमाज़ें क़बूल फ़रमाएगा तो रियाकारों के आ'माल कौन क़बूल करेगा, अगर तू सिर्फ़ मोह़सिनीन पर करम फ़रमाएगा तो गुनहगारों पर कौन करम करेगा। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम तुझ से हुस्ने ज़न रखते हैं। ऐ वोह ज़ात जिसे हमारी आंखें नहीं देख सकतीं ! हमारी तमाम लग़्ज़िशें मुआ़फ़ फ़रमा।

صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ آلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْن

ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कीम बिन ह़िज़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं मैं ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से माल का सुवाल किया आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे अ़ता फ़रमाया, मैं ने दोबारा सुवाल किया आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर अ़ता फ़रमाया, मैं ने तीसरी बार सुवाल किया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर मुझे अ़ता फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया : "बेशक येह माल सर सब्ज़ और मीठा है पस जिस ने इसे अच्छी निय्यत से लिया तो उसे इस में बरकत दी जाएगी और जिस ने दिल के ह़िर्सो लालच से ह़ासिल किया उसे इस में बरकत नहीं दी जाएगी और वोह ऐसा है कि खा कर भी सैर नहीं होता और (आगाह रहो कि) ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से अफ़्ज़ल है।"

(صحیح البخاری، کتاب الرقاق،باب قول النبی صلی اللہ علیہ وسلم ھذاالمال.....الخ،الحدیث:٦٤٤١،ص٥٤١)

बयान 16 :

मौत की सख़्तियां

ह़म्दे बारी तआ़ला :

तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो बुलन्दो बाला और बुज़ुर्गी वाला है, सब ख़ूबियों वाला है, पैदा करने वाला और लौटाने वाला है, अपने इरादे को पूरा करने वाला है, अपने जलाले किब्रियाई में यक्ता है, जिस की कोई कैफ़िय्यतो ह़दबन्दी नहीं, उस के मुल्क की कोई इब्तिदा है न इन्तिहा, उस ने तमाम इन्सानों को पैदा फ़रमाया और हिदायत की त़रफ़ रहनुमाई के लिये उन को सह़ीह़ रास्तों पर चलाया, और उन्हें अपनी पसन्दीदा सूरत पर पैदा फ़रमाया और हमेशा की ज़िन्दगी और ने'मतों वाली जन्नत की बिशारत अ़त़ा फ़रमाई, निगाहे इब्रत अ़त़ा फ़रमाई, और अ़ज़ाबे जहन्नम और वईदों के ज़रीए़ उसे डराया और इन्सान पर अपना शुक्र अदा करना लाज़िम फ़रमाया और उन्हें अपने मज़ीद फ़ज़्लो करम की ज़मानत अ़त़ा फ़रमाई और उन पर मौत मुक़र्रर कर दी पस उस से किसी को छुटकारा नहीं और न ही भागने की कोई जगह है। उस ने कितने दोस्तों को अपने दोस्तों की जुदाई पर रुलाया? कितने बच्चों को यतीम किया और उन्हें आहो बुका और गिर्या व ज़ारी में मुब्तला फ़रमाया? वोह इन्सान को मौत देने के बा'द न ज़ाहिर करता है न वापस लौटाता है, उस ने अहले दुन्या पर मौत मुक़र्रर फ़रमाई और हर आज़ाद व ग़ुलाम को तक़दीर के तीरों का हदफ़ बनाया, और चांद की मनाज़िल को उस से दूर कर दिया, और त़ाइरे रूह़ को क़फ़से उ़न्सुरी से जुदा कर दिया। इन्सान को ज़िन्दगी की लज़्ज़त के बदले क़ब्र की बे कैफ़ो दमकदर ज़िन्दगी दी। पस बादशाह और मोह़ताजो ग़नी सब के सब फ़क़्र और मौत में बराबर हैं।

पाक है वोह ज़ात जिस ने हर जाबिर व सरकश को मौत की ज़िल्लत में गिरिफ़्तार किया और हर बात़िल परस्त को तोड़ दिया, उन को वसीअ़ मह़लों से तंग क़ब्र में डाल दिया, उन की लम्बी मुद्दत की रस्सी को काट कर उन के आबा व अज्दाद को उन से ले लिया और बच्चों को पिंघोड़ों से उठाया और क़ब्र को उन का ठिकाना बना दिया। उन के चेहरे मिट्टी में मिल गए, मौत के मुआ़मले में छोटे बड़े, अमीर ग़रीब, आक़ा व ग़ुलाम और बच्चे सब बराबर हैं, इस से मर्दों औ़रतों का ज़िक्र भी ख़ामोश हो गया। पस वोह क़ियामत तक क़ब्रों की क़ैद में रहेंगे। क्या अ़क़्लमन्द उन की हलाकत से इब्रत ह़ासिल नहीं करता। तमाम लोग तन्हा कोठरी में चले गए, कहां गए बड़े बड़े शहरों और मज़्बूत़ क़ल्ओ़ं वाले! कहां गए त़रह़ त़रह़ के फ़ुनून में महारत रखने वाले! कहां गए मज़्बूत़ ह़िसारों में बन्द और मज़्बूत़ मह़ल्लात में मह़फ़ूज़ रहने वाले! अब तो उन में मज़्बूत़ तरीन और त़ाक़तवर लोग क़ब्र की तारीकी में अकेले पड़े हैं। क्या उन्हें बुज़ुर्गी वाले परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान ने नहीं डराया : وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ۝ (پ٢٦،ق:١٩) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और आई मौत की सख़्ती ह़क़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था।"

ऐ मौत से ग़ाफ़िल इन्सान! देख तो सही! तेरी मज़्बूत़ उ़म्र का एक ह़िस्सा गुज़र चुका है। कब तक तू ग़फ़्लत की नींद सोता रहेगा? क्या तुझे वा'दे ने जोश नहीं दिलाया या वईद से तुझे ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ पैदा न हुवा? क्या तू ने इ़ज़्ज़तो बुज़ुर्गी वाले परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान नहीं सुना :

"وَجَآءَ تْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ط ذٰلِکَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ O (پ٢٦، ق:١٩)" **"तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और आई मौत की सख़्ती ह़क़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था।"

आयते मुबारका की तफ़्सीर :

"وَجَآءَ تْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ" से मुराद नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक पर किया गया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वा'दा है, और वोह येह है कि मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام का अपने लश्कर के साथ ज़ाहिर होना, आस्मान का शक़ होना और बन्दे को मा'लूम हो जाना कि उस का ठिकाना जन्नत में होगा या जहन्नम में। येह सब कुछ नज़्अ़ के वक़्त होता है। और येह ह़क़ है जिस को नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ईमान बिलग़ैब में बयान फ़रमाया। फिर उस के बा'द क़ब्र में नकीरैन (या'नी मुन्कर-नकीर) का सुवाल करना। जब मय्यित को क़ब्र में उतारा जाता है तो सब से पहली सख़्ती येही होती है। سَكْرَةُ الْمَوْت में سَكْرَةٌ जिन्स को शामिल इस्मे मुफ़रद है (या'नी मौत की हर क़िस्म की सख़्ती) क्यूंकि मौत की सख़्तियां बहुत ज़ियादा हैं।

जब हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मरज़े मौत में मुब्तला हुए तो इरशाद फ़रमाया : "मौत की बहुत सख़्तियां हैं।"

(صحيح البخارى، كتاب الرقاق، باب سكرات الموت، الحديث ٦٥١٠، ص٥٤٦)

हर शख़्स पर मौत की सख़्तियां उस के दुन्या में किये हुए आ'माल के मुत़ाबिक़ होंगी। इन सख़्तियों को سَكْرَةٌ कहने की एक वजह येह भी है कि इन के ज़ुहूर के वक़्त अ़क़्लें ज़ाइल हो जाती हैं तो इन्सान ऐसा हो जाता है जैसा कि नशे में मदहोश शख़्स होता है क्यूंकि मौत के वक़्त बन्दे पर उस के अच्छे बुरे आ'माल ज़ाहिर हो जाते हैं जिन के मुत़ाबिक़ उस को जज़ा मिलेगी। पस ग़ीबत करने वाले के होंट आग की क़ैंचियों से काटे जाएंगे और ग़ीबत सुनने वाले के कानों में जहन्नम की आग भर दी जाएगी, ज़ालिम की रूह़ हर मज़्लूम पर तक़्सीम कर दी जाएगी, ह़राम खाने वाले के लिये खाने में ज़क़्क़ूम (या'नी जहन्नम के एक कांटेदार दरख़्त का इन्तिहाई कड़वा फल) दिया जाएगा। इसी त़रह़ नज़्अ़ की सख़्तियों के वक़्त बन्दे पर उस के दीगर आ'माल भी ज़ाहिर हो जाएंगे और मय्यित पर तमाम सख़्तियां एक एक कर के गुज़रेंगी। आख़िरी सख़्ती गुज़रते वक़्त उस की रूह़ क़ब्ज़ हो जाएगी। और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इरशाद ذٰلِکَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ का मत़लब येह है कि "लम्बी उम्मीदों और दुन्या में हमेशा रहने की ह़िर्स के साथ तू मौत से भागता था।"

क़ब्र जन्नत का बाग़ या जहन्नम का गढ़ा है :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुछ लोगों को हंसते हुए देखा तो इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम लज़्ज़तों को ख़त्म करने वाली (मौत) को याद करते तो इस से ग़ाफ़िल हो जाते जो मैं देख रहा हूं (या'नी हंसने से)।" फिर इरशाद फ़रमाया : "लज़्ज़ात को काटने वाली

(मौत) को कषरत से याद करो। और बेशक क़ब्र जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है या जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा।"

(المعجم الاوسط، الحديث ٦٩١، ج ١، ص ٢٠٤)

(جامع الترمذی، ابواب صفة القيامة ، باب حديث اكثروا من......الخ، الحديث ٢٤٦٠، ص ١٨٩٩ "يضحكون" بدله "يكتشرون")

सकराते मौत :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ का'ब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ! हमें मौत के मुतअ़ल्लिक़ बताइये।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरल मोअमिनीन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ! मौत एक ऐसी कांटेदार टहनी की मानिन्द है जिस को किसी आदमी के पेट में दाख़िल किया जाए और हर कांटा एक एक रग में पैवस्त हो जाए फिर कोई त़ाक़तवर शख़्स उस टहनी को अपनी पूरी त़ाक़त से खींचे तो उस टहनी की ज़द में आने वाली हर चीज़ कट जाए और जो ज़द में न आए वोह बच जाए।"

(احياء علوم الدين ، كتاب ذكر الموت وما بعده، الباب الثالث: فى سكرات الموت......الخ ، ج ٥ ، ص ٢١٠)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मेरे वालिदे मोह़तरम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते थे : "मुझे मरने वाले इन्सान पर तअ़ज्जुब होता है कि अ़क़्ल और ज़बान होने के बावुजूद वोह क्यूं मौत और उस की कैफ़िय्यत बयान नहीं करता।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि जब मेरे वालिदे मोह़तरम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का वक़्ते विसाल क़रीब आया तो मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ बाबाजान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ! आप तो ऐसे ऐसे फ़रमाया करते थे।" तो उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! मौत इस से ज़ियादा सख़्त है कि उस को बयान किया जाए फिर भी मैं कुछ बयान किये देता हूं। अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! गोया मेरे कन्धों पर रज़्वय (यम्बुअ़ का एक मश्हूर पहाड़) और तहामा के पहाड़ रख दिये गए हैं और गोया मेरी रूह़ सूई के नाके से निकाली जा रही है, गोया मेरे पेट में एक कांटेदार टहनी है और गोया आस्मान ज़मीन से मिल गया है और मैं इन दोनों के दरमियान हूं।"

(المستدرك، كتاب معرفة الصحابة، باب وصف الموت فى حالة النزع، الحديث ٥٩٦٩، ج ٤، ص ٥٦٩ _ الطبقات الكبرى لابن سعد، الرقم ٤٤٦ عمرو بن العاص، ج ٤، ص ١٩٦)

मौत की कड़वाहट :

मन्क़ूल है कि बनी इस्राईल ह़ज़रते सय्यिदुना साम बिन नूह़ عليهما الصلوٰة والسلام की क़ब्रे अन्वर पर ह़ाज़िर हुए और ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहु़ल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बारगाह में अ़र्ज़ की : "ऐ रूहु़ल्लाह (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) ! आप अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से दुआ़ फ़रमाएं कि वोह इस क़ब्र वाले को ज़िन्दा फ़रमाए ताकि हम इस से मौत का बयान सुनें।" ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام उस क़ब्र पर तशरीफ़ लाए और दो रकअ़त नमाज़ अदा कर के अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से ह़ज़रते सय्यिदुना साम बिन नूह़ عليهما الصلوٰة والسلام को ज़िन्दा करने की दुआ़ फ़रमाई तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने उन को ज़िन्दा फ़रमा दिया, वोह खड़े हुए तो ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने देखा कि उन के सर और

दाढ़ी के बाल सफ़ेद थे तो आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने दर्याफ़्त फ़रमाया : "येह बुढ़ापा तो आप के ज़माने में नहीं था ?" तो उन्हों ने जवाब दिया : "जब मैं ने निदा सुनी तो गुमान हुवा कि शायद क़ियामत क़ाइम हो गई है, इस की हैबत से मेरे सर और दाढ़ी के बाल सफ़ेद हो गए हैं।" हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने दर्याफ़्त फ़रमाया : "आप को इस दारे फ़ानी से कूच किये हुए कितनी मुद्दत हो गई है ?" तो उन्हों ने बताया : "मुझे इस दुन्या से रुख़्सत हुए चार हज़ार साल हो गए हैं लेकिन मौत की कड़वाहट अभी तक मुझ से दूर नहीं हुई।"

(تفسير القرطبى،آل عمران،تحت الآية ٤٩،الجزء الرابع ، ج ٢،ص ٧٤،بتغير)

सख़्तियां नज़्अ़ की क्यूं कर मैं सहूंगा या रब्ब — गर तेरे प्यारे का जल्वा न रहा पेशे नज़र
तेरा क्या जाएगा मैं शाद मरूंगा या रब्ब — नज़्अ़ के वक़्त मुझे जल्वए महबूब दिखा

आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्तों की ज़ियारत :

हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि "हमें येह बात मा'लूम हुई है कि इस जहाने फ़ानी से कूच करने वाला मरने से पहले उन दोनों फ़िरिश्तों को देख लेता है जो उस के आ'माल को दुन्या में महफ़ूज़ किया करते थे, अगर वोह शख़्स भलाई के काम करता था तो फ़िरिश्ते कहेंगे : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें हमारी त़रफ़ से बेहतरीन जज़ा अ़त़ा फ़रमाए तू ने हमें ख़ैरो बरकत की बहुत सी मजलिसों में बिठाया और हमारे पास आ'माले सालिह़ा का ज़ख़ीरा जम्अ़ किया।" और अगर वोह शख़्स बुरे काम करता था तो फ़िरिश्ते कहेंगे : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे हमारी त़रफ़ से अच्छी जज़ा न दे तू ने हमें शर की बहुत सी मजलिसों में बिठाया और बुरी गुफ़्तगू सुनवाई।" उस वक़्त उस की आंखें पिथरा जाती हैं फिर वोह दुन्या की त़रफ़ कभी नहीं लौटता।

(موسوعة لابن ابى الدنيا، كتاب ذكر الموت، باب ملك الموت واعوانه،الحديث٢٣٩،ج٦،ص٤٦٦-حلية الاولياء،وهيب بن الورد، الحديث١١٧١٦، ج٨، ص ١٦٠، بتغيرقليل)

मोमिन और काफ़िर की मौत में फ़र्क़ :

हज़रते सय्यिदुना बरा बिन आ़ज़िब رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि हम नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मइय्यत में एक अन्सारी शख़्स के जनाज़े में शरीक हुए। जब हम क़ब्र के क़रीब पहुंचे तो रसूले ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हो गए। हम भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के गिर्द इस त़रह़ बैठ गए गोया हमारे सरों पर परन्दे बैठे हुए हों। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते अक़्दस में एक लकड़ी थी जिस से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ज़मीन कुरेद रहे थे। फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना सरे अन्वर उठा कर इरशाद फ़रमाया : "क़ब्र की आज़माइश और उस के अ़ज़ाब से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगो।" दो या तीन मरतबा येही इरशाद फ़रमाया। फिर फ़रमाया : "बेशक बन्दए मोमिन जब दुन्या से कूच कर रहा होता है तो सूरज की त़रह़ सफ़ेद चेहरे वाले फ़िरिश्ते उस के पास आते हैं, उन के पास जन्नत का कफ़न और ख़ुश्बू होती है, वोह उस के पास ह़द्दे निगाह तक बैठ जाते हैं। फिर मलकुल मौत ह़ज़रते सय्यिदुना इ़ज़्राईल عَلَيْهِ السَّلَام तशरीफ़ लाते हैं और

उस के सर के क़रीब बैठ कर फ़रमाते हैं : ''ऐ इत्मीनान वाली पाकीज़ा जान ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मग़फ़िरत और उस की रिज़ा की त़रफ़ निकल।'' आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''उस की रूह़ मश्कीज़े से क़त़रे की त़रह़ निकल जाती है। फ़िरिश्ते उस रूह़ को थाम लेते हैं और ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَیْهِ السَّلَام के हाथ में लम्ह़ा भर भी नहीं छोड़ते फिर वोही जन्नती कफ़न पहनाते और ख़ुश्बू लगाते हैं तो इस रूह़ से दुन्यवी कस्तूरी से भी प्यारी ख़ुश्बू निकलती है। फ़िरिश्ते उस को ले कर आस्मान पर चढ़ते हुए फ़िरिश्तों के जिस गुरौह के पास से गुज़रते हैं वोह पूछते हैं : ''येह पाकीज़ा रूह़ किस की है ?'' फ़िरिश्ते जवाब देते हैं : ''येह फ़ुलां बिन फ़ुलां की रूह़ है और अच्छे अच्छे अल्क़ाबात से उस का नाम लेते हैं यहां तक कि वोह आस्माने दुन्या तक पहुंच जाते हैं और उस का दरवाज़ा खुलवाते हैं तो उन के लिये दरवाज़ा खोल दिया जाता है। इसी त़रह़ हर आस्मान वाले उस को दूसरे आस्मान तक पहुंचाते हैं यहां तक कि वोह सातवें आस्मान तक पहुंच जाता है। तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : ''इस का नामए आ'माल इ़ल्लिय्यीन (येह वोह मक़ाम है जहां नेक लोगों के आ'माल लिखे जाते हैं) में लिख दो और उस की रूह़ को ज़मीन की त़रफ़ लौटा दो।''

مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ۝ (پ١٦،طٰهٰ:٥٥) ﴾1﴿

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हम ने ज़मीन ही से तुम्हें बनाया और उसी में तुम्हें फिर ले जाएंगे और उसी से तुम्हें दोबारा निकालेंगे।

फिर उस की रूह़ जिस्म में लौटा दी जाती है और उस के पास दो फ़िरिश्ते आ कर पूछते हैं : ''مَنْ رَّبُّکَ या'नी तेरा रब्ब कौन है ?'' वोह जवाब देता है : ''رَبِّیَ اللّٰه या'नी मेरा रब्ब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है।'' फिर वोह पूछते हैं : ''مَا دِیْنُکَ या'नी तेरा दीन क्या है ?'' तो वोह जवाब देता है : ''دِیْنِیَ الْاِسْلَام या'नी मेरा दीन इस्लाम है।'' इस के बा'द फ़िरिश्ते उस से पूछते हैं : ''مَا تَقُوْلُ فِیْ هٰذَا الرَّجُلِ الَّذِیْ بُعِثَ فِیْکُمْ اَهُوَ رَسُوْلُ اللّٰه'' **या'नी दुन्या में इस शख़्सिय्यत के मुतअ़ल्लिक़ क्या कहा करता था जो तुम में मबऊ़ष हुई, क्या येह अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के रसूल** صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **हैं** ? तो वोह जवाब देता है : ''هُوَ رَسُوْلُ اللّٰه या'नी (हां !) येह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हैं।'' वोह पूछते हैं : ''तुझे किस ने बताया ?'' वोह जवाब देता है : ''मैं ने क़ुरआने ह़कीम पढ़ा, उस पर ईमान लाया और उस की तस्दीक़ की।'' सरकारे अ़ब्दे क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं कि आस्मान से एक मुनादी ए'लान करता है : ''मेरे बन्दे ने सच कहा है, इस के लिये जन्नत का बिछौना बिछाओ, इसे जन्नती लिबास पहनाओ और इस के लिये जन्नत का दरवाज़ा खोल दो।'' पस उस को जन्नत की हवा और ख़ुश्बू पहुंचेगी, उस की क़ब्र ता ह़द्दे नज़र वसीअ़ कर दी जाएगी और ख़ुबसूरत चेहरे वाला एक शख़्स उस के पास आ कर कहेगा : ''मैं तुझे ऐसी बिशारत देता हूं जो तुझे ख़ुश कर देगी, येह वोही दिन है जिस का तुझ

से वा'दा किया गया था।" बन्दए मोमिन पूछता है : "आप कौन हैं ?" तो वोह जवाब देता है : "मैं तेरा नेक अ़मल हूं।" जन्नती ने'मतों को देख कर दिल में पैदा होने वाले शौक़ की बिना पर मोमिन कहता है : "या रब्ब عَزَّ وَجَلَّ ! क़ियामत क़ाइम फ़रमा।"

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : "काफ़िर जब दुन्या से जा रहा होता है तो उस के पास सियाह चेहरों वाले फ़िरिश्ते आते हैं जिन के पास बालों से बने हुए कम्बल होते हैं। वोह ता हद्दे निगाह बैठ जाते हैं। फिर मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام आ कर उस के सर के क़रीब बैठ कर कहते हैं : "ऐ ख़बीष जान ! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की नाराज़ी और ग़ज़ब की त़रफ़ निकल।" उस की रूह़ तमाम आ'ज़ा में बिखरी होती है जिस को जिस्म में से इस त़रह़ निकाला जाता है जिस त़रह़ गोश्त भूनने वाली तरसीख़ ऊन में डाल कर खींची जाए तो वोह ऊन को उधेड़ देती है, उस के तमाम आ'ज़ा टुकड़े टुकड़े हो जाते हैं, मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام उस की रूह़ निकालते हैं लेकिन फ़िरिश्ते उन के हाथ में एक लम्ह़ा भी नहीं रहने देते बल्कि उसे ले कर उस कम्बल में डाल देते हैं जिस से इन्तिहाई नागवार बू निकल कर पूरी रुए ज़मीन पर फैल जाती है। फिर वोह उस को पकड़ कर मलाइका के जिस गुरौह के पास से गुज़रते हैं तो वोह पूछते हैं : "येह ख़बीष रूह़ किस की है ?" वोह फ़िरिश्ते जवाब देते हैं : "येह फ़ुलां बिन फ़ुलां की रूह़ है।" और बुरे बुरे अल्क़ाबात से उस का नाम लेते हैं यहां तक कि वोह आस्माने दुन्या तक पहुंच जाते हैं। आस्मान का दरवाज़ा खुलवाना चाहते हैं लेकिन उन के लिये नहीं खोला जाता। येह इरशाद फ़रमाने के बा'द शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमेना के लाल صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस आयते मुबारका की तिलावत फ़रमाई :

﴿2﴾ لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَآءِ وَلَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰى يَلِجَ الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ (پ۸،الاعراف:۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन के लिये आस्मान के दरवाज़े न खोले जाएंगे। और न वोह जन्नत में दाख़िल हों जब तक सूई के नाके में ऊंट दाख़िल न हो।* (1)

(फिर फ़रमाया कि) **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है : "उस का नामए आ'माल **सिज्जीन** (येह वोह मक़ाम है जहां बदकारों के आ'माल लिखे जाते हैं) में लिख दो।" फिर उस की रूह़ को छोड़ दिया जाता है।

---

1 .....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "न उन के आ'माल के लिये, न उन की अरवाह़ के लिये क्यूंकि उन के आ'मालो अरवाह़ दोनों ख़बीष हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि : "कुफ़्फ़ार की अरवाह़ के लिये आस्मान के दरवाज़े नहीं खोले जाते और मोअमिनीन की अरवाह़ के लिये खोले जाते हैं। इब्ने जुरैज ने कहा कि "आस्मान के दरवाज़े न काफ़िरों के आ'माल के लिये खोले जाएंगे, न अरवाह़ के लिये या'नी न ज़िन्दगी में उन का अ़मल ही आस्मान पर जा सकता है, न बा'दे मौत रूह़। इस आयत की तफ़्सीर में एक क़ौल येह भी है कि "आस्मान के दरवाज़े न खोले जाने के येह मा'ना हैं कि वोह ख़ैरो बरकत और रह़मत के नुज़ूल से मह़रूम रहते हैं। और येह मुह़ाल तो कुफ़्फ़ार का जन्नत में दाख़िल होना मुह़ाल।"

फिर **सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

وَمَنۡ یُّشۡرِکۡ بِاللّٰہِ فَکَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخۡطَفُهُ الطَّیۡرُ اَوۡ تَهۡوِیۡ بِهِ الرِّیۡحُ فِیۡ مَکَانٍ سَحِیۡقٍ ﴿3﴾ (پ۱۷،الحج:۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो अल्लाह का शरीक करे वोह गोया गिरा आस्मान से कि परन्दे उसे उचक ले जाते हैं । या हवा उसे किसी दूर जगह फैंकती है ।* (1)

फिर उस की रूह़ जिस्म में लौटा दी जाती है और दो फ़िरिश्ते उस के पास आ कर बैठ जाते हैं और पूछते हैं : "مَنْ رَّبُّکَ या'नी तेरा रब्ब कौन है ?" वोह कहता है : "ھَا ھَا لَا اَدْرِی या'नी हाए अफ़्सोस ! मुझे नहीं मा'लूम ।" फिर वोह पूछते हैं : "مَا دِیْنُکَ तेरा दीन क्या है ?" वोह जवाब देता है : "ھَا ھَا لَا اَدْرِی या'नी हाए अफ़्सोस ! मैं नहीं जानता ।" फिर वोह पूछते हैं : "مَا تَقُوْلُ فِیْ ھٰذَا الرَّجُلِ الَّذِیْ بُعِثَ فِیْکُمْ **या'नी दुन्या में इस शख़्सिय्यत के मुतअ़ल्लिक़ क्या कहा करता था जो तुम में मबऊ़ष हुई ?**" तो वोह जवाब में कहता है : "ھَا ھَا لَا اَدْرِی या'नी हाए अफ़्सोस ! मैं कुछ नहीं जानता ।" फिर आस्मान से एक ए'लान करने वाला ए'लान करता है : "इस ने झूट बोला, इस के लिये आग का बिछौना बिछाओ और आग का लिबास पहना कर जहन्नम का दरवाज़ा खोल दो ।" पस जहन्नम की सख़्त गरमी उसे आ पहुंचती है, उस पर क़ब्र तंग हो जाती है यहां तक कि उस की पसलियां बिखर जाती हैं फिर उस के पास एक बदसूरत, गन्दे कपड़ों और इन्तिहाई नागवार बू वाला शख़्स आ कर कहता है : "मैं तुझे ऐसी ख़बर देता हूं जो तुझे ग़मगीन कर देगी, जान लो ! येह वोह दिन है जिस का तुम से वा'दा किया गया था ।" तो वोह उस से पूछता है : "तू कौन है ?" वोह जवाब देते हुए कहता है : "मैं तेरा दुन्या में किया हुवा ख़बीष अ़मल हूं ।" तो वोह मुर्दा कहता है : "ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ ! क़ियामत क़ाइम न कर ।" (المسند للامام احمد بن حنبل،حدیث البراء بن عازب،الحدیث۱۸۵۵۹،ج۶،ص۴۱۳،بتغیرقلیل)

मौत के बा'द भी सत्तर होलनाकियां हैं :

सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बिइज़्ने परवर दगार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "मौत की सख़्तियां तलवार की हज़ार ज़र्बों से भी ज़ियादा शदीद हैं और बेशक इस के बा'द भी सत्तर होलनाकियां हैं जिन में से हर एक मौत से सत्तर गुना ज़ियादा सख़्त है ।"

(حلیۃ الاولیاء،عبد العزیزبن ابی رواد،الحدیث۱۱۹۳۴،ج۸،ص۲۱۸مختصراً)

---

1 .....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "और (परन्दे) बोटी बोटी कर के खा जाते हैं । मुराद येह है कि शिर्क करने वाला अपनी जान को बदतरीन हलाकत में डालता है । ईमान को बुलन्दी में आस्मान से तश्बीह दी गई । और ईमान तर्क करने वाले को आस्मान से गिरने वाले के साथ, और उस की ख़्वाहिशाते नफ़्सानिय्या को जो उस की फ़िक्रों को मुन्तशिर करती हैं बोटी बोटी ले जाने वाले परन्दे के साथ, और शयात़ीन को जो उस को वादिये ज़लालत में फैंकते हैं हवा के साथ तश्बीह दी गई और उस नफ़ीस तश्बीह से शिर्क का अन्जामे बद समझाया गया ।"

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "मैं ने एक रात क़ब्र और मौत के मुतअ़ल्लिक़ ख़ूब ग़ौरो फ़िक्र किया तो उसी रात मैं ने ख़्वाब देखा गोया मैं क़ब्रिस्तान में हूं और मुर्दे अपनी क़ब्रों में इस हाल में हैं कि उन के बिस्तर बिछे हुए हैं और उन की भीनी भीनी ख़ुश्बू फैली हुई है।" मैं ने पूछा : "येह कौन है ?" मुझे बताया गया : "येह फ़रमां बरदार हैं जो क़ियामत तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ास फ़ज़्लो करम में रहेंगे।" मैं ने पूछा : "ना फ़रमान कहां हैं ?" तो बताया गया : ""ज़मीन ने उन्हें वह़शत की तारिकियों में धंसा दिया अब तो वोह देख सकते हैं, न ही दिखाए जाएंगे। नेक और बदकार दोनों में फ़र्क़ येह है कि एक के लिये दुन्या क़ैदख़ाना और क़ब्र आज़ादी है और दूसरे के लिये दुन्या आज़ादी और क़ब्र क़ैदख़ाना है। उन्हों ने दुन्या में खुद को थका कर विसाल की ह़लावत और वज्दान की राह़त पाई है, कानों को नापसन्दीदा बातों से बंद कर के नज़रें झुकाते हुए जमाले ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ का मुशाहदा किया और मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ का जाम पी कर मदहोश हो गए।"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इतना कुछ जान लेने के बावुजूद येह ग़फ़्लत कैसी ? ह़ालांकि तुम्हें बोसीदा ठिकाने की त़रफ़ लौटना है ? लापरवाही कैसी ? ह़ालांकि ज़िन्दगी मुख़्तसर है। कब तक सरकशी और कोताही करते रहोगे ? येह काहिली कैसी ? ह़ालांकि तुम्हें डराने वाले ने भी डराया ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ह़बीब के दरवाज़े से तुम्हारा पीछे रहना तुम्हारी बुरी तदबीर है। कब तक तुम तकब्बुर करते रहोगे ? ह़ालांकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ देख रहा है ? ऐ भाइयो ! जवानी में तुम्हारा घूमना फिरना तुम्हें परेशान कर देगा और अपने नफ़्स के धोके की त़रफ़ माइल होना तुम्हें बदल देगा और तुम्हारा ने'मतों वाले घर को छोड़ कर जहन्नम की त़रफ़ भागना तुम्हारी ह़ालत को तब्दील कर देगा। क्या तुम क़ब्र में अपने ठिकाने को भूल गए ? हां ! गुनाहों ने तुम्हारे दिल को सियाह कर के तुम्हें बदल कर रख दिया। क्या तुम उस घड़ी को याद नहीं करते जिस की हौलनाकी से तुम्हारी पेशानी से पसीना बहने लग जाएगा ? जिस के अचानक आने से ज़बानें **गुंग** (गूंगी) हो जाएंगी और आंखों से अफ़्सोस के क़त़रे टपकने लगेंगे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाए, क़ियामत के होशरुबा मन्ज़र को याद रखो ! क्यूंकि मुआ़मला बहुत सख़्त है और अपनी बक़िय्या उ़म्र जल्दी जल्दी नेकियां करने में गुज़ारो। वरना मौत के बा'द नदामत फ़ाइदा न देगी।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ۝ ﴿4﴾ (پ٢٦،ق:١٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती ह़क़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था।*

प्यारे इस्लामी भाइयो ! कहां हैं तुम से पहले वाले लोग ? कहां हैं तुम्हारे हम उ़म्र जो कूच कर गए ? कहां हैं साह़िबे माल और उन के जानशीन ? अब वोह सब अपने गुनाहों पर नादिम हो रहे हैं। हाए अफ़्सोस ! ऐ काश ! वोह इस मक़ाम की हौलनाकी को जान लेते जिस से बच्चा भी बुढ्ढा हो जाता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ۝ (پ٢٦،ق:١٩)

तर्जमए कन्जुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती ह़क़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था।*

प्यारे इस्लामी भाइयो ! तअ़ज्जुब है जब तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बुलाया जाता है तो तुम लापरवाही करने लगते हो और जब तुम्हें नसीह़तें नेकियों की त़रफ़ राग़िब करती हैं तो तुम अकड़ते हो। याद रखो ! तुम से पहले कितनों को मौत ने पछाड़ा कि अब उन का नामो निशान भी बाक़ी नहीं। ऐ वोह लोगो जिन का जिस्म तो ज़िन्दा है लेकिन दिल मुर्दा है। अ़न क़रीब ह़सरतों के वक़्त तुम उस चीज़ का मुशाहदा कर लोगे जिस को देखना नहीं चाहते। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ۝ (پ٢٦،ق:١٩)

तर्जमए कन्जुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती ह़क़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था।*

प्यारे इस्लामी भाइयो ! कितनी ही जानों को मौत ने उन के घरों में बे आराम किया ! कितनी ही आज़्माइशों और बलाओं को उन जिस्मों में आबाद किया जो नाज़ो नेअ़्म में पले बढ़े थे ! कितनों की अरवाह़ को अपने बोझ से क़ब्र के गढ़ों की त़रफ़ मुन्तक़िल किया ! और बहुत से अफ़राद के रुख़्सारों को क़ब्र की मिट्टी में ज़लील किया। ऐ मेरे भाइयो ! अपनी जान पर रोओ उस रोने से पहले जो फ़ाइदा न देगा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ۝ (پ٢٦،ق:١٩)

तर्जमए कन्जुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती ह़क़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था।*

प्यारे इस्लामी भाइयो ! होशियार हो जाओ ! दुन्या अह़मक़ों के लिये सर सब्ज़ो शादाब है, अ़न क़रीब कुछ दिनों के बा'द तुम मेरी बात समझ जाओगे जब तुम्हारी रूह़ निकल रही होगी, जब वोह सब कुछ खुल कर सामने आ जाएगा जो तुम्हारी आंखों से ओझल है और फिर अ़मल का मौक़अ़ न मिलेगा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ۝ (پ٢٦،ق:١٩)

तर्जमए कन्जुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती ह़क़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था।*

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अफ़्सोस है तुम पर ! क्या तुम्हें इ़ल्म नहीं कि तुम हर लम्ह़ा मौत की त़रफ़ सफ़र कर रहे हो ? क्या तुम्हें इ़ल्म नहीं कि तुम्हारे बुरे आ'माल शुमार किये जा रहे हैं ? कितने ही उम्मीद रखने वाले रुस्वा हुए ! उन्हों ने उम्मीदें बांध रखी थीं कि अचानक मौत का गुज़र हुवा और वोह अपनी उम्मीदों को न पहुंच सके जिन की उन को चाहत थी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ○ (پ٢٦،ق:١٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था ।*

ऐ मौला عَزَّوَجَلَّ **से ए'राज़ करने वाले** ! कब तक येह ए'राज़ करता रहेगा ? क्या तुझे इ़ल्म है कि तेरी जवानी त़लबे माल में गुज़र गई और अब तेरे लिये हलाकत है ? क्यूंकि तेरी उ़म्र गुज़र चुकी है और तेरे आ'जा हर लम्ह़ा तुझ से बग़ावत पर आमादा हैं। अफ़्सोस ! अब तू ज़ादे राह जम्अ़ कर ले। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! सफ़र बहुत त़वील है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ○ (پ٢٦،ق:١٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था ।*

ऐ वोह शख़्स जिस का दिल नेक मह़फ़िल में भी अस्बाब में मश्ग़ूल रहता है ! ऐ वोह शख़्स जो वा'ज़ो नसीह़त सुन कर भी तौबा नहीं करता ! ऐ वोह शख़्स जिस पर नाफ़रमानियों ने तारीक पर्दा डाल दिया ! ऐ वोह शख़्स जिस पर ख़्वाहिशाते नफ़्सानिय्या ने जन्नत के दरवाज़े बंद कर दिये ! अपने नफ़्स पर रो क्यूंकि रोना अकषर फ़ाइदा देता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ○ (پ٢٦،ق:١٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था ।*

क्या तुझे इ़ल्म नहीं कि मौत तुझे टिक-टिकी बांध कर देख रही है ? उस ने दूसरों का शिकार किया और अ़न क़रीब तुझे भी शिकार करेगी। क्या तुझे उस का इ़ल्म न हुवा जो दूसरों के साथ किया गया ? क्या तेरी ग़फ़्लत ने हर वादी व घाटी में तुझे मौत से ख़बरदार न किया ? क्या तू ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान नहीं सुना ?

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ○ (پ٢٦،ق:١٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था ।*

ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **के बन्दो** ! कु़रआने करीम में ग़ौरो फ़िक्र करो, वा'दा व वई़द को समझने के लिये अपने दिलों को ह़ाज़िर रखो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त को लाज़िम पकड़ो क्यूंकि येही फ़रमां बरदार बन्दों की शान है और उस के ग़ज़ब से डरो, कितने ही लोग ख़ुदाए जब्बारो क़ह्हार عَزَّوَجَلَّ के नाफ़रमान हैं, जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ (پ٣٠،البروج:١٢) ﴿5﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक तेरे रब्ब की गिरिफ़्त बहुत सख़्त है ।*

कहां हैं जिन्हों ने मज़्बूत़ मज़्बूत़ मह़ल्लात की बुन्याद रखीं ? ब ख़ुशी अ़रसए दराज़ तक लोगों पर हुक्मरानी करते रहे और ख़ुद उन लोगों से पहले ही इस दुन्या से चल बसे। अपनी जहालत से समझ बैठे कि उन्हें यहां से कूच नहीं करना फिर जब उन्हों ने हलाकत का जाम पिया तो वोह चिख़ते रह गए। क्या तू नहीं देखता कि उन्हों ने मौत से डराने वाले के डराने को नहीं सुना।

जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ط ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ O (پ۲٦،ق:۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था।*

ऐ शख़्स ! तुझे तेरा गुज़श्ता और आयन्दा आने वाला दिन डरा रहा है। सूरज चांद तेरे सामने इब्रत के नुमूने हैं और तू ख़ताओं पर डटा हुवा है। बेशक तू क़ब्र के क़रीब है और फिर भी उस वईद से ग़ाफ़िल है जो तुझे सुनाई जाती है।

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ط ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ O (پ۲٦،ق:۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था।*

क्या तुझे इल्म नहीं कि ज़बान के मुतअ़ल्लिक़ सब कुछ पूछा जाएगा, क़दम के निशानात का हिसाब लिया जाएगा और ज़बान की लग्ज़िशों का भी हिसाब होगा, तेरे आ'ज़ा तेरे दुन्या में किये हुए आ'माल की गवाही देंगे, क्या तू नहीं जानता कि मौत तेरी ताक में तेरी शहरग से भी ज़ियादा क़रीब है ? चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ط ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ O (پ۲٦،ق:۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था।*

ऐ अपनी आंखों से इब्रत के नुमूनों का मुशाहदा करने वाले ! और ऐ अपने कानों से नसीहतों को सुनने वाले ! तुझे हर लम्हा मौत से डराया जा रहा है। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ط ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ O (پ۲٦،ق:۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था।*

गोया तू मौत के दहाने पर खड़ा है और मौत तुझे इस त़रह़ उचक लेगी जिस त़रह़ बिजली बीनाई छीन लेती है और अफ़्सोस तू उस को खुद से दूर भी न कर सकेगा अगर्चे तू मशरिक़ो मग़रिब का भी मालिक बन जाए। उस वक़्त तुझे येह सब कुछ छूट जाने पर बहुत ज़ियादा अफ़्सोस और ह़सरत होगी। और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ط ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ O (پ۲٦،ق:۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था।*

रिक्क़त भरी दुआ :

ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! अगर हम गुनाहों की वजह से तेरे अ़ज़ाब से डरते हैं तो हुस्ने ज़न ने हमें तेरे षवाब की भी त़म्अ़ दे रखी है। अगर तू मुआ़फ़ फ़रमा दे तो तुझ से ज़ियादा कौन इस का ह़क़ रखता है ? और अगर तू अ़ज़ाब दे तो तुझ से ज़ियादा अ़द्ल करने वाला कौन है ? ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू इ़बादतो रियाज़त करने वालों पर रह़्म फ़रमाएगा तो ख़त़ाकारों पर करम कौन करेगा ? अगर तू सिर्फ़ मुख़्लिसीन के आ'माल क़बूल फ़रमाएगा तो हम जैसे रियाकारों का क्या बनेगा ? अगर तू सिर्फ़ मोह़सिनीन को इ़ज़्ज़त से नवाज़ेगा तो हम जैसे बदकार कहां जाएंगे ? या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! मेरी ह़सरत कितनी ज़ियादा है कि मैं ने दूसरों को तो नसीह़त की लेकिन खुद ग़ाफ़िल रहा। ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! कितनी सख़्त मुसीबत है मुझ पर कि दूसरे बेदार हैं और मैं सोया हुवा हूं। ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ ! मेरा मुआ़मला कितना शदीद है कि दूसरों की रहनुमाई कर रहा हूं और खुद हैरानो परेशान हूं। ऐ मेरे रब्बे क़दीर عَزَّوَجَلَّ ! अफ़्वो दरगुज़र के साथ पुर ख़त़र और तकलीफ़ देह रास्ते में मेरी मदद फ़रमा। या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! जब तू ने अपनी राह पर चलने वालों की रहनुमाई फ़रमाई तो वोह तुझ तक पहुंच गए। ऐ मेरे ख़ालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ ! अगर मेरा कलाम ख़ालिस तेरी रिज़ा के लिये नहीं तो मेरे इजतिमाअ़ में कोई ऐसा शख़्स तो होगा जो ख़ालिस तेरी रिज़ा के लिये ह़ाज़िर हुवा होगा अपने नूर के वासित़े मुझ ख़त़ाकार के ह़क़ में उस की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा और या अरह़मर्राह़िमीन ! हम सब को अपनी रह़मत में ढांप ले।

صَلَّی اللّٰهُ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ آلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلَّم

बयान 17 :

करामाते औलिया का सुबूत

हम्दे बारी तआला :

सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने अहले महब्बत (या'नी अपने औलियाए किराम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم) के लिये इबादत का दरवाज़ा ख़ास कर दिया जिस से वोह पहचाने जाते हैं। जब मख़्लूक़ सो जाती है तो वोह उन को अपने दरवाज़े की त़रफ़ ले आता है और वोह उस की बारगाह में क़ियाम व सुजूद में रात बसर करते हैं। वोह रात के इब्तिदाई हिस्से में कितने अच्छे अन्दाज़ में इबादत करते हैं और आख़िरी हिस्से में कितने प्यारे अन्दाज़ में नादिम होते हैं। अगर तू उन को देखेगा तो इस ह़ाल में पाएगा कि उन के लिये दरवाज़े खोल दिये गए और पर्दे हटा दिये गए और उन्हें ज़ाते इलाही के मुशाहदे का इन्आ़म अ़त़ा किया गया।

याद रखो ! औलियाए किराम की सब से बड़ी करामत इत़ाअ़ते इलाही عَزَّوَجَلَّ पर हमेशगी की तौफ़ीक़ और मा'सिय्यत व मुख़ालफ़ते शरअ़ से मह़फ़ूज़ रहना है और क़ुरआने मजीद में ह़ज़रते सय्यिदतुना मरियम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھَا का वाक़िआ़ करामाते औलिया के इज़्हार पर शाहिद है। ह़ालांकि आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھَا रसूल या नबी न थीं। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ لا وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ج قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَا ط قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ط اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ O (پ۳،ال عمران:۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जब ज़करिय्या उस के पास उस की नमाज़ पढ़ने की जगह जाते उस के पास नया रिज़्क़ पाते, कहा ऐ मरियम येह तेरे पास कहां से आया बोलीं वोह अल्लाह के पास से है बेशक अल्लाह जिसे चाहे बे गिनती दे।(1)

और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदतुना मरियम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھَا से इरशाद फ़रमाता है : وَهُزِّیْۤ اِلَیْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَیْكِ رُطَبًا جَنِیًّا O (پ۱٦، مریم:۲۵) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और खजूर की जड़ पकड़ कर अपनी त़रफ़ हिला तुझ पर ताज़ी पक्की खजूरें गिरेंगी।

इन्हीं करामात में से एक येह भी है जो ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام से ज़ाहिर हुई या'नी आप عَلَیْہِ السَّلَام ने दीवार को सीधा कर दिया और इस के इ़लावा दीगर कई अ़जाइबात जिन की

1......मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते मरियम ने सिग़रे सिन्नी में कलाम किया जब कि वोह पालने (झूले) में परवरिश पा रही थीं जैसा कि उन के फ़रज़न्द ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इसी ह़ाल में कलाम फ़रमाया। **मस्अला :** येह आयत करामाते औलिया के सुबूत की दलील है कि अल्लाह तआ़ला उन के हाथों पर ख़वारिक़ ज़ाहिर फ़रमाता है। ह़ज़रते ज़करिय्या ने जब येह देखा तो फ़रमाया : जो ज़ाते पाक मरियम को बे वक़्त, बे फ़स्ल और बिग़ैर सबब के मेवा अ़त़ा फ़रमाने पर क़ादिर है वोह बेशक इस पर क़ादिर है कि मेरी बांझ बीबी को नई तन्दुरुस्ती दे और मुझे इस बुढ़ापे की उ़म्र में उम्मीद मुन्क़त़ेअ़ हो जाने के बा'द फ़रज़न्द अ़त़ा करे बई ख़याल आप ने दुआ़ की जिस का अगली आयत में बयान है।"

मा'रिफ़त ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام को ह़ासिल थी और ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर वोह उमूर आ़दतन मख़्फ़ी थे। येह सब करामात ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام के साथ ख़ास थीं ह़ालांकि आप عَلَيْهِ السَّلَام नबी नहीं बल्कि वली थे।[1]

गाय बोल उठी :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि "सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم ने बयान फ़रमाया : "एक शख़्स गाय पर बोझ उठाए उसे हांकता जा रहा था कि गाय उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर (ब ज़बाने फ़सीह़) कहने लगी : "मैं इस लिये पैदा नहीं की गई, मुझे तो खेती के लिये पैदा किया गया है।"

(صحیح مسلم ،کتاب فضائل الصحابة ، باب فضائل ابی بکر الصدیق ، الحدیث ۲۳۸۸ ، ص۱۰۹۸)

ज़मीन सोना बन गई :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि "अ़ब्बादान शहर में एक ह़ब्शी फ़क़ीर था जो आ़म तौ़र पर खन्डरात में रहता था। एक दिन मैं अपनी ज़रूरियात व ह़ाजात की तलाश में निकला। जब उस ने मुझे देखा तो मुस्कुराने लगा और अपने हाथ से ज़मीन की त़रफ़ इशारा किया तो देखते ही देखते वोह ज़मीन चमकदार सोना बन गई। फिर मुझ से कहने लगा। "अपनी ज़रूरत पूरी कर लो।" मैं ने अपनी ज़रूरत के मुत़ाबिक़ ले लिया लेकिन इस वाक़िए़ ने मुझे ख़ौफ़ज़दा कर दिया इस लिये मैं वहां से भाग खड़ा हुवा।

वादी के पथ्थर जवाहिरात बन गए :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद علیه رحمة اللّٰه الوحید से मन्क़ूल है कि "मेरे पास मेरे उस्ताज़ ह़ज़रते अबू अ़ली सनदी رَحْمَةُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه तशरीफ़ लाए, उन के हाथ में एक थेली थी, उन्हों ने उसे उन्डे़ला तो उस से जवाहिर नुमूदार हुए, मैं ने अ़र्ज़ की : "येह मोती आप को कहां से मिले?" इरशाद फ़रमाया : "मैं यहां एक वादी में उतरा तो अचानक चराग़ की त़रह़ टिमटिमाते हुए येह मोती देखे, मैं ने इन को उठा लिया।" मैं ने अ़र्ज़ की : "जब आप वादी में गए थे तो आप की कैफ़िय्यत कैसी थी?" उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : "उस वक़्त मैं इस ह़ाल में नहीं था जिस में इस वक़्त हूं।"

सब से बड़ी करामत :

ह़ज़रते सय्यिदुना सहल बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "सब से बड़ी करामत येह है कि तू अपने बुरे अख़्लाक़ को अच्छे अख़्लाक़ से बदल डाल।"

....

1.....मुजद्दिदे आ'ज़म, इमामे अहले सुन्नत, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام जम्हूर के नज़्दीक नबी हैं।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 26, स. 401)

मग़्फ़िरत का परवाना :

हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इरशाद फ़रमाते हैं : "मैं ने एक नौजवान को देखा जो का'बए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के नज़्दीक कषरत से रुकूअ़ व सुजूद कर रहा था। मैं ने उस के पास जा कर कहा : "बिलाशुबा तुम कषरत से नमाज़ पढ़ रहे हो।" तो वोह कहने लगा : "मैं अपने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से यहां से वापस जाने के परवाने का इन्तिज़ार कर रहा हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "मैं ने देखा कि ऊपर से काग़ज़ का एक टुकड़ा गिरा जिस में लिखा हुवा था : "येह पैग़ाम अ़ज़ीज़ व ग़फ़्फ़ार की जानिब से अपने सच्चे बन्दे की त़रफ़ है, अब तू इस ह़ाल में लौट जा कि तेरे अगले पिछले सारे गुनाह मुआ़फ़ कर दिये गए हैं।"

मुन्किरीने करामात भी मान गए :

हज़रते सय्यिदुना जाबिर रजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि "रह़बा के अकषर लोग करामाते औलिया के मुन्किर थे। एक दिन मैं एक दरिन्दे पर सुवार हो कर रह़बा में दाख़िल हो गया और पूछा : "कहां हैं वोह लोग जो औलियाए किराम رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की करामात को झुटलाते हैं ?" आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "इस के बा'द वोह मेरे बारे में ऐसी यावहगोइयों से बाज़ आ गए।"

कीकर के दरख़्त से खजूरें :

हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अ़ब्दुर्रह़मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं कि "हम एक जंगल में ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی के साथ मह़्वे सफ़र थे। हम ने कीकर के एक दरख़्त के नीचे पड़ाव किया और कहा : "येह जगह कितनी उ़म्दा है, काश ! इस दरख़्त पर तरो ताज़ा खजूरें होतीं।" ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی मुस्कुराने और पूछने लगे : "क्या तरो ताज़ा खजूरें खाना चाहते हो ?" इस के साथ ही आप ने दरख़्त को ह़रकत दे कर कहा : "मैं तुझे उस ज़ात की क़सम देता हूं जिस ने तुझे पैदा किया और तनावर दरख़्त बनाया ! हमारी त़रफ़ ताज़ा खजूरें फेंक।"

फिर आप ने उस दरख़्त को हिलाया तो उस से वाक़िअ़तन ताज़ा खजूरें गिरने लगीं। हम ने ख़ूब सैर हो कर खाईं फिर हम सो गए और बेदार हो कर जब हम ने दोबारा दरख़्त को ह़रकत दी तो हम पर कांटे गिरे।"

दाइरे से पानी रवां हो गया :

एक क़ाफ़िला ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब सख़्तियानी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के साथ सफ़र पर था। जब क़ाफ़िले वाले पैदल चलने से आ़जिज़ आ गए तो शिद्दते प्यास की वजह से पानी त़लब किया। ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उन से पूछा : "क्या तुम मेरी ज़िन्दगी में इस राज़

को पोशीदा रखोगे ?" उन्हों ने कहा : "जी हां ! रखेंगे।" तो आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه ने एक गोल दाइरा खींचा तो उस से पानी जारी हो गया। उन सब ने जी भर कर पानी पिया। जब क़ाफ़िला बसरा पहुंचा और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन ज़ैद رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه ने येह बात बताई तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वाहिद बिन ज़ैद رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "उस दिन मैं भी उन के साथ मौजूद था।"

दरिन्दा भी ताबेअ़ हो गया :

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی और ह़ज़रते सय्यिदुना शैबान राई رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه दोनों ह़ज के इरादे से निकले तो उन के सामने एक दरिन्दा आ गया। ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने ह़ज़रते सय्यिदुना शैबान राई رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه से फ़रमाया : "क्या आप इस दरिन्दे को नहीं देख रहे ?" तो उन्हों ने फ़रमाया : "डरिये मत।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना शैबान राई رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه ने उस का कान पकड़ कर दबाया तो वोह दुम हिलाने लगा, आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه ने उस की दुम पकड़ी तो ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने फ़रमाया : "क्या येह शोहरत नहीं ?" तो उन्हों ने जवाब दिया : "अगर मुझे शोहरत का ख़ौफ़ न होता तो मैं अपना ज़ादे राह इस की पीठ पर रख देता यहां तक कि मक्कए मुकर्रमा पहुंच जाता।"

फ़ुक़रा पर सदक़ा न करने की सज़ा :

ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन तरक़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحمٰن फ़रमाते हैं : "मैं फ़ुक़रा की सोह़बत में बैठा करता था। एक दफ़्अ़ा मुझे एक दीनार मिला तो मैं ने इरादा किया कि येह दीनार उन फ़ुक़रा को दे दूं फिर मेरे दिल में येह ख़याल आया कि शायद मुझे इस की उन से ज़ियादा ह़ाजत है। तो अचानक मुझे दांत का दर्द मह़सूस हुवा। मैं ने अपने दांत को जड़ से उखेड़ दिया फिर दूसरा दर्द करने लगा। उस को भी जड़ से उखेड़ दिया तो हातिफ़े ग़ैबी से आवाज़ आई : "अगर तुम उन फ़ुक़रा को वोह दीनार न दोगे तो तुम्हारे मुंह में एक दांत भी बाक़ी न रहेगा।"

मय्यित ने हाथ पकड़ लिया :

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मन्सूर رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि "मेरे उस्ताज़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू या'क़ूब सूसी رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने अपने एक मुरीद को ग़ुस्ल दिया तो उस ने तख़्तए ग़ुस्ल पर मेरा हाथ पकड़ लिया। मैं ने उस से कहा : "ऐ मेरे बेटे ! मेरा हाथ छोड़ दे, मैं जानता हूं कि तू मुर्दा नहीं तू तो सिर्फ़ एक घर से दूसरे घर की त़रफ़ मुन्तक़िल हुवा है।" तो उस ने मेरा हाथ छोड़ दिया।

दरख़्त बोल उठा :

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि "मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से येह अ़हद किया कि मैं ह़लाल के सिवा कुछ न खाऊंगा। एक दिन मैं जंगल से गुज़र रहा था कि मुझे अन्जीर का एक दरख़्त नज़र आया, मैं ने खाने के लिये जूं ही उस की त़रफ़ हाथ बढ़ाया तो दरख़्त बोल उठा और कहने लगा : "अपना वा'दा पूरा करो और मुझ से न खाओ क्यूंकि मेरा मालिक यहूदी है।"

सब्र करते तो क़दमों से चश्मा जारी हो जाता :

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ह़नीफ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ اللَّطِيف फ़रमाते हैं कि "मैं ह़ज के इरादे से जब बग़दाद पहुंचा तो मेरी ह़ालत येह थी कि लगातार चालीस दिन तक कुछ न खाया और न ही वहां हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ की बारगाह में ह़ाज़िरी दी। फिर मैं एक कुंवें पर पानी पीने की ग़रज़ से गया तो वहां एक हिरन को कुंवें के ऊपर देखा जो कि पानी पी रहा था, मैं भी बहुत प्यासा था। जब मैं हिरन की जगह कुंवें के क़रीब हुवा तो वोह मुझे देख कर भाग गया। जब मैंने कुंवें में देखा तो पानी कुंवें में नीचे तक था कि निकाला नहीं जा सकता था तो मैं येह कहते हुए चल दिया कि "ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! मेरा मर्तबा उस हिरन के बराबर भी नहीं।" तो मुझे पीछे से निदा दी गई : "हम ने तुझे आज़माया था लेकिन तू ने सब्र न किया, अब वापस जा और पानी पी ले।" जब मैं वापस गया तो कुंवां वाक़ेई पानी से भरा हुवा था। मैं ने अपना मश्कीज़ा भी भर लिया और शहर जाते हुए उसी से पानी भी पीता रहा और वुज़ू भी करता रहा लेकिन वोह ख़त्म न हुवा। जब मैं ख़ूब सैराब हो गया तो ग़ैब से एक आवाज़ सुनी : "हिरन तो बिग़ैर मश्कीज़े और रस्सी के साथ आया था लेकिन तुम मश्कीज़े के साथ आए हो।" जब मैं ह़ज से लौट कर आया और जामेअ़ मस्जिद में दाख़िल हुवा तो जूं ही हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी की नज़र मुझ पर पड़ी तो उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम लम्ह़ा भर भी सब्र करते तो तुम्हारे क़दमों से चश्मा जारी हो जाता।"

ऊंट ज़िन्दा हो गया :

हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सईद बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि "मैं बसरा के रास्ते में पैदल चल रहा था कि मैं ने एक आ'राबी को अपने ऊंट को हांकते हुए देखा। मैं उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा तो क्या देखता हूं कि अचानक ऊंट गिर कर मर गया और वोह शख़्स और कजावा गिर गया तो वोह आ'राबी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ करने लगा : "ऐ तमाम अस्बाब को पैदा करने वाले ! और हर त़लबगार की त़लब को पूरा करने वाले ! मुझे उसी ह़ालत पर लौटा दे।" तो क्या देखता हूं कि वोह ऊंट दोबारा उठ खड़ा हुवा और वोह शख़्स और कजावा भी उस के ऊपर हो गया।

हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام का खाना खिलाना :

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र हम्दानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं कि "एक दफ़्आ मैं कुछ खाए पिये बिग़ैर हज्जाज़ के जंगल में चालीस दिन रहा। फिर एक दिन मुझे गर्म साग और रोटी खाने की ख़्वाहिश हुई तो मैं ने अपने दिल में कहा : "मैं जंगल में हूं, मेरे और इराक़ के दरमियान तवील मसाफ़त है।" अभी मेरी बात भी पूरी न हुई थी कि मैं ने एक आ'राबी को दूर से येह निदा देते हुए सुना : "ऐ गर्म साग और रोटी के ख़्वाहिशमन्द !" मैं ने उस के पास जा कर पूछा : "क्या आप के पास गर्म साग और रोटी है ?" उस ने जवाब दिया : "जी हां।" फिर उस ने चादर बिछा कर रोटी और साग निकाला और मुझे खाने को कहा, मैं ने खा लिया। उस ने फिर कहा : "मज़ीद खाएं।" मैं ने फिर खा लिया। उस ने तीसरी बार खाने को कहा तो मैं ने खा लिया लेकिन जब चौथी मरतबा उस ने कहा तो मैं ने उस से पूछा : "उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को मेरे पास भेजा ! आप कौन हैं ?" तो उस ने जवाब दिया : "मैं ख़िज़्र (عَلَيْهِ السَّلَام) हूं।" फिर वोह ग़ाइब हो गए इस के बा'द मैं उन की ज़ियारत न कर सका।

वली की हिफ़ाज़त का ख़ुदाई इन्तिज़ाम :

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَةُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि "सफ़रे मक्का के दौरान रात के वक़्त मेरा गुज़र एक वीरान खन्डर से हुवा, उस में एक बहुत बड़ा दरिन्दा देख कर मैं डर गया। अचानक ग़ैब से एक आवाज़ आई : "षाबित क़दम रहो, क्यूंकि तुम्हारे इर्द गिर्द हिफ़ाज़त के लिये सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते मौजूद हैं।"

फ़रमां बरदार गधा :

हज़रते सय्यिदुना अय्यूब हम्माल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं कि "हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुल्लाह दैलमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی जब सफ़र में किसी जगह ठहरते तो अपने गधे के कान में फ़रमाया करते : "मैं तुझे बांधना चाहता था लेकिन अब नहीं बांधूगा बल्कि तुझे उस सेहरा में भेज रहा हूं ताकि तू घास खा ले। लिहाज़ा जब हम यहां से कूच का इरादा करें तो वापस आ जाना।" और जब रवानगी का वक़्त होता तो वोह गधा हक़ीक़तन आप के पास वापस आ जाता।"

रेत सत्तू बन गई :

हज़रते सय्यिदुना आदम बिन अबी अय्यास رَحْمَةُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ इरशाद फ़रमाते हैं कि "मैं अस्क़लान में था और हमारे पास एक नौजवान शख़्स आता, हमारे पास बैठता, गुफ़्तगू करता रहता और जब हम फ़ारिग़ होते तो नमाज़ पढ़ने लग जाता। उस ने एक दिन हमें अलवदाअ़ कहते हुए कहा :

"मैं अस्कन्दरिया जा रहा हूं।" मैं भी उस के साथ निकल पड़ा और उस को कुछ दिरहम दिये लेकिन उस ने लेने से इन्कार कर दिया। जब मैं ने उस को मजबूर किया तो उस ने अपने मश्कीज़े में मुठ्ठी भर रैत डाल कर ऊपर से समन्दर का पानी डाल दिया फिर मुझे कहा : "खाओ।" मैं ने देखा तो येह इन्तिहाई लज़ीज़ और मीठे सत्तू थे।" उस ने कहा : "जिस की ह़ालत ऐसी हो उसे दिरहमों की क्या ज़रूरत है ?" फिर उस ने चन्द अश्आ़र कहे, जिन का मफ़्हूम येह है :

"दिल में कोई जगह ऐसी नहीं जो मह़बूब के इ़लावा किसी की मह़ब्बत के लिये ख़ाली हो। मेरा सुवाल और उम्मीद व मुराद सब वोही मेरा ह़बीब है। जब तक मैं ज़िन्दा हूं मेरी ज़िन्दगी उसी के लिये है। जब कभी कोई बीमारी मेरे दिल पर उतरी तो उस के इ़लावा इस बीमारी का इ़लाज किसी ने न किया।"

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब एक क़ौम पर इ़नायते बारी तआ़ला की हवा चली तो उस ने उन के जहालतो ग़फ़्लत से मरे हुए दिलों को ज़िन्दा कर दिया। उन को तौफ़ीक़ के प्याले में पाकीज़ा शराब से सैराब किया तो उन की अरवाह़ में ख़ुशी व मसर्रत के आषार नुमूदार हो गए और वज्दो राह़त का अषर चमक उठा। उन्हों ने दुन्या को निगाहे इ़ब्रत से देखा तो इस ह़क़ीक़त को पा लिया कि यहां कोई ह़क़ीक़ी घर नहीं और उन्हों ने दौलत व इक़्तिदार की बजाए आख़िरत की तय्यारी में जल्दी करने को ग़नीमत जाना। उन के दिन रोज़े में और रातें ज़िक्रो अज़्कार में गुज़रीं। जब ग़ाफ़िल नींद से लुत़्फ़ अन्दोज़ हो रहे होते तो वोह मौला करीम عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात में मश्ग़ूल रहते। मह़बूबे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ ने उन को अपनी रिज़ा अ़त़ा की तो उन्हों ने उस की मह़ब्बत को हर शै पर तरजीह़ दी। उस ने उन को मह़ब्बत के प्याले से सैराब कर के रात की तन्हाई में उन पर तजल्ली फ़रमाई तो वोह उस के मुशाहदे और दीदार से लुत़्फ़ अन्दोज़ हुए। फिर मह़बूब ने उन को निदा दी : "ऐ मेरे मह़बूब बन्दो ! मेरे दरवाज़े पर आ जाओ, मैं ने तुम्हारे लिये ह़िजाब उठा कर जन्नत के दरवाज़े खोल दिये हैं और तुम में से हर एक को उस की मन मानती मुरादें अ़त़ा कर दी हैं।"

وَصَلَّى اللّٰهُ على سيِّدنا محمَّدٍ وَّاٰ له وصحبهٖ وَسَلَّمَ تَسْلِيماً دَائِماً اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ

बयान 18 :

क़ियामत की सख़्तियां

﴿يَوۡمَ تَبۡيَضُّ وُجُوۡهٌ وَّتَسۡوَدُّ وُجُوۡهٌ ج﴾(پ٤، ال عمران: ١٠٦)

"तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन कुछ मुंह ऊंजाले (रोशन) होंगे और कुछ मुंह काले ।"

हम्दे बारी तआला :

तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने अपने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى को सिफ़ते जमाल की मा'रिफ़त अ़ता फ़रमाई तो उन्हों ने इरफ़ाने ख़ुदावन्दी की ला ज़वाल दौलत ह़ासिल कर ली, इस के ज़रीए **अल्लाह** तआला ने उन की रहनुमाई फ़रमाई और उन्हें उन्सिय्यत अ़ता फ़रमाई तो वोह उस से मानूस हो गए, उन के दिलों में अपने राज़ डाले तो उस की तौफ़ीक़ से वोह उस का ज़िक्र करने लगे । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के अह़वाल बयान कर के मलाइका के सामने फ़ख़्र फ़रमाता है और ऐसा क्यूं न हो जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन से मह़ब्बत करता है और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत करते हैं । उस ने उन के दिलों की सल्त़नत ग़फ़्लत से मह़फ़ूज़ फ़रमाई तो उन्हों ने उस की बारगाह को लाज़िम पकड़ लिया और अपनी सारी ज़िन्दगी इख़्लास को अपनाया और इसी पर दुन्या से रुख़्सत हुए । उन्हों ने अपने नामए आ'माल को नाफ़रमानियों से ख़ाली रखा और उसे सह़ीह़ रखने की पूरी कोशिश की । वोह रोज़े जज़ा की रुस्वाई से ख़ौफ़ज़दा हुए तो उन्हों ने उस अमानत की ह़िफ़ाज़त की जो उन के सिपुर्द की गई थी । उन्हों ने अपने मह़बूबे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ से अपना मक़्सूद भी पाया और त़लब से भी सिवा पाया । मगर मह़रूम को बद नसीबी के मैदान में छोड़ दिया जाएगा, उस पर रह़्म न किया जाएगा, उसे मैदाने मह़शर में शर्मसारी होगी और उसे उस दिन ज़िल्लत का लिबास पहनाया जाएगा जिस दिन कुछ मुंह रोशन और कुछ सियाह होंगे ।

तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने काइनात को बिग़ैर किसी शरीको मददगार के पैदा किया, वोह अपनी बुलन्द शान में इस से पाक है कि उसे त़ाक़तो क़ुदरत और वुजूद दिया जाए । उस ने अपनी शान के मुत़ाबिक़ अ़र्श पर इस्तिवा फ़रमाया । वोह इस्तिग़फ़ार करने वालों के लिये आस्मान पर नुज़ूल फ़रमाता है । वोह बरोज़े क़ियामत सब ज़मीनों को समेट देगा और उस के हुक्म से सब आस्मान लपेट दिये जाएंगे, वोह फ़रमाता है : اَحۡسَنَ كُلَّ شَیۡءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلۡقَ الۡاِنۡسَانِ مِنۡ طِیۡنٍ۟O(پ٢١، السجدة:٧) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जिस ने जो चीज़ बनाई ख़ूब बनाई और पैदाइशे इन्सान की इब्तिदा मिट्टी से फ़रमाई ।" उस ने इन्सान को एक ह़क़ीर नुत़्फ़े से पैदा किया और उसे पूरी दुन्या में फैला दिया । **अल्लाह** तआला इन्सान के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाता है :

“فَاِذَا هُوَ خَصِيۡمٌ مُّبِيۡنٌ0 (پ۲۳،یٰسٓ:۷۷) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** *जभी वोह सरीह़ झगड़ालू है ।”* (1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस पर शहवत मुसल्लत़ की ताकि इसे अपना इन्तिहाई ज़लील होना मा'लूम हो जाए । नाफ़रमानों की आंखों से इ़ब्रत के आंसू ख़ुश्क हो गए फिर भी उन का कोई मददगार नहीं लेकिन उस के दरवाज़े पर पहुंचने वाले मह़बूब बन्दों को उन का मह़बूबे ह़क़ीक़ी येह निदा देता है : وَسَارِعُوۡۤا اِلٰی مَغۡفِرَۃٍ مِّنۡ رَّبِّکُمۡ وَجَنَّۃٍ عَرۡضُہَا السَّمٰوٰتُ وَالۡاَرۡضُ ۙ اُعِدَّتۡ لِلۡمُتَّقِیۡنَ0 (پ۴،ال عمران:۱۳۳) “**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और दौड़ो अपने रब्ब की बख़्शिश और ऐसी जन्नत की त़रफ़ जिस की चौड़ान में सब आस्मानो ज़मीन आ जाएं, परहेज़गारों के लिये तय्यार रखी है ।”(2)

सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस को ह़वादिषाते ज़माना नहीं बदल सकते, और न ही ज़मानों की तब्दीली उस को पुराना कर सकती है, वोही अव्वलो आख़िर और ज़ाहिरो बात़िन है :

1......मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡهَادِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : “**शाने नुज़ूल :** येह आयत आ़स बिन वाइल या अबू जह्ल और ब क़ौले मश्हूर उबय्य बिन ख़लफ़ जु–मजी के ह़क़ में नाज़िल हुई जो इन्कारे बा'ष में या'नी मरने के बा'द उठने के इन्कार में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से बह़षो तकरार करने आया था, उस के हाथ में एक गली हुई हड्डी थी, उस को तोड़ता जाता था और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से कहता जाता था कि क्या आप का ख़याल है कि इस हड्डी को गल जाने और रेज़ा रेज़ा हो जाने के बा'द भी अल्लाह तआ़ला ज़िन्दा करेगा ?” ह़ुज़ूर عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : हां, और तुझे भी मरने के बा'द उठाएगा और जहन्नम में दाख़िल फ़रमाएगा । इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उस के जहल का इज़्हार फ़रमाया गया कि “गली हुई हड्डी का बिखरने के बा'द अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत से ज़िन्दगी क़बूल करना, अपनी नादानी से ना मुमकिन समझता है । कितना अह़मक़ है अपने आप को नहीं देखता कि इब्तिदा में एक गन्दा नुत़्फ़ा था, गली हुई हड्डी से भी ह़क़ीर तर । अल्लाह तआ़ला की क़ुदरते कामिला ने इस में जान डाल दी, इन्सान बनाया तो ऐसा मग़रूरो मुतकब्बिर इन्सान हुवा कि उस की क़ुदरत ही का मुन्किर हो कर झगड़ने आ गया । इतना नहीं देखता कि जो क़ादिरे बर ह़क़ पानी की बूंद को क़वी और तवाना इन्सान बना देता है, उस की क़ुदरत से गली हुई हड्डी को दोबारा ज़िन्दगी बख़्श देना क्या बईद है ? और इस को ना मुमकिन समझना कितनी खुली हुई जहालत है ।”

2 ......मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡهَادِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : “तौबा व अदाए फ़राइज़ व त़ाआ़त व इख़्लासे अ़मल इख़्तियार कर के । येह जन्नत की वुस्अ़त का बयान है इस त़रह़ कि लोग समझ सकें । क्यूंकि उन्हों ने सब से वसीअ़ चीज़ जो देखी है वोह आस्मानो ज़मीन ही है । इस से वोह अन्दाज़ा कर सकते हैं कि अगर आस्मानो ज़मीन के त़बक़े त़बक़े और परत परत बना कर जोड़ दिये जाएं और सब का एक परत कर दिया जाए इस से जन्नत के अ़र्ज़ का अन्दाज़ा होता है कि जन्नत कितनी वसीअ़ है । हरक़ुल बादशाह ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में लिखा कि जब जन्नत की येह वुस्अ़त है कि आस्मानो ज़मीन उस में आ जाएं तो फिर दोज़ख़ कहां है । ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाब में फ़रमाया कि “سُبۡحٰنَ اللّٰه ! जब दिन आता है तो रात कहां होती है । इस कलामे बलाग़त निज़ाम के मा'ना निहायत दक़ीक़ हैं । ज़ाहिर पहलू येह है कि दौरए फ़लकी से एक जानिब में दिन ह़ासिल होता है तो उस के जानिबे मुक़ाबिल में शब होती है । इसी त़रह़ जन्नत जानिबे बाला में है और दोज़ख़ जहते पस्ती में । यहूद ने येही सुवाल ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ से किया था तो आप ने भी येही जवाब दिया था । इस पर उन्हों ने कहा कि तौरैत में भी इसी त़रह़ समझाया गया है । मा'ना येह हैं कि अल्लाह की क़ुदरतो इख़्तियार से कुछ बईद नहीं, जिस शै को जहां चाहे रखे । येह इन्सान की तंगिये नज़र है कि किसी चीज़ की वुस्अ़त से हैरान होता है तो पूछने लगता है कि ऐसी बड़ी चीज़ कहां समाएगी ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ से दर्याफ़्त किया गया कि जन्नत आस्मान में है या ज़मीन में । फ़रमाया : कौन सी ज़मीन और कौन सा आस्मान है जिस में जन्नत समा सके । अ़र्ज़ किया गया : फिर कहां है ? फ़रमाया : आस्मानों के ऊपर ज़ेरे अ़र्श । इस आयत और इस से ऊपर की आयत “وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِیۡۤ اُعِدَّتۡ لِلۡکٰفِرِیۡنَ” से षाबित हुवा कि जन्नत व दोज़ख़ पैदा हो चुकीं मौजूद हैं ।”

يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُوْرُ ۝ (پ ٢٤، المؤمن: ١٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह जानता है चोरी छुपे की निगाह और जो कुछ सीनों में छुपा है।"

वोह न जिस्म है, न जोहर, न अ़र्ज़, न उ़न्सर। वोह नूरानी पर्दे से पाक है। उसे फ़ारिग़ समझने वाला अन्धा है, उस का इन्कार करने वाला बे बसीरत है, उस के लिये जिस्म षाबित करने वाला कमज़ोर नज़र वाला है और किसी को उस के मुशाबे क़रार देने वाला जहालत की जेल में क़ैद है। उस ने बादलों से ज़ोर का पानी बरसाया और उस के ज़रीए बहुत सी इकठ्ठी और बिखरी हुई नबातात को पैदा फ़रमाया और उन की ग़िज़ाएं बनाईं और हैवानात से मुज़क्करो मुअन्नष पैदा करने के लिये पानी से माद्दए मनविय्या बनाया ताकि इस में उस का फ़ज़्ल और अ़द्ल ज़ाहिर हो और पैदा होने वाली मख़्लूक़ तो आ़जिज़ो मजबूर है। उस ने इब्तिदाए ऑफ़रीनिश (آف۔ری۔نِش पैदाइश) से लौहे महफ़ूज़ में इन्सान की नजातो हलाकत के कलिमात लिख दिये। पस सब के साथ वोह मुआ़मला होगा जो वोह अपने अन्दाज़े से नहीं जान सकते और उमूर का अन्जाम उन से मख़्फ़ी कर दिया गया। फिर मौत का तीर उन की त़रफ़ फेंका तो उस ने उन्हें हलाक कर दिया फिर अपने इस फ़रमान से उसे नसीह़त की ताकि वोह जान ले कि अल्लाह तआ़ला अपने फ़ैसले में अ़द्ल करने वाला है और वोह ज़ुल्म नहीं करता :

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۝ (پ ٤، ال عمران: ١٨٥)

"**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हर जान को मौत चखनी है और तुम्हारे बदले तो क़ियामत ही को पूरे मिलेंगे जो आग से बचा कर जन्नत में दाख़िल किया गया वोह मुराद को पहुंचा और दुन्या की ज़िन्दगी तो येही धोके का माल है।"[1]

पाक है वोह रब्ब عَزَّوَجَلَّ जो फ़ैसला करता है लेकिन उस पर फ़ैसला नहीं किया जाता, जो सहीह को तोड़ता और टूटे हुए को जोड़ता है, मैं उस की रह़मत की उम्मीद रखने वाले जैसी ह़म्द करता हूं क्यूंकि वोह उसे ग़फ़ूरो रह़ीम जानता है और मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वोह यक्ता है उस का कोई शरीक नहीं, मैं ने येह गवाही रोज़े मह़शर के लिये तय्यार कर रखी है और मैं गवाही देता हूं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ास बन्दे और रसूल हैं, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم क़ियामत के दिन तमाम उम्मतों की शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे।

---

1 .....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "दुन्या की ह़क़ीक़त इस मुबारक जुम्ले ने बे ह़िजाब कर दी। आदमी ज़िन्दगानी पर मफ़्तूं (या'नी फ़रेफ़्ता, शैदा) होता है। इसी को सरमाया समझता है और इस फ़ुर्सत को बेकार ज़ाएअ़ कर देता है। वक़्ते अख़ीर उसे मा'लूम होता है कि उस में बक़ा न थी। उस के साथ दिल लगाना ह़याते बाक़ी और उख़्रवी ज़िन्दगी के लिये सख़्त मुज़र्रत रसां हुवा। ह़ज़रते सईद बिन जुबैर ने फ़रमाया कि "दुन्या त़ालिबे दुन्या के लिये मताअ़, ग़ुरूर और धोके का सरमाया है। लेकिन आख़िरत के त़लबगार के लिये दौलत बाक़ी के ह़ुसूल का ज़रीआ़ और नफ़्अ़ देने वाला सरमाया है।"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! फ़ानी शै का त़ालिब ख़सारे में है क्यूंकि अ़न क़रीब वोह उसे छोड़ कर रुख़्सत हो जाएगा। क्या वोह शख़्स आने वाले लम्ह़ात में ग़ौर नहीं करता कि वोह उस की उ़म्र के मुख़्तलिफ़ मराह़िल को लपेट रहे हैं? क्या दिन और रात आंखें फाड़े उस का पीछा नहीं कर रहे? क्या तू उन लोगों को नहीं देखता जिन की उ़म्रें हज़ार साल थीं? जब उन से पूछा गया तो उन्हों ने येही जवाब दिया कि हम तो कुछ दिन ही इस दारे फ़ानी में ठहरे थे। क्या तू उन लोगों से ना वाक़िफ़ है जिन्हों ने मज़्बूत़ क़ल्ए़ बनाए और बड़े बड़े सरदारों को ह़िफ़ाज़त में रखा, उन्हें आबाद करने वालों को मौत की तलवार ने तबाहो बरबाद कर दिया और सब कुछ उन की मिल्किय्यत से ज़ाइल हो गया? क़ौमे नूह़, क़ौमे आ़दो षमूद और क़ौमे तुब्बअ़ और पहले वाले बादशाह कहां हैं? कहां हैं वोह लोग जो कभी मशरिक़ो मग़रिब के मालिक थे? वोह सब रुख़्सत हो गए और उन का सब कुछ बेकार हो गया और वोह ख़ुद उस अन्धेरे घर में मुन्तक़िल हो गए, जिस में शाहो गदा सब बराबर हैं। क्या तू उन की पुकार नहीं सुनता ह़ालांकि वोह ख़ामोश मा'लूम होते हैं? ऐ अ़क़्लमन्द! क्या तू उन से नसीह़त ह़ासिल नहीं करता? शद्दाद और नो'मान कहां चले गए? बादशाहे ईरान और उस के मह़ल्लात कहां गए? बाबिल के बादशाहों को किस ने गुमनाम कर दिया? मौत ने उन सब का काम तमाम कर दिया: "يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ج (پ٤،اٰل عمران:١٠٦) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान:** जिस दिन कुछ मुंह ऊंजाले (रोशन) होंगे और कुछ मुंह काले।"

भेड़ियों और बकरियों में सुल्ह़:

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वाह़िद बिन ज़ैद رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि "मैं तीन रोज़ रात के वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में येही इल्तिजा करता रहा कि वोह मुझे जन्नत में मेरा रफ़ीक़ दिखा दे तो मैं ने देखा कि कोई कहने वाला कह रहा है: "ऐ अ़ब्दल वाह़िद! जन्नत में तेरी रफ़ीक़ मैमूना सौदा होगी।" मैं ने दर्याफ़्त किया: "वोह कहां रहती है?" तो मुझे बताया गया कि वोह कूफ़ा के फ़ुलां क़बीले में रहती है। आप फ़रमाते हैं कि फिर मैं कूफ़ा चल पड़ा। उस के मुतअ़ल्लिक़ लोगों से दर्याफ़्त करने पर उन्हों ने मुझे बताया कि "वोह तो दीवानी है और हमारी बकरियां चराती है।" मैं ने उन से कहा: "मैं उसे देखना चाहता हूं।" तो लोगों ने कहा: "आप पहाड़ की त़रफ़ जाएं।" मैं ने वहां जा कर देखा कि वोह अपने सामने डन्डा नस्ब किये नमाज़ में खड़ी है, उस पर ऊन का जुब्बा लटक रहा था जिस पर लिखा था: "येह ख़रीदो फ़रोख़्त के लिये नहीं।" और येह भी देखा कि बकरियां भेड़ियों के साथ मिल कर चर रही हैं। न तो भेड़िये इन को खाते हैं और न ही येह भेड़ियों से डरती हैं। जब उस ने मुझे देखा तो नमाज़ मुख़्तसर कर के कहा: "लौट जाएं, ऐ इब्ने ज़ैद! आप वापस चले जाएं, वा'दे की जगह यहां नहीं बल्कि वा'दे की जगह तो जन्नत है।" मैं ने कहा: "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़म फ़रमाए! आप को किस ने बताया कि मैं इब्ने ज़ैद हूं?" तो उस ने जवाब देते हुए कहा: आप को मा'लूम नहीं कि रूहें एक इकठ्ठा लश्कर थीं जो एक दूसरे से मुतआ़रिफ़ हो गईं वोह बाहम मह़ब्बत करती हैं और जिन्हों ने एक दूसरे को न पहचाना वोह अलग रहती हैं।" फिर मैं ने उस से कहा: "मुझे नसीह़त करो?" तो उस ने कहा:

"तअ़ज्जुब है ! नसीह़त करने वाले को भी भला नसीह़त की जाएगी। बहर ह़ाल ऐ इब्ने ज़ैद ! अगर तुम अपने आ'ज़ा पर अ़द्ल की कसोटी नाफ़िज़ कर लो तो मैं तुम्हें अपने आ'ज़ा में छुपे हुए एक राज़ से आगाह करती हूं, ऐ इब्ने ज़ैद ! मुझे येह बात मा'लूम हुई है कि जिस बन्दे को दुन्या की कोई शै अ़त़ा की गई फिर उस को दूसरी मरतबा उस ने त़लब किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस के साथ ही ख़ल्वत की महब्बत उस से सल्ब कर लेता है और उस को क़ुर्ब के बदले जुदाई और उन्स के बदले वह़शत दे देता है।" फिर उस ने चन्द अश्आ़र कहे, जिन का मफ़्हूम येह है :

"ऐ वाइज़ ! तू खुद नाफ़रमान है और लोगों को गुनाहों से रोकता और डांटता है। ह़क़ीक़त में तू ही बीमार व कमज़ोर है कि गुनाहों को नापसन्द करने वाले से इन का वुक़ूअ़ बड़ा ही अ़जीब है। ऐ मेरे रफ़ीक़ ! अगर तू ने जल्द ही अपने इन उ़यूब से दाग़दार होने से पहले पहले तौबा कर ली और अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से सुल्ह़ कर ली तो जान ले कि तू जो भी कहेगा उस का मक़ामो मर्तबा दिलों में सच्चा होगा। लेकिन उस वक़्त तेरी ह़ालत येह है कि तू दूसरों को तो गुमराही व सरकशी से मन्अ़ करता है और खुद मन्अ़ करने में शक में मुब्तला है।"

अश्आ़र कहने के बा'द वोह ख़ामोश हुई तो मैं ने उस से इस्तिफ़्सार किया : "मैं इन भेड़ियों को बकरियों के साथ देख रहा हूं कि न बकरियां भेड़ियों से डरती हैं और न ही भेड़िये बकरियों को खाते हैं।" तो उस ने कहा : "मैं ने अपने और अपने मालिक के दरमियान रुकावट को दूर कर के उस से सुल्ह़ कर ली तो उस ने भी भेड़ियों और बकरियों के दरमियान रुकावट दूर कर के इन की सुल्ह़ करवा दी।"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह सादिक़ीन की अ़लामात, मोअमिनीन के फ़ज़ाइलो आ़दात, मुत्तक़ीन के आषार और बुज़ुर्गों के लगाए हुए बाग़ात हैं। **ऐ वोह शख़्स** ! जो नाफ़रमानियों की राह में ह़ैरान खड़ा है ! जान ले कि नेकी का रास्ता भी बहुत क़रीब है और ऐ वोह शख़्स जिस को गुनाहों ने तौबा से रोक रखा है ! जल्दी से हमेशा के लिये तौबा कर ले। ऐ वोह शख़्स जो मुसलसल ना फ़रमानियों में ग़र्क़ होता जा रहा है ! लौट आ और जिस ने तुझे अपनी त़रफ़ बुलाया है वोह तेरी पुकार सुन कर तुझे जवाब से नवाज़ेगा।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गोया तुम उम्मीदों के कांटने वाली मौत के बहुत क़रीब हो, वोह आएगी तो तुम कीड़ों और तारीकी के घरों की त़रफ़ मुन्तक़िल हो जाओगे, वोह तुम्हें दोस्तों की मह़फ़िल से उचक लेगी फिर नाफ़रमान को शर्मिन्दगी का सामना करना पड़ेगा लेकिन अफ़्सोस ! उस वक़्त उसे आ'माल से ख़ाली उ़म्र ज़ाएअ़ करने पर नदामत नफ़्अ़ न देगी।

﴿1﴾ يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ۝
(پ۲۹،الحاقة: ۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उस दिन तुम सब पेश होगे कि तुम में कोई छुपने वाली जान छुप न सकेगी।*

ऐ इन्सान ! तुझ पर अफ़्सोस है, क्या तुझे वईदों से न डराया गया लेकिन तू फिर भी ख़ौफ़ नहीं करता। क्या तू उस ज़ात से ह़या नहीं करता जिस ने तुझे वुजूद बख़्शा और तेरी ख़ूब सूरत शक्ल बनाई, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुझे तेरे चाहने वाले भुला देंगे और तंग क़ब्र में डाल कर अकेला छोड़ देंगे।

क़ब्र की दिल हिला देने वाली कहानी :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ एक जनाज़े के साथ क़ब्रिस्तान तशरीफ़ ले गए, जब लोगों ने सफ़ें बना लीं तो आप सब से पीछे चले गए (वहां एक क़ब्र के पास बैठ कर ग़ौरो फ़िक्र में डूब गए), आप के दोस्तों ने इस्तिफ़्सार किया : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! आप तो मय्यित के वली हैं और आप ही पीछे चले गए।" किसी ने अ़र्ज़ की, "या अमीरल मोअमिनीन ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ यहां तन्हा कैसे तशरीफ़ फ़रमा हैं ?" फ़रमाया, "अभी अभी एक क़ब्र ने मुझे पुकार कर बुलाया और बोली, ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ) ! मुझ से क्यूं नहीं पूछते कि मैं अपने अन्दर आने वालों के साथ क्या बरताव करती हूं ? मैं ने उस क़ब्र से कहा : मुझे ज़रूर बता। वोह कहने लगी, जब कोई मेरे अन्दर आता है तो मैं उस का कफ़न फाड़ कर जिस्म के टुकड़े टुकड़े कर डालती और उस का गोश्त खा जाती हूं, क्या आप मुझ से येह नहीं पूछेंगे कि मैं उस के जोड़ों के साथ क्या करती हूं ? मैं ने कहा, ज़रूर बता। तो कहने लगी, "हथेलियों को कलाइयों से, घुटनों को पिन्डलियों से और पिन्डलियों को क़दमों से जुदा कर देती हूं।" इतना कहने के बा'द हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ हिचकियां ले कर रोने लगे। जब कुछ इफ़ाक़ा हुवा तो कुछ इस त़रह़ इ़ब्रत के मदनी फूल लुटाने लगे, "**ऐ इस्लामी भाइयो** ! इस दुन्या में हमें बहुत थोड़ा अ़र्सा रहना है, जो इस दुन्या में (सख़्त गुनहगार होने के बा वुजूद) साहि़बे इक़्तिदार है वोह (आख़िरत में) इन्तिहाई ज़लीलो ख़्वार है। जो इस जहां में मालदार है वोह (आख़िरत में) फ़क़ीर होगा। इस का जवान बुढ्ढा हो जाएगा और जो ज़िन्दा है वोह मर जाएगा। दुन्या का तुम्हारी त़रफ़ आना तुम्हें धोके में न डाल दे, क्यूंकि तुम जानते हो कि येह बहुत जल्द रुख़्सत हो जाती है। कहां गए तिलावते क़ुरआन करने वाले ? कहां गए बैतुल्लाह का ह़ज करने वाले ? कहां गए माहे रमज़ान के रोज़े रखने वाले ? ख़ाक ने उन के जिस्मों का क्या ह़ाल कर दिया ? क़ब्र के कीड़ों ने उन के गोश्त का क्या अन्जाम कर दिया ? उन की हड्डियों और जोड़ों के साथ क्या हुवा ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! दुन्या में वोह आराम देह नर्म नर्म बिस्तर पर होते थे लेकिन अब वोह अपने घर वालों और वत़न को छोड़ कर राह़त के बा'द तंगी में हैं, उन की बेवाओं ने दूसरे निकाह़ कर के दोबारा घर बसा लिये, उन की अवलाद गलियों में दर बदर है, उन के रिश्तेदारों ने उन के मकानातो मीराष आपस में बांट ली। वल्लाह ! उन में कुछ ख़ुश नसीब हैं जो क़ब्रों में मज़े लूट रहे हैं और **वल्लाह** ! बा'ज़ क़ब्र में अ़ज़ाब में गरिफ़्तार हैं।"

अफ़्सोस सद हज़ार अफ़्सोस ! ऐ नादान ! जो आज मरते वक़्त कभी अपने वालिद की, कभी अपने बेटे की तो कभी सगे भाई की आंखें बंद कर रहा है, उन में से किसी को नहला रहा है, किसी को कफ़न पहना रहा है, किसी के जनाज़े को कन्धे पर उठा रहा है, किसी के जनाज़े के साथ जा रहा है, किसी को क़ब्र के गढ़े में उतार कर दफ़्ना रहा है। (याद रख ! कल येह सभी कुछ तेरे साथ भी

होने वाला है) काश ! मुझे इ़ल्म होता ! कौन सा गाल (क़ब्र में) पहले ख़राब होगा'' फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ रोने लगे और रोते रोते बेहोश हो गए और एक हफ़्ते के बा'द इस दुन्या से तशरीफ़ ले गए।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की क़सम !** तुम्हारी बोई हुई फ़सल की कटाई का वक़्त क़रीब आ गया है, तुम कब तक इस गफ़्लत का शिकार रहोगे ? क़ियामत की हौलनाकियां तुम्हारे सामने हैं कि जिस दिन बाप अपनी अवलाद से भागेगा, तुम्हें उस वक़्त इन्तिहाई अफ़्सोस होगा जब तुम्हारे आ'माल का ह़िसाब होगा, तुम सुखी हुई उस घास की मानिन्द हो जाओगे जिस को हवाएं इधर उधर फेंक रही होती हैं। तुम कब तक इस गफ़्लत में मुब्तला रहोगे ह़ालांकि तौबा की क़बूलिय्यत का इ़ल्म तो ज़ाहिर हो चुका है। ऐ ख़्वाहिशात के समन्दर में ग़र्क़ रहने वालो ! नजात की कश्ती पर सुवार हो जाओ और अपने अफ़्आ़ल से बुराइयों का जड़ से ख़ातिमा कर दो, अपने नफ़्स को नदामत के साहि़ल पर डाल दो फिर तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को बहुत ज़ियादा करम फ़रमाने वाला पाओगे।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ज़िल्लत और आ़जिज़ी के साथ अपने हाथ फैलाओ और इस घड़ी गिर्या व ज़ारी करते हुए पुकारो ! ऐ वोह ज़ात जिस की नाफ़रमानी करना उस को नुक़्सान नहीं देती और न ही जिस की इत़ाअ़त करना उस को कोई फ़ाइदा देती है ! या अरह़मर्राहि़मीन ! हम तुझ से सुवाल करते हैं कि तू हमारी ख़राबियों के बदले दुरुस्ती अ़त़ा फ़रमा और ख़सारे के इवज़ नफ़्अ़ अ़त़ा फ़रमा। ऐ वोह ज़ात जिस के नूर की मिषाल ऐसी है जैसे एक त़ाक़ जिस में चराग़ है ! अपनी रह़मत से हमारे मुआ़मले में दरगुज़र फ़रमा।

وَصَلَّى اللّٰهُ علٰى سيِّدِنا محمَّدٍ وَّاٰ لِه وصحبِه وَسَلَّمَ تَسلِيماً دَائِماً اِلٰى يَوْمِ الدِّيْن

बयान 19 :

मनाक़िबे सालिहीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تعالٰی

हम्दे बारी तआला :

तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो कभी मुफ़्लिस व मोहताज नहीं होता, वोह करम फ़रमाने वाला, क़दीम और यक्ता है, बाप बेटे से मुनज़्ज़ह है, हिस्सेदार और मददगार से पाक है, किसी हाकिम, मुमाषिल (या'नी मुशाबा), हटधर्म और सरकश से बहुत बुलन्द है, तमाम अच्छी ने'मतों पर तमाम ता'रीफ़ों के साथ उस का शुक्र अदा किया जाता है, वोह नाफ़रमान पर अपना पर्दा डाल देता है हालांकि वोह उसे नाफ़रमानी करते हुए देख रहा होता और मुलाहज़ा कर रहा होता है और वोह अपने ज़लील बन्दे पर अपने बे पायां एहसानात फ़रमाता है और उस के तमाम मक़ासिद पूरे फ़रमाता है। पाक है वोह जो मज़्बूत चट्टानों और पथरीली ज़मीन से नहरें निकालता है, ख़ुश्क बेजान लकड़ी से दरख़्त और ख़ुशनुमा कलियां उगाता है और एक ही पानी से सैराब होने वाली बाहम मिली हुई या जुदा जुदा सीधी शाख़ों से मुख़्तलिफ़ ज़ाइक़ों और रंगों के तरो ताज़ा फल पैदा फ़रमाता है। येह उस की क़ुदरत की बा'ज़ निशानियां और उस की हिक्मतो कारीगरी के बा'ज़ अ़जाइबात हैं। इन्सान को इस का मुशाहदा करना चाहिये।

वसीलए औलिया ज़रीअ़ए शिफ़ा :

हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन जलाद رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि "मैं ने अपने वालिदे मोहतरम رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه को येह फ़रमाते सुना : "मैं हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه के पास हाज़िर था कि एक शख़्स ने हाज़िर हो कर उन से अ़र्ज़ की : ऐ अबू महफ़ूज़ ! (येह आप की कुन्यत है) मैं ने इस रात अ़जीब चीज़ देखी।" उन्हों ने दर्याफ़्त फ़रमाया : क्या देखा ?" अ़र्ज़ की : "मेरे घर वालों को मछली खाने की ख़्वाहिश हुई, मैं बाज़ार गया और मछली ख़रीद कर एक मज़दूर बच्चे को साथ लिया कि वोह मछली उठा कर घर तक मेरे साथ चले। चुनान्चे, वोह मेरे साथ चल पड़ा, रास्ते में जब उस ने ज़ोहर की अज़ान सुनी तो मुझे कहा : ऐ मोहतरम ! क्या आप नमाज़ नहीं पढ़ेंगे ?" गोया उस ने अचानक मुझे ग़फ़्लत से बेदार कर दिया हो, मैं ने कहा : "हां ! हां ! क्यूं नहीं ! ज़रूर पढ़ेंगे।" उस ने मछली वाला बरतन मस्जिद के दरवाज़े पर रखा और मस्जिद में दाख़िल हो गया, मैं ने अपने दिल में कहा : "इस बच्चे ने तश्त को नमाज़ पर क़ुरबान कर दिया तो क्या मैं मछली क़ुरबान नहीं कर सकता।" बहर हाल वोह नमाज़ पढ़ता रहा यहां तक कि इक़ामत कही गई और हम ने जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ी और नमाज़ के बा'द चन्द रकअ़तें भी अदा कीं। जब बाहर निकले तो देखा कि तश्त अपनी जगह मौजूद था। मैं ने घर आ कर येह वाक़िआ़ घर वालों को सुनाया तो वोह कहने लगे : "इस बच्चे को हमारे साथ मछली खाने की दा'वत दें।" जब मैं ने उसे दा'वत दी तो उस ने कहा : "मैं रोज़े से हूं।" मैं ने उस से कहा : "फिर तुम हमारे हां रोज़ा इफ़्तार करो।" उस ने कहा : "मुझे आप की दा'वत क़बूल है, अब मुझे मस्जिद का रास्ता दिखा दीजिये।" मैं ने उसे रास्ता दिखाया तो वोह मस्जिद में जा कर बैठ गया। जब हम ने नमाज़े मग़रिब अदा कर

ली तो मैं ने उसे कहा : "अब हमारे घर चलिये।" उस ने जवाब दिया : "नमाज़े इशा पढ़ कर चलेंगे।" नमाज़े इशा पढ़ने के बा'द मैं उस को अपने घर ले आया जिस में तीन कमरे थे : एक मेरा और मेरे बच्चों की अम्मी का था, दूसरे में हमारी बीस साल से मा'ज़ूर लड़की रहती थी और तीसरे में हमारा मेहमान था। रात के आख़िरी हिस्से में, मैं अपनी बीवी के पास बैठा हुवा था कि अचानक किसी ने दरवाज़ा खट-खटाया। मैं ने पूछा : "कौन है?" तो बाहर से आवाज़ आई : "मैं आप की फ़ुलां बेटी हूं?" मैं ने कहा : "वोह तो बीस साल से मा'ज़ूर है और घर में पड़ा हुवा महूज़ गोश्त का एक टुकड़ा है, वोह कैसे सीधी हो कर चल सकती है?" येह सुन कर वोह कहने लगी : "मैं आप की वोही बेटी हूं, आप दरवाज़ा तो खोलें।" जब मैं ने दरवाज़ा खोल कर देखा तो बिल्कुल सीधी खड़ी थी। हम ने उस से कहा : "हमें बताओ कि तुम कैसे शिफ़ायाब हुई हो?" तो उस ने बताया कि "मैं ने आप को अपने उस मेहमान का भलाई के साथ तज़्किरा करते हुए सुना तो मेरे दिल में येह बात आई कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस का वसीला पेश करूं कि वोह मेरी तक्लीफ़ दूर कर दे लिहाज़ा मैं ने अ़र्ज़ की : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **तेरी बारगाह में हमारे इस मेहमान की अ़ज़मत का सदक़ा! मेरी तक्लीफ़ दूर फ़रमा और मुझे आ़फ़िय्यत अ़ता फ़रमा।**" येह दुआ़ करते ही मैं सीधी खड़ी हो गई जैसा कि आप मुझे देख रहे हैं।" उस की येह बात सुन कर मैं अपने मेहमान की त़रफ़ गया तो घर में उस को न पाया, दरवाज़े पर आया तो उस को भी बन्द पाया।" येह सारा वाक़िआ़ समाअ़त फ़रमाने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَیْه ने इरशाद फ़रमाया : "हां! वाक़ेई औलियाए किराम رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِین में छोटे बड़े सभी होते हैं (और येह भी उन्हीं में से थे)।"

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ! क्या शान है उन लोगों की जिन्हों ने महब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ की वजह से इबादत की, न कि जन्नत के लिये और वोह ख़ुदा को पाने के लिये उस की बारगाह में ह़ाज़िर रहे, न कि बख़्शिश के लिये। पस वोही लोग मा'रिफ़त के नूर से उस का दीदार करते हैं, शौक़ के परों से उस की त़रफ़ उड़ते हैं और सह़री के वक़्त उस की मुनाजात से लज़्ज़त ह़ासिल करते हैं। चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿۱﴾ اَلَاۤ اِنَّ اَوْلِیَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ۚ (پ ۱۱، یونس:٦٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *सुन लो बेशक* ***अल्लाह*** *के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म।*

मुतवक्किलीन का ह़ाल :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू आ़मिर वाइज़ رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि एक रात मैं एक पहाड़ में चल रहा था कि मैं ने एक ज़ख़्मी दिल वाले की चीख़ो पुकार सुनी जो कह रहा था : "ऐ बयाबानों में हैरतज़दों की रहनुमाई फ़रमाने वाले! ऐ ख़ल्वतों में वह़शत मह़सूस करने वालों की वह़शत दूर करने वाले! जब बहादुरों को तवानाई की तलाश होती है मैं तुझ से तवानाई का सुवाल

करता हूं और जब जाहिल फ़ख़्रो नाज़ करते हैं तो मैं तुझ से फ़ख़्र त़लब करता हूं।'' आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं जल्दी से उस त़रफ़ बढ़ा और उस शख़्स को जा कर सलाम किया उस ने सलाम का जवाब दिया और पूछा : ''इस रात की तारीकी में आप कहां से आए हैं और कहां जाना चाहते हैं ?'' मैं ने कहा : ''सीधी राह से भटका हुवा हूं, मैं ने आप से ऐसा कलाम सुना है कि जिस ने मेरे दिल के ज़ख़्मों को ताज़ा कर दिया है और वज्दो ग़म को ह़रकत दे दी है।'' येह सुन कर उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और बेहोश हो कर गिर पड़ा। होश आने के बा'द रोने लगा। मैं ने उस से रोने का सबब पूछा तो उस ने जवाब दिया : ''मैं तमन्नाओं और फ़ानी ज़िन्दगी में वक़्त ज़ाएअ़ करने को ना पसन्द करता हूं।'' फिर वोह मुंह फेर कर चल दिया। मैं भी उस के पीछे हो लिया। एक वादी में झुक कर बैठने के बा'द वोह दोबारा रोने लगा तो मैं ने कहा : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए, मुझे भी रास्ता दिखाइये।'' तो उस की आहो बुका में ज़ियादती हो गई और कहने लगा : ''अफ़्सोस है तुझ पर ! कहां है रास्ता ? कहां हैं दाईं त़रफ़ वाले और कहां हैं आ'ला इ़ल्लियीन के मरातिब ?'' फिर उस ने मेरे हाथ पर ज़र्ब लगाई और आगे ले गया तो अचानक हम एक वादी के कनारे पर पहुंच गए।

मैं ने कहा : ''फ़ज्र तुलूअ़ हो गई है और हमें वुज़ू करना है।'' तो उस ने अपना हाथ ज़मीन पर मारा जिस से मीठे पानी का एक चश्मा फूट पड़ा और मुझे कहा : ''लीजिये, वुज़ू कीजिये।'' हम दोनों ने वुज़ू किया फिर उस ने अज़ानो इक़ामत कही और हम ने नमाज़ पढ़ी, जब सलाम फेरा तो उस ने कहा : ''ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! तुम सलामत रहो, अब जुदाई का वक़्त आ गया है।'' मैं ने कहा : ''उस ज़ात की क़सम जिस ने आप के लिये अपनी बारगाह तक रसाई आसान फ़रमा दी है ! मेरे लिये दुआ़ फ़रमाएं।'' फिर मैं ने अपने तोशादान की त़रफ़ इशारा किया तो उस ने पूछा : ''क्या आप भूक से हैं ?'' मैं ने कहा : ''जी हां।'' तो उस ने कहा : ''ग़िज़ा त़लब कर के आप ने अपने दिल को काइनात में ग़ौरो फ़िक्र से ग़ाफ़िल कर दिया है, अगर आप यक़ीन का ज़ाइक़ा चख लेते और मुत्तक़ीन के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तय्यार की गई ने'मतें मुलाह़ज़ा कर लेते तो आप का ख़ुशूअ़ हमेशा रहता और आप की भूक ख़त्म हो जाती।'' फिर उस ने अपना हाथ ज़मीन पर मारा तो यकायक गर्म गर्म रोटी बर आमद हुई गोया कि आग से निकली हो और उस ने मुझ से कहा : ''खाइये।'' मैं ने ह़ैरान हो कर उसे खाया और दिल में उस के मुतअ़ल्लिक़ पूछने का इरादा ही किया था कि वोह ख़ुद ही कहने लगा : ''ऐ नौजवान ! बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ऐसे बन्दे भी हैं जिन्हों ने सच्चे दिल से ख़्वाहिशाते नफ़्सानिया को तर्क किया तो अब पूरी काइनात ज़िन्दगी व मौत में उन की ख़िदमत करती है।'' इस के बा'द अचानक वोह मेरे पास से ग़ाइब हो गया फिर मैं उस को न देख सका।

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! क्या ख़ूब हैं वोह लोग जिन्हों ने अपने दिल में मह़बूबे ह़क़ीक़ी के इ़लावा किसी के लिये कोई जगह न छोड़ी।

﴿अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین ﷺ﴾

एक आ़बिद की आ़रिफ़ाना गुफ़्तगू :

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि "एक दफ़्आ़ मैं एक पहाड़ में घूम फिर रहा था। जब मैं एक ऐसी वादी से गुज़रा जिस में बहुत से दरख़्त, नबातात और फल थे तो मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत और हुस्ने कारीगरी के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करने लगा। अचानक मुझे एक आवाज़ सुनाई दी जिस ने मेरे सब आंसूओं को बहा दिया और मेरी आतशे इ़श्क़ भड़क उठी। चुनान्चे, मैं उस आवाज़ के पीछे पहाड़ के निचले हि़स्से में एक ग़ार के दहाने तक पहुंच गया। वोह कलाम ग़ार के अन्दर से सुनाई दे रहा था। मैं अन्दर गया तो वहां एक इ़बादत गुज़ार शख़्स को पाया जो निहायत ही कमज़ोर था और उस पर मक़्बूलिय्यत के आषार नुमायां थे, मैं ने उस को येह कहते हुए सुना : "पाक है वोह ज़ात जिस ने उ़श्शाक़ के दिलों को अपनी बारगाह में मुनाजात के ज़रीए़ ज़िन्दा किया और उन को त़लबे मुआ़श की मशक़्क़त से बे नियाज़ कर दिया। अब वोह सिर्फ़ उसी पर भरोसा करते हैं और उस ने उन्हें अपनी मह़ब्बत के लिये चुन लिया तो अब वोह सिर्फ़ उसी के मुश्ताक़ हैं।" जब उस ने मुझे मह़सूस किया तो मैं ने कहा : "السلام علیکم, ऐ ग़मों के रफ़ीक़ और दुखों के हमनशीन !" तो उस ने जवाब दिया : "وعلیکم السلام, आप को किस ने उस शख़्स का रास्ता दिखाया जिसे ख़ौफ़े इलाही ने मख़्लूक़ से अ़लाहि़दा कर रखा है और जो अपने नफ़्स के मुह़ासबे की वजह से कलाम में फ़साह़त से ग़ाफ़िल है ?" तो मैं ने कहा : "मुझे ग़ौरो फ़िक्र की रग़्बत और पुर असरार औलियाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی के बारे में जानने की ख़्वाहिश आप के पास लाई है।" तो उस ने कहा : "ऐ नौजवान ! बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ बन्दे ऐसे हैं कि जिन के दिलों में उन की अपने मह़बूबे ह़क़ीक़ी से इन्तिहाई मह़ब्बत अषर अन्दाज़ होती है तो उस के साथ शदीद मह़ब्बत की बिना पर उन की अरवाह़ आ़लमे मलकूत में सैर करती हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जम्अ़ शुदा ख़ज़ानों को देखती हैं तो ज़ाते बारी तआ़ला उन को अपने जमाल का मुशाहदा कराती है और वोह उस को इस त़रह़ देखते हैं कि उन के दिल उस की मह़ब्बत में आबाद होते हैं और उन की अरवाह़ उस से मुलाक़ात के लिये उड़ती रहती हैं, वोह दुन्या व आख़िरत के बादशाह हैं।" फिर उस शख़्स ने रोना शुरूअ़ कर दिया और दुआ़ की : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उन औलियाए किराम जैसे आ'माल की मुझे भी तौफ़ीक़ दे और मुझे भी उन के साथ मिला दे।" फिर उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और ज़मीन पर तशरीफ़ ले आया और उस की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह ख़ाइफ़ीन की सिफ़ात और आ़रिफ़ीन की अ़लामात हैं।

समन्दर पर चलने वाला शख़्स :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान अज़्दी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ फ़रमाते हैं कि "मैं बैरूत के साह़िल पर चलते हुए समन्दर पर बैठे एक शख़्स के पास से गुज़रा जिस की दोनों टांगें पानी में थीं और वोह कह रहा था : "पाक है वोह ज़ात जिस का अ़र्श आस्मान में और हुक्म ज़मीन पर है, पाक है वोह ज़ात जिस की क़ुदरत हवा में और ह़ुकूमत समन्दर पर है।" फिर वोह ख़ामोश हो गया।

मैं ने उस से दर्याफ़्त किया : "क्या हुवा, आप अकेले क्यूं बैठे हैं ?" तो वोह कहने लगा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो और ह़क़ के सिवा कुछ न कहो, जब से मैं पैदा हुवा हूं कभी भी अकेला नहीं रहा। बेशक मैं जहां भी रहूं मेरा खुदा عَزَّوَجَلَّ मेरे साथ होता है और दो फ़िरिश्ते मेरी हिफ़ाज़त और निगहबानी करते हैं।" मैं ने पूछा : "आप कहां रहते हैं ?" जवाब दिया : "मेरा कोई मा'रूफ़ मक़ाम नहीं, न ही कोई मख़्सूस ठिकाना है।" मैं ने अ़र्ज़ की : "कहां से खाते हैं ?" तो उस ने कहा : "जब मुझे कोई ह़ाजत दरपेश होती है तो मैं अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे ख़ास में अपने दिल से सुवाल करता हूं, सिर्फ़ ज़बान से दुआ़ नहीं करता तो वोह मेरी ह़ाजत पूरी कर देता है।" मैं ने पूछा : "आप को येह मर्तबा कैसे मिला ?" तो उस ने जवाब दिया : "उस ज़ात عَزَّوَجَلَّ पर सिद्क़, तवक्कुल और लोगों को छोड़ कर उसी की त़रफ़ इल्तिजा के ज़रीए।" मैं ने अ़र्ज़ की : "मेरे लिये दुआ़ फ़रमाएं।" तो उस ने कहा : "मैं इस मैदान का शहसुवार नहीं, बल्कि आप इस के ज़ियादा ह़क़दार हैं।" तो मैं ने कहा : "मुझे कोई ताकीदी हुक्म फ़रमा दें।" उस ने कहा : "उस ज़ात के दरवाज़े पर ज़िल्लत का इज़्हार करते हुए खड़े हो जाओ और उस की बारगाह से न हटो, वोह आप को अपने मह़बूब बन्दों का क़ुर्ब अ़त़ा फ़रमा देगा।" फिर वोह शख़्स समन्दर पर चलते हुए मेरी आंखों से ओझल हो गया।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बादे नसीम के अल्फ़ाज़ को सिवाए मुहिब्ब के कोई नहीं समझ सकता और बिजलियों की गुफ़्तगू सिवाए उ़श्शाक़ के किसी को ख़ुश नहीं कर सकती। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह लोग दारे मुनाजात में मह़बूब की बारगाह में तन्हाई इख़्तियार करते हैं तो उन को विसाल का जामा पहना दिया जाता है, और इन को मुआ़मले की ख़ुश्बू और इन्तिहाई महंगी ग़ालिय्या (मुश्क, अ़म्बर और काफ़ूर से बनी हुई एक मुरक्कब ख़ुश्बू) से आरास्ता किया जाता है। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में औलियाए किराम की शान बयान करते हुए इरशाद फ़रमाता है :

﴿2﴾ وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا

(پ۱۹،الفرقان:٦٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह जो रात काटते हैं अपने रब्ब कि लिये सजदे और क़ियाम में।*[1]

वोह इस ह़ाल में सुब्ह़ करते हैं कि सह़री उन को लाग़री व बीमारी का लिबास पहनाती है। लेकिन वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के विसाल से और फिर नफ़्अ़ व ग़नाइम पा कर कामयाब हैं, और ऐ मिस्कीन ! तू ग़फ़्लत के मैदान में सोया हुवा है, ऐ ग़फ़्लत और नींद के क़ैदी ! क्या तुझे लोगों के साथ होने वाले मुआ़मले का इ़ल्म है ?

---

1 ......मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "या'नी नमाज़ और इ़बादत में शब बेदारी करते हैं और रात अपने रब्ब की इ़बादत में गुज़ारते हैं और अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने करम से थोड़ी इ़बादत वालों को भी शब बेदारी का षवाब अ़त़ा फ़रमाता है।" ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि "जिस किसी ने बा'दे इ़शा दो रक्अ़त या ज़ियादा नफ़्ल पढ़े वोह शब बेदारी करने वालों में दाख़िल है।" मुस्लिम शरीफ़ में ह़ज़रते उ़ष्माने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है : "जिस ने इ़शा की नमाज़ बा जमाअ़त अदा की उस ने निस्फ़ शब के क़ियाम का षवाब पाया और जिस ने फ़ज्र भी बा जमाअ़त अदा की वोह तमाम शब के इ़बादत करने वाले की मिष्ल है।"

सियाहफ़ाम मुत्तक़ी ग़ुलाम का तवक्कुल :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन बकार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار **और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इस्ह़ाक़ फ़ज़ारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى जो कि औलिया व सालिह़ीन में से थे, लकड़ियां काट कर उस की कमाई से खाते थे। एक दिन उन दोनों ने बाहम इत्तिफ़ाक़ किया कि कल सुब्ह़ पहाड़ पर चढ़ने और लकड़ियां काटने में एक दूसरे की मदद करेंगे। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन बकार رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه पहाड़ पर चढ़ने में सब्क़त ले गए और लकड़ियों का गठ्ठा भी जम्अ़ कर लिया लेकिन जब उन के रफ़ीक़ ने उन के पास पहुंचने में देर कर दी तो वोह उन को पहाड़ में तलाश करने लगे। उन्हों ने देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق चार ज़ानू तशरीफ़ फ़रमा हैं और एक शेर का सर उन की गोद में है और वोह ख़ुद उस शेर से मख्खियों को दूर कर रहे हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन बकार رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ अबू इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق ! येह क्या है ?" फ़रमाया : "शेर ने मुझ से इल्तिजा की तो मुझे उस पर तरस आ गया। अब मैं इन्तिज़ार कर रहा था कि येह बेदार हो और मैं आप के पास जा सकूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन बकार رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه उन को उसी ह़ालत में छोड़ कर आगे चले गए। अचानक उन्हों ने चट्टान पर एक थेली देखी जिस में एक हज़ार दीनार थे। उस पर ग़ुबार और मिट्टी पड़ी हुई थी। उन्हों ने दिल में सोचा : "मैं इस को ले जा कर सदक़ा करूंगा।" चुनान्चे, पहाड़ से उतरे तो एक सियाहफ़ाम ग़ुलाम का पास से गुज़र हुवा जो पाउं से मा'ज़ूर था और चेहरे के क़रीब लकड़ियों का एक गठ्ठा पड़ा था, जिसे वोह बेचना चाहता था। उन्हों ने सोचा कि "इस सोने का ह़क़दार इस ग़ुलाम से ज़ियादा कौन हो सकता है। चुनान्चे, उन्हों ने थेली से दस दीनार निकाले और उस के पास आ कर कहा : "येह लीजिये और अपनी ह़ालत दुरुस्त कर लीजिये।" ग़ुलाम ने अपना सर उठाया और कहा : "इस सोने को उस की जगह पर वापस रख दें और जो अपने हाथ की कमाई नहीं उसे सदक़ा न करें। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं एक साल से इस चट्टान पर पड़ी हुई थेली के पास से गुज़र रहा हूं मगर मुझे येह भी मा'लूम न हुवा कि इस में क्या है ? तो आप दुन्या में कैसे राग़िब हो गए और जिस को लेना जाइज़ न था उस को ले लिया ?" आप फ़रमाते हैं कि मुझे उस की बातों से बड़ी शर्मिन्दगी हुई और मैं ने जान लिया कि येह औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى में से है लिहाज़ा मैं थेली को उस की जगह पर रख कर वापस आया तो वोह अपनी जगह पर न था। मैं ने दर्याफ़्त किया तो बताया गया कि येह हर हफ़्ते एक मरतबा लकड़ियों का गठ्ठा ले कर आता है और फिर उसे एक दिरहम के इवज़ फ़रोख़्त करता है और इसी से हफ़्ते के बाक़ी अय्याम ग़िज़ा ह़ासिल करता है और किसी से कोई चीज़ नहीं मांगता।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह ज़ाहिदीन के अह़वाल और सालिह़ीन की सिफ़ात हैं।

दिल जब भर जाए तो ज़िक्रुल्लाह ज़बान पर जारी हो जाता है :

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि "मैं रात के वक़्त मस्जिदे ह़राम से **जबले अबी क़ुबैस** जाने के इरादे से निकला, रास्ते में एक बड़ी नाक वाले ह़ब्शी ग़ुलाम से मेरी मुलाक़ात हुई जो यूं कह रहा था : "اَنْتَ اَنْتَ يَا هُوَيَا هُوَ या'नी बस तू ही तू है, ऐ वोह ज़ात, ऐ वोह ज़ात।" इस के इ़लावा कुछ न कहता जब कई बार कह चुका तो मैं ने पूछा : "ऐ शख़्स ! क्या तू दीवाना है ?" कहने लगा : "ऐ शैख़ ! दीवाना तो वोह होता है जो हज़ार क़दम चलता है फिर भी अपने परवर दगारे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र नहीं करता।" तो मैं ने कहा : "मुह़क़्क़िक़ीन के नज़्दीक तो अफ़्ज़ल ज़िक्र वोह है जो दिल से हो।" तो उस ने कहा : "**आप ने सच कहा है लेकिन दिल जब भर जाए तो ज़िक्र ज़बान पर जारी हो जाता है।**" फिर वोह मेरी आंखों से ग़ाइब हो गया तो उस के साथ सख़्त रवय्या इख़्तियार करने पर मैं बेह़द नादिम हुवा। जब रात हुई और मैं सो गया तो ग़ैब से किसी पुकारने वाले ने निदा दी : "बेशक बरोज़े क़ियामत उस ग़ुलाम के लिये ऐसा नूर होगा जो ज़मीनो आस्मान के दरमियान को भर देगा।"

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! क्या ख़ूब हैं येह लोग जिन की ईदें उस के अह़काम की बजा आवरी, जिन की मुराद मक़ासिद तक पहुंचना, जिन के अह़वाल कमाल का ह़ासिल करना और जिन का कमाल तक़्वा है। वोह कैसे अनोखे लोग हैं कि जब लोग लज़्ज़ात की त़रफ़ माइल होते हैं तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मस्रूफ़ हो जाते हैं। जब मख़्लूक़ अपने घरों पर आराम कर रही होती है तो वोह मह़ब्बते ह़क़ीक़ी के ग़मों में मुब्तला होते हैं और जब तुज्जार अपने माल की त़रफ़ माइल होते हैं तो वोह अपने गुमशुदा अह़वाल की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाते हैं। जब ग़ाफ़िल नींद के ज़रीए़ लज़्ज़त ह़ासिल करते हैं तो वोह तारीकी में अपने मह़बूब के कलाम से लुत़्फ़ अन्दोज़ होते हैं। आख़िरत को अपने पेशे नज़र रखते हैं तो उस के लिये जिद्दो जहद करते हैं और मौत की निदा देने वाले को सुनते हैं कि "तय्यार हो जाओ।" तो वोह अपने आक़ा व मौला عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सच्चाई का नज़राना ले कर आते हैं तो फिर रद्द नहीं किये जाते और जब उन्हें अपने गुनाह याद आते हैं तो मुज़्त़रिब हो जाते हैं और उन्हें नींद नहीं आती, उन को मक़्सूद की उम्मीद ह़रकत देती है तो वोह खड़े हो जाते हैं और फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सामने पेश होने को याद करते हैं तो सीधे हो जाते हैं। उस की मन्ज़रकशी क़ुरआने पाक यूं करता है :

يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ ﴿3﴾

(پ۱۳،ابراھیم:٤٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जिस दिन बदल दी जाएगी ज़मीन उस ज़मीन के सिवा।*

जब मौत के बारे में सोचते हैं तो अह़काम की बजा आवरी में हमेशा जिद्दो जहद करते रहते हैं। और जब अपने गुज़श्ता गुनाहों को याद करते हैं तो अपने नफ़्स को मलामत करते हैं।

ऐ ग़फ़्लत व ला परवाही की नींद सोने वाले ! बेदार हो जा और परहेज़गारी से अपने ज़ाहिर की इस्लाह़ कर, इस से पहले कि तेरे लिये तलाफ़ी मुश्किल हो जाए और कूच करने के लिये ख़ूब ज़ादे राह इकठ्ठा कर ले क्यूंकि थोड़ा सा ज़ादे राह त़वील सफ़र में तुझे काफ़ी न होगा। अपने गुनाहों को नेकी से मिटा दे, मुमकिन है कि तेरा रब्ब عَزَّ وَجَلَّ तेरी ख़त़ाओं से दरगुज़र फ़रमा दे और मौत की याद की साफ़ रैत से अपनी उम्मीद की बीमारियों का इलाज कर और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से शिफ़ा त़लब कर, उम्मीद है कि वोह तुझे शिफ़ा अ़त़ा फ़रमाएगा।

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْن

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के लिये बाहम मह़ब्बत करने वाले नूर के मिम्बरों पर होंगे

फ़रमाने मुस्त़फ़ा *صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : "बेशक* ***अल्लाह*** *عَزَّ وَجَلَّ के ऐसे बन्दे भी हैं जो न अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام हैं और न शोहदा लेकिन अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और शोहदाए उ़ज़्ज़ाम उन के मक़ामो मर्तबा और* ***अल्लाह*** *عَزَّ وَجَلَّ से उन के क़ुर्ब पर रश्क करेंगे।" एक आ'राबी ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم येह कौन लोग होंगे ?" हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "येह मुख़्तलिफ़ शहरों के लोग होंगे, उन के दरमियान कोई ख़ूनी रिश्ता न होगा मगर वोह एक दूसरे से सिर्फ़ रिज़ाए इलाही عَزَّ وَجَلَّ की ख़ातिर मह़ब्बत करते और तअ़ल्लुक़ रखते होंगे। बरोज़े क़ियामत* ***अल्लाह*** *عَزَّ وَجَلَّ उन के लिये अपने (अ़र्श के) सामने नूर के मिम्बर रखने का हुक्म फ़रमाएगा। और उन का ह़िसाब भी उन्हीं मिम्बरों पर फ़रमाएगा। लोग तो ख़ौफ़ज़दा होंगे लेकिन वोह बे ख़ौफ़ होंगे।"*

(المعجم الكبير، الحديث ٣٤٣٣، ج٣، ص ٢٩٠ بتغير)

बयान 20 :

ख़ौफ़े महशर का बयान

﴿وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِيَ الْاَمْرُ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ وَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ (پ١٦ مريم:٣٩)﴾

"तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उन्हें डर सुनाओ पछतावे के दिन का जब काम हो चुकेगा और वोह ग़फ़्लत में हैं और नहीं मानते ।"

ह़म्दे बारी तआला :

तमाम ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने अ़जाइबाते इ़ब्रत के मुशाहदे के लिये अपने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की निगाहें खोल दीं और उन के रन्जो ग़म को मुनाजात की सफ़ाई और मह़ब्बत की लज़्ज़त के ज़रीए अस्बाब की मस्रूफ़िय्यात और परेशानियों की आमेज़िश से नजात अ़त़ा फ़रमाई । उन पर मेहरबानियों के पिंघोड़े में अपना दस्ते करम फेरा, उन्हें अपनी करम नवाज़ियों के जाम पिलाए और उन के नूरे बसीरतो बसारत को मम्नूअ़ ख़्वाहिशात से रोका तो उन के दिल ख़ुदा के पै दर पै अह़काम, उस की तदबीर, इरादा मुक़द्दर करने और तक़्दीरों के फेरने पर राज़ी हो गए । उन के दिल साफ़ होने की वजह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन के लिये आ'माल का बिस्तर तय्यार किया तो उन्हों ने अपने मह़बूबे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ के साथ तन्हाई इख़्तियार करने को पसन्द किया और दुन्यवी बिस्तरों को छोड़ दिया जैसा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ(پ٢١، السجدة:١٦)

"तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाबगाहों से ।"

वोह शब बेदारी से लुत्फ़ अन्दोज़ होते हैं, नई नई चीज़ों के वुजूद में आने और ह़ालात बदलने से उन में कोई तब्दीली वाक़ेअ़ नहीं होती इस लिये कि उन के दिल यादे इलाही عَزَّوَجَلَّ की वादियों और क़ुदरते ख़ुदावन्दी के अ़जाइबात में ग़ौरो फ़िक्र के दरयाओं में मुस्तग़रक़ रहते हैं । उन्हों ने नफ़्स की पैरवी से ख़ुद को बचा लिया जिस के सबब उन की रूह़ों के परन्दे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त के बाग़ात में अ़ज़ीमुश्शान सल्त़नत की शादाब ज़मीन और नहरों में सैर करते हैं । काइनात का हर ज़र्रा उन्हें तौह़ीद के नग़्मात में मह़्व नज़र आता है । उन के हां इमारतो ग़ुर्बत, इ़ज़्ज़तो ज़िल्लत, मिदह़तो मज़म्मत, सहूलतो सुऊ़बत सब यक्सां हैं । पाक है वोह ज़ात जिस ने उन्हें राहे नजात पर इख़्लास के साथ चलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाई तो उन्हों ने दुन्या के जाल से छुटकारा पा कर क़ुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ पा लिया, लिहाज़ा उन्हें बड़ी घबराहट ग़मगीन न करेगी । मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द करता हूं, उस का शुक्र बजा लाता हूं, उस पर ईमान लाता हूं, उसी पर भरोसा करता हूं और हर त़रह़ की त़ाक़तो क़ुव्वत से उस शख़्स की त़रह़ बराअत का इज़्हार करता हूं जो अपने जराइम का ए'तिराफ़ व इक़रार करता है । और मैं जमाले इलाही عَزَّوَجَلَّ का मुशाहदा करने वाले और ह़ुस्ने ख़ातिमा के साथ उस की बारगाह में कामयाब होने वाले की त़रह़ गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं, वोह यक्ता है, उस का कोई हमसर नहीं, और येह गवाही देता हूं कि ख़ातमुन्नबिय्यीन, सफ़्वतुल मुर्सलीन, इमामुल मुत्तक़ीन, सय्यिदुल अव्वलीनो आख़िरीन ह़ज़रते

सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ास बन्दे और रसूल हैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर और आप के आल व अस्हाब عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان पर सलामती व रह़मत नाज़िल फ़रमाए जिन्हों ने दीने इस्लाम की सरबुलन्दी के लिये कोशिशें कीं यहां तक कि उस का परचम तमाम मज़ाहिब से बुलन्द हो कर सब पर ग़ालिब आ गया।

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों का इतना भारी बोझ कब तक उठाते फिरोगे ? नाफ़रमानियों के ज़रीए कब तक रब्बे ज़ुलजलाल عَزَّوَجَلَّ का मुक़ाबला करोगे ? कब तक ख़्वाहिशात की पैरवी करोगे ह़ालांकि येह मह़्ज़ ख़यालात हैं ? कब तक हमेशा रहने की ख़्वाहिश करते रहोगे ह़ालांकि मौत का वक़्त क़रीब आ चुका है ? कब तक ख़्वाहिशात तुम्हें सरकशी की ज़न्जीरों में जकड़े रखेंगी ? ह़ालांकि कितने ही दोस्तों ने तुम्हें मौत से डराया। क्या आज तुम उन लोगों को देखते हो जिन के क़ल्ओं की मज़्बूती ना क़ाबिले शिकस्त थी ? अब कहां हैं माल जम्अ़ करने वाले और गिन गिन कर रखने वाले ? बाग़ात को आबाद करने वाले कहां चले गए ? लश्करों की क़ियादत करने वाले कहां गए ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! लज़्ज़तों को ख़त्म करने वाली (मौत) तेरे इख़्तियार के बिग़ैर अचानक आ जाएगी और घर वालों को घर से ज़बरदस्ती निकाल देगी, एक घड़ी की मोहलत न मिलेगी, उम्मीदों को काट देगी, तेरे और तेरे मुआ़विनो मददगार के दरमियान ह़ाइल हो जाएगी। हाए अफ़्सोस उस वक़्त पर ! जब अह़बाब नफ़्अ़ नहीं देंगे, आहो बुका करने वालों की कोई परवाह न करेगा। जब तक़्दीर का फ़ैसला हो जाएगा तो अब इ़ताबे नफ़्स क्या नफ़्अ़ देगा ? ऐ उम्मीदों से धोका खाने वाले ! कितने ही लोग उम्मीदों से मह़रूम हुए। कितने मत़्लूब आराम कर रहे हैं लेकिन त़ालिब को नींद नहीं आती। हां ! हां ! अ़न क़रीब लह़द की तारीकी में तुझे अपने कामों का अन्जाम और अपने नामए आ'माल से उम्मीद मा'लूम हो जाएगी, इस के बा'द ह़िसाब लेने वाले के सामने खड़े होने की होलनाकी वग़ैरा तमाम मुआ़मलात तेरी समझ में आ जाएंगे और हर ख़ुश फ़ह़्म पर उस की झूटी उम्मीद ज़ाहिर हो जाएगी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उस वक़्त तमाम रास्ते तंग हो जाएंगे। मह़रूमी, ह़सरत और मसाइब का सामना होगा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाए ! अपनी बक़िय्या फ़ानी ज़िन्दगी को ग़नीमत जानो। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अ़न क़रीब जब अहले तक़्वा को कामयाबी का ताज पहनाया जाएगा तो सख़्त दिल वाले पशेमान होंगे। "وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝ (پ۲۴،المؤمن:۷۸) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बात़िल वालों का वहां ख़सारा।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने मह़बूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को हुक्म फ़रमाता है :

﴿1﴾ وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِيَ الْاَمْرُ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ وَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ (پ۱۶، مریم:۳۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उन्हें डर सुनाओ पछतावे के दिन का, जब काम हो चुकेगा और वोह ग़फ़्लत में हैं, और वोह नहीं मानते।* [1]

1......मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْبَارِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "ह़दीष शरीफ़ में है कि जब काफ़िर मनाज़िले जन्नत देखेंगे जिन से वोह मह़रूम किये गए, तो उन्हें नदामतो ह़सरत होगी कि काश ! वोह दुन्या में ईमान ले आए होते, और जन्नत वाले जन्नत में और दोज़ख़ वाले दोज़ख़ में पहुंचेंगे। ऐसा सख़्त दिन दरपेश है, और उस दिन के लिये कुछ फ़िक्र नहीं करते।"

"اِنْذَار" का मत्लब है, डर सुनाना और "يَوۡمَ الۡحَسۡرَۃِ" से मुराद क़ियामत का दिन है जिस दिन गुनहगार नेकी न होने की वजह से ह़सरत ज़दा होगा और नेकियों में सुस्ती करने वाला नेक आ'माल में कमी की वजह से ह़सरत ज़दा होगा। और "قُضِیَ الۡاَمۡرُ" से मुराद येह है कि जब ह़िसाब से फ़राग़त होगी अहले जन्नत को जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा और मुस्तह़िक़े नार को जहन्नम में। "وَهُمۡ فِیۡ غَفۡلَۃٍ" येह ख़िताब दुन्या में है और "وَهُمۡ لَا یُؤۡمِنُوۡنَ" येह आख़िरत में ख़िताब है या'नी उन को दोबारा नहीं भेजा जाएगा कि वोह ईमान लाएं।

क़ियामत का मन्ज़र :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़दी बिन ह़ातिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "क़ियामत के दिन कुछ लोगों को जन्नत की त़रफ़ बुलाया जाएगा यहां तक कि जब वोह क़रीब पहुंचेंगे और उस की ख़ुश्बू सूंघेंगे और उस के मह़ल्लात देखेंगे तो निदा की जाएगी : "इन लोगों को जन्नत से लौटा दो, इन के लिये जन्नत में कोई ह़िस्सा नहीं।" तो वोह ऐसी ह़सरत के साथ लौटेंगे कि उस जैसी ह़सरत से अगलों पिछलों में से कोई न लौटा होगा तो वोह अ़र्ज़ करेंगे : "ऐ हमारे रब्ब عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू येह दिखाने से क़ब्ल ही जहन्नम में दाख़िल कर देता तो हम पर आसान था।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "मैं ने येह इस लिये किया क्यूंकि तुम ख़ल्वत में नाफ़रमानियों से मेरा मुक़ाबला किया करते थे और जब तुम लोगों से मिलते तो लोगों को दिखाने के लिये बड़ी आ़जिज़ी से मुलाक़ात करते और जो तुम्हारे दिलों में मेरे लिये था वोह उस के बरअ़क्स था। तुम लोगों से डरते और मुझ से न डरते, लोगों की ता'ज़ीम करते और मेरी ता'ज़ीम न करते। तो आज मैं तुम्हें अपना दर्दनाक अ़ज़ाब चखाऊंगा मज़ीद येह कि मैं ने तुम पर आख़िरत का षवाब ह़राम कर दिया है।"

(المعجم الکبیر، الحدیث۱۹۹/۲۰۰، ج۱۵/۱۷، ص۸۵۔۸۶۔بتغیرقلیل)

अ़ज़ाबे जहन्नम की कैफ़िय्यत :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ इरशाद फ़रमाते हैं : "जब जहन्नम में हमेशा रहने वाले बाक़ी रह जाएंगे तो उन्हें ताबूतों में रखा जाएगा फिर उन ताबूतों को दूसरे ताबूतों में रखा जाएगा। कोई शख़्स भी येह गुमान न करेगा कि मेरे इ़लावा भी किसी को अ़ज़ाब दिया जा रहा है और क़ियामत के दिन हर शख़्स इस इन्तिज़ार में होगा कि आया उस का ठिकाना जन्नत होगा या जहन्नम ?" जहन्नमियों से कहा जाएगा : "अगर तुम अ़मल करते (तो अ़ज़ाब के ह़क़दार न होते)।" और जन्नतियों से कहा जाएगा : "अगर तुम पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्लो करम न होता (तो जहन्नम का ईंधन बनते)।"

(المعجم الکبیر،الحدیث۹۰۸۷۔۹۷۶۱،ج۹،ص۲۲۴۔۳۵۴،بتغیرقلیل)

हौज़े कौषर से मायूस लौटने वाले :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ‘‘गोया मैं देख रहा हूं कि हम हौज़े कौषर से पलट रहे हैं, एक शख़्स दूसरे से मिल कर पूछता है : ‘‘क्या तूने (हौज़े कौषर से जाम) पी लिया ?’’ वोह कहता है : ‘‘जी हां ! (मैं ने पी लिया) ।’’ और दूसरी त़रफ़ एक शख़्स दूसरे से मिल कर येही सुवाल करता है तो वोह जवाब में कहता है : ‘‘हाए प्यास ।’’

(الزھد للامام احمد بن حنبل،فی فضل ابی ھریرۃ،الحدیث ۸۳٤،ص۱۷٦۔بتغیرٍ)

मीज़ान पर मुक़र्रर फ़िरिश्ते का ए’लान :

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ‘‘मीज़ान पर एक फ़िरिश्ते की ज़िम्मेदारी है, जब किसी इन्सान की नेकियों का पलड़ा भारी होगा तो वोह फ़िरिश्ता ऐसी बुलन्द आवाज़ से ए’लान करेगा जिस को तमाम मख़्लूक़ सुन लेगी : ‘‘फ़ुलां सआदत मन्द है, आज के बा’द वोह कभी बदबख़्त न होगा ।’’ और अगर उस का पलड़ा हल्का होगा तो वोही फ़िरिश्ता वैसी ही बुलन्द आवाज़ से ए’लान करेगा : ‘‘फ़ुलां शख़्स बदबख़्त है, आज के बा’द वोह कभी सआदत मन्द न होगा ।’’ (حلیۃ الاولیاء،صالح بن بشیر المری، الحدیث ۸۲٤۱، ج٦، ص۱۸۷، بتغیرٍ قلیلٍ)

हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ‘‘कोई शख़्स ऐसा नहीं कि जो जुर्म करे और उस का जुर्म रोज़े क़ियामत किसी एक पर भी मख़्फ़ी रहे ।’’

प्यारे इस्लामी भाइयो ! क़ब्र वालों को क़ैद कर लिया गया और उन में अकषर लोगों को अपनी तिजारत में ख़सारा हुवा लिहाज़ा जब तुम उन के पास से गुज़रो तो इब्रत पकड़ो और उन के अह़वाल में ग़ौरो फ़िक्र करो, वोह वापस लौटने की तमन्ना करते हैं और हाथ से गई हुई चीज़ को पाने का सुवाल करते हैं । ऐ आज़ाद शख़्स ! उन की बेड़ियों को याद कर । ऐ ह़रकत करने वाले शख़्स ! तू ने उन की परेशानियों को जान लिया तो अब अपने नफ़्स को भी गुनाहों के क़ैदख़ाने से छुटकारा दे दे और तय्यार हो जा कि तू मत़्लूब है । अपने दिल में उस दिन को याद कर जिस दिन क़ुलूब उलट पलट रहे होंगे इस से पहले कि ज़बान को पकड़ लिया जाए और इन्सान ह़ैरतज़दा हो जाए, पहचान ख़त्म हो जाए और कफ़न फैल जाएं, क़ियाम ख़त्म हो जाए और सफ़र त़वील हो जाए । मुन्कर नकीर आएं और चीख़ो पुकार बुलन्द हो जाए यहां तक कि बन्दा पहलों से जा मिलेगा और उस के पीछे रहने वाले उस को भूल जाएंगे, वोह बेचारा वहां क़ैदी हो कर रह जाएगा, फिर वोह क़ियामत के दिन खड़ा होगा । उस की ह़ालत येह होगी कि नंगे बदन और ह़सरत ज़दा होगा, उस वक़्त उस से सारी इ़ज़्ज़तें छीन ली जाएंगी, मसाइब बढ़ जाएंगे और भागने के तमाम रास्ते बंद हो जाएंगे । इस के इ़लावा और भी बहुत से अ़जाइब का ज़ुहूर होगा, चेहरे सियाह होंगे और नाफ़रमान अपनी उम्मीदों से हाथ धो बैठेगा, पीठों पर भारी बोझ रख दिया जाएगा और नामए आ’माल दाएं या बाएं हाथ में पकड़ा दिया जाएगा और किसी शख़्स के लिये जन्नत या दोज़ख़ के सिवा वहां कोई क़ियाम गाह न होगी ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जल्दी से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा कर लो। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़म फ़रमाए ! इस से पहले कि तुम इन हौलनाकियों का मुआ़यना व मुशाहदा करो।

وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِيَ الْاَمْرُ

(پ١٦، مريم:٣٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उन्हें डर सुनाओ पछतावे के दिन का, जब काम हो चुकेगा।*

औलिया का क़ाफ़िला और समन्दर की मौजें :

ह़ज़रते सय्यिदुना मस्मअ़ बिन आ़सिम رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं "**ह़ज़रते सय्यिदुना** अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन सुलैमान رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْه, **ह़ज़रते सय्यिदुना** कलाब बिन ह़र्ब رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْه, **ह़ज़रते सय्यिदुना** सुलैमान बिन आ'रिज رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْه ने एक रात समन्दर के साह़िल पर गुज़ारी। ह़ज़रते सय्यिदुना कलाब رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْه रोने लगे ह़त्ता कि मुझे येह ख़ौफ़ लाह़िक़ हुवा कि कहीं वोह हलाक न हो जाएं, उन के रोने की वजह से ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْه भी रोने लगे, उन के रोने की वजह से ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْه भी रो दिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उन सब के रोने की वजह से मुझे भी रोना आ गया ह़ालांकि मुझे उन के रोने का सबब मा'लूम न था ? जब मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِير से पूछा "किस चीज़ ने आप को रुलाया ?" तो उन्हों ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने समन्दर की मौजों को देखा तो मुझे जहन्नम की हौलनाकियां और उस के लम्बे लम्बे सांस याद आ गए तो उस चीज़ ने मुझे रुला दिया।" फिर मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना कलाब رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْه से पूछा तो उन्हों ने भी येही जवाब दिया और जब मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْه से पूछा तो उन्हों ने फ़रमाया : "लोगों में मुझ से ज़ियादा बुरा कोई नहीं, मैं उन पर तरस खाते हुए रो रहा था जो वोह अपनी जानों के साथ कर रहे थे।"

प्यारे इस्लामी भाइयो ! तसव्वुर कीजिये गोया मैं देख रहा हूं कि तुम्हारा वोह दिन आ चुका है जिस का तुम से वा'दा किया गया था और तुम्हें अचानक उस चीज़ ने पकड़ लिया है जिस से तुम अपनी अवलाद और वालिद के ज़रीए़ छुटकारा नहीं पा सकते, वोह ऐसा मक़ाम है कि जिस में ज़बानें, आ'ज़ा और जिल्द तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही देंगे और कोई शख़्स जहन्नम और उस के अंगारों को बर्दाश्त नहीं कर पाएगा।

وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِيَ الْاَمْرُ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ وَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ (پ١٦، مريم:٣٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उन्हें डर सुनाओ पछतावे के दिन का, जब काम हो चुकेगा और वोह ग़फ़्लत में हैं, और वोह नहीं मानते।*

हज़रते सय्यिदुना सरी सक़्ती رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيه का विसाल :

हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं कि "मैं हज़रते सय्यिदुना सरी सक़्ती رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيه के इन्तिक़ाल के वक़्त आप की ख़िदमत में हाज़िर हुवा, आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيه उन लोगों में से थे जिन के दिल को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ और इश्क़े इलाही ने जला दिया था। मैं ने अ़र्ज़ की : "अपने आप को कैसा पाते हैं ?" तो आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيه ने येह शे'र पढ़ा :

كَيْفَ أَشْكُوْ إِلَى طَبِيْبِيْ مَا بِيْ وَالَّذِيْ بِيْ أَصَابَنِيْ مَنْ طَبِيْبِيْ

तर्जमा :......मैं अपने त़बीब से इस बीमारी की शिकायत कैसे करूं जिस में उस ने खुद ही मुझे मुब्तला किया है।

फिर मैं ने पंखा लिया ताकि आप को हवा दूं तो आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيه ने इरशाद फ़रमाया : "पंखे की हवा उस शख़्स को कैसे राह़त पहुंचाएगी जिस का दिल जल रहा हो ?" फिर आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيه ने चन्द अश्आ़र पढ़े, जिन का मफ़्हूम येह है :

"दिल जल रहा है, आंसू बह रहे हैं, ग़म जम्अ़ हो रहे हैं और सब्र टूट रहा है। उस शख़्स को कैसे इत़्मीनान आए जिस के लिये राह़तो सुकून की कोई जगह ही न हो क्यूंकि वोह तो बेचैनी व इज़्त़िराब और इश्क़े इलाही عَزَّوَجَلَّ में गिरिफ़्तार है।"

फिर आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيه ने ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ करते हुए दाइए अजल को लब्बैक कहा और इस दुन्याए फ़ानी से कूच फ़रमा गए।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इत़ाअ़त की मिठास में से तुम ने क्या तय्यार किया कि तुम मौत का कड़वा घूंट पी सको ? और मौत के आने से पहले तक़्वा के तोशे में तुम ने कौन सी चीज़ आगे कर रखी है ? और किस चीज़ ने ह़क़ की आवाज़ सुनने से ग़ाफ़िलों के कानों पर पर्दा डाल रखा है ? ऐ तन्हाई में गुनाह करने वाले ! काश ! तू ने ख़ल्वत इख़्तियार न की होती। कितने ही वा'ज़ो नसीह़त करने वाले अहले ग़फ़्लत को पुकार रहे हैं मगर वोह नसीह़त क़बूल नहीं करते। चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِيَ الْاَمْرُ ۘ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ وَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ (پ۱٦، مریم:۳۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उन्हें डर सुनाओ पछतावे के दिन का, जब काम हो चुकेगा और वोह ग़फ़्लत में हैं, और वोह नहीं मानते।*

नफ़्स के मुह़ासबे का अनोखा त़रीक़ा :

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम तैमी رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيه (अपने नफ़्स का मुह़ासबा करने का अन्दाज़ बयान करते हुए) फ़रमाते हैं, एक मरतबा मैं ने येह तसव्वुर बांधा कि मैं जन्नत में हूं, वहां के फल खा रहा हूं और उस की नहरों से मशरूब पी रहा हूं। उस के बा'द मैं ने येह ख़याल जमाया कि मैं जहन्नम में हूं और थोहड़ (कांटेदार दरख़्त) खा रहा हूं और दोज़ख़ियों का पीप पी रहा हूं। इन

तसव्वुरात के बा'द मैं ने अपने नफ़्स से पूछा : "तुझे किस चीज़ की ख़्वाहिश है ?" (जन्नत की या दोज़ख़ की ?)" नफ़्स ने कहा : "(जन्नत की इस लिये) मैं चाहता हूं कि दुन्या में जा कर नेक अ़मल कर के आऊं।" तब मैं ने अपने नफ़्स से कहा : "फ़िलहाल तुझे मोहलत (مہلت) मिली हुई है। (या'नी ऐ नफ़्स ! अब तुझे ख़ुद ही राह मुतअ़य्यन करनी है कि सुधर कर जन्नत में जाना है या बिगड़ कर दोज़ख़ में ! लिहाज़ा) इसी हि़साब से अ़मल कर।" (حلية الاولياء، ج٤، ص٢٣٥،رقم٥٣٦١۔ مكاشفة القلوب، ص٢٦٥)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! फ़ुज़ूल दिनों में तुम ने जो वक़्त बरबाद किया उस की तलाफ़ी करो, अ़न क़रीब हर अ़मल करने वाला अपने आ'माल का बदला पाएगा उस दिन नाफ़रमान मुआ़फ़ी चाहेगा लेकिन उसे मुआ़फ़ी न मिलेगी और अपनी गुमराही पर नदामत करते हुए अपनी उंगलियां काटेगा। हाए, अफ़्सोस ! उस दिन कैसी ह़सरत छाई होगी और उस दिन की होलनाकियां कितनी शदीद होंगी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अपने ग़फ़्लत के अय्याम पर गिर्या व ज़ारी करो, मौत की सख़्तियों में ग़ौरो फ़िक्र करो, मरने से पहले पहले मह़बूबे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ के दरवाज़े पर ह़ाज़िर हो जाओ गोया मैं देख रहा हूं कि तुम्हें अचानक मौत आ चुकी है। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَاَنۡذِرۡهُمۡ يَوۡمَ الۡحَسۡرَةِ اِذۡ قُضِىَ الۡاَمۡرُ‌ۘ وَهُمۡ فِىۡ غَفۡلَةٍ وَّهُمۡ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ۝ (پ١٦، مريم:٣٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उन्हें डर सुनाओ पछतावे के दिन का, जब काम हो चुकेगा और वोह ग़फ़्लत में हैं, और वोह नहीं मानते।*

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने नफ़्स को शहवात की क़ैद से आज़ाद कर लो और अपनी अ़क़्लों को ग़फ़्लत के नशे से बेदार कर लो और मौत से पहले दारे बक़ा के लिये तय्यार हो जाओ। गोया मैं तुम्हारे साथ हूं और मौत का मुनादी तुम्हारे पास आ चुका है :

وَاَنۡذِرۡهُمۡ يَوۡمَ الۡحَسۡرَةِ اِذۡ قُضِىَ الۡاَمۡرُ‌ۘ وَهُمۡ فِىۡ غَفۡلَةٍ وَّهُمۡ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ۝ (پ١٦، مريم:٣٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उन्हें डर सुनाओ पछतावे के दिन का, जब काम हो चुकेगा और वोह ग़फ़्लत में हैं, और वोह नहीं मानते।*

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की क़सम !** अ़न क़रीब अफ़्सोस और ग़म में तुम्हारे आंसू जारी होंगे और जब हमारे नूर को देखने वाला मलकुल मौत को देखेगा तो हक्का बक्का रह जाएगा और तू पुल सिरात़ पर अपने आ'माल के साथ मुक़य्यद हो कर रह जाएगा और तुम्हारे पोशीदा व ज़ाहिर तमाम बुरे आ'माल ज़ाहिर हो जाएंगे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उस वक़्त तुम्हारी आंखें आंसू बहाएंगी। चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَاَنۡذِرۡهُمۡ يَوۡمَ الۡحَسۡرَةِ اِذۡ قُضِىَ الۡاَمۡرُ‌ۘ وَهُمۡ فِىۡ غَفۡلَةٍ وَّهُمۡ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ۝ (پ١٦، مريم:٣٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उन्हें डर सुनाओ पछतावे के दिन का, जब काम हो चुकेगा और वोह ग़फ़्लत में हैं, और वोह नहीं मानते।*

हाए, अफ़्सोस ! अब उ़म्र ज़ाएअ़ होने के बा'द तुझे ह़सरत कोई फ़ाइदा न देगी और उम्मीदें

ख़त्म होने के बा'द फ़िक्र तुझे कोई फ़ाइदा न देगी। मा'लूम नहीं, हैरत के दिन तेरा क्या जवाब होगा? जब येह पुकारा जाएगा :

﴿2﴾ هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ ○ (پ۲۹،المرسلٰت:۳۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह दिन है कि वोह बोल न सकेंगे। [1]

उस बन्दे का वारिष कौन होगा जिस को मा'सिय्यत और गुनाहों ने शर्मिन्दा कर दिया है? उस भागे हुए का वाली कौन होगा जिस को लग़्ज़िशों और ऐबों ने तेरे दरवाज़े से दूर कर दिया है?

रिक़्क़त अंगेज़ दुआ :

ऐ अ़ल्लामुल ग़ुयूब عَزَّوَجَلَّ! दरगुज़र फ़रमा कि हम तेरी रह़मत से अच्छा गुमान रखते हैं। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ! मेरी ह़सरत कितनी अ़ज़ीम है कि मैं दूसरों को नसीह़त करता हूं और ख़ुद ग़ाफ़िल हूं। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ! मुझ पर कितनी सख़्त मुसीबत है कि मैं दूसरों को जगाता हूं और ख़ुद सोया हुवा हूं, ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ! मेरा मुआ़मला कितना अ़जीब है कि मैं दूसरों की रहनुमाई करता हूं और ख़ुद ह़ैरतज़दा हूं। या इलाही عَزَّوَجَلَّ! नसीह़त करने वाले और बेकार बातों में पड़ने वाले से दरगुज़र फ़रमा। या इलाही عَزَّوَجَلَّ! अगर मेरा कलाम ख़ालिस तेरी रिज़ा के लिये नहीं तो मेरे इजतिमाअ़ में कोई तो ऐसा शख़्स होगा जो ख़ालिस तेरी रिज़ा के लिये ह़ाज़िर हुवा होगा लिहाज़ा अपने वजहे करीम के सदक़े मेरी कोताही के मुआ़मले में उस की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा। और ऐ सब से बढ़ कर रह़म फ़रमाने वाले! हम सब पर अपनी ख़ास रह़मत फ़रमा। (आमीन)

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ اَجْمَعِيْن

1.....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "न कोई ऐसी ह़ुज्जत पेश कर सकेंगे जो उन्हें काम दे। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि "रोज़े क़ियामत बहुत से मौक़ेअ़ होंगे, बा'ज़ में कलाम करेंगे, बा'ज़ में कुछ बोल न सकेंगे।"

बयान 21 :

माल की मज़म्मत

﴿اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُO حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَO (پ ٣٠، التكاثر)﴾

"तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हें ग़ाफ़िल रखा माल की ज़ियादा त़लबी ने यहां तक कि तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा।"

ह़म्दे बारी तआ़ला :

सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने अपनी पुख़्ता वह़दानिय्यत के षुबूत पर ज़ाहिरी व बात़िनी मौजूदात के दलाइल के साथ अपनी क़ुदरते कामिला को दलील बनाया और काइनात में होने वाली तब्दीलियों में ग़ौरो फ़िक्र करने वाले इन्सान के लिये पुर हि़क्मत दलाइल और मुख़्तलिफ़ अश्या के ईजादो इख़्तिराअ़ को मुंह बोलता षुबूत बनाया। क़ज़ा के क़ासिद ने तक़दीर के क़लम से तेज़ी से गुज़रने वाले मौजूदात पर लिख दिया है कि उन के असरारो रुमूज़ को सिवाए अरवाहे त़य्यिबा की ज़बां के कोई नहीं पढ़ सकता। अ़क़्लमन्दों की आंखों के लिये फ़ह्मो इदराक के सितारे जगमगाए तो उन्हों ने क़ुरआने ह़कीम में जब्बारो क़ह्हार के अ़जाइबो ग़राइब का मुशाहदा किया। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ج (پ٤،ال عمران:١٥٢) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम में कोई दुन्या चाहता था और तुम में कोई आख़िरत चाहता था।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अ़क़्ल को इ़ज़्ज़ के नशे से मदहोश किया और उस के लिये ह़रकातो सकनात की बिसात़ पर पर्दए ग़ैब के पीछे से ख़यालात के ऐसे ख़ाके ज़ाहिर किये जिन का बात़िन मग़लूब और ज़ाहिर ग़ालिब है, फिर फ़िक्र की ज़मीन पर अ़क़्ल के पैरोकार को खुला छोड़ दिया ताकि वोह इदराक के शहर तक पहुंच जाए। लेकिन अचानक तक़दीर के घोड़े ने उस पर चढ़ाई कर दी और उस को उस ह़द पर रोक दिया जहां तक अ़क़्ल की रसाई है, तो उस पैरोकार ने जान लिया कि उस के ज़ाहिरी ज़राएअ़ ह़क़ीक़त का इदराक करने से क़ासिर हैं।

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अ़क़्ल को रिफ़अ़त अ़त़ा फ़रमाई, आंखों को बसारत से नवाज़ा और इन्सान ने मरातिबे अफ़्लाक में फ़िरिश्तों के दर्जात का मुशाहदा किया तो वोह हैबते इलाही عَزَّوَجَلَّ से सर ब सुजूद हो गया और अ़ज़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ देख कर खड़ा हो गया, क़ुदरत के साथ क़ाइम हो गया, मह़ब्बत में दीवाना हो गया और अह़कामे ख़ुदावन्दी की बजा आवरी के लिये कमर बस्ता हो गया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मख़्लूक़ को आईनए इ़ब्रत दिखाया पस काइनात की सूरतें अ़दम से वुजूद में आ गईं, ताकि इन्सान अपनी कोताहियों पर नादिम हो, इस से बाहम मुतज़ादो मुख़ालिफ़ त़बीअ़तों के ज़रीए़ दलाइल क़ाइम करने से तख़्लीक़े ख़ुदावन्दी के राज़ ज़ाहिर हो गए पस हम ने मुशाहदा किया कि ह़ैवान में ह़रारतो बुरूदत को यूं जम्अ़ किया गया है कि ह़रारत ठंडक से नहीं बचाती और ठंडक ह़रारत से नहीं बचाती। अल्लाह क़दीर عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत मक़्दूरात में बिल्कुल

ज़ाहिरो बाहिर है। एक ही गिज़ा के अज्ज़ा की तक़्सीम कारी ने अक़्ल वालों को हैरत में डाल दिया कि किस तरह एक ही गिज़ा से गर्म तबीअत वाले को गर्म और सर्द तबीअत वाले को ठंडी गिज़ा मिलती है। और हर गिज़ा अपनी मत्लूबा मिक़्दार के बराबर ही हासिल होती है। जब कि पानी भी एक है और गिज़ा भी एक है। और इस तक़्सीम में मुख़्तलिफ़ राज़ हैं जिन्हें देखने वाली निगाहें नहीं देख सकतीं। **अल्लाह** हकीम عَزَّوَجَلَّ ने अपनी हिक्मत के साथ अक़्ल के कानों को निदा फ़रमाई : "اِنَّا كُلَّ شَیْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ۝ (پ۲۷،القمر:۴۹) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक हम ने हर चीज़ एक अन्दाज़े से पैदा फ़रमाई।"

"**हर चीज़**" से मुराद रिज़्क़, मुद्दते हयात, सआदतो शक़ावत और क़ुर्ब व बा'द हैं। काश ! मैं इस आयते मुबारका का हक़ीक़ी मा'ना जान लेता ? और इन चीज़ों से छुटकारा कैसे मुमकिन है ? **अल्लाह** क़ादिर عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत की हिक्मत का दामन ख़ामियों से पाक है, हलाकत की उंगलियां उस की बे नियाज़ी में तब्दीली नहीं कर सकतीं, कोई उस के कलिमात को बदलने की ख़्वाहिश नहीं कर सकता। इन्सानी अक़्ल उस की मशिय्यत के असरार की हुज्जत समझने से क़ासिर है और अगर समझने की कोशिश करे तो जहालत की तारीकी में हैरान हो कर रह जाए। उस ने लौहे महफ़ूज़ की लगाम अपनी तक़दीर के हाथ में दे दी। और तक़दीर के क़लम के साथ क़ज़ा लिखने वाले को अपने मक़्बूल व मर्दूद बन्दों के असरार लिखने का हुक्म सादिर फ़रमाया। वोह बे नियाज़ रब्ब عَزَّوَجَلَّ बिग़ैर किसी सबब के अपना क़ुर्ब अता फ़रमा सकता है और अपनी बारगाह से दूर कर देता है और उस ने इस बात को अपने अज़ली फ़ैसले से लिख दिया है पस कभी येह फ़ैसला ज़ाहिर हो जाता है और कभी पोशीदा रहता है, वोह मिटाता और लिखता है, मन्सूख़ और षाबित फ़रमाता है, दूर और क़रीब करता है, हिदायत देता और गुमराह करता है और इज़्ज़तो ज़िल्लत देता है।

और उस ने फ़ह्मों और अक़्लों को इन रुमूज़ के समझने का हुक्म दिया मगर अक़्लों की बसीरत इन का इदराक कहां कर सकती है ? ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ऐ मेरे इस्लामी भाई ! उस की बारगाह में कैसा हीला और कौन सा सबब ? तक़दीरें क्यूं बनाई गईं ? अपने आ'माल से नफ़्अ किस को हुवा ? और किस ने अपने आ'माल से नुक़्सान उठाया ? पाक है वोह ज़ात जिस ने अपने ज़ाहिरी निज़ामे काइनात के पर्दों के साथ देखने वालों की निगाहें असरारे ख़ुदावन्दी का मुशाहदा करने से बन्द कर दीं, और तबाअ-ए-इन्सानी शरई पाबन्दियों के ख़ैमों के साथ छुपा दी गईं तो वोह हमेशा के लिये रसूल की मोहताज हो गईं।

मैं उस ज़ाते वहदहू ला शरीक की हम्द करता, उस पर ईमान लाता और उसी पर तवक्कुल करता हूं और हर क़ुव्वतो ताक़त में उस आजिज़ बन्दे की तरह बरी हूं जो अपनी ना फ़रमानियों का मो'तरिफ़ है और **अल्लाह** तआला की रहमत का मोहताज है और गवाही देता हूं कि उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। वोह यक्ता है उस का कोई शरीक नहीं। वोह कमिय्यतो कैफ़िय्यत, सम्त, ज़मान व मकां, जुज़्वो कुल, दाएं बाएं, ऊपर नीचे और आगे पीछे की सिफ़ात से मुनज़्ज़हो मुबर्रा है, क्यूंकि येह तो फ़ानी अजसाम की सिफ़ात हैं और येह भी गवाही देता हूं कि हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे

मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उस के ख़ास बन्दे और रसूल हैं, वोह अव्वलीनो आख़िरीन और तमाम मुर्सलीन के सरदार हैं, सिद्दीक़ीन के सुल्तान, ख़ासाने बारगाहे इलाहिय्या के इमाम और रोशनो चमकदार पेशानी वालों को उन अब्दी ने'मतों में ले जाने वाले हैं जिन के बारे में अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌO اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌO(پ۲۹،القيامة:۲۲-۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कुछ मुंह उस दिन तरो ताज़ा होंगे अपने रब्ब को देखते।"(1)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर, आप के आल व अस्हाब, अज़्वाजे मुत़ह्हरात और अन्सार رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم اَجْمَعِيْن पर रह़मत नाज़िल फ़रमाए। (आमीन) जो उस वक़्त हमारे दिलों की हिफ़ाज़त फ़रमाएगा जब तू देखेगा कि क़ियामत की हौलनाकियों से दिल ख़ौफ़ के आ़लम में उड़ रहे होंगे।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ज़रा उन लोगों के मुतअ़ल्लिक़ तो बताओ जो सारी ज़िन्दगी मालो दौलत जम्अ़ करते रहे लेकिन उन के जम्अ़ शुदा माल ने मरने के बा'द उन्हें कोई फ़ाइदा न दिया। क्या वोह सब के सब क़ब्रों में इकठ्ठे नहीं हो गए ? वोह लोग जिन्हों ने सारी ज़िन्दगी ख़्वाहिशाते नफ़्सानिय्या की पैरवी में बसर की मगर फिर भी सैर न हुए, अब वोह कहां चले गए ? क्या तुम उन को देख कर येह ख़याल करते हो कि वोह बड़ी अच्छी जगह पर हैं या फिर वोह क़ैद कर दिये गए हैं कि वापस नहीं लौटेंगे। कहां हैं वोह लोग जिन्हें दुन्या ने धोके में मुब्तला रखा ? अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! वोह मह्ज़ शहवात की वजह से ज़लीलो रुस्वा हुए। कहां हैं वोह जिन की ख़ातिर अस्बाब ने ग़फ़्लत के जाल बुने यहां तक कि वोह उन में फंस गए ? जब उन के पास प्यारों में जुदाई डालने वाला (मौत का फ़िरिश्ता) आया तो वोह उस की हैबत से लड़-खड़ा कर इज्ज़ो इन्किसारी करने लगे, लेकिन फिर भी उस ने उन के दर्दो अलम की कोई परवाह न की और उन्हें उन के अहलो इ़याल से दूर कर दिया तो उन के घर वाले और दोस्त उन पर रोने लगे। अफ़्सोस उन पर कि ख़ुद तो ज़िन्दगी पाने में कामयाब हो गए लेकिन उन को उन के आ'माल के साथ तन्हा छोड़ दिया और उन्हें भुला दिया, सारे रिश्ते नाते तोड़ डाले तो मरने वाले ने ह़सरत की ज़बान से अपने उन अह़बाब को पुकारा : "ऐ काश ! तुम सुन लो और उस इन्सान पर रह़म करो जो क़ब्र में दफ़्न है, जिस के पास न तो कोई ऐसा अ़मल है जो उस की नजात का बाइ़ष हो और न ही कोई ग़म गुसार कि उस के ग़म का मदावा करे।"

उन्हें अफ़्सोस व नदामत का जाम घूंट घूंट कर के पीना पड़ा, कीड़ों ने उन के आ'ज़ा को टुकड़े टुकड़े कर दिया। अब वोह दुन्या में वापस आने की तमन्ना करते हैं ताकि दिन को रोज़ा रखें और रातों को जाग कर बारगाहे इलाही عَزَّ وَجَلَّ में ह़ाज़िर हों। हाए, अफ़्सोस ! वोह अपने बोए हुए आ'माल की खेती काट रहे हैं।

1......मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "येह मोअमिनीन का ह़ाल है। उन्हें दीदारे इलाही की ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया जाएगा।

मस्अला : इस आयत से षाबित हुवा कि आख़िरत में मोअमिनीन को दीदारे इलाही मुयस्सर आएगा। येही अहले सुन्नत का अ़क़ीदा व क़ुरआनो ह़दीष व इज्माअ़ के दलाइले कषीरा इस पर क़ाइम हैं और येह दीदार बे कैफ़ और बे जहत होगा।"

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे हाल पर रहम फ़रमाए ! जल्दी करो, तुम्हारे सामने पुल सिरात और हिसाबो किताब का मन्ज़र दिखाई दे रहा है। नज़्अ़ की सख़्तियां सर पे खड़ी हैं, वोह दिन आया चाहता है जिस में तमाम रिश्ते ख़त्म हो जाएंगे, न अहलो इयाल नफ़्अ़ देंगे, न ही मालो दौलत और कोई दूसरे अस्बाब। या तो जन्नत की ने'मतें मिलेंगी या फिर जहन्नम का अ़ज़ाब। हर एक ज़बाने हसरत से पुकार रहा होगा : हाए अफ़्सोस ! येह कैसा नामए आ'माल मेरे हाथ में थमा दिया गया है। ऐ वोह शख़्स जिस को शहवाते नफ़्सानिय्या ने गढ़ों में धकेल दिया है, और ऐ वोह शख़्स जिस ने अपने ज़ाहिरो बातिन को हराम अश्या से आलूदा कर दिया है और ऐ वोह शख़्स जिस के नामए आ'माल को देखने से आंखें भी कतराती हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿1﴾ اَلۡهٰكُمُ التَّكَاثُرُ0حَتّٰى زُرۡتُمُ الۡمَقَابِرَ0 (پ۳۰، التکاثر:۱۔۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम्हें ग़ाफ़िल रखा माल की ज़ियादा तलबी ने, यहां तक कि तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा।*[1]

"اَلۡهٰكُمُ" का मा'ना है, तुम्हें ग़ाफ़िल कर दिया और "تَكَاثُرُ" का मा'ना है, ज़ियादा तलबी। इस का मा'ना येह भी है कि नसब, माल और अवलाद में कषरत के सबब एक दूसरे पर फ़ख़्र करना। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ माल जम्अ़ करने वालों और बाहम फ़ख़्र करने वालों को इरशाद फ़रमाता है :

اَلۡهٰكُمُ التَّكَاثُرُ0حَتّٰى زُرۡتُمُ الۡمَقَابِرَ0 (پ۳۰، التکاثر:۱۔۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम्हें ग़ाफ़िल रखा माल की ज़ियादा तलबी ने यहां तक कि तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा।*

या'नी जिस माल की वजह से तुम एक दूसरे पर फ़ख़्र करते हो उस की हक़ीक़त कुछ भी नहीं। और यहां पर एहतिमाल है कि येह क़सम के क़ाइम मक़ाम ताकीद है और येह भी एहतिमाल है कि माल की ज़ियादा तलबी और एक दूसरे पर फ़ख़्र करने पर ज़ज्रो तौबीख़ की गई है।

﴿2﴾ كَلَّا سَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَ0 (پ۳۰، التکاثر:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *हां ! हां ! जल्द जान जाओगे।*

या'नी क़ियामत के दिन माल के मतवालों का मुहासबा होने के बा'द तुम जान लोगे।

﴿3﴾ ثُمَّ كَلَّا سَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَ0 (پ۳۰، التکاثر:٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर हां ! हां ! जल्द जान जाओगे।*

मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं कि इस आयते मुबारका में एक बात को दो बार फ़रमाना वईद की ताकीद और मन्अ़ कर्दा फ़े'ल पर सख़्ती के लिये है।

1......मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡبَارِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : "इस से मा'लूम हुवा कि कषरते माल की हिर्स और इस पर मुफ़ाख़रत (या'नी एक दूसरे पर फ़ख़्र करना) मज़्मूम है और इस में मुब्तला हो कर आदमी सआ़दते उख़्रविय्या से महरूम रह जाता है। या'नी मौत के वक़्त हिर्स तुम्हारे दामन गीर ख़ातिर रही। हदीष शरीफ़ में है, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मुर्दे के साथ तीन होते हैं, दो लौट आते हैं, एक उस के साथ रह जाता है। एक माल, एक उस के अहलो अक़ारिब और एक उस का अ़मल साथ रह जाता है। बाक़ी दोनों वापस हो जाते हैं।"

﴿4﴾ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ۝ (پ ۳۰، التکاثر:۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हां ! हां ! अगर यक़ीन का जानना जानते तो माल की मह़ब्बत न रखते।

ऐ लोगो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां तुम्हारी हैसिय्यत क्या होगी जब सकराते मौत का ज़ुहूर होगा और नामए आ'माल फैला दिया जाएगा जो न किसी छोटे गुनाह को छोड़ेगा न बड़े को। "عِلْمَ الْيَقِيْن" से मुराद दिलों का उस चीज़ पर इत़्मीनान ह़ासिल करना है जिस से शक दूर हो जाता है।

﴿5﴾ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۝ (پ ۳۰، التکاثر:۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक ज़रूर जहन्नम को देखोगे।

इस से मुराद येह है कि क़ब्र में हर आदमी को जहन्नम में उस का ठिकाना दिखाया जाता है, अगर वोह सआ़दत मन्द हो तो उसे वोह ठिकाना दिखा कर उस से नजात की ख़ुशख़बरी दी जाती है और अगर बदबख़्त व शक़िय्युल क़ल्ब हो तो उस के लिये जहन्नम को बरक़रार रखा जाता है।

﴿6﴾ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۝ ثُمَّ لَتُسْئَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ۝ (پ ۳۰، التکاثر:۷۔۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर बेशक ज़रूर उसे यक़ीनी देखना देखोगे, फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से ने'मतों की पुरसिश होगी। (1)

या'नी बरोज़े क़ियामत सिह़्ह़त और फ़राग़त के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जाएगा। ह़ज़राते मुजाहिद व क़तादा (رَحِمَهُمَا اللهُ تَعَالٰی) फ़रमाते हैं : "**नई़म** में हर वोह चीज़ दाख़िल है जिस से लुत़्फ़ अन्दोज़ हुवा जाए।"

ऐ वोह शख़्स जिस पर लोग नेकियों में सबक़त ले गए हैं और वोह ख़्वाहिशात में घिरा हुवा पीछे रह गया है ! जिस ने अपनी उ़म्र टाल मटोल करते हुए और बेहूदा कामों में गुज़ार दी। ऐ वोह शख़्स गुनाहों पर जिस का दिल सख़्त हो चुका है और जिस की आंखों से ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से आंसू नहीं बहते ! ऐ वोह शख़्स जिस के बाल सफ़ेद हो गए फिर भी वोह नाफ़रमानियों पर डटा हुवा है ! कितनी ही बार तू ने अ़ल्लामुल ग़ुयूब रब्ब عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी कर के उस का मुक़ाबला किया ? तेरी ग़फ़्लत के मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ यूं इरशाद फ़रमाता है :

اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۝ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝ (پ ۳۰، التکاثر:۱۔۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हें ग़ाफ़िल रखा माल की ज़ियादा त़लबी ने यहां तक कि तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा।

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है कि "जिस ने ह़राम माल कमाया फिर उस को सदक़ा किया या उस के साथ सिलए रह़्मी की या राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च किया तो उस का येह सारा माल जम्अ़ कर के उस के साथ जहन्नम में फैंक दिया जाएगा।" (مراسیل ابی داؤد، باب زکوٰۃ الفطر، ص۹۔بتغیرقلیل)

1......मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "जो **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हें अ़त़ा फ़रमाई थीं, सिह़्ह़त व फ़राग़त व अम्न व माल वग़ैरा जिन से दुन्या में लज़्ज़तें उठाते थे। पूछा जाएगा : येह चीज़ें किस काम में ख़र्च कीं ? इन का क्या शुक्र अदा किया ? और तर्के शुक्र पर अ़ज़ाब किया जाएगा।"

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइषे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "बन्दा माले हराम में से जो भी कमाए और उसे ख़ैरात करे तो वोह क़बूल नहीं होता और उसे ख़र्च करे तो उस में बरकत नहीं होती और उसे अपने बा'द वालों के लिये छोड़े तो वोह उस के लिये आग का तोशा होगा।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند عبداللہ بن مسعود،الحدیث ۳۶۷۲،ج۲ ،ص۳۳،بتغیرقلیل)

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइषे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हक़ीक़त निशान है : "ऐ लोगो ! तुम में से हरगिज़ कोई मौत का शिकार न होगा जब तक कि वोह अपना मुकम्मल रिज़्क़ न पा ले लिहाज़ा तुम रिज़्क़ के मुतअ़ल्लिक़ तंग दिल न हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो और उ़म्दा तरीक़े से रिज़्क़ तलब करो, और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हलाल कर्दा चीज़ें ले लो और हराम कर्दा छोड़ दो।" (المستدرک،کتاب الرقاق، باب الحسب المال والکرم التقوی، الحدیث ۷۹۹۴،ج۵، ص ۴۶۴)

अफ़्सोस ! तअ़ज्जुब है तुझ पर ! जब भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ने'मतों की बिसात बिछाई तो तू ने नाफ़रमानी कर के उस का मुक़ाबला किया। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि "ऐ मेरे बन्दे ! कितनी ही बार हम ने देखा कि तू ने हमारी महफ़िल छोड़ कर शैतान की मजलिस अपनाई, मैं ने तुझ पर कितने एहसानात व इन्आ़मात फ़रमाए और मैं मन्नान हूं। ऐ मेरे बन्दे ! मैं तो तुझे अपने विसाल की दौलत से नवाज़ना चाहता हूं और तू है कि हिज्रो फ़िराक़ को महबूब रखता है, उस वक़्त तेरे पास क्या हिला होगा जब तुझ पर मेरा ग़ज़ब होगा और तेरे अहलो इयाल भी तुझ से दूर भाग रहे होंगे।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَلْھٰکُمُ التَّکَاثُرُ0 حَتّٰی زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ0

(پ۳۰، التکاثر:۱۔۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम्हें ग़ाफ़िल रखा माल की ज़ियादा तलबी ने यहां तक कि तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा।*

हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار इरशाद फ़रमाते हैं कि "मैं एक साल हज की सआ़दत से बहरा मन्द न हो सका, और कूफ़ा की एक तंग गली में ठहर गया। एक अंधेरी रात में घर से बाहर निकला कि अचानक रात की तारीकी को चीरती हुई एक तेज़ आवाज़ मेरे कानों से टकराई, कोई अल्लाह तआ़ला की बारगाह में महूवे इल्तिजा था : "ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! तेरे इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं ने गुनाहों से तेरी मुख़ालफ़त मोल लेने का इरादा न किया था बल्कि जब मैं ने येह गुनाह किये थे तो मैं तेरे मक़ामो मर्तबे से ना वाक़िफ़ था लेकिन जब मैं ने गुनाह किये और मेरे नफ़्स ने मुझे बुराई को अच्छाई ज़ाहिर कर के धोका दिया और मेरी बदबख़्ती मुझ पर ग़ालिब आ गई फिर भी तेरी रहमत ने मेरी पर्दापोशी की और तेरी इस पर्दापोशी से मैं धोका खा गया और अपनी जहालत की वजह से तेरी नाफ़रमानी करने लगा और महूज़ अपनी बदबख़्ती की वजह से तेरी मुख़ालफ़त की लेकिन अब तो मैं जान चुका हूं कि मुझे तेरे अ़ज़ाब से नजात दिलाने वाला

कोई नहीं ? ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू ने मुझे अपनी रहमत से दूर कर दिया तो मुझे कौन संभालेगा ? हाए हसरतो अफ़्सोस ! मेरी उम्र बढ़ने के साथ साथ मेरे गुनाहों में भी इज़ाफ़ा होता रहा। हलाकतो बरबादी हो मुझ पर ! कितनी ही मरतबा मैं ने तौबा की फिर तोड़ दी। अब वक़्त है कि मैं अल्लामुल गुयूब परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से हया करूं।''

कर के तौबा फिर गुनाह करता है जो *मैं वोही बदकार हूं कर दे करम*

फिर उस ने चन्द अश्आर कहे, जिन का मफ़्हूम येह है :

''अफ़्सोस ! मैं ने अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी की पस जब मेरा नामए आ'माल ज़ाहिर होगा तो मेरे पास कौन सा उज़्र होगा ? जब मुझे उस की बारगाह में ज़लील खड़ा किया जाएगा तो गुनाहों का इर्तिकाब करने पर क्या उज़्र पेश करूंगा ? ऐ तमाम लोगों से बे नियाज़ और मेरे तमाम करतूतों पर ख़बरदार ! मेरे पास अपने उन गुनाहों और जुर्मों का कोई उज़्र नहीं, मौला ! बस अपनी रहमत से मेरी ख़ताएं मुआफ़ फ़रमा दे। ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! तू ने मुझे सीधे रास्ते पर चलने का हुक्म दिया और गुमराही के रास्ते से मन्अ फ़रमाया और तू येह भी जानता था कि मैं इस रास्ते से भाग नहीं सकता था ख़ैरो शर में से जो तू ने मेरे लिये मुक़द्दर कर रखा था। लिहाज़ा मैं बिला इख़्तियार उसी पर चल पड़ा क्यूंकि बन्दा तो महकूम होता है। लिहाज़ा ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! मेरी तौबा को अपनी बारगाह में क़बूल फ़रमा और अपने गुनाहों का ए'तिराफ़ करने वाले बन्दे से दरगुज़र फ़रमा।''

हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अम्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं कि ''मैं इस कलाम को सुन कर रोने लगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आलीशान की तिलावत करने लगा :

﴿7﴾ قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ (پ۲۴، الزمر:۵۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम फ़रमाओ ! ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की* ***अल्लाह*** *की रहमत से ना उम्मीद न हो, बेशक* ***अल्लाह*** *सब गुनाह बख़्श देता है, बेशक वोही बख़्शने वाला मेहरबान है।*

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''अचानक मैं ने इन्तिहाई इज़्तिराब की हालत में किसी के गिरने की आवाज़ सुनी। जब सुब्ह के वक़्त मैं उसी दरवाज़े के पास से गुज़रा तो मैं ने देखा कि एक शख़्स का जनाज़ा रखा हुवा है और एक औरत घर के अन्दर और बाहर आ जा रही है और येह कह रही है : ''ऐ मेरे बेटे ! ऐ ग़मों के मारे हुए बेटे ! ऐ क़ुरआन सुन कर शहीद होने वाले बेटे ! मैं ने उस के क़रीब हो कर पूछा : ''ऐ **अल्लाह** की बन्दी ! ज़रा येह तो बता कि मरने वाला कौन है ?'' तो वोह बोली, ''येह मेरा बेटा और मेरी आंखों की ठंडक है। येह खजूर के पत्ते बेचा करता था और उस कमाई में से एक तिहाई मुझे देता, एक तिहाई अपनी ज़रूरत के लिये रखता और एक तिहाई सदक़ा कर देता। आज इस के पास से कोई शख़्स गुज़रा और उस ने क़ुरआने पाक की एक आयते मुबारका तिलावत की जिस को सुनते ही इस की रूह क़फ़से उन्सुरी से परवाज़ कर गई। अब मेरे पास कोई हीला व तदबीर नहीं।''

प्यारे इस्लामी भाइयो ! क्या मुसाफ़िर के लिये अपना ज़ादे राह तय्यार करने का वक़्त नहीं आया ? क्या अभी वोह वक़्त नहीं आया कि नाफ़रमान मरने से पहले तौबा कर ले ? तुम पर अफ़्सोस ! तुम्हारा कितना बुरा ह़ाल है ! कल तुम्हें अहलो इ़याल और मालो दौलत कोई नफ़्अ़ न देंगे तो फिर कब तक इस ग़फ़्लत व नींद का शिकार रहोगे ? तुम्हारी जवानी के दिन गुज़र चुके हैं फिर भी तुम्हारे आ'माल पर तुम्हारा मददगार कोई नहीं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَلْهٰىكُمُ التَّكَاثُرُ0 حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ0

(پ ۳۰، التکاثر:۱-۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम्हें ग़ाफ़िल रखा माल की ज़ियादा त़लबी ने यहां तक कि तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा ।*

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़लील अ़सीरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाया करते थे कि "हम में से हर एक को मौत का यक़ीन है फिर भी हम उस के लिये तय्यार नज़र नहीं आते, हम सब को जन्नत का पुख़्ता यक़ीन है मगर फिर भी अपने आप को इस के लिये अ़मल करता हुवा नहीं पाते और दोज़ख़ का पुख़्ता यक़ीन है लेकिन अपने आप को इस के अ़ज़ाब से डरता हुवा नहीं देखते ।"

प्यारे इस्लामी भाइयो ! किस चीज़ की बिना पर तुम राहे ह़क़ से मुंह मोड़े हुए हो ? किस बात का इन्तिज़ार कर रहे हो ? मौत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जानिब से तमाम ख़ैरो शर के साथ सब से पहले तुम पर वारिद होगी । ऐ भाइयो ! अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अच्छे अन्दाज़ से ह़ाज़िरी की तय्यारी करो । कब तक तुम इसी त़रह़ लह्व लअ़ब में मुब्तला हो कर हंसते रहोगे ? अ़न क़रीब लोग तुम्हारी मौत पर अफ़्सोस करते हुए रो रहे होंगे । तुम पर अफ़्सोस ! कितनी दफ़्अ़ा तुम वा'ज़ो नसीह़त के इजतिमाअ़ात में ह़ाज़िर हुए लेकिन तुम्हारा दिल ग़ाइब रहा । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से बख़्शिश त़लब करते रहे लेकिन पेट ह़राम से भरते रहे । अगर आज फिर इस इजतिमाअ़ से यूंही चले गए और तौबा न की तो कहीं बहुत बड़ा नुक़्सान न उठा लो । याद रखो ! इस वक़्त तौबा का दरवाज़ा खुला हुवा है और तौबा क़बूल करने वाला परवर दगार عَزَّوَجَلَّ पुकार रहा है, "है कोई तौबा करने वाला ?" तो ऐ इस्लामी भाइयो ! जल्दी करो ! तौबा कर लो इस से पहले कि तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जाए और छुपी हुई बातों की पूछ-गछ शुरूअ़ हो जाए । हमारी ग़फ़्लत को कुरआने पाक यूं बयान फ़रमाता है :

اَلْهٰىكُمُ التَّكَاثُرُ0 حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ0

(پ ۳۰، التکاثر:۱-۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम्हें ग़ाफ़िल रखा माल की ज़ियादा त़लबी ने यहां तक कि तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा ।*

ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! मेरी ह़सरत कितनी बड़ी है कि मैं दूसरों को तो तुझे याद करने का दर्स देता हूं लेकिन खुद ग़ाफ़िल हूं । ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! मेरी मुसीबत कितनी शदीद है कि मैं दूसरों को तो ग़फ़्लत की नींद से जगा रहा हूं लेकिन खुद सो रहा हूं । ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! मेरा मुआ़मला कितना अ़जीब है कि मैं दूसरों की रहनुमाई कर रहा हूं जब कि खुद ह़ैरानो परेशान हूं । ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! मुझ पर अ़फ़्वो करम की बरसात बरसा । ऐ मेरे मालिको

मौला عَزَّوَجَلَّ ! जब मैं सालिकीने राहे हक़ को तेरी बारगाह तक पहुंचने का सहीह रास्ता बताऊं और वोह मेरे इस वा'ज़ को सुन कर तेरी बारगाह तक पहुंच जाएं तो क्या तू उन लोगों को क़बूल कर लेगा कि जिन की रहनुमाई की गई है और रहनुमाई करने वाले को धुत्कार देगा ? ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! अगर मेरा येह कलाम ख़ालिस तेरी रिज़ा के लिये नहीं तो इस इजतिमाए पाक में कोई तो ऐसा होगा जो सिर्फ़ तेरी रिज़ा का तालिब होगा लिहाज़ा अपने वज्हे करीम के वासिते मेरी कोताहियों के मुतअ़ल्लिक़ उस की सिफ़ारिश क़बूल फ़रमा और ऐ सब से बढ़ कर रहम फ़रमाने वाले ! हम सब पर अपना ख़ास रहमो करम फ़रमा । (आमीन)

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ وَ سَلَّمَ تَسْلِیْمًا كَثِیْرًا

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे हाजात पूरी करते हैं

दो फ़रामैने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:**

(1)...... *"बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बा'ज़ बन्दों को अपनी रिज़ा के लिये लोगों की हाजात पूरा करने के लिये ख़ास कर लिया है और उस ने अ़हद फ़रमाया है कि उन्हें अ़ज़ाब न देगा, फिर जब क़ियामत का दिन होगा तो उन्हें नूर के मिम्बरों पर बिठाया जाएगा, वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कलाम करते होंगे जब कि लोग हिसाब में होंगे ।"*

(فیض القدیر،حرف الهمزه تحت الحدیث ۲۳۵۰،ج۲،ص ۶۰۵_۶)

(2)...... *"**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ बन्दे हैं कि लोग घबराए हुए अपनी हाजात उन के पास लाते हैं, येह बन्दे क़ियामत के दिन अ़ज़ाबे इलाही عَزَّوَجَلَّ से अम्न में होंगे ।"*

(کنز العمال ،کتاب الزکاۃ ، الحدیث ۱۶۴۶۱،ج۶، ص ۱۹۰)

बयान 22 :

नफ़्ली सदके़ का बयान

सदके़ के फ़ज़ाइल पर आयाते मुबारका :

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

﴿1﴾ اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ○ (پ۲۷،الحدید:۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक सदक़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औ़रतें और वोह जिन्हों ने अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दिया उन के दूने (दुगने) हैं और उन के लिये इ़ज़्ज़त का षवाब है।

एक और मक़ाम पर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿2﴾ اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَآ اَذًى لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ○ (پ۳،البقرۃ:۲۶۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं, फिर दिये पीछे न एह़सान रखें न तक्लीफ़ दें, उन का नेग (इन्आ़म) उन के रब्ब के पास है, और उन्हें न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म।[1]

सदके़ के फ़ज़ाइल पर अह़ादीषे त़य्यिबा :

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस मुसलमान ने किसी बे लिबास मुसलमान को कपड़ा पहनाया अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उसे जन्नती लिबास पहनाएगा और जिस ने किसी भूके मुसलमान को खाना खिलाया अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उसे जन्नती फल खिलाएगा और जिस ने किसी प्यासे मुसलमान को पानी पिलाया अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उसे मोहर लगी हुई पाकीज़ा शराब पिलाएगा।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الزکاۃ، باب فی فضل سقی الماء، الحدیث ۱۶۸۲، ص ۱۳۴۸ "حلل" بدلہ "خضر")

---

[1]......मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللہِ الْبَارِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं :

"**शाने नुज़ूल :** येह आयत ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी व ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تعالٰی عَنْهُمَا के ह़क़ में नाज़िल हुई। ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللہُ تعالٰی عَنْهُ ने ग़ज़्वए तबूक के मौक़अ़ पर लश्करे इस्लाम के लिये एक हज़ार ऊंट मअ़ सामान पेश किये और अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ ने चार हज़ार दिरहम सदक़े के बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर किये और अ़र्ज़ किया कि मेरे पास कुल आठ हज़ार दिरहम थे, निस्फ़ मैं ने अपने और अपने अहलो इ़याल के लिये रख लिये और निस्फ़ राहे ख़ुदा में ह़ाज़िर हैं। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो तुम ने दिये और जो तुम ने रखे अल्लाह तआ़ला दोनों में बरकत फ़रमाए। एह़सान रखना तो येह कि देने के बा'द दूसरों के सामने इज़्हार करें कि हम ने तेरे साथ ऐसे ऐसे सुलूक किये और उस को मुकद्दर करें और तक्लीफ़ देना येह कि उस को आ़र दिलाएं कि तू नादार था, मुफ़्लिस था, मज्बूर था, निकम्मा था, हमने तेरी ख़बरगीरी की या और त़रह़ दबाव दें, येह ममनूअ़ फ़रमाया गया।"

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''सदक़ा और सिलए रह़मी से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उम्र में बरकत देता, बुरी मौत को दफ़्अ़ करता और नापसन्दीदा और क़ाबिले एह़तिराज़ शै को दूर करता है।'' (مسند ابی یعلی الموصلی، مسند انس بن مالک، الحدیث ۴۰۹۰، ج۳، ص۳۹۷)

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मसऊ़द किन्दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : ''जो शख़्स दिन या रात को सदक़ा करता है तो वोह सांप या बिच्छू के कांटने, गिर कर मरने या अचानक मौत से मह़फ़ूज़ रहता है।''

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : ''सुब्ह़ सवेरे सदक़ा किया करो क्यूंकि मुसीबत सदक़े से सबक़त नहीं ले जा सकती।''

(السنن الکبری للبیہقی،کتاب الزکاۃ،باب فضل من اصبح صائما ......الخ، الحدیث ۷۸۳۱ ، ج ۴ ،ص ۳۱۸)

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : ''बन्दा सदक़ा करता है और बला नाज़िल हो रही होती है तो सदक़ा ऊपर बुलन्द होता है, इन दोनों का आमना सामना होता है, न बला सदक़े पर ग़लबा पा सकती है न सदक़ा बला पर। जब तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहे दोनों ज़मीनो आस्मान के दरमियान एक दूसरे से लड़ते रहते हैं।''

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रोबर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ (क़ियामत के दिन) फ़रमाएगा : ''ऐ मेरे बन्दे ! मैं ने तुझ से खाना त़लब किया, तू ने मुझे न खिलाया। मैं ने तुझ से पानी त़लब किया, तू ने मुझे न पिलाया। मैं ने तुझ से कपड़े त़लब किये तू ने मुझे न दिये।'' तो बन्दा अ़र्ज़ करेगा : ''ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ ! वोह कैसे ?'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : ''तेरे क़रीब से फ़ुलां भूका और फ़ुलां नंगा गुज़रा था मगर तू ने अपने माल में से कोई चीज़ उसे न दी, आज मैं तुझ से अपना फ़ज़्ल रोक लूंगा जैसा कि तू ने रोक लिया था।'' (صحیح مسلم ،کتاب البر والصلۃ و الاداب،باب فضل عیادۃ المریض،الحدیث۲۵۶۹،ص۱۱۲۸،مختصرًا)

हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहे तो तुम्हें फ़क़ीर बना दे कि तुम में कोई अमीर न रहे और अगर चाहे तो तुम्हें ग़नी बना दे कि तुम में कोई मोह़ताज न रहे लेकिन वोह तुम्हें एक दूसरे के ज़रीए आज़माता है।''

हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : ''पोशीदा त़ौर पर सदक़ा देना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब को ठन्डा करता है, और नेकियां बुराई के दरवाज़ों से बचाती हैं। सिलए रह़्मी से उ़म्र में इज़ाफ़ा और रिज़्क़ में कुशादगी होती है।''

(المعجم الاوسط، الحدیث۹۴۳، ج۱، ص۲۷۳، بتغیرٍقلیلٍ)

हज़रते सय्यिदुना सालिम बिन जा'द رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि "सदक़ा बुराई के सत्तर दरवाज़ों को बन्द कर देता है और पोशीदा सदक़ा ए'लानिय्या सदक़े से सत्तर गुना अफ़्ज़ल है।"

(المتجر الرابح فی ثواب العمل الصالح، ابواب الصدقات، ثواب صدقة السر، ص۲۸۷)

मन्क़ूल है कि सदक़े के हुरूफ़ चार हैं : ص , د, ق, और ہ । ص से मुराद येह है कि सदक़ा करने वाला दुन्या व आख़िरत की तकालीफ़ से महफ़ूज़ रहता है। د से मुराद येह है कि बरोज़े क़ियामत जब सारी **मख़्लूक़** हैरानो परेशान होगी तो सदक़ा करने वाले की जन्नत की त़रफ़ रहनुमाई की जाएगी। ق से मुराद येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अपना ख़ास **क़ुर्ब** अ़त़ा फ़रमाता है। ہ से मुराद येह है कि उसे आ'माले सालिहा की **हिदायत** से नवाज़ा जाता है ताकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से राज़ी हो जाए।

हज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम मज़्कूर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفُوْر फ़रमाते हैं कि "हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के अख़्लाक़ में से येह था कि वोह अपने पास मौजूद सब से अच्छी, बेहतर और ख़ूब सूरत शै सदक़ा करते, आप से अ़र्ज़ की गई : "अगर आप इस से कम सदक़ा करें तब भी आप عَلَیْہِ السَّلَام को किफ़ायत करेगा।" तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे मुलाहज़ा नहीं फ़रमा रहा कि मैं उस से अपने पास मौजूद घटिया चीज़ के बदले बेहतर त़लब करता हूं।"

हज़रते सय्यिदुना इकरमा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ, हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत करते हैं कि शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हक़ीक़त निशान है : "दो चीज़ें शैत़ान की त़रफ़ से हैं और दो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से।" फिर आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

﴿3﴾ اَلشَّیْطٰنُ یَعِدُکُمُ الْفَقْرَ وَیَاْمُرُکُمْ بِالْفَحْشَآءِ ۚ وَاللّٰہُ یَعِدُکُمْ مَّغْفِرَۃً مِّنْہُ وَفَضْلًا ؕ وَاللّٰہُ وَاسِعٌ عَلِیْمٌ ۝ (پ۳، البقرۃ: ۲۶۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *शैत़ान तुम्हें अन्देशा दिलाता है मोह़ताजी का और हुक्म देता है बे ह़याई का, और अल्लाह तुम से वा'दा फ़रमाता है बख़्शिश और फ़ज़्ल का, और अल्लाह वुस्अ़त वाला, इल्म वाला है।*

(हज़रते सय्यिदुना शोऐब ह़रीफ़ीश رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं कि) शैत़ान तुम्हें सदक़ा व ख़ैरात से मन्अ़ करता और गुनाहों का हुक्म देता है जब कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें फ़रमां बरदारी और सदक़ा करने का हुक्म देता है ताकि इस के ज़रीए़ तुम उस से मग़फ़िरत और उस का फ़ज़्ल पाओ और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सदक़ा करने वाले का षवाब जानता है।

(الدر المنثور، البقرۃ، تحت الآیۃ ۲۶۸، ج ۲، ص۶۵)

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़्फ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ज़मीन पर जो भी सदक़ा निकाला जाता है वोह सत्तर शैत़ानों के जबड़ों से छुड़ा कर दिया जाता है वोह सब बन्दे को सदक़ा देने से रोकते हैं।"

(الزھد لابن المبارک، باب الصدقۃ، الحدیث ۶۴۹، ص۲۲۸)

इम्तिहान में कामयाब होने वाला नौजवान :

हज़रते सय्यिदुना इकरिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि "बनी इस्राईल में एक मालदार शख़्स था जो अपना माल भलाई के कामों में ख़र्च करता था, वोह अपनी बीवी और एक बेटे को छोड़ कर दुन्या से रुख़्सत हो गया तो उस की बीवी ने दिल में कहा : "मैं अपने शोहर के छोड़े हुए माल के लिये इस से अफ़्ज़ल जगह नहीं पाती जहां वोह ख़र्च किया करता था। लिहाज़ा उस ने तमाम माल सदक़ा कर दिया सिवाए दो सो दिरहमों के जो उस ने अपने बेटे के लिये जम्अ़ कर रखे थे। जब बच्चा बड़ा हुवा तो उस ने पूछा : "ऐ मेरी मां ! मेरा बाप कौन था ?" उस ने जवाब दिया : "तेरा बाप बनी इस्राईल के मुअ़ज़्ज़िनीन में से था।" बेटे ने फिर पूछा : "क्या उस ने कोई माल छोड़ा है ?" मां ने जवाब दिया : क्यूं नहीं, लेकिन वोह हमेशा भलाई के रास्ते में ख़र्च करता था तो मैं ने भी इसी रास्ते में ख़र्च कर डाला।" बेटे ने पूछा : "आप ने मेरे हिस्से का सारा माल क्यूं सदक़ा कर दिया और इस में से कुछ न बचाया ? उस की मा ने कहा : "तुम्हारे हिस्से के दोसो दिरहम बाक़ी हैं।" तो लड़के ने अ़र्ज़ की : "लाइयें, मेरा माल मुझे दें ताकि इस के ज़रीए मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल तलाश करूं।" चुनान्चे, वोह अपनी मां से दिरहम ले कर घर से निकल खड़ा हुवा, चलते चलते एक बरहना मुर्दे के पास से गुज़रा जो ज़मीन पर पड़ा हुवा था। उस ने सोचा कि माल ख़र्च करने की इस से अफ़्ज़ल जगह कोई नहीं। उस के लिये एक सो अस्सी (180) दिरहम का कफ़न ख़रीद कर उस के कफ़न दफ़न का एहतिमाम किया और क़ब्र पर मिट्टी डाली और बक़िया बीस दिरहम ले कर रवाना हो गया। रास्ते में एक शख़्स से मुलाक़ात हुई, उस ने पूछा : "कहां का इरादा है ?' लड़के ने जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल तलाश करने निकला हूं।" उस ने कहा : "अगर मैं ऐसी चीज़ की त़रफ़ तेरी रहनुमाई करूं जिस से तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल पाए तो उस में से निस्फ़ मेरा होगा।" लड़का रिज़ा मन्द हो गया। तो उस शख़्स ने कहा : "उस शहर की त़रफ़ चले जाओ, वहां तुम एक औ़रत को पाओगे जिस के पास एक बिल्ली होगी, वोह उसे फ़रोख़्त कर रही होगी, तुम उस से बीस दिरहम में ख़रीद कर ज़ब्ह कर देना और आग में जला देना। फिर उस की राख जम्अ़ कर के दूसरे शहर की त़रफ़ रवाना हो जाना, वहां के बादशाह की बसारत ज़ाइल हो चुकी है। तुम ब तौ़रे सुर्मा उस की आंखों में राख लगाना उस की बीनाई लौट आएगी, वोह लड़का गया और बिल्ली की राख ले कर जब बादशाह के पास आया तो बादशाह ने कहा : "इस को उस वादी में ले जाओ जिस में सुरमा लगाने वाले हैं, फिर उस को बताना कि अगर उस ने मुझे ठीक कर दिया तो मुंह मांगा इन्आ़म पाएगा और ठीक न कर सका तो मैं उसे क़त्ल कर दूंगा, फिर अगर वोह चाहे तो इलाज के लिये आगे बढ़े और चाहे तो वहीं से लौट आए। जब लड़का वादी में गया तो वहां सुरमा लगाने वालों की लाशें देखीं, फिर भी उस ने कहा। "मैं सुरमा लगाऊंगा। चुनान्चे, इस ने सुरमा लगाया तो बादशाह कहने लगा :"गोया मुझे कुछ कुछ नज़र आ रहा है, फिर दूसरी मरतबा लगाया तो बादशाह ने कहा : "अब मैं कुछ कुछ देख रहा हूं।" फिर जब तीसरी मरतबा सुरमा लगाया तो उस की बीनाई

मुकम्मल तौर पर लौट आई। बादशाह ने कहा : मैं तुझ पर इस से बढ़ कर एहसान नहीं कर सकता कि तेरी शादी अपनी बेटी से कर दूं। फिर बादशाह ने उस की हाजत पूछ कर अपना सब से पसन्दीदा माल उसे दे दिया, वोह लड़का उस के पास कुछ अ़र्सा रहा। फिर उसे अपनी मां की याद सताई तो उस ने बादशाह से जाने की इजाज़त चाही। बादशाह ने कहा : ''ठीक है, अपने साथ अपनी बीवी और माल को भी ले जाओ।'' वापसी में वोह लड़का उसी शख़्स के पास से गुज़रा तो उस ने पूछा : ''क्या मुझे पहचानते हो ?'' लड़के ने नफ़ी में जवाब दिया तो उस ने कहा : ''मैं वोही हूं जिस ने तुझे फ़ुलां फ़ुलां बात बताई थी।'' फिर वोह लड़का सुवारी से उतर आया और जो कुछ इस के पास था दो हिस्सों मे तक़्सीम कर दिया। वोह शख़्स कहने लगा : ''मेरे हिस्से की एक चीज़ अभी बाक़ी है।'' लड़के ने पूछा : ''वोह क्या ?'' तो वोह बोला : ''तेरी बीवी, मैं तुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम देता हूं कि अपना वा'दा पूरा कर।'' उस लड़के ने कहा : ''फिर हम उस की तक़्सीम कैसे करें ?'' उस शख़्स ने कहा : ''इस को आरे से चीर दो।'' लड़के ने हामी भर ली कि मैं ऐसा ही करता हूं।'' जब उस ने आरा अपनी बीवी के सर पर रखा तो वोह शख़्स कहने लगा : ''रूक जाओ बेशक मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरे पास भेजा है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इसी तरह तेरी हिफ़ाज़त फ़रमाए जैसे तू ने उस से किये हुए अ़हद को पूरा किया।'' फिर उस शख़्स ने लड़के का सारा माल उसे वापस कर दिया।

ख़ुदा तरस औ़रत को डूबे हुवे बच्चे कैसे मिले ?

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है कि ''सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बिइज़्ने परवर दगार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : ''बनी इसराईल की एक औ़रत का शोहर घर से बाहर था। उस शख़्स की मां ने अपनी बहु को जुदाई पर उभारा तो उस की बीवी उसे नापसन्द करने लगी, फिर उस की मां ने अपने बेटे की जानिब से एक झूटा त़लाक़ नामा अपनी बहु को लिखा, उस औ़रत के दो बेटे थे। जब वोह ख़त़ उसे मिला तो वोह अपने बच्चों को ले कर वालिदैन के पास चली गई। वहां का ज़ालिम बादशाह मिस्कीनों को खाना खिलाना नापसन्द करता था। एक दिन एक मिस्कीन उस औ़रत के क़रीब से गुज़रा, वोह रोटी पका रही थी। मिस्कीन ने सुवाल किया : ''मुझे कुछ रोटी खिला दो।'' औ़रत ने कहा : ''क्या तुझे मा'लूम नहीं कि बादशाह ने सख़्ती के साथ मसाकीन को खाना खिलाने से मन्अ़ किया हुवा है ?'' उस ने कहा : ''मुझे येह बात मा'लूम है लेकिन अगर तुम मुझे खाना न खिलाओगी तो मैं हलाक हो जाऊंगा।'' येह सुन कर उस औ़रत को तरस आ गया और उस ने दो रोटियां मिस्कीन को दे दी और कहा : ''किसी को पता न चले की मैं ने तुझे खाना दिया है।'' वोह रोटियां ले कर पहरेदारों के पास से गुज़रा। जब उन्हों ने उस की तलाशी ली तो इस से रोटियां बर आमद हुई। उन्हों ने उस से पूछा : 'येह तुझे कहा से मिलीं ?'' उस ने कहा : ''फ़ुलां औ़रत ने दी हैं।'' पहरे दार उस मिस्कीन को उस औ़रत के पास ले आए और पूछा : ''क्या इस मिस्कीन को येह रोटियां तू ने दी हैं ?'' उस औ़रत ने जवाब दिया : ''जी हां।'' उन्हों ने पूछा : ''क्या तू नहीं जानती कि बादशाह

ने सख़्ती के साथ मसाकीन को खाना खिलाने से मन्अ़ कर रखा है ?" उस औ़रत ने कहा : "हां, येह मुझे मा'लूम है।" तो उन्हों ने पूछा : "फिर किस चीज़ ने तुम्हें इस पर उभारा ?" वोह बोली : "मुझे इस पर तरस आ गया और मुझे उम्मीद थी कि येह किसी को न बताएगा।" बहर ह़ाल पहरे दारों ने उस को बादशाह के दरबार में पेश करते हुए बताया : "इस औ़रत ने मिस्कीन को खाना दिया है।" बादशाह ने उस से पूछा : "क्या तू ने ऐसा किया है ?" उस ने "हां" में जवाब दिया। बादशाह ने कहा : "क्या तू नहीं जानती थी कि मैं ने मसाकीन को खाना खिलाने से मन्अ़ कर रखा है ?" उस ने कहा : "जी हां, मुझे मा'लूम था।" बादशाह ने पूछा : "फिर तुम्हें किस चीज़ ने इस पर उभारा ?" औ़रत बोली : 'मुझे इस पर तरस आ गया और मुझे उम्मीद थी कि येह किसी को न बताएगा और मुझे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का ख़ौफ़ हुवा कि कहीं येह हलाक न हो जाए।" फिर बादशाह ने उस के दोनों हाथ काटने का हुक्म दे दिया। चुनान्चे, उस के दोनों हाथ काट दिये गए। वोह अपने बच्चों को ले कर घर की त़रफ़ रवाना हो गई यहां तक कि एक बहती नहर के कनारे पहुंची। उस ने अपने एक बेटे को पानी पिलाने का कहा। जब बच्चा पानी लेने के लिये उतरा तो डूब गया। उस ने दूसरे बेटे को कहा : "ऐ बेटे ! अपने भाई को थामो।" वोह भाई को बचाने के लिये नीचे उतरा लेकिन वोह भी डूब गया। अब वोह बीचारी तन्हा रह गई।

अचनाक उस के पास एक शख़्स आया और कहने लगा : "ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की बन्दी ! तुझे क्या हुवा ? मैं तेरी ह़ालत बहुत बुरी देख रहा हूं।" उस ने जवाब दिया : "ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के बन्दे ! मुझे छोड़ दे, क्यूंकि मेरे साथ जो कुछ हुवा उस ने मुझे तुझ से बे ख़बर कर दिया है।" उस ने इसरार किया : "मुझे अपना ह़ाल तो बताइये।" तो उस औ़रत ने सारा वाक़िआ़ बयान कर दिया और येह भी बताया कि उस के दोनों बच्चे डूब गए हैं। येह सुन कर उस शख़्स ने कहा : "तुम अपने हाथों और बच्चों में से किस की वापसी चाहती हो ?" औ़रत ने कहा : "तू मेरे दोनों बच्चों को ज़िन्दा निकाल दे।' चुनान्चे, उस ने दोनों लड़कों को ज़िन्दा निकाल दिया, फिर उस के हाथ भी लौटा दिये और कहने लगा : "मुझे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की त़रफ़ से तेरी त़रफ़ भेजा गया है, उस ने तुझ पर रह़्म करते हुए मुझे भेजा है। पस उन दो रोटियों के इ़वज़ तेरे हाथ लौटा दिये गए हैं और उस मिस्कीन पर तरस खाने और मुसीबत पर सब्र करने की वजह से तेरे दोनों बेटे लौटा दिये गए हैं, और तुझे येह भी बता दूं कि तेरे शोहर ने तुझे त़लाक़ नहीं दी थी, तू उस के पास लौट जा, वोह अपने घर में ही है और उस की मां का भी इन्तिक़ाल हो चुका है। जब वोह औ़रत अपने शोहर के घर गई तो तमाम मुआ़मला ऐसा ही पाया जैसा कहा गया था।" (عيون الحكايات، الحكاية العشرون بعد المائة، المعروف لا يضيع، ص١٣٨ ملخصًا)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿4﴾ وَمِنۡ قَوۡمِ مُوۡسٰۤى اُمَّةٌ يَّهۡدُوۡنَ بِالۡحَقِّ وَبِهٖ يَعۡدِلُوۡنَ ۝ (پ٩،الاعراف:١٥٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और मूसा की क़ौम से एक गुरोह है कि ह़क़ की राह बताता और उसी से इन्साफ़ करता।*

अहले ह़क़ का बे मिषाल गुरौह :

मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہ تعالٰی फ़रमाते हैं कि "ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के इन्तिक़ाल के बा'द बनी इसराईल ने दीन में बाति़ल चीज़ों की आमेज़िश कर दी तो एक गुरौह उन से जुदा हो गया, इन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ की, कि वोह इन को दीन में बाति़ल चीज़ों की मिलावट करने वालों से दूर कर दे। चुनान्चे, ज़मीन के नीचे एक सूराख़ ज़ाहिर हुवा, उस में चलते हुए उन्हों ने एक कुशादा और वसीअ़ मैदान देखा, तो उन्हों ने वहीं पड़ाव डाल दिया। उन के बेटे और सब नस्लें मुस्तक़िल त़ौर पर वही क़ियाम पज़ीर हो गईं, यहां तक कि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुलक़रनैन एक दिन सैर करते हुए जब वहां पहुंचे, तो उन्हों ने देखा कि यहां लोगों की उ़म्रें दराज़ हैं, कोई फ़क़ीर नहीं, क़ब्रें घर के दरवाज़ों के क़रीब और इबादतगाहें घरों से दूर हैं। घरों पर दरवाज़े भी नहीं हैं, न उन पर कोई ह़ाकिम है, न उन का कोई अमीर है। आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "इन सब बातों का राज़ क्या है ?" तो अ़र्ज़ की गई : "ऐ बादशाह ! हमारी उ़म्रों में बरकत का सबब हमारा एक दूसरे की मदद करना है। हम में से जब कोई मोह़ताज हो जाता है तो हम मिल कर उस की मोह़ताजी दूर करते हैं, इस त़रह़ हम सब अग़निया हैं, और हमारी क़ब्रों के घर के क़रीब होने का सबब येह है कि हम ने अपने उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہ تعالٰی से सुना है कि क़ब्र ज़िन्दों को मौत की याद दिलाती है, और इबादत गाहों के दूर होने का सबब हमें अम्बियाए किराम عَلَیْھِمُ السَّلَام और उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہ تعالٰی ने येह बाताया है कि "इन की त़रफ़ क़दमों की कषरत से नेकियों में इज़ाफ़ा होता है, और हमारे घरों के दरवाज़े इस लिये नहीं कि हम किसी की चोरी नहीं करते, तो हमें दरवाज़ों की ह़ाजत नहीं होती, और हम पर कोई ह़ाकिम या अमीर न होने की वजह येह है कि हम एक दूसरे पर ज़ुल्म नहीं करते, बल्कि हम बाहम अ़दलो इन्साफ़ से काम लेते हैं तो हमें फिर अमीर व ह़ाकिम की ज़रूरत भी नहीं पड़ती।" ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुलक़रनैन ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने तुम्हारी मिष्ल कोई क़ौम नहीं देखी, और अगर मैं ने किसी शहर को वत़न बनाने का इरादा किया, तो तुम्हारे हुस्ने मुआ़शरत और अख़्लाक़े जमीला की वजह से इस शहर को वत़न बनाऊंगा।

दो रोटियां सदक़ा करने की बरकत :

मरवी है कि बनी इसराईल का एक आ़बिद कई साल अपनी झोपड़ी में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करता रहा। एक दिन उस ने झोंपड़ी से निकल कर सामने सह़्न के दरमियान जारी पानी को देखा तो उसे नफ़्स ने झोंपड़ी से उतरने पर उभारा। चुनान्चे, वोह उतरा और पानी पी कर वहीं बैठ गया। अचानक उस के पास से एक ज़ेवर से आरास्ता औ़रत गुज़री, जो एक बस्ती से दूसरी की त़रफ़ जा रही थी। वोह आ़बिद उस के फ़ितने में मुब्तला हो कर ज़िना कर बैठा। फिर उस के क़रीब से एक साइल गुज़रा, आ़बिद को रोज़ाना ग़ैब से दो रोटियां मिलती थी, उस ने वोह रोटियां इस साइल को दे

दीं और खुद भूका रहा। अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने उस ज़माने के नबी عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ़ वह्य फ़रमाई : "उस से कहो कि ज़िना के सबब तुम्हारे सब आ'माल बरबाद हो गए, फिर तेरी सदक़े की दो रोटियों और खुद पर मिस्कीन को तरजीह देने ने तमाम आ'माल को ज़िन्दा कर दिया, पस येह तेरे सदक़े का षवाब है, मैं ने इसे क़बूल कर के तुम्हें तुम्हारी साबिक़ा हालत पर लौटा दिया है।

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب ماجاء فی الطاعات وثوابها، الحدیث ۳۷۹، ج۱، ص۲۹۸، بتغیرٍ)

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ اَجْمَعِيْن

रहम दिल लोगों की बरकत और संग दिल लोगों की नुहूसत

(1).....*अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अली बिन अबी तालिब* كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم *से मरवी है कि शहनशाहे खुश ख़िसाल पैकरे हुस्नो जमाल* صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم *का फ़रमाने आलीशान है : "मेरी उम्मत के रहम दिल लोगों से भलाई तलब करो, इन के क़रीब रहा करो और संग दिल लोगों से भलाई न मांगो क्यूंकि इन पर ला'नत उतरती है। ऐ अली ! अल्लाह* عَزَّ وَجَلَّ *ने भलाई को पैदा फ़रमाया तो उस के अहल (या'नी अफ़राद) को भी पैदा फ़रमाया, फिर भलाई को उन का महबूब कर दिया और इस पर अमल करना इन्हें महबूब बना दिया नीज़ इन्हें इस की तलब में यूं लगा दिया जैसे वोह पानी को क़हत ज़दा ज़मीन की तरफ़ फेर देता है कि उस पानी के ज़रीए वहां वालों को जिला बख़्शे और बेशक जो लोग दुन्या में भलाई वाले होंगे वोही आख़िरत में भी भलाई वाले होंगे।"*

(المستدرك، کتاب الرقاق، باب اشقی الاشقیاء من اجتمع......الخ، الحدیث: ۷۹۷۸، ج۵، ص۴۵۸)

(2)......*दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल* صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم *का फ़रमाने आलीशान है : "मेरी उम्मत के रहम दिल लोगों से अपनी मुरादें मांगो, उन के क़रीब रहा करो क्यूंकि मेरी रहमत उन्हीं में है और संग दिल लोगों से मुरादें न मांगो क्यूंकि वोह मेरी नाराज़ी के मुन्तज़िर हैं।"* (کنزالعمال، کتاب الزکاة، قسم الاقوال، الحدیث: ۱۶۸۰۲، ج۶، ص۲۲۰ "الفضل" "بدله" الحوائج")

बयान 23 :

सदक़ए फ़ित्र के फ़ज़ाइल

ह़म्दे बारी तआ़ला :

सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो इत़ाअ़त गुज़ारों को पूरा पूरा अज्रो षवाब अ़त़ा फ़रमाता है, और रात की तारीकियों को पैदा फ़रमाता है जिन्हें सुब्ह़ की रोशनी ख़त्म कर देती है, उस का इ़ल्म चोरी छुपे की निगाहों और सीनों में पोशीदा बातों को घेरे हुए है। इन्सानों को वोह सिखाता है जो वोह नहीं जानते, उस बात से बुलन्द तर और पाक है कि नफ़्स के ख़यालात और ग़ौरो फ़िक्र के अन्देशे उस का इदराक करें, सब को रिज़्क़ तक़्सीम करता है यहां तक कि बिल में च्यूंटी को, घोंसले में परन्दे के बच्चे को भी नहीं भूलता, वोह उस से बाला तर है कि गर्दिशे ज़माने की वजह से पैदा होने वाले ह़वादिसात उस तक पहुंच सके, और वोह उस चीज़ से पाक है कि इन्तिहाई पोशीदा और ज़ाहिर बातें उस पर मख़्फ़ी रहें, उस के एह़सानात सरों के ताज और सीनों के हार हैं। क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

هُوَ الَّذِیْ یُسَیِّرُكُمْ فِی الْبَرِّ وَالْبَحْرِؕ (پ۱۱، یونس:۲۲) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *वोही है कि तुम्हें ख़ुश्की और तरी में चलाता है।*

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जंगलात में रैत के ज़र्रों और बे आब व गियाह विरान जंगलों में च्यूंटियों की ता'दाद जानता है, वोह ईमान व कुफ़्र की तक़्दीर को जैसे चाहता है जारी फ़रमाता है, अपने इरादे से ग़नी को फ़क़ीर और फ़क़ीर को ग़नी करता है, अपनी मशिय्यत से बोलने वाले को क़ुव्वते गोयाई से मह़रूम करता है सुनने की क़ुव्वत को ज़ाइल करता और अ़त़ा करता है, वोह ऐसा देखने वाला है कि ख़ुश्की में रैंगने वाला छोटा बड़ा कोई भी कीड़ा उस से पोशीदा नहीं, वोह ऐसा सुनने वाला है कि किसी मजबूर की दिल में मांगी हुई दुआ़ भी उस से पोशीदा नहीं, वोह क़ादिरे मुत़लक़ है कि किसी मुआ़विन व मददगार की उसे ह़ाजत नहीं जो उस की मदद करे, वोह जिसे चाहता है बन्दों की तक़्दीर बनाता है, सहूलत व सुऊ़बत के ज़राएअ़ जैसे चाहता है लोगों में तक़्सीम फ़रमाता है, अपनी सल्त़नत के समन्दरों में भी रिज़्क़ पहुंचाता है और अगर न चाहे तो न पहुंचाए, उस ने ह़ुसूले रिज़्क़ की त़रफ़ मो'तदिल बयान और सह़ीह़ वज़ाहत के साथ हमारी रह़नुमाई फ़रमाई, रोज़ो और सब्र के महीने के साथ सारी उम्मतों में हमें ख़ास फ़रमाया, इस महीने की बरकत से गुनहगारों के गुनाहों को इस त़रह़ धो दिया जैसे बारिश के पानी से कपड़े धुल जाते हैं।

तमाम ख़ूबियों का मालिक वोही है जिस ने हमें येह मुबारक महीना पूरा करने की तौफ़ीक़ और ईदुल फ़ित्र की ने'मत अ़त़ा फ़रमाई, मैं उस की बे इन्तिहा ह़म्द करता हूं और उस का शुक्र बजा लाता हूं जिस की मदद पाने वाले बेह़द व बे शुमार हैं, मैं उस पर ऐसा भरोसा करता हूं जैसा ग़ुलाम अपने आक़ा पर करता है, अपने ए'तिक़ाद में मुख़्लिस शख़्स की त़रह़ गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं, वोह यक्ता है उस का कोई शरीक नहीं, और गवाही देता

हूं कि हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उस के ख़ास बन्दे और रसूल हैं। जिन्हों ने अपने मुक़द्दस हाथ की मुबारक उंगलियों से पानी के चश्मे जारी फ़रमा दिये, आप صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आल, अवलाद, सहाबए किराम, अज़्वाजे मुतह्हरात عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और इन की इत्तिबाअ़ करने वाले हर उम्मती पर उस वक़्त तक रह्मते कामिला नाज़िल होती रहे जब बाप बेटे से भाग रहा होगा, और आप صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर ख़ूब सलाम हो जो ज़माने के ख़त्म होने से ख़त्म न हो बल्कि हर नए ज़माने में आप صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर नया सलाम हो।

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हम हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी में एक साअ़ खाना या एक साअ़ जव या एक साअ़ खजूर सदक़ए फ़ित्र निकालते थे।" (جامع الترمذی ،ابواب الزکاۃ ، باب ماجاء فی صدقة الفطر، الحدیث ٦٧٣، ص١٧١٣)

हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन शोऐब رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَيْه अपने बाप से और वोह उन के दादा से रिवायत करते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल ऊ़यूब صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मक्के की शाहराहों पर एक ए'लान करने वाला भेजा (उस ने ए'लान किया) "सुन लो ! बेशक सदक़ए फ़ित्र दो मुद गन्दुम या एक साअ़ खाना हर मुसलमान मर्द व औ़रत, आज़ाद व ग़ुलाम, छोटे बड़े पर वाजिब है।" (المرجع السابق، الحدیث ٦٧٤)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हर मर्द, औ़रत, आज़ाद और ग़ुलाम पर एक साअ़ खजूर या एक साअ़ जव सदक़ए फ़ित्र वाजिब फ़रमाया।

(صحیح البخاری، ابواب صدقة الفطر، باب صدقة الفطر علی الحر والمملوك،الحدیث ١٥١١،ص١١٩)

सदक़ए फ़ित्र नमाज़े ई़द से पहले अदा करना :

हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْهُ हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत करते हैं कि "शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हमें हुक्म फ़रमाते कि ई़दुल फ़ित्र के दिन नमाज़े ई़द से पहले सदक़ए फ़ित्र अदा करें।" और उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ تعَالٰی फ़रमाते हैं कि सदक़ए फ़ित्र नमाज़े ई़द से पहले देना मुस्तह़ब है। (جامع الترمذی،ابواب الزکاۃ،باب ماجاء فی تقدیمها قبل الصلاۃ،الحدیث٦٧٧،ص١٧١٣)

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : "फ़ुक़रा को ऐसे दिनों में सुवाल करने से ग़नी कर दो।"

(سنن الدارقطنی، کتاب زکوٰۃ الفطر،الحدیث ٢١١٤،ج٢،ص١٩٢_البنایة شرح الهدایة، کتاب الزکاۃ،باب صدقة الفطر، فصل فی مقدارالواجب ووقته،ج٣،ص٥٠٤)

ईदुल फ़ित्र के मुस्तहब्बात :

ईदुल फ़ित्र के दिन मुस्तहब है कि बन्दा गुस्ल करे, मिस्वाक करे, अच्छे कपड़े पहने और सदक़ए फ़ित्र अदा करे और फिर कुछ खा कर पैदल ईदगाह का रुख़ करे, सुवार हो कर न जाए, अलबत्ता ! कोई उज़्र हो तो सुवार हो कर जा सकता है, और ईदगाह की त़रफ़ एक रास्ते से जाए और दूसरे से वापस आए, क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मलाइका को भेजता है, वोह रास्तों में बैठ जाते हैं और अपने पास से गुज़रने वाले हर शख़्स का नाम लिखते हैं, इस लिये एक रास्ते से जाना और दूसरे से वापस आना मुस्तहब है।

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ईद के दिन एक रास्ते से जाते और दूसरे से वापस आते थे।

(جامع الترمذی ،ابواب العیدین ،باب ماجاء فی خروج النبیصلّی اللّٰہ علیہ وسلّم......الخ ،الحدیث ۵۴۱، ص ۱۶۹۸)

हज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ अपने वालिद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत करते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ईदुल फ़ित्र के दिन जब तक कुछ खा न लेते (ईदगाह की त़रफ़) न निकलते, और ईदुल अज़्हा के दिन जब तक नमाज़ न पढ़ लेते कुछ न खाते। (المرجع السابق،الحدیث۵۴۲)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ईदुल फ़ित्र के दिन ईदगाह की त़रफ़ निकलने से पहले चन्द खजूरें तनावुल फ़रमाते थे। (المرجع السابق،الحدیث۵۴۳)

हज़रते सय्यिदुना उम्मे अ़तिय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक्म से ईदैन में कुंवारियां, बालिग़ात, पर्दे वालियां और हैज़ वालियां (नमाज़े ईद के लिये) निकलती थीं, और हैज़ वालियां ईदगाह से अलग होतीं और मुसलमानों की दुआ़ में ह़ाज़िर होतीं। उन में से किसी एक ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अगर किसी के पास चादर न हो तो ?" आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उस की बहन अपनी चादर उस को उधार दे दे।" (المرجع السابق،الحدیث ۵۳۹)

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है, फ़रमाती हैं कि अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे ज़माने की औ़रतों की नई नई बातें मुलाह़ज़ा फ़रमाते तो इन को मस्जिद में जाने से मन्अ़ फ़रमा देते, जैसे बनी इसराईल की औ़रतों को मन्अ़ किया गया था। "ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "मैं आज के दौर में ईदैन में औ़रतों के निकलने को नापसन्द जानता हूं।"

(جامع الترمذی ،ابواب العیدین ،باب ماجاء فی خروج النبیصلّی اللّٰہ علیہ وسلّم......الخ ،الحدیث ۵۴۰، ص ۱۶۹۸)

अगर कोई औ़रत (नमाज़े ईद के लिये) निकलने पर ब-ज़िद हो तो उस का शोहर उसे फटे पुराने कपड़ों में निकलने की इजाज़त दे और वोह ज़ीनत भी न करे। अगर वोह इस त़रह़ निकलने से इन्कार करे तो शोहर उसे निकलने से मन्अ़ कर दे।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़रह़त निशान है : "जिस ने ईदैन (या'नी ईदुल फ़ित्र व ईदुल अज़्ह़ा) में शब बेदारी की तो उस का दिल उस दिन न मरेगा जिस दिन लोगों के दिल मर जाएंगे।" (سنن ابن ماجة،ابواب الصیام ،باب فیمن قام لیلتی العید ین،الحدیث ۱۷۸۲، ص۲۵۸۳)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है, शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : "सब से ज़ियादा अ़ज़मत वाली रातें ईदुल अज़्ह़ा और ईदुल फ़ित्र की रातें हैं।"

रह़मत वाली चार रातें :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, बिइज़्ने परवर दगार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "चार रातों में **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ अपने बन्दों पर बहुत ज़ियादा रह़मत नाज़िल फ़रमाता है : रजबुल मुरज्जब की पहली रात, शा'बान की पन्दरहवीं रात, ईदुल फ़ित्र की रात और ईदुल अज़्ह़ा की रात।" (شعب الایمان للبیھقی،باب الصیام فی لیلۃ العید ویومھما ،الحدیث۳۷۱۳،ج۳،ص۳۴۲، بتغیر)

ईद को ईद कहने की वजह :

ईद को इस लिये ईद कहते हैं क्यूंकि इस में ख़ुशी व सुरूर लौट आते हैं। बा'ज़ के नज़्दीक इसे ईद कहने की वजह येह है कि येह शरफ़ व अ़ज़मत वाला दिन है। लिहाज़ा एक अ़क़्ल मन्द इन्सान के लिये ज़रूरी है कि वोह **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की ता'ज़ीम करते हुए, क़िब्ला रू हो कर कषरत से उस का ज़िक्र करे।

ईद में रोज़े मह़शर की याद है :

ईद का दिन यौमे क़ियामत के मुशाबेह है जिस दिन गरज दार कड़क और सूर फूंकने की आवाज़ सुनाई देगी, और त़बलों का बजना गरज दार कड़क की याद दिलाता है और ब्युगल का बजना सूर फूंकने की याद दिलाता है, ईदगाह में लोगों का इजतिमाअ़ मैदाने मह़शर में लोगों के इजतिमाअ़ की याद है कि वोह मुख़्तलिफ़ रंग व नस्ल के होंगे और इन के अह़वाल भी मुख़्तलिफ़ होंगे। कुछ के लिबास सफ़ेद और कुछ के सियाह, कुछ पैदल और कुछ सुवार, कुछ ख़ुश और कुछ

ग़मगीन, कुछ जन्नत की ने'मतों की तरफ़ और कुछ जहन्नम के अ़ज़ाब की तरफ़ पलटेंगे। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़्मतो शराफ़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "लोगों को अपनी क़ब्रों से तीन हि़स्सों में उठाया जाएगा, एक तिहाई सुवारियों पर और एक तिहाई पैदल होंगे और एक तिहाई चेहरों के बल घसीटे जाएंगे।" (فردوس الاخبار للدیلمی،باب الیاء،الحدیث۸۴۹۸،ج۲،ص۵۰۱، بتغیر)

जिस त़रह़ लोग ईदगाह में इमाम का इन्तिज़ार करते हैं, इसी त़रह़ बरोज़े क़ियामत मह़शर के खुले मैदान में ठहर कर उस जज़ा व सज़ा का इन्तिज़ार होगा जिस का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वा'दा फ़रमा रखा है। और ख़ुत़बे में इशारा है कि जब इमाम ख़ुत़बा देता है तो लोग ख़ामोश हो जाते हैं इसी त़रह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ लोगों से हि़साब किताब लेगा और सज़ा सुनाएगा जब कि हम ख़ामोश होंगे। और ईदगाह में लोगों के मुख़्तलिफ़ दर्जे, क़ियामत में लोगों के मुख़्तलिफ़ दर्जों के मुशाबे हैं। कुछ साए में बैठते हैं और कुछ धूप में इसी त़रह़ बरोज़े क़ियामत कुछ पसीने में शराबोर होंगे और कुछ अ़र्श के साए में मज़े लूट रहे होंगे। इसी त़रह़ लोगों का ईदगाह से लौटना भी क़ियामत की याद दिलाता है कि बा'ज की इ़बादत क़बूल हो जाती है जब कि बा'ज़ की मर्दूद।

ह़ज़रते सय्यिदुना वहब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के बारे में मरवी है कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ईद के दिन निकले तो अपने सर पर मिट्टी और राख डालने लगे। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से अ़र्ज़ की गई : "आज तो ख़ुशी और ज़ीनत का दिन है।" तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जवाबन इरशाद फ़रमाया : "येह उस शख़्स के लिये सुरूर व ज़ीनत का दिन है जिस के रोज़े मक़्बूल हो गए।"

आंखों का कुफ़्ले मदीना :[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन अबी सनान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان ईद के दिन घर से बाहर तशरीफ़ ले गए जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه वापस आए तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़ौजा कहने लगी : "आज आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने कितनी ह़सीन औ़रतों को देखा ?" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं यहां से जाने के बा'द वापस आने तक अपने पाउं के अंगूठे पर ही देखता रहा।"

सलफ़े सालिह़ीन नज़र के फ़ितने से बचने के लिये और बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़ से अपनी निगाहें बहुत ज़ियादा झुका कर रखते। बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : "नज़र के फ़ितनों से बचो ! क्यूंकि येह देखी जाने वाली सूरत को दिल में नक़्श कर देती है। और बेशक दुन्या के उ़यूब ज़ाहिर हैं, कितने ही आज़माइश के दरवाज़े खोल दिये गए और आंख के धोके जैसा कोई धोका नहीं।"

1 ......"**कुफ़्ले मदीना**" दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में बोली जाने वाली एक इस्तिलाह़ है। किसी भी उ़ज़्व को गुनाह और फ़ुज़ुलिय्यात से बचाने को "**कुफ़्ले मदीना**" लगाना कहते हैं।

हज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ैषम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ नज़र की हिफ़ाज़त के लिये अपनी आंखों को बहुत ज़ियादा झुकाए रखते यहां तक कि लोग आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को नाबीना गुमान करते। हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के घर बीस साल तक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का जाना रहा। जब भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ दरवाज़ा खट-खटाते तो लौंडी बाहर निकल कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इस हाल में देखती कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपनी नज़र को झुकाए हुए होते तो वोह अपने आक़ा से कहती, आप का नाबीना दोस्त आया है। हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ लौंडी की इस बात से मुस्कुरा दिया करते। और जब हज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ैषम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को देखते तो फ़रमाते : "وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِیْنَ ۝ (پ۱۷، الحج:۳٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ महबूब ! ख़ुशी सुना दो उन तवाज़ोअ़ वालों को।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आप को देखते तो आप से ख़ुश होते और आप को बहुत पसन्द फ़रमाते।"

(احیاء علوم الدین، کتاب اسرار الصلاۃ، الباب الثالث، حکایات واخبار فی صلاۃ الخاشعین، ج۱، ص۲۳۲)

बा'ज़ सालिहीन رَحِمَهُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن फ़रमाते हैं : "ऐ लोगो ! कश्ती ग़र्क़ हो रही है फिर भी हम सो रहे हैं न जाने हमारे साथ कैसा मुआ़मला किया जाएगा ? जब कि हमारे अफ़्आ़ल क़बीह़ और बातें बुरी हैं, हम सख़्त वबाल और अ़ज़ाब में घिरे हुए हैं और हर वक़्त ह़राम को देखते हैं।

हज़रते सय्यिदुना शैख़ जमालुद्दीन अबुल फ़रज़ बिन जौज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं कि "नज़र की सज़ा के बारे में हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि एक शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा, उस से ख़ून टपक रहा था। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : "तुझे क्या हुवा ?" उस ने अ़र्ज़ की : "मेरे क़रीब से एक औ़रत गुज़री, मैं ने उस की त़रफ़ देखा, मेरी नज़र मुसलसल उस का पीछा कर रही थी कि मैं एक दीवार से टकरा गया और मेरे साथ वोह हुवा जो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा फ़रमा रहे हैं।" रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब किसी बन्दे से भलाई का इरादा फ़रमाता है तो दुन्या में ही उसे सज़ा दे देता है।"

(جامع الترمذی ،ابواب الزھد،باب ماجاء فی الصبر علی البلاء،الحدیث ۲۳۹٦، ص۱۸۹۲)

माहे रमज़ान के आग़ाज़ में बहुत से लोगों ने नमाज़े तरावीह़ पढ़नी शुरूअ़ कर दी और तलबे षवाब के लिय मसाजिद में चराग़ जलाए, वसीअ़ व अ़रीज़ मक़ामात को इबादत से भर दिया और अपनी नेकियों के ज़रीए हर बुराई का ख़ातिमा कर दिया। लेकिन इस मुक़द्दस महीने के इख़्तिताम पर जब बुराई का ह़म्ला करने वाले ने उन पर ह़म्ला किया तो वोह मग़लूब हो गए। शिकार करने वाले ने इन को बांध दिया तो वोह क़ैदी हो गए। हलाकत ने अपने समन्दर में इन को ग़ौता ज़न किया तो वोह डूब गए। जब वोह इन्तिक़ाल कर गए तो उन्हें माल ने कुछ नफ़्अ़ दिया न उम्मीदों ने।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह रफ़्ता रफ़्ता हम से कूच कर गए, इन की दुन्या में बनाई हुई सब इमारतें टूट गईं, इन पर मौत की चक्की घूमी और इन के चेहरों को मिट्टी तले दबा कर ख़त्म कर दिया गया, और आफ़ात ने बिग़ैर किसी बदले के इन का सब कुछ ले लिया और ज़िल्लत व रुस्वाई इन का मुक़द्दर बन गई, मौत ने इन की उम्मीदों को ख़ाक में मिला दिया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इन के रोज़ों और सदक़ा व ख़ैरात का सिलसिला ख़त्म हो गया और आन्धियों ने इन की क़ब्रों को मिसमार कर के बराबर कर दिया और क़ब्रों में इन के जिस्म बिखर गए। अ़न क़रीब तेरा और तेरे अहलो इयाल का भी येही ह़ाल होगा, पस ऐ इब्रत न पकड़ने वाले ! जाग जा और अपनी हिफ़ाज़त की कोशिश कर। कितनी बार मौत की हौलनाकी को तू सुन और देख चुका है। ऐ लम्बी उम्मीद वाले ! ऐ नर्मी से मह़रूम और फ़ुज़ूल कामों में मश्ग़ूल शख़्स ! ऐ मौत के सबब फ़ना होने वाले और ऐ आ़क़िबत को बरबाद कर देने वाले कामों में मश्ग़ूल शख़्स ! अब भी तौबा की तय्यारी न करेगा तो फिर कब करेगा ? बेशक मौत का क़ासिद "**बुढ़ापा**" आ चुका है। क्या तू ने अकषर उ़म्र टाल मटोल में नहीं गुज़ारी ? ऐ कषरत से गुनाहों में मुस्तग़रक़ रहने वाले ! क्या तू तक़्दीर के ह़म्लों का शिकार नहीं होगा ? कल बरोज़े क़ियामत सब का मुआ़मला इकठ्ठा हो जाएगा और अ़न क़रीब फ़ैसला कर दिया जाएगा। ऐ कम ज़ादेराह वाले ! मौत का ह़ुदी ख़्वां ए'लान कर चुका है, पस तू ज़ाएअ़ और बेकार होने के लिये तय्यार हो जा।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू या'क़ूब नहर जोरी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि "मैं ने दौराने त़वाफ़ एक शख़्स को देखा, वोह येही दुआ़ किये जा रहा था : "मैं तुझ से तेरी पनाह मांगता हूं।" मैं ने उस से पुछा : "येह कौन सी दुआ़ है ?" वोह बोला : "मैं पचास साल से मक्का शरीफ़ में रह रहा हूं। एकदिन मैं ने एक ख़ूब सूरत शख़्स को देखा तो वोह मुझे पसन्द आ गया। अचानक मुझे एक थप्पड़ पड़ा, मेरी आंखों से आंसू बहने लगे, मैं ने आह भरी तो एक दूसरा थप्पड़ आ लगा, फिर किसी ने कहा : "अगर तू ज़ियादा करता तो हम भी ज़ियादा करते।"

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि "मैं अपने उस्ताज़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र दक़्क़ाक़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق की मइय्यत में था कि एक अम्रद गुज़रा, मैं ने उस की त़रफ़ देखा तो मेरे उस्ताज़े मोह़तरम ने मुझे ऐसा करते हुए देख लिया। तो इन्हों ने फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! तुझे इस की सज़ा ज़रूर मिलेगी, अगर्चे कुछ अ़र्से बा'द ही हो।" चुनान्चे, मैं बीस साल तक इस सज़ा का इन्तिज़ार करता रहा। एक रात इसी परेशानी में सोया। जब सुब्ह़ हुई तो मुझे सारा क़ुरआन भुला दिया गया था, और कोई कहने वाला कह रहा था : "येह उस एक नज़र की सज़ा है।" (غذاء الالباب فی شرح منظومة الآداب، مطلب فی فوائد غض البصر، المقام الثانی،ج۱، ص۱۳۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र कत्तानी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि "मैं ने एक दोस्त को ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" तो उस ने जवाब दिया : "मेरे गुनाह मेरे सामने ला कर पूछा गया : "तू ने येह गुनाह

किया था ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''जी हां।'' फिर पूछा गया : ''क्या तू ने फ़ुलां फ़ुलां गुनाह भी किया था ?'' मैं ने फिर इक़रार कर लिया। लेकिन जब तीसरी बार पूछा गया कि क्या तू ने फ़ुलां गुनाह भी किया था ? तो मुझे उस का इक़रार करने से बहुत शर्मसारी हुई।'' आप رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं, मैं ने अपने दोस्त से पूछा : ''वोह गुनाह क्या था ?'' बोला : ''मेरे क़रीब से एक ख़ूब सूरत लड़का गुज़रा तो मैं ने उस की त़रफ़ देख लिया, जिस के सबब मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सामने सत्तर साल खड़ा रखा गया और इस गुनाह से शर्मिन्दगी की वजह से पसीना बहता रहा, फिर उस ने अपने फ़ज़्ल से मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दिया।''

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह ज़र्राद عليهِ رَحْمَةُ اللهِ الجَوَاد को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : ''مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ ؟'' या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?'' तो उन्हों ने फ़रमाया : ''मैं ने तमाम गुनाहों का इक़रार किया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें बख़्श दिया सिवाए एक गुनाह के कि मुझे उस का इक़रार करने से ह़या आई और मुझे पसीने में खड़ा कर दिया गया यहां तक कि मेरे चेहरे का गोश्त झड़ गया।'' उन से अ़र्ज़ की गई : ''वोह गुनाह क्या था ?'' तो उन्हों ने फ़रमाया : ''मैं ने एक ख़ूब सूरत शख़्स को देखा था।''

ऐ इब्ने आदम ! तेरी आंखें ह़राम में आज़ाद हैं और तेरी ज़बान गुनाहों में त़वील हो रही है, तेरा जिस्म दुन्या की दौलत कमाने में थकावट क़बूल कर रहा है। बहुत सी बद निगाहियां ऐसी हैं कि जिन की वजह से क़दम फिसल जाते हैं। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! जान लो ! ईद का दिन सआ़दत का दिन है। इस में कुछ लोग नेक बख़्त होते हैं और कुछ बद बख़्त। उस बन्दे को मुबारक बाद हो जिस के आ'माल उस दिन क़बूल कर लिये गए, और उस के लिये हलाकत है जिस के आ'माल रद्द कर दिये गए। येह तो ऐसा दिन है जिस में मक़्बूल को मुबारक बाद दी जाती है और मर्दूद को तसल्ली। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाए ! बुरे आ'माल से इजतिनाब करो और रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ वाले कामों की कोशिश करो, अ़न क़रीब वोह तुम्हें बुरे आ'माल से नजात अ़त़ा फ़रमा देगा।

इन्आ़मो इक्राम की रात :

ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تعالٰی عَلَيْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : ''ईदुल फ़ित्र की रात का नाम ''**लैलतुल जाइज़ह**'' (या'नी इन्आ़म व बख़्शिश की रात) रखा गया है। जब सुब्ह़ होती है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मलाइका को हर शहर में भेजता है, वोह ज़मीन पर उतरते हैं और गली कूचों पर खड़े हो कर ऐसी आवाज़ से ए'लान करते हैं जो जिन्नो इन्स के इलावा तमाम मख़्लूक़ सुनती है, वोह कहते हैं : ''ऐ उम्मते मुह़म्मदिय्या علٰی صاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلام अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हो जाओ जो कबीरा गुनाहों को भी बख़्श देता है।'' जब लोग ईदगाह की त़रफ़ निकलते हैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : ''ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! मज़दूर जब अपना काम पूरा कर ले तो उस की जज़ा क्या है ?'' मलाइका अ़र्ज़ करते हैं : ''ऐ हमारे मा'बूद और ऐ हमारे रब्ब عَزَّوَجَلَّ उस

की जज़ा येह है कि उस को पूरा पूरा अज्र दिया जाए।" चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "ऐ मेरे मलाइका ! गवाह हो जाओ कि मैं ने उन्हें माहे रमज़ान के रोज़ों और नमाज़ों का षवाब येह दिया कि मैं उन से राज़ी हो गया और उन्हें बख़्श दिया।" फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : "मुझ से सुवाल करो, मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! जब तक तुम मुझ से डरते रहोगे मैं ज़रूर तुम्हारे गुनाहों पर पर्दा डाले रखूंगा। मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! आज के इस इजतिमाअ़ में मुझ से दुन्या व आख़िरत की जो भी चीज़ मांगोंगे मैं तुम्हें अ़ता कर दूंगा। मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं ज़रूर तुम्हारे उ़यूब की पर्दा पोशी करूंगा, मैं तुम्हें मुजरिमों के सामने ज़लीलो रुस्वा न करूंगा। पस अब मग़फ़िरत याफ़्ता लौट जाओ, तुम ने मुझे राज़ी कर दिया और मैं तुम से राज़ी हो गया।" फ़िरिश्ते ख़ुश होते हैं, और उस इन्आ़म की मुबारक बाद देते हैं जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस उम्मत को रोज़ों से फ़ारिग़ होने पर अ़ता फ़रमाता है।"

(شعب الایمان للبیهقی،باب فی الصیام ،فصل فی لیلة القدر، الحدیث٣٦٩٥، ج٣، ص٣٣٦، بتقدُّمٍ وتأخُّرٍ)

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! कितना अच्छा ह़ाल है उस शख़्स का जिसे क़बूलिय्यत की पोशाक औढ़ा दी गई, और उस ने अपना मक़्सद पा लिया। और कितना बद बख़्त है वोह शख़्स जिस के गुज़श्ता रोज़े क़बूल न किये गए उस की गुज़री हुई थकावट में उसे सिवाए दर्द की शिद्दत के कोई ह़िस्सा न मिला। तअ़ज्जुब है उस पर जिस को धुतकार दिया गया फिर भी वोह कैसे ई़द पर ख़ुशियां मनाता है ?

ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि "एक दफ़्आ़ तीन नेक आ़लिम ई़द के दिन निकले, उन में से एक ने यू दुआ़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू ने अपनी नाज़िल कर्दा किताब में हमें हुक्म दिया कि हम इस दिन ग़ुलाम आज़ाद करें, हम तेरे ग़ुलाम हैं लिहाज़ा तू हमारी गर्दनों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमा दे।" फिर दूसरे ने यूं दुआ़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू ने क़ुरआने पाक में हमें हुक्म दिया कि हम मसाकीन को ख़ाली हाथ न लौटाएं, हम तेरे मिस्कीन बन्दे हैं लिहाज़ा तू हमें ख़ाली हाथ न लौटा।" इस के बा'द तीसरे ने अ़र्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू ने अपनी नाज़िल कर्दा मुक़द्दस किताब में हुक्म दिया है कि हम ज़ालिमों से दरगुज़र करें, हम तेरे बन्दे हैं, हम ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया है लिहाज़ा तू हमारी मग़फ़िरत फ़रमा और हम पर रह़्म फ़रमा, बेशक तू सब से बढ़ कर रह़्म फ़रमाने वाला है।

وَصَلَّى اللّٰه عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ اَجْمَعِيْن

बयान 24 : मे'राजुन्नबी صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

हृम्दे बारी तआला :

सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने अपने बरगुज़ीदा बन्दों को अपनी महब्बत के लिये इख़्तियार फ़रमाया और उन को अपना महबूब बनाया जो उस की बारगाहे कुर्ब में हाज़िर होने की सलाहिय्यत रखते थे, उन्हें ख़ालिस शराबे तहूर पिलाई, और फिर अपनी मख़्लूक़ में से मुन्तख़ब हस्तियों में से बा'ज़ को अम्बिया, बा'ज़ को अस्फ़िया, बा'ज़ को औलिया और बा'ज़ को ख़ुलफ़ा का मक़ाम अ़ता फ़रमाया। फिर इन सब में अपनी बारगाहे नाज़ के लिये जिस हस्ती का इन्तिख़ाब फ़रमाया वोह हमारे आक़ा व मौला, हबीबे ख़ुदा, हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हैं। आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को पाक पुश्तों में रखने से पहले ही सारी मख़्लूक़ पर मुमताज़ फ़रमा कर आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर अपने इन्आमात की बरसात कर दी, और अपने करम से मक़ामे फ़ख़्र अ़ता फ़रमाया और अपनी ताईद व नुसरत फ़रमाई। हज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से दुआ की तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلَیْہِ السَّلَام की दुआ क़बूल फ़रमा ली।

हज़रते सय्यिदुना नूह नजिय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से दुआ मांगी तो समन्दर के तूफ़ान से नजात पाई, जब की आप عَلَیْہِ السَّلَام की बाक़ी क़ौम ग़र्क़ हो गई। हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ही की बरकत से नारे नमरूद से आफ़िय्यत अ़ता फ़रमा कर न सिर्फ़ क़ैदो बन्द की सऊबतों से नजात अ़ता की गई बल्कि आग के शो'लों को भी ठन्डा कर दिया गया। आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ही के वसीले से हज़रते सय्यिदुना इस्माईल ज़बीहुल्लाह عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के फ़िदये में जानवर की क़ुरबानी दी गई और आप عَلَیْہِ السَّلَام को ज़ब्ह होने से बचा लिया गया। हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का लुत्फ़ो करम तलब किया तो उन पर भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेहरबानी फ़रमाई। जब हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام महबूबे ख़ुदा, अहमदे मुज्तबा, मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बिशारत देते हुए तशरीफ़ लाए और आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बरकत तलब की तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें अपने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का उम्मती होने का शरफ़ अ़ता फ़रमा दिया।

आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम काइनात के सरदार और जिन्नो इन्स के इमाम हैं, जिन्हें (रात के थोड़े हिस्से में) मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक, फिर वहां से "सिद्रतुल मुन्तहा" तक और वहां से क़ाबा क़ौसैन तक सैर कराई गई। आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुवारी बुराक़ थी, हज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام लगाम पकड़े हुए थे और तमाम नूरी मख़्लूक़ आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की राह देख रही थी। जब आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुवारी मस्जिदे अक़्सा पहुंची तो अम्बियाए किराम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को सफ़ों में खड़े पाया।

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इमामत फ़रमाई तो हर नबी व रसूल عَلَیْہِمُ السَّلَام ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये दुआ़ की। मे'राज कराने वाला रब्ब عَزَّ وَجَلَّ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सफ़रे मे'राज के मुतअ़ल्लिक़ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿۱﴾ سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰی بِعَبْدِهٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَی الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا (پ۱۵،بنی اسرائیل:۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *पाकी है उसे जो अपने बन्दे को रातों रात ले गया मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा तक।* (1)

येह आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये इ़ज़्ज़त व फ़ख़्र की बात है। फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ातिर आस्मान में ज़ीना लगाया गया, जिस पर चढ़े तो बुलन्द होते गए, और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सब से मुअ़ज़्ज़म, मुअ़ज़्ज़ज़, मोह़तरम, मुकर्रम और मुक़द्दम हो गए। ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हम रिकाब थे, उन्हों ने लम्ह़ा भर भी आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का दामन न छोड़ा। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व तौक़ीर की ख़ातिर आस्मान के दरवाज़े खोल दिये गए, पूछा गया : "ऐ जिब्रीले अमीन (عَلَیْہِ السَّلَام) येह आप के साथ कौन हैं? तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "येह ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हैं।" फिर अ़र्ज़ की गई : "क्या आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को बुलाया गया है?" इरशाद फ़रमाया : "जी हां।" तो सारे फ़िरिश्ते कहने लगे : "ख़ुश आमदीद! आने वाली हस्ती कितनी मुबारक है!" फिर तमाम मलाइका ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम की। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने तमाम अम्बियाए किराम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को एह़तिरामन सलाम पेश किया, उन सब ने भी मरह़बा कहा और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबे जूदो सख़ा से बरकतें लूटने लगे।

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आगे बढ़ते गए यहां तक कि मक़ामात की हुदूद व कुयूद से भी गुज़र गए, न तो किसी जगह क़ियाम किया और न ही पड़ाव ह़त्ता कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़लमों के लिखने की आवाज़ और फ़िरिश्तों की तस्बीह़ की आवाज़ समाअ़त फ़रमाई, जन्नत व दोज़ख़ को मुलाह़ज़ा फ़रमाया और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने नेकोकारों और बदकारों के लिये जो जज़ा व सज़ा तय्यार कर रखी है उस का भी मुशाहदा किया। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दमैने शरीफ़ैन की बरकत से जहन्नम की आग ठन्डी पड़ गई, ख़ाज़िने जन्नत रिज़्वान عَلَیْہِ السَّلَام ने जन्नत के मह़ल्लात और बाला ख़ानों को आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुश्बू से मुअ़त्तर कर लिया फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बैतुल मा'मूर की त़रफ़ बुलन्द हुए, ज़िया व नूर को मुलाह़ज़ा फ़रमाया और

---

(1)....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "जिस का फ़ासिला चालीस मन्ज़िल या'नी सवा महीने से ज़ियादा की राह है। **शाने नुज़ूल :** जब सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم शबे मे'राज दर्जाते आ़लिया व मरातिबे रफ़ीआ़ पर फ़ाइज़ हुए तो रब्ब عَزَّ وَجَلَّ ने ख़ित़ाब फ़रमाया : "ऐ मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) येह फ़ज़ीलत व शरफ़ मैं ने तुम्हें क्यूं अ़त़ा फ़रमाया? ह़ुज़ूर ने अ़र्ज़ किया : इस लिये कि तू ने मुझे अ़ब्दिय्यत के साथ अपनी त़रफ़ मन्सूब फ़रमाया। इस पर येह आयते मुबारका नाज़िल हुई।"

येह भी देखा कि हर रोज़ सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते इस में दाख़िल होते हैं (जो एक बार दाख़िल हो जाए) दोबारा उस दिन तक उस की बारी नहीं आएगी : "يَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ (پ۱۹، الفرقان:۲۷)
तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन ज़ालिम अपना हाथ चबा चबा लेगा।"

हज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ "सिद्रतुल मुन्तहा" पर पहुंचे तो पीछे हट गए। हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ जिब्रील ! क्या यहां पर दोस्त दोस्त को छोड़ देगा ?" जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : "ऐ तमाम रसूलों के सरदार और रब्बुल आ़लमीन के ह़बीब (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) आप तो पोशीदा राज़ों और लिखे हुए इ़ल्म को जानते हैं कि इस मक़ाम पर हुदूद ख़त्म हो जाती और उ़लूम मिट जाते हैं। मेरा येही मक़ाम है और हम में से हर एक का मख़्सूस मक़ाम है। लिहाज़ा आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आगे तशरीफ़ ले चलिये और अपने इ़ज़्ज़त व वक़ार के अन्वार में मज़ीद इज़ाफ़ा फ़रमाइये।"

चुनान्चे, नबिय्ये मुख़्तार, रसूलों के सालार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अन्वार के हिजाबात से तजावुज़ करते गए ह़त्ता कि वहां पहुंच गए जहां कोई मक़ाम नहीं, जुदाई ख़त्म हो गई और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हुस्ने अदब के रास्ते पर चलते हुए, उस ज़ाते ह़क़ के जमाल का मुशाहदा करने लगे जिस की पहचान, वह़्दानिय्यत और वस्फ़, यक्ताई है। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हाज़िर हो कर अन्वार व तजल्लियात का हुल्ला सजा लिया पस विसाल की रस्सी मिल गई और दूरी ख़त्म हो गई। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने गुफ़्तगू की इब्तिदा सलामती भेजने से की और लुत्फ़ फ़रमाते हुए इन्आ़मो इकराम अ़ता फ़रमाए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने मह़बूब से इरशाद फ़रमाता है :

﴿2﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًاۙ۝ وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا۝ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيْرًا۝
(پ۲۲، الاحزاب:۴۵تا۴۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) बेशक हम ने तुम्हें भेजा हाज़िर नाज़िर और खुश ख़बरी देता और डर सुनाता। और अल्लाह की तरफ़ उस के हुक्म से बुलाता और चमका देने वाला आफ़्ताब और ईमान वालों को खुश ख़बरी दो कि उन के लिये अल्लाह का बड़ा फ़ज़्ल है।*

या'नी आप (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) की नबुव्वत का चराग़ क़ियामत तक आने वाले लोगों पर इसी त़रह़ रोशन रहेगा। न उस की रोशनी कम होगी और न ही वोह बुझेगा, और येह कि आप (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) शाहिद या'नी गवाही देने वाले हैं और मैं वोह हूं जिस की आप (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) गवाही देंगे।" क्यूंकि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सब से आ'ला ज़ात का मुशाहदा करने में कामयाब हो गए हैं। नीज़ शाहिद को अपनी शहादत में किसी क़िस्म का तरद्दुद व तज़बज़ुब नहीं होना चाहिये। लिहाज़ा मे'राज की रात जो कुछ आप (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ने देखा उस की गवाही दें ताकि लोग मेरी वह़्दानिय्यत का इ़रफ़ान ह़ासिल करें और मेरी बन्दगी का ए'तिराफ़ करें। येही वजह है कि मैं ने आप (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) से कलाम किया और आप (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم)

को फ़ज़ीलत अ़त़ा फ़रमाई कि मैं ने आप (صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) को आप (صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) के इश्तियाक़ की वजह से जमाल का मुशाहदा करवाया और आप (صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) को अपने ख़ित़ाब की लज़्ज़त से बहरा मन्द किया। अब येह ख़ित़ाब आप (صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) की कुव्वते समाअ़त को दूसरे तमाम ख़ित़ाबात से मह़फ़ूज़ कर देगा। मैं ने आप (صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) को अपने कुर्ब की शराबे त़हूर का जाम पिला दिया है। लिहाज़ा अब आप (صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) वापस जा कर उन लोगों को बता दें जो मुझ से ग़ाफ़िल और मेरे विसाल से दूर हैं।

इमाम अबू जा'फ़र मुह़म्मद बिन जरीर त़बरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی **तफ़्सीरे त़बरी** में एक रिवायत नक़्ल करते हैं कि "जब हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्र मुबारक इक्यावन (51) बरस नव माह हुई तो आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को चाहे ज़मज़म और मक़ामे इब्राहीम के माबैन मक़ाम से ले कर बैतुल मुक़द्दस तक रात के वक़्त सैर कराई गई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का सीनए मुबारका चाक किया गया और क़ल्बे अत़हर निकाल कर बीमारियों से शिफ़ा देने वाले आबे ज़मज़म से धोया गया, और ईमान व ह़िक्मत से भरने के बा'द वापस अपनी जगह रख दिया गया, इस के बा'द आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को सब से ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाले मक़ाम की सैर कराई गई।

रात के वक़्त सैर कराने में जो राज़ है वोह अक़्लों से मख़्फ़ी और मख़्लूक़े ख़ुदा की समझ से बाला तर है और इस की वजह येह है कि जब आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह मुबारक फ़रमान नाज़िल हुवा :

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَرۡسَلۡنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيۡرًا ۙ‏ (پ۲۲،الاحزاب:۴۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) बेशक हम ने तुम्हें भेजा ह़ाज़िर नाज़िर और ख़ुश ख़बरी देता और डर सुनाता।*

तो शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़र्ज़ की : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू ने मेरे लिये तो येह क़ानून बनाया है कि गवाह बिग़ैर देखे गवाही नहीं दे सकता। तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की जानिब वह़्य फ़रमाई कि हम आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को रात के वक़्त अपनी बारगाह की सैर कराएंगे, ताकि आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मलकूते आ'ला का मुशाहदा कर लें और लोगों को मुशाहदा की हुई चीज़ों की ख़बर दें जिन्हें आंखें जन्नत या दोज़ख़ में देखेंगी।"

मन्क़ूल है कि जब आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आस्मान की जानिब बुलन्द हुए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी ज़ात का मुशाहदा कराया और इरशाद फ़रमाया : "ऐ मेरे नबी ! तुम ने मेरी ज़ात का मुशाहदा कर लिया, लिहाज़ा अब मेरी ख़ुदाई के गवाह बन जाओ।" आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं कैसे तेरी गवाही दूं ?" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "तुम (मेरी त़रफ़ से) यूं कहो : "जो मेरी बारगाह में ह़ाज़िर हो और इस बात की गवाही देता हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ास रसूल हैं صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तो मैं उस के ज़ाहिरी व बात़िनी तमाम गुनाह मुआफ़ कर दूंगा।"

एक क़ौल येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से तमाम हिजाबात उठा दिये, ज़मीन को लपेट दिया, और मस्जिदे अक़्सा को आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब कर दिया। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को अपनी बारगाहे मुक़द्दसा में हाज़िरी का शरफ़ बख़्शा। फिर इरशाद फ़रमाया : "ऐ मुहम्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) मेरा दीदार करो और लोगों को मेरे मुतअ़ल्लिक़ ख़बर दो।" इस के बा'द जब भी लोग आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से जो भी बात पूछते तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाते और आंखों से देख कर और मुशाहदए ह़क़ कर के जवाब देते, यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर चाहे पर क़ादिर है। लोगों की ज़बानें आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बात सुन कर गुंग हो गईं।

फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन्हें बैतुल मुक़द्दस से आस्मानों तक बुलन्द होने का वाक़िआ सुनाया। पस जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का रात की आने वाहिद में मक्कए मुकर्रमा से बैतुल मुक़द्दस तक सफ़र करना षाबित हो गया ह़ालांकि दोनों मक़ामात के दरमियान तेज़ रफ़्तार मुसाफ़िर की एक माह की मसाफ़त है तो वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के आस्मानी सफ़र को मानने पर भी मजबूर हो गए। क्यूंकि वोह ज़ात जो सख़्त ज़मीन को समेटने पर क़ादिर है, वोह हल्की फ़ज़ा को लपेटने पर क्यूंकर क़ादिर न होगी ?

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइषे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हम ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पानी पर चला करते थे।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हां वाक़ेई, ऐसा ही है, और अगर वोह हवा पर चलना चाहते तो ऐसा भी कर सकते थे लेकिन साहि़बुल असरा (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) का अदब लाज़िम था।" क्यूंकि आस्मानी सफ़र मुस्त़फ़ा करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ ख़ास था, जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आस्मानों की त़रफ़ बुलन्द हुए और जंगलों, बयाबानों को त़ै कर गए और आप की ख़ात़िर अन्धेरे के एक हज़ार ह़िजाबात और रोशनी के एक हज़ार ह़िजाबात उठा दिये गए। और हवा पर चलना पानी पर चलने से ज़ियादा तअ़ज्जुब अंगेज़ है क्यूंकि हवा पानी से ज़ियादा हल्की है, नीज़ पानी पर तो नेक व बद और मोमिन व काफ़िर सभी किसी लकड़ी, तख़्ते या कश्ती के ज़रीए चल सकते हैं, लेकिन हवा पर इन चीज़ों के ज़रीए वोही चल सकता है जिस पर रब्ब की ख़ास इनायत हो।

बा'ज़ उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के रफ़ीक़ ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام थे और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बुराक़ की रिकाब ह़ज़रते सय्यिदुना मीकाईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने पकड़ रखी थी जब कि दामने रह़मत ह़ज़रते सय्यिदुना इसराफ़ील عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दस्ते अक़्दस में था और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को आस्मानों पर बुलाने वाला ख़ुद रब्बे जलील عَزَّوَجَلَّ था और जिन को बुलाया गया था वोह ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم थे, दा'वत का मक़ाम **قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْاَدْنٰى** था, और ख़िलअ़त (خِلْـعَت) गुनहगाराने उम्मत की शफ़ाअ़त थी, इसी लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿3﴾ وَلَسَوۡفَ یُعۡطِیۡکَ رَبُّکَ فَتَرۡضٰی۝ (پ۳۰،الضحی:۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और बेशक क़रीब है कि तुम्हारा रब्ब तुम्हें इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे।*[1]

हज़रते सय्यिदुना शैख़ इमाम अबू फ़रज बिन जौज़ी رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیۡہ अपनी एक किताब में ज़िक्र फ़रमाते हैं कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَیۡہِ السَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि अपनी उ़बूदिय्यत के क़दमों पर रुक जा और मेरी रबूबिय्यत के मर्तबे का ए'तिराफ़ कर और मेरे शुक्र के मैदान में ख़ुशी से झूम जा और मेरी क़ुदरत व शान की अ़ज़मत जान। अब मैं तुझ पर एक एह़सान करने वाला हूं लिहाज़ा जो कुछ मैं वह़्य करूं उसे तवज्जोह से सुन। तो ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ तू मेहरबान है और मैं कमज़ोर व बे बस हूं, तू त़ाक़त व क़ुदरत वाला है और मैं मोह़ताज व मग़्लूब हूं।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ जिब्रईल (عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) हिदायत का झन्डा, इनायत का बुराक़, क़बूलिय्यत व विलायत की पोशाक, रिसालत का लिबास और अ़ज़मत व जलालत की ज़बान ले कर सत्तर हज़ार मलाइका के साथ रसूलों के सालार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार (صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم) के दरबार में ह़ाज़िर हो जा और उन के दरवाज़े पर खड़ा रह और उन की बारगाह से फ़ैज़ ह़ासिल कर कि आज रात तू उन का हम रिकाब होगा। और

---

[1]....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیۡہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الۡہَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं "**अल्लाह** तआ़ला का अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم से येह वा'दए करीमा उन ने'मतों को भी शामिल है जो आप को दुन्या में अ़त़ा फ़रमाईं। कमाले नफ़्स और उ़लूमे अव्वलीन व आख़िरीन और ज़ुहूरे अम्र और ए'लाए दीन और वोह फ़ुतूह़ात जो अ़हदे मुबारक में हुईं और अ़हदे सह़ाबा में हुईं और ता क़ियामत मुसलमानों को होती रहेंगी और दा'वत का आ़म होना और इस्लाम का मशारिक़ व मग़ारिब में फैल जाना और आप की उम्मत का बेहतरीन उमम होना और आप के वोह करामात व कमालात जिन का **अल्लाह** ही आ़लिम और आख़िरत की इ़ज़्ज़त व तकरीम को भी शामिल है कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप को शफ़ाअ़ते आ़म्मा व ख़ास्सा और मक़ामे मह़मूद वग़ैरा जलील ने'मतें अ़त़ा फ़रमाईं। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीष में है नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दोनों दस्ते मुबारक उठा कर उम्मत के ह़क़ में रो कर दुआ़ फ़रमाई और अ़र्ज़ किया : اَللّٰھُمَّ اُمَّتِیۡ اُمَّتِیۡ **अल्लाह** तआ़ला ने जिब्रील को हुक्म दिया की मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم) की ख़िदमत में जा कर दरयाफ़्त करो, रोने का क्या सबब है बा वुजूद येह कि **अल्लाह** तआ़ला दाना है। जिब्रील ने ह़स्बे हुक्म ह़ाज़िर हो कर दरयाफ़्त किया। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें तमाम ह़ाल बताया और ग़मे उम्मत का इज़्हार फ़रमाया, जिब्रीले अमीन ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ किया कि तेरे ह़बीब येह फ़रमाते हैं बावुजूद येह कि वोह ख़ूब जानने वाला है। **अल्लाह** तआ़ला ने जिब्रील को हुक्म दिया, जाओ और मेरे ह़बीब (صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم) से कहो कि हम आप को आप की उम्मत के बारे में अ़न क़रीब राज़ी करेंगे और आप को गिरां ख़ात़िर न होने देंगे। ह़दीष शरीफ़ में है कि जब येह आयत नाज़िल हुई सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब तक मेरा एक उम्मती भी दोज़ख़ में रहे मैं राज़ी न होऊंगा। आयते करीमा साफ़ दलालत करती है कि **अल्लाह** तआ़ला वोही करेगा जिस में रसूल राज़ी हों और अह़ादीषे शफ़ाअ़त से षाबित है कि रसूल صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा इसी में है कि सब गुनहगाराने उम्मत बख़्श दिये जाएं। तो आयत व अह़ादीष से क़त़ई त़ौर पर येह नतीजा निकलता है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त मक़्बूल और ह़स्बे मरज़िये मुबारक गुनहगाराने उम्मत बख़्शे जाएंगे। سُبۡحٰنَ اللّٰہ क्या रुत्बए उ़लया है कि जिस परवर दगार को राज़ी करने के लिये तमाम मुक़र्रबीन तक्लीफ़ें बरदाश्त करते और मह़नतें उठाते हैं वोह इस ह़बीबे अकरम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم को राज़ी करने के लिये अ़त़ा आ़म करता है।

ऐ मीकाईल (عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) तू भी अ़लमे क़बूलिय्यत को थाम ले और सत्तर हज़ार फ़िरिश्तों को ले कर हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दरे दौलत पर ह़ाज़िर हो जा कि आज रात तू भी उन की ख़िदमत पर मामूर है। ऐ इसराफ़ील व इ़ज़राईल (عليهما السلام) तुम दोनों भी वैसे ही करो जैसे जिब्राईल व मीकाईल कर रहे हैं। आज रात तुम सब ने सय्यिदुल अव्वलीन व आख़िरीन (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) की बारगाह में ह़ाज़िर होना है। ऐ जिब्राईल (عَلَيۡهِ السَّلَام) सूरज की रोशनी के ज़रीए़ चांद की रोशनी में कुछ इज़ाफ़ा कर दे और चांद के नूर के ज़रीए़ सितारों के नूर में ज़ियादती कर दे। फिर शम्सो क़मर को शम्अ़ बना कर बारगाहे नबवी में पेश कर दे।''

जिब्राईले अमीन عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : ''या इलाही عَزَّوَجَلَّ क्या क़ियामत क़रीब आ गई है ?'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : ''नहीं, बल्कि मैं चाहता हूं कि अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को अपना क़ुर्ब अ़त़ा करूं और उन्हें अपने असरार से आगाह फ़रमा कर उन्हें अन्वार व तजल्लियात का ख़िलअ़ते नूर पहनाऊं और वोह मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हैं, जिन्हें सिद्क़ो वफ़ा के साथ ख़ास किया गया है। लिहाज़ा उन की बारगाह में ह़ाज़िर हो जा और इस रात उन का ख़िदमतगार और हम रिकाब होने का शरफ़ ह़ासिल कर ले।''

चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيۡهِ السَّلَام आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में बिशारत व मुबारक बाद के पैग़ामात लेकर ह़ाज़िर हो गए। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे हानी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهَا के काशानए अक़्दस में मह़्वे आराम थे। ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيۡهِ السَّلَام ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को निदा दी : ''ऐ नबिय्ये मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर होने के लिये तय्यार हो जाइये कि फ़िरिश्ते आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इन्तिज़ार में सफ़बस्ता हैं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ के शौक़ में उठ खड़े हुए। ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को बुराक़ पर सुवार कराया और फिर खुद भी सुवार हो कर मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा जा पहुंचे, बेह़द व बे ह़िसाब सफ़र तै किया और मलाइका भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ साथ चलते हुए दुरूदो सलाम के नज़राने पेश कर रहे थे और यूं अ़र्ज़ कर रहे थे : ''اَيُّهَا السَّيِّدُ الْكَرِيْمُ وَالرَّسُوْلُ الْعَظِيْمُ اِلْتَفِتْ بِنَظْرِكَ اِلَيْنَا وَتَفَضَّلْ بِحُسْنِ عَطْفِكَ عَلَيْنَا या'नी ऐ मोह़तरम व मुकर्रम और अ़ज़ीम रसूल ! हम पर नज़्रे करम के साथ तवज्जोह व इल्तिफ़ात फ़रमाइये और शफ़्क़त व मेहरबानी फ़रमाइये।'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''जान लो ! जिस ने अपने मह़बूब के ग़ैर की त़रफ़ एक क़दम बढ़ाया यक़ीनन उस ने अपने आप को थकाया और जो ग़ैरे मत़लूब के लिये एक क़दम चला उस ने मह़ज़ मशक़्क़त उठाई और जो मह़बूब व मत़लूब को पाने में कामयाब हो गया वोह कैसे ग़ैरुल्लाह की त़रफ़ मुतवज्जेह हो सकता है ? और जब उस के इरादे की पुख़्तगी सह़ीह़ हो गई और वोह तमाम मख़्लूक़ से ग़ाफ़िल हो कर सिर्फ़ ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह हो गया तो उस ने शुक्र की ज़बान ह़ासिल कर ली और अब वोह किसी क़िस्म की सुस्ती न करेगा।''

नीज़ इरशाद फ़रमाया : "अगर मैं भी उस की इबादत में कोताही करूं तो मेरी भी कोई हैषिय्यत नहीं।" और जब आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इल्मो अदब की सिफ़ात से मुकम्मल तौर पर मुत्तसिफ़ हो गए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को मरातिबे ता'ज़ीम के मज़ीद क़रीब किया। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿4﴾ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰی0 فَکَانَ قَابَ قَوْسَیْنِ اَوْ اَدْنٰی0 (پ۲۷،النجم:۸۔۹)

तर्जमए कन्जुल ईमान : फिर वोह जल्वा नज़दीक हुवा फिर खूब उतर आया तो उस जल्वे और उस महबूब में दो हाथ का फ़ासिला रहा बल्कि इस से भी कम। (1)

इस के बा'द आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को पुकारा गया : "ऐ मुहम्मद (صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) आज रात आप (صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) हमारे मेहमान हैं कि आप (صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) हमारी बारगाह में हाज़िर हुए और हमारे कुर्ब की लज़्ज़त हासिल की। अब आप (صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ही बताएं कि आप (صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) की मेहमान नवाज़ी कैसे की जाए ? और आप (صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) क्या चाहते हैं ?" तो आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अर्ज़ की : "या इलाही عَزَّوَجَلَّ मुझ से पहले अम्बिया को इन्आम व इकराम की जो पोशाकें अता फ़रमाई गईं, मैं उन में से कोई भी नहीं चाहता।" आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा गया : "ऐ मेरे हबीब (صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) फिर कौन सी चीज़ तुम्हें राज़ी करेगी ? और तुम किस चीज़ से खुश होगे ?"जब आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को यक़ीनी तौर पर अपनी तमन्नाएं बर आती दिखाई दीं तो ज़बाने हाल से अर्ज़ करने लगे : "ऐ जूदो करम वाले मालिके हक़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ तू बेहतर जानता है कि मेरा मक़्सूद व मतलूब क्या है।" तो इरशाद फ़रमाया गया : "ऐ शफ़ाअत करने वाले और वोह जिस की शफ़ाअत मक़्बूल है ! अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें अन्वार व तजल्लियात का ऐसा हुल्ला अता करूं जो किसी को न मिला, न किसी ने इस की ख़्वाहिश की और न ही किसी कान ने इस के मुतअ़ल्लिक़ सुना तो ठहर जाओ और हमारे करम के ख़ज़ानों में दाख़िल हो कर हमारे दीदार की पोशाक ज़ैबे तन कर लो।

---

(1).....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : "इस (دَنَا) के मा'ना में भी मुफ़स्सिरीन के कई क़ौल हैं : **एक क़ौल** येह है कि हज़रते जिब्रईल का सय्यिदे आलम صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से क़रीब होना मुराद है कि वोह अपनी सूरते अस्ली दिखा देने के बा'द हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के कुर्ब में हाज़िर हुए। **दूसरे मा'ना** येह हैं कि सय्यिदे आलम صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते हक़ के कुर्ब से मुशर्रफ़ हुए। तीसरा येह कि **अल्लाह** तआला ने अपने हबीब صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने कुर्ब की ने'मत से नवाज़ा और येह ही सहीह तर है। (فَتَدَلّٰی) में चन्द क़ौल हैं एक तो येह कि नज़दीक होने से हुज़ूर का उरूज व वुसूल मुराद है और उतर आने से नुज़ूल व रुजूअ। तो हासिल मा'ना येह है कि हक़ तआला के कुर्ब में बारयाब हुए फिर विसाल की ने'मतों से फ़ैज़ याब हो कर ख़ल्क़ की तरफ़ मुतवज्जेह हुए। दूसरा क़ौल येह है कि हज़रत रब्बुल इ़ज़्ज़त अपने लुत्फ़ो रहमत के साथ अपने हबीब से क़रीब हुवा और इस कुर्ब में ज़ियादती फ़रमाई। तीसरा क़ौल येह है कि सय्यिदे आलम صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुक़र्रबे दरगाहे रबूबिय्यत हो कर सजदए ताअत अदा किया। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीष में है कि "क़रीब हुवा जब्बार रब्बुल इ़ज़्ज़त.... (فَکَانَ قَابَ قَوْسَیْنِ اَوْ اَدْنٰی)۔الخ येह इशारा है ताकीदे कुर्ब की तरफ़ कि कुर्ब अपने कमाल को पहुंचा और बा अदब अहब्बा में जो नज़दीकी मुतसव्वर हो सकती है वोह अपनी ग़ायत को पहुंची।"

और दीदारे इलाही عَزَّ وَجَلَّ के वक़्त महबूबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की षाबित क़दमी को क़ुरआने पाक यूं बयान फ़रमाता है :

﴿5﴾ مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰی ۝ (پ۲۷، النجم: ۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *आंख न किसी त़रफ़ फिरी न ह़द से बढ़ी ।* (1)

और उस महबूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शान तो येह है :

﴿6﴾ لَقَدْرَاٰی مِنْ اٰیٰتِ رَبِّہِ الْکُبْرٰی ۝ (پ۲۷،النجم:۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक अपने रब्ब की बहुत बड़ी निशानियां देखीं ।* (2)

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को दीदारे ख़ुदावन्दी की ने'मते उ़ज़्मा का ताज पहनाया गया (और दिल ने इस की तस्दीक़ की) । चुनान्चे, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿7﴾ مَا کَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰی ۝ (پ۲۷، النجم: ۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *दिल ने झूट न कहा जो देखा ।* (3)

1...मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : इस में सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के कमाले क़ुव्वत का इज़्हार है कि इस मक़ाम में जहां अ़क़्लें ह़ैरत ज़दा हैं आप षाबित रहे, और जिस नूर का दीदार मक़्सूद था उस से बहरा अन्दोज़ हुए । दाहिने बाएं, किसी त़रफ़ मुल्तफ़त न हुए, न मक़्सूद की दीद से आंख फेरी, न ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की त़रह़ बेहोश हुए बल्कि इस मक़ामे अ़ज़ीम में षाबित रहे ।"

2...मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "या'नी हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने शबे मे'राज अ़जाइबे मुल्क व मलकूत को मुलाह़ज़ा फ़रमाया और आप का इ़ल्म तमाम मा'लूमाते ग़ैबिय्या मलकूतिय्या पर मुह़ीत़ हो गया । जैसा कि ह़दीषे इख़्तिसामे मलाइका (या'नी फ़िरिश्तों का झगड़ना) में वारिद हुवा है और दूसरी और अह़ादीष में आया है ।" (रूहुल बयान)

3...मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ल्बे मुबारक ने उस की तस्दीक़ की जो चश्मे मुबारक ने देखा । मा'ना येह हैं कि आंख से देखा । दिल से पहचाना और इस रूइय्यत व मा'रिफ़त में शक व तरद्दुद ने राह न पाई । अब येह बात कि क्या देखा । बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल येह है कि ह़ज़रते जिब्रईल को देखा । लेकिन मज़हबे सह़ीह़ येह है कि सय्यिदे अ़ालम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने रब्ब तबारक व तआ़ला को देखा और येह देखना किस त़रह़ था, चश्मे सर से या चश्मे दिल से ? इस में मुफ़स्सिरीन के दोनों क़ौल पाए जाते हैं । ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا का क़ौल है कि "सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने रब्बुल इ़ज़्ज़त को अपने क़ल्बे मुबारक से दो बार देखा । (रवाहे मुस्लिम) एक जमाअ़त इस त़रफ़ गई है कि आप ने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ को ह़क़ीक़तन चश्मे मुबारक से देखा । येह क़ौल ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक और ह़सन व इ़करिमा का है । और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते इब्राहीम को ख़ुल्लत और ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को कलाम और सय्यिदे आ़लम मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने दीदार से इम्तियाज़ बख़्शा (صلوات اللّٰہ تعالٰی علیھم) का'ब ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से दो बार कलाम फ़रमाया और ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अल्लाह तआ़ला को दो मरतबा देखा । (तिर्मिज़ी) लेकिन ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने दीदार का इन्कार किया और आयत को जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام के दीदार पर मह़मूल किया और फ़रमाया जो कोई कहे कि मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ने अपने रब्ब को देखा उस ने झूट कहा और सनद में (या'नी दलील के त़ौर पर) "لَا تُدْرِکُہُ الْاَبْصَارُ" तिलावत फ़रमाई । यहां चन्द बातें क़ाबिले लिह़ाज़ है : एक येह कि ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का क़ौल नफ़ी में है और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا का इषबात में और मुषबत ही मुक़द्दम होता है ।.... बक़िया अगले सफ़्ह़ा पर

फिर कहा गया : "ऐ मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) क्या तुम जानते हो कि इस वक़्त कहां हो ? और किस मक़ामे रफ़ीअ़ पर फ़ाइज़ हो ?" अ़र्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तू ही बेहतर जानता है और तू ही सब से ज़ियादा जानने वाला है।" तो अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया : "(ऐ महबूब !) तुम्हारा येह मक़ाम व मर्तबा मख़्लूक़ में से किसी ने नहीं देखा, मैं ने तुम्हें एक मन्ज़िल से दूसरी मन्ज़िल, एक जहां से दूसरे जहां और एक मे'राज से दूसरी मे'राज तक मुन्तक़िल फ़रमाया, यहां तक कि ज़मीनो आस्मां की बादशाही में कोई अ़जीबो ग़रीब चीज़ ऐसी नहीं जिस पर मैं ने तुम्हें आगाह न कर दिया हो और न ही कोई ऐसा कमाल व मर्तबा है जिस तक मैं ने तुम्हें न पहुंचाया हो।"

जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बारगाहे लम यज़ल में हाज़िर हुए और उस की बे नियाज़ी का जाम नोश किया तो सारी काइनात आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की चमक से मुनव्वर हो गई और आस्मानी फ़िरिश्तों ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अपना मक़्सूद पाने पर मुबारक बाद पेश की, फिर एक आवाज़ सुनाई दी, लेकिन कोई दिखाई न दिया : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ही आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का मालिक व मौला है। लिहाज़ा आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस की ने'मतों पर उस का शुक्र अदा करें।" सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं कि "मुझे येह कलिमात इल्हाम किये गए : اَلتَّحِیَّاتُ الْمُبَارَکُ الصَّلَوَاتُ الطَّیِّبَاتُ لِلّٰہ तो मुझे जवाब मिला : اَلسَّلَامُ عَلَیۡکَ اَیُّھَا النَّبِیُّ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ तो मैं ने अ़र्ज़ की اَلسَّلَامُ عَلَیۡنَا وَعَلٰی عِبَادِ اللّٰہِ الصَّالِحِیۡن मैं ने तमाम अम्बिया और अपनी उम्मत को भी इस फ़ज़्ले कामिल और अज्रे अ़ज़ीम में शरीक कर लिया जिस के साथ मुझे ख़ास किया गया था। तो मलाइका ने जवाबन कहा : اَشْھَدُ اَنۡ لَّاۤ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوۡلُ اللّٰہ फिर दोबारा आवाज़ आई : "ऐ मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) क़रीब हो," तो मैं क़रीब हो गया :

एक क़ौल येह है कि : आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की मा'रिफ़त के साथ उस के क़रीब हुए और उस की महब्बत का कुर्ब पा लिया। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿8﴾ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰی ۝ (پ۲۷،النجم:۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर वोह जल्वा नज़्दीक हुवा फिर खूब उतर आया।*

या'नी आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم महब्बत के साथ हक़ तआ़ला से क़रीब हुए और अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّ وَجَلَّ की त़रफ़ से रहमत व लत़ाफ़त के कुर्ब का नुज़ूल हुवा। और येह कुर्ब किसी क़िस्म की मसाफ़त त़ै करने का न था बल्कि वहां तो जुदाई व फ़िराक़ का सुवाल ही ख़त्म हो गया था।

क्यूंकि नाफ़ी किसी चीज़ की नफ़ी इस लिये करता है कि उस ने नहीं सुना और मुषबत इषबात इस लिये करता है कि उस ने सुना और जाना तो इ़ल्म मुषबत के पास है। इ़लावा बरीं ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہَا ने येह कलाम हुज़ूर से नक़्ल नहीं किया बल्कि आयत से अपनी इस्तिम्बात़ पर ए'तिमाद फ़रमाया। येह ह़ज़रते सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہَا की राए है और आयत में इदराक या'नी इह़ात़ा की नफ़ी है, न रूइय्यत की। **मस्अला :** सह़ीह़ येह है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم दीदारे इलाही से मुशर्रफ़ फ़रमाए गए। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीषे मरफ़ूअ़ से भी येही षाबित है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُمَا जो बह़रुल उम्मह हैं, वोह भी इसी पर हैं। मुस्लिम की ह़दीष है : "رَاَیۡتُ رَبِّیۡ بِعَیۡنِیۡ وَبِقَلْبِی (या'नी) मैं ने अपने रब्ब को अपनी आंख और अपने दिल से देखा।" ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ क़सम खाते थे कि "मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने शबे मे'राज अपने रब्ब को देखा। ह़ज़रते इमाम अह़मद رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने फ़रमाया कि "मैं ह़दीषे ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُمَا का क़ाइल हूं हुज़ूर ने अपने रब्ब को देखा और उस को देखा और उस को देखा। इमाम साह़िब येह फ़रमाते ही रहे यहां तक कि सांस ख़त्म हो गया।"

क्यूंकि, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ﴿9﴾ ۚ

(پ۲۷،النجم:۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो उस जल्वे और उस महबूब में दो हाथ का फ़ासिला रहा बल्कि इस से भी कम।

वहां ज़मान व मकान ख़त्म हो गए, बल्कि आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ऐसी जगह थे, न उस की जहत थी, न मकान, न वक़्त, न ज़मान, न सामाने हयात, न हीं अफ़्लाक व काइनात। बल्कि जब आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सफ़रे मे'राज से वापस तशरीफ़ लाए, तो बहुत ज़ियादा खुश व खुर्रम और मसरूर थे, और आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हर तरह की सआदत से बहरा मन्द हो गए।

वापसी पर आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मुलाक़ात हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से हुई तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "ऐ करीम नबी صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत पर कितनी नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमाईं ?" आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाब दिया : "दिन रात में पचास नमाज़ें।" उन्हों ने फिर अ़र्ज़ की : "ऐ सारी मख़्लूक़ के सरदार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के पास दोबारा जाइये और अपनी उम्मत के लिये तख़्फ़ीफ़ का सुवाल कीजिये, यक़ीनन इन में कुछ आ़जिज़ व कमज़ोर बन्दे भी होंगे।" हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इसी तरह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में वापस भेजते रहे, यहां तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमेशा के लिये सिर्फ़ पांच नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमा दीं। हज़रते सय्यिदुना मूसा (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में बारबार जाने के लिये अ़र्ज़ करने में एक राज़ येह भी था कि जब आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उस अज़ली व लाज़वाल हुस्ने खुदावन्दी का मुशाहदा कर के आएं और उस की चमक आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अक़्दस में ज़ाहिर हो तो वोह भी उस हुस्न का जल्वा देख लें।

जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी मुराद पा ली और ख़लवत में अपने रब्ब तआ़ला के हुस्नो जमाल का मुशाहदा कर लिया तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से इरशाद फ़रमाया गया : "ख़्वाहिश का इज़्हार कीजिये और जो चाहते हैं हम से तलब कीजिये, हम ने आप (صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) को हर शै तलब करने और हर मक़्सद तक पहुंचने की इजाज़त दे दी है।" आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अ़र्ज़ की : "मैं चाहता हूं कि मेरी उम्मत को भी वैसा ही शरफ़ अ़ता किया जाए जिस की पोशाक मुझे पहनाई गई है ताकि वोह भी मेरी रहमत से अपना इन्आ़म पा ले।" तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाया गया : "ऐ काइनात के सरदार (صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ऐ वोह ज़ात जिस के क़दमों की बरकत से ज़मीनो आस्मां ने शरफ़ पाया है ! हम ने आप (صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) की उम्मत को पांच ख़िलअ़तें अ़ता कर दी हैं लिहाज़ा उन की सआ़दतों के सितारे बुज़ुर्गी की इफ़्क़ पर जगमगाएंगे, और वोह पांच ख़िलअ़तें, पांच नमाज़ें है। जिन से आप (صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) की उम्मत, ख़ल्वत में राहत पाएगी। "आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने

अ़र्ज़ की : ‘‘जिन ख़िलअ़तों का नूर काइनात में फैला हुवा है और चमक रहा है, इन की पहचान और अवसाफ़ क्या है ? दुन्या में इन के नाम क्या है ?’’ जवाब मिला : ‘‘ऐ ह़बीबे मोह़तरम (صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) कु़र्ब के मरातिब पर तशरीफ़ रखिये, येह आप (صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) के सामने एक एक कर के अपने जल्वे ज़ाहिर करेंगी।’’

सब से पहले जो दुल्हन आई उस पर रोशन व चमकदार अन्वार वाज़ेह़ थे, जिस की ख़ुश्बू तमाम जहान में फैली हुई थी, उस का नूर अहले अ़क़्ल व बसीरत के सामने वाज़ेह़ तौ़र पर चमक रहा था। उस वक़्त आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को पुकारा गया : ‘‘ऐ वोह हस्ती जो हमारा विसाल पा कर हिजरो फ़िराक़ के ग़म से मह़फ़ूज़ हो गई और ऐ वोह हस्ती जिस की बरकत से उस की उम्मत को बहुत बड़ा अज्रो षवाब ह़ासिल हुवा ! इस ख़िलअ़त को **नमाज़े फ़ज्र** से पहचाना जाएगा। ‘‘इस के बा’द आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सफ़ेद व रोशन लिबास में दूसरी दुल्हन को मुलाह़ज़ा फ़रमाया तो आप (صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) को आवाज़ दी गई : ‘‘ऐ आ’ला मरातिब के मालिक صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और वोह ज़ात जिस की उम्मत को नमाज़ (के लिये सारी ज़मीन को मस्जिद बना कर) और (पाक ज़मीन से) त़हारत का हुक्म दे कर दीगर तमाम उम्मतों पर फ़ज़ीलत दी गई है ! इस नूरानी पोशाक का नाम **नमाज़े ज़ोहर** है।’’ फिर आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने वाज़ेह़ नूरानी लिबास में मल्बूस तीसरी दुल्हन ज़ाहिर हुई। उस के चमकते चेहरे के नूर से काइनात जगमगा उठी, आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को बताया गया : ‘‘ऐ वोह ज़ात जिस की सिफ़ात की कोई ह़द नहीं ! और जिसे रो’ब व दबदबा और नुसरते ख़ुदावन्दी की तल्वार अ़त़ा की गई है ! इस जगमगाते हुल्ले का नाम **नमाज़े अ़स्र** है।’’ फिर आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में बा कमाल लिबास में मल्बूस चौथी दुल्हन ज़ाहिर हुई तो आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को कहा गया ‘‘ऐ मुक़र्रब व मुहज़्ज़ब अफ़राद में सब से ज़ियादा क़ुर्ब व शरफ़ पाने वाले ! इस ख़िलअ़त का नाम **नमाज़े मग़रिब** है।’’ फिर आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने वफ़ा के हुल्ले ज़ेबे बदन किये हुए पांचवीं दुल्हन आई। और बिला शुबा आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم निहायत इ़ज़्ज़त व शरफ़ के मक़ाम पर फ़ाइज़ हुए और मुज्तबा व मुस्त़फ़ा बन गए और आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को बताया गया : ‘‘ऐ तमाम मख़्लूक़ में सब से बेहतर और ह़सीन हस्ती (صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) इस ख़िलअ़ते फ़ाख़िरा का नाम **नमाज़े इशा** है। पस आप (صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) की उम्मत इन पांच नमाज़ों की पाबन्द होगी लेकिन अज्रो षवाब पचास का पाएगी और ऐ ह़ौज़े कौषर के मालिक صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मैं तुझे इस से भी ज़ियादा अ़त़ा करूंगा और उसी का ज़िक्र क़बूल करूंगा जो मेरे ज़िक्र के साथ तेरा ज़िक्र भी करे।’’

जब आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर पांचों नमाज़ें दुल्हनों के लिबास में ज़ाहिर हो चुकीं तो आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक आवाज़ सुनी : ख़ुशख़बरी है उस के लिये जो इन नमाज़ों की पाबन्दी करे, पस वोही अपने मक़्सूद व मुराद को पहुंचेगा। जिस ने आज तक अपनी ख़्वाहिश की क़ैद से छुटकारा ह़ासिल न किया और इस से बचने की कोई राह तलाश न की, उस से कह दो कि वोह

अपने गुज़श्ता आ'माल पर अफ़्सोस करते हुए अपने नफ़्स पर रोए, और अगर आंसू नहीं बहा सकता तो कम अज़ कम रोने वाली शक्ल बना ले।

जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मे'राज से वापस तशरीफ़ लाए तो काइनात आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के नूर से रोशन हो गई, और तमाम मौजूदात आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की महक से मुअ़त्तर हो गईं। जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ की अ़ता कर्दा फ़ज़ीलत और जाह व मर्तबे की ख़बर लोगों को दी तो अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने सब से पहले आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की तस्दीक़ की और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को बिशारत व मुबारक बाद पेश की और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बात में ज़र्रा भर शक न किया।

पाक है वोह ज़ात जिस ने अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को शरफ़ व कुर्ब के ख़िलअ़ते फ़ाख़िरा से नवाज़ा और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इत़ाअ़त का मर्कज़ बनाया और जहन्नम और उस की आग से छुटकारे के लिये आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को शफ़ाअ़त का मह़वर बनाया और वा'दा फ़रमाया कि जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ेगा उस की दुआ़ क़बूल कर ली जाएगी और सीना कुशादा कर दिया जाएगा। क्यूंकि, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌؕ اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِۙ (پ۲، البقرۃ: ۱۸۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ऐ मह़बूब जब तुम से मेरे बन्दे मुझे पूछें तो मैं नज़्दीक हूं दुआ़ क़बूल करता हूं पुकारने वाले की जब मुझे पुकारे।"*

या **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तेरे प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मर्तबए कमाल और इस तअ़ल्लुक़ व वासित़े का सदक़ा, जो मे'राज की रात तेरे और तेरे मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दरमियान ज़ाहिर हुवा, हमारे कबीरा गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दे और हमें क़बूलिय्यत की पोशाकें अ़ता फ़रमा दे। हमारी मुरादों और उमंगों को पूरा फ़रमा दे। हम सब को दुन्या व आख़िरत की भलाइयां अ़ता फ़रमा और अपनी रह़मत से अ़ज़ाबे नार से गुलू ख़लासी अ़ता फ़रमा। और ऐ सब से बढ़ कर रह़म करने वाले ! हम पर अपनी ख़ास रह़मत नाज़िल फ़रमा।

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ وَ سَلَّم

बयान 25 : **सालिहीन की हिकायात**

घर में क़ब्र :

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन सम्माक वाइज़ رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि "एक दफ़्आ मेरे सामने एक आ़बिद की ता'रीफ़ की गई। चुनान्चे, मैं उस की ज़ियारत के लिये चल पड़ा। मैं ने उस को घर में पाया और देखा कि उस ने एक क़ब्र खोद रखी है और क़ब्र के कनारे बैठ कर, अपने सामने खजूर के पत्ते सीधे कर रहा है। मैं ने उसे सलाम किया, उस ने धीमी आवाज़ में सलाम का जवाब देने के बा'द पूछा : "आप कौन हैं ?' मैं ने कहा : "मुहम्मद बिन सम्माक।" वोह बोला : "मुहम्मद बिन सम्माक वाइज़ ?" मैं ने हां में जवाब दिया। उस ने खजूर के पत्ते रख दिये और कहने लगा : "ऐ इब्ने सम्माक رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه सुनने वाले के लिये वाइज़ इसी त़रह़ है जैसे बीमार के लिये त़बीब। लिहाज़ा आप मुझे कुछ नसीह़त कीजिये।"

मैं ने उसे वा'ज़ व नसीह़त करते हुए कहा : "क्या आप इस से डरते नहीं कि आप की ख़त़ाएं भुलाई न जाएंगी और आप के गुनाह मिटाए न जाएंगे। फिर आप के सामने कितनी सख़्तियां, हौलनाकियां, तकालीफ़ और मसाइब व आलाम हैं। जिन में से पहली क़ब्र की तारीकी है, फिर ह़श्र व नश्र की तारीकी, फिर पुल सिरात़ की तारीकी, फिर आ'माल का वज़्न किया जाना, फिर उम्मीदों का मुन्क़त़ेअ़ हो जाना और फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ग़ज़ब फ़रमाना।" येह सुन कर वोह शिद्दत से रोने लग गया। फिर कहने लगा : "ऐ इब्ने सम्माक ! इस के बा'द क्या होगा ?" मैं ने कहा : "इस के बा'द गुनाहों का भारी बोझ उठा कर जहन्नम की आग पर से गुज़रना है और सब से बढ़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़ज्रो तौबीख़ फ़रमाना है।" उस ने जब येह सुना तो एक ज़ोरदार चीख़ मारी और क़ब्र में जा गिरा। एक बहुत बुढ़ी औ़रत बाहर निकली, वोह उस के चेहरे से मिट्टी साफ़ करते हुए कह रही थी : "इन दो आंखों पर मेरे मां बाप क़ुरबान ! इन्हों ने अ़र्सए दराज़ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त में शब बेदारी की और अ़र्सए दराज़ तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से रोती रहीं। फिर उस ने उसे ह़रकत दी और देखा तो उस का त़ाइरे रूह़ क़फ़से उन्सूरी से परवाज़ कर चुका था। मैं उस के घर से निकला तो अचानक ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़त़ी, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम, ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْهِم और आ़बिदों का एक क़ाफ़िला देखा। उन्हों ने मुझ से पूछा : "क्या ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद ख़व्वास رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه का इन्तिक़ाल हो गया ?" मैं ने कहा : "जी हां।" फिर मैं ने उन को उन के घर का रास्ता बताया। वोह अन्दर दाख़िल हुए ताकि उसे क़ब्र से निकाल कर ग़ुस्ल व कफ़न का इन्तिज़ाम करें तो उस को इस ह़ाल में पाया कि उसे ग़ुस्ल दिया जा चुका था और पाकीज़ा कफ़न भी पहना दिया गया था। फिर मुसलमानों ने उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और मैं अपने घर लौट आया। उस वक़्त मैं अपने आप को बहुत ज़लील व ह़क़ीर मह़सूस कर रहा था।"

ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से रोने वाला मदनी मुन्ना :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन वासान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : एक दिन मैं बसरा की गलियों में से गुज़र रहा था कि मैं ने एक बच्चे को गिर्या व ज़ारी करते देखा और पूछा : "ऐ बेटे ! तुझे किस चीज़ ने रुलाया ?" उस ने जवाब में कहा : "जहन्नम के ख़ौफ़ ने ।" मैं ने कहा : "ऐ मेरे बेटे ! तू छोटा है, फिर भी जहन्नम से डरता है ।" वोह कहने लगा : "ऐ मेरे मोहतरम ! मैं ने अपनी अम्मी जान को देखा कि वोह आग जलाते हुए पहले छोटी लकड़ियां जलाती हैं, फिर बड़ी । तो मैं ने पूछा : "ऐ अम्मी जान ! आप पहले छोटी लकड़ियां क्यूं जलाती हैं और बा'द में बड़ी लकड़ियां क्यूं ?" तो उन्हों ने जवाब दिया : "ऐ मेरे बच्चे ! छोटी लकड़ियां ही बड़ी लकड़ियों को जलाती हैं ।" बस इसी बात ने मुझे रुला दिया ।" मैं ने उस लड़के से कहा : "ऐ बेटे ! क्या तू मेरी सोहबत इख़्तियार करेगा, ताकि तू ऐसा इल्म सीख जाए जो तुझे नफ़्अ दे ?" उस ने कहा : "एक शर्त पर अगर आप वोह शर्त क़बूल फ़रमा लें तो मैं आप की सोहबत इख़्तियार कर लूंगा, और आप की इताअत भी करूंगा ।" मैं ने कहा : "वोह शर्त क्या है ?" वोह बोला : "अगर मुझे भूक लगे तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुझे खाना खिलाएंगे, और अगर मैं प्यासा हो जाऊं तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुझे सैराब करेंगे, अगर मुझ से ख़ता हो जाए तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुझे मुआफ़ फ़रमा देंगे, और अगर मैं मर जाऊं तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुझे ज़िन्दा करेंगे ।" मैं ने उसे कहा : "ऐ मेरे बेटे ! मैं तो इन कामों पर क़ादिर नहीं ।" तो उस ने कहा : "ऐ मेरे मोहतरम ! फिर मुझे छोड़ दीजिये, इस लिये कि मैं उस के दरवाज़े पर खड़ा होना चाहता हूं जो येह सारे काम कर सकता हो ।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम पर वक़्फ़ कर के वापस न लो :

जब हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की उम्र पन्दरह बरस हुई तो अपनी मां से अर्ज़ की : "ऐ अम्मी जान ! मुझे राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में वक़्फ़ फ़रमा दीजिये ।" तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की वालिदा कहने लगीं : "ऐ मेरे बेटे ! बादशाहों को वोह चीज़ हदिय्या की जाती है, जो उन की शायाने शान हो, और तुझ में ऐसी कोई ख़ूबी नहीं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की शान के मुताबिक़ हो ।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को हया आई और एक कमरे में दाख़िल हो कर पांच साल तक वहीं इबादत करते रहे । इस के बा'द आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की वालिदए मोहतरमा आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास आईं और देखा कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه इबादत में मसरूफ़ हैं और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه पर सआदत के आषार नुमायां हैं, तो उन्हों ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की आंखों के दरमियान बोसा दिया और फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! अब मैं तुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में वक़्फ़ करती हूं ।" चुनान्चे, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه वहां से निकले और दस साल सफ़र में रहे और इबादत से लज़्ज़त हासिल करते रहे । फिर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को अपनी वालिदए मोहतरमा की ज़ियारत का इश्तियाक़ हुवा तो घर की तरफ़ चल पड़े । जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने रात के वक़्त दरवाज़ा खटखटाया तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की वालिदए मोहतरमा ने पर्दे के पीछे से आवाज़ दी : "ऐ सुफ़्यान (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम पर कोई चीज़ वक़्फ़ कर देता है वोह वापस नहीं

लेता और मैं ने तुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम पर पेश कर दिया है, अब मैं तुझे सिर्फ़ उसी के सामने देखना चाहती हूं।

वासिल बिल्लाह नौजवान :

हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیْه इरशाद फ़रमाते हैं कि मैं ने इराक़ के एक शहर में ऐसा नसीहत भरा बयान किया कि जिस से पथ्थर दिल भी पिघल जाते और जिगर पाश पाश हो जाते, लेकिन मेरी उस महफ़िल में किसी ने आंसू का एक क़त्रा तक न बहाया, और ऐसी बात नहीं थी कि मेरी तक़रीर उन के कानों के रास्ते दिलों में न उतर रही हो। मेरी गुफ़्तगू की सहर अंगेज़ी ने दिलों को दम ब खुद कर रखा था, और लोगों की अरवाह जल्वए महबूब में खोई हुई थीं, अचानक मैं ने साफ़ सुथरे लिबास में मल्बूस एक ख़ूब सूरत नौजवान देखा, उस ने खड़े हो कर चीख़ मारी, फिर घबरा कर बैठ गया, लेकिन उस की इस चीख़ से मेरे बयान में ख़लल आ गया। मैं अपने मिम्बर से नीचे उतर आया, और उस के मदहोशी से इफ़ाक़ा पाने तक इन्तिज़ार करता रहा। जब वोह होश में आया तो मैं ने उस के पास जा कर पूछा : "ऐ मेरे मोहतरम ! आप के वजदान के घोड़े कहां तक रसाई पा चुके हैं ? (या'नी आप कुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ की किस मन्ज़िल तक पहुंच चुके हैं ?) " तो उस ने जवाब दिया : "मेरे वज्द व सुरूर के घोड़ों ने अपना मक़्सूद पा लिया।" मैं ने पूछा : "आप को विसाले बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ की येह दौलत कैसे नसीब हुई ?" तो उस ने जवाब दिया : "तवील मशक़्क़त व थकावट के बा'द मैं ने इस राहत व विसाल को पाया।" मैं ने पूछा : "किस शर्त पर आप ने अपना मक़्सूद पाया ?" जवाब मिला : "मुझे अपने मक़्सूद की इन्तिहाई तलब की वजह से कामयाबी मिली।" मैं ने पूछा : "क्या आप का गुज़र बारगाहे कुर्ब से भी हुवा ?" जवाब मिला : हां वोही मेरे हुसूले फ़ैज़ की जगह है।" मैं ने पूछा : "क्या आप ने साहिबे वक़ार मर्दों का मुशाहदा कर लिया और उन के कुर्ब में आप की झिझक ख़त्म हो गई ?" जवाब मिला : "ऐ इब्ने अ़म्मार ! बिग़ैर हिचकिचाए आगे बढ़ना ही मेरा तरीक़ा है ?" मैं ने पूछा : "फिर आप किस वसीले से बारगाहे कुर्ब तक पहुंचे ?" जवाब मिला : मैं दरे रहमत पर खड़ा रहा और उस के आदाब को हर लम्हे मल्हूज़े ख़ातिर रखा। जब अल्लाह रब्बुल आलमीन عَزَّوَجَلَّ ने मेरे इन्तिहाई शौक़ को मुलाहज़ा फ़रमाया तो मुझ पर करम के बादल बरसाते हुए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दिये, और सारे हिजाबात उठा दिये और मुझे निदा दी : "तमाम हिजाबात उठे हुए हैं, लिहाज़ा तुम मेरे दीदार से कैफ़ व सुरूर हासिल कर लो।"

एक राहिब का क़बूले इस्लाम :

मन्क़ूल है कि अबुल क़ासिम हज़रते सय्यिदुना जुनैद رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیْه और सूफ़ी फुक़रा का एक क़ाफ़िला हज के लिये रवाना हुवा। रास्ते में कुछ दिनों के बा'द पानी ख़त्म हो गया। क़ाफ़िले ने एक पहाड़ के दामन में पड़ाऊ किया हुवा था, आप رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیْه ने अपने एक मुरीद से कहा : "येह मश्कीज़ा लो और उस पहाड़ की चोटी पर चढ़ कर पाक मिट्टी ले आओ ताकि हम इस से तयम्मुम करें, क्यूंकि नमाज़ का वक़्त हो चुका है।" उस ने हस्बे हुक्म मश्कीज़ा लिया और पहाड़ पर

चढ़ कर मश्कीज़े में मिट्टी डालने लगा। अचानक उस ने एक आवाज़ सुनी। इधर उधर देखा तो गिरजा घर में एक राहिब नज़र आया। राहिब ने पूछा : “इस मिट्टी का क्या करोगे?” उस ने जवाब दिया : “हम उम्मते मुहम्मदिय्या علی صاحبِھا الصَّلوۃُ والسَّلام के लोग हैं। जब पानी नहीं मिलता तो हम मिट्टी से तयम्मुम कर लेते हैं।” राहिब बोला : मेरे हां एक साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ कुंवां है, तुम इस से पानी भी पी लो और वुज़ू भी कर लो।” उस मुरीद ने कहा : “पहाड़ के नीचे हमारा एक क़ाफ़िला ठहरा हुवा है।” राहिब ने कहा : “तुम जाओ और सब को बुला लाओ।” वोह ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और राहिब के मुतअ़ल्लिक़ बताया। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने उसे फ़रमाया : “जा कर उसे कहो, हम सत्तर अफ़राद हैं, क्या उस खन्डर में आ जाएंगे?” वोह मुरीद दोबारा गया और राहिब को जा कर सारी बात बताई तो उस ने कहा : “अगर्चे एक हज़ार ही क्यूं न हों क्यूंकि मैं मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) और आप की उम्मत की क़द्र करता और उन से मह़ब्बत करता हूं।” जब मुरीद ने वापस जा कर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ को बताया तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ सारे क़ाफ़िले को ले कर पहाड़ पर चढ़ गए। राहिब ने उस खन्डर का दरवाज़ा खोल दिया। सभी ने खूब सैर हो कर उस कुंवें से पानी पिया और वुज़ू कर के नमाज़ अदा की। जब फ़ारिग़ हुए तो राहिब ने सब को एक एक बड़ी प्लेट पेश की जिस में त़रह़ त़रह़ के खाने थे। सब ने खाना खाया। फिर एक त़श्त और लौटा ह़ाज़िर किया, सब ने अपने हाथों को धो कर मुश्क लगाई। जब राहिब ने मेहमान नवाज़ी कर ली तो पूछा : “क्या तुम में से कोई इस मुनासबत से क़ुरआने करीम की तिलावत करने वाला है? ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने एक मुरीद को इशारा किया तो उस ने इस आयते करीमा की तिलावत शुरूअ़ की :

﴿1﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰۤىۙ اُولٰٓىٕكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ O (پ۱۷، الانبیآء: ۱۰۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक वोह जिन के लिये हमारा वा’दा भलाई का हो चुका वोह जहन्नम से दूर रखे गए हैं।*

आयते मुबारका सुन कर राहिब की चीखें निकल गईं और कहने लगा : “रब्बे का’बा عَزَّ وَجَلَّ की क़सम! हम ने सुल्ह़ कर ली।” जब क़ारी ने क़ुरआने करीम की तिलावत मुकम्मल की तो उस ने फिर कहा : “मैं तुम्हें क़सम दे कर पूछता हूं कि क्या तुम में कोई अच्छा शे’र कहने वाला है? क्यूंकि मैं समाअ़ को पसन्द करता हूं।” आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने एक मुरीद की त़रफ़ इशारा किया तो उस ने चन्द अश्आ़र पढ़े, जिन का मफ़्हूम येह है : “उस ने त़वील अ़र्सा तक दूरियों को बरक़रार रखा, तो उसे मा’लूम हुवा कि उ़ज़्र ख़्वाही के रास्ते कैसे हैं? फिर भी दूरी बरक़रार रखने को उस ने पसन्द किया और फ़िराक़ के समन्दर में ग़ोत़ा ज़न रहा। और वोह येह नहीं जानता था कि वफ़ा के साथ नाइन्साफ़ी के ज़ख़्म अगर्चे ख़त्म भी हो जाएं तब भी उन के निशानात नहीं मिटते।” इन अश्आ़र को सुन कर राहिब काफ़ी देर तक रोता रहा, फिर बोला : “मज़ीद अश्आ़र सुनाइये।” मुरीद ने दोबारा इसी त़रह़ का शे’र पढ़ा, जिस का मफ़्हूम येह है : “मैं ह़ाज़िर हूं, ऐ वोह जो अज़ल से मुझे अपनी त़रफ़ बुलाता रहा और अपने पोशीदा लुत़्फ़ो करम से बार बार अपनी बारगाह की त़रफ़ मेरी रहनुमाई फ़रमाता रहा (लेकिन मैं उस से रूगर्दानी करता रहा)।” राहिब ने फिर चीख़

मारी और कहा : "मैं हाज़िर हूं, ऐ मेरे मालिक ! मैं हाज़िर हूं, ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ तू ने मुझे अपनी रह़मत की त़रफ़ बुलाया है, اَنَا اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه या'नी मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं।" ज़ुन्नार को तोड़ दिया, ईसाइयों का लिबास उतार दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस को गुदड़ी पहनाई और आप और आप का क़ाफ़िला उस के इस्लाम लाने और उस की गर्दन जहन्नम से आज़ाद होने पर बहुत मसरूर हुए। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने हज़ार दीनार निकाल कर उस को दिये जो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास जम्अ़ थे। फिर वोह राहिब अपने गिर्जा घर वग़ैरा को छोड़ कर चेहरा छुपाए हुए कहीं चला गया, नहीं मा'लूम कि वोह किस सम्त गया।

जब ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ाफ़िला मक्कए मुकर्रमा पहुंचा और ह़रमे पाक में दाख़िल हुवा और त़वाफ़ कर के जब सब एक जगह इकठ्ठे हुए तो एक शख़्स को का'बतुल्लाह शरीफ़ के ग़िलाफ़ से लिपटा हुवा देखा, वोह कह रहा था : " ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ तू ने मुझ पर अपना पर्दा उठा दिया ह़त्ता कि मैं ने तेरी वह़दानिय्यत की गवाही दी, तू ने मुझे अपनी बारगाह में बुलाया तो मैं "लब्बैक" कहते हुए ह़ाज़िर हो गया, ऐ वोह ज़ात जिस ने मुझे इरफ़ान की दौलत अ़त़ा फ़रमाई तो मुझे उस की मा'रिफ़त ह़ासिल हो गई ! मुझे अपनी रिज़ा के लिये ह़ज करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक मुरीद से फ़रमाया : "देखो ! येह कलाम करने वाला कौन है ?" वोह मुरीद उस के पास गया तो देखा कि येह तो वोही राहिब है। जब उसे ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर होने के लिये कहा गया तो राहिब ने कहा : "ऐ भाई ! ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बारगाह में मेरा सलाम अ़र्ज़ करना और येह भी अ़र्ज़ करना कि मैं ने आप को अपने पास ठहराया और खाना भी ह़ाज़िर किया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे इस्लाम की दौलत अ़त़ा फ़रमाई और इ़ज़्ज़त के लिबास से नवाज़ा, यहां तक कि मैं एह़राम बांध कर ह़रमे पाक में दाख़िल हो गया हूं, अब मेरी इ़ज़्ज़त व ज़िल्लत उसी के पास है।" चुनान्चे, मुरीद लौटा और आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को उस के मुतअ़ल्लिक़ बताया तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़ुद उठ कर उस के पास चले गए, और उसे सीने से लगा कर आंखों के दरमियान बोसा दिया और इरशाद फ़रमाया : "ऐ मेरे दोस्त ! आप को क़ुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ की लज़्ज़त कैसे नसीब हुई ?" उस ने जवाब दिया : "ऐ मेरे सरदार ! जब मैं ने खन्डरात को छोड़ा और सफ़र इख़्तियार किये तो मुझ पर क़बूलिय्यत की हवाएं चलने लगीं, और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपनी बारगाह तक पहुंचने का दरवाज़ा खोल दिया, जिस से मेरे लिये अपने मक़्सूद तक रसाई ह़ासिल करना मुमकिन हो गया।" फिर उस ने एक चीख़ मारी और ज़मीन पर तशरीफ़ ले आया। जब हम ने देखा तो उस की जान जाने आफ़रीं के सिपुर्द हो चुकी थी।

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासिते़ हो — कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही عَزَّوَجَلَّ
तू अपनी विलायत की ख़ैरात दे दे — मेरे ग़ौष का वासित़ा या इलाही عَزَّوَجَلَّ

ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह रब्बानी कोशिशें हैं और वह़दानिय्यत में इख़्लास इख़्तियार करने की निशानियां हैं।

मरीजे़ इश्क़े इलाही عَزَّوَجَلَّ :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के एक वली फ़रमाते हैं मैं ने एक गुलाम को देखा कि वोह राख बिछा कर उस पर लौट पौट हो कर शिद्दत से रो रहा था। मैं ने अपने एक दोस्त से कहा : "चलो, इस बीमार की इ़यादत करते हैं।" वोह बोला : "येह बीमार नहीं बल्कि मुह़िब्बीन में से है और इसे "उ़बैद मजनून" कहा जाता है।" आप फ़रमाते हैं कि मैं उस की त़रफ़ बढ़ा तो देखा कि वोह एक नौजवान है, और उस पर ऊन का जुब्बा है, वोह कह रहा है : "ऐ मेरे मालिको मौला ! तअ़ज्जुब है उस पर जिसे तेरी मा'रिफ़त की दौलत ह़ासिल हुई और तेरी मह़ब्बत की मिठास से लुत़्फ़ अन्दोज़ हुवा फिर तेरी बारगाह से कैसे हट गया ?" वोह नौजवान येही बात दोहराता रहा यहां तक कि उस पर ग़शी त़ारी हो गई। मैं ने अपने उस दोस्त से कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मजनून तो वोह होता है जो इस मक़ाम व मर्तबे तक न पहुंचा हो।" जब उसे इफ़ाक़ा हुवा तो हमारी त़रफ़ देख कर कहने लगा : "तुम मेरी त़रफ़ क्यूं देख रहे हो ?" हम ने कहा : "हमारे पास एक दवा है, शायद ! वोह आप को इस बीमारी से शिफ़ा दे दे।" तो वोह कहने लगा : "इस की दवा उसी के पास है जिस ने मुझे इस बीमारी में मुब्तला किया है, लेकिन वोह चाहता है कि पहले मुझे बीमार करे फिर इस का इ़लाज करे।" मैं ने कहा : "येह बीमारी कैसे आती है ?" उस ने जवाब दिया : "ह़राम को छोड़ने, गुनाहों का इर्तिकाब न करने, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को हर लम्ह़ा पेशे नज़र रखने, रात को तहज्जुद अदा करने जब कि लोग सो रहे हों, गुज़र बसर का सामान कम लेने, ख़ुश ह़ाली और तंग दस्ती की ह़ालत में आफ़ात व बलिय्यात पर सब्र करने, पाक दामनी इख़्तियार करने, इस्तित़ाअ़त होते हुए कम खाने, मौत की तय्यारी करने, मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात की तय्यारी करने और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सामने ह़ाज़िर होने की तय्यारी करने से इस बीमारी की दौलत नसीब होती है, इस के बा'द या तो जन्नत ठिकाना होगा या जहन्नम में जाना होगा।" इतना कहने के बा'द वोह बुलन्द आवाज़ से रोने लगा, हमें भी रोना आ गया, हम ने उस से कहा : "हम आप के मेहमान हैं, लिहाज़ा हमारे लिये दुआ़ फ़रमाएं।" उस ने कहा : "मैं इस मैदान का शहसुवार नहीं (या'नी मैं इस मर्तबे का अहल नहीं)।" हम ने उसे क़सम दी कि आप ज़रूर दुआ़ फ़रमाएं तो उस ने दुआ़ देते हुए कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को जन्नत में जगह अ़त़ा फ़रमाए, मेरी और आप की मौत आसान कर दे।" वोह वलिय्युल्लाह फ़रमाते हैं : "फिर हम वहां से लौट आए और हमारे दिल उस के ह़सीन अल्फ़ाज़ और वा'ज़ व नसीह़त से ज़िन्दा हो गए और उस के कलाम और मह़ब्बत की मिठास ने हमें बहुत राह़त व मसर्रत पहुंचाई।"

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! येह दीवानों के ह़ालात हैं, पस ऐ ग़मगीन व मिस्कीन रोने वाले ! तेरी अ़क़्ल कहां है ?

वज़ारत क्यूं तर्क की ?

ख़लीफ़ा हारुनुर्रशीद के वज़ीर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुशर्रफ़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه एक दिन उस के सामने बैठे हुए थे। इन्हों ने पूछा : "ऐ ख़लीफ़तल मुस्लिमीन अगर कोई शख़्स आप के दरबार में दरख़्वास्त करे कि मेरा गुलाम फ़रार हो कर आप के पास आ गया है लिहाज़ा आप मुझे मेरा गुलाम लौटा दें, तो क्या आप उस को उस का गुलाम वापस कर देंगे ?" तो ख़लीफ़ा ने कहा : "क्यूं नहीं।" तो उन्हों ने फ़रमाया : "जनाब ! मैं भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का गुलाम हूं, जो अपने मालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से फ़रार हो कर आया है, आप मुझे उस की ख़िदमत में ह़ाज़िर होने के लिये छोड़ दें, ताकि मैं दोबारा उस की बारगाह में ह़ाज़िर हो जाऊं।" हारुनुर्रशीद और तमाम ह़ाज़िरीन रो दिये फिर ख़लीफ़ा कहने लगे : "हम में से येह शख़्स नजात पा गया, जब कि हम यहां बैठे इस की त़रफ़ देख रहे हैं।" फिर ख़लीफ़ा हारुनुर्रशीद ने उन्हें जाने की इजाज़त दे दी तो वोह उसी वक़्त एह़राम बांध कर "لَبَّیْکَ اللّٰهُمَّ لَبَّیْک" कहते हुए ह़रमे पाक की त़रफ़ चल पड़े। रास्ते में ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه उन से मिले और देखा कि वोह ज़मीन पर मह़्वे ख़्वाब हैं और हवा मिट्टी उड़ा उड़ा कर उन के चेहरे पर डाल रही है। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इन को सलाम करने के बा'द दरयाफ़्त फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दल्लाह ! सब कुछ छोड़ने का इवज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुझे क्या दिया ?" वोह बोले : "ऐ सुफ़्यान ! अपनी वज़ारत वग़ैरा छोड़ने का इवज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे येह दिया कि उस ने मुझे अपनी रिज़ा अ़त़ा फ़रमा दी जिस में, मैं इस वक़्त हूं।" जब ह़रमे पाक के मशाइख़ को उन के आने की ख़बर हुई तो वोह सलाम पेश करने के लिये निकल पड़े। इन की ला–ग़री और ग़ुबार आलूदगी को देख कर उन्हों ने पूछा : "बे आबो गयाह चटियल मैदान का सफ़र आप ने कैसे बर्दाशत कर लिया ?" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुशर्रफ़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने जवाब दिया : "जिस मुजरिम गुलाम का दिल उसे आक़ा के दरवाज़े की त़रफ़ ले जा रहा हो, वोह अपने आक़ा की बारगाह में कैसे आता है ? अगर मुझे क़ुदरत होती तो मैं सर के बल आता।" इस के बा'द वोह रोने लगे, पूछा गया : "क्यूं रो रहे हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "मैं ने अपना शफ़ीअ़ आगे भेज दिया है, शायद ! उस की शफ़ाअ़त क़बूल हो जाए।" और जब उन की नज़र बैतुल्लाह शरीफ़ पर पड़ी तो ज़ोरदार चीख़ मारी और उन की रूह़ जिस्म से जुदा हो गई।

बे सबब बख़्श दे न पूछ अ़मल　　　　नाम ग़फ़्फ़ार है तेरा या रब्ब عَزَّوَجَلَّ

दुन्या व आख़िरत की पसन्दीदा चीज़ें :

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सम्माक رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि एक मरतबा मेरे सामने शाम के एक पहाड़ में रहने वाले आ़बिद की ता'रीफ़ की गई तो मैं उस के पास चला गया और सलाम पेश किया, उस ने सलाम का जवाब देने के बा'द मुझ से पूछा : "ऐ इब्ने सम्माक ! आप को इस जगह कौन ले कर आया ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं ने आप की ता'रीफ़ सुनी और ज़ियारत के लिये ह़ाज़िर हो गया।" येह सुन कर उस आ़बिद ने कहा : "आप को मेरे मुतअ़ल्लिक़ बताने वाले ने धोका दिया है, मैं तो अपने नफ़्स को ग़ैरे ख़ुदा में मुअ़ल्लक़ समझता हूं। ऐ इब्ने सम्माक ! अ़क़्लमन्द

तो वोह है जो हलाकत से पहले ख़लासी पाने और नजात ह़ासिल करने की कोशिश करे।" जब मैं ने उस का कलाम सुना तो बे इख़्तियार रो पड़ा। जब मैं ने वापसी का इरादा किया तो पूछा : "आप की कोई ह़ाजत हो तो फ़रमाइये ?" उस ने कहा : "जो ऐसे वीराने में रहता हो, उसे किसी इन्सान से कोई ह़ाजत नहीं हो सकती।" फिर वोह कहने लगा : "ऐ इब्ने सम्माक ! अगर तुम्हें किसी क़िस्म की ह़ाजत हो तो बताइये ?" मैं ने कहा :" मैं आप को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम देता हूं कि जो मैं पूछूं, आप उस का जवाब देंगे। आप को दुन्या व आख़िरत की कौन सी चीज़ पसन्द है ?" तो उस ने रोते हुए कहा : "अगर आप अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम न देते तो मैं कभी भी न बताता, मुझे दुन्या की येह चीज़ें पसन्द हैं : इत़ाअ़त व इ़बादत पर क़ुव्वत, ज़ोह्द, क़नाअ़त, ख़्वाहिशात से दूर रहने वाला नफ़्स और ख़ौफ़े ख़ुदा से लबरेज़ दिल। और आख़िरत में मुझे येह पसन्द है कि मैं बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ से येह ए'लान सुनूं कि जा, तुझे बख़्श दिया गया।"

फिर उस ने एक आहे सर्द दिले पुर दर्द से खींची और ज़मीन पर तशरीफ़ ले आया और सफ़रे आख़िरत पर रवाना हो गया। मुझे उस के ह़ाल और मुआ़मले से बड़ी ह़ैरत हुई। और मैं ने उस को ग़ुस्ल व कफ़न देने का इरादा किया तो अपने पीछे से हातिफ़े ग़ैबी की आवाज़ सुनी : 'ऐ इब्ने सम्माक ! फ़िक्र न कर, क्यूंकि इस का मुआ़मला तेरे सिपुर्द नहीं।" फिर उस का जिस्म मेरी निगाहों से ओझल हो गया और उस को ग़ुस्ल दिये जाने की आवाज़ सुनाई दी, लेकिन कोई दिखाई न दिया, और मैं ने किसी कहने वाले को येह कहते सुना : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दोस्त ! तुझे मुबारक हो, क़ियामत के दिन तुझे ख़ौफ़ से अम्न अ़त़ा कर दिया गया है।"

इम्तिहां के कहां क़ाबिल हूं मैं प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ
बे सबब बख़्श दे मौला عَزَّوَجَلَّ तेरा क्या जाता है

शराब ख़ाना और सदाए ह़क़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار जो इ़राक़ के मशहूर मुबल्लिग़ थे, फ़रमाते हैं कि "एक रात आ़लमे ख़्वाब में मैं ने आस्मान में एक खुला हुवा दरवाज़ा देखा, उस से एक इन्तिहाई नूरानी फ़िरिश्ता उतरा और मुझ से कहने लगा : "ऐ इब्ने अ़म्मार ! ख़ुदाए जब्बार व क़ह्हार, दिन रात का ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ तुम्हें सलाम फ़रमाता है और हुक्म फ़रमाता है कि कल अपना मिम्बर शराब ख़ाने में रख कर वहीं दिल से नसीह़त भरा बयान करना कि इस में हमारे बहुत से राज़ पोशीदा हैं और हम तुम्हें अपनी अ़जीब निशानियां दिखाएंगे।" चुनान्चे, मैं घबरा कर नींद से बेदार हुवा और सोचा कि येह अ़जीब मुआ़मला है, शायद ! मेरा वहम हो। मैं ने "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ" पढ़ा और सोचने लगा कि सह़ीह़ अह़ादीष ना अहलों के सामने कैसे बयान की जाए ? और शराब के मटकों और प्यालों के दरमियान किस त़रह़ क़ुरआने करीम की तिलावत की जाए ? नसीह़तों और आयाते मुक़द्दसा को शराबियों के सामने और वोह भी शराब ख़ाने में कैसे पेश किया जाए ? चुनान्चे, मैं ने वुज़ू किया और दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ कर दोबारा सो गया। वोही फ़िरिश्ता ख़्वाब में दोबारा

नज़र आया और कहने लगा : "ऐ मन्सूर ! मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही के हुक्म से आया हूं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : तुम उठो और शराब ख़ाने में बयान करो तुम्हारी हिफ़ाज़त हमारे ज़िम्मए करम पर है।" चुनान्चे, मैं नींद से बेदार हुवा, मुझे इस मुआ़मले से बड़ा तअ़ज्जुब हुवा, सोच व बिचार के बा'द मैं ने दिल में कहा : "मिम्बर उठाने के लिये किसी को लाता हूं।"

येह सोच ही रहा था कि किसी ने दरवाज़े पर दस्तक दी। मैं ने पूछा : "कौन ?" जवाब आया : "ऐ मेरे मोह़तरम ! मैं मिम्बर उठाने के लिये ह़ाज़िर हुवा हूं, आप चाहें तो आप के लिये शराब ख़ाने के दरमियान मिम्बर रख दूं या मटकों के दरमियान ?" मैं ने पूछा : "तुझ पर येह राज़ कैसे मुन्कशिफ़ (या'नी ज़ाहिर) हुवा ?" उस ने बताया : "येह मुझ पर उसी ने ज़ाहिर किया है जो किसी शै को "कुन" (या'नी हो जा) फ़रमाता है तो वोह हो जाती है। हुज़ूर ! जो फ़िरिश्ता आज रात आप के पास आया था, वोही आप के बा'द मेरे पास भी आया था और मुझे हुक्म दिया कि मैं आप के लिये शराब ख़ाने में मिम्बर बिछा दूं।" मैं ने कहा : "ऐ मेरे दोस्त ! अगर मुआ़मला ऐसा ही है जैसे तुम कह रहे हो तो वोही करो जिस का तुम्हें हुक्म दिया गया है।" जब सुब्ह़ ख़ूब रोशन हो गई, तो मैं ने हुक्म की बजा आवरी में जल्दी की, मैं ने देखा कि तमाम शराबी ह़ल्क़ा बनाए इन्तिज़ार में बैठे हैं, बहर ह़ाल मैं मिम्बर पर बैठ गया और कुछ देर के लिये सर झुका लिया फिर मैं ने अपना सर उठाया और नसीह़त भरा बयान शुरूअ़ कर दिया :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ सब ख़ूबियां उस ज़ात के लिये हैं जिस ने अपने मह़बूब बन्दों के दिलों को अपने कुर्ब की लज़्ज़त अ़ता फ़रमाई और उन्हें अपने मयख़ानए विसाल में दाख़िल किया और अपनी शराबे त़हूर से सैराब कर के अपने ग़ैर से बे ख़बर कर दिया। और मुह़िब्ब अपने मह़बूब के इ़लावा किसी शै में मश्ग़ूल नहीं होता। जब उस रब्बे जलील عَزَّوَجَلَّ ने उन पर तजल्ली फ़रमाई तो जमाले कुदरत के मुशाहदे के वक़्त उन के होश उड़ गए। ऐ ख़्वाहिशात की शराब में बद मस्त होने वालो ! अगर तुम मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ के मयख़ाने में दाख़िल हो जाओ और शराब के मटकों की बजाए कुर्ब के घड़ों का मुशाहदा करो, बख़्शने वाले रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में साहि़बे वक़ार मर्दों को देखो कि उन पर ख़ुशी व मसर्रत के जाम गर्दिश कर रहे हैं, ख़ालिस शराबे त़हूर के प्यालों ने उन को दुन्या की शराब से बे परवाह कर दिया है, उन के प्याले उन की ख़ुशी व मसर्रत है। उन की शराब ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ है। उन की ख़ुश्बू उन का कुरआन है। उन की शम्अ़ उन की समाअ़त है। उन के नग़मे तौबा व इस्तिग़फ़ार हैं। जब रात तारीक होती है और सब लोग सो जाते हैं तो रब्बे काइनात عَزَّوَجَلَّ उन पर तजल्ली फ़रमाता और पर्दे उठा देता है, और उस के मह़बूब बन्दे ऐसे जहां का मुशाहदा करते हैं कि जिस का तसव्वुर किसी की अ़क़्ल में आया, न किसी के जेहन में इस का ख़याल गुज़रा।

ऐ अ़क़्ल मन्दो ! ज़रा ग़ौर तो करो कि अख़रोट और उस के छिलके के दरमियान कितना फ़ासिला होता है, दिलों की टेहनियों को ह़रकत देने वाले और ह़ज़रते सय्यिदुना

या'कूब व यूसुफ़ على نبينا وعليهما الصلوٰة والسلام को मिलाने वाले ने मुझे यहां बैठने का इस लिये हुक्म फ़रमाया है ताकि वोह तुम्हारे गुनाहों और नाफ़रमानियों को बख़्श दे और अ़फ़्व व रिज़ा की दौलत का ताज तुम्हारे सर पर रख दे, माज़ी के गुनाहों को मिटा दे, मुजरिमों से दर गुज़र फ़रमाए और धुत्कारे हुओं और नाफ़रमानों की तौबा क़बूल फ़रमाए। (अरे ! ग़ौर करो कि) महबूबे हक़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ मौजूद है, उस की रिज़ा की आंख तुम्हें देख रही है, और मुसीबत तुम से टाल दी गई है, तो क्या तुम में तौबा का अ़ज़्मे मुसम्मम करने वाला कोई नहीं ? बेशक सुल्ह़ के जाम तुम्हारे इर्द गिर्द घूम रहे हैं और तुम पर सख़ावत की हवाएं चल रही हैं।"

हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मेरा कलाम व बयान अभी मुकम्मल न हुवा था कि नशे में मदहोश व मजनून एक नौजवान हाथ में शराब से भरा प्याला लिये मेरे सामने खड़ा हो गया और कहने लगा : 'ऐ इब्ने अ़म्मार ! बताइये, क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे इस हालत में भी क़बूल फ़रमा लेगा ?" मैं ने कहा : 'ऐ मेरे दोस्त ! कैसे नहीं क़बूल फ़रमाएगा हालांकि वोह खुद कुरआने हकीम में इरशाद फ़रमाता है :

وَهُوَ الَّذِىْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ ﴿2﴾
(پ٢٥، الشورٰی:٢٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता।*

येह सुन कर उस नौजवान ने प्याला हाथ से फैंका और हैरान व सरगर्दां बाहर निकल गया और अपनी ग़फ़्लत की नींद से बेदार हो गया। इस के बा'द नशे में चूर एक बुढ्ढा शख़्स हाथ में तम्बूरा (एक क़िस्म का बाजा) लिये खड़ा हो कर कहने लगा : "ऐ इब्ने अ़म्मार ! क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स की तौबा क़बूल फ़रमाएगा जिस की तमाम उ़म्र नाफ़रमानी और गुनाहों में ज़ाएअ़ हो गई है ?" मैं ने कहा : "ऐ मोहतरम ! वोह कैसे न बख़्शेगा, हालांकि वोह खुद फ़रमाता है : "

وَاِنِّىْ لَغَفَّارٌ (پ١٦،طٰهٰ:٨٢) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और बेशक मैं बहुत बख़्शने वाला हूं।"*

उस ने तौबा करने वालों को खुश ख़बरी दी है और उन के लिये रह़मो करम का दरवाज़ा खोल दिया है।"

जब उस बुढ्ढे ने मेरा कलाम सुना तो तम्बूरा फैंक दिया, और ग़मगीन हालत में जिधर रुख़ था उधर निकल गया। फिर मेरे सामने शराब से खेलता हुवा एक नौजवान खड़ा हुवा जिस पर वज्द और मस्ती छाई हुई थी, वोह कहने लगा : "ऐ मन्सूर ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें हुक्म दिया है कि मुझ से अ़हद लो, अब तो अ़हद का ज़माना गुज़र चुका है और वा'दा पूरा होने वाला है और मत़्लूब व मक़्सूद के हुसूल का वक़्त आ चुका है।" मैं ने पूछा : "ऐ नौजवान ! तुम्हें इस मक़ामे कुर्ब पर किस ने फ़ाइज़ किया ?" उस ने जवाब दिया : "मेरी ही वजह से ख़्वाब में आप को वा'ज़ का हुक्म दिया गया और आप के पास अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से फ़िरिश्ता आया।" मैं ने कहा : "ऐ मरे दोस्त ! येह तो बताओ कि तुम पर येह राज़ किस ने मुन्कशिफ़ किया ?" उस ने जवाब में येह आयते मुबारका तिलावत की :

﴾3﴿ يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُوْرُ۝

(پ۲٤،المؤمن:۱۹)

तर्जमए कन्जुल ईमान : अल्लाह जातना है चोरी छुपे की निगाह और जो कुछ सीनों में छुपा है।

फिर कहने लगा : 'ऐ मन्सूर ! जिस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लुत्फ़ो करम की खुशगवार हवाएं चलती हैं वोह साहिबे कश्फ़ बन जाता है।" मैं ने फिर दरयाफ़्त किया : 'ऐ मोहतरम ! लुत्फ़ो करम की येह खुशगवार हवाएं तुम पर कब चलीं ?" वोह बोला : "आज रात, जब कि आप सो रहे थे।" फिर कहने लगा : "ऐ इब्ने अम्मार ! आप मेरी रहनुमाई और उस की बारगाह में कुर्ब का सबब बने हैं, तो क्या उस की बारगाह में आप को किसी क़िस्म की कोई हाजत है ?" मैं ने पूछा : "तुम्हारी मुराद क्या है ?" कहने लगा : "ऐ मन्सूर ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे कुर्ब में, ऐसे दोस्तों के दरमियान जिन पर महब्बत व उन्स के प्याले गर्दिश करते हैं, और हिजाब उठा दिये जाते हैं, अगर आप मुझे देखना चाहते हैं तो कल वहां मुझ से मुलाक़ात कीजियेगा।" वोह हवा में उड़ता हुवा मेरी निगाहों से ग़ाइब हो गया, और मैं उसे देर तक टिक-टिकी बांधे देखता रहा। फिर मैं ने उसे चन्द अश्आर पढ़ते सुना, जिन का मफ़्हूम येह है :

"मेरे महबूबे हक़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ ने मुझे पुकारा है, उस से विसाल की घड़ियां क़रीब आ गई हैं। अब अगर उस ने पूछा कि तू क्या चाहता है तो मैं कह दूंगा : तेरी महब्बत का ऐसा जाम कि जिस के नशे में अर्सए दराज़ तक हैरान व सरगर्दां रहूं। ऐ मेरी आंखों के नूर ! मैं तुझ को ऐसी नज़र से देखना चाहता हूं जिस में दूरी की बजाए सिर्फ़ कुर्ब हो कि अब इस शौक़ में तो मेरी अक़्ल ख़त्म हो चुकी है। ऐ मेरे महबूब ! मेरी ज़बान पर सिवाए तेरे ज़िक्र के कुछ नहीं। और जब से तू ने मुझे विसाल की खुश ख़बरी दी है और मैं ने इस पर लब्बैक कहा है तो उस के बा'द कभी भी हाज़िर होने में सुस्ती का मुज़ाहरा नहीं किया। हालांकि मेरी हालत तो येह थी कि लगातार गुनाहों में डूबा हुवा था लेकिन तू ने मुझ पर करम किया और मेरे दिल की बीमारियों का इलाज अपने विसाल से किया। मुझे अपनी बारगाह से दूर न किया। मैं गुनाहों के गढ़े के कनारे पर था लेकिन तू ने मुझे इस में गिरने से बचा लिया। और मुझे उस रास्ते की पहचान करवा दी जो तेरी बारगाह तक पहुंचाने वाला है। अब मैं इस पर चल कर यक़ीनन अपना मक़्सूद पा लूंगा।

रहूं मस्तो बे खुद मैं तेरी विला में
पिला जाम ऐसा पिला या इलाही عَزَّوَجَلَّ

وَصَلَّى اللهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ وَ سَلَّم

बयान 26 :

सालिहीन के फ़ज़ाइल

ह़म्दे बारी तआ़ला :

सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो अपनी अ़ज़मत व जलाल में ग़ालिब व क़वी है, अपने कमाल में यक्ता है, अपने अफ़्आ़ल की ईजाद में तन्हा है जिस ने ह़िक्मत के जवाहिर को अहले मा'रिफ़त के क़ुलूब के सन्दूक़ में रखा, और इन पर अपने पुख़्ता ताले लगा दिये, उन को अपनी बारगाह में बुलाया और ख़ुद उन की मदद की तो वोह सब को छोड़ कर उस की बारगाह में निकल पड़े, और ज़िन्दगी के सफ़र में मा'मूली शै पर क़नाअ़त की और रात के वक़्त इस त़रह़ निकले जैसे क़ैदी क़ैद से निकलता है, और रात की तारीकी में अपने मौला عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में नमाज़े तहज्जुद में क़ियाम किया, फिर जब सुब्ह़ हुई तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अपना फ़ज़्लो करम अ़त़ा कर के उन पर एह़सान फ़रमाया, उन्हों ने मह़बूबे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ात़िर मशक़्क़तें बर्दाश्त कीं, आफ़ात की कड़वाहट पर सब्र किया, धोका देही और दूरी से बचते रहे, और सब्र पर इस्तिक़ामत के साथ क़ाइम रहे ह़ालांकि हर कोई इस पर क़ादिर नहीं होता, उन्हों ने अपना जानो माल उस की मह़ब्बत में क़ुरबान कर दिया तो उन्हें फ़रह़त व मसर्रत ह़ासिल हुई और मुह़िब्ब तो हमेशा अपने मह़बूब पर मालो जान लुटाने के लिये तय्यार रहता है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अपनी हम नशीनी के जाम से सैराब फ़रमाया तो वोह ऐसे दीवाने हो गए कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की फ़र्ते मह़ब्बत से उन पर कैफ़ो सुरूर त़ारी होने लगा, और वोह सब अपने आस पास से बे ख़बर हो गए, पस आ़रिफ़ीन ने अपनी नींद की लज़्ज़त को तर्क कर दिया, ख़ाइफ़ीन ने आ़जिज़ी व इन्किसारी और ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ की चादर ओढ़ ली, गुनहगार रो रो कर अश्क बरसाने लगे, दीवानगाने इ़श्क अपनी ठन्डी छाऊं और गहरे साए से निकल पड़े, ज़लील व ह़क़ीर अपनी दूरी की वजह से ह़सरत व अफ़्सोस में ग़ौत़ा ज़न हो गए, नाफ़रमान अपने वज्द (या'नी इ़श्क़ व मह़ब्बत) की आग में जलने लगे और उ़श्शाक़ अपनी ह़द से निकल कर ज़बाने ह़ाल से कहने लगे : ''ऐ वोह ज़ात जिस ने मेरे दिल को अपने विसाल का जाम पिलाया और अपने ह़ुस्नो जमाल का नज़ारा कराने के लिये इस जाम को मेरे लिये मुबाह़ फ़रमाया।''

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! वोह लोग कहां गए जिन के बारे में फ़रमाया गया :

كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ ۝ وَ بِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ۝ (پ۲۶،الذّٰريٰت: ۱۷،۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह रात में कम सोया करते और पिछली रात इस्तिग़्फ़ार करते।*

और कहां हैं वोह लोग जिन की शान यूं बयान की गई :

تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ (پ۲۱،السجدۃ: ۱٦) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *उन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाब गाहों से।*

कहां हैं वोह लोग जो अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में रुकूअ़ व सुजूद करते हुए रातें गुज़ारते ? और कहां हैं वोह जिन्हें हिदायत व तौफ़ीक़ की दौलत से सरफ़राज़ किया गया ?

कामयाब नौमुस्लिम :

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वाहि़द बिन ज़ैद رَحْمَةُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हम फ़ुक़रा के एक क़ाफ़िले की मईय्यत में समन्दर के सफ़र पर निकले, तेज़ हवा चली और हमें समन्दर के एक जज़ीरे की त़रफ़ बहा कर ले गई। हम ने वहां एक शख़्स को बुत परस्ती करते हुए देखा। हम ने उस से पूछा : "तुम किस की इ़बादत कर रहे हो ?" उस ने अपनी उंगली से बुत की त़रफ़ इशारा किया। हम ने कहा : "ऐ मिस्कीन ! हमारे साथ कश्ती में एक रफ़ीक़ है जो इस त़रह़ की चीज़ों का बहुत अच्छा कारी गर है और येह बुत इस लाइक़ नहीं कि इस की इ़बादत की जाए।" तो वोह कहने लगा : "फिर तुम लोग किस की इ़बादत करते हो ?" हम ने जवाब दिया : "हम तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करते हैं। "उस ने पूछा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कौन है ?" हम ने कहा : "जिस का अ़र्श आस्मान पर है, जिस की सल्त़नत ज़मीन में है, जो समन्दर को रास्ता बना देता, ज़िन्दों और मुर्दों में उसी का फ़ैसला नाफ़िज़ होता है।" उस ने फिर पूछा : "तुम्हें येह सब कैसे मा'लूम हुवा ?" हम ने कहा : "उस ने हमारी त़रफ़ अपना एक रसूल भेजा जिस ने हमें येह सब कुछ बताया।" उस ने फिर पूछा : "रसूल ने क्या किया ?" हम ने जवाब दिया : "जब उस ने बादशाहे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ का पैग़ाम मुकम्मल त़ौर पर पहुंचा दिया तो उस ने अपने रसूल को अपने पास वापस बुला लिया।" उस ने फिर पूछा : "क्या उस रसूल ने तुम्हारे पास अल्लाह तआ़ला की कोई निशानी भी छोड़ी है ?" हम ने कहा : "क्यूं नहीं, हमारे पास अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की किताब है।" उस ने कहा : "तो फिर मुझे दिखाओ क्यूंकि बादशाहों की किताबें बहुत अच्छी होती हैं।"

हम मुस्ह़फ़ शरीफ़ लाए तो उस ने कहा : "मैं पढ़ना नहीं जानता।" हम ने एक सूरत पढ़ कर सुनाई तो वोह रोने लगा ह़त्ता कि सूरत ख़त्म हो गई। फिर वोह बोला : "ऐसे कलाम वाले ही के लिये ज़ैबा है कि उस की नाफ़रमानी न की जाए।" चुनान्चे, वोह इस्लाम की दौलत से सरफ़राज़ हो गया, हम ने उस को अपने साथ सुवार कर लिया और उसे अह़कामे शरीअ़त और क़ुरआने करीम की कुछ आयात सिखाईं। जब रात हुई तो हम नमाज़े इ़शा पढ़ कर सोने के लिये अपने ठिकानों पर चले गए, उस ने पूछा : "ऐ लोगो ! जिस मा'बूद की त़रफ़ तुम ने मेरी रहनुमाई की है, क्या वोह सोता है ?" हम ने कहा : "नहीं, वोह ज़िन्दा है, क़य्यूम है, उसे न ऊंघ आती है, न नींद।" उस ने कहा : "तुम कितने बुरे लोग हो कि तुम सोते हो और तुम्हारा मालिक नहीं सोता।" हमें उस की येह बात बड़ी पसन्द आई। फिर जब हम आबादी तक पहुंच गए और जुदा होने का इरादा किया तो हम ने चन्द दिरहम इकट्ठे कर के उसे दिये और कहा : "येह रख लें, ज़रूरत के वक़्त ख़र्च कर लीजियेगा।" तो उस ने नाराज़ी का इज़्हार किया और कहने लगा : "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه या'नी अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं। तुम ने जिस रास्ते की त़रफ़ मेरी रहनुमाई की ख़ुद उस पर नहीं चलते। मैं समन्दर के एक जज़ीरे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को छोड़ कर बुत की इ़बादत करता था, उस वक़्त उस ने मुझे हलाकत में न डाला तो अब कहां डालेगा ? अब तो मुझे उस की मा'रिफ़त भी ह़ासिल हो चुकी है।" हम ने उसे छोड़ दिया, और वोह चला गया।

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वाहि़द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : "चन्द दिन बा'द किसी ने मुझे उस के मुतअ़ल्लिक़ बताया कि वोह फुलां जगह मौत की सख़्तियों से दो चार है।" चुनान्चे, मैं उस के पास गया और पूछा : "आप को किसी क़िस्म की ह़ाजत हो तो फ़रमाइये ?" उस ने जवाब दिया : "मेरी सब ह़ाजतें उस ने पूरी कर दी हैं जिस की मैं ने मा'रिफ़त ह़ासिल की है।" मैं उस से गुफ़्त्गू कर रहा था कि इस दौरान मुझ पर नींद का ग़लबा हो गया। मैं ने ख़्वाब में एक बाग़ देखा, जिस में एक क़ुब्बा है, और उस में एक ऐसा तख़्त है जिस पर सूरज व चांद से भी ज़ियादा ख़ूब सूरत चेहरे वाली हूर बैठी कह रही है : "मैं तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम देती हूं कि उसे जल्दी से मेरे पास भेज दो।" मैं बेदार हुवा और देखा तो उस की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर चुकी थी। मैं ने उस को कफ़न दे कर क़ब्र में दफ़्न कर दिया और जब मैं सोया तो ख़्वाब में उसी क़ुब्बे को देखा जिस को पहले देखा था। वोह नौ मुस्लिम भी उस क़ुब्बे में था। हूर उस की एक जानिब खड़ी हुई थी और वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान की तिलावत कर रहा था :

﴿1﴾ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ۝ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ۝
(پ١٣، الرعد: ٢٣-٢٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और फ़िरिश्ते हर दरवाज़े से उन पर येह कहते आएंगे सलामती हो तुम पर तुम्हारे सब्र का बदला तो पिछला घर क्या ही ख़ूब मिला।*

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! फ़क़्र की पोशाक ज़ैबे तन किये रखो, क्यूंकि उस पर इ़ज़्ज़त व वक़ार के अन्वार हैं।

﴿2﴾ وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ۝ (پ١٤، النحل:٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम्हारा उन में तजम्मुल है जब उन्हें शाम को वापस लाते हो और जब चरने को छोड़ते हो।*

मदीने के ताजदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, बिइज़्ने परवर दगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बहुत से परागन्दा सर और गुबार आलूद ऐसे हैं जिन्हें कोई हैसिय्यत नहीं दी जाती, अगर वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर (किसी बात की) क़सम खा लें तो वोह उन की क़सम पूरी फ़रमा दे।" (جامع الترمذی،ابواب المناقب،باب مناقب البراء بن مالك،الحديث ٣٤٥٤،ص٢٠٤٧)

बिखरे बाल, आज़ुर्दा सूरत होते हैं कुछ अहले मह़ब्बत
बद्र मगर येह शान है, उन की बात न टाले रब्बुल इ़ज़्ज़त

गुदड़ी में ला'ल :

हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुन्कदिर رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं मस्जिदे नबवी शरीफ़ علی صاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلام में रात के वक़्त एक सुतून के पास बैठा करता था। एक साल अहले मदीना क़ह़्त़ में मुब्तला हो गए। बारिश के लिये दुआ़ करने सब शहर से बाहर निकल पड़े लेकिन फिर भी बारिश न हुई। जब रात हुई तो मैं इ़शा की नमाज़ के बा'द ह़स्बे आ़दत सुतून से टेक लगा कर बैठ गया। इसी अषना में एक शख़्स जिस के चेहरे पर ज़र्दी ग़ालिब

थी, चादर ओढ़े हुए सुतून की जानिब बढ़ा। मैं उस सुतून के पीछे हो गया और इस को ख़बर न हुई। उस ने दो रक्अ़त नमाज़ अदा करने के बा'द बैठ कर दुआ़ मांगते हुए अ़र्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरे ह़बीब صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़रम वाले बारिश की दुआ़ के लिये निकले लेकिन बारिश न हुई, ऐ मौला ! तुझे अपने ह़बीब صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़त का वासित़ा ! बारिश बरसा दे।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुन्कदिर رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि उस ने अभी अपने हाथ न हटाए थे कि मैं ने बिजली के गरजने की आवाज़ सुनी और साथ ही आस्मान से बारिश बरसने लगी ह़त्ता कि मेरा घर वापस लौटना भी मुश्किल हो गया। जब उस को बारिश का इ़ल्म हुवा तो उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ऐसी ह़म्दो षना की जैसी मैं ने आज तक न सुनी थी। फिर वोह खड़ा हो गया और नमाज़ पढ़ता रहा ह़त्ता कि फ़ज्र का वक़्त क़रीब हो गया। फिर उस ने वित्र अदा किये और दो रक्अ़त नमाज़ अदा की। फिर नमाज़ की इक़ामत कही गई। लोगों ने नमाज़ अदा की। उस ने भी उन के साथ मिल कर नमाज़ पढ़ी। जब इमाम साह़िब ने सलाम फेरा तो वोह जल्दी से बाहर की त़रफ़ चल पड़ा। मैं भी उस के पीछे हो लिया यहां तक कि वोह मस्जिद के दरवाज़े तक पहुंच गया और चादर हटा कर बारिश के पानी में ग़ोत़ा ज़न हो गया। मैं उसे ह़सरत व चाहत की निगाहों से देखता रह गया। मा'लूम नहीं कि इस के बा'द वोह कहां गया।"

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हर मुसाफ़िर ह़ाजी नहीं होता, न हर घर मक्कए मुकर्रमा है, न हर ज़ादे राह मक़्सूद तक पहुंचाता है, न हर पहाड़ अ़रफ़ात है और न ही अ़रफ़ात में ठहरने वाला हर शख़्स वुक़ूफ़े अ़रफ़ा करता है।

एक जन्नती नौजवान :

ह़ज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَیْهِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि एक साल मैं ने बैतुल्लाह शरीफ़ का ह़ज किया, वुक़ूफ़े अ़रफ़ा के दौरान मैं ने एक नौजवान को देखा जिस पर ज़र्दी, ला–ग़री, परेशानी और अफ़्सुर्दगी के आषार नुमायां थे। मैं समझ गया कि इसे मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ का कुछ ह़िस्सा अ़त़ा किया गया है। मैं ने उस को येह कहते हुए सुना : "मैं तेरी बारगाह में कैसे ह़ाज़िरी दूं ? क्या नाफ़रमान ज़बान ले कर आऊं या ऐसा दिल ले कर आऊं जो तेरी बारगाह से दूर है ? या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ येह लम्ह़ात कितने ह़सीन हैं जब कि तू मेरे साथ मह़्वे कलाम है और इस जगह तू मुझे पुकार रहा है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَیْهِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मैं उस की त़रफ़ बढ़ा। जब उस ने मुझे देखा तो कहने लगा : "मरह़बा ! ऐ जुन्नून !" मैं ने पूछा : "आप ने मुझे कैसे पहचान लिया ?" उस ने जवाब दिया : "आप के मुतअ़ल्लिक़ मुझे उस ज़ात ने ख़बर दी है जो मुझे पहचानती और मुझ से मह़ब्बत करती है।" फिर कहने लगा : 'ऐ जुन्नून ! उस की मह़ब्बत ने मुझे लाग़र कर दिया है, मा'लूम नहीं, मैं उस का कुर्ब ह़ासिल करने में कब कामयाब होऊंगा ? और कब मह़बूबे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ जूदो करम करते हुए पर्दे उठाएगा ?" मैं ने कहा : "आप कहां से आए हैं ?"

तो उस ने जवाब दिया : ''दिल के शहर से आया हूं और बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ में ह़ाज़िरी का इरादा है।'' मैं ने पूछा : ''आप के पास कोई ज़ादे राह है ?'' उस ने जवाब दिया : ''जी हां, उस की शराबे उन्स व मह़ब्बत का एक क़त़रा है, मुझे उम्मीद है कि मैं इस से मुक़द्दस बारगाह में पहुंच जाऊंगा।'' मैं ने पूछा : ''आप के पास कोई सुवारी है ?'' उस ने जवाब दिया : ''जी हां ! निय्यत की सफ़ाई, दुन्या से मुकम्मल बे रग़बती और मह़बूबे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की पाकी व तस्बीह़ की सुवारी मेरे पास है।'' फिर कहने लगा : 'ऐ ज़ुन्नून ! मुझ से दूर हो जाएं, वोह घड़ी कितनी बुरी है जो उस की इत़ाअ़त के बिग़ैर गुज़रे।'' फिर वोह मुझे छोड़ कर चला गया। जब मैं मिना में पहुंचा तो मैं ने उस को देखा कि वोह लोगों को अपने जानवरों की क़ुरबानियां करते हुए देख रहा था। फिर उस की आंखों से सैले अश्क रवां हो गया और उस की हिचकियां बढ़ गईं, उस के ख़ौफ़ व ख़शिय्यते इलाही عَزَّوَجَلَّ में इज़ाफ़ा हो गया तो वोह अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : ''इलाही عَزَّوَجَلَّ तेरा क़ुर्ब ह़ासिल करने के लिये लोग अपनी अपनी क़ुरबानियां पेश कर रहे हैं, मेरे पास तो कुछ भी नहीं, एक नाफ़रमान ग़ाफ़िल जान है, तेरा क़ुर्ब ह़ासिल करने के लिये उसी को मैं तेरी बारगाह में बत़ौरे नज़राना पेश करता हूं, अगर तू इस को क़बूल फ़रमा ले तो इस को जल्द अज़ जल्द उठा ले।'' फिर उस ने एक चीख़ मारी और एक आहे सर्द दिले पुर दर्द से खींची और ज़मीन पर तशरीफ़ ले आया। फिर मैं ने हातिफ़े ग़ैबी की आवाज़ सुनी : ''तअ़ज्जुब है ! उस नौजवान को जन्नतुल फ़िरदौस जाने की कितनी जल्दी है !''

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं कि ''मैं उस के सिरहाने खड़ा सोच व बिचार कर रहा था कि अचानक एक बुढ़िया दिखाई दी कि उस ने ख़ुद को उस के क़रीब गिरा दिया, और रन्जो ग़म से निढ़ाल हो कर आंसू बहाते हुए कहने लगी : ''तुझे मुबारक हो ! ऐ वोह शख़्स जिस की आ़दत क़ुरबानी देना और वफ़ादारी करना थी ! जो अपने मालिक عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से कभी ग़ाफ़िल न रहा और जो इत़ाअ़त की चादर ओढ़ कर रातों में त़वील क़ियाम करता रहा, जो शाम अफ़्सुर्दगी में गुज़ारता और सुब्ह़ बीमारी में।'' ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : ''मैं ने उस से पूछा : ''इस नौजवान से आप का क्या तअ़ल्लुक़ है ?'' उस ने जवाब दिया : ''येह मेरा बेटा है, जंगलात में ज़िन्दगी के अय्याम गुज़ारता, हर साल यहां मीक़ात में हम एक दूसरे से मुलाक़ात करते, फिर मैं अगले साल तक इस को देखने के लिये वापस न आती, इस मरतबा जब मैं अ़रफ़ात में ठहरी और ह़स्बे मा'मूल इस को तलाश किया तो हातिफ़े ग़ैबी ने आवाज़ दी : ''तेरे बेटे का इन्तिक़ाल हो चुका है और उस की रूह़ को आ'ला दर्जात पर पहुंचा दिया गया है।'' इस के बा'द उस बुढ़ी औ़रत ने दुआ़ की : ''ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ उस तअ़ल्लुक़ की क़सम जो तेरे और मेरे दरमियान तन्हाई में त़ै हुवा ! और तेरी उस मह़ब्बत की क़सम जो तू ने मेरे दिल में डाल रखी है ! मेरी नाफ़रमान जान को इस दारे फ़ानी से नजात दे कर अपने बेटे के साथ बाक़ी रहने वाले घर में पहुंचा दे।'' ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं कि फिर उस ने एक लम्बा सांस लिया और अपने बेटे के पहलू में गिर गई और उस की रूह़ भी ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ से जा मिली।

सल्त़नत दे कर दुरवेशी ख़रीदी :

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ख़ुरासान के बादशाह थे, एक दिन अपने लश्कर के दरमियान घोड़े पर सुवार थे कि आप ने घोड़े की ज़ीन से किसी पुकारने वाले की निदा सुनी : ''ऐ इब्राहीम ! हमारे बन्दे इस लिये नहीं पैदा किये गए, और न ही हम से महृब्बत करने वालों को इस का हुक्म दिया गया है, लिहाज़ा अपनी चाहत को मेरी चाहत पर कुरबान कर दो, वगर्ना तुम अहले इनाद में से हो जाओगे।'' आप फ़रमाते हैं : ''उस आवाज़ ने मेरे दिल में तीर पैवस्त कर दिया, मैं ने अपने मुल्क व सल्त़नत और अहलो इयाल को छोड़ा और उसी की त़रफ़ ह़ैरान व परेशान निकल गया जिस पर मुझे भरोसा व ए'तिमाद है।''

जब ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم अपने मुल्क व सल्त़नत को छोड़ कर मालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िरी के लिये सफ़र करते हुए एक गाउं में दाख़िल हुए, तो आप ग़म से निढ़ाल हो चुके थे। रास्ते में अपने रफ़ीक़ से बिछड़ गए, सात दिन तक न तो पानी का घूंट पिया और न ही कोई लुक़्मा खाया। शैत़ान को आप की सदाक़त पर ग़ैरत आई, क्यूंकि वोह ह़क़ीक़त के बादशाहों और त़रीक़त के सलात़ीन, अकाबिरीन पर ग़ैरत करता है। और उसे ग़ैरत आनी भी चाहिये क्यूंकि इन्हों ने वोह मुबारक लिबास पहन लिया जो शैत़ान से उतार लिया गया था, और इन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कुर्ब को ह़ासिल कर लिया जिस से शैत़ान को धुत्कारा गया था। चुनान्चे, शैत़ान एक नेक बुज़ुर्ग की शक्ल में ज़ाहिर हुवा और कहने लगा : ''ऐ इब्राहीम ! बात सूनो, मैं तुम्हें नसीह़त करता हूं कि वोह मह़बूब जिस की वजह से तुम ने सल्त़नत छोड़ दी और जिस की मह़ब्बत में तुम ने मसाइब व आफ़ात और हलाकत के घोड़ों पर सुवारी की, उस ने तो तुम्हारा नुक़्सान किया और तुम्हें मौत के क़रीब कर दिया।'' तो आप ने इरशाद फ़रमाया : ''जब अपने मक़्सूद के ज़ाएअ़ हो जाने से अमान ह़ासिल हो जाए तो मौत के आने में कोई नुक़्सान नहीं।''

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم अभी इसी ह़ैरानगी के आ़लम में थे कि एक ख़ूब सूरत शख़्स आप के पास आया, जिस की ख़ुश्बू सब को मुअ़त़्त़र कर रही थी और कहने लगा : ''ऐ इब्राहीम ! क्या आप इस्मे आ'ज़म सीखना चाहते हैं जिस की बदौलत आप को पानी पिलाया जाए और खाना भी खिलाया जाए।'' आप ने फ़रमाया : ''जी हां।'' तो उस ने आप को इस्मे आ'ज़म सिखा दिया। आप ने उस से पूछा : ''आप कौन हैं ?'' जवाब दिया : 'मैं आप का भाई ख़िज़्र (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) हूं।'' फिर ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : ''अगर आप चाहें तो मेरी सोह़बत इख़्तियार कर सकते हैं।''आप ने फ़रमाया : ''नहीं।'' उन्हों ने पूछा : ''क्यूं ?'' तो इरशाद फ़रमाया : ''इस लिये कि सोह़बत, शिर्कत से ह़ासिल होती है और मैं जिस की मह़ब्बत में गिरिफ़्तार हूं, उस में किसी को शरीक नहीं करना चाहता, और न ही इस के इ़लावा किसी की सोह़बत इख़्तियार करना चाहता हूं और मैं किसी ग़ैर की सोह़बत इख़्तियार करने में उस से डरता हूं क्यूंकि वोह बहुत ज़ियादा ग़ैरत मन्द है, लिहाज़ा मुझे इस की ह़ाजत नहीं।''

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने जब अपनी ज़ौजए मोहतरमा को छोड़ा था तो वोह हामिला थीं, उन के हां बेटा पैदा हुवा, जिस का नाम घर वालों ने दादा के नाम पर रखा। जब बड़ा हुवा और जवानी की हुदूद में क़दम रखा तो अपनी वालिदा से पूछा : "ऐ मेरी मां ! क्या मेरे वालिद नहीं ?" तो वालिदा ने जवाब दिया : "क्यूं नहीं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम्हारे वालिद हैं।" उस ने फिर पूछा : "वोह कहां चले गए ?" मां ने जवाब दिया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की तलाश में।" नौजवान बेटे ने अर्ज़ की : "ऐ मेरी वालिदए मोहतरमा ! फिर आप मुझे भी जाने दें, मैं भी उसी को तलाश करता हूं जिसे मेरे मालिदे मोहतरम तलाश कर रहे हैं, शायद ! मैं अपने मक़्सद में कामयाब हो जाऊं।" मां ने कहा : "तुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ऐ मेरे बेटे ! तेरे बाप की जुदाई से मेरा दिल बहुत जला है, अब तू अपने फ़िराक़ से मेरे दिल को मज़ीद न जला।" चुनान्चे, वोह फ़रमा बरदार बेटा अपनी मां की खुशी की ख़ातिर रुक गया हत्ता कि मां का इन्तिक़ाल हो गया तो वोह बहुत ग़मगीन रहने लगा, क्यूंकि अब न उस की मां थी, न उसे बाप का पता था। फिर वोह नौजवान नंगे पाउं घर से निकल पड़ा, लोगों से डरते डरते वीरान मसाजिद में रातें गुज़ारता, दरवाज़ों से खाने के लुक़्मों का सुवाल करता, यहां तक कि मक्कए मुकर्रमा पहुंच गया। हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم तवाफ़ में मश्ग़ूल थे, और आप के कुछ मुरीद भी आप के साथ तवाफ़ कर रहे थे। जब आप की नज़र एक नौजवान लड़के पर पड़ी तो बे साख़्ता आप की निगाहें उस पर जम गईं, आप के इरादत मन्दों ने अर्ज़ की : "हुज़ूर ! इस अज़ीम मक़ाम और बा बरकत वक़्त में येह कैसी ग़फ़्लत है कि आप एक खूब सूरत नौजवान लड़के को ग़ौर से देख रहे हैं। आप रोने लगे और एक मुरीद से फ़रमाया : "उस के पास जाओ और पूछो, येह कौन है ?" मुरीद ने उस के पास जा कर सलाम किया, और बा'दे सलाम पूछा : "ऐ नौजवान ! कहां से आए हो ?" उस ने जवाब दिया : "अ़जम के शहर बल्ख़ से।" फिर पूछा : "किस के बेटे हो ?" जवाब दिया : "येह तो मुझे मा'लूम नहीं, हां ! मेरी वालिदए मोहतरमा ने मुझे बताया था कि तुम्हारे बाप का नाम इब्राहीम बिन अदहम (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم) है।" फिर उस के रुख़्सार पर मोतियों की तरह आंसूओं की लड़ी बन गई।

वोह मुरीद फ़रमाते हैं : "मैं अपने पीरो मुर्शिद हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के पास लौटा और देखा कि आप भी रो रहे हैं हत्ता कि आप बेहोश हो गए, तो मैं आप के सरे अक़्दस के पास बैठ गया और जब आप को इफ़ाक़ा हुवा तो मैं ने अर्ज़ की : "ऐ मेरे मुर्शिद ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप से इस नौजवान बेटे का हक़ ज़रूर वुसूल करेगा।" आप ने फ़रमाया : "खुदा की क़सम ! येह मेरा बेटा है, इस को मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये छोड़ दिया था, अब मैं इस को वापस लेना नहीं चाहता।" मैं ने अर्ज़ की : "हुज़ूर ! मैं आप को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वासिता देता हूं कि उस के पास चलिये।" चुनान्चे, आप तशरीफ़ ले गए, उस ने पूछा : "आप कौन हैं ?"

फ़रमाया : "मैं तुम्हारा बाप इब्राहीम बिन अदहम हूं।" फिर आप ने उस को अपने सीने से लगा लिया और बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में अ़र्ज़ गुज़ार हुए : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ येह मेरा बेटा, मेरे जिगर का टुकड़ा मेरी तलाश में आया है, और तू जानता है कि मेरे दिल में इस के लिये कितनी जगह है, और येह भी जानता है कि मैं इस के लिये वक़्त नहीं निकाल सकता, और तू अपने बन्दों की मस्लेह़तों को भी ख़ूब जानता है।" इस के बा'द सात दिन न गुज़रे थे कि आप के बेटे का इन्तिक़ाल हो गया। आप ने अपने हाथों से उस को ग़ुस्ल दिया, फिर एक मोटी चादर में कफ़न दिया। जब आप उस का सर ढांपते तो पाउं ज़ाहिर हो जाते, और जब पाउं ढांपते तो सर से चादर कम पड़ जाती। आप फ़रमा रहे थे : "ऐ मेरी आंखों की ठंडक ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरी और तुम्हारी मुलाक़ात बरोज़े महशर होगी।"

وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْن

اللّٰه اللّٰه اللّٰه اللّٰه اللّٰه اللّٰه

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم के चार मदनी फूल

﴾1﴿ जो कोई सोते वक़्त بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم 21 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ ले اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस रात शैत़ान, चोरी, अचानक मौत और हर त़रह़ की आफ़त व बला से मह़फ़ूज़ रहे। ﴾2﴿ जो किसी ज़ालिम के सामने بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم 50 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़े उस ज़ालिम के दिल में पढ़ने वाले की हैबत पैदा हो और उस के शर से बचा रहे। ﴾3﴿ जो शख़्स तुलूए आफ़्ताब के वक़्त सूरज की त़रफ़ रुख कर के بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم 300 बार और (कोई भी) दुरूद शरीफ़ 300 बार पढ़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को ऐसी जगह से रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाएगा जहां उस का गुमान भी न होगा और (रोज़ाना पढ़ने से) اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ एक साल के अन्दर अन्दर अमीर व कबीर हो जाएगा। ﴾4﴿ कुन्द ज़ेहन بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم 786 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के पी ले तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस का ह़ाफ़िज़ा मज़बूत़ हो जाए और जो बात सुने याद रहे। (شمس المعارف مترجم ص ۷۳)

बयान 27 : नेक औरतों का ज़िक्र

ह़म्दे बारी तआ़ला :

सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने काइनात और इस की हर चीज़ को मज़बूत़ बनाया और इस की इकठ्ठी और जुदा जुदा अश्या को पुख़्ता बनाया। मैं उस की ह़म्द करता हूं जिस के मुझ पर बहुत एह़सानात हैं और ए'तिराफ़ करता हूं कि मैं उस के एह़सानात का शुक्र अदा करने से क़ासिर रहा। मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह यक्ता है, उस का कोई शरीक नहीं, वोही बादशाह और बहुत ज़ियादा एह़सान फ़रमाने वाला है और गवाही देता हूं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन को सरापा हिदायत बना कर भेजा और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मो'जिज़ए क़ुरआनी के ज़रीए कुफ़्र के अन्धेरों में ह़ैरत ज़दा लोगों को हिदायत अ़त़ा फ़रमाई और तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने दीने इस्लाम को तमाम अदयान पर ग़लबा अ़त़ा फ़रमाया और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आल पर और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان पर हर घड़ी और हर वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की दाइमी रह़मत का नुज़ूल हो। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में मोमिन औ़रतों का ज़िक्र यूं फ़रमाता है : وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ وَنِسَآءٌ مُّؤْمِنٰتٌ (پ۲۶،الفتح:۲۵)
तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर येह न होता कुछ मुसलमान मर्द और कुछ मुसलमान औ़रतें।"

और मज़ीद इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ وَ الصّٰدِقٰتِ وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَ الْخٰشِعٰتِ وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَ الصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ وَ الْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ ۙ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ○ (پ۲۲،الاحزاب:۳۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औ़रतें और ईमान वाले और ईमान वालियां और फ़रमा बरदार और फ़रमा बरदारें और सच्चे और सच्चियां और सब्र वाले और सब्र वालियां और आ़जिज़ी करने वाले और आ़जिज़ी करने वालियां और ख़ैरात करने वाले और ख़ैरात करने वालियां और रोज़े वाले और रोज़े वालियां और अपनी पारसाई निगाह रखने वाले और निगाह रखने वालियां और अल्लाह को बहुत याद करने वाले और याद करने वालियां इन सब के लिये अल्लाह ने बख़्शिश और बड़ा षवाब तय्यार कर रखा है।"* (1)

---

(1)....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं **शाने नुज़ूल :** अस्मा बिन्ते उ़मैस जब अपने शोहर जा'फ़र बिन अबी त़ालिब के साथ ह़ब्शा से वापस आईं। तो अज़्वाजे नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से मिल कर उन्हों ने दरयाफ़्त किया कि क्या औ़रतों के बाब में भी कोई आयत नाज़िल हुई है। उन्हों ने फ़रमाया : नहीं। तो अस्मा ने ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि "ह़ुज़ूर औ़रतें बड़े टोटे (या'नी ख़सारे) में हैं। "फ़रमाया : क्यूं ?" अ़र्ज़ किया कि .....(बक़िय्या अगले सफ़ह़े पर)

इन आयाते मुबारका में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने नेक औरतों का ज़िक्र नेक मर्दों के साथ किया है। मर्दों की त़रह़ औरतों के भी मुख़्तलिफ़ अह़वाल हैं, उन में भी ज़ोहदो तक़्वा और ख़ैरो भलाई की सिफ़ात मुकम्मल त़ौर पर पाई जाती हैं, उन में भी अवरादो वज़ाइफ़ करने वाली और जंगलात व खंडरात की सियाह़त करने वाली औरतें होती हैं। और बा'ज़ को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कश्फ़ वग़ैरा की खुसूसिय्यात भी अ़त़ा फ़रमाता है जैसा कि पहले दौर में राबिआ़ अ़दविय्या, शा'वाना, रैह़ाना, उम्मुल ख़ैर رحمۃاللہ تعالٰی علیھن और इन के इलावा मा'रूफ़ और ग़ैर मा'रूफ़ पाक बाज़ औरतें गुज़री हैं।

तज़्किरए ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ बसरिया رحمۃاللہ تعالٰی علیھا :

ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ अ़दविय्या बसरिया رحمۃاللہ تعالٰی علیھا के बारे में मन्क़ूल है कि आप इ़शा की नमाज़ पढ़ कर मकान की छत पर खड़ी हो जातीं और अपने दूपट्टे और चादर को अच्छी त़रह़ ओढ़ कर बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ में यूं अ़र्ज़ गुज़ार होतीं : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सितारे चमक रहे हैं, सब की आंखें सोई हुई हैं, बादशाहों ने अपने दरवाज़े बन्द कर लिये हैं, हर मुह़िब्ब अपने मह़बूब के साथ तन्हाई में है और मैं तेरी बारगाह में तन्हा खड़ी हूं।" फिर आप नमाज़ अदा करती रहतीं, जब सह़री का वक़्त होता और फ़ज्र तुलूअ़ हो जाती तो बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में अ़र्ज़ करतीं : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ येह रात गुज़र गई, दिन ख़ूब रोशन हो गया। काश ! मुझे मा'लूम हो जाए कि क्या मेरी रात की इ़बादत क़बूल हुई तो मुझे मुबारक बाद दी जाए, या अगर मर्दूद हुई तो मेरी ढारस बंधाई जाए, तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! जब तक तू मुझे ज़िन्दा रखेगा और मेरी मदद करता रहेगा मैं इसी आ़दत पर क़ाइम रहूंगी, और तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! अगर तू मुझे अपनी बारगाह से मर्दूद कर देता फिर भी मैं इस से दूर न होती क्यूंकि मेरे दिल में तेरी मह़ब्बत बस चुकी है।"

(बक़िय्या)...... "इन का ज़िक्र ख़ैर के साथ होता ही नहीं जैसा कि मर्दों का होता है। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इन के दस मरातिब मर्दों के साथ ज़िक्र किये गए और इन के साथ इन की मदह़ फ़रमाई गई और मरातिब में से पहला मर्तबा इस्लाम है जो ख़ुदा और रसूल की फ़रमां बरदारी है। दूसरा ईमान कि वोह ए'तिक़ादे सह़ीह़ और ज़ाहिर व बात़िन का मुवाफ़िक़ होना है। तीसरा मर्तबा क़ुनूत या'नी त़ाअ़त है। इस में चौथा मर्तबे का बयान है कि वोह सिद्क़े निय्यात व सिद्क़े अक़्वाल व अफ़्आ़ल है। इस के बा'द पांचवां मर्तबा सब्र का बयान है कि त़ाअ़तों को पाबन्दी करना और ममनूआ़त से एह़तिराज़ रखना। ख़्वाह नफ़्स पर कितना ही शाक़ और गिरां हो। रिज़ाए इलाही के लिये इख़्तियार किया जाए। इस के बा'द फिर छटा मर्तबा ख़ुशूअ़ का बयान है। जो त़ाअ़तों और इ़बादतों में क़ुलूब व जवारेह़ के साथ मुतवाज़ेअ़ होना है। इस के बा'द सातवां मर्तबा सदक़ा का बयान है। जो अल्लाह तआ़ला के अ़त़ा किये हुए माल में से उस की राह में ब त़रीक़े फ़र्ज़ व नफ़्ल देना है। फिर आठवीं मर्तबा सौम का बयान है। येह भी फ़र्ज़ व नफ़्ल दोनों को शामिल है। मन्क़ूल है कि "जिस ने हर हफ़्ता एक दिरम सदक़ा किया वोह मुतसद्दिक़ीन में और जिस ने हर महीने अय्यामे बीज़ के तीन रोज़े रखे वोह साइमीन में शुमार किया जाता है। इस के बा'द नवां मर्तबा इ़फ़्फ़त का बयान है और वोह येह है कि अपनी पार साई को मह़फ़ूज़ रखे और जो ह़लाल नहीं है उस से बचे। सब से आख़िर में दसवीं मर्तबा कषरते ज़िक्र का बयान है। ज़िक्र में तस्बीह़, तह़मीद, तहलील, तक्बीर, क़िराअते क़ुरआन, इ़ल्मे दीन का पढ़ना पढ़ाना, नमाज, वा'ज़ व नसीह़त, मीलाद शरीफ़, ना'त शरीफ़ पढ़ना सब दाख़िल हैं, कहा गया है कि बन्दा ज़ाकिरीन में तब शुमार होता है जब कि वोह खड़े, बैठे, लैटे हर ह़ाल में अल्लाह का ज़िक्र करे।"

फिर आप चन्द अश्आर पढ़तीं, जिन का मफ़्हूम येह है :

"ऐ मेरे सुरूर व उम्मीद और मक़्सूद ! तू ही मेरे दिल की राहत और तू ही मेरा महबूब है, और तेरी दीद का शौक़ ही मेरा साज़ो सामान है। ऐ मेरी ज़िन्दगी और महब्बत के मालिक ! अगर तेरी महब्बत न होती तो मैं इन वसीअ़ शहरों में न भटकती। कितनी ही मरतबा तेरे एहसानात मुझ पर ज़ाहिर हुए और मैं ने कितनी ही ने'मतें तुझ से हासिल कीं। पस अब तेरी महब्बत ही मेरी ख़्वाहिश, मेरा मक़्सूद और मेरे जलते हुए दिल की आंख का नूर है, मैं जब तक ज़िन्दा रहूं, मुझे कोई चैन व सुकून नहीं। रात की तारीकी में भी मेरी उम्मीद सिर्फ़ तू ही तू है। ऐ मेरे दिल की उम्मीद ! अब अगर तू मुझ से राज़ी हो गया तो मैं भी ख़ुद को सआदत मन्द समझूंगी।"

दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ की तालिबा :

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़स्मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं कि एक मरतबा मैं हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के साथ उस चटियल मैदान से गुज़र रहा था जहां बनी इसराईल एक अ़र्से तक हैरान व सरगर्दां भटकते फिरते रहे। वहां हम ने किसी इन्सान को आते देखा। मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे उस्ताज़े मोहतरम ! कोई शख़्स आ रहा है आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "जाओ देखो कौन है ? यहां तो कोई सिद्दीक़ ही आ सकता है।" मैं ने देखा तो वोह कोई औ़रत थी। आप ने फ़रमाया : "रब्बे का'बा की क़सम ! येह तो कोई सिद्दीक़ा है।" चुनान्चे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जल्दी से उस के पास गए, और सलाम पेश किया तो कहने लगी : "मर्दों को क्या हो गया है कि औ़रतों को मुख़ातब करते हैं ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "मैं आप का भाई ज़ुन्नून हूं, तोहमत वालों में से नहीं हूं।" तो उस ने कहा : "ख़ुश आमदीद ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को सलामत रखे।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : "आप को इस वीराने में आने पर किस ने उभारा ?" उस ने जवाब दिया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान ने :

﴾1﴿ اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا ؕ (پ٥،النسآء: ٩٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या अल्लाह की ज़मीन कुशादा न थी कि तुम उस में हिजरत करते।

फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "महब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ के बारे में कुछ बयान कीजिये।" तो वोह कहने लगी : "سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ आप उस को ख़ूब जानते हैं, ख़ुद मा'रिफ़त की ज़बान में कलाम करते हैं फिर भी उस के मुतअ़ल्लिक़ मुझ से पूछ रहे हैं।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया सुवाल करने वाला जवाब का हक़दार है।" तो उस ने चन्द अश्आर पढ़े, जिन का मफ़्हूम येह है :

"ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से शदीद महब्बत करती हूं क्यूंकि तू ही इस का हक़ रखता है। महब्बत ऐसा ज़िक्र है जो तेरे इलावा सब से बे ख़बर कर देता है। तू ही महब्बत का अहल है लिहाज़ा मेरे सामने से पर्दे उठा दे ताकि मैं तेरा दीदार कर सकूं। मेरे नज़्दीक इधर उधर की चीज़ों की कोई ता'रीफ़ नहीं बल्कि हर चीज़ में तेरी ही हम्दो षना है।"

फिर उस ने येह अश्आर पढ़े :

يَا حَبِيْبَ الْقَلْبِ مَا لِیْ سِوَاکَا فَارْحَمِ الْيَوْمَ مُذْنِبًا قَدْ اَتَاکَا

يَا رَجَائِیْ وَرَاحَتِیْ وَسُرُوْرِیْ قَدْ اَبَی الْقَلْبُ اَنْ يُّحِبَّ سِوَاکَا

तर्जमा : ऐ दिल के दोस्त ! तेरे सिवा मेरा कोई नहीं, अपनी बारगाह में हाज़िर इस गुनहगार पर रह्म फ़रमा, ऐ मेरी उम्मीद, मेरी राह़त और ऐ मेरे सरवर ! दिल ने तेरे सिवा किसी और से मह़ब्बत करने से इन्कार कर दिया है।

ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ बसरिया رحمة الله تعالى عليها के चार सुवालात :

मन्क़ूल है कि जब ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ अ़दविय्या رحمةالله تعالى عليها के शोहर का इन्तिक़ाल हो गया तो ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने अपने चन्द अह़बाब के साथ उन के पास आने की इजाज़त चाही तो इन्हों ने इजाज़त दे दी और एक पर्दा दरमियान में ह़ाइल कर के उस के पीछे बैठ गईं। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی के दोस्तों ने इस्तिफ़्सार किया : "आप के शोहर इन्तिक़ाल फ़रमा चुके हैं, लिहाज़ा अब आप को निकाह़ कर लेना चाहिये।" ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ अ़दविय्या رحمةالله تعالى عليها ने फ़रमाया : "मैं तुम्हारी राए का एह़तिराम करते हुए बड़ी मह़ब्बत व इ़ज़्ज़त से निकाह़ कर लूंगी, लेकिन मुझे येह बताइये कि आप में सब से बड़ा आ़लिम कौन है ? ताकि मैं उस से निकाह़ करूं।" वोह बोले : "ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی)।" फिर कहने लगीं : "अगर आप मेरे चार सुवालात के जवाबात दे दें तो मैं आप से निकाह़ कर लूंगी।" ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने इरशाद फ़रमाया : "पूछो, अगर अल्लाह तआ़ला ने तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई तो जवाब दूंगा।"

चुनान्चे, उन्हों ने दर्जे ज़ैल सुवालात किये :

(1).....फ़क़ीह आ़लिम क्या कहता है कि जब मैं मर जाऊंगी तो क्या दुन्या से मुसलमान जाऊंगी या काफ़िरा ? आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जवाबन फ़रमाया : "येह तो ग़ैब है, जिसे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के सिवा कोई नहीं जानता।"

(2).....जब मुझे क़ब्र में रखा जाएगा और मुन्कर नकीर सुवालात करेंगे तो मैं जवाबात दे पाऊंगी या नहीं ? आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "येह भी ग़ैब है।"

(3).....जब लोग क़ियामत में उठेंगे, और आ'माल नामे खोल कर बा'ज़ों के दाएं हाथ में दिये जाएंगे और बा'ज़ों के बाएं हाथ में, तो क्या मेरा नामए आ'माल मुझे सीधे हाथ में दिया जाएगा या उलटे में ? ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने फिर येही जवाब दिया कि "येह भी ग़ैब है।"

(4).....जब तमाम मख़्लूक़ में से हर जन्नती और दोज़ख़ी गुरोह को पुकारा जाएगा और बुलाया जाएगा तो मैं किस गुरोह में से होऊंगी ? तो इस के जवाब में भी आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने येही फ़रमाया कि "येह भी ग़ैब है, और ग़ैब को अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के इलावा कोई नहीं जानता।"

इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ अ़दविय्या رحمۃاللہ تعالی علیہا ने इरशाद फ़रमाया : "जब मुआ़मला ऐसा है (या'नी जब दुन्या से मुसलमान रुख़्सत होने, नकीरैन के सुवालात के जवाबात देने, नामए आ'माल के दाएं हाथ में मिलने और जन्नती गुरौह में शामिल होने का इ़ल्म नहीं) तो मैं इस की वजह से सख़्त परेशान व मुज़्त़रिब हूं लिहाज़ा मुझे कैसे शोहर की ह़ाजत हो सकती है ?और कैसे उस के लिये फ़ारिग़ वक़्त निकाल सकती हूं।"

सितार बजाने वाली की तौबा :

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं कि मैं ने एक लड़की को देखा जो सितार बजाती थी। एक दिन वोह किसी क़ारिये क़ुरआन के पास से गुज़री जो इस आयते मुबारका की तिलावत कर रहा था :

﴿2﴾ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ۝
(پ۱۰،التوبۃ:۴۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक जहन्नम घेरे हुए है काफ़िरों को।

आयते मुबारका सुनते ही उस ने सितार फेंक दिया, एक ज़ोरदार चीख़ मारी और बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर गई। जब इफ़ाक़ा हुवा तो उस ने सितार को तोड़ दिया और इ़बादत व रियाज़त में मश्ग़ूल हो गई, यहां तक कि इ़बादत की वजह से मा'रूफ़ व मश्हूर हो गई। एक दिन मैं उस के पास गया, और उसे कहा : "अपने नफ़्स के लिये नर्मी इख़्तियार करो।" तो वोह रोने लग गई और कहने लगी : "काश ! मुझे मा'लूम हो जाए कि जहन्नमी अपनी क़ब्रों से कैसे निकलेंगे ? पुल सिरात़ कैसे उ़बूर करेंगे ? क़ियामत की हौलनाकियों से कैसे नजात पाएंगे ? खोलते हुए गर्म पानी को कैसे घूंट घूंट कर के पियेंगे ? और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की डांट को कैसे सुन सकेंगे ? फिर वोह बेहोश हो कर गिर पड़ी। जब इफ़ाक़ा हुवा तो इल्तिजा करने लगी : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ने जवानी में तेरी नाफ़रमानी की और अब कमज़ोरी की ह़ालत में तेरी इत़ाअ़त कर रही हूं, क्या तू मेरी इ़बादत क़बूल फ़रमा लेगा ?" फिर उस ने एक आहे सर्द दिले पुर दर्द से खींची और कहा : "आह ! कल क़ियामत कितने ही लोगों के ऐ़ब खोल देगी।" फिर उस ने एक चीख़ मारी और आहो बुका करने लगी। मजलिस के सभी लोग उस की शिद्दते गिर्या व ज़ारी से बेहोश हो गए।

ज़ियारते बैतुल्लाह शरीफ़ का अनोखा शौक़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि उम्मे दाब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا का शुमार बुलन्द पाया सालिह़ात व आ़बिदात में होता है। उन की उ़म्र नव्वे (90) बरस हो चुकी थी। हर साल मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا से मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا पैदल चल कर ह़ज करने आती थीं। उन की बीनाई चली गई। जब ह़ज का मौसिम आया, औ़रतें उन के पास उन की ज़ियारत के लिये ह़ाज़िर हुईं, उन को आप की बीनाई चले जाने का बहुत ग़म हुवा, आप ने गिर्या व

ज़ारी करते हुए अपने सर को आस्मान की त़रफ़ बुलन्द कर के बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में यूं अ़र्ज़ की : ''या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! मेरी आंखों का नूर चला गया तो क्या हुवा ? तेरी बारगाह में ह़ाज़िरी के शौक़ के अन्वार तो अभी बाक़ी हैं।'' फिर एह़राम बांध कर ''لَبَّیْکَ اَللّٰھُمَّ لَبَّیْکَ'' कहते हुए अपनी रुफ़क़ा के साथ चल पड़ीं। आप उन के साथ चलते हुए कभी आगे निकल जातीं। ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मुझे उस के ह़ाल पर बड़ा तअ़ज्जुब हुवा तो हातिफ़े ग़ैबी से आवाज़ आई : ''ऐ ज़ुन्नून ! क्या तुम इस बुढ़िया पर तअ़ज्जुब करते हो जिसे अपने मौला عَزَّوَجَلَّ के घर का शौक़ था पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने लुत़्फ़ो करम फ़रमाते हुए उसे अपने घर की त़रफ़ चला दिया और इस की त़ाक़त अ़त़ा फ़रमाई।''

चार मक़्बूल लड़कियां :

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मरवान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان जो फ़क़्र व तक़्वा और परहेज़गारी इख़्तियार करने वालों में से थे, फ़रमाते हैं कि एक मरतबा मैं का'बए मुशर्रफ़ा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में रुक्ने यमानी के क़रीब त़वाफ़ में मश्ग़ूल था कि अचानक चार लड़कियों को आते देखा, उन पर मक़्बूलिय्यत के आषार नुमायां थे। इन में सब से बड़ी ने ग़िलाफ़ से लिपट कर आ़जिज़ी व इन्किसारी का इज़्हार करते हुए बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की :

اِلَیْکَ حَجِّیْ لَا لِلْبَیْتِ وَالْحَجَرِ   وَلَا طَوَافَ بِاَرْکَانٍ وَّلَا جُدُرٍ

तर्जमा : मेरा ह़ज तो सिर्फ़ तेरे लिये है, न बैतुल्लाह शरीफ़ का, न ह़जरे अस्वद का, न अरकान का त़वाफ़ और न ही दीवारों का।

फिर उस ने अपने सर को बुलन्द कर के अ़र्ज़ की : ''या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरी मह़ब्बत ने मुझे मुज़्त़रिब कर दिया है और मैं इ़श्क़ो मह़ब्बत में गिरिफ़्तार हो गई हूं, अब मैं तेरी बारगाह में ह़ाज़िर हूं, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अगर मेरी लग़्ज़िशों ने मुझे तेरी बारगाह से लौटा दिया तो मुझे मेरी मह़ब्बत तेरे दरवाज़े पर खींच लाएगी। अगर मेरे गुनाहों ने मुझे तेरे दरवाज़े से दूर कर दिया तो तेरे अ़फ़्वो करम की उम्मीद मुझे तेरे क़रीब कर देगी। अगर मेरी ख़त़ाओं ने मुझे क़ैद करा दिया तो तेरी त़रफ़ रुजूअ़ में मेरा इख़्लास मुझे आज़ाद करा देगा। या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे तेरा विसाल कब ह़ासिल होगा, तेरी बारगाहे जमाल तक कब पहुंचूंगी ? ऐ वह़शत ज़दों के दोस्त ! ऐ मुह़िब्बीन के मह़बूब ! ऐ ख़ाइफ़ीन को पनाह देने वाले ! ऐ गुनहगारों पर रह़्म करने वाले और ऐ ताइबीन की तौबा क़बूल फ़रमाने वाले ! ऐ सब से बढ़ कर रह़्म फ़रमाने वाले ! मुझ पर अपनी ख़ास रह़मत का नुज़ूल फ़रमा और मेरी मग़फ़िरत फ़रमा।'' फिर उस ने लम्बा सांस लिया और चन्द अश्आ़र पढ़े :

اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ مِمَّا کَانَ مِنْ زَلَلِیْ   وَ مِنْ ذُنُوْبِیْ وَتَفْرِیْطِیْ وَاِصْرَارِیْ
یَا رَبِّ ھَبْ لِیْ ذُنُوْبِیْ یَا کَرِیْمُ فَقَدْ   اَمْسَکْتُ حَبْلَ الرَّجَاءِ یَا خَیْرَ غَفَّارٍ

तर्जमा : मैं अपने गुनाहों, लग्ज़िशों, ख़ताओं और गुनाह पर इसरार से मग्फ़िरत चाहती हूं, ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ ऐ करीम मेरे गुनाहों की मग्फ़िरत फ़रमा दे, ऐ बख़्शने वाले मेहरबान ! मैं ने उम्मीद की रस्सी को मज़बूती से थाम लिया है।

फिर वोह ग़मगीन व परेशान बैठ गई। और दूसरी मुज़तरिब व बे क़रार हो कर गिर्या व ज़ारी करते हुए पुकारने लगी : "ऐ तमाम उम्मीदों की इन्तिहा ! ऐ नेकों को नेक आ'माल पर उभारने वाले ! ऐ आ़रिफ़ीन के दिलों में मह़ब्बत की क़िन्दीलें रोशन करने वाले ! ऐ वह़शत ज़दों के अनीस ! ऐ दिलों के त़बीब ! ऐ गुनाहों को बख़्शने वाले ! मेरा जिस्म तेरी मह़ब्बत से पिघल रहा है, मुझे तेरी बारगाह में पेश होने से शर्म आती है, ऐ सब से बढ़ कर रह़्म फ़रमाने वाले ! मुझ पर अपनी ख़ास रह़मत का नुज़ूल फ़रमा और मुझ से दर गुज़र फ़रमा।" फिर वोह इधर उधर घूमने लगी और येह अश्आ़र पढ़ रही थी :

اَتَيْتُكَ اَشْتَكِيْ سُقْمِيْ وَدَآئِيْ ۔۔۔ وَعِنْدَكَ يَا مُنٰى قَلْبِيْ دَوَآئِيْ

فَلَآ اَحَدٌ سِوَاكَ اِلَيْهِ اَشْكُوْ ۔۔۔ فَيَرْحَمَ عَبْرَتِيْ وَ يَرٰى بُكَآئِيْ

فَيَا مَوْلَى الْوَرٰى جُدْ لِيْ بِعَفْوٍ ۔۔۔ وَّمَنٍّ بِنَظْرَةٍ فِيْهَا شِفَآئِيْ

तर्जमा : मैं तेरी बारगाह में अपनी कमज़ोरी व बीमारी की दरख़्वास्त ले कर ह़ाज़िर हुई हूं, ऐ मेरे दिल की आरज़ू ! मेरे मरज़ की दवा तेरे पास है। तेरे सिवा कोई नहीं जिसे मैं अपनी बीमारी बता सकूं और वोह मेरी गिर्या व ज़ारी को देखे और मेरे आंसूओं पर रह़्म करे। ऐ सारी मख़्लूक़ के मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ अपनी बख़्शिश व करम फ़रमा कर मुझ पर एह़सान फ़रमा, और ऐसी नज़रे रह़मत फ़रमा दे जिस में मेरी शिफ़ा हो।

फिर वोह बैठ गई और तीसरी खड़ी हुई, वोह भी काफ़ी देर तक रोती रही। फिर अ़र्ज़ करने लगी : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे गुनाहों ने मुझे तेरे दरवाज़े से धुत्कार दिया है और हमेशा की ग़फ़्लत ने तेरी बारगाह से दूर कर दिया है, मैं तेरे दरवाज़े पर ज़िल्लत व मोह़ताजी के साथ गुनाहों और ख़त़ाओं की मुआ़फ़ी की आस लगाए खड़ी हूं, मैं तेरे अ़ज़ाब से फ़रार हो कर तेरी पनाह में आ गई हूं," फिर उस ने भी चन्द अश्आ़र पढ़े, जो येह हैं :

بِبَابِكَ رَبِّيْ قَدْ اَنَخْتُ رَكَآئِبِيْ ۔۔۔ وَ مَا لِيْ مَنْ اَرْجُوْهُ يَا خَيْرَ وَاهِبِ

سِوَاكَ فَجُدْ لِيْ بِالَّذِيْ اَنْتَ اَهْلُهٗ ۔۔۔ لَاُعْطِيَ مِنَ الْاَفْضَالِ اَسْنَى الْمَوَاهِبِ

اِذَا لَمْ اَمُتْ شَوْقًا اِلَيْكَ وَحَسْرَةً ۔۔۔ عَلَيْكَ فَلَا بَلَغْتُ مِنْكَ مَآرِبِيْ

तर्जमा : ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ तेरे दरवाज़े पर मैं ने डेरा लगा लिया है, ऐ बेहतर अ़त़ा करने वाले ! तेरे इलावा मेरा कौन है जिस से मैं उम्मीद रखूं, मुझ पर अपनी शान के मुत़ाबिक़ जूदो करम फ़रमा और मुझे अपना बेहतरीन फ़ज़्ल अ़त़ा फ़रमा, अगर मैं तेरे शौक़े दीदार और ह़सरते दीदार में न मरी तो अपने मक़्सूद को न पहुंची।

इस के बा'द वोह अपनी आंखों से आंसूओं की लड़ी बहाते हुए बैठ गई और चौथी लड़की रोते हुए खड़ी हुई, वोह ह़सरत के आ़लम में अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी त़लब कर रही थी। चुनान्चे, उस ने अ़र्ज़ की : "या इलाही عَزَّوَجَلَّ तू ने इ़बादत व रियाज़त करने वालों को हुक्म दिया कि वोह तेरे दरवाज़े पर खड़े हों और मुझे मा'लूम नहीं कि मैं इन में से हूं या नहीं। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर मुआ़फ़ करना तेरी सिफ़त न होती तो इ़बादत व कोशिश करने वाले जब गुनाहों में मुब्तला होते तो तेरी बारगाह में न आते। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर तू मुआ़फ़ न कर सकता तो मैं तुझ से मग़फ़िरत की उम्मीद न रखती। बेशक तेरी ही येह शान है कि तू मुझ पर अपनी वसीअ़ रह़मत के साथ करम फ़रमा सकता है। ऐ वोह ज़ात जिस से कोई पोशीदा से पोशीदा शै भी मख़्फ़ी नहीं ! ऐ वोह ज़ात जिस की ने'मतें कभी ख़त्म नहीं होतीं ! तू मेरे गुनाहों की पर्दा पोशी फ़रमा, तू ही मेरा मत़लूब व मक़्सूद है।" फिर उस ने दर्जे ज़ैल अश्आ़र पढ़े :

تَعَطَّفْتَ بِفَضْلٍ مِّنْكَ يَا مَالِكَ الْوَرٰى ۔۔۔ فَاَنْتَ مَلَاذِىْ سَيِّدِىْ وَ مُعِيْنِىْ

لَئِنْ اَبْعَدَتْنِىْ عَنْ جَنَابِكَ زَلَّتِىْ ۔۔۔ فَاِنَّ رَجَآئِىْ فِيْكَ حُسْنُ يَقِيْنِىْ

وَظَنِّىْ جَمِيْلٌ اِنَّنِىْ مِنْكَ اَرْتَجِىْ ۔۔۔ عَوَاطِفَكَ الْحُسْنٰى فَخُذْ بِيَمِيْنِىْ

तर्जमा : ऐ मख़्लूक़ के मालिक عَزَّوَجَلَّ अपने फ़ज़्ल से मुझ पर इनायत की हवा चला दे। तू मेरी पनाह गाह, मेरा मालिक और मेरी मदद फ़रमाने वाला है। अगर मेरी लग़्ज़िशों ने मुझे तेरी बारगाह से दूर कर दिया है तो कोई ग़म नहीं क्यूंकि तेरे मुतअ़ल्लिक़ मुझे हुस्ने ज़न है। मेरा हुस्ने ज़न येह है कि मैं तुझ से तेरे इन्आ़म व इकराम की उम्मीद रखूं लिहाज़ा मेरी दस्तगीरी फ़रमा।

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मरवान رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मुझे उन की गुफ़्तगू और दुआ़ सुन कर बहुत सुकून मिला और उन के नसीह़त भरे बयानात से मेरी आंखें अश्कबार हो गईं।

एक ख़ाइफ़ा का ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ:

मन्क़ूल है कि एक औ़रत का'बतुल्लाह शरीफ़ زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا के पास रहती थी, जिस का नाम ह़कीमा था। जब का'बए मुशर्रफ़ा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا के दरवाज़े को खुलता हुवा देखती तो ज़ोरदार चीख़ मार कर बे होश हो जाती। एक दिन उस के अ़दम मौजूदगी में दरवाज़ा खोला गया। जब वोह आई तो उस से कहा गया : "ऐ ह़कीमा ! आज (तेरी अ़दम मौजूदगी में) बैतुल्लाह शरीफ़ का दरवाज़ा खोला गया, अगर तू त़वाफ़ करने वालों को ह़ालते एह़राम में तल्बिय्या ("لَبَّيْکَ اللّٰهُمَّ لَبَّيْکَ") कहते हुए देख लेती तो तेरी आंखे ठंडी हो जातीं। क्यूंकि इन में से हर एक का दिल शौक़ से ज़ख़्मी था और वोह अपने रब्ब की त़रफ़ से रह़मत व मग़फ़िरत का इन्तिज़ार करते हुए आ़जिज़ी व इन्किसारी से गिर्या कुनां था।" येह सुनते ही उस ने ऐसी चीख़ मारी जिस से दिल घबरा जाएं, और फिर कुछ देर तड़पती रही यहां तक कि इस अफ़्सोस में उस ने अपनी जान क़ुरबान कर दी कि वोह अपना मत़लूब न पा सकी और नेक बन्दों के गुरोह में का'बए मुशर्रफ़ा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की ज़ियारत न कर सकी और दुन्या में कोई चीज़ उस के लिये इस ने'मत का इ़वज़ या बदला न बनाई गई लिहाज़ा उस ने अपनी जान क़ुरबान कर दी।

एक ख़ुदा शनास मजनूना :

हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं मुझे येह ख़बर पहुंची कि ज़बले मक़त़म के क़रीब एक आ़बिदा लड़की रहती है। मैं ने चाहा कि उस की ज़ियारत करूं। चुनान्चे, मैं उस पहाड़ के क़रीब जा कर तलाश करता रहा लेकिन वोह दिखाई न दी, मेरी मुलाक़ात आ़बिदों की एक जमाअ़त से हुई, मैं ने उन से उस के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो वोह कहने लगे : "तुम एक मजनूना के बारे में पूछते हो और अ़क़्ल मन्दों के मुतअ़ल्लिक़ नहीं पूछते ?" मैं ने कहा : "मुझे उसी के मुतअ़ल्लिक़ बताओ, अगर्चे वोह मजनूना है।" वोह फिर कहने लगे : "हम उसे अपने क़रीब से गुज़रते हुए देखते हैं कि वोह कभी गिरती है तो कभी खड़ी हो जाती है, कभी चीख़ो पुकार करती है तो कभी ख़ामोश हो जाती है, कभी रोती है तो कभी हंसती है।" मैं ने कहा : "मुझे उस का पता बताओ।" तो उन में से एक ने बताया कि "आप फ़ुला वादी में चले जाएं।" चुनान्चे, मैं उस की तलाश में चल पड़ा। जब मैं उस के क़रीब पहुंचा तो धीमी धीमी आवाज़ में उसे चन्द अश्आ़र पढ़ते सुना, जिन का मफ़्हूम येह है :

"ऐ वोह ज़ात जिस के ज़िक्र से दिल उन्स महसूस करते हैं ! मख़्लूक़ से कनारा कश हो कर मेरी उम्मीद सिर्फ़ तेरी ही ज़ाते करीमाना है। ऐ वोह ज़ात कि तमाम लोग जिस के बन्दे हैं ! ज़माना गुज़र जाएगा मगर तेरी मह़ब्बत दिलों में हर दम तरो ताज़ा रहेगी।"

आप رَحۡمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیۡه फ़रमाते हैं कि मैं इस आवाज़ के पीछे चल पड़ा तो एक लड़की को देखा, वोह बहुत बड़ी चट्टान पर बैठी थी। मैं ने उसे सलाम किया तो वोह जवाब देने के बा'द कहने लगी : "ऐ ज़ुन्नून ! क्या हुवा कि एक मजनूना को ढूंड रहे हैं ?" मैं ने पूछा : "क्या तुम मजनूना हो ?" बोली : "जी हां, अगर मैं मजनूना न होती तो मुझे ऐसा क्यूं कहा जाता ?" फिर मैं ने पूछा : "किस वजह से तुम मजनूना हो गई हो ?" तो उस ने जवाब दिया : "ऐ ज़ुन्नून ! मह़बूबे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत ने मुझे बांध रखा है और उसी के इ़श्क़ ने मुझे बेचैन कर दिया है।" फिर मैं ने पूछा : "तुम्हारे इ़श्क़ व मह़ब्बत का मक़ाम क्या है ?" तो उस ने जवाब दिया : "ऐ ज़ुन्नून ! मह़ब्बत व इ़श्क़ का मक़ाम दिल है और वज्द का मक़ाम बात़िन है।" फिर वोह शदीद गिर्या कुनां हुई, यहां तक कि उस पर ग़शी त़ारी हो गई। जब इफ़ाक़ा हुवा तो शिद्दते मह़ब्बत से एक आहे सर्द दिले पुर दर्द से खींचते हुए कहा : "ऐ ज़ुन्नून ! मह़बूबे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत करने वालों की मौत यूं आती है।" फिर एक ज़ोरदार चीख़ मार कर ज़मीन पर गिर गई, मैं ने उसे हिला जुला कर देखा तो उस की रूह़ परवाज़ कर चुकी थी।

एक आ़रिफ़ा का आ़रिफ़ाना कलाम :

हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र ख़ुल्दी عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡهَادِی फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡهَادِی को फ़रमाते सुना कि मैं ने एक साल तन्हा ह़ज किया और मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا में ही ठहर गया। जब रात तारीक हो गई तो त़वाफ़ के लिये मत़ाफ़ (या'नी त़वाफ़ की जगह)

में दाख़िल हुवा। दौराने त़वाफ़ मैं ने एक लड़की देखी जो बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ कर रही थी। वोह कुछ अश्आर पढ़ रही थी, जिन का मफ़्हूम येह है : "मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ ने पोशीदा रहने से इन्कार कर दिया। मैं ने उसे बहुत छुपाया मगर उस ने मेरे पास डेरे डाल लिये। जब मेरा इ़श्क़ शिद्दत इख़्तियार करता है तो मह़बूबे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की याद से मेरा दिल दीवाना हो जाता है। अगर मैं अपने मह़बूब से क़ुर्ब ह़ासिल करने का इरादा करूं और वोह मुझे विसाल की दौलत से सरशार कर दे तो मेरा दिल मुत़मइन हो जाए और मुझ पर मदहोशी त़ारी हो जाए यहां तक कि मैं उस के दीदार की लज़्ज़त उठाऊं और ख़ुशी से झूम जाऊं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं कि मैं ने कहा : ऐ सआ़दत मन्द लड़की ! क्या तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा नहीं कि इस अ़ज़ीम मक़ाम पर ऐसा कलाम कर रही हो, तो वोह मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हुई और कहने लगी : "ऐ जुनैद ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस से मह़ब्बत करने वाले के दरमियान ह़ाइल न हो।" फिर उस ने चन्द अश्आ़र पढ़े, जिन का मफ़्हूम येह है :

"अगर मह़बूबे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात का मुआ़मला न होता तो आप मुझे मीठी नींद छोड़ ने वाला न देखते। मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बे वत़न कर दिया है जैसे आप मेरे वत़न के मुतअ़ल्लिक़ ख़याल कर रहे हैं। मैं ने अपने मह़बूबे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात का पुख़्ता इरादा कर लिया है पस उस की मह़ब्बत ने मुझे दीवाना बना दिया है।"

फिर कहने लगी : ऐ जुनैद ! आप का'बए मुशर्रफ़ा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا का त़वाफ़ कर रहे हैं क्या आप ने का'बे के रब्ब عَزَّوَجَلَّ को देखा है ? मैं ने कहा : "आप को इस दा'वे की दलील क़ाइम करनी होगी तो उस ने अपना सर आस्मान की त़रफ़ उठा लिया और कहने लगी : तू पाक है, तू पाक है, तेरी शान कितनी बुलन्द है ! तेरी बादशाही कितनी इ़ज़्ज़त वाली है ! येह लोग पथ्थरों जैसे हैं जो अहले मा'रिफ़त का इन्कार करते हुए त़वाफ़ कर रहे हैं।" फिर उस ने चन्द अश्आ़र पढ़े, जिन का मफ़्हूम येह है :

"लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल करने के लिये बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ कर रहे हैं जब कि उन के दिल चट्टानों से ज़ियादा सख़्त हैं। अगर वोह तन्हाई में मुख़्लिस होते तो इन की सिफ़ात उ़म्दा हो जातीं और उन की ज़ात में बयान करने के लिये सिफ़ाते ह़क़ क़ाइम हो जातीं।" ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं कि उस का आ़रिफ़ाना कलाम सुन कर मुझ पर ग़शी त़ारी हो गई, जब इफ़ाक़ा हुवा तो मैं ने उसे बहुत तलाश किया मगर कहीं न पाया।

एक आ़बिदा की नसीह़त भरी बातें :

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि मेरे सामने एक आ़बिदा व ज़ाहिदा की ता'रीफ़ की गई जो बहुत बा अ़मल और कषरत से इ़बादत करने वाली थी। मैं ने उस की त़रफ़ जाने का इरादा कर लिया। चुनान्चे, मैं ने देखा कि वोह दिन को रोज़े रखती, रात को क़ियाम

करती, न तो इबादत से कभी ग़ाफ़िल होती और न ही नेकियों से उसे कोई उक्ताहट होती। वोह एक राहिब ख़ाने में रहती थी। रात के वक़्त जब अंधेरा छा गया तो मैं ने उसे येह कहते हुए सुना : "मेरा मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ नहीं सोता और नींद उस के शायाने शान नहीं, तो फिर उस की बन्दी कैसे सो जाए, तेरी इज़्ज़तो जलाल की क़सम ! आज रात मैं नहीं सोऊंगी।" जब सुब्ह हुई तो मैं ने उसे सलाम किया और उस ने जवाब दिया। मैं ने कहा : "ऐ लड़की ! तू ईसाइयों के ठिकाने में रहती है जब कि तू इबादत में इस मक़ाम पर है ?" तो वोह कहने लगी : "ऐ ज़ुन्नून ! ऐसी छोटी बात न करें, आप तो उस अ़ज़ीम मक़ाम पर फ़ाइज़ हैं कि आप के दिल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इलावा किसी का ख़याल नहीं आता, और न ही कोई वह्म पैदा होता है।" मैं ने उस से कहा : "क्या तुम इस गिर्जे में वह्शत महसूस नहीं करती ?" उस ने कहा : "वोह ज़ात जिस ने मेरे दिल को अपनी लतीफ़ हिक्मत से भर दिया और मुझे अपनी महब्बत अ़ता कर दी, मैं अपने दिल में उस के इलावा किसी के लिये कोई जगह नहीं पाती और न ही मेरे जिस्म में कोई ऐसी रग है जो उस की महब्बत व मा'रिफ़त से लबरेज़ न हो, तो मैं क्यूंकर उस के ज़िक्र से मानूस न होऊंगी, मैं तो हमेशा उस की बारगाह में होती हूं।"

फिर मैं ने कहा : "आप ने राहे सुलूक की त़रफ़ मेरी रहनुमाई फ़रमाई है, पस मुझे भी ऐसी क़ौम के रास्ते पर चलाइये, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं गुनाहों के समन्दर में ग़र्क़ हूं।" तो उस ने नसीहत करते हुए कहा : "ऐ ज़ुन्नून ! तक़्वा को अपना तोशा बना लो और आख़िरत को अपना मक़्सद बना लो, ज़ोहदो तक़्वा को अपनी सुवारी बना लो और सब से कट कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह रहने को अपनी आ़दत बना लो, और इस दुन्या को अपने दिल से निकाल दो, येह आप के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से रुजूअ़ का सबब होगा। और ख़ाइफ़ीन के रास्ते को अपना कर, नाफ़रमानों के रास्ते को तर्क कर दीजिये, मुवह्हिदीन की फ़ेहरिस्त में आप लिखे जाएंगे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आप की ह़ाज़िरी इस ह़ाल में होगी कि आप के और उस के दरमियान कोई ह़िजाब न होगा, और न ही कोई दरबान आप को रोकेगा।" ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि उस के कलाम ने मेरे दिल पर बहुत अषर किया और वोही मेरे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ रुजूअ़ का सबब बना, फिर उस ने मुझे वहीं छोड़ा और चली गई।

وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْن

बयान 28 : सूर फूंकने का बयान

﴿وَنُفِخَ فِی الصُّوۡرِ فَصَعِقَ مَنۡ فِی السَّمٰوٰتِ وَمَنۡ فِی الۡاَرۡضِ اِلَّا مَنۡ شَآءَ اللّٰہُ ؕ
ثُمَّ نُفِخَ فِیۡہِ اُخۡرٰی فَاِذَا ہُمۡ قِیَامٌ یَّنۡظُرُوۡنَ ۝ (پ ۲۴، الزمر: ۶۸)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और सूर फूंका जाएगा, तो बे होश हो जाएंगे, जितने आस्मानों में हैं और जितने ज़मीन में, मगर जिसे **अल्लाह** चाहे, फिर वोह दोबारा फूंका जाएगा जभी वोह देखते हुए खड़े हो जाएंगे।*(1)

ह़म्दे बारी तआ़ला :

सब ख़ूबियां उस ज़ात के लिये हैं वह्म व गुमान जिस का इदराक नहीं कर सकते, न आंखें उस का इह़ात़ा कर सकती है। न उसे आफ़ात आती हैं न मौत। उस ने किताब को नाज़िल फ़रमाया, बादल बरसाया, तर फलों को ख़ुश्क टहनियों से निकाला और इन्सान को ख़ुश्क बजती मिट्टी से पैदा किया जो अस्ल में एक सियाह, बूदार गारा थी। वोह ख़ुद अपनी क़ुदरते कामिला को यूं बयान फ़रमाता है : ''وَاِذَا قَضٰۤی اَمۡرًا فَاِنَّمَا یَقُوۡلُ لَہٗ کُنۡ فَیَکُوۡنُ ۝ (پ ۱، البقرہ: ۱۱۷)'' **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जब किसी बात का हुक्म फ़रमाए तो उस से येही फ़रमाता है कि हो जा, वोह फ़ौरन हो जाती है।

उस की क़ुदरत से सब कुछ पैदा हुवा। उस की रह़मत से लगातार ने'मतें मिलीं। उस की ह़िक्मत से ज़मीनो आस्मान शक़ हुए। उस की मशिय्यत व इरादे से सआ़दत व शक़ावत लिखी गई।

क़ुरआने पाक में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

---

(1)....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : ''येह पहले नफ़्ख़े का बयान है। इस नफ़्ख़े से जो बे होशी त़ारी होगी उस का येह अषर होगा कि मलाइका और ज़मीन वालों से उस वक़्त जो लोग ज़िन्दा होंगे, जिन पर मौत न आई होगी, वोह इस से मर जाएंगे और जिन पर मौत वारिद हो चुकी फिर **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें ह़यात इनायत की वोह अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं। जैसे कि अम्बिया व शुहदा। उन पर इस नफ़्ख़े से बे होशी की सी कैफ़िय्यत त़ारी होगी और जो लोग क़ब्रों में मरे पड़े हैं उन्हें इस नफ़्ख़े का शुऊ़र भी न होगा। (जमल वग़ैरा)। इस इस्तिषना में कौन कौन दाख़िल है। इस में मुफ़स्सिरीन के बहुत अक़्वाल हैं : ''ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि नफ़्ख़े सइक़ से तमाम आस्मान और ज़मीन वाले मर जाएंगे सिवाए जिब्रईल व मीकाईल व इसराफ़ील व मलकुल मौत के। फिर **अल्लाह** तआ़ला दोनों नफ़्ख़ों के दरमियान जो चालीस बरस की मुद्दत है, इस में उन फ़िरिश्तों को भी मौत देगा। दूसरा क़ौल येह है कि मुस्तषना शुहदा हैं जिन के लिये क़ुरआने मजीद में ''بَلْ اَحْيَاءٌ'' आया है। ह़दीष शरीफ़ में भी है कि वोह शुहदा हैं जो तल्वारें ह़माइल किये गिर्दे अ़र्श ह़ाज़िर होंगे। तीसरा क़ौल ह़ज़रते जाबिर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया कि ''मुस्तषना ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام हैं। चूंकि आप तूर पर बे होश हो चुके हैं इस लिये इस नफ़्ख़े से आप बे होश न होंगे। बल्कि आप मुतीक़ज़, होशियार रहेंगे। चौथा क़ौल येह है कि मुस्तषना जन्नत की ह़ूरें और अ़र्श व कुरसी के रहने वाले हैं। ज़ह़्ह़ाक का क़ौल है कि ''मुस्तषना रिज़्वान और ह़ूरें और वोह फ़िरिश्ते जो जहन्नम पर मामूर हैं वोह और जहन्नम के सांप बिच्छू हैं। (तफ़्सीरे कबीर व जमल)। येह नफ़्ख़ए षानिय्या है जिस से मुर्दे ज़िन्दा किये जाएंगे अपनी क़ब्रों से और देखते हुए खड़े होने से या तो येह मुराद है कि वोह ह़ैरत में आ कर मबहूत की त़रह़ हर त़रफ़ निगाहें उठा उठा कर देखेंगे। या येह मा'ना हैं कि ''वोह येह देखते होंगे कि अब इन्हें क्या मुआ़मला पेश आएगा और मोअमिनीन की क़ब्रों पर **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत से सुवारियां ह़ाज़िर की जाएंगी। जैसा कि **अल्लाह** तआ़ला ने वा'दा फ़रमाया, ''يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا''

يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ ۝ (پ٢٠،العنكبوت:٢١) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अ़ज़ाब देता है जिसे चाहे और रह़्म फ़रमाता है जिस पर चाहे और तुम्हें उसी की त़रफ़ फिरना है।

अ़क़्ल मन्दों के सीनों को शिफ़ा देता और अपनी पुख़्ता तख़्लीक़ात से हर शको शुबा दूर करता है। चुनान्चे, ख़ुद इरशाद फ़रमाता है وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ۝ (پ٢١،الروم:٢٠) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उस की निशानियों से है येह कि तुम्हें पैदा किया मिट्टी से फिर जभी तुम इन्सान हो दुन्या में फैले हुए।

उस ने अपनी ह़िक्मते कामिला से मुख़्तलिफ़ क़िस्म की अश्या पैदा फ़रमाईं और गुज़श्ता व आयन्दा की अश्या को एक अन्दाज़े से रखा और तौबा करने वाले के तमाम गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दिये। चुनान्चे, इरशाद फ़रमाता है : وَهُوَ الَّذِىْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ۝ (پ٢٥،الشورىٰ:٢٥) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता और गुनाहों से दरगुज़र फ़रमाता है और जानता है जो कुछ तुम करते हो।"(1)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ नए नए ज़माने ईजाद करता है। मां के पेट में मर्दों, औ़रतों की सूरतें बनाता है। क़ब्र वालों को उठाएगा तो वोह ज़िन्दा हो कर उठ खड़े होंगे। चुनान्चे, क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है : وَنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ ۝ (پ٢٣،يس:٥١) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और फूंका जाएगा सूर जभी वोह क़ब्रों से अपने रब्ब की त़रफ़ दौड़ते चलेंगे। और अपनी क़ुदरत की निशानी, सूरज के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाता है :

وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ۝ (پ٢٩،نوح:١٦) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और सूरज को चराग़ (किया)।*

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने बदलियों से ज़ोर का पानी उतारा और अगर वोह चाहे तो उसे खारी कर दे फिर उस का शुक्र क्यूं नहीं करते जो करीम है, क़द्र फ़रमाने वाला है, मेहरबान है, बख़्शने वाला है, अपने फ़ैसलों में ज़ुल्म व सितम से पाक है, ज़मीनो आस्मान का ख़ालिक़ है। ख़ुद क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है : اَلَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ط ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ۝ (پ٧،الانعام:١) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए, और अन्धेरियां और रोशनी पैदा की, इस पर काफ़िर लोग अपने रब्ब के बराबर ठहराते हैं। (2)

1.....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं :
मस्अला : तौबा हर एक गुनाह से वाजिब है और तौबा की ह़क़ीक़त येह है कि आदमी बदी व मा'सियत से बाज़ आए और जो गुनाह इस से सादिर हुवा इस पर नादिम हो और हमेशा गुनाह से मुजतनिब रहने का पुख़्ता इरादा करे और अगर गुनाह में किसी बन्दे की ह़क़ तलफ़ी भी थी तो उस ह़क़ से बत़रीक़े शरई ओ़हदा बर आ हो।"

2......मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते का'बुल अह़बार رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : "तौरेत में सब से अव्वल येही आयत है। इस आयत में बन्दों को शाने इस्तिग़ना के साथ ह़म्द की ता'लीम फ़रमाई गई और पैदाइशे आसमान व ज़मीन का ज़िक्र इस लिये है कि इन में नाज़िरीन के लिये बहुत अ़जाइबे क़ुदरत व ग़राइबे ह़िक्मत और इ़ब्रतें व मनाफ़ेअ़ हैं। या'नी हर एक अन्धेरी और रोशनी ख़्वाह वोह अन्धेरी शब की हो या कुफ़्र की या जहल की या जहन्नम की और रोशनी ख़्वाह दिन की हो या ईमान व हिदायत व इ़ल्म व जन्नत की। ज़ुल्मात को जम्अ़ और नूर को वाह़िद के सीग़े से ज़िक्र फ़रमाने में इस त़रफ़ इशारा है कि बात़िल की राहें बहुत कसीर हैं और राहे ह़क़ सिर्फ़ एक दीने इस्लाम। या'नी बा वुजूद ऐसे दलाइल पर मुत्तलअ़ होने और ऐसे निशान हाए क़ुदरत देखने के, दूसरों को ह़त्ता कि पथ्थरों को पूजते हैं। बा वुजूद येह कि उस के मुक़िर हैं कि आस्मानों और ज़मीन का पैदा करने वाला **अल्लाह** है।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तूल व अर्ज़ में फैली हुई तमाम अश्या का भी मालिक है, अपने बन्दों के फ़राइज़ व सुनन क़बूल फ़रमाता है, सब को उसी की त़रफ़ लौटना और उसी की बारगाह में पेश होना है। चुनान्चे, अपनी वसीअ़ क़ुदरत के बारे में इरशाद फ़रमाता है :

وَلَهٗ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ○(پ ۲۱،الروم:۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उसी के हैं जो कोई आस्मानों और ज़मीन में हैं, सब उसी के ज़ेरे हुक्म हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्सान को मज़बूत़ व मुस्तह़कम पैदा फ़रमाया, और उस में त़ाक़त व क़ुव्वत को वदीअ़त फ़रमाया। जैसा कि क़ुरआने मजीद में फ़रमाता है :

وَهُوَ الَّذِیْۤ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّ مُسْتَوْدَعٌؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ یَّفْقَهُوْنَ○ (پ۷،الانعام: ۹۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोही है जिस ने तुम को एक जान से पैदा किया फिर कहीं तुम्हें ठहरना है और कहीं अमानत रहना बेशक हम ने मुफ़स्सल आयतें बयान कर दीं समझ वालों के लिये।

उस ने राहे हिदायत को ज़ाहिर फ़रमाया और उस के तमाम रास्तों को बयान फ़रमाया, और अपने बन्दों पर अपनी पै दर पै मिलने वाली ने'मतों की तक्मील फ़रमाई, और वह़दानिय्यत का इक़रार करने वालों के चेहरे रोशन फ़रमाए तो इन के चेहरे मुस्कुराते और खिल खिलाते हैं। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में ऐसों की शान यूं बयान फ़रमाता है :

لَا یَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَ تَتَلَقّٰىهُمُ الْمَلٰٓىٕكَةُؕ هٰذَا یَوْمُكُمُ الَّذِیْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ○(پ۱۷،الانبیآء:۱۰۳) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उन्हें ग़म में न डालेगी वोह सब से बड़ी घबराहट और फ़िरिश्ते उन की पेशवाई को आएंगे कि येह है तुम्हारा वोह दिन जिस का तुम से वा'दा था।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बदलियों से पानी उतारा, और अपने फ़ज़्लो करम से कामिल त़ौर पर ने'मतें अ़त़ा फ़रमाईं, अपने बन्दों के मुतअ़ल्लिक़ जो चाहता है फ़ैसला फ़रमाता है। क्यूंकि, ख़ुद इरशाद फ़रमाता है : لَا یُسْــٴَـلُ عَمَّا یَفْعَلُ وَ هُمْ یُسْــٴَـلُوْنَ○(پ۱۷،الانبیآء:۲۳) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उस से नहीं पूछा जाता जो वोह करे और उन सब से सुवाल होगा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तख़्लीक़े काइनात की कारीगरी को मज़बूत व मुस्तह़कम किया, अपनी मख़्लूक़ को वसीअ़ रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमा कर इन पर एह़सान व इन्आ़म फ़रमाया, और इन के मुब्हम राज़ों को जानता है। जैसा कि क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

لَا جَرَمَ اَنَّ اللّٰهَ یَعْلَمُ مَا یُسِرُّوْنَ وَ مَا یُعْلِنُوْنَؕ (پ۱۴، النحل: ۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फ़िल ह़क़ीक़त अल्लाह जानता है जो छुपाते और जो ज़ाहिर करते हैं।

رَبُّ الْمَشْرِقَیْنِ وَ رَبُّ الْمَغْرِبَیْنِ○ (پ۲۷، الرحمن: ۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : दोनों पूरब का रब्ब और दोनों पच्छिम का रब्ब।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने काइनात को दो नूरों के साथ मुनव्वर फ़रमाया या'नी हर चीज़ के दो जोड़े बनाए। चुनान्चे, ख़ुद इरशाद फ़रमाता है : وَ مِنْ كُلِّ شَیْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَیْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ○ (پ۲۷،الذّٰریٰت: ۴۹) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हम ने हर चीज़ को दो जोड़े बनाए कि तुम ध्यान करो।

मिष्लिय्यत से पाक ज़ात :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अ़क़्ल वालों पर पर्दे डाल दिये कि वोह उस का इह़ात़ा कर सकें तो वोह हैरान व परेशान हैं, और उन्हें अपनी तौह़ीद की निशानियां दिखाईं तो उन्हों ने न मुख़ालफ़त की और न ही मिष्ल होने का दा'वा किया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपनी बुज़ुर्गी व अ़ज़मत का ज़िक्र उन के दिलों में डाला तो वोह उस की याद में मस्त हो गए और कहने लगे : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी की बन्दगी नहीं और अल्लाह ही पर ईमान वाले भरोसा करें।" उस ने अपने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰه تعَالٰی पर फ़ज़्लो करम करते हुए उन्हें बड़ी बड़ी ने'मतें अ़त़ा फ़रमाईं, और अपने दुश्मनों के लिये दर्द नाक अ़ज़ाब तय्यार किया। और अपना इदराक करने से लोगों की आंखों पर पर्दे डाल दिये लिहाज़ा वोह किसी के मुतअ़ल्लिक़ उस के मिष्ल या मुशाबेह होने का वह्म तक नहीं करते। चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी बे मिष्ल व बे मिषाल शान यूं बयान फ़रमाता है :

﴾1﴿ سُبۡحٰنَهٗ وَتَعٰلٰی عَمَّا یُشۡرِکُوۡنَ۝ (پ١١،یونس:١٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उसे पाकी और बरतरी है उन के शिर्क से।*

﴾2﴿ لَیۡسَ کَمِثۡلِهٖ شَیۡءٌ ۚ (پ٢٥،الشوریٰ:١١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उस जैसा कोई नहीं।*

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की फैली हुई फ़ज़ीलत से बुलन्द शै कोई नहीं, और उस की राह पर चलने वाले को कोई गुमराही नहीं आ सकती। उसी का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है :

﴾3﴿ یُخۡرِجُ الۡحَیَّ مِنَ الۡمَیِّتِ وَیُخۡرِجُ الۡمَیِّتَ مِنَ الۡحَیِّ وَیُحۡیِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا ؕ وَکَذٰلِکَ تُخۡرَجُوۡنَ ۝ (پ٢١،الروم:١٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह ज़िन्दा को निकालता है मुर्दे से और मुर्दे को निकालता है ज़िन्दा से और ज़मीन को जिलाता (या'नी ज़िन्दा करता) है उस के मरे पीछे और यूंही तुम निकाले जाओगे।*

मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ऐसी ह़म्दो षना करता हूं जिस के ज़रीए़ मुक़र्रबीन उस के मज़ीद क़ुर्ब की लज़्ज़त ह़ासिल करते हैं, और मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वोह यक्ता है, उस का कोई शरीक नहीं, येह ऐसी गवाही है जो गवाही देने वाले को उस रोज़ नफ़्अ़ बख़्शेगी जिस दिन न माल नफ़्अ़ देगा न अवलाद, और मैं गवाही देता हूं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे और रसूल हैं, जो अ़रबी नबी हैं और अमीन व मामून हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर, आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आल व अस्ह़ाब عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُن और पाक अवलाद पर दुरूदो सलाम भेजे जिन्हों ने ह़क़ के मुत़ाबिक़ फ़ैसले किये और जो ह़क़ के साथ अ़दलो इन्साफ़ करते हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत का हौलनाक मन्ज़र बयान करते हुए इरशाद फ़रमाता है :

﴿4﴾ وَنُفِخَ فِی الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِی الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ ثُمَّ نُفِخَ فِیْهِ اُخْرٰی فَاِذَا هُمْ قِیَامٌ یَّنْظُرُوْنَ ۝ (پ۲۴، الزمر:۶۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और सूर फूंका जाएगा, तो बे होश हो जाएंगे, जितने आस्मानों में हैं और जितने ज़मीन में, मगर जिसे* ***अल्लाह*** *चाहे, फिर वोह दोबारा फूंका जाएगा जभी वोह देखते हुए खड़े हो जाएंगे।*

हज़रते सय्यिदुना इसराफ़ील عَلَیْهِ السَّلَام (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से) सूर फूंकेंगे, जब कि सूर सींग नुमा होगा। और बा'ज़ के नज़्दीक हज़रते सय्यिदुना हसन की क़िराअत के मुताबिक़ येह "صورة" की जम्अ़ है। इन्हों ने "وَنُفِخَ فِی الصُّوَرِ" "و" को फ़त्ह़ के साथ पढ़ा है।

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना इसराफ़ील عَلَیْهِ السَّلَام ने कभी आंख नहीं झपकाई।" या'नी जब से इन के ज़िम्मे येह काम लगा है, वोह एक पलक को दूसरी पर नहीं रखते कि कहीं पलक झपकने से पहले उन्हें (सूर फूंकने का) हुक्म न दे दिया जाए। और इस नफ़्ख़े से मुराद नफ़्ख़ए उला है। "صَعِقَ" का मा'ना है कि वोह घबराहट और आवाज़ की शिद्दत से मर जाएंगे।

"اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ" का मत़लब येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिन्हें चाहेगा उन्हें घबराहट से मह़फ़ूज़ रखेगा। और येह कौन लोग होंगे, इस बारे में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं। चुनान्चे, एक क़ौल येह है कि वोह शुहदा हैं। बा'ज़ के नज़्दीक इन से मुराद जिब्राईल, मीकाईल व इ़ज़राईल और इसराफ़ील عَلَیْهِمُ السَّلَام हैं। और बा'ज़ ने कहा "वोह अ़र्श उठाने वाले फ़िरिश्ते हैं। एक क़ौल येह है कि तमाम फ़िरिश्ते मुराद हैं, जब कि एक क़ौल येह भी है कि इन से हूरे ऐ़न मुराद हैं। फिर दूसरी बार सूर फूंका जाएगा और येह दोबारा उठाए जाने के लिये होगा।

(المستدرك، كتاب الاهوال، باب ينتظر صاحب الصور متى يؤمر بنفخه، الحديث ۸۷۱۹، ج۵، ص۷۷۴ ـ العظمة لابی الشيخ الاصبهانی، صفة اسرافيل عليه السلام، الحديث ۳۹۳/۳۹۴، ص۱۴۵، بتغيرقليل)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हक़ीक़त निशान है : "अजसाम ज़मीन से इस त़रह़ निकलेंगे जैसे सब्ज़ा, और रूहे शहद की मख्खियों की त़रह़ निकलेंगी और नाक के बांसों से जिस्मों में इस त़रह़ सरायत कर जाएंगी जैसे ज़ह्र, ज़ह्र ख़ुरदा के जिस्म में सरायत कर जाता है और वोह सब इन हौलनाकियों को देखते हुए खड़े हो जाएंगे जिन का उन से वा'दा किया गया था।"

(شعب الايمان للبيهقی، باب فی حشر الناس بعد ما يبعثون من قبورهم، فصل فی صفة يوم القيامة، الحديث۳۵۳، ج۱، ص۳۰۹، بتغيرقليل)

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर करो ! तुम्हारे सब दोस्त, अह़बाब अपने ह़क़ीक़ी घरों की त़रफ़ कूच कर गए, अ़न क़रीब तुम्हें भी येह सफ़र तै करना और क़ब्र में उतरना पड़ेगा, वोह सब दुन्यवी मालो दौलत और अपने वत़न छोड़ कर चल बसे और बहुत जल्द तुम्हें भी येह सब कुछ छोड़ कर जाना पड़ेगा, उन्हों ने जुदाई का प्याला घूंट घूंट कर के पिया अब तुम्हें भी पीना पड़ेगा, जिस त़रह़ उन्हें अपने आ'माल का सामना करना पड़ा तुम्हें भी करना पड़ेगा, इन्हें अपने बुरे

आ'माल पर नदामत व शर्मिन्दगी उठाना पड़ी अ़न क़रीब तुम्हें भी उठाना पड़ेगी, वक़्त को फ़ुज़ूलिय्यात में बरबाद करने पर वोह ह़सरत व अफ़्सोस की आफ़त में मुब्तला हैं अ़न क़रीब तुम्हें भी ह़सरत की आफ़त में मुब्तला होना पड़ेगा, वोह मौत की सख़्तियों से हम कनार हुए और जल्द ही तुम्हें भी उन सख़्तियों का शिकार होना पड़ेगा, उन्हों ने अपनी आंखों से हौलनाकियों को देखा अ़न क़रीब तुम भी देख लोगे। इन से उन के आ'माल का ह़िसाब लिया गया और जल्द ही तुम से भी लिया जाएगा, इन में से कोई तमन्ना करेगा कि काश ! माल के बदले अ़ज़ाब से नजात मिल जाए अ़न क़रीब तुम भी उस की तमन्ना करोगे, लिहाज़ा जल्दी करो ! ह़िसाब किताब के दिन और ख़्वाहिशों की ज़िल्लत से पहले पहले तौबा कर लो, अभी जवानी की बहार है, बहुत जल्द उसे मौत के हाथो फ़ना होना है, अ़न क़रीब तुम अचानक आने वाली मौत के साए में होगे जिस का तुम से वा'दा किया गया है। चुनान्चे, अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

وَنُفِخَ فِی الصُّوۡرِ فَصَعِقَ مَنۡ فِی السَّمٰوٰتِ وَمَنۡ فِی الۡاَرۡضِ اِلَّا مَنۡ شَآءَ اللّٰہُ ؕ ثُمَّ نُفِخَ فِیۡہِ اُخۡرٰی فَاِذَا ہُمۡ قِیَامٌ یَّنۡظُرُوۡنَ ۝ (پ۲۴،الزمر:۶۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और सूर फूंका जाएगा, तो बेहोश हो जाएंगे, जितने आस्मानों में हैं और जितने ज़मीन में, मगर जिसे अल्लाह चाहे, फिर वोह दोबारा फूंका जाएगा जभी वोह देखते हुए खड़े हो जाएंगे।

ऐ इब्ने आदम ! उस वक़्त तेरा क्या ह़ाल होगा जब सूर फूंका जाएगा और क़ब्र वाले मुन्तशिर हो जाएंगे, जो सीनों में होगा ज़ाहिर हो जाएगा, मुआ़मलात तंग हो जाएंगे, छुपा हुवा सब ज़ाहिर हो जाएगा और सारी मख़्लूक़ क़ब्रों से उठ खड़ी होगी।

فَاِذَا ہُمۡ قِیَامٌ یَّنۡظُرُوۡنَ ۝ (پ۲۴،الزمر:۶۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जभी वोह देखते हुए खड़े हो जाएंगे।

वोह सब से बड़ा कैसा अ़जीब दिन होगा जिस में ज़लज़ले होंगे और पहाड़ों को चलाया जाएगा, यके बा'द दीगर हौलनाकियों का सिलसिला होगा, उम्मीदें ख़त्म हो जाएंगी, ह़ीले कम हो जाएंगे, बाईं जानिब वाले ख़सारे में होंगे, जूंही सूर फूंका जाएगा सब लोग कांपते हुए अपनी क़ब्रों से निकलेंगे।

فَاِذَا ہُمۡ قِیَامٌ یَّنۡظُرُوۡنَ ۝ (پ۲۴،الزمر:۶۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जभी वोह देखते हुए खड़े हो जाएंगे।

वोह ऐसा दिन है जिस में क़दम फिसल रहे होंगे, अ़क़्लें कमज़ोर हो जाएंगी, कुछ समझ न आएगा, त़वील अ़र्सा खड़ा रहना पड़ेगा, गुनाह ज़ाहिर हो जाएंगे, किसी को बोलने की जुरअत न होगी और मौत का जाम पीने के बा'द लोग क़ब्रों से ज़िन्दा निकलते होंगे।

فَاِذَا ہُمۡ قِیَامٌ یَّنۡظُرُوۡنَ ۝ (پ۲۴،الزمر:۶۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जभी वोह देखते हुए खड़े हो जाएंगे।

पस वोह कियामत का दिन है, ह़सरत व नदामत का दिन है, ज़लज़लों और झटकों का दिन है, उस दिन गुनहगार और नाफ़रमान अपने गुनाहों और बदकारियों को देख लेगा और लोग क़ब्रों से उठ कर वा'दे की जगह पर जा रहे होंगे।

فَاِذَا ہُمۡ قِیَامٌ یَّنۡظُرُوۡنَ ۝ (پ۲۴،الزمر:۶۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जभी वोह देखते हुए खड़े हो जाएंगे।

﴿5﴾ یَوۡمَ تُبۡلَی السَّرَآئِرُ ۝ (پ۳۰،الطارق:۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन छुपी बातों की जांच होगी।

जिस दिन सब राज़ फ़ाश हो जाएंगे, ज़ालिमों का ज़ुल्म ज़ाहिर हो जाएगा, आंखें अन्धी हो जाएंगी, लोग हैरान व पेरशान होंगे, कबीरा गुनाह करने वाले ज़लील व रुस्वा होंगे, क़ब्रों से मोमिन, काफ़िर और नेक व बद सब उठ कर मैदाने महशर में लरज़ते हुए जम्अ़ हो जाएंगे।

فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ (پ ٢٤،الزمر:٦٨) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *जभी वोह देखते हुए खड़े हो जाएंगे।*

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन सम्माक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الرَّزَّاق बहुत ज़ियादा रोया करते थे, जब आप رَحْمَۃُاللہِ تعالٰی عَلَیْہ से रोने का सबब पूछा गया तो इरशाद फ़रमाया : "क़ुरआने पाक की इस आयते मुबारका ने मुझे रुला दिया है :

﴾6﴿ وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ۝ (پ ٢٤، الزمر:٤٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उन्हें अल्लाह की तरफ़ से वोह बात ज़ाहिर हुई जो उन के ख़याल में न थी।*

(फिर फ़रमाया) आंखें रोने के दर्द का ज़ाइक़ा कैसे न चखतीं जब कि वोह नहीं जानतीं कि कौन सी चीज़ इस रोने को ख़त्म करेगी।"

ऐ इस्लामी भाइयो ! परहेज़गार चले गए और हम रह गए हैं। उन्हों ने विसाल पाया जब कि हम ने जुदाई इख़्तियार की। उन्हों ने मक़्सूद पाया जब कि हम ने इसे खो दिया। उन्हों ने शिर्के (ख़फ़ी या'नी रियाकारी) से इजतिनाब किया जब कि हम इस में मुब्तला हो गए। आओ ! हम भी उन के नक़्शे क़दम पर चलें और उन की ता'लीमात पर अ़मल करें और अपने गुनाहों पर नदामत के साथ आंसू बहाएं।

ऐ मेरे मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तुम्हारे आ'माल की खेती कटने के क़रीब है। ज़िन्दगी का तौशा ख़त्म होने को है और तुम बे ख़बर हो और समझते हो कि मौत बहुत दूर है। हां ! हां ! अ़न क़रीब उस दिन तुम नदामत व परेशानी के आ़लम में होगे जब बाप अपनी अवलाद से भागेगा। तमाम मुआ़मलात मुन्तशिर हो जाएंगे। सूर फूंका जाएगा। फिर माज़ी पर ह़सरत व नदामत कोई फ़ाइदा न देगी। क़ब्र की सख़्त तारीकी में आंसू बहाना तुम्हारे लिये मुफ़ीद न होगा। कहां है वोह जो तुम ने उस दिन के लिये तय्यार किया जिस दिन कोई जान किसी का बदला न बनेगी। अ़न क़रीब तुम्हारे होश उड़ जाएंगे जब आवाज़ें पस्त हो जाएंगी और तुम हल्की आवाज़ के सिवा कुछ न सुनोगे। आ'माल नामे सीनों पर लटका दिये जाएंगे और सीनों में आग भड़का दी जाएगी और सूर फूंक दिया जाएगा।

अल्लाह तआ़ला क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴾7﴿ وَاِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ اِلٰى حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ط (پ٢٢،فاطر:١٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अगर कोई बोझ वाली अपना बोझ हटाने को किसी को बुलाए तो उस के बोझ में से कोई कुछ न उठाएगा अगर्चे क़रीब रिश्तेदार हो।* [1]

1....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ البَارِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "बाप या मां या भाई कोई किसी का बोझ न उठाएगा। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि "मां बाप बेटे को लिपटेंगे और कहेंगे : ऐ हमारे बेटे ! हमारे कुछ गुनाह उठा ले। वोह कहेगा : मेरे इमकान में नहीं, मेरा अपना बार क्या कम है ?"

हज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मज़कूरा आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "बरोज़े क़ियामत मां अपने बेटे से मिलेगी और कहेगी : "ऐ मेरे बेटे ! क्या तू मेरे पेट में न रहा और मेरा दूध न पिया ?" वोह कहेगा : "क्यूं नहीं, ऐ मेरी मां !" मां बोलेगी : "आज मैं गुनाहों के भारी बोझ तले दबी हुई हूं, तू इन में से सिर्फ़ एक गुनाह का बोझ उठा ले।" तो वोह कहेगा : "मुझ से दूर हो जा, मुझे अपनी फ़िक्र पड़ी है, मैं दूसरों से बे परवाह हूं।"

(تفسیر القرطبی، الفاطر، تحت الآیة١٨، الجزء الرابع عشر،ج٧،ص٢٤٧)

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! हमारे दिल ग़फ़्लत के सबब जिस्मों से निकल चुके हैं, मैं कब तक तुम्हें नसीह़तें करता रहूं, जिन्दों को मकान बनाने की पड़ी है। क्या तुम देखते नहीं कि हमारी लग़ज़िशों और गुनाहों ने हमारे साथ क्या किया ? ऐ मेरे भाइयो ! ग़लती और कोताही ने हमें क़ैद कर दिया और मौत क़रीब आ पहुंची। हम पर अफ़्सोस ! हमें रोज़े मह़शर की हौलनाकियों और सूर के फूंके जाने का सामना है। ऐ मेरे भाइयो ! आख़िर कब तक तौबा में देर करते रहोगे ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! बुढ़ापा आ रहा है, जवानी जा रही है, तुम कब अपने मालिक عَزَّوَجَلَّ से सुल्ह़ करोगे ? और कब उस की बारगाह में पेश होने की तय्यारी करोगे ? क्या तुम्हें दोस्तों, अ़ज़ीज़ों की मौत और इस के बा'द पेश आने वाले मुआ़मलात से इ़ब्रत ह़ासिल नहीं होती ? क्या तुम सूर के फूंके जाने से इ़ब्रत नहीं पकड़ते ?

रिवायत में है कि जब कोई नौजवान अपने मालिक عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करता है तो फ़िरिश्ते एक दूसरे को खुश ख़बरियां देते हैं। दीगर फ़िरिश्ते पूछते हैं : क्या हुवा ? तो उन को कहा जाता है कि एक नौजवान ने ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो कर अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा कर ली है। फिर एक ए'लान करने वाला ए'लान करता है : "इस नौजवान की तौबा के इस्तिक़बाल में जन्नतों को सजा दो।"

ह़दीष शरीफ़ में है कि जब कोई नौजवान गुनाहों की वजह से रोता है और अपने मालिक व मह़बूबे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ख़त़ाओं का ए'तिराफ़ करते हुए कहता है : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ने बुराई की।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "मैं ने पर्दापोशी की।" फिर अ़र्ज़ करता है : "मैं नादिम हूं।" जवाब मिलता है : "मैं जानता हूं।" फिर अ़र्ज़ करता है : "मैं तौबा करता हूं।" जवाब आता है : "मैं क़बूल करता हूं, ऐ नौजवान ! जब तू तौबा कर के तोड़ डाले तो हमारी त़रफ़ रुजूअ़ करने से ह़या न करना, और जब दूसरी मरतबा तौबा तोड़ दे तो तीसरी मरतबा हमारी बारगाह में ह़ाज़िर होने से शर्मिन्दगी तुझे न रोके, और जब तीसरी मरतबा तोड़ दे तो चौथी मरतबा भी हमारी बारगाह में लौट आना, (क्यूंकि) मैं ऐसा जव्वाद हूं जो बुख़्ल नहीं करता, मैं ऐसा ह़लीम हूं जो जल्द बाज़ी नहीं करता, मैं ही नाफ़रमान की पर्दा पोशी करता और ताइबीन की तौबा क़बूल करता हूं, मैं ख़त़ाएं मुआ़फ़ करता, नदामत करने वालों पर सब से ज़ियादा रह़्म करता हूं क्यूंकि मैं सब से बढ़ कर रह़्म करने वाला हूं। कौन है जो हमारे दरवाज़े पर आया और हम ने उसे

ख़ाली वापस लौटा दिया ? कौन है जिस ने हमारी जनाब में इल्तिजा की और हम ने उसे धुतकार दिया ? कौन है जिस ने हम से तौबा की और हम ने क़बूल न की ? कौन है जिस ने हम से मांगा और हम ने अ़ता न किया ? कौन है जिस ने गुनाहों से मुआ़फ़ी चाही और हम ने उसे धुतकार दिया ? क्यूंकि मैं सब से बढ़ कर ख़ताओं को बख़्शने वाला, सब से बढ़ कर ऐ़बों की पर्दा पोशी करने वाला, सब से बढ़ कर मुसीबत ज़दों की मदद करने वाला, गिर्या व ज़ारी करने वाले पर सब से ज़ियादा मेहरबान और सब से ज़ियादा ग़ैबो की ख़बर रखता हूं। ऐ मेरे बन्दे ! मेरे दर पे खड़ा हो जा मैं तेरा नाम अपने दोस्तों में लिख दूंगा, सहरी में मेरे कलाम से लुत्फ़ अन्दोज़ हो मैं तुझे अपने त़लबगारों में शामिल कर दूंगा, मेरी बारगाह में ह़ाज़िरी से लज़्ज़त ह़ासिल कर मैं तुझे लज़ीज़ (पाकीज़ा) शराब पिलाऊंगा, ग़ैरों को छोड़ दे, फ़क़्र को लाज़िम पकड़ ले, सहरी के वक़्त आ़जिज़ी व इन्किसारी की ज़बान के साथ मुनाजात कर।"

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! मीज़ान पर खड़े हो कर आ'माल का ह़िसाब देना बहुत दुश्वार है, और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के सामने अपने गुनाहों भरे वुजूद को ले कर खड़ा होना इन्तिहाई मुश्किल है। पस तुम कब तक खेल कूद में वक़्त बरबाद करते रहोगे ? ज़िन्दगी तो बहुत मुख़्तसर है। अभी तो तुम उन हौलनाकियों से बे ख़बर हो जिन का तुम्हें सामना करना पड़ेगा जब क़ब्र वालों को उठाया जाएगा और सूर फूंका जाएगा और जो कुछ सीनों में पोशीदा है सब ज़ाहिर हो जाएगा तो उस वक़्त तुम्हें सख़्त नदामत व शर्मिन्दगी का सामना करना पड़ेगा।

ए मेरे इस्लामी भाइयो ! जब दिल गले के पास आ जाएंगे, और ह़सरत व नदामत ख़न्जर की त़रह़ कलेजे फाड़ देगी और नाफ़रमानों की प्यास सख़्त गर्मी की वजह से जोश मारेगी। तो ऐ नाफ़रमान शख़्स ! गुनाह तर्क कर के जल्दी से अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हो जा और नफ़्अ़ की बहारों को ह़ासिल कर ले इस से पहले कि वोह (बहारें) गुज़र जाएं और सूर फूंक दिया जाए।

अफ़्सोस है उन दिलों पर जो लोहे से ज़ियादा सख़्त हैं ! अफ़्सोस है उन जानों पर जो हिदायत के रास्ते से भटकी हुई हैं ! अफ़्सोस है उन आंखों पर जो चट्टानों की सख़्ती से ज़ियादा जमी हुई हैं (कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ख़ौफ़ से आंसू नहीं बहातीं !) अ़न क़रीब ख़्वाहिशाते नफ़्सानिय्या की पैरवी करने वाले पीप की शराब पियेंगे, जब उन के बुरे आ'माल ज़ाहिर होंगे तो उन के होश व ह़वास उड़ जाएंगे।

فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ (پ٢٤، الزمر:٦٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जभी वोह देखते हुए खड़े हो जाएंगे।*

काहिली व सुस्ती ने कितने नौजवानों को ख़ाइब व ख़ासिर कर दिया। और कितने ग़ाफ़िलों के दिल ग़फ़्लत ने बेकार कर दिये। और कितने उम्मीद बांधने वालों की आखों पर उन की उम्मीदों ने पर्दा डाल दिया। और कितने ख़ौफ़े इलाही عَزَّ وَجَلَّ रखने वालों के दिलों को अस्बाब ने कमज़ोर कर दिया, उन के और उन की ख़्वाहिशात के दरमियान रुकावट बन गए।

فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ (پ٢٤، الزمر:٦٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जभी वोह देखते हुए खड़े हो जाएंगे।*

क्या मौत की तकालीफ़ सुन कर तुम्हारी आंखें नहीं बहतीं ? क्या मौत की वह्शत से तुम्हारे दिल नहीं घबराते ? क्या वा'ज़ व नसीहत की त़रफ़ तुम्हारे कान मुतवज्जेह हो कर कुछ नहीं सुनते ? क्या फ़ना होने वाली शै की त़लब से तम्हारे पेट सैर नहीं होते ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ("और ज़रूर तुम से तुम्हारे काम पूछे जाएंगे।" जैसा कि खुद रब्ब तआला इरशाद फ़रमाता है) :

﴾8﴿ وَلَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ۝ (پ۱٤،النحل:۹۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ज़रूर तुम से तुम्हारे काम पूछे जाएंगे।*

فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ (پ۲٤،الزمر:٦٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जभी वोह देखते हुए खड़े हो जाएंगे।*

एक मुरीद की तौबा :

मन्क़ूल है कि एक मुरीद को तौबा की तौफ़ीक़ मिली लेकिन वोह दोबारा अपनी गुनाहों भरी ह़ालत पर लौट आया। फिर उसे नदामत व शर्मिन्दगी हुई और दिल ही दिल में कहने लगा : "अगर मैं अपने गुनाहों से तौबा कर लूं तो मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ के साथ मेरा क्या मुआ़मला होगा ?" अचानक एक आवाज़ आई : "ऐ नौजवान ! तू ने हमारी नाफ़रमानी की तो हम ने पर्दा पोशी की, तू ने हमें छोड़ दिया तो हम ने मोहलत दी, अब अगर तू हमारी त़रफ़ लौट आए तो हम क़बूल फ़रमा लेंगे, अगर तू हमारी त़रफ़ मुतवज्जेह हो तो हम तेरी त़रफ़ नज़रे रह़मत फ़रमाएंगे, तू ने अ़र्सए दराज़ तक अ़लानिय्या हमारी नाफ़रमानी की लेकिन हम ने ख़त़ाओं को ढांप दिया, तू ने हम से कितनी दूरी इख़्तियार की फिर भी हम ने अपने क़रीब किया, तू ने नाफ़रमानियों के साथ हमारा मुक़ाबला किया फिर भी हम ने दरगुज़र किया, अब भी तू हमारी त़रफ़ लौट आए और हम से सुल्ह़ कर ले तो हम भी सुल्ह़ कर लेंगे।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन मुवफ़्फ़क़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी मुनाजात में अ़र्ज़ किया करते थे : "ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ तेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं तेरे दरवाज़े से नहीं हटूंगा अगर्चे तू मुझे धुतकार दे। मैं तेरी बारगाह से नहीं फिरूंगा अगर्चे तू मुझे दूर भी कर दे। मैं तेरे विसाल से दूरी इख़्तियार नहीं करूंगा अगर्चे तू मुझ से तअ़ल्लुक़ तोड़ ले। मैं तेरी मह़ब्बत को दिल से नहीं निकालूंगा अगर्चे तू मुझे अ़ज़ाब दे। ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ अगर तू मेरी निगाहों से पोशीदा है तो क्या हुवा तेरी मह़ब्बत तो मेरे दिल में है। अगर तू मुझे छोड़ दे और दूर कर दे तो फिर भी तेरी मह़ब्बत मेरे दिल में छुपी रहेगी।"

रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़िल्लत व आ़जिज़ी के साथ हाथों को बुलन्द कर लो, और अपनी आंखों से मुसलाधार आंसू बहाते हुए तन्हाई में और ए'लानिय्या बुलन्द आवाज़ से दुआ़

करो : ऐ हमारे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ तेरे गुनाहगार व नाफ़रमान बन्दे गुनाहों से मुआफ़ी की आस लगाए तेरी बारगाह में ह़ाज़िर हैं। हम राहे ह़क़ से बहक चुके हैं और हमारी हलाकत ने हमें जहन्नम के क़रीब कर दिया है। या इलाहल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ हम तेरी बारगाह में अपनी आ़जिज़ी व इन्किसारी, नदामत व शर्मिन्दगी और आंसू की कषरत बत़ौरे शफ़ीअ़ पेश करते हैं। या इलाही عَزَّوَجَلَّ अगर्चे गुनाह हमें तेरे अ़ज़ाब से डराते हैं लेकिन हमारा हुस्ने ज़न हमें तेरे अ़फ़्वो करम की ह़िर्स दिलाता है। अगर तू मुआ़फ़ फ़रमाए तो तुझ से ज़ियादा इस के लाइक़ कौन है ? और अगर तू अ़ज़ाब दे तो तुझ से बढ़ कर आ़दिल कौन है ?

या रब्बल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ अगर तू सिर्फ़ इ़बादत गुज़ारों पर रह़्म फ़रमाएगा तो इ़बादत में कोताही करने वालों का पुरसाने ह़ाल कौन होगा ? अगर तू सिर्फ़ मुख़्लिस लोगों का ही अ़मल क़बूल फ़रमाएगा तो रियाकारों का क्या बनेगा ? या इलाही عَزَّوَجَلَّ मेरी ह़सरत कितनी बड़ी है कि मैं दूसरों को नसीह़त करता हूं और ख़ुद तुझ से ग़ाफ़िल हूं। ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ मेरी मुसीबत कितनी शदीद है कि मैं दूसरों को बेदार करता हूं और ख़ुद ग़फ़्लत की नींद सोया हुवा हूं। ऐ मेरे आक़ा व मौला عَزَّوَجَلَّ मेरा क़िस्सा व माजरा कितना अ़जीब है कि मैं राहे ह़क़ की त़रफ़ दूसरों की रहनुमाई करता हूं जब कि ख़ुद ज़ालिम हूं। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नसीह़त करने वाले को भी बख़्श दे और सुनने वाले की भी बख़्शिश फ़रमा दे। ऐ मेरे रह़ीम व करीम मौला عَزَّوَجَلَّ जब मैं किसी को तेरी बारगाह का रास्ता दिखाऊं और वोह वहां तक रसाई ह़ासिल कर ले तो क्या तू इसे क़बूल कर लेगा जिस की रहनुमाई की गई और रहनुमाई करने वाले को धुतकार देगा ? ऐ इख़्लास की दौलत अ़त़ा फ़रमाने वाले मौला عَزَّوَجَلَّ अगर मेरा कलाम ख़ालिस तेरी रिज़ा के लिये नहीं तो मेरे इस इजतिमाअ़ में कोई शख़्स तो ऐसा होगा जो सिर्फ़ और सिर्फ़ तेरी रिज़ा के लिये आया होगा। ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ उस के सदक़े मेरी तक़्सीर व कोताही मुआ़फ़ फ़रमा दे और ऐ सब से बढ़ कर रह़्म फ़रमाने वाले ! हम सब पर अपना ख़ास रह़्मो करम फ़रमा। (आमीन)

وَصَلَّى اللهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ وَ سَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا

बयान 29 : नेकों के वाकिआत

हम्दे बारी तआला :

तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی को अपनी बादशाही में आ'ला बसीरत से नवाज़ा और उन्हें अपनी अनोखी निशानियां दिखाईं और उन की अरवाह़ को अपने मह़ले क़ुर्ब की सैर कराई और उन को मुत्तक़ी और पारसा लोगों में किया और अपना मुख़्लिस बन्दा बना कर बुज़ुर्गी और आ'ला नसब से मुशर्रफ़ फ़रमाया और सख़्त तारीकी में उन्हें षाबित क़दमी अ़ता फ़रमाई, और उन पर तारीकी त़वील कर दी गई, और क़लमों के लिखे हुए पर उन्हें मुत्तलअ़ फ़रमाया जब कि क़लमों ने कोई बात न छोड़ी, और उन के दिलों में अन्वार दाख़िल फ़रमाए जिन के ज़रीए़ वोह आ़लमे ग़ैब का मुशाहदा करते और दूरो नज़दीक की हर चीज़ देख लेते हैं, और उन पर कश्फ़ व इत्तिलाअ़ का भी एह़सान फ़रमाया जिस के ज़रीए़ वोह हर छुपी चीज़ को देख लेते हैं, और उन्हें हुस्नो जमाल, रो'ब व दबदबा, क़राबत और तहज़ीब व शाइस्तगी का लिबास पहनाया, और उन के दिल अपनी त़रफ़ मुतवज्जेह कर लिये और ख़ुश बख़्त व सईद है वोह शख़्स जिस का दिल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी त़रफ़ माइल कर ले। और उन्हें अपने पाकीज़ा ख़ित़ाब से नवाज़ा जिस ने उन के रंजो ग़म दूर कर दिये, बे चैनियों और परेशानियों को ख़त्म कर दिया, और जब येह उस की इ़बादत में थक गए तो उन को ऐसी राह़त पहुंचाई कि थकन का कोई एह़सास ही न रहा, और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सह़र की ख़लवतों में उन्हें अपना हम नशीन बनाया तो उन्हों ने अपना पाकीज़ा वक़्त शब बेदारी में बसर किया, और उन्हें "اَهْلًا وَّسَهْلًا مَرْحَبًا" की बिशारतों के साथ अपनी बारगाह में बुलाया, और सब से लज़ीज़ मशरूब पिलाया, उन पर मह़बूबे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ ने तजल्ली फ़रमाई, और अपनी मह़ब्बत में क़ैद दिलों को अपना जमाल दिखाया।

वोह औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का मह़बूब, इन का हम नशीन, इन का हम नवा और इन का दोस्त है। बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपनी बारगाह में उन के मर्तबों को बुलन्द फ़रमाया, जब वोह लोगों से छुप जाते हैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे अक़्दस में क़ुर्ब की लज़्ज़तें पाते हैं, और जब लोगों के पास तशरीफ़ फ़रमा होते हैं तो इन से अ़जीबो ग़रीब बातें करते हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन के तुफ़ैल अहले ज़मीन पर बारिश बरसाता है और ऐसी ज़मीन से घास उगाता है जो घास उगाने के क़ाबिल नहीं होती, ख़ुश्क और क़ह़त़ ज़दा ज़मीन से सब्ज़ा उगाता है, इन के सदक़े दुआ़एं क़बूल होती और बलाएं दूर होती हैं, येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बर्गुज़ीदा बन्दे हैं, इन्हों ने अपने मह़बूबे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर दुन्या को तर्क किया यहां तक कि इन की नज़र में सोना और पथ्थर यक्सां हो गए और इन्हों ने हर चीज़ के बदले रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ को इख़्तियार किया, येह इरादा करते ही अपना मक़्सद पा लेते हैं, जब रात होती है तो अपने दामन को पकड़ लेते और अपना मुह़ासबा करते हैं, और जब रिश्वत ख़ोर ग़ाइब हो जाते और पहरादार सो जाते हैं तो येह

अपने महबूबे हक़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ के कुर्ब के लिये बेचैन व बे क़रार हो कर तड़पने लगते हैं, और जब सुब्ह होती है तो मुसलसल आंसू बहाते हुए कहते हैं : "काश ! रात न जाती, काश ! वोह ठहर जाती, ऐ काश ! मशरिक़ मग़रिब बन जाता।"

ग़ैबी अशरफ़ियां :

एक मर्दे सालेह का बयान है कि मैं एक देहात में था, जहां एक क़ाफ़िला आया। मैं ने अपने सामने एक शख़्स को पाया तो मैं जल्दी से उस के पास गया देखा तो वोह एक औ़रत थी, उस के हाथ में लाठी थी और बहुत आहिस्ता आहिस्ता चल रही थी। मैं समझा कि शायद येह अपना कुछ साज़ो सामान ज़ाएअ़ कर चुकी है। चुनान्चे, मैं ने जेब में हाथ डाला और बीस दिरहम निकाल कर कहा : "येह लो, और मेरे पास ठहर जाओ, जब क़ाफ़िला पहुंचे तो उस को किराया दे देना और रात को आराम करने के लिये मेरे पास आ जाना ताकि मैं तेरी परेशानी दूर कर दूं।" येह सुन कर उस ने अपना हाथ हवा में लहराते हुए कहा : "परेशानी तो यूं दूर हो जाएगी।" मैं ने देखा तो उस की हथेली में ग़ैब से सोने की अशरफ़ियां आ चुकी थीं, और कहने लगी : "तुम ने जेब से चांदी की अशरफ़ियां लीं, जब कि मैं ने ग़ैब से सोने की अशरफ़ियां ले लीं।"

पाक है वोह ज़ात जिस ने अपनी मख़्लूक़ में से कुछ बन्दों को ख़ास किया। उन के लिये हिदायत वाली ज़मीन को बिछोना बनाया। उन को तौफ़ीक़ व हिदायत अ़ता फ़रमाई और तौशए सफ़र भी फ़राहम किया। उन के लिये लुत्फ़ो करम की खिड़कियां नस्ब कर दीं और उन को अपने रास्तों पर चलाया और उन के गिर्द रह़्मो करम के प्यालों को गरदिश दी। लिहाज़ा उन के दिल उस की मह़ब्बत में धड़कते हैं। उन के जिस्म उस की जुदाई के ख़ौफ़ से लाग़र व नातूवां हैं। वोह विसाले महबूबे हक़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ के बाग़ीचों में आसूदा ह़ाल रहते और उन्से इलाही عَزَّوَجَلَّ के बाग़ात में लुत्फ़ उठाते हैं और उन्हें क़ियामत की हौलनाकियों का कोई ख़ौफ़ नहीं, क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

﴿1﴾ اَلَاۤ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَاخَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ (پ۱۱،یونس:۶۲)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : सुन लो बेशक **अल्लाह** के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म।*

चोर वली बन गया :

मन्क़ूल है कि एक चोर रात के वक़्त ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ बसरिया अ़दविय्या رحمۃاللہ تعالی علیھا के घर दाख़िल हुवा, उस ने दाएं बाएं हर त़रफ़ पूरे घर की तलाशी ली लेकिन सिवाए एक लोटे के कोई चीज़ न पाई। जब उस ने निकलने का इरादा किया तो आप رحمۃاللہ تعالی علیھا ने फ़रमाया : "अगर तुम चालाक व होशियार चोर हो तो कोई शै लिये बिग़ैर नहीं जाओगे।" उस ने कहा : "मुझे तो कोई शै नहीं मिली।" आप رحمۃاللہ تعالی علیھا ने फ़रमाया : "ऐ ग़रीब शख़्स ! इस

लोटे से वुज़ू कर के कमरे में दाख़िल हो जा और दो रक्अ़त नमाज़ अदा कर, यहां से कुछ न कुछ ले के जाएगा।" उस ने आप رحمۃاللہ تعالی علیہا के कहने के मुत़ाबिक़ वुज़ू किया और जब नमाज़ के लिये खड़ा हुवा तो ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ अ़दविय्या رحمۃاللہ تعالی علیہا ने अपनी निगाहें आस्मान की त़रफ़ उठा कर यूं दुआ़ की : "ऐ मेरे आक़ा व मौला عَزَّوَجَلَّ येह शख़्स मेरे पास आया लेकिन इस को कुछ न मिला, अब मैं ने इसे तेरी बारगाह में खड़ा कर दिया है, इसे अपने फ़ज़्लो करम से मह़रूम न करना।" जब वोह नमाज़ से फ़ारिग़ हुवा तो उस को इबादत की लज़्ज़त नसीब हुई। चुनान्चे, रात के आख़िरी हिस्से तक वोह नमाज़ में मश्ग़ूल रहा। जब सह़री का वक़्त हुवा तो आप رحمۃاللہ تعالی علیہا उस के पास तशरीफ़ ले गईं तो उसे ह़ालते सजदा में अपने नफ़्स को डांटते हुए और येह कहते हुए पाया : जब मेरा रब्ब عَزَّوَجَلَّ मुझ से पूछेगा : "क्या तुझे ह़या न आई कि तू मेरी नाफ़रमानी करता रहा ? और मेरी मख़्लूक़ से गुनाह छुपाता रहा और अब गुनाहों की गठड़ी ले कर मेरी बारगाह में पेश है, जब वोह मुझे इताब करेगा और अपनी बारगाहे रह़मत से दूर कर देगा तो उस वक़्त मैं क्या जवाब दूंगा ? आप رحمۃاللہ تعالی علیہا ने पूछा : "ऐ भाई ! रात कैसी गुज़री ?" बोला : "ख़ैरिय्यत से गुज़री, आ़जिज़ी व इन्किसारी से मैं अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में खड़ा रहा तो उस ने मेरे टेढ़े पन को दुरुस्त कर दिया, मेरा उ़ज़्र क़बूल फ़रमा लिया और मेरे गुनाहों को बख़्श दिया और मुझे मेरे मत़लूब व मक़्सूद तक पहुंचा दिया।" फिर वोह शख़्स चेहरे पर ह़ैरानी व परेशानी के आषार लिये चला गया। ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ बसरिया رحمۃاللہ تعالی علیہا ने अपने हाथों को आस्मान की त़रफ़ उठाया और अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे आक़ा व मौला عَزَّوَجَلَّ येह शख़्स तेरी बारगाह में एक घड़ी खड़ा हुवा तो तूने इसे क़बूल कर लिया और मैं कब से तेरी बारगाह में खड़ी हूं, तो क्या तू ने मुझे भी क़बूल फ़रमा लिया है ?" अचानक आप رحمۃاللہ تعالی علیہا ने दिल के कानों से येह आवाज़ सुनी : "ऐ राबिआ़ ! हम ने इसे तेरी ही वजह से क़बूल किया और तेरी ही वजह से अपना क़ुर्ब अ़त़ा फ़रमाया।"

يَا سَيِّدِیْ عَبْدُكَ الْمِسْكِيْنُ فِیْ بَابِكَ　　يَرْجُوْ رِضَاكَ فَجُدْ بِالْعَفْوِ اَوْلٰی بِكَ
حَاشَاكَ تَسْدُلُ حِجَابَكَ دُوْنَ طُلَّابِكَ　　اَوْ تَبْتَلِیْ بِعَذَابِكَ قَلْبَ اَحْبَابِكَ

तर्जमा : (1)....ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ तेरा मिस्कीन बन्दा तेरी रिज़ा की उम्मीद लगाए तेरे दर पर ह़ाज़िर है पस मुआ़फ़ी के साथ जूदो करम करना तेरे शायाने शान है।

(2).....(या इलाही عَزَّوَجَلَّ तेरी पनाह कि तू अपने त़लबगारों पर अपने विसाल से पर्दा डाले या अपने दोस्तों के दिलों को अ़ज़ाब में मुब्तला करे।

ऐ मेरे इस्लामी भाई ! पुख़्ता अ़ज़्म वाले तुझ से सबक़त ले गए और तू ग़फ़्लत की नींद सोया हुवा है। उठ और अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के दर पर नादिम शख़्स की त़रह़ खड़ा हो जा और ज़िल्लत से सर को झुका कर यूं कह कि "मैं ज़ालिम हूं।" और सह़री के वक़्त यूं अ़र्ज़ कर कि "मैं गुनहगार

व नाफ़रमान हूं, ऐ मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ मैं तेरे अ़फ़्वो करम की उम्मीद लिये तेरे दरबार में हाज़िर हूं, मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दे।" और उस के नेक बन्दों से मुशाबहत इख़्तियार कर अगर्चे अ़मल के ए'तिबार से तू इन में से नहीं फिर भी इन का क़ुर्ब इख़्तियार कर।

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! आ़रिफ़ीन बसीरत की निगाह से देखते और अपने इ़ल्म पर अ़मल करते हैं, इन्हों ने नींद को छोड़ कर तारीक रातों में क़ियाम किया और आंसूओं से चेहरों को धोया पस ज़ज्रो तौबीख़ वाली आयात की तिलावत ने इन्हें बेचैन कर दिया।

अस्माए हुस्ना का वसीला काम आ गया :

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि "नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़मानए अक़्दस में एक शख़्स शाम के शहरों से मदीना और मदीना से शाम तिजारत के लिये जाया करता। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल करते हुवे क़ाफ़िले के बिग़ैर सफ़र करता। एक मरतबा वोह शाम से मदीना आ रहा था कि एक घोड़े सुवार चोर की ज़द में आ गया। चोर ने उसे रुकने को कहा तो वोह रुक गया और कहने लगा : "तुम्हें माल चाहिये तो माल ले लो और मेरा रास्ता छोड़ दो।" चोर ने कहा : "माल तो अब मेरा ही है, मगर मुझे तुम्हारी भी ज़रूरत है, लिहाज़ा मेरे साथ चलो। ताजिर ने कहा : "मेरा क्या करोगे, माल ले लो और मेरा रास्ता छोड़ दो।" चोर ने दोबारा वोही अलफ़ाज़ कहे। तो ताजिर ने कहा : "फिर थोड़ी देर मेरा इन्तिज़ार करो, मैं वुज़ू कर के दो रक्अ़त नमाज़ अदा कर लूं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ कर लूं।" चोर ने कहा : "ठीक है, जो बेहतर समझो कर लो।" चुनान्चे, ताजिर उठा और वुज़ू कर के चार रक्अ़त नमाज़ अदा कर लीं, फिर अपने हाथों को आस्मान की त़रफ़ बुलन्द कर दिया और तीन मरतबा येह दुआ़ मांगी :

"یَا وَدُوْدُ! یَا وَدُوْدُ! یَاوَدُوْدُ! یَا ذَا الْعَرْشِ الْمَجِیْدِ! یَا مُبْدِئُ! یَا مُعِیْدُ!یَا فَعَّالًا لِّمَا یُرِیْدُ! اَسْأَلُکَ بِنُوْرِ وَجْهِکَ الَّذِیْ مَلَأَ اَرْکَانَ عَرْشِکَ وَ بِقُدْرَتِکَ الَّتِیْ قَدَّرْتَ بِهَا عَلٰی خَلْقِکَ وَبِرَحْمَتِکَ الَّتِیْ وَسِعَتْ کُلَّ شَیْءٍ اَنْتَ الَّذِیْ وَسِعْتَ کُلَّ شَیْءٍ رَحْمَةً وَّعِلْمًا لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ یَا مُغِیْثُ اَغِثْنِیْ"

या'नी ऐ अपने बन्दों से बहुत ज़ियादा मह़ब्बत करने वाले ! ऐ अपने बन्दों से बहुत ज़ियादा मह़ब्बत करने वाले ! ऐ अपने बन्दों से बहुत ज़ियादा मह़ब्बत करने वाले ! ऐ अ़र्शे अ़ज़ीम के मालिक عَزَّوَجَلَّ ऐ पैदा करने वाले ! ऐ लौटाने वाले ! ऐ हमेशा जो चाहे, कर लेने वाले ! मैं तुझ से तेरे नूर के वसीले से सुवाल करता हूं जिस ने तेरे अ़र्श को घेर रखा है और तेरी उस क़ुदरत के वासित़े सुवाल करता हूं जिस के साथ तू अपनी मख़्लूक़ पर क़ादिर है और तेरी उस रह़मत के वसीले से सुवाल करता हूं जो हर शै को घेरे हुए है, तू ने रह़मत और इ़ल्म के ए'तिबार से हर शै का इह़ात़ा किया, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, ऐ मदद करने वाले ! मेरी मदद फ़रमा।"

जब वोह दुआ़ से फ़ारिग़ हुवा तो सियाह घोड़े पर सुवार एक शख़्स देखा। जिस ने सब्ज़ रंग के कपड़े ज़ैबे तन कर रखे थे, उस के हाथ में चमकता हुवा नेज़ा था। चोर ने घोड़े सुवार को

देखा तो ताजिर को छोड़ कर उस की जानिब बढ़ा। जब उस के क़रीब हुवा तो उस ने तेज़ी से अपना नेज़ा मार कर चोर को घोड़े से गिरा दिया और फिर ताजिर के पास आया और कहने लगा : "उठो, और जा कर इसे क़त्ल कर दो।" ताजिर ने पूछा : "आप कौन हैं ? मैं ने कभी किसी को क़त्ल नहीं किया और न ही इसे क़त्ल करना पसन्द करता हूं।" फिर घोड़े सुवार ने खुद ही चोर का काम तमाम कर दिया और ताजिर के पास आ कर कहा : "मैं तीसरे आस्मान का फ़िरिश्ता हूं। जब आप ने पहली मरतबा दुआ़ की थी तो हम ने आस्मान के दरवाज़ों की खट-खटाहट सुनी। हम ने कहा : आज कोई नई बात हुई है। फिर दूसरी मरतबा दुआ़ की तो आस्मान के दरवाज़े खोल दिये गए और इन से आग की चिंगारियों जैसी चिंगारियां ज़ाहिर हुईं।

फिर जब तीसरी मरतबा दुआ़ की तो ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام हमारे पास तशरीफ़ लाए और येह पूछा : "उस ग़मज़दा की मदद कौन करेगा।" मैं ने अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ की, कि मुझे इस चोर के क़त्ल की तौफ़ीक़ अ़ता की जाए, लिहाज़ा ऐ शख़्स ! जान ले कि जो शख़्स किसी भी रंज व ग़म और मुसीबत व तक्लीफ़ में येह दुआ़ करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की मदद करते हुए उस से मसाइब व आफ़ात दूर फ़रमा देगा।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि उस ताजिर ने बख़ैर व आ़फ़िय्यत मदीना शरीफ़ पहुंच कर हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िरी दी और येह वाक़िआ़ आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के गोश गुज़ार किया तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुझे अपने अस्माए हुस्ना तल्क़ीन फ़रमाए हैं कि जब इन के वसीले से दुआ़ की जाए तो क़बूल होती है और जब कुछ मांगा जाए तो अ़ता किया जाता है।"

(الموسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب مجابی الدعوة،الحدیث۲۳،ج۲،ص۳۲۱،بتغیرٍواختصارٍ)

रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ :

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आ़रिफ़ीन मा'रिफ़त के ज़रीए तुझ तक पहुंच गए और इबादत की कषरत करने वाले तेरी बारगाह में खड़े हैं। या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुतकब्बिरीन तेरे जलाल की हैबत से लरज़ते हैं, ज़ालिम व जाबिर तेरे कमाले इक़्तिदार से कांपते और तेरे जमाल का मुशाहदा कर के राह़त पाते हैं। या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सुवाली तेरे दरवाज़े पर खड़े हैं, मह़ब्बत करने वालों के जिगर तेरी त़लब में पाश पाश हुए जाते हैं, क़ियाम करने वाले तेरी मुनाजात की लज़्ज़त से कामयाबी का हार पहनते हैं, बा अ़मल लोग तेरे षवाब से नफ़्अ़ मन्द होते हैं और हर लम्ह़े तुझे पेशे नज़र रखने वाले तेरे क़ुर्ब में ह़ाज़िर होते हैं।

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तेरी बारगाह में गुनहगार अपने गुनाहों पर नादिम हैं, नाफ़रमान शर्मसार हैं, तेरी कड़ी निगरानी से ह़या के मारे सर झुकाए खड़े हैं। ख़त़ाकार तेरी हैबत से ख़ामोश हैं। ख़ाइफ़ीन तेरी अ़ज़ीम त़ाक़त से पारा पारा हो रहे हैं। या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अगर तू सिर्फ़ इबादत गुज़ारों पर रह़म फ़रमाएगा तो ख़्वाबे ग़फ़्लत में सोने वालों पर रह़म कौन करेगा ? या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अगर तू सिर्फ़ बा अ़मल बन्दों पर ही नज़रे रह़मत फ़रमाएगा तो कोताहों का क्या बनेगा ? या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मोह़ताजों की नहरों को अपने इन्आ़म के समन्दर से जारी कर दे। ग़मज़दों के जिगरों को अपने अफ़्वो करम के पानी से सैराब फ़रमा दे। या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी बारगाह से भटके हुओं को अपनी मा'रिफ़त के दरवाज़े की त़रफ़ लौटा दे। और भटके हुओं के दिलों को अपनी मेहरबानी और लुत़्फ़ो करम के अन्वार से हिदायत अ़त़ा फ़रमा और ऐ सब से बढ़ कर रह़म फ़रमाने वाले ! इन सब को अपने सायए अफ़्वो करम में दाख़िल फ़रमा दे और इन को अपनी मग़फ़िरत से नवाज़ दे। (आमीन)

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ وَ سَلَّم

बद निगाही की सज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि "एक शख़्स नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा उस का ख़ून बह रहा था तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से इस्तिफ़सार फ़रमाया : "तुझे क्या हुवा ?" उस ने अ़र्ज़ की : "मेरे पास से एक औ़रत गुज़री तो मैं ने उस की त़रफ़ देखा और मेरी निगाहें मुसलसल उस का पीछा करती रहीं कि अचानक मेरे सामने एक दीवार आ गई जिस ने मुझे ज़ख़्मी कर दिया और मेरा येह ह़ाल कर दिया जिसे आप मुलाह़ज़ा फ़रमा रहे हैं।" तो नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जब किसी बन्दे से भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसे दुन्या ही में उस की सज़ा दे देता है।"

(مجمع الزوائد، کتاب التو بة ، باب فیمن عوقب بذنبه فی الدنیا ، رقم ۱۷٤۷۱،ج ۱۰ ، ص۳۱۳)

बयान 30 : औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के अह़वाले ज़िन्दगी

ह़म्दे बारी तआ़ला :

सब ख़ूबियां उस ज़ात के लिये हैं जिस ने अपने मुह़िब्बीन के दिलों को अपनी मह़ब्बत के असरार से लबरेज़ किया और इन के चेहरों को अपने नूर से मुनव्वर किया और चमकते दमकते ताजों से इन को इ़ज़्ज़त व वजाहत अ़त़ा फ़रमाई और इन के लिये वाज़ेह़ त़ौर पर विलायत का फ़ैसला फ़रमा दिया और इन्हें राहे मा'रिफ़त की हिदायत दी तो वोह हमेशा उस की बारगाह में इ़बादत करते रहे। इन के अह़वाल में तब्दीली न आई। अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने इन्हें अपने भेदों पर आगाह फ़रमाया और इन के दिलों पर तजल्ली फ़रमाई तो इन के ख़ालिस जवाहिर को पाक व साफ़ फ़रमा कर इन्हें मज़ीद हिदायत व बसीरत अ़त़ा फ़रमा दी। इन्हें अपने दीदार की पाकीज़ा शराब अ़त़ा फ़रमाई और पर्दे उठा दिये, और फ़रमाया : "मेरे मह़बूब बन्दों को ख़ुश आमदीद ! आज तुम किसी ग़म से न डरो।" तो कुछ ख़ुशी से झुम उठे, कुछ ऐसे थे कि जब इन पर तजल्लियाते इलाहिय्या की मज़ीद बारिश हुई तो इन पर राज़ मुन्कशिफ़ होने लगे और बा'ज़ ने बारगाहे ख़ालिक़ عَزَّ وَجَلَّ का क़ुर्ब पसन्द कर लिया। ऐसों की ही शान में अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ۝ (پ۲۹،الدھر:۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक नेक पीयेंगे उस जाम में से जिस की मलूनी काफ़ूर है।*

येही लोग बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّ وَجَلَّ में क़ियाम कर के ह़ुज़ूरी से लुत़्फ़ अन्दोज़ होते हैं, उस की ने'मतों में ग़ोत़ा ज़न रहते हैं, सरकशों को तोड़ते और टूटे हुओं को जोड़ते हैं। और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इन की शान बयान फ़रमाता है : "يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ۝ (پ۲۹، الدھر:۷)" **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपनी मन्नतें पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं जिस की बुराई फैली हुई है।

उन का अख़्लाक़ सब्र व शुक्र और शिआ़रे ख़ुशूअ़ या'नी गिड़ गिड़ाना है, उन के अफ़्आ़ल रुकूअ़ व सुजूद हैं, उन की पसलियां भूक से लिपट जाती हैं, वोह साइल और फ़क़ीर को अपनी ज़ात पर तरजीह़ देते हैं। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ क़ुरआने ह़कीम में इरशाद फ़रमाता हैं : وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّ اَسِيْرًا ۝ (پ۲۹،الدھر:۸) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और खाना खिलाते हैं उस की मह़ब्बत पर मिस्कीन और यतीम और असीर को।

उन की निगाहें झुकी झुकी, ज़बानें ख़ामोश और चेहरे ग़ुबार आलूद होते हैं और वोह फ़ुक़रा व मसाकीन से नर्म लहजे में बात करते और कहते हैं :

اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّ لَا شُكُوْرًا ۝ (پ۲۹، الدھر:۹) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *उन से कहते हैं हम तुम्हें ख़ास अल्लाह के लिये खाना देते हैं तुम से कोई बदला या शुक्रगुज़ारी नहीं मांगते।*

उन्हों ने महब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ के जाम पिये तो उन के चेहरे मुशाहदए खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ के अन्वार से आफ़्ताब की त़रफ़ चमक उठे और उन के सामने दुन्या को दुल्हन की त़रह सजा कर पेश किया गया लेकिन उन्हों ने कहा : اِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا۝ (پ۲۹،الدھر:۱۰) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक हमें अपने रब्ब से एक ऐसे दिन का डर है जो बहुत तुर्श निहायत सख़्त है।

येह वोह दिन है जिस की हौलनाकियों से तमाम लोग मुतह़य्यिर व परेशान होंगे, उस की शिद्दत से आंखों से नींद उड़ जाएगी। (मगर नेक लोग शादां व फ़रहां होंगे) जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

''فَوَقٰهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقّٰهُمْ نَضْرَةً وَّ سُرُوْرًا۝ (پ۲۹،الدھر:۱۱) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *तो उन्हें* ***अल्लाह*** *ने उस दिन के शर से बचा लिया और उन्हें ताज़गी और शादमानी दी।''*

मुक़र्रबीने बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ ने अन्वार के पर्दे फाड़ डाले और ऐसे बाग़ात में अज़ीज़ व ग़फ़्फ़ार रब्ब عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब पाने में कामयाब हो गए जिन के नीचे नहरें बहती हैं, मलाइका शबो रोज़ इन की ख़िदमत करते हैं। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ۝ (پ۲۹، الدھر:۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और इन के आस पास ख़िदमत में फिरेंगे हमेशा रहने वाले लड़के, जब तू उन्हें देखे तो इन्हें समझे कि मोती हैं बिखरे हुए।*

येह वोह लोग हैं जिन्हें बरोज़े क़ियामत बड़ी घबराहट ग़मगीन न करेगी, न ह़सरत व नदामत पशेमान करेगी, येह ब ख़ैरिय्यत त़वील सफ़र के बा'द खुश व खुर्रम बाला ख़ानों और मह़ल्लात में सुकूनत पज़ीर होंगे, फिर इन्हें जन्नत में बिशारत व खुश ख़बरी देते हुए कहा जाएगा :

اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا۝ (پ۲۹، الدھر:۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन से फ़रमाया जाएगा येह तुम्हारा सिला है और तुम्हारी मेह़नत ठिकाने लगी।*

इन का मालिक عَزَّوَجَلَّ इन को अपनी बारगाह में ह़ाज़िर कर के अपना कुर्ब अ़त़ा फ़रमाएगा, फिर अपनी मह़ब्बत व उन्स के प्याले में पाकीज़ा शराब से इन को सैराब करेगा और इरशाद फ़रमाएगा : ''ऐ मेरे मह़बूब बन्दो ! त़वील अ़र्सा तुम मेरे दरवाज़े पर खड़े हो कर मेरी बारगाह में इबादत से लुत़्फ़ अन्दोज़ होते रहे, तुम ने मेरी नाज़िल कर्दा मुसीबतों पर सब्र किया, मैं तुम्हें ने'मतों वाले घर या'नी जन्नत में ठिकाना अ़त़ा करूंगा और तुम्हारी आंखों को अपने लाज़वाल हुस्नो जमाल के दीदार से सैराब करूंगा और तुम्हें बहुत ज़ियादा अज्रो षवाब अ़त़ा करूंगा।''

लकड़ी का बुरादा मैदा बन गया :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه सदक़ा व ईषार को बहुत ज़ियादा पसन्द करते थे। बा'ज़ अवक़ात अपनी ग़िज़ा भी सदक़ा कर देते और खुद रात को भूके सोते। एक सुब्ह़ इस ह़ालत में की, कि आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के घर सिवाए एक दिरहम के कुछ न था।

आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ की ज़ौजए मोह़तरमा ने अ़र्ज़ की : "इस दिरहम से आटा ख़रीद लाएं ताकि हम इसे गूंध कर बच्चों के लिये रोटी पका लें, बच्चे मज़ीद भूक बरदाश्त नहीं करेंगे।" आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने एक दिरहम और तौशादान (खाने का बरतन) लिया और बाज़ार की त़रफ़ चल पड़े। सर्दी बहुत शदीद थी, रास्ते में आप को एक साइल मिला, आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ वहां से हट कर दूसरी त़रफ़ से जाने लगे तो उस ने आप को रोक लिया और अपनी तंग दस्ती बयान करते हुए आप को क़सम दी। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने वोह दिरहम उसे दे दिया। फिर येह फ़िक्र लाह़िक़ हो गई कि अपने अहलो इ़याल के पास क्या ले कर जाऊंगा। चुनान्चे, इसी फ़िक्र में आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ एक मज़बूत़ दरख़्त के क़रीब से गुज़रे लोग उस को चीर रहे थे। इन्हों ने तौशादान खोला और आरे से चीरे जाने के बाइ़ष जो बुरादा गिर रहा था उस से तौशादान भर कर मुंह बन्द कर दिया और घर जा कर बीवी को कुछ बताए बिग़ैर रख दिया और ख़ुद मस्जिद की त़रफ़ चल पड़े। जब आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ की अहलियाए मोह़तरमा ने तौशादान खोल कर देखा तो उस में सफ़ेद बारीक मैदा मौजूद था। इस ने गुंध कर बच्चों के लिये खाना पाकाया। बच्चों ने ख़ूब सैर हो कर खाया और फिर खेलने लग गए। जब सूरज ख़ूब बुलन्द हो गया तो आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ बीवी, बच्चों की भूक का ख़ौफ़ मह़सूस करते हुए घर तशरीफ़ लाए। जब आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ बैठ गए तो आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ की बीवी ने दस्तरख़्वान और खाना ला कर सामने रखा, आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ खाना खा कर फ़ारिग़ हुए तो पूछा : "येह खाना कहां से आया?" अ़र्ज़ की : "मेरे सरताज! इसी तौशादान से जो आप ले कर आए थे।" आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ बहुत ह़ैरान हुए और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के लुत़्फ़ो करम और हुस्ने कारीगरी पर उस का शुक्र अदा किया।

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो! देखो! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ अपने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ تعَالٰی पर कैसा लुत़्फ़ो करम फ़रमाता है और औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ تعَالٰی भी कैसा तवक्कुल करते हैं पस दुन्या के मुआ़मले में **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इन के लिये काफ़ी हो जाता है और इन्हें अपने फ़ज़्लो करम से रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाता है और इन के साथ अपने शायाने शान मुआ़मला फ़रमाता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुआ़विया अस्वद رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ नाबीना थे। क़िराअते क़ुरआन बहुत ज़ियादा पसन्द थी। जब आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ क़ुरआने करीम खोलते तो आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ की बीनाई लौट आती और जब क़िराअत से फ़ारिग़ होते तो बीनाई चली जाती। एक मरतबा आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ को निदा की गई : "हम ने तुम्हारी बीनाई इस वजह से ज़ाइल नहीं की, कि हम तेरे मुआ़मले में बख़ील हैं बल्कि हमें इस पर ग़ैरत आई कि तुम हमारे सिवा किसी को देखो।"

दिल होश में न रहा :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम साइह़ رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने त़वाफ़े बैतुल्लाह शरीफ़ के दौरान एक लड़की को का'बे के पर्दों से लिपटे हुए येह कहते सुना : "हाए! मह़ब्बते

इलाही عَزَّوَجَلَّ के बा'द मैं तन्हा हो गई, हाए ! इ़ज़्ज़त पाने के बा'द मैं ज़लील हो गई, हाए ! अमीरी के बा'द फ़क़ीरी में मुब्तला हो गई, हाए ! इतनी बड़ी मुसीबत नाज़िल हो गई।" मैं ने पूछा : "ऐ लड़की ! तुझ पर कौन सी मुसीबत नाज़िल हुई ?" उस ने कहा : "मेरा दिल होश में नहीं रहा।" मैं ने कहा : "येह तो मा'मूली मुसीबत है। कहने लगी : "भला दिल की बे होशी और मह़बूब की जुदाई से बढ़ कर भी कोई मुसीबत हो सकती है ?" मैं ने पूछा : "तुम अपनी आवाज़ पस्त क्यूं नहीं करती ?" तो वोह जवाबन पूछने लगी : "बताइये ! येह घर किस का है, आप का या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ?" मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का।" कहने लगी : "येह ह़रम आप का है या खुदा عَزَّوَجَلَّ का ?" मैं ने कहा : "उसी का है।" उस ने फिर पूछा : "अच्छा ! येह बताइये कि कौन हमें इस की ज़ियारत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाता है ?" मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ" तो वोह कहने लगी : "फिर मुझे छोड़ दो कि मैं उस की बारगाह में आ़जिज़ी व इन्किसारी करूं जैसा कि उस ने हमें अपने ह़रम शरीफ़ में ह़ाज़िरी की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई और इस की त़रफ़ हमारी रहनुमाई फ़रमाई। " फिर उस ने अपने हाथ आस्मान की त़रफ़ बुलन्द कर लिये और यूं दुआ़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरी मेरे साथ मह़ब्बत का वासित़ा ! मेरे दिल को होश अ़ता फ़रमा दे।" मैं ने उसे कहा : "तुम्हें कैसे मा'लूम हुवा कि वोह तुम से मोह़ब्बत करता है ?" उस ने जवाब दिया : "वोह इस त़रह़ कि उस की ख़ास इ़नायत ने हमेशा मेरी त़रफ़ सबक़त की क्यूंकि उस ने मेरी तलाश में लश्करों को भेजा, उस ने माल ख़र्च किये और उस के बन्दों ने जिहाद किया यहां तक कि मुझे शिर्क के शहर से निकाल कर तौह़ीद के शहर में ला खड़ा किया। और फिर उस ने मुझे अपने रास्ते की मा'रिफ़त अ़ता की और ह़ुस्ने तौफ़ीक़ के साथ अपनी बारगाह की त़रफ़ रहनुमाई की, मुझे इस का शुऊर भी न था मगर अब मैं उस की बारगाह में ह़ाज़िर हूं।"

राहिबों का क़बूले इस्लाम :

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू मदयन رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه बुलन्द मर्तबे के मालिक और अब्दाल में से थे, कम वक़्त में त़वील मसाफ़त तै कर लेते, आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه का ज़िक्र ज़बां ज़दे आ़म था, और आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه साह़िबे करामात व तसर्रुफ़ात बुज़ुर्ग थे। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه उन्दुलुस की जामेअ़ मस्जिदे ख़िज़्र में नमाज़े फ़ज्र के बा'द बयान फ़रमाया करते थे। ईसाई राहिबों को जब मा'लूम हुवा तो उन्हों ने पूरे मुल्क के गिरजों की ता'दाद मा'लूम की तो वोह सत्तर थे। दस बड़े राहिब आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه को आज़माने के लिये भेस बदल कर मुसलमानों के लिबास में लोगों के साथ मस्जिद में बैठ गए और किसी को ख़बर तक न हुई। जब आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه बयान शुरूअ़ करने लगे तो थोड़ी देर के लिये ख़ामोश हो गए, फिर एक दरज़ी ह़ाज़िर हुवा। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : "इतनी देर क्यूं लगा दी ?" उस ने अ़र्ज़ की, "ह़ुज़ूर ! आप के ह़ुक्म पर रात को टोपियां बनाते हुए देर हो गई।" आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه ने उस से टोपियां

लीं और खड़े हो कर सब राहिबों को पहना दीं। लोगों को इस से बड़ा तअ़ज्जुब हुवा लेकिन मुआ़मला अभी तक वाज़ेह़ न हुवा था। फिर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَيْه ने बयान शुरूअ़ कर दिया, जिस में येह जुम्ला भी फ़रमाया : "ऐ फ़ुक़रा ! जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से तौफ़ीक़ की हवाएं सआ़दत मन्द दिलों पर चलती हैं तो वोह हर रोशनी को बुझा देती हैं।" फिर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَيْه ने सांस लिया जिस से मस्जिद की तक़रीबन तीस (30) क़िन्दीलें बुझ गईं। फिर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَيْه सर झुकाए हुए ख़ामोश हो गए और आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَيْه की हैबत से किसी को जुरअत न हुई कि कोई बात या ह़रकत करे। फिर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَيْه ने अपना सर उठा कर फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, ऐ फ़ुक़रा ! जब इ़नायत के अन्वार मुर्दा दिलों पर रोशनी करते हैं तो वोह राह़त व सुकून से ज़िन्दगी बसर करते हैं और हर ज़ुलमत उन के लिये रोशन हो जाती है।" फिर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَيْه ने सांस लिया तो तमाम क़िन्दीलों की रोशनी लौट आई, और वोह इतनी बे चैनी से जलीं कि क़रीब था कि एक दूसरे पर गिर पड़तीं। फिर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَيْه ने आयते सजदा की तफ़्सीर बयान करते हुए जब सजदा किया और लोगों ने भी सजदा किया तो राहिब भी रुस्वाई के ख़ौफ़ से लोगों के साथ सजदे में गिर गए। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَيْه ने सजदे में यूं दुआ़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू अपनी मख़्लूक़ की तदबीर और अपने बन्दों की मस्लेह़त बेहतर जानता है, येह राहिब मुसलमानों के लिबास में मुसलमानों के साथ तेरी बारगाह में सजदे किये हुए हैं, मैं ने इन के ज़ाहिर को तब्दील कर दिया, इन के बात़िल को तब्दील करने पर तेरे सिवा कोई क़ादिर नहीं, मैं ने इन्हें तेरे दस्तरख़्वाने करम पर बिठा दिया है तू इन को कुफ़्र की तारीकी से निकाल कर नूरे ईमान में दाख़िल फ़रमा दे। राहिबों ने अभी सर सजदे से न उठाए थे कि उन से कुफ़्रो शिर्क की नापाकी दूर हो गई और वोह इस्लाम में दाख़िल हो गए, और अपने मक़्सूद को ह़ासिल कर लिया। फिर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और आप के दस्ते अक़्दस पर तौबा कर ली और अपने किये पर नदामत से आंसू बहाने लगे ह़त्ता कि उन की चीख़ो पुकार की आवाज़ मस्जिद में गुंज उठी। वोह दिन गवाह है कि तीन शख़्स इसी इजतिमाअ़ में इन्तिक़ाल कर गए। जब बादशाह तक येह बात पहुंची तो उस ने इन सब के साथ अच्छा बरताव किया और इन्आ़म व इकराम से नवाज़ा और ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू मदयन رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَيْه भी उन के क़बूले इस्लाम से बहुत ख़ुश हुए।

रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ :

या इलाहल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ सुवाली तेरे दरवाज़े पर खड़े हैं, गुनहगार तेरी बारगाह में पनाह लिये हुए हैं, ह़ाजत मन्द अपनी ह़ाजात पेश कर रहे हैं, इस्यां शिआ़रों ने तेरे सामने आ़जिज़ी व इन्किसारी से अपने सर झुका लिये हैं, कोताही करने वालों के पास उ़ज़्र पेश करने के लिये दलाइल ख़त्म हो गए हैं, साइलीन की कश्ती तेरे बह़रे करम के साह़िल पर खड़ी है, सब उस

इजाज़त नामे की उम्मीद किये हुए हैं जो तेरी रह़मत के कनारे तक पहुंचा दे, इन्हों ने अपने हाथ तेरे जूदो करम की मूसलाधार बारिश की त़रफ़ बढ़ा दिये हैं, ख़ाइफ़ीन के दिल तेरी वईदों के ख़ौफ़ से बेचैन हैं कि वोह कैसे जवाब देंगे जब कि तेरा अ़फ़्वो करम तमाम बन्दों को शामिल है, या इलाही عَزَّوَجَلَّ अगर साइलीन को तेरी बारगाह से ही मर्दूद कर दिया गया तो वोह किस के पास जाएंगे ? अगर गुनाहगारों को तेरे ही दरवाज़े से धुतकार दिया गया तो उन का वाली कौन होगा ? अगर तेरी बारगाह से दूर रहने वालों को मायूस कर दिया गया तो उन का सहारा कौन होगा ? या इलाही عَزَّوَجَلَّ जब ताइबीन तेरी बारगाह में रुजूअ़ करते हैं तो तू ही उन की तौबा क़बूल फ़रमाता है।

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आ़रिफ़ीन मा'रिफ़त के ज़रीए़ तुझ तक पहुंच गए और इ़बादत की कषरत करने वालों की तेरी बारगाह में ह़ाज़िरी हो गई। या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुतकब्बिरीन तेरे जलाल की हैबत से लरज़ते हैं ज़ालिमों जाबिर तेरे कमाले इक़्तिदार से कांपते हैं और तेरे दीदार की तड़प रखने वाले तेरे जमाल का मुशाहदा कर के राह़त पाते हैं। या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुह़िब्बीन के जिगर तेरी त़लब में पाश पाश हुए जाते हैं, क़ियाम करने वाले तेरी मुनाजात की लज़्ज़त से कामयाबी का हार पहनते हैं, बा अ़मल लोग तेरे षवाब से नफ़्अ़ मन्द होते हैं और हर लम्ह़ा तुझे पेशे नज़र रखने वाले तेरे क़ुर्ब में ह़ाज़िर होते हैं।

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरी बारगाह में गुनहगार अपने गुनाहों पर नादिम, नाफ़रमान शर्मिन्दा हैं, तेरी कड़ी निगरानी से ह़या के मारे सर झुकाए खड़े हैं, ख़त़ाकार तेरी हैबत से ख़ामोश हैं, ख़ाइफ़ीन तेरी अ़ज़ीम त़ाक़त से पारा पारा हो रहे हैं, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अगर तू सिर्फ़ इ़बादत गुज़ारों पर रह़्म फ़रमाएगा तो ख़्वाबे ग़फ़्लत में सोने वालों पर रह़्म कौन करेगा ? या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अगर तू सिर्फ़ बा अ़मल बन्दों पर ही नज़रे रह़मत फ़रमाएगा तो कोताहों का क्या बनेगा ? या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी बारगाह से भटके हुओं को अपनी मा'रिफ़त के दरवाज़ों की त़रफ़ लौटा दे, और भटके हुओं के दिलों को अपनी मेहरबानी और लुत़्फ़ो करम के अन्वार से हिदायत अ़त़ा फ़रमा और ऐ सब से बढ़ कर रह़्म फ़रमाने वाले ! इन सब को अपने सायए अ़फ़्वो करम में दाख़िल फ़रमा कर इन को अपनी मग़फ़िरत से नवाज़ दे। (आमीन)

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ وَ سَلَّم

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से पूछा गया कि "इन्सान कौन हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "उ़-लमा।" फिर पूछा गया कि "बादशाह कौन हैं ?" फ़रमाया : "आख़िरत के लिये दुन्या से रू गर्दानी करने वाले।" फिर पूछा गया कि" बेवुक़ूफ़ कौन हैं ?" फ़रमाया : "अपने दीन के बदले दुन्या कमाने वाले लोग।"

(المحدث الفاصل، ج١، ص٢٠٥)

बयान 31: क़ुर्बे हक़ीक़ी का बयान

हम्दे बारी तआला :

सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने दिलों के क़ुफ़्ल (ताले) ख़ुशी व मसर्रत की चाबियों से खोले और सुब्ह़ के वक़्त चलने वाली हवा के आरास्ता पैरास्ता ख़ुशगवार झोंकों से दिलों को ज़िन्दगी और रूहों को राह़त अ़त़ा फ़रमाई। अपने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के दिलों के बाग़ अपने जूदो करम और ने'मतों के बादल से सैराब किये तो उस की अ़ज़ीम अ़त़ाएं फैल कर आ़म हो गईं, और तमजीद की बुलबुलों को तौह़ीद की टहनियों पर छोड़ दिया। अब वोह सुब्ह़ व शाम अपने मा'बूद का शुक्र बजा लाते हुए उस की ह़म्द व षना में मश्ग़ूल हैं। उन के दिलों की कलियों को उन के पाकीज़ा ज़िक्र के साथ मुअ़त्त़र फ़रमाया तो उन की ख़ुश्बूएं ख़ूब फैल गईं, उन्हें अपनी बारगाहे क़ुर्ब में रात के ख़ैमे तले जम्अ़ किया और अपनी मह़ब्बत का साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ जाम पिला कर सख़ावत के प्यालों से सैराब किया। जब दरख़्तों के पत्तों ने तालियां बजाईं, बादे नसीम ने अश्आ़र में जवानी के दिनों का तज़्किरा किया और हज़ार दास्तान[1] ने अपनी नर्म व नाज़ुक सुरीली आवाज़ में गीत गाए तो हर आ़शिक़े सादिक़ अपने पुराने वा'दे का मुश्ताक़ हो कर बे क़रार हो गया। इन में कुछ ऐसे भी थे जो मदहोश होने के बा'द होश में आ गए और कुछ ऐसे भी थे जिन्हों ने अपने निशानात को ही ख़त्म कर दिया। बा'ज़ झूमते और लड़ खड़ाते हुए ह़ैरान व सरगर्दां फिरने लगे, बा'ज़ ने इ़श्क़े इलाही عَزَّوَجَلَّ को छुपाया, बा'ज़ ज़ाहिर हो गए, किसी ने आ़जिज़ी व इन्किसारी और ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ का लिबास पहन लिया जब कि बा'ज़ आवारा हो कर रुस्वा हो गए और लिबासे शोहरत पहन लिया या'नी ऐसा लिबास जिस से बन्दा नेक ज़ाहिर हो। बहर ह़ाल येह सब सह़री की ख़ल्वतों में फटे पुराने कपड़ों की धज्जियां बिखैर डालते और मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ में पर्दों को चाक कर देते, तो मालिके दो जहां, ख़ालिक़े इन्सो जां अल्लाह रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ ने इन पर रह़्म फ़रमाते हुए इन्हें मुआ़फ़ कर दिया और इरशाद फ़रमाया :

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ (پ۲،البقرہ:۱۹۸) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *तुम पर कुछ गुनाह नहीं।*

सियाहफ़ाम ग़ुलाम :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान फ़रमाते हैं कि "एक साल मैं ह़ज के इरादे से निकला, जब मैं मक्कए मुकर्रमा पहुंचा तो देखा कि लोग शहर से बाहर नमाज़े इस्तिसक़ा के लिये जा रहे हैं। मैं भी तीन दिन इन के साथ जाता रहा मगर बारिश न हुई। मैं इन्हें इसी ह़ालत में छोड़ कर ह़जरे अस्वद के पास चला आया। आचानक मैं ने सब्ज़ लुबादे में मल्बूस एक ज़र्द चेहरे वाला सियाहफ़ाम शख़्स देखा, उस पर दो चादरें थीं, एक तहबन्द के त़ौर पर और दूसरी जिस्म पर लपेटी हुई थी। वोह इस क़दर रोया कि आंसूओं से उस के कपड़े भीग गए,

---

1 ......एक ख़ुश इल्ह़ान परन्दे का नाम है, इसे फ़ारसी में हज़ार दास्तान कहते हैं।

फिर आस्मान की त़रफ़ मुंह उठा कर कहने लगा : "गुनाहों और ऐ़बों की कषरत की वजह से चेहरे रुस्वा हो गए हैं। ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ नाफ़रमानियों की कषरत की वजह से तेरे बन्दों से बारिश रोक दी गई है, तेरी मख़्लूक़ क़ह़त़ से हलाक हो रही है और भूक में मुब्तला है और तू सब कुछ जानने वाला है, बच्चे मुज़्त़रिब व परेशान हैं, मवेशी हलाक हो रहे हैं। मैं तुझे तेरे मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़त व वजाहत के वसीले से क़सम देता हूं कि इसी लम्ह़े बादल से सैराब फ़रमा दे, मैं तेरी बारगाह में तेरा ही वसीला पेश करता हूं और तुझ पर ही मेरा ए'तिमाद व भरोसा है लिहाज़ा अपनी बारगाह में ह़ाज़िर होने वालों के गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दे और इन के जुर्मों का मुआख़ज़ा न फ़रमा। ऐ मेरे मालिक व मौला عَزَّوَجَلَّ इसी वक़्त बारिश नाज़िल फ़रमा दे।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि अभी उस की दुआ़ मुकम्मल न हुई थी कि बादल छा गए और हर त़रफ़ मुसलाधार बारिश होने लगी। मैं बैठ कर रोता रहा यहां तक कि जब वोह शख़्स ह़जरे अस्वद से दूर जाने लगा तो मैं भी उस के पीछे हो लिया और उस के ठिकाने को पहचान लिया। मैं उस की क़ियामगाह का दरवाज़ा देख कर अपने घर लौट आया लेकिन सारी रात मुझे नींद न आई। जब सुब्ह़ हुई तो मुंह अन्धेरे ही मैं ने नमाज़े फ़ज्र अदा कर ली और उस मक़ाम पर पहुंच गया, अन्दर दाख़िल हुवा तो एक ख़ूबसूरत नौजवान से मुलाक़ात हुई। मैं ने सलाम किया, उस ने सलाम का जवाब दिया और मुझ से पूछा : "ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान ! क्या किसी काम से आए हो ?" मैं ने कहा : "हां, मैं एक ग़ुलाम ख़रीदना चाहता हूं।" उस ने कहा : "मेरे पास दस ग़ुलाम हैं, इन में से जो आप को पसन्द आए ले जाएं।" फिर उस ने एक मोटे से ग़ुलाम को बुला कर उस के औसाफ़ बयान किये। मैं ने कहा : "मुझे इस की ज़रूरत नहीं।" फिर उस ने एक एक कर के दस ग़ुलाम मेरे सामने पेश कर दिये लेकिन मैं ने येही कहा कि "मुझे इन में से किसी की ज़रूरत नहीं।" अब वोह बोला : "मेरे पास एक ज़र्द रंग के लाग़र बदन, सियाह फ़ाम ग़ुलाम के सिवा कोई भी बाक़ी नहीं बचा लेकिन उस की ह़ालत येह है कि अगर लोग हंसते हैं तो वोह रोने लगता है और अगर लोग अपने कामों में मसरूफ़ होते हैं तो वोह नमाज़ पढ़ने लगता है, सारी रात नहीं सोता, हां ! बा'ज़ अवक़ात ह़सरत व यास से किसी को पुकारता रहता है, अपनी कमज़ोरी की ज़ियादती की वजह से किसी की ख़िदमत के क़ाबिल नहीं, इस के बा वुजूद मेरा दिल उस को पसन्द करता है और उसे देख कर में बरकत ह़ासिल करता हूं।"

फिर उस ने मैमून को आवाज़ दी। जब वोह ग़ुलाम बाहर आया तो मैं ने उसे देख कर पहचान लिया कि येह वोही शख़्स है। मैं ने कहा : "मैं येही ग़ुलाम ख़रीदना चाहता हूं।" वोह नौजवान बोला, "मैं तो इस को बेचने की कोई वजह नहीं पाता।" मैं ने पूछा, "तुम इसे क्यूं नहीं बेचना चाहते ?" वोह नौजवान बोला, "मैं इस से मानूस हो गया हूं और इस को देख कर बरकत ह़ासिल करता हूं, इस के साथ साथ मुझे इस पर कुछ ख़र्च भी नहीं करना पड़ता। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह मेरे पास चराग़ की रस्सी को बट कर और खजूर के पत्तों से कुछ बना कर इस के इ़वज़

ही कुछ खाता है और इस के बिग़ैर खाना भी नहीं खाता। सारा दिन निस्फ़ दानिक़ (या'नी दिरहम के छटे हिस्से) के बदले काम करता है। अगर कोई चीज़ बिक जाए तो खाना खा लेता है वरना भूका ही रात बसर करता है। मेरे दूसरे गुलामों ने मुझे बताया है कि येह सारी रात इबादत करता है।" येह सुन कर मैं ने कहा, "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम! अगर तुम ने येह गुलाम मुझे न बेचा तो मैं हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी और हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन अ़याज़ رَحِمَهُمُ اللّٰہ تعالٰی को साथ ले आऊंगा। तो वोह बोला, "अगर ऐसा है तो मैं आप की ज़रूरत पूरी करता हूं।"

चुनान्चे, वोह गुलाम मैं ने उस से ख़रीद लिया। फिर उस का हाथ पकड़ कर रास्ते पर चलने लगा। रास्ते में वोह मेरी जानिब मुतवज्जेह हो कर कहने लगा : "ऐ मेरे आक़ा!" मैं ने कहा, "लब्बैक।" तो वोह बोला : "आप लब्बैक न कहें कि गुलाम इस बात का ज़ियादा हक़दार है कि लब्बैक कहे।" फिर कहने लगा, "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम दे कर आप से पूछता हूं कि येह तो बताएं कि आप ने मुझ जैसे कमज़ोर व नातवां गुलाम को क्यूं ख़रीदा हालांकि मेरे मालिक ने मुझ से ज़ियादा उ़म्दा गुलाम आप के सामने पेश किये थे और मैं तो किसी की ख़िदमत करने से भी क़ासिर हूं।" मैं ने उसे कहा, "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम! मैं तेरा ख़ादिम बन कर रहूंगा और तुझ से अपना कोई काम नहीं लूंगा।" तो वोह बोला "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम पर आप मुझे बताएं कि आप ने मुझे किस वजह से ख़रीदा।" तो मैं ने उस को गुज़श्ता वाक़िआ़ बता दिया इस पर वोह कहने लगा : "यक़ीनन आप अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे हैं क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ में सितूदा सिफ़ात के मालिक औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہ تعالٰی मौजूद हैं और वोह इन का मक़ाम व मर्तबा अपने बन्दों में उन्हीं पर ज़ाहिर फ़रमाता है जिन्हें वोह पसन्द फ़रमा ले।"

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : पैदल चलते चलते हमारा गुज़र एक मस्जिद के पास से हुवा तो उस गुलाम ने मुझ से कहा, "ऐ मेरे आक़ा! अगर आप की इजाज़त हो तो इस मस्जिद में दो रक्अ़त नमाज़ अदा कर लूं।" मैं ने कहा, "अभी तो हम हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन अ़याज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه के घर जा रहे हैं, वहां जा कर जितनी चाहे रक्अ़तें पढ़ लेना।" वोह बोला, "मुझे क्या मा'लूम कि मैं उन के घर पहुंचने तक ज़िन्दा भी रहूंगा या नहीं? जब कि शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस के लिये भलाई का दरवाज़ा खोला जाए तो उसे चाहिये कि भलाई का काम मुकम्मल करे क्यूंकि वोह नहीं जानता कि कब दरवाज़ा बन्द हो जाए।" (الزهد لابن المبارك، باب ما جاء فی فضل العبادة، الحديث ١١٧، ص٣٨ "فليتم" بدله "فلينتهزه")

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : कि हम मस्जिद में दाख़िल हो गए और दोनों ने नमाज़ अदा की लेकिन उस की नमाज़ त़वील हो गई, मैं उस का इन्तिज़ार करने लगा। जब उस ने सलाम फेरा तो कहने लगा : "ऐ मेरे आक़ा! मेरी मौत का वक़्त क़रीब आ चुका है, ऐ मेरे आक़ा! मेरे और परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के दरमियान बड़ा उ़म्दा मुआ़मला

है, जिस को आप मुलाहज़ा फ़रमा चुके हैं और अब आप दूसरों को भी बताएंगे और मैं नहीं चाहता कि मेरा राज़ किसी पर ज़ाहिर हो।" फिर वोह सजदे में गिर कर मुसलसल रोने और कलिमए शहादत पढ़ने लगा यहां तक कि उस के जिस्म की ह़रकत रुक गई। मैं ने उसे ह़रकत दी तो वासिले बह़क़ पाया (या'नी उस की रूह़ क़फ़से उ़न्सूरी से परवाज़ कर चुकी थी)।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं उस को वहीं छोड़ कर ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल और ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْهِما को बुला लाया, हम ने मिल कर उस की तजहीज़ व तक्फ़ीन की। इस के बा'द मैं घर आया तो मेरे दिल में इक आग सी लगी हुई थी। जब रात हुई तो मैं अपने अवरादो वज़ाइफ़ से फ़ारिग़ हो कर सो गया। ख़्वाब में अचानक वोही ग़ुलाम मैमून रेशम के दो शिम्लों में मल्बूस मेरे पास आया, वोह मुस्कुरा रहा था और उस के हाथ में कोई चीज़ थी। मुझे सलाम कर के कहने लगा : "ऐ मेरे आक़ा ! जब मैं तमाम आक़ाओं के आक़ा عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो मैं ने खुल कर अपना ह़ाल बयान किया और येह भी अ़र्ज़ किया कि आप ने बिग़ैर किसी नफ़्अ़ व ख़िदमत के मुझे ख़रीदा तो मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ मैमून ! मैं पोशीदा व मख़्फ़ी बातों को जानता हूं और दिलों में छुपी बातों से भी बा ख़बर हूं, अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने मह़ज़ मेरी रिज़ा की ख़ातिर तुझे ख़रीदा था। लिहाज़ा मैं ने तेरे सबब और मेरी बारगाह में तेरे मक़ाम व मर्तबे की वजह से इसे जहन्नम की आग से आज़ाद कर दिया है।" (फिर ग़ुलाम ने कहा) ऐ मेरे आक़ा ! आप ने मेरी जो क़ीमत अदा की थी, येह लें।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मैं रोने लगा और जब बेदार हुवा तो देखा कि, वोह दिरहम मेरे हाथ में हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब भी मुझे मैमून की याद आती है तो उस की जुदाई पर रोने लगता हूं।"

चट्टान से चश्मा बह निकला :

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि एक सफ़र के दौरान मुझे सख़्त प्यास लगी तो मैं पानी की तलाश में अपने रास्ते से हट कर एक वादी की जानिब चल पड़ा। अचानक मैं ने एक ख़ौफ़नाक आवाज़ सुनी, मैं ने सोचा : शायद ! येह कोई दरिन्दा है जो मेरी त़रफ़ आ रहा है। चुनान्चे, मैं भागने ही वाला था कि पहाड़ों से किसी पुकारने वाले ने मुझे पुकार कर कहा : "ऐ इन्सान ! ऐसा कोई मुआ़मला नहीं जिस त़रह़ तुम समझ रहे हो, येह तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एक वली है जिस ने शिद्दते ह़सरत से एक लम्बी सांस ली तो इस की आवाज़ बुलन्द हो गई।" जब मैं अपने रास्ते की जानिब वापस मुंडा तो एक नौजवान को इ़बादत में मश्ग़ूल पाया। मैं ने उसे सलाम किया और अपनी प्यास का बताया तो उस ने कहा : "ऐ मालिक ! इतनी बड़ी सल्त़नत में तुझे पानी का एक क़त़रा भी नहीं मिला ?" फिर वोह चट्टान की त़रफ़ गया और पाउं की ठोकर मार कर कहा : "उस ज़ात की क़ुदरत से हमें पानी से सैराब कर जो बोसीदा हड्डियों को भी ज़िन्दा फ़रमाने पर क़ादिर है।" अचानक चट्टान से पानी ऐसे बहने लगा जैसे चश्मे से बहता है। मैं ने जी भर

कर पीने के बा'द अ़र्ज़ की : "मुझे ऐसी चीज़ की नसीह़त फ़रमाइये जिस से मुझे नफ़्अ़ होता रहे।" तो उस ने नसीह़त करते हुए फ़रमाया : "तन्हाई में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मश्ग़ूल हो जाइये, वोह आप को जंगलात में पानी से सैराब कर देगा।" इतना कह कर वोह अपने रास्ते पर चला गया।

फ़नाफ़िल्लाह नौजवान :

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैं ने एक नौजवान को आबादी और लोगों से अलग थलग तन्हा जंगल में मसरूफ़े इ़बादत देखा। मेरे सलाम करने पर उस ने जवाब दिया, तो मैं ने कहा : "ऐ नौजवान ! तुम ऐसी वीरान जगह में हो जहां तुम्हारा कोई मददगार है, न रफ़ीक़।" उस ने कहा : "क्यूं नहीं, मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरा मददगार भी है और रफ़ीक़ भी।" मैं ने पूछा : "कहां है ?" जवाब दिया : "वोह अपनी इ़ज़्ज़त के साथ मेरे ऊपर, इ़ल्म व ह़िक्मत से मेरे साथ, हिदायत के साथ मेरे सामने और ने'मत व अ़ज़मत के साथ मेरे दाएं बाएं है।" जब मैं ने येह कलाम सुना तो अ़र्ज़ की : "क्या आप मुझे अपनी सोह़बत इख़्तियार करने की इजाज़त देंगे ?" तो वोह कहने लगा : "आप की रफ़ाक़त मुझे इ़बादत से ग़ाफ़िल कर देगी और मैं इस को पसन्द नहीं करता, मशरिक़ व मग़रिब तक का बादशाह मेरे लिये काफ़ी है।" मैंने फिर पूछा : "आप को यहां वह़शत मह़सूस नहीं होती ?" उस ने जवाब दिया : "जिस का ह़बीब व अनीस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हो उसे क्यूंकर वह़शत होगी।" मैं ने मज़ीद पूछा : "खाना कहां से खाते हैं ?" जवाब दिया : "जब मैं छोटा था तो उस ने अपने लुत़्फ़ो करम से मां के तारीक पेट में मुझे ग़िज़ा दी और अब जब कि मैं बड़ा हो गया हूं तो क्या वोह मेरी कफ़ालत नहीं फ़रमाएगा, मेरे लिये उस के पास मुक़र्रर रिज़्क़ है और उस का वक़्त भी लिखा हुवा है।"

फिर मैं ने उसे दुआ़ की दरख़्वास्त की तो उस ने मुझे यूं दुआ़ दी : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप की आंखों को अपनी नाफ़रमानी से मह़फ़ूज़ फ़रमाए, आप के दिल को अपने ख़ौफ़ से भर दे और आप को उन लोगों से न बनाए जो उस के ग़ैर में मश्ग़ूल हो कर इ़बादत से ग़ाफ़िल हो जाते हैं। इस के बा'द जब वोह जाने के लिये खड़ा हुवा तो मैं ने उस के क़रीब जा कर अ़र्ज़ की : "फिर कब आप से मुलाक़ात होगी ?" तो वोह मुस्कुरा कर कहने लगा : "आज के बा'द दुन्या में तो आप से मुलाक़ात न होगी और बरोज़े क़ियामत जब सब लोग जम्अ़ होंगे तो अगर आप मुझ से मिलना चाहें तो दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ करने वालों में मुझे तलाश कीजियेगा।" मैं ने पूछा : "आप को येह कैसे मा'लूम हो गया ?" जवाब दिया "उस की इ़ज़्ज़त की क़सम ! उसी के सबब मा'लूम हुवा क्यूंकि मैं ने अपनी आंख को मह़रमात से बचा कर रखा, अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात के ह़ुसूल से बाज़ रखा और तारीक रातों में उस की इ़बादत के लिये तन्हाई इख़्तियार की लिहाज़ा इस के बदले वोह मुझे अपना दीदार कराएगा।" फिर वोह ग़ाइब हो गया। इस के बा'द कभी भी उस से मुलाक़ात न हुई।

﴿अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین ﷺ﴾

हमेशा दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ करने वाला लड़का :

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं एक दफ़्आ मैं शदीद गर्मी वाले साल हज के इरादे से निकला । एक दिन जब कि हम हज्जाजे मुक़द्दस में थे, मैं क़ाफ़िले से बिछड़ गया और मुझे हल्की सी नींद आने लगी, मुझे इतना ही इल्म था कि मैं जंगल में तन्हा हूं । अचानक एक शख़्स मेरे सामने ज़ाहिर हुवा, मैं जल्दी से उसे जा मिला, वोह एक कमसिन लड़का था जिस का चेहरा चौदहवीं के चांद या दोपहर के सूरज की त़रह चमक रहा था, उस पर खुश हाली व रहनुमाई के आषार नुमायां थे । मैं ने उसे सलाम किया तो उस ने यूं जवाब दिया : ''وعليكمُ السّلام ورحمة الله وبركاته، يا ابراهيم!'' मुझे इस से बड़ा तअ़ज्जुब हुवा, मैं ने पूछा : ''तुम मुझे कैसे पहचानते हो ह़ालांकि इस से पहले तुम ने मुझे कभी नहीं देखा ? तो वोह कहने लगा : ''ऐ इब्राहीम ! जब से मुझे मा'रिफ़त नसीब हुई है तब से मैं नावाक़िफ़ न रहा और जब से मुझे अल्लाह तआ़ला के विसाल की दौलत मिली है तब से मैं जुदाई से न आज़माया गया ।'' मैं ने पूछा : ''इतनी शदीद गर्मी वाले साल इस जंगल में कैसे आ गए हो ?'' तो उस ने जवाब दिया : ''ऐ इब्राहीम ! मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इलावा कभी किसी से मह़ब्बत न की, न उस के ग़ैर से कभी मुलाक़ात की है और मुकम्मल त़ौर पर उसी की त़रफ़ मुतवज्जेह रहता हूं और उस का बन्दा होने का इक़रार करता हूं ।'' मैं ने उस से पूछा : ''खाते पीते कहां से हो ?'' तो बोला : ''मेरा मह़बूब मेरी कफ़ालत करता है ।'' जब उस ने मुझे येह जवाब दिया तो उस के आंसूओं की लड़ी रुख़्सार पर मोतियों की त़रह उमंड़ आई । फिर उस ने चन्द अश्आ़र पढ़े, जिन का मफ़्हूम कुछ इस त़रह़ है :

''कौन है जो मुझे चटयल मैदान में जाने से डरा रहा है, मैं तो ज़रूर इस ज़मीन से गुज़र कर अपने मह़बूब तक पहोंचूगा और मैं उस पर पहले ही ईमान ला चुका हूं, मह़ब्बत व शौक़ मुझे मुज़्तरिब किये हुए हैं और जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का मुहिब्ब हो वोह किसी इन्सान से नहीं डरता, क्या आज आप मेरी कमसिनी की वजह से मुझे ह़क़ीर जान रहे हैं, मेरे साथ जो बीती है इस की वजह से मुझ पर मलामत करना छोड़ दें ।''

इस के बा'द उस ने मुझ से पूछा : ''ऐ इब्राहीम ! क्या तुम क़ाफ़िले से बिछड़ गए हो ?'' मैं ने जवाब दिया : ''जी हां ।'' आप رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि मैं ने उस कमसिन लड़के को देखा कि वोह अपनी निगाहें आस्मान की त़रफ़ उठा कर कुछ पढ़ने का इरादा कर रहा था, उसी वक़्त मुझ पर नींद का ग़लबा हो गया । जब आंख खुली तो मैं ने अपने आप को क़ाफ़िले में पाया और मुझे मेरा रफ़ीक़ कह रहा है : ''ऐ इब्राहीम ! ख़याल रखना, कहीं सुवारी से गिर न जाओ । मुझे मा'लूम भी न हुवा कि वोह कमसिन लड़का कहां गया, आस्मान पर चढ़ गया या ज़मीन में उतर गया । जब मैं मैदाने अ़रफ़ात पहुंचा और ह़रमे पाक में दाख़िल हुवा तो उस लड़के को का'बा शरीफ़

के पर्दों से लिपट कर रोते हुए येह मुनाजात करते देखा : "मैं का'बए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا के गिलाफ़ से चिमटा हुवा हूं, ऐ मेरे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू दिलों के भेद और पोशीदा बातों को ख़ूब जानता है, मैं तेरी बारगाह में पैदल चल कर हाज़िर हुवा हूं क्यूंकि मैं तेरी महब्बत में मुब्तला हूं, मैं तो बचपन से ही तेरी महब्बत व चाहत में गिरिफ़्तार हो गया था जिस वक़्त मुझे महब्बत का सहीह मफ़्हूम भी मा'लूम न था। ऐ लोगो ! मुझे मलामत न करो क्यूं कि मैं तो अभी महब्बत के उसूल सीख रहा हूं और ऐ मेरे महबूबे हक़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ अगर मेरी मौत का वक़्त क़रीब आ चुका है तो फिर मुझे उम्मीद है कि मैं तेरा विसाल पा कर अपनी महब्बत का हिस्सा हासिल कर लूंगा।" फिर वोह सजदे में गिर गया। मैं उस की तरफ़ देखता रहा। जब उस का सजदा बहुत तवील हो गया तो मैं ने उस को हरकत दी तो मा'लूम हुवा कि उस की रूह क़फ़से उन्सूरी से परवाज़ कर चुकी है। मुझे बहुत अफ़्सोस हुवा, मैं अपनी सुवारी के जानवर की तरफ़ गया और कफ़न के लिये एक कपड़ा लिया और ग़ुस्ल देने वाले की मदद तलब की। जब वापस उस लड़के के पास पहुंचा तो वहां कोई मौजूद न था। उस के मुतअ़ल्लिक़ तमाम हाजियों से पूछा मगर मुझे कोई ऐसा शख़्स न मिला जिस ने उसे ज़िन्दा या मुर्दा देखा हो तो मैं समझ गया कि वोह लड़का मख़्लूक़ की नज़रों से पोशीदा था और उसे मेरे इलावा किसी ने न देखा, मैं अपनी क़ियाम गाह में आ कर सो गया।

ख़्वाब में, मैं ने उसे एक बहुत बड़ी जमाअ़त के आगे आगे देखा कि उस पर ख़ुशी के आषार नुमायां थे। मैं ने उस से पूछा : "क्या तुम मेरे साथ न थे ?" तो उस ने जवाब दिया : "यक़ीनन मैं आप के साथ ही था।" मैं ने उस से पूछा : "क्या तुम मर नहीं गए थे ?" तो उस ने जवाब दिया : "ऐसा ही है।" मैं ने कहा : "मैं तो तुम्हें कफ़न देने के लिये तलाश कर रहा था कि तजहीज़ व तक्फ़ीन के बा'द तुम्हारी तदफ़ीन अ़मल में लाऊं, मगर जब मैं वापस आया तो तुम मौजूद ही न थे।" तो उस ने जवाब दिया : "ऐ इब्राहीम ! जिस ज़ात ने मुझे शहर से निकाला और अपनी महब्बत का शौक़ अ़ता किया और मेरे घर वालों से मुझे दूर कर दिया, उसी ने मुझे सब की नज़रों से छुपा कर कफ़न भी दे दिया।"

फिर मैं ने पूछा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" उस ने जवाब दिया : "मुझे मेरे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने सामने खड़ा किया और फ़रमाया : "तुझे क्या चाहिये ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "या इलाही عَزَّوَجَلَّ तू ख़ूब जानता है।" उस ने इरशाद फ़रमाया : **"तू मेरा सच्चा बन्दा है, मेरे नज़दीक तेरा मक़ाम येह है कि मेरे और तेरे दरमियान कभी हिजाब न होगा।"** फिर मज़ीद इरशाद फ़रमाया : "और भी कुछ चाहिये ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं जिस बस्ती में रहता था उस के हक़ में मेरी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा।" इरशाद फ़रमाया : "मैं ने उस बस्ती के हक़ में तेरी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाई।" हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ

फ़रमाते हैं कि फिर उस ने मुझ से मुसाफ़हा किया। इस के बा'द मैं बेदार हो गया और अरकाने हज अदा करने के बा'द क़ाफ़िले वालों के साथ चल पड़ा। जिस से भी मेरी मुलाक़ात होती वोह येही कहता : "आप के हाथों की पाकीज़ा ख़ुश्बू से सब लोग हैरान हैं।" इस वाक़िए के नाक़िल (नक़्ल करने वाले) का कहना है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَةُاللهِ تعالیٰ علَیْه के हाथ से मरते दम तक वोह ख़ुश्बू आती रही।

وَصَلَّى اللّٰه عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ وَ سَلَّم

हुस्ने सुलूक की फ़ज़ीलत

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "अगर कोई किसी का कफ़ील (या'नी परवरिश करने वाला) है तो उस को चाहिये कि वोह उस के साथ हुस्ने सुलूक करे।" एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी न अवलाद है न बीवी और न ही ख़ानदान, सिर्फ़ एक मुर्ग़ी है।" आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अगर तू ने उस के दाना पानी में एक दिन भी कोताही की तो अल्लाह तबारक व तआ़ला तुझे हुस्ने सुलूक करने वालों में न लिखेगा।"

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : "तुम में सब से बेहतर वोह है जो अपने अहल के साथ अच्छा सुलूक करता है और मैं तुम सब से ज़ियादा अपने घर वालों से अच्छा सुलूक करने वाला हूं और औ़रतों की इ़ज़्ज़त सिर्फ़ करीम शख़्स ही करता है और उन की इहानत व तौहीन सिर्फ़ कमीना व बद बख़्त ही करता है।" (قرة العيون مترجم،ص٨٣۔٨٤)

बयान 32 : तज़किरए इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

सिराजुल उम्मा, इमामुल अइम्मा, काशिफुल ग़ुम्मा, फ़क़ीहे अफ़्ख़म हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा नो'मान बिन षाबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

हम्दे बारी तआला :

सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो क़दीम की सिफ़त से मुत्तसिफ़ है, हर मौजूद शै के वुजूद से पहले है, फ़ज़्लो करम और जूदो अ़ता उस के अवसाफ़ हैं, वोह अपनी वह्दानिय्यत में अवलाद और आबाओ अजदाद से पाक है। न उस की बीवी है, न शौहर, न उस की कोई अवलाद है, न वोह किसी की अवलाद। वोह रैत के ज़र्रों, पानी के क़तरों और बालियों और अंगूर के ख़ोशों वग़ैरा के दानों की ता'दाद भी जानता है। वोह सख़्त अन्धेरी व तारीक रातों में ख़ुश्की व तरी के हर ज़र्रे की ह़रकत को मुलाह़ज़ा फ़रमा रहा है। ऐसा ह़िक्मत वाला है जो सख़्त मज़बूत चट्टानों से नहरें निकालता है। ख़ुश्क दरख़्तों से तरोताज़ा फल पैदा करता है। फ़िक्रें उस की तस्वीर कशी नहीं कर सकतीं। सिम्तें उस का इह़ाता नहीं कर सकतीं। तक़्दीर उस के लिये रुकावट नहीं बन सकती। ज़माने उसे फ़ना नहीं कर सकते। आंखों में उस के इदराक की त़ाक़त नहीं। वोह यक्ता मा'बूद है, उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। वोह अ़ता करने वाला है, उस की अ़ता में कोई रुकावट डालने वाला नहीं। उस के फ़ैसले को टालने वाला कोई नहीं। वोह ऐसा करीम है कि बन्दा कितनी ही मरतबा उस के दरवाज़े से ए'राज़ करे फिर भी उसे बड़े बड़े इन्आ़मात अ़ता फ़रमाता है। वोह ऐसा ह़लीम है कि इन्सान को गुनाहों में मुब्तला देखता है फिर भी अपने ह़िल्म और मेहरबानी से इस की पर्दापोशी फ़रमाता है। वोह ऐसा ग़फ़्फ़ार है जो गुनाहों को बख़्शता, ऐबों को छुपाता और पिछले गुनाह मुआफ़ फ़रमा देता है। वोह ऐसा क़ह्हार है जो सब जाबिरों और ज़ालिमों पर ग़ालिब है, सब शिकस्त देने वालों को शिकस्त देता है और बुग़्ज़ व इ़नाद की तल्वार सोंतने वालों को शिद्दत व सख़्ती की मार मारता है।

पाक है वोह ज़ात जिस ने इन्सानी फ़िक्रों को अपने अ़ज़्मत व जलाल और अन्वार व तजल्लियात के इदराक से गुम गश्तए राह कर दिया और अ़क़्लों को अपनी क़दीम ज़ात की ह़क़ीक़त तक पहुंचने से आ़जिज़ कर दिया। उस ने वज़ाहत और कलाम के बा'द अपने असरार को इशारों से ता'बीर करने से ज़बानों को गूंगा कर दिया और अपना इह़ात़ा करने से दिलों को ह़ैरान ज़दा कर दिया और इस का मक़सद वहम में मुब्तला करना नहीं। वोह करीम है, अ़ज़्मत व बुज़ुर्गी वाला है, हमेशा से है, तन्हा है, न उस की कोई अवलाद है, न वोह किसी की अवलाद, उस का कोई शरीक नहीं, वोह किसी का मोह़ताज नहीं, वोह हर त़रह़ के मुमाषिल, मुशाबेह, ज़िद और नक़ीज़ से पाक है। तमाम एह़सानात पर शुक्र और तमाम ता'रीफ़ों का मुस्तह़िक़ वोह है जिस ने अपने गुनहगार व ज़लील बन्दों पर अपना ख़ूबसूरत पर्दा डाल रखा है। वोह अपने बन्दों को देख रहा है। उन का मुशाहदा कर रहा है। रबूबिय्यत उस की पहचान है। उलूहिय्यत उस की सिफ़त है। वोह अपनी ह़क़ीक़ते वह्दानिय्यत में मुन्फ़रिद है। ख़याल व गुमान से पाक है। अपनी बक़ा में फ़ना और

मिषलिय्यत (या'नी हम मिष्ल होने) से पाक है। हर ज़ाहिर व पोशिदा शै से बा ख़बर है। अक़्लें उस की अ़ज़्मत में हैरान व शशदर हैं और नहीं जान सकीं कि वोह कहां है ? फ़िक्रें उस की बे नियाज़ी का इदराक करने से आ़जिज़ हैं, क्यूंकि उसे उ़लूमे अ़क़्लिय्या से नहीं जाना जा सकता। पाक है वोह मा'बूदे अ़ज़ीम जो मुमाषिल व मुनासिब चीज़ों पर ग़ालिब है और मशारिक व मसाहिब से पाक व बरी है। ताइब की तौबा क़बूल फ़रमाता है, उस के दरबार का कोई दरबान नहीं। जो उस के ग़ैर से उम्मीद रखे वोह बद बख़्त व नामुराद है और जो उस के दरवाज़ए रह़मत पर पड़ाव डाल ले वोह अपने मक़्सद को पाने में कामयाब है। जो उस के उन्स का मज़ा चख लेता है वोह उस के लुत्फ़ो करम से अ़जीबो ग़रीब चीज़ें मुलाह़ज़ा कर लेता है और जो उस के इ़लावा हर चीज़ से मुंह मोड़ लेता है तो वोह न सिर्फ़ उसे बुलन्दी अ़ता फ़रमाता है बल्कि तरक़्क़ी अ़ता फ़रमा कर आ'ला तरीन मरातिब तक पहुंचा देता है। उस से ज़रर व नुक़्सान को दूर करता और टूटे दिलों को जोड़ देता है, और रात के आख़िरी ह़िस्से में निदा फ़रमाता है : ''है कोई बख़्शिश मांगने वाला ? है कोई तौबा करने वाला ?'' वोह साइलीन की ह़ाजात पूरी फ़रमाता है और क़बूलिय्यत व इ़नायत की पोशाकों के साथ ताइबीन पर जूदो करम फ़रमाता है।

पाक है वोह ज़ात जिस की पाकीज़गी की गवाही तमाम आस्मान और उस में मौजूद अ़जाइबाते क़ुदरत देते हैं। जिस की रबूबिय्यत का इक़रार मशारिक़ व मग़ारिब की ज़मीनें करती हैं। उस ने अपना क़ाइम व दाइम दीन ले कर आने वाले और ख़साइले ह़मीदा और औसाफ़े जमीला से मुत्तसिफ़ नबी ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का इन्तिख़ाब फ़रमाया और काइनात को आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के वुजूदे बा जूद से मुशर्रफ़ फ़रमाया और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को सआ़दते कामिला अ़ता फ़रमाई और बुलन्दो बाला मरातिब पर फ़ाइज़ फ़रमाया। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम व ख़ुलफ़ाए उ़ज़्ज़ाम رِضْوَانُ اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को चुना और फिर उन की सोह़बत में रहने वालों को ताबेई़न बनाया। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत में से ब त़ौरे ख़ास ताबेई़न पर एह़सान फ़रमाया जो ज़माना गुज़र जाने के बावुजूद शरीअ़ते इस्लाम पर क़ाइम रहे। फिर इन में से चार हस्तियों का इन्तिख़ाब फ़रमाया जिन्हों ने ईमान के सुतूनों की बुन्याद डाली और बन्दों को अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की इ़बादत की त़रफ़ बुलाया पस उन के उ़लूम से सारी काइनात भर गई। इन में से एक ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हैं जिन का नसब शरीफ़ बनू अ़दनान से जा मिलता है। दूसरे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस असजी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हैं जो बुलन्द शान व मर्तबा के मालिक हैं। तीसरे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हैं जो अपने इ़ल्म के ज़रीए ज़ाहिरी व बात़िनी त़ौर पर क़ाबिले ता'रीफ़ रास्ते पर चले। चौथे ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हैं। अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने इन चारों बुज़ुर्गों और इन के उ़लूम से लोगों को नफ़्अ़ दिया और इन से तक्लीफ़, जहालत और गुमराही व सरकशी दूर फ़रमाई।

{अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो..और..उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم}

ता'रुफ़े इमामे आ'ज़म عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡاَکۡرَم :

सिराजुल उम्मा, इमामुल अइम्मा हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ का पूरा नाम अबू हनीफा नो'मान बिन षाबित बिन ज़ुवती है। आप رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ 80 सिने हिजरी अम्बार में पैदा हुए, 150 हि. में वफ़ात पाई और 70 साल की उम्र पाई। आप رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ की विलादते बा सआदत सहाबए किराम رِضۡوَانُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَیۡهِمۡ اَجۡمَعِیۡن के मुबारक दौर में हुई और ताबेईन के दौर में आप رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ अज़ीम फ़क़ीह बन गए। हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन षाबित मउरख़ رَحۡمَةُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَیۡه फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ के दादा अबू षाबित ने हज़रते सय्यिदुना अली बिन अबी तालिब رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ को नवरोज़ (या'नी आतश परस्तों के क़ौमी तहवार) के दिन हदिये में फ़ालूदा पेश किया। बा'ज़ ने कहा : वोह महरजान (या'नी आतश परस्तों के सब से बड़े क़ौमी तहवार) का दिन था। इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ के वालिदे माजिद हज़रते सय्यिदुना षाबित رَحۡمَةُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَیۡه फ़रमाते हैं : "मैं अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تعَالٰی وَجۡهَهُ الۡکَرِیۡم की उस दुआ की बरकत से हूं जो उन्हों ने मेरे हक़ में फ़रमाई।" हज़रते सय्यिदुना ज़मिरी رَحۡمَةُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَیۡه फरमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ की हैयत व हालत, चेहरा, लिबास और जूते अच्छे होते थे और अपने पास आने वाले हर शख़्स की मदद फ़रमाते। आप رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ का क़द दरमियाना था, न ज़ियादा लम्बा था, न पस्त। तमाम लोगों से ज़ियादा अहसन अन्दाज़ में कलाम फ़रमाते। एक मरतबा आप رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ की गोद में सांप गिर गया। लोगों ने भागना शुरूअ कर दिया लेकिन आप رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ ने सांप को हटा दिया और खुद वहीं बैठे रहे और बिल्कुल इधर उधर न हुए। हज़रते सय्यिदुना अबू नईम عليه رحمة الله الرحيم फ़रमाया करते : "इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ ख़ूबसूरत चेहरे और सुथरे कपड़ों वाले, अच्छी ख़ुश्बू वाले, बहुत करम फ़रमाने वाले और अपने भाइयों की मदद फ़रमाने वाले थे। और आप رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ बहुत बड़े आबिदो ज़ाहिद, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त और उस का ख़ौफ़ रखने वाले थे, अपने इल्म से हमेशा रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ तलाश करते।

(تاريخ بغداد، الرقم٧٢٩٧، النعمان بن ثابت ابو حنيفة التيمى، ج١٣، ص٣٢٧۔٣٣١۔٣٣٧)

इबादते इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحۡمَةُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَیۡه फ़रमाते हैं कि "हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ कषरत से नवाफ़िल पढ़ने वाले और बा मुरव्वत थे।"

हज़रते सय्यिदुना हम्माद बिन अबी सुलैमान رَحۡمَةُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَیۡه फ़रमाते हैं : "इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ सारी रात बेदार रह कर गुज़ारते। हज़रते सय्यिदुना अली बिन सदाई رَحۡمَةُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَیۡه फ़रमाते हैं मैं ने इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ को देखा कि वोह माहे रमज़ान में साठ बार कुरआने पाक ख़त्म फ़रमाते, रोज़ाना दिन रात में एक एक बार।

हज़रते सय्यिदुना अबू जुवैरिया رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना हम्माद बिन सुलैमान, सय्यिदुना अल्क़मा बिन मुरषद, सय्यिदुना महारिब बिन दषार और सय्यिदुना औन बिन अब्दुल्लाह (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم) की सोहबत इख़्तियार की और इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की सोहबत में भी रहा मगर आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से ज़ियादा शब बेदारी करने वाला कोई नहीं देखा, मैं आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की सोहबत में छे माह रहा मगर किसी रात आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को सोते हुए न देखा। मन्क़ूल है कि आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ निस्फ़ रात जागा करते थे। एक मरतबा आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे कि किसी ने आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की तरफ़ इशारा कर के दूसरे शख़्स को बताया कि येही वोह हैं जो तमाम रात जाग कर गुज़ारते हैं। इस के बा'द आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ सारी रात इबादत में बसर करने लगे। और फ़रमाया : "मुझे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से हया आती है कि उस इबादत के साथ मेरी ता'रीफ़ की जाए जो मैं नहीं करता।"

(المرجع السابق، ج١٣، ص٣٥٣تا٣٦٠_التذكرة الحمدونية، باب اوّل، فصل رابع فی أخبار تابعين وسائر طبقات الصالحين رضى الله عنهم وكلامهم ومواعظهم، ج١، ص٥٤)

ज़ोहदो तक़्वए इमामे आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ :

हज़रते सय्यिदुना बिशर बिन वलीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد से मन्क़ूल है कि ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र मन्सूर ने इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की तरफ़ क़ासिद भेजा और ओहदए क़ज़ा आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के सिपुर्द करने का इरादा किया लेकिन आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने इन्कार फ़रमा दिया। अबू जा'फ़र ने क़सम खाई कि तुम्हें येह काम ज़रूर करना पड़ेगा। आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने भी क़सम खाई कि मैं हरगिज़ नहीं करूंगा। हज़रते सय्यिदुना रबीअ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अ़र्ज़ की : "आप देखते नहीं कि ख़लीफ़ा क़सम खा रहा है।" तो फ़रमाया : "ख़लीफ़ा अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा देने पर मुझ से ज़ियादा क़ादिर है।" चुनान्चे, ख़लीफ़ा ने आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को क़ैद करने का हुक्म दे दिया। क़ैद ख़ाने में ही आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का इन्तिक़ाल हुवा और आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को ख़ीज़रान के क़ब्रिस्तान में सिपुर्दे ख़ाक किया गया।

(تاريخ بغداد، الرقم٧٢٩٧، النعمان بن ثابت ابو حنيفة التيمى،ذكر قدوم ابى حنيفة بغدادوموته بها،ج١٣،ص٤٢٤/٣٢٩)

दूसरी रिवायत में है कि ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र मन्सूर ने हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा, हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी और हज़रते सय्यिदुना शरीक (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم) को बुलवाया। तीनों तशरीफ़ ले गए। उस ने हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से कहा कि आप बसरा में ओहदए क़ज़ा संभाल लें। हज़रते सय्यिदुना शरीक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से कहा कि वोह कूफ़ा में क़ज़ा का ओहदा संभाल लें और हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से कहा कि मेरे शहर और इस के क़ुर्बो जवार की क़ज़ा का मन्सब आप के सिपुर्द किया जाता है। आप तीनों अपनी ज़िम्मेदारियां संभाल ले। फिर अपने दरबान से कहा कि इन के ज़िम्मेदार बन कर साथ जाओ, अगर इन में से कोई इन्कार करे तो उस को सो कोड़े लगाना। चुनान्चे, सय्यिदुना शरीक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने तो मन्सबे क़ज़ा क़बूल कर लिया लेकिन हज़रते सय्यिदुना

सुफ़्यान षौरी رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ यमन तशरीफ़ ले गए और इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ ने भी क़बूल न किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ को सो कोड़े लगाए गए और फिर क़ैद कर दिया गया यहां तक कि वहीं आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ का इन्तिक़ाल हो गया।

(مناقب الامام الاعظم للكردرى،الفصل السادس فى وفاة الامام،وذكر الشيخ عبد الله بن نصر الزاغونى،ج٢،ص ٢١،بتغيرٍ)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ के सामने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ का तज़्किरा हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ ने इरशाद फ़रमाया : "क्या तुम उस शख़्स की बात करते हो जिस के सामने सारी दुन्या पेश की गई फिर भी उस ने ठुकरा दी।" (التذكرة الحمدونية،باب اول،فصل رابع فى اخبار تابعين و سائر طبقات صالحين رضى الله عنهم ......الخ، ج١، ص٥٤)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन शुजाअ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ से मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ की बारगाह में अ़र्ज़ की गई : "ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र ने आप को दस हज़ार दिरहम देने का हुक्म दिया है।" मगर आप उस पर राज़ी न हुए। जब माल देने का दिन आया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ ने नमाज़े फ़ज्र पढ़ते ही ख़ुद को अपने कपड़ों से ढांप लिया और किसी से कोई बात न की। जब ह़सन बिन क़ह़त़बा का क़ासिद माल ले कर आया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ ने उस से भी कोई कलाम न फ़रमाया। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : जो शख़्स हमारे पास आया है वोह हम से यूं कलाम करेगा कि एक कलिमे के बा'द दूसरा कलिमा बोलेगा या'नी आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ ने उस की आ़दत बताई। फिर फ़रमाया : "इस माल को जराब में डाल कर घर के किसी कोने में फैंक आओ।" इस के बा'द जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ ने घर के सामान के मुतअ़ल्लिक़ वसिय्यत की तो बेटे को इरशाद फ़रमाया : "जब मेरी वफ़ात हो और लोग मुझे दफ़्न कर दें तो येह थेली ह़सन बिन क़ह़त़बा को दे देना और कहना : "येह आप की अमानत है जो आप ने अबू ह़नीफ़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ) के पास रखी थी।" साहिबज़ादे फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने वालिदे मोह़तरम के हुक्म पर अ़मल किया। येह देख कर ह़सन बिन क़ह़त़बा कहने लगा : "तुम्हारे वालिद पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत हो, वोह अपने दीन पर किस क़दर ह़रीस थे।" (المرجع السابق، ص٥٥)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ का इ़ल्मी मक़ाम :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ का उख़रवी और दीनी मुआ़मलात का इ़ल्म और आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ की मा'रिफ़ते इलाही عَزَّوَجَلَّ आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ के शदीद ख़ौफ़े इलाही عَزَّوَجَلَّ और दुन्या से बे रग़बती पर दलालत करती है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने जरीज رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ ने लोगों से फ़रमाया : "मैं ने तुम्हारे इस कूफ़ी इमाम नो'मान बिन षाबित رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ के बारे में सुना है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ ख़ौफ़े इलाही عَزَّوَجَلَّ के पैकर हैं।" (تاريخ بغداد،الرقم٧٢٩٧،ج١٣،ص٣٥٥)

ह़ज़रते सय्यिदुना शरीक رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ बहुत ज़ियादा ख़ामोश और हमेशा मुतफ़क्किर रहते और लोगों से बहुत कम बात करते।" (التذكرة الحمدونية،باب اول،فصل رابع فى أخبار تابعين و سائر طبقات الصالحين رضى الله عنهم......الخ ،ج١،ص٥٤)

येह इस बात की वाज़ेह अ़लामत है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बातिनी इल्म रखते और अहम दीनी मक़ासिद में मसरूफ़ रहते थे और जिसे ख़ामोशी और ज़ोहद दिया गया उसे सारा इल्म अ़ता कर दिया गया।

ख़ारिजी गुरौह ताइब हो गया :

मन्क़ूल है कि एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे कि ख़वारिज के कुछ सरग़ने अपनी तल्वारें लहराते हुए आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आए और कहने लगे : "ऐ अबू ह़नीफ़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) हम तुम से दो मस्अले पूछते हैं, अगर तुम ने जवाब दे दिया तो बच जाओगे वरना तुम्हें क़त्ल कर देगें (مَعَاذَاللّٰہِ عَزَّوَجَل)।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया "अपनी तल्वारें मियान में डाल लो क्यूंकि इन्हें देख कर मेरा दिल मश्ग़ूल हो जाएगा।" वोह कहने लगे : "हम इन को कैसे छुपा लें ह़ालांकि हम तुम्हारी गर्दन में डाल कर बहुत ज़ियादा अज्रो षवाब पाएंगे।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "चलो, जो पूछना है पूछो।" उन्हों ने पूछा : "दरवाज़े पर दो जनाज़े हैं : इन में एक शराबी है, उस को उच्छू[1] लगा और नशे की ह़ालत में मर गया और दूसरा जनाज़ा ज़िना से ह़ामिला औ़रत का है जो तौबा से क़ब्ल ही बच्चे की विलादत से मर गई तो क्या वोह दोनों काफ़िर मरे या मुसलमान ? इन सुवाल करने वाले ख़ारिजियों का मज़हब येह था कि अगर कोई मुसलमान एक गुनाह भी कर ले तो वोह काफ़िर हो जाता है। अब अगर इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इन दोनों को मुसलमान कहते तो वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़त्ल कर देते। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "इन का तअ़ल्लुक़ किस फ़िर्क़े से था ? क्या यहूदी थे ?" उन्हों ने कहा : नहीं। फिर पूछा, क्या ईसाई थे ? तो कहने लगे नहीं तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा क्या मजूसी या'नी आग की पूजा करने वाले थे ? जवाब मिला, "नहीं" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : बुत परस्त थे ?" फिर भी जवाब नफ़ी में पाया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फिर पूछा : "आख़िर वोह कौन थे ?" उन्हों ने कहा : "वोह मुसलमान थे।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "जवाब तो तुम ने ख़ुद ही दे दिया है।" कहने लगे, "वोह कैसे ?"आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम ने ए'तिराफ़ किया है कि वोह मुसलमान थे। लिहाज़ा तुम किसी मुसलमान को कैसे काफ़िर क़रार दे सकते हो ?" उन्हों ने फिर पूछा "क्या वोह जन्नती हैं या दोज़ख़ी ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं उन के मुतअ़ल्लिक़ वोही कहूंगा जो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपनी उम्मत के शरीर व नाफ़रमान लोगों के मुतअ़ल्लिक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की थी कि,

﴿1﴾ فَمَنۡ تَبِعَنِیۡ فَاِنَّہٗ مِنِّیۡ ۚ وَمَنۡ عَصَانِیۡ فَاِنَّکَ غَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ ۝ (پ۱۳،ابراھیم:۳۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो जिस ने मेरा साथ दिया वोह तो मेरा है और जिस ने मेरा कहा न माना तो बेशक तू बख़्शने वाला मेहरबान है।"

---

❶ .....पानी पीने के दौरान बा'ज़ अवक़ात गले में फन्दा सा लगता है और खांसी उठती है इस को "उच्छू लगना" कहते हैं।

और वोही कहूंगा जो ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में अपने नाफ़रमान उम्मतियों के मुतअ़ल्लिक़ अ़र्ज़ की थी :

﴿2﴾ اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ (پ۷،المائدہ:۱۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अगर तू इन्हें अ़ज़ाब करे तो वोह तेरे बन्दे हैं और अगर तू इन्हें बख़्श दे तो बेशक तू ही है ग़ालिब ह़िक्मत वाला ।*

चुनान्चे, वोह ख़्वारिज ताइब हुए और आप से माज़ेरत की ।

(مناقب الامام الاعظم ابی حنیفۃ رحمۃ اللّٰہ تعالٰی للامام الموفق بن احمد المکی رحمۃ اللّٰہ،ج۱،ص۴۲۱)

मन्क़ूल है कि एक औ़रत ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मस्जिद में ह़ाज़िर हुई । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने रुफ़क़ा के दरमियान तशरीफ़ फ़रमा थे । उस ने एक सेब निकाला जो एक त़रफ़ से सुर्ख़ और दूसरी जानिब से ज़र्द था । उस ने बिग़ैर कोई बात किये सेब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सामने रख दिया । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस के दो टुकड़े कर दिये, औ़रत चली गई । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के अह़बाब इस माजरे को न समझ सके । चुनान्चे, उन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से पूछा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "उस औ़रत को कभी सेब की एक जानिब की त़रह़ सुर्ख़ ख़ून आता है और कभी दूसरी जानिब की त़रह़ ज़र्द ख़ून आता है गोया वोह पूछ रही थी कि वोह ख़ून ह़ैज़ का है या तुहर का । तो मैं ने सैब को तोड़ कर इस का अन्दरूनी ह़िस्सा दिखाया जिस से मेरी मुराद येह थी कि जब तक इस सैब की अन्दरूनी सफ़ैदी की त़रह़ सफ़ैदी दिखाई न दे, तुहर नहीं होगा तो वोह चली गई ।"

सिराजुल उम्मा, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं बसरा में दाख़िल हुवा । सोचा था कि जो भी मुझ से सुवाल करेगा मैं उस को जवाब दूंगा लेकिन बसरा वालों ने मुझ से ऐसे सुवालात किये कि मेरे पास इन का कोई जवाब न था । फिर मैं ने अ़ज़्म कर लिया कि आयन्दा अपने उस्ताज़ ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق की सोह़बत कभी न छोड़ूंगा । चुनान्चे, बीस साल उन की सोह़बत में रहा । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "मैं हर नमाज़ में अपने वालिदैन, तमाम असातज़ा और बिल ख़ुसूस ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करता हूं ।"

(تاریخ بغداد، الرقم۷۲۹۷، النعمان بن ثابت ابوحنیفۃ التیمی، ذکر خبر ابتداء ابی حنیفۃ بالنظرفی العلم،ج۱۳،ص۳۳٤۔بتغیر)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़्वाब में देखा गोया मैं सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बिइज़्ने परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अक़्दस खोद कर हड्डियां निकाल रहा हूं और इन को साफ़ कर रहा हूं । इस से मुझे बहुत ज़ियादा डर मह़सूस हुवा । मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सीरीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के सामने अपना ख़्वाब बयान किया तो उन्हों ने फ़रमाया : "अगर येह ख़्वाब सच्चा है तो आप रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत को ज़िन्दा करेंगे ।"

(مناقب الامام الاعظم للموفق بن احمد المکی،الباب الخامس فی ابتداء جلوسہ للفتیا والتدریس،ج۱، ص٦٧،بتغیر)

हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन सबाग़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मुझे किसी ने बताया कि मैं ने ख़्वाब में हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़्मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर को खोदते हुए देखा तो किसी को बताए बिग़ैर हज़रते सय्यिदुना इब्ने सीरीन رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से इस की ता'बीर पूछी। उन्हों ने फ़रमाया : "येह शख़्स हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत को ज़िन्दा करेगा।" (تاريخ بغداد،الرقم۷۲۹۷النعمان بن ثابت ابو حنيفة التيمى،ذكرخبرابتداء ابى حنيفةبالنظرفى العلم،ج١٣،ص٣٣٥۔بتغير)

हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाया करते : "हमें हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से जो बात पहुंचे हम उसे सर आंखों पर क़बूल करेंगे और सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से मिले उस में से इख़्तियार करेंगे और उन के क़ौल से बाहर नहीं निकलेंगे और जो बात ताबेईने उ़ज़्ज़ाम رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم اَجْمَعِيْن से पहुंचे तो वोह भी हमारी त़रह इन्सान हैं और इन के इ़लावा को बिल्कुल नहीं सुनेंगे।"

(سير اعلام النبلاء،الرقم٩٩٤۔ابو حنيفة النعمان بن ثابت،ج٦،ص٥٣٦۔بدون"عن التابعين")

मजालिसे उ़-लमा का अदब :

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ दरावरदी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ और हज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को ईशा के आख़िरी वक़्त के बा'द मस्जिदे नबवी علٰى صاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلام में बह़्‌ष व मुबाह़षा करते हुए देखा। जब इन में से एक अपना मौक़िफ़ पेश कर के ख़ामोश हो जाता तो दूसरा भी डांटे, झिड़के या दूसरे को ग़लत़ क़रार दिये बिग़ैर चुप हो जाता। फिर वोह दोनों इसी मजलिस में सुब्ह़ तक नवाफ़िल पढ़ते रहते।

आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के इन्साफ़ और ए'तिराफ़े ह़क़ का आ़लम येह है कि इरशाद फ़रमाया करते : "हमारा येह क़ौल एक राए है और येह हमारे क़ियास में से बेहतरीन राए है। अब जिस ने इस से भी अच्छी राए पेश की तो वोही ज़ियादा बेहतर है।"

(تاريخ بغداد،الرقم۷۲۹۷النعمان بن ثابت ابو حنيفة التيمى،ما قيل فى فقه ابى حنيفة،ج١٣،ص٣٥١)

क़ियामे ह़क़ के लिये कोशिशें :

जब हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ कोई बुराई देखते तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की नर्मी सख़्ती में बदल जाती, आंखें सुर्ख़ हो कर चढ़ जातीं, रगें फूल जातीं और जब भी कोई ख़िलाफ़े शरअ़ काम देखते तो इस का क़ल्अ़ क़म्अ़ कर देते। एक दिन एक शख़्स के पास कुछ आलाते लहव व ला'ब देखे तो उस से ले लिये। उस ने अन्जाने में आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को ज़ोरदार ज़र्ब लगाई, इस के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उन आलात को तोड़ दिया और घर लौट आए, और इस शिद्दते ज़र्ब की वजह से दो माह तक घर में तन्हा रहे।

हज़रते सय्यिदुना ख़तीब बग़दादी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡهَادِی इरशाद फ़रमाते हैं : ‘‘एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी رَحۡمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَيۡه की बारगाह में अ़र्ज़ की गई कि इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰه تعَالٰی عَنۡهُ ग़ीबत से इतने दूर रहते हैं कि मैं ने कभी उन को दुश्मन की ग़ीबत करते हुए भी नहीं सुना । तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ ने इरशाद फ़रमाया : ‘‘अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप इस मुआमले में बहुत समझदार हैं कि किसी ऐसी चीज़ को अपनी नेकियों पर मुसल्लत करें जो इन्हें (दूसरे के नामए आ'माल में) मुन्तक़िल कर दे ।’’ हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन आ़सिम رَحۡمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَيۡه ने इरशाद फ़रमाया : ‘‘अगर निस्फ़ अहले ज़मीन की अ़क़्लों से इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰه تعَالٰی عَنۡهُ की अ़क़्ल का मुवाज़ना किया जाए तो भी आप رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ की अ़क़्ल ज़ियादा होगी ।’’

(تاریخ بغداد،الرقم۷۲۹۷،النعمان بن ثابت ابوحنیفة التیمی،ماذکر من وفورعقل ابی حنیفة وفطنته وتلطفه، ج۱۳، ص۳۶۱)

मन्क़ूल है कि इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ से दरयाफ़्त किया गया कि हज़रते सय्यिदुना अ़लक़मा और हज़रते सय्यिदुना अस्वद رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ में से अफ़्ज़ल कौन है ? तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ ने जवाब में फ़रमाया : ‘‘अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं उस मक़ाम पर नहीं कि इन का मुवाज़ना करूं सिवाए इस के कि इन की इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत के पेशे नज़र इन के लिये दुआ़ व इस्तिग़फ़ार करता हूं और मैं नहीं जानता कि इन में अफ़्ज़ल कौन है ।’’

(ربیع الابرار،باب التفاضل والتفاوت والاختلاف والاشتباه وما قارب ذلك ووفاه، ج۱،ص۳۵۳)

जूदो करमे इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ :

हज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन रबीअ़ عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰه تعَالٰی عَنۡهُ अपनी कमाई से माले तिजारत जम्अ़ करते फिर इस से कपड़े ख़रीद कर मशाइख़, मुह़द्दिषीन और ह़ाजत मन्दों को पेश करते और फ़रमाते : ‘‘अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो षना करो कि उसी ने तुम्हें येह अ़ता फ़रमाया । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने अपने माल में से कुछ भी नहीं दिया । आप رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ की ख़िदमत में कोई शख़्स ह़ाज़िर होता तो उस के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त करते, अगर वोह मोह़ताज होता तो कुछ अ़ता फ़रमाते । चुनान्चे, एक शख़्स आप رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा, उस के कपड़े बोसीदा थे, जब लोग चले गए तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ ने उसे बैठने का हुक्म दिया जब वोह तन्हा रह गया तो इरशाद फ़रमाया : ‘‘इस मुसल्ले को उठाओ और नीचे से हज़ार दिरहम ले कर अपनी ह़ालत अच्छी कर लो ।’’ उस ने अ़र्ज़ की : ‘‘हुज़ूर ! मैं तो ख़ुश ह़ाल हूं, ने'मतों में हूं ।’’ तो आप رَضِیَ اللّٰه تعَالٰی عَنۡهُ ने इरशाद फ़रमाया : ‘‘क्या तुम्हें येह ह़दीष नहीं पहुंची कि ‘‘अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पसन्द फ़रमाता है कि वोह अपनी ने'मत का अषर बन्दे पर देखे ।’’ (جامع الترمذی ،ابواب الادب ، باب ما جاء ان اللّٰہعَزَّوَجَلَّ یحب ان یری اثر نعمته علی عبده، الحدیث۲۸۱۹، ص۱۹۳۴) तुझे अपनी ह़ालत बदलनी चाहिये ताकि तेरा दोस्त तेरी ह़ालत से ग़मगीन न हो ।

(تاریخ بغداد، الرقم ۷۲۹۷، النعمان بن ثابت ابوحنیفة التیمی،ما ذکر من جود ابی حنیفة وسماحه وحسن عهده، ج۱۳، ص۳۵۷۔۳۵۸، بتغیرٍ)

जो भी आप رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ से अपनी ह़ाजत का सुवाल करता आप رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ उसे पूरा फ़रमा देते ।

कपड़ों की क़ीमत सदक़ा कर दी :

हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हर शुबा वाली चीज़ से मुकम्मल इजतिनाब फ़रमाते। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के शरीके तिजारत हज़रते सय्यिदुना हफ़्स बिन अब्दुर्रहमान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मेरे साथ तिजारत करते थे और मुझे माले तिजारत भेजते हुए फ़रमाया करते : "ऐ हफ़्स ! फ़ुलां कपड़े में कुछ ऐब है। जब तुम इसे फ़रोख़्त करो तो ऐब बयान कर देना। हज़रते सय्यिदुना हफ़्स ने एक मरतबा माले तिजारत फ़रोख़्त किया और बेचते हुए ऐब बताना भूल गए। जब इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इल्म हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने तमाम कपड़ों की क़ीमत सदक़ा कर दी।"

(المرجع السابق،ص٣٥٦)

हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के तक़्वा की एक और मिषाल येह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ज़माने में एक बकरी चोरी हो गई तो अन्दाज़तन जितना अ़र्सा वोह बकरी ज़िन्दा रह सकती थी उस मुद्दत में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने किसी बकरी का गोश्त न खाया।

मन्क़ूल है कि ख़लीफ़ए वक़्त (अबू जा'फ़र मन्सूर) ने हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और हज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी ज़इब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तरफ़ कुछ माल भेजा तो हज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी ज़इब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ख़लीफ़ा के लिये इस माल पर राज़ी नहीं तो अपने लिये कैसे राज़ी हो जाऊं ?" और इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : "अगर मुझे मारा जाए कि इन में से एक दिरहम को सिर्फ़ हाथ लगा दो फिर भी मैं इसे न छूऊंगा।"

(مناقب الامام الاعظم للامام البزازی الکردری ،الفصل الخامس، جمع المنصور مالکاوابن ابی ذئب والامام ومقالتهم له،ج٢، ص١٦)

मन्क़ूल है कि ख़लीफ़ए वक़्त ने हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बुलवा कर दरयाफ़्त किया : "ऐ अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आज़ाद मर्द के लिये कितनी आज़ाद औरतें हलाल हैं ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "चार।" तो ख़लीफ़ा ने अपनी बीवी की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर कहा : "ऐ आज़ाद औरत ! मेरी बात सुन।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़ौरन इरशाद फ़रमाया : "ऐ ख़लीफ़तुल मुसलिमीन ! मगर आप के लिये सिर्फ़ एक हलाल है।" तो ख़लीफ़ा ने ग़ज़बनाक हो कर कहा : "अभी तो आप ने कहा था कि चार हलाल हैं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "ऐ ख़लीफ़तुल मुसलिमीन ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

فَانْکِحُوْا مَا طَابَ لَکُمْ مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰی وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً ﴿3﴾ (پ٤،النسآء:٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो निकाह में लाओ जो औरतें तुम्हें ख़ुश आए दो दो और तीन तीन और चार चार फिर अगर डरो कि दो बीबीयों को बराबर न रख सकोगे तो एक ही करो।

जब मैं ने आप को अपनी बीवी से येह कहते सुना : "ऐ आज़ाद औरत ! मेरी बात सुन।" तो मैं ने जान लिया कि आप अ़द्ल नहीं करेंगे। लिहाज़ा मैं ने कह दिया कि आप के लिये सिर्फ़ एक

हलाल है।" जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ वहां से रुख़्सत हुए तो ख़लीफ़ा की ज़ौजा ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ की त़रफ़ हज़ार दिरहम भिजवाए और आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ का शुक्रिया अदा किया और ता'रीफ़ भी की लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने दिरहम क़बूल न किये और वापस भेज दिये और साथ ही कहला भेजा कि मैं ने येह बात तुझे खुश करने के लिये नहीं की थी बल्कि रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये की थी पस इस का षवाब भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही देगा।

हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ख़शिय्यते इलाही عَزَّوَجَلَّ के पैकर और कषरत से सदक़ा करने वाले थे।

हज़रते सय्यिदुना ख़त़ीब बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی नक़्ल फ़रमाते हैं कि "अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ अपने अहलो इयाल पर कुछ ख़र्च करते तो इसी क़दर सदक़ा भी कर देते। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ कोई नया कपड़ा पहनते तो इसी क़ीमत का कपड़ा उ़-लमा को भी ख़रीद कर देते और आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के सामने जब खाना लगाया जाता तो जितना खुद खाते इतना ही छोड़ देते फिर वोह खाना किसी फ़क़ीर को खिला देते या घर में किसी को ज़रूरत होती तो उसे खिला देते। रिज़ाए रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ को हर चीज़ पर तरजीह़ देते और हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ के मुआ़मले में अगर तल्वार का वार भी किया जाता तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ बर्दाश्त कर लेते। आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ हमेशा येह दो अशआ़र पढ़ा करते थे :

عَطَاءُ ذِی الْعَرْشِ خَیْرٌ مِنْ عَطَائِکُمُوْ ۔۔۔ وَفَضْلُہٗ وَاسِعٌ یُرْجٰی وَیُنْتَظَر

تَکْدُرُوْنَ الْعَطَا مِنْکُمْ بِمِنَّتِکُمُوْ ۔۔۔ وَاللّٰہُ یُعْطِیْ فَلَا مَنٌّ وَلَا کَدَر

तर्जमा : (1).....अ़र्श के मालिक की अ़त़ा तुम्हारी अ़त़ा से बेहतर है। और उस का फ़ज़्लो करम वसीअ़ है जिस की उम्मीद और इन्तिज़ार किया जाता है।

(2).....तुम अपनी अ़त़ा को एह़सान जतलाने से मिला देते हो जब कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एह़सान जतलाए और गदला किये बिग़ैर अ़त़ा फ़रमाता है।

हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन हुशैन लैषी رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं कूफ़ा आया और अहले कूफ़ा से वहां के सब से बड़े आ़बिद के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो मुझे इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ का बताया गया। फिर मैं दोबारा बुढ़ापे में यहां आया और सब से बड़े फ़क़ीह के बारे में पूछा तो मुझे आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ का ही नाम बताया गया।"

(تاریخ بغداد، الرقم۷۲۹۷، النعمان بن ثابت ابو حنیفۃ التیمی،ما ذکر من عبادۃ ابی حنیفۃ وورعہ، ج۱۳، ص۳۵۱ـ ۳۵۶ـ ۳۵۷، بتغیرٍ)

मशहूर ज़ाहिद व मुत्तक़ी ह़ज़रते सय्यिदुना मसउ़र बिन कदाम رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के इजतिमाए पाक में ह़ाज़िर हुवा तो मैं ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ को नमाज़े फ़ज्र में पाया फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ नमाज़े ज़ोहर तक मह़फ़िले इ़ल्म में तशरीफ़ फ़रमा रहे, नमाज़े ज़ोहर पढ़ कर अ़स्र तक मह़फ़िल जारी रही, नमाज़े अ़स्र पढ़ ली तो मग़रिब तक बैठे रहे, नमाज़े मग़रिब के बा'द इशा तक फिर बैठ गए। मैं ने दिल में कहा कि इस शख़्स की मसरूफ़िय्यत येह है तो इबादत के लिये कब फ़ारिग़ होता होगा, आज रात मैं ज़रूर देख भाल करूंगा। चुनान्चे, मैं ने निगरानी शुरूअ़ कर दी। जब सब लोग रुख़्सत हो गए तो

आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۂ मस्जिद में तशरीफ़ ले गए और तुलूए फ़ज्र तक नमाज़ अदा करते रहे फिर घर तशरीफ़ लाए। कपड़े पहन कर मस्जिद की तरफ़ चल दिये। दूसरे दिन और रात भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۂ का येही मा'मूल रहा। मैं ने तहिय्या कर लिया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۂ की सोहबत में ही रहूंगा यहां तक कि मैं मर जाऊं या आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۂ का इन्तिक़ाल हो जाए।" हज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी मुआज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मुझे येह ख़बर पहुंची है कि हज़रते सय्यिदुना मसऊर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ का इन्तिक़ाल इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۂ की मस्जिद में हालते सजदा में हुवा। (المرجع السابق، ج١٣، ص٣٥٤)

हज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मअ़न رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि एक बार इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۂ ने इस आयते मुबारका की तिलावत फ़रमाई : بَلِ السَّاعَۃُ مَوْعِدُھُمْ وَالسَّاعَۃُ اَدْھٰی وَاَمَرُّ۝ (پ٢٧، القمر:٤٦) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बल्कि इन का वा'दा क़ियामत पर है और क़ियामत निहायत कड़ी और सख़्त कड़वी। और तुलूए फ़ज्र तक येही आयते तय्यिबा दोहराते रहे और गिर्या व ज़ारी करते रहे।

(سیر اعلام النبلاء، الرقم٩٩٤، ابو حنیفۃ النعمان بن ثابت، ج٦، ص٥٣٥۔ تاریخ بغداد، الرقم٧٢٩٧، ما ذکر من عبادۃ ابی حنیفۃ......الخ، ج١٣، ص٣٥٢۔ ٣٥٦)

हज़रते सय्यिदुना हफ़्स बिन अ़ब्दुर्रहमान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۂ तीस साल तक सारी रात एक रक्अ़त में कुरआने करीम की तिलावत फ़रमाते रहे। हज़रते सय्यिदुना असद बिन अ़म्र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۂ ने चालीस साल तक इशा के वुज़ू से नमाज़े फ़ज्र पढ़ी। रात के वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۂ की आह व बुका की इतनी शदीद आवाज़ सुनाई देती कि पड़ोसियों को आप पर तर्स आ जाता। कहा जाता है कि जिस जगह आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۂ की वफ़ात हुई उस मक़ाम पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۂ ने छे हज़ार मर्तबा कुरआने करीम ख़त्म किया। हज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी ज़ाइद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۂ के साथ नमाज़े इशा अदा की। नमाज़ के बा'द लोग चले गए और मैं मस्जिद में ही ठहर गया। मेरा इरादा था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۂ से एक मस्अला दरयाफ़्त करूंगा लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۂ को मस्जिद में मेरी मौजूदगी का इल्म न हुवा और आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۂ ने कुरआने करीम की तिलावत शुरूअ़ कर दी और इस आयते करीमा पर पहुंचे : "فَمَنَّ اللّٰہُ عَلَیْنَا وَوَقٰنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ۝(پ٢٧، الطور:٢٧) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो अल्लाह ने हम पर एहसान किया और हमें लू के अ़ज़ाब से बचा लिया।" तो तुलूए फ़ज्र तक इसे दोहराते रहे। मन्क़ूल है कि एक रात आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۂ ने मस्जिद में किसी क़ारिये कुरआन को येह आयते मुबारका तिलावत करते हुवे सुना "اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَھَا۝ (پ٣٠، الزلزال:١) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जब ज़मीन थर थरा दी जाए जैसा इस का थर थराना ठहरा है।" तो शिद्दते ख़ौफ़ से फ़ज्र तक अपनी दाढ़ी मुबारक हाथ में पकड़े येही कहते रहे : "हमें ज़र्रा भर गुनाह की भी सज़ा दी जाएगी।"

विसाले इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۂ :

अहमद बिन कामिल और अ़ब्दुल बाक़ी बिन क़ानेअ़ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہما का बयान है कि हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۂ का विसाले बा कमाल रजबुल मुरज्जब या

शा'बानुल मअ़ज़्ज़म के महीने 150 हि. बग़दाद में हुवा, उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ की उ़म्र मुबारक सत्तर (70) बरस थी । (تاریخ بغداد، الرقم۷۲۹۷، النعمان بن ثابت ابو حنیفۃ التیمی، ذکر ما قالہ العلماء......الخ، ج۱۳، ص۴۲۴)

एक क़ौल येह भी है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ को ज़ह्र दिया गया जिस के असर से आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ की मौत वाक़ेअ़ हुई । आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ की नमाज़े जनाज़ा क़ाज़िउल क़ुज़्ज़ात हज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अ़म्मारा رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने बहुत बड़ी जमाअ़त के साथ पढ़ाई ।

(مناقب الامام الاعظم للموفق بن احمد المکی، الباب الثامن والعشرون، سبب آخر فی وفاۃ الامام رضی اللہ عنہ، ج۲، ص۱۸۳)

इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ को बख़्श दिया गया :

हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन ह़सन رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ को ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ ؟" या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? जवाब दिया : "मुझे बख़्श दिया गया ।

(مناقب الامام الاعظم للموفق بن احمد المکی،الباب الثامن والعشرون،ج۲،ص۱۸۶)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल ह़मीद बिन अ़ब्दुर्रह़मान जमानी رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़्वाब में हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ को यूं देखा गोया कि एक सितारा आस्मान से गिर पड़ा है, और कहा गया : येह इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ हैं । फिर दूसरा सितारा गिरा तो कहा गया : येह हज़रते सय्यिदुना मसऊ़र رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ हैं । फिर तीसरा सितारा गिरा तो कहा गया : येह हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ हैं । चुनान्चे, तीनों में सब से पहले हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ का इन्तिक़ाल हुवा, फिर हज़रते सय्यिदुना मसऊ़र رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ का और आख़िर में हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ का हुवा ।

हज़रते सय्यिदुना सदक़ा رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ मुस्तजाबुद्दा'वात बुज़ुर्ग थे, फ़रमाते हैं कि जब इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ को ख़ीज़रान के क़ब्रिस्तान में दफ़्न किया गया तो मैं ने तीन रात मुसलसल येह आवाज़ सुनी :

ذَهَبَ الْفِقْهُ فَلَا فِقْهَ لَكُم   فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوا خَلَفَا

مَاتَ النُّعْمَانُ فَمَنْ هٰذَا الَّذِى   يَعْدُ يُحْيِيْ لَيْلَهٗ إِنْ سَجَفَا

तर्जमा : (1).....फ़क़ीह चला गया, अब तुम्हारे पास ऐसा फ़क़ीह कोई नहीं, लिहाज़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो और इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के बेहतरीन जानशीन बनो ।

(2).....इमामे आ'ज़म नो'मान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ का विसाल हो गया । तो अब कौन है जो इन के बा'द तारीक रातों में बेदार रहे ।

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْن

बयान 33 : **करामाते औलिया** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تعالٰی

हम्दे बारी तआला :

तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो दलील के साथ ग़ालिब हुवा और अपने मुहिब्बीन पर तजल्ली फ़रमाई। सारी काइनात में तसर्रुफ़ फ़रमाता है, वाली मुक़र्रर करता और मा'ज़ूल करता है। अपने बन्दों में से जिसे चाहे राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में बढ़ चढ़ कर जिहाद करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाता है फिर वोह पीठ नहीं फेरता, और अपने बन्दे को क़ियामुल लैल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाता है तो वोह उस की इत़ाअ़त व इ़बादत में ख़ूब कोशिश करता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सरगोशियों में लज़्ज़त ह़ासिल करता है। और ख़ुश बख़्त वोह है जो मालिक व मौला عَزَّوَجَلَّ के मुशाहदे से कैफ़ो सुरूर में रातें गुज़ारता है। रब्ब तआ़ला उसे मह़ब्बत के प्यालों से क़ुर्ब के जाम भर भर कर पिलाता है तो आ़शिक़े सादिक़ का दिल ग़लबए शौक़ से बेचैन हो जाता है पस वोह ज़बाने ज़ौक़ से पुकार उठता है :

"सह़री के वक़्त साक़ी ने जामे मह़ब्बत के साथ तजल्ली फ़रमाई। उस के क़ुर्ब से वह़शत दूर हो गई" और कहा गया : "ऐ वोह शख़्स जो विसाले इलाही की त़लब में बे चैन है, सुन ले ! हिजरो फ़िराक़ का ज़माना गुज़र गया, जुदाई का वक़्त ख़त्म हो गया और दूर किये हुए को क़ुर्ब मिल गया। ऐ मेरे मह़बूब बन्दो ! अब वक़्त है, अगर तुम्हारा अ़ज़्म पुख़्ता है तो रात की उन तन्हाइयों में रूहों को थकाओ जिन में कोई मलामत करने वाला भी न हो और मुह़िब्बे ह़क़ीक़ी किसी मलामत करने वाले की परवाह नहीं करता।

पाक है वोह ज़ात जिस ने नज़रे हुस्ने इन्तिख़ाब से अपने औलिया को देखा और इन्हें अपनी अ़ता से ने'मतों और फ़ज़ीलतों से नवाज़ा। उस ने इन पर अ़ताएं और एह़सानात फ़रमाए फिर इन्हें मसाइब में मुब्तला किया और इन्हें आज़माइश में डाला तो इन्हों ने उस की अ़ताओं पर शुक्र और आज़माइशों पर सब्र का दामन थामे रखा। इरादए अज़ली में इन के लिये सआ़दत मन्दी से सरफ़राज़ी लिख दी गई। चुनान्चे, वोह उन भलाई वालों में से हो गए जिन के लिये भलाई (या'नी जन्नत) और इस से भी ज़ाइद ने'मत (या'नी दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ) है क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें इस का अहल बना दिया है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस गुरौह में से ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ करख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى को भलाई के साथ ख़ास फ़रमाया तो वोह उस की मह़ब्बत में सफ़ों की सफ़ें चीर कर आगे निकल गए और हलाकतों की जोलान गाह में घूमते रहे। मगर उस की मह़ब्बत से पीछे हटे न ही पीठ फेरी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें अपनी मह़ब्बत की तौफ़ीक़ दी और अपनी पाक बारगाह का क़ुर्ब व विसाल बख़्शा। और जब इन को मर्तबए इत्तिसाल की त़रफ़ तरक़्क़ी दी तो जामे विसाल से सैराब फ़रमाया पस वोह उस का क़ुर्ब पाने में कामयाब हो गए और कैफ़ सुरूर में ज़बाने ह़ाल से कुछ यूं गोया हुए :

"जब से मैं ने अपने मह़बूब के ज़ेवरे हुस्न से आरास्ता जल्वों को आश्कार देखा तो अपने शौक़ की बे चैनी को बढ़ा दिया और क़ुर्ब व विसाल को पा लिया पस इसी लिये इस मुआमले में वुजूदे मह़ब्बत के सबब मुझे खुली मा'रिफ़त ह़ासिल हो गई और मेरा पैमाना भर गया।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد पर दूसरों से बढ़ कर करम फ़रमाया तो उन्हों ने दुन्या से कनारा कशी इख़्तियार कर ली और मीठे चश्मे के हर मुतलाशी व मुरीद पर अपने अह़वाल को डाल दिया और अपने वज्द की तर्जुमानी करते हुए, अपनी ज़िन्दगी के ह़ासिल पर ह़ैरत करते हुए और अपने अह़वाल से आगाही देते हुए ज़बाने ह़ाल से कहने लगे :

"कितना बद नसीब है वोह शख़्स जो तेरे विसाल का अहल नहीं है। वोह अपने मक़्सद से दूर और बे ख़बर है अगर वोह ह़क़ीक़ी इश्क़ व मह़ब्बत का मज़ा चख लेता तो इश्क़ व मह़ब्बत की आग से बे चैन व बे क़रार हो जाता।"

इनायते इलाही عَزَّوَجَلَّ की किरनें ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के लिये रोशन हुईं तो वोह हिदायत के अन्वार और मह़ब्बत के असरार के ख़्वाहिश मन्द हुए क्यूंकि इन्हीं लोगों के दरमियान जामे मह़ब्बत पिलाया गया था और ख़ल्वत व तन्हाई में मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ ने इन को मुख़ात़ब किया था और वोह अपने दिल में इस से कहने लगे : "مَرْحَبا اَهْلًا وَّسَهْلًا"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ رَحْمَةُ اللهِ تعَالٰى عَلَيْه पर ख़ास फ़ज़्ल फ़रमाया तो वोह उस की इ़बादत में मुस्तइद हो गए और राहे त़रीक़त को त़ै कर के ह़क़ आशनाई के लिये षाबित क़दम हो गए और ह़क़ीक़ी मन्फ़अ़त के इ़वज़ अपने क़ल्बी राज़ों को ज़ाहिर फ़रमा दिया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर ह़ल्लाज رَحْمَةُ اللهِ تعَالٰى عَلَيْه पर मिज़ाज की तब्दीली को दाइर फ़रमाया तो वोह इश्क़े ह़क़ीक़ी के नशे में मस्त हो गए। और ज़ाहिर शरीअ़त से निकल गए और शौक़े इलाही عَزَّوَجَلَّ की आग में रातों को उलट-पलट होने लगे और जब इन्हों ने साक़ी शहूद को अपने वुजूद में तजल्ली फ़रमा देखा तो ज़बाने वज्द से ऐसी बात ज़ाहिर हुई कि ज़ाहिरी ह़ुदूद से बाहर हो गए। (इस पर ह़ाशिया 166 सफ़ह़ा पर देखें)

तज़्किरए इदरीस बिन अबी ख़ौला رَحْمَةُ اللهِ تعَالٰى عَلَيْه :

ह़ज़रते सय्यिदुना सहल बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के एक वली शदीद बीमार हो गए। जब लोगों ने देखा तो अकषर कहने लगे : इन को तो जुनून हो गया है। जब येह बात लोगों में आ़म हो गई तो कुछ लोगों ने अ़र्ज़ की : "हम आप का इ़लाज करना चाहते हैं।" तो इन्हों ने फ़रमाया : "ऐ लोगो ! जान लो ! मेरे पास ऐसा त़बीब है कि अगर मैं उसे इ़लाज के लिये अ़र्ज़ करूं तो वोह मेरा इ़लाज कर दे लेकिन मैं उस से दरख़्वास्त नहीं करूंगा। इन से दरयाफ़्त किया गया : "आप इ़लाज क्यूं नहीं कराते ह़ालांकि आप को दवा की शदीद ह़ाजत है ?" तो इन्हों ने इरशाद फ़रमाया : "मैं डरता हूं कि अगर मैं इस बीमारी से शिफ़ा पा गया तो कहीं सरकशी

में न पड़ जाऊं।'' लोगों ने अ़र्ज़ की : ''हमारे हां एक पागल रहता है, आप अपने उस त़बीब से पूछें कि क्या वोह उस का इलाज कर सकता है ?'' तो अल्लाह तआ़ला के इस नेक बन्दे ने जवाब दिया : ''हां ! वोह कर सकता है। तुम उस मजनून को ले आओ।'' लोग उस को ले आए, उस की गर्दन में बेड़ियां पड़ी हुई थीं और बहुत भारी ज़न्जीरों से हाथों को गर्दन के साथ बांध दिया गया था। उस की बीमारी शदीद थी। उस अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के वली ने लोगों से फ़रमाया : ''मुझे और इसे तन्हा छोड़ दो।'' चुनान्चे, उन जाहिल लोगों ने मजनून के हाथों को खोल दिया और उस घर में अकेला दाख़िल कर दिया जिस में अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के वली रहते थे। फिर दरवाज़ा बन्द कर दिया और गुमान करने लगे कि येह पागल इन के साथ कोई ना पसन्दीदा ह़रकत करेगा। थोड़ी देर बा'द जब लोगों ने आवाज़ दी तो मजनून ने इन को जवाब दिया और बाहर निकल कर सलाम किया और एक समझ दार आदमी की त़रह़ गुफ़्त्गू की इस ह़ाल में कि वोह शदीद रो रहा था। लोगों ने पूछा : ''बताओ, क्या मुआ़मला हुवा ?'' तो वोह कहने लगा : ''मैं इस शख़्स के पास गया और तुम लोग जानते हो कि मैं पागल था। इस ने मुझे अपने बिल्कुल क़रीब किया और एक ह़ाथ मेरे सीने पर फेरा और दूसरा मेरे सर पर फेरा। फिर मैं ने आ़फ़िय्यत मह़सूस की और मेरा जुनून ख़त्म हो गया।'' लोगों ने कहा : चलो ! ''हमे उस के पास ले चलो ताकि हम उस से दुआ़ की दरख़्वास्त करे जब वोह लोगों को ले कर अन्दर दाख़िल हुवा तो देखा कि वोह बुज़ुर्ग वहां मौजूद ही न थे, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने उन को लोगों की नज़रों से छुपा लिया था। ह़ज़रते सय्यिदुना सहल बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि वोह बुज़ुर्ग बैतुल मुक़द्दस से तशरीफ़ लाए थे और उन का नाम इदरीस बिन अबी ख़ौला رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه था।

(صِفَةُ الصَّفوة، ذكر المصطفين من عباد بيت المقدس، الرقم٧٧٢، ادريس بن ابى خولة الانطاكى، ج٤، ص٢٠٦)

सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى और काले रंग का आदमी :

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं कि मैं एक साल ह़ज के लिये ह़ाज़िर हुवा और मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيمًا में ही रहने लगा। एक दिन ज़म ज़म शरीफ़ के कुंवें की त़रफ़ गया ताकि पानी से सैराब हो जाऊं लेकिन वहां पर कोई रस्सी, डोल या मश्कीज़ा न था। मैं इसी ह़ालत में खड़ा था कि एक सियाह रंग का आदमी आया, उस के हाथ में डोल और रस्सी थी। उस ने डोल को रस्सी बांध कर कुएं में लटका दिया लेकिन वोह पानी तक न पहुंच सका। तो वोह डोल, रस्सी उठा कर कहने लगा : ''तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! अगर तूने मुझे पानी न पिलाया तो मैं ज़रूर तुझ से नाराज़ हो जाऊंगा।'' यका यक पानी कुंवें के कनारों से बहने लगा, उस ने वुज़ू किया और खुद पीने के बा'द अपने डोल को भी भर लिया, पानी दोबारा कुंवें के पैंदे तक पहुंच गया। जब वोह शख़्स रवाना हुवा तो मैं भी उस के पीछे हो लिया और अ़र्ज़ की : ''ऐ मेरे दोस्त ! तुम किस पर ग़ुस्सा हो रहे थे ?'' उस ने जवाब दिया : ''ऐ जुनैद ! ऐसी बात नहीं जिसे तुम समझ रहे हो, मैं तो अपने नफ़्स पर ग़ज़बनाक हो रहा था कि (अगर मुझे पानी न मिलता तो) क़ियामत तक उसे प्यासा रखता। लेकिन जब मेरे मालिक عَزَّ وَجَلَّ ने मुझे अपने दा'वे में सच्चा देखा तो मेरे लिये पानी को जारी कर दिया।'' इस के बा'द वोह शख़्स मेरी नज़रों से औझल हो गया फिर कभी नज़र न आया।

मक़ामे मा'रूफ़ عليه رحمة الله الرءُوف :

ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ करख़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَنِی की बारगाह में अ़र्ज़ की गई : ''हुज़ूर ! आप कैसे मा'रूफ़ हुए और आप मह़ब्बत की किस सिफ़त से मुत्तसिफ़ हैं ?'' तो आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیۡه ने इरशाद फ़रमाया : ''ऐ लोगो ! तुम पर तअ़ज्जुब है, क्या मा'रूफ़ को जाहिल रखा जाता है ? क्या मह़बूब को नापसन्द किया जाता है ? क्या नाबीने के इ़लावा चांद किसी पर पोशीदा होता है ? क्या तुम मेरे दिल को गिरिफ़्तारे मह़ब्बत नहीं पाते ? क्या मेरे दिमाग़ को मुश्ताक़े दीदार और मेरी अ़क़्ल को खोया हुवा नहीं देखते ? मैं ने मह़ब्बते इलाही में कितने ही ऊनी जुब्बे फाड़ डाले और मौत के कितने प्याले घूंट घूंट कर के पिये और कितनी ही बार मह़ब्बत के मुश्किल रुमूज़ को पढ़ा यहां तक कि मैं अहले मह़ब्बत के दरमियान मा'रूफ़ हो गया। अगर मैं मा'रूफ़ न होता तो सआ़दत के रास्ते से फिरा हुवा होता। क्यूंकि ग़ुरूर की चादर में छुपने वाला सब पर ज़ाहिर हो जाता है और झूटा दा'वा करने वाले का दा'वा रद्द कर दिया जाता है।''

सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحۡمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیۡه की तौबा :

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحۡمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیۡه से पूछा गया : ''ऐ फ़ुज़ैल ! आप डकैती से राहे हिदायत पर कैसे आए ? और बदबख़्तों के गुरोह से निकल कर ख़ुश बख़्तों के गुरोह में कैसे शामिल हुए ?'' तो आप ने जवाब दिया : ''मैं तौफ़ीक़ से बहुत दूर और राहे हिदायत से भटका हुवा था। मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे गुनाहों के समन्दर से निकाल कर नवाज़िशात व इन्आ़मात से ढांप दिया।'' अ़र्ज़ की गई : ''यैह कैसे हुवा और किस त़रह़ राहे ह़क़ आप के क़रीब हुई ?'' जवाब में फ़रमाया : ''ह़स्बे मा'मूल एक दिन में रहज़नी करने के लिये निकला, मेरे (बुराई पर उभारने वाले) नफ़्स ने मुझे शर की बेड़ियां डाल रखी थी, ज़माने ने मुझे धोके में डाला हुवा था, शैत़ान मुझ पर ग़ालिब था। चुनान्चे, मैं क़त्लो ग़ारत गिरी और सुवारियों को परेशान करने चल पड़ा। मैं तारिकी के पर्दों में छुपा हुवा आ रहा था और राहे हिदायत का कोई दरवाज़ा मुझे मा'लूम न था कि अचानक हिदायत की तौफ़ीक़ की जगह मुझ पर ज़ाहिर हुई, वोह यूं कि एक क़ारिये क़ुरआन इस आयते मुबारका की तिलावत कर रहा था :''

﴾1﴿ اَلَمۡ یَاۡنِ لِلَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡۤا اَنۡ تَخۡشَعَ قُلُوۡبُهُمۡ لِذِکۡرِ اللّٰهِ (پ٢٧، الحديد:١٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क्या ईमान वालों को अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाएं अल्लाह की याद के लिये।*

मैं ने उस की त़रफ़ अपने कान लगा दिये। सुनते ही मेरी आंखों से आंसू जारी हो गए और मेरे दिल के होश उड़ गए। इसी का अषर है कि मैं ने अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ रुजूअ़ कर लिया और कलामे बारी तआ़ला का जवाब देते हुए अ़र्ज़ की : ''क्यूं नहीं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम !

वोह वक़्त आ चुका है मेरे रह्मान की त़रफ़ रुजूअ़ करने और नाफ़रमानी से ख़ौफ़ज़दा होने का वक़्त आ चुका है।" लेकिन डरने वाले के लिये अमान भी ज़रूरी है पस क़ुरआने करीम ने मुझे दाइमी अमान की खुश ख़बरी दी :

﴿2﴾ وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ۚ

(پ۲۷،الرحمن:٤٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो अपने रब्ब के हुज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें हैं।*

फिर मैं डकैती से मुसल्ले पर आ गया, राहे शक़ावत तर्क कर के सआ़दत के रास्ते पर पलट आया, उस के क़हरे क़ुदरत का क़ैदी बन गया और उस के दरवाज़ए रह्मत पर फ़क़ीर बन कर खड़ा हो गया। उस के दरवाज़ए इ़ज़्ज़त पर आ़जिज़ी व इन्किसारी का सर झुका दिया और मैं ने अ़र्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरा बन्दा भागे हुए गुलाम की त़रह़ तेरी बारगाह में लौट आया है और तेरे गुज़श्ता फ़ज़्लो करम का त़लबगार है, सुब्ह़ मैं शिकारी बन कर निकला था अब खुद शिकार हो गया हूं, क़ाइद बन कर निकला था अब मुत़ीअ़ व फ़रमा बरदार बन कर तेरे दरवाज़े पर लौट आया हूं।" (عيون الحكايات ،الحكاية الخامسة عشرة بعد المائتين،توبة الفضيل بن عياض،ص٢١٢)

राज़ी ब रिज़ाए इलाही रहने वाला आ़बिद :

बनी इसराईल में एक आ़बिद किसी पहाड़ के एक ग़ार में रहा करता था। न लोग उस को देखते न वोह लोगों को देखता था। उस के हां पानी का एक चश्मा भी था, वोह इस से वुज़ू करता और पानी पीता। ज़मीन में उगे हुए फलों से गिज़ा ह़ासिल किया करता था। दिन को रोज़ा रखता और रात को क़ियाम करता। इ़बादत में बिल्कुल सुस्ती न करता। उस पर सआ़दत के आषार नुमायां थे। जब ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस का शोहरा सुना तो उस से मुलाक़ात करने का इरादा किया। जब दिन में तशरीफ़ ले गए तो वोह आ़दिब नमाज़ और ज़िक्रो अज़्कार में मश्गूल था और जब रात को जाना हुवा तो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मुनाजात में मुस्तग़रक़ था। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उसे सलाम करने के बा'द फ़रमाया : "ऐ शख़्स ! अपनी जान पर नर्मी करो।" उस ने अ़र्ज़ की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी عَلَیْهِ السَّلَام मुझे डर है कि कहीं ग़ाफ़िल न हो जाऊं, मौत का वक़्त आ जाए और मैं इ़बादते इलाही عَزَّوَجَلَّ में कोताही करने वालों में न हो जाऊं।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : "क्या कोई ह़ाजत व ज़रूरत है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ कीजिये कि वोह मुझे अपनी रिज़ा व खुश्नूदी अ़त़ा फ़रमा दे और ता दमे आख़िर अपने इ़लावा किसी की त़रफ़ माइल न करे।" चुनान्चे, जब ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जबले तूर पर मुनाजात के लिये ह़ाज़िर हुए और कलामे बारी तआ़ला की लज़्ज़त में मुस्तग़रक़ हो गए तो आप عَلَیْهِ السَّلَام को उस आ़बिद की बात याद न रही। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने खुद ही इरशाद फ़रमाया : "ऐ मूसा ! तुझे मेरे आ़बिद बन्दे ने क्या कहा ?" आप عَلَیْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : "या इलाही عَزَّوَجَلَّ तू ख़ूब जानता है, उस ने मुझे कहा है कि मैं तुझ से दुआ़ करूं कि उसे अपनी रिज़ा व खुश्नूदी अ़त़ा फ़रमा दे और अपने इ़लावा किसी में मश्गूल न कर यहां तक कि

वोह तुझ से आ मिले।'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : ''ऐ मूसा ! उसे जा कर कह दो कि वोह दिन रात मेरी जितनी चाहे इ़बादत कर ले, फिर भी अपने गुज़श्ता गुनाहों और बुराइयों की वजह से जहन्नमी है और मुझे उस की ऐसी ज़लील व रुस्वा कुन बातों का भी इ़ल्म है जो मेरे इ़लावा कोई नहीं जानता।'' चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उस के पास तशरीफ़ लाए, उसे रब्ब عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान सुनाया और उस के गुज़श्ता बड़े बड़े गुनाहों के मुतअ़ल्लिक़ बताया तो उस ने कहा : ''मरह़बा ! मैं अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ का फ़ैसला और हुक्म दिलो जान से तस्लीम करता हूं, वोह हर शै को देखने वाला है, उसे हर शै का इ़ल्म है, उस के हुक्म को रद्द करने वाला कोई नहीं, उस के फ़ैसले को फेरने वाला कोई नहीं। येह कह कर वोह बहुत ज़ियादा रोने लगा और अ़र्ज़ की : ''ऐ मूसा عَلَیْهِ السَّلَام उस की इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम ! वोह अगर मुझे अपने दरवाज़े से धुत्कार भी दे तो भी मैं उसी के दरवाज़े पर पड़ा रहूंगा, कभी न हटूंगा, और अगर मुझे जला दे या मेरे टुकड़े टुकड़े कर दे, तो भी मैं उस की बारगाह से कभी न फिरूंगा।''

जब ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मुनाजात के लिये जबले तूर पर तशरीफ़ ले गए तो अ़र्ज़ की : ''या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू ख़ूब जानता है तेरे आ़बिद बन्दे ने क्या जवाब दिया है।'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : ''ऐ मूसा ! उस को ख़ुश ख़बरी सुना दो कि वोह अहले जन्नत में से है और उसे मेरी रह़मत व एह़सान ने घेर लिया है और उसे येह भी कहना कि तू ने मेरे फ़ैसले को सब्रो रिज़ा से गले लगा लिया और मेरे सख़्त हुक्म व फ़ैसले के बा वुजूद राज़ी रहा। अब अगर तेरे गुनाहों से ज़मीन व आस्मां और दरमियानी फ़ज़ा भी भर जाए और तमाम समन्दर भी भर जाएं तो भी मैं तेरी मग़फ़िरत फ़रमा दूंगा क्यूंकि मैं बहुत करीम और बख़्शने वाला मेहरबान हूं।'' जब ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने आ़बिद को येह ख़ुश ख़बर दी तो वोह सजदे में गिर पड़ा और अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द की और सजदे में पड़ा रहा यहां तक कि उस का ताइरे रूह़ क़फ़से उ़नसुरी से परवाज़ कर गया।

ऐ शक में पड़ने वालो ! कब तक तुम्हें तुम्हारा रब्ब عَزَّوَجَلَّ बुलाता रहेगा और तुम जवाब देने से ए'राज़ करते रहोगे, उस ने तुम्हें किस क़दर एह़सानात से नवाज़ा फिर भी तुम नाफ़रमानियों से उस का मुक़ाबला करते हो, ह़ालांकि तुम पर उस की त़रफ़ से मुह़ाफ़िज़ फ़िरिश्ते मुक़र्रर है। जल्दी से तौबा कर लो कि वोह तुम्हारे बहुत क़रीब है और उसी से हिदायत व तौफ़ीक़ का सुवाल करो और ग़म व तंगदस्ती को दूर करने के लिये उसी का क़स्द करो। बेशक उस का क़स्द करने वाला ख़सारे में नहीं होता और उसे राज़ी करने वाले आ'माल करो और उस की नाफ़रमानी के कामों से बचो, वोह (इ़ल्म व क़ुदरत के साथ) हर जगह मौजूद है, ग़ाइब नहीं।

मुनाजात के वक़्त उस की बारगाह में दुआ़ करो इस लिये कि वोह दुआ़ करने वाले की दुआ़ क़बूल फ़रमा लेता है। उसी वक़्त उस के सामने गिर्या व ज़ारी और गिड़ गिड़ाते हुए सिद्क़ दिल से तौबा कर लो। मुमकिन है कि वोह अपनी इ़नायत के लिये तुम्हें चुन ले और तुम्हें हिदायत से बहरावर कर दे, क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिसे चाहे अपने क़ुर्ब के लिये चुन लेता है और जो उस की त़रफ़ रुजूअ़ करता है वोह उसे अपनी राह दिखाता है।

नसीहत भरी बातें :

ऐ मेरे इस्लामी भाई ! तेरा रब्ब عَزَّوَجَلَّ चाहता है कि तू उस की बारगाह में हाज़िर हो जा और तू है कि ग़ाइब रहता है। जब तक अपनी लग़ज़िशों और ख़ताओं की बीमारी में मुब्तला रहेगा। तू अपनी बीमारी बयान नहीं करता कि तबीब तेरा इलाज करे। ऐ गुनाहों और ख़ताओं के समन्दर में ग़र्क़ ! ऐ बुराइयों और ऐबों में मश्हूर ! ऐ अ़ल्लामुल ग़ुयूब عَزَّوَجَلَّ की इबादत से ए'राज़ करने वाले ! अगर तू गुनाहों से वहशत ज़दा हो चुका है तो जान ले कि रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ का दरवाज़ा उस बन्दे के लिये खुला है जो उस की बारगाह की त़रफ़ रुजूअ़ करे और तौबा करे। ऐ मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ की रस्सी को छोड़ने वाले ! राहे ह़क़ को मुश्किल समझ न तौफ़ीक़ को दूर ख़याल कर। बहुत से कमज़ोरों को उठा लिया गया और बहुत से भटके हुओं को मन्ज़िल तक पहुंचा दिया गया, तू भी अपने हिम्मत के घोड़े पर सुवार हो जा और पुख़्ता इरादे की रिकाबों पर क़दम रख ले। अगर तेरे पास तक़्वा का तौशा नहीं तो अपने शिक्वे को तौशा बना ले और इसे जलते दिल की जलन पर उंडेल और दिल पर बहते आंसूओं का बादल बरसा। जब भड़कते दिल का धुवां बुलन्द हो जाए और तेरी ह़सरतों की सांसें गर्म हो जाएं तो जवाब के इन्तिज़ार में उस के दरवाज़े पर खड़ा हो जा और जब इताब करते हुए तुझे कहा जाए कि कौन अजनबी दरवाज़े पर खड़ा है ? तो यूं अ़र्ज़ करना :

"तेरा बन्दा एक भिकारी की त़रह़ सर झुकाए, आंसू बहाते हुए खड़ा है, जिस का अस्ल माल उस का दिल है जो ख़राब हो चुका है, हाए ! ह़सरत व लापरवाही ने मेरे अस्ल माल को छीन लिया।" फिर अगर तुझे जवाब में कहा जाए : "तू ने अपना मत़लूब ह़ासिल करने में ताख़ीर क्यूं की ?" किस चीज़ ने तुझे तेरे मह़बूबे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ से दूर कर दिया ?" तो तुम यूं कहना : "मैं जहालत व नादानी के सबब अपने दोस्तों से मुलाक़ात के वक़्त की क़िल्लत न जान सका यहां तक कि मैं हिज्रो फ़िराक़ का शिकार हो गया तो मेरे दिल पर इन के विसाल से पर्दे डाल दिये गए, मेरी उ़म्र गुज़रती जा रही है, न जाने कब तक येह रुकावट बर क़रार रहेगी। ऐ मेरे दोस्तो ! वापस आ जाओ, तुम्हारी ज़िन्दगी की क़सम ! मैं तौबा करता हूं।"

फिर अगर तुझ से कहा गया, "कब तक तौबा करता और तोड़ता रहेगा, कब तक हम तुझ पर नज़रे करम करते रहेंगे और तू हमारी बारगाह से मुंह मोड़ता रहेगा।" तो तुम अ़र्ज़ करना, "अगर अब तू मुझे मुआ़फ़ कर दे तो मेरा दिल सुधर जाएगा और मेरी ह़ालत हर त़रह़ की परा गन्दगियों से साफ़ सुथरी हो जाएगी और नाराज़ी के बा'द हमारी सुल्ह़ हो जाएगी।" फिर तुम तन्हाई को ख़त्म होता पाओगे और देखोगे कि जुदाई के बा'द विसाल कैसा होता है और मक़्सूद

तक रसाई कैसे होती है। मैं है़रान व परेशान रहूंगा यहां तक कि वोह दिन आ जाए जब मैं अपने मह़बूब के हुस्नो जमाल का दीदार करूं और उस की मुलाक़ात से मेरा शिकस्ता दिल जुड़ जाए, मैं हादिये मुकर्रम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अत़हर पर हाज़िरी दूं। उन पर बुलन्द व बाला आस्मानों का मालिक عَزَّوَجَلَّ ख़ूब दुरूद भेजे और मेरा दिल हमेशा उन की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर झूमता रहे।

وَصَلَّی اللّٰہ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی آلِہٖ وَ صَحۡبِہٖ اَجۡمَعِیۡن

आस्मानों में शोहरत रखने वाले

*ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "दुन्या में भूके रहने वाले लोगों की अरवाह़ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ब्ज़ फ़रमाता है और उन का ह़ाल येह होता है कि अगर ग़ाइब हो जाएं तो उन्हें तलाश नहीं किया जाता, अगर मौजूद हों तो पहचाने नहीं जाते, दुन्या में पोशीदा होते हैं मगर आस्मानों में उन की शोहरत होती है, जब जाहिल व बे इ़ल्म शख़्स इन्हें देखता है तो इन को बीमार गुमान करता है जब कि वोह बीमार नहीं होते बल्कि इन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ दामन गीर होता है, क़ियामत के दिन येह लोग अ़र्श के साए में होंगे जिस दिन उस के इ़लावा कोई साया न होगा।"*

(مسند فردوس الاخبار،الحدیث:۱۶۵۹،ج۱،ص۲۳۵)

बयान 34 :

तज़किरए मा'रूफ़ करख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی

हम्दे बारी तआला :

सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जो रऊफ़ुर्रहीम, करीम और इन्तिहाई मेहरबान है। भलाई के बदले भलाई (या'नी जन्नत) अ़ता फ़रमाने वाला। वोह ऐसा वाहिद व यक्ता है कि वह़दत उस पर अषर अन्दाज़ नहीं होती और न ही बन्दों से इन्तिहाई मह़ब्बत पर फ़ख़्र है। वोह अपनी बादशाहत में वज़ीर, मुशीर और क़रीबी से बे नियाज़ है। सितारों से ऊपर और ज़मीन की सरह़दों से आगे जो कुछ है उसी के इ़ल्म में है। पर्दए ग़ैब उस पर खुला हुवा है। उस ने अपनी शान के लाइक़ अ़र्श पर इस्तिवा फ़रमाया जो ह़रकत, जुलूस और ठहरने से पाक है। मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द करता हूं कि उस ने ख़ौफ़नाक चीज़ों को दूर फ़रमा दिया। और मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं, वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, ऐसी गवाही जैसी हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सच्चाई की इन्तिहा को पहुंची हुई अपनी मुबारक ज़बान से दी। क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने अत़्हर को ग़ैरे ह़क़ और बेजा की त़रफ़ जाने से रोक दिया। और मैं गवाही देता हूं कि बेशक हमारे सरदार ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे और रसूल हैं जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुअ़ज़्ज़ज़ लोगों की त़रफ़ मबऊ़ष फ़रमाया है। और आप صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस जन्नत की ख़ुश ख़बरी दी जिस के (फ़लों के) ख़ोशे झुके हुए हैं और उस आग से डराया जो सख़्त भड़कती और शो'ले मारती है। आप صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ऊन का लिबास पहना और पैवन्द लगे ना'लैन मुबारक इस्ति'माल फ़रमाए। ह़ालांकि आप صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में बुलन्दो बाला मर्तबे पर फ़ाइज़ और तमाम ख़ूबियों से मौसूफ़ हैं। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस नबिय्ये करीम, हमारे सरदार ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुजतबा صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर रह़मत नाज़िल फ़रमा और इन के आल व अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْهُم पर जो सरदाराने ज़माना हैं। और आप صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर और आप صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के आल व अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْهُم पर सलामती भेज जब तक बाजमाअ़त नमाज़ों में क़त़ार दर क़त़ार सफ़ें क़ाइम होती रहें।

इब्तिदाई ह़ालात :

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه का नामे नामी, इस्मे गिरामी मा'रूफ़ عليه رحمة الله الرءوف और कुन्यत अबू मह़फ़ूज़ है, वालिदे माजिद का नाम मुबारक फ़ीरोज़ है। (बा'ज़ ने "फ़ीरोज़ान" लिखा है) बग़दाद के अ़लाक़े कर्ख़ की निस्बत से आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه कर्ख़ी कहलाते हैं। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه के वालिदैन ईसाई थे। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه भलाई की सिफ़त से मुत्तसिफ़ थे, बचपन ही से मुसलमान बच्चों के साथ मिल कर नमाज़ पढ़ा करते और वालिदैन को दा'वते इस्लाम पेश करते रहते लेकिन वोह आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه को डांटते हुए उलझ पड़ते। एक दिन इन्हों ने

आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ को ईसाई मज़हब की ता'लीम सीखने के लिये एक पादरी के सिपुर्द कर दिया। उस ने आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ को सामने बिठाया और पूछा : "ऐ बेटे ! तुम, तुम्हारा बाप और तुम्हारी मां तीनों मिल कर कितने हुए ?" आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया, तीन। तो कहने लगा, "अब कहो ! खुदा तीन हैं।" फ़ौरन सदाए ग़ैरत बुलन्द हुई : "अल्लाह वाहिद عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी का ज़िक्र करने से बच कि कहीं तू हैरत के गढ़े में न जा पड़े और खुदाए अहद عَزَّوَجَلَّ से किसी दूसरे की तरफ़ तजावुज़ करने से बच, कहीं ऐसा न हो कि तुझे हिज्रो फ़िराक़ के कोड़े मारे जाएं।" हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : "मुझे वोह आवाज़ बहुत पसन्द आई।" फिर मेरे सामने से हिजाब उठा दिये गए और मैं ने महब्बत व इख़्लास का जाम देखा, जिस की एक तरफ़ क़बूलिय्यत व इख़्तिसास के क़लम से लिखा था :

﴿1﴾ وَ اِلٰـهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ج (پ۲،البقرۃ:۱۶۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है।

और दूसरी जानिब लिखा था :

﴿2﴾ لَا تَتَّخِذُوْۤا اِلٰـهَیْنِ اثْنَیْنِ ج اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ج (پ۱۴،النحل:۵۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : दो खुदा न ठहराओ वोह तो एक ही मा'बूद है।

और तीसरी सम्त लिखा था :

﴿3﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِیْنَ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ ۘ وَ مَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّاۤ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ط (پ۶،المائدہ:۷۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक काफ़िर हैं वोह जो कहते हैं अल्लाह तीन खुदाओं में का तीसरा है और खुदा तो नहीं मगर एक खुदा।

जब कि चौथी तरफ़ लिखा था :

﴿4﴾ اِنَّنِیْۤ اَنَا اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعْبُدْنِیْ لا (پ۱۶،طٰہٰ:۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मैं ही हूं अल्लाह कि मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं तो मेरी बन्दगी कर।

जब मैं ने वोह जाम पिया तो ख़ौफ़ मुझ से दूर हो गया और शुकूक व शुब्हात और इताअ़त न करने की फ़ज़ा भी छट गई तो मैं अपनी ही हस्ती में खो गया और हुज़ूरी मिलने पर खुश हो कर मैं ने अपनी सोच की ज़बान से पुकारा :

"मेरा जिस्म तो हमेशा से कमज़ोर व ना तुवां है और आंखें आंसू ही बहा रही हैं, जब कि दिल तुम्हारी हिफ़ाज़त व रिज़ा मन्दी के ताबेअ़ है और सिद्क़ व सफ़ा के क़दमों पर सअ़्य और तवाफ़ कर रहा है और कितनी ही दफ़्आ़ मुझे इरफ़ान की दौलत मिल चुकी पस अब क्यूंकर मेरी हालत का इन्कार किया जा सकता है ? फ़ज़्ल येही है कि मा'रूफ़ का इन्कार न किया जाए।"

पादरी ने फिर कहा : "कहो ! खुदा तीन हैं।" आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "नहीं, खुदा वह्दहू ला शरीक है।" तो पादरी ने आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ को मारना शुरूअ़ कर दिया और फिर कहने लगा : अब कहो ! खुदा तीन हैं।" मगर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ खुदा तआ़ला की

वहदानिय्यत पर क़ाइम रहे, तो उस ने पहले से ज़ियादा सख़्त मारा, पिटा और आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ के वालिदैन से कहा : "इस को जेल ख़ाने में क़ैद करा दो।" चुनान्चे, आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ तीन दिन जेल ख़ाने में रहे, रोज़ाना आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ के सामने एक रोटी फैंकी जाती और पीने को एक घूंट पानी दिया जाता। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ की वालिदा ने रोते रोते आप के वालिद से कहा : "आप का बेटा बहुत छोटा है, मुझे डर है कि कहीं पागल न हो जाए, इस को जेल से रिहा करा दो।" चुनान्चे, जब दरवाज़ा खोला गया तो तीनों रोटियां वैसी की वैसी पड़ी थीं, वालिदैन ने चलने को कहा तो आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने इन्कार कर दिया फिर इन्हों ने पूछा, "तुम क़ैद ख़ाने में क्यूं क़ैद रहना चाहते हो ?" तो आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : "जिस मह़बूब की वजह से तुम ने मुझे क़ैद किया मैं ने उसी को यहां अपने पास पाया और वोह भी मुझ से मह़ब्बत करता है।" जब जेल वालों ने आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ को क़ैद से आज़ाद कर दिया तो आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ घर से कहीं दूर चले गए। कई दिन तक न कुछ खाया पीया, न ही किसी दीवार के साए में बैठे। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ के वालिदैन रो रो कर कहते : "काश ! हमारा बेटा लौट आए, चाहे किसी भी दीन पर हो हम उस की पैरवी करेंगे और उस के मज़हब को अपनाने के लिये तय्यार हैं। कुछ अ़र्से बा'द आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने घर का दरवाज़ा खट खटाया, आवाज़ आई, "कौन ?" फ़रमाया, मा'रूफ़।" वालिदैन ने पूछा : "तुम्हारा दीन कौन सा है ?" फ़रमाया, "इस्लाम।" वालिदैन ने बाहर निकल कर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ को गले से लगा लिया। फिर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ के हाथों पर इस्लाम क़बूल कर लिया।

आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ से मरविय्यात :

﴿1﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْغَنِی अपनी सनद के साथ ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْھُم से रिवायत करते हैं कि "एक शख़्स ने सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा रह़मत व बरकत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم कोई ऐसा अ़मल इरशाद फ़रमाइये जो मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "गुस्सा छोड़ दो।" उस ने अ़र्ज़ की : 'अगर येह न हो सके तो ?" आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "रोज़ाना बा'द नमाज़े अ़स्र सत्तर मरतबा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से इस्तिग़फ़ार करो तो वोह तेरे सत्तर बरस के गुनाह बख़्श देगा।" अ़र्ज़ की : "अगर मेरे सत्तर बरस के गुनाह न हों तो ?" इरशाद फ़रमाया : "फिर तेरी वालिदा के सत्तर बरस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।" फिर अ़र्ज़ की : "अगर मेरी मां दुन्या से कूच कर चुकी हो और इस पर भी सत्तर साल के गुनाह न हों तो ?" आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तेरे क़रीबी रिश्तेदारों के सत्तर बरस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।"

(تاریخ بغداد، الرقم ۷۷۸۰، ابوعلی المفلوج، ج۱۴، ص۴۲۵۔حلیۃ الاولیاء، معروف الکرخی، الحدیث ۱۲۷۱۹، ج۸، ص۴۱۱)

﴾2﴿.....हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَنِی अपनी सनद के साथ हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ से रिवायत करते हैं कि "जिस ने अपने मुसलमान भाई की किसी हाजत को पूरा किया उस के लिये हज व उमरा करने वाले की मिष्ल षवाब है।"

(تا ریخ بغداد، الرقم ۲۸۷۴، احمد بن محمد ابو الحسن النوری، ج۵، ص ۳۳۹)

﴾3﴿.....हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَنِی अपनी सनद के साथ हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन दीनार عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَفَّار से रिवायत करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ फ़रमाते हैं : "जिस ने सोते वक़्त येह दुआ पढ़ी :

اَللّٰهُمَّ اٰمِنَّا مِنۡ مَّكۡرِكَ وَلَا تُنۡسِنَا ذِكۡرَكَ وَلَاتَكۡشِفۡ عَنَّاسِتۡرَكَ وَلَا تَجۡعَلۡنَا مِنَ الۡغَافِلِيۡنَ، اَللّٰهُمَّ ابۡعَثۡنَا فِیۡ اَحَبِّ السَّاعَاتِ اِلَيۡكَ حَتّٰی نَذۡكُرَكَ فَتَذۡكُرُنَا وَنَسۡأَلُكَ فَتُعۡطِيۡنَا وَنَدۡعُوۡكَ فَتَسۡتَجِيۡبُ لَنَا وَنَسۡتَغۡفِرُكَ فَتَغۡفِرُلَنَا

या'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ हमें अपनी खुफ़्या तदबीर से महफ़ूज़ फ़रमा, हमें अपना ज़िक्र न भुला, हमारे गुनाहों को छुपाए रख, हमें ग़ाफ़िलों में से न कर, ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ हमें अपने पसन्दीदा लम्हात में बेदार फ़रमा कि हम तेरा ज़िक्र करें तो तू हमारा चर्चा कर, हम तुझ से सुवाल करें तो तू हमें अ़ता कर हम तुझ से दुआ करें तो तू हमारी दुआ क़बूल कर, हम तुझ से मग़फ़िरत चाहें तो तू हमें बख़्श दे।" तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के पास अपनी पसन्दीदा साअ़त में (या'नी तहज्जुद के वक़्त) बेदार करने के लिये एक फ़िरिश्ता भेजता है अगर वोह बेदार हो जाए तो फ़बिहा (या'नी ठीक है), वरना वोह फ़िरिश्ता आस्मान पर चला जाता है और दूसरा फ़िरिश्ता भेजा जाता है वोह बेदार करता है अगर वोह उठ कर नमाज़ अदा कर ले तो फ़बिहा वरना वोह फ़िरिश्ता भी अपने रफ़ीक़ के साथ जा कर खड़ा हो जाता है। फिर अगर वोह शख़्स उठ कर नमाज़े तहज्जुद पढ़े और दुआ करे तो उस की दुआ क़बूल कर ली जाती है और अगर नमाज़ न पढ़े तो भी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के लिये उन मलाइका का षवाब लिख देता है।" (كنز العمال، كتاب المعيشة والعادات قسم الاقوال، باب رابع، فصل اول، الحديث ۴۱۳۱۹، ج۱۵، ص ۱۴۹-بتغيرقليل)

आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه की करामात :

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मरदविया رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه फ़रमाते हैं कि हम हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَنِی की सोहबत में बैठे हुवे थे, उस दिन मैं ने आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه का चेहरा मुबारक खिला हुवा देख कर अ़र्ज़ की : "ऐ अबू महफ़ूज़ मुझे पता चला है कि आप पानी पर चलते हैं ?" तो इरशाद फ़रमाया : "मैं कभी पानी पर नहीं चला बल्कि जब मैं पानी उ़बूर करने का इरादा करता हूं तो इस की दोनों त़रफ़ें इकठ्ठी हो जाती हैं और मैं इस पर क़दम रख कर चलने लग जाता हूं।

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन वासेअ़ رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه फ़रमाते हैं कि मैं अज़ाने मग़रिब के वक़्त हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَنِی के पास था उस वक़्त आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه के चेहरे पर किसी चोट का निशान न था लेकिन जब अगले दिन हाज़िर हुवा तो चोट का निशान देखा। मैं ने अपने साथ बैठे हुए बुजुर्ग जो कि आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه से ख़ासे मानूस थे, से अ़र्ज़ की, कि "आप इन से इस की वजह पूछिये।" चुनान्चे, उन्हों ने पूछा : "ऐ अबू महफ़ूज़ ! कल तक तो आप के चेहरे पर कोई निशान न था, फिर आज येह निशान कैसे बना ?" इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम्हें मुआ़फ़ फ़रमाए ! फ़ुज़ूल बातों के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल मत करो।" लेकिन

उस बुज़ुर्ग ने फिर अ़र्ज़ की : "मैं आप को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम देता हूं कि आप हमें ज़रूर बताइये ?" ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی ने पूछा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म करे, तुम्हें किस ने येह बात पूछने पर उभारा ?" फिर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ का चेहरा मुतग़य्यिर हो गया फिर इरशाद फ़रमाया : "रात नमाज़े इशा के बा'द मेरे दिल ने बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ करने की ख़्वाहिश की तो मैं मक्का शरीफ़ जा पहुंचा। त़वाफ़ कर के ज़म ज़म शरीफ़ की त़रफ़ पानी पीने गया तो अचानक एक ह़सीन सूरत दिखाई दी। मेरी नज़र उस पर जम गई तो अचानक मेरा पाउं दरवाज़े में फिसल गया जिस से मेरे चेहरे पर चोट लग गई। फिर मैं ने किसी की आवाज़ सुनी : "अगर तुम मज़ीद देखते तो मज़ीद चोटें खाते।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली ह़सन बिन अ़ब्दुल वह्हाब رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "लोग कहते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی पानी पर चलते हैं, अगर मुझे कहा जाए कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ हवा में उड़ते हैं तो मैं इस बात की भी तस्दीक़ करूंगा।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वह्हाब رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی से बड़ा ज़ाहिद कोई नहीं देखा।

(تاریخ بغداد،الرقم۷۱۷۷معروف بن الفیرزان ابو محفوظ العابدالمعروف بالکرخی،ج۱۳،ص۲۰۷)

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ के इरशादाते आ़लिया :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बका رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی को इरशाद फ़रमाते सुना : "जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे से भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उस के लिये अ़मल का दरवाज़ा खोल देता है और बह़्स व मुबाह़सा का दरवाज़ा बन्द कर देता है और जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे से शर का इरादा फ़रमाता है तो उस के लिये अ़मल का दरवाज़ा बन्द कर देता है और बह़्स व मुबाहसा का दरवाज़ा खोल देता है।"

(حلیۃ الاولیاء،معروف الکرخی،الحدیث۱۲۶۹۰،ج۸،ص۴۰۵)

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुईन और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رحمۃ اللہ تعالٰی علیہما दोनों आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए। ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुईन رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने कहा कि मैं इन से सजदए सह्व के मुतअ़ल्लिक़ पूछना चाहता हूं। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने ख़ामोश रहने का हुक्म दिया लेकिन वोह ख़ामोश न रहे और अ़र्ज़ की : "ऐ अबू मह़फ़ूज़ ! आप सजदए सह्व के मुतअ़ल्लिक़ क्या फ़रमाते हैं ?" ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی ने इरशाद फ़रमाया : ये दिल के लिये सज़ा है कि वोह नमाज़ से ग़ाफ़िल हो कर दूसरी त़रफ़ क्यूं मुतवज्जेह हुवा।" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : "येह बात आप की ज़हानत पर दलालत करती है।" (تاریخ بغداد ، الرقم ۷۱۷۷معروف بن الفیرزان ابو محفوظ العابد المعروف بالکرخی،ج۱۳،ص۲۰۱)

एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने नमाज़ के लिये इक़ामत कही। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अबी तौबा رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ से इरशाद फ़रमाया : "आगे बढ़ कर

हमें नमाज़ पढ़ाइये। इस की वजह येह थी कि आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه इमामत नहीं कराते थे, बल्कि सिर्फ़ अज़ान व इक़ामत कहते थे जब कि इमामत कोई और करता था।'' हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अबी तौबा رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه ने अर्ज़ की : ''अगर मैं तुम्हें येह नमाज़ पढ़ाऊं तो दूसरी नमाज़ की इमामत नहीं करूंगा।'' येह सुन कर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه ने इरशाद फ़रमाया : ''क्या तुम दूसरी नमाज़ की उम्मीद करते हो ? हम लम्बी उम्मीदों से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह तृलब करते हैं क्यूंकि येह बेहतरीन अ़मल से रोक देती है।'' (حلية الاولياء، معروف الكرخی، الحديث١٢٦٨٨، ج٨، ص٤٠٥)

हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाया करते थे : ''दुन्या चार चीज़ों का नाम है : (1)....माल (2)....कलाम (3)....सोना और (4)....खाना। क्यूंकि माल सरकशी का सबब है, कलाम लह्व व ला'ब में मुब्तला कर देता है, नींद ग़ाफ़िल कर देती है और खाना दिल की सख़्ती का बाइ़स है।

हज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْغَنِی को येह इरशाद फ़रमाते सुना : ''जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में बड़ाई चाहने का इरादा किया तो वोह उसे बुरी तृरह पछाड़ देगा, जिस ने उस से लड़ाई का इरादा किया तो वोह उसे ज़लील कर देगा, जिस ने उस को धोका देना चाहा तो वोह उसे इस की सज़ा देगा और जिस ने उस पर भरोसा किया तो वोह उसे नफ़्अ़ देगा और जिस ने उस के लिये आ़जिज़ी की तो वोह उसे बुलन्द रुतबा अ़ता फ़रमाएगा। (سير اعلام النبلاء،الرقم١٤٢٥ معروف الكرخی، ج٨، ص٢١٨)

हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْغَنِی की बारगाह में अ़र्ज़ की गई : ''दिल से दुन्या की महब्बत निकालने का नुस्ख़ा क्या है ?''इरशाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सच्ची महब्बत और लोगों के साथ अच्छा बरताव करना। और ख़ालिस महब्बत की अ़लामात तीन हैं : (1)...वा'दा पूरा करना (2).....बिग़ैर सुवाल के अ़ता करना और (3)....कोई सख़ावत न करे फिर भी उस की ता'रीफ़ करना। और मुहिब्बीन की अ़लामात भी तीन हैं (1)...रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ की जुस्त्जू में रहना (2)....उसी की ज़ात में मश्ग़ूल रहना और (3)....हमेशा उसी की पनाह तृलब करना।'' (حلية الاولياء، معروف الكرخی، الحديث١٢٧١٨، ج٨، ص٤١١)

मसाइब पर सब्र क़ुर्बे इलाही का ज़रीआ़ है :

एक शख़्स हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : ''या सय्यिदी ! मुझे बताइये कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह तक कैसे रसाई हासिल कर सकता हूं ?'' तो आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه उस का हाथ पकड़ कर एक अमीर के दरवाज़े पर ले गए। दरवाज़े पर एक ग़ुलाम खड़ा हुवा था जिस की एक टांग टूटी हुई थी। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه ने उस ग़ुलाम की तृरफ़ इशारा किया और उस शख़्स का हाथ पकड़ कर इरशाद फ़रमाया : ''इस की मिस्ल हो जाओ, ख़ुद ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तक रसाई हासिल कर लोगे।'' (या'नी जिस तृरह येह ग़ुलाम टूटी हुई टांग के बा वुजूद अपने आक़ा के दरवाज़े पर हाज़िर है इस तृरह तू भी हर हाल में अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहे और उस की इबादत करता रह)।

आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه का ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ :

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन अबी तालिब عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق फ़रमाते हैं कि मैं हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه की मस्जिद में दाख़िल हुवा । आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه घर में तशरीफ़ फ़रमा थे । फिर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه हमारे पास तशरीफ़ लाए । हम क़ाफ़िले की सूरत में थे । आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ने हमें सलाम किया हम ने भी जवाबन सलाम पेश किया । फिर हमें दुआ देते हुए फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप सब को इस्लामी ममलुकत में सलामती के साथ ज़िन्दा रखे और दुन्या में हम सब को एहसान की ने'मत से नवाज़े और आख़िरत में हमारी मग़फ़िरत फ़रमाए ।" फिर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ने अज़ान देनी शुरूअ़ की । जब आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه "اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" पर पहुंचे तो आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه पर शिद्दते इज़्तिराब से लर्ज़ा तारी हो गया और अब्रू और दाढ़ी के बाल खड़े हो गए और आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه इस क़दर बेचैन हुए कि मुझे ख़ौफ़ हुवा कि अज़ान मुकम्मल न कर सकेंगे फिर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه इस क़दर झुक गए कि क़रीब था कि गिर जाते । (حلية الاولياء، معروف الكرخى، الحديث ١٢٦٨٥، ج٨، ص٤٠٤)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद वर्राक़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं कि कभी कभार हम हज़रते सय्यिदुना अबू महफ़ूज़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَدُوْد की मजलिस में होते और आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه बैठ कर ग़ौरो फ़िक्र कर रहे होते, फिर अचानक आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه पर बेचैनी तारी हो जाती और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ गुज़ार होते : "وَاغَوْثَاهُ" ऐ मेरे मददगार ! (या'नी अपने ह़क़ीक़ी मददगार को पुकारते) ।" (المرجع السابق، الحديث ١٢٧٠٩، ص٤٠٩)

हज़रते सय्यिदुना क़ासिम बग़दादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : "मैं हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى का पड़ोसी था, एक रात मैं ने आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه को गिर्या व ज़ारी करते और दर्जे ज़ैल अश्आ़र पढ़ते सुना :

اَیُّ شَیْءٍ تُرِیْدُ مِنِّی الذُّنُوْب　　شَغَفَتْ بِیْ فَلَیْسَ عَنِّیْ تَغِیْب

مَا یَضُرُّ الذُّنُوْبُ لَوْ اَعْتَقْتَنِیْ　　رَحْمَةً لِّیْ فَقَدْ عَلَانِیَ الْمَشِیْب

तर्जमा : (1)...कौन सी चीज़ मुझ से गुनाह कराना चाहती है, मुझे गुनाहों में मश्ग़ूल रखती है और मुझ से दूर नहीं होती ।

(2)...अगर तू मुझे रह़्म फ़रमाते हुए बख़्श दे तो गुनाह मुझे कुछ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते अब तो मुझ पर बुढ़ापा आ चुका है । (صفة الصفوة، ذكر المصطفين من اهل بغداد، الرقم ٢٦٠ معروف بن الفيرزان الكرخى، ج٢، ص٢١٢)

एक नौजवान की हिकायत :

हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन हसन رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی को फ़रमाते सुना : "मैं ने एक बस्ती में ख़ूबसूरत और साफ़ सुथरे लिबास में मल्बूस एक नौजवान देखा, उस ने ज़ुल्फ़ें रखी हुई थीं, सर पर ऊनी चादर, जिस्म पर सूती कपड़े की क़मीस और पाउं में लकड़ी का जूता था । मुझे उस को इस जगह देख कर बड़ी हैरानगी हुई । फिर मैं ने उसे सलाम किया और उस ने भी सलाम का जवाब दिया । मैं ने पूछा :

"कहां से आ रहे हो ?" कहने लगा : "दिमश्क़ से आ रहा हूं।" मैं ने फिर पूछा : वहां से कब चले थे ?" जवाब दिया : 'दोपहर के वक़्त वहां से चला था।" मुझे उस पर बड़ा तअ़ज्जुब हुवा क्यूंकि दिमश्क़ और इस बस्ती के दरमियान बहुत ज़ियादा मसाफ़त और कई मन्ज़िलें थीं। बहर हाल मैं ने फिर पूछा : "कहां का इरादा है ?" तो उस ने जवाब दिया : "मक्कए मुकर्रमा زادھَااللّٰہ شَرَفًاوَّ تَعظِیماً وَّ تَکرِیماً जाने का इरादा है।" मैं समझ गया कि उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ास लुत्फ़ो करम है। ख़ैर, मैं ने उसे अलवदाअ़ कहा और वोह चला गया। तीन साल के बा'द एक दिन मैं अपने घर में बैठा सोच में डूबा हुवा था कि दरवाज़े पर दस्तक हुई। मैं ने दरवाज़ा खोला तो वोही शख़्स था। मैं ने सलाम करने के बा'द कहा : "खुश आमदीद ! और उसे अपने घर आने की इजाज़त दे दी। ऐसा लग रहा था जैसे वोह हसरत ज़दा, परेशान और ग़मगीन हो। मैं ने पूछा : "क्या हुवा ?" तो उस ने बताया : "ऐ उस्ताज़े मोहतरम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का मुझ पर ख़ास करम है यहां तक कि पहले उस ने मुझे मुसीबत में मुब्तला किया फिर इस से नजात दी। वोह मुझ पर कभी तो अपने लुत्फ़ो करम की बारिश बरसाता है और कभी ख़ौफ़ में मुब्तला कर देता है। कभी भूका रखता है और कभी मोअ़ज़्ज़ज़ बना देता है। काश ! एक मरतबा वोह मुझे अपने किसी ख़ास बन्दे के भेदों पर आगाह फ़रमा दे फिर मेरे साथ जो चाहे करे।" हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि उस के इस कलाम से मुझे रोना आ गया। मैं ने मज़ीद पूछा :" जब से तुम मुझ से जुदा हुए उस वक़्त से तुम्हारे साथ क्या क्या मुआ़मलात पेश आए ? उस ने कहा : मैं तो इन को ज़ाहिर करना चाहता हूं लेकिन वोह मख़्फ़ी रखना चाहता है।" फिर वोह रोने लगा। तो मैं ने उस से पूछा : "बताओ तो सही कि तुम्हारे साथ क्या हुवा ?" चुनान्चे, उस ने बताना शुरूअ़ किया : "आप से मुलाक़ात के बा'द मैं तीस (30) दिन तक भूका रहा। एक वादी में पहुंचा जहां ककड़ियां काश्त की हुई थीं। मैं पत्तों को तोड़ कर खाने बैठ गया। मालिक ने जब देखा तो मुझे पकड़ लिया और मेरी पुश्त और पेट पर मुक्के मारते हुए कहने लगा : "ऐ चोर ! तेरे इलावा मेरी ककड़ियां किसी ने नहीं तोड़ीं, मैं कब से तेरी ताक में था कि तू आए और मैं तुझे पकड़ लूं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अब तो मैं तुझे सख़्त सज़ा दूंगा।" वोह अभी मुझे मार ही रहा था कि एक घोड़े सुवार बड़ी तेज़ी से घोड़े को सरपट दौड़ाता हुवा आया, उस के सर पर कोड़ा बरसाया और कहने लगा : "तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के एक दोस्त को चोर कह रहे हो और इस को मारते और डांटते हो हालांकि इस ने तो पत्तों के इलावा कोई चीज़ नहीं खाई।" येह सुन कर वोह मालिक मेरे पास आया और मेरे हाथों और सर को चूमने लगा। फिर मुझ से मा'ज़ेरत की और अपने घर ले जा कर बहुत इज़्ज़त की और हुस्ने सुलूक से पेश आया। मेरे लिये अपनी ककड़ियां फ़ुक़रा व मसाकीन को सदक़ा कर दीं। फिर जब मैं ने बताया कि मैं हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ के दोस्तों में से हूं तो उस ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعالٰی عَلَیْہ के बारे में कुछ बयान करने को कहा। मैं ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعالٰی عَلَیْہ के कुछ औसाफ़ बयान किये तो उस ने पहचान लिया।" अभी उस नौजवान की गुफ़्तगू पूरी भी न हुई थी कि

ककड़ियों के मालिक ने दरवाज़े पर दस्तक दी और हमारे पास आ गया। वोह बहुत ख़ुश हाल था। और अपना सारा माल फ़ुक़रा पर सदक़ा कर के एक साल उस नौजवान की सोहबत में रहा। फिर वोह दोनों हज के लिये रवाना हुए, हज व उमरा किया और दोनों का वहीं इन्तिक़ाल हो गया और मक्कए मुकर्रमा के क़ब्रिस्तान "जन्नतुल मा'ला" में मदफ़ून हुए।"

(صِفَّة الصفوة،ذكر المصطفين من عباد اهل الشام المجهولى الاسماء، الرقم٨١٣، عابد آخر، ج٤، ص٢٤٠)

हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इस तरह दुआ किया करते थे : "اَللّٰهُمَّ يَا مَنْ وَفَّقَ اَهْلَ الْخَيْرِ لِلْخَيْرِ وَاَعَانَهُمْ عَلَيْهِ وَفِّقْنَا لِلْخَيْرِ وَاَعِنَّا عَلَيْهِ" या'नी ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ऐ वोह ज़ात जिस ने नेक बन्दों को उमूरे ख़ैर की तौफ़ीक़ दी और इस पर उन की मदद भी फ़रमाई ! हमें भी भलाई की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और इस पर हमारी मदद भी फ़रमा।"

दुआए मा'रूफ़ عليه رحمة الله الرءوف की बरकात :

एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "दुआ फ़रमाएं कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ मेरे दिल को नर्म कर दे।" तो आप رَحْمَةُ اللهِ تعَالٰى عَلَيْه ने उसे इस दुआ की तल्क़ीन फ़रमाई : "يَا مُلَيِّنَ الْقُلُوْبِ! لَيِّنْ قَلْبِىْ قَبْلَ اَنْ تُلَيِّنَهٗ عِنْدَ الْمَوْتِ" या'नी ऐ दिलों को नर्म फ़रमाने वाले ! मेरे दिल को भी नर्म कर दे इस से पहले कि तू मौत के वक़्त इसे नर्म करे।" (आमीन)

﴾1﴿.....हज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى फ़रमाते हैं कि मैं दिल की सख़्ती के मरज़ में मुब्तला था तो मुझे हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की दुआ की बरकत से छुटकारा मिल गया। हुवा यूं कि मैं नमाज़े ईद पढ़ने के बा'द वापस लौट रहा था कि हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ تعَالٰى عَلَيْه को देखा। आप رَحْمَةُ اللهِ تعَالٰى عَلَيْه के साथ एक बच्चा भी था जिस के बाल उलझे हुए थे। दिल टूटने के सबब रोए जा रहा था। मैं ने अ़र्ज़ की : "या सय्यिदी ! क्या हुवा ? आप के साथ येह बच्चा क्यूं रोए जा रहा है ?" तो आप رَحْمَةُ اللهِ تعَالٰى عَلَيْه ने जवाब दिया : "मैं ने चन्द बच्चों को खेलते हुए देखा लेकिन येह बच्चा एक त़रफ़ खड़ा हुवा था। उन बच्चों के साथ न खेलने की वजह से इस का दिल टूट गया है। मैं ने बच्चे से पूछा तो इस ने बताया : "मैं यतीम हूं, मेरा बाप इन्तिक़ाल कर गया है, मेरा कोई सहारा नहीं और मेरे पास कुछ रक़म भी नहीं कि मैं अख़रोट ख़रीद कर उन बच्चों के साथ खेल सकूं।" चुनान्चे, मैं उस को अपने साथ ले आया हूं ताकि उस के लिये घुटलियां इकठ्ठी करूं जिन से येह अख़रोट ख़रीद कर दूसरे बच्चों के साथ खेल सके।" मैं ने अ़र्ज़ की : "आप येह बच्चा मुझे दे दें ताकि मैं इस की हालत बदल सकूं।" आप رَحْمَةُ اللهِ تعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "चलो इस को पकड़ लो, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तुम्हारा दिल ईमान की बरकत से ग़नी करे और अपने रास्ते की ज़ाहिरी व बातिनी पहचान अ़ता फ़रमा दे।"

हज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "मैं उस बच्चे को ले कर बाज़ार चला गया और अच्छे कपड़े पहनाए, अख़रोट ख़रीद कर दिये और वोह ईद के दिन दूसरे बच्चों के साथ खेलने चला गया। दूसरे बच्चों ने पूछा : "तुझ पर येह एहसान किस ने किया ?" उस ने जवाब

दिया : "हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی और सरी सक़ती عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی ने।" जब बच्चे खेल कूद के बा'द चले गए तो वोह बच्चा ख़ुशी ख़ुशी मेरे पास आया। मैं ने उस से पूछा : "बताओ ! ईद का दिन कैसा गुज़रा ?" उस ने कहा : "ऐ मेरे मोहतरम ! आप ने मुझे अच्छा कपड़ा पहनाया, मुझे ख़ुश कर के बच्चों के साथ खेलने के लिये भेजा, मेरे टूटे हुए दिल को जोड़ा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को अपनी बारगाह में हाज़िरी की कमी पूरी करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और आप के लिये अपना रास्ता खोल दे।" हज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं कि मुझे बच्चे के इस कलाम से बेहद ख़ुशी हुई जिस ने ईद की ख़ुशिया दो बाला कर दीं। (تذکرۃ الاولیاء،ج۱،حصہ اول،حضرت سیِّدُنا معروف کرخی علیہ رحمۃ اللّٰہ الغنی،ص۲۴۲۔۲۴۳،ملخصاً)

ईसाई वालिदैन का क़बूले इस्लाम :

﴿2﴾.....हज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह कर्ख़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं कि मेरे पड़ोस में एक ईसाई रहा करता था। एक दिन मैं अपने घर में मौजूद था कि वोह मेरे पास आया और कहने लगा : "ऐ अबू आ़मिर ! पड़ोसी होने की हैषिय्यत से मेरा आप पर हक़ है, मैं आप को रात और दिन के ख़ालिक़ का वासित़ा दे कर कहता हूं कि "मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के किसी वली के पास ले चलिये ताकि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मेरे लिये बेटे की दुआ़ करे। मेरे दिल में अवलाद की बहुत ख़्वाहिश है और मेरा जिगर जलता रहता है।" चुनान्चे, मैं उस को साथ ले कर हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی की ख़िदमत में हाज़िर हुवा और आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَيۡه की बारगाह में उस ईसाई का मुआ़मला अ़र्ज़ किया। आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَيۡه ने उसे इस्लाम की दा'वत दी तो कहने लगा : "ऐ मा'रूफ़ ! जब तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे हिदायत न दे आप नहीं दे सकते, मैं आप के पास सिर्फ़ दुआ़ के लिये हाज़िर हुवा हूं।"

आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَيۡه ने अपने हाथों को बुलन्द कर के दुआ़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी बारगाह में अ़र्ज़ करता हूं कि इसे ऐसा लड़का अ़ता फ़रमा जो वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक करे और वोह इस के हाथ पर मुसलमान हो जाएं।" चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप की दुआ़ क़बूल फ़रमाई और उस को एक ऐसा लड़का अ़ता फ़रमाया जो अपनी अ़क़्ले कामिल के सबब तमाम अहले ज़माना पर फ़ौक़िय्यत ले गया, वोह अपनी शराफ़त की बुलन्दी के बाइ़ष अपने जैसे तमाम लड़कों पर बुलन्द मक़ाम रखता था। जब वोह कुछ बड़ा हुवा तो बाप उसे ईसाइय्यत की ता'लीम दिलाने के लिये एक पादरी के पास छोड़ आया। पादरी ने उसे सामने बिठाया और हाथ में तख़्ती पकड़ा कर अभी "बोलो" ही कहा था तो वोह बच्चा कहने लगा : "क्या बोलूं ? मेरी ज़बान तुम्हारे तीन ख़ुदा मानने के अ़क़ीदे से रोक दी गई है और मेरा दिल मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ की महब्बत में मश्ग़ूल है।" पादरी कहने लगा : ऐ बेटे मैं ने तुझे येह तो नहीं कहा था। तो बच्चे ने कहा : "फिर तुम ने मुझे क्या कहा था ?" पादरी ने कहा : "तुम मेरे पास जिस ता'लीम के लिये आए हो मैं तो तुम्हें वोह सिखा रहा हूं जब कि तुम ने मुझे पढ़ाना शुरूअ़ कर दिया।" येह सुन कर बच्चा कहने लगा : "फिर मुझे कोई ऐसी बात बतलाइये, जिसे मेरी अ़क़्ल भी क़बूल करे और मेरा ज़ेहन भी तस्लीम करे।"

उस्ताद ने कहा : "ठीक है, तो फिर कहो ! الف ।" बच्चे ने कहा : "الف तो वस्ली या'नी मिलाने वाला है, जिस ने हर दिल को उस महबूबे हक़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ का गिरवीदा कर दिया जिस की सिफ़ात अज़ली हैं।" उस्ताद ने कहा : "ऐ बेटे ! कहो ! باء ।" बच्चे ने कहा : "باء से मुराद हक़ीक़ी बक़ा है, जिस ने दिलों को ज़िन्दा किया और इन में महब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ के सिवा कुछ न छोड़ा।" उस्ताद ने कहा : "ऐ बेटे ! कहो تاء ।" तो बच्चे ने कहा : "تاء से मुराद दिल का जज़्बा व शौक़ है जो ज़ाते बारी तआ़ला के मुतअ़ल्लिक़ दिल में खटकने वाले तमाम शुकूक व शुब्हात को दूर करता है।" पादरी ने कहा : "ऐ बेटे ! कहो ثاء ।" तो बच्चे ने कहा : "ثاء से मुराद उस नूरानी लिबास के लिये पर्दा है जो मक़ामे क़ुर्ब पाने वालों को षाबित रखे हुए है। उस्ताद ने कहा : "ऐ बेटे कहो جيم" तो बच्चे ने कहा : "جيم तो नूरे जमाले इलाही عَزَّوَجَلَّ का नाम है, जो इन्सानों पर सुब्हो शाम अपने अन्वार व तजल्लियात डालता है।" उस्ताद ने कहा : "ऐ बेटे पढ़ो ! حاء" तो बच्चे ने कहा : "حاء से मुराद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द है, जिस ने दिलों की हिफ़ाज़त की और बुरी ख़स्लतों से पाक व साफ़ कर दिया।" उस्ताद ने कहा : "ऐ बेटे ! कहो ! خاء" तो बच्चे ने कहा : "خاء से मुराद ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ है, जिस ने बरगुज़ीदा बन्दों की तमाम तकालीफ़ और दुख दर्द दूर कर दिये।"

यहां तक कि पादरी बच्चे को एक एक ह़र्फ़ पढ़ने के लिये कहता रहा और बच्चा उस ह़र्फ़ के मुतअ़ल्लिक़ हम वज़्न व मन्ज़ूम कलाम से जवाब देता रहा। पादरी की अ़क़्ल दंग रह गई और ऐसी गुफ़्तगू सुन कर उस का दिल ज़िन्दा हो गया और उस ने जान लिया कि दीने इस्लाम ही सच्चा दीन है। फिर कहने लगा : ऐ वह़दानिय्यते इलाही عَزَّوَجَلَّ को मानने वाले प्यारे बच्चे ! मैं तुझे शाबाश देता हूं।" इस के बा'द बच्चे ने चन्द अश्आ़र पढ़े, जिन का मफ़्हूम कुछ यूं है :

"क्या वोही बर ह़क़ नहीं जो रुलाता व हंसाता, ज़िन्दगी व मौत देता और मख़्लूक़ के लिये खेती उगाता है ? यक़ीनन वोही मा'बूदे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ है लिहाज़ा जो उस का दरवाज़ा छोड़ कर किसी और के दरवाज़े पर जाता है वोह नुक़्सान उठाता है और जो उसे छोड़ कर किसी दूसरे की इबादत करता है गुमराह हो जाता है। ऐ ख़ाइब व ख़ासिर कोशिश करने वाले ! जब बन्दे का मक़्सूदे ह़क़ीक़ी वोही ज़ात है तो अब कौन इस मक़्सद के ग़ैर की त़रफ़ कामयाब कोशिश कर सकता है ? पस वोही बरतर, ग़ालिब और रह़ीम है कि उस की त़ाक़त के बिग़ैर कोई किसी को नफ़्अ़ व नुक़्सान नहीं पहुंचा सकता। वोह अपने बन्दे को गुनाह करते हुए देखता है फिर भी उस की पर्दा पोशी फ़रमाता है और उस को बिन मांगे अ़त़ा करता है। आ़सियों और गुनहगारों से बख़्शिश का मुआ़मला करता है और हिजरो फ़िराक़ के मारों को विसाल की दौलत से नवाज़ता है। पाक है वोह ज़ात जिस के इ़लावा ह़क़ीक़ी परवर दगार कोई नहीं, वोह अपने उस बन्दे को पसन्द करता है जो उस का हुक्म तवज्जोह से सुनता है।"

रावी कहते हैं कि जब पादरी ने बच्चे का ऐसा कलाम सुना जिस ने उस के होश उड़ा दिये और उसे रंजो ग़म में मुब्तला कर दिया तो उस ने जान लिया और उसे यक़ीन हो गया कि इस बच्चे को क़ुव्वते गोयाई अ़त़ा करने वाला वोही है जिस ने मुझे पैदा किया है। चुनान्चे, उस ने दिल ही दिल में कलिमए शहादत "اَشْهَدُ اَنْ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ" पढ़ा। फिर बच्चे को उस के बाप

के पास ले आया। जब बाप ने उन दोनों को आते देखा तो उस का चेहरा खुशी से दमक उठा। उस ने पादरी से पूछा : "आप ने मेरे बच्चे की ज़हानत को कैसा पाया ?" तो वोह कहने लगा : "ज़रा इस का आरिफ़ाना कलाम तो सुनें।" फिर उस ने सारी गुफ़्तगू बच्चे के बाप को सुना दी। येह सुन कर बाप बोला : "उस खुदा की क़सम जो हर लाचारो बे बस की मदद फ़रमाता है ! मेरा बेटा महूज़ हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की दुआ की बरकत से इस मक़ाम व मर्तबे तक पहुंचा है।" फिर कहने लगा : "ऐ मेरे बेटे ! सब ख़ूबियां खुदाए वाहिद عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने तेरे सबब हम सब को गुमराही से नजात अता फ़रमाई। मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उस के सच्चे रसूल हैं।" इस के बा'द बच्चे की मां और तमाम घर वाले इस्लाम ले आए और अपने गले से (ईसाइयों के निशान) सलीब को उतार फेंका। (سُبْحٰنَ اللّٰه) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی की दुआ की बदौलत उन सब को जहन्नम से छुटकारा दे दिया।

मज़ाराते औलिया رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की बरकात :

हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन अब्बास رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं बग़दाद से हज के इरादे से निकला तो एक ऐसे शख़्स से मुलाक़ात हुई जिस पर इबादत के आषार नुमायां थे। उस ने पूछा : "आप कहां से आ रहे हैं ?" मैं ने जवाब दिया : "बग़दाद से भाग कर आ रहा हूं क्यूंकि मैं ने वहां फ़साद देखा है, मुझे ख़ौफ़ है कि अहले बग़दाद को चांद गहन न लग जाए।" उस बुज़ुर्ग ने फ़रमाया : "आप वापस चले जाए और डरिये मत, क्यूंकि बग़दाद में चार ऐसे औलियाए किराम رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की क़ब्रें हैं जिन की बरकत से अहले बग़दाद तमाम बलाओं और मसाइब से महफ़ूज़ हैं।" मै ने पूछा : "वोह कौन हैं ?" जवाब दिया : "वोह हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल, हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी, हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी और हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अम्मार رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن हैं।" चुनान्चे, मैं वापस आ गया और इन मरदाने हक़ की क़ब्रों की ज़ियारत की तो मुझे बहुत कैफ़ो सुरूर हासिल हुवा।

(تاریخ بغداد، باب ما ذکر فی مقابر بغداد المخصوصة بالعلماء والزهاد، ج۱، ص۱۳۳)

जिस का अमल हो बे ग़रज़ उस की जज़ा कुछ और है :

हज़रते सय्यिदुना अबुल फ़तह बिन बिशर رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं ने आलमे ख़्वाब में हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی को एक बाग़ीचे में देखा। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के सामने एक दस्तरख़्वान बिछा हुवा था। मैं ने पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ ؟" या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जवाब देते हुए फ़रमाया : "उस ने रहम फ़रमाते हुए मुझे बख़्श दिया और तख़्त पर बिठा कर फ़रमाया : इस दस्तरख़्वान पर मौजूद फलों में से जो चाहो खाओ और लुत्फ़ उठाओ क्यूंकि तुम दुन्या में अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात से

रोकते थे।'' मैं ने पूछा : ''आप के भाई हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه कहां हैं ?'' फ़रमाया : ''वोह जन्नत के दरवाज़े पर खड़े अहले सुन्नत के उन अफ़राद की शफ़ाअ़त कर रहे हैं जिन का अ़क़ीदा था कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कलाम कुरआने करीम ग़ैर मख़्लूक़ है।'' मैं ने फिर पूछा : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْغَنِی के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?'' तो आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه ने जवाबन फ़रमाया : ''अफ़्सोस ! मुझे मा'लूम नहीं क्यूंकि हमारे और उन के दरमियान पर्दे हाइल हैं, उन्हों ने जन्नत के शौक़ या जहन्नम के डर से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत न की थी बल्कि उन की इबादत तो महज़ दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये थी। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें आ'ला तरीन मक़ाम अ़ता फ़रमाया और अपने और उन के दरमियान सब पर्दे उठा दिये। अब जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में कोई हाजत पेश करनी हो तो उसे चाहिये कि हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْغَنِی के मज़ारे पुर अन्वार पर हाज़िर हो कर दुआ़ करे, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस की दुआ़ क़बूल की जाएगी।''

(صفة الصفوة، ذكر المصطفين من اهل بغداد، الرقم ٢٦٠، ج٢، ص٢١٤)

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहमान ज़ोहरी رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه का बयान है कि मैं ने अपने बाप हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه को येह फ़रमाते सुना कि ''हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْغَنِی की क़ब्रे अन्वर पर तमाम हाजात पूरी होती हैं।''

हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन सुलैमान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं कि मुझे एक हाजत थी और मैं काफ़ी तंगदस्त था। हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْغَنِی की क़ब्रे अन्वर पर मेरी हाज़िरी हुई, मैं ने तीन बार सूरए इख़्लास की तिलावत की और इस का षवाब आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه को और तमाम मुसलमानों की अरवाह़ को पहुंचाया, फिर अपनी हाजत बयान की। जूं ही मैं वहां से वापस गया मेरी हाजत पूरी हो चुकी थी।

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र ख़य्यात् علیه رَحْمَةُ اللّٰہِ الْجَوَاد फ़रमाते हैं कि मैं ने आ़लमे ख़्वाब में खुद को क़ब्रिस्तान में देखा। क़ब्र वाले अपनी क़ब्रों पर बैठे हुए हैं और उन के सामने फूलों के पौदे हैं। अचानक हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْغَنِی को उन के दरमियान खड़ा पाया कि कभी इधर जाते हैं और कभी उधर। मैं ने पूछा : ''ऐ अबू महफ़ूज़ ! ''مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ؟'' या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?'' और क्या आप इस दुन्या से कूच नहीं कर चुके ?'' तो आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه ने जवाबन फ़रमाया : ''क्यूं नहीं, फिर चन्द अश्आ़र पढ़े, जिन का मफ़्हूम कुछ यूं है :

''मुत्तक़ी इन्सान की मौत दर ह़क़ीक़त ह़याते जाविदानी है या'नी ऐसी ज़िन्दगी है जो ख़त्म होने वाली नहीं। कई लोग इस जहाने फ़ानी से कूच कर चुके हैं लेकिन उन का नाम अभी तक लोगों में (अच्छाई के साथ) ज़िन्दा है। फ़ख़्र करना सिर्फ़ अहले इल्म को रवा है क्यूंकि वोह हिदायत पर होते हैं और जो भी उन से हिदायत ह़ासिल करना चाहे, यक़ीनन हिदायत पा जाता है। वोह खुद तो इस जहाने फ़ानी से कूच कर गए लेकिन उन के चाहने वाले उन के विसाल के बा'द भी उन का नाम ज़िन्दा रखे हुए हैं और हम भी उन्ही मरने वालों की सफ़ में हैं जो ज़िन्दा हैं।''

आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का विसाले बा कमाल :

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र अजुरी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का बयान है कि हज़रते सय्यिदुना षा'लिब رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی की वफ़ात 200 हि. में हुई ।" हज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम नज़री عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی जिन का तअ़ल्लुक़ क़बीला बनू नज़िर बिन मुईन से है, फ़रमाते हैं कि "मुझे येह ख़बर मिली है कि हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی की नमाज़े जनाज़ा में तीन लाख अफ़राद ने शिर्कत की ।"

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन मुहम्मद वर्राक़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं कि एक शामी शख़्स हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی की ख़िदमते बा बरकत में हाज़िर हुवा, सलाम अ़र्ज़ करने के बा'द कहने लगा : "मुझे ख़्वाब में हुक्म हुवा है कि हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی की ख़िदमत में हाज़िर हो कर सलाम अ़र्ज़ करूं क्यूंकि **वोह ज़मीनो आस्मान वालों में मशहूरो मा'रूफ़ हैं ।"**

एक बुज़ुर्ग से मन्क़ूल है कि मैं ने अपने भाई को मरने के एक साल बा'द ख़्वाब में देख कर पूछा : "ऐ मेरे भाई ! "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ ؟" या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" तो उस ने जवाब दिया : "अब मुझे आज़ाद कर दिया गया है क्यूंकि जब हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی हमारे पास मदफ़ून हुए तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के दाएं, बाएं, आगे, पीछे से अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार तीस तीस हज़ार गुनहगारों को नजात दे दी गई ।"

{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो..और..उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो । آمین بجاہ النبی الامین ﷺ}

وَصَلَّی اللّٰهُ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ اَجْمَعِیْن

*****

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दावते इस्लामी के) ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा ।

बयान 35 : नेक लोगों की निराली शानें

हम्दे बारी तआला :

सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने अपने हुस्ने इन्तिख़ाब से नेकूकार औलिया में ख़वास को ख़ास फ़रमाया : उस ने हुसूले मक़ासिद वाली रात में इन में से अफ़्ज़ल व आ'ला हस्तियों को आ़लमे असरार की सैर कराई। और वोह उस के हुक़ूक़ की अदाएगी के लिये कमर बस्ता हो गए तो उस ने इन्हें अपने आज़ाद और ग़ुलाम सब बन्दों पर अमीन बना दिया। इन के हाथों मांगने वालों को मुरादें मिलती और इन की बरकतों से ख़ता कारों की ख़ताएं और गुनाह मुआ़फ़ होते हैं। येह शहरियों और देहातियों को नफ़्अ़ पहुंचाने के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से दुन्या में तसर्रुफ़ करते हैं। इन में कुछ नक़बा हैं तो कुछ अब्दाल, बा'ज़ नजबा हैं तो बा'ज़ रिजाल, बा'ज़ अक़्त़ाब हैं और कोई ग़ौष कि उस के वसीले से बारिशें बरसती, इस की बरकत से (चोपायों के) थन दूध से भरते और फल और खेतियां सर सब्ज़ व शादाब होती हैं। ❁....नक़बा 70 हैं और येह मिस्र में हैं, किसी दूसरे शहर में नहीं होते। ❁....अब्दाल 40 हैं और येह शाम में हैं और मा'रिफ़त व बसीरत रखने वालों को नज़र आते हैं। ❁...नजबा 300 हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें मग़रिब में (शयात़ीन व कुफ़्फ़ार से) जंग के लिये मुक़र्रर फ़रमाया। येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीन के मुह़ाफ़िज़ व मददगार हैं। ❁....रिजालुल ग़ैब 10 हैं और येह इराक़ में हैं। और इन का जामे मह़ब्बत हर त़रह़ की आमेज़िश से पाक व साफ़ और शफ़्फ़ाफ़ है। ❁...अक़्त़ाब 7 हैं। जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने शहरों और अत़राफ़े आ़लम में बसने वालों के नफ़्अ़ के लिये सात मुल्कों में पैदा फ़रमाया। ❁...और ग़ौष (हर ज़माने में) सिर्फ़ एक होता है। जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत वाले शहर मक्कतुल मुकर्रमा (زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا) पर मामूर फ़रमाता है।[1]

---

❶.....मुजद्दिदे आ'ज़म, इमामे अहले सुन्नत, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن इरशाद फ़रमाते हैं : "ग़ौष बिल यक़ीन इस (या'नी वली मुसम्मा बिल ख़िज़्र) से अफ़्ज़ल होता है कि वोह अपने दौर में सुल्त़ाने कुल औलिया है। यूंही इमामैन, यूंही अफ़्राद, यूंही अवताद, यूंही बुदला, यूंही अब्दाल कि येह सब यके बा'द दीगरे बाक़ी औलियाए दौरा (या'नी ज़माना) से अफ़्ज़ल होते हैं। इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي किताब "اليواقيت والجواهر فی بيان عقائد الاكابر" में फ़रमाते हैं :"

إِنَّ اَكۡبَرَ الۡاَوۡلِيَاءِ بَعۡدَ الصَّحَابَةِ رضی اللّٰه تعالٰی عنهم اَلۡقُطۡبُ ثُمَّ الۡاَفۡرَادُ عَلٰى خِلَافٍ فِىۡ ذَالِكَ ثُمَّ الۡاِمَامَانِ ثُمَّ الۡاَوۡتَادُ ثُمَّ الۡاَبۡدَالُ اهـ اَقُوۡلُ: وَالۡمُرَادُ بِالۡاَبۡدَالِ اَلۡبُدَلَاءُ السَّبۡعَةُ لِمَا ذُكِرَ بَعۡدَهٗ اَنَّ الۡاَبۡدَالَ السَّبۡعَةَ لَايَزِيۡدُوۡنَ وَلَا يَنۡقُصُوۡنَ وَهٰؤُلَاءِ هُمُ الۡبُدَلَاءُ اَمَّا الۡاَبۡدَالُ فَاَرۡبَعُوۡنَ بَلۡ سَبۡعُوۡنَ كَمَا فِى الۡاَحَادِيۡثِ. (الفتاوی الرضوية، ج ٣٠، ص٨٧)

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُم के बा'द सब से बड़ा वली क़ुत़ुब होता है, फिर अफ़्राद, इस में इख़्तिलाफ़ है, फिर अमामान, फिर अवताद, फिर अब्दाल, मैं कहता हूं : अब्दाल से मुराद सात बुदला हैं, इस दलील की वजह से जो इस के बा'द मज़कूर है कि बेशक अब्दाल सात हैं, न ज़ियादा होते हैं न कम, और येही बुदला हैं। रहे अब्दाल तो वोह चालीस बल्कि सत्तर हैं जैसा कि अह़ादीष में है। (ت).......(बक़िया अगले सफ़हा पर)

पस येह बरगुज़ीदा बन्दे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़फ़ूज़ राज़ और पोशीदा इ़ल्म के ख़ज़ानों पर अमीन हैं ह़त्ता कि उ़म्रें ख़त्म हो जाएं। अगर इन हस्तियों का वुजूद न हो तो चश्मे और नहरें ख़ुश्क हो जाएं। अगर इन के रुकूअ़ व सुजूद न हों तो बारिशें बन्द हो जाएं, ज़मीन खेती उगाना और दरख़्त फल देना छोड़ दें। येह इरादए इलाही عَزَّوَجَلَّ के दाइरे में रहते हैं। इन्हें बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में ह़ाज़िर होने से न तो ग़फ़्लत रोकती है, न ही उस से दूरी में क़रार आता है। जब बादशाहों के दरवाज़े बन्द हो जाते हैं तो इन के लिये पर्दों को उठा दिया जाता है। जब सलात़ीन के पर्दे आवेज़ां (آ-وِيـ-زاں) हो जाते हैं तो इन के लिये अल्लाह वाह़िदो क़ह्हार عَزَّوَجَلَّ तजल्ली फ़रमाता है। पस अगर वोह तजल्ली इन में से किसी से पलक झपकने की देर छुप जाए तो पहाड़ टूट कर ज़मीन बोस हो जाएं और दुन्या में ज़लज़ला आ जाए।

(**बक़िया ह़ाशिया**) ..... और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम, मुह़क़्क़िक़, अ़ल्लामा मुह़म्मद यूसुफ़ नब्हानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی अपनी किताब جامع کراماتِ اولیاء में इन मुबारक हस्तियों की अक़्साम की वज़ाह़त यूं करते हैं : "**अक़्त़ाब** : येह ह़ज़रात अस्लतन या नियाबतन सब अह़वाल व मक़ामात के जामेए़ होते हैं....मशाइख़ की इस्तिलाह़ में जब येह लफ़्ज़ बिग़ैर इज़ाफ़त इस्ति'माल हो तो ऐसे अ़ज़ीम इन्सान पर इस का इतलाक़ होता है जो ज़माना भर में सिर्फ़ एक ही होता है, इसी को ग़ौष भी कहते हैं। येह मुक़र्रबीने ख़ुदा से होते हैं और अपने ज़माने में गुरौहे औलिया के आक़ा होते हैं....**अवताद** : येह सिर्फ़ चार ह़ज़रात होते हैं। किसी दौर में इन में कमी बेशी नहीं होती ......इन चार में से एक के ज़रीए़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मशरिक़ की ह़िफ़ाज़त फ़रमाता है और एक की विलायत मशरिक़ में होती है, दूसरा मग़रिब में, तीसरा जुनूब और चौथा शिमाल में विलायत का मर्कज़ होता है। इन के मुआ़मलात की तक़्सीम का'बए (मुअ़ज़्ज़मा) से शुरूअ़ होती है....इन चारों के अलक़ाब और सिफ़ाती नाम येह हैं : अ़ब्दुल ह़य, अ़ब्दुल अ़लीम, अ़ब्दुल क़ादिर और अ़ब्दुल मरीद....**अब्दाल** : येह सात से कमोबेश नहीं होते अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन के ज़रीए़ अक़ालीमे सब्अ़ा की ह़िफ़ाज़त फ़रमाता है। हर बदल की एक अक़्लीम होती है जहां उस की विलायत का सिक्का चलता है।.......**नक़बा** : हर दौर में सिर्फ़ बारह नक़ीब होते हैं। आस्मान के बारह ही बुर्ज हैं और एक नक़ीब एक एक बुरुज की ख़ासिय्यतों का आ़लिम होता है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन नक़बाए किराम के हाथों में शरीअ़तों के नाज़िल किये हुए उ़लूम दे दिये हैं। नुफ़ूस में छुपी अश्या और आफ़ाते नुफ़ूस का इन्हें इ़ल्म होता है। नुफ़ूस के मकर व ख़ुदाअ़ के इस्तिख़राज पर येह क़ादिर होते हैं। इब्लीस उन के सामने यूं मुन्कशिफ़ होता है कि उस की मख़्फ़ी क़ुव्वतों को भी येह जानते हैं जिन्हें वोह ख़ुद नहीं जानता। उन के इ़ल्म की येह कैफ़िय्यत होती है कि अगर किसी का नक़्से पा ज़मीन पर लगा देख लें तो उन्हें उस के शक़ी व सई़द होने का पता चल जाता है .....**नजबा** : हर दौर में आठ से कमो बेश नहीं होते। इन ह़ज़रात के अह़वाल से ही क़बूलिय्यत की अ़लामात ज़ाहिर होती हैं ह़ालांकि इन अ़लामात पर ज़रूरी नहीं कि इन्हें इख़्तियार भी हो। बस ह़ाल का इन पर ग़लबा होता है, इस ह़ाल के ग़लबे को सिर्फ़ वोह ह़ज़रात पहचान सकते हैं जो रुत्बे में इन से ऊपर होते हैं। इन से कम मर्तबा लोग नहीं पहचान सकते .....**रिजालुल ग़ैब** : येह दस ह़ज़रात होते हैं। कमो बेश नहीं होते। हमेशा इन के अह़वाल पर अन्वारे इलाही का नुज़ूल रहता है लिहाज़ा येह अहले ख़ुशूअ़ होते हैं। और सरगोशी में बात करते हैं.....येह मस्तूर (या'नी नज़रों से ओझल) रहते हैं। ज़मीनो आस्मान में छुपे रहते हैं, इन की मुनाजात सिर्फ़ ह़क़ तआ़ला से होती हैं और इन के शहूद का मर्कज़ भी वोही ज़ाते बे मिषाल होती है....वोह मुसम्मए ह़या होते हैं, अगर किसी को बुलन्द आवाज़ से बोलता सुनते हैं तो ह़ैरान रह जाते हैं और इन के पठ्ठे कांपने लगते हैं और अहलुल्लाह जब भी लफ़्ज़ रिजालुल ग़ैब इस्ति'माल फरमाते हैं तो इन का मत़लब येही ह़ज़रात होते हैं। कभी इस लफ़्ज़ से वोह इन्सान भी मुराद लिये जाते हैं जो निगाहों से ओझल हो जाते हैं। कभी रिजालुल ग़ैब से नेक और मोमिन जिन्न भी मुराद लिये जाते हैं। कभी उन लोगों को भी रिजालुल ग़ैब कह दिया जाता है जो इ़ल्म और रिज़्क़े मह़सूस, ह़िस्सी दुन्या से नहीं लेते बल्कि ग़ैब की दुन्या से इ़ल्म व रिज़्क़ उन्हें मिलता है।" (جامع کرامات اولیاء (مترجم) ج۱، ص ۲۳۰تا۲۳۹ ملخصاً)

पाक है वोह ज़ात जिस ने बा'ज़ बन्दों को अपनी बारगाह के क़रीब फ़रमाया और उन्हें अपने मासिवा से छुपा लिया। और कुछ बन्दों को दूर किया और दूरी व फ़ासिले की तल्वार उन पर चला दी। उस ने सय्यिद (या'नी हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى) के लिये दामे महब्बत को नस्ब कर लिया। और तनाबे महब्बत से हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى को वाबस्ता कर दिया तो वोह क़ाबिले इज़्ज़त व बाइषे फ़ख़्र मक़ाम पर फ़ाइज़ हो गए। उस ने तेज़ निगाहे तौफ़ीक़ को हज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى की तरफ़ भेजा तो उन्हों ने शिकस्तगी और फ़क़्र की रस्सी से इसे अपनी तरफ़ खींच लिया। उस ने हज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيد पर दूसरों से बढ़ कर करम फ़रमाया तो उन्हों ने दुन्या से कनारा कशी को लाज़िम कर लिया और मज़ीद फ़ज़्लो करम के तलबगार हुए। उस ने हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى पर भलाई की सख़ावत फ़रमाई तो इन का दिल मा'रिफ़त, व बसीरत से आबाद हो गया। उस ने हज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه पर फ़ज़्ले ख़ास फ़रमाया तो वोह इन्तिहाई दर्जे की इबादत के लिये मुस्तइद (مُسْتَعِد या'नी आमादा व तय्यार) हो गए और क़ुर्बे इलाही عَزَّ وَجَلَّ के हुसूल के लिये शब बेदारियां शुरूअ़ कर दीं। और उस ने हज़रते सय्यिदुना मन्सूर हल्लाज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَهَّاب को मिज़ाज की तब्दीली का जाम पिलाया तो वोह इश्क़े हक़ीक़ी के नशे में मस्त हो गए, जोश बढ़ गया, असरारे इलाही عَزَّ وَجَلَّ को ज़ाहिर कर दिया ज़बाने वज्द से ऐसी बात ज़ाहिर हुई कि ज़ाहिरी हुदूद से बाहर हो गए और सब्र का पैमाना लबरेज़ हो गया।

इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿ اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَاخَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ ﴾ (پ ۱۱، یونس: ۶۲)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : सुन लो ! बेशक **अल्लाह** के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म।*

इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में मुफ़स्सिरे क़ुरआन, हिब्रुल उम्माह हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "औलियाए किराम رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن पर दुन्या में कोई ख़ौफ़ नहीं, न ही वोह आख़िरत में ग़मगीन होंगे बल्कि रब्ब तआ़ला ख़ुशी व इज़्ज़त के साथ उन का इस्तिक़बाल फ़रमाएगा और उन्हें हमेशा रहने वाली ने'मतें अ़ता करेगा।"

शाने औलिया ब ज़बाने इमामुल अम्बिया صَلَّى اللهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم :

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की गई : "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ऐसे औलिया कौन हैं जिन्हें न कुछ ख़ौफ़ है, न ग़म ?" तो आप صَلَّى اللهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के औलिया वोह हैं कि जब लोग दुन्या का ज़ाहिर देखते हैं तो वोह उस का बातिन देखते हैं और जब लोग दुन्या की जल्द आने वाली शै का एहतिमाम करते हैं तो वोह उस की देर से आने वाली शै का एहतिमाम करते हैं। वोह दुन्या की हर उस चीज़ को

ख़त्म कर देते हैं जिस के मुतअ़ल्लिक़ उन्हें ख़ौफ़ हो कि वोह उन्हें ख़त्म कर देगी और दुन्या की हर उस चीज़ को छोड़ देते हैं जिस के मुतअ़ल्लिक़ मा'लूम हो कि अ़न क़रीब वोह उन्हें छोड़ देगी। दुन्या के अ़तिय्यात में से कोई चीज़ उन के आड़े आए तो वोह उस को छोड़ देते हैं और उस की रिफ़्अ़तों में से कोई चीज़ उन्हें धोका दे तो वोह उसे तर्क कर देते हैं। दुन्या उन के नज़्दीक पुरानी हो चुकी है, वोह दोबारा इसे नया नहीं करते। येह उन के सामने वीरान हो चुकी है, वोह उसे आबाद नहीं करते। येह उन के सीनों में मर चुकी है, वोह उसे ज़िन्दा नहीं करते बल्कि सिरे से गिरा देते हैं। दुन्या से अपनी आख़िरत की बुन्याद रखते हैं और उसे बेच कर बाक़ी रहने वाली चीज़ ख़रीदते हैं। उन की नज़र में दुन्यादार वोह नीम मुर्दा लोग हैं जिन के लिये इ़ब्रतनाक सज़ा लिख दी गई है। लिहाज़ा दुन्यादार जिस चीज़ की उम्मीद रखते हैं वोह उसे अमान नहीं समझते और जिस चीज़ से अहले दुन्या डरते हैं वोह उस से ख़ौफ़ज़दा नहीं होते।"

(الفتوحات المكية لمحى الحق والدين المعروف بابن عربى، الباب الموفى ستين......الخ، ج٨، ص ٤٦١)

सय्यिदुना अबू यज़ीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِيْد का ज़ौक़े इ़बादत :

हज़रते सय्यिदुना इब्ने ज़फ़र عليہ رحمۃ الرَّب बयान फ़रमाते हैं कि "हज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद बिस्तामी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورَانِى को बचपन में जब मद्रसा दाख़िल किया गया और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه क़ुरआने करीम की ता'लीम ह़ासिल करते हुए इस आयते मुबारका पर पहुंचे : يٰۤاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ۙ قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ۙ (پ٢٩، المزمل ١-٢) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ झुरमट मारने वाले ! रात में क़ियाम फ़रमा सिवा कुछ रात के।" तो अपने वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना तै़फ़ूर बिन ईसा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : "यहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किस से मुख़ात़िब है ?" तो उन्हों ने जवाब देते हुए फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! येह हमारे आक़ा व मौला ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मदे मुजतबा, मह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हैं।" पूछा : ऐ मेरे अब्बा जान ! फिर आप भी हुज़ूर नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत पर अ़मल क्यूं नहीं करते। "तो उन्हों ने जवाब दिया : "प्यारे बेटे ! येह हुक्म ख़ास हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाया गया फिर सूरए त़ाहा में इस में तख़्फ़ीफ़ कर दी गई।"

जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का सबक़ इस आयते मुबारका पर पहुंचा :

اِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ اَنَّكَ تَقُوْمُ اَدْنٰى مِنْ ثُلُثَيِ الَّيْلِ وَنِصْفَهٗ وَثُلُثَهٗ وَطَآئِفَةٌ مِّنَ الَّذِيْنَ مَعَكَ ط (پ٢٩،المزمل: ٢٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हारा रब्ब जानता है कि तुम क़ियाम करते हो कभी दो तिहाई रात के क़रीब कभी आधी रात कभी तिहाई और एक जमाअ़त तुम्हारे साथ वाली। तो फिर पूछने लगे : "ऐ मेरे वालिदे मोह़तरम ! मैं सुन रहा हूं कि इस में एक ऐसे गुरौह का ज़िक्रे ख़ैर भी है जो रातों को क़ियाम करता है।" तो वालिदे मोह़तरम ने बताया : "जी हां ! वोह हमारे प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن हैं।" तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه

ने अ़र्ज़ की : "उस चीज़ को तर्क करने में कोई भलाई नहीं जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सहाबए किराम رِضۡوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡهِمۡ اَجۡمَعِيۡن किया करते थे चुनान्चे, इस के बा'द आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه के वालिदे मोह़तरम सारी सारी रात क़ियाम करने लगे। एक रात आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه बेदार हुए और अपने वालिदे मोह़तरम से अ़र्ज़ की : "मुझे भी सिखलाइये, मैं भी आप के साथ नमाज़ अदा करूंगा।" वालिद साह़िब फ़रमाने लगे : "बेटे ! अभी तुम छोटे हो।" अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे अब्बा जान ! जिस दिन लोग अलग अलग अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के हु़ज़ूर ह़ाज़िर होंगे ताकि अपने आ'माल देखें, और अगर मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से पूछ लिया, "ऐ अबू यज़ीद ! तुम ने क्या किया ?" तो मैं जवाब दूंगा : मैं ने अपने वालिदे मोह़तरम से अ़र्ज़ की थी कि मुझे सिखलाइये ताकि मैं भी आप के साथ नमाज़ पढ़ा करूं तो इन्हों ने मुझे कहा था अभी तुम छोटे हो। येह सुन कर फ़ौरन आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه के वालिदे मोह़तरम कहने लगे : "नहीं, खु़दा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं नहीं चाहता कि तुम ऐसी बात कहो।" फिर आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه को वालिद साह़िब ने नमाज़ सिखाई और आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه भी रात का अकसर ह़िस्सा नमाज़ अदा करते रहते।

سُبۡحٰنَ اللّٰه क्या शान है उन लोगों की जिन के ज़ौक़ो शौक़ की सुवारी मक़्सद के हुसूल के लिये रातों को चलती रहती यहां तक कि वोह अपनी मन्ज़िले मुराद पर पहुंच जाते और उन्हें इनायते खु़दावन्दी ह़ासिल हो जाती।

जहन्नम की आग से बराअत नामा :

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ रात के वक़्त ग़ैर आबाद मसाजिद में तशरीफ़ ले जाते और वहां नमाज़ अदा करते रहते जिस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ खु़श होता। जब सह़री का वक़्त होता तो पेशानी ज़मीन पर रख कर रुख़्सार मिट्टी पर रगड़ते हुए तुलूए़ फ़ज्र तक रोते रहते। एक रात ह़स्बे मा'मूल जब आप ने ऐसा किया और फिर जब फ़ारिग़ हो कर सर उठाया तो एक सब्ज़ पर्चा मिला जिस का नूर आस्मान तक फैला हुवा था। उस पर लिखा था : "هٰذِهٖ بَرَاءَةٌ مِّنَ النَّارِ مِنَ الۡمَلِكِ الۡعَزِيۡزِ لِعَبۡدِهٖ عُمَرَ بۡنِ عَبۡدِ الۡعَزِيۡزِ" या'नी खु़दाए मालिक व ग़ालिब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से येह "**जहन्नम की आग से बराअत नामा**" है जो उस के बन्दे उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ को अ़त़ा हुवा है। (تفسیر روح البیان، الدُّخان، تحت الآیة٣،ج٨، ص٤٠٢)

एक नौजवान की तौबा :

मन्क़ूल है "एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَفَّار लोगों को वा'ज़ व नसीह़त करने के लिये मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और इन्हें अ़ज़ाबे इलाही عَزَّوَجَلَّ से डराने और गुनाहों पर डांटने लगे। क़रीब था कि लोग शिद्दते इज़्तिराब से तड़प तड़प कर मर जाते। इस

मह़फ़िल में एक गुनहगार नौजवान भी मौजूद था जो अपने गुनाहों की वजह से क़ब्र में उतरने के मुतअ़ल्लिक़ काफ़ी परेशान था। जब वोह आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ के इजतिमाअ़ से वापस गया तो यूं लगता था जैसे बयान उस के दिल पर बहुत ज़ियादा अषर अन्दाज़ हो चुका हो। वोह अपने गुनाहों पर नादिम हो कर अपनी मां की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "ऐ मेरी अम्मी जान ! तुम चाहती थी कि मैं शैत़ानी लह्व लअ़्ब और ख़ुदाए रह़्मान عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी छोड़ दूं लिहाज़ा आज से मैं इसे तर्क करता हूं।" और उस ने अपनी अम्मी जान को येह भी बताया कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار के इजतिमाए़ पाक में ह़ाज़िर हुवा और अपने गुनाहों पर बहुत नादिम हुवा। चुनान्चे, मां ने कहा : "ऐ मेरे बेटे ! तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने तुझे बड़े अच्छे अन्दाज़ से अपनी बारगाह की त़रफ़ लौटाया और गुनाहों की बीमारी से शिफ़ा अ़त़ा फ़रमाई और मुझे क़वी उम्मीद है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे तुझ पर रोने के सबब तुझ पर ज़रूर रह़्म फ़रमाएगा और तुझे क़बूल फ़रमा कर तुझ पर एह़सान फ़माएगा, फिर उस ने पूछा : ऐ बेटे ! नसीह़त भरा बयान सुनते वक़्त तेरा क्या ह़ाल था ?" तो उस ने जवाब में चन्द अश्आ़र पढ़े, जिन का मफ़्हूम येह है :

"मैं ने तौबा के लिये अपना दामन फैला दिया है और अपने आप को मलामत करते हुए मुत़ीअ़ व फ़रमां बरदार बन गया हूं। जब बयान करने वाले ने मेरे दिल को इत़ाअ़ते ख़ुदावन्दी की त़रफ़ बुलाया तो मेरे दिल के तमाम क़ुफ़्ल (या'नी ताले) खुल गए। ऐ मेरी अम्मी जान ! क्या मेरा मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ मेरी गुनाहों भरी जिन्दगी के बा वुजूद मुझे क़बूल फ़रमा लेगा ? हाए अफ़्सोस ! अगर मेरा मालिक मुझे ना काम व ना मुराद वापस लौटा दे या अपनी बारगाह में ह़ाज़िर होने से रोक दे तो मैं हलाक हो जाऊंगा।"

फिर वोह नौजवान दिन को रोज़े रखता और रातों को क़ियाम करता यहां तक कि उस का जिस्म लाग़र व कमज़ोर हो गया, गोश्त झड़ गया, हड्डियां ख़ुश्क हो गईं और रंग ज़र्द हो गया। एक दिन उस की वालिदए मोह़तरमा उस के लिये प्याले में सत्तू ले कर आई और इसरार करते हुए कहा : "मैं तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम दे कर कहती हूं कि येह पी लो, तुम्हारा जिस्म बहुत मशक़्क़त उठा चुका है।" चुनान्चे, मां की बात मानते हुए जब उस ने प्याला हाथ में लिया तो बेचैनी व परेशानी से रोने लगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लिशान को याद करने लगा :

﴾2﴿ يَتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ (پ۱۳،ابراهيم:۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ब मुश्किल उस का थोड़ा थोड़ा घूंट लेगा और गले से निचे उतारने की उम्मीद न होगी।*

फिर उस ने ज़ोर ज़ोर से रोना शुरूअ़ कर दिया और ज़मीन पर गिर गया। देखते ही देखते उस का त़ाइरे रूह़ क़फ़से उ़नसुरी से परवाज़ कर गया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह है ख़शिय्यते इलाही عَزَّوَجَلَّ का आ'ला मक़ाम। ऐ वोह शख़्स जिस ने अपनी सारी ज़िन्दगी येह कहते हुए ज़ाएअ़ कर दी कि अ़न क़रीब तौबा कर के नेक आ'माल शुरूअ़ कर दूंगा।

ऐ रात की तारीकियों में अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से तअ़ल्लुक़ जोड़ने वाले पाक बाज़ बन्दो ! ऐ गुरौहे ताईबीन ! तमाम ख़ूबियां उसी के लिये हैं जिस ने तुम्हें अपनी इबादत की तौफ़ीक़ अ़ता की और हमें पीछे रखा, सब ता'रीफ़ें उसी के लिये हैं जिस ने तुम्हें अपना कु़र्ब अ़ता फ़रमाया और हमें दूर रखा। (क्यूंकि वोह सब कुछ कर सकता है। चुनान्चे, फ़रमाने बारी तआ़ला है :)

اِنۡ نَّحۡنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثۡلُكُمۡ وَلٰـكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ عَلٰى مَنۡ يَّشَآءُ مِنۡ عِبَادِهٖ ؕ (پ۱۳،ابراهيم:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *हम हैं तो तुम्हारी त़रह़ इन्सान मगर अल्लाह अपने बन्दों में जिस पर चाहे एह़सान फ़रमाता है।*

सारंगी बजाने वाली लड़की की तौबा :

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَنِی फ़रमाते हैं : एक दिन मेरा दिल कुछ बेचैनी सी मह़सूस कर रहा था। चुनान्चे, मैं दरयाए नील के कनारे सैर करने के लिये निकला। मेरे दिल में इसे उ़बूर करने का ख़याल आया तो मैं ने किश्ती में सुवार हो कर अपना सर घुंटनों में छुपा लिया और फिर न उठाया। जब किश्ती दरया के दरमियान पहुंची तो मैं ने अपना सर घुटनों से उठाया तो अपनी दाईं जानिब एक ह़सीन लड़की दिखाई दी जिस की गोद में सारंगी पड़ी हुई थी उस के सामने शराब और दाईं जानिब साफ़ सुथरे लिबास में मल्बूस एक ख़ूब सूरत नौजवान खड़ा था। मैं ने दिल में कहा : ऐ नफ़्स ! तू सत्तर साल की इबादत के बा'द भी इस किश्ती में एक ऐसी शराबी क़ौम के दरमियान फंस गया है जो ए'लानिया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी करती है। इतने में वोह लड़की मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हुई और बोली : "ऐ बुज़ुर्ग इन्सान ! क्या आप कुछ पीना चाहेंगे ?" मैं ने जवाब दिया : "अगर मेरे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे कुछ पिलाया तो पी लूंगा।" चुनान्चे, उस लड़की ने अपने ग़ुलाम को इशारा किया कि वोह मेरे लिये शराब का प्याला भर दे, उस ने हुक्म के मुत़ाबिक़ शराब का जाम भर कर मुझे पेश कर दिया। जब प्याला मेरे हाथ में आया तो मुझ पर कपकपी त़ारी हो गई। लड़की ने पूछा : "ऐ शैख़ ! शराब क्यूं नहीं पीते ?" क्या तुम चाहते हो कि मैं गाना गाऊं ताकि तुम शराब पियो, फिर तुम गाना गाओ ताकि हम शराब पियें ? मैं ने कहा : मैं नग़्मा सुनाता हूं, तुम शराब पियों। वोह बोली : "ठीक है, तुम सुनाओ, हम तुम्हारा नग़्मा सुनते हैं। फिर मैं ने कुछ अश्आ़र पढ़े, जिन का मफ़्हूम येह है :

"कु़रआने पाक पढ़ने वाले क़ारी की तिलावत रात की तारीकी में गाना गाने वाली लड़की और बांसरी से बढ़ कर ख़ूब सूरत है। ऐ कु़रआने मजीद को दिलकश आवाज़ से पढ़ने वाले ! तेरी क्या शान है ! इस ख़ूब सूरत क़िराअत को रब्बे जलील عَزَّوَجَلَّ समाअ़त फ़रमा रहा है, तेरे आंसू बह रहे हैं, रुख़्सार मिट्टी में लत पत हैं और दिल मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ में मगन, येह कह रहा है : ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ मुझे गुनाहों के बोझ ने तुझ से ग़ाफ़िल रखा। मेरे गुनाह बख़्श दे क्यूंकि अब येह बहुत बढ़ चुके हैं। ऐ मेरे रब्बे जलील عَزَّوَجَلَّ तू ने हमेशा मेरे ऐ़बों पर पर्दा डाला। पस

ऐसे क़ारिये कुरआन का ठिकाना कल बरोज़े क़ियामत जन्नत में होगा और वोह कुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ पाएगा और अपनी रफ़ीक़ए जन्नत के साथ रहेगा। ऐ उस के लिये बेहतरीन इख़्तियार करने वाले जो तुझे इख़्तियार करता है !"

जब उस लड़की ने ऐसे पुर अषर अश्आर सुने तो बे होश हो कर गिर पड़ी। जब इफ़ाक़ा हुवा तो रेशमी लिबास तबदील कर के सारंगी तोड़ दी और शराब दरया में बहा दी और फिर अ़र्ज़ करने लगी : "ऐ मोह़तरम बुज़ुर्ग ! अगर मैं तौबा कर लूं तो क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे क़बूल फ़रमा लेगा ? मैं ने कहा : "क्यूं नहीं, जब कि वोह अपनी मुक़द्दस किताब में खुद इरशाद फ़रमाता है :

وَهُوَ الَّذِىْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ ﴿4﴾ (پ۲۵،الشورٰی:۲۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता और गुनाहों से दरगुज़र फ़रमाता है।*

फिर उस ने मुंह से निक़ाब हटाया और कहने लगी : "ऐ मोह़तरम बुज़ुर्ग ! आप मेरी इस्लाह़ का सबब बने हैं लिहाज़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मेरे गुज़श्ता गुनाहों की मुआ़फ़ी और दरगुज़र का सुवाल करें।" ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "फिर हम सब किश्ती से उतर कर एक दूसरे से जुदा हो गए। इस के बा'द वोह लड़की मुझे कहीं नज़र न आई। फिर एक दफ़्आ़ मैं ह़ज की सआ़दत से बहरा मन्द हुवा तो वहां एक परागन्दा बालों वाली लड़की देखी। वोह का'बतुल्लाह शरीफ़ زادهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيماً وَّ تَكرِيماً के ग़िलाफ़ से लिपट कर रो रो कर अ़र्ज़ कर रही थी : "ऐ मेरे मा'बूद ! मेरी रात की मदहोशी और नशे का वासित़ा ! आज मेरे गुनाहों को बख़्श दे।" मैं ने कहा : "रुक जा ! ऐसे इ़ज़्ज़त वाले मक़ाम पर कैसा कलाम कर रही हो ?" उस ने जवाब दिया : "ऐ ज़ुन्नून ! मुझ से दूर हो जाओ ! क्यूंकि जब मैं ने गुज़श्ता रात ख़ुशी व मसर्रत से मह़ब्बते ह़क़ीक़ी का जाम पिया तो आज यूं सुब्ह़ की, कि अपने आक़ा व मौला عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत में मदहोश थी।" मैं ने पूछा : "तुम्हें मेरा नाम किस ने बताया।" कहने लगी : "मैं वोही लड़की हूं जो मिस्र के दरयाए नील में आप के हाथों पर ताइब हुई थी।" मैंने पूछा : "तुम्हारा हुस्नो जमाल कहां गया ?" तो उस ने जवाब में दर्जे ज़ैल अश्आर पढ़े :

ذَهَبَتْ لَذَّةُ الصِّبَا فِى الْمَعَاصِىْ ... وَبَقِىَ بَعْدَ ذٰلِكَ اَخْذُ النَّوَاصِىْ

وَمَضَى الْحُسْنُ وَالْجَمَالُ وَمَالِىْ ... عَمَلٌ اَرْتَجِيْهِ يَوْمَ الْخَلَاصِ

غَيْرَ ظَنِّىْ بِاللّٰهِ وَهُوَ جَمِيْلٌ ... فِيْهِ اَخْلَصْتُ غَايَةَ الْاِخْلَاصِ

तर्जमा : (1).....बचपन की लज़्ज़त गुनाहों में ख़त्म हो गई और इस के बा'द सिर्फ़ अफ़्सोस से पेशानी पकड़ना बाक़ी रह गया है।

(2)......सब हुस्नो जमाल चला गया और मेरे पास कोई ऐसा अ़मल भी नहीं जिस की वजह से बरोज़े क़ियामत नजात की उम्मीद कर सकूं।

(3).....अलबत्ता अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हुस्ने ज़न की दौलत है और उस में मेरी निय्यत बिल्कुल ख़ालिस है।

इस के बा'द कहने लगी : "ऐ जुन्नून ! मेरे वापस आने तक इसी जगह ठहरिये।" फिर वोह एक लम्हे में ग़ाइब हो गई। जब वापस आई तो उस के हाथ में एक प्लेट थी जिस में एक त़रफ़ तर खजूरें और दूसरी त़रफ़ अन्जीर और अंगूर रखे हुए थे। उस ने प्लेट मेरे सामने रख दी। मैं ने अपने दिल में सोचा कि सत्तर साल इबादत करने के बा वुजूद मैं इस मक़ाम तक न पहुंच सका जहां येह लड़की चन्द दिनों में पहुंच गई। फिर कहने लगी : "ऐ शैख़ ! जब मैं ने बारगाहे इलाही عَزَّ وَجَلَّ में ह़ाज़िर हो कर गुनाहों का ए'तिराफ़ किया और सच्ची तौबा की तो उस ने मुझे सच्चा तवक्कुल अ़त़ा फ़रमाया। फिर उस ने मज़ीद अश्आ़र पढ़े :

عِشْ غَرِيْبًا وَلَا تَذُلْ لِخَلْقٍ   وَاطْلُبِ الرِّزْقَ فِيْ بِلَادِ الْحَبِيْب
ثُمَّ سِرْ فِي الْبِلَادِ شَرْقًا وَّغَرْبًا   وَّتَوَكَّلْ عَلَى الْقَرِيْبِ الْمُجِيْب
فَعَسٰى اَنْ تَنَالَ مَا تَرْتَجِيْهِ   بِيَدِ اللُّطْفِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْب

तर्जमा : (1).....दुन्या में अजनबी की सी ज़िन्दगी गुज़ार, मख़्लूक़ के सामने कभी न झुक और अपना रिज़्क़ मह़बूबे ह़क़ीक़ी عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में तलाश कर।

(2).....फिर मशरिक़ व मग़रिब के मुमालिक में सैरो सियाह़त कर और हमेशा शह रग से ज़ियादा क़रीब और दुआएं क़बूल करने वाले पर ही भरोसा कर।

(3).....क़रीब है कि तू अपने नज़्दीक से ही **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के दस्ते फ़ज़्ल व एह़सान से उस चीज़ को पा ले जिस की तुझे उम्मीद है।

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "फिर मैं उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा लेकिन वोह आंखों से ओझल हो चुकी थी।"

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! येह हैं ताइबीन की सिफ़ात और मुक़र्रबीन की अ़लामात। ऐ भाई ! अपने मौला की बारगाह से कभी मत हटना अगर्चे वोह तुझे धुतकार दे और उस के बाबे रह़मत से कभी क़दम न हटाना अगर्चे वोह तुझे क़बूल न करे।

ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तौबा :

मन्क़ूल है, जब ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ममनूअ़ दरख़्त से खाया और आप عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को रब्ब عَزَّ وَجَلَّ से किया हुवा वा'दा भुला दिया गया तो जन्नती लिबास अलाह़िदा हो गया। वहां की हर चीज़ आप عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से ना मानूस हो गई। चुनान्चे, आप عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जल्दी से भागते हुए जन्नती दरख़्तों के पत्तों में छुप गए। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने पूछा : "ऐ आदम ! क्या तुम मुझ से भागते हो ?" अ़र्ज़ की : "नहीं, ऐ मेरे रब्ब عَزَّ وَجَلَّ बल्कि मुझे तुझ से ह़या आती है।" तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "क्या मैं ने तुझे अपने दस्ते क़ुदरत से पैदा नहीं किया ? क्या मैं ने तेरे लिये मलाइका को सजदा करने का हुक्म न दिया ? क्या मैं ने तुझ में अपनी त़रफ़ की ख़ास रूह़ न फूंकी ? क्या मैं ने तुझे अपने क़ुर्ब में जगह अ़त़ा न फ़रमाई ? क्या मैं ने तेरे लिये अपनी जन्नत मुबाह़ न की ? पस यहां से अलग हो जा क्यूंकि

लग़्ज़िश वाला यहां नहीं रहता।" इस पर ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जिस क़दर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा, रोते रहे। फिर अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे मा'बूद ! अगर तू मुझ पर रह़्म न करेगा तो कौन करेगा ?" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वह़्य फ़रमाई कि यूं दुआ़ कर :

"سُبْحٰنَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ عَمِلْتُ سُوْءً ا وَظَلَمْتُ نَفْسِیْ فَتُبْ عَلَیَّ اِنَّکَ اَنْتَ التَّوَّا بُ الرَّحِیْمُ"

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू हर ऐ़ब से पाक है और ता'रीफ़ के लाइक़ तेरी ही ज़ात है, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, मुझ से लग़्ज़िश हुई और मैं ने अपनी जान पर ज़ियादती की पस तू मेरी तौबा क़बूल फ़रमा। बेशक तू बहुत तौबा क़बूल फ़रमाने वाला और मेहरबान है।"

(मज़्कूरा कलिमात के मुतअ़ल्लिक़) ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد और मुफ़स्सिरीन के एक गुरोह का क़ोल है कि "येह वोह कलिमात हैं जो ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से सीखे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तौबा क़बूल फ़रमाई।"

रह़्मते ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ मां की मह़ब्बत से बढ़ कर है :

ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ रिवायत फ़रमाते हैं : "बरोज़े क़ियामत जब अ़द्न के समन्दर की गहराई से आग निकलेगी तो तमाम लोग मैदाने मह़शर की त़रफ़ हांके जाएंगे। मैदाने क़ियामत की होलनाकियों से लोग मुतह़य्यिर, प्यासे, मदहोश और कांपते होंगे कि इसी दौरान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तजल्ली फ़रमाएगा तो उस के नूर से ज़मीन रोशन हो जाएगी और मख़्लूक़ एक दूसरे को देख लेगी और मां अपने बेटे को देखेगी जिस से दुन्या में वोह बहुत मह़ब्बत करती थी। वोह उसे पहचान कर कहेगी : "ऐ मेरे बेटे ! क्या मेरा पेट तेरी पनाह गाह न था ? क्या मेरी गोद तेरे लिये नर्म बिस्तर न थी ? क्या मेरा दूध तेरे लिये सैराबी का बाइ़ष न था ?" तो बेटा पूछेगा : "ऐ मेरी मां ! तू क्या चाहती है ?" वोह कहेगी : "मेरे गुनाह मुझ पर भारी हो गए हैं तू इन में से सिर्फ़ एक गुनाह उठा ले।" तो वोह कहेगा : "येह बात नामुमकिन है ! आज हर जान अपने अ़मलों में गिरवी (या'नी रेह़्न) है। ऐ मेरी मां ! अगर मैं तेरा बोझ उठा लूं तो मेरा बोझ कौन उठाएगा इसी दौरान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की जानिब से एक मुनादी एलान करेगा : ऐ फ़ुलां बिन फ़ुलां ! आओ, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश हो जाओ।" येह ए'लान सुनते ही उस शख़्स का रंग मुतग़य्यिर हो जाएगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ह़या के सबब इस के आ'ज़ा बेचैन हो जाएंगे। जब मां अपने बेटे की घबराहट मुलाह़ज़ा करेगी तो पूछेगी : "ऐ मेरे बेटे ! क्या हुवा ?" वोह जवाब में कहेगा : "ऐ मेरी मां ! मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश होने के लिये बुलाया गया है, अब मैं उस से भाग कर कहा छुपूं या मेरा छुटकारा कैसे हो ?" इसी दौरान दो फ़िरिश्ते उस की त़रफ़ बढ़ेंगे और उसे पकड़ कर घसीटना शुरूअ़ कर देंगे। जब उस की मां देखेगी तो उसे सीने की त़रफ़ खींचेगी और अपने बालों से छुपाएगी और अपनी पूरी त़ाक़त से फ़िरिश्तों को उस से दूर करने की कोशिश करेगी लेकिन दूर न कर सकेगी। जब देखेगी कि वोह उन से अपना बेटा नहीं ले सकती

तो रोते हुए फ़िरिश्तों से कहेगी : "उस ज़ात की क़सम जिस ने मुझे मेरी क़ब्र से उठाया है ! अगर मेरे बस में होता तो मैं तुम दोनों को अपना बेटा न ले जाने देती ।" फिर वोह उसे रोते हुए अलवदाअ़ करेगी और कहेगी : "ऐ मेरे बेटे ! मैं तुझे उस ज़ात की क़सम देती हूं जिस ने अपनी बारगाह में पेशी और ह़िसाब किताब के लिये तुझे बुलाया ! अगर तुझे नजात मिले तो मुझे मत भूलना । मैं बहुत देर से खड़ी हूं, बहुत हसरत ज़दा हूं और मेरी तक्लीफ़ और प्यास बहुत शिद्दत इख़्तियार कर गई है ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "फिर दो फ़िरिश्ते उस के बेटे को "सिद्रतुल मुन्तहा" पर मुक़र्रर फ़िरिश्ते के सिपुर्द कर देंगे ।" वोह पूछेगा : "तुम्हारा तअ़ल्लुक़ किस उम्मत से है ?" तो लड़का जवाब में कहेगा : "मैं ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का उम्मती हूं ।" फ़िरिश्ता कहेगा : "ख़ुशख़बरी है तेरे लिये और उम्मते मुह़म्मदिया علٰی صاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام के लिये ।" फिर वोह फ़िरिश्ता उसे नूर में दाख़िल कर देगा । कोई अन्दाज़े से नहीं जान सकता कि वोह कहां जाएगा, दाएं या बाएं, आगे या पीछे । (وَاللّٰہُ اَعْلَمُ بِالصَّوَاب) अचानक उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से एक आवाज़ सुनाई देगी : "ठहर जा ! मैं तेरा रब्ब हूं, अपने आ'ज़ा को पुर सुकून रहने दे और अपने दिल को इत़्मीनान दे । मेरे इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम ! तुझे तेरी मां अपनी त़रफ़ खींच रही थी और अपने सीने से चिमटा रही थी तो मैं तुझ पर इस से भी बढ़ कर शफ़ीक़ हूं ।" फिर इरशाद होगा : "ऐ मेरे बन्दे ! अपना नामए आ'माल पढ़ ।" तो वोह उसे पढ़ेगा लेकिन जब कोई गुनाह पाएगा तो आवाज़ आहिस्ता कर लेगा और जब कोई नेकी पाएगा तो आवाज़ बुलन्द कर लेगा । तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "ऐ मेरे बन्दे ! अपनी नेकी को बुलन्द आवाज़ से और बुराई को पस्त आवाज़ से क्यूं पढ़ता है ?" तो वोह रोते हुए अ़र्ज़ करेगा : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे मा'लूम है कि तू अच्छाई को ज़ाहिर करता है और बुराई की पर्दा पोशी फ़रमाता है ।"

फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "ऐ मेरे बन्दे ! मैं ने तेरे गुनाहों और ऐ़बों को मख़्लूक़ से कैसे पोशीदा रखा जब कि तू ने इन के ज़रीए मेरा मुक़ाबला किया । क्या तुझे मा'लूम न था कि मैं तुझ से बा ख़बर था और तुझे देख रहा था ?" वोह अ़र्ज़ करेगा : "ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ मुझ में तेरी डांट डपट सुनने की त़ाक़त नहीं तू मुझे जहन्नम में जाने का हुक्म दे दे ।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "अगर मैं तुझे जहन्नम में जाने का हुक्म दे दूं तो मेरा जूदो करम और अ़फ़्वो दर गुज़र किस के लिये होगा ? (फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा) ऐ फ़िरिश्तो ! मेरे बन्दे को मेरे फ़ज़्लो रह़मत से जन्नत में ले जाओ ।" वोह फिर अ़र्ज़ करेगा : "ऐ मेरे मा'बूद व मालिक عَزَّوَجَلَّ मेरी वालिदा दुन्या में मुझे बहुत चाहती थी और मुझ पर बहुत शफ़्क़त करती थी और आज उस ने मुझे देखा तो मुझ से मदद मांगी और चाहा कि मैं उस की मदद करूं । ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ अगर

तू ने मुझे मुआ़फ़ कर दिया है तो मेरा ठिकाना मेरे बजाए मेरी वालिदा को बख़्श दे, अब वोह जिस अ़ज़ाब में है उस से बरदाश्त नहीं हो रहा।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "मेरे इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं तुम दोनों को एक दूसरे से जुदा नहीं करता बल्कि मैं तुम पर रह़म कर चुका हूं।" (फिर फ़रमाएगा) "ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! इन दोनों को मेरी जन्नत में ले जाओ और मैं सब से बढ़ कर रह़म फ़रमाने वाला हूं।"

وَصَلَّى اللّٰه عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْن

दर्दे सर का इलाज

क़ैसरे रूम ने अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ख़त़ लिखा कि मुझे दाइमी दर्दे सर की शिकायत है अगर आप के पास इस की दवा हो तो भेज दीजिये ! ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस को एक टोपी भेज दी। क़ैसरे रूम उस टोपी को पहनता तो उस का दर्दे सर काफ़ूर हो जाता और जब सर से उतारता तो दर्दे सर फिर लौट आता। उसे बड़ा तअ़ज्जुब हुवा। आख़िरे कार उस ने उस टोपी को उधेडा तो उस में से एक काग़ज़ बर आमद हुवा जिस पर بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ लिखा था। (तफ़्सीरे कबीर जि. 1 स. 155)

बयान 36 : मुबारक "दरयाए नील" का ज़िक्रे ख़ैर

हम्दे बारी तआला :

सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने ज़ालिमों को हलाक किया। बन्दों को सताने वालों का रो'ब व दबदबा ख़ाक में मिला दिया। उस ने दाने को फाड़ कर इस से गन्दुम को उगाया। उस ने ख़ुश्क व तर घास उगाया और जानवरों के लिये मुक़र्रर फ़रमाया। और (उस का फ़रमाने आलीशान है) وَهُوَالَّذِیْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهْرًا ؕ(پ١٩،الفرقان:٥٤) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोही है जिस ने पानी से बनाया आदमी फिर उस के रिश्ते और सुसराल मुक़र्रर की।"....सारी काइनात उस के फ़ज़्ल के गुन गा रही है। पस येह कोई तअ़ज्जुब की बात नहीं कि ज़बानें उस के शुक्र में उस के ज़िक्र से तर हैं। और (फ़रमाने इलाही عَزَّوَجَلَّ है) فَسَلَکَهٗ یَنَابِیْعَ فِی الْاَرْضِ (پ٢٣،الزمر:٢١) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर इस से ज़मीन में चश्मे बनाए।" ..... और उन्हें अपनी हिक्मत के मुताबिक़ लम्बाई और चौड़ाई में तक़सीम फ़रमा दिया तो उन से नहरें बह निकलीं और कच्चे तालाबों से पानी ज़ोर व जोश के साथ निकलने लगा। और उस ने तुम्हारे लिये "**दरयाए नील**" को एक बड़ी निशानी बनाया। इस की मज़बूती तअ़ज्जुब ख़ेज़, बहाव ख़ुशगवार और ख़ुश्बू निहायत पाकीज़ा है। अ़ज़मत व शान का हामिल है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे अपनी क़ुदरत व हिक्मत के अ़जाइब व ग़राइब पर दलील बनाया है।

पाक है वोह ज़ात जिस ने इस दरया को मिस्र के साथ ख़ास फ़रमाया : येह अ़ज़ीम दरया बड़ा तअ़ज्जुब ख़ेज़ है कि गरमियों में भर जाता है, सर्दियों में उतर जाता है, जब दूसरे पानी रुक जाते हैं तो येह बहने लगता है और जब सर्दी ज़ाहिर होने लगती है तो येह दरया हाजात व मक़ासिद बर लाता है। दिलों को फ़रहत व मसर्रत से लबरेज़ करता है। पस जब किसी लम्बी जुदाई के सबब इस में इज़्तिराब व बे क़रारी पैदा होती है तो ग़ैरत की ज़ियादती वाले की तरह इस की भी ख़्वाहिश बढ़ जाती है और ख़ुश्की व तरी की ख़ुशियों की मिष्ल मौजें मारता है। तो ग़ौर करो कि मौजें मारने के अय्याम में इस की मिक़्दार की हालत कैसी होगी। उस का बन्द दहाना (دہانہ) खेलने से क़ब्ल ही कोई तदबीर कर लो। क्यूंकि येह जब भी कोई लम्बा सांस लेता है तो लम्बाई व चौड़ाई में गढ़ों को भर देता है। शहरों को अन्दर बाहर, चहार तरफ़ से घेर लेता है। हर बन्दे को इस के अषरात पहुंचते हैं। तो इस से निकलने वाली छोटी नहर टूंटने से कितने तकब्बुर टूट जाते हैं। और येह दरया अपनी रवानी से तुम्हारे ग़म दूर कर देता है और अपने बहाव से तुम्हारा गर्म कलेजा ठंडा कर देता है।

जब बाग़ात ख़ाली हो जाते हैं और कुंवें कषरत के बा'द कमी की शिकायत करते हैं और इन की प्यास अतराफ़ में नर्मी व सख़्ती से हंगामा करती है तो तौबा करने पर फ़रयाद रस करम फ़रमाता है। (और इरशादे बारी तआला है) اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ یُسْرًا ؕ (پ٣٠،الم نشرح:٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है। ....और उस ने अपनी त़रफ़ रुजूअ़ करने वाले पर नर्म चलने वाली हवाओं के साथ अपनी अ़त़ा व बख़्शिश भेजी। चुनान्चे, ज़मीन ख़ुश्क हो जाने के बा'द तरो ताज़ा और सर सब्ज़ व शादाब हो गई। और इस ने अपनी मुफ़्लिसी व नादारी के बा'द सब्ज़ हुल्ले पा लिये (या'नी सब्ज़ा ज़ार हो गई)।

पाक है वोह ज़ात जिस की क़ुदरत की मिषाल नहीं। उस की ह़िक्मत का कोई मुक़ाबिल नहीं। उस की ने'मत का शुमार नहीं। वोह गुनहगारों को बहुत ज़ियादा मुआ़फ़ फ़रमाने वाला और फ़रमा बरदारों को बहुत ज़ियादा अज्रो षवाब अ़त़ा फ़रमाने वाला है। उस की बारगाह से मुंह मोड़ने वाला नुक़्सान व ख़सारा ही उठाता है और उस के दर से फिरने वाला अपने शीरें मश्रूब को भी कड़वा पाता है। तो ऐ सरकशी व नाफ़रमानी की चरागाह में भटकने वाले ! बेशक तू ने बहुत बुरी बात का इर्तिकाब किया। और ऐ कुफ़्र व बेदीनी के बयाबान में सरगर्दां ! बेशक तू ऐसी बात पर अड़ा हुवा है जिस की तुझे ख़बर नहीं। क्या तुझे हलाकत का डर नहीं ? (सुन वोह क्या फ़रमा रहा है :) وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ (پ١٩،النمل:٥٠) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और इन्हों ने अपना सा मक्र किया और हम ने अपनी ख़ुफ़्या तदबीर फ़रमाई और वोह ग़ाफ़िल रहे। क़सम ब ख़ुदा ! उस ने तेरे लिये हिदायत का रास्ता बिल्कुल वाज़ेह़ फ़रमा दिया है तो अब किसी गुनहगार को उ़ज़्र की गुन्जाइश नहीं। और उस ने येह बात क़ुरआने ह़कीम में वाज़ेह़ फ़रमा दी है : وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ط(پ٢٢،فاطر:١٨) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और कोई बोझ उठाने वाली जान किसी दूसरे का बोझ न उठाएगी।"[1] आ़रिफ़ीन (औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰه تَعَالٰى) की ख़ूबी व कमाल, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा व मेहरबानी है कि वोह अपने मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत के लिये दुन्या की फ़रैब कारियों से बेदार व होशियार रहे और इन्हों ने अपने अवक़ात (या'नी रात दिन) को उस की तस्बीह़ व ज़िक्र में फ़ना कर डाला। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन के दिलों को अपनी मह़ब्बत में गर्मा कर अंगारा कर दिया। और इन पर अपनी मह़ब्बत के जामों से बार बार शराबे मह़ब्बत को घुमाया। पस जब साक़ी ने शराबे मह़ब्बत को घुमा दिया और गाने वालों ने ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ के नग़्मात गाए तो आ़रिफ़ीन (औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰه تَعَالٰى) इन आवाज़ों की त़रफ़ माइल हो गए कि कोई त़रब व मदहोशी में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को याद कर रहा है।

तो ऐ सुनने वाले ! निगाहे फ़िक्र से देख कि मख़्लूक़ के आ़म नफ़्अ़ के लिये क़ुदरत ने किस त़रह़ दरयाए नील को मिस्र के बालाई शहरों से गुज़ारा। येह तमाम अश्या से ज़ियादा

---

[1]...**मुफ़स्सिरे शहीर** ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं "मा'ना येह हैं कि रोज़े क़ियामत हर एक जान पर उसी के गुनाहों का बार होगा, जो उस ने किये हैं और कोई जान किसी दूसरे के इवज़ न पकड़ी जाएगी। अलबत्ता जो गुमराह करने वाले हैं उन के गुमराह करने से जो लोग गुमराह हुए, उन की तमाम गुमराहियों का बारान गुमराहों पर भी होगा और उन गुमराह करने वालों पर भी जैसा की कलामे करीम में इरशाद हुवा وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ.(العنكبوت:١٣) और दर ह़क़ीक़त येह उन की अपनी कमाई है दूसरे की नहीं।"

तअ़ज्जुब ख़ेज़ और अनोखा है, इस का मन्ज़र ह़सीन तर और उ़म्दा तरीन है और उस का पानी सब पानियों से ज़ियादा ठन्डा और मीठा है। पाकी है उसे जिस ने इस के ज़रीए़ ख़यालात को पुख़्ता किया, आंखों को क़रार बख़्शा और अरवाह़ के लिये ह़यात का सामान किया। पस येह कुदरते इलाही عَزَّ وَجَلَّ से फैल गया। पौदों और दरख़्तों को उगाने के लिये जहतों और अत़राफ़ में बहने लगा। और उस के इन्आ़म के दरया से इकराम की नहरों की त़रफ़ चलने लगा। (चुनान्चे, वोह फ़रमाता है :)

هُوَ الَّذِیْۤ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ٥ يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ٥ (پ ۱٤، النحل: ۱۰، ۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोही है जिस ने आस्मान से पानी उतारा इस से तुम्हारा पीना है और इस से दरख़्त हैं जिन से चराते हो इस पानी से तुम्हारे लिये खेती उगाता है और ज़ैतून और खजूर और अंगूर और हर क़िस्म के फल बेशक इस में निशानी है ध्यान करने वालों को।"

तो वोही ज़ात है जिस ने इस दरया को अपनी ह़िक्मत से जारी और अपनी कुदरत से ज़ाहिर फ़रमाया। उस ने बन्दों के गुमानों को नाकाम नहीं किया। और उस ने हुक़ूक़ व हुदूद की पासदारी के सबब उस की चमकती मौजों को हुस्ने निज़ाम व क़ानून के तह़त रुकावट के ख़ातिमे और इस का दहाना (دَہانہ) खोलने की इजाज़त दे दी। और उस ने रुकावट को तोड़ कर हर गमगीन के दिल को जोड़ दिया। और इस दरया की बरकतें कच्चे तालाबों और नहरों को आ़म मिलने लगीं। और वोह ब हुक्मे इलाही शहरों की त़रफ़ बहने लगा। पस प्यासे इस से सैराब होने लगे और पेट इसे देख कर भरने लगे। (चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :)

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَسُوْقُ الْمَآءَ اِلَى الْاَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ اَنْعَامُهُمْ وَاَنْفُسُهُمْؕ اَفَلَا يُبْصِرُوْنَ٥ (پ ۲۱، السجدہ: ۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और क्या नहीं देखते कि हम पानी भेजते हैं ख़ुश्क ज़मीन की त़रफ़ फिर इस से खेती निकालते हैं कि उस में से उन के चोपाए और वोह ख़ुद खाते हैं तो क्या उन्हें सुझता नहीं।*

दरयाए नील के मुतअ़ल्लिक़ ह़िकायत :

मन्क़ूल है कि फ़िरऔ़न ज़मीन में सरकशी के साथ साथ ख़ुदाई का भी दा'वेदार था। उस ने अपनी क़ौम को दरयाए नील के ज़रीए़ गुमराह कर रखा था वोह यूं कि जब **يَوْمِ نَيْرُوْز** (या'नी आतश परस्तों की ई़द का दिन) आता और दरयाए नील इन्तिहाई ठाठें मारने लगता तो लोगों में येह ए'लान कर दिया जाता कि तुम्हारे लिये फ़िरऔ़न ने दरयाए नील को पुर जोश कर दिया है लिहाज़ा तुम उसे सजदा करो तो जाहिल लोग उस की बात पर यक़ीन करते हुए उसे सजदा करते। एक साल दरयाए नील का पानी कम होना शुरूअ़ हुवा तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने उसे पुर शोर मौजें मारने की इजाज़त न दी। लोग भूक के सबब निढ़ाल हो गए और क़ह़त़ में मुब्तला हो गए। चुनान्चे, पूरी क़ौम इकठ्ठी हो कर फ़िरऔ़न के पास गई और उस से मुत़ालबा किया, "हमारे अहलो इ़याल, अवलाद और जानवर सब हलाक हुए जा रहे हैं, अगर तुम हमारे ख़ुदा हो तो दरयाए नील का पानी जारी कर दो।"

तो उस लईन ने जवाब दिया : ऐसा ही होगा।" फिर वोह ऊनी लिबास, बालों की बनी हुई टोपी और राख भरी थेली ले कर एक वीरान जज़ीरे की त़रफ़ चला गया जो अब तक "**मक़यास**" के नाम से मशहूर व मा'रूफ़ है। और हुक्म दिया कि उस की रिआ़या और क़ौम में से कोई शख़्स उस के पीछे न आए। उस ने जज़ीरे में दाख़िल होते ही शाही लिबास और सर का ताज उतार कर ऊनी लिबास और बालों से बनी हुई टोपी पहन ली और राख ज़मीन पर बिखैर कर इस पर लोट पोट होने लगा और रोते हुए बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में सजदा रेज़ हो गया और अपना चेहरा राख पर लत-पत करते हुए कहने लगा :

"ऐ मेरे मालिको मौला ! मैं जानता हूं कि तू ही ज़मीनो आस्मान का मालिक और अव्वलीन व आख़िरीन का मा'बूद है। लेकिन मुझ पर बदबख़्ती ग़ालिब आ गई, मैं तेरी नाफ़रमानी व सर कशी में बहुत आगे बढ़ गया। तू मेरा मा'बूद है और मैं तेरा बन्दा हूं, तू ने मेरे मुतअ़ल्लिक़ जो फ़ैसला फ़रमा दिया, फ़रमा दिया। मौला ! अब मुझे मेरी क़ौम में ज़लील व रुस्वा न कर और तू ही सब से बढ़ कर करम फ़रमाने वाला है।"

अभी फ़िरऔ़न की बात पूरी न हुई थी कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसी वक़्त दरयाए नील को जारी होने का हुक्म दे दिया और उसे फ़रमाया कि जहां तक फ़िरऔ़न जाए वोह भी उस के साथ साथ चले। चुनान्चे, फ़िरऔ़न अपनी क़ौम में इस ह़ालत में जा रहा था कि दरया का पानी उस के दामन को तर करते हुए साथ साथ जा रहा था और लोग अपनी आस्तिनों को पानी और कीचड़ में डुबो कर ख़ुशी से एक दूसरे को मार रहे थे। उस वक़्त से अब तक मिस्र में ख़ुशी मनाने का येह त़रीक़ा राइज है और अहले मिस्र इसे **यौमे नव रोज़** या'नी दरयाए नील की तुग़यानी का दिन कहते हैं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! फ़िरऔ़न **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दुश्मन था जो लम्ह़ा भर उस के लिये मुख़्लिस हुवा तो इसे बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ से त़लब के मुत़ाबिक़ अ़त़ा किया गया, इस की पर्दा पोशी की गई और क़ौम में इस को ज़लीलो रुस्वा होने से बचा लिया गया। तो जो शख़्स सारी ज़िन्दगी इख़्लास से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त व इबादत करता रहे तो वोह उसे किस क़दर इन्आ़मात से नवाज़ेगा और उसे आख़िरत में क्या कुछ अ़त़ा न फ़रमाएगा। इसी त़रह़ जब नाफ़रमान बन्दा अपने गुनाहों से ताइब हो जाए और अपनी ख़ामियों और गुनाहों का ए'तिराफ़ कर ले। बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में ऊंची और आहिस्ता आवाज़ से गिड़ गिड़ाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस से पाक है कि बरोज़े क़ियामत उसे अ़ज़ाब दे या सब के सामने ज़लीलो रुस्वा करे।

रोज़ेदार पर ख़ास इनायते ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "जब क़ियामत का दिन होगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे से भलाई का इरादा फ़रमाएगा तो उसे ए'लानिया त़ौर पर नामए आ'माल दे कर फ़रमाएगा : "इसे आहिस्ता आवाज़ में पढ़।" ताकि मख़्लूक़ में

ज़लीलो ख़्वार न हो। पस वोह अपना नामए आ'माल इस क़दर पस्त आवाज़ में पढ़ेगा कि कोई भी न सुन सकेगा। फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करेंगे : "ऐ हमारे मा'बूदे बर ह़क़ ! येह ऐसी इनायत है जो पहले किसी नाफ़रमान पर नहीं की गई जब कि तू ने अपने नाफ़रमान को अ़ज़ाब देने और जहन्नम में जलाने की वईद फ़रमाई है।" इस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! मैं ने दुन्या में इसे माहे रमज़ान की शदीद गर्मी में भूक और प्यास की आग से जलाया तो आज इसे जहन्नम की आग में नहीं जलाऊंगा। मैं ने इसे बख़्श दिया और इस के साबिक़ा गुनाहों और नाफ़रमानियों को मुआ़फ़ फ़रमा दिया और मैं ही करम व एह़सान फ़रमाने वाला हूं।"

दरयाए नील के नाम एक ख़त़ :

मन्क़ूल है : "फ़िरऔन का त़रीक़ा येह था कि जब दरयाए नील का पानी कम हो जाता तो वोह अहले मिस्र को हुक्म देता कि वोह अपनी एक नौजवान दोशीज़ा को त़रह़ त़रह के ज़ेवरात से आरास्ता करें, रंग बिरंगे फ़ख़्रिया लिबास पहनाएं और हर त़रह़ की ज़ैब व ज़ीनत से उसे दुल्हन की त़रह़ मुज़य्यन करें जो शबे ज़फ़ाफ़ (या'नी शादी की पहली रात) अपने शोहर के पास आरास्ता पैरास्ता हो कर जाती है। फिर इस को दरयाए नील में डाल दें। चुनान्चे, लोग हर साल ऐसा ही करते। अकषर जाहिल लोगों का येह बात़िल अ़क़ीदा था कि दरयाए नील की सत़ह़े आब तब तक बुलन्द नहीं होती जब तक कि इस में दुल्हन की त़रह़ सजा संवार कर कोई लड़की न डाल दी जाए। येही त़रीक़ा अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के ज़मानए ख़िलाफ़त तक राइज रहा। मिस्र में आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के गवर्नर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ थे। जब उन को येह बात मा'लूम हुई तो उन्हों ने अहले मिस्र की इस बुरी आ़दत को इन्तिहाई नापसन्द किया और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को ख़त़ लिखा जिस में सारी सूरते ह़ाल बयान की। तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़ौरन ख़त़ का जवाब लिखा और एक रुक़्आ़ भी लिखा जिस में लिखा था :

अल्लाह तआ़ला के बन्दे उ़मर बिन ख़त़्त़ाब की जानिब से मिस्र के दरया **"नील"** की त़रफ़ !

اَمَّا بَعْد!

"ऐ नील ! अगर तू अपनी मरज़ी से जारी होता है तो मत जारी हो और अगर ख़ुदाए वाहि़द व क़ह्हार عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से जारी होता है तो हम उस की बारगाह में अ़र्ज़ करते हैं कि वोह तुझे जारी फ़रमा दे।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने वोह रुक़्आ़ दरयाए नील में डाल दिया और अहले मिस्र ने यक़ीन कर लिया कि अब येह ठाठें मारने लग जाएगा। चुनान्चे, जब लोगों ने सुब्ह़ की तो देखा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दरयाए नील को जारी होने का हुक्म फ़रमा दिया है और वोह एक ही रात में सोला गज़ बुलन्द हो गया। (العظمة لابی الشیخ الاصبھانی،باب صفة النیل ومنتھاہ، الحدیث ۹۴۰، ص۳۱۸)

चाहें तो इशारों से अपने काया ही पलट दें दुन्या की
येह शान है ख़िदतम गारों की सरकार का आलम क्या होगा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह सब कुछ हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की बरकात और हुस्ने ईमान की वजह से था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मिस्र के मुसलमानों को इस बुरी बिदअ़त से नजात अ़ता फ़रमाई । हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने लोगों को हुक्म दिया कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करें, उसी की ता'रीफ़ व तौसीफ़ करें और गुनाहों से सच्ची तौबा करें । और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने तमाम बुरे अफ़्आ़ल और लड़कियों को दरया में फैंकने की आ़दते बद ख़त्म कर दी ।

क़िब्त़ियों की मकरूह चाल :

जब क़िब्त़ियों (या'नी मिस्र के क़दीम ईसाई बाशिन्दों) ने देखा कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का ख़त़ डालने से दरया मौजज़न हो गया तो उन्हें बड़ी तक्लीफ़ हुई और वोह अपने मज़्हब को मज़्बूत़ करने के लिये मुख़्तलिफ़ ह़ीले करने लगे ताकि येह वाक़िआ़ उन की त़रफ़ मन्सूब हो जाए। लिहाज़ा उन्हों ने येह मकरूह चाल चली कि जब दरया की ख़ास़ तुग़्यानी का वक़्त क़रीब आता तो किसी को शहीद क़रार दे कर उस का ताबूत दरया में फैंक देते और उन्हों ने इस दिन को "ईद" बना लिया जो आज तक (या'नी साहि़बे किताब के ज़माने तक) इसी त़रह़ है ।

इसी त़रह़ अहले मिस्र ने साल के अय्याम में पांच दिनों की ज़ियादती कर रखी थी जिस को वोह "النَّسِیۡٓءُ" कहते । चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने पाक में इस का रद्दे बलीग़ करते हुए इरशाद फ़रमाया :

اِنَّمَا النَّسِیۡٓءُ زِیَادَۃٌ فِی الۡکُفۡرِ یُضَلُّ بِہِ ﴿8﴾ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا یُحِلُّوۡنَہٗ عَامًا وَّیُحَرِّمُوۡنَہٗ عَامًا لِّیُوَاطِـُٔوۡا عِدَّۃَ مَا حَرَّمَ اللّٰہُ فَیُحِلُّوۡا مَا حَرَّمَ اللّٰہُ ؕ زُیِّنَ لَہُمۡ سُوۡٓءُ اَعۡمَالِہِمۡ ؕ وَاللّٰہُ لَا یَہۡدِی الۡقَوۡمَ الۡکٰفِرِیۡنَ ۝ (پ۱۰، التوبۃ:۳۷)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : इन का महीने पीछे हटाना नहीं मगर और कुफ़्र में बढ़ना इस से काफ़िर बहकाए जाते हैं एक बरस इसे ह़लाल ठहराते हैं और दूसरे बरस इसे ह़राम मानते हैं कि उस गिनती के बराबर हो जाएं जो **अल्लाह** ने ह़राम फ़रमाई, और **अल्लाह** के ह़राम किये हुए ह़लाल कर लें उन के बुरे काम उन की आंखों में भले लगते हैं और **अल्लाह** काफ़िरों को राह नहीं देता ।* (1)

---

❶.....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं नसई लुग़त में वक़्त के मुअख़्ख़र करने को कहते हैं और यहां शहरे ह़राम की ह़ुरमत का दूसरे महीने की त़रफ़ हटा देना मुराद है ज़मानए जाहिलिय्यत में अ़रब अशहरे ह़ुर्म (या'नी ज़ुल क़ा'दा, ज़ुल ह़िज्जा, मुह़र्रम, रजब) की ह़ुरमत व अ़ज़्मत के मो'तक़िद थे। तो जब कभी लड़ाई के ज़माने में येह ह़ुरमत वाले महीने आ जाते तो उन को बहुत शाक़ गुज़रते। इस लिये उन्हों ने येह किया कि एक महीने की ह़ुरमत दूसरे की त़रफ़ हटाने लगे, मुह़र्रम की ह़ुरमत सफ़र की त़रफ़ हटा कर मुह़र्रम में जंग जारी रखते....... बक़िया अगले सफ़्ह़ा पर

येह दीन में उन की सरकशी की अ़लामत है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है कि उस ने हमें सब से ज़ियादा शरफ़ वाले दीन के साथ ख़ास फ़रमाया और इस में हमारे लिये ईमान के बहुत से रास्ते वाज़ेह़ किये और बिल खुसूस बनी अ़दनान के सरदार, सरकारे अब्दे क़रार, शाफ़ेए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से बेहरा मन्द फ़रमाया।

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ اَجْمَعِيْن

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दावते इस्लामी के) ज़िम्मेदार को जम्अ़ कर वाने का मा'मूल बना लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से **पाबन्दे सुन्नत** बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हि़फ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

बक़िया हा़शिया......और बजाए इस के सफ़र को माहे ह़राम बना लेते और जब इस से भी तह़रीम हटाने की हा़जत समझते तो इस में भी जंग ह़लाल कर लेते और रबीउ़ल अव्वल को माहे ह़राम क़रार देते। इस त़रह़ तह़रीम साल के तमाम महीनों में घुमती और उन के इस त़र्ज़े अ़मल से माहहाए ह़राम की तख़्सीस ही बाक़ी न रही। इस त़रह़ ह़ज को मुख़्तलिफ़ महीनों में घुमाते फिरते थे। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज्जतुल वदाअ़ में ए'लान फ़रमाया कि नसई के महीने गए गुज़रे हुए। अब महीनों के अवक़ात की वजहे इलाही के मुत़ाबिक़ हि़फ़ाज़त की जाए और कोई महीना अपनी जगह से न हटाया जाए और इस आयत में नसई को ममनूअ़ क़रार दिया गया और कुफ़्र पर कुफ़्र की ज़ियादती बताया गया। क्यूंकि इस में माह हाए ह़राम में तह़रीमे क़िताल को ह़लाल जानना और खुदा के ह़राम किये हुए को ह़लाल कर लेना पाया जाता है।"

बयान 37 : फ़ज़ाइले सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ

ह़म्दे बारी तआ़ला :

सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जो अपनी वह़दानिय्यत (या'नी एक होने) में मज़बूत़ व त़ाक़तवर है। पस वो वाहि़द व ग़ालिब है। वोह अपनी अज़लिय्यत (हमेशा से होने) में यक्ता व बे मिष्ल है। उस ने सारे जहान को ह़ैरत व बे बसी के समन्दर में ग़र्क़ कर दिया। उस ने मौजूदात को ह़िक्मत से बनाया और उस की बनाने की ह़िक्मत में कोई ऐ़ब है न कमज़ोरी। उस ने आस्मानी पोशाक को ख़ूब सूरती और उ़म्दा व अह़सन त़रीक़े के साथ चमकते सितारों से ज़ीनत बख़्शी। उस के सामने चांद और सूरज के नक़्श बनाए गोया कि ख़ालिस चांदी और ख़ालिस सोना है। शहाबे षाक़िब (या'नी टूटने वाले चमकदार सितारे) के ज़रीए़ चोरी छुपे सुनने से मुकम्मल ह़िफ़ाज़त फ़रमाई और इसे निगाहे इ़ब्रत रखने वाले अ़क़्लमन्दों के लिये निशानी बनाया। उस ने पानी की तह पर ज़मीन को बिछाया और इसे अपनी क़ुदरते कामिला से बेहतरीन त़रीक़े पर नुमायां फ़रमाया और पहाड़ों की मैख़ों के ज़रीए़ इसे क़रार बख़्शा। और मरदाने ग़ैब (औलिया की एक क़िस्म), अक़त़ाब और मुख़्लिस नेकूकारों का उसे मसकन बनाया। और इन ख़ास बन्दों को इ़ज़्ज़त व करामत की ख़िलअ़त (خِلعت या'नी अ़त़िय्या) अ़त़ा फ़रमाई। दुन्या को इन से फेर दिया तो वोह नहीं जानते कि **"माल बचाना और जम्अ़ करना"** किसे कहते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें, इशारा व किनाया को समझ जाने वालों के लिये ह़क़ को क़ाइम करने वाले ख़ुलफ़ा बनाया। और इन में से बा'ज़ को अपनी ममलुकत में नर्मी व आसानी और अपने बन्दों को नसीह़त करने के लिये ख़ास फ़रमाया जैसा कि सह़ाबए किराम और ताबेई़ने उ़ज़्ज़ाम जैसे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رِضْوَانُ اللّٰہِ عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن।

आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ का नाम व नसब :

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सा'द رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "आप का पूरा नाम उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन मरवान बिन ह़कम बिन अबी आ़स बिन उमय्या बिन अ़ब्दुश्शम्स" और वालिदए माजिदा का नाम "उम्मे आ़सिम बिन्ते आ़सिम बिन उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ है। और कुन्यत "अबू ह़फ़्स" है।

विलादते बा सआ़दत :

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की विलादते बा सआ़दत सन तिरसठ (63) हिजरी मदीना शरीफ़ में हुई। इसी साल उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का इन्तिक़ाल हुवा था।

(الطبقات الکبری لابن سعد،الرقم۹۹۵عمر بن عبد العزیز، ج۵، ص۲۵۳۔۲۵۴۔ تاریخ الاسلام للذھبی، حرف العین،عمر بن عبد العزیز، ج۲،ص۳۲۶)

ज़माने का बेहतरीन शख़्स :

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन राशिद عليه رحمة الله الواحد फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ हमारे पास तशरीफ़ लाए और जब वापस जाने लगे तो मेरे आक़ा ने मुझे हुक्म फ़रमाया : "तुम भी इन के साथ जाओ।" चुनान्चे, मैं भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के साथ जाने के लिये सुवार हुवा। जब हमारा गुज़र एक वादी से हुवा तो इस में रास्ते पर एक मुर्दा सांप पड़ा हुवा था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ अपनी सुवारी से नीचे उतरे और सांप को दफ़्न कर के फिर सुवार हो गए और हम अपनी मन्ज़िल की त़रफ़ चल पड़े। इतने में एक ग़ैबी आवाज़ आई : "يا خرقاء! يا خرقاء" हम आवाज़ तो सुन रहे थे लेकिन कोई नज़र न आ रहा था। हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "ऐ ग़ैबी आवाज़ देने वाले ! मैं तुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वासित़ा दे कर पूछता हूं कि अगर तुम सामने आ सकते हो तो आ कर हमें बताओ कि येह ख़िरक़ा क्या है ? उस ने जवाब दिया : "ख़िरक़ा वोही सांप है जिस को आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने दफ़्न कर दिया है। मैं ने एक दिन हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم को इस सांप से येह फ़रमाते सुना था, "ऐ ख़िरक़ा ! तुम चटियल ज़मीन में मरोगे और ज़माने का सब से बेहतर मोमिन तुम्हें दफ़्न करेगा।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने पूछा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़म फ़रमाए ! येह तो बताओ कि तुम कौन हो ?" उस ने बताया "मैं उन सात जिन्नात में से हूं जिन्हों ने इस वादी में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم की बैअ़त की थी।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने दोबारा पूछा : "क्या वाक़ेई तुम ने येह बात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी है ?" उस ने कहा : "जी हां।" येह सुनना था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ की आंखों से सैले अश्क रवां हो गया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ वहां से चल दिये।"

(تاریخ دمشق لابن عساکر، الرقم٥٢٤٢،عمر بن عبد العزیز، ج٤٥، ص١٤٥۔١٤٦) (حلیة الاولیاء، عمر بن عبد العزیز،الحدیث٧٤٦٠، ج٥، ص٣٧٥)

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عليه رحمة الله الواحد फ़रमाते हैं : "ख़ुलफ़ाए राशिदीन और हिदायत याफ़्ता इमाम सात हैं। जिन में से पांच दुन्या से रुख़्सत हो गए और दो बाक़ी हैं। हज़रते सय्यिदुना ख़ारिजा رَحْمَةُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : उन पांच के नाम येह हैं : (1)....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ (2).......अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ (3)......अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान गनी رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ (4).....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم और (5).....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ।"

(سنن ابی داؤد، کتاب السنة،باب فی التفضیل، الحدیث٤٦٣١، ص١٥٦٣)

आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ का मुहासबए नफ़्स :

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के पास एक टोकरी थी जिस में एक ऊनी जुब्बा और तौक़ होता था। आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ के लिये मकान के दरमियान एक कमरा मख़्सूस था जहां आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ नमाज़ अदा करते। आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ के इलावा इस कमरे में कोई दाख़िल न होता था। जब रात का आख़िरी वक़्त होता तो आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ टोकरी को खोलते और जुब्बा पहन कर तौक़ अपनी गर्दन में डाल लेते और तुलूए फ़ज्र तक बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मुनाजात और गिर्या व ज़ारी में मश्गूल रहते। फिर उस जुब्बे और तौक़ को टोकरी में रख देते। सारी ज़िन्दगी आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ का येही मा'मूल रहा।" (حلیة الاولیاء، عمر بن عبد العزیز، الحدیث ۷۲۶۸ ، ج۵، ص ۳۲٤)

दुन्या को तीन तलाकें :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के पड़ोसी हज़रते सय्यिदुना हारिष बिन ज़ैद رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब रात की तारीकी छा जाती और सितारे रोशन हो जाते तो आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ मरीज़ की तरह बेचैन व मुज़्तरिब हो जाते और ग़म ज़दा इन्सान की तरह रोने लगते। गोया मैं आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ को येह कहते सुन रहा हूं कि "ऐ दुन्या ! तू क्यूं मेरा पीछा करती है या मुझ में दिलचस्पी क्यूं लेती है ? जा, मुझ से दूर हो जा, किसी और को धोका दे, मैं तो तुझे तीन तलाकें दे चुका हूं, अब दोबारा तुझ से रुजूअ नहीं हो सकता। तेरी उ़म्र कम, लज़्ज़ात हक़ीर और ख़तरात ज़ियादा हैं। हाए ! अफ़्सोस ! ज़ादे राह कम, सफ़र तवील और रास्ता पुर ख़तर है।"

आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ जब नमाज़े फ़ज्र पढ़ लेते तो कुरआने हकीम को (पढ़ने के लिये) अपनी गोद में रख लेते। आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ के आंसूओं से दाढ़ी शरीफ़ तर हो जाती फिर जब किसी आयते ख़ौफ़ की तिलावत फ़रमाते तो बार बार उस को दोहराते रहते और बहुत ज़ियादा रोने की वजह से आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ उस आयत से आगे न बढ़ सकते और तुलूए आफ़्ताब तक येही कैफ़िय्यत रहती। سُبْحٰنَ اللّٰہ उन नूरानी चेहरों को देखने का कितना शौक़ है ? उन की बातें सुन कर कितनी ख़ुशी होती है ? और उन की निशानियां मिट जाने पर किस क़दर ग़म होता है ?

हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन ख़ौशब رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने हज़रते सय्यिदुना हसन رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ और हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से बढ़ कर ख़ौफ़ खाने वाला कोई नहीं देखा गोया जहन्नम इन ही के लिये पैदा की गई है। आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ जब मौत को याद करते तो आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ के बदन के जोड़ लरज़ने लग जाते।"

(الطبقات الکبری لابن سعد، الرقم ۹۹۵، عمر بن عبد العزیز، ج۵، ص ۳۱۱ـ حلیة الاولیاء، عمر بن عبد العزیز، الحدیث ۷۳۵۲، ج۵، ص ۳٤۹)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की दुन्या से बे रग़बती :

मन्क़ूल है कि एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस आयते मुबारका की तिलावत फ़रमाई :

وَمَا تَكُوْنُ فِيْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ فِيْهِؕ (پ۱۱، یونس:۶۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम किसी काम में हो और उस की त़रफ़ से कुछ क़ुरआन पढ़ो और तुम लोग कोई काम करो हम तुम पर गवाह होते हैं जब तुम इस को शुरूअ़ करते हो।"*

तो इस शिद्दत से गिर्या ज़ारी करने लगे कि घरवालों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की आवाज़ सुन ली। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ौजए मोह़तरमा ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा رحمۃاللہ تعالٰی علیہا ह़ाज़िर हुईं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के रोने के सबब बैठ कर ख़ुद भी रोने लगीं। फिर इन दोनों के रोने की वजह से तमाम घर वाले भी रोने लगे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बेटे अ़ब्दुल मलिक ने आ कर देखा कि सब रो रहे हैं तो अ़र्ज़ की : "ऐ अब्बा जान ! किस चीज़ ने आप को रुला दिया है ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जवाब दिया : ऐ मेरे बेटे ! तेरे बाप की ख़्वाहिश थी कि न वोह दुन्या को पहचाने और न ही दुन्या इस को पहचाने लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अब तो मुझे डर है कि कहीं जहन्नमियों में न हो जाऊं।" (موسوعۃ لابن ابی الدنیا، کتاب الرقۃ والبکاء، الحدیث ۹۱، ج۳، ص۱۸۷)

ऐ इस्लामी भाई ! ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आ़दिल होने के बा वुजूद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस क़दर डरते थे और तू ज़ुल्मो सितम करने के बा वुजूद इस क़दर निडर हो चुका है। ऐ वोह शख़्स जो तक़्दीर से बे ख़ौफ़ है और जिस के पास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश करने के लिये कोई उ़ज़्र नहीं ! ग़ौर से सुन ! विसाल के बारह साल बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ख़्वाब में देखा गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : "अभी अभी ह़िसाब से फ़ारिग़ हुवा हूं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा علیہ رحمۃ ربّ العلٰی फ़रमाते हैं कि "ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हर रात फ़ुक़हाए किराम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِم को इकठ्ठा करते और मौत, क़ियामत और आख़िरत की बातें होती रहतीं और सब इस त़रह़ रोते रहते गोया इन के सामने कोई जनाज़ा ह़ाज़िर है।" (تاریخ دمشق، الرقم۵۲۴۲عمر بن عبد العزیز، ج۴۵، ص۲۳۹۔تاریخ الخلفاء للسیوطی، عمر بن عبد العزیز، ص۱۹۱)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने ह़ब्बान رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رضی اللہ تعالٰی عنہ के पीछे सुब्ह़ की नमाज़ अदा की। आप ने इस आयत की तिलावत फ़रमाई وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْـُٔوْلُوْنَ ۝ (پ۲۳، الصّٰفّٰت:۲۴) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और इन्हें ठहराओ इन से पूछना है।"* (1) फिर इस को दोहराते रहे यहां तक कि बहुत ज़ियादा रोने की वजह से इस से तजावुज़ न फ़रमा सके।" (موسوعۃ لابن ابی الدنیا، کتاب الرقۃ والبکاء، الحدیث ۹۴، ج۳، ص۱۸۸)

---

(1).....**मुफ़स्सिरे शहीर** ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं ह़दीष शरीफ़ में है कि "रोज़े क़ियामत बन्दा जगह से हिल न सकेगा जब तक चार बातें उस से न पूछ ली जाएं। एक उस कि उ़म्र की किस काम में गुज़री, दूसरे उस का इ़ल्म कि इस पर क्या अ़मल किया, तीसरे उस का माल कि कहां से कमाया ? कहां ख़र्च किया ? चौथे उस का जिस्म कि इस को किस काम में लाया ?"

आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ की फ़िक्रे आख़िरत :

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि एक दफ़्आ हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ ख़ामोश बैठे थे जब कि आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ के दोस्त गुफ़्त्गू में मश्ग़ूल थे। आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ से अ़र्ज़ की गई, "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! आप को क्या हुवा कि आप कलाम नहीं फ़रमा रहे ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं अहले जन्नत के मुतअ़ल्लिक़ सोच रहा हूं कि वोह जन्नत में कैसे एक दूसरे की ज़ियारत करेंगे ? और अहले दोज़ख़ के बारे में सोच रहा हूं कि वोह जहन्नम में कैसे चिल्लाएंगे ?" फिर आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ रोने लगे।"

(الموسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب الرقة و البکاء، الحدیث ٦٤، ج٣، ص ١٨٢)

आंसूओं से परनाला बह पड़ा :

ख़ुरासान के एक बुज़ुर्ग का बयान है कि जब ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र मन्सूर ने बैतुल मुक़द्दस जाने का इरादा किया तो उन्हों ने एक ऐसे राहिब के पास पड़ाव किया जहां हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ ने भी पड़ाव किया हुवा था। उस ने राहिब से पूछा : "ऐ राहिब ! मुझे येह बताओ कि तुम ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ) में सब से अ़जीब बात कौन सी देखी ?" तो उस ने जवाब दिया : "जी हां ! ऐ ख़लीफ़ा ! एक रात हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ मेरे इस कमरे की संगे मर मर से बनी हुई छत पर थे और मैं इस के नीचे गुद्दी (या'नी गर्दन के पिछले हिस्से) के बल लैटा हुवा था कि अचानक परनाले से पानी के क़त्रे मेरे सीने पर गिरने लगे। मैं ने सोचा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! न मेरे पास पानी है और न ही आस्मान से बरस रहा है।" चुनान्चे, ह़क़ीक़ते ह़ाल से आगाही के लिये मैं छत पर चढ़ा तो क्या देखता हूं कि उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ सजदा रेज़ हैं और आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ के आंसू परनाले से नीचे गिर रहे हैं।"

(المرجع السابق، الحدیث ١٢٧، ج٣، ص ١٩٦)

हज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन ह़सन رَحۡمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि "मैं ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ को ख़ून के आंसू रोते देखा है।"

(الزھد للامام احمد بن حنبل، اخبار عمر بن عبد العزیز، الحدیث ١٦٨٩، ص ٢٩٨)

मन्क़ूल है कि जब से आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ को ओ़हदए ख़िलाफ़त सिपुर्द किया गया तब से आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ की इमारत में इज़ाफ़ा हुवा, न जानवरों में और न ही बीवियों या लौंडियों में। यहां तक कि आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को प्यारे हो गए।

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन मुहाजिर علیہ رحمۃ اللہ الناصر फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ ने मुझे हुक्म फ़रमाया कि जब मुझे ह़क़ से हटता पाओ तो अपने हाथ मेरे गिरेबान में डाल कर झिड़ते हुए कहना। "ऐ उ़मर ! क्या कर रहे हो ?"

(حلیة الاولیاء، عمر بن عبد العزیز، الحدیث ٧٢٧٢، ج٥، ص ٣٢٦)

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! इन्तिहाई तअ़ज्जुब की बात है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कामिल होने के बा वुजूद इस क़दर ख़ौफ़ रखते थे और तुम नाक़िस होने के बा वुजूद कितने बे ख़ौफ़ हो ? दुन्या आख़िरत का आईना है, जो दुन्या में करोगे आख़िरत में देखोगे, आज अ़मल करोगे कल देखोगे, अगर तुम अ़क़्लमन्द हो तो अपने बुरे आ'माल पर रोया करो और अगर गफ़्लत की नींद में हो तो अ़न क़रीब नींद की येह लज़्ज़त तुम से दूर चली जाएगी।

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! दुन्या जब सलफ़े सालिह़ीन के पास आती है तो वोह इसे आख़िरत के लिये आगे भेज देते हैं। हमारा उन से क्या मुवाज़ना है ? हम में से कितने शब बेदारी करते और कितने ख़्वाबे गफ़्लत में रात गुज़ार देते हैं।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का तक़्वा :

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास यमन का (माले) ख़िराज आता तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उसे बैतुल माल में जम्अ़ करा देते और ख़ुद तारीकी में रात गुज़ारते और इरशाद फ़रमाया करते : "जब मैं अ़वाम के मुआ़मलात निपटाने के लिये बेदार रहता हूं तो बैतुल माल का चराग़ जलाता हूं और जब अपने काम के लिये जागता हूं तो ज़ाती माल से चराग़ जलाता हूं।" (الطبقات الکبری لابن سعد،الرقم۹۹۵عمر بن عبد العزیز،ج۵،ص ۳۱۱۔۳۱۲۔بتغیر)

मन्क़ूल है कि एक मरतबा यमन का ख़िराज आया। जिस में बारह (12) ख़च्चरों पर लदा हुवा अ़म्बर (عَمۡـبَر) भी था। पहले माल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में पेश किया गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बैतुल माल में जम्अ़ कराने का हुक्म दिया फिर अ़म्बर लाने का हुक्म दिया। जब अ़म्बर लाया गया आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी नाक बन्द कर ली और हुक्म दिया कि इस को भी बैतुल माल में जम्अ़ कर दो। अ़र्ज़ की गई : "हुज़ूर ! येह अ़म्बर है, येह ख़ुश्बू सूंघने से कम नहीं होता।" तो इरशाद फ़रमाया : "इस की ख़ुश्बू ही से नफ़्अ़ उठाया जाता है।"

(حلیة الاولیاء،عمربن عبد العزیز، الحدیث۷۳۹۸، ج۵، ص ۳۶۰، بتغیر ۔ تاریخ دمشق لابن عساکر،الرقم۵۲۴۲، عمر بن عبد العزیز، ج۴۵،ص ۲۱۷، بتغیر۔ سیر اعلام النبلاء، الرقم۶۶۲، عمر بن عبد العزیز،ج۵،ص ۵۹۲۔بتغیر)

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बेटी ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास एक चमक दार मोती भेजा और अ़र्ज़ की, कि अगर आप मुनासिब समझें तो इस क़िस्म का एक और मोती मुझे भेज दें ताकि मैं इन को अपने दोनों कानों में डाल सकूं। तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने दो अंगारे अपनी बेटी की त़रफ़ भेजे और इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम अपने कानों में इन दो अंगारों को डालने की त़ाक़त रखती हो तो मैं तुम्हारी त़रफ़ मोती भेज दूंगा।"

हज़रते सय्यिदुना ईसा बिन सनान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं कि ''हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अज़ीज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने कोई घर ता'मीर नहीं किया। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से वजह पूछी गई तो इरशाद फ़रमाया : ''येह नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नते मुबारका है। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इस हाल में दुन्या से पर्दा फ़रमा गए कि ईंट पर ईंट रखी न सरकन्डे (या'नी काने) पर सरकन्डा (या'नी आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कोई इमारत न बनाई)।

(شعب الایمان للبیهقی،باب فی الزهد وقصر الامل،فصل فی ذم بناء ما لا......الخ،الحدیث۱۰۷۲۶،ج۷،ص۳۹۵)

आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का फ़क़्र :

हज़रते सय्यिदुना अबू दावूद वसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि : '' हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की एक सीढ़ी थी जिस पर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ चढ़ा करते तो उस से आवाज़ें आती थीं और कमज़ोर होने के सबब वोह हिलने लगती। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के दोस्तों में से किसी ने इस को गारे से मज़्बूत कर दिया। जब आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ उस पर चढ़े तो देखा कि अब की बार आवाज़ नहीं आ रही। दरयाफ़्त करने पर अ़र्ज़ की गई : ''फ़ुलां ने इसे ठीक कर दिया है।'' तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : ''इस को वापस अपनी हा़लत पर कर दो। क्यूंकि जब से मुझे ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारी सोंपी गई मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अ़हद कर रखा है कि कोई दीवार बनाऊंगा न इमारत।''

ऐ ता'मीरे दुन्या में उ़म्र बरबाद करने वाले ! ग़ौर से सुन ! इस का नफ़्अ़ बहुत कम और नुक़्सान बहुत ज़ियादा है। हमारे अस्लाफ़े किराम رَحْمَةُاللّٰه تعالی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن दुन्या बरबाद कर के आख़िरत आबाद करते थे जब कि तुम दुन्या आबाद कर के आख़िरत बरबाद करते हो।

ऐ इमारतों और घरों के दिलदादह ! मौत के जाम तुझ पर गरदिश कर रहे हैं। ऐ तारीक दिल वाले ! दिल में नूर कहां से आए जब कि तेरा बाति़न ख़राब है और ज़ाहिर आबाद है। अगर तू क़ब्रों को याद करता तो दुन्या आबाद करने की फ़िक्र न करता। ऐ मग़रूर ! अ़न क़रीब तुझ से दिनों और महीनों का हि़साब लिया जाएगा। ऐ वोह शख़्स जो हुज़ूरिये क़ल्ब के बिग़ैर नमाज़ पढ़ता है और जिस का रोज़ा ग़ीबत में छुपा हुवा है ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कब तक तुझ पर लुत्फ़ो करम करता रहेगा और तू उस से दूरी इख़्तियार करता रहेगा। ऐ नाशुक्रे ! कब तक वोह तुझ पर एह़सान फ़रमाता रहेगा और तू छुप छुप कर गुनाहों से उस का मुक़ाबला करता रहेगा और कब तक वोह तुझे मोहलत देता रहेगा कि तू तौबा कर ले क्यूंकि वोह तो ग़फ़ूरो रह़ीम है और जानता है चोरी छुपे की निगाह और जो कुछ सीनों में छुपा है (या'नी निगाहों की ख़ियानत और चोरी ना महरम को देखना और ममनूआ़त पर नज़र डालना। बह़वाला ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)।

हदिय्या क़बूल करने से इजतिनाब :

हज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं, हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہ सब्ज़ी से सह़री और इफ़्त़ारी करते। अकषर अवक़ात रोटी को नमक से मिला कर तनावुल फ़रमाते थे। एक मरतबा किसी ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہ को एक प्लेट बत़ौरे हदिय्या पेश की, इस में सेब और मुख़्तलिफ़ फल रखे थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہ ने इस में से कुछ खाए बिग़ैर वापस लौटा दिया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की गई : "क्या नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हदिय्या क़बूल न फ़रमाते थे ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "क्यूं नहीं, लेकिन रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ भेजा हुवा हदिय्या, हदिय्या था जब कि हमारे और हमारे बा'द वालों के लिये रिश्वत है।" (حلیة الاولیاء،عمر بن عبد العزیز، الحدیث۷۲۷۷، ج۵، ص۳۲۷)

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہ अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात से बाज़ रखते और लोगों को अ़त़िय्यात से नवाज़ते थे। हज़रते सय्यिदुना ख़ुज़ैमा अबू मुह़म्मद आ़बिद عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْوَاحِد का बयान है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे : "मैं किसी को माल देता हूं तो इसे कम ख़याल करता हूं क्यूंकि मुझे ह़या आती है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपने भाई के लिये जन्नत मांगूं और ख़ुद इस पर (माले) दुन्या में बुख़्ल करूं।" (موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب الاخوان، باب فی سخاء......الخ، الحدیث ۱۶۰، ج۸، ص۱۸۱)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہ ने लोगों को ग़नी कर दिया :

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद बिन ख़त्त़ाब عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْوَهَّاب फ़रमाते हैं कि "हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہ अढ़ाई साल मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ रहे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہ के विसाल से पहले एक शख़्स कषीर माल ले कर हमारे पास आया और कहने लगा : "जहां मुनासिब समझो येह माल फ़ुक़रा में तक़्सीम कर दो।" मगर उसे अपना माल ले कर वापस जाना पड़ा क्यूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہ ने अपने अ़त़िय्यात से लोगों को ग़नी कर दिया था।

(دلائل النبوة للبیهقی، باب ما جاء فی اخباره صلی اللّٰہ علیہ وآلہ وسلم بالشر الذی ــ بعمربن عبد العزیز ......الخ، ج۶، ص۴۹۳)

नोकरानी को पंखा झलने वाला ख़लीफ़ा :

हज़रते सय्यिदुना नज़्र बिन सहल رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه अपने वालिदे मोह़तरम के ह़वाले से बयान फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہ ने एक दिन अपनी नोकरानी से फ़रमाया : "मुझे पंखे से हवा दो ताकि मैं सो सकूं।" तो वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہ को पंखा झलने लगी और आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہ सो गए और नींद के ग़लबे से उस की भी आंख लग गई। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہ बेदार हुए तो उसे पंखा झलने लगे। जब कनीज़

बेदार हुई और आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ को पंखा झलते हुए देखा तो उस की चीखें निकल गईं। इस पर आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : "तू भी मेरी त़रह़ इन्सान है, तुझे भी मेरी त़रह़ गर्मी लगती है। लिहाज़ा मैं ने चाहा कि तुझे पंखा झलूं जैसे तू मुझे झल रही थी।"

(البداية والنهاية لابن كثير، عمر بن عبد العزيز، ج٦، ص٣٤٨، مختصرًا)

सुब्ह़ानल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारे सलफ़े सालिह़ीन رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن ने आ़जिज़ी व इन्किसारी को अपना शिआ़र बनाया, तक़्वा को अपनी चादर बनाया और दुन्या के लह्व व लअ़ब और धोकों से बचे रहे। दुन्या इन के सामने मुज़य्यन हो कर आई मगर जब इन्हों ने इसे आ़रिय्यतन दिये हुए कपड़े की त़रह़ पाया तो ठुकरा दिया, इस दुन्या ने कितनों को फ़िक्रे आख़िरत से रोके रखा, कितनी आंखें अन्धी कर दीं और कितनों ने इस के डर से इस का लिह़ाज़ रखा फिर भी इस ने दिन रात इन से कोई रिआ़यत न बरती।

पस ऐ इस्लामी भाई ! अपने पुख़्ता अ़ज़्म के साथ इस से दूरी इख़्तियार कर ले और आख़िरत को अपना ठिकाना बना ले और इस के तक्लीफ़ देह लिबास से इजतिनाब कर क्यूंकि ऐसा लिबास पहनने वाले कितने ही लोगों ने शर्मिन्दगी का लिबास पहना।

ह़ज़रते सय्यिदुना हिलाल बिन क़ैस رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ सिन 101 हिजरी माहे रजबुल मुरज्जब की इब्तिदा में मरज़ुल मौत में मुब्तला हुए और आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ का येह मरज़ बीस दिन तक रहा।"

(الطبقات الكبرى لابن سعد، الرقم٩٩٥عمر بن عبد العزيز، ج٥، ص٣١٦)

आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ को ज़ह्र दिया गया :

वलीद बिन हिश्शाम का बयान है।"मेरी एक यहूदी से मुलाक़ात हुई। उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ के ख़लीफ़ा बनने से पहले ही मुझे बता दिया था कि आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ख़लीफ़ा बनेंगे और अ़द्ल करेंगे। मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से मिल कर इन्हें येह बात बता दी। जब आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ख़लीफ़ा बन गए और चन्द रोज़ बा'द दोबारा उसी यहूदी से मेरी मुलाक़ात हुई तो वोह कहने लगा : "क्या मैं ने तुम्हें बताया न था कि आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ अ़न क़रीब ख़लीफ़ा बन जाएंगे ? और वोही हुवा जो मैं ने कहा था।" मैं ने कहा : "हां, ऐसा ही हुवा।" फिर उस ने मुझे बताया कि अब आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने ज़ह्र पी लिया है, लिहाज़ा इन्हें कहो कि अपना इलाज मुआ़लजा कर के जान की ह़िफ़ाज़त करें। वलीद बिन हिश्शाम का कहना है कि "फिर मेरी मुलाक़ात ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से हुई, मैं ने ज़ह्र का मुआ़मला ज़िक्र किया तो आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं वोह घड़ी जानता हूं जिस में मुझे ज़ह्र दिया गया था, अगर मेरी शिफ़ा अपने कानों की लौ छूने या ख़ुश्बू सूंघने में होती तो भी मैं इन्कार ही करता रहता।"

(حلية الاولياء، عمر بن عبد العزيز، الحديث٧٤٦٨، ج٥، ص٣٧٧، بتغير)

ज़हर पिलाने वाला ग़ुलाम आज़ाद :

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने मरज़ुल मौत में मुझ से दरयाफ़्त फ़रमाया : "लोग मेरे मुतअ़ल्लिक़ क्या कहते हैं ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "लोग कहते हैं कि आप पर जादू किया गया है।" तो इरशाद फ़रमाया : "मुझ पर कोई जादू नहीं किया गया, हां ! मुझे ज़हर पिलाया गया है।" फिर ग़ुलाम को बुलवाया और इस्तिफ़सार फ़रमाया : "तू ने मुझे ज़हर क्यूं दिया था ? वोह कहने लगा : "मुझे एक हज़ार दीनार दिये गए और आज़ादी का भी वा'दा किया गया।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "वोह हज़ार दीनार लाओ।" पस वोह रक़म ले आया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उसे बैतुल माल में जम्अ़ करवा दिया और ग़ुलाम से फ़रमाया : "जहां जी चाहे चले जाओ, आज से तुम आज़ाद हो।" (سیر اعلام النبلاء،الرقم٦٦٢عمر بن عبد العزیز،ج٥،ص٥٩٥۔بتغیر)

ख़्वाब में अच्छे ख़ातिमे की बिशारत :

हज़रते सय्यिदुना अबू हाज़िम علیہ رحمۃاللہ الناصر फ़रमाते हैं कि मैं ने देखा कि एक बार हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ किसी तक्लीफ़ पहुंचने के फ़ौरन बा'द महवे ख़्वाब थे। पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रोए, फिर मुस्कुराने लगे।" जब आंख खुली तो मैं ने अ़र्ज़ की, "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! ख़्वाब में कैसा मुआ़मला पेश आया कि आप रो पड़े, फिर मुस्कुराने लगे। "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पूछा : क्या तुम ने देख लिया था ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! और इर्द गिर्द के तमाम लोगों ने भी देख लिया था।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बताया : "मैं ने देखा कि क़ियामत क़ाइम हो चुकी है, क़ब्रों से उठने के बा'द लोगों की एक सो बीस सफ़ें हैं जिन में से अस्सी (80) "उम्मते मुहम्मदिय्या علٰی صاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की हैं। अचानक मुनादी ने निदा दी : "(हज़रते सय्यिदुना) अ़ब्दुल्लाह बिन अबी क़ुहाफ़ा (अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) कहां हैं ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने लबैक कहा तो फ़िरिश्तों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में खड़ा कर दिया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से आसान हिसाब लिया गया। फ़ारिग़ होने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को हुक्म फ़रमाया गया कि दाएं जानिब वालों (या'नी जन्नतियों) की तरफ़ जाओ। फिर अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को लाया गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का हिसाब किताब भी ब आसानी मुकम्मल हो गया फिर दोनों हज़रात (या'नी अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) को दुख़ूले जन्नत का हुक्म दिया गया। इस के बा'द अमीरुल मोअमिनीन उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को लाया गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से भी वैसा ही हिसाब लिया गया फिर जन्नत में जाने का हुक्म दिया गया।" फिर अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم को लाया गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से भी वैसा ही हिसाब लिया गया और दुख़ूले जन्नत का हुक्म दिया गया।"

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं, "जब पुकारा गया कि "उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ कहां है ? तो मुझे पसीना आ गया और मलाइका ने मुझे पकड़ कर बारगाहे इलाही عَزَّ وَجَلَّ में खड़ा कर दिया। अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने मुझ से मा'मूली मा'मूली चीज़ों और मेरे तमाम फ़ैसलों के मुतअ़ल्लिक़ पूछ गछ फ़रमाई, फिर मुझे बख़्श दिया और जन्नत में जाने का हुक्म हुवा। फिर मेरा गुज़र एक नीम मुर्दा शख़्स पर हुवा। मैं ने मलाइका से इस के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो उन्हों ने जवाब दिया कि आप खुद इस से पूछें येह जवाब देगा। मैं ने अपने पाउं से उसे ठोकर मारी तो उस ने सर उठा कर अपनी आंखें खोल दीं। मैं ने पूछा, "तुम कौन हो ?" तो वोह कहने लगा, आप कौन हैं ? मैं ने अपना नाम बताया। उस ने फिर पूछा, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? मैं ने जवाब दिया : "उस ने मुझ पर अपना रह़्मो करम फ़रमाया और मेरे साथ भी वोही मुआ़मला फ़रमाया जो गुज़श्ता ख़ुलफ़ा (या'नी चारों ख़ुलफ़ाए राशिदीन رِضْوَانُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن) के साथ फ़रमाया।" येह सुन कर उस ने मुझे मुबारक बाद दी। मैं ने फिर अपना सुवाल दोहराते हुए पूछा : "तुम कौन हो ?" जवाब मिला "मैं ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ षक़फ़ी हूं, मुझे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में पेश किया गया तो मैं ने उसे शदीद ग़ज़ब में पाया। मुझे मेरे हर मक़्तूल के बदले क़त्ल किया गया और ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ के बदले सत्तर मरतबा क़त्ल किया गया और अब मैं अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में उसी चीज़ का इन्तिज़ार कर रहा हूं जिस का तमाम कल्मागो इन्तिज़ार कर रहे हैं या'नी जन्नत या जहन्नम।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہِ फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ से येह ख़्वाब सुनने के बा'द मैं ने अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से अ़हद कर लिया कि आयन्दा किसी भी لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ पढ़ने वाले को आग की तक्लीफ़ नहीं दूंगा।"

(حلیۃ الاولیاء،عمر بن عبد العزیز،الحدیث۷۲۹۸، ج۵، ص۳۳۲، بتغیر)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों के बोझ की वजह से ज़ालिमों के लिये हलाकत है, उन को दुन्या भर में बुरे नामों से याद किया जाता है। उन के लिये बतौरे नंग व आ़र येही काफ़ी है कि उन्हें "अशरार" या'नी बुरे लोग कहा गया। उन के ज़ुल्म की लज़्ज़ात ख़त्म हो गईं और सिर्फ़ शर्मिन्दगी बाक़ी रह गई। उन्हों ने अ़ज़ाब के घर में ठिकाना बना लिया और उन के घरों पर ग़ैरों ने क़ब्ज़ा जमा लिया। उन ज़ालिमों को जहन्नम के कुंवों और पथ्थरों में अ़ज़ाब के लिये तन्हा छोड़ दिया गया। अब उन के लिये राह़त है न सुकून और न ही क़रार। येह कषरत से नहरों की मिष्ल आंसू बहाएंगे। उन्हों ने लम्बी उम्मीदों की इमारत को बहुत मज़बूत़ बनाया था मगर वोह अचानक गिर गई। ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ ने कितने क़त्ल किये। ज़ुल्म के कितने पहाड़ तोड़े। क्या उसे मा'लूम न था कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ज़ुल्म व सितम करने वालों से इन्तिक़ाम लेगा ? बरोज़े क़ियामत जब वोह उठेंगे तो उन का ह़श्र फ़ाजिरों के साथ होगा। अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿سَرَابِيۡلُهُمۡ مِّنۡ قَطِرَانٍ وَّتَغۡشٰى وُجُوۡهَهُمُ النَّارُ ۝﴾(1) (پ۱۳،ابراھیم:۵۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन के कुर्ते राल के होंगे और इन के चेहरे आग ढांप लेगी ।[1]

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के ख़ानदान का वसी :

मुस्लमा बिन अ़ब्दुल मलिक ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के मरज़ुल मौत में उन के पास ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुए : "या अमीरल मोअमिनीन ! आप अपने ख़ानदान का वसी किस को मुक़र्रर करते हैं ? इरशाद फ़रमाया : "मेरा वसी वोह है कि जब मैं ज़िक्रे इलाही से ग़ाफ़िल हो जाऊं तो वोह मुझे याद दिलाए ।" मुस्लमा ने दोबारा पूछा : "अपने ख़ानदान का वसी किस को बनाएंगे ?" तो इरशाद फ़रमाया "उन का वाली **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है और वोही सालिह़ीन का वाली है ।" (الطبقات الکبریٰ،الرقم۹۹۵،عمر بن عبد العزیز،ج۵، ص۳۱۷)

बा'दे विसाल चेहरा जगमगा उठा :

ह़ज़रते सय्यिदुना रजा बिन ह़यात رَحۡمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ फ़रमाते हैं कि "ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अपने मरज़े विसाल में मुझे हुक्म फ़रमाया : "ऐ रजा ! तुम मुझे ग़ुस्ल देने, कफ़न पहनाने और लह़द में उतारने वालों में रहना । जब लोग मुझे लह़द में उतार दें तो कफ़न की गिरह खोल कर मेरा चेहरा देखना क्यूंकि मैं ने तीन ख़ुलफ़ा को दफ़्न किया है । जब इन्हें क़ब्र में उतार कर कफ़न की गिरह खोली और चेहरा देखा तो वोह क़िब्ला से फिर कर सियाह हो चुका था ।" ह़ज़रते सय्यिदुना रजा رَحۡمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ का बयान है : "जब आप رَحۡمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ ने इन्तिक़ाल फ़रमाया तो मैं भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को ग़ुस्ल देने वालों में शामिल था । तदफ़ीन के बा'द जब मैं ने गिरह खोल कर आप رَحۡمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ का चेहराए अन्वर देखा तो वोह क़िब्ला रुख़ था और चौदहवीं के चांद की त़रह़ चमक दमक रहा था । येह देख कर मुझे बेह़द ख़ुशी हुई ।"

(الطبقات الکبری لابن سعد،الرقم۹۹۵عمر بن عبد العزیز،ج۵،ص۳۱۸۔بتغیرقلیل)

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदा बिन ह़स्सान عَلَیۡہِ رَحۡمَةُ الۡمَنَّان फ़रमाते हैं कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का वक़्ते विसाल क़रीब आया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : "सब मेरे पास से चले जाओ, यहां कोई शख़्स न रहे । मुस्लमा बिन अ़ब्दुल मलिक भी वहां मौजूद थे । चुनान्चे, सब लोग बाहर चले गए जब कि मुस्लमा बिन अ़ब्दुल मलिक और

1....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیۡہِ رَحۡمَةُ اللّٰہِ الۡہَادِی **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "सियाह रंग, बदबूदार जिन से आग के शो'ले और ज़ियादा तेज़ हो जाएं । (मदारिक व ख़ाज़िन) तफ़्सीरे बैज़ावी में है कि इन के बदनों पर राल लेप दी जाएगी । वोह मिस्ल कुर्ते के हो जाएगी, इस की सोज़िश और इस के रंग की वह़शत व बदबू से तक्लीफ़ पाएंगे ।"

इन की बहन ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मा رَحْمَةُاللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهَا जो कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ की अहलिया थी, दरवाज़े की देहलीज़ पर बैठ गए। फिर लोगों ने आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ को येह फ़रमाते सुना : "इन मुबारक चेहरों को मरह़बा ! येह प्यारी सूरतें न इन्सानों की हैं, न जिन्नों की।" रावी का बयान है कि "हम ने घर के एक कोने से इस आयए करीमा की तिलावत सुनी :

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِیْنَ لَا یُرِیْدُوْنَ عُلُوًّا فِی الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًاؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِیْنَ (پ۲۰،القصص:۸۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *येह आख़िरत का घर हम उन के लिये करते हैं जो ज़मीन में तकब्बुर नहीं चाहते और न फ़साद, और आ़क़िबत परहेज़गारों ही की है।*

फिर जब लोग कमरे में आए तो आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ सफ़रे आख़िरत पर रवाना हो चुके थे। आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ का चेहरए अक़्दस क़िब्ला रू था और आंखें और मुंह बंद थे।

(سیراعلام النبلاء،الرقم۶۶۲عمر بن عبد العزیز،ج۵،ص۵۹۶۔الطبقات الکبری لابن سعد، الرقم۹۹۵عمر بن عبد العزیز،ج ۵ ، ص ۳۱۸)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं पसन्द नहीं करता कि मुझ पर मौत की सख़्तियों को आसान कर दिया जाए क्यूंकि येही तो वोह आख़िरी चीज़ है जो बन्दए मोमिन को अज्रो षवाब अ़ता़ करती है।" (حلیة الاولیاء،عمر بن عبد العزیز،الحدیث۷۳۵۵،ج۵،ص۳۵۰، بتغیر)

येह भी मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं पसन्द नहीं करता कि मुझ से मौत की सख़्तियां आसान कर दी जाएं क्यूंकि येही तो वोह आख़िरी चीज़ है जिस के ज़रीए़ बन्दए मोमिन के गुनाह मिटा दिये जाते हैं।"

(الزھد للامام احمد بن حنبل،اخبار عمر بن عبد العزیز،الحدیث۱۷۱۸،ص۳۰۴،بتغیر)

आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ के कफ़न की क़ीमत :

मन्क़ूल है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ की बीमारी बढ़ गई तो आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ ने मुस्लमा बिन अ़ब्दुल मलिक को हुक्म फ़रमाया : "मेरे माल में से दो दीनार ले कर मेरे लिये कफ़न ख़रीद लाओ।" उस ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! आप जैसी क़द आवर शख़्सिय्यत का कफ़न दो दीनार में नहीं मिल सकता।" तो इरशाद फ़रमाया : "ऐ मुस्लमा ! अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ से राज़ी हुवा तो इस कम क़ीमत कफ़न को इस से बेहतर से बदल देगा और अगर नाराज़ हुवा तो येह आग का ईंधन बन जाएगा।"

मन्क़ूल है कि आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ को कच्चे धागे से बुने हुए कपड़े का कफ़न पहनाया गया। एक क़ौल के मुताबिक़ वोह यमनी चादर का था और आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ का मक़बरा सर ज़मीने हुम्स, दैरे समआ़न में है।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के मक़ामे दफ़्न की क़ीमत :

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने उस ज़मीन के मालिक को अपनी क़ब्र की जगह की क़ीमत भेजी तो उस ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं आप की क़ब्रे अन्वर से बरकत हासिल करूंगा, मैं ने येह जगह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के लिये मुबाह़ कर दी है।" लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने बिला क़ीमत जगह लेने से इन्कार कर दिया। (الطبقات الکبری لابن سعد،الرقم٩٩٥عمر بن عبد العزیز، ج٥، ص٣١٦ ـ بتغیر)

दूसरी रिवायत में है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने ज़मीन के मालिकों से अपनी क़ब्र की जगह दो दीनार के इ़वज़ ख़रीदी थी। फिर उन से इरशाद फ़रमाया : "मुझे अपनी ज़मीन के दरमियान में जगह दो और जब मैं दफ़्न कर दिया जाऊं तो तुम अपनी ज़मीन में हल चलाना और खेती बाड़ी करना और इमारत बनाना चाहो तो वोह भी बना सकते हो बल्कि इस ज़मीन से जिस त़रह़ चाहो नफ़्अ़ उठाओ कि मुझे इन में से कोई चीज़ नुक़्सान न पहुंचाएगी।"

(الطبقات الکبری لابن سعد،الرقم٩٩٥عمر بن عبد العزیز، ج٥،ص٣١٦)

मुद्दते ख़िलाफ़त और विसाले बा कमाल :

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की मुद्दते ख़िलाफ़त दस दिन कम तीस महीने थी और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की वफ़ाते ह़सरत आयात पैंतालीस (45) साल की उ़म्र में हुई। (الطبقات الکبری ، الرقم٩٩٥، ج٥،ص٣١٩،بتغیر)

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद रबई رَحۡمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ फ़रमाते हैं : "तौरात में लिखा हुवा है कि ज़मीन व आस्मान ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के विसाल पर चालीस दिन तक आहो फ़ुग़ां करते रहेंगे।" (حلیة الاولیاء،عمر بن عبد العزیز،الحدیث٧٤٦٥ ، ج٥،ص ٣٧٧)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के विसाल पर अहले बसरा का ग़म व अलम :

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का क़ासिद जब भी बसरा पहुंचता तो लोग ख़ुशी और मसर्रत से उस का इस्तिक़बाल करते क्यूंकि जब भी वोह आता तो फ़ुक़रा की ख़बर गीरी कर के उन पर बख़्शिश व अ़त़ा और माल व दौलत निछावर करता। चुनान्चे, जब क़ासिद मौत की ख़बर ले कर बसरा पहुंचा तो लोग अपनी आ़दत के मुत़ाबिक़ ख़ुश व ख़ुर्रम उस के पास आए। लेकिन जब उस ने उन्हें आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के विसाल की ख़बर सुनाई तो सब लोग फूट फूट कर रोने लगे। अहले बसरा को आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के मरने का ग़म इस लिये ज़ियादा था क्यूंकि येह उन के लिये बहुत बड़ी मुसीबत थी।

मन्क़ूल है कि एक जिन्न ने इन अल्फ़ाज़ में आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ का मरषिया कहा (या'नी इज़्हारे ग़म के अश्आर कहे) :

عَـنَّـا جَـزَاكَ مَـلِيْكُ الـنَّـاسِ صَـالِـحَةً　　فِيْ جَنَّةِ الْخُلْدِ وَالْفِرْدَوسِ يَا عُمَرُ!

أَنْـتَ الَّـذِيْ لَا نَـرٰى عَـدْلًا نَسُـرُّ بِـهٖ　　مِنْ بَعْدِهٖ مَا جَرٰى شَمْسٌ وَلَا قَمَرٌ

तर्जमा : (1).......ऐ सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ लोगों का अ़ज़ीम बादशाह عَزَّوَجَلَّ आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ को हमारी त़रफ़ से जन्नतुल ख़ुल्द और जन्नतुल फ़िरदौस में बेहतरीन जज़ा अ़त़ा फ़रमाए। (आमीन)

(2).....जब तक सूरज चांद तुलूअ़ होते रहेंगे, हम आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के बा'द ऐसा आ़दिल ख़लीफ़ा कभी न पाएंगे जिस से हम फ़रयाद कर सकें।

(اخبار مکة للفاکھی،ذکر السمر والحدیث فی المسجد الحرام، الحدیث۱۳۳۹،ج۲،ص۱۵۱)

जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने इन्तिक़ाल फ़रमाया तो मश्हूर अ़रबी शाइ़र जरीर ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ का मरषिया इन अल्फ़ाज़ में लिखा :

تَـنْـعٰى الـنُّـعَـاةُ أَمِيْـرَ الْـمُـؤْمِـنِيْنَ لَـنَا　　مُـفَـضَّلًا حَـجَّ بَيْـتِ الـلّٰـهِ وَاعْتَـمَـرَا

حَـمَـلْـتَ أَمْرًا عَظِيْمًا فَاسْتَطَعْتَ لَهٗ　　وَسِـرْتَ فِيْـهِ بِـأَمْـرِ الـلّٰـهِ مُـؤْتَـمِـرَا

तर्जमा : (1).......ख़बर देने वालों ने अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के विसाल की ख़बर को ह़ज व उ़मरह के साथ मिला दिया। इन्हों ने एक बहुत बड़ी बात को बरदाश्त किया और मैं ने इस अलम नाक ख़बर को मह़ज़ इस वजह से बरदाश्त कर लिया कि मैं अह़कामे इलाही عَزَّوَجَلَّ की बजा आवरी में मगन था। (حلیة الاولیاء، عمر بن عبد العزیز، الحدیث ۷۳۷٤، ج۵، ص ۳۵۵ـبتغیر)

अइम्मए हुदा के साथ ठिकाना :

मुस्लमा बिन अ़ब्दुल मलिक का बयान है कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के विसाल के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ को ख़्वाब में देख कर पूछा : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! कैसे ह़ालात पेश आए ?" इरशाद फ़रमाया : "ऐ मुसलमा ! अब मैं फ़ारिग़ हूं, ब ख़ुदा मैं ने दुन्या में कभी आराम न किया।" मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! आप इस वक़्त कहां हैं ? जवाब दिया : "मैं हिदायत याफ़्ता इमामों के साथ जन्नते अ़दन में हूं।" (تاریخ دمشق ،الرقم۵۲٤۲، عمر بن عبد العزیز، ج ٤۵،ص۲۶۲)

सब्ज़ पर्चा :

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ रात के वक़्त ग़ैर आबाद मसाजिद में तशरीफ़ ले जाते और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुश्नूदी ह़ासिल करने के लिये नमाज़ पढ़ते रहते।

जब सहरी का वक़्त होता तो पेशानी ज़मीन पर रख देते और मिट्टी पर अपने रुख़्सार मलने लगते और फिर तुलूए़ फ़ज्र तक रोते रहते। इसी त़रह जब एक रात अपनी आ़दत के मुत़ाबिक़ इन्हों ने किया और फिर जब फ़ारिग़ हो कर सर उठाया तो एक सब्ज़ पर्चा मिला जिस का नूर आस्मान तक फैला हुवा था। उस पर लिखा था :

"هٰذِهٖ بَرَاءَةٌ مِّنَ النَّارِ مِنَ الْمَلِکِ الْعَزِیْزِ لِعَبْدِهٖ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الْعَزِیْزِ" या'नी ख़ुदाए मालिक व ग़ालिब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से येह "**जहन्नम की आग से बराअत नामा**" है जो उस के बन्दे उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ को अ़त़ा हुवा है।" (تفسیر روح البیان، سورة الدخان ،تحت الآیة٣،ج٨ ص ٤٠٢)

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ اَجْمَعِیْن

क़ब्र की डांट

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, सुल्त़ाने बा क़रीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم *का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है "जब मय्यित को क़ब्र में रखा जाता है तो क़ब्र उस से कहती है : " ऐ इन्सान ! तेरी हलाकत हो, तुझे मेरे बारे में किस ने धोके में डाला ? क्या तुझे मा'लूम न था, कि मैं फ़ितनों का घर, अन्धेरी कोठड़ी, तन्हाई और वह़शत की जगह और किड़ों मकोड़ों का ठिकाना हूं। तुझे मेरे बारे में किस चीज़ ने धोके में डाला कि तू मेरे ऊपर अकड़ अकड़ कर चलता था, अगर मुर्दा नेक हो तो उस की त़रफ़ से कोई जवाब देने वाला क़ब्र को जवाब देता है और कहता है : "क्या तुझे मा'लूम नहीं कि येह शख़्स नेकी का हुक्म देता और बुराई से मन्अ़ करता था।" तो क़ब्र कहती है : "अगर येह बात है तो मैं इस पर सर सब्ज़ व शादाब हो जाती हूं, और उस का जिस्म नूर में बदल जाएगा और रूह़* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *की त़रफ़ परवाज़ कर जाएगी।"*

(المعجم الکبیر، الحدیث٩٤٢،ج٢٢،ص٣٧٧_المعجم الاوسط، الحدیث٨٦١٣،ج٦، ص٢٣٢)

बयान 38 :

तज़्किरए इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى

हम्दे बारी तआ़ला :

तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने उ़-लमा को आ'ला और बुलन्द मरातिब पर फ़ाइज़ फ़रमाया, और उस ने जब अपने अस्मा व सिफ़ात के असरार की समझ के लिये इन्हें चुन लिया तो मरातिब को इन के लिये पस्त कर दिया और इन्हें अह़वाले मा'रिफ़त के लिये झुका दिया। इन की अ़क़्लों के मोतियों को (खरे खोटे की) तमीज़ के धागे में मज़बूत़ी से पिरो दिया। इन की निशानियां तमाम आ़लम में फैला दीं। इन की क़लमों से ह़िक्मतों के चश्मे जारी कर दिये। तो इन में से हर कोई अपने मज़हब (या'नी फ़िक़्ह) के मुत़ाबिक़ लिखता है। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन षाबित رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने'मते इलाही عَزَّوَجَلَّ और इल्म व फ़हम में इस गुरौहे उ़-लमा के बादशाह हैं। और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ इस गुरौह में फ़ज़्लो कमाल में फ़ाइक़ हैं, इन्हों ने ह़दीषे पाक की राह हमवार की और अपने ह़िस्से के अह़काम मुरत्तब फ़रमाए। और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى इल्म की बहुत ज़ियादा चाहत रखने वाले हैं और इन्हों ने उ़-लमा को इल्म से बड़ा ह़िस्सा पहुंचाया। और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ उ़-लमा के सरदार हैं, इन पर ए'तिमाद किया जाता है पस वोह अपने पास किसी ग़म से नहीं घबराते। और येह तमाम अहले इल्म अपने मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ से अपनी नेक त़लब के पूरा होने के इन्तिहाई ख़्वाहिश मन्द और इस फ़रमाने ज़ीशान की अ़मली तफ़्सीर हैं जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल फ़रमाया है : وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا٠ (پ١٦،طٰهٰ:١١٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अ़र्ज़ करो कि ऐ मेरे रब्ब ! मुझे इल्म ज़ियादा दे।"

मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ऐसी ह़म्द बजा लाता हूं जिस के ज़रीए इख़्लास का कुछ ह़िस्सा पाने में कामयाब हो जाऊं। और मैं इस कलिमे "لَاۤاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ" (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं, वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं) की गवाही देता हूं ताकि इस के ज़रीए अपने गुनाहों को मिटा लूं और गवाही देता हूं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुजतबा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ास बन्दे और रसूल हैं। जिन की शरीअ़त के तुफ़ैल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दिलों से ग़म दूर फ़रमा दिये। आप पर दुरूदो सलाम हो और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आल व अस्ह़ाब, अज़्वाजे मुत़ह्हरात और अवलादे अमजाद पर रह़मत व सलामती नाज़िल हो जिन को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़ज़्ल व शरफ़ के आस्मान पर सितारों की मानिन्द तुलूअ़ फ़रमाया।

ता'रुफ़े इमामे शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى :

मुअर्रिख़ीन (तारीख़ लिखने वाले) फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى फ़िलिस्तीन के एक क़स्बे में पैदा हुए। आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की उम्र दो साल थी कि वालिदे मोहतरम इन्तिक़ाल फ़रमा गए। वालिदए माजिदा आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا ले आईं। वहीं आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने परवरिश पाई और अहले इल्म के इजतिमाआत में शिर्कत फ़रमाई। पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ पर इल्म का वोह दरवाज़ा खोला जो किसी पर न खोला था। यहां तक कि जब उम्र मुबारक पन्दरह बरस हुई तो मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के मुफ़्तिये आ'ज़म हज़रते सय्यिदुना मुस्लिम बिन ख़ालिद ज़नजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को फ़तवा की तरग़ीब देने लगे।

(كتاب الثقات لابن حبان، باب الميم، الرقم ۷٩٩٢ محمد بن ادريس الشافعي، ج٥، ص٤٠٦)

आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का नाम व नसब :

आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का पूरा नाम मुहम्मद बिन इदरीस बिन अब्बास बिन उष्मान बिन शाफ़ेअ है और नसब मुबारक अब्दे मुनाफ़ से जा कर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जा मिलता है। आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने बग़दाद शरीफ़ का सफ़र किया और दो साल वहां क़ियाम फ़रमाया। फिर मक्कए मुकर्रमा लौट आए और यहां चन्द माह क़ियाम फ़रमाया। फिर मिस्र तशरीफ़ ले गए और वहीं इन्तिक़ाल फ़रमाया।

आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ रात को तीन हिस्सों में तक़्सीम फ़रमा लेते : "तिहाई इल्म के लिये, तिहाई नमाज़ के लिये और तिहाई नींद के लिये।"

(احياء علوم الدين، كتاب العلم، باب ثانى فى العلم المحمود والمذموم واقسامهما واحكامهما، ج١، ص٤٤)

हज़रते सय्यिदुना रबीअ़ عليه رحمة الله الجلى का बयान है कि "हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى रोज़ाना एक कुरआने अज़ीम ख़त्म किया करते थे"

(تاريخ بغداد، الرقم ٤٥٤ محمد بن ادريس الشافعي، ج٢، ص٦١)

मज़ीद फ़रमाते हैं कि "हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى माहे रमज़ानुल मुबारक के नवाफ़िल में साठ (60) बार कुरआने पाक ख़त्म करते थे।"

(احياء علوم الدين، كتاب العلم، باب ثانى فى العلم المحمود والمذموم واقسامهما واحكامهما، ج١، ص٤٤)

आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की तिलावत :

हज़रते सय्यिदुना हसन कराबीसी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं ने कई बार हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى की मइय्यत में रात गुज़ारी। मैं ने देखा कि आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ एक तिहाई रात नमाज़ पढ़ते और कभी पचास आयात से ज़ियादा तिलावत न करते, अगर कभी ज़ियादा पढ़ते तो भी सो (100) आयात तक पहुंचते। जब किसी आयते रहमत की तिलावत करते तो बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अपने लिये और तमाम मोअमिनीन के लिये इत़ाअ़त

पर क़ाइम रहने की दुआ करते और जब आयते अ़ज़ाब पढ़ते तो उस से पनाह त़लब करते और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपने लिये और तमाम अहले ईमान के लिये नजात की दुआ करते।"

(تاریخ بغداد،الرقم٤٥٤، محمد بن ادریس الشافعی، ج٢، ص٦١)

आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते थे : "सोलह साल से मैं ने पेट भर कर खाना नहीं खाया क्यूंकि येह बदन को भारी करता दिल को सख़्त करता, ज़हानत को ख़त्म करता, नींद को ग़ाइब करता और बन्दे को इबादत में सुस्त करता है।"

(حلیۃ الاولیاء، الامام الشافعی، الحدیث١٣٣٨٦، ج٩،ص١٣٥)

आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते थे : "मैं ने सारी ज़िन्दगी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की न सच्ची क़सम खाई न झूटी।" (حلیۃ الاولیاء،الامام الشافعی،الحدیث ١٣٣٩١،ج٩،ص١٣٦،بدون"فی عمری")

एक बार आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से कोई मस्अला पूछा गया तो आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ख़ामोश रहे। जब आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से जवाब न देने की वजह पूछी गई तो आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : "ताकि मैं जान सकूं कि ख़ामोश रहने में बेहतरी है या जवाब देने में।"

(احیاء علوم الدین، کتاب العلم،باب ثانی فی العلم المحمود والمذموم واقسامھما واحکامھما، ج١، ص٤٤)

इमामे मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से इक्तिसाबे फ़ैज़ :

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुज़नी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی और हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल ह़कम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم फ़रमाते हैं कि " हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی हज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : "मैं आप से मुअत्ता पढ़ना चाहता हूं।" हज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "मेरे कातिब ह़बीब के पास चले जाओ, वोह उस की क़िराअत करता है।" आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप से राज़ी हो ! मुझ से एक सफ़ह़ा सुन लीजिये, अगर मेरा पढ़ना अच्छा लगे तो मैं आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ को पढ़ कर सुनाऊंगा वरना छोड़ दूंगा।" हज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : "पढ़िये !" आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक सफ़ह़ा पढ़ा और ख़ामोश हो गए।

हज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "मज़ीद पढ़िये।" आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ एक सफ़ह़ा पढ़ कर फिर ख़ामोश हो गए। इमामे मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने फिर इरशाद फ़रमाया : "मज़ीद पढ़िये !" आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने फिर पढ़ा तो इमामे मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ को बहुत अच्छा लगा। फिर आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने इमामे मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ

के हां पुरी मुअत्ता पढ़ी और जब दोबारा हाज़िरे ख़िदमत हुए तो इमामे मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इरशाद फ़रमाया : "कोई ऐसा शख़्स तलाश करो जो तुम्हें पढ़ाए।" तो हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡکَافِی ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! मैं चाहता हूं कि आप ख़ुद मेरा पढ़ना समाअ़त फ़रमाएं, अगर अच्छा न पढ़ सकूं तो कोई पढ़ाने वाला तलाश कर लूंगा।" इमामे मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इरशाद फ़रमाया : "अच्छा ! ठीक है, पढ़िये !" तो हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡکَافِی ने अज़् अव्वल ता आख़िर पूरी मुअत्ता शरीफ़ ज़बानी पढ़ डाली। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : "इस पर हज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने मुझे दुआ़ दी और इन्तिहाई ख़ुशी का इज़्हार फ़रमाया।"

(حلیۃ الاولیاء، الامام الشافعی، الحدیث١٣١٧٧/ ١٣١٧٨/ ١٣١٨٠، ج٩، ص٧٨، بتغیر)

हज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन सुलैमान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡکَافِی ने इरशाद फ़रमाया : "एक बार मैं ने मुहम्मद बिन हसन رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से लदा हुवा बुख़्ती ऊंट लिया जिस पर मेरे इन से सुने हुए इ़ल्म के सिवा कुछ न था।"

(حلیۃ الاولیاء، الامام الشافعی، الحدیث١٣١٩٨، ج٩، ص٨٦)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल ह़कम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡکَافِی ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने बचपन ही में इ़ल्म की तलाश शुरूअ़ कर दी थी जब कि मेरे पास कोई माल न होता था। चुनान्चे, मैं मक्तब जाता और तीर के छोटे छोटे टुकड़े ले कर इन पर अह़ादीषे मुबारका लिख लिया करता था।"

(حلیۃ الاولیاء، الامام الشافعی، الحدیث١٣١٩٥، ج٩، ص٨٥۔ بدون "فی الصغر")

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! लगातार मेह़नत कर के येह लोग मुराद को पहुंचे, सच्ची त़लब की बदौलत इन को तौफ़ीक़ की दौलत मिली और अ़ज़ीम हिम्मत की वजह से लोगों के पेशवा बन गए। ऐ सुनने वाले ! याद रख ! बुलन्द हिम्मतें इन्सान को अहम दर्जात के क़रीब कर देती हैं। जो अपने आप को थकाता है वोही आराम पाता है। ऐ फ़ुज़ूल कामों में उ़म्र बरबाद करने वाले ! तू हलाक हुवा जब कि बाक़ी लोग अपना मक़्सद पा कर कामयाब हो गए। ऐ बुरे अन्जाम से अपनी निगाहें हटाने वाले ! फ़ज़ाइल व मनाक़िब को ज़ाएअ़ करने से बच। तू ने खेल कूद में जो उ़म्र गुज़ारी वोह तुझे काफ़ी न हुई और अपनी ह़ालत की तब्दीली से भी तू ने कोई वा'ज़ व नसीह़त ह़ासिल न की और तेरी सारी उ़म्र नुक़्सान की कमाई में गुज़र गई और तू आख़िरत में इस ह़ालत में आएगा जो तुझे ख़ुश न करेगी।

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡکَافِی फ़रमाते हैं : "जिस ने दा'वा किया कि मैं ने दुन्या और ख़ालिक़े दुन्या की मह़ब्बत अपने दिल में जमअ़ कर ली तो उस ने झूट बोला।"

(احیاء علوم الدین، کتاب العلم، باب ثانی فی العلم المحمود والمذموم واقسامھما واحکامھما، ج١، ص٤٥)

सख़ावते इमाम शाफ़ेई عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡكَافِی :

हज़रते सय्यिदुना हुमीदी رَحۡمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیۡه फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡكَافِی अपने किसी काम के सिलसिले में यमन तशरीफ़ ले गए। जब वापस मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا आए तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ के पास दस हज़ार दिरहम थे। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ ने मक्का शरीफ़ से बाहर ही ख़ैमा नस्ब कर लिया। लोग आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ के पास आते रहे। जब आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ ख़ैमे से बाहर निकले तो सारा माल राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में तक़्सीम कर चुके थे।"

एक दफ़्आ हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡكَافِی हम्माम से बाहर निकले। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ के पास बहुत सा माल था। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ ने सारा माल हम्मामी को दे दिया। (المرجع السابق،ج١،ص٤٥،بتغيرٍقليلٍ)

एक दिन आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ सुवार थे कि कोड़ा हाथ से गिर गया। एक शख़्स ने उठा कर पेश किया तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ ने उसे सोने के पचास दीनार अता फ़रमाए।

(المرجع السابق،ج١،ص٤٥،بتغيرٍقليلٍ)

मज़ाक़ करने वाले दरज़ी को भी दुआए ख़ैर :

मन्क़ूल है कि एक बार हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡكَافِی ने किसी दरज़ी से क़मीस सिलवाई। वोह आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ के मक़ाम व मर्तबे से ना वाक़िफ़ था। उस ने मज़ाक़ करते हुए दाईं आस्तीन इतनी तंग कर दी कि इस में आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ का हाथ ब मुश्किल दाख़िल होता और बाईं इतनी कुशादा कर दी कि इस में सर भी दाख़िल हो सकता था। जब क़मीस आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ की ख़िदमत में पेश की गई तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए ! तंग आस्तीन वुज़ू में ऊपर चढ़ाने के लिये बेहतर है और खुली आस्तीन किताब रखने के लिये मौज़ू है।" इसी दौरान ख़लीफ़ए वक़्त का क़ासिद दस हज़ार दिरहम ले कर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ की ख़िदमत में हाज़िर हुवा। दरज़ी के पास ही उस की आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ से मुलाक़ात हो गई। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ ने क़ासिद को फ़रमाया : "इस दरज़ी को कपड़ों की सिलाई दे दो।" जब दरज़ी ने क़ासिद से आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो उस ने बताया : "येह हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡكَافِی हैं।" येह सुनते ही वोह आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ के पीछे हो लिया और क़दम बोसी कर के मा'ज़ेरत की, फिर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ की ख़िदमत में ही रहने लगा और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ के हल्क़ए अहबाब में शामिल हो गया।

हज़रते सय्यिदुना रबीअ़ عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَلِی फ़रमाते हैं : "जब मेरा निकाह हुवा तो हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡكَافِی ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "तू ने कितना महर मुक़र्रर किया ?"

अ़र्ज़ की : ''तीस (30) दीनार।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फिर पूछा : ''अपनी अहलिया को कितनी रक़म दी ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''छे दीनार।'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुझे एक थेली भिजवाई जिस में चोबीस (24) दीनार थे और 201 सिने हिजरी मुझे जामेअ़ मस्जिद में मुअज़्ज़िन लगवा दिया।'' (شعب الایمان للبیھقی،باب فی الجود والسخاء، الحدیث ١٠٩٦٢،ج٧، ص ٤٥٢)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इरशादे पाक है कि ''अपनी जान पर सब से ज़ियादा ज़ुल्म करने वाला वोह है कि जब वोह कोई मर्तबा ह़ासिल कर ले तो अपने अ़ज़ीज़ व अक़ारिब पर ज़ुल्म करे, शनासा व वाक़िफ़े कार लोगों को न पहचाने, शुरफ़ा को ह़क़ीर जाने और साह़िबे फ़ज़्ल पर तकब्बुर करे।''

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ :

एक दिन किसी ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی के सामने इस आयते मुबारका की तिलावत की :

هٰذَا یَوۡمُ لَا یَنۡطِقُوۡنَ ۙ﴿۳۵﴾ وَ لَا یُؤۡذَنُ لَهُمۡ فَیَعۡتَذِرُوۡنَ ﴿۳۶﴾ (پ٢٩،المرسلٰت:٣٥۔٣٦) 《1》

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *येह दिन है कि वोह बोल न सकेंगे। और न उन्हें इजाज़त मिले कि उ़ज़्र करें।* (1)

तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का रंग मुतग़य्यिर हो गया, रोंगटे खड़े हो गए और जिस्म के जोड़ कप-कपाने लगे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बेहोश हो कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए। जब इफ़ाक़ा हुवा तो अ़र्ज़ की : ''या इलाही عَزَّوَجَلَّ मैं झूटों के ठिकाने और ग़ाफ़िल लोगों के मुंह फेरने से तेरी पनाह चाहता हूं। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अहले मा'रिफ़त के दिल तेरे लिये झुक गए और मुश्ताक़ लोगों की गर्दनें तेरी हैबत के सामने झुक गईं। ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ मुझे अपना फ़ज़्लो करम अ़त़ा फ़रमा और अपने पर्दए बख़्शिश में छुपा ले और अपने लुत़्फ़ो करम से मेरी कोताहियां मुआ़फ़ फ़रमा दे।''

(احیاء علوم الدین،کتاب العلم،باب ثانی فی العلم المحمود والمذموم واقسامھما واحکامھما،ج١،ص٤٥)

ऐ मेरे इस्लामी भाई ! देख ! जब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی का इतने इ़ल्म के बा वुजूद येह ह़ाल है तो तू बे इ़ल्म होने के बा वुजूद कैसे बे ख़ौफ़ है। ग़ाफ़िल जाहिलों के लिये बरबादी है ! इन की उ़म्रें छीन ली जाएंगी। ज़िन्दगी के शबो रोज़ ख़त्म हो जाएंगे और गुनाह लिख दिये जाएंगे। अब वोह नसीह़त ह़ासिल करने से बहरे या अन्धे हैं जब कि नसीह़तें तो वाज़ेह़ हैं।

1....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : ''न कोई ऐसी हुज्जत पेश कर सकेंगे जो इन्हें काम दे।'' ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि ''रोज़े क़ियामत बहुत से मौक़ेअ़ होंगे, बा'ज़ में कलाम करेंगे, बा'ज़ में कुछ बोल न सकेंगे। और दर ह़क़ीक़त उन के पास कोई उ़ज़्र ही न होगा क्यूंकि दुन्या में हुज्जतें तमाम कर दी गईं और आख़िरत के लिये कोई जाए उ़ज़्र बाक़ी नहीं रखी गई। अलबत्ता उन्हें येह ख़याले फ़ासिद आएगा कि कुछ ह़ीले बहाने बनाएं। येह ह़ीले पेश करने की इजाज़त न होगी। जुनैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि ''उस को उ़ज़्र ही क्या है, जिस ने ने'मत देने वाले से रूगर्दानी की, उस की ने'मतों को झुटलाया, उस के एह़सानों की नसपासी की।''

जैसा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने हकीम में इरशाद फ़रमाता है :

فَمَالِ هٰۤؤُلَآءِ الْقَوْمِ لَايَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ حَدِيْثًا ○ (پ۵،النسآء:۷۸) ﴿2﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो उन लोगों को क्या हुवा कोई बात समझते मा'लूम ही नहीं होते।

सख़्त दिल वाले ज़िक्र के इजतिमाआत से ऐसे ही निकलते हैं जैसे दाख़िल हुए थे। चुनान्चे, रब्बे अज़ीम عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ○ (پ۲۲،یٰسٓ:۱۰) ﴿3﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उन्हें एक सा है तुम उन्हें डराओ या न डराओ वोह ईमान लाने के नहीं।

नसीहतें इन के दिलों के गिर्द घूमती रहती हैं मगर दाख़िल होने का रास्ता नहीं पातें। अल्लाह क़दीर عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى سَمْعِهِمْ ط وَعَلٰۤى اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ز (پ۱،البقرة:۷) ﴿4﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह ने उन के दिलों पर और कानों पर मोहर कर दी और उन की आंखों पर घटा टोप है। (1)

इस के बा वुजूद मायूस नहीं होना चाहिये, इस लिये कि शराब एक रात में सिर्का बन जाती है। चुनान्चे, मुक़ल्लिबुल कुलूब रब्ब عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ط (پ۱۸،النور:۴۴) ﴿5﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह बदली करता है रात और दिन की।

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ इस्लाम लाने से पहले घर से निकले तो सख़्त दिल थे लेकिन जब ईमान लाए तो दिल साफ़ होने पर नर्म पड़ गए।

ऐ इस्लामी भाई ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रहम फ़रमाए ! अगर तुझे अंधेरे ढांप लें तो उ-लमाए इस्लाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की पैरवी कर।

1....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : "ख़ुलासए मतलब येह है कि कुफ़्फ़ार ज़लालत व गुमराही में ऐसे डूबे हुए हैं कि हक़ देखने, सुनने, समझने से इस तरह महरूम हो गए जैसे किसी के दिल और कानों पर मोहर लगी हो और आंखों पर पर्दा पड़ा हो। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि बन्दों के अफ़्आल भी तहते कुदरते इलाही عَزَّوَجَلَّ हैं।"

एक नौजवान को नसीहत :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बलवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "मैं हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی के साथ बग़दाद के किसी अ़लाक़े में था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक नौजवान को देखा जो अच्छे त़रीक़े से वुज़ू न कर रहा था। तो उसे इरशाद फ़रमाया : "ऐ लड़के ! अपना वुज़ू ठीक कर, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में तुझ पर एह़सान फ़रमाएगा।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तशरीफ़ ले गए। नौजवान ने जल्दी से वुज़ू मुकम्मल किया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से जा मिला। वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को पहचानता न था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए और इस्तिफ़सार फ़रमाया : "क्या कोई काम है ?" अ़र्ज़ की : "जी हां ! मुझे भी वोह इ़ल्म सिखाइये जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप को सिखाया है।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "जान ले ! जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त पा ली वोह नजात पा गया। जिस ने अपने दीन के मुआ़मले में ख़ौफ़ किया वोह तबाही से बच गया। जिस ने दुन्या में ज़ोहद इख़्तियार किया तो कल (बरोज़े क़ियामत) जब वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से इस का षवाब देखेगा तो इस की आंखें ठंडी होंगी।"

(फिर फ़रमाया) "क्या तुझे कुछ मज़ीद न बताऊं ?" उस ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! ज़रूर बताइये।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : "जिस में तीन ख़ूबियां जम्अ़ हो गईं उस का ईमान मुकम्मल हो गया : (1).....जो नेकी का हुक्म दे और ख़ुद भी इस पर अ़मल करे (2)....जो बुराई से मन्अ़ करे और ख़ुद भी इस से बाज़ रहे और (3).....जो हुदूदे इलाही عَزَّوَجَلَّ की हि़फ़ाज़त करे।" फिर इरशाद फ़रमाया : "क्या कुछ और भी बताऊं ?" अ़र्ज़ की : 'क्यूं नहीं, ज़रूर बताइये।" तो इरशाद फ़रमाया : "दुन्या से बे रग़बत और आख़िरत का शौक़ रखने वाला हो जा और अपने हर काम में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से सच का मुआ़मला कर नजात पाने वालों के साथ नजात पा जाएगा।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ चल दिये। बा'द में उस नौजवान ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो उसे बताया गया : "येह हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی थे।" (احیاء علوم الدین، کتاب العلم، باب ثانی فی العلم المحمود والمذموم ......الخ، ج۱، ص۴۵، بتغیر)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इरशाद फ़रमाते हैं : "मैं चाहता हूं कि लोग (मेरे) इस इ़ल्म से फ़ाइदा उठाएं और मेरी त़रफ़ इस में से किसी शै को मन्सूब न करें।" (المرجع السابق، ج۱، ص۴۶)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "मैं ने जिस से भी मुनाज़रा किया तो येही ख़्वाहिश रही कि उसे ह़क़ की तौफ़ीक़ मिले, वोह सीधे रास्ते पर रहे, उस की मदद की जाए और उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हि़फ़ाज़त व रिआ़यत ह़ासिल हो। मैं ने जिस से भी कलाम किया तो येही पसन्द किया

कि उस के सामने हक़ ज़ाहिर हो और उस की कृतअन कोई परवाह न की, कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी ज़बान पर हक़ वाज़ेह करता है या दूसरे की ज़बान पर ।"

(حلية الاولياء،الامام الشافعی، الحديث ١٣٣٤١، ج٩، ص١٢٥۔المرجع السابق،ج١، ص٤٦، بتغير)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इरशाद फ़रमाते हैं : "मैं ने जिस पर हक़ और दलील क़ाइम की और उस ने मेरी बात मान ली तो मैं ने उस की ता'ज़ीम व तौक़ीर की और उस की महब्बत मेरे दिल में बैठ गई । और जिस ने हक़ बात में मेरा इन्कार किया और मेरी दलील की (बेजा) मुख़ालफ़त की तो वोह मेरी निगाहों से गिर गया और मैं ने उसे छोड़ दिया ।"(حلية الاولياء،الامام الشافعی،الحديث١٣٣٣٧،ج٩،ص١٢٥)

हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "मैं चालीस साल से जो भी नमाज़ पढ़ता हूं इस में हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی के लिये दुआ ज़रूर करता हूं ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साहिब ज़ादे ने अर्ज़ की : "ऐ वालिदे मोह़तरम ! येह शाफ़ेई कौन शख़्स है जिस के लिये आप दुआ करते हैं ? तो हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی दुन्या के लिये सूरज की त़रह़ और लोगों के लिये आ़फ़िय्यत का बाइ़स थे तो अब बताओ ! क्या इन दो सिफ़ात में कोई उन का नाइब है ?" (احياء علوم الدين،کتاب العلم،باب ثانی فی العلم المحمود والمذموم،ج١،ص٤٦)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ऐसे ही सालेह़ व पाक बाज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام दुन्या के लिये सूरज की त़रह़ और लोगों के लिये आ़फ़िय्यत का बाइ़स हैं । इन का नाइब भी कोई नहीं । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन की बरकत से बलाएं दूर करता और आसानियां नाज़िल फ़रमाता है । बरकत आ़म होती है और रह़मत बटती है ।

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ येह कैसे अ़ज़ीम लोग थे । दुन्या से कनारा कशी इख़्तियार कर के बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में ह़ाज़िर हो जाते थे जब कि तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को छोड़ कर दुन्या की त़रफ़ भागते हो । अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام शैत़ान को नामुराद करते थे जब कि तुम से शैत़ान मस्ख़री करता है । तुम्हारे और उन के दरमियान कितनी दूरी है ? दुन्या तुम पर हुक्मरानी कर रही है जब कि वोह दुन्या पर हुक्मरानी करते थे । पस तुम दुन्या के ग़ुलाम हो जब कि वोह इस की ग़ुलामी से आज़ाद थे । उन के पास सफ़रे आख़िरत का ज़ादे राह था इस लिये उन्हें शर्मिन्दगी न उठानी पड़ी । उन्हों ने ज़माने की क़द्र जानी तो ज़िन्दगी में होशियार रहे । अगर तुम सह़री के वक़्त उन का दीदार करो तो उन्हें हिदायत के सितारे पाओगे । नहीं, बल्कि वोह तो हिदायत के चांद हैं जो रात की तारीकी में बारगाहे इलाही में खड़े हो कर उ़ज़्र पेश करते रहते हैं जब कि तुम नींद और ग़फ़्लत के तूफ़ानी समन्दरों में डूबे हुए हो ।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की दुन्या से बे रग़बती :

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی को दुन्या से कोई रग़बत न थी । लग़्व और बेहूदा बातों से इजतिनाब फ़रमाते थे । चुनान्चे, एक रोज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक आदमी

के पास से गुज़रे जो किसी आ़लिम की बुराई कर रहा था । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ हमारी त़रफ़ मुतवज्जेह हुए और फ़रमाया : "अपने कानों को ग़ीबत सुनने से पाक रखो जैसे अपनी ज़बान को ग़ीबत करने से बचाते हो । इस लिये कि ग़ीबत सुनने वाला भी करने वाले का शरीक होता है । बिला शुबा बे वुक़ूफ़ शख़्स जब अपने बरतन में गंदगी देखता है तो इसे तुम्हारे बरतनों में उंडेलना चाहता है । अगर बे वुक़ूफ़ की बात का सख़्ती से इन्कार कर दिया गया तो इन्कार करने वाला इसी त़रह़ ख़ुश बख़्ती से सरफ़राज़ हो जैसे बे वुक़ूफ़ बद बख़्ती का मुस्तह़िक़ बनता है ।"

(حلیۃ الاولیاء،الامام الشافعی،الحدیث ۱۳۳٦٤، ج۹،ص ۱۳۰)

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ाहिर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ علیہ رحمۃاللہ الکبیر एक मुत्तक़ी और नेक शख़्स थे । वोह ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡکَافِی से तक़्वा के मसाइल दरयाफ़्त करते तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ इन के तक़्वा की वजह से इन की त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाते । एक बार इन्हों ने अ़र्ज़ की : 'सब्र, आज़माइश और त़ाक़त व क़ुदरत में से कौन सी चीज़ अफ़्ज़ल है ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने जवाब दिया : "त़ाक़त, कि येह अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ السَّلَام का दर्जा है और आज़माइश के बा'द ही त़ाक़त मिलती है । जब किसी की आज़माइश होती है और वोह सब्र करता है तो उसे त़ाक़त दी जाती है । क्या आप देखते नहीं कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को आज़माइश में डाला फिर उन्हें त़ाक़त अ़त़ा फ़रमाई । ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को आज़माइश में मुब्तला फ़रमाया फिर उन्हें क़ुव्वत अ़त़ा फ़रमाई । इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का इम्तिह़ान लिया फिर उन्हें भी त़ाक़त दी और ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को भी आज़माइश में मुब्तला फ़रमाया कर अ़ज़ीम बादशाहत अ़त़ा फ़रमाई । पस त़ाक़त का दर्जा सब से बुलन्द है ।" (احیاء علوم الدین، کتاب العلم،باب ثانی فی العلم المحمود والمذموم واقسامھما واحکامھما، ج۱،ص٤٦)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक बिन अ़ब्दुल ह़मीद मैमूनी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : "मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की बारगाह में ह़ाज़िर था कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡکَافِی का ज़िक्रे ख़ैर हुवा तो मैं ने देखा कि इमाम अह़मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ इन की बहुत ता'ज़ीम कर रहे थे । फिर इरशाद फ़रमाया : "मुझे येह ह़दीष पहुंची है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इस उम्मत में हर सो साल के सिरे पर एक ऐसा शख़्स भेजेगा जो इस (उम्मत) के लिये उस के दीन को क़ाइम करेगा ।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الملاحم، باب مایذکر فی قرن المائۃ،الحدیث ٤٢٩١، ص١٥٣٥)

(फिर फ़रमाया) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ पहली सदी के मुजद्दिद थे और मैं उम्मीद करता हूं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡکَافِی दूसरी सदी के मुजद्दिद हैं ।" (المستدرک،کتاب الفتن والملاحم، باب ذکر بعض المجدّدین فی ھذہ الامۃ، روایۃ استاذ ابی الولید، تحت الحدیث ٨٦٣٩، ج٥، ص ٧٣٠)

हज़रते सय्यिदुना हारून बिन सईद बिन हैषम ईली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى जैसा कोई न देखा। आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ मिस्र में हमारे पास तशरीफ़ लाए तो लोगों ने कहा : "एक कुरैशी फ़क़ीह हमारे पास आए हैं।" पस हम आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ के पास हाज़िर हुए तो आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ नमाज़ पढ़ रहे थे। हम ने आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से ज़ियादा ख़ूब सूरत चेहरे वाला और आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से अच्छी नमाज़ पढ़ने वाला कोई नहीं देखा। हम इन्तिज़ार करते रहे जब आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने नमाज़ अदा कर ली तो गुफ़्तगू का आग़ाज़ फ़रमाया। हम ने आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से अच्छा कलाम करने वाला भी कोई न देखा।"

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى आम तौर पर हक़ीक़त, दुन्या से बे रग़बती और दिलों के भेदों के मुतअ़ल्लिक़ कलाम फ़रमाया करते थे। आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाया करते : "वोह शख़्स दुन्या से कैसे बे रग़बत हो सकता है जो आख़िरत की मा'रिफ़त नहीं रखता ? वोह कैसे दुन्या से ख़लासी पा सकता है जो ख़ुद को झूटी तम्अ़ से ख़ाली न करे ? वोह कैसे सलामती पा सकता है जिस की ज़बान और हाथ से लोग महफ़ूज़ न हो ? वोह कैसे हिक्मत पा सकता है जिस का कलाम रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये न हो ?"

किसी ने आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से पूछा : "रिया क्या है ?" तो आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुझे अपने अ़मल में ख़ुद पसन्दी का डर हो तो देख ! तू किस की रिज़ा का तालिब है ? किस षवाब की तरफ़ रग़बत रखता है ? किस अ़ज़ाब से डरता है ? किस आफ़िय्यत का शुक्र अदा करता है ? और किस मुसीबत को याद करता है ?" (जब तू इन में से किसी चीज़ में ग़ौरो फ़िक्र करेगा तो अपने आ'माल को हक़ीर पाएगा।)

(احیاء علوم الدین،کتاب العلم،باب ثانی فی العلم المحمود والمذموم واقسامھما واحکامھما،ج۱،ص٤٦)

इमामे शाफ़ेई رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ के चन्द अश्आ़र

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى के बहुत से अश्आ़र हैं जो हिक्मत व नसीहत पर मुश्तमिल हैं। हम यहां पर उन का ज़िक्र करेंगे जो हम तक पहुंचे और आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से सहीह तौर पर षाबित हैं।

आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ का कलाम हक़ाइक़ और दक़ीक़ मआ़नी पर भी मुश्तमिल है। जिस में से कुछ हज़रते सय्यिदुना सुवैद बिन सईद علیہ رحمۃاللہ الحمید ने नक़्ल फ़रमाए हैं। चुनान्चे, फ़रमाते हैं कि "हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى मदीनए मुनव्वरा में नमाज़े फ़ज्र के बा'द बैठे हुए थे कि एक आदमी हाज़िरे ख़िदमत हुवा और अ़र्ज़ की : "मैं गुनाहों के सबब इस बात से ख़ौफ़ज़दा हूं कि अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर पेशी के वक़्त मेरे पास सिवाए तौहीद के कोई अ़मल न होगा।" हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ बन्दए

मोमिन ! अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे मुआफ़ी से मायूस करने का इरादा भी कर ले तो भी तेरे गुनाह बख़्शना उस के लिये नामुमकिन नहीं। क्यूंकि वोह खुद इरशाद फ़रमाता है :

وَمَنۡ يَّغۡفِرُ الذُّنُوۡبَ اِلَّا اللّٰهُ ﴿6﴾ (پ٤، اٰل عمران:١٣٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और गुनाह कौन बख़्शे सिवा अल्लाह के।

और अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुझे जहन्नम की सज़ा और हमेशा उस में ठहराने का इरादा फ़रमा लिया होता तो तुझे तौहीद व मा'रिफ़त की तौफ़ीक़ न देता। फिर आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہ ने चन्द अश्आर पढ़े, जो येह हैं :

إِنْ كُنْتَ تَغْدُو فِي الذُّنُوبِ جَلِيدًا ۔ وَتَخَافُ فِي يَومِ الْمَعَادِ وَعِيدًا

فَلَقَدْ أَتَاكَ مِنَ الْمُهَيْمِنِ عَفْوَهُ ۔ وَأَتَاحَ مِنْ نِعَمٍ عَلَيْكَ مَزِيدًا

لَا تَيْأَسَنَّ مِنْ لُطْفِ رَبِّكَ فِي الْحَشَا ۔ فِي بَطْنِ أُمِّكَ مُضْغَةً وَوَلِيدًا

لَوْ شَاءَ أَنْ تَصْلِيْ جَهَنَّمَ خَالِدًا ۔ مَا كَانَ أَلْهَمَ قَلْبَكَ التَّوحِيدًا

तर्जमा : अगर तू गुनाहों में पिघल कर बर्फ़ बन चुका है और अब क़ियामत के दिन की सज़ा से डर रहा है तो याद रख ! हिफ़ाज़त फ़रमाने वाला खुदा عَزَّوَجَلَّ तुझ पर अफ़्वो करम फ़रमाएगा और तुझे अपनी मज़ीद ने'मतें फ़राहम करेगा। ऐ शख़्स ! तू अपनी मां के पेट के अन्दर लोथड़े और नोज़ाईदा बच्चे की त़रह़ था तो तब भी उस ने अपने लुत्फ़ो करम से तुझे मायूस न किया। अगर वोह तुझे हमेशा जहन्नम में जलाना चाहता तो तेरे दिल में अपनी वह़दत पर ईमान दाख़िल न करता।

येह सुन कर वोह आदमी रो पड़ा और इ़बादत शुरूअ़ कर दी। वोह आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہ के कलाम से बहुत मसरूर हुवा।

इमामे शाफ़ेई رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہ की चन्द दुआएं

आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہ ने कई अश्आ़र और दुआएं इरशाद फ़रमाई हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मरवान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُالرَّحۡمٰن फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡکَافِی के इल्मी ह़ल्क़े में बैठता और आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہ से सीख कर लिखा करता। एक सुब्ह़ मैं आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہ के पास ह़ाज़िर हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہ को मस्जिद में मौजूद पाया। आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہ नमाज़ अदा फ़रमा रहे थे। मैं बैठ गया ह़त्ता कि आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہ नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो दुआएं फ़रमाईं। इन में से कुछ मैं ने याद कर लीं। जिन में से एक येह है :

اَللّٰهُمَّ امْنُنْ عَلَيْنَا بِصَفَاءِ الْمَعْرِفَةِ وَهَبْ لَنَا تَصْحِيْحَ الْمُعَامَلَةِ فِيْمَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ عَلَى السُّنَّةِ وَارْزُقْنَا صِدْقَ التَّوَكُّلِ عَلَيْكَ وَحُسْنِ الظَّنِّ بِكَ وَامْنُنْ عَلَيْنَا بِكُلِّ مَا يُقَرِّبُنَا اِلَيْكَ مَقْرُوْنًا بِعَوَافِي الدَّارَيْنِ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम पर एह़सान फ़रमाते हुए ख़ालिस मा'रिफ़त अ़त़ा फ़रमा। हमें उन मुआ़मलात की दुरुस्तगी अ़त़ा फ़रमा जो हमारे और तेरे दरमियान हैं। और अपनी ज़ात पर सच्चा तवक्कुल और हुस्ने यक़ीन अ़त़ा फ़रमा। ऐ सब से बढ़ कर रह़म फ़रमाने वाले ! अपनी ख़ास रह़मत से हमें हर वोह भलाई अ़त़ा फ़रमा जो दुन्या व आख़िरत की आ़फ़ियतों के साथ साथ तेरा क़ुर्ब बख़्शे।" (आमीन)

हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ दुआ़ से फ़ारिग़ हुए तो मस्जिद से बाहर तशरीफ़ ले गए। मैं भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के पीछे हो लिया। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ठहर गए और आस्मान को देख कर ज़ेरे लब कुछ अश्आ़र पढ़ने लगे।

मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने अंगूठी अ़ता फ़रमाई :

हज़रते सय्यिदुना रबीअ़ عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ القَوِی फ़रमाते हैं, मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْکَافِی को फ़रमाते सुना : ''क़ियामे यमन के दौरान मैं ने ख़्वाब में देखा गोया कि मैं त़वाफ़ की जगह बैठा हूं। इसी दौरान शेरे ख़ुदा, हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم तशरीफ़ लाए। मैं जल्दी से आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ की त़रफ़ लपका, सलाम अ़र्ज़ किया और मुसाफ़ह़ा किया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने मुझे सीने से लगा लिया और अपनी उंगली से अंगूठी निकाल कर मेरी उंगली में पहना दी।'' सुब्ह़ के वक़्त जब मैं नींद से बेदार हुवा तो मुअ़ब्बिर (या'नी ख़्वाब की ता'बीर बताने वाले) से अपना ख़्वाब बयान किया तो उस ने मुझे बताया : ''ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! आप को ख़ुश ख़बरी हो ! आप का मस्जिदे ह़राम में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم का दीदार करना अ़ज़ाबे नार से नजात की बिशारत है। आप का इन से मुसाफ़ह़ा करना यौमे ह़िसाब में अमान है और रहा इन का आप की उंगली में अंगूठी पहनाना तो इस का मत़लब येह है कि अ़न क़रीब सारी दुन्या में आप की शोहरत ऐसी होगी जैसी हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم की है।'' (تاریخ بغداد،الرقم٤٥٤، محمد بن ادریس الشافعی، ج٢، ص٥٨، بتغیر)

इमामे शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْکَافِی की दुआ़ :

या रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी पाकीज़गी के नूर व अ़ज़मत और तेरे जलाल की बरकत की पनाह मांगता हूं हर आफ़त व मुसीबत और शरीर जिन्न व इन्स के पेश आने से, सिवाए उस के जो ख़ैर लाए। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू ही मेरी पनाह गाह और जाए क़रार है लिहाज़ा मैं तुझी से पनाह त़लब करता हूं। ऐ वोह ज़ात जिस के आगे बड़े बड़े जाबिरों की गर्दनें झुक जाती हैं और बड़े बड़े सरकशों की गर्दनें ख़म हो जाती हैं। या इलाही عَزَّوَجَلَّ मैं तेरे सामने रुस्वा होने, ऐ़बों का पर्दा चाक होने, तेरी याद भूल जाने और तेरे शुक्र से मुंह मोड़ने से तेरे जलाल व करम की पनाह में आता हूं। मेरे दिन रात, आराम व सुकून, और सफ़र तेरे ह़िफ़्ज़ व अमान में हैं। तेरी ह़म्दो षना मेरा ओढ़ना बिछोना है। तेरे सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं। मैं हर ऐ़ब से तेरी पाकी बयान करता हूं और तेरे वजहे करीम की तकरीम करता हूं। ऐ सब से बढ़ कर रह़्म फ़रमाने वाले ! मुझे रुस्वाई और अपने बन्दों के शर से मह़फ़ूज़ फ़रमा और बुरी ख़ुफ़्या तदबीर से मह़फ़ूज़ फ़रमा। मुझ पर अपनी ह़िफ़ाज़त के ख़ैमे औढ़ा दे और मुझे अपनी इनायत की ह़िफ़ाज़त में दाख़िल फ़रमा दे। (आमीन)

(حلیة الاولیاء،الامام الشافعی،الحدیث١٣٢٠٢/١٣٢٠٣،ج٩،ص٨٧)

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! सलफ़े सालेहीन, उ़-लमाए किराम और मुजतहिदीने उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام इस दुन्याए फ़ानी से कूच कर गए लेकिन उन की निशानियां बाक़ी हैं, उन के त़रीक़े मिटा दिये गए मगर उन की ख़ूबियां और अच्छी बातें नहीं मिटाई जा सकीं ।

इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى का सोना हमारी इ़बादत से बेहतर है :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى की बहुत ज़ियादा इ़ज़्ज़त करते थे । कषरत से आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का ज़िक्रे ख़ैर करते और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ता'रीफ़ करते । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की एक नेक सीरत बेटी थी जो रात शब बेदारी में और दिन रोज़े में गुज़ारती । वोह सालेह़ीन के वाक़िआ़त को बहुत पसन्द करती थी और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى को देखना चाहती थी क्यूंकि उन के वालिदे मोह़तरम इमाम अह़मद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की बहुत ज़ियादा अ़ज़्मत व शान बयान करते थे । एक दफ़्आ़ इत्तिफ़ाक़न ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के हां रात गुज़ारी । आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की बेटी बहुत ख़ुश हुई । उसे उम्मीद थी कि आज इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى के अफ़्आ़ल या'नी उन की इ़बादत, और कलाम को देखने और सुनने का ख़ूब मौक़अ़ मिलेगा । जब रात हुई तो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ नमाज़ और यादे इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये खड़े हो गए जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى चित लैटे रहे । बच्ची फ़ज्र तक आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को इसी ह़ालत में देखती रही और सुब्ह़ अपने बाप से अ़र्ज़ की : "मैं ने देखा कि आप ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى की बहुत ता'ज़ीम करते हैं लेकिन मैं ने तो उन को आज रात नमाज़, ज़िक्र या दीगर औरादो वज़ाइफ़ में मश्ग़ूल नहीं पाया ।" अभी येही गुफ़्तगू हो रही थी कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى तशरीफ़ ले आए । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से पूछा : "रात कैसी गुज़री ? इरशाद फ़रमाया : "इस से ज़ियादा बरकत व नफ़्अ़ वाली और अच्छी रात मैं ने पहले कभी न देखी ।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने पूछा : "वोह कैसे ?" तो फ़रमाने लगे :"वोह यूं कि मैं ने आज रात पीठ के बल लैटे लैटे सो मसाइल अख़्ज़ किये, जो तमाम के तमाम मुसलमानों के नफ़्अ़ के लिये हैं ।" फिर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने रुख़्सत ली और तशरीफ़ ले गए । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपनी साह़िब ज़ादी से फ़रमाया : "येह ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى का आज रात का अ़मल था । वोह सोए हुए इस से अफ़्ज़ल अ़मल कर रहे थे जो मैं ने खड़े हो कर इ़बादत करते हुए किया ।"

ऐ मेरे इस्लामी भाई ! इन बर्गुज़ीदा बन्दों की ह़रकात व सकनात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये थी। इन के अफ़्आ़ल व अह़वाल उसी के लिये थे। इन का ज़िक्रो फ़िक्र भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही के लिये था। इन का क़ियाम इत़ाअ़ते इलाही عَزَّوَجَلَّ था। इन की नींद सदक़ा थी। इन का ज़िक्र रब्ब عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ करना था। इन का सुकूत फ़िक्रे आख़िरत था। इन का इल्म उम्मत के लिये शिफ़ा और रह़मत था। बिला शुबा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें बहुत कुछ अ़त़ा फ़रमाया, इन की ता'रीफ़ व तौसीफ़ फ़रमाई और इन्हें इस्लाम का इमाम और लोगों का पेशवा बनाया।

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى इल्मी मुआ़मलात और ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ में रात गुज़ारते, ह़क़ाइक़ व असरार की सरज़मीन में घूमते और फ़िक्रे आख़िरत के पाकीज़ा बाग़ात में सैर व सियाह़त करते। जब सह़री की हलकी हलकी हवा के झोंके मह़सूस होते तो आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ बेचैन हो जाते, रंग मुतग़य्यिर हो जाता और मह़ब्बत की आग भड़क उठती और ऐसी ह़ालत त़ारी हो जाती जैसे अरबाबे अह़वाल (या'नी अहले मा'रिफ़त) के इलावा कोई नहीं जान सकता। आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से इस की वजह पूछी गई तो इरशाद फ़रमाया : "अगर सह़री के वक़्त तुम पर वोह बातें ज़ाहिर हों जो मुझ पर होती हैं तो दुन्या से बे रग़बत हो जाओ और आख़िरत की तय्यारी पर कमर बस्ता हो जाओ।"

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ اَجْمَعِيْن

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दावते इस्लामी के) ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिय कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

बयान : 39 तज़किरए इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

हम्दे बारी तआला :

तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने उ़–लमा के लिये इल्म को दलील व षुबूत बनाया और उन्हें इस के ज़रीए ग़नी कर दिया अगर्चे वोह माल व नसब में कम हों। और इसी इल्म के ज़रीए ह़ज़रते सय्यिदुना इदरीस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जन्नत से सरफ़राज़ हुए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें रिफ़्अ़त व बुलन्दी अ़ता फ़रमाई और मुन्तख़ब फ़रमाया। इसी इल्म की त़लब में ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और ह़ज़रते सय्यिदुना यूशअ़ बिन नून عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने पुख़्ता अ़ज़्म कर के सफ़र इख़्तियार फ़रमाया यहां तक कि सफ़र में मशक़्क़त उठाई। (क़ुरआने पाक में बयान फ़रमाया :)

’’وَاِذْ قَالَ مُوْسٰی لِفَتٰىهُ لَاۤ اَبْرَحُ حَتّٰۤی اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَیْنِ اَوْ اَمْضِیَ حُقُبًا 0(پ۱۵، الکھف: ۶۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और (याद करो) जब मूसा ने अपने ख़ादिम से कहा मैं बाज़ न रहूंगा जब तक वहां न पहोंचूं जहां दो समन्दर मिले हैं या क़रनों (मुद्दतों तक) चला जाऊं।[1]

इसी इल्म के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को तमाम इन्सानों का बाप बनाया और फ़िरिश्तों को हुक्म दिया कि आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को सजदा करें। तो सब ने सजदा किया मगर इब्लीस (या'नी शैत़ान) ने सजदा करने से इन्कार कर दिया (और ला'नत का मुस्तह़िक़ ठहरा)।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की अवलाद से मुख़्तलिफ़ क़बीले और ख़ानदान बनाए और तक़्दीर का फ़ैसला उन पर जारी फ़रमाया। और उस ने हर शै के लिये एक ज़रीआ़ बनाया। उ़–लमा को अपनी इनायत से तौफ़ीक़ बख़्शी तो वोह रग़बत व शौक़ से ख़िदमते इल्म में लग गए। उस ने उन्हें अपने अह़काम की समझ और पहचान अ़ता फ़रमाई जिस के ज़रीए इन्हों ने क़द्रो मन्ज़िलत और मरातिब ह़ासिल किये। उस ने इन्हें दुन्या में मख़्लूक़ के लिये सरदार और राहनुमा बनाया जिस के ज़रीए इन्हों ने बुज़ुर्गी व अख़्लाक़ ह़ासिल किया। उस ने इन के दिलों में ऐसे अन्वार दाख़िल फ़रमा दिये जिन की रोशनी में वोह ऐसी बईद बातों तक पहुंच जाते हैं

1....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान मे इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : ''जिन (या'नी ख़ादिम) का नाम यूशअ़ इब्ने नून है जो ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की ख़िदमत व सोह़बत में रहते थे और आप से इल्म अख़ज़ करते थे और आप के बा'द आप के वलिए अ़हद हैं। बह़रे फ़ारस व बह़रे रूम जानिबे मशरिक़ में और मजमउ़ल बह़रैन वोह मक़ाम है जहां ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام की मुलाक़ात का वा'दा दिया गया था। इस लिये आप ने वहां पहुचने का अ़ज़्मे मुसम्मम किया और फ़रमाया कि मैं अपनी सअ़्य जारी रखूंगा जब तक कि वहां पहोंचूं। अगर वोह जगह दूर हो (तो मुद्दतों चलता रहूंगा) फिर येह ह़ज़रात रोटी और नमकीन भुनी मछली जम्बील में तौशा के त़ौर पर ले कर रवाना हुए।''

जिन तक रसाई मुश्किल हो। उस ने उन्हें इल्म के ज़रीए इ़ज़्ज़त व जलालत और रो'ब व हैबत का लिबास पहनाया तो वोह बर गुज़ीदा व मुन्तख़ब बन्दे हो गए। उस ने उन्हें अपने अह़काम की ह़लावत अ़त़ा फ़रमा दी लिहाज़ा उन्हें त़लबे इल्म के सफ़र में कोई थकन न हुई और जब वोह क़ियामत के दिन गुरोह दर गुरोह ह़ाज़िर होंगे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन्हें करामत के ताज पहनाएगा और उन के लिये येह निदा होगी : ''اَھْلًا وَّ سَھْلًا مَرْحَبًا''

मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ऐसी ह़म्द करता हूं जिसे नजात का वसीला बना सकूं। और मैं इस कलिमे ''لَااِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ'' (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं, वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं) की गवाही देता हूं ताकि ख़ुश करने वाली इ़ज़्ज़त व रिफ़्अ़त का सामान हो जाए। और मैं गवाही देता हूं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ास बन्दे और रसूल हैं और जो ख़ास नबी और पसन्दीदा पैग़म्बर हैं। आप पर दुरूदो सलाम हो और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के आल व अस्ह़ाब, अज़्वाजे मुत़ह्हरात और नेक व पसन्दीदा अवलाद पर हमेशा रह़मत व सलामती नाज़िल हो जब तक आस्मान बादल ज़ाहिर करता रहे और मूसलाधार बारिश बरसाता रहे। (आमीन)

तआ़रुफ़े इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ अबू उ़मर बिन अ़ब्दुल बर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْبَر ने किताब ''الانساب'' में तह़रीर फ़रमाया है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस बिन अबी आ़मिर अस्बह़ी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ मदीनतुर्रसूल عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के इमाम हैं। यहीं से ह़क़ ज़ाहिर और ग़ालिब हुवा। यहीं से दीन की इब्तिदा और इसे शोहरत मिली। यहीं से शहर फ़त्ह़ किये गए और मुसलसल मदद मिली। इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ को **''आ़लिमे मदीना''** कहा जाता है। आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ के इल्म की शोहरत हर त़रफ़ फैली और आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से इक्तिसाबे इल्म के लिये लोगों ने दूरो दराज़ के सफ़र तै किये। (سیر اعلام النبلاء، الرقم ۱۱۸۰، مالك الامام، ج۷،ص۳۸۸،مفہوماً)

फ़तावा नवेसी :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ सतरह (17) बरस की उ़म्र में तदरीसे इल्म की मसनद पर तशरीफ़ फ़रमा हुए। आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ के असातिज़ा भी आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ के पास मसाइल के ह़ल के लिये आते थे। आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने तक़रीबन नव्वे (90) साल की उ़म्र पाई और सत्तर साल तक फ़तवा नवेसी फ़रमाई और लोगों को इल्म सिखाते रहे।

जलीलुल क़द्र ताबेई़ने किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़िक़्ह और ह़दीष का इल्म ह़ासिल करते रहे। मश्हूर अइम्मए ह़दीष और उ़-लमाए किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم ने आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ

से अहादीष रिवायत कीं । जिन में से चन्द के नाम येह हैं : (1).......इमामुल सुन्ना हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन शुहाब ज़ोहरी (2).....फ़क़ीहे अहले मदीना, हज़रते सय्यिदुना रबीआ बिन अब्दुर्रहमान (3).....हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन सईद अन्सारी और (4).....हज़रते सय्यिदुना मूसा बिन अक़्बा (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن) येह तमाम आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के असातिज़ए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام हैं और इन सब ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से अहादीष रिवायत कीं ।" (سير اعلام النبلاء، الرقم ۱۱۸۰، مالك الامام، ج۷، ص۳۸۵، مفصلًا)

आलिमे मदीना कौन हैं ?

ताबेईन व तबए ताबेईन عليهم رحمة الله المبين फ़रमाते हैं कि इमाम मालिक عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق वोह आलिम हैं जिन की बिशारत हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दी थी । चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ईसा मुहम्मद बिन ईसा तिर्मिज़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی अपनी किताब "जामेए तिर्मिज़ी" में हदीष शरीफ़ नक़्ल फ़रमाते हैं : "इल्म मुन्क़तेअ हो जाएगा तो आलिमे मदीना से ज़ियादा इल्म वाला बाक़ी न रहेगा ।"

(جامع الترمذی، ابواب العلم، باب ماجاء فی عالم المدينة، الحديث ۲٦٨۰، ص ۱۹۲۲، مختصرًا)

दूसरी हदीषे पाक में है : "दुन्या में इस (आलिमे मदीना) से बढ़ कर कोई आलिम न होगा, लोग इस की तरफ़ सफ़र कर के आएंगे ।"

(ترتيب المدارك وتقريب المسالك، الفصل الاول فی ترجيحه من طريق النقل، ج۱، ص۱۸)

एक हदीषे पाक में यूं है "अन क़रीब लोग (इल्म के लिये) सफ़र करेंगे तो आलिमे मदीना से ज़ियादा इल्म वाला कोई न पाएंगे ।" (المستدرک، کتاب العلم، باب یوشک الناس ......الخ، الحدیث ۳۱۴، ج ۱، ص ۲۸۰)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने उयैना رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मुहद्दिषीने किराम के नज़दीक "**आलिमे मदीना**" से मुराद हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं ।

(التمهيد لابن عبد البر، زيدبن رباح، تحت الحديث ۱۲۲، ج۲، ص٦٧٤)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रज़्ज़ाक़ رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "हमारी राए येह है कि हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के इलावा कोई भी "आलिमे मदीना" के नाम से मा'रूफ़ नहीं । लोगों ने हुसूले इल्म के लिये आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तरफ़ जितना सफ़र किया इतना किसी की तरफ़ नहीं किया ।" (جامع الترمذی، ابواب العلم، باب ماجاء فی عالم المدينة، تحت الحديث ۲٦٨۰، ص ۱۹۲۲، مختصرًا)

हज़रते सय्यिदुना अबू मुसअब عليه رحمة الرب फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दरवाज़े पर लोगों का हुजूम लगा रहता और लोग बहुत ज़ियादा भीड़ की वजह से तलबे इल्म के शौक़ में एक दूसरे से लड़ पड़ते ।"

(سير اعلام النبلاء، الرقم ۱۱۸۰، مالك الامام، ج۷، ص ٤۲۲، بتغيرٍ قليلٍ)

हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन शा'बा عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ फ़रमाते हैं : "मैं मदीनए मुनव्वरा में सिन 144 हिजरी में हाज़िर हुवा। उस वक़्त हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۂ की दाढ़ी और सर के बाल सियाह थे। लोग आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۂ के गिर्द ख़ामोश बैठे थे। आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۂ के रो'ब की वजह से किसी को बात करने की हिम्मत न थी। मस्जिदे नबवी शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۂ के इलावा कोई फ़तवा न देता था। मैं आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۂ के सामने बैठ गया और एक सुवाल किया तो आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۂ ने मुझे हदीषे पाक से जवाब दिया। मैं ने फिर सुवाल किया तो आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۂ ने फिर जवाब इरशाद फ़रमाया। फिर आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۂ के दोस्तों ने मुझे झन्झोड़ा तो मैं ख़ामोश हो गया।"

(ترتيب المدارك و تقريب المسالك،باب صفة مجلس مالك للعلم، ج ١، ص٤٨)

आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۂ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं इफ़्ता और हदीष के लिये उस वक़्त तक मसनद नशीन न हुवा जब तक कि सत्तर (70) उ-लमाए किराम व मशाइख़े इज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने मेरी अहलिय्यत की गवाही न दे दी।"

(ترتيب المدارك و تقريب المسالك،باب فى ابتداء ظهوره فى العلم وقعوده للفتوى و التعليم،ج ١،ص ٣٤)

हज़रते सय्यिदुना हम्माद बिन ज़ैद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد की ख़िदमत में एक शख़्स कोई मस्अला पूछने आया जिस में लोगों का इख़्तिलाफ़ था तो आप رَحْمَةُ اللهِ تعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "ऐ भाई ! अगर तू अपने दीन की सलामती चाहता है तो आ़लिमे मदीना से पूछ और उन की बात तवज्जोह से सुन क्यूंकि वोह हुज्जत (या'नी दलील) हैं और लोगों के इमाम हैं।" (المرجع السابق،ص ٣٧)

हज़रते सय्यिदुना हम्माद बिन सलमा عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ इरशाद फ़रमाते हैं : "अगर मुझे कहा जाए कि उम्मते मुहम्मदिय्या عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये कोई इमाम इख़्तियार करो जिस से लोग इल्मे दीन हासिल करें तो मैं हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۂ को इस का हक़ दार और अहल समझता हूं और मेरी येह राए उम्मत की बेहतरी के लिये है।" (المرجع السابق،ص ٣٦)

हज़रते सय्यिदुना लैष बिन सा'द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۂ का इल्म परहेज़गारी का इल्म है और उस के लिये हिफ़्ज़ व अमान का बाइष है जो इसे हासिल करे।"

(ترتيب المدارك و تقريب المسالك، باب شهادة السلف الصالح واهل العلم له بالامامة فى العلم، ج ١،ص٣٦)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन क़ासिम رَحْمَةُ اللهِ تعَالٰی عَلَيْه फ़रमाया करते थे : "मैं अपने दीन में दो आदमियों की पैरवी करता हूं : अ़मल में हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۂ की और तक़्वा में हज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन क़ासिम رَحْمَةُ اللهِ تعَالٰی عَلَيْه की।"

(حلية الاولياء،مالک بن انس،الحديث٨٨٧٨،ج٦،ص ٣٥٠)

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ येह कैसे अ़ज़ीम लोग थे, जिन्हों ने अपनी जानें लोगों के नफ़्अ़ के लिये राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में वक़्फ़ कर दीं, इन्हें मुश्किलात में डाला और त़लबे इ़ल्म में ख़ूब जिद्दो जहद की तो अल्लाह रह़मान عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें कामयाबी अ़त़ा फ़रमाई।

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जो शख़्स त़लबे इ़ल्म के लिये किसी रास्ते पर चले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत का रास्ता आसान फ़रमा देता है।"

(صحيح مسلم،كتاب الذكر والدعاء،باب فضل الاجتماع على تلاوة القرآن وعلى الذكر،الحديث٢٦٩٩،ص١١٤٧)

ह़दीषे पाक में है : "एक आ़लिम, शैत़ान पर हज़ार आ़बिद से भारी है।"

(جامع الترمذی ، ابواب العلم ،باب ماجاء فی فضل الفقه على العبادة ،الحديث ٢٦٨١ ، ص ١٩٢٢ "العالم"بدله"فقيه")

अगर इस्लाम में एक आ़बिद फ़ौत हो जाए तो इस में सिर्फ़ एक शख़्स की कमी होगी और अगर एक आ़लिम चल बसे तो गोया लोगों में से एक क़बीला फ़ौत हो गया। रूए ज़मीन पर जब कोई आ़लिम इन्तिक़ाल कर जाए तो इस्लाम में एक ऐसा शिगाफ़ पड़ता है जिसे उस वक़्त तक कोई बन्द नहीं कर सकता जब तक दिन रात आते जाते रहेंगे।

जान लो ! "त़ालिबे इ़ल्म के अ़मल से खुश हो कर उस के लिये मलाइका अपने पर बिछा देते हैं।" (الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان،كتاب الطهارة،باب المسح على الخفين وغيرهما،الحديث ١٣١٦،ج٢،ص٣٠٧)

उ़-लमा के क़लमों की सियाही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां शुहदा के ख़ून से अफ़्ज़ल है।

(الجامع الصغير، الحديث ٩٦١٩، ص ٥٧١ ـ مفهوماً)

बरोज़े क़ियामत जब राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में शहीद होने वाले उ़-लमा की फ़ज़ीलत देखेंगे तो तमन्ना करेंगे : काश ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें भी उ़-लमा में उठाता। जिस ने इ़ल्म को पा लिया तह़क़ीक़ उस ने दुन्या व आख़िरत की भलाइयों को पा लिया और जिस ने उ़-लमा को अज़िय्यत दी उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ए'लाने जंग किया।

इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ पर सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का करम :

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन रमह़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : "मेरे बचपन का वाक़िआ़ है जब कि मैं अभी नाबालिग़ था। मैं अपने वालिदे मोह़तरम के साथ ह़ज को गया। मैं मस्जिदे नबवी عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में मज़ारे अक़्दस और मिम्बर शरीफ़ के दरमियान जन्नत की क्यारी(1) में

---

(1) .....शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा व मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه किताब "रफ़ीक़ुल ह़रमैन" के सफ़ह़ा 218 पर तह़रीर फ़रमाते हैं : ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के हुजरए मुबारका (जहां आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का मज़ारे पुर अन्वार है) और मिम्बरे अक़्दस (जहां आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुत़बा इरशाद फ़रमाते थे) के दरमियान का हिस्सा "**जन्नत की क्यारी**" है। चुनान्चे, हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मेरे घर और मिम्बर की दरमियानी जगह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है।" (الصحيح البخارى، كتاب فضل الصلوة فى مسجد مكة والمدينة، باب فضل ما بين القبر والمنبر، الحديث:١١٩٥، ص٩٣)

आराम कर रहा था कि मुझे नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह्रो बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई।

आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) को पहलू में लिये मज़ारे पुर अन्वार से बाहर तशरीफ़ लाए। मैं ने खड़े हो कर सलाम अ़र्ज़ किया तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे जवाब मरह़मत फ़रमाया। मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आप कहां तशरीफ़ ले जा रहे हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "मालिक के लिये सीधी राह क़ाइम कर रहा हूं।" बेदार होने के बा'द जब मैं और मेरे वालिदे मोह़तरम बाहर आए तो लोगों को ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पास जम्अ़ देखा। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने मुअत्ता शरीफ़ निकाली हुई थी और येह मुअत्ता शरीफ़ की पहली आमद थी।"

(ترتيب المدارك وتقريب المسالك،باب ذكر المؤطّأ وتأليف مالك اياه، ج ١، ص ٦٠، بتغيرقليل)

मुअत्ता इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की अ़ज़मत व शान :

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल ह़कम عليه رحمة الله المكرّم का बयान है कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अबू सिर्री अ़स्क़लानी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को फ़रमाते सुना कि मैं ख़्वाब में सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बिइज़्ने परवर दगार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा और अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे इ़ल्म की ऐसी बात इरशाद फ़रमाइये जिसे मैं आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़वाले से बयान करूं।" तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने मालिक को एक ख़ज़ाना अ़ता फ़रमाया है जो वोह तुम में तक़्सीम करेगा।" आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले जाने लगे तो मैं भी आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे चल पड़ा और दोबारा अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे कुछ इ़ल्म अ़ता फ़रमाइये जिसे मैं आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़वाले से बयान करूं।" आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर वोही जवाब इरशाद फ़रमाया : "मैं ने मालिक को एक ख़ज़ाना अ़ता फ़रमाया है जो वोह तुम में तक़्सीम करेगा।" फिर जब आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले जाने लगे तो मैं आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे हो लिया और तीसरी बार भी येही अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे कोई इ़ल्म की बात इरशाद फ़रमा दीजिये जिसे मैं आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़वाले से बयान करूं।" तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ इब्ने सिर्री ! मैं ने मालिक को एक ख़ज़ाना दिया है जो वोह तक़्सीम करेगा। सुन ले ! वोह मुअत्ता है और क़ुरआने मजीद और मेरी सुन्नत के बा'द मुसलमानों के गुरौह में "**मुअत्ता**" (इमाम मालिक) से ज़ियादा सह़ीह़ किताब कोई नहीं। लिहाज़ा तू इसे सुन कर इस से नफ़्अ़ ह़ासिल कर।" (موطأ امام محمد مع التعليق الممجد على الموطأ، ج١، ص٧٢)

इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ और इल्म की क़द्र :

हज़रते सय्यिदुना अ़तीक़ बिन या'क़ूब ज़बीरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "एक दफ़्आ़ ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا हाज़िर हुए और इन्हें येह ख़बर पहुंची कि हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ के पास अहादीष की "मुअत्ता" नामी किताब है जो वोह लोगों को पढ़ कर सुनाते हैं। तो ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद ने (अपने वज़ीर) बरमकी को आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ की त़रफ़ येह कहते हुए भेजा कि इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ को मेरा सलाम कहना और कहना कि वोह किताब ले कर मेरे पास आएं और मुझे पढ़ कर सुनाएं। बरमकी ने जब आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : "जाओ, ख़लीफ़ा को मेरा सलाम कहो और फिर कहो : "इल्म के पास जाना पड़ता है, येह खुद किसी के पास नहीं आता और इल्म ह़ासिल करना पड़ता है, येह खुद ह़ासिल नहीं होता।" बरमकी ने ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद के पास आ कर जब येह सब बयान किया तो उस वक़्त दरबार में क़ाज़ी अबू यूसुफ़ भी बैठे हुए थे। वोह कहने लगे : "ऐ अमीरल मोअमिनीन अहले इराक़ को येह बात पहुंच सकती है कि आप ने इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ को हुक्म दिया मगर इन्हों ने नाफ़रमानी की लिहाज़ा आप इन पर सख़्ती करें।"

अभी येह गुफ़्त्गू चल रही थी कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ तशरीफ़ ले आए और सलाम कर के बैठ गए। ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद ने पूछा : "ऐ इब्ने अबी आ़मिर ! मैं ने आप को पैग़ाम भेजा था और आप ने इन्कार कर दिया।" तो आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन षाबित رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : "मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में वह़्य लिखा करता था, मैं ने येह आयते मुबारका लिखी : "لَایَسْتَوِی الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُجٰھِدُوْنَ" तर्जमा : बराबर नहीं वोह मुसलमान कि जिहाद से बैठे रहे और वोह कि जिहाद करते हैं।" उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उम्मे मक्तूम رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जुदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में ह़ाज़िर थे। इन्हों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मैं एक नाबीना व मा'ज़ूर शख़्स हूं और आप जानते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जिहाद की बहुत फ़ज़ीलत इरशाद फ़रमाई।" तो हुज़ूर नबिय्ये पाक साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं अपने अन्दाज़े से नहीं जानता (कि मा'ज़ूर क्या करें)।" ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन षाबित رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ

फ़रमाते हैं। मेरा क़लम अभी रोशनाई से तर था, ख़ुश्क भी नहीं हुवा था कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रान मुबारक (वह़्य के बोझ से) मुझ पर भारी होने लगी। जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इफ़ाक़ा हुवा तो इरशाद फ़रमाया : "ऐ ज़ैद अब लिखो : "غَيْرُ اُولِی الضَّرَرِ۔" (या'नी आयते मुबारका की तरतीब इस त़रह़ हो गई

لَایَسْتَوِی الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ غَیْرُ اُولِی الضَّرَرِ وَالْمُجٰهِدُوْنَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ط (پ ۵، النسآء: ۹۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बराबर नहीं वोह मुसलमान कि बे उ़ज़्र जिहाद से बैठे रहें और वोह कि राहे ख़ुदा में अपने मालों और जानों से जिहाद करते हैं।*

(फिर फ़रमाया) ऐ अमीरल मोअमिनीन ! जब एक ह़र्फ़ के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام और दीगर फ़िरिश्तों ने पांच हज़ार साल की मसाफ़त बर्दाश्त की तो क्या मुझ पर इस की इ़ज़्ज़त व जलालत का पास रखना ज़रूरी नहीं ? और आप को तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बुलन्द मर्तबा अ़त़ा फ़रमाया और मस्नदे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ किया है। पस आप इ़ल्म का मर्तबा घटाने वाले सब से पहले शख़्स न बनियें वरना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप की क़द्रो मन्ज़िलत कम कर देगा।" रावी फ़रमाते हैं कि ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद उठे और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के साथ उन के घर की त़रफ़ चल पड़े ताकि आप से मुअत्ता सुनें। आप ने ख़लीफ़ा को अपने साथ मस्नद पर बिठाया। जब ख़लीफ़ा ने आप से मुअत्ता पढ़ने का इरादा किया तो कहने लगे : "आप मुझे पढ़ कर सुनाएं।" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ ख़लीफ़तल मुस्लेमीन ! मैं ने आज तक किसी को पढ़ कर नहीं सुनाया।" हारूनुर्रशीद ने कहा : लोग बाहर चले जाएं तो मैं पढ़ कर सुनाता हूं।" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : "जब ख़ास लोगों की वजह से आ़म लोगों से इ़ल्म को रोक दिया जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ास लोगों को भी इस से नफ़्अ़ न देगा।" फिर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उसे फ़रमाया : "मअ़न बिन ईसा क़ज़्ज़ाज़ को पढ़ कर सुनाओ।" जब ख़लीफ़ा ने पढ़ना शुरूअ़ किया तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : "ऐ अमीरल मोअमिनीन मैं ने अपने मुल्क के उ़-लमा को देखा है कि वोह इ़ल्म के लिये आ़जिज़ी करना पसन्द करते हैं। येह सुन कर हारूनुर्रशीद मस्नद से नीचे उतरे और आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के सामने बैठ गए।"

(تاریخ دمشق لابن عساکر،الرقم ۴۱۲۰، عبد العزیز بن عبدالقریب ابو یعلی، ج۳۶،ص ۳۱۱۔۳۱۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से ह़ुसूले इ़ल्म के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल हुवा तो इरशाद फ़रमाया : "इ़ल्म सीखना बहुत अच्छा है। लेकिन येह ख़याल रखो कि जो शख़्स सुब्ह़ से शाम तक तुम्हारे साथ रहे तुम भी उसे लाज़िम पकड़ो।"

(حلیة الاولیاء،مالک بن انس،الحدیث ۸۸۷۰، ج۶،ص ۳۴۹)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ इ़ल्मे दीन की ह़द दर्जा ता'ज़ीम फ़रमाते थे। यहां तक कि जब ह़दीषे पाक बयान करने का इरादा फ़रमाते तो वुज़ू कर के दो नफ़्ल

पढ़ते फिर दाढ़ी में कंघी करते, ख़ुश्बू लगाते और इ़ज़्ज़त व वक़ार के साथ अपनी मस्नद के सद्र मक़ाम पर तशरीफ़ फ़रमा हो कर ह़दीषे पाक बयान करते। आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से इस की वजह पूछी गई तो इरशाद फ़रमाया : "मुझे येह बात ज़ियादा पसन्द है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़दीषे पाक की ता'ज़ीम करूं।"

(حلية الاولياء، مالك بن انس، الحديث٨٨٥٨، ج٦، ص٣٤٧)

यूं ही इ़ल्म की ता'ज़ीम की जाती है। उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلام जब इ़ल्म की ता'ज़ीम करते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ लोगों के दिलों में उन की अ़ज़मत डाल देता है और बादशाहों और दूसरे अफ़राद के दिलों में उन का रो'ब व दबदबा बिठा देता है।

ऐ इ़ल्म के त़लबगार ! इ़ल्म के लिये आ़जिज़ी इख़्तियार कर। जो इस के लिये आ़जिज़ी करता है ह़क़ीक़तन वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आ़जिज़ी करता है और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आ़जिज़ी करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का मर्तबा बुलन्द फ़रमा देता है। बिला शुबा मिट्टी क़दमों के नीचे आ कर ह़क़ीर होती है तो चेहरे के लिये पाकी का बाइ़ष बन जाती है। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿٣﴾ فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ط
(پ٦، المآئدہ)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो अपने मुंह और हाथों का इस (मिट्टी) से मस्ह़ करो।*

ऐ मेरे इस्लामी भाई ! इ़ल्म के इजतिमाअ़ में ह़ाज़िरी को इस त़रह़ यक़ीनी बना ले जिस त़रह़ बच्चा हर वक़्त दूध का मोह़ताज होता है मगर जब वोह बड़ा होता है तो इसे छोड़ने पर सब्र कर लेता है। याद रख ! फ़ज़ाइल का रास्ता मुसीबतों से भरा हुवा है ताकि नापुख़्ता इरादे वाला रास्ते ही से लौट आए। ऐ नौजवान ! तेरे नफ़्स का मोती इ़ल्म सीखना है और इस का ज़ेवर इ़ल्म है। अगर तू ने मेरी नसीह़त मान ली तो तेरे लिये मस्नदे सदारत है या मिम्बर की ऊंचाई।

ے وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْعِلْمِ صَانُوْهُ صَانَهُمْ ۔۔۔ وَلَوْ عَظَّمُوْهُ فِی النُّفُوْسِ لَعَظَّمَا
اَاَغْرِسُهُ عِزًّا وَاَجْنِيْهِ ذِلَّةً ۔۔۔ اِذًا فَاتِّبَاعُ الْجَهْلِ قَدْ كَانَ اَحْزَمَا
تَعَلَّمْ فَلَيْسَ الْمَرْءُ يَخْلُقُ عَالِمًا ۔۔۔ وَلَيْسَ اَخُوْ عِلْمٍ كَمَنْ هُوَ جَاهِلُ
وَاِنَّ كَبِيْرَ الْقَوْمِ لَا عِلْمَ عِنْدَهٗ ۔۔۔ صَغِيْرٌ اِذَا الْتَفَتَ عَلَيْهِ الْمَحَافِلُ

तर्जमा : अगर उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلام इ़ल्म की ह़िफ़ाज़त करेंगे तो येह उन की ह़िफ़ाज़त करेगा। अगर वोह दिल से इस की ता'ज़ीम करेंगे तो येह भी उन को इ़ज़्ज़त देगा। क्या मैं इ़ज़्ज़त का बीज बो कर ज़िल्लत का फल तोड़ूंगा ? अगर ऐसा है तो जाहिल की इत्तिबाअ़ में ही एह़तियात़ है। ऐ भाई ! इ़ल्म ह़ासिल कर क्यूंकि इन्सान पैदाइशी त़ौर पर आ़लिम नहीं होता और इ़ल्म वाला जाहिल की त़रह़ नहीं हो सकता। क़ौम का बे इ़ल्म सरदार छोटा है जब कि लोग इस से मुंह मोड़ लें।

मन्कूल है कि जब हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के इल्म का शोहरा हुवा और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ज़िक्रे ख़ैर और फ़ज़ीलत दूसरे मुमालिक तक फैल गई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में इल्म की तरवीजो इशाअ़त के लिये मालो दौलत हाज़िर किया जाता। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस को अपने दोस्त व अह़बाब में तक़्सीम फ़रमा देते और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दोस्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की पैरवी में इसे भलाई के कामों में ख़र्च कर डालते। इस में से कुछ भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बचा कर न रखते और फ़रमाया करते : "ज़ोहद (या'नी दुन्या से बे रग़बती) माल न होने का नाम नहीं बल्कि ज़ोहद तो येह है कि दिल इस से फ़ारिग़ हो।"

(احیاء علوم الدین، کتاب العلم، باب ثانی فی العلم المحمود والمذموم واقسامهما واحکامهما، ج۱، ص۴۸)

मज़ीद इरशाद फ़रमाया : "जो बन्दा ह़दीष के बयान में सच्चा होता है और झूट नहीं बोलता **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस की अ़क़्ल से नफ़्अ़ अ़ता फ़रमाता है और बुढ़ापे में उसे कोई आफ़त नहीं पहुंचती और न ही उस की अ़क़्ल ख़राब होती है।" (المرجع السابق، ص۴۷)

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अबू सलमा عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہ फ़रमाते हैं : "जब मैं ने मुअत्ता इमाम मालिक पढ़ी तो ख़्वाब में एक आने वाला आया और कहने लगा : "बिला शुबा येह शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का कलाम है।" (التمهيد لابن عبد البر، مقدمة المصنف، باب ذكر عيون من اخبار مالك وذكر فضل موطئه، ج۱، ص۶۰)

मन्कूल है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी किताब "मुअत्ता" तालीफ़ करने का इरादा फ़रमाया तो इस में ग़ौरो फ़िक्र करने लगे कि इस का नाम क्या रखा जाए? फ़रमाते हैं कि एक दिन जब मैं सोया तो सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से फ़ैज़याब हुवा। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "وَطِّئْ هٰذَا الْعِلْمَ لِلنَّاسِ या'नी इस इल्म को लोगों के लिये आसान (या तय्यार) कर दो।" लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस का नाम "मुअत्ता" रखा।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "हम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में हाज़िर थे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हमें ह़दीषे पाक बयान फ़रमा रहे थे। अचानक एक बिच्छू ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को सोलह (16) मरतबा डंक मारा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के चेहरे का रंग बदल कर ज़र्द पड़ गया। इस के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़दीषे पाक बयान करते रहे। जब सब लोग चले गए तो मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह! आज मैं ने आप की अ़जीब ह़ालत देखी है?" तो इरशाद फ़रमाया : "हां मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़दीषे पाक की ता'ज़ीम करते हुए सब्र किया है।"

(ترتيب المدارك وتقريب المسالك، باب صفة مجلس مالك للعلم، ج۱، ص۴۵)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुसअ़ब बिन अ़ब्दुल्लाह عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक,

सय्याहे अफ़लाक صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे नामी, इस्मे गिरामी लेते तो आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ का रंग बदल जाता और आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ पर कप-कपी त़ारी हो जाती यहां तक कि ह़ाज़िरीने इजतिमाअ़ पर बर्दाश्त मुश्किल हो जाती। जब आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ से वजह दरयाफ़्त की गई तो फ़रमाया : "अगर तुम भी उसे देख लेते जो मैं देखता हूं तो तुम पर गिरां न गुज़रता।"

(ترتيب المدارك وتقريب المسالك،باب فی ذكر عبادة مالك وورعه وعزلته وإجابة دعائه ،ج١،ص٥٥)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ रास्ते में या खड़े खड़े या जल्दी में ह़दीषे पाक बयान करने को नापसन्द फ़रमाते और इरशाद फ़रमाया करते : "मुझे येह पसन्द है कि हु़ज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़दीषे पाक की ता'ज़ीम करूं।" (حلية الاولياء،مالك بن انس،الحديث٨٨٥٨،ج٦،ص٣٤٧۔بتقدُّمٍ وتاَخُّرٍ)

सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अंगूठी पहनाई :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम दरावर्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "मैं ने ख़्वाब में अपने आप को मस्जिदे नबवी में यूं ह़ाज़िर पाया कि मैं नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के जलवए नूरबार से ज़ियाबार हो रहा हूं और आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों के सामने बयान फ़रमा रहे हैं। इसी दौरान ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ ह़ाज़िरे ख़िदमत हुए। जब नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें देखा तो इरशाद फ़रमाया : "इधर मेरे पास आओ।" आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ क़रीब हुए तो सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी उंगली से अंगूठी उतारी और आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ की छुंगलिया में पहना दी। मेरे ख़याल में इस से मुराद इ़ल्म है जो हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें अ़त़ा फ़रमाया। इ़ल्म के सबब उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ की पैरवी करते। उमरा आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ की राए से रोशनी पाते। आ़म लोग आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ का फ़रमान दिलो जान से तस्लीम करते। आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ का हु़क्म बिग़ैर दलील के नाफ़िज़ होता। आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ जब किसी सुवाल का जवाब इरशाद फ़रमा देते तो उस में मज़ीद मश्वरे की ज़रूरत न रहती।"

(سير اعلام النبلاء، الرقم١١٨٠،مالك الامام، ج٧،ص٤٠٢،بتغيرٍ۔حلية الاولياء، مالك بن انس، الحديث٨٨٦٣، ج٦،ص٣٤٨)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ुदाए जुल जलाल عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह उन उ़-लमा की सिफ़ात हैं जिन के विसाल पर ज़मीनो आस्मान रोते हैं। जिन के सदक़े बन्दों पर करम होता है। जिन की बरकत से शहर आफ़ात से मह़फ़ूज़ रहते हैं। येह वोह उ़-लमा हैं जिन की सीरत में दुन्या से बे रग़बती झलकती है। जो इख़्लास व सदाक़त के ज़ेवर से आरास्ता होते हैं। लोगों के दिल इन के दीदार के मुश्ताक़ होते हैं। लोग इन के सामने सरे तस्लीम ख़म कर लेते हैं। इन के सामने बड़ी बड़ी

मुश्किलात आसान हो जाती हैं और बड़े बड़े जाबिरों के सर झुक जाते हैं। येह दुन्या के तमाम गोशों में सूरज चांद की त़रह़ अपने इल्म की रोशनी फैलाते हैं। बिला शुबा इन का ज़िक्रे ख़ैर किताबों में लिखा जा चुका है। अलबत्ता ! जो अपने अ़मल में रियाकारी करता है और अहले दुन्या के लिये अच्छे आ'माल करता है। उसे झूटी उम्मीदों ने धोके में डाल रखा है। वोह ऐसी ख़ूबियों पर अपनी ता'रीफ़ चाहता है जो उस में नहीं पाई जातीं (या'नी अपनी झूटी ता'रीफ़ की ख़्वाहिश करता है) तो येह उन लोगों में से है जो उलटे दिमाग़ और घटया सोच के मालिक होते हैं। ऐसे लोग जब कोई ऐसी बात सुनते हैं जो इन की समझ में नहीं आती और इन का इल्म इस से क़ासिर होता है तो इन के उसूल व क़वाइद बिगड़ जाते हैं। इन के लिये अपने मक़्सद का ह़ुसूल मुश्तबा हो जाता है। नेकियों की सूरत में गुनाह करने लग जाते हैं। बुराइयों को अच्छाइयां समझ कर इन के मुर्तकिब हो जाते हैं। और यूं अ़मल में ख़ियानत करते और ह़ुसूले मुराद में ना काम व बे मुराद हो जाते हैं।

तअ़ज्जुब उस पर नहीं जो नावाक़िफ़ है और जहालत की वजह से मुर्तकिबे गुनाह हुवा और नाफ़रमानी का ए'तिराफ़ भी कर चुका है क्यूंकि उस के लिये तो बख़्शिश है। जैसा कि, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है।

﴿۴﴾ قُلْ لِّلَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ یَّنْتَهُوْا یُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ (پ۹،الانفال:۳۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम काफ़िरों से फ़रमाओ ! अगर वोह बाज़ रहे तो जो हो गुज़रा वोह उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा दिया जाएगा।*

बल्कि तअ़ज्जुब तो उस पर है जो इल्म का दा'वा करे मगर इस का मक़्सद ह़ुसूले दुन्या हो। ऐसे शख़्स को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मलामत की जाएगी। येह लोगों के नज़्दिक क़ाबिले मज़म्मत और अज्रो षवाब से मह़रूम है। येही वोह लोग हैं जिन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दीन को हंसी मज़ाक़ और खेल कूद बना लिया। इन्हों ने अपने मवाइज़ व बयानात को ख़ुश कुन और तेज़ तर कर लिया लेकिन इन की बात दिल से नहीं सुनी जाती। येह वा'ज़ व नसीह़त करते हैं मगर इन का बयान लोगों के दिल पर अषर नहीं करता और न ही आंखों से अश्क जारी होते हैं।

चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है :

﴿۵﴾ وَهُمْ یَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ یُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ۝ (پ۱٦،الکھف:۱۰٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह इस ख़याल में हैं कि हम अच्छा काम कर रहे हैं।*

जब येह कोई हुक्म सुनते हैं तो उस में तब्दीली और तह़रीफ़ कर लेते हैं और जब कोई चीज़ नाप तोल कर देते हैं तो कमी कर देते हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह सब शरीअ़त में ह़राम है। चुनान्चे, अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

وَهُمْ یَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ یُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ۝ (پ۱٦،الکھف:٤-۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह इस ख़याल में हैं कि हम अच्छा काम कर रहे हैं।*

येह लोग बिग़ैर अ़ज़्म व हौसले के इज़्हारे ग़म करते हैं, बिग़ैर इ़ल्म के बह़ष मुबाह़षा करते हैं और बिला सोचे समझे सुवाल करते हैं। यकीनन येही वोह लोग हैं जो जहालत की तलवार से पछाड़ खाए हुए हैं। रब्बे अ़ज़ीम جَلَّ جَلَالُہٗ इरशाद फ़रमाता है :

وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ۝ (پ١٦،الكهف:١٠٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह इस ख़याल में हैं कि हम अच्छा काम कर रहे हैं।*

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ सह़री के वक़्त कषरत के साथ नमाज़, ज़िक्रे इलाही और अवरादो वज़ाइफ़ का एहतिमाम फ़रमाते। फिर दर्स व तदरीस में मश्ग़ूल हो जाते। आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ ऐसे ख़ुश बख़्त हैं जिन की ता'रीफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने ह़क़्क़े तर्जुमान से हुई मगर आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ ने इस पर कभी फ़ख़्र न किया यहां तक कि ह़ुसूले इ़ल्म के लिये मुश्किल तरीन रास्तों का सफ़र किया और आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ ने इ़ल्म ह़ासिल करने की ख़ातिर तमाम मुश्किलात का सामना किया।

ऐ ग़ाफ़िल इन्सान ! तू जहालत के गढ़े में गिरा हुवा है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अह़काम को छोड़ बैठा है।

इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ और ता'ज़ीमे ख़ाके मदीना :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی फ़रमाते हैं : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ के दरवाज़े पर ख़ुरासान या मिस्र के घोड़े बन्धे हुए देखे जो आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ को बत़ौरे हदिय्या पेश किये गए थे। इन से ज़ियादा उ़म्दा घोड़े मैं ने कभी न देखे थे। चुनान्चे, मैं ने अ़र्ज़ की : "येह कितने उ़म्दा घोड़े हैं।" तो आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं येह सब आप को तोह़फ़े में देता हूं।" मैं ने अ़र्ज़ की : "एक घोड़ा आप अपने लिये रख लें।" तो फ़रमाया : "मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ह़या आती है कि इस मुबारक ज़मीन को अपने घोड़े के क़दमों तले रौंदूं जिस में उस के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल, बीबी आमिना के गुलशन के महकते फूल صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم का रौज़ए अन्वर है।"

(احیاء علوم الدین،کتاب العلم،باب ثانی فی العلم المحمود و المذموم و اقسامهما و احکامهما،ج١،ص٤٨)

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन सईद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِیْد फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ इस उम्मत के लिये रह़मत हैं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़ुदामा عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ अपने ज़माने के सब से बड़े "ह़ाफ़िज़ुल ह़दीष" थे।

(ترتیب المدارک و تقریب المسالک،باب شهادة السلف الصالح و اهل العلم له بالامامة فی العلم،ج١،ص٣٧)

हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह मन्ताब عليه رحمة الله التواب फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ को एक लाख (1,00,000) अहादीष याद थीं।"

(شرح الزرقانی علی موطأالامام مالک، ج ۱، ص ۳۵)

हज़रते सय्यिदुना लैष बिन सा'द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे रूए ज़मीन पर सब से ज़ियादा महब्बत हज़रते इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ से है।" आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه येह दुआ फ़रमाया करते : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी उम्र भी इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ को लगा दे।"

हज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ की बहुत ता'ज़ीम किया करते और आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ की बात करते तो अ़ज़ीम अलक़ाबात से याद फ़रमाते हुए यूं गोया होते : "आ़लिमुल उ़-लमा ने यूं कहा, आ़लिमे मदीना ने येह फ़रमाया और मुफ़्तिये हरमैन का फ़रमान येह है।"

(سیر اعلام النبلاء، الرقم ۱۱۸۰، مالك الامام، ج۷، ص ۴۱۲۔ترتیب المدارك وتقریب المسالك، الفصل الاول فی ترجیحه من طریق النقل، ج ۱، ص ۱۹)

हज़रते सय्यिदुना मषनी बिन सईद क़सीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِير फ़रमाते हैं, मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ को येह फ़रमाते सुना : "मैं हर रात सरकारे अबद क़रार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार करता हूं।" (حلیة الاولیاء، مالك بن انس، الحدیث ۸۸۵۵، ج۶، ص ۳۴۶)

जहन्नम से नजात की बिशारत :

हज़रते सय्यिदुना इब्ने क़ासिम رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हम हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ के मरज़े विसाल में आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में हाज़िर थे। हज़रते सय्यिदुना इब्ने दरावर्दी हाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! गुज़श्ता रात मैं ने एक ख़्वाब देखा है, क्या आप सुनना पसन्द फ़रमाएंगे ?" आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "सुनाइये।" तो इन्हों ने ख़्वाब बयान करते हुए कहा : "मैं ने सफ़ेद लिबास में मल्बूस एक आदमी देखा जो आस्मान से उतरा। उस के हाथ में एक ऐसा रजिस्टर था जो ज़मीनो आस्मान के दरमियान फैला हुवा था। उस ने तीन मरतबा कहा : "هٰذَا بَرَاءَةٌ لِمَالِكٍ مِنَ النَّارِ" या'नी येह हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ के लिये दोज़ख़ से बराअत नामा है।" अभी येह गुफ़्त्गू चल ही रही थी कि ख़लीफ़ा का क़ासिद हाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! मस्जिदे नबवी शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मुअज़्ज़िन ने गुज़श्ता रात एक ख़्वाब देखा है जो मैं ने उस से सुना है। चुनान्चे, उस ने भी पहले ख़्वाब की मिष्ल ख़्वाब सुनाया।" इस पर हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही हक़ीक़ी मददगार है वोह जो चाहता है करता है।"

२९ ज़मीन का सब से बड़ा आ़लिम :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़करिया رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه को येह फ़रमाते सुना : "जब हम मक्का में मुक़ीम थे तो मुझे मेरी फूफी ने बताया कि मैं ने आज रात एक ख़्वाब देखा है। मैं ने कहा : "सुनाइये, क्या ख़्वाब है ?" तो उन्हों ने फ़रमाया : "मैं ने फ़ुलां को येह कहते सुना कि आज रात अहले ज़मीन का सब से बड़ा आ़लिम फ़ौत हो गया है।" जब हम ने ह़िसाब लगाया तो वोह ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْه के इन्तिक़ाल का दिन था।"

(حلية الاولياء، مالك بن انس، الحديث ٨٩٣٤، ج٦، ص ٣٦٠۔ترتيب المدارك وتقريب المسالك، باب ذكر وفاة مالك، ج١، ص٧٨)

ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन अ़ब्दुल आ'ला رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन बक्र عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْاَکْبَر को येह फ़रमाते सुना कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه को उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلام के एक गुरौह के साथ जन्नत में देख कर पूछा : "ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْه कहां हैं ? तो उन्हों ने बताया : "इन के दर्जात बहुत बुलन्द हैं।" मैं ने पूछा : "वोह कैसे ?" जवाब मिला : "इन की सच्चाई की बदौलत।"

(التمهيد لابن عبد البر،مقدمة المصنف،باب ذكر عيون من اخبار مالك وذكر فضل موطئه، ج١، ص٥٦)

एक कलिमे के सबब बख़्शिश :

किसी नेक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْه को बा'दे विसाल ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ ؟" या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? "इरशाद फ़रमाया :" उस ने मुझे बख़्श दिया।" पूछा : "किस सबब से ?' फ़रमाया : एक कलिमे के सबब जो मैं ने अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْه के मुतअ़ल्लिक़ किसी से सुना था कि जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْه किसी मुर्दे को देखते तो पढ़ते : "اَللّٰہُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ، سُبْحَانَ الْحَیِّ الَّذِیْ لَایَمُوْتُ" या'नी वोह अल्लाह है जिस के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं, वोह आप ज़िन्दा है, दूसरों को क़ाइम रखने वाला है, पाक है वोह ज़ात जो ख़ुद ज़िन्दा है कि उसे कभी मौत नहीं।" तो मैं भी अपनी ज़िन्दगी में जब किसी मुर्दे को देखता तो हमेशा येह कलिमा पढ़ा करता जिस की बरकत से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया।"

(ترتيب المدارك وتقريب المسالك،باب ذكر وفاة مالك، ج١، ص٧٨)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْه का विसाल व तजहीज़ व तक्फ़ीन :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْعَزِیْز फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْه का विसाल 10 रबीउ़ल अव्वल सिने 179 हिजरी में हुवा।

आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہ हफ़्ते के दिन बीमार हुए और उसी दिन इस दारे फ़ानी से रुख़्सत हो गए। आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہ ने नव्वे (90) बरस की उम्र पाई। आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہ ने वसिय्यत फ़रमाई कि मुझे मेरे अपने कपड़ों में ही कफ़न दिया जाए और जनाज़ा गाह में नमाज़े जनाज़ा अदा की जाए। आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہ की नमाज़े जनाज़ा कषीर लोगों ने अदा की जिन में ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास, ह़ज़रते सय्यिदुना हाशिम, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने किनाना, ह़ज़रते सय्यिदुना शा'बा बिन दावूद, आप के कातिब ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब और इन के बेटे (رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن) जैसी शख़्सिय्यात भी शामिल थीं। कई लोग आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہ की क़ब्रे मुबारक में भी उतरे।"

(التمهيد لابن عبد البر،مقدمة المصنف،باب ذكر عيون من اخبار مالك وذكر فضل موطئه، ج١، ص٦٧)

(سير اعلام النبلاء، الرقم ١١٨٠، مالك الامام، وفاة مالك، ج٧، ص٤٣٥)

आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہ के विसाल पर अहले इ़राक़ का सदमा :

जब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہ के विसाल की ख़बर इ़राक़ पहुंची तो गोया इ़राक़ की सर ज़मीन लरज़ ने लगी। वहां के लोगों को आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہ की वफ़ात पर बहुत सदमा पहुंचा। एक आदमी ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से अ़र्ज़ की : "ऐ अबू मुह़म्मद ! एक शख़्स की ख़्वाहिश है कि वोह किसी ऐसे आ़लिम से मस्अला दरयाफ़्त करे जो इस के और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरमियान दलील हो।" तो आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने इरशाद फ़रमाया : "ऐसे आ़लिम तो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہ ही हैं कि जिन्हें आदमी अपने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरमियान दलील बना सकता है।" लेकिन जब आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को बताया गया कि वोह तो विसाल फ़रमा चुके हैं तो बसद ह़सरत व अफ़्सोस कहने लगे : " हाए ! अच्छे लोग दुन्या से चले गए।"

आदमी का नसब ही उस का मकान है :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہ दुन्या से बहुत ज़ियादा बे रग़बत रहते और उमूरे आख़िरत में ग़ौरो फ़िक्र करते रहते थे। ह़ुसूले इ़ल्म में बहुत कोशां रहते और मोअमिनीन की ख़ैर ख़्वाही करते थे।" ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन महदी ने आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہ से पूछा : "क्या आप का कोई मकान है ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہ ने जवाब में फ़रमाया : "नहीं। लेकिन मैं आप को एक ह़दीषे पाक सुनाता हूं, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना रबीआ़ बिन अबी अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہ को फ़रमाते सुना : "**आदमी का नसब ही उस का मकान है।**"

(احياء علوم الدين، كتاب العلم، الباب الثانى فى العلم المحمود والمذموم واقسامهما واحكامهما، ج١، ص٤٧)

(ترتيب المدارك وتقريب المسالك، باب فى مجلسه وطيبه......الخ، ج١، ص٣٠)

इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने मकान न बनाया :

हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ से ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद ने पूछा : "क्या आप का कोई मकान है ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने फ़रमाया : "नहीं ।" उस ने तीन हज़ार दीनार पेश करते हुए कहा कि इन से मकान ख़रीद लें । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने दीनार ले लिये लेकिन इन्हें ख़र्च न किया । जब हारूनुर्रशीद ने बग़दाद रवानगी का इरादा किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ से अर्ज़ की : "आप भी मेरे साथ चलें, मैं ने अ़ज़्म किया है कि लोगों को इसी त़रह़ मुअत्ता की तरग़ीब दिलाऊं जिस त़रह़ अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने लोगों को कुरआन की तरग़ीब दिलाई ।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने इरशाद फ़रमाया : "लोगों को मुअत्ता शरीफ़ की तरग़ीब दिलाने की ह़ाजत नहीं क्यूंकि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के (पर्दा फ़रमाने के) बा'द सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان मुख़्तलिफ़ शहरों में फैल गए और लोगों को अह़ादीषे मुबारका बयान करते रहे जिस की बदौलत आज हर शहर में कषीर इ़ल्मे ह़दीष मौजूद है।"

(احیاء علوم الدین، ج ۱، ص ۴۷ ۔حلیۃ الاولیاء،مالک بن انس، الحدیث ۸۹۴۲،ج۶،ص ۳۶۱)

और हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़्मत निशान है : "اِخۡتِلَافُ اُمَّتِیۡ رَحۡمَۃٌ" या'नी मेरी उम्मत का इख़्तिलाफ़ रह़्मत है ।"

(شرح صحیح مسلم للنووی، کتاب الوصیۃ، باب ترک الوصیۃ......الخ، ج ۱۱، ص ۹۱)

और तुम्हारे साथ बग़दाद जाने की भी ज़रूरत नहीं, क्यूंकि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है, " उन (लोगों) के लिये मदीना बेहतर था अगर वोह जानते ।"

(صحیح مسلم ،کتاب الحج ، باب المدینہ تنفی خبثھا......الخ، الحدیث ۱۳۸۱ ،ص ۷۰۷)

और सरकारे आ़ली वक़ार, शाफ़ेए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "मदीनए मुनव्वरा मैल कुचेल को यूं दूर करता है जैसे भट्टी लोहे का मैल दूर करती है।"

(صحیح مسلم ،کتاب الحج ، باب المدینہ تنفی خبثھا وتسمی طا بۃ وطیبۃ، الحدیث ۱۳۸۱ /۱۳۸۳، ص ۷۰۷)

और येह हैं तुम्हारे दीनार, जैसे तुम ने दिये थे वैसे ही हैं। अगर चाहो तो ले लो और चाहो तो छोड़ दो या'नी तुम ने येह दीनार दे कर मुझे मदीनए मुनव्वरा छोड़ने पर मजबूर किया है। लिहाज़ा अब तुम इन्हें वापस ले लो क्यूंकि मैं मदीनतुर्रसूल عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर दुन्या व माफ़ीहा (या'नी दुन्या और जो कुछ इस में है) को तरजीह़ नहीं दूंगा ।"

(حلیۃ الاولیاء،مالک بن انس،الحدیث ۸۹۴۲،ج ۶،ص ۳۶۱ ۔احیاء علوم الدین، کتاب العلم، ج ۱، ص ۴۷)

अइम्मए अरबआ़ और मज़ाहिबे अरबआ़ ह़क़ हैं :

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ का बयान है, मैं ने ख़्वाब में अपने आप को जन्नत में पाया। क्या देखता हूं कि इस के दरमियान एक नूरानी सुतून है। उस की चारों सिम्तों में चार अफ़राद हैं जो चार ज़न्जीरों से उसे अपनी अपनी त़रफ़ खींच रहे हैं लेकिन वोह इतनी मज़बूती के साथ अपनी जगह पर क़ाइम है कि ज़र्रा बराबर ह़रकत नहीं करता। मैं ने कहा : कितने तअ़ज्जुब की बात है ! अगर येह लोग एक ही सिम्त से खींचते तो इन को आसानी होती।" फिर मैं ने एक फ़िरिश्ते से इस के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो उस ने बताया : येह सुतून दीने इस्लाम है और येह चार ज़न्जीरें मज़ाहिबे अरबआ़ (या'नी ह़नफ़ी, शाफ़ेई, ह़म्बली, मालिकी) हैं और जो ह़ज़रात इस को खींच रहे हैं वोह अइम्मए इस्लाम हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस , ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन षाबित और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल (رِضْوَانُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن) जिस बात पर येह मुत्तफ़िक़ हो जाएं वोह फ़र्ज़ है, इन के अक़्वाल ह़क़ हैं और इन का इख़्तिलाफ़ मुसलमानों के लिये रह़मत हैं।"

وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ اَجْمَعِيْن

मदीनए मुनव्वरा की फ़ज़ीलत व अ़ज़मत

मक्कए मुकर्रमा के बा'द मदीनए मुनव्वरा से अफ़्ज़ल कोई ज़मीन नहीं। शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़ज़ीलत निशान है : "मेरी इस मस्जिद में एक नमाज़ पढ़ना मस्जिदे ह़राम के इलावा दीगर मसाजिद की एक हज़ार नमाज़ों से बेहतर है।"

(صحیح البخاری ،کتاب فضل الصلاۃ فی مسجد مکۃ و المدینۃ،باب فضل الصلاۃ فی مسجد......الخ، الحدیث: ۱۱۹۰،ص۹۲)

बयान 40 : तज़्किरए इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

ह़म्दे बारी तआ़ला :

तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने राहे सुलूक पर चलने वाले हर शख़्स के लिये अपनी मा'रिफ़त के रास्ते वाज़ेह़ फ़रमाए। वोह अ़ज़मत व किब्रियाई और इक़्तिदार में यक्ता है। वोह ऐसा मा'बूदे बर ह़क़ है जिस का कोई वज़ीर है न बीवी और न ही कोई शरीक। वोह बे नियाज़ है। जिस्म व जोहर और अ़र्ज़ से पाक है। उस के लिये फ़ना है न मौत। जो हो चुका या आयन्दा होगा और जो बात सीने में है और जो तेरे लिये लिख दिया गया है वोह सब को जानता है। वोह ऐसा बसीर है कि इन्तिहाई सियाह रात में रह़्म की तारीकी में बच्चे की गिज़ा देख लेता है। वोह ऐसा समीअ़ है जो हर एक की पुकार भी सुनता है और अल्फ़ाज़ व अक़्वाल अदा करते वक़्त जो होंट हिलते हैं उस को भी सुनता है। ख़ैरो शर उसी के इरादे के ताबेअ़ है। वोह अ़र्श पर अपनी शान के मुत़ाबिक़ मुतमक्किन है जैसा कि उस ने ख़ुद फ़रमाया, "न कि जैसे तेरे दिल में खटके।" उस के लिये उतरना, चढ़ना और ह़रकत करना नहीं और जो दिल में गुमान गुज़रता है वोह उस से पाक है। येह मुसलमानों का ए'तिक़ाद है। इसी पर इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा, इमाम अह़मद, इमाम शाफ़ेई और इमाम मालिक رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن मुत्तफ़िक़ हैं।

ऐ बन्दए ख़त़ा कार ! उठ और अपने मालिके ह़क़ीक़ी के ह़ुज़ूर जबीने नियाज़ झुका दे और अपनी मोह़ताजी में उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हो और उस की बारगाह में अपनी बिगड़ी हुई ह़ालत संवारने की दरख़्वास्त कर कि वोह तेरी ह़ालत ख़ूब जानता है। तंगी व ख़ुशह़ाली में उस की ता'रीफ़ कर और मुसीबत व कुशादगी में उस का शुक्र अदा कर। और इस बात की गवाही दे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, उस का कोई शरीक नहीं, वोह इ़ज़्ज़त वाला और हमेशा रहने वाला है और येह भी गवाही दे कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ास बन्दे और रसूल हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के आल व अस्ह़ाब رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن पर अपनी रह़मतें नाज़िल फ़रमाए। (आमीन)

तआ़रुफ़े इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ :

ह़ज़रते सय्यिदुना इदरीस ह़द्दाद علیہ رحمۃ اللہ الجواد फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन मुह़म्मद बिन ह़म्बल शैबानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़दीषे पाक में साह़िबे रिवायत थे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ज़माने में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जैसा कोई न था।"

(طبقات الحنابلة، مقدمة المصنف،الرقم ١، احمدبن محمدبن حنبل،ج ١،ص ١٠)

हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ इन्तिहाई सालेह व मुत्तक़ी थे और आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ में सच्चे ईमानदारों की अ़लामात पाई जाती थीं। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना इदरीस हद्दाद علیہ رحمۃ اللہ الجواد फ़रमाते हैं : "आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ ने आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ के लिये रोटी और कुछ सालन देना अपने ज़िम्मे ले रखा था। जब वोह क़ाज़ी बन गए तो आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने रोटी क़बूल करने से इन्कार कर दिया और इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! मैं इस से कभी खाना न खाऊंगा।" और मरते दम तक आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ अपने इस क़ौल पर कारबन्द रहे।" (تذکرۃ الاولیاء، ص۱۹۷)

हज़रते इदरीस हद्दाद علیہ رحمۃ اللہ الجواد फ़रमाते हैं : "मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ को हमेशा नमाज़ पढ़ते, तिलावते कुरआन करते या कोई किताब पढ़ते देखा और कभी किसी दुन्यवी मुआ़मले में मश्गूल न पाया। और जब इन मज़्कूरा कामों में शिद्दत आ जाती तो एक, दो या तीन दिन तक कुछ न खाते। जब अपने घर वालों को देखते तो पानी पी लेते जिस से वोह समझते कि आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ का पेट भरा हुवा है।"

हज़रते सय्यिदुना मरूज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, जब हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ को कुरआने पाक को ग़ैरे मख़्लूक़ मानने पर ख़लीफ़ा वाषिक़ के क़ैदख़ान में डाला गया। तो एक दिन दारोग़ए जैल आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ के पास आया और पूछने लगा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! क्या वोह हदीष सहीह है जो ज़ालिमों और उन के मददगारों के मुतअ़ल्लिक़ है ? आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जी हां ! सहीह है।" उस ने कहा : फिर तो मैं भी ज़ालिमों के मददगारों में से हूं। तो आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : नहीं (तू ज़ालिमों का मददगार नहीं)।" उस ने कहा "क्यूं नहीं ? फ़रमाया : "ज़ालिमों का मददगार तो वोह है जो तेरे बाल संवारे, कपड़े धोए और तेरे लिये खाना लाए जब कि तू तो खुद ज़ालिम है !" (صید الخاطر لابن الجوزی، فصل التطلع بلا عمل، ص۱٤۲)

हज़रते सय्यिदुना इदरीस हद्दाद علیہ رحمۃ اللہ الجواد फ़रमाते हैं : "जब हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ की इब्तिला व आज़्माइश की घड़ियां ख़त्म हुई तो आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ को घर लाया गया और आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ की तरफ़ कषीर माल भेजा गया। आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने ज़रूरत के बा वुजूद सारा माल वापस कर दिया और उस में से कुछ न लिया। आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ के चचा हज़रते सय्यिदुना इस्हाक़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق ने आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ के इस दिन के लौटाए हुए माल का हिसाब लगाया तो वोह पचास हज़ार दीनार का था। इस पर आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने चचा से फ़रमाया : "ऐ चचा ! मैं आप को ऐसे हिसाब में मश्गूल पाता हूं जो आप के लिये बे फ़ाइदा है।" चचा ने कहा : "आज तुम ने इतना माल वापस कर दिया हालांकि तुम्हें एक एक दाने की ज़रूरत है।" आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अगर हम इसे तलब करते तो येह न मिलता और जब हम ने इसे छोड़ दिया है तो येह हमारे पास आया है।" (سیر اعلام النبلاء، الرقم۱۸۷٦، احمد بن حنبل رضی اللہ تعالی عنہ، ج۹، ص ٥۱۱)

हज़रते सय्यिदुना सईद राज़ी علیہ رحمۃ اللہ القاضی फ़रमाते हैं : "एक दिन हम हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ के साथ ख़लीफ़तुल मुतवक्किल के दरवाज़े पर पहुंचे । जब दरबारियों ने आप को ख़ास दरवाज़े से अन्दर दाख़िल किया तो आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ ने हमें इरशाद फ़रमाया : "वापस लौट जाओ ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें आफ़िय्यत अ़ता फ़रमाए ।" चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ की दुआ़ की बरकत से आज तक हम में से कोई बीमार न हुवा ।" (المرجع السابق،ص ۵۱۲)

हज़रते सय्यिदुना हिलाल बिन अ़ला علیہ رحمۃ ربِّ العُلٰی फ़रमाते हैं : "चार शख़्सिय्यात ऐसी हैं जिन का इस्लाम पर एह़सान है : (1) हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ जो अज़िय्यत व तक्लीफ़ पर षाबित क़दम रहे और कुरआने अ़ज़ीम को मख़्लूक़ न कहा (2).....हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह शाफ़ेई رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ जिन्हों ने किताब व सुन्नत पर फ़िक़्ह की बुन्याद रखी (3).....हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह क़ासिम बिन सलाम علیہ رحمۃ اللہ السلام जिन्हों ने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़दीष की तशरीह़ फ़रमाई और (4)......हज़रते सय्यिदुना अबू ज़करिय्या علیہ رحمۃ اللہ الکبریا जिन्हों ने सह़ीह़ और ग़ैरे सह़ीह़ अह़ादीष में फ़र्क़ वाज़ेह किया ।"

हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मूसा عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰه फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना हुसैन बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِیْز की त़रफ़ मिस्र से बहुत सा माले विरासत भेजा गया तो इन्हों ने हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ की ख़िदमत में तीन थैले पेश किये । हर थैले में हज़ार दीनार थे और अ़र्ज़ की : ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! इसे अपने घर वालों पर ख़र्च कर लीजिये । तो आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : मुझे इस माल की कोई ज़रूरत नहीं, मुझे मेरा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ काफ़ी है और सारा माल लौटा दिया । (حلیة الاولیاء،الامام احمد بن حنبل رضی اللہ تعالی عنہ،الحدیث۱۳۶۵۸،ج۹،ص۱۹۲)

हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ के बेटे हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰه फ़रमाते हैं : "मेरे वालिदे मोह़तरम हर रात एक मन्ज़िल कुरआने ह़कीम पढ़ते और सात दिन में कुरआने मजीद ख़त्म फ़रमाते फिर सुब्ह़ तक खड़े हो कर इबादत करते रहते । आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ हर दिन तीन सो रक्अ़त नमाज़ अदा करते थे । जब आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ पर कोड़े बरसाए गए तो आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ कमज़ोर पड़ गए । और फिर हर दिन एक सो पचास (150) रक्अ़त अदा फ़रमाते थे । आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ तीन बार सुकून में आते और तीन बार आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ की चीख़ बुलन्द होती ।"

(حلیة الاولیاء،الامام احمد بن حنبل رضی اللہ تعالی عنہ،الحدیث۱۳۶۵۸،ج۹،ص۱۹۲)

सय्यिदुना शैबान राई رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का जवाबे ला जवाब :

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰه फ़रमाते हैं : "एक रोज़ मेरे वालिदे मोह़तरम हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللّٰه تَعَالٰی عَلَیْه के

पास बैठे हुए थे कि उन के क़रीब से ह़ज़रते सय्यिदुना शैबान राई رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْه का गुज़र हुवा। उन्हों ने ऊनी जुब्बा पहन रखा था। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي से फ़रमाया : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! क्या मैं इस नावाक़िफ़ को इस की नावाक़िफ़िय्यत पर आगाह न करूं ?" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي ने फ़रमाया : "छोड़िये ! इसे अपने ह़ाल पर रहने दीजिये।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "नहीं, इसे समझाना बहुत ज़रूरी है।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना शैबान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان को अपने पास बुला कर इस्तिफ़सार फ़रमाया : "ऐ शैबान ! उस शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ क्या कहते हो जो किसी दिन अपनी नमाज़ भूल गया और नहीं जानता कि कौन सी नमाज़ थी तो अब उस पर क्या वाजिब है ?" तो ह़ज़रते सय्यिदुना शैबान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان ने जवाबन इरशाद फ़रमाया : "ऐ अह़मद ! ऐसे शख़्स का दिल यादे इलाही عَزَّ وَجَلَّ से ग़ाफ़िल है और वोह भूला हुवा ग़ाफ़िल है। लिहाज़ा उस पर लाज़िम है कि वोह सीखे ताकि दोबारा कभी नमाज़ से ग़ाफ़िल न हो और उस दिन की सारी नमाज़ें भी क़ज़ा करे। फिर वोह ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي की तरफ़ मुतवज्जेह हुए और फ़रमाया : "क्या आप दोनों मेरे जवाब का रद्द कर सकते हैं ?" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ ख़ुशी से चिल्ला उठे और फ़रमाया : "नहीं, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! येही जवाब सह़ीह़ है।" फिर उन को वहीं छोड़ कर ह़ज़रते सय्यिदुना शैबान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان तशरीफ़ ले गए।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इदरीस رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ सिला हुवा लिबास न पहनते थे बल्कि कच्ची सिलाई कर के दरमियान से गोल काट लेते और सर में दाख़िल कर लेते और फ़रमाते : "जो मर जाएगा उस के लिये इतना ही काफ़ी है।" आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ ज़ियादा तर ख़ुदरू ज़मीनी सब्ज़ी तनावुल करते और फ़रमाते : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! येह वोह ह़लाल चीज़ है जिस में कोई ह़िसाबो किताब नहीं।"

मश्अ़ल की रोशनी में सूत न कातो :

ह़ज़रते सय्यिदुना इदरीस رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं, एक रोज़ आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ के रुफ़क़ा की औ़रतों का एक गुरौह आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर था कि एक औ़रत आगे बढ़ कर अ़र्ज़ करने लगी : "या सय्यिदी ! हम अपने घरों में सूत कात रही होती हैं तो क़रीब से सिपाही मश्अ़ल ले कर गुज़रते हैं तो क्या हमारे लिये इन मश्अ़लों की रोशनी में ऊन कातना जाइज़ है ? आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "तुम कौन हो ?" उस ने अ़र्ज़ की : "ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्रे ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي की बहन।" तो आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम्हारे घर से तक़्वा का ज़ुहूर हुवा इस लिये तुम इस की रोशनी में ऊन मत कातो।" (وفيات الاعيان لابن خلكان،حرف الباء، الرقم٤ ١ ١، الحافى، ج١، ص٢٦٨،بتغير)

हज़रते सय्यिदुना इदरीस हद्दाद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ हज के लिये मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا हाज़िर हुए। वहां आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ पर तंग दस्ती ग़ालिब आ गई। आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ के पास एक बालटी थी। वोह आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने किसी चीज़ के बदले एक सब्ज़ी फ़रोश के पास गिरवी रख दी। जब **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ की तंग दस्ती दूर फ़रमा दी तो आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ उस सब्ज़ी फ़रोश के पास आए और उसे रक़म दे कर अपनी बालटी का मुतालबा किया। सब्ज़ी फ़रोश खड़ा हुवा और एक जैसी दो बालटियां हाज़िर कर दीं और कहने लगा : ''मुझ पर आप की बालटी मुश्तबा हो गई है, आप इन में से जो चाहें ले लें।'' तो आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''मुझ पर भी मुआमला मुश्तबा हो गया है कि कौन सी बालटी मेरी है? **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! मैं इसे बिल्कुल न लूंगा।'' सब्ज़ी फ़रोश ने कहा : ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! मैं भी इस को दिये बिग़ैर न छोड़ूंगा।'' आख़िर कार दोनों उस को फ़रोख़्त कर के रक़म सदक़ा करने पर रिज़ा मन्द हो गए।

(حلیۃ الاولیاء،الامام احمد بن حنبل رضی اللہ تعالی عنہ،الحدیث ۱۳۶۰۱،ج۹،ص ۱۸۱،بتغیر)

हज़रते सय्यिदुना इदरीस हद्दाद علیہ رحمۃ اللہ الجواد फ़रमाते हैं : ''जब भी हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ किसी जनाज़े में जाते तो उस दिन न खाना खाते, न उस रात सोते। आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ जब कोई क़ब्र देखते तो इस तरह रोते जैसे वोह औरत रोती है जिस का बच्चा फ़ौत हो चुका हो।''

इमाम अहमद رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ का आंखों का कुफ़्ले मदीना :(1)

एक रोज़ हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ अचानक घर से बाहर निकले तो एक औरत पर नज़र पड़ी जिस का चेहरा खुला हुवा था। आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़ौरन पढ़ा : ''لَاحَوْلَ وَ لَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْم या'नी बुलन्द व बरतर परवर दगार के सिवा कोई ताक़त व कुव्वत नहीं।'' और क़सम खाई कि आयन्दा जब भी निकलूंगा चेहरा ढांप कर निकलूंगा ताकि किसी औरत पर नज़र न पड़े।

जब भी कोई नया वाक़िआ या मस्अला दर पेश होता तो आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ उस को उस वक़्त तक न लिखते जब तक उ-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام की ख़िदमत में पेश न फ़रमा लेते। अगर आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ की राए इन की राए के मुताबिक़ होती तो लिख लेते वरना छोड़ देते और दिल में आने वाली बात पर इस्तिग़फ़ार करते।

हज़रते सय्यिदुना इदरीस हद्दाद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ के ज़ोहद व वरअ़ का येह आ़लम था कि जब आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ का क़लम

1....दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में आंखों को बद निगाही से बचाने को ''आंखों का कुफ़्ले मदीना'' कहते हैं।

ख़ुश्क हो जाता तो इसे अपने सर से पौंछते, अपने कपड़े से न पौंछते। आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से वजह दरयाफ़्त की गई तो फ़रमाया : "येह रोशनाई इल्म का बाक़ी मांदा हिस्सा है लिहाज़ा मैं इसे कपड़ों से साफ़ नहीं करता कि हो सकता है वोह कपड़ा गन्दगी में डाल दिया जाए।"

आठ लाख, साठ हज़ार शुरकाए जनाज़ा :

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन मूसा عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ सिन 164 हिजरी में पैदा हुए और ब वक़्ते विसाल आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ की उम्र मुबारक 77 बरस थी। आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ को जुमुआ की नमाज़ के बा'द दफ़्नाया गया। कषीर लोग आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ के जनाज़े में इकठ्ठे हुए। हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन ताहिर علیہ رحمۃ اللہ الظاہر ने आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। जब नमाज़े जनाज़ा में हाज़िरीन को शुमार किया गया तो आठ लाख (8,00,000) मर्द और साठ हज़ार (60,000) औरतें थीं। जिस जगह आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ की नमाज़े जनाज़ा अदा की गई वोह चोसठ (64) जरीब [1] थी। आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ की ता'ज़िय्यत के लिये ख़लीफ़ा मुतवक्किल या ख़लीफ़ा वाषिक़ बैठा तो हुकमा व उमरा और ख़ास लोगों से कहा गया कि ख़लीफ़ा से ता'ज़िय्यत करें।

(حلیة الاولیاء،الامام احمد بن حنبل رضی اللہ تعالی عنہ، الحدیث۱۳۵۶۳،ج۹ص۱۷٤۔ الطبقات الکبریٰ للشعرانی، الرقم۹٤، الامام احمد بن حنبل رضی اللہ تعالی عنہ، ج۱،ص۸۰)

दस लाख अहादीष लिखने वाला इमाम :

हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ अपने ज़माने के सब से बड़े ज़ाहिद, मुत्तक़ी, फ़क़ीह और परहेज़गार थे। हदीषे पाक को सब से ज़ियादा जानते थे। आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने सहीह अहादीष को ग़ैर सहीह अहादीष से अलाहिदा कर के निशान देही की। आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ रिजाले हदीष (या'नी हदीष के रावियों) और उन में से सच्चे रावियों के मुतअ़ल्लिक़ भी सब से ज़ियादा इल्म रखते थे। आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने दस लाख (10,00,000) अहादीष तहरीर फ़रमाईं। जिन में सनद और मतन वाली अहादीष की ता'दाद एक लाख पचास हज़ार (1,50,000) है।

मन्कूल है कि जब आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ पर तशद्दुद किया गया और मसाइब व आलाम ढाए गए तो आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ षाबित क़दम रहे। जिस की वजह से अहले मशरिक़ व मग़रिब के महबूब बन गए। आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ हमेशा लोगों की निगाहों में बा इज़्ज़त रहे यहां तक कि जब लोग आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ को देखते तो गोया वोह किसी शेर को देख रहे होते।

1.....**जरीब :** ज़मीन की उस मा'लूम मिक़दार को कहते हैं जो दस **क़फ़ीज़** के बराबर होती है और हर क़फ़ीज़ चालीस हाथ का होता है। (لسان العرب،ج۱، ص۵٦۵)

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ के मरज़े विसाल में उस वक़्त हाज़िर हुए जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ क़रीबुल मर्ग थे। वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ को देख कर रोने लगे और अ़र्ज़ की : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! मुझे कुछ वसिय्यत फ़रमाइये।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपनी ज़बाने मुबारक की त़रफ़ इशारा करते हुए येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

﴿ لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ۝ ﴾ (۲۳،الصّٰفّٰت:۶۱) *तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐसी ही बात के लिये कामियों को काम करना चाहिये।*

फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने दाइये अजल को लब्बैक कहा और आप का त़ाइरे रूह़ क़फ़से उ़नसुरी से परवाज़ कर गया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ पर रह़मत हो और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो। (आमीन)

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ اَجْمَعِيْن

हि़फ़ाज़ते ज़बान की फ़ज़ीलत

शहनशाहे नबुव्वत, पैकरे जूदो हिक्मत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है :

مَنْ يَّتَكَفَّلُ لِيْ مَابَيْنَ لَحْيَيْهِ وَرِجْلَيْهِ اَتَكَفَّلُ لَهٗ بِالْجَنَّة

तर्जमा : *जो शख़्स मुझे दो जबड़ों के दरमियान वाली चीज़ (या'नी ज़बान) और दो टांगों के दरमियान वाली चीज़ (या'नी शर्मगाह) की ज़मानत दे मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूं।*

(صحيح البخارى، كتاب الرقاق، باب حفظ اللّسان، الحديث ٦٤٧٤،ص٥٤٣،مفهومًا)

बयान 41 : चन्द हिकायात

हम्दे बारी तआला :

तमाम ता'रीफ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने आस्मान को अपनी क़ुदरत से बुलन्द फ़रमाया। अफ़्लाक को इन के मदार में घुमाया। अपनी मशिय्यत से ज़मीन को फैलाया और इसे चलने के लिये आसान किया, आस्मान को क़ाबिले तस्ख़ीर बनाया। उस ने सल्तनत बनाई और मख़्लूक़ को इस में बसाया। वोह ख़ुद ज़िन्दा है और औरों को क़ाइम रखने वाला है, उसे ऊंघ आती है न नींद। उस ने मौत और ज़िन्दगी को पैदा फ़रमाया। नजात और हलाकत को मुक़र्रर फ़रमाया, वोह हमेशा से है और सब को पैदा करने वाला है, पैदा करने और हुक्म देने का मुख़्तारे हक़ीक़ी वोही है, मुआफ़ करना और सज़ा देना उसी के दस्ते क़ुदरत में है, उसी ने लौहो क़लम पैदा फ़रमाए। इन्सान को वोह कुछ सिखाया जो वोह न जानता था, उसे अक़्ले कामिल, समझ बूझ और फ़हम व फ़िरासत अ़ता फ़रमाई। वोही दरया की गहराइयों में ग़र्क़ होने वालों को हलाकत का यक़ीनी मुशाहदा कर लेने के बा'द बचाने वाला है और तमाम ह़ीलों के ख़त्म होने के बा'द हलाक होने वाले को बचाने वाला भी वोही है और सख़्त बेड़ियों में बन्धे क़ैदियों को आज़ाद करने वाला और क़ैद से छुटकारा अ़ता कर के इन की ह़ाजत रवाई फ़रमाने वाला भी वोही है, वोह बन्दों से बे परवाह है, इन्हें फ़रमां बरदारी और ईमान का हुक्म देता है और इन के लिये कुफ़्रो शिर्क पर राज़ी नहीं, इताअ़त उसे नफ़्अ़ दे सकती है न ही नाफ़रमानी नुक़्सान दे सकती है।

ऐ गुनहगार ! बेशक वोह तुझे फ़रमां बरदारी का हुक्म देता और नाफ़रमानी से मन्अ़ फ़रमाता है ताकि तुझे यक़ीन की आंख से अपनी क़ुदरत का मुशाहदा कराए और तेरे लिये दीन व दुन्या का मुआमला वाज़ेह फ़रमाए। हर वक़्त उस की त़रफ़ मुतवज्जेह रह, उस से डरता रह और उस की नाफ़रमानी से बच। अगर तू उसे नहीं देख पाता तो येह यक़ीन रख कि वोह तो तुझे देख रहा है। नमाज़ों की पाबन्दी कर जिन का उस ने तुझे ताकिदी हुक्म दिया है और सह़री के वक़्त आ़जिज़ी व इन्किसारी से उस की बारगाह में खड़ा हो, बेशक वोह तुझ पर अपनी रोशन ने'मतें निछावर फ़रमाएगा और तुझे अपने मक़्सूद तक पहुंचा कर तुझ पर एह़सान फ़रमाएगा। क्या उस ने मां के पेट में तेरी ह़िफ़ाज़त नहीं की और अपने लुत़्फ़ो करम से तुझे ख़ूराक मुहय्या नहीं की ? क्या उस ने तुझे कमज़ोर पैदा कर के फिर रिज़्क़ फ़राहम करते हुए तुझे क़वी नहीं किया ? क्या उस ने तरी पैदाइश और परवरिश अच्छी त़रह़ न की ? क्या तुझे इ़ज़्ज़त व इकराम नहीं बख़्शा ? क्या तुझे हिदायत व तक़्वा जैसी अ़ज़ीम दौलत से मुज़य्यन नहीं किया ? क्या तुझे अ़क़्ल दे कर ईमान की त़रफ़ तेरी रहनुमाई नहीं फ़रमाई ? क्या तुझे अपनी ने'मतें अ़त़ा नहीं फ़रमाई ? क्या तुझे अपनी फ़रमा बरदारी का हुक्म नहीं दिया, और ताकीद नहीं की और तुझे अपनी नाफ़रमानी से नहीं बचाया ? क्या तुझे निदा दे कर अपने दरे रह़मत पर नहीं बुलाया ? क्या सह़री के वक़्त तुझे अपने मुकर्रम ख़ित़ाब से बेदार नहीं किया और तुझ से राज़ की बातें न कीं ? क्या तुझ से

आख़िरत में कामयाबी और जज़ा का वा'दा नहीं फ़रमाया ? क्या तू ने सुवाल किया और दुआ की तो उस ने तेरे सुवाल का जवाब नहीं दिया और तेरी दुआ क़बूल नहीं की ? जब तू ने मुसीबतों में मदद मांगी तो क्या उस ने तेरी मदद नहीं फ़रमाई और तुझे नजात अ़ता नहीं की ? और जब तू ने नाफ़रमानी की तो क्या उस ने अपनी बुर्द बारी से तेरी पर्दा पोशी नहीं फ़रमाई और तुझे अपनी रह़मत से नहीं ढ़ापा ? क्या तू ने कई मरतबा अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब को दा'वत नहीं दी ? लेकिन फिर भी उस ने तुझे राज़ी रखा ! तो क्या तुझे ज़ैब देता है कि तू गुनाहों और नाफ़रमानियों से उस का मुक़ाबला करे ? उस ने तुझ पर अपना रिज़्क़ कुशादा किया और तू उस की नाफ़रमानी में इज़ाफ़ा करता है। तू लोगों से तो छुप जाता है मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से न छुप सकेगा। वोह तुझे देख रहा है, कब तक तू गुमराही और ख़्वाहिशात के समन्दर में ग़र्क़ रहेगा ? अगर तू नजात चाहता है तो नदामत की कश्ती पर सुवार हो जा और अपने मौला عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सच्ची तौबा कर के फ़ाइदा उठा। अपने आप को इख़्लास के साह़िल पर डाल दे वोह तुझे नजात और ख़लासी अ़ता फ़रमाएगा।

पाक है वोह ज़ात जिस ने अपने ख़ास बन्दों पर ख़ास नज़रे करम फ़रमाई। इन के दिलों को अपनी तौह़ीद का घर बनाया और अपनी वह़दानिय्यत का इक़रार करने वाला बनाया और इन के सीनों को अपने ज़िक्र और अपनी बुज़ुर्गी की जगह बनाया। जब कभी उफ़ुक़े तौफ़ीक़ से कोई सितारा तुलूअ़ होता है या तह़क़ीक़ की बिजलियों से कोई नूर चमकता है तो इन के दिल मह़बूब के ज़िक्र से कुशादा और शराबे मह़ब्बत से सैराब हो कर ख़ुश हो जाते हैं और इन के सामने से पोशीदा राज़ों से पर्दे उठा दिये जाते हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़ैद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : "मैं जब भी अपने नफ़्स को इबादते इलाही عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ राग़िब करता तो वोह रोने लगता लेकिन मैं इसे मुसलसल रग़बत दिलाता रहा यहां तक कि वोह उस पर ख़ुश हो गया। जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त पा लेता है हर शै उस के ताबेअ़ हो जाती है।"

शेर से पर्दा करने वाली वलिय्या :

ह़ज़रते सय्यिदुना असमई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "एक दफ़्आ़ मैं शाम के रास्ते ह़ज्जे बैतुल्लाह शरीफ़ زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا के इरादे से निकला। दौराने सफ़र एक बहुत बड़ा ख़ौफ़नाक शेर नुमूदार हुवा और रास्ते में ह़ाइल हो गया। मैं ने बराबर वाले शख़्स से पूछा : "क्या क़ाफ़िले में कोई ऐसा आदमी नहीं जो तल्वार ले और इस शेर को यहां से हटा दे ?" तो उस ने जवाब दिया : "मैं किसी ऐसे आदमी को नहीं जानता, अलबत्ता ! एक औ़रत है जो इसे बिग़ैर तल्वार के भी हटा सकती है।" मैं ने उस के मुतअ़ल्लिक़ पूछा और हम दोनों उठ खड़े हुए और क़रीब ही एक सुवारी के कजावे के पास पहुंचे तो उस ने पुकारा : "ऐ बेटी ! नीचे उतरो और हम से इस शेर को दूर कर दो।" अन्दर से आवाज़ आई : "ऐ मेरे वालिदे मोह़तरम ! क्या आप का दिल बरदाश्त करता है कि मुझे शेर देखे, वोह मुज़क्कर है और मैं मुअन्नष। लेकिन ऐ अब्बा जान ! शेर को जा कर कह दीजिये कि मेरी बेटी फ़ाति़मा तुझे सलाम कहती है और उस ज़ात की क़सम देती है जिसे न नींद आती है, न ऊंघ। तू हमारे

रास्ते से हट जा।" हज़रते सय्यिदुना इमाम असमई رَحْمَةُاللهِ تعالٰی علیه फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अभी उस की गुफ़्त्गू ख़त्म न हुई थी कि मैं ने देखा कि शेर सामने से जा रहा था।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह सालिहीन की अ़लामतें और आ़रिफ़ीन की निशानियां हैं।

आबे ज़म ज़म सत्तू, दूध और शहद बन गया :

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन इस्हाक़ बसरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : "मैं सह़री के वक़्त आबे ज़म ज़म शरीफ़ के कुंवें के पास था कि अचानक एक बुज़ुर्ग तशरीफ़ लाए, डोल भरा और पानी पी कर चल दिये। मैं ने उन का जूठा पानी पिया तो वोह मीठे सत्तू की त़रह़ था। ऐसा शरबत मैं ने पहले कभी न पिया था। जब मैं उन की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा तो वोह जा चुके थे। मैं दूसरे दिन दोबारा ज़म ज़म के कुंवें के पास आ गया। वोह बुज़ुर्ग फिर तशरीफ़ लाए और डोल भर कर पानी नोश फ़रमाया। अब मैं ने उन का बचा हुवा पानी पिया तो वोह ख़ुश्बूदार मीठे शहद की त़रह़ था। ऐसा लज़ीज़ मशरूब मैं ने पहले कभी न चखा था। मैं दोबारा मुतवज्जेह हुवा तो वोह बुज़ुर्ग तशरीफ़ ले जा चुके थे। तीसरे रोज़ मैं सह़री के वक़्त ज़मज़म शरीफ़ के कुंवें पर मौजूद था कि वोह बुज़ुर्ग फिर तशरीफ़ लाए और डोल भर कर पानी पिया। मैं ने उन का जूठा पानी पिया तो मीठे दूध की त़रह़ था। ऐसा लज़ीज़ दूध मैं ने कभी न पिया था। मैं ने अ़र्ज़ की : " इस घर की हुर्मत की क़सम ! येह बताइये ! आप कौन हैं ?" तो उन्हों ने फ़रमाया : "क्या मेरी मौत तक इसे ज़ाहिर तो न करोगे ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां।" तो उन्हों ने बताया : "मैं **सुफ़्यान सौरी** हूं।"

तीन चीज़ों के सबब बख़्शिश हो गई :

हज़रते सय्यिदुना अबू यूसुफ़ ग़स्लौनी رَحْمَةُاللهِ تعالٰی علیه फ़रमाते हैं : "एक दिन मैं शाम की एक मस्जिद में बैठा हुवा था कि हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَکْرَم तशरीफ़ लाए और मुझे फ़रमाया : "ऐ ग़सलौनी ! आज मैं ने एक अ़जीब बात देखी।" मैं ने पूछा : "वोह क्या है ?" फ़रमाने लगे : "मैं क़ब्रिस्तान में एक क़ब्र के पास खड़ा था कि अचानक एक सफ़ेद रीश बूढ़े की क़ब्र शक़ हुई। उस ने मुझ से कहा : "ऐ इब्राहीम मुझ से कुछ पूछना है तो पूछ लो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे आप के लिये जिन्दा किया है !" तो मैं ने पूछा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" उस ने जवाब दिया : "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर गुनाहों का बोझ लिये हाज़िर हुवा लेकिन उस ने मुझ से फ़रमाया : "मैं ने तुझे तीन चीज़ों के सबब बख़्श दिया : (1).....तू मेरे पास इस हाल में आया कि तुझे उस से मह़ब्बत है जो मेरा मह़बूब है (2).......तेरे सीने में ज़र्रा बराबर ह़राम शराब नहीं और (3).....तेरे बाल सफ़ेद हैं और मुझे ह़या आती है कि किसी सफ़ेद बालों वाले बुढ़े को आग का अ़ज़ाब दूं। हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَکْرَم फ़रमाते हैं : "फिर बुढ़े की क़ब्र बन्द हो गई।" हज़रते सय्यिदुना ग़सलोनी ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू इस्हाक़ ! क्या आप मुझे उस क़ब्र की ज़ियारत न करवाएंगे ?" तो आप رَحْمَةُاللهِ تعالٰی علیه ने फ़रमाया : ऐ ग़सलोनी

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह्म फ़रमाए ! उस के साथ अपना मुआमला दुरुस्त रख तो वोह तुझे अपनी कुदरत के अजाइबात दिखाएगा और उस की महब्बत में तमाम ग़ैरों से ग़ाफ़िल व बे नियाज़ हो जा।''

अंगूरों की ग़ैबी टोकरी :

हज़रते सय्यिदुना लैष बिन सा'द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد फ़रमाते हैं : ''एक मरतबा मैं जब हज के इरादे से मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا हाज़िर हुवा। मैं ने नमाज़े अ़स्र अदा की फिर जबले अबी कुबैस की त़रफ़ चल पड़ा। वहां मैं ने देखा कि एक शख़्स बैठा येह दुआ़ कर रहा था : ''या रब्ब عَزَّوَجَلَّ या रब्ब عَزَّوَجَلَّ'' यहां तक कि उस की सांस फूल गई। फिर कहने लगा : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ'' यहां तक कि उस की सांस फूल गई। फिर कहा : ''या ह़य्यु, या क़य्युम عَزَّوَجَلَّ!'' यहां तक कि उस की सांस फूल गई। फिर कहने लगा : ''या रह़मान عَزَّوَجَلَّ या रह़मान عَزَّوَجَلَّ'' यहां तक कि उस की सांस फूल गई। फिर ''या अरह़मर्राह़िमीन'' का विर्द करता रहा ह़त्ता कि उस की सांस फूल गई।'' जब वोह दुआ़ से फ़ारिग़ हुवा तो अ़र्ज़ करने लगा : ''या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अंगूर खाने की ख़्वाहिश है मुझे अंगूर खिला दे और मेरी चादर फट गई है मुझे नई चादर अ़त़ा कर दे।'' हज़रते सय्यिदुना लैष बिन सा'द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد फ़रमाते हैं : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उस की बात अभी पूरी न हुई थी कि मैं ने एक टोकरी देखी जो अंगूरों से भरी हुई थी ह़ालांकि उन दिनों अंगूरों का मौसिम न था। साथ ही दो चादरें भी थीं। जब उस ने खाने का इरादा किया तो मैं ने कहा : मैं भी आप का शरीक हूं। उस ने पूछा : वोह कैसे ? मैं ने अ़र्ज़ की जब आप ने दुआ़ की थी तो मैं ने आमीन कहा था। उस ने कहा : ''तो आओ, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम ले कर खाओ और कोई चीज़ बचा कर न रखना।'' मैं ने आगे बढ़ कर अंगूर खाना शुरूअ़ कर दिया। और वोह अंगूर बीज के बिग़ैर था मैं ने ऐसा उ़म्दा अंगूर पहले कभी न खाया था। पस मैंने ख़ूब सैर हो कर खाया। मगर टोकरी में से कुछ भी कम न हुवा। फिर उस ने कहा : इन चादरों में से जो पसन्द हो ले लो।'' मैं ने कहा : ''मुझे चादर की ज़रूरत नहीं फिर वोह कहने लगा की तुम थोड़ी देर छुप जाओ कि मैं चादरें पहन लूं। मैं ओट में हो गया। उस ने एक चादर को तहबन्द के त़ौर पर इस्ति'माल किया और दूसरी ऊपर ओढ़ ली फिर दूसरी दो चादरें अपने हाथ में ले लीं जो पहले से उस के पास मौजूद थीं और चल दिया। मैं भी उस के पीछे चल पड़ा यहां तक कि जब वोह सफ़ा व मर्वा के मक़ाम पर पहुंचा तो उसे एक आदमी मिला और कहने लगा : ''ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के चचाज़ाद ! मुझे लिबास पहनाइये, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को पहनाए।'' उस ने दोनों चादरें मांगने वाले के ह़वाले कर दीं। मैं ने उस आदमी से पूछा : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़म फ़रमाए, येह कौन थे ?'' उस ने जवाब दिया : ''येह हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد थे।'' हज़रते सय्यिदुना लैष رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''इस के बा'द मैं ने आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को बहुत तलाश किया मगर कहीं न पाया। मुझे आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की जुदाई पर बहुत सदमा हुवा।''

हम अपने आप को खिलाते तो येह मछली न निकलती :

हज़रते सय्यिदुना अबू नस्र सय्याद عليه رحمة الله الجواد फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى एक दफ़्आ मेरे पास से गुज़रे जब कि मैं जामेअ़ मस्जिद के दरवाज़े पर खड़ा था। लोग नमाज़े जुमुआ पढ़ कर वापस आ रहे थे। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या बात है मैं तुम्हें इस वक़्त यहां देख रहा हूं ? मैं ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! घर में न आटा है, न रोटी, न दिरहम और न कोई दूसरी चीज़ जो बेची जा सके।" आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मददगार है। अपना जाल उठाओ और आओ वादी की त़रफ़ चलते हैं।" हज़रते सय्यिदुना अबू नस्र عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْبَر फ़रमाते हैं : "मैं ने जाल उठाया और आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के साथ चल दिया। जब हम वादी के पास पहुंचे तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "वुज़ू करो और दो रक्अ़त नमाज़ अदा करो।" मै ने ऐसा ही किया तो उस के बा'द मुझे फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम ले कर जाल डाल दो।" मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम लिया और जाल डाल दिया। उस में कोई भारी चीज़ फंस गई। मैं ने उस को खींचा तो मुझे बहुत दुश्वारी हुई। मैं ने हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى से अ़र्ज़ की, कि मेरा हाथ पकड़ें और मेरी मदद करें। मुझे अन्देशा है कि जाल फट जाएगा। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه आगे बढ़े और मेरे साथ मिल कर जाल खींचा तो देखा कि उस में एक बहुत बड़ी मछली थी। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "इसे लो, बेचो और इस की क़ीमत से घर वालों के लिये ज़रूरत की अश्या ख़रीदो।" हज़रते सय्यिदुना अबू नस्र عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْبَر फ़रमाते हैं : "मैं उसे ले कर शहर के दरवाज़े पर आया। वहां मुझे एक आदमी मिला। उस ने मुझ से पूछा, "येह मछली कितने की है ?" मैं ने कहा, "दस दिरहम की।" उस ने कहा, "मैं इस को ख़रीदता हूं।" चुनान्चे, उस ने तोल कर दस दिरहम की ख़रीद ली। मैं ने घर वालों की अश्याए ज़रूरियात ख़रीद लीं। फिर दो चपातियों में ह़ल्वा रखा और इन्हें ले कर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गया और दरवाज़ा खट खटाया। अन्दर से आवाज़ आई "तू कौन है ?' मैं ने अ़र्ज़ की, "अबू नस्र।" तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "दरवाज़ा खोलो और जो पास है वोह दरवाज़े पर ही रख कर अन्दर आ जाओ।" मैं अन्दर दाख़िल हुवा और जो कुछ किया था आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "इस इन्आ़मे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ पर उस का शुक्र है।" मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं ने घर में कुछ तय्यार किया था। हम सब घर वालों ने खा लिया है, येह मेरे पास दो रोटियां हैं जिन में ह़लवा रखा हुवा है (आप क़बूल फ़रमा लीजिये)।" तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू नस्र ! अगर हम अपने आप को खिलाते तो येह मछली न निकलती। तुम जाओ और इस में से खुद भी खाओ और घर वालों को भी खिलाओ।"

दरया पर चलने वाला कुत़ुब :

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अबी हवारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं : "मोसुल शहर में एक ग़मज़दा आशिक़े इलाही रहा करता था जिस का नाम सा'दून था। मैं उस के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आता। एक दिन मैं ने उस से पूछा : "तुम्हारे ग़म और महब्बत का सबब क्या है ?" उस ने जवाब दिया : "एक दिन मैं सैर व सियाहत करते हुए निकला ताकि किसी ऐसे बन्दे से मिलूं जो मेरे दिल को पाक कर दे और मुझे रब्ब عَزَّوَجَلَّ के रास्ते की मा'रिफ़त करा दे। मैं ने एक आदमी को देखा जो शेर पर सुवार था। मैं उस से ख़ौफ़ज़दा हुवा तो उस ने मुझे पुकारा : "क्या तुम अपने जैसी मख़्लूक़ से डरते हो ?" फिर उस ने शेर को भगा दिया और पैदल चलने लगा। मैं उस के पीछे हो लिया और उसे सलाम किया, उस ने सलाम का जवाब दिया। मैं ने अ़र्ज़ की : "उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को येह मर्तबा और कुर्ब अ़ता फ़रमाया है ! मुझे भी इस रास्ते की रहनुमाई फ़रमाइये।" उस ने फ़रमाया : दुन्या को क़ैद ख़ाना और आख़िरत को ठिकाना और क़ल्आ़ जानो, अपनी आंखों को गिर्या व ज़ारी और बेदारी का आदी करो, सहरी के वक़्त बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में हाज़िरी को लाज़िम पकड़ो और उस ज़ात से ख़ौफ़ ज़दा रहो। मैं ने अ़र्ज़ की : "या सय्यिदी ! मज़ीद कुछ फ़रमाइये।" तो इरशाद फ़रमाया। "ऐ सा'दून ! तू अ़क़्ल मन्द है या मजनून ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब तुझे राहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त मिल जाए तो तेरा वुजूद ताबेअ़ हो जाएगा और सियाही दूर हो जाएगी।" मैं ने अ़र्ज़ की "या सय्यिदी ! उस ज़ात का वासित़ा जिस ने आप को भेदों पर आगाह फ़रमाया और आप का दिल अपने अन्वार से मा'मूर फ़रमाया ! मुझे इजाज़त दीजिये कि दिन का बक़िय्या हिस्सा आप की सोहबत में गुज़ारूं।" तो फ़रमाने लगे : "इस शर्त़ पर कि तुम जो देखोगे इसे मेरे ज़िन्दा रहने तक छुपाए रखोगे।" मैं ने हामी भर ली। फिर फ़रमाया : "मेरे साथ चलो हम किसी के जनाज़े पर हाज़िर होंगे।"

फिर हम चलते चलते एक दरया पर जा पहुंचे। उन्हों ने दरया पर अपनी चादर बिछाई और मेरे हाथ को थाम लिया। हम चादर पर बैठ गए यहां तक कि हम दरया के दरमियान एक जज़ीरे पर पहुंच गए। वहां हम ने एक आदमी को देखा जो चित लैटा हुवा था, वोह सकराते मौत में था। जब उस का इन्तिक़ाल हो गया तो हम ने उस के ग़ुस्ल व कफ़न का एहतिमाम किया, उस पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी फिर उसे क़ब्र में दफ़्न कर दिया। मैं ने अ़र्ज़ की : "या सय्यिदी ! येह कौन हैं और इन का नाम क्या है ?" इरशाद फ़रमाया : "येह हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वह्हाब عليه رحمة الله التَّوَّاب हैं जो सात कुतुबों में से एक थे, अब मुझे इन की जगह दी गई है।" मैं ने उन से उन के अपने मुतअ़ल्लिक़ भी पूछना चाहा मगर उन्हों ने बताने से इन्कार कर दिया और मुझे छोड़ कर तशरीफ़ ले गए। मैं जज़ीरे में अकेला रह जाने की वजह से शिद्दत से रो पड़ा। फिर मैं ने उस क़ब्र पर तिलावते कुरआने करीम की आवाज़ सुनी लेकिन पढ़ने वाला नज़र न आ रहा था। मैं उस से मानूस हो गया और क़ब्र के पास ही बैठ गया। मैं सोने और जागने की कैफ़िय्यत में था कि मुझे ख़्वाब में एक हसीनो जमील बुज़ुर्ग का दीदार हुवा।

मैं ने अ़र्ज़ की : "या सय्यिदी ! उस ज़ात कि क़सम जिस ने आप को अपनी रिज़ा और क़बूलिय्यत की पौशाक अ़ता फ़रमाई है उस बुज़ुर्ग का नाम क्या है जो मुझे इस जज़ीरे में तन्हा छोड़ गए हैं ?" उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : "येह साहिबे इल्मे रब्बानी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह यूनानी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه थे, वोह मेरी जगह क़ुतुब बनाए गए हैं, कल वोह तुम्हारे पास आएंगे और तुम्हें वापस पहुंचा देंगे, लेकिन जब तुम्हारी उन से मुलाक़ात हो तो मेरी त़रफ़ से कहना कि "मेरे और अपने दरमियान किये हुए वा'दे को न भूलना।"

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'दून رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : 'मैं बेदार हुवा तो फ़ज्र हो चुकी थी। मैं ने वुज़ू कर के नमाज़ पढ़ी और क़ुरआने ह़कीम की तिलावत करने के बा'द कुछ देर के लिये लैट गया तो अचानक मुझे ऊंघ आ गई और मुझे तब पता चला जब वोह बुज़ुर्ग मुझे बेदार कर रहे थे। मैं ने उन की दस्त बोसी करते हुए मा'ज़ेरत की। उन्हों ने मेरा हाथ पकड़ा और दरया की त़रफ़ चल पड़े यहां तक कि हम ख़ुश्की पर पहुंच गए। जब मैं ने लौटने का इरादा किया तो उन्हों ने फ़रमाया : "शैख़ की वसिय्यत कहां है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "या सय्यिदी ! आप अच्छी त़रह़ जानते हैं कि आप के और उन के दरमियान क्या वा'दा है, उन्हों ने फ़रमाया है कि उसे न भूलना।" तो आप ने फ़रमाया : "मैं वा'दा भूलने वाला नहीं।" मैं ने अ़र्ज़ की : "या सय्यिदी ! मुझे इरशाद फ़रमाइये ! आप के और उन के दरमियान कौन सा वा'दा है।" आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "उन्हों ने मुझ से अ़ह्द लिया है कि मैं हर रोज़ उन की ज़ियारत के लिये आया करूंगा।" मैं ने अ़र्ज़ की : "या सय्यिदी ! उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को अपनी मा'रिफ़त अ़ता फ़रमाई और अपनी विलायत से मुशर्रफ़ फ़रमाया ! मुझे ऐसा तौशए सफ़र अ़ता फ़रमा दें जो मेरे लिये दुन्या व आख़िरत में नफ़्अ़ बख़्श हो।" तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "हिदायत के रास्ते पर चलते रहो, गुमराह मर्दूद लोगों से कनारा कश रहो, आज के रिज़्क़ पर क़नाअ़त करो और कल की फ़िक्र न करो, रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पर राज़ी रहो और आज़्माइश और क़ज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पर सब्र करो।" फिर मुझे वहीं छोड़ कर वोह रुख़्सत हो गए। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना सा'दून رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "येही वाक़िआ़ मेरी मह़ब्बत, दीवानगी और शौक़े दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ का सबब है।"

तमाम ख़ूबियां उस ज़ात के लिये हैं जिस ने दूर को क़रीब और क़रीब को दूर किया। दुश्मन को दूर किया और दोस्त को क़रीब किया। नाफ़रमान को ज़लील किया और फ़रमां बरदार, तौबा करने वाले को इ़ज़्ज़त से नवाज़ा। वोह मालिके ह़क़ीक़ी के जो भी उसे पुकारे वोह लब्बैक कहते हुए जवाब देता है और जो भी उस से मांगे वोह अपने फ़ज़्लो करम से उस के सुवाल से ज़ियादा अ़ता फ़रमाता है। पस ऐ गुनहगार इन्सान ! अपने क़ब्र में ठहरने को याद कर और अपने नफ़्स की कड़ी निगरानी कर और जब तक तेरी जवानी की टहनी तरो ताज़ा और शगुफ़्ता रहे रोज़े जज़ा और अपनी आख़िरत के लिये अ़मल करता रह। कब तक तू अपनी लग़्ज़िश की बीमारी में मुब्तला रहेगा और इस के लिये शिफ़ा बख़्श दवा या ह़कीम न पाएगा। रात की तारीकी में बेदार हो और उस ज़ात से मुनाजात कर जो

हमेशा समीअ़ व क़रीब है। अपने मौला عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर गिड़ गिड़ा, दुन्या में अजनबी बन कर रह सुब्ह़ो शाम उस के सायए रह़मत की पनाह त़लब कर और उस के बाबे करम पर खड़ा हो जा तू उस के दरवाज़े को खुला और उस की बारगाह को कुशादा पाएगा, और सह़री में मा'ज़िरत ख़्वाहाना अन्दाज़ से उस को पुकार और उस शख़्स की त़रह़ दुआ़ कर जो अपने गुनाहों पर ग़म ज़दा और दिल शिकस्ता है।

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! उस शख़्स का ह़ाल कितना अच्छा है जिस ने अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर फ़रयाद की ! उस शख़्स का ह़ाल कितना पाकीज़ा है जिस ने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام को वसीला बनाया ! मुहि़ब्बीने इलाही ! की गुफ़्तगू कितनी प्यारी है ! परहेज़गारों की बातें कितनी उ़म्दा हैं ! बा अ़मल लोगों का साज़ो सामान कितना नफ़्अ़ बख़्श है ! कोशिश करने वालों के चेहरे कितने रोशन हैं ! ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ करने वालों की सांसें कितनी खुश्बूदार हैं ! शौक़े इलाही عَزَّوَجَلَّ रखने वालों का झिड़कना भी कितना कैफ़ो सुरूर रखता है ! ग़मज़दों की गिर्या व ज़ारी कितनी नफ़्अ़ बख़्श है ! क़ियाम करने वालों की मुनाजात कितनी मीठी हैं ! रोके हुओं की ज़िन्दगी किनती कड़वी है ! ख़त़ाकारों की जानें कितनी ज़लील हैं ! मह़रूमों का ह़ाल कितना बुरा है ! ग़ाफ़िलों का पछतावा कितना संगीन है ! धुतकारे हुओं की ज़िन्दगी कितनी बुरी है ! ज़ालिमों के दिल कितने अन्धे हैं और नाफ़रमानों और गुनहगारों के चेहरे कितने बुरे हैं।

बनी इसराईल का एक गुनहगार :

बनी इसराईल में एक गुनहगार शख़्स था। जूं जूं उस के गुनाहों और नाफ़रमानियों का सिलसिला बढ़ता जाता **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर अपना रिज़्क़ और एह़सान भी बढ़ाता जाता। जब उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से गुनाहों और बुराइयों में मुलव्विष रहने वाले के लिये अ़ज़ाब का बयान सुना तो कहने लगा : "ऐ मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) मेरा रब्ब عَزَّوَجَلَّ क्या चाहता है ? क्यूंकि मैं जब भी गुनाहों में ज़ियादती करता हूं तो वोह मुझे अपना मज़ीद फ़ज़्ल व ने'मत अ़ता फ़रमाता है" उस की इस बात से आप عَلَيْهِ السَّلَام बहुत ह़ैरान हुए। जब आप عَلَيْهِ السَّلَام कोहे तूर पर मुनाजात के लिये ह़ाज़िर हुए तो अ़र्ज़ की : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू जानता है जो तेरे नाफ़रमान बन्दे ने कहा है कि जब भी वोह गुनाह करता है तो तू उस पर मज़ीद एह़सान फ़रमाता है।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : "ऐ मूसा ! मैं उस को अ़ज़ाब देता हूं लेकिन वोह जानता नहीं।" ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : "मौला ! तू उसे कैसे अ़ज़ाब देता है ह़ालांकि तू उस के रिज़्क़ को कुशादा करता और उसे ढील दे देता है।" जवाब मिला : "मैं उसे अपनी बारगाह से दूरी और अपने फ़ज़्लो करम से मह़रूमी का अ़ज़ाब देता हूं, अपनी इत़ाअ़त से ग़ाफ़िल कर देता हूं, अपने हुज़ूर मुनाजात की लज़्ज़त से सुलाए रखता हूं और सह़री में अपने इ़ताब और अपने दिल नवाज़ ख़ित़ाब की लज़्ज़त से मह़रूम कर देता हूं। मेरे इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम ! मैं उसे ज़रूर अपना दर्दनाक अ़ज़ाब चखाऊंगा और अपने इन्आ़म व इकराम की ज़ियादती से मह़रूम कर दूंगा।"

प्यारे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों में मुक़ाबला करने वालों को देख कि उन को बहुत ज़ियादा मोहलत दे दी गई और उन को अ़ज़ाब देने में जल्दी न की गई बल्कि उन्हें ढील दे दी गई मगर वोह गुनाहों की लज़्ज़ात पर खुश हैं ह़ालांकि येही लज़्ज़ात उन के लिये ग़म का बाइ़ष बन जाएंगी। चुनान्चे, रब्बे अ़ज़ीम عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿۱﴾ اَیَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِیْنَ O نُسَارِعُ لَهُمْ فِی الْخَیْرٰتِؕ بَلْ لَّا یَشْعُرُوْنَ O (پ۱۸،المؤمنون:۵۵،۵۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या येह ख़याल कर रहे हैं कि वोह जो हम उन की मदद कर रहे हैं माल और बेटों से। येह जल्द जल्द उन को भलाइयां देते हैं बल्कि उन्हें ख़बर नहीं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की सामाने ज़ीनत से मुज़य्यन रूगर्दानी को वाज़ेह़ कर दिया (और उस की मिषाल यूं बयान फ़रमाई :)

﴿۲﴾ فَجَعَلْنٰهَا حَصِیْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ بِالْاَمْسِؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ O (پ۱۱،یونس:۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो हम ने उसे कर दिया काटी हुई गोया कल थी ही नहीं, हम यूंही आयतें मुफ़स्सल बयान करते हैं ग़ौर करने वालों के लिये।[1]

दुन्या की लज़्ज़तों में मश्गूल रहने वालो ! तुम्हारा रब्बे अक्बर عَزَّوَجَلَّ वाज़ेह़ त़ौर पर फ़रमा रहा है :

﴿۳﴾ اِنَّاۤ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِیْبًا (پ۳۰،النبأ:۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हम तुम्हें एक अ़ज़ाब से डराते हैं कि नज़्दीक आ गया।

उस दिन उन्हें किस क़दर रुसवाई होगी जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें उन की बद आ'मालियों पर ख़बर दार फ़रमाएगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर चीज़ का इ़ल्म रखने वाला है।

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों के भयानक अन्जाम पर ग़ौर करो। कैसे लज़्ज़तें ख़त्म हो जाएंगी और ख़ामियां बाक़ी रह जाएंगी। मैं तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम देता हूं कि गुनाह की त़लब से बचो कि येह बहुत बुरी त़लब है और उस के अषरात चेहरों और दिलों पर कितने बुरे हैं। سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ वोह बन्दा कितना खुश बख़्त है जिस ने अपने दिल को साफ़ सुथरा कर लिया, अपने नामए आ'माल को गुनाहों से पाक कर लिया और अपने ज़ाहिरो बात़िन को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये ख़ालिस कर लिया।

---

1 .....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "येह उन लोगों के ह़ाल की एक तमषील है जो दुन्या के शेफ़्ता (या'नी दिलदादाह) हैं और आख़िरत की इन्हें कुछ परवाह नहीं। इस में बहुत दिल पज़ीर त़रीक़े पर ख़ात़िर गुज़ीं किया गया है कि दुन्यवी ज़िन्दगानी उम्मीदों का सब्ज़ बाग़ है, इस में उ़म्र खो कर जब आदमी इस ग़ायत पर पहुंचता है जहां उस को ह़ुसूले मुराद का इत़्मीनान हो और वोह कामयाबी के नशे में मस्त हो, अचानक उस को मौत पहुंचती है और वोह तमाम ने'मतों और लज़्ज़तों से मह़रूम हो जाता है। क़तादा ने कहा कि दुन्या का त़लबगार जब बिल्कुल बे फ़िक्र होता है उस वक़्त उस पर अ़ज़ाबे इलाही عَزَّوَجَلَّ आता है और उस का तमाम सरो सामान जिस से उस की उम्मीदें वाबस्ता थीं, ग़ारत हो जाता है। ताकि वोह नफ़्अ़ ह़ासिल करें और ज़ुल्माते शुकूक व अवहाम से नजात पाएं और दुन्याए नापाएदार की बे षबाती से बा ख़बर हों।"

ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ के सबब आंख निकाल दी :

मन्क़ूल है, एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना ईसा बिन मरयम على نبينا وعليهما الصلوٰة والسلام शहर से बाहर तशरीफ़ लाए ताकि लोगों के लिये बारिश तलब करें लेकिन **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने वह्य फ़रमाई : "ऐ ईसा ! बारिश का मुतालबा न करो क्यूंकि तुम्हारे साथ ख़ता कार हैं।" हज़रते सय्यिदुना ईसा बिन मरयम على نبينا وعليهما الصلوٰة والسلام ने इन्हें इस बात की ख़बर दी और ए'लान फ़रमाया : "हमारे साथ जो भी गुनहगार है वोह जुदा हो जाए।" रावी फ़रमाते हैं : "सिवाए एक शख़्स के तमाम लोग चले गए। उस की दाईं आंख ख़राब थी। आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस से पूछा : "तुम लोगों के साथ क्यूं नहीं गए।" उस ने अ़र्ज़ की : "ऐ रूहुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मैं ने एक लम्हा भी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की नाफ़रमानी नहीं की। एक दिन बिला इरादा एक औ़रत के पाउं पर नज़र पड़ी थी तो मैं ने इस आंख को निकाल दिया। अगर मेरी दूसरी आंख पड़ती तो उसे भी निकाल फेंकता।" रावी फ़रमाते हैं : "येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना ईसा बिन मरयम على نبينا وعليهما الصلوٰة والسلام रोने लग गए यहां तक कि आंसूओं से रीश मुबारक तर हो गई। फिर आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस नेक बन्दे से इरशाद फ़रमाया : "हमारे लिये बारगाहे इलाही عَزَّ وَجَلَّ में दुआ़ करें।" उस ने अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की पनाह कि (आप के होते हुए) मैं दुआ़ करूं हालांकि आप रूहुल्लाह और कलिमतुल्लाह हैं।" फिर हज़रते सय्यिदुना ईसा बिन मरयम على نبينا وعليهما الصلوٰة والسلام ने दुआ़ के लिये अपने हाथ बुलन्द कर लिये और अ़र्ज़ की : "या **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तूने हमें पैदा फ़रमाया और तू ही हमारे रिज़्क़ का कफ़ील हैं लिहाज़ा अब हम पर मूसला धार बारिश नाज़िल फ़रमा।" अभी हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ़ ख़त्म न हुई थी कि बाराने रह़मत बरसने लगी और तमाम शहरों और मख़्लूक़ पर खुल कर बरसी। (عيون الحكايات ،الحكاية خامس والاربعون،ص ٦٤)

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! दिनों और महीनों के गुज़रने के साथ ज़माने ने हमें नसीह़त की, हम ने मसर्रत के बा'द ग़म देख लिया और जान लिया कि ज़माना अपने अहल को मसाइब व आलाम में मुब्तला करता है और हमें यक़ीन हो गया कि बिल आख़िर क़ब्रों का मुंह देखना है। पस परहेज़गार ही ह़क़ीक़ी शुक्र गुज़ार है। दुन्या ने कितने चांद जैसे ह़सीनों को छुपा दिया और कितने मह़ल्लात व मकानात वीरान हो गए। तो क्या अब भी हमारी आंखें नाबीना या अन्धी हैं। बल्कि, **अल्लाह** बसीर عَزَّ وَجَلَّ तो इरशाद फ़रमाता है :

فَإِنَّهَا لَا تَعْمَى الْأَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوبُ الَّتِي فِي الصُّدُورِ ۝ (پ١٧،الحج:٤٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो येह कि आंखें अन्धी नहीं होतीं बल्कि वोह दिल अन्धे होते हैं जो सीनों में हैं।*

नदामत हो तो ऐसी हो :

बसरा में एक नौजवान रहता था जिस का नाम रिज़्वान था। वोह अकसर खेल कूद और नाफ़रमानियों में मुब्तला रहता, आवारा गर्दी और सरकशी में मुब्तला रहता, रात भर शराब के नशे में मस्त रहता। उस पर बदबख़्ती ग़ालिब थी और शैतान ने उसे गुमराह कर रखा था। एक दिन जब वोह शराब के नशे में मदहोश था और नाफ़रमान दोस्त भी उस के साथ थे कि उस ने एक फ़क़ीर देखा जो रास्ते पर चलते चलते चन्द अश्आ़र गुनगुना रहा था, जिन का मफ़्हूम कुछ यूं है :

"जब तू किसी दिन अहले ज़माना से तन्हाई में हो तो यूं न कह कि मैं ख़ल्वत में हूं बल्कि यूं कह कि मुझ पर एक निगहबान है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को लम्हा भर भी ग़ाफ़िल न जान और न येह गुमान कर कि उस पर कोई छुपी बात पोशीदा है।"

येह नसीहत भरा कलाम सुनते ही नौजवान रोने लग गया, उस ने फ़क़ीर को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वासिता दे कर कहा कि वोह येह अश्आर दोबारा पढ़े। फ़क़ीर ने दोबारा पढ़े। नौजवान ने उसे अपनी मजलिस में आने का इसरार किया। चुनान्चे, वोह चला आया, नौजवान कहने लगा। "या सय्यिदी ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप की ज़ियारत हमारे लिये बाइषे सआदत है, हमें आप की आवाज़ और नग़मा भला लगा। लिहाज़ा अपने नग़मों से हमारी ज़िन्दगी को पाकीज़ा कर दो।" चुनान्चे, फ़क़ीर ने चन्द अश्आर पढ़ना शुरूअ़ कर दिये, जिन का मफ़्हूम कुछ इस तरह है :

"अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का रिज़्क़ खा कर भी तू उस की नाफ़रमानी करता है। जब तू उस की मख़्लूक़ से छुपता है तो वोह तुझे देख रहा होता है। ऐ इन्सान ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी से बच। तू जो भी गुनाह करता है वोह तुझे देख रहा होता है और जानता है।"

नौजवान फिर रोने लगा और बेहोश हो कर गिर पड़ा। जब उसे होश आया तो उस ने शराब के बरतन तोड़ डाले और फ़क़ीर की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर अ़र्ज़ की : "या सय्यिदी ! क्या मेरी तौबा क़बूल हो जाएगी ?" उस ने जवाब दिया : "येह रब्ब عَزَّوَجَلَّ से सुल्ह की घड़ी है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुझे नेकी के दरवाज़े पर लौटने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई है, आज तेरे गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएं तो तेरे लिये कितनी बड़ी सआदत है ! (लिहाज़ा तू बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में सच्ची तौबा कर ले)।" नौजवान ने फिर चीख़ मारी, उस पर ग़शी तारी हो गई और ज़मीन पर गिर गया। जब इफ़ाक़ा हुवा तो अ़र्ज़ करने लगा : "या सय्यिदी ! क्या मुझ से गुज़श्ता गुनाहों का मुआख़ज़ा होगा ?" फ़क़ीर ने कहा : "नहीं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ख़ालिस महब्बत कितनी उ़म्दा है ! मुहिब्बीन के लिये दूरी के बा'द लज़्ज़ते क़ुर्ब कितनी अच्छी है ! फिर क़ुर्ब के बा'द हिज्रो फ़िराक़ की घड़ी कितनी शदीद है ! ऐ (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से किये हुए) अ़हदे महब्बत को भूलने वाले ! तू ने अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से मुआ़मला किया फिर ग़फ़्लत की मीठी नींद सो गया। तू किस फ़ुज़ूल काम में मश्ग़ूल है ? उस से तू ने क्या पाया ? नहीं, बल्कि तू ने तो अपना मक़्सूद ज़ाएअ़ कर दिया। आज ही नेकियों पर कमर बस्ता हो जा और गुज़श्ता गुनाहों को तर्क कर दे और दुरवेशी इख़्तियार कर ले। तेरे साबिक़ा गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।" इस पर नौजवान के आंसू बह पड़े और उस के दोस्त भी रोने लगे फिर उन्हों ने तौबा की और लिबासे ज़ैबो ज़ीनत उतार फेंका। नौजवान ने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर सच्ची तौबा की और अपने पिछले बुरे अफ़्आ़ल पर बेहद शर्मसार हुवा। उस ने सारी रात आहो बुका, गिर्या व ज़ारी और हसरत व नदामत से पछाड़ें खाते हुए फ़क़ीर के पास गुज़ारी। जब सहरी का वक़्त हुवा तो उसे फिर अपने गुनाह और नाफ़रमानियां याद आ गईं। चुनान्चे, उस के मुंह से एक ज़ोर दार चीख़ निकली और आंखों से सैले अश्क रवां हो गया और उस पर ग़शी तारी हो गई। जब फ़क़ीर ने उसे हरकत दे कर देखा तो वोह दुन्याए फ़ानी से रुख़्सत हो चुका था।

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! कब तक तुम सुन्नतों और फ़र्ज़ों को ज़ाएअ़ करते रहोगे ? कब तक मिट्टी से तयम्मुम करते रहोगे हालांकि पानी बह रहा है ? ऐ इत़ाअ़ते इलाही عَزَّوَجَلَّ में सुस्ती करने वाले ! वोह तेरी नाफ़रमानी पर ख़बर दार है। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जिस का दिल ख़ुद वा'ज़ व नसीह़त करने वाला न हो उसे वा'ज़ भी नफ़्अ़ नहीं देता।

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه पर एक रुक़्ए का अषर :

मन्क़ूल है : "ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه लोगों के सामने नसीह़त आमेज़ बयान फ़रमाते और उन को बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ का शौक़ दिलाते। उस के इन्आ़मात की रग़्बत दिलाते और उस के अ़ज़ाब से डराते। यूं लोगों का आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه के पास आना जाना लगा रहता। एक दिन आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه ह़स्बे आ़दत मिम्बर शरीफ़ पर तशरीफ़ फ़रमा हुए और बयान शुरूअ़ करने का इरादा किया तो एक औ़रत ने एक रुक़्आ़ बढ़ाया। जब आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه ने उसे पढ़ा तो चेहरे का रंग उड़ गया। आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه शिद्दत से आहो बुका और गिर्या व ज़ारी करने लगे और फिर मिम्बर शरीफ़ से उतर आए और कोई गुफ़्त्गू न की। आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه के दोस्तों ने पूछा : "इस रुक़्ए में क्या लिखा है ?" तो आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه ने उन को पढ़ कर सुनाया। उस में इस मफ़्हूम के चन्द अश्आ़र थे :

"ऐ दूसरों को ता'लीम देने वाले ! तू अपने आप को येह ता'लीम क्यूं नहीं देता ? तू बीमारों और कमज़ोरों के लिये तो दवा तजवीज़ करता है मगर वोह कैसे शिफ़ा पाएंगे जब कि तू ख़ुद बीमार है। हम ने देखा कि तू हमे रुश्दो हिदायत करता है जब कि ख़ुद इस से दूर रहता है। पहले, अपने नफ़्स से इब्तिदा कर और इसे सरकशी से रोक। जब तू ने इसे रोक लिया तो समझ ले कि तू साह़िबे ह़िक्मत है। फिर तेरी बात क़बूल की जाएगी, तेरा बयान नफ़्अ़ बख़्श होगा और इस पर अ़मल किया जाएगा। लोगों को ऐसे काम से न रोक जो तू ख़ुद करता है। अगर तू ने ऐसा किया तो तुझ पर बहुत बड़ा त़ा'ना है।"

"रुक़्आ़ पढ़ने के बा'द आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه शिद्दत से रोने धोने लग गए यहां तक कि बेहोश हो गए। जब इफ़ाक़ा हुवा तो दोस्तों ने अ़र्ज़ की : "आप का कलाम बेहतर और दामन पाक है, आप के बयान से दिल शिफ़ा पाते और ग़म ज़दा तसल्ली पाते हैं, ऐसा कलाम आप के दिल पर कैसे अषर न करे ? जब कि आप तो इमाम हैं और इमाम भी कैसे हैं (जिन की अ़ज़मत दुन्या जानती है)" आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه को फिर रोना आ गया और इरशाद फ़रमाया : "मेरे लिये येह दुरुस्त नहीं कि लोगों के सामने बयान करूं जब कि मैं अपने आप को इस मक़ाम पर नहीं पाता।" फिर आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه के आंसू छलक पड़े और आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه इश्क़े इलाही عَزَّوَجَلَّ और सोज़िशे ग़म में मश्ग़ूल हो गए। इस के बा'द न किसी ने आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه का कलाम सुना, और न ही आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه को देखा यहां तक कि आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه इस जहाने फ़ानी से कूच फ़रमा गए।

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! क्या तुम उन बर गुज़ीदा बन्दों के दिल नहीं देखते ? जो साफ़ सफ़्फ़ाफ़ शीशे की मानिन्द नर्म थे जिन में नसीहत भरा बयान अषर करता था और वा'ज़ व नसीहत इन की इश्क़े इलाही عَزَّوَجَلَّ की आग को मज़ीद भड़का देती थी। और तुम भी बयानात सुनते हो मगर तुम्हारे दिलों पर अषर नहीं होता। तुम अपने गुनाहों की मैल कुचेल आंसूओं से नहीं धोते बल्कि नफ़्अ़ मन्द चीज़ें पसे पुश्त डाल देते हो और खेल कूद और बेहूदा बातों की तरफ़ पेश क़दमी करते हो।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तुम्हारे दिलो दिमाग़ पर गफ़्लत ने क़ब्ज़ा जमा लिया और मोहलत के दिनों ने तुम्हें धोका दिया। तो ऐ अपने ज़ुल्म के सबब धोके में मुब्तला होने वालो ! सुनो क़ुरआने पाक वाशिगाफ़ अल्फ़ाज़ में फ़रमा रहा है :

﴿۵﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ط (پ۱۳،ابراهيم:۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हरगिज़ **अल्लाह** को बे ख़बर न जानना ज़ालिमों के काम से।*

और येह मोहलत मुकम्मल तौर पर नहीं बल्कि, रब्बे क़दीर عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿۶﴾ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ O (پ۱۳،ابراهيم:۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन्हें ढील नहीं दे रहा है मगर ऐसे दिन के लिये जिस में आंखें खुली की खुली रह जाएंगी।*

जब येह ढील ख़त्म हो जाएगी तो वोह मज़ीद मोहलत मांगते हुए कहेंगे :

﴿۷﴾ اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ لا (پ۱۳،ابراهيم:۴۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *थोड़ी देर हमें मोहलत दे।*

फिर उन को डांट डपट का सामना होगा और कहा जाएगा :

﴿۸﴾ اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ (پ۲۲،فاطر:۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और क्या हम ने तुम्हें वोह उम्र न दी थी।*

रोज़े महशर तुम उन्हें देखोगे कि वोह अपनी क़ब्रों से बोखलाए हुए निकलेंगे। जिस दिन पहला सूर फूंका जाएगा तो वोह ख़ुदाए क़ह्हार व जब्बार عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर इस तरह हाज़िर होंगे कि उन के पहलू कांप रहे होंगे और बदबख़्ती की अ़लामात उन पर वाज़ेह होंगी। चुनान्चे, रब्बुल इबाद عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿۹﴾ يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ (پ۲۷،الرحمٰن:۴۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *मुजरिम अपने चेहरे से पहचाने जाएंगे।*

जब उन की भूक बढ़ेगी तो,

﴿۱۰﴾ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ O (پ۳۰، الغاشية:۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन के लिये कुछ खाना नहीं मगर आग के कांटे*

जब प्यास की शिद्दत जोश मारेगी तो,

﴿۱۱﴾ وَسُقُوْا مَآءً حَمِیْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَھُمْ ○ (پ۲۶،محمد:۱۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उन्हें खोलता पानी पिलाया जाए कि आंतों के टुकड़े टुकड़े कर दे।* (1)

नंगे बदन उन के लिबास से बेहतर हैं क्यूंकि उन के लिबास तारकोल के होंगे जब वोह पानी मांगेंगे :

﴿۱۲﴾ یُغَاثُوْا بِمَآءٍ کَالْمُھْلِ یَشْوِی الْوُجُوْہَ ط (پ۱۵،الکھف:۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो उन की फ़रयाद रसी होगी उस पानी से कि चर्ख़ दिये हुए (खोलते हुए) धात की तरह है कि उन के मुंह भून देगा।* (2)

क्या तूने नाफ़रमानों को नहीं देखा कि वोह सूतने ही नहीं ? हालांकि कुरआने पाक वाज़ेह तौर पर फ़रमा रहा है कि,

﴿۱۳﴾ اِنَّ یَوْمَ الْفَصْلِ مِیْقَاتُھُمْ اَجْمَعِیْنَ ○ (پ۲۵،الدخان:۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक फ़ैसले का दिन उन सब की मीआ़द है।*

जब इन मुजरिमों को आग देखेगी जिन्हों ने एक लम्हे की लज़्ज़त के बदले बरसों का अ़ज़ाब ख़रीदा तो,

﴿۱۴﴾ تَکَادُ تَمَیَّزُ مِنَ الْغَیْظِ ط (پ۲۹،الملك:۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *मा'लूम होता है कि शिद्दते ग़ज़ब में फट जाएगी।*

लिहाज़ा जो अ़ज़ाबे नार से छुटकारा चाहता है उसे चाहिये कि तौबा कर ले,

﴿۱۵﴾ مِنْ قَبْلِ اَنْ یَّتَمَآسَّا ج (پ۲۸،المجادلہ:۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क़ब्ल इस के कि एक दूसरे को हाथ लगाएं।*

1....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "अ़ज़ाब त़रह़ त़रह़ का होगा और जो लोग अ़ज़ाब दिये जाएंगे उन के बहुत त़बके़ होंगे। बा'ज़ को ज़क़्क़ूम खाने को दिया जाएगा, बा'ज़ को ग़िस्लीन (या'नी दोज़ख़ियों की पीप), बा'ज़ को आग के कांटे।"

2....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने फ़रमाया : "वोह ग़लीज़ पानी है रौग़ने ज़ैतून की तिलछट की त़रह़।" तिर्मिज़ी की ह़दीष में है कि "जब वोह मुंह के क़रीब किया जाएगा तो मुंह की खाल उस से जल कर गिर पड़ेगी।" बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि वोह पिघलाया हुवा रांग (या'नी सीसा या नर्म धात) और पीतल है।"

ऐ इस्लामी भाइयो ! जब पाकीज़ा बयानात तुम्हारे मैले दिल पर अषर नहीं करते और अज़ाब व ख़ौफ़ की धमकियां तुम्हारे दिलों को हैरान व परेशान नहीं करतें तो रब्ब عَزَّوَجَلَّ के पाकीज़ा कलाम की आयाते बय्यिनात तुम पर तिलावत की जाती हैं :

﴿١٦﴾ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ○ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ○ (پ٣٠،الزلزال:٧۔٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा।* (1)

ऐ अह़कामे इलाही عَزَّوَجَلَّ की बजा आवरी में ग़फ़्लत बरतने वाले ! ऐ उ़म्रे अ़ज़ीज़ को बेकार गंवाने वाले ! कब तक लह्व ला'ब में मुब्तला रहेगा जब कि तेरे गुनाह लिखे जा रहे हैं। सफ़रे आख़िरत में तेरी ह़ालत कैसी होगी जब कि तेरा रास्ता पुर ख़त़र है। अ़न क़रीब तू उस तराज़ू को देख लेगा जो मा'मूली सी बात भी ज़ाहिर कर देगा : فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ○وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ○

ऐ ग़ाफ़िल इन्सान ! मौत तेरा पीछा किये हुए है। उस वक़्त तेरा क्या ह़ाल होगा जब तू आस्मान को फटता हुवा देखेगा और तुझ पर मुक़र्रर फ़िरिश्ता तेरी अच्छाइयों और बुराइयों को जम्अ़ कर के इन का दफ़्तर बन्द कर चुका होगा। तुझ पर हुज्जत क़ाइम हो चुकी होगी। कोई उ़ज़्र या बहाना न चलेगा। वहां हर इन्सान अपनी आगे भेजी हुई नेकी या बदी को मुलाह़ज़ा करेगा : فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ○ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ○

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْن

1....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि "हर मोमिन व काफ़िर को रोज़े क़ियामत उस के नेक व बद आ'माल दिखाए जाएंगे। मोमिन को उस की नेकियां और बदियां दिखा कर अल्लाह तआ़ला बदियां बख़्श देगा और नेकियों पर षवाब अ़ता फ़रमाएगा और काफ़िर की नेकियां रद्द कर दी जाएंगी क्यूंकि कुफ़्र के सबब अकारत हो चुकीं और बदियों पर उस को अ़ज़ाब किया जाएगा।" मुह़म्मद बिन का'ब कुर्ज़ी ने फ़रमाया कि "काफ़िर ने ज़र्रा भर नेकी की होगी तो वोह उस की जज़ा दुन्या ही में देख लेगा यहां तक कि जब दुन्या से निकलेगा तो उस के पास कोई नेकी न होगी और मोमिन अपनी बदियों की सज़ा दुन्या में पाएगा तो आख़िरत में उस के साथ कोई बदी न होगी।" इस आयत में तरग़ीब है कि "नेकी थोड़ी सी भी कार आमद है और तरहीब है कि "गुनाह छोटा सा भी वबाल है।" बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि "पहली आयत मोअमिनीन के हक़ में है और पिछली कुफ़्फ़ार के (हक़ में)।"

बयान 42 : आशूरा के फ़ज़ाइल

हम्दे बारी तआला :

सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो इब्तिदा से इन्तिहा तक ग़ालिब है, उस की ने'मत मोमिन व काफ़िर दोनों की किफ़ालत करती है और उस की क़ुदरत रोशनी और तारीकी ज़ाहिर करती है, उस की रह़मत उसे भी शामिल है जिस ने अपनी ज़िन्दगी नाफ़रमानियों में ज़ाएअ़ कर दी, कितने ही अमीरों को उस ने फ़क़ीर बनाया और कितने ही फ़क़ीरों को ग़नी कर दिया, मिस्कीन पर रह़म फ़रमाया, टूटे हुए को जोड़ा, गुनाहों को मुआ़फ़ किया, वीरान दिलों को आबाद किया, सीनों को कुशादगी अ़ता फ़रमाई, मज़्लूमों की ख़ातिर अपना दरे रह़मत खोल दिया, फ़िरिश्ते भी उस की हैबत से थर थर कांपते हैं पस वोह कषरत से उस की तक्बीर व तहलील करते हैं, उसी के हुक्म से कश्ती चलती है, उस ने अपनी रह़मत को षाबित कर दिया है और फ़िरिश्तों को अपनी इस बात पर गवाह बना लिया है कि वोह हमेशा ख़त़ाओं को बख़्शने वाला है, अ़ज़मत व तक़दीस वाला है, उसी को याद किया जाता है, वोही मा'बूदे अ़ज़ीम है, उसी का ह़म्द व शुक्र किया जाता है, वोह नीचे से नीची चीज़ को भी मुलाह़ज़ा फ़रमाता है क्यूंकि वोह समीअ़ व बसीर (या'नी सुनने, देखने वाला) है। ज़ेह्न में पैदा होने वाली सोच को भी जानता है क्यूंकि वोह अ़लीम व ख़बीर (या'नी जानने वाला और बा ख़बर) है, सब कुछ फ़ना हो जाएगा मगर वोह बाक़ी रहेगा और वोह उस पर क़ुदरत रखता है, ज़िन्दे को मुर्दे से निकालता है और उस ने हर शै को पैदा फ़रमाया और उस का एक ख़ास अन्दाज़ा रखा और ऐ इन्सान ! तेरे गुनाहों को जानने के बा वुजूद तुझे अ़ता किया। चुनान्चे, ख़ुद इरशाद फ़रमाया :

وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا۝ (پ۱۵،بنی اسرآئیل: ۲۰) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम्हारे रब्ब की अ़ता पर रोक नहीं।"

उस पर न तो किसी क़िस्म का ह़िजाब है कि वोह छुपा हुवा हो और न ही वोह जिस्म रखता है कि मुक़य्यद हो, उस ने ज़िम्मेदार लोगों का इन्तिख़ाब फ़रमाया, उन के चेहरों को नूर अ़ता फ़रमाया, उन के दिलों को अपनी मह़ब्बत और कैफ़ो सुरूर से भर दिया और उन्हें अपनी मा'रिफ़त का वाफ़िर हिस्सा अ़ता फ़रमाया। जब अहले मा'रिफ़त ने हिजरो फ़िराक़ का शिकवा (شِکْوَہ) किया तो उस ने इन के लिये अमान नामा लिख दिया। इन को ग़ाफ़िल लोगों के दरमियान बेदार किये रखा और इन के और ग़ाफ़िलों के दरमियान पर्दा ह़ाइल कर दिया। जब इन्हों ने उस की इ़बादत में अपने आप को थकाया और अपने चेहरों को तारीकियों के पर्दों में छुपाया तो उस ने बा'ज़ को मख़्लूक़ के दरमियान (विलायत का) सूरज और बा'ज़ को (विलायत का) चांद बना दिया, उन्हें अपने ख़िताब की अच्छी त़रह़ समझ अ़ता फ़रमाई और अपने इ़ताब की लज़्ज़त से लुत़्फ़ अन्दोज़ किया, अपने क़ुर्ब के जाम से शराबे त़हूर पिला कर इन्हें मक़ामे क़ुर्ब अ़ता फ़रमाया और फिर बन्द दरवाज़े खोल कर इन के सामने से तमाम ह़िजाबात उठा दिये।

पाक है वोह मा'बूद जिस ने सालों और ज़मानों को फेरा और कुछ दिनों और महीनों को दूसरों पर शरफ़ अ़ता फ़रमाया और अवक़ाते इ़बादात को दूसरे तमाम अवक़ात पर फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई और यौमे आ़शूरा को ख़ुसूसी फ़ज़ीलत व बरकत वाला बनाया, उस दिन अपने नबी ह़ज़रते

सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से ख़िताब फ़रमाया और अपने ख़िताब की पाकीज़ा शराब का जाम पिलाया, इन की मुनाजात की समाअ़त के लिये मक़ामे तूर का इन्तिख़ाब फ़रमाया फिर इन्हें अपने क़ुर्ब से नवाज़ कर इसी आ़शूरा के दिन इन से ख़िताब फ़रमाया और इन्हें बहुत ज़ियादा फ़ज़्ल से नवाज़ा। बनी इसराईल पर इस दिन का रोज़ा फ़र्ज़ किया और रोज़ेदार के लिये बहुत ज़ियादा अज्र तय्यार फ़रमाया। इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तौबा क़बूल फ़रमाई और इन को ताज़गी और सुरूर अ़ता फ़रमाया। इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को सफ़ीने में तूफ़ान से निकाला और इन्हें ह़द दर्जा चैन व सुकून अ़ता फ़रमाया। इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को नारे नमरूद के शो'लों से नजात अ़ता फ़रमाई। इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने क़ैद से रिहाई पाई जब कि आप बहुत ज़ियादा सब्र करने वाले थे। इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बसारत का जो'फ़ जाता रहा। ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तक्लीफ़ दूर हुई और ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की लग़ज़िश मुआ़फ़ हुई। ज़बाने क़ुदरत क़ुरआने पाक में इस फ़रमाने आ़लीशान से इन्हें बिशारत दे रही है : اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ۝ (پ۲۹،الدھر:۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन से फ़रमाया जाएगा येह तुम्हारा सिला है और तुम्हारी मेह़नत ठिकाने लगी।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "यौमे आ़शूरा का रोज़ा एक साल क़ब्ल के गुनाह मिटा देता है।"

(الکامل فی ضعفاء الرجال لابن عدی،الرقم ۱۰۳۸/۷۱ عبداللہ بن معبد،ج۵،ص ۳۷۲)

"या हुसैन, या शहीदे करबला हो दूर हर रन्जो बला" के इक्तीस हुरूफ़ की निस्बत से यौमे आ़शूरा के इक्तीस ख़ुसूसिय्यात

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, ह़ुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है :(1)

﴾1﴿.....**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने बनी इसराईल पर साल में एक दिन का रोज़ा फ़र्ज़ किया और वोह यौमे आ़शूरा का रोज़ा है और इस से मुराद माहे मुह़र्रम का दसवां दिन है। लिहाज़ा तुम भी इस दिन का रोज़ा रखो और अपने घर वालों पर खुला ख़र्च करो (शुअ़बुल ईमान में है :) "जो इस दिन अपने अहलो इ़याल पर माल में फ़राख़ी व कुशादगी करता है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर तमाम साल रिज़्क़ वाफ़िर फ़रमाएगा।"

(شُعَب الایمان، باب فی الصیام،صوم التاسع مع العشر،الحدیث ۳۷۹۵ ، ج۳،ص۳۶۶)

1..इस रिवायत को अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी, अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी और अ़ल्लामा अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिषे देहलवी رَحِمَهُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی ने मौज़ूअ़ क़रार दिया है।" (الموضوعات، ج۲، ص ۲۰۰۔الالئ المصنوعۃ فی الاحادیث الموضوعۃ،ج۲،ص ۹۲۔۹۳۔ ماثبت بالسنۃ مترجم، ص ۲۴) और अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने येह भी फ़रमाया है कि "इस के रावी षक़्क़ा हैं जिस से साफ़ ज़ाहिर होता है कि बा'द वालों ने इस को वज़अ़ कर के इन सनदों के साथ तरतीब दे दी।" **लिहाज़ा इसे ह़दीष कह कर बयान न किया जाए। नोट :** इस रिवायत में बयान कर्दा बा'ज़ बातें दीगर अह़ादीष से षाबित हैं। **(इ़ल्मिय्या)**

पस तुम इस दिन का रोज़ा रखो कि ﴾2﴿....इसी दिन अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तौबा क़बूल फ़रमा कर उन्हें सफ़िय्युल्लाह के मक़ाम पर फ़ाइज़ फ़रमाया ﴾3﴿.....इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना इदरीस عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को आ'ला मक़ाम पर फ़ाइज़ फ़रमाया ﴾4﴿.....इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ नजिय्युल्लाह عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को कश्ती में तूफ़ान से निकाला ﴾5﴿.....इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को आग से नजात मिली ﴾6﴿.....इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर तौरात नाज़िल फ़रमाई ﴾7﴿.....इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को क़ैद से रिहाई मिली ﴾8﴿.....इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बीनाई का ज़ो'फ़ दूर हुवा ﴾9﴿.....इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तक्लीफ़ रफ़्अ़ की गई ﴾10﴿.....इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मछली के पेट से निकाले गए ﴾11﴿....इसी दिन दरया ने फट कर बनी इसराईल को रास्ता दिया ﴾12﴿.....इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की लग़ज़िश मुआ़फ़ हुई ﴾13﴿....इसी दिन अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को मुल्के अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाया और ﴾14﴿.....येही वोह दिन है जिस दिन नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को आप के सबब आप के अगलों पिछलों के गुनाह मुआ़फ़ करने का मुज़्दए जां फ़िज़ा सुनाया गया ﴾15﴿.....येही वोह पहला दिन है जिस में अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने दुन्या को पैदा किया ﴾16﴿.....इसी दिन आस्मान से पहली बारिश बरसी और ﴾17﴿.....ज़मीन पर सब से पहली रह़मत भी इसी दिन उतरी ﴾18﴿.....जिस ने यौमे आ़शूरा का रोज़ा रखा गोया उस ने सारा ज़माना रोज़ा रखा कि येह अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का रोज़ा है ﴾19﴿.....जिस ने शबे आ़शूरा को शब बेदारी की गोया उस ने सातों आस्मान वालों के बराबर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की इबादत की ﴾20﴿.....जिस ने इस रात चार रक्आ़त इस त़रह़ अदा कीं, कि हर रक्अ़त में एक मर्तबा सूरए फ़ातिह़ा और इकयावन(51) बार सूरए इख़्लास पढ़ी तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस के पचास साल के गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा देगा ﴾21﴿.....जिस ने आ़शूरा के दिन किसी को पानी पिलाया अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ बड़ी प्यास के दिन (या'नी बरोज़े क़ियामत) इसे ऐसा जाम पिलाएगा कि उस के बा'द वोह कभी प्यासा न होगा और वोह ऐसा हो जाएगा गोया उस ने लम्ह़ा भर भी अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की नाफ़रमानी नहीं की ﴾22﴿.....जिस ने इस दिन कुछ सदक़ा किया गोया उस ने किसी साइल को कभी ख़ाली नहीं लौटाया ﴾23﴿.....जिस ने आ़शूरा के दिन ग़ुस्ल किया तो वोह मरज़े मौत के सिवा किसी मरज़ में मुब्तला न होगा ﴾24﴿.....जिस ने इस दिन किसी यतीम के सर पर हाथ रखा या उस से ह़ुस्ने सुलूक किया गोया वोह तमाम अवलादे आदम के यतीमों के साथ ह़ुस्ने सुलूक से पेश आया ﴾25﴿.....जिस ने इस दिन किसी मरीज़ की इयादत की गोया उस ने बनी आदम के तमाम मरीज़ों की इयादत की ﴾26﴿....इसी दिन अ़र्श ﴾27﴿.....लौह़ और ﴾28﴿.....क़लम पैदा किये गए ﴾29﴿.....इसी दिन

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام को पैदा फ़रमाया ﴾30﴿.....इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को आस्मानों की त़रफ़ उठाया गया और ﴾31﴿.....इसी दिन क़ियामत क़ाइम होगी।"

(الموضوعات لابن الجوزی،کتاب الصیام،باب فی ذکر عاشوراء، ج۲،ص ۲۰۰ ـ الالئ المصنوعة فی الاحادیث الموضوعة، کتاب الصیام،ج۲،ص۹۲ـ۹۳ ـحاشیة اعانة الطالبین، باب الصوم، فصل فی صوم التطوع ، ج۲، ص۴۴۴ـ۴۴۵)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने मुक़द्दस में इरशाद फ़रमाता है :

مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الزِّيْنَةِ ﴿۳﴾ (پ۱٦،طٰہٰ:۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हारा वा'दा मेले का दिन है। (1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُمَا इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : "يَوْمُ الزِّيْنَةِ" से मुराद दसवीं मुह़र्रम का दिन है।"

वोह बन्दा मुबारक बाद का मुस्तह़िक़ है जो इस मुबारक दिन में अ़मले सालेह़ करे और नेकी के काम कर के आख़िरत के लिये नफ़्अ़ मन्द तिजारत करे, अपने गुनाहों और ख़त़ाओं से तौबा करे, नेक बन कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाए और दूसरों से नसीह़त ह़ासिल करे, नासेह़ (या'नी नसीह़त करने वाले) की बात क़बूल करे, तकब्बुर और दा'वे छोड़ दे और तक़्वा के रास्ते पर चले।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़ज़ीलत निशान है : "माहे रमज़ान के बा'द अफ़्ज़ल रोज़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महीने मुह़र्रम के रोज़े हैं।"

(صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب فضل صوم المحرم،الحدیث۱۱٦۳،ص۸٦٦)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُمَا से यौमे आ़शूरा के रोज़े के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं नहीं जानता कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने बाक़ी दिनों पर फ़ज़ीलत के त़ौर पर यौमे आ़शूरा के इलावा किसी दिन का और बाक़ी महीनों पर फ़ज़ीलत के त़ौर पर रमज़ान के इलावा किसी महीने का रोज़ा रखा हो।" (صحیح مسلم، کتاب الصیام،باب صوم یوم عاشوراء،الحدیث۱۱۳۲،ص۸۵۹)

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़मीद बिन अ़ब्दुर्रह़मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن रिवायत करते हैं, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विय्या बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُمَا को जिस साल इन्हों ने ह़ज किया था, बर सरे मिम्बर येह फ़रमाते सुना : ऐ अहले मदीना ! तुम्हारे उ़-लमाए किराम कहां हैं ? मैं ने सरकारे

1....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "इस मेले से फ़िरऔ़नियों का मेला मुराद है जो उन की ई़द थी, और इस में वोह ज़ीनतें कर के जम्अ़ होते थे। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि "येह दिन आ़शूरा या'नी दसवीं मुह़र्रम का था।"

वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, बिइज़्ने परवर दगार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इरशाद फ़रमाते सुना : "येह आ़शूरा का दिन है, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने तुम पर इस का रोज़ा फ़र्ज़ न किया जब कि मैं ख़ुद रोज़े से हूं, अब तुम में से जिस का जी चाहे वोह रोज़ा रख ले और जो न चाहे न रखे।"

(صحیح البخاری، کتاب الصوم، باب صوم یوم عاشوراء، الحدیث ۲۰۰۳، ص ۱۵۶)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا और दीगर कई राविyों से मरवी है, ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अगर मैं आयन्दा साल तक ह़यात रहा तो ज़रूर नवीं और दसवीं मुह़र्रम का रोज़ा रखूंगा।" लेकिन आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इस से क़ब्ल ही विसाल फ़रमा गए।

(صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب ای یوم یصام فی عاشوراء، الحدیث ۱۱۳۴ ص ۸۶۰۔ شعب الایمان للبیہقی، باب فی الصیام/صوم التاسع مع العاشر، الحدیث ۳۷۸۷، ج۳ ص ۳۶۴)

यहां येह भी हो सकता है कि आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दीगर रोज़ों को दस मुह़र्रम के रोज़े के साथ मिलाने का इरादा फ़रमाया हो और येह भी हो सकता है कि आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुराद दसवीं के साथ नववीं मुह़र्रम का रोज़ा रखना हो। लिहाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی और दीगर अइम्मए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السّلام ने एह़तियातन दोनों (या'नी नववीं और दसवीं मुह़र्रम) का रोज़ा मुस्तह़ब क़रार दिया है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है, नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : "नववीं और दसवीं (मुह़र्रम) का रोज़ा रखो और यहूदियों की मुशाबहत इख़्तियार न करो।"

(جامع الترمذی، ابواب الصوم، باب ماجاء فی عاشوراء ای یوم ھو، الحدیث ۷۵۵، ص ۱۷۲۱)

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : "जिस ने यौमे आ़शूरा तक मुह़र्रम के दस रोज़े रखे वोह फ़िरदौसे आ'ला का वारिष होगा।"

(نزھۃ المجالس، کتاب الصوم، باب فضل صیام عاشوراء ...... الخ، ج ۱ ص ۲۳۱)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने अपने इस फ़रमाने आ़लीशान में इन दस दिनों की त़रफ़ इशारा फ़रमाया :

﴿۴﴾ وَوٰعَدْنَا مُوْسٰی ثَلٰثِیْنَ لَیْلَۃً وَّاَتْمَمْنٰہَا بِعَشْرٍ (پ۹، الاعراف: ۱۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हम ने मूसा से तीस रात का वा'दा फ़रमाया और इन में दस और बढ़ा कर पूरी कीं।*

मुह़र्रमुल ह़राम के पहले अ़श्रे के बहुत ज़ियादा फ़ज़ाइल व बरकात हैं। इन्ही में से एक येह भी है जो ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विय्या बिन क़ुर्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि "ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के साथ कश्ती में सुवार लोगों ने अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ

का शुक्र बजा लाते हुए यौमे आ़शूरा का रोज़ा रखा क्यूंकि जिस दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें तूफ़ान से नजात अ़ता फ़रमाई और इन की कश्ती जूदी पहाड़ पर ठहरी तो वोह भी आ़शूरा का दिन था।"

(المعجم الكبير، الحديث٥٥٣٨، ج٦، ص٦٩، بتغير)

हज़रते सय्यिदुना या'कूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के हवाले से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿۵﴾ سَوۡفَ اَسۡتَغۡفِرُ لَکُمۡ رَبِّیۡ ط (پ١٣،یوسف: ٩٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जल्द मैं तुम्हारी बख़्शिश अपने रब्ब से चाहूंगा।*

इस आयते मुबारका के तह़्त ह़ज़रते सय्यिदुना त़ाऊस رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना या'कूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इस दुआ़ए मग़फ़िरत करने को शबे जुमुआ़ तक मुअख़्ख़र फ़रमाया जो कि शबे आ़शूरा भी थी। (تفسير البغوى،سورة يوسف،تحت الآية٩٨، ج٢، ص٣٧٧)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने शह्हाब عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَھَّاب इरशाद फ़रमाते हैं : "हमें सह़ाबए किराम व ताबेई़ने उ़ज़्ज़ाम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن से येह बात पहुंची है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबी त़ालिब, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन हुसैन और ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन जुबैर رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن यौमे आ़शूरा का रोज़ा रखा करते थे।"

(المسند للامام احمد بن حنبل،مسند على بن ابى طالب،الحديث١٠٦٩،ج١،ص٢٧٣،مختصرًا)

यौमे आ़शूरा के मुस्तह़ब्बात :

यौमे आ़शूरा के मुस्तह़ब्बात पहले बयान किये जा चुके हैं। अब कुछ ऐसे उमूर ज़िक्र किये जाते हैं जो पहले बयान नहीं हुए। इस दिन ग़ुस्ल करना मुस्तह़ब है। मन्क़ूल है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुह़र्रम की दसवीं रात आबे ज़मज़म शरीफ़ को दुन्या के तमाम पानियों में मिला देता है लिहाज़ा जो शख़्स इस दिन ग़ुस्ल करे तमाम साल बीमारी से मह़फ़ूज़ रहेगा।"

इस दिन येह उमूर भी मुस्तह़ब हैं : सदक़ा करना, यतीम के सर पर शफ़्क़त का हाथ रखना, रोज़ादार को इफ़्त़ार कराना, पानी पिलाना, रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये अपने मुसलमान भाई से मुलाक़ात करना, मरीज़ों की इ़यादत करना, रोज़ा रखना, घर वालों पर ख़र्च में कुशादगी करना, वालिदैन के साथ इ़ज़्ज़त व इकराम से पेश आना, जनाज़ों में शिर्कत करना, रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ हटाना, ग़ुस्सा पी जाना, ज़ालिम को मुआ़फ़ कर देना नफ़्ल पढ़ना और ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ की कषरत करना।

नीज़ येह भी मुस्तह़ब है जो कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْكَرِيْم से मरवी है : "जिस ने आ़शूरा के दिन हज़ार मरतबा सूरए इख़्लास पढ़ी ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ उस पर नज़रे रह़मत फ़रमाएगा और जिस पर रह़मान عَزَّوَجَلَّ नज़रे रह़मत फ़रमाएगा तो वोह उसे कभी अ़ज़ाब न देगा।" (نزهة المجالس، كتاب الصوم،باب فضل صيام عاشوراء ......الخ،ج١،ص٢٣١، مختصرًا)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : "हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मूसा बिन इमरान عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام पर तौरात में नाज़िल फ़रमाया कि जिस ने यौमे आ़शूरा का रोज़ा रखा गोया उस ने सारा साल रोज़ा रखा।"

(نزهة المجالس، كتاب الصوم، باب فضل صيام عاشوراء ......الخ، ج١، ص٢٣٣)

हज़रते सय्यिदुना सलमा बिन अकवअ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : "शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को हुक्म फ़रमाया कि लोगों में ए'लान कर दे : "जिस ने कुछ खा लिया है वोह बक़िय्या दिन कुछ न खाए और जिस ने कुछ नहीं खाया वोह रोज़ा रख ले क्यूंकि आज आ़शूरा का दिन है।" (صحيح البخاری، كتاب الصوم، باب صوم يوم عاشوراء، الحديث٢٠٠٧، ص١٥٦)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है : "जब सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो यहूदियों को आ़शूरा के दिन का रोज़ा रखते हुए देखा। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से दरयाफ़्त फ़रमाया : "येह कैसा रोज़ा है ?" तो उन्हों ने जवाब दिया : "येह बरकत वाला दिन है, इसी दिन अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام और बनी इसराईल को दुश्मन से नजात अ़ता फ़रमाई तो आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का शुक्र अदा करते हुए रोज़ा रखा और इसी वजह से हम भी रोज़ा रखते हैं।" इस पर हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हम तुम से ज़ियादा मूसा (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) से तअ़ल्लुक़ के ह़क़दार हैं।" चुनान्चे, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने खुद भी रोज़ा रखा और दूसरों को भी रोज़ा रखने का हुक्म फ़रमाया।"

(صحيح البخاری، كتاب الصوم، باب صوم يوم عاشوراء، الحديث٢٠٠٤، ص١٥٦)

आ़शूरा सदक़े का दिन है :

आ़शूरा के दिन सदक़ा व ख़ैरात, नेकी, ईसार, रिश्तेदारों पर एह़सान, सिलए रेह़मी, रेह़मत और फ़ुक़रा व मसाकीन पर नर्मी व शफ़्क़त करना दुगने अज्र का बाइ़स है। चुनान्चे,

आ़शूरा में सदक़े की बरकत से यहूदी मुसलमान हो गया :

मन्क़ूल है, एक इ़याल दार फ़क़ीर ने अपने अहलो इ़याल के साथ मिल कर आ़शूरा के दिन रोज़ा रखा। उन के पास खाने को कुछ न था लिहाज़ा वोह ख़ूराक की तलाश में घर से निकला ताकि इफ़्तारी का एहतिमाम कर सके लेकिन कुछ न मिला। फिर वोह सुनारों के बाज़ार में दाख़िल हुवा और एक आदमी को देखा कि अपनी दुकान में क़ीमती चमड़े के टुकड़े बिछा कर उन पर सोने चांदी के ढेर उलट रहा है। वोह उस के पास गया और सलाम कर के कहा : "जनाब ! मैं ह़ाजत मन्द हूं, मुमकिन हो तो मुझे एक दिरहम क़र्ज़ दे दो ताकि मैं अपने घर वालों के लिये इफ़्तारी का सामान ख़रीद सकूं, मैं आज के बा बरकत दिन आप के लिये दुआ़ करूंगा।" लेकिन सुनार ने अपना मुंह फेर

लिया और फ़क़ीर को कुछ न दिया, फ़क़ीर का दिल टूट गया। वोह वापस आ रहा था और उस के आंसू रुख़्सार पर बह रहे थे कि सुनार के एक यहूदी पड़ोसी ने उसे देख लिया और दुकान से निकल कर उस फ़क़ीर के पास आया और कहने लगा : “ मैं तुझे देख रहा था कि तू मेरे फ़ुलां पड़ोसी सुनार से कुछ बात कर रहा था ?” फ़क़ीर ने बताया : “मैं ने उस से एक दिरहम मांगा था ताकि अपने घर वालों की इफ़्तारी का बन्दोबस्त कर सकूं लेकिन उस ने मुझे ख़ाली लौटा दिया, मैं ने उसे येह भी कहा था कि मैं आज के बा बरकत दिन तुम्हारे हक़ में दुआ करूंगा।” यहूदी ने पूछा : “आज कौन सा दिन है ?” फ़क़ीर ने उसे बताया : “आज आ़शूरा का दिन है और फिर इस के बा'ज़ फ़ज़ाइल बयान किये। तो यहूदी ने उस फ़क़ीर को दस दिरहम दिये और कहा : “इस दिन की अ़ज़्मत की ख़ातिर येह क़बूल कर लो और अपने घर वालों पर ख़र्च करो।” फ़क़ीर वहां से रवाना हुवा तो उस का दिल ख़ुशी से फूला हुवा था। उस ने घर वालों पर अच्छी त़रह ख़र्च किया। जब रात हुई तो उस मुसलमान सुनार ने ख़्वाब देखा कि क़ियामत क़ाइम हो चुकी है। प्यास और मसाइब शिद्दत इख़्तियार कर चुके हैं। फिर उस ने अचानक एक सफ़ेद मोतियों का मह़ल देखा जिस के दरवाज़े याक़ूत के थे। उस ने सर उठा कर कहा : “ऐ इस मह़ल के मालिक ! मुझे थोड़ा सा पानी पिला दे।” तो उसे एक आवाज़ सुनाई दी : “कल शाम तक येह मह़ल तेरा था लेकिन जब तू ने फ़क़ीर का दिल तोड़ा और उसे कुछ न दिया तो इस मह़ल से तेरा नाम मिटा कर तेरे उस यहूदी पड़ोसी का नाम लिख दिया गया है जिस ने उस फ़क़ीर की ह़ाजत पूरी की और उस को दस दिरहम दिये।” चुनान्चे, बेदार होने के बा'द सुनार घबराते हुए और ख़ुद को मलामत करते हुए अपने यहूदी पड़ोसी के पास आया और कहने लगा : “तुम मेरे पड़ोसी हो, मेरा तुम पर ह़क़ है और मुझे तुम से एक ज़रूरी काम है।” यहूदी ने पूछा : “बताओ ! क्या ह़ाजत है ?” उस ने कहा : “कल शाम तुम ने जो दस दिरहम फ़क़ीर को दिये थे इन का षवाब सो दिरहम के बदले मुझे दे दो।” तो उस ने जवाब दिया : “अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं एक लाख दीनार के बदले भी न दूंगा बल्कि अगर आप ने उस मह़ल के दरवाज़े में भी दाख़िल होने की ख़्वाहिश की जो आप ने कल रात ख़्वाब में देखा था तो मैं उस की भी इजाज़त न दूंगा।” मुसलमान सुनार ने पूछा : “आप को इस राज़ की ख़बर कैसे हुई ?” तो यहूदी ने जवाब दिया : “इस की ख़बर मुझे उस ज़ात ने दी है जो किसी भी चीज़ को कहती है : “हो जा तो वोह हो जाती है।” और मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह यक्ता है उस का कोई शरीक नहीं और येह भी गवाही देता हूं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस के ख़ास बन्दे और रसूल हैं।”

(حاشية اعانة الطالبين، باب الصوم، فصل فی صوم التطوع ، ج٢، ص٤٤٥)

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! येह तो यहूदी था जिस ने यौमे आ़शूरा के मुतअ़ल्लिक़ ह़ुस्ने ज़न रखा ह़ालांकि वोह आ़शूरा की फ़ज़ीलत नहीं जानता था तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे बे शुमार अ़त़ा किया और इस्लाम की दौलत से नवाज़ा। तो वोह मुसलमान कितना बद बख़्त है जो इस दिन की

फ़ज़ीलत व षवाब को जानने के बा वुजूद अ़मल में सुस्ती करे। **ऐ मेरे इस्लामी भाइयो** ! तुम ने क़ुदरत व ताक़त के अवक़ात को ज़ाएअ़ कर दिया, आख़िरत को भूल गए और इस फ़ानी दुन्या से दिल लगा बैठे। सालिहीन से कनारा कश हो कर फ़ुज्जार के हम मजलिस बन गए। इख़्लास पर मैले कुचेले दिलों को तरजीह़ दी। आज़ाद होने के बा वुजूद ख़्वाहिश के ग़ुलाम बन गए और शहवात की लज़्ज़त में गुनाहों की कड़वाहट को याद न किया।

शबे आ़शूरा का वसीला काम आ गया :

मन्क़ूल है, बसरा में एक मालदार आदमी रहता था। हर साल शबे आ़शूरा को अपने घर में लोगों को जम्अ़ करता जो क़ुरआने करीम की तिलावत करते और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते। इसी त़रह़ रात भर तिलावते क़ुरआन और ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ का सिलसिला जारी रहता। फिर वोह शख़्स सब को खाना पेश करता। मसाकीन की ख़बर गीरी करता। बेवाओं और यतीमों से भी अच्छा सुलूक करता। उस का एक पड़ोसी था जिस की बेटी अपाहज थी। उस लड़की ने अपने बाप से पूछा : ''ऐ मेरे वालिदे मोह़तरम ! हमारा पड़ोसी हर साल इस रात लोगों को क्यूं जम्अ़ करता है ? और फिर सब मिल कर तिलावते क़ुरआन और ज़िक्र करते हैं !'' बाप ने बताया : ''येह आ़शूरा की रात है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां इस की बहुत ह़ुरमत है और इस के बहुत ज़ियादा फ़ज़ाइल हैं।'' जब सब घर वाले सो गए तो बच्ची सह़री तक बेदार रह कर क़ुरआने अ़ज़ीम की तिलावत और ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ सुनती रही। जब लोगों ने क़ुरआने ह़कीम ख़त्म कर लिया और दुआ़ मांगने लगे तो उस लड़की ने भी अपना सर आस्मान की जानिब उठा दिया और अ़र्ज़ की : ''या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे इस रात की ह़ुरमत का वासित़ा और उन लोगों का वासित़ा जिन्हों ने सारी रात तेरा ज़िक्र करते हुए जाग कर गुज़ारी है ! मुझे आ़फ़िय्यत अ़त़ा फ़रमा दे, मेरी तक्लीफ़ दूर कर दे और मेरे दिल की शिकस्तगी दूर फ़रमा दे।'' अभी उस की दुआ़ पूरी भी न हुई थी कि उस की तक्लीफ़ और बीमारी ख़त्म हो गई और वोह अपने पाउं पर उठ खड़ी हुई। जब बाप ने उस को पाउं पर खड़े हुए देखा तो पूछा : ''ऐ मेरी बेटी ! किस ने तुझ से इस रंजो ग़म और मुसीबत को दूर किया है ?'' तो उस ने जवाब दिया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ पर अपनी रह़मत का बादल बरसाया और इन्आ़मात व नवाज़िशात में ज़र्रा भर बुख़्ल न किया। ऐ मेरे वालिदे मोह़तरम ! मैं ने अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस रात का वसीला पेश किया तो उस ने मेरी तक्लीफ़ दूर फ़रमा दी और मेरे जिस्म को सह़ीह़ फ़रमा दिया।''

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! नफ़्अ़ ह़ासिल करने के ज़माने को ग़नीमत जानो कि ऐसे अहम दिन गिनती के हैं। फ़ुरसत को ग़नीमत जानो कि सलामती के अवक़ात मौजूद हैं। जल्द अज़ जल्द ख़ूब कोशिश करने वाले की त़रह़ अच्छे आ'माल कर लो। दुन्या की फ़ुज़ूलिय्यात से कनारा कश हो जाओ और इस की ग़ुलामी से छुटकारा ह़ासिल कर लो, इस से पहले कि तुम ह़सरत की घड़ी से दो चार हो जाओ। इस के बा'द तुम क़ब्र के तारीक गढ़े में चले जाओगे। कितने ही लोग यौमे आ़शूरा से पहले तन्दुरुस्त थे लेकिन आज वोह बीमार हैं। कितने ही अफ़राद मुत़मइन थे कि अचानक मौत

का क़ासिद आया तो वोह कूच कर गए और लम्हा भर भी न ठहर सके। कितने ही सुतूनों जैसे लोग थे जिन्हें शहवात व लज़्ज़ात के साथ मज़बूत किया गया था मगर वोह भी गिर गए। कितने ही मौजूद थे जो इस दिन के आने से पहले पहले फ़ना हो गए।

ऐ मेरे इस्लामी भाई ! अन क़रीब तेरा भी येही हाल होगा लेकिन दुन्या का धोका इसे तुझ से छुपाता है और तेरा भी येही अन्जाम होगा। लिहाज़ा ग़ौरो फ़िक्र कर कि तू किस डगर पर चल रहा है। गोया मैं देख रहा हूं कि तेरी तन्दुरुस्ती बीमारी में बदल गई है, आफ़िय्यत ख़त्म हो चुकी है, क़लम ने तेरी तक़्दीर में मुसीबतें लिख दी हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़ज़ा व क़द्र के मुताबिक़ तेरी उम्र ख़त्म चुकी है, तेरी मौत का वक़्त क़रीब आ चुका है और रूह हंसली की हड्डी तक पहुंच चुकी है और तू ने'मतों की लज़्ज़त भूल चुका है, दिल दोस्तों की जुदाई पर हसरत का शिकार है और छुपे हुए आंसू बह निकले हैं। तेरी येह हालत महूज़ एक लम्हा होगी फिर रूह परवाज़ कर जाएगी और दुख डेरे डाल लेगा और तू इन्तिहाई वहशत नाक तारीक घर में क़ियाम करेगा। अफ़्सोस है तुझ पर ! अगर तुझे तेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने गुनाहों की सज़ा दी और तुझ से अपनी नाफ़रमानियों का इन्तिक़ाम लिया। अफ़्सोस है तुझ पर ! अगर पुल सिरात से तेरे क़दम फिसल गए। हाए ! उस पर हसरत व अफ़्सोस ! जिस की हालत ऐसी होगी, वोह कब तक ख़्वाहिशात की इस ग़फ़्लत में मुब्तला रहेगा ?

सेब से जन्नती पोशाक बर आमद हुवा :

मन्क़ूल है कि मिस्र में खजूरों का एक ताजिर रहता था जिस का नाम अतिय्या बिन ख़लफ़ था। वोह बहुत मालदार था फिर अचानक फ़क़ीर हो गया कि उस के पास तन ढांपने के लिये एक कपड़े के सिवा कुछ भी बाक़ी न बचा। जब आशूरा का दिन आया तो उस ने जामेअ मस्जिद अम्र बिन आस में नमाज़े फ़ज्र अदा की। आम तौर पर इस मस्जिद में आशूरा के दिन ही औरतें दुआ के लिये आती थीं। वोह ताजिर भी बाक़ी लोगों के साथ खड़ा हो कर दुआ मांगने लगा। वोह औरतों से हट कर एक तरफ़ खड़ा था कि एक औरत अपने साथ यतीम बच्चों को ले कर उस के पास आई और अर्ज़ की : "जनाब ! मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम पर सुवाल करती हूं कि आप मेरी मुश्किल आसान कर दीजिये, मुझे कुछ इनायत फ़रमाइये जिस से मैं इन बच्चों की ग़िज़ा हासिल कर सकूं क्यूंकि इन का बाप मर चुका है और उस ने इन के लिये कुछ नहीं छोड़ा। मैं एक इ़ज़्ज़त दार ख़ातून हूं। मेरा कोई वाक़िफ़े कार भी नहीं कि उस के पास जा सकूं। आज महूज़ इस ज़रूरत व हाजत की वजह से मुझे ज़लील हो कर घर से निकलना पड़ा और न ही मुझे मांगने की आदत है।" ताजिर ने अपने दिल में सोचा कि मैं तो किसी चीज़ का मालिक नहीं और इस लिबास के सिवा मेरे पास कोई चीज़ भी नहीं। अब अगर मैं येह लिबास इस को देता हूं तो खुद बरहना हो जाऊंगा और अगर इस को ख़ाली लौटाता हूं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में क्या उज़्र पेश करूंगा। बहर हाल उस ने औरत से कहा : "मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें कुछ दूंगा।" वोह औरत उस के साथ उस के घर गई। ताजिर ने उस को दरवाज़े पर खड़ा कर दिया और खुद घर में

दाख़िल हो कर अपने कपड़े उतार कर एक फटा पुराना कपड़ा लपेट लिया और फिर दरवाज़े की दराड़ में से वोह लिबास उस औ़रत को दे दिया। औ़रत ने उस के ह़क़ में दुआ़ की : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को जन्नती पोशाक पहनाए और आप को बक़िय्या उ़म्र किसी का मोह़ताज न करे।" ताजिर औ़रत की दुआ़ सुन कर बहुत खुश हुवा। उस ने दरवाज़ा बन्द किया और फिर घर में दाख़िल हो कर रात गए तक ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल हो गया। जब रात को सोया तो ख़्वाब में एक ऐसी ह़सीनो जमील ह़ूर देखी जिस की मिष्ल देखने वालों ने न देखी होगी। उस के हाथ में एक सेब था जिस की खुश्बू आस्मानो ज़मीन के दरमियान फैली हुई थी। ह़ूर ने वोह सेब ताजिर को दिया तो उस में से एक जन्नती हुल्ला निकला जिस की क़ीमत सारी दुन्या भी न बन सके। उस ने वोह लिबास ताजिर को पहनाया और खुद उस के क़रीब बैठ गई। ताजिर ने पूछा : "तुम कौन हो?" बोली : "मेरा नाम आ़शूरा है और मैं तेरी जन्नती बीवी हूं।" ताजिर ने पूछा : "मुझे येह मक़ाम व मर्तबा कैसे मिला?" तो उस ने जवाब दिया : "उस बेवा और यतीम बच्चों की दुआ़ की वजह से जिन पर तू ने कल एह़सान किया था।" जब ताजिर बेदार हुवा तो वोह इतना खुश था जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं जानता। उस का सारा घर जन्नती लिबास की खुश्बू से मुअ़त्त़र था। उस ने वुज़ू कर के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र बजा लाते हुए दो रक्अ़त नमाज़ अदा की। फिर आस्मान की जानिब मुंह उठा कर अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ अगर मेरा ख़्वाब सच्चा है और जन्नत में मेरी बीवी आ़शूरा होगी तो मुझे अपनी बारगाह में वापस बुला ले।" अभी उस की दुआ़ पूरी भी न हुई थी कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस की रूह़ को जन्नत में भेज दिया।

(نزهة المجالس، كتاب الصوم، باب فضل صيام عاشوراء......الخ، ج ١، ص ٢٣٣)

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो! येह चन्द एक बिशारतें हैं जो बन्दए मोमिन को मौत के वक़्त मिलती हैं तो अब इस की तय्यारी करने वाले कहां हैं? वोह लोग कहां हैं जिन्हों ने दुन्या में भलाई का बीज बोया और आख़िरत में ता'रीफ़ की फ़स्ल काटेंगे? सदक़े से माल में कमी नहीं आती बल्कि ज़ियादा होता है। वोह लोग कहां गए जिन्हों ने ख़ज़ाने जम्अ़ किये और शहरों को आबाद किया? और वोह कहां हैं जिन्हों ने लश्करों की क़ियादत की और लोगों को अपना ग़ुलाम बनाया? वोह कहां हैं जिन्हों ने पुख़्ता मह़ल्लात बनाए? इन के आबा व अजदाद कहां है?

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ! वोह लोग कितने अ़ज़ीम हैं जिन्हों ने अपनी ज़िन्दगी में अच्छे आ'माल में जल्दी की और ह़या व वक़ार को अपना ओढ़ना बिछौना बना लिया और उस दिन के लिये अच्छे आ'माल किये जिस के बारे में है :

﴿٢﴾ كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ ۝ (پ٢٩، المدثر:٣٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हर जान अपनी करनी (आ'माल) में गिरवी है।

ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام का मो'जिज़ा :

इस दिन की क़द्रो मन्ज़िल मा'रूफ़ है कि इसी दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को तूफ़ान से नजात अ़त़ा फ़रमाई। जब आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपने रुफ़क़ा के

साथ कश्ती से बाहर तशरीफ़ लाए तो आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के रुफ़क़ा ने भूक की शिकायत की क्यूंकि इन का तमाम खाने का सामान ख़त्म हो चुका था। आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन्हें बचा हुवा खाना लाने का हुक्म फ़रमाया। कोई मुठ्ठी भर गन्दुम ले आया तो कोई मुठ्ठी भर मसूर की दाल, कोई लोबिया की मुठ्ठी लाया तो कोई भुने हुए चने ले आया यहां तक कि मुख़्तलिफ़ अनाजों की सात मुठ्ठियां जम्अ़ हो गईं। और वोह आ़शूरा का दिन था। ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस अनाज पर बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ी और इसे पका कर सब ने खाया और आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बरकत से सब का पेट भर गया। और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

﴿۷﴾ قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَعَلٰۤى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ط (پ۱۲،ھود:٤٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फ़रमाया गया ऐ नूह़ ! कश्ती से उतर हमारी त़रफ़ से सलाम और बरकतों के साथ जो तुझ पर हैं और तेरे साथ के कुछ गुरौहों पर।*

और येह वोह पहला खाना था जो तूफ़ान के बा'द रूए ज़मीन पर पकाया गया। फिर लोगों ने इसे **यौमे आ़शूरा की सुन्नत** बना लिया। पस जो इस दिन खाना पकाए और फ़ुक़रा व मसाकीन को खिलाए तो उस के लिये अज्रे अ़ज़ीम है। (تفسیرروح البیان،سورة ھود،تحت الآیة٤٨، ج٤، ص١٤٢)

मन्क़ूल है, जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से वा'दा फ़रमाया कि वोह उस से मुख़ात़ब होगा और कलाम फ़रमाएगा नीज़ उसे तख़्तियों की सूरत में तौरात अ़त़ा फ़रमाएगा तो आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को तीस रोज़े रखने का हुक्म दिया। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने रोज़े रखे और वोह ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम का महीना था। आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने मे'दा ख़ाली होने की वजह से पैदा होने वाली मुंह की बू को ना गवार जाना और ख़र्रूब (या'नी कीरब, येह एक दरख़्त का नाम है) की लकड़ी की मिस्वाक फ़रमा ली। एक क़ौल के मुत़ाबिक़ वो ज़ैतून की थी जब कि एक क़ौल येह है कि किसी दूसरी लकड़ी की थी। आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को फ़रमाया गया : "ऐ हमारे हुक्म से रोज़े रखने वाले ! तू ने अपनी राए से कैसे इफ़्तार कर लिया ? क्या तू नहीं जानता कि रोज़ेदार के मुंह की बू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक कस्तूरी की ख़ुश्बू से भी ज़ियादा पाक है ?" फिर आप عَلَيْهِ السَّلَام के इस फ़े'ल पर बत़ौरे कफ़्फ़ारा मज़ीद दस रोज़े रखने का हुक्म दिया।

चुनान्चे, क़ुरआने पाक में इरशादे रब्बानी है :

﴿۸﴾ وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً وَّاَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ (پ۹،الاعراف:١٤٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हम ने मूसा से तीस रात का वा'दा फ़रमाया और उन में दस और बढ़ा कर पूरी कीं।*

एक क़ौल के मुत़ाबिक़ "بِعَشْرٍ" से मुराद मुह़र्रम का पहला अ़शरह था। दूसरा क़ौल येह है कि येह ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम का पहला अ़शरह था। पहले क़ौल के मुत़ाबिक़ आख़िरी दिन यौमे आ़शूरा का था और येही वोह दिन है जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام से कलाम फ़रमाया और इन पर अपनी किताब तौरात नाज़िल फ़रमाई।

येह ऐसा अ़ज़ीम दिन है कि इस में नेकियों का अज्र दुगना कर दिया जाता है और हर गुनाह मुआफ़ कर दिया जाता है। इसी दिन अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तौबा क़बूल फ़रमाई। इसी रोज़ ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ नजिय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और आप عَلَیْہِ السَّلَام के क़लील ज़ादे राह वाले रुफ़क़ा को कश्ती में नजात अ़ता फ़रमाई। इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को नारे नमरूद से नजात अ़ता फ़रमाई। इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को मुसीबत से छुटकारा अ़ता फ़रमाया। इसी रोज़ ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के त़वील दुख दर्द के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को उन से मिलाया। इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को मछली के पेट से बाहर निकाला। इसी दिन बनी इस्राईल के लिये दरया में रास्ते बनाए गए ताकि वोह इसे पार कर के फ़िरऔ़न से नजात पाए। इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की लग़्ज़िश मुआ़फ़ हुई। इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को सल्त़नते अ़ज़ीम अ़ता की गई। इसी दिन अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को हम कलामी का शरफ़ बख़्शा और ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को आस्मान पर उठा लिया। इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام रह़मते बारी तआ़ला ले कर नाज़िल हुए। और येही वोह अ़ज़ीम दिन है जिस में ह़ुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अगलों पिछलों के गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाने की ख़ुश ख़बरी सुनाई गई।

इस दिन की अ़ज़्मत व शराफ़त के लिये तुम्हारे लिये इतना ही काफ़ी है कि जिस ने इस दिन का रोज़ा रखा गोया उस ने सारी ज़िन्दगी रोज़ा रखा और जिस ने आ़शूरा की रात क़ियाम किया तो वोह बड़ा अज्र और बड़ी अ़त़ा पा कर कामयाब हुवा और जिस ने इस दिन किसी बे लिबास को कपड़े पहनाए या भलाई का कोई काम किया अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस को दर्दनाक अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ फ़रमा देगा। जिस ने इस दिन किसी यतीम की ह़ाजत पूरी की या किसी भूके को खाना खिलाया या किसी को पानी का एक घूंट पिलाया अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस को जन्नत के दस्तरख़्वान पर खाना खिलाएगा और मोहर लगी हुई शराबे त़हूर और सलसबील (या'नी जन्नती चश्मे) का पानी पिलाएगा। जिस ने इस दिन सदक़ा किया बरोज़े क़ियामत वोह अपने सदक़े के घने साए में होगा। जिस ने इस दिन अपने घर वालों पर ख़र्च में फ़राख़ी की उस के रिज़्क़ में कुशादगी कर दी जाएगी और उस की सीरतो सूरत को अच्छा कर दिया जाएगा। पस इस दिन अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की ख़ूब पाकी बोलो और कलिमए त़य्यिबा शरीफ़ की कषरत करो और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में जल्दी जल्दी तौबा कर लो और आ'माले सालेह़ा के ज़रीए त़वील सफ़र के लिये ज़ादे राह तय्यार कर लो। इस दिन की फ़ज़ीलत पर इन्आ़मात व इकरामात की रिवायात इस कषरत से आई हैं कि इन के इज़्हार से हर ज़बान क़ासिर है। (نزھۃ المجالس، کتاب الصوم، باب فضل صیام عاشوراء ......الخ، ج ۱، ص ۲۳۲)

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इस फ़ज़ीलत वाले महीने में अपने मक़्बूल बन्दों में शुमार कर और बहुत ज़ियादा अज्रो षवाब मर्हमत फ़रमा, हमारे तमाम गुनाहे कबीरा मुआफ़ फ़रमा, हमारी पुश्तों को तमाम बोझल गुनाहों से हलका कर के हमारी छोटी छोटी नेकियां भी अपनी आ़ली बारगाह में क़बूल फ़रमा। बेशक तू थोड़े अ़मल को भी क़बूल फ़रमा लेता है। आ़शूरा के दिन हमारे हर अच्छे अ़मल पर अपनी मशिय्यत के मुत़ाबिक़ अज्र अ़त़ा फ़रमा और बरोज़े मह़शर हमें उस ह़स्ती के झन्डे तले इकठ्ठा फ़रमा जिस पर तू ने क़ुरआने पाक में येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई :

﴿۹﴾ حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ○ (پ٤،ال عمران:١٧٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ***अल्लाह*** *हम को बस है और क्या अच्छा कारसाज़।*

وَصَلَّى اللّٰه عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ اَجْمَعِيْن

﴾....छे अफ़राद पर ला'नत.....﴿

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : "छे त़रह़ के लोगों पर मैं ला'नत करता हूं और ***अल्लाह*** *عَزَّوَجَلَّ भी उन पर ला'नत फ़रमाता है और हर नबी की दुआ़ क़बूल है, छे अश्ख़ास येह हैं (1) किताबुल्लाह में इज़ाफ़ा करने वाला (2) तक़्दीर को झुटलाने वाला (3) मेरी उम्मत पर ज़ुल्म के साथ तसल्लुत़ करने वाला कि उस शख़्स को इ़ज़्ज़त देता है जिस को* ***अल्लाह*** *عَزَّوَجَلَّ ने ज़लील किया और उस को ज़लील करता है जिस को* ***अल्लाह*** *عَزَّوَجَلَّ ने इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमाई (4)* ***अल्लाह*** *عَزَّوَجَلَّ के ह़रम (या'नी ह़रमे मक्का) को ह़लाल ठहराने वाला (5) मेरे अहले बैत की ह़ुरमत जिस का* ***अल्लाह*** *عَزَّوَجَلَّ ने ह़ुक्म दिया है उस को पामाल करने वाला और (6) मेरी सुन्नत को छोड़ने वाला।"*

(الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان،الحديث:٥٧١٩،ج٧،ص٥٠١)

बयान 43 : मीलादे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

हम्दे बारी तआला :

तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस का इन्कार नहीं किया जा सकता। वोह ऐसा "अहद" है जो अपनी सिफ़ते सर मदिय्यत (या'नी अज़ली व अबदी हो) में यक्ता है। वोह ऐसा "फ़र्द" है जो अपनी सिफ़ते रबूबिय्यत (या'नी रब होने) में यक्ता है। वोह ऐसा "शकूर" है जिस के इलावा हक़ीक़तन किसी का शुक्र किया जाता है न किसी की हम्द। वोह ऐसा "ग़फ़ूर" है जो सच्ची तौबा करने वालों के गुनाहों को बहुत ज़ियादा बख़्शने वाला है। वोह ऐसा बादशाहे हक़ीक़ी है जिस ने सब मुमालिक और बादशाहों को फ़ना किया जब कि उस की सलतनत को कभी ज़वाल न आएगा। वोह ऐसा बुलन्द रुत्बा है जिस की तरफ़ पाकीज़ा कलिमात बुलन्द होते हैं। वोह ऐसा हाकिमे मुतलक़ है जिस ने तमाम अहले दुन्या की मौत का अटल फ़ैसला फ़रमा दिया है लिहाज़ा कोई भी इस दुन्या में हमेशा न रहेगा। उस ने अपने बर गुज़ीदा रसूलों को मबऊष फ़रमाया ताकि वोह क़ाबिले हम्द व सताइश राहे हक़ की तरफ़ लोगों की राहनुमाई फ़रमाएं और उन्हें उस हस्ती के सामने पर्दा बनाए रखा जिस के लिये बरोज़े क़ियामत शफ़ाअत और लिवाउल हम्द (या'नी हम्द के झन्डे) का वा'दा है और उस हस्ती को ख़ातिमुल अम्बिया صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बना कर भेजा ताकि वोह लोगों के लिये राहे हिदायत वाज़ेह फ़रमाएं। इसी लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाया :

"وَاِذْ قَالَ عِیْسَی ابْنُ مَرْیَمَ یٰبَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰہِ اِلَیْکُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیَّ مِنَ التَّوْرٰىۃِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُوْلٍ یَّاْتِیْ مِنْ بَعْدِی اسْمُہٗٓ اَحْمَدُ ؕ فَلَمَّا جَآءَھُمْ بِالْبَیِّنٰتِ قَالُوْا ھٰذَا سِحْرٌ مُّبِیْنٌ0 (پ۲۸،الصف:۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और याद करो जब ईसा बिन मरयम ने कहा : ऐ बनी इसराईल ! मैं तुम्हारी तरफ़ **अल्लाह** का रसूल हूं अपने से पहली किताब तौरेत की तस्दीक़ करता हुवा। और उन रसूल की बिशारत सुनाता हुवा जो मेरे बा'द तशरीफ़ लाएंगे, उन का नाम अह़मद है, फिर जब अह़मद उन के पास रोशन निशानियां ले कर तशरीफ़ लाए बोले येह खुला जादू है।"*

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने हबीबे मुकर्रम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की क़द्रो मन्ज़िलत का इज़हार और ता'ज़ीम व तौक़ीर करते हुए उन का ज़िक्र बुलन्द फ़रमाया। आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़रीए मुशरिकीन की शिर्क की आग को बुझाया और मोअमिनीन के लिये नूरे ईमान ज़ाहिर फ़रमाया। आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़रीए आप की उम्मत को कामिल फ़रहत व सुरूर अता फ़रमाया। आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को सारी इन्सानिय्यत के लिये बशीरो नज़ीर (या'नी ख़ुश ख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला) बना कर मबऊष फ़रमाया। आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ उस के हुक्म से बुलाने वाला और चमका देने वाला आफ़्ताब बना कर भेजा। आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को हर मौजूद शै के लिये रह़मत बना कर मबऊष फ़रमाया। आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक नूर से सारी काइनात को मुनव्वर फ़रमाया। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

"یٰٓاَیُّھَا النَّبِیُّ اِنَّآ اَرْسَلْنٰکَ شَاھِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّ نَذِیْرًا0 وَّدَاعِیًا اِلَی اللّٰہِ بِاِذْنِہٖ وَسِرَاجًا مُّنِیْرًا 0(پ۲۲،الاحزاب:۴۵-۴۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) ! बेशक हम ने तुम्हें भेजा हाज़िर नाज़िर और ख़ुश ख़बरी देता और डर सुनाता और अल्लाह की त़रफ़ उस के हुक्म से बुलाता और चमका देने वाला आफ़्ताब।"*[1]

हुज़ूर नबिय्ये पाक साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सय्यिदुल मुरसलीन, इमामुल मुत्तक़ीन हैं। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने तमाम मख़्लूक़ात पर बरतर व बाला मक़ाम अ़ता फ़रमाया और उस वक़्त नबुव्वत अ़ता फ़रमा दी थी जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पानी और मिट्टी के दरमियान थे। (या'नी अभी आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तख़्लीक़ भी मुकम्मल न हुई थी) और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को सारी मख़्लूक़ का रसूल बनाया और कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया : "وَمَآ اَرْسَلْنٰکَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ० (پ۱۷،الانبيآء:۱۰۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हम ने तुम्हें न भेजा मगर रह़मत सारे जहान के लिये।"*[2]

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को बुलन्द मक़ाम अ़ता फ़रमाया। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को अ़जीब हुस्न से नवाज़ा और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत को मोअमिनीन के लिये बहार बनाया। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकत से दीने

1....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "शाहिद का तर्जमा हाज़िर व नाज़िर बहुत बेहतरीन तर्जमा है। "मुफ़रिदाते राग़िब" में है : اَلشُّهُوْدُ وَالشَّهَادَةُ الْحُضُوْرُ مَعَ الْمُشَاهَدَةِ اِمَّا بِالْبَصَرِ اَوْبِالْبَصِيْرَة या'नी शहूद और शहादत के मा'ना हैं हाज़िर होना मअ़ नाज़िर होने के, बसर के साथ हो या बसीरत के साथ। और गवाह को भी इसी लिये शाहिद कहते हैं कि वोह मुशाहदा के साथ जो इ़ल्म रखता है उस को बयान करता है। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम आ़लम की त़रफ़ मबऊ़ष हैं। आप की रिसालत आ़म्मा है। जैसा कि सूरए फ़ुरक़ान की पहली आयत में बयान हुवा तो हुज़ूरे पुर नूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم क़ियामत तक होने वाली सारी ख़ल्क़ के शाहिद हैं और उन के आ'माल व अफ़्आ़ल व अह़्वाल, तस्दीक़, तकज़ीब, हिदायत, जलाल सब का मुशाहदा फ़रमाते हैं। (अबू सऊ़द व जमल) सिराज का तर्जमा कुरआने करीम के बिल्कुल मुत़ाबिक़ है कि इस में आफ़्ताब को सिराज फ़रमाया गया है। जैसा कि सूरए नूह़ में وَجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجاً और आख़िर पारह की पहली सूरत में है وَجَعَلْنَا سِرَاجاً وَّهَّاجاً और दर ह़क़ीक़त हज़ारों आफ़्ताबों से ज़ियादा रोशनी आप के नूरे नबुव्वत ने पहुंचाई और कुफ़्र व शिर्क के ज़ुलमाते शदीदा को अपने नूरे ह़क़ीक़त अफ़रोज़ से दूर कर दिया और ख़ल्क़ के लिये मा'रिफ़त व तौह़ीदे इलाही तक पहुंचने की राहें रोशन और वाज़ेह़ कर दीं और ज़लालत के वादिये तारीक में राह गुम करने वालों को अपने अन्वारे हिदायत से राह याब फ़रमाया और अपने नूरे नबुव्वत से ज़माइर व बसाइर और क़ुलूब व अरवाह़ को मुनव्वर किया। ह़क़ीक़त में आप का वुजूदे मुबारक ऐसा आफ़्ताबे आ़लम ताब है जिस ने हज़ारहा आफ़्ताब बना दिये इसी लिये इस की सिफ़त में मुनीर इरशाद फ़रमाया गया।

2....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "कोई हो, जिन्न हो, या इन्स, मोमिन हो या काफ़िर। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि हुज़ूर का रह़मत होना आ़म है ईमान वाले के लिये भी और उस के लिये भी जो ईमान न लाया। मोमिन के लिये तो आप दुन्या व आख़िरत दोनों में रह़मत हैं और जो ईमान न लाया उस के लिये आप दुन्या में रह़तम हैं कि आप की बदौलत ताख़ीरे अ़ज़ाब हुई और ख़स्फ़ व मस्ख़ और इस्तीसाल के अ़ज़ाब उठा दिये गए। तफ़्सीरे रूहुल बयान में इस आयत की तफ़्सीर में अकाबिर का येह क़ौल नक़्ल किया है कि आयत के मा'ना येह हैं कि हम ने आप को नहीं भेजा मगर रह़मते मुत़लक़ए ताम्मा कामिला आ़म्मा शामिला जामिआ़ मुह़ीत़ा बेह जमीए़ मुक़य्यदात रह़मते ग़ैबिय्या व शहादते इ़ल्मिय्या व ऐ़निय्या व वुजूदिय्या व शुहूदिय्या व साबिक़ा वला ह़क़्क़ा वग़ैरा ज़ालिक तमाम जहानों के लिये आ़लमे अरवाह़ हों या आ़लमे अजसाम, ज़वील उ़क़ूल हों या ग़ैरे ज़वील उ़क़ूल और जो तमाम आ़लमों के लिये रह़मत हो लाज़िम है कि वोह तमाम जहान से अफ़्ज़ल हो।"

इस्लाम हमेशा बुलन्द व मज़बूत होता रहेगा और कुफ़्र व शिर्क कमज़ोर व ज़लील होता रहेगा। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को पाक पुश्तों से पाक रहमों में मुन्तक़िल फ़रमाया। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उसूल व फ़ुरूअ़ के ए'तिबार से तय्यिब व ताहिर हैं। मीलादे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर शाहे ईरान के महल "किसरा" में ज़लज़ला आ गया, उस की बुन्यादें कमज़ोर पड़ गईं और वोह गिरने के क़रीब हो गया। अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़मते शान की ख़ातिर आप को उम्मत के गुनहगारों का शफ़ीअ़ बनाया। उम्मत को आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीन तवज्जोह से सुनने और अह़काम की बजा आवरी का हुक्म फ़रमाया। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को दुन्या में इस उम्मत का रसूल और आख़िरत में शफ़ीअ़ बनाया और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को लोगों के सामने अपनी अ़ज़मत व शरफ़ बयान करने का हुक्म देते हुए इरशाद फ़रमाया :

"قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا (پ۹،الاعراف:۱۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम फ़रमाओ ऐ लोगो ! मैं तुम सब की त़रफ़ उस अल्लाह का रसूल हूं।"* (1)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने हुज़ूरे पुरनूर, शाहे ग़यूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इ़ज़्ज़त का ताज पहनाया और सारी काइनात को आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के नूर से मुनव्वर फ़रमाया। देहाती और शहरी लोगों को आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़रीए इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमाई। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को हर क़िस्म के गदले पन से महफ़ूज़ रखा और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक नूर से फ़ारस का सदियों से जलने वाला आतश कदा बुझा दिया। अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत की बरकत से हनादिस (या'नी आख़िरे माह की तीन इन्तिहाई सियाह रातों) की तारीकियों को रोशनी अ़ता फ़रमाई। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को हैबत व जलाल की पोशाक अ़ता फ़रमाई। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर सिलसिलए नबुव्वत व रिसालत को ख़त्म फ़रमाया। क़ुरआने करीम में आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की शान यूं बयान फ़रमाई :

"مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ (پ۲۶،الفتح:۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *मुह़म्मद अल्लाह के रसूल हैं और उन के साथ वाले काफ़िरों पर सख़्त हैं।* (2)

1....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "येह आयत सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के उ़मूमे रिसालत की दलील है कि आप तमाम ख़ल्क़ के रसूल हैं और कुल जहां आप की उम्मत। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीष है, हुज़ूर फ़रमाते हैं : "पांच चीज़ें मुझे ऐसी अ़ता हुईं जो मुझ से पहले किसी को न मिलीं : हर नबी ख़ास क़ौम की त़रफ़ मबऊ़ष होता था और मैं सुर्ख़ व सियाह की त़रफ़ मबऊ़ष फ़रमाया गया। मेरे लिये ग़नीमतें ह़लाल की गईं और मुझ से पहले किसी के लिये नहीं हुई थीं । मेरे लिये ज़मीन पाक और पाक करने वाली (क़ाबिले तयम्मुम) और मस्जिद की गई जिस किसी को कहीं नमाज़ का वक़्त आए वहीं पढ़ ले। दुश्मन पर एक माह की मसाफ़त तक मेरा रो'ब डाल कर मेरी मदद फ़रमाई गई और मुझे शफ़ाअ़त इनायत की गई।" मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीष में येह भी है कि "मैं तमाम ख़ल्क़ की त़रफ़ रसूल बनाया गया और मेरे साथ अम्बिया ख़त्म किये गए।"

2...मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "सह़ाबा का तशद्दुद कुफ़्फ़ार के साथ इस ह़द पर था कि वोह लिह़ाज़ रखते थे कि उन का बदन किसी काफ़िर के बदन से न छू जाए और उन के कपड़े से किसी काफ़िर का कपड़ा न लगने पाए।" (मदारिक)

हुज़ूर नबिय्ये रहमत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ऐसे नबी हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को शानदार इ़ज़्ज़त व मक़ाम पर फ़ाइज़ फ़रमाया और बड़ी बड़ी ने'मतें अ़ता फ़रमाईं । ईसाई पादरियों और यहूदी राहिबों ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की नबुव्वत की बिशारत दी और काहिनों ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी की ख़ुश ख़बरी दी । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के उ़म्दा अवसाफ़ और अच्छी ता'रीफ़ सारी काइनात में आ़म कर दी । रब्बे काइनात ने रबीउ़ल अव्वल जैसे मुबारक महीने में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की जलवा नुमाई फ़रमाई और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को सारी मख़्लूक़ से अफ़्ज़ल बनाया और इ़ज़्ज़त व वक़ार के अ़ज़ीम जुब्बे पहनाए । लोगों को आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की रिसालत के ज़रीए मुतनब्बेह फ़रमाया । और अपनी लारैब किताब क़ुरआने मजीद, फ़ुरक़ाने ह़मीद में इरशाद फ़रमाया : ''اِنَّاۤ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلَیۡکُمۡ رَسُوۡلًا ۬ۙ شَاہِدًا عَلَیۡکُمۡ کَمَاۤ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلٰی فِرۡعَوۡنَ رَسُوۡلًا ؈ (پ۲۹،مزمل:۱۵) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक हम ने तुम्हारी त़रफ़ एक रसूल भेजे कि तुम पर ह़ाज़िर नाज़िर हैं जैसे हम ने फ़िरऔ़न की त़रफ़ रसूल भेजे ।

ऐ मेरे दानिशमन्द इस्लामी भाइयो ! ज़रा देखो तो सही कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने इस मोह़तरम नबी عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लिये कैसे कैसे आ'ला इन्आ़मात, ए'ज़ाज़ और अ़ज़ीम फ़ज़ाइल तय्यार कर रखे हैं । पस येही वोह रसूल हैं जो ख़ुल्क़े अ़ज़ीम और इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत की सिफ़त से मुत्तसिफ़ हैं । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप की शान बयान करते हुए क़ुरआने करीम में इरशाद फ़रमाया : ''لَقَدۡ جَآءَکُمۡ رَسُوۡلٌ مِّنۡ اَنۡفُسِکُمۡ عَزِیۡزٌ عَلَیۡہِ مَا عَنِتُّمۡ حَرِیۡصٌ عَلَیۡکُمۡ بِالۡمُؤۡمِنِیۡنَ رَءُوۡفٌ رَّحِیۡمٌ ؈ (پ۱۱،التوبۃ:۱۲۸) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक तुम्हारे पास तशरीफ़ लाए तुम में से वोह रसूल, जिन पर तुम्हारा मशक़्क़त में पड़ना गिरां है तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले मुसलमानों पर कमाल मेहरबान मेहरबान ।''(1)

बेशक इन्सान ने सब से पहले जिस कलाम से इब्तिदा की और ज़बान ने क़ुव्वते गोयाई ह़ासिल की वोह उस ज़ात का कलाम है जिस ने सारी मख़्लूक़ को पैदा किया और क़ुव्वते गोयाई अ़त़ा फ़रमाना मह़ज़ उस ख़ालिक़े काइनात جَلَّ جَلَالُہٗ का मख़्लूक़ पर फ़ज़्लो एह़सान है । उसे किसी ह़ाजत ने मख़्लूक़ की पैदाइश पर मजबूर नहीं किया था और न ही कोई ज़रूरत ऐसी थी जिस की वजह से वोह मोह़ताज था कि मख़्लूक़ उस की इत़ाअ़त करे क्यूंकि वोह तो मुत़लक़न ग़नी व बे परवाह है और वोह तो ऐसी ज़ात है जिस के ख़ज़ाने बहुत ज़ियादा ख़र्च करने के बा वुजूद ख़त्म नहीं होते और उस का

---

1 .....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡھَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : ''(या'नी) मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अ़रबी क़ुरैशी, जिन के ह़सब व नसब को तुम ख़ूब पहचानते हो कि तुम में सब से आ़ली नसब हैं और तुम उन के सिदक़ो अमानत, ज़ोहदो व तक़्वा, त़हारत व तक़द्दुस और अख़्लाक़े ह़मीदा को भी ख़ूब जानते और एक क़िराअत में اَنۡفَسِکُمۡ بفتح فا आया है । इस के मा'ना हैं कि तुम में से नफ़ीस तर और अशरफ़ व अफ़्ज़ल । इस आयते करीमा में सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी या'नी आप के मीलादे मुबारक का बयान है । तिर्मिज़ी की ह़दीष से भी षाबित है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी पैदाइश का बयान क़ियाम कर के फ़रमाया । **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि मह़फ़िले मीलादे मुबारक की अस्ल क़ुरआन व ह़दीष से षाबित है । इस आयत में अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने दो नामों से मुशर्रफ़ फ़रमाया । येह कमाले तकरीम है इस सरवरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की !''

अपने बन्दों पर सब से बड़ा फ़ज़्ल व एह़सान येह है कि उस ने उन के पास अपने मुख़्लिस व मेहरबान, अ़ज़्मत व जलाल वाले नबी और सच्चे और अमानत दार रसूल صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को भेजा जिन के पैग़ामे रब्बानी पहुंचाने की ख़ूबी बयान करते हुए वोह ख़ुद इरशाद फ़रमाता है : وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ O(پ۳۰،التکویر:۲۴) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और येह नबी ग़ैब बताने में बख़ील नहीं।"

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने अह़मदे मुजतबा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के नूरी वुजूद से कुफ़्र की तारीकियां दूर फ़रमा दीं, आस्माने ईमान पर सितारों को चमकाया और आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अन्वार व तजल्लियात से महीने की आख़िरी इन्तिहाई तारीक तीन रातों को रोशन फ़रमाया। आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी पर ईरान का शो'ला ज़न आतश कदा बुझा दिया। शाहे ईरान को उस के सल्त़नत के ज़वाल से डराते हुए उस के मह़ल "किसरा" में शिगाफ़ डाल दिये। शाहे रूम क़ैसर ने अपनी हलाकत पर दलालत करने वाला ख़्वाब देख लिया।

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने इस उम्मत को अपने मह़बूब नबी صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े तमाम उम्मतों पर फ़ज़ीलत व रिफ़्अ़त अ़त़ा फ़रमाई और आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पुख़्ता इरादों की तल्वार की बरकत से इस उम्मत के सामने बुलन्द व बाला चोटियों को सरनिगूं कर दिया। इस लिये उम्मत पर लाज़िम है कि मीलादुन्नबी صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم (या'नी बारह रबीउ़न्नुर शरीफ़) को अपनी सब से बड़ी ईद बना लें और सरकार صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत पर ह़द दर्जा ख़ुशियां मनाएं और ग़ुरबा व मसाकीन पर सदक़ा व ख़ैरात कर के आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुश नूदी ह़ासिल करें और यतीमों, बेवाओं और कमज़ोरों की इमदाद कर के आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की वसिय्यत पर अ़मल करें। उ़-लमाए किराम और मुबल्लिग़ीन लोगों के सामने आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत के वाक़िआ़त बयान करें। और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने अपने मह़बूब صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के वुजूदे मसऊ़द की बरकत से लोगों पर जो मेहरबानियां फ़रमाईं इन को और आप के ख़साइले ह़मीदा को लोगों के सामने षाबित करें ताकि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को जिस मक़ाम व मर्तबा और क़ुदरत व त़ाक़त से नवाज़ा है वोह उन के दिलों में रासिख़ हो जाए नीज़ वोह येह बात भी जान लें कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मिष्ल कोई इन्सान पैदा नहीं फ़रमाया।

विलादते मुस्त़फ़ा (صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) का बयान :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आओ ! मैं तुम्हारे सामने ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत के मुतअ़ल्लिक़ सच्चे अइम्मए ह़दीष से मरवी चन्द अह़ादीष बयान करता हूं और इस का आग़ाज़ क़ुरआने मजीद, फ़ुरक़ाने ह़मीद की इस आयते मुबारका की तिलावत से करता हूं। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ क़ुरआने अ़ज़ीम में इरशाद फ़रमाता है :

﴿۱﴾ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ O(پ۱۸،المؤمنون:۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो बड़ी बरकत वाला है **अल्लाह**, सब से बेहतर बनाने वाला है।*

हज़रते मख़्ज़ूम बिन हानी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ अपने बाप से जिन की उम्र डेढ़सो (150) साल थी, रिवायत करते हैं : "हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बारह (12) रबीउ़न्नूर शरीफ़ बरोज़ पीर आ़मुलफ़ील,[1] शाहे ईरान, नौशेरवां से बयालीस (42) साल और बादशाह अ़म्र बिन हिन्द से साढ़े आठ साल बा'द इस जहाने फ़ानी में जल्वा गर हुए।"

(السیرۃالنبویۃ لابن ھشام،ولادۃ رسول اللہ ﷺ، ج۱،ص ۱۶۱)

एक रात हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ वादिये अब्त़ह़ में मह़्वे आराम थे कि आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने ख़्वाब में अपने जिस्मे अत़हर से एक सफ़ेद ज़न्जीर निकलती देखी, इस के चार कनारे थे। एक कनारा मशरिक़ में जा पहुंचा, दूसरा मग़रिब में, तीसरा आस्मान तक और चौथा कनारा वापस लौट आया यहां तक कि वोह एक सब्ज़ दरख़्त बन गया। जब सुब्ह़ हुई और आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस की ता'बीर मा'लूम की तो बताने वालों ने बताया : "अगर आप का ख़्वाब सच्चा है तो यक़ीनन आप की मुबारक पुश्त से एक ऐसी हस्ती का ज़ुहूर होगा जिस पर तमाम ज़मीनो व आस्मान वाले ईमान लाएंगे।" (السیرۃالنبویۃلابن کثیر، کتاب مبعث رسول اللہ ﷺ، ذکراخبارغریبۃ، ج۱، ص ۳۱۰، بتغیر)

नूरे मुह़म्मदी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौफ़िशानियां :

हज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : "जब **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मौजूदात को पैदा फ़रमाने का इरादा किया और ज़मीन को बिछाया और आस्मान को बुलन्द फ़रमाया तो अपने फ़ैज़ज़ात से मुठ्ठी भर ले कर उस से इरशाद फ़रमाया : "ऐ नूर ! मुह़म्मद बन जा।" उस नूर ने एक नूरी सुतून की सूरत इख़्तियार कर ली और इस क़दर रोशन हुवा कि अ़ज़मत के पर्दे तक जा पहुंचा और रब्बे काइनात عَزَّ وَجَلَّ को सजदा किया और कहा : اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ या'नी सब ख़ूबिया **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के लिये हैं। तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने तुझे इसी लिये पैदा फ़रमाया और तेरा नाम मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) रखा है, तुझी से अपनी मख़्लूक़ की इब्तिदा करूंगा और तुझी पर अपनी रिसालत का सिलसिला ख़त्म करूंगा।" फिर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने इस नूर के चार ह़िस्से कर के एक ह़िस्से से लौह़े मह़फ़ूज़ और दूसरे से क़लम को पैदा फ़रमाया फिर क़लम से इरशाद फ़रमाया : "लिख ! तो क़लम पर एक हज़ार साल तक हैबते इलाही عَزَّ وَجَلَّ से लर्ज़ा त़ारी रहा। इस के बा'द क़लम ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे रब्ब عَزَّ وَجَلَّ क्या लिखूं ?" इरशाद फ़रमाया : لَآاِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ लिख" पस क़लम ने लिखा और मख़्लूक़ के मुतअ़ल्लिक़ इल्मे इलाही عَزَّ وَجَلَّ पर रसाई पा ली। फिर उस ने येह बातें लिखीं : (1)......हज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की पुश्ते मुबारक में मौजूद अवलाद की ता'दाद (2).....जो इत़ाअ़ते इलाही عَزَّ وَجَلَّ बजा लाएगा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और जो उस की नाफ़रमानी करेगा उसे दोज़ख़ में डाल देगा। इसी त़रह़ (3)....हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام

[1]...आ़मुल फ़ील वोह साल है जिस में अब्रहा बादशाह ने हाथियों का लश्कर ले कर ख़ानए का'बा पर चढ़ाई की थी। (अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की उम्मतों के मुतअ़ल्लिक़ भी लिखा यहां तक कि जब हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत के मुतअ़ल्लिक़ लिखा कि जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त की वोह उसे जन्नत में दाखि़ल फ़रमाएगा और जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी की..., क़लम येह जुम्ला "वोह उसे जहन्नम में डाल देगा" अभी लिखना ही चाहता था कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से निदा आई : "ऐ क़लम ! ज़रा अदब से।" तो वोह हैबत व जलाले इलाही عَزَّوَجَلَّ से शक हो गया फिर दस्ते क़ुदरत से तराशा गया। तब से क़लम में येह बात जारी हो गई कि तराशे बिग़ैर नहीं लिखता। फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने क़लम से इरशाद फ़रमाया इस उम्मत के मुतअ़ल्लिक़ लिख "येह उम्मत गुनहगार है और रब्ब عَزَّوَجَلَّ ग़फ़्फ़ार (या'नी बहुत बख़्शने वाला) है।" फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तीसरे हिस्से से अ़र्श को पैदा किया। फिर चौथे हिस्से के मज़ीद चार हिस्से कर के पहले हिस्से से अ़क़्ल, दूसरे से मा'रिफ़त, तीसरे से सूरज-चांद और आंखों का नूर और दिन की रोशनी पैदा फ़रमाई और येह सब ह़क़ीक़तन नबिय्ये मुख़्तार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ही के अन्वार हैं। पस आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम काइनात की अस्ल हैं। इस के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने नूर की इस चौथी क़िस्म के चौथे हिस्से को बत़ौरे अमानत अ़र्श के नीचे रख दिया। फिर जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को पैदा फ़रमाया तो वोह नूर उन की पुश्ते मुबारक में रखा। फिर फ़िरिश्तों से आप عَلَیْہِ السَّلَام को सजदा करवाया और जन्नत में दाखि़ल कर दिया । फ़िरिश्ते सफ़ दर सफ़ आप عَلَیْہِ السَّلَام की पुश्ते मुबारक के पीछे खड़े हो कर नूरे मुह़म्मदी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत किया करते। आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ येह फ़िरिश्ते मेरी पुश्त के पीछे सफ़ बांध कर क्यूं खड़े रहते हैं?" इरशाद फ़रमाया : "ऐ आदम ! येह फ़िरिश्ते मेरे ह़बीब, ख़ातमुल अम्बिया, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के नूर की ज़ियारत करते हैं, जिसे मैं तेरी पुश्त से पैदा फ़रमाऊंगा।" ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : "या इलाही عَزَّوَجَلَّ इस मुबारक नूर को मेरी पेशानी में रख दे ताकि येह फ़िरिश्ते मेरे सामने रहे, पुश्त की त़रफ़ न जाएं ! " तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने नूरे मुह़म्मदी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को आप عَلَیْہِ السَّلَام की पेशानी में रख दिया। फ़िरिश्ते ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के सामने खड़े हो जाते और नूरे मुह़म्मदी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम के नज़राने पेश करते रहते। ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : "या इलाही عَزَّوَجَلَّ में भी इस मुबारक नूर की ज़ियारत करना चाहता हूं, लिहाज़ा इसे मेरी पेशानी से निकाल कर किसी ऐसी जगह रख दे जहां मैं इस की ज़ियारत कर सकूं।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने नूरे मुह़म्मदी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की अंगुश्ते शहादत में मुन्तक़िल फ़रमा दिया। फ़िरिश्ते तस्बीह़ पढ़ते तो आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की अंगुश्ते मुबारक में वोह नूर भी तस्बीह़ ख़्वानी करता। इसी वजह से इस उंगली को "اَلْمُسَبِّحَۃ" (या'नी तस्बीह़ वाली उंगली) कहते हैं।

फिर आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क्या इस मुबारक नूर में से कुछ मेरी पुश्त में भी बाक़ी है ?" जवाब मिला : "हां ! मेरे मह़बूब के सह़ाबा का नूर अभी बाक़ी है।" अ़र्ज़ की : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस बक़िय्या नूर को मेरी बक़िय्या उंगलियों में रख दे।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का नूर दरमियान वाली उंगली में, अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का नूर बिन्सर (या'नी दरमियानी के साथ वाली उंगली) में, अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का नूर ख़िन्सर (या'नी सब से छोटी उंगली) और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का नूर अंगूठे में रख दिया। जब तक ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जन्नत में रहे तो येह नूर उन की उंगलियों में चमकता रहा। जब आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام दरख़्त की आज़्माइश से दो चार हुए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस नूर को दोबारा वापस पुश्त में रख दिया। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को इस वदीअ़त किये गए नूर के राज़ की क़द्रो मन्ज़िलत की पहचान कराई और फ़रमाया : "पाक साफ़ हो कर तस्बीह़ व तक्दीस करो फिर दोनों त़ाहिर हो जाओ और अपनी अहलिय्या ह़व्वा का ह़क़्क़े ज़ौजिय्यत अदा करो कि मैं तुम दोनों से अपने इस फ़ैज़ आषार नूर का ज़ुहूर फ़रमाने वाला हूं।" पस आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ के मुत़ाबिक़ अ़मल किया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नूरे मुह़म्मदी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا में मुन्तक़िल फ़रमा दिया फिर आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इस नूर को ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا की पेशानी में सूरज की मानिन्द दाइरे की सूरत में देखा करते।

(مصنّف عبد الرّزّاق، الجزء المفقود من الجزء الاوّل، کتاب الایمان، باب فی تخلیق نور محمد ﷺ، الحدیث ١٨، ص ٦٣ ۔ بالفاظٍ مختلفة)

सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का पाकीज़ा नसब :[1]

जब ह़ज़रते सय्यिदुना शीष عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पैदा हुए तो नूरे मुह़म्मदी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की पेशानी में मुन्तक़िल कर दिया गया। जब आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बड़े हुए और जवानी की ह़ुदूद में क़दम रखा तो ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से अ़ह्दो पैमान लिया कि वोह इस ख़ुदाई राज़ को किसी पाक बाज़ बीबी में ही मुन्तक़िल फ़रमाएंगे ताकि येह किसी पाक बाज़ मर्द तक ही मुन्तक़िल हो।" इस के बा'द नूरे मुह़म्मदी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना शीष عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से अनूश, उन से क़ैनान, उन से महलाईल, उन से यर्द, उन से अख़्नूख़, उन से मत्तूशलख़, उन से लम्क, उन से ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, उन से साम, उन से अरफ़ख़्शज़, उन से शालख़, उन से ऐबर, उन से फ़ालह, उन से अरग़ू, उन से सारूग़,

1...ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक के सिलसिलए नसब के मुतअ़ल्लिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा सय्यिदुना यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मा'द बिन अ़दनान तक के सिलसिलए नसब पर उम्मत का इजमाअ़ है और इस से ऊपर ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام तक मज़्कूर नसब क़ाबिले ए'तिमाद नहीं (या'नी नामों में इख़्तिलाफ़ है)।" (وسائل الوصول الی شمائل الرسول، ص ٤٨)

उन से नाहूर, उन से तारिख़[1] उन से हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام, उन से हज़रते सय्यिदुना इस्माइल عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام, उन से क़ैज़ार, उन से नब्त, उन से सलामान, उन से हमैसअ़, उन से यसअ़, उन से उदद, उन से उद्द, उन से अ़दनान, उन से मअ़द्द, उन से निज़ार, उन से मुज़र, उन से इल्यास, उन से मुदरिका, उन से ख़ुज़ैमा, उन से किनाना, उन से नज़्र, उन से मालिक, उन से फ़िहर, उन से ग़ालिब, उन से लुअय्य, उन से का'ब, उन से मुर्रा, उन से किलाब, उन से क़ुसय्य, उन से अ़बदे मनाफ़, उन से हाशिम, उन से हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ और उन से हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ तक पहुंचा जो नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के वालिदे मोहतरम हैं।

(الرَّوضُ الأُنف فی تفسیر السیرۃ النّبویّۃ لابن ھِشَام، ج ۱، ص ۲۳ تا ۳۷)

किसी शाइर ने ख़ूब कहा है :

مَـــا زَالَ نُـــوْرُ مُـحَـمَّـدٍ مُـنْـتَـقِلًا فِیْ الطَّیِّبِیْنَ الطَّـاھِـرِیْنَ أُولِی الْعُلَا

حَتّٰـــی لِـعَـبْـدِ الـلّٰـــهِ جَـاءَ مُـطَـهَّـرًا وَّمُـكَـرَّمًـا وَّمُـعَـظَّـمًـا وَّمُـبَـجَّلًا

तर्जमा : हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक नूर हमेशा त़य्यिब व त़ाहिर और बरतर व बाला लोगों में मुन्तक़िल होता रहा। यहां तक कि पाक व साफ़ और मुअ़ज़्ज़म व मुकर्रम हालत में हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ तक पहुंचा।

1....यहां अस्ल किताब में तारिख़ के बा'द आज़र का ज़िक्र है। इस के मुतअ़ल्लिक़ फ़क़ीहुल अ़स्र, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : "हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के वालिद के नाम में इख़्तिलाफ़ है। उ़-लमाए अहले सुन्नत के नज़दीक तह़क़ीक़ येह है कि आप عَلَیْہِ السَّلَام के वालिद का नाम तारख़ था और आज़र आप عَلَیْہِ السَّلَام के चचा का नाम था।" (فتاوی فیض الرسول، ج ۲، ص ۵۶۸) नीज़ मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی इस फ़रमाने बारी तआ़ला "وَاِذْ قَالَ اِبْـرٰهِیْمُ لِاَبِیْـهِ اٰزَرَ (پ ۷، الانعام: ۷۴)" के तह़त तफ़्सीरे नईमी में तह़रीर फ़रमाते हैं : "(आज़र) कौन था ?" इस में गुफ़्तगू है। इमाम जलालुद्दीन सुयूती عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने "مسالک الحنفاء" में फ़रमाया और "मुफ़रीदाते इमाम राग़िब, तफ़्सीरे कबीर, तफ़्सीरे रूहुल मआ़नी" वग़ैरा में है कि आज़र हज़रते इब्राहीम (عَلَیْہِ السَّلَام) का चचा था, आज़र बुत परस्त था। आप (عَلَیْہِ السَّلَام) के वालिद का नाम "तारिख़" है जो मोमिने मुवह्हिद थे।" तफ़्सीरे इब्ने कसीर" ने भी येही कहा। बा'ज़ ने फ़रमाया कि आज़र हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام का कोई और ख़ानदानी बुज़ुर्ग था। हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام के वालिद का नाम तारिख़ है। (मज़ीद फ़रमाते हैं) ख़याल रहे कि अ़रबी में "अब" और "वालिद" दोनों के मा'ना हैं, बाप। मगर "अब" आ़म है कि सगे बाप को भी "अब" कहते हैं और सोतेले बाप दादा, चचा, बल्कि सारे उसूले ख़ानदान को, बल्कि उस्ताज़ को, बल्कि शैख़ को, बल्कि "मुरब्बी" को भी "अब" कह देते हैं।" देखो "لَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ" यहां "आबा" से मुराद सारे उसूल हैं। बाप, दादा, परदादा कि उन सब की मन्कूहा बीवियां हम पर ह़राम हैं। "اٰبَآئِكَ اِبْرٰهِیْمَ وَاِسْمٰعِیْلَ وَاِسْحٰقَ" यहां "आबा" में चचा भी दाख़िल हैं। ह़जरते इस्माईल जनाबे या'कूब के चचा थे। "مَاوَجَدْنَا عَلَیْهِ اٰبَآءَنَا" में "आबा" से मुराद उस्ताज़ भी हैं। सरकार "صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم" ने फ़रमाया "رُدُّوْا عَلَیَّ اَبِیْ" (यानी) मेरे बाप अब्बास को मेरे पास लाओ"। यहां "अब" से मुराद चचा है। बहर हाल "अब" बहुत आ़म है मगर "वालिद" अकसर सगे बाप को कहते हैं, ".وَبِـالْـوَالِـدَیْـنِ اِحْـسَـانًـا" यूंही लफ़्ज़ आ़म है सगी मां। सोतेली मां, दूध की मां, दादी, नानी, चची, सास सब को "उम्म" कह देते हैं। देखो ! "اُمَّهَاتُكُمُ اللَّاتِیْ اَرْضَعْنَكُمْ" में दाई दूध पिलाने वाली को "उम्म" फ़रमाया। "حُرِّمَتْ عَلَیْكُمْ اُمَّهَاتُكُمْ" में सगी मां, सोतेली मां, दादी नानी को "उम्म" फ़रमाया। मगर वालिदा को उमूमन सगी मां कहते हैं। "وَالْوَالِدٰتُ یُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَیْنِ كَامِلَیْنِ" या जैसे "وَبَرًّام بِوَالِدَیْهِ" जब येह समझ लिया तो समझो कि क़ुरआने करीम ने हर जगह आज़र को हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام का "अब" फ़रमाया है, कहीं वालिद नहीं फ़रमाया। मा'लूम हुवा कि वोह आप का सगा बाप न था।" (तफ़्सीरे नईमी, जि.7, स.495)

नूरे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुन्तक़िली पर जश्न का समां :

जब अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने नूरे मुहम्मदी صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को रफ़ीउ़श्शान सुलबों से बुलन्द रुत्बा सय्यिदा आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْھَا के बत़्ने अत़्हर की त़रफ़ मुन्तक़िल फ़रमाया तो इस मुन्तक़िली के साथ ही बड़ी बड़ी निशानियां ज़ाहिर होने लगीं। सारी मख़्लूक़ एक दूसरे को बिशारतें देने लगी, ज़मीनो आस्मान में ए'लान कर दिया गया : "ऐ अ़र्श ! वक़ार व सन्जीदगी का निक़ाब ओढ़ ले। ऐ कुरसी ! फ़ख़्र की ज़िर्ह पहन ले। ऐ सिद्रतुल मुन्तहा ! ख़ुशी से झूम जा। ऐ हैबत और रो'ब व दबदबे के अन्वार ! तुम भी ख़ूब रोशन हो जाओ। ऐ जन्नत ! ख़ूब आरास्ता पेरास्ता हो जा। ऐ मह़ल्लात की हूरो ! तुम भी बुलन्दी से देखो। ऐ रिज़्वान (बाग़बाने जन्नत) ! जन्नत के दरवाज़े खोल दे और हूरो ग़िलमां को सामाने ज़ीनत से आरास्ता पेरास्ता कर के काइनात को ख़ुश्बूओं से मुअ़त्तर कर दे। ऐ मालिक (दारोग़ए जहन्नम) ! जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दे। क्यूंकि आज की रात मेरी क़ुदरत के ख़ज़ानों में छुपा हुवा नूर और राज़ अ़ब्दुल्लाह से जुदा हो कर आमिना के बत़्न में मुन्तक़िल होने वाला है और जिस घड़ी येह नूर मुन्तक़िल होगा उसी लम्ह़े में अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को मुकम्मल सूरत दे दूंगा और येह लोगों के सामने इन्साने कामिल ज़ाहिर होगा।"

हर चोपाया बोलने लगा :

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने यकुम रजबुल मुरज्जब शबे जुमुआ़ नूरे मुह़म्मदी صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुन्तक़िली का ए'लान फ़रमाया। जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम वाक़िदी رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ के नज़दीक येह जुमादिल आख़िर की पन्दरहवीं रात थी। नूरे मुह़म्मदी صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुन्तक़िली की रात हर घर और मकान में नूर दाख़िल हो गया और हर चोपाया मह़्वे कलाम हो गया। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْھُما फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْھَا के रसूले पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से ह़ामिला होने की दलील येह है कि उस रात क़ुरैश के हर चोपाए ने (ब ज़बाने फ़सीह़) कलाम करते हुए कहा : "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी वालिदए माजिदा के शिकमे अत़्हर में जलवा फ़रमा हो चुके हैं, रब्बे का'बा की क़सम ! आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم दुन्या के लिये अमान और अहले दुन्या के चराग़ हैं।" (رسائلِ میلادِ مصطفٰی ﷺ، رسالۃ مولدِ النّبی ﷺ لابن حجر مکّی علیہ رحمۃ اللّٰہ القوی، ص ١٩)

ह़ज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْھَا इरशाद फ़रमाती हैं : "जब ह़म्ल को छे माह हुए तो आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के वालिदे मोह़तरम मेरे सरताज ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ इस जहाने फ़ानी से कूच फ़रमा गए। और किसी ने ख़्वाब में आ कर मुझे पाउं की जुम्बिश से उठाया और इरशाद फ़रमाया : "ऐ आमिना ! तुझे बिशारत हो कि तेरे शिकमे अत़्हर में परवरिश पाने वाली ज़ात तमाम जहानों से बेहतर है, जब इन की विलादत हो जाए तो इन का नाम मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) रखना और अपने इस मुआ़मले पर किसी को आगाह न करना।"

(البدایۃ والنھایۃ لابن کثیر، کتاب الشمائل، باب ماعطی رسول اللّٰہ ﷺ ......الخ، ج ٤، ص ٧٢٠)

विलादते मुबारक और अजाइबाते विलादत :

हज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا इरशाद फ़रमाती हैं : "जब तक आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे शिकम में तशरीफ़ फ़रमा रहे मैं ने कभी दर्द व अलम, बोझ या पेट में मरोड़ महसूस न किया। हम्ल ठहरने के कामिल नव (9) माह बा'द आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआदत हो गई। जब वक़्ते विलादत क़रीब आया तो आम औरतों की तरह मुझ पर भी घबराहट तारी हो गई। मेरे ख़ानदान वाले मेरी इस कैफ़िय्यत से वाक़िफ़ न थे, मैं घर में तन्हा थी। हज़रते सय्यिदुना अब्दुल मुत्तलिब तवाफ़े ख़ानए का'बा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में मश्ग़ूल थे। लिहाज़ा मैं ने दस्ते तलब उस ज़ात के सामने दराज़ कर दिया जिस पर कोई पोशीदा चीज़ भी मख़्फ़ी नहीं। अचानक मैं ने देखा कि मेरी ग़म गुसार बहन फ़िरऔन की बीवी हज़रते सय्यिदतुना आसिया رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھَا तशरीफ़ ले आईं। फिर मैं ने एक नूर देखा जिस से सारा मकान रोशन हो गया। येह हज़रते सय्यिदतुना मरयम बिन्ते इमरान رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا थीं। फिर मैं ने चौदहवीं के चांद जैसे चमकते दमकते चेहरे देखे, येह हूरों का क़ाफ़िला था। जब दर्दे ज़ेह की तक्लीफ़ ज़ियादा हुई तो मैं ने उन ख़वातीन से टेक लगा ली। फिर आलिमुल ग़ैब वश्शहादह عَزَّوَجَلَّ ने मुझ पर विलादत आसान फ़रमा दी और मेरे बत्न से हबीबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले आए और आलम येह था कि आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने हाथों पर झुके हुए टिकटिकी बांधे आस्मान की तरफ़ देख रहे थे। हज़रते सय्यिदतुना आसिया رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर शफ़्क़त करने लगीं, हज़रते सय्यिदतुना मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا भी जल्दी जल्दी हाज़िर हो गईं। हूरों ने आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दमैने शरीफ़ैन के बोसे लिये।

हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلام भी काशानए अक़्दस में हाज़िर हो गए। हज़रते सय्यिदुना मीकाईल عَلَیْہِ السَّلام ने आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने परों से ढांप लिया, हज़रते सय्यिदुना इसराफ़ील عَلَیْہِ السَّلام भी ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो गए। फिर फ़िरिश्ते आक़ाए नामदार मदीने के ताजदार, हबीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को निगाहों से ओझल ले गए और आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को सारी काइनात की सैर कराने लगे, तमाम जन्नती नहरों को आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ुस्ल फ़रमाने से फ़ैज़ याब किया और आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इस्मे गिरामी जन्नती दरख़्तों के पत्तों पर रक़म कर दिया। फिर लम्हा भर में आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को वापस भी ले आए। और आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को सारी काइनात पर फ़ज़ीलत दी गई। हज़रते सय्यिदतुना आसिया رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا ने आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को सुरमा लगाना चाहा तो देखा कि आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की चश्माने करम में अच्छी तरह सुरमा लगा हुवा था। हज़रते सय्यिदतुना मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا ने आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की नाफ़ मुबारक काटना चाही तो देखा कि वोह पहले से कटी हुई थी और उस से इज़ाफ़ी हिस्सा ज़ाइल हो चुका था। फिर हूरेऐन (या'नी बड़ी बड़ी आंखों वाली हूर) ने हबीबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को मुख़्तलिफ़ ख़ुश्बूएं लगाईं। इस के बा'द तीन फ़िरिश्ते आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अक़्दस की जानिब जल्दी

जल्दी बढ़े । एक के पास सुर्ख़ सोने का थाल, दूसरे के पास मोतियों से बना हुवा जग और तीसरे के पास सब्ज़ रेशमी रूमाल था । उन्हों ने ह़बीबे ख़ुदा صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के नूरानी चेहरे को जग के पानी से धोया । फिर चोगे़ से ख़त्मे नबुव्वत व तस्दीक़ की मोहर निकाली जो इन्तिहाई रोशन व चमक दार थी और इस मेहरबान नबी صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की पुश्ते मुबारक पर लगा दी । पस यूं आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर सआ़दत व तौफ़ीक़ की तक्मील हुई । आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की वालिदए माजिदा ह़ज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهَا को हुक्म हुवा : "मुक़र्रब फ़िरिश्तों से पहले दुन्या में से किसी को मह़बूबे करीम صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत के लिये न बुलाएं ।"

आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत पर अ़र्श ख़ुशी से झूम उठा और कुरसी भी ख़ुशी से इतराने लगी और जिन्नों को आस्मान पर जाने से रोक दिया गया तो एक दूसरे से कहने लगे : "बेशक हमें अपने रास्ते में बड़ी मशक़्क़त का सामना हुवा है ।" और फ़िरिश्ते इन्तिहाई ख़ुशी व रो'ब से तस्बीह़ ख़्वानी करने लगे, हवाएं झूम झूम कर चलने लगीं और इन्हों ने बादलों को ज़ाहिर कर दिया, बाग़ात में टहनियां झुकने लगीं और काइनात के गोशे गोशे से اَهْلًا وَّسَهْلًا مَّرْحَبًا की सदाएं आने लगीं ।"

पाक है वोह ज़ात जिस ने अपने मह़बूब صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़ीरोज़ बख़्तियों के सितारे काइनात में ज़ाहिर फ़रमाए तो काइनात रोशन हो गई और आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की जूदो अ़ता की बिजलियों को चमकाया तो वोह चमकने दमकने लगीं । और रिसालते मुस्तफ़वी صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के चांद नुमा दलाइल के अन्वार को फैलाया तो वोह ख़ूब जगमगाने लगे । और कुफ़्फ़ार की उम्मीदों को ख़त्म कर दिया पस वोह ख़ाक में मिल गईं । और आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ग़लबा अ़ता फ़रमा कर कुफ़्फ़ार बादशाहों को ज़िल्लत व रुस्वाई से दो चार किया पस आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के रो'ब व दबदबे से इन के सरपरस्त हो गए और इन्हें गर्दनें झुकानी पड़ीं । आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी से इन्सानिय्यत मानूस हो गई और इस ने रिफ़्अ़त व बुलन्दी पा ली । जिन्न चोरी छुपे सुनने से रोक दिये गए । आस्मानी फ़िरिश्ते रुकूअ़ व सुजूद करने लगे । ह़ज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهَا ह़सीनो जमील ह़बीबे ख़ुदा صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को जनम दे कर कामयाबी व कामरानी के मक़ाम पर फ़ाइज़ हो गई और ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़लीमा सा'दिय्या رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهَا जैसी दानिश मन्द ख़ातून आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को दूध पिलाने से मुशर्रफ़ हुई और काइनात भर में मद्दाह़ीन (या'नी ता'रीफ़ करने वालों) की ज़बानें शुक्र अदा करते हुए आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'रीफ़ व तौसीफ़ में मगन हो गईं ।

وَصَلَّى اللّٰه عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ وَ سَلَّم

बयान 44 : अल्लाह वालों की बातें

हम्दे बारी तआला :

तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस के फ़ज़्लो करम का हर देहाती व शहरी ने ए'तिराफ़ किया। हर सुब्हो शाम आने वाला उस के दरियाए करम से सैराब हुवा। उसी के फ़ज़्लो करम से सुब्ह़ के बादल बरसे। चमकते दिन और रहनुमाई करने वाली रात ने उस की ह़म्द के साथ तस्बीह़ की। उस की ह़िक्मत से काइनात ने अहले अ़क़्ल व दानिश के लिये गुफ़्तगू की। चुनान्चे, आस्मान कहते हैं : "पाक है वोह ज़ात जिस ने अपनी क़ुदरत से हमें बुलन्द किया और अपनी क़ुदरत से रोके रखा, वोही हमारा सहारा है।" ज़मीन कहती है : "पाक है वोह ज़ात जिस ने हर शै को इल्म के ए'तिबार से वुस्अ़त दी और फ़र्शे ज़मीन को पानी पर बिछाया और इसे चलने के लिये नर्म किया पहाड़ कहता है : "पाक है वोह ज़ात जिस ने मेरे पहलूओं को क़ुव्वत दी और मेरी बुन्यादें और जड़ें मज़बूत कीं। दरया कहता है : "पाक है वोह ज़ात जिस ने मुझे अपनी मरज़ी से चलाया, मुझ से नहरें जारी कीं और मुझे सैराब करने की क़ुव्वत अ़ता की जो मेरा क़स्द कर के मेरे पास आए।" आ़रिफ़ कहता है : "पाक है वोह ज़ात जिस ने अपनी त़रफ़ मेरी रहनुमाई फ़रमाई और अपनी ज़ात को मेरी पनाह गाह बनाया। आ़लीम कहता है : "पाक है वोह ज़ात जिस ने मेरे फ़ह्म के दरवाज़े खोले और दीन के अह़काम सीखने और मेह़नत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई । आ़बिद कहता है : "पाक है वोह ज़ात जिस ने मुझे अपना मक़्सूद पाने के लिये रातों को बेदार रखा और मुझे ज़िक्र व अज़्कार और वज़ाइफ़ के लिये क़ियाम की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई।" गुनहगार कहता है : "पाक है वोह ज़ात जिस ने मेरे गुनाहों पर बा ख़बर होने के बावुजूद मेरी पर्दा पोशी फ़रमाई और मुझे "रह़मत" से ढांपे रखा। जब मैं ने तौबा की तो "रह़मत" से मुतवज्जेह हुवा और मुझे हिदायत दी और मेरे बुरे ह़ाल के बा'द मुझे नेक बनने की सआ़दत अ़ता फ़रमाई।

पाक है वोह जो मा'बूद है, वोह हर रात आस्माने दुन्या पर (अपनी शान के मुत़ाबिक़) नुज़ूल फ़रमाता है और निदा देता है : "है कोई तौबा करने वाला ? कि मैं उस की तौबा क़बूल करूं और उस की त़रफ़ नज़रे रह़मत फ़रमाऊं। है कोई इस्तिग़्फ़ार करने वाला ? कि मैं उस की मग़्फ़िरत करूं और उसे हिदायत का रास्ता दिखाऊं। है कोई दुआ़ करने वाला ? कि मैं उस की दुआ़ क़बूल करूं और उस के लिये अपने फ़ज़्ल का वा'दा पूरा फ़रमाऊं। है कोई मांगने वाला ? कि मैं उसे मुंह मांगा अ़ता करूं और उस पर अपने इन्आ़म व इकराम की बारिश बरसाऊं।"

ऐ ग़ाफ़िल इन्सान ! कब तक इस ग़फ़्लत और सरकशी में रहेगा ? नदामत और मा'ज़िरत के क़दमों पर खड़ा हो जा और अपने प्यासे दिल का इलाज मुसलसल ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ से कर और सह़री के वक़्त आ़जिज़ी व इन्किसारी के साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर खड़ा हो जा।

ह़ज़रते सय्यिदुना षौबान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, "हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "मेरा हौज़ अ़दन से अ़माने बलक़ा तक फैला हुवा है, उस का पानी दूध से ज़ियादा सफ़ेद और शहद से ज़ियादा मीठा है और उस के प्याले आस्मानी सितारों की ता'दाद की बराबर हैं। जिस ने इस से एक बार पी लिया उस के बा'द वोह कभी प्यासा न होगा। उस पर लोगों में सब से पहले फ़ुक़रा व मुहाजिरीन ह़ाज़िर होंगे।" अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم वोह कौन लोग हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "उन के बाल ग़ुबार आलूद और कपड़े मैले होते हैं, वोह ऐ़श पसन्द औ़रतों से निकाह़ नहीं करते और उन के लिये दरवाज़े नहीं खोले जाते।" (المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ثوبان، الحدیث ۲۲۴۳۰، ج۸، ص ۳۲۱)

येही लोग औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلام और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ास बन्दे हैं।

हम ने तेरी ख़ातिर शराबी का दिल धो दिया :

ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَنِی एक शख़्स के पास से गुज़रे जो नशे की ह़ालत में ज़मीन पर पड़ा हुवा था। उस के मुंह से शराब बह रही थी। इस ह़ालत में भी उस के मुंह से अल्लाह, अल्लाह की सदाएं बुलन्द हो रही थीं। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी निगाह ऊपर उठाई और अ़र्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ येह बन्दा ऐसी ह़ालत में तेरा ज़िक्र कर रहा है जो तेरे शायाने शान नहीं।" फिर आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने पानी मंगवाया, उस का मुंह धोया और उस को छोड़ कर चले गए। जब उस को होश आया तो लोगों ने उसे बताया कि ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَنِی तशरीफ़ लाए थे। तुझे इस ह़ालत में देखा तो तेरा मुंह धो कर चले गए। वो सख़्त पशेमान व शर्मसार हुवा और अपने नफ़्स को मलामत करते हुए कहने लगा : "ऐ नफ़्स ! तेरी बरबादी है, अगर तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلام से भी ह़या नहीं करेगा तो किस से करेगा ?" फिर उस ने नादिम हो कर अपने गुनाहों से तौबा कर ली। रात को जब ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَنِی मह़्वे आराम हुए तो ख़्वाब में किसी की आवाज़ सुनी : "ऐ सरी ! तू ने हमारी रिज़ा के लिये उस शराबी का मुंह धोया तो हम ने तेरे लिये उस का दिल धो दिया है।" जब ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَنِی सुब्ह़ बेदार हुए तो उस आदमी के मुतअ़ल्लिक़ मा'लूम किया। आख़िरे कार उसे एक मस्जिद में नमाज़ पढ़ते हुए पाया। जब वोह नमाज़ से फ़ारिग़ हुवा तो आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ मेरे भाई ! कैसे हो ?" उस ने अ़र्ज़ की, या सय्यिदी ! आप मेरा ह़ाल क्यूं पूछते हैं ? ह़ालांकि उस करीम ज़ात جَلَّ جَلَالُہٗ ने आप को आगाह फ़रमा दिया है कि उस ने आप की वजह से मेरा दिल धोया और मेरी ह़ालत सुधारी।" आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने पूछा : "तुम्हें किस ने बताया ?" जवाब दिया : "जिस ने अपने ग़ैर से मेरा दिल पाक किया और मुझ पर अ़फ़्वो करम और रिज़ामन्दी की बारिश बरसाई।"

एक आ़शिक़े इलाही :

हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى फ़रमाते हैं : "मैं ने एक कमज़ोर, ज़र्द रंग और दुब्ली टांगों वाला नौजवान देखा जो ज़ादे राह और पानी के बिग़ैर सफ़र कर रहा था, न ही उस ने जूते पहन रखे थे। मैं ने उसे सलाम किया और पूछा : "क्या बात है ? मैं तुम्हें इस ह़ाल में देख रहा हूं !" तो वोह रोने लग गया। फिर उस ने चन्द अश्आ़र पढ़े, जिन का मफ़्हूम कुछ इस त़रह़ है :

"मेरे दिल में जो मौजूद था इस से मेरा बदन पिघल गया और मेरे बदन में जो कुछ था उस से मेरा दिल पिघल गया। अब चाहो तो मेरी रस्सी काट दो और चाहो तो जोड़ दो। मेरी नज़र में तुम्हारी त़रफ़ से हर अ़मल अच्छा है। लोगों का मुझे "दीवाना" कहना सह़ीह़ तो है मगर वोह नहीं जानते कि मैं किस की मह़ब्बत में दीवाना हूं।"

हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى फ़रमाते हैं : "फिर मैं न जान सका कि वोह नौजवान कहां गया।"

ऐ भाई ! देख ! इन हस्तियों का मुआ़मला बेहतरीन है, इन की मन्ज़िल कितनी उ़म्दा है ! इन का अन्जाम कितना अच्छा है ! इन का मैल कुचेल भी कितना साफ़ शफ़्फ़ाफ़ है ! बेशक लोगों की ज़िन्दगी उस वक़्त तक बे ग़ुबार नहीं होती जब तक इन्हें इब्तिला व आज़्माइश के कुंवें में डाल न दिया जाए। उन के दिल ग़ुर्बत व इफ़्लास में मुत़्मइन दिखाई देते हैं और येह लम्बी उम्मीदें नहीं रखते। और इन्हें (बरोज़े क़ियामत) तमाम मख़्लूक़ के सामने शौक़ (या'नी दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ) के बाज़ार में पुकारा जाएगा, "क्या तुम आज़्माइश में सब्र करते रहे ?" तो येह जवाब देंगे : "जी हां !" फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन्हें तौफ़ीक़ की पाकीज़ा शराब के जाम पिलाएगा जिन पर तस्दीक़ की मोहर लगी होगी। येह वोह लोग है जो अपने नफ़्स की मज़म्मत करते हैं और तह़क़ीक़ के चटियल मैदानों में ग़ाइब रहते हैं। राहे ह़क़ عَزَّوَجَلَّ में फ़क़्रो फ़ाक़ा से लज़्ज़त ह़ासिल करते हैं और बयाबानों में ख़ल्वतों से उन्स ह़ासिल करते हैं। मह़बूबे अक्बर के ज़िक्रे ख़ैर पर टूट कर गिर जाते हैं और जब परागन्दा ह़ाल फ़ुक़रा के लिये आख़िरत में अ़ज़ीम इन्आ़मात का मुज़्दए जां फ़िज़ा सुनते हैं तो इन पर वज्द त़ारी हो जाता है।

हज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को जब भूक लगती तो बस्ती की त़रफ़ निकल जाते। एक दिन आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ तशरीफ़ लाए तो एक कुत्ता भोंकने लगा। आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : "ऐ कुत्ते ! उसे तक्लीफ़ न दे जो तुझे तक्लीफ़ नहीं देता। तू वोही खाता है जो तुझे मिले और मैं भी वोही खाता हूं जो मुझे मिले। अगर मैं जन्नत में दाख़िल हो गया तो मैं तुझ से बेहतर हूं और अगर दोज़ख़ में दाखिल हुवा तो तू मुझ से बेहतर है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना बहलूल दाना رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का दानिशमन्दाना जवाब :

हज़रते सय्यिदुना सरी सक़त़ी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "एक बार मुझे क़ब्रिस्तान जाना हुवा। वहां मैं ने हज़रते सय्यिदुना बहलूल दाना رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को देखा कि एक क़ब्र के क़रीब बैठे

मिट्टी में लौट पौट हो रहे हैं। मैं ने पूछा : “आप यहां क्यूं बैठे हैं ?” जवाब दिया : “मैं ऐसी क़ौम के पास हूं जो मुझे अज़िय्यत नहीं देती और अगर मैं ग़ाइब हो जाऊं तो मेरी ग़ीबत नहीं करती।” मैं ने अ़र्ज़ की : “रोटी महंगी हो गई है !” तो फ़रमाने लगे : “अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे कोई परवाह नहीं, अगर्चे एक दाना दीनार का मिले। हम पर उस की इ़बादत फ़र्ज़ है जैसा कि उस ने हमें हुक्म दिया है और हमारा रिज़्क़ उस के ज़िम्मए करम पर है जैसा कि उस ने हम से वा'दा कर रखा है।”

ऐसी जन्नत क़ैद ख़ाना है जिस में क़ुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ न हो :

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ अ़दविय्या बसरिय्या رَحْمَةُاللهِ تعالٰى عَلَيْهَا एक आदमी के पास से गुज़रीं जो जन्नत और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उस में तय्यार की गई ने'मतों को याद कर रहा था। आप رَحْمَةُاللهِ تعالٰى عَلَيْهَا ने उसे फ़रमाया : “ऐ शख़्स ! कब तक ख़ुदाए वाह़िद عَزَّوَجَلَّ को छोड़ कर उस के ग़ैर में मश्ग़ूल रहेगा ? अरे ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़्म फ़रमाए ! तुझे चाहिये कि पहले क़ुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ को देख फिर जन्नत को देख।” उस ने कहा : “ऐ पागल औ़रत ! यहां से चली जा।” आप رَحْمَةُاللهِ تعالٰى عَلَيْهَا ने फ़रमाया : “मैं पागल नहीं। पागल तो वोह है जो मेरी बात न समझ सका। ऐ जन्नत के मोह़ताज ! ऐसी जन्नत तो एक क़ैद ख़ाना है जिस में क़ुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ ह़ासिल न हो और ऐसी दोज़ख़ भी उस के लिये तो एक बाग़ है जिस का मूनिस व ग़म गुसार अल्लाह तआ़ला हो। क्या तुम देखते नहीं कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जन्नत में थे तो खाते पीते और मसरूर थे। जब दरख़्त का फल खाने से मन्अ़ किया गया तो वोही जन्नत आप عَلَيْهِ السَّلَام के लिये क़ैद बन गई। और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने जब अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का राज़ मह़फ़ूज़ रखा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अपना मुक़र्रब व पसन्दीदा बना लिया और जब आप عَلَيْهِ السَّلَام को आग में दाख़िल किया गया तो वोह आप عَلَيْهِ السَّلَام पर सलामती और ठन्डक बन गई।”

सय्यिदुना ह़बीब नज्जार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار की ईमान अफ़्रोज़ ह़िकायत :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब नज्जार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار मुत्तक़ी परहेज़गार, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام में से थे। आप رَحْمَةُاللهِ تعالٰى عَلَيْه रात भर इ़बादत करते और दिन भर रोज़ा रखते और इफ़्तार के लिये जो खाना ह़ाज़िर किया जाता वोह दूसरों को दे देते और ख़ुद सारी रात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में भूके ही क़ियाम में गुज़ार देते। जब सुब्ह़ क़रीब होने को आती तो आ़जिज़ी व इन्किसारी भरे अल्फ़ाज़ में अ़र्ज़ करते : ‘मैं ग़फ़्लत के समन्दरों में डूबा रहा और गुनाह के मैदानों में चलता रहा। अपनी रुस्वाई के दामन को खींचता रहा। बद बख़्ती के जंगलों में ह़ैरान व सरगर्दां भटकता रहा। या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरे सिवा मेरा कोई सहारा नहीं, मैं तेरे दर के इ़लावा कोई दर नहीं पाता कि जहां इल्तिजा करूं। या इलाही عَزَّوَجَلَّ येह तेरा ज़लील, गुनहगार और बीमार बन्दा तेरे बाबे

करम पर हाज़िर है और तुझ से पनाह का त़लबगार है। हाए मेरी हलाकत व बरबादी ! अगर तू ने मुझ पर रह़्म न फ़रमाया और हाए मेरी त़वील ह़सरत ! अगर तू ने मुझे मुआ़फ़ न फ़रमाया।" फिर आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه सजदा करते और तुलूए़ फ़ज्र तक सर न उठाते। जब नमाज़ पढ़ लेते तो तिलावत शुरूअ़ कर देते और बाक़ी दिन में पूरा क़ुरआन पढ़ लेते। जब आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه ने इन्तिक़ाल फ़रमाया तो सूरए यासीन की येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमा रहे थे :

﴿۱﴾ اِنِّیۡۤ اِذًا لَّفِیۡ ضَلٰلٍ مُّبِیۡنٍ ۝ (پ۲۳،یٰسٓ:۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक जब तो मैं खुली गुमराही में हूं।*(1)

तदफ़ीन के बा'द जब फ़िरिश्तों ने आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه से ईमान के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया तो आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه ने इस से अगली आयते मुबारका तिलावत की :

﴿۲﴾ اِنِّیۡۤ اٰمَنۡتُ بِرَبِّکُمۡ فَاسۡمَعُوۡنِ ۝ قِیۡلَ ادۡخُلِ الۡجَنَّۃَ ؕ قَالَ یٰلَیۡتَ قَوۡمِیۡ یَعۡلَمُوۡنَ ۝ بِمَا غَفَرَ لِیۡ رَبِّیۡ وَ جَعَلَنِیۡ مِنَ الۡمُکۡرَمِیۡنَ ۝ (پ۲۳،یٰسٓ:۲۵ تا ۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *मुक़र्रर, मैं तुम्हारे रब्ब पर ईमान लाया तो मेरी सुनो। इस से फ़रमाया गया कि जन्नत में दाख़िल हो। कहा : किसी त़रह़ मेरी क़ौम जानती जैसी मेरे रब्ब ने मेरी मग़फ़िरत की और मुझे इ़ज़्ज़त वालों में किया।*(2)

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ येह कैसे अ़ज़ीम लोग हैं जो अपने मह़बूबे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ के ह़ुज़ूर मुनाजात करते रहते हैं जब कि लोग सो रहे होते हैं, येह इ़श्क़ व मह़ब्बत का भारी बोझ उठाते हैं। जब रात की तारीकी छा जाए तो ख़ुश होते हैं। येही लोग कल जन्नतुल ख़ुल्द में ने'मतें लूटेंगे और अपने मह़बूबे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ के वजहे करीम का जल्वा देखेंगे।

इन की शान क़ुरआने पाक यूं बयान फ़रमाता है :

1.....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "जब ह़बीब नज्जार ने अपनी क़ौम से ऐसा नसीह़त आमेज़ कलाम किया तो वोह लोग इन पर यक्बारगी टूट पड़े और इन पर पथराव शुरूअ़ किया और पाउं से कुचला यहां तक कि क़त्ल कर डाला। क़ब्र इन की अन्त़ाकिय्या में है। जब क़ौम ने इन पर ह़म्ला शुरूअ़ किया तो इन्हों ने ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के फ़िरस्तादों से बहुत जल्दी कर के येह कहा।"

2....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "जब वोह जन्नत में दाख़िल हुए और वहां की ने'मतें देखीं। ह़बीब नज्जार ने येह तमन्ना की, कि उन की क़ौम को मा'लूम हो जाए कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़बीब की मग़फ़िरत की और इकराम फ़रमाया ताकि क़ौम को मुरसलीन के दीन की त़रफ़ रग़बत हो। जब ह़बीब क़त्ल कर दिये गए तो **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त का उस क़ौम पर ग़ज़ब हुवा और उन की अ़क़ूबत व सज़ा में ताख़ीर न फ़रमाई गई। ह़ज़रते जिब्राईल को हुक्म हुवा और उन की एक ही हौलनाक आवाज़ से सब के सब मर गए।"

﴿٣﴾ اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ٥ (پ ١١، يونس: ٦٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : सुन लो बेशक अल्लाह के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म ।[1]

क़ुरआन सुन कर रूह निकल गई :

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह عَلَيْهِ رَحْمَةُ الله फ़रमाते हैं : "एक दफ़्आ़ मैं इराक़ के जंगलों में कई दिन तक हैरान व सरगर्दां घूमता फिरता रहा । मैं ने कोई इन्सान न पाया जिस को अपना दोस्त बना सकूं। इसी दौरान चलते चलते मेरी नज़र किसी अ़रबी के बालों वाले ख़ैमे पर पड़ी तो मैं उस की त़रफ़ बढ़ा । जब मैं दरवाज़े के पास पहुंचा तो उस पर पर्दा लटक रहा था । मैं ने सलाम किया । अन्दर से निक़ाब पोश बुढ़ी ख़ातून ने पूछा : "कहां से आए हो ? मैं ने कहा : "मक्का से ।" पूछा : "कहां का इरादा है ?" मैं ने कहा : "शाम का ।" येह सुन कर वोह कहने लगी : "मैं देखती हूं कि तुम्हारा इस त़रह़ घूमना बेकार लोगों के घूमने की त़रह़ है । एक गोशे में ठहर कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत क्यूं नहीं करते यहां तक कि तुम्हें मौत आ जाए । फिर तुम उस खाने के टुकड़े को देखो जो तुम ने खाया है, अगर येह ह़लाल है तो तेरे बात़िन को रोशन कर देगा ।" फिर उस ने पूछा : "क्या तुम क़ुरआने पाक पढ़ते हो ?" मैं ने जवाब दिया : "जी हां ।" तो उस ने मुझे सूरए फ़ुरक़ान की आख़िरी आयात पढ़ने की फ़रमाइश की । जब मैं ने तिलावत की तो एक ज़ोरदार चीख़ निकली और वोह बेहोश हो गई । जब इफ़ाक़ा हुवा तो मुझे कहने लगी, "जब तुम ने इन आयाते बय्यिनात की तिलावत की तो इन की क़िराअत की वजह से मेरे रौंगटे खड़े हो गए ।" फिर उस ने दोबारा पढ़ने

1....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "वली की अस्ल विला से है जो क़ुर्ब व नुसरत के मा'ना में है । वलिय्युल्लाह वोह है जो फ़राइज़ से क़ुर्बे इलाही ह़ासिल करे और इत़ाअ़ते इलाही में मश्ग़ूल रहे और उस का दिल नूरे जलाले इलाही की मा'रिफ़त में मुस्तग़रक़ हो । जब देखे दलाइले क़ुदरते इलाही को देखे और जब सुने अल्लाह की आयतें ही सुने और जब बोले तो अपने रब्ब की षना ही के साथ बोले और जब ह़रकत करे त़ाअ़ते इलाही में ह़रकत करे और जब कोशिश करे उसी अम्र में कोशिश करे जो ज़रीअ़ए क़ुर्बे इलाही हो, अल्लाह के ज़िक्र से न थके और चश्मे दिल से ख़ुदा के सिवा ग़ैर को न देखे । येह सिफ़त औलिया की है । बन्दा जब इस ह़ाल पर पहुंचता है तो अल्लाह उस का वली व नासिर और मुईन व मददगार होता है । मुतकल्लिमीन कहते हैं वली वोह है जो ए'तिक़ादे सह़ीह़ मब्नी बर दलील रखता हो और आ'माले सालेह़ा शरीअ़त के मुत़ाबिक़ बजा लाता हो । बा'ज़ आ़रिफ़ीन ने फ़रमाया कि "विलायत नाम है क़ुर्बे इलाही और हमेशा अल्लाह के साथ मश्ग़ूल रहने का । जब बन्दा इस मक़ाम पर पहुंचता है तो इस को किसी चीज़ का ख़ौफ़ नहीं रहता और न किसी शै के फ़ौत होने का ग़म होता है । ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि "वली वोह है जिस को देखने से अल्लाह याद आए । येही त़बरी की ह़दीष में भी है इब्ने ज़ैद ने कहा कि "वली वोही है जिस में वोह सिफ़त हो जो इस आयत में मज़्कूर है । "اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ या'नी ईमान व तक़्वा दोनों का जामेअ़ हो । बा'ज़ उ़-लमा ने फ़रमाया कि "वली वोह हैं जो ख़ालिस अल्लाह के लिये मह़ब्बत करें । औलिया की येह सिफ़त अह़ादीषे कषीरा में वारिद हुई है । बा'ज़ अकाबिर ने फ़रमाया : वली वोह हैं जो त़ाअ़त से क़ुर्बे इलाही की त़लब करते हैं और अल्लाह तआ़ला करामत से उन की कारसाज़ी फ़रमाता है या वोह जिन की हिदायत का बुरहान के साथ अल्लाह कफ़ील हो और वोह उस का ह़क़्क़े बन्दगी अदा करने और उस की ख़ल्क़ पर रह़म करने के लिये वक़्फ़ हो गए । येह मआ़नी और इबारात अगर्चे जुदागाना हैं लेकिन इन में इख़्तिलाफ़ कुछ भी नहीं है क्यूंकि हर एक इबारत में वली की एक एक सिफ़त बयान कर दी गई है जिसे क़ुर्बे इलाही ह़ासिल होता है येह तमाम सिफ़ात उस में होती हैं । विलायत के दर्जे और मरातिब में हर एक ब क़दर अपने दर्जे के फ़ज़्लो शरफ़ रखता है ।"

का कहा तो उस की वोही ह़ालत हो गई जैसे पहले हुई थी। काफ़ी देर उस पर येही ह़ालत त़ारी रही। मैं ने दिल में कहा कि देखो तो सही येह फ़ौत हो गई है या ज़िन्दा है? लेकिन फिर मैं वापस पलट गया और अभी निस्फ़ मील ही चला था कि मुझे वादी में कुछ अ़रब नज़र आए। दो लड़के मेरी त़रफ़ दौड़ते हुए आए, उन के साथ एक लड़की भी थी। उन में से एक ने मुझ से पूछा : "क्या आप फ़ुलां जंगल में बालों वाले ख़ैमे से हो कर आए हो?" मैं ने कहा, "हां।" कहने लगा, "क्या आप ने बुढ़ी औ़रत के पास क़ुरआने करीम पढ़ा था?" मैं ने जवाब दिया, "हां।" तो वोह बोला : "रब्बे का'बा की क़सम! वोह इन्तिक़ाल कर चुकी है।" मैं उन लड़कों के साथ चल दिया और ख़ैमे के पास आया। लड़की अन्दर दाख़िल हुई और बुढ़ी औ़रत के चेहरे से कपड़ा हटा कर देखा तो वोह विसाल फ़रमा चुकी थीं। मैं उस लड़के के अन्दाज़े से बहुत हैरान हुवा और उस लड़की से पूछा : "येह दो लड़के कौन हैं?" तो उस ने बताया : "येह दोनों क़बीला जा'फ़र के मुअज़्ज़िन में से हैं। और येह मरने वाली इन की बहन है। तीस साल से इस ने किसी से कलाम नहीं किया। जब येह इस वादी में थे तो येह अ़लाहिदा हो गई और जंगल में तन्हा अपना ख़ैमा बसा लिया और तीन दिन में सिर्फ़ एक बार खाना खाती थी।"

ऐ मेरे मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! कब तक तुम फ़ानी लज़्ज़ात में खोए रहोगे और बाक़ी रहने वाली नेकियों से ग़ाफ़िल रहोगे? ग़नीमत के अवक़ात में जल्दी करो, लग़्ज़िशों को समझो और शुब्हात से कनारा कशी इख़्तियार करो। क्या बार बार मौत का ए'लान करने वालों ने तुम्हें बेदार न किया? क्या नेक मर्दों और औ़रतों के वाक़िआत ने तुम्हें जनजोड़ा नहीं? जब दिन आता है तो वोह (नेक मर्द और औ़रतें) लज़्ज़ाते दुन्या को तर्क (बाईकाट) करते हुए गुज़ारते हैं और जब रात आती है तो मह़ब्बत भरी आवाज़ों से आहो फ़ुग़ां करते हैं और अपने मह़बूबे ह़क़ीक़ी عَزَّ وَجَلَّ के सिवा किसी की त़रफ़ मुतवज्जेह नहीं होते। येही लोग ह़क़ीक़ी सरदार हैं।

बरगद के दरख़्त से खजूरें उतार लीं :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान क़ुरशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : एक बार मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم के साथ सफ़र पर रवाना हुवा। हम ह़िजाज़ के रास्ते पर तीन दिन तक सफ़र करते रहे और हमें खाने पीने को कुछ न मिला। मैं भूक से बेचैन हो गया। मेरे चेहरे पर भूक के तअष्षुरात देख कर आप رَحْمَةُ اللهِ تعَالٰى عَلَيْه बैठ गए। मैं भी पहलू में बैठ गया। अचानक एक ताज़ा रोटी मेरी गोद में गिरी। आप رَحْمَةُ اللهِ تعَالٰى عَلَيْه ने उसे उठाया और मुझे फ़रमाया : "खाओ।" मैं ने आधी रोटी खाई और ख़ूब सैर हो गया और फिर सफ़र शुरूअ़ कर दिया। दौराने सफ़र हम एक क़ाफ़िले के पास पहुंचे। शेर ने उन का रास्ता रोक रखा था। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم आगे बढ़े और शेर से फ़रमाया : "ऐ शेर! अगर हमारे मुतअ़ल्लिक़ तुझे कोई हुक्म है तो उस को कर गुज़र, वरना यहां से चला जा।" येह सुनते ही शेर पीछे मुड़ कर भाग गया। क़ाफ़िले वाले आप رَحْمَةُ اللهِ تعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुए :

“या सय्यिदी ! हमें कोई दुआ़ इरशाद फ़रमाइये जो हम पढ़ा करें क्यूंकि हम सफ़र में बहुत ख़ौफ़ महसूस करते हैं ।” आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی علیہ ने उन्हें येह दुआ़ इरशाद फ़रमाई : ”اَللّٰھُمَّ احْرُسْنَا بِعَیْنِکَ الَّتِیْ لَا تَنَامُ وَاکْنُفْنَا بِکَنَفِکَ الَّذِیْ لَا یُضَامُ وَارْحَمْنَا بِقُدْرَتِکَ عَلَیْنَا لَا نُھْلِکُ وَاَنْتَ رَجَآؤُنَا“ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी नज़्रे रह़्मत से हमारी ह़िफ़ाज़त फ़रमा जो कभी सोती नहीं और हमें अपने सायए रह़्मत की पनाह में रख कि जिस पर ज़र्रा बराबर ज़ुल्म नहीं किया जा सकता और हम पर अपनी क़ुदरत के शायाने शान रह़्मो करम फ़रमा कि हम हलाक न हों, हमारी उम्मीदों का मर्कज़ व मह़्वर तेरी ही ज़ात है ।”

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान عَلَیْہِ رَحْمَۃُالرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : “कुछ अ़र्से बा'द मेरी अहले क़ाफ़िला में से एक शख़्स से मुलाक़ात हुई तो उस ने मुझे बताया : “अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब से ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَعْظَم ने हमें येह दुआ़ सिखाई है हम इसे पढ़ते हैं तो कोई दरिन्दा, चोर और ख़ौफ़ज़दा करने वाली चीज़ हमारे क़रीब नहीं आती ।”

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान عَلَیْہِ رَحْمَۃُالرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : “फिर वोह शख़्स दरयाई सफ़र में हमारे साथ कश्ती पर सुवार हो गया । अचानक तेज़ हवा चल पड़ी, पानी की मौजें बुलन्द होना शुरूअ़ हो गईं, कश्ती डोलने लगी और हमें डूबने का ख़ौफ़ लाह़िक़ हो गया । लोग रोने धोने और आहो बुका करने लगे । तो उस शख़्स ने कहा : “ऐ लोगो ! हमारे साथ इस कश्ती में एक परहेज़गार शख़्स मौजूद है, और उस में फ़ुलां फ़ुलां ख़ूबियां पाई जाती हैं । आओ ! उस से दुआ़ करवाएं ।” चुनान्चे, हम ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَعْظَم के पास ह़ाज़िर हुए तो देखा कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی علیہ कश्ती के एक कोने में चादर से सर ढांपे लैटे हुए हैं । हम ने आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی علیہ को बेदार किया और अ़र्ज़ की : “ह़ुज़ूर ! देखिये तो सही लोग किस क़दर मुश्किल में हैं !” आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی علیہ ने अपना सर उठाया और अ़र्ज़ की : “या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तूने हमें अपनी क़ुदरत दिखा दी, अब अपनी मेहरबानी भी दिखा दे ।” अभी आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی علیہ की बात पूरी भी न हुई थी कि हवा थम गई, मौजें पुर सुकून हो गईं और कश्ती अपनी मा'मूल की रफ़्तार से चलने लगी ।”

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान عَلَیْہِ رَحْمَۃُالرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : “जब हम कश्ती से उतरे तो चन्द दिन पैदल चलते रहे । मैं भूक की शिद्दत से मरने के क़रीब हो गया तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی علیہ से भूक की शिकायत की । आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی علیہ ने एक थेला लिया और बरगद के दरख़्त पर चढ़ कर थेला भर लिया । फिर जब नीचे आए तो वोह ख़ूब सूरत खजूरें थीं । मैं ने ऐसी लज़ीज़ खजूरें पहले कभी न खाई थीं । रात के सफ़र में मुझे प्यास लगी तो मैं ने फिर अ़र्ज़ की । आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی علیہ ने फ़रमाया : “पियो ।” मैं ने देखा कि एक डोल हवा में लटका हुवा था । उस में ऐसा पानी था कि जिसे पी कर मैं न सिर्फ़ उस वक़्त सैराब हुवा बल्कि उस के बा'द शदीद गर्मियों में रोज़ा रखता तो मुझे कोई भूक प्यास न लगती ।” अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के चुने हुए बन्दे हैं ।

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ क्या शान है उन लोगों की जिन्हों ने अपने दिल में महबूबे हक़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी के लिये कोई जगह न छोड़ी, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से अपने रुख़्सारों पर आंसू बहाए और अपनी सांसों को हसरतों के साथ मिला दिया और बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुए : "ऐ वोह ज़ात ! सिफ़ात जिस का इहात़ा नहीं कर सकतीं ! आफ़ात के ज़ुल्म से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा ।"

अगर तुम उन्हें देखोगे तो पाओगे कि इन्तिहाई महब्बत ने उन्हें तराश दिया है और सोज़िशे इश्क़ ने उन्हें कमज़ोर व निढ़ाल कर दिया है मगर उन्हों ने किसी तक्लीफ़ या नुक़्सान की शिकायत न की । उन का महबूबे हक़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ उन से सरगोशी करता है और सहरी की पुर कैफ़ घड़ियों में उन का ख़ैर मक़दम करता है । वोह रात के घोड़े पर सुवार हो कर (मा'रिफ़त के मैदान में) चल पड़ते हैं और सुब्ह़ को रात के सफ़र की ता'रीफ़ करते हैं ।

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ اَجْمَعِيْن

खाने को शैतान से बचाओ

खाने से पहले बिस्मिल्लाह न पढ़ने से खाने में बे बरकती होती है । हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "हम नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा रह़मत में ह़ाज़िर थे । खाना पेश किया गया, इब्तिदा में इतनी बरकत हम ने किसी खाने में नहीं देखी मगर आख़िर में बड़ी बे बरकती देखी । हम ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ऐसा क्यूं हुवा ? इरशाद फ़रमाया : हम सब ने खाना खाते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ी थी । फिर एक शख़्स बिग़ैर बिस्मिल्लाह पढ़े खाने को बैठ गया, उस के साथ शैतान ने खाना खा लिया । (شرح السنة، الحديث:٢٨١٨، ج٦، ص٦٢)

बयान : 45 महब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ का बयान

हम्दे बारी तआला :

तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो अपना ज़िक्र करने वाले का चर्चा करता है और अपना शुक्र करने वालों का शुक्र क़बूल करता है। उस की रह़मत अव्वल व आख़िर को शामिल है। उस की ने'मत मोमिन व काफ़िर सब की किफ़ालत करती है। उस ने अपनी इबादत के लिये अहले मह़ब्बत की आंखें बेदार फ़रमाईं। पस सआ़दत मन्द वोह है जिस ने उस की इताअ़त में शब बेदारी की। उस ने अहले मह़ब्बत को अपनी मह़ब्बत में मश्ग़ूल किया और उस की मशक़्क़त व तक्लीफ़ को उन के लिये लुत्फ़ का सामान कर दिया और उन के तक़्वा की महक ने दुन्या को खुश्बूदार और मुअ़त्तर कर दिया। रात के वक़्त जब लोग ग़ाफ़िल हो जाते हैं तो वोह अपने कुर्ब की तन्हाइयों में अपने प्यारों से कलाम फ़रमाता हैं। कितनी बड़ी कामयाबी है उन की जिन से उन का मह़बूब रात की तन्हाई में हम कलाम होता है। वोह अपनी ख़्वाहिशात के बाग़ात को अपने ग़म के बहते आंसूओं से सैराब करते हैं तो उन के ईमान की क्यारियां चमकदार और हरी भरी हो जाती हैं। वोह दुन्या से बे रग़बती और आख़िरत में रग़बत कर के अपनी ख़्वाहिशात की खेती बरबाद करते हैं तो उन का बाग़े तक़्वा आबाद हो जाता है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें अपने जमाल का मुशाहदा करने के लिये बुलाता और अपने जूदो नवाल से वाफ़िर ह़िस्सा अ़ता फ़रमाता है।

पाकी है उसे जो हमेशा से अ़ज़्मत व कुदरत वाला, ह़िल्म वाला और बख़्शने वाला है, मेहरबान है, अपने बन्दों के गुनाह छुपाता और अपनी ग़ालिब कुव्वत से नाफ़रमान बन्दों पर क़हरो ग़ज़ब फ़रमाता है। अपने फ़ैसलों में अ़द्ल व इन्साफ़ करता है, किसी से डरता नहीं, किसी पर ज़ुल्म नहीं करता। जो उस के साथ नेकियों का मुआ़मला करता है वोह उसे नफ़्अ़ बख़्शता है ह़ालांकि वोह पहले नाकाम था। जो अपनी ज़िल्लत व मोह़ताजी में उस की पनाह त़लब करता है तो वोह उस की कमज़ोरी पर रह़्म फ़रमाता है और उस की मोह़ताजी को दूर फ़रमा देता है और जो ला इल्मी में उस की नाफ़रमानी कर बैठता है और फिर उस की बारगाह में अपने इस बुरे फ़े'ल से तौबा करता है तो वोह उस के गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा देता है। जो उसे अपने दिल में याद करता है वोह उसे अपने फ़िरिश्तों की मुक़द्दस जमाअ़त में याद करता है। "مَنۡ تَقَرَّبَ مِنِّیۡ شِبۡرًا تَقَرَّبۡتُ مِنۡهُ ذِرَاعًا या'नी जो मुझ से एक बालिश्त क़रीब हो, मैं उस से एक हाथ क़रीब हो जाता हूं।" (جامع الترمذی، کتاب الدعوات، باب فی حسن الظن باللہ، الحدیث۳۶۰۳، ص۲۰۲۲)

जो शख़्स सख़्ती व मुसीबत में उस को पुकारता है तो वोह उसे मुश्किल दूर फ़रमाने वाला और ज़िल्लत व रुस्वाई में मदद करने वाला पाता है।

मैं अव्वल व आख़िर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द करता हूं और गवाही देता हूं कि उस के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वोह यक्ता है, उस का कोई शरीक नहीं, येह ऐसी ख़ालिस गवाही है जिस में कोई शक व शुबा नहीं। और मैं गवाही देता हूं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के बन्दे और उस के रसूल हैं, ऐसे रसूल कि जिन की मुबारक उंगलियों से पानी के चश्मे जारी हो गए। अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ आप صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर, आप صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के आल व अस्हाब رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن पर उस वक़्त तक अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाए जब तक हुदी ख़्वां गुनगुनाता रहे और रात को सफ़र करता रहे।'' (آمِیْن یَا رَبَّ الْعَالَمِیْن)

महब्बत क्या है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जान लीजिये ! बेशक महब्बत फ़िक्रों से कट जाने और राज़ों से छुप जाने का नाम है। येह ख़्वास के लिये नूर और अ़वाम के लिये नार (या'नी आग) है। जिस दिल में महब्बत दाख़िल हो जाती है उसे बेचैन व मुज़्तरिब और परेशान कर देती है। हुब्ब (या'नी महब्बत) दो हुरूफ़ का मजमूआ़ है, **हा** और **बा**, हा ''حَتْف'' से है या'नी काटना और बा ''بِلاء'' से है या'नी आज़माइश। येह ह़क़ीक़तन एक बीमारी है जिस से दवा और शिफ़ा निकलती है। इस की इब्तिदा ''फ़ना'' और इन्तिहा ''बक़ा'' है। इस में बज़ाहिर मशक़्क़त व कुल्फ़त है मगर बातिनी तौर पर सुरूर व लज़्ज़त। येह नावाक़िफ़ों के लिये बद बख़्ती व बीमारी है जब कि आ़रिफ़ों के लिये शिफ़ा व तन्दुरुस्ती।

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿۱﴾ قُلْ هُوَ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّ شِفَآءٌ ؕ وَ الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ فِیْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّ هُوَ عَلَیْهِمْ عَمًى ؕ (پ ۲٤، حٰمٓ السجدة:٤٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम फ़रमाओ वोह ईमान वालों के लिये हिदायत और शिफ़ा है और वोह जो ईमान नहीं लाते उन के कानों में टेन्ट (रूई) है और वोह उन पर अन्धापन है।*

काफ़िर और मोमिन की महब्बत का मुवाज़ना :

महब्बत करने वालों की कई अक़्साम हैं लेकिन मुहिब्बीने इलाही ही ख़ालिस व मुख़्लिस लोग हैं।

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का फ़रमाने महब्बत निशान है :

﴿۲﴾ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ؕ (پ۲، البقرة:١٦٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ईमान वालों को अल्लाह के बराबर किसी की महब्बत नहीं।*

इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं : ''اَشَدُّ'' से मुराद पुख़्तगी और हमेशगी है। इस की वजह येह है कि मुशरिकीन जब किसी बुत की पूजा करते और फिर कोई उस से अच्छी चीज़ देख लेते तो उस बुत को छोड़ कर उस से अच्छी चीज़ की पूजा पाट शुरूअ़ कर देते (या'नी काफ़िर अपनी महब्बतें बदलते रहते थे जब कि मोमिन सिर्फ़ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से महब्बत करते हैं)।'' (التفسير الكبير للامام فخر الدين الرازی، سورة البقرة، تحت الآية:١٦٥، ج٢، ص١٧٨)

ह़ज़रते सय्यिदुना इ़करमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस की तफ़्सीर यूं करते हैं : अहले ईमान आख़िरत में अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से बहुत महब्बत करेंगे।

ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "बेशक काफ़िर मुसीबत के वक़्त अपने (बाति़ल) मा'बूद से मुंह मोड़ लेता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाता है।"

(التفسیرالبغوی،سورۃالبقرۃ،تحت الآیۃ۱۶۵،ج۱،ص۹۴)

चुनान्चे, इस बारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿۳﴾ فَاِذَا رَكِبُوْا فِی الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِیْنَ لَهُ الدِّیْنَ ط (پ۲۱،العنکبوت:۶۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर जब कश्ती में सुवार होते हैं अल्लाह को पुकारते हैं एक उसी पर अ़क़ीदा ला कर।*

मज़ीद इरशाद फ़रमाता है :

﴿۴﴾ وَاِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِی الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُوْنَ اِلَّاۤ اِیَّاهُ ج (پ۱۵،بنی اسرائیل:۶۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जब तुम्हें दरिया में मुसीबत पहुंचती है तो उस के सिवा जिन्हें पूजते हैं सब गुम हो जाते हैं।*

मोमिन मुसीबत व खुशह़ाली और आज़्माइश वग़ैरा किसी ह़ाल में भी बारगाहे खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ से ए'राज़ नहीं करता और उस पर किसी को तरजीह़ नहीं देता। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَۃُاللہ تعالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : काफ़िर वासित़े के साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करते हैं जैसा कि वोह अपने बुतों के मुतअ़ल्लिक़ कहते थे, जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने मुबीन में यूं बयान फ़रमाता है :

﴿۵﴾ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِیُقَرِّبُوْنَاۤ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ط (پ۲۳،الزمر:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *कहते हैं हम तो इन्हें सिर्फ़ इतनी बात के लिये पूजते हैं कि येह हमें अल्लाह के पास नज़्दीक कर दें।*

और वोह येह भी कहते थे :

﴿۶﴾ هٰۤؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ط (پ۱۱،یونس:۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *येह अल्लाह के यहां हमारे सिफ़ारिशी हैं।*

इस के बर अ़क्स अहले ईमान किसी वासित़े के बिग़ैर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करते हैं, जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ यूं बयान फ़रमाता है :

﴿۷﴾ وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ط (پ۲،البقرۃ:۱۶۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ईमान वालों को अल्लाह के बराबर किसी की मह़ब्बत नहीं।*

मन्क़ूल है, "क्यूंकि मुशरिकीन अपने बहुत से (बाति़ल) मा'बूदों से मह़ब्बत करते हैं इस लिये उन की मह़ब्बत मुश्तरक है जब कि मोअमिनीन की मह़ब्बत ग़ैर मुश्तरक है क्यूंकि वोह सिर्फ़ खुदाए वाहि़द عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत करते हैं।"

और एक क़ौल येह है कि "कुफ़्फ़ार के मा'बूद इन के अपने ही बनाए होते हैं जब कि मोअमिनीन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही को हर चीज़ का बनाने वाला और हर मख़्लूक़ का ख़ालिक़ मानते हैं।"

और बा'ज़ ने कहा कि "काफ़िर बुतों को देख कर उन से मह़ब्बत करते हैं जब कि मुसलमान बिन देखे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत करते हैं बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान भी बिन देखे लाते हैं। इसी वजह से इन से आख़िरत में दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ का वा'दा फ़रमाया गया।"

एक क़ौल येह भी है कि ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने "وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ط" इस लिये फ़रमाया क्यूंकि पहले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ईमान वालों से महब्बत की फिर मोअमिनीन ने उस से महब्बत की और जिस की महब्बत की गवाही मा'बूदे बर हक़ عَزَّوَجَلَّ दे यक़ीनन उस की महब्बत ज़ियादा कामिल और ज़ियादा सहीह है।'' (تفسیرالبغوی،سورۃالبقرۃ،تحت الآیۃ۱۶۵،ج۱،ص۹۵)

चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन की शान में इरशाद फ़रमाता है :

يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗ ﴿۸﴾ لا (پ۶،المائدۃ:۵۴) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** *कि वोह अल्लाह के प्यारे और अल्लाह उन का प्यारा।*

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान षौरी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आलीशान : رَبَّنَاوَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَاطَاقَةَ لَنَا بِهٖ ج (پ۳،البقرۃ:۲۸۶) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ रब्ब हमारे ! और हम पर वोह बोझ न डाल जिस की हमें सहार (बरदाश्त) न हो।'' की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : ''यहां बोझ से मुराद महब्बत है।'' (تفسیرالبغوی،سورۃالبقرۃ،تحت الآیۃ۲۸۶،ج۱،ص۲۰۹"سفیان"بدلہ"ابراھیم")

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं, हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام यूं दुआ किया करते :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ حُبَّکَ وَحُبَّ مَنْ یُّحِبُّکَ وَالْعَمَلَ الَّذِیْ یُبَلِّغُنِیْ حُبَّکَ، اَللّٰھُمَّ اجْعَلْ حُبَّکَ اَحَبَّ اِلَیَّ مِنْ نَّفْسِیْ وَاَھْلِیْ وَمِنَ الْمَآءِ الْبَارِدِ

या'नी ऐ मेरे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से तेरी महब्बत और उस की महब्बत का सुवाल करता हूं जो तुझ से महब्बत करता है और उस के अ़मल की महब्बत का सुवाली हूं जो मुझे तेरी महब्बत तक पहुंचा दे। ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ मुझे अपनी जान, घर वालों और ठन्डे पानी से ज़ियादा अपनी महब्बत अ़ता फ़रमा।'' (आमीन)

(جامع الترمذی، کتاب الدعوات، باب دعاء داؤدعلیہ السلام......الخ،الحدیث۳۴۹۰،ص۲۰۱۱)

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है, सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, बिइज़्ने परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने महब्बत निशान है : ''जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से महब्बत करता है उसे चाहिये कि वोह मुझ से महब्बत करे और जो मुझ से महब्बत करता है उसे चाहिये कि वोह मेरे सहाबा से महब्बत करे और जो मेरे सहाबा से महब्बत करता है उसे चाहिये कि वोह क़ुरआने पाक से महब्बत करे और जो क़ुरआने पाक से महब्बत करता है उसे चाहिये कि वोह मसाजिद से महब्बत करे। क्यूंकि येह ऐसी इमारतें हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने बनाने और पाक रखने का हुक्म दिया और इन में बरकत रखी। पस येह ख़ैरो बरकत वाली जगहें हैं और उन के रहने वाले भी ख़ैरो बरकत में हैं। येह पसन्दीदा जगहें हैं और उन में रहने वाले भी पसन्दीदा हैं। येह लोग अपनी नमाज़ों में होते हैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की ज़रूरत पूरी फ़रमाता है। येह मसाजिद में होते हैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन को अपने मक़ासिद में कामयाबी अ़ता फ़रमाता है।''

(المجروحین لابن حبان، الرقم۱۲۷۱،ابومعمر،ج۲،ص۵۱۰،بتغیرٍ)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ जब किसी बन्दे से से महब्बत फ़रमाता है तो हज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام को बुलाता है।" और एक रिवायत में है कि हज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام को हुक्म फ़रमाता है "ज़मीनो आस्मान वालों में ए'लान कर दे कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ फ़ुलां बन्दे से महब्बत फ़रमाता है लिहाज़ा तुम भी उस से महब्बत करो।" फिर उस की महब्बत ज़मीन में उतारी जाती है। वोह पानी में पड़ती है तो उसे नेक व बद सभी पीते हैं तो वोह भी उस से महब्बत करने लगते हैं। और जब अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ किसी बन्दे को नापसन्द करता है तो हज़रते जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام को इस के बरअ़क्स हुक्म फ़रमाता है पस नेक व बद सभी उस से नफ़रत करने लगते हैं।"

(صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب کلام الرب تعالی......الخ، الحدیث۷۴۸۵، ص۶۲۴۔ صحیح مسلم، کتاب البر، باب اذا احب اللّٰہ تعالی عبدًا......الخ، الحدیث۲۶۳۷، ص۱۱۳۷، مفھومًا)

महबूबाने ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ महबूबाने औलिया رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تعَالٰی :

मज़्कूरा हदीषे पाक की रोशनी में हज़रते सय्यिदुना षाबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی के मुतअ़ल्लिक़ एक हिकायत मन्क़ूल है : "एक दफ़्आ़ आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ किसी ख़लीफ़ा के पास तशरीफ़ ले गए। ख़लीफ़ा ने पूछा : "आप के दोस्त हज़रते सय्यिदुना सालेह़ यमानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ क्या दुआ़ मांगते हैं ?" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया, उन की दुआ़ येह है : "اَللّٰھُمَّ حَبِّبْنِیْ اِلٰی قُلُوْبِ عِبَادِکَ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ अपने बन्दों के दिलों में मेरी महब्बत डाल दे।" ख़लीफ़ा ने इस दुआ़ को कमतर समझते हुए कहा : "येह उन की दुआ़ है।" तो हज़रते सय्यिदुना षाबित رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "क्या तुम इस को मा'मूली ख़याल करते हो ? मैं ने हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ को फ़रमाते सुना, आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना : अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ जब किसी बन्दे से महब्बत फ़रमाता है तो हज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام को निदा फ़रमाता है कि "मैं फ़ुलां बन्दे से महब्बत करता हूं, तुम भी उस से महब्बत करो।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने आख़िर तक हदीष बयान फ़रमाई। (صحیح البخاری، کتاب الادب، باب المقة من اللّٰہ، الحدیث۶۰۴۰، ص۵۱۰) हदीषे पाक सुनते ही ख़लीफ़ा कहने लगा : "मैं अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में तौबा करता हूं और उस की त़रफ़ रुजूअ़ करता हूं। हज़रते सय्यिदुना षाबित رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "दूसरे दिन जब मैं हज़रते सय्यिदुना सालेह़ यमानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ खड़े हो गए और मुआ़नक़ा फ़रमा कर (या'नी गले मिल कर) मेरे सर का बोसा लिया और इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तुझे ख़ुश करे जैसे मुझे ख़ुश किया। गुज़श्ता रात मैं ने ख़्वाब में देखा गोया मैं मस्जिदे नबवी عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में बारगाहे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हूं और आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमा रहे हैं : "अपनी इस दुआ़ "اَللّٰھُمَّ حَبِّبْنِیْ اِلٰی قُلُوْبِ الْعِبَادِ." पर क़ाइम रहो। क्यूंकि औलियाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام किसी बन्दे से तभी महब्बत करते हैं जब कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ भी उस से महब्बत करता हो।" फिर मैं ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ को सलाम किया और वापस लौट आया।"

हज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद बिस्तामी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی यूं दुआ मांगा करते थे : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे उस बात पर तअ़ज्जुब नहीं कि मैं तुझ से महब्बत करता हूं क्यूंकि मैं तो तेरा एक हक़ीर बन्दा हूं। बल्कि तअ़ज्जुब तो इस बात पर है कि तू मुझ से महब्बत फ़रमाता है ह़ालांकि तू मालिक और कुदरत वाला है।"

हज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ राज़ी علیہ رحمۃ اللہ القاضی यूं मुनाजात करते थे : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ येह बात अ़जीब नहीं कि एक ह़क़ीर बन्दा अपने रब्बे जलील عَزَّوَجَلَّ से महब्बत करता है। बल्कि अ़जीब बात तो येह है कि रब्बे जलील عَزَّوَجَلَّ अपने ज़लील बन्दे से महब्बत करता है।"

बा'ज़ आ़रिफ़ीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं : "महब्बत एक दाना है जो दिलों की ज़मीन में काश्त किया जाता और अ़क्लों के पानी से सैराब किया जाता है। पस वोह पानी की सफ़ाई और ज़मीन की उ़म्दगी के मुत़ाबिक़ फल देता है। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है,

﴿٩﴾وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهُ بِإِذْنِ رَبِّهِ ج وَالَّذِىْ خَبُثَ لَا يَخْرُجُ إِلَّا نَكِدًا ط (پ٨،الاعراف:٥٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो अच्छी ज़मीन है उस का सब्ज़ा **अल्लाह** के हुक्म से निकलता है और जो ख़राब है उस में नहीं निकलता मगर थोड़ा ब मुश्किल।*

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तीन ख़स्लतें जिस शख़्स में होंगी वोह इस्लाम की ह़लावत पाएगा : (1).....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस के नज़दीक सब से ज़ियादा महबूब हों (2).....किसी से महब्बत करे तो सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये करे और (3)....इस्लाम लाने के बा'द दोबारा कुफ़्र में लौटने को इस त़रह़ नापसन्द करे जैसे आग में डाले जाने को नापसन्द करता है।"

(صحیح مسلم،کتاب الایمان،باب بیان خصال من......الخ،الحدیث١٦٥،ص٦٨٧)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बिइज़्ने परवर दगार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने राह़त निशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत फ़रमाएगा : "मेरी ख़ात़िर बाहम महब्बत करने वाले कहां हैं? आज मैं उन्हें अपने सायए (रह़मत) में जगह अ़त़ा फ़रमाऊंगा, आज मेरे सायए (रह़मत) के सिवा कोई साया नहीं।" (صحیح مسلم،کتاب البر،باب فضل الحب فی اللہ تعالی، الحدیث٢٥٦٦، ص١١٢٧)

हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत फ़रमाते हैं, मैं ने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "मेरे लिये आपस में महब्बत करने वालों के लिये (बरोज़े क़ियामत) नूर के मिम्बर होंगे जिन पर अम्बिया व शुहदा भी रश्क करेंगे।" (جامع الترمذی،ابواب الزھد ،باب ماجاء فی الحب فی اللہ ،الحدیث ٢٣٩٠،ص١٨٩٢)

अ़ज़ीम ख़ादिमा :

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन हुसैन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मेरे पास एक अ़जमी ख़ादिमा थी। एक रात वोह मह़्वे आराम थी फिर मैं ने देखा कि उस ने उठ कर वुज़ू किया और

नमाज़ के लिये खड़ी हो गई। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुई तो सर ब सुजूद हो गई और अ़र्ज़ करने लगी : "ऐ मेरे मौला ! उस मह़ब्बत की क़सम जो तुझे मुझ से है ! मेरी बख़्शिश फ़रमा दे।" मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़्म करे ! यूं न कह, बल्कि यूं कह : उस मह़ब्बत की क़सम जो मुझे तुझ से है ! क्यूंकि हो सकता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ से मह़ब्बत न करता हो।" कहने लगी : "ऐ मेरे आक़ा ! अगर उस को मुझ से मह़ब्बत न होती तो वोह आप को सुला कर मुझे अपने हु़ज़ूर खड़ा न करता। उस की मह़ब्बत है कि मुझे मुशरिकीन के मुल्क से निकाला और मोअमिनीन में दाख़िल फ़रमा दिया।" येह सुन कर मैं ने कहा : "जा, मैं ने तुझे रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये आज़ाद किया।" तो वोह कहने लगी : "ऐ मेरे आक़ा ! आप ने मेरे साथ अच्छा नहीं किया, पहले मेरे लिये दो अज्र थे, अब सिर्फ़ एक रह गया।" फिर उस की ज़ोरदार चीख़ बुलन्द हुई और कहने लगी : "येह तो मेरे छोटे मालिक का आज़ाद करना है, ह़क़ीक़ी मालिक عَزَّوَجَلَّ का आज़ाद करना कैसा होगा ?" फिर वोह नीचे गिरी और उस की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह मुह़िब्बीन की सिफ़ात हैं जिन के दिल रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत में मुअ़ल्लक़ (या'नी अटके) रहते हैं। किसी मुह़िब्ब से पूछा गया : "तू ने मह़ब्बत को कैसा पाया ?" जवाब दिया : "मैं ठाठें मारते हुए समन्दर के साह़िल पर खड़ा हुवा जिस का दूसरा कनारा नहीं मिलता, तो मुझे उस ज़ात ने क़ुर्ब बख़्शा जो फ़रमाता है : "مَنْ تَقَرَّبَ مِنِّیْ شِبْرًا تَقَرَّبْتُ مِنْهُ ذِرَاعًا" या'नी जो मुझ से एक बालिश्त क़रीब हो, मैं उस से एक हाथ क़रीब हो जाता हूं।" (جامع الترمذی، کتاب الدعوات، باب فی حسن الظن باللہ، الحدیث٣٦٠٣، ص٢٠٢٢) पस मैं उस के हुक्म से सुवारिये मह़ब्बत पर सुवार हो गया तो रूह़ ने पुकारने वाले को जवाब दिया :

﴿۱۰﴾ بِسۡمِ اللّٰہِ مَجۡرٖىہَا وَ مُرۡسٰىہَا (پ١٢، ھود:٤١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह के नाम पर इस का चलना और इस का ठहरना। (1)

जब मैं बह़रे मह़ब्बत के दरमियान अथ्था गहराइयों में पहुंचा तो मैं उस के रास्तों में परेशान हो गया। मुझ पर येही कैफ़िय्यत त़ारी रही यहां तक कि मह़बूबे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ ने मुझे "يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗ" या'नी वोह अल्लाह के प्यारे और अल्लाह उन का प्यारा।" के पाकीज़ा इजतिमाअ़ में पहुंचा दिया। और अब मैं मक़ामे "बक़ा" और मक़ामे "फ़ना" के दरमियान हूं यहां तक कि फ़ना को पा लूं।"

अनोखी मुनाजात :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی अपनी मुनाजात में अ़र्ज़ करते : "ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ अगर तूने मेरे गुनाहों का मुआख़ज़ा किया तो मैं तुझ से बख़्शिश त़लब करूंगा। अगर तू ने मेरे बुख़्ल के सबब पूछ गछ की तो मैं तुझ से जूदो करम का सुवाल करूंगा। अगर तूने

1....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "इस में ता'लीम है कि बन्दे को चाहिये जब कोई काम करना चाहे तो उस को बिस्मिल्लाह पढ़ कर शुरूअ़ करे ताकि उस काम में बरकत हो और वोह सबबे फ़लाह़ हो। ज़ह़्ह़ाक़ ने कहा कि "जब ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام चाहते थे कि कश्ती चले तो बिस्मिल्लाह फ़रमाते थे, कश्ती चलने लगती थी और जब चाहते थे कि ठहर जाए बिस्मिल्लाह फ़रमाते थे, ठहर जाती थी।"

नाफ़रमानी पर मेरा हिसाब किताब लिया तो मैं तुझ से एहसान तलब करूंगा। अगर तू ने मुझे आग में दाख़िल किया तो मैं अहले दोज़ख़ से कहूंगा कि मैं रब्ब عَزَّوَجَلَّ से महब्बत करता हूं।" तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को आवाज़ आई : "ऐ अबू सुलैमान ! हम तुझे जहन्नम में नहीं बल्कि जन्नत में दाख़िल करेंगे कि तू अहले जन्नत को हमारी महब्बत के मुतअ़ल्लिक़ बताए, अहले दोज़ख़ को हमारी महब्बत से आगाह न करे क्यूंकि महब्बत करने वालों का ठिकाना जन्नत और दुश्मनों का ठिकाना जहन्नम है।"

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! महब्बत दुल्हनों की मानिन्द है और इस का हक़्क़े मेहर जानों की क़ुरबानी है। इस की वजह से गर्दनें और सर झुके रहते हैं। येह दिलों पर अपनी तजल्ली डालती और गदला पन दूर करती है। येह आ़रिफ़ के लिये नूर है तो जाहिल के लिये आग। जब महब्बत की पाकीज़ा शराब अहले सफ़ा को उकसाती है तो अहले वफ़ा के दिल हाज़िर हो जाते हैं। पस ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ इस का साज़ है तो तौह़ीदे बारी तआ़ला इस का गुलदस्ता है। शुक्र इस का तर्जमान है तो हैबत इस की पहचान। अहले महब्बत के लिये बाग़े विसाले यार के दरवाज़े खोले जाएंगे, वोह सुब्ह़ो शाम उस की ने'मतों से लुत्फ़ अन्दोज़ होंगे, महबूबे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ बिला हिजाब उन पर तजल्ली फ़रमाएगा और खुश रू मलाइका हर दरवाज़े से उन के पास हाज़िर होंगे। पस क़ुरआने ह़कीम की तिलावत करने वालों के लिये खुश ख़बरी और अच्छा ठिकाना है। और ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ रखने वाले और बुरे हिसाब से डरने वाले जन्नत में आरास्ता पैरास्ता सफ़ों से टेक लगाए होंगे। क्या ही अच्छा षवाब है उन का।

जन्नत में याक़ूत का घर :

ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन हुसैन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى को फ़रमाते सुना : "मैं मिस्र की एक सड़क से गुज़र रहा था कि अचानक एक ख़ातून पर मेरी नज़र पड़ी जो चादर ओढ़े हुए न थी। मैं ने उसे कहा : "ऐ औ़रत ! क्या तुझे बिग़ैर चादर घूमते हुए ह़या नहीं आती ?" तो उस ने कहा : "ऐ ज़ुन्नून ! जब चेहरे पर ज़र्दी ग़ालिब हो तो चादर का क्या काम ?" मैं ने पूछा : "तेरे चेहरे पर किस चीज़ की ज़र्दी छाई हुई है ?" जवाब दिया : "महब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ की।" मैं ने कहा : "ऐ औ़रत ! तेरे चेहरे से मा'लूम होता है कि तू ने शराब पी रखी है।" उस ने जवाब दिया : "ऐ फ़ुज़ूल बात करने वाले ! चुप रह। मैं ने उस की महब्बत का जाम पिया, मसरूर हो कर सोई और महब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ के नशे में चूर हो कर सुब्ह़ की।" मैं ने कहा : "ऐ ख़ातून ! क्या मैं तुझ से कुछ मुफ़ीद बातें या वसिय्यत ह़ासिल कर सकता हूं ?" तो वोह कहने लगी : "ऐ ज़ुन्नून ! ख़ामोशी को लाज़िम पकड़ यहां तक कि लोग तुझे परेशान समझने लगें और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दिये हुए रिज़्क़ पर राज़ी रह, जन्नत में तेरे लिये याक़ूत का घर बनाया जाएगा।"

ऐ मा'रिफ़ते हक़ के तालिब ! जब मह़ब्बत की हवा दिल के ख़ानों में चलती है तो येह मह़बूब की मुलाक़ात से ही राह़त पाती है और तू सह़री के वक़्त अहले मा'रिफ़त की मुनाजात सुनेगा तो उन में से हर एक ज़बाने ह़ाल से इसी के मुत़ाबिक़ जवाब देगा जो अह़वाल उस पर गुज़र रहे होंगे। पस अगर उस से पूछा जाए कि "ऐ ग़मगीन इन्सान ! तू हम तक कैसे पहुंचा ?" तो वोह जवाब में कहेगा : "मैं ने तवक्कुल और इ़श्क़े इलाही عَزَّوَجَلَّ को अपनाया तो मुझे पता भी न चला कि मुझे उस की हुज़ूरी मिल गई।" और अगर उस से सुवाल किया जाए कि "ऐ मौत से ख़ौफ़ खाने वाले ! तू ने मौत को कैसा पाया ?" तो वोह कहेगा : "मैं ने मह़बूबे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा में तक्लीफ़ को ख़ुशगवार जाना। पस मैं ने उस के फ़ज़्ल को सबक़त ले जाने वाला और अपने हौसले को पीछे रह जाने वाला पाया। मुझे उस से कामयाबी की उम्मीद क्यूं कर न हो ह़ालांकि मैं उस की रह़मत पर यक़ीन रखता हूं।" और अगर उस से पूछा जाए कि "ऐ ज़ाहिद ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये ख़र्च करने वाली जगहों के मुतअ़ल्लिक़ तेरा अ़हद कैसा है ?" तो उस का जवाब होगा : "मैं ने ख़ैर के कामों में ख़र्च करने के मुतअ़ल्लिक़ उस का येह फ़रमाने आ़लीशान सुना :

﴿۱﴾ مَاعِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَاعِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ط
(پ۱٤،النحل:٩٦)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जो तुम्हारे पास है हो चुकेगा और जो **अल्लाह** के पास है हमेशा रहने वाला।*

तो जो कुछ मेरे पास था मैं ने इसे उस के लिये छोड़ दिया जो रब्ब عَزَّوَجَلَّ के पास है। मैं ने फ़ना हो जाने वाली चीज़ों से तवज्जोह हटा कर बाक़ी रहने वाली चीज़ों पर तवज्जोह दी।" और अगर उस से सुवाल किया जाए कि "ऐ हम से मह़ब्बत करने वाले ! तेरी हमारी बारगाह तक कैसे रसाई हुई ?" तो वोह कहेगा : "मैं ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ से "يُحِبُّهُمْ" का जाम पिया जिस के नशे से "وَيُحِبُّوْنَهٗ" की ख़ल्वत में खो गया और इस जामे इ़श्क़ की वजह से मुझ पर ग़शी त़ारी हो गई फिर जल्वए मह़बूब से ही इफ़ाक़ा हुवा।"

भेड़िये बकरियों के मुह़ाफ़िज़ बन गए :

ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ैषम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَعْظَم के मुतअ़ल्लिक़ मन्क़ूल है कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه हमेशा शब बेदारी करते थे। एक दिन आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه की बेटी ने अ़र्ज़ की : "ऐ अब्बा जान ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ में सब से अफ़्ज़ल कौन है ?" तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "हमारे आक़ा व मौला ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم" येह सुन कर वोह कहने लगी : "हुरमते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का वासित़ा ! आज रात आप सो जाएं।" तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ तू जानता है कि मुझे शब बेदारी नींद से ज़ियादा प्यारी है लेकिन मेरी बेटी ने मुझे हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का वासित़ा दिया है इस बिना पर आज मुझे सोना पड़ेगा।" चुनान्चे, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه मह़्वे आराम हो गए। ख़्वाब में देखा कि बसरा में एक मैमूना नामी ख़ादिमा है जो

जन्नत में इन की बीवी होगी। सुब्ह हुई तो आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه बसरा रवाना हो गए। जब अहले बसरा ने आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه की आमद का शोहरा सुना तो शानदार इस्तिक़्बाल किया। जब आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه शहर में दाख़िल हुए तो लोगों से पूछा : "क्या यहां कोई मैमूना नामी औ़रत है ?" लोगों ने अ़र्ज़ की : "आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه उस दीवानी मैमूना का पूछते हैं जो दिन में बकरियां चराती है और इस की मज़दूरी से खजूर ख़रीदती है फिर उसे फ़ुक़रा में सदक़ा कर देती है। रात को छत पर चढ़ जाती है और फिर कषरते गिर्या व ज़ारी और चीख़ो पुकार से किसी को सोने नहीं देती।" आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ने पूछा : वोह अपनी आहो ज़ारी में क्या कहती है ?" तो उन्हों ने जवाब दिया : वोह कहती है :

عَجَباً لِلْمُحِبِّ كَيْفَ يَنَامُ ﴿﴾ كُلُّ نَوْمٍ عَلَى الْمُحِبِّ حَرَامُ

तर्जमा : तअ़ज्जुब है महब्बत करने वाले पर ! वोह कैसे सो जाता है। हालांकि मुहिब्ब पर तो नींद ह़राम हो जाती है।

येह सुन कर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह दीवानों का कलाम नहीं, मुझे उस के पास ले चलो।" लोगों ने अ़र्ज़ की : "वोह जंगल में बकरियां चरा रही है।" आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه उस की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए तो देखा कि उस ने एक मेह़राब बना रखा है और उस में नमाज़ पढ़ रही है। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ने देखा कि बकरियां चर रही हैं और भेड़िये उन की ह़िफ़ाज़त कर रहे हैं। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه येह मन्ज़र देख कर बहुत ह़ैरान हुए। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि "जब वोह नमाज़ से फ़ारिग़ हुई तो मैं ने कहा : السلام علیک ऐ मैमूना !" उस ने जवाब दिया : "وَعَلَیْکَ السَّلَام, ऐ रबीअ़ !" मैं ने पूछा : "तुम मेरा नाम कैसे जानती हो ?" उस ने कहा : سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे उस ज़ात ने आप का नाम बताया है जिस ने गुज़श्ता रात ख़्वाब में आप को ख़बर दी कि मैं आप की ज़ौजा हूं। लेकिन येह वा'दे की जगह नहीं बल्कि हमारे दरमियान वा'दे की जगह जन्नत है।" मैं ने पूछा : "येह भेड़ियों और बकरियों के इकठ्ठे रहने का मुआ़मला कैसा है ?" उस ने जवाब दिया : "जब मेरे दिल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की महब्बत पैदा हुई और मैं ने दिल से दुन्या की महब्बत निकाल दी तो उस ज़ात ने भेड़ियों और बकरियों में सुल्ह़ करवा दी।" फिर उस ने कहा : "ऐ रबीअ़ ! मुझे मेरे मालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ का कलाम तो सुनाइये, मुझे उस के सुनने का बहुत शौक़ है।" तो मैं ने तिलावते क़ुरआन शुरूअ़ कर दी :

﴿۱۲﴾ يٰۤاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ۝ قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝

(پ۲۹، مزمل:۱۔۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ झुरमुट मारने वाले ! रात में क़ियाम फ़रमा सिवा कुछ रात के।* (1)

1...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْهَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "या'नी अपने कपड़ों से लिपटने वाले। इस की शाने नुज़ूल में कई क़ौल हैं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि "इब्तिदाए ज़मानए वह़्य में सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ौफ़ से अपने कपड़ो में लिपट जाते थे। ऐसी ह़ालत में आप को ह़ज़रते जिब्रील ने یٰۤاَیُّهَا الْمُزَّمِّلُ कह कर निदा की। एक क़ौल येह है कि सय्यिदे अ़ालम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم चादर शरीफ़ में लिपटे हुए आराम फ़रमा रहे थे, इस ह़ालत में आप को निदा की गई یٰۤاَیُّهَا الْمُزَّمِّلُ बहर ह़ाल येह निदा बाताती है कि मह़बूब की हर अदा प्यारी है। और येह भी कहा गया है कि इस के मा'ना येह हैं कि रिदाए नबुव्वत व चादरे रिसालत के ह़ामिल व लाइक़।"

वोह सुनती रही और रो रो कर तड़पती रही यहां तक कि जब मैं अल्लाह तआ़ला के इस फ़रमाने आ़लीशान पर पहुंचा :

﴿۱۳﴾ اِنَّ لَدَيْنَآ اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا ۝ وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّعَذَابًا اَلِيْمًا ۝ (پ۲۹،مزمل:۱۲تا۱۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक हमारे पास भारी बेड़ियां हैं और भड़कती आग और गले में फंसता खाना और दर्दनाक अ़ज़ाब*

तो उस ने ज़ोरदार चीख़ मारी और नीचे गिर गई और उस की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। मैं उस की इस ह़ालत पर परेशान था कि अचानक ख़वातीन का एक क़ाफ़िला आया। उन्हों ने कहा : "हम इस के ग़ुस्ल व कफ़न का एहतिमाम करेंगी।" मैं ने पूछा : "तुम्हें इस के इन्तिक़ाल की इत्तिलाअ़ किस ने दी ?" उन्हों ने बताया : "हम इस की दुआ़ सुना करती थीं कि "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ علیہ رحمۃ اللہ السمیع के सामने मौत देना।" जब हम ने सुना कि आप इस के पास तशरीफ़ लाए हैं तो हम ने जान लिया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस की दुआ़ क़बूल फ़रमा ली है।"

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बन्दों के दिल की ज़मीन संवारता है तो उसे ख़शिय्यत के हल से उलटता पलटता है और उस में मह़ब्बत का बीज बो कर आंसूओं के पानी से सैराब करता है तो जो फ़स्ल उगती है, वोह येह है :

﴿۱۴﴾ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗۤ ۙ (پ٦،المائدة:٥٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *कि वोह अल्लाह के प्यारे और अल्लाह उन का प्यारा।*

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ के दरया में तैरते हैं। उस के बाबे करम को लाज़िम पकड़ लेते हैं। उस की बारगाह में खड़े रहते हैं। उस के अह़काम की बजा आवरी पर हमेशगी इख़्तियार करते हैं और उस से वालिहाना प्यार करते हैं। इसी वजह से वोह रातों को आराम नहीं करते बल्कि बेदार रहते हैं। पस जब वोह उस की मह़ब्बत में दुन्या से जाते हैं तो उन्हें कोई मलामत नहीं होती।

मैं तेरी मह़ब्बत में कमज़ोर नहीं :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन फ़ज़ल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं, जब ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ राज़ी علیہ رحمۃ اللہ الباقی का इन्तिक़ाल हुवा और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया।" पूछा गया : "किस सबब से ?" फ़रमाया : मैं अपनी दुआ़ में अ़र्ज़ करता था, "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अगर्चे मैं तेरी इ़बादत में कमज़ोर हूं मगर तेरी मह़ब्बत में कमज़ोर नहीं।"

रूह़ानी बदन और आस्मानी अ़क़्लें :

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "मैं ने यमन के एक बुज़ुर्ग के मुतअ़ल्लिक़ सुना कि वोह मह़ब्बत करने वालों में बुलन्द मर्तबा और कोशिश करने वालों पर फ़ौक़िय्यत रखते हैं और वोह इ़ल्मो ह़िक्मत का सर चश्मा हैं। चुनान्चे, मैं ह़ज के इरादे से निकला

और जब अरकाने हज अदा कर लिये तो उन की तरफ़ चल पड़ा ताकि उन की गुफ़्तगू सुनूं और उन के बयान से नफ़्अ उठाऊं। हम कई लोग येही सोच ले कर गए। हमारे साथ एक नौजवान भी था जिस में नेक लोगों की निशानियां और महब्बत करने वालों की अलामतें पाई जाती थीं। वोह बुजुर्ग हमें मिले। हम उन के पास बैठ गए। उसी नौजवान ने सलाम व कलाम से इब्तिदा की। बुजुर्ग ने उस से मुसाफ़हा किया और उस की तरफ़ मुतवज्जेह हुए। नौजवान ने अर्ज़ की : "या सय्यिदी ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप को बीमार दिलों का तबीब बनाया है, मुझे ऐसी बीमारी है कि तबीब इस के इलाज से आजिज़ आ चुके हैं। अगर आप मुझ पर अपना लुत्फ़ो करम फ़रमाएं तो मेरा इलाज फ़रमा दीजिये।" बुजुर्ग ने पूछा : "जो मुआमला तुझ पर ज़ाहिर हुवा है इस के मुताबिक़ पूछ।" उस ने अर्ज़ की : "महब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ की अलामत क्या है ?" बुजुर्ग ने जवाब दिया : "इस की अलामत येह है कि तू अपने आप को बीमार जान, क्या तू ने देखा नहीं कि बीमार मरज़ के ख़ौफ़ से खाना नहीं खाता ?"

येह सुनते ही नौजवान ने बा आवाज़े बुलन्द चीख़ मारी। हमें अन्देशा हुवा कि उस की रूह परवाज़ कर गई है। जब उसे इफ़ाक़ा हुवा तो फिर अर्ज़ की : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रहम फ़रमाए ! महब्बत करने वालों की अलामत क्या है ?" फ़रमाया : "महब्बत करने वालों का दर्जा बहुत बुलन्द है।" नौजवान ने फिर अर्ज़ की : "मुझे उन के अवसाफ़ बताइये ?" तो उन्हों ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से महब्बत करने वाले उस के नूरे जलाल को देखते हैं तो उन के जिस्म रूहानी और अक़्लें आस्मानी हो जाती हैं जो मलाइका की सफ़ों के दरमियान वाज़ेह तौर पर चलती फिरती हैं और तमाम उमूरे आख़िरत का यक़ीनी तौर पर मुशाहदा करती हैं। पस वोह हस्बे इस्तिताअत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत करते हैं। उन को जन्नत की तम्अ होती है न दोज़ख़ का ख़ौफ़।" इस पर उस नौजवान ने एक आहे सर्द दिले पुरदर्द से खींची और अपनी जान जाने आफ़रीं के सिपुर्द कर दी। वोह बुजुर्ग रो रो कर उसे बोसे देने लगे। फिर फ़रमाने लगे : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह ख़ाइफ़ीन की मौत है और येह मुहिब्बीन का मक़ाम है।"

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तरफ़ वह्य फ़रमाई : "ऐ दावूद ! मुझ से महब्बत करो और मेरे मुहिब्बीन से भी महब्बत करो और मेरे बन्दों के दिलों में मेरी महब्बत डालो।" उन्हों ने अर्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से महब्बत करता हूं और तेरे मुहिब्बीन से भी महब्बत करता हूं लेकिन तेरे बन्दों के दिलों में तेरी महब्बत कैसे दाख़िल करूं ?" तो इरशाद फ़रमाया : "उन को मेरी ने'मतें और अताएं याद दिलाओ क्यूंकि वोह मुझे एहसान करने वाला ही जानते हैं।"

(احیاء علوم الدین، کتاب الخوف والرجاء، بیان فضیلة الرجاء والترغیب فیه، ج۴، ص۱۷۸)

मन्क़ूल है, "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तरफ़ वह्य फ़रमाई : "तू मेरा ख़लील है और मैं तेरा ख़लील हूं। लिहाज़ा इस बात से बचना कि मैं तेरे दिल को अपने ग़ैर में मश्ग़ूल पाऊं, अगर ऐसा हुवा तो मैं तेरी महब्बत ख़त्म कर दूंगा। क्यूंकि मैं अपनी महब्बत के लिये ऐसे बन्दे का इन्तिख़ाब करता हूं कि अगर मैं उसे आग में भी जलाऊं तो भी उस

का दिल मेरे इलावा किसी में मश्ग़ूल न हो। जब वोह ऐसा हो तो मैं अपनी महब्बत उस के दिल में डाल देता हूं और उस पर मुसलसल अपना लुत्फ़ो करम फ़रमाता हूं फिर उसे अपना कुर्ब और अपनी महब्बत अ़ता करता हूं। तो मेरे नज़्दीक कौन सी ने'मत उस के बराबर हो सकती है। और मेरे नज़्दीक कौन सा शरफ़ व मर्तबा उस से बढ़ कर हो सकता है। मेरी इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम ! अपनी त़रफ़ मुतवज्जेह होने की वजह से मैं अपने मुहिब्ब के सीने को ज़रूर शिफ़ा बख़्शूंगा और येह इस लिये कि मैं अपने मुहिब्ब से महब्बत करता हूं।" (حلیة الاولیاء،الحارث بن اسد المحاسبی، الحدیث١٤٦٤٨، ج١٠،ص٨٦،بتغیرٍ)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की महब्बत अपनी क़दीम इ़नायत के साथ बन्दे पर सबक़त ले जाती है तो फिर बन्दा सीधे रास्ते पर क्यूं नहीं चलता ?" (हुक्म होता है) ऐ जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام फ़ुलां को सुला दो और फ़ुलां को उठा दो। तो मुहिब्ब अपने मह़बूबे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ के हु़ज़ूर खड़ा हो जाता है, उस की इ़बादत को लाज़िम पकड़ लेता है और उस की महब्बत में ह़ैरान व सरगर्दां रहता है तो उस पर किसी मलामत करने वाले की मलामत और इ़ताब अषर नहीं करता।

सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی का रिक्क़त अंगेज़ बयान :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़यान عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : "मैं मिस्र के एक जंगल बयाबान में ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی के इजतिमाए़ पाक में ह़ाज़िर हुवा। मैं ने ह़ाज़िरीने इजतिमाअ़ को शुमार किया तो वोह सत्तर हज़ार (70,000) के लगभग थे। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की महब्बत और मुहिब्बीने बारी तआ़ला के मुतअ़ल्लिक़ बयान फ़रमा रहे थे। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के इजतिमाअ़ में ग्यारह अफ़राद मर गए। लोग चीख़ो पुकार और गिर्या व ज़ारी करते हुए गिर रहे थे। बहुत से लोग ज़मीन पर बेहोश पड़े थे। सारा दिन उन्हें इफ़ाक़ा न हुवा तो आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का एक मुरीद अ़र्ज़ करने लगा : "ऐ अबुल फ़ैज़ ! आप ने महब्बते ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से दिलों को जला कर रख दिया और ग़म व अन्दोह में डाल दिया। अब महब्बते मख़्लूक़ के ज़िक्र से इन के दिलों को ठन्डक पहुंचाइये।" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی ने ग़म व अन्दोह में डूबी हुई शदीद आह भरी और आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की क़मीस शक़ हो कर दो टुकड़ों में तक़्सीम हो गई। फिर इरशाद फ़रमाने लगे : "आह ! अफ़्सोस ! उन के दिल मुअ़ल्लक़ हो गए। उन की आंखें अश्क बार हो गईं। उन्हों ने शब बेदारी का अ़हदो पैमान और नींद का बाईकाट कर लिया। उन की रात त़वील और नींद कम है। उन का ग़म व अलम ख़त्म न होगा। उन के काम दुश्वार और आंसू बहुत ज़ियादा हैं। उन की आंखें आंसू बहा रही हैं और पल्कें नम नाक हैं। ज़माने ने उन से दुश्मनी की और रिश्तेदारों और पड़ोसियों ने जफ़ा की। महब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ ने उन के दिलों को जला कर रख दिया। उन की शराबे त़हूर गदले पन से पाक साफ़ है। बेशक उन के लिये अपने मक़्सूद तक पहुंचने और सुरूर व कामयाबी पाने की बिशारत है।"

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! महब्बत उन लोगों का काम है जिन्हों ने अपने दिल में मह़बूबे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी के लिये ज़र्रा बराबर जगह न छोड़ी। और महब्बत हर उ़ज़्वे बदन पर अपनी अ़लामात ज़ाहिर करती है।

(1).....ज़बान, महबूबे हक़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र में मशग़ूल रहती है। जैसा कि **अल्लाह** तबारक व तआला इरशाद फ़रमाता है :

﴿۱٦﴾ فَاذْكُرُوْنِیْۤ اَذْكُرْكُمْ (پ۲،البقرة:۱۵۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करूंगा।* (1)

(2)....कान, महबूबे हक़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ के इन मीठे बोलों को सुनने के लिये बे ताब रहते हैं :

﴿۱۷﴾ وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌ ط (پ۲،البقرة:۱۸۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ऐ महबूब जब तुम से मेरे बन्दे मुझे पूछें तो मैं नज़्दीक हूं।* (2)

(3)......आंखें, जल्वए महबूब عَزَّوَجَلَّ देखने की आरज़ू मन्द रहती हैं। जैसा कि क़ुरआने पाक फ़रमाता है :

﴿۱۸﴾ وُجُوْهٌ یَّوْمَىٕذٍ نَّاضِرَةٌ۝اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ۝ (پ۲۹،القيامة:۲۲۔۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *कुछ मुंह उस दिन तरो ताज़ा होंगे अपने रब्ब को देखते।* (3)

---

❶...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "ज़िक्र तीन त़रह़ का होता है : (1)....ज़िक्र बिल्लिसान (2).....ज़िक्र बिलक़ल्ब (3)......ज़िक्र बिल जवारेह़। ज़िक्रे लिसानी तस्बीह़, तक़्दीस, षना वग़ैरा बयान करना है, ख़ुत़बा, तौबा इस्तिग़फ़ार, दुआ़ वग़ैरा इस में दाख़िल हैं। ज़िक्रे क़ल्बी **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों का याद करना, उस की अ़ज़मत व किब्रियाई और उस के दलाइले क़ुदरत में ग़ौर करना। उ़-लमा का इस्तिम्बाते़ मसाइल में ग़ौर करना भी इसी में दाख़िल हैं। ज़िक्रे बिल जवारेह़ येह है कि आ'ज़ा त़ाअ़ते इलाही में मश्ग़ूल हों जैसे ह़ज के लिये सफ़र करना, येह ज़िक्र बिल जवारेह़ में दाख़िल है। नमाज़ तीनों क़िस्म के ज़िक्र पर मुश्तमिल है। तस्बीह़ व तक्बीर, षना व क़िराअत तो ज़िक्रे लिसानी है और ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़, इख़्लास ज़िक्रे क़ल्बी और क़ियाम, रुकूअ़ व सुजूद वग़ैरा ज़िक्र बिल जवारेह़ है। इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया, **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : "तुम त़ाअ़त बजा ला कर मुझे याद करो मैं तुम्हें अपनी इमदाद के साथ याद करूंगा। सह़ीह़ैन की ह़दीष में है कि **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि "अगर बन्दा मुझे तन्हाई में याद करता है तो मैं भी उस को ऐसे ही याद फ़रमाता हूं और अगर वोह मुझे जमाअ़त में याद करता है तो मैं उस को इस से बेहतर जमाअ़त में याद करता हूं। क़ुरआन व ह़दीष में ज़िक्र के बहुत फ़ज़ाइल वारिद हैं और येह हर त़रह़ के ज़िक्र को शामिल हैं। ज़िक्र बिल जहर को भी और बिल इख़्फ़ा को भी।"

❷...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "इस में त़ालिबाने ह़क़ की त़लबे मौला का बयान है, जिन्हों ने इश्क़े इलाही पर अपने ह़वाइज को क़ुरबान कर दिया। वोह उसी के त़लबगार हैं, उन्हें क़ुर्ब व विसाल के मुज़्दा से शाद काम फ़रमाया। **शाने नुज़ूल :** एक जमाअ़ते सह़ाबा ने जज़्बए इश्क़े इलाही में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया कि हमारा रब्ब कहां है? इस पर नवीदे क़ुर्ब से सरफ़राज़ कर के बताया गया कि **अल्लाह** तआ़ला मकान से पाक है। जो चीज़ किसी से मकानी क़ुर्ब रखती है वोह उस के दूर वाले से ज़रूर बुअ़्द रखती है और **अल्लाह** तआ़ला सब बन्दों से क़रीब है। मकानी की येह शान नहीं। मनाज़िले क़ुर्ब में रसाई बन्दे को अपनी ग़फ़्लत दूर करने से मुयस्सर आती है। "دوست نزدیک تر از من بمن ست۔ویں عجب تر کہ من ازوے دورم"

❸....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "इन्हें दीदारे इलाही की ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया जाएगा। **मस्अला :** इस आयत से षाबित हुवा कि आख़िरत में मोअमिनीन को दीदारे इलाही मुयस्सर आएगा। येही अहले सुन्नत का अ़क़ीदा व क़ुरआनो ह़दीष व इजमाअ़ के दलाइले कषीरा इस पर क़ाइम हैं और येह दीदार बे कैफ़ और बे जहत होगा।"

(4).....बदन महबूबे हक़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की इताअ़त में खड़े हो कर येह वज़ीफ़ा पढ़ते रहते हैं :

﴿۱۹﴾ اِيَّاکَ نَعْبُدُ وَاِيَّاکَ نَسْتَعِيْنُ0(پ۱،الفاتحة:۵) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *हम तुझी को पूजें और तुझी से मदद चाहें।*

(5)....दिल, यादे महबूब عَزَّوَجَلَّ में महब्बत के राबिते से जड़े रहते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿۲۰﴾ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗۤ لا (پ۶،المائدة:۵۴) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *कि वोह **अल्लाह** के प्यारे और **अल्लाह** उन का प्यारा।*

(6).....राज़, जल्वए महबूब عَزَّوَجَلَّ के मुशाहदे में खोए रहते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में फ़रमाता है :

﴿۲۱﴾ وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ 0 (پ۳۰،البروج:۳) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और (क़सम) उस दिन की जो गवाह है और उस दिन की जिस में हाज़िर होते हैं।*

(7).....रूहें, राहत और फूलों के ज़िक्र से सुकून हासिल करती हैं, चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿۲۲﴾ فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ لا (پ۲۷،الواقعة:۸۹) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *तो राहत है और फूल।*[1]

पस आ़रिफ़ को बारगाहे खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में हाज़िरी से ग़फ़्लत नहीं होती ? और न ही आ़बिद अपने मा'बूदे हक़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ से ग़ाफ़िल होता है।

दिल की सियाही कैसे दूर हो ?

हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ''मैं ने एक नौजवान को देखा जो ब ज़ाहिर मजनून था मगर बातिन महब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ की दौलत से माला माल था। मैं समझ गया कि येह नौजवान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इश्क़ में चूर है। मैं ने देखा कि वोह रो रहा था और येह दुआ़ कर रहा था : ''या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू ने महब्बत करने वालों को कुर्ब से नवाज़ा लेकिन मुझे दूर कर दिया, मेरा गुनाह क्या है ? उन को तू ने अपना विसाल अ़ता किया और मुझे हिजरो फ़िराक़ से दो चार किया। हाए, मेरी मुसीबत ! तू ने उन को क़ियाम के लिये बेदार रखा और मुझे सुलाए रखा। हाए, मेरी रुस्वाई ! तू ने उन को सहरी के वक़्त मुनाजात की लज़्ज़त अ़ता की और मुझे महरूम रखा। हाए, मेरा दुख !'' फिर उस ने रोना शुरूअ़ कर दिया। हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ''मेरे जिस्म के पुर सुकून आ'ज़ा पर कप-कपी तारी हो गई। मेरा पोशीदा इश्क़ जोश मारने लगा तो मैं ने उस से पूछा : ''ऐ नौजवान ! येह रोना कैसा ?'' तो वोह कहने लगा : ''ऐ ज़ुन्नून ! मुझे बताइये कि कपड़े की मैल तो पानी और साबुन से दूर हो जाती है लेकिन दिल की सियाही कैसे

1....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : ''अबुल आ़लिया ने कहा कि ''मुक़र्रबीन से जो कोई दुन्या से मुफ़ारक़त करता है उस के पास जन्नत के फूलों की डाली लाई जाती है, उस की ख़ुश्बू लेता है तब रूह क़ब्ज़ होती है।''

दूर हो ?" मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं भी इसी की तलाश में हूं जिस की तलाश में तू है।" मुझे उस नौजवान के वाक़िए से बड़ी ह़ैरानगी हुई।"

ऐ मेरे इस्लामी भाई ! जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत दिलों में क़रार पकड़ लेती है तो उन्हें मह़बूबे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ के अन्वार से रोशन कर देती हैं। मह़ब्बत की बदौलत दिल में सात षमरात फलते हैं, जिन के बिग़ैर मा'रिफ़ते इलाही عَزَّوَجَلَّ का चराग़ रोशन नहीं होता : (1).....निय्यत में इख़्लास (2).....ख़शिय्यते इलाही عَزَّوَجَلَّ (3).....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से षवाब की उम्मीद (4).....उस के साथ सच्चा रहना (5).....उसी पर तवक्कुल करना (6).....उस से अच्छा गुमान रखना और (7).....उसी की त़रफ़ लगन व शौक़ होना। जिस त़रह़ दर्जे ज़ैल सात अश्या के बिग़ैर चराग़ नहीं जलता जैसे (1).....जुन्नाद (वोह पथ्थर जिस को रगड़ कर आग निकाली जाती है) (2).....पथ्थर (3).....आग पकड़ लेने वाली कोई चीज़ मषलन कपड़ा (4).....गन्धक (5).....चराग़ दान (6).....तेल और (7).....फ़तीला। इसी त़रह़ मज़कूरा सात चीज़ों के बिग़ैर मा'रिफ़ते इलाही عَزَّوَجَلَّ का चराग़ भी रोशन नहीं होता।"

ऐ मेरे इस्लामी भाई ! मा'लूम हुवा कि इन चीज़ों के बिग़ैर चराग़ रोशन करने का कोई त़रीक़ा नहीं। अगर तू अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के मुशाहदे के लिये अपने दिल के चराग़ को रोशन करना चाहता है तो तेरे लिये सख़्त कोशिश का जुन्नाद, तकालीफ़ झेलने का पथ्थर, इश्क की आग, मह़ब्बत की गन्धक, तवक्कुल का चरागदान, फ़िक्र का तेल और सब्र का फ़तीला ज़रूरी है।

फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़ुज़ूर गिर्या व ज़ारी की ज़न्जीर में चराग़ को लटका दे तो इस त़रह़ तेरे दिल में नूरे इलाही عَزَّوَجَلَّ रोशन होगा और तू जमाले इलाही عَزَّوَجَلَّ का मुशाहदा कर लेगा।

ह़क़ीक़ी बन्दे और सच्चे मह़बूब :

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अह़मद मुफ़ीद عليه رحمة الله الوحيد फ़रमाते हैं, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى को फ़रमाते सुना, मैं ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ تعالى عَلَيْه की ख़िदमत में सो रहा था कि आप رَحْمَةُ اللهِ تعالى عَلَيْه ने मुझे बेदार किया और फ़रमाने लगे : ऐ जुनैद ! मैं ने देखा कि गोया मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़ुज़ूर खड़ा हूं और मुझे इरशाद फ़रमाया गया : "ऐ सरी ! मैं ने मख़्लूक़ पैदा की तो सब मेरी मह़ब्बत का दा'वा करते थे। फिर मैं ने दुन्या पैदा की तो नव्वे फ़ीसद (90%) भाग गए और दस फ़ीसद (10%) बाक़ी रह गए। फिर मैं ने जन्नत पैदा की तो बक़िय्या में से भी नव्वे (90%) फ़ीसद भाग गए और सिर्फ़ दस फ़ीसद (10%) बच गए। फिर जब मैं ने उन पर ज़र्रा भर आज़माइश नाज़िल की तो उस बाक़ी रह जाने वाली ता'दाद का भी सिर्फ़ दस फ़ीसद (10%) बचा और बाक़ी नव्वे फ़ीसद (90%) भाग गए। मैं ने बाक़ी रहने वालों से पूछा : "न तो तुम ने दुन्या को चाहा, न जन्नत त़लब की, न ही आज़माइश से भागे। आख़िर तुम क्या चाहते हो ? और तुम्हारा मक़्सूद क्या है ?" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "हमारा मक़्सूद तू ही तू है, अगर तू हम पर मसाइब

नाज़िल फ़रमाएगा तब भी हम तेरी मह़ब्बत को न छोड़ेंगे।'' मैं ने उन से कहा : ''मैं तुम्हें ऐसी ऐसी मुसीबतों और आज़्माइशों में मुब्तला करूंगा कि पहाड़ों को भी जिन के बरदाश्त की त़ाक़त नहीं, तो क्या तुम इन पर सब्र कर लोगे ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''क्यूं नहीं, मौला ! अगर तू आज़्मइश में मुब्तला करने वाला है तो जैसे चाहे हमें आज़्मा ले।''

(फिर फ़रमाया :) ऐ सर्री ! येही मेरे ह़क़ीक़ी बन्दे और सच्चे मह़बूब हैं।''

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से मह़ब्बत करने वालों पर आज़्माइश मुक़र्रर कर दी गई है, उस ने उन के जिस्मों को लाग़र व कमज़ोर कर दिया और उन के दिलों पर क़ाबू पा लिया है। येह ऐसे ही रहेंगे यहां तक कि मह़बूबे ह़क़ीक़ी عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में पहुंच जाएं।

सय्यिदुना उ़तबा ग़ुलाम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام की ह़िकायत :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : ''ह़ज़रते सय्यिदुना उ़तबा ग़ुलाम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام ख़ास अहलुल्लाह में से थे और मुख़्लिसीन में मा'रूफ़ थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बा'ज़ अवक़ात रात को मेरे पास तशरीफ़ लाया करते, हमेशा रोज़ा रखा करते थे। एक दफ़्अ़ा मेरे पास रात गुज़ारी। जब मैं ने रात का खाना ह़ाज़िर किया ताकि रोज़ा इफ़्त़ार करें तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सिर्फ़ पानी से इफ़्त़ार कर लिया। जब इशा की नमाज़ अदा कर ली तो इ़बादत पर कमर बस्ता हो गए और वक़्ते सह़र तक नमाज़ पढ़ते रहे। मैं ने सुना कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه यूं दुआ़ कर रहे थे : ''ऐ मालिको मौला عَزَّ وَجَلَّ अगर तू मुझे अ़ज़ाब दे तो भी मैं तेरा मुहि़ब्ब हूं और अगर मुझ पर रह़्म फ़रमाए तो भी तेरा मुहि़ब्ब हूं।'' फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه रोने लगे और ज़ोर दार आवाज़ निकाली और बे होश हो कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए। जब इफ़ाक़ा हुवा तो मैं ने अ़र्ज़ की : ''ऐ उ़तबा ! आप की रात कैसी गुज़री ?'' तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की चीख़ निकल गई और फ़रमाने लगे : ''ऐ इब्राहीम ! बहुत जल्द हि़साब लेने वाले की बारगाह में पेशी की फ़िक्र ने मुहि़ब्बीन के जिस्म के जोड़ काट कर रख दिये।'' फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर बेहोशी त़ारी हो गई। जब इफ़ाक़ा हुवा तो सरे अक़्दस उठाया और अ़र्ज़ करने लगे : ''ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّ وَجَلَّ उस शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ तेरा क्या इरादा है जो तुझ से मह़ब्बत करता है ? क्या तू उसे आग का अ़ज़ाब देगा या उस के दिल को हिज्रो फ़िराक़ के अ़ज़ाब में मुब्तला करेगा ?'' तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को हातिफ़े ग़ैबी की येह आवाज़ सुनाई दी : ''हरगिज़ नहीं, जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का मुहि़ब्ब हो और जिस को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने चुन लिया हो, उसे कोई अ़ज़ाब न दिया जाएगा।''

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ اَجْمَعِيْن

बयान 46 : विसाले मुस्त़फ़ा (صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم)

ह़म्दे बारी तआ़ला :

तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने ह़क़ीक़ी अ़क़्लमन्दों को चुन लिया कि क़ुरबत से ग़फ़्लत को छोड़ कर उस की मा'रिफ़त के छुपे हुए मत़ालिब को तलाश करें। और उस ने पुख़्ता समझ की कश्तियों को, अपनी हमेशा रहने वाली सिफ़त के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल के दरयाओं की तेज़ लहरों में ग़र्क़ कर दिया। और ग़ौरो फ़िक्र के परन्दों के परों को कुंवें से आज़ाद कर के अपनी शाने बे नियाज़ी के मैदानों में पहुंचा दिया। और ह़वास व शुऊ़र के पैमानों की बुन्याद ना उम्मीदी के कद्दाल से गिरा दी, लिहाज़ा उस की सिफ़ात व क़ुदरत का अन्दाज़ा लगाने का कोई पैमाना नहीं। और अ़क़्ल व दानिश के परन्दों को अपनी ज़ात की मा'रिफ़त के जाल में दाख़िल किया तो अफ़्लाक व इम्लाक सभी उस की शाने अह़दिय्यत के इदराक से आ़जिज़ आ गए और अ़क़्लें उस के राज़े यक्ताई के ह़ुसूल के क़रीब पहुंचने से आ़जिज़ आ गईं। पस वोह अव्वल है जिस की अव्वलिय्यत पर सबक़त ले जाने वाला कोई नहीं। वोह आख़िर है जिस के आख़िरी होने पर कोई आख़िर नहीं। वोह ज़ाहिर है कि अपने अहले मह़ब्बत पर दलील के साथ इयां है। वोह बात़िन है कि ग़ौरो फ़िक्र के बा वुजूद दिल उस का तसव्वुर नहीं कर सकता। वोह ऐसा समीअ़ (या'नी सुनने वाला) है कि रह़मे मादर के पर्दों की तारीकी में बच्चे के सांस की आवाज़ भी सुन लेता है। वोह ऐसा बसीर (या'नी देखने वाला) है कि रात के अन्धेरे में छुपी हुई सियाह चट्टान पर च्यूंटी के रैंगने का निशान भी देख लेता है। वोह अ़लीम है कि हर वोह बात जानता है जिसे बन्दा अपने दिल में छुपाता है। वोह जब्बार है कि हर जाबिर उस की बुलन्द हैबत के सामने झुका हुवा है। वोह क़हहार है कि हर मुतकब्बिर पर अपनी शाने इक़्तिदार से ग़ालिब है। सारी काइनात उस की तस्बीह़ बयान कर रही है और तमाम मख़्लूक़ उस की बुज़ुर्गी की मो'तरीफ़ है। और गरज उसे सराहती हुई उस की पाकी बोलती है और फ़िरिश्ते उस के डर से (या'नी उस की हैबत व जलाल से) उस की तस्बीह़ करते हैं।

ऐ आ'ला मक़्सद के त़लबगार ! रास्ते में बहुत ज़ियादा हलाकतें और दुश्वार गुज़ार घाटियां हैं। अगर तू ने यहां तौफ़ीक़े इलाही عَزَّوَجَلَّ को पा लिया तो अपनी मुलाक़ात में कामयाब हो जाएगा, अपनी उम्मीद की इन्तिहा को पा लेगा, फिर तू ऐसे जमाल को देखेगा जो कभी तेरे ख़याल में न आया था और ऐसे जवाब सुनेगा जो कभी तेरे दिल में न खटके होंगे, और तू ऐसा जाम पियेगा जो तुझे सैराब कर देगा और अहलो माल से बे परवाह कर देगा। अगर तू अपनी अ़क़्ल व राए और मिषाल से उस की बारगाह में रसाई चाहेगा तो मुलाक़ात तो कुजा अपनी दीगर ने'मतों से भी हाथ धो बैठेगा और ख़सारा व अ़ज़ाब मौल लेगा। अपने तजस्सुस और सुवाल में कमी कर और छान बीन और झगड़े से रुक जा। और जान ले कि (जिस त़रह़ तू मक़्सूद चाहता है) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मशिय्यत उस के बर अ़क्स है।

ज़ाते इलाही عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त के मैदानों की त़रफ़ कितने ही अ़क़्लों के काफ़िले चले और भटकते रहे, लेकिन मन्ज़िल पर न पहुंच सके। बहुत सी अ़क़्लों ने उस दरवाज़े में दाख़िल होना चाहा

मगर वोह हमेशा बन्द रहा। अ़क़्ल ने कितने ही पैग़ाम भेजे मगर वोह ह़ैरानी के आ़लम में वापस लौट आए। अ़क़्ल बिग़ैर बदले उस दर पर खड़ी है, फ़िक्र उस बारगाह में हमेशा से ह़ाज़िर है, पुख़्ता समझ उस की शाने बे नियाज़ी के इदराक में ह़ैरान व शशदर है कि ह़वासे बा ख़त़ा हो चुकी है। अ़क़्लें दंग हैं कि मा'क़ूल के ज़रीए़ उस की पहचान नहीं होती और अज़्हान हक्का बक्का हैं कि मन्क़ूल के ज़रीए़ उस का इदराक नहीं होता।

पाक है जो मा'बूद है, कैसा ? कैसे हो कि वोह कैफ़िय्यत से पाक है। कहां ? कहां हो कि वोह किसी जगह में होने से पाक है। वोह हर शै से अव्वल है और उस के लिये इब्तिदा नहीं, वोह हर शै का आख़िर है और उस के लिये इन्तिहा नहीं। उस को किसी मिष्ल पर क़ियास किया जा सकता है न किसी माद्दी शै के साथ उसे मुत्तसिफ़ किया जा सकता है और न ही किसी जिस्म के साथ उस की पहचान हो सकती है। उस ने शर को पैदा किया और उसे लिख दिया, उस ने ख़ैर को पैदा किया और उसे पसन्द फ़रमाया। जिस ने उस की इत़ाअ़त की उस पर रह़्म फ़रमाता है और जिस ने नाफ़रमानी की उसे अ़ज़ाब देता है, किसी फ़ैसले के बारे में पूछने का मोह़ताज नहीं। अपने औलिया से छुपता नहीं और न ही उन्हें ह़िजाब में रखता है। उस का येह अज़ली वा'दा है कि يٰۤاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۝ ارْجِعِیْۤ اِلٰی رَبِّکِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ۝ (پ ۳۰، الفجر: ۲۷-۲۸) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ इत़्मीनान वाली जान ! अपने रब्ब की त़रफ़ वापस हो यूं कि तू उस से राज़ी वोह तुझ से राज़ी।"

पाक है मुल्क व मलकूत वाला, इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत वाला, वोह ज़िन्दा है जिसे मौत नहीं। वोह पोशीदा राज़ों, दिलों की धड़कनों और छुपे हुए ख़यालों की आहटों को भी जानता है। उस ने अ़क़्लों को अपनी मा'रिफ़त के ठाठें मारते हुए उस समन्दर में ग़र्क़ कर दिया जिस की कोई इब्तिदा है न इन्तिहा। वोह सोचों को पैग़ाम देने वाला है, उस की मा'रिफ़त की राह में सोच रुक गई और ह़ैरान है मगर वोह हमेशा से बाक़ी है। एह़सास का जासूस आया ताकि उस की बा'ज़ सिफ़ात को जान ले तो तक़्दीर ने उसे आवाज़ दी कि ऐ ह़ैरत ज़दा ! तू कहां चल दिया, दरवाज़े और रास्ते तो बन्द हैं। उस के इदराक की त़रफ़ कोई राह नहीं। न ही उस की कोई शबीह व मषल है। ऐसा समन्दर है कि वहां से "जोहर" निकालना किसी "ग़ौत़ा ख़ोर" के लिये मुमकिन नहीं। ऐसी रात है कि बहुत चमकने वाला सितारा भी उस में आंख के लिये रोशनी नहीं कर सकता।

पाक है वोह ज़ात जिस ने तमाम मौजूदात को बनाया, ज़माने की तदबीर फ़रमाई, इन्सान को पैदा किया और फिर उसे बोलना सिखाया, क़ुरआने करीम उतारा, ईमान व कुफ़्र और इत़ाअ़त व नाफ़रमानी को मुक़द्दर किया वोह भूल से पाक है, उसे एक काम दूसरे से ग़ाफ़िल नहीं करता, ज़माने उसे नहीं बदल सकते, उमूर का बदलना उस पर मुख़्तलिफ़ नहीं होता। इख़्तियार को मुक़र्रर फ़रमाने वाला है और क़ियामत के दिन का मालिक है। उस की शान सब से बुलन्द है, और उसी के लिये हैं सब अच्छे नाम और बुलन्द सिफ़ात। और वोह फ़रमाता है : "خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا (پ ۱۹، الفرقان: ۵۹)" **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "आस्मान और ज़मीन और जो कुछ इन के दरमियान है बनाए।" और "اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰی ۝ (پ ۱۶، طٰہٰ: ۵)" **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :**

वोह बड़ी मेह्र वाला उस ने अ़र्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा कि उस की शान के लाइक़ है।'' ज़माने उसे पुराना नहीं कर सकते, मिक़दार उसे रोक नहीं सकती, अत़राफ़े आ़लम उसे घेर नहीं सकते और निगाहें उस का इहात़ा नहीं कर सकतीं। और उस का फ़रमाने ज़ीशान है : ''يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ (پ ۲۳، الزمر:۵) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** रात को दिन पर लपेटता है।'' और ''وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ O (پ ۱۳، الرعد:۸) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हर चीज़ उस के पास एक अन्दाज़े से है।'' उस की ज़ात दीगर ज़वात की त़रह़ नहीं और उस की सिफ़ात दीगर सिफ़ात की मिष्ल नहीं। वोह दर्जात बुलन्द करने वाला, ज़िन्दों को मारने वाला और मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है। बोलियां उस पर मुश्तबा नहीं होतीं और न ही आवाज़ें उस पर मुख़्तलिफ़ होती हैं। हवास के तराज़ू से उस का अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता। उसे नींद आए न ऊंघ। औलिया उस की खुफ़िया तदबीर से डरते हैं। मलाइका उस के ख़ौफ़ से उस के ज़िक्र से ग़ाफ़िल नहीं होते। जिन्न व इन्स उस के क़ब्ज़े व इक़्तिदार में हैं। जन्नत व जहन्नम उस के ''अम्र व नह्य।'' के तह़त हैं। बयान करने वाले (जैसा उस का ह़क़ है) उस की ता'रीफ़ व तौसीफ़ नहीं कर सकते। गुमान उसे क़ैद नहीं कर सकते। उस पर किसी का एह़सान नहीं। आंखें उसे खुल्लम खुल्ला नहीं देख सकतीं। वोह जब किसी शै को चाहे तो उस से फ़रमाए : ''हो जा।'' तो वोह फ़ौरन हो जाती है। मख़्लूक़ उस के ग़ालिब इरादे में मुक़य्यद है। उसी ने मख़्लूक़ और उन के आ'माल को पैदा फ़रमाया और वोह जानता है जो वोह करते हैं और वोह इरशाद फ़रमाता है :

''لَا يُسْئَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْئَلُوْنَ O (پ ۱۷، الانبیآء:۲۳)''

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उस से नहीं पूछा जाता जो वोह करे और उन सब से सुवाल होगा।''* (1)

पाक है वोह ज़ात जिस ने अपनी मा'रिफ़त तक जाने वाली ह़क़ाइक़ की राहों को कठिन व दुश्वार बना दिया पस इस पर चलने वाले चटयल मैदान में आ गए। उस ने मख़्लूक़ के इदराक को ह़ैरन कर दिया तो अब वोह ह़ैरत ज़दा हैं। उन्हों ने अक़्लों के तेल से मा'रिफ़त के चराग़ जलाए और ईमान की बिजली के नूर से रहनुमाई ह़ासिल की। फ़रमाने बारी तआ़ला है : ''كُلَّمَآ اَضَآءَ لَهُمْ مَّشَوْا فِيْهِ لا (پ ۱، البقرة:۲۰)'' ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *जब कुछ चमक हुई उस में चलने लगे।''*

फिर उन्हों ने अपने दिलों की त़रफ़ रुजूअ़ किया तो दिल कहने लगे : ''हम पाकीज़गी के घर हैं और घर वाला बेहतर जानता है कि घर में क्या है।'' फिर उन्हों ने सिफ़ात का दामन थामा तो वोह बोलें : ''हमें उस के इज़्हार की त़ाक़त नहीं।'' इस के बा'द उन्हों ने अ़क़्ल की त़रफ़ इशारा किया तो अ़क़्ल ने मदहोशी व ह़ैरत के आ़लम में उन से कहा : ''मैं भी इस मुआ़मले में तुम्हारी त़रह़ ह़ैरान हूं, मैं उस का इह़ात़ा नहीं कर सकती कि उसे बयान करूं। मैं उस की सिफ़ात बयान नहीं कर सकती

1...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं ''क्यूंकि वोह मालिके ह़क़ीक़ी है, जो चाहे करे, जिसे चाहे इ़ज़्ज़त दे जिसे चाहे ज़िल्लत दे जिसे चाहे सआ़दत दे जिसे चाहे शक़ी करे, वोह सब का ह़ाकिम है, कोई उस का ह़ाकिम नहीं जो उस से पूछ सके। (और इन सब से सुवाल होगा) क्यूंकि सब उस के बन्दे हैं। ममलूक हैं। सब पर उस की फ़रमां बरदारी और इत़ाअ़त लाज़िम है। उस से तौह़ीद की एक और दलील मुस्तफ़ाद होती है। जब सब ममलूक हैं तो इन में से कोई खुदा कैसे हो सकता है?''

कि उस की ता'रीफ़ व तौसीफ़ करूं और मैं नहीं जानती कि किस तरफ़ से उस तक रसाई हासिल करूं। तुम ने उस अम्र के मुतअ़ल्लिक़ पूछा है जिसे मैं नहीं जानती और तुम उस राज़ का इज़्हार चाहते हो जिसे हासिल करने में, मैं ख़ुद हमेशा आ़जिज़ रही। मुझे तो यहां सिर्फ़ हैरत व तअ़ज्जुब ही हासिल हुवा है। लेकिन ऐ मा'रिफ़ते इलाही عَزَّوَجَلَّ के बारे में हैरत ज़दा ! ऐ उस के मआ़नी के हुस्न में अ़क़्ल को लुटा देने वाले ! अगर तू उस की मा'रिफ़त चाहता है तो तौफ़ीक़े इलाही عَزَّوَجَلَّ की राह पर चल। क्यूंकि वोह ऐसा क़रीब है कि तू जब चाहे उस की बारगाह में हाज़िर हो जाए और वोह बई़द है मगर फ़ासिले के साथ नहीं कि तू उसे तै कर ले। अगर तू उस से ख़ालिस दोस्ती और तअ़ल्लुक़ रखेगा तो वोह तुझे पाकीज़गी व पसन्दीदगी के जाम से सैराब फ़रमाएगा और अगर तू ने उस की महब्बत का जाम पी लिया तो येही जाम तुझे सैराब कर देगा और अगर तू उस के ज़िक्र और ह़म्दो षना के नग़मे सुनना चाहता है तो उसे किसी भी चीज़ से तशबीह देने से बचते हुए तौह़ीद व पाकी बयान करने वाली ज़बान से कह :

تَبَارَكَ اللّٰهُ فِیْ عُلْیَاءِ عِزَّتِهٖ ۔۔۔ وَجَلَّ مَعْنَی فَلَیْسَ الْوَهْمُ یَحْوِیْهٖ

وُجُوْدُهٗ سَابِقٌ لَاشَیْءٌ یُشْبِهُهٗ ۔۔۔ وَلَاشَرِیْكَ لَهٗ لَاشَكَّ لِیْ فِیْهٖ

لَاكَوْنٌ یَحْصُرُهٗ لَاعَوْنٌ یَنْصُرُهٗ ۔۔۔ لَاكَشْفُ یُظْهِرُهٗ لَاجَهْرٌیُبْدِیْهٖ

لَادَهْرٌیَخْلُقُهٗ لَانَقْصٌ یُلْحِقُهٗ ۔۔۔ لَانَقْلٌ یَسْبِقُهٗ لَاعَقْلٌ یَدْرِیْهٖ

حَارَتْ جَمِیْعُ الْوَرٰی فِیْ كُنْهِ قُدْرَتِهٖ ۔۔۔ وَلَیْسَ تُدْرِكُ مَعْنَی مِنْ مَعَانِیْهٖ

سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰی فِیْ جَلَالَتِهٖ ۔۔۔ وَجَلَّ لُطْفًاوَعَزَّفِیْ تَعَالِیْهٖ

तर्जमा : (1).....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी उ़लू इ़ज़्ज़त के ए'तिबार से बुलन्द व बरतर है और वोह बड़ा है कि वहम उस का इह़ात़ा नहीं कर सकता। (2)....उस का वुजूद हमेशा से है, कोई शै उस के मुशाबेह नहीं और उस का कोई शरीक नहीं और मुझे उस में कोई शक नहीं। (3)....कोई जगह नहीं जो उसे घेर ले, कोई मददगार नहीं जो उस की मदद करे, कोई कश्फ़ नहीं जो उसे ज़ाहिर करे और कोई ए'लान नहीं जो उसे बयान करे। (4).....कोई ज़माना नहीं जिस ने उसे पैदा किया, कोई ऐ़ब नहीं जो उस से मिल जाए, कोई ऐसी ज़ात नहीं जो उस से बढ़ जाए और कोई अ़क़्ल नहीं जो उस का इदराक करे। (5).....सारी मख़्लूक़ उस की क़ुदरत की ह़क़ीक़त में ह़ैरान व सरगर्दां है मगर उस के मआ़नी में से एक मा'ना का भी इदराक नहीं कर सकी। (6).....वोह पाक है और उस की शानें बुलन्दो बाला हैं और वोह बड़ा ही मेहरबान और त़ाक़तवर व बरतर है।

पाक है वोह जो मा'बूद है, उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को अपने दस्ते क़ुदरत से बनाया, तमाम फ़िरिश्तों से उन्हें सजदा करवाया, उन को अपनी वसीअ़ जन्नत में ठहराया। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और उन की तमाम अवलाद के बारे में मौत का फ़ैसला फ़रमाया। उस ने अपने प्यारे मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इस फ़ैसले की ख़बर देते हुए इरशाद फ़रमाया :

''كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ط'' (پ۱۷،الانبیآء:۳۵) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *हर जान को मौत का मज़ा चखना है।''*

उस ने हज़रते सय्यिदुना नूह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को तूफ़ान से नजात अ़ता फ़रमाई और अहले ईमान को बचा कर मुख़ालिफ़ीन को ग़र्क़ कर दिया और हज़रते सय्यिदुना नूह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लिये भी उस मौत का फ़ैसला फ़रमाया जो जिन्न व इन्स के लिये लिख दी गई है। चुनान्चे, उस ने अपने ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से इरशाद फ़रमाया : "كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۝ (پ۲۷، الرحمٰن:۲۶)" **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ज़मीन पर जितने हैं सब को फ़ना है।"

उस ने हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को अपना ख़लील बनाया, इन्हें मुराद तक पहुंचाया, सिराते़ मुस्तक़ीम पर षाबित क़दम रखा, उन को आस्मानों और ज़मीन की सारी बादशाही दिखाई और मुशाहदा करवाया। और फिर आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर भी मौत का वा'दा पूरा फ़रमाया। और हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मौत का हाल और उस की ताक़त को यूं बयान फ़रमाया :

أَيْنَ مَا تَكُونُوا يُدْرِكُكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنتُمْ فِي بُرُوجٍ مُّشَيَّدَةٍ ط (پ۵، النسآء:۷۸)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम जहां कहीं हो मौत तुम्हें आ लेगी अगर्चे मज़बूत क़ल्ओं में हो।"* (1)

उस ने हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को हम कलामी के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया, इन को अपना कलाम सुनाया और अपने लज़्ज़त वाले ख़िता़ब से इन्हें इन के मक़्सूदे मत़लूब तक पहुंचा दिया और फिर इन की त़रफ़ भी मौत को भेज दिया। और हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से इरशाद फ़रमाया :

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ط وَإِنَّمَا تُوَفَّوْنَ أُجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ط (پ۴، اٰل عمران:۱۸۵)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हर जान को मौत चखनी है और तुम्हारे बदले तो क़ियामत ही को पूरे मिलेंगे।*

उसी ने हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को बिग़ैर बाप के पैदा फ़रमाया और इस में कोई शक व शुबा नहीं और येह उस के इख़्तियार में है। और हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से मादर ज़ाद अन्धों और सफ़ेद दाग़ (या'नी बर्स) वालों को शिफ़ा दी और मुर्दों को ज़िन्दा किया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने महबूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इन के मुतअ़ल्लिक़ ख़बर देते हुए इरशाद फ़रमाता है :

إِنِّي مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ (پ۳، اٰل عمران:۵۵)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मैं तुझे पूरी उ़म्र तक पहुंचाऊंगा और तुझे अपनी त़रफ़ उठा लूंगा।*

और वोही ज़ात है जिस ने हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को नबी अ़रबी, अमीन व मामून, साहिबे इ़ज़्ज़त व मर्तबा और मुहाफ़िज़े इ़ज़्ज़त होने की हैषिय्यत से मुन्तख़ब फ़रमाया और चुन लिया। बा वुजूद येह कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ऐसा क़ुर्ब व मर्तबा अ़ता फ़रमाया जिस तक कोई भी नहीं पहुंच सकता, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

---

(1)....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं "और उस से रिहाई पाने की कोई सूरत नहीं और जब मौत नागुज़ीर है तो बिस्तर पर मर जाने से राहे ख़ुदा में जान देना बेहतर है कि येह सआदते आख़िरत का सबब है।"

के नफ़्से करीमा को भी विसाले ज़ाहिरी की ख़बर दी, आप صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को हवादिषे ज़माना से आगाह फ़रमाया, और मा क़ब्ल विसाल फ़रमाने वाले हज़राते अम्बिया व मुर्सलीन عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام (की ज़ाहिरी वफ़ात) से आप صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को तसल्ली व इत्मीनान बख़्शा। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी महफ़ूज़ किताब में इरशाद फ़रमाता है : ''اِنَّکَ مَیِّتٌ وَّاِنَّهُم مَّیِّتُوْنَ0 (پ۲۳،الزمر:۳۰)
तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हें इन्तिक़ाल फ़रमाना है और उन को भी मरना है।[1]

सरकार صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कब पर्दा फ़रमाया ?

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تعالٰى عَنْهُمَا से मरवी है : ''तुम्हारे नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पीर के दिन पैदा हुए। पीर के दिन मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا से हिजरत की। पीर के दिन मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا तशरीफ़ लाए और विसाल भी बारह रबीउ़ल अव्वल (रबीउ़न्नूर शरीफ़) पीर के दिन ही फ़रमाया। आप صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मुद्दते मरज़ बारह दिन थी और आप صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का बुख़ार दर्दे सर के सबब था।''

(المعجم الکبیر،الحدیث ۱۲۹۸٤،ج ۱۲،ص ۱۸۳)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी यज़ीद رَضِیَ اللّٰهُ تعالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : ''सरकारे अब्दे क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत आ़मुल फ़ील बारह रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ पीर के दिन हुई। इसी दिन आप صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا से हिजरत फ़रमाई और इसी दिन मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا तशरीफ़ लाए। नीज़ आप صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाले ज़ाहिरी भी ग्यारह हिजरी बारह रबीउ़ल अव्वल शरीफ़, पीर के दिन वक़्ते चाश्त और निस्फ़ुन्नहार के दरमियान हुवा।''

(السیرۃ النبویۃ لابن ھشام، ولادۃ رسول اللّٰه ﷺ، ج۱،ص ۱٦۱ ـ المسند للامام احمدبن حنبل ،مسند عبد اللّٰه بن عباس ،الحدیث۲۵۰٦،ج۱،ص۵۹٤)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تعالٰى عَنْهُمَا रिवायत फ़रमाते हैं : ''जब हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर येह सूरए मुबारका नाज़िल हुई :

﴿ اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ0 ﴾ (پ۳۰،النصر:۱)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जब **अल्लाह** की मदद और फ़त्ह आए।*

तो आप صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''मुझे मेरे इन्तिक़ाल की ख़बर दी गई है।'' (سنن الدارمی،المقدمۃ،باب فی وفاۃالنبی صلّی اللّٰه علیه وسلّم،الحدیث ۷۹،ج۱،ص ۵۱) फिर आप صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تعالٰى عَنْهَا के घर इस हाल में तशरीफ़ लाए कि आप صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को बुख़ार था।''

[1]...मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं ''इस में कुफ़्फ़ार का रद्द है जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात का इन्तिज़ार किया करते। उन्हें फ़रमाया गया कि ''ख़ुद मरने वाले हो कर दूसरे की मौत का इन्तिज़ार करना हिमाक़त है। कुफ़्फ़ार तो ज़िन्दगी में भी मरे हुए हैं और अम्बिया की मौत एक आन के लिये होती है फिर उन्हें ह़यात अ़ता फ़रमाई जाती है। इस पर बहुत सी शरई बुरहानें (दलाइल) क़ाइम हैं।''

सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ को इमामत का हुक्म :

हज़रते सय्यिदुना बिलाल हब्शी رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "जब मैं सुब्ह बेदार हो कर आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हुजरए अन्वर के पास हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ ऐ सर चश्मए नबुव्वत व रिसालत के अहले बैत ! اَلصَّلٰوۃُ جَامِعَۃٌ " तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا को इरशाद फ़रमाया : "ऐ फ़ातिमा ! बिलाल (رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ) से कहो कि अबू बक्र (رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ) को सलाम कहो और कहो कि लोगों को नमाज़ पढ़ाएं।" हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं "मैं रोता हुवा वापस पलटा। मैं मदीने की गलियों में घूमता जाता और कहता जाता था "وَا سَیِّدَاہُ! وَانَبِیَّاہُ" या'नी आह ! मेरे सरदार, आह ! मेरे जलीलुल क़द्र नबी। काश ! बिलाल को इस की मां न जनती।" फ़रमाते हैं : "फिर मैं मस्जिद में आया तो वोह लोगों से खचा खच भरी हुई थी। मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ से मुलाक़ात की और हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का सलाम व पैग़ाम पहुंचाया। फिर मैं ने "اَلصَّلٰوۃُ، رَحِمَکُمُ اللّٰہ" की सदा लगा कर नमाज़ के लिये इक़ामत कही। जब मैं ने "اَللّٰہُ اَکْبَرُ اللّٰہُ اَکْبَرُ" कहा तो मुसलमानों ने (जवाब में) "کَبَّرْنَاہُ تَکْبِیْرًا وَّعَظَّمْنَاہُ تَعْظِیْمًا" कहा। मैं ने "اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ" कहा तो इन्हों ने "شَھِدْنَا بِھَا مَعَ کُلِّ شَاھِدٍ" कहा। जब मैं ने "اَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰہِ" कहा तो मुझ पर गिर्या तारी हो गया, मैं भी रोने लगा और लोग भी रोने लगे (इक़ामत के बा'द) हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ आगे बढ़े और लोगों को इमामत कराई। जब आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ ने "بِسْمِ اللّٰہِ" शरीफ़ पढ़ कर सूरए फ़ातिहा की तिलावत शुरूअ़ की और आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ की नज़र उस जगह पर पड़ी जहां सराकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने क़दमैने शरीफ़ैन रखते थे तो रोने से आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ की हिचकी बंध गई, और लोग भी रोने लगे। जब हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने लोगों का रोना धोना सुना तो हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا से दरयाफ़्त फ़रमाया : "येह मस्जिद में आहो बुका और रोने की आवाज़ कैसी है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "लोगों ने आप को नमाज़ में न पाया (इस लिये रो रहे हैं)।" आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना सरे अक़्दस उठाया और येह दुआ़ की : "या अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ बुख़ार पर मामूर फ़िरिश्ते को हुक्म दे कि तेरे नबी पर तख़्फ़ीफ़ करे ताकि मैं बाहर जा कर लोगों को नमाज़ पढ़ा लूं और दुन्या छोड़ने से पहले अपने सह़ाबा को अलवदाअ़ कह लूं।"

मरज़ में कमी :

रावी फ़रमाते हैं : "आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने बदन में बुख़ार की कमी पाई तो वुज़ू फ़रमाया और फिर हज़रते सय्यिदुना फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास, हज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद और हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھُم का सहारा लिये घर से बाहर तशरीफ़ लाए। जब मुसलमानों ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अन्वार मस्जिद में दाख़िल होते देखे और आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की आमद मह़सूस की तो वोह सफ़ दर सफ़ जुदा होते जाते

और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सफ़ों के दरमियान से गुज़रते जाते हत्ता कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मेहराबे अक़्दस के पास पहुंच गए और हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنۡهُ के बराबर खड़े हो कर लोगों को नमाज़ पढ़ाई।

प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का आख़िरी ख़ुत़बा :

जब हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो मिम्बरे अक़्दस पर जलवा अफ़रोज़ हुए और ख़ुत़बा इरशाद फ़रमाया। **अल्लाह** तआला की ह़म्दो षना की और अलवदाअ़ कहने वाले की त़रह़ चेहरए अक़्दस लोगों की त़रफ़ मुतवज्जेह किया और फ़रमाया :

"ऐ लोगो ! क्या मैं ने तुम तक रिसालत न पहुंचा दी और नसीह़त व अमानत अदा न कर दी ?" लोगों ने अ़र्ज़ की : "क्यूं नहीं, या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बेशक आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने रिसालत पहुंचा दी और अमानत अदा कर दी और उम्मत की ख़ैर ख़्वाही की और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की इ़बादत की यहां तक कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का आख़िरी वक़्त आ गया। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ हमारी त़रफ़ से आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को हर नबी عَلَيۡهِ السَّلَام की जज़ा से अफ़्ज़ल जज़ा दे जो उस ने हर नबी को उस की उम्मत की त़रफ़ से अ़त़ा की। फिर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मिम्बर शरीफ़ से नीचे उतरे और सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان को अलवदाअ़ कहा, उन से मुसाफ़ह़ा फ़रमाया, सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان रो रहे थे।

मलकुल मौत عَلَيۡهِ السَّلَام का इजाज़त त़लब करना :

फिर सरकारे आ़ली वक़ार, शाफ़ेए़ रोज़े शुमार, मह़बूबे ग़फ़्फ़ार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنۡهَا के घर तशरीफ़ ले गए और मरज़ में मुब्तला रहे यहां तक कि मलकुल मौत عَلَيۡهِ السَّلَام एक आ'राबी के रूप में ह़ाज़िरे ख़िदमत हुए और हुजरए अक़्दस के दरवाज़े पर खड़े हो कर अ़र्ज़ की : "اَلسَّلَامُ عَلَيۡكُمۡ ऐ सर चश्मए नबुव्वत व रिसालत के अहले बैत क्या मुझे आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िरी की इजाज़त है ?" हज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنۡهَا ने जवाबन फ़रमाया : "ऐ आ'राबी ! आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपने आप में मश्ग़ूल हैं।" उस ने फिर अ़र्ज़ की तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरवाज़े से झांका और मलकुल मौत عَلَيۡهِ السَّلَام को देख कर हज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنۡهَا से इरशाद फ़रमाया : "जानती हो, तुम्हारा मुख़ात़ब हौन है ?" अ़र्ज़ की : "ऐ अब्बा जान ! कोई आ'राबी है।" इरशाद फ़रमाया : "येह मलकुल मौत है, येह लज़्ज़ात को तोड़ने (या'नी शिकस्त देने) वाला है, इसे आने दो।" पस वोह ह़ाज़िरे ख़िदमत हुए और सलाम किया फिर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मुझे येह हुक्म दे कर भेजा है कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इजाज़त के बिग़ैर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रूह़ क़ब्ज़ न करूं, आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

का क्या हुक्म है ?" आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ठहर जाओ ह़त्ता कि ह़ज़रते जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) मेरे पास आएं, येह उन के आने का वक़्त है।"

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : "हम ने ऐसी बात का सामना किया जिस के मुतअ़ल्लिक़ हमारे पास कोई राए न थी। गोया हम पर कोई मुसीबत आन पड़ी हो, इस बात की बड़ाई और हैबत की वजह से घर वालों में से कोई भी बोल न सकता था। ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ आप (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) को सलाम फ़रमाता है और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मिज़ाज पुर्सी फ़रमाता है ह़ालांकि वोह आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़ालत ख़ूब जानता है लेकिन वोह आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को मज़ीद करामत व शरफ़ अ़त़ा करना चाहता है।" आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ जिब्राईले अमीन (عَلَيْهِ السَّلَام) मलकुल मौत (عَلَيْهِ السَّلَام) ने मुझ से इजाज़त त़लब की है और फिर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूरी बात बताई।"

ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : "या मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का रब्ब عَزَّ وَجَلَّ आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का मुश्ताक़ है, क्या उस ने नहीं बताया कि वोह क्या करना चाहता है, ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने आज तक किसी से इजाज़त त़लब नहीं की, लेकिन अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के शरफ़ व मर्तबे को पूरा करने वाला है।" फिर हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मलकुल मौत के आने तक आप यहां से न जाएं।" फिर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़्वातीन को इजाज़त दी और इरशाद फ़रमाया : "ऐ फ़ात़िमा ! मेरे क़रीब हो जाओ।" वोह ह़ाज़िरे ख़िदमत हुईं और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ झुक गईं। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के कान में सरगोशी फ़रमाई, उन्हों ने अपना मुबारक सर उठाया तो आंखों से आंसू जारी थे। उन में बात करने की सकत न थी। सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर फ़रमाया : "अपना सर मेरे क़रीब करो।" तो वोह आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ झुक गईं। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दोबारा सरगोशी फ़रमाई, ख़ातूने जन्नत رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने सर उठाया तो वोह मुस्कुरा रही थीं लेकिन कलाम करने की त़ाक़त न थी।

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : "हमें उन की ह़ालत से बहुत तअ़ज्जुब हुवा। इस के बा'द जब उन से पूछा तो उन्हों ने फ़रमाया : "मुझे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने बताया कि आज मैं इन्तिक़ाल कर जाऊंगा। तो मैं रोने लगी फिर फ़रमाया : "मैं ने दुआ़ की है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ मेरे घर वालों में से सब से पहले तुझे मुझ से मिलाए और मेरे साथ रखे।" चुनान्चे, इस बात ने मुझे ख़ुश कर दिया।" फिर मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ह़ाज़िरे ख़िदमत हुए, सलाम किया और इजाज़त त़लब की। इजाज़त मिलने के बा'द अ़र्ज़ गुज़ार हुए : "या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) अब मुझे आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم क्या

हुक्म फ़रमाते हैं ?" इरशाद हुवा : "मुझे मेरे रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ से मिला दो।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "जी हां, आज ही मिला दूंगा, आप की साअ़त (या'नी इन्तिक़ाल की घड़ी) आप के सामने है।" फिर वोह बाहर निकल गए और ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام भी येह अ़र्ज़ करते हुए चल दिये : "या रसूलल्लाह (صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) आज मैं आख़िरी बार ज़मीन पर उतरा हूं, वह्य लपेट दी गई और दुन्या समेट दी गई, मुझे दुन्या में आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के इलावा किसी से कोई काम न था और मुझे आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत ही मक़्सूद थी।"

सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का पसीनए ख़ुश्बूदार :

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : "उस ज़ात की क़सम जिस ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ मबऊ़ष फ़रमाया ! घर में किसी को बोलने की ताब न थी और इस कलाम की अ़ज़मत के पेशे नज़र कोई मर्दों को भी न बुला सकता था। हम सब सहमे हुए और ख़ौफ़ ज़दा थे। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : "फिर मैं उठ कर आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई ह़त्ता कि आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का सरे अन्वर अपनी छाती के साथ लगाया, आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सीनए मुबारका को थाम लिया, आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर बेहोशी त़ारी हो गई यहां तक कि ग़ालिब आ गई। और आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की पेशानी से इस क़दर पसीना टपकता था कि मैं ने कभी किसी इन्सान से इस क़दर नहीं देखा। मैं वोह पसीना पौंछती जाती थी और इस से ज़ियादा ख़ुश्बूदार चीज़ मैं ने कभी नहीं देखी। जब आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इफ़ाक़ा हुवा तो मैं ने अ़र्ज़ की : "मेरे मां बाप, जान व माल और अहल आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान ! आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की पेशानी पर इस क़दर पसीना क्यूं है ?" इरशाद फ़रमाया : ऐ आ़इशा ! मोमिन की जान पसीने के ज़रीए़ निकलती है और काफ़िर की जान गधे की त़रह़ उस की बाछों से निकलती है।" उस वक़्त हम डर गए और अपने घर किसी को भेजा। सब से पहले मेरे भाई तशरीफ़ लाए लेकिन वोह आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मुलाक़ात न कर सके। उन्हें मेरे वालिदे माजिद (ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ने मेरे पास भेजा था और किसी शख़्स के आने से पहले ही आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने जान जाने आफ़रीं के सिपुर्द कर दी और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सब को रोक रखा था क्यूंकि उस ने आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का मुआ़मला ह़ज़राते जिब्राईल व मीकाईल व इसराफ़ील عَلَيْهِمُ السَّلَام के सिपुर्द कर रखा था। जब आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर बेहोशी त़ारी हुई तो इरशाद फ़रमाया : اَلرَّفِيقَ الْاَعْلٰى या'नी रफ़ीक़े आ'ला عَزَّوَجَلَّ के पास जाना है।"

(احیاء علوم الدین، کتاب ذکر الموت ومابعده، الباب الرابع فی وفاة رسول اللہ ﷺ......الخ، ج۵، ص ۲۲۰/۲۲۱)

अ़ज़मते सय्यिदा आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا :

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : "मेरे पास मेरे भाई ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ आए तो उन के हाथ में मिस्वाक थी। मेरे

सरताज, साहिबे मे'राज صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उन की त़रफ़ देखने लगे। मैं ने जान लिया कि आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मिस्वाक पसन्द फ़रमा रहे हैं। अ़र्ज़ की : "क्या आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये उन से लूं ?" तो आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इशारे से फ़रमाया : "हां।" मैं ने मिस्वाक ली और आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को पेश कर दी। आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस को अपने मुंह में दाख़िल किया तो आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को सख़्त लगी। मैं ने अ़र्ज़ की : क्या मैं इसे नर्म कर दूं ?" आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सर के इशारे से फ़रमाया : "हां।" मैं ने मिस्वाक चबा कर नर्म की और दस्ते अक़्दस में दे दी। आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने पानी का एक प्याला रखा हुवा था, उस में अपना दस्ते अक़्दस दाख़िल किया और फ़रमाया :"अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, बेशक मौत की सख़्तियां बहुत है।" फिर अपना दस्ते अक़्दस बुलन्द कर के इरशाद फ़रमाया : اَللّٰهُمَّ الرَّفِيْقَ الْاَعْلٰى، اَللّٰهُمَّ الرَّفِيْقَ الْاَعْلٰى، اَللّٰهُمَّ الرَّفِيْقَ الْاَعْلٰى या'नी ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तू ही आ'ला रफ़ीक़ है, ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तू ही आ'ला रफ़ीक़ है, ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तू ही आ'ला रफ़ीक़ है।" यहां तक कि आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाल हो गया।"

(صحيح البخارى، كتاب المغازى، باب مرض النبى ﷺ ووفاته، الحديث ٤٤٤٩، ص٣٦٥)

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं : "नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे घर, मेरी बारी के दिन, मेरी गर्दन और सीने के दरमियान विसाल फ़रमाया और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने मौत के वक़्त मेरा और आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का लुआ़बे अक़्दस मिला दिया।"

हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाल की ख़बर सब से पहले अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تعَالٰى عَنْهُ को हुई और आप رَضِىَ اللّٰهُ تعَالٰى عَنْهُ सब से पहले ह़ाज़िर हुए। हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अक़्दस पर यमनी चादर थी, आप رَضِىَ اللّٰهُ تعَالٰى عَنْهُ ने चेहरए अक़्दस से चादर हटाई और बोसा लिया और रोते हुए अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप (صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) पर क़ुरबान ! आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने पाकीज़ा ज़िन्दगी गुज़ारी और पाकीज़ा विसाल फ़रमाया। जो मौत अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये लिख दी थी वोह आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने पा ली। इस्लाम के लिये ख़ैर ख़्वाही पर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को बेहतरीन जज़ा अ़ता फ़रमाए। फिर आप رَضِىَ اللّٰهُ تعَالٰى عَنْهُ लोगों की त़रफ़ निकले और आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इन्तिक़ाल की ख़बर दी।"

(صحيح البخارى، كتاب الجنائز، باب الدخول على الميت بعدالموت......الخ، الحديث ١٢٤١، ص٩٧۔ بتغيرٍ قليلٍ)

उम्मते मुस्त़फ़ा पर ख़ुसूसी करम :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ब वक़्ते विसाल ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام से इस्तिफ़सार फ़रमाया : "मेरे बा'द मेरी उम्मत के लिये कौन होगा ?" तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना

जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام की तरफ़ वह्य फ़रमाई कि मेरे महबूब (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) को खुश ख़बरी सुना दे कि "मैं उसे उस की उम्मत के सिलसिले में रुस्वा नहीं करूंगा और उसे येह बिशारत भी दे दे कि जब लोगों को क़ब्रों से बाहर निकाला जाएगा तो सब से पहले मेरा हबीब (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) बाहर तशरीफ़ लाएगा । जब लोग जम्अ होंगे तो मेरा महबूब (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ही उन का सरदार होगा और जब तक उस की उम्मत जन्नत में दाख़िल न हो जाए तमाम उम्मतों पर वोह हराम रहेगी ।" (येह सुन कर) आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अब मेरी आंखें ठन्डी हुई और मेरा दिल खुश हुवा ।"

(احیاء علوم الدین، کتاب ذکر الموت وما بعدہ، الباب الرابع فی وفاۃ رسول اللہ ﷺ...... الخ، ج٥، ص٢١٧)

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ हाज़िरे ख़िदमत हुए तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! सुवाल करो ।" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم क्या मौत का वक़्त क़रीब आ गया ?" इरशाद फ़रमाया : "मौत का वक़्त क़रीब आ गया और बहुत क़रीब आ गया ।" अर्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को मुबारक हो जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये तय्यार कर रखा है । काश ! मैं जानता कि आप कहां जा रहे हैं ?" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तरफ़, फिर सिद्रतुल मुन्तहा की तरफ़, फिर जन्नतुल मावा, अर्शे आ'ला और रफ़ीक़े आ'ला की तरफ़, फिर खुश गवार ज़िन्दगी से मिलने वाले हिस्से की तरफ़ ।" आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने अर्ज़ की : "आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को गुस्ल कौन देगा ?" इरशाद फ़रमाया : "मेरे घर के मर्दों में से सब से क़रीब तर ।" अर्ज़ की : "आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को किन कपड़ों में कफ़न दें ?" फ़रमाया : "मेरे इन्ही कपड़ों में और यमनी चादर और मिस्री सफ़ेद कपड़ों में ।" आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने अर्ज़ की : "आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर नमाज़ का तरीक़ा क्या होगा ?" फिर आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ रोने लगे और हम भी रो दिये तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बस करो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाए और तुम्हें अपने नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की तरफ़ से अच्छा बदला अता फ़रमाए । जब तुम मुझे गुस्ल व कफ़न दे चुको तो मुझे मेरे इसी हुजरे में चार पाई पर रख देना और चार पाई क़ब्र के कनारे रख कर कुछ देर के लिये बाहर चले जाना । सब से पहले मुझ पर मेरा रब्ब عَزَّوَجَلَّ दुरूद (या'नी रहमत) भेजेगा । खुद इरशाद फ़रमाता है :

﴿٢﴾ هُوَالَّذِیْ یُصَلِّیْ عَلَیْكُمْ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ

(پ٢٢،الاحزاب:٤٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोही है कि दुरूद भेजता है तुम पर वोह और उस के फ़िरिश्ते । (1)

---

❶....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं "शाने नुज़ूल : हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि जब आयत اِنَّ اللّٰہَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ یُصَلُّوْنَ عَلَی النَّبِیِّ नाज़िल हुई तो हज़रते सिद्दीक़े अकबर ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब आप को अल्लाह तआला कोई फ़ज़्लो शरफ़ अता फ़रमाता है तो हम नियाज़ मन्दों को भी आप के तुफ़ैल में नवाज़ ता है । इस पर अल्लाह तआला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई ।

फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों को मुझ पर दुआए रहमत की इजाज़त देगा। तमाम मख़्लूक़ में सब से पहले हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام मुझ पर नमाज़ पढ़ेंगे (या'नी दुआए रहमत करेंगे), फिर हज़रते मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام फिर हज़रते इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام पढ़ेंगे। फिर हज़रते इज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام मलाइका के बड़े बड़े लश्करों के साथ आएंगे। फिर तुम मुझ पर गुरौह दर गुरौह आना और ख़ूब सलाम पेश करना और चीख़ो पुकार और रोने धोने से मुझे अज़िय्यत न पहुंचाना। और तुम में से जो इमाम हो वोह इब्तिदा करे फिर मेरे अहले बैत के क़राबत दार फिर ख़वातीन का गुरौह और फिर बच्चों का गुरौह।" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : "आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को क़ब्रे अक़्दस में कौन उतारेगा ?" इरशाद फ़रमाया : "मेरे अहले बैत के क़रीबी लोग और उन के साथ बेशुमार मलाइका होंगे, तुम उन को न देख सकोगे मगर वोह तुम्हें देख रहे होंगे। उठो और मेरी तरफ़ से बा'द वालों को सलाम पहुंचा दो।" (المرجع السابق،ص۲۱۹)

सरकार عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का विसाल और सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का हुज़्नो मलाल :

जब हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़िए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने पर्दा फ़रमाया तो लोग मस्जिद में जम्अ़ हो गए और ग़म व अलम से सिस्कियां ले ले कर रोने लगे और दुन्या तारीक हो गई। हज़रते सय्यिदुना बिलाल ह़ब्शी رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ पुकारने लगे : "وَا نَبِيَّاهُ ऐ मेरे जलीलुल क़द्र नबी !" हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهَا की फ़रयाद निकली : وَا اَبَتَاهُ ऐ मेरे अ़ज़ीम बाप !" हज़रते सय्यिदुना ह़सन व हज़रते सय्यिदुना हुसैन رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُمَا ने सदा लगाई : "وَاجَدَّاهُ ऐ हमारे जद्दे करीम !" और हर मुसलमान ने ग़म व अलम में डूब कर कहा : وَاحُزْنَاهُ हाए हमारा रन्जो अलम !"

हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के विसाले पुर मलाल पर शिद्दते ग़म से ख़ुलफ़ाए राशिदीन अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ और अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ की आंखों से सैले अश्क रवां हो गया।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस दुन्या में रहने की तमन्ना क्यूं की जाती है ? हालांकि नबिय्ये मुख़्तार, महबूब ग़फ़्फ़ार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी इस को छोड़ दिया, आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले पुर मलाल पर जिगर जल रहा है और पल्कें आंसूओं में डूब रही हैं, सब्र हाथों से जा रहा है और आंसू बह रहे हैं, आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की जुदाई की चोट ने तमाम मसाइब को कम कर दिया और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रुख़्सत ने दोस्तों की ज़िन्दगी बे कैफ़ कर दी। आंसूओं के हार को मुन्तशिर कर दिया। पस्लियों के दरमियान ग़म की आग रोशन कर दी। जमे हुए आंसूओं को पिघला दिया और ग़म की बुझी हुई आग को भड़का दिया।

तो ऐ ग़म ज़दा ! क्या हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के बा'द भी इस दुन्या में हमेशा रहने की तम्अ़ करता है ? क्या तेरे लिये उन लोगों में इ़ब्रत नहीं जिन्हें गुज़श्ता सालों में महीनों और ज़मानों ने ख़त्म कर दिया ? क्या तेरे लिये उन लोगों में कोई ग़ौरो फ़िक्र नहीं जिन्हें तुझ से पहले मौत ने पछाड़ दिया। इन में से कोई बुढ्ढा था तो कोई अधेड़ उ़म्र, कोई नौजवान था तो कोई बच्चा जब कि कोई तो पैदा होते ही राहे आख़िरत पर चल पड़ा। क्या तू ने इन से इ़ब्रत न पकड़ी जिन को तू ने क़ब्रों में दफ़्न किया जैसे दोस्त, अह़बाब, भाई और हमसाए वग़ैरा। तू कब तक मह़्ज़ दुन्यवी तअ़ल्लुक़ात की त़रफ़ मुतवज्जेह रहेगा ? गोया तुझे मौत का यक़ीन नहीं। क्या मौत के मुतअ़ल्लिक़ तुझे मोहलत ने धोके में डाला या ज़माने (के ह़ालात) ने तुझ से धोका किया।

तुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरी नसीह़त क़बूल कर इस से पहले कि तेरी पेशानी अ़र्क़ आलूद हो, तुझ पर ह़ालते नज़्अ़ और ग़म की कैफ़िय्यत त़ारी हो और मुसलसल आंसू बहाए जाने लगें और तुझे अन्धेरी क़ब्र में डाल दिया जाए जिस में रोशनी बिल्कुल ज़ाहिर न होगी। इस में तो हर जान अपनी कमाई के बदले गिरवी रखी हुई होगी। क्या तू ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की वाज़ेह़ आयाते मुबारका न सुनीं :

﴾٣﴿ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ
(پ٢١، الاحزاب:٢١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है। [1]

क्या तुझे इस फ़रमाने इलाही عَزَّوَجَلَّ ने न डराया ?

﴾٤﴿ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۝ (پ٢٧، الرحمٰن:٢٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ज़मीन पर जितने हैं सब को फ़ना है।

क्या ज़माने ने तुझे नसीह़त न की और येह ख़ुदाई फ़ैसला न सुनाया ?

﴾٥﴿ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ط (پ٤، ال عمران:١٨٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हर जान को मौत चखनी है।

जब मक़ामे मह़मूद पर फ़ाइज़ होने वाली हस्ती भी विसाल फ़रमा गई, जो ह़ौज़े कौषर और लिवाउल ह़म्द के मालिक हैं और जिन के लिये बरोज़े क़ियामत शफ़ाअ़त का वा'दा है। तो तू क्या और तेरी ह़ालत कैसी ? ऐ ठुकराए और धुत्कारे हुए इन्सान ! तेरा सारा नामए आ'माल गुनाहों से सियाह है, तेरे आ'माल को ठुकरा दिया गया है। ऐ फ़ानी ज़माने से धोका खाने वाले और बेक़ुसूरों पर मज़ालिम ढाने वाले ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ज़ुल्म बहुत बुरा है। ऐ लोगों को अपने ज़ुल्म से डराने वाले ! कल बरोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सब मज़लूम (बदला लेने के लिये) जम्अ़ होंगे।

[1]...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं "इन का अच्छी त़रह़ इत्तिबाअ़ करो और दीने इलाही की मदद करो और रसूले करीम صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का साथ न छोड़ो और मसाइब पर सब्र करो और रसूले करीम صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर चलो येह बेहतर है।"

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! तुम्हें रग़बत दिलाई गई लेकिन तुम राग़िब न हुए। तुम्हें ख़ौफ़ दिलाया गया लेकिन तुम मरऊब न हुए। मौत ने तुम से पहलों को हड़प कर के तुम्हें बेदार किया लेकिन तुम बेदार न हुवे। क़ुरआने ह़कीम ने तुम्हें नसीह़त की लेकिन तुम बुराई से बाज़ न आए न नसीह़त ह़ासिल की। गोया कूच का नक़्क़ारा बजाने वाला तुम्हारी मह़फ़िल में निदा दे रहा है : "ऐ सोने वालो ! ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो जाओ, तुम्हारा बुलावा आ गया है।" और पुकार रहा है :

जनाज़ा आगे बढ़ कर कह रहा है ऐ जहां वालो ! *मेरे पीछे चले आओ तुम्हारा राहनुमा मैं हूं*

क्या मह़बूबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल से भी तुम ने कोई इ़ब्रत न पकड़ी ? क्या तुम्हें इस ज़बरदस्त चोट लगने से भी कोई नसीह़त न मिली ? क्या आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के तशरीफ़ ले जाने से भी तुम्हें अपनी बेहोशी के नशे से इफ़ाक़ा न हुवा ? क्या तुम्हारे मौत के क़रीब होने ने तुम्हें सोच में मुब्तला न किया ? क्या तुम ने अपने से पहले शुरफ़ा की मौत से इ़ब्रत ह़ासिल न की ? क्या तुम्हें अपने मां बाप और बच्चों को दफ़्न कर के भी ह़सरत त़ारी न हुई ? तुम कैसे लज़्ज़ात से लुत़्फ़ अन्दोज़ होते हो ह़ालांकि हमारे साह़िबे मो'जिज़ात आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : اِنَّ لِلۡمَوۡتِ لَسَکَرَاتٍ या'नी मौत की सख़्तियां बहुत हैं।"

(صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب مرض النّبی ﷺ ووفاتہ، الحدیث۴۴۴۹، ص۳۶۵)

क्या तुम्हारी ए़शो इ़शरत वाली ज़िन्दगी की मिठास कड़वी न हुई ? जब फ़ौत होने वाले ने मौत के वक़्त कहा : "وَاکَرۡبَاہُ हाए मौत की सख़्ती।" क्या तुम्हें ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के दर्द ने न रुलाया ? जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने अपने वालिदे मोह़तरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल पर कहा : "وَاکَرۡبِیۡ بِکَرۡبِکَ، یَا اَبَتَاہُ या'नी ऐ मेरे अब्बा जान ! आप की तक्लीफ़ से मुझे कितना ग़म हुवा।" कहां हैं अ़क़्ल वाले ? कहां हैं वोह जो अहम कामों में मश्ग़ूल रहते थे ? कहां हैं जो इस फ़ानी घर में हमेशा रहने के धोके में मुब्तला थे ? जब कि मह़बूबे ख़ुदा, अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم भी इस दुन्या से विसाल फ़रमा गए।

अम्बिया को भी अजल आनी है मगर ऐसी कि फ़क़त़ आनी है
फिर उसी आन के बा'द उन की ह़यात मिस्ले साबिक़ वोही जिस्मानी है
रूह़ तो सब की है ज़िन्दा उन का जिस्मे पुरनूर भी रूह़ानी है
औरों की रूह़ हो कितनी ही लत़ीफ़ उन के अजसाम की कब सानी है
पाउं जिस ख़ाक पे रख दें वोह भी रूह़ है पाक है नूरानी है
उस की अज़्वाज को जाइज़ है निकाह उस का तर्का बटे जो फ़ानी है
येह हैं ह़य्य अबदी इन को "रज़ा" सिद्क़े वा'दा की क़ज़ा मानी है

وَصَلَّی اللّٰہُ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی آلِہٖ وَ صَحۡبِہٖ اَجۡمَعِیۡن

बयान 47 : **अनोखे वाक़िआत**

ह़म्दे बारी तआ़ला :

तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** तआ़ला के लिये हैं जिस ने अपने बन्दों में से जिसे चुन लिया उसे अपनी इ़बादत के लिये पसन्द फ़रमाया। और अपने पसन्दीदा बन्दे को अपनी बारगाहे अक़्दस की त़रफ़ माइल फ़रमाया तो बन्दे ने भी उस की त़रफ़ माइल होने और इत़ाअ़त करने में जल्दी की। और उस ने अपने चाहने वाले बन्दे की ठहरी हुई हिम्मतों को ह़रकत दी तो येह उस की ह़ुसूले मुराद का सबब बन गया और उस ने बन्दे से उन रुकावटों को दूर कर दिया। उसे दूरी के बा'द क़ुर्ब बख़्शा। रात के आख़िरी ह़िस्सों में उसे हम नशीनी का शरफ़ अ़त़ा फ़रमाया। उसे असरार व रुमूज़ पर मुत्तलअ़ किया। और बन्दा मह़ज़ अपनी ख़्वाहिश व कोशिश से उस मक़ाम तक नहीं पहुंचा। और उसी ने उसे इस बात की तौफ़ीक़ दी जो उस तक पहुंचाती है। और उसे अपनी हिदायत के रास्ते पर गामज़न किया। और जब उसे अपने अ़हद और मह़ब्बत की ह़िफ़ाज़त करने वाला पाया तो उस के दिल को अपनी मह़ब्बत व चाहत से भर दिया और उस पर अपने फ़ज़्लो इन्आ़म के ज़रीए़ तजल्ली फ़रमाई। जब कि दूसरी त़रफ़ ग़ाफ़िल बन्दा नींद और आराम की लज़्ज़तों में मुनहमिक है। ह़ालांकि वोह तो फ़रमा रहा है कि "ऐ मेरे बन्दे ! सुन मैं ही तुझ पर तजल्ली फ़रमाने वाला और निगाहे करम करने वाला हूं।" और जिसे येह रुत्बा मिल गया बिला शुबा वोह अपना मक़्सूद व सआ़दत मन्दी पाने में कामयाब हो गया।

अगर ग़ाफ़िल बन्दा जान लेता कि उस ने क्या खोया तो वोह अकषर नौह़ा कुनां रहता। अगर वोह मह़बूब के अपने दोस्तों से ख़ित़ाब को सुन लेता तो कभी भी वोह ह़सरत व यास उस के दिल से न निकलती। अगर वोह जलवए मह़बूब का मुशाहदा कर लेता तो जहान से अलग हो कर रह जाता। सबक़त ले जाने वाले सबक़त ले गए और काम तो पूरा हो चुका। और उस का फ़रमाने ज़ीशान है :

وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُط (پ١، البقرة: ١٠٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और **अल्लाह** अपनी रह़मत से ख़ास करता है जिसे चाहे।*

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है, ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "जो क़ौम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के घरों में से किसी घर में किताबुल्लाह की तिलावत और इस का बाहम दर्स देने के लिये जम्अ़ होती है तो उन पर सुकून नाज़िल होता है, रह़मत उन्हें ढांप लेती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन का ज़िक्र फ़िरिश्तों में फ़रमाता है।" (صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب فضل الاجتماع......الخ، الحدیث ٢٦٩٩، ص ١١٤٧)

कषरते इ़बादत करने वाला जन्नती :

ह़ज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ़ बिन अ़ब्दुल्लाह عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہ फ़रमाते हैं, मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना हिश्शाम बिन यह़्या किनानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوۡرَانِی ने इरशाद फ़रमाया : "क्या मैं आप को वोह वाक़िआ़ न बयान करूं जो मेरी आंखों ने देखा और उस वक़्त मैं ख़ुद वहां मौजूद था ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे इस से नफ़्अ़ दिया, उम्मीद है तुम्हें भी इस से नफ़्अ़ होगा।" मैं ने कहा : "ऐ अबल बलीद ! मुझे

बयान कीजिये।" तो उन्हों ने बयान फ़रमाया : "हम ने सिने 88 हिजरी में रूम की सरज़मीन पर जिहाद किया। हमारे साथ सईद बिन हर्ष नामी एक नेक शख़्स था, वोह कषरत से इबादते इलाही करता, दिन को रोज़ा रखता, रात को इबादत करता। जब हम चलते तो वोह कुरआने पाक की तिलावत करता। जब ठहरते तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता। फिर एक रात ऐसी आई कि हम सख़्त ख़ौफ़ में मुब्तला हो गए। मैं और अयास पहरादारी के लिये निकले, हम एक ऐसे क़ल्अ़ का मुहासरा किये हुए थे जिस का मुआ़मला हम पर सख़्त दुश्वार हो चुका था। मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन हर्ष عليه رحمة الرب को उस रात भी इबादत में मश्ग़ूल पाया और मसाइब पर उस के सब्र करने से मुझे बहुत तअ़ज्जुब हुवा। जब सुब्ह़ तुलूअ़ हुई तो मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए, आप पर नफ़्स का भी कुछ ह़क़ है, आप आराम क्यूं नहीं फ़रमाते ?" तो वोह रो दिये और फ़रमाया : "ऐ मेरे भाई ! येह सांसें शुमार की जा चुकी हैं, उम्र घट रही है, दिन पूरे हो चुके हैं, मेरे पीछे मौत है और मुझे अपनी रूह़ निकलने का इन्तिज़ार है।"

रावी फ़रमाते हैं : "इस बात ने मुझे रुला दिया। मैं ने उन से कहा : "मैं आप को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम देता हूं कि आप ख़ैमे में दाख़िल हो कर आराम फ़रमाएं।" जब मैं ख़ैमे में दाख़िल हुवा तो वोह सो चुके थे। मैं ख़ैमे के दरवाज़े पर बैठा हुवा था कि अचानक अन्दर से बातों की आवाज़ सुनाई दी तो मैं ने दिल में कहा : "ख़ैमे में इन के सिवा और तो कोई नहीं।" बहर ह़ाल मैं कुछ आगे बढ़ा तो देखा कि वोह नींद में मुस्कुरा रहे हैं और किसी से बातें कर रहे हैं। मैं ने उन की एक बात याद कर ली और वोह येह कह रहे थे : "मैं लौटना नहीं चाहता।" फिर उन्हों ने अपना दायां हाथ बुलन्द किया गोया कुछ ढूंढ रहे हों। फिर हंसते हुए आहिस्तगी से नीचे कर लिया। और हांपते हुए बेदार हो गए। मैं ने उन को सीने से लगा लिया तो उन्हों ने दाएं बाएं मुड़ कर देखा फिर कुछ सुकून व इत़्मीनान ह़ासिल हुवा और ह़वास बह़ाल हुए तो कलिमए त़य्यिबा पढ़ने और तक्बीर कहने लगे। मैं ने अ़र्ज़ की : "क्या मुआ़मला है ?" फ़रमाया : "ख़ैर है।" मैं ने पूछा : "मुझे बताइये क्यूंकि मैं ने आप को येह कहते हुए सुना है कि मैं वापस नहीं लौटना चाहता।" फिर मैं ने देखा कि आप ने अपना हाथ बढ़ाया और कुछ देर बा'द आहिस्ता आहिस्ता नीचे कर लिया।" उन्हों ने जवाब दिया : "मैं नहीं बताऊंगा।"

फिर जब मैं ने उन्हें क़सम दी तो फ़रमाया : "जब तक मैं ज़िन्दा रहूं आप इस बात को ज़ाहिर नहीं करोगे।" मैं ने कहा "हां ठीक है।" तो फ़रमाने लगे : "मैं ने देखा गोया क़ियामत क़ाइम हो चुकी है। लोग हक्के बक्के, अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के हुक्म का इन्तिज़ार करते अपनी क़ब्रों से निकल रहे हैं। इसी दौरान दो आदमी मेरे पास आए, उन जैसा ह़सीन चेहरे वाला मैं ने न देखा था। उन्हों ने मुझे सलाम किया, मैं ने सलाम का जवाब दिया फिर उन्हों ने मुझ से कहा : "ऐ सईद ! आप को बिशारत हो। आप के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये गए, मेह़नत वुसूल हुई, अ़मल क़बूल हुवा और दुआ़ भी मक़बूल हुई, आप को जल्द ख़ुश ख़बरी दी जाएगी, आप हमारे साथ चलें ताकि हम आप को

वोह ने'मतें दिखाएं जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के लिये तय्यार कर रखी हैं।" ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ह़र्ष علیہ رحمۃ الرّب फ़रमाते हैं : "मैं उन के साथ चल दिया, उन्हों ने मुझे मैदाने ह़श्र से ग़ाइब कर दिया तो अचानक एक ख़ूब सूरत घोड़ा हमारे सामने था जो दुन्यवी घोड़ों जैसा न था बल्कि उचकने वाली बिजली की मानिन्द या तेज़ चलने वाली हवा की त़रह़ था। हम उस पर सुवार हो कर चल पड़े और देखते ही देखते एक ऐसे बुलन्द मह़ल के पास जा पहुंचे जिस का कनारा दिखाई न देता था। वोह चांदी से जड़ा हुवा था और उस से रोशनी झलक रही थी। जब हम उस के दरवाज़े पर पहुंचे तो वोह ख़ुद ब ख़ुद खुल गया। हम अन्दर दाख़िल हुए तो वहां ऐसी अश्या देखीं जिन की न कोई ता'रीफ़ बयान कर सकता है और न किसी इन्सानी दिल पर उस का खटका गुज़रा होगा। उस में हूरें थीं, सितारों की गिनती के बराबर ख़ुद्दाम और गुलाम भी थे। उन्हों ने हमें देखा तो सुरीली आवाज़ में येह नग़मे अलापने लगे : اَھْلًا وَّ سَھْلًا مَرْحَبًا येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वली तशरीफ़ लाया है।"

हम चलते चलते एक ऐसे इजतिमाअ़ में पहुंचे जहां हीरे जवाहिरात से आरास्ता सोने के तख़्त बिछे हुए थे और इर्द गिर्द सोने की कुरसियों का घेरा था। हर तख़्त पर एक ऐसी ख़ूब सूरत ख़ातून बैठी थी जिस का वस्फ़ कोई मख़्लूक़ न बयान कर सके, और उन के बीच में एक ऐसी औ़रत जल्वा फ़रमा थी जो क़दो क़ामत, हुस्नो जमाल और वस्फ़े कमाल में उन सब से बरतर थी। यहां पहुंच कर मेरे साथ वाले दोनों मर्द येह कह कर ग़ाइब हो गए कि "येह आप का घर, ख़ानदान और आराम गाह है।"

उन के जाने के बा'द वोह ख़ूब सूरत औ़रतें "मरह़बा ख़ुश आमदीद" कहते हुए मेरी त़रफ़ ऐसे बढ़ीं जैसे कोई ग़ाइब जब अपने अहल में वापस आता है तो उस के घर वाले उस की त़रफ़ लपकते हैं। कुछ देर के बा'द उन्हों ने मुझे दरमियाने तख़्त पर बैठी औ़रत के पास बिठा दिया और कहा : "येह आप की बीवी है और आप के लिये इस जैसी और भी हूरें हैं, वोह सब आप की मुन्तज़िर हैं।" हम ने आपस में गुफ़्त्गू की तो मैं ने पूछा : "मैं कहां हूं ?" उस ने जवाब दिया : "जन्नतुल मावा में।" मैं ने पूछा : "तुम कौन हो ?" जवाब दिया : "मैं आप की हमेशा रहने वाली बीवी हूं।" मैं ने पूछा : "दूसरी कहां हैं ?" उस ने कहा : "वोह आप के दूसरे मह़ल्लात में हैं।" मैं ने कहा : 'मैं आज आप के पास ठहरूंगा और कल उन के पास जाऊंगा।" फिर मैं ने उस की त़रफ़ अपना हाथ बढ़ाया तो उस ने नर्मी से मेरा हाथ रोक लिया और कहा : "आज तो आप दुन्या की त़रफ़ लौट जाएंगे और तीन दिन बा'द आएंगे।" मैं ने कहा : "मैं दुन्या की त़रफ़ लौटना पसन्द नहीं करता।" तो उस ने कहा : "आप का दुन्या में लौटना ज़रूरी है और तीन दीन बा'द आप हमारे हां इफ़्त़ार करेंगे।" फिर मैं उस मुबारक इजतिमाअ़ से उठा और वोह मुझे रुख़्सत करने उठी तो मेरी आंख खुल गई।" ह़ज़रते सय्यिदुना ह़िश्शाम رحمۃ اللہ السلام फ़रमाते हैं : "येह सुन कर मैं रोने लगा और उन से कहा : "ऐ सईद ! आप को मुबारक हो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा कीजिये, उस ने आप के अ़मल का षवाब दिखा दिया है।" उन्हों ने दरयाफ़्त फ़रमाया "क्या जो आप ने देखा वोह किसी और ने भी देखा है ?" तो मैं ने कहा : "नहीं।" इस पर उन्हों ने फ़रमाया : "मैं आप को क़सम देता

हूं कि जब तक मेरी ज़िन्दगी है इस बात को छुपाएंगे।'' फिर वोह खड़े हुए, वुज़ू किया, ख़ुश्बू लगाई और अपने हथयार उठा कर मैदाने जंग में पहुंच गए। वोह रोज़े से थे और रात तक लड़ते रहे फिर वापस आए। लोग इन की लड़ाई के मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्त्गू कर रहे थे और कह रहे थे : ''हम ने ऐसा लड़ने वाला नहीं देखा, येह तो अपनी जान को दुश्मनों के तीरों और नेज़ों के आगे डाल देते हैं, और हर बार वोह पस्पा हुए।'' तो मैं ने दिल में कहा : ''अगर येह इन का मर्तबा देख लेते तो इन जैसा ही करते'' फिर आख़िर रात तक क़ियाम की ह़ालत में रहे और सुब्ह़ रोज़े की ह़ालत में की और दूसरे दिन पहले दिन से ज़ियादा लड़े और फिर रात को क़ियाम किया। सुब्ह़ फिर रोज़े की ह़ालत में थे और पहले से भी ज़ियादा क़िताल किया। ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल वलीद علیہ رحمۃ اللہ الوحید फ़रमाते हैं : ''मैं उन के साथ हो लिया ताकि देखूं कि वोह क्या करते हैं तो मैं ने देखा कि वोह पूरा दिन अपनी जान को हलाकतों में डाले रहे लेकिन उन्हें कोई नुक़्सान न हुवा। बिल आख़िर ग़ुरूबे आफ़्ताब के वक़्त एक तीर उन के गले में आ लगा जिस के सबब वोह ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए। मैं उन्हीं को देख रहा था कि लोग चीख़ो पुकार करते हुए तेज़ी के साथ उन की त़रफ़ बढ़े और उन्हें मैदाने कारज़ार से बाहर उठा लाए। जब मैं ने उन को देखा तो कहा : ''ऐ सईद ! आप को मुबारक हो कि आज आप जन्नत में रोज़ा इफ़्त़ार करेंगे, काश ! मैं भी आप के साथ होता।'' रावी फ़रमाते हैं : 'उन्हों ने अपने निचले होंटों को ह़रकत दी और मुस्कुराते हुए कहा : ''اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ صَدَّقَنَا وَعْدَهٗ या'नी सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने अपना वा'दा पूरा फ़रमाया।'' फिर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه का विसाल हो गया। ह़ज़रते सय्यिदुना हिश्शाम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ السَّلَام कहते हैं : ''मैं ने ब आवाज़े बुलन्द कहा : ''ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दो !

﴿۱﴾ لِمِثْلِ هٰذَا فَلْیَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ۝ (پ۲۳، الصّٰفّٰت:۶۱) *तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐसी ही बात के लिये कामियों को काम करना चाहिये।*

मेरी बात सुनो ! मैं तुम्हें तुम्हारे इस भाई के मुतअ़ल्लिक़ बताऊं।'' लोग मुतवज्जेह हुए तो मैं ने उन्हें सारा मुआ़मला बताया तो वोह रोने लगे फिर उन्हों ने तक्बीर कही जिस से पूरा लश्कर दहल गया और येह बात फैल गई। अमीरे लश्कर ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्लमा عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰه को मा'लूम हुवा तो वोह ख़ुद तशरीफ़ लाए और हम ने उन की मय्यित को रखा ताकि नमाज़े जनाज़ा पढ़ें। मैं ने अमीरे लश्कर ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्लमा عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰه से अ़र्ज़ की : ''आप इन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाएं।'' उन्हों ने फ़रमाया : ''इन की नमाज़े जनाज़ा वोह पढ़ाए जो इन की ह़ालत के मुतअ़ल्लिक़ जानता हो।'' फिर हम ने उन की नमाज़े जनाज़ा अदा की और उन को उसी जगह दफ़्न कर दिया। लोग रात को येही गुफ़्त्गू करते हुए सो गए। जब सुब्ह़ हुई तो हम ने इस वाक़िए का दोबारा ज़िक्र किया तो लोग यक्बारगी चिल्ला उठे और दुश्मन पर टूट पड़े। चुनान्चे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की बरकत से उसी दिन क़ल्ए पर फ़त्ह़ अ़त़ा फ़रमाई।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन)

सरकार صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का वसीला राहिबों के काम आ गया :

हज़रते सय्यिदुना अबू या'कूब तबरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : "एक दफ़्आ़ मैं मुल्के शाम के इरादे से सफ़र पर निकला तो एक बे आबो गिया मैदान में चन्द रोज़ इस त़रह़ गुज़रे कि मैं हलाकत के क़रीब पहुंच गया। इसी ह़ालत में, मैं ने दो राहिब इस त़रह़ चलते देखे गोया वोह अपने घरों से निकल कर किसी क़रीबी गिर्जा की त़रफ़ जा रहे हों। मैं उन की त़रफ़ गया और उन से पूछा : "आप कहां जा रहे हैं ?" उन्हों ने कहा : "हम नहीं जानते।" मैं ने पूछा "कहां से आ रहे हैं ?" जवाब दिया : "हम नहीं जानते।" मैं ने पूछा : "क्या आप जानते हैं कि आप कहां हैं ?" जवाब मिला : "हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुल्क में हैं और उस के हुज़ूर ह़ाज़िर हैं।" मैं ने अपने दिल में कहा : "येह दोनों राहिब तुझ से ज़ियादा ह़क़ीक़ी मुतवक्किल मा'लूम होते हैं।' मैं ने उन से कहा : "क्या आप मुझे अपने साथ रहने की इजाज़त देते हैं ?" कहने लगे : "आप की मरज़ी।" फिर हम चलने लगे। जब शाम हुई तो वोह नमाज़ के लिये खड़े हो गए और मैं ने भी तयम्मुम किया और नमाज़े मग़रिब अदा की। वोह मुझे तयम्मुम कर के नमाज़ पढ़ते देख कर मुतअ़ज्जिब हुए। जब वोह नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो एक ने ज़मीन को कुरेदा तो उस से पानी का चश्मा जारी हो गया, और उस के पहलू में खाना रखा हुवा था। मुझे इस से बड़ा तअ़ज्जुब हुवा। फिर उन्हों ने मुझे कहा : "क़रीब आएं और खाएं पियें।" हम ने खाया और पानी भी पिया। मैं ने पानी से वुज़ू किया। इस के बा'द पानी रुक गया। फिर वोह दोनों नमाज़ के लिये खड़े हो गए और मैं अ़लाह़िदा नमाज़ पढ़ने लगा यहां तक कि सुब्ह़ हो गई। मैं ने नमाज़े फ़ज्र अदा की फिर वोह दोनों उठ खड़े हुए और रात तक चलते रहे। मैं भी साथ ही था। जब शाम हुई तो उन में से एक आगे बढ़ा और अपने साथी के साथ मिल कर नमाज़ पढ़ी और फिर दुआ़ कर के ज़मीन को कुरेदा तो पानी ज़ाहिर हुवा और खाना भी ह़ाज़िर हो गया। उन्हों ने कहा : "आओ खाना खाएं।" खाने पीने से फ़ारिग़ हो कर मैं ने नमाज़ के लिये वुज़ू किया। फिर पानी रुक गया। जब तीसरी रात आई तो उन्हों ने मुझ से कहा : "ऐ मुसलमान ! आज रात तुम्हारी बारी है।" हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन या'कूब तबरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : "मुझे उन की बात से बड़ी शर्म आई। मैं सख़्त ग़म और अ़जीब मुआ़मले में फंस गया। ख़ैर ! मैं ने दिल में कहा : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ गुनाहों की वजह से तेरी बारगाह में मेरा मक़ाम व मर्तबा तो नहीं, लेकिन मैं तुझे तेरे नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के उस मक़ाम व मर्तबे का वासित़ा देता हूं जो तेरी बारगाह में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़ासिल है कि मुझे इन के सामने रुस्वा न करना और इन्हें मेरी और अपने नबी हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दीन की तकलीफ़ से ख़ुश न करना।" फ़रमाते हैं : "अचानक एक चश्मा जारी हो गया और कषीर खाना भी ह़ाज़िर हो गया। हम ने खाया पिया। हमारी येही ह़ालत रही यहां तक कि रात आ गई और इस बार जब पानी और खाना ज़ाहिर हुवा तो मुझ पर रिक़्क़त त़ारी हो गई और मैं बे साख़्ता

रो पड़ा। वोह भी रोने लगे और रोते रोते हमारी आवाज़ें बुलन्द हो गईं। जब मुझे कुछ इफ़ाक़ा हुवा तो उन दोनों ने पूछा : "आप क्यूं रो रहे हैं ?" मैं ने कहा : "मैं बहुत गुनहगार हूं, मेरा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में ख़ास मक़ाम व मर्तबा नहीं जो इस करामत को पहुंच सके।" उन्हों ने पूछा : "तो फिर येह सब कैसे तुम्हारे लिये ज़ाहिर हुवा ?" मैं ने कहा : "मैं ने अपने प्यारे नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़त व वजाहत का वसीला पेश किया और अ़र्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ अगर्चे मैं बहुत गुनहगार हूं, और येह तेरे नबिय्ये मोह़तरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दीन के दुश्मन हैं, मुझे इन के सामने दीन के मुआ़मले में रुस्वा न फ़रमा।" तो इस की बदौलत वोह कुछ ज़ाहिर हुवा जो तुम देख चुके हो, इस लिये इस में मेरी कोई करामत नहीं बल्कि येह सब मेरे नबिय्ये मोह़तरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का मो'जिज़ा है।"

येह सुन कर वोह कहने लगे : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! हम भी ऐसे ही थे। जब हम ने तुम्हें देखा तो तुम्हारी ह़ालत देख कर मुतअष्षिर हुए। जब वुज़ू और खाने का वक़्त हुवा तो हम ने तुम्हारी जैसी दुआ़ की और कहा : "या अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ अगर इस का दीन ह़क़ है और इस के नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बर ह़क़ हैं तो इस के नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े हमारे लिये पानी और खाना ज़ाहिर फ़रमा दे।" इस दुआ़ से खाना ह़ाज़िर हो गया जो तुम ने देखा। येह सब तुम्हारे नबिय्ये मोह़तरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का मो'जिज़ा और बरकत है। अब हम ने जान लिया कि येह दीन ह़क़ है और नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में अ़ज़ीम हैं। अपना हाथ बढ़ाइये, हम गवाही देते हैं कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं और ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के रसूल हैं। उन्हों ने इस्लाम क़बूल कर लिया। हम मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की त़रफ़ इकठ्ठे निकले और एक मुद्दत तक वहां रहे। फिर जब हम शाम की त़रफ़ रवाना हुए तो जुदा हो गए। अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! जब भी मुझे येह वाक़िआ़ याद आता है दुन्या मेरी नज़रों में ह़क़ीर हो जाती है।"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह दोनों राहिब थे, इन के लिये सुई के सर के बराबर ईमान चमका तो इन्हों ने सीधा रास्ता देख लिया और सच्चाई के रास्ते पर चल पड़े। और ऐ मिस्कीन ! ग़ौर कर ! तेरी उ़म्र अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की नाफ़रमानियों में कट गई, तेरी ज़िन्दगी ख़सारे में गुज़र गई, फिर भी तू दरयाए ग़फ़्लत में ग़ोत़ा ज़न है ? क़बूलिय्यत के ख़ुश गवार झोंके चल चुके और तू अभी तक नाफ़रमानी की शराब से नशे में चूर है ? और तुझे होश ही नहीं आता ? हमारी बारगाह में इख़्लास व तस्दीक़ लिये जल्दी से ह़ाज़िर हो जा। बेशक हम ने तेरे लिये राहे हिदायत खोल दिया और तौफ़ीक़ की त़रफ़ तेरी रहनुमाई की।

राहिब के 62 सुवालात और अबू यज़ीद बिस्त़ामी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورَانِی के जवाबात :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद बिस्त़ामी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورَانِی फ़रमाते हैं : "एक दिन मैं किसी सफ़र में अपनी ख़ल्वत व राह़त से लुत़्फ़ पा रहा था। ग़ौरो फ़िक्र में मश्ग़ूल और यादे इलाही عَزَّ وَجَلَّ से मानूस था कि अचानक मेरे दिल में निदा दी गई : "ऐ अबू यज़्दी ! समआ़न के गिर्जा घर में

जाओ और राहिबों के साथ उन की ईद और कुरबानी में शिर्कत करो। इस में एक ख़बर और एक अहम मुआ़मला है।'' फ़रमाते हैं : मैं ने इस ख़याल से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब की और कहा, ''मैं इस की परवाह नहीं करूंगा।'' जब रात हुई तो ख़्वाब में हातिफ़े ग़ैबी की आवाज़ आई। उस ने वोही बात दोहराई। मैं हांपते कांपते बेदार हो कर उठ बैठा और अभी इसी सोच में गुम था कि दिल में फिर निदा आई ''तुम्हें डरने की ज़रूरत नहीं, तुम हमारे वली व नेक बन्दे हो, तुम्हारा नाम फ़रमां बरदारों के (दफ़्तर) रजिस्टर में दर्ज है। लेकिन हमारी ख़ात़िर राहिबों का सा लिबास और ज़ुन्नार पहन लो, तुम पर कोई गुनाह नहीं।'' आप फ़रमाते हैं : ''मैं सुब्ह़ सवेरे उठा और हुक्म की बजा आवरी में जल्दी की। राहिबों का सा लिबास पहना और समआ़न के गिर्जा घर पहुंच गया। जब उन का बड़ा पादरी आया तो तमाम राहिब इकट्ठे हो गए और उस को सुनने के लिये सब ने कान लगा दिये लेकिन इस के पाउं लड़ खड़ा गए और वोह कोई बात न कर सका गोया उस के मुंह में लगाम दे दी गई हो। येह कैफ़िय्यत देख कर पादरियों और राहिबों ने उस से पूछा : ''ऐ सरदार ! कौन सी चीज़ आप को गुफ़्तगू से मानेअ़ है ? हम तो आप की बातों से हिदायत पाते और आप के इल्म की पैरवी करते हैं।'' उस ने जवाब दिया : ''मुझे येह चीज़ गुफ़्तगू से मानेअ़ है कि आज तुम्हारे दरमियान कोई मुह़म्मदी बैठा है और वोह तुम्हारे दीन का इम्तिह़ान लेने और तुम पर ह़म्ला करने आया है।'' उन्हों ने कहा : ''हमें दिखा दें हम उसे अभी क़त्ल कर देते हैं।'' उस ने कहा : ''उसे दलील व बुरहान के साथ क़त्ल करो, मैं उस से इम्तिह़ान लेना चाहता हूं, उस से इल्मुल अदयान (या'नी दीनों के इल्म) के मुतअ़ल्लिक़ सुवालात करूंगा, अगर उस ने साफ़ साफ़ जवाबात दे दिये तो हम उसे कुछ न कहेंगे और अगर वज़ाह़त न कर सका तो उसे क़त्ल कर देंगे। इम्तिह़ान के वक़्त ही आदमी इ़ज़्ज़त पाता है या ज़लील होता है।'' सब राहिब बोले : ''आप जो चाहते हैं करें, हम यहां मुफ़ीद बातें सीखने के लिये ही ह़ाज़िर हुए हैं।'' अब उन का बड़ा सरदार खड़ा हुवा और ज़ोर से आवाज़ दी : ''ऐ मुह़म्मदी ! तुझे मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) का वासित़ा ! जहां भी है खड़ा हो जा ताकि सब तुझे देख लें। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد इस त़रह़ खड़े हुए कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ज़बान पर ह़म्दो षना और ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ जारी था।'' पादरियों के सरदार ने कहा : ''ऐ मुह़म्मदी ! मैं तुझ से कुछ सुवालात करूंगा और सुन ! अगर तू ने इन के जवाबात वज़ाह़त के साथ दे दिये तो हम तेरी पैरवी करेंगे वरना तुझे क़त्ल कर देंगे।''

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد ने इरशाद फ़रमाया : ''नक़्ली व अ़क़्ली उ़लूम में से जो चाहो पूछो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारी गुफ़्तगू को मुलाह़ज़ा फ़रमा रहा है।'' बड़े पादरी ने पूछा : ﴾1﴿.....मुझे उस एक के मुतअ़ल्लिक़ बताओ जिस का दूसरा नहीं ﴾2﴿......उन दो के मुतअ़ल्लिक़ बताओ जिन का तीसरा नहीं ﴾3﴿......उन तीन के मुतअ़ल्लिक़ बताओ जिन का चौथा नहीं ﴾4﴿......उन चार के मुतअ़ल्लिक़ बताओ जिन का पांचवां नहीं ﴾6﴿......उन पांच के मुतअ़ल्लिक़ बताओ जिन का छटा नहीं ﴾6﴿......उन छे के मुतअ़ल्लिक़ बताओ जिन का सातवां नहीं

﴾7﴿......उन सात के मुतअ़ल्लिक़ बताओ जिन का आठवां नहीं ﴾8﴿......उन आठ के मुतअ़ल्लिक़ बातओ जिन का नववां नहीं ﴾9﴿......उन नव के मुतअ़ल्लिक़ बताओ जिन का दसवां नहीं। ﴾10﴿...... عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ (या'नी मुकम्मल दस दिन) से मुराद कौन से दिन हैं ? ﴾11﴿......उन ग्यारह के मुतअ़ल्लिक़ बताओ जिन का बारहवां नहीं ﴾12﴿......उन बारह के मुतअ़ल्लिक़ बताओ जिन का तेरहवां नहीं ﴾13﴿......उन तेरह के मुतअ़ल्लिक़ बताओ जिन का चौदहवां नहीं ﴾14﴿......ऐसी क़ौम के मुतअ़ल्लिक़ बताओ जिन्हों ने झूट बोला फिर भी जन्नत में दाख़िल कर दिये गए ﴾15﴿......उस क़ौम के मुतअ़ल्लिक़ बताओ जिन्हों ने सच बोला मगर आग में दाख़िल कर दिये गए ﴾16﴿......तुम्हारे जिस्म में तुम्हारे नाम का ठिकाना कहां है ? ﴾17﴿......اَلذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ﴾18﴿......اَلْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ﴾19﴿......اَلْجٰرِيٰتِ يُسْرًا और ﴾20﴿......فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا (پ٢٦، الذّٰريٰت: ١تا٤) से क्या मुराद है ? ﴾21﴿......कौन सी शै बिग़ैर रूह़ के सांस लेती है ? ﴾22﴿......उन चौदह के मुतअ़ल्लिक़ बताओ जिन्हों ने रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ से कलाम किया ? ﴾23﴿......कौन सी क़ब्र साहिबे क़ब्र को ले कर चली ? ﴾24﴿......वोह कौन सा पानी है जो न आस्मान से उतरा न ज़मीन से निकला ? ﴾25﴿......उन चार के नाम बता जो बाप की पुश्त से पैदा हुए, न मां के बत़न से ? ﴾26﴿......ज़मीन पर सब से पहला ख़ून किस का बहाया गया ? ﴾27﴿......उस शै के मुतअ़ल्लिक़ बताओ जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पैदा किया और फिर ख़ुद ही ख़रीद लिया ? ﴾28﴿......ऐसी शै के मुतअ़ल्लिक़ बताओ जिस को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पैदा किया और ख़ुद ही नापसन्द फ़रमाया ? ﴾29﴿......उस चीज़ के मुतअ़ल्लिक़ बताओ जिस को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पैदा किया और अ़ज़मत भी बख़्शी ? ﴾30﴿......उस चीज़ के मुतअ़ल्लिक़ बताओ जिस को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पैदा किया और फिर ख़ुद ही इस के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया ? ﴾31﴿......सब से अफ़्ज़ल औ़रतें कौन हैं ? ﴾32﴿......सब से अफ़्ज़ल दरया कौन से हैं ? ﴾33﴿......अफ़्ज़ल तरीन पहाड़ कौन सा है ? ﴾34﴿......सब से अफ़्ज़ल चोपाया कौन सा है ? ﴾35﴿......अफ़्ज़ल तरीन महीना कौन सा है ? ﴾36﴿......सब से अफ़्ज़ल रात कौन सी है ? ﴾37﴿...... "اَلطَّامَّةُ" से क्या मुराद है ? ﴾38﴿......वोह कौन सा दरख़्त है जिस की बारह शाख़ें हैं, हर शाख़ पर तीस (30) पत्ते हैं और हर पत्ते में पांच रंग हैं, दो सूरज की रोशनी में और तीन साए में ? ﴾39﴿......वोह कौन सी चीज़ है जिस ने बैतुल ह़राम का ह़ज किया और त़वाफ़ किया ह़ालांकि उस में रूह़ नहीं और न ही उस पर ह़ज फ़र्ज़ था ? ﴾40﴿......अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कितने नबी पैदा फ़रमाए ? ﴾41﴿......इन में से कितने मुर्सल और कितने ग़ैरे मुर्सल हैं ? ﴾42﴿......वोह कौन सी चार चीज़ें हैं जिन का रंग और ज़ाइक़ा मुख़्तलिफ़ है मगर अस्ल एक है ? ﴾43﴿......नक़ीर क्या है ? ﴾44﴿......क़ित़मीर क्या है ? ﴾45﴿......फ़तील क्या है ? ﴾46﴿......अस्सबद क्या है ? ﴾47﴿......अ़ल्लबद क्या है ? ﴾48﴿......अत्तिम्म क्या है ? ﴾49﴿......अर्रिम्म क्या है ? ﴾50﴿......कुत्ता भौंकने में क्या कहता है ? ﴾51﴿......गधा रैंगने में क्या कहता है ? ﴾52﴿......बेल डकराने में क्या कहता है ? ﴾53﴿......घोड़ा हनहनाने में क्या कहता है ? ﴾54﴿......ऊंट बिलबिलाने में क्या कहता है ? ﴾55﴿......मोर अपनी

चीख़ो पुकार में क्या कहता है? ﴾56﴿......तीतर अपनी सीटी में क्या कहता है? ﴾57﴿......बुलबुल अपने नग़्मों में क्या कहता है? ﴾58﴿......मेंडक अपनी तस्बीह़ में क्या कहता है? ﴾59﴿......नाक़ूस (नसारा का घंटा जिसे वोह अपनी इबादत के वक़्त बजाते हैं) अपनी आवाज़ में क्या कहता है? ﴾60﴿......ऐसी मख़्लूक़ के मुतअ़ल्लिक़ बताओ जिन को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इल्हाम फ़रमाई वोह जिन्नों में से है, न इन्सानों में से और न ही फ़िरिश्तों में से? ﴾61﴿......जब दिन निकलता है तो रात कहां चली जाती है और ﴾62﴿......जब रात छा जाती है तो दिन कहां चला जाता है?"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद बिस्त़ामी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی ने पूछा : "क्या इन के इलावा भी कोई सुवाल है?" तो सब पादरियों ने कहा : "नहीं।" तो आप رَحْمَۃُاللہِ تَعالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : "अगर मैं ने इन के जवाबात सह़ीह़ तौर पर दे दिये तो क्या तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान ले आओगे?" सब ने कहा : "जी हां।" तो आप رَحْمَۃُاللہِ تَعالٰی عَلَیْہ ने बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू इन की बातों पर गवाह है।" फिर फ़रमाया : "अब अपने सुवालात के जवाबात सुनते जाओ : ﴾1﴿......वोह एक जिस का दूसरा नहीं तो वोह अल्लाह वाह़िदे क़ह्हार है ﴾2﴿......वोह दो जिन का तीसरा नहीं तो वोह दिन और रात हैं। जैसा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है : وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ اٰيَتَيْنِ (پ۱۵، بنی اسرائیل:۱۲) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हम ने रात और दिन को दो निशानियां बनाया।" ﴾3﴿......वोह तीन जिन का चौथा नहीं तो वोह अ़र्श, कुर्सी और क़लम हैं ﴾4﴿......वोह चार जिन का पांचवा नहीं तो वोह आस्मानी किताबें "तौरात, इन्जील, ज़बूर और क़ुरआने पाक" हैं ﴾5﴿......वोह पांच जिन का छट्टा नहीं तो वोह पांच नमाज़ें हैं जो हर मुसलमान मर्द औ़रत पर फ़र्ज़ हैं ﴾6﴿......वोह छे जिन का सातवां नहीं तो वोह छे दिन हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन का ज़िक्र क़ुरआने पाक में फ़रमाता है : وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ (پ۲۶، ق:۳۸) '**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक हम ने आस्मानों और ज़मीन को और जो कुछ इन के दरमियान है छे दिन में बनाया।" ﴾7﴿......वोह सात जिन का आठवां नहीं तो वोह सात आस्मान हैं। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है : "سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ط (پ۲۹، الملک:۳)" **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** सात आस्मान एक के ऊपर दूसरा।" ﴾8﴿......वोह आठ जिन का नववां नहीं तो वोह अ़र्श उठाने वाले आठ फ़िरिश्ते हैं। जैसा कि क़ुरआने पाक में है : "وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ۞ (پ۲۹، الحاقۃ:۱۷)" **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उस दिन तुम्हारे रब्ब का अ़र्श अपने ऊपर आठ फ़िरिश्ते उठाएंगे।"(1) ﴾9﴿......वोह नव जिन का दसवां नहीं तो वोह नव अफ़राद की जमाअ़त थी जो फ़साद बरपा करने वाले थे। चुनान्चे, फ़रमाने बारी तआ़ला है :

---

❶...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْھَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं "ह़दीष शरीफ़ में है कि ह़ामिलीने अ़र्श आज कुल चार हैं, रोज़े क़ियामत इन की ताईद के लिये चार का और इज़ाफ़ा किया जाएगा आठ हो जाएंगे। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعالٰی عَنْھُمَا से मरवी है कि इस से मलाइका की आठ सफ़ें मुराद हैं, जिन की ता'दाद अल्लाह तआ़ला ही जाने।"

''وَكَانَ فِى الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ۝ (پ۱۹،النمل:۴۸) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और शहर में नव शख़्स थे कि ज़मीन में फ़साद करते और संवार न चाहते।'' ﴾10﴿...... عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ (या'नी मुकम्मल दस दिन) से मुराद वोह दस दिन हैं जिन में हज्जे तमत्तोअ़ करने वला हड्डी का जानवर न पाने की सूरत में रोज़े रखता है। चुनान्चे, रब्ब तआला इरशाद फ़रमाता है : فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فِى الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ اِذَا رَجَعْتُمْ ط تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ط (پ۲،البقرہ:۱۹۶) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो तीन रोज़े हज के दिनों में रखे और सात जब अपने घर पलट कर जाओ येह पूरे दस हुवे। ﴾11﴿......वोह ग्यारह जिन का बारहवां नहीं तो वोह हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के भाई हैं। चुनान्चे, **अल्लाह** तआला हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का क़ौल हिकायत करते हुए इरशाद फ़रमाता है : ''اِنِّىْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا (پ۱۲، یوسف:۴) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मैं ने ग्यारह तारे देखे।'' ﴾12﴿...... वोह बारह जिन का तेरहवां नहीं तो वोह महीनों की ता'दाद है। चुनान्चे, रब्ब तआला इरशाद फ़रमाता है : ''اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِىْ كِتٰبِ اللّٰهِ (پ۱۰، التوبۃ:۳۶) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक महीनों की गिनती **अल्लाह** के नजदीक बारा महीने है **अल्लाह** की किताब में।'' ﴾13﴿...... वोह तेरह जिन का चौदहवां नहीं तो वोह हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ख़्वाब है। जैसा कि रब्ब तआला इरशाद फ़रमाता है : ''اِنِّىْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِىْ سٰجِدِيْنَ ۝ (پ۱۲،یوسف:۴) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मैं ने ग्यारह तारे और सूरज और चांद देखे इन्हें अपने लिये सजदा करते देखा।[1] ﴾14﴿...... वोह क़ौम जिन्हों ने झूट बोला फिर भी जन्नत में दाख़िल कर दिये गए तो वोह हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के भाई हैं। जैसा कि रब्ब तआला इरशाद फ़रमाता है : قَالُوْا يٰۤاَبَانَاۤ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ج (پ۱۲،یوسف:۱۷) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बोले ऐ हमारे बाप ! हम दौड़ करते निकल गए और यूसुफ़ को अपने अस्बाब के पास छोड़ा तो उसे भेड़िया खा गया।'' उन्हों ने झूट बोला फिर भी जन्नत में दाख़िल कर दिये गए। ﴾15﴿...... वोह क़ौम जिन्हों ने सच बोला लेकिन जहन्नम में दाख़िल कर दिये गए तो वोह यहूदो नसारा हैं। और वोह उन का येह क़ौल है :

❶...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं ''हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ख़्वाब देखा कि आस्मान से ग्यारह सितारे उतरे और उन के साथ सूरज और चांद भी हैं, उन सब ने आप को सजदा किया। येह ख़्वाब शबे जुमुआ़ को देखा, येह रात शबे क़द्र थी। सितारों की ता'बीर आप के ग्यारह भाई हैं और सूरज आप के वालिद और चांद आप की वालिदा या ख़ाला। आप की वालिदए माजिदा का नाम राहील है। सदी का क़ौल है कि चूंकि राहील का इन्तिक़ाल हो चुका था इस लिये क़मर से आप की ख़ाला मुराद हैं और सजदा करने से तवाजोअ़ करना और मुतीअ़ होना मुराद है और एक क़ौल येह है कि हक़ीक़तन सजदा मुराद है क्यूंकि उस ज़माने में सलाम की तरह सजदए तहिय्यत था। हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की उम्र शरीफ़ उस वक़्त बारह साल की थी और सात और सतरह के क़ौल भी आए। हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام को हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام से बहुत ज़ियादा महब्बत थी। इस लिये उन के साथ उन के भाई हसद करते थे और हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام इस पर मुत्तलअ़ थे इस लिये जब हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने येह ख़्वाब देखा तो हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : ऐ मेरे बच्चे ! अपना ख़्वाब अपने भाइयों से न कहना।''

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : وَقَالَتِ الْیَھُوْدُ لَیْسَتِ النَّصٰرٰی عَلٰی شَیْءٍ ص وَّقَالَتِ النَّصٰرٰی لَیْسَتِ الْیَھُوْدُ عَلٰی شَیْءٍ لا (پ ۱،البقرۃ:۱۱۳) और यहूदी बोले नसरानी कुछ नहीं और नसरानी बोले यहूदी कुछ नहीं।"(1) उन्हों ने सच कहा लेकिन जहन्नम में दाख़िल कर दिये गए। ﴾16﴿....तुम्हारे जिस्म में तुम्हारे नाम का ठिकाना कान हैं (या'नी जब कोई नाम बोला जाता है तो कान ही सुनते हैं) ﴾17﴿...."اَلـذّٰرِیٰتِ ذَرْوًا" (या'नी बखेर कर उड़ाने वालियां) से मुराद चार हवाएं हैं।(2) ﴾18﴿...."اَلْـحٰمِلٰتِ وِقْرًا" से मुराद बादल हैं। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है "وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَیْنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ" (پ۲،البقرۃ:۱۶۴) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह बादल कि आस्मानो ज़मीन के बीच में हुक्म का बांधा है।" ﴾19﴿.....اَلْجٰرِیٰتِ یُسْرًا (या'नी नर्म चलने वालियां) से मुराद दरया में चलने वाली कश्तियां हैं ﴾20﴿...... فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا से मुराद मलाइका हैं जो लोगों का रिज़्क़ पन्दरह शा'बान से दूसरे साल पन्दरह शा'बान तक तक़्सीम करते हैं ﴾21﴿....जिन चौदह ने रब्बुल आलमीन عَزَّوَجَلَّ से कलाम किया तो वोह सात आस्मान और सात ज़मीनें हैं। चुनान्चे, रब्ब तआला इरशाद फ़रमाता है : "فَقَالَ لَھَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِیَا طَوْعًا اَوْ کَرْھًا ط قَالَتَآ اَتَیْنَا طَآئِعِیْنَ0 (پ۲۴،حٰم السجدۃ:۱۱)
तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो इस (आस्मान) से और ज़मीन से फ़रमाया कि दोनों हाज़िर हो खुशी से चाहे ना खुशी से, दोनों ने अ़र्ज़ की, कि हम रग़बत के साथ हाज़िर हुए।" ﴾22﴿......वोह क़ब्र जो साहिबे क़ब्र को साथ ले कर चली तो वोह हज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मछली है ﴾23﴿......जो चीज़ बिला रूह है मगर सांस लेती है तो वोह सुब्ह है। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : وَالصُّبْحِ اِذَا تَنَفَّسَ0 (پ۳۰، التکویر:۱۸) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और सुब्ह की जब दम ले।" ﴾24﴿......वोह पानी जो न आस्मान से उतरा, न ज़मीन से निकला तो वोह घोड़ों का पसीना है जिस को शीशे की बोतल में भर कर मलिका बिल्क़ीस ने हज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन दावूद علیھما الصلوۃ والسّلام

---

❶...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत,, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : **शाने नुज़ूल :** नजरान के नसारा का वफ़्द सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आया तो उ़-लमाए यहूद आए और दोनों में मुनाज़रा शुरूअ़ हो गया। आवाज़ें बुलन्द हुईं, शोर मचा। यहूद ने कहा कि नसारा का दीन कुछ नहीं और हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام और इन्जील शरीफ़ का इन्कार किया। इसी त़रह़ नसारा ने यहूद से कहा कि तुम्हारा दीन कुछ नहीं और तौरैत शरीफ़ व हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام का इन्कार किया। इस बाब में येह आयत नाज़िल हुई।"

❷.....इन चार हवाओं के नाम येह हैं : (1)....पुरवा या'नी मशरिक़ से मग़रिब की त़रफ़ चलने वाली हवा (2)....पछवा या'नी मग़रिब से मशरिक़ की त़रफ़ चलने वाली हवा। (3).....जुनूबी या'नी जुनूब से शिमाल की त़रफ़ चलने वाली हवा और (4)....शिमाली या'नी शिमाल से जुनूब की त़रफ़ चलने वाली हवा। नीज़ हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, "हवाएं आठ क़िस्म की हैं। इन में चार बाइ़से रह़मत हैं : (1)..... اَلنَّاشِرَات बादलों को उठाने और उड़ाने वाली हवाएं। (2).....اَلْمُبَشِّرَات बारिश की ख़बर देने वाली हवाएं (3)....اَلذّٰرِیَات : ख़ाक वग़ैरा उड़ाने वाली हवाएं और (4)....اَلْمُرْسَلَات : मुसलसल चलने वाली हवाएं। और चार बाइ़से ज़ह़मत हैं : (1)....اَلْعَاصِفَات : तेज़ हवाएं आंधियां (2)... اَلْقَاصِب : ज़ोरदार गरज वाली हवाएं, येह दोनों तरी में चलती हैं। (3) اَلصَّرْصَر : इन्तिहाई सर्द बरफ़ीली हवाएं या शदीद आवाज़ वाली हवाएं और (4).....اَلْعَقِیْم : बे बारिश हवा। आख़िरी दोनों हवाएं ख़ुश्की में चलती हैं।"

(الموسوعۃ لابن ابی الدنیا، کتاب المطر والرعد والبرق والریح، باب فی الریح، الحدیث:۱۷۴،ج۸،ص ۴۵۱)

को भेजा था ﴾25﴿....वोह चार नुफ़ूस जो बाप की पुश्त से पैदा हुए, न मां के बत़्न से तो वोह ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام, ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़व्वा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام का मैंढ़ा और ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام की ऊंटनी हैं ﴾26﴿....ज़मीन पर सब से पहला ख़ून हाबील का बहाया गया जब क़ाबील ने उसे क़त्ल किया ﴾27﴿....ऐसी चीज़ जिस को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पैदा किया फिर ख़रीद लिया तो वोह मोमिन की जान है। जैसा कि वोह खुद इरशाद फ़रमाता है : "اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَؕ (پ۱۱، التوبة: ۱۱۱)" **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक अल्लाह ने मुसलमानों से उन के माल और जान ख़रीद लिये हैं इस बदले पर कि उन के लिये जन्नत है।[1] ﴾28﴿......ऐसी शै जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पैदा किया और नापसन्द किया तो वोह गधे की आवाज़ है। जैसा कि वोह खुद इरशाद फ़रमाता है : "اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِیْرِ ۝ (پ۲۱، لقمان:۱۹)" **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक सब आवाज़ों में बुरी आवाज़, आवाज़ गधे की।"[2] ﴾29﴿......ऐसी चीज़ जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पैदा किया और उसे बड़ा कहा तो वोह औरतों का मक्र है। चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया : "اِنَّ كَیْدَكُنَّ عَظِیْمٌ ۝ (پ۱۲، یوسف: ۲۸)" **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक तुम्हारा चरित्र (फ़रैब) बड़ा है।" ﴾30﴿...... वोह चीज़ जिसे अल्लाह तआ़ला ने पैदा फ़रमाया फिर इस के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया तो वोह ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का अ़सा है। जैसा कि क़ुरआने पाक फ़रमाता है : "وَمَا تِلْكَ بِیَمِیْنِكَ یٰمُوْسٰى ۝ قَالَ هِیَ عَصَایَ ۚ اَتَوَكَّؤُا عَلَیْهَا وَاَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِیْ (پ۱۶، طٰهٰ: ۱۷۔۱۸)" **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और येह तेरे दाहिने हाथ में क्या है ? ऐ मूसा ! अ़र्ज़ की येह मेरा अ़सा है, मैं इस पर तकिया लगाता हूं और इस से अपनी बकरियों पर पत्ते झाड़ता हूं।"[3] ﴾31﴿......सब से अफ़्ज़ल औरतें उम्मुल बशर ह़ज़रते सय्यिदतुना

---

❶....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं "राहे ख़ुदा में जान व माल ख़र्च कर के जन्नत पाने वाले ईमान दारों की एक तमषील है जिस से कमाले लुत़्फ़ो करम का इज़्हार होता है कि परवरदगारे आ़लम ने उन्हें जन्नत अ़त़ा फ़रमाना उन के जान व माल का इ़वज़ क़रार दिया और अपने आप को ख़रीदार फ़रमाया। येह कमाले इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई है कि वोह हमारा ख़रीदार बने और हम से ख़रीदे किस चीज़ को ? जो न हमारी बनाई हुई न हमारी पैदा की हुई। जान है तो उस की पैदा की हुई, माल है तो उस का अ़त़ा फ़रमाया हुवा। **शाने नुज़ूल :** जब अन्सार ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से शबे उ़क़्बा बैअ़त की तो अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अ़र्ज़ की, कि या रसूलल्लाह ! अपने रब्ब के लिये और अपने लिये कुछ शर्त़ फ़रमा लीजिये जो आप चाहें। फ़रमाया : मैं अपने रब्ब के लिये तो येह शर्त़ करता हूं कि तुम उस की इ़बादत करो और किसी को उस का शरीक न ठहराओ और अपने लिये येह कि जिन चीज़ों से तुम अपने जान व माल को बचाते और मह़फ़ूज़ रखते हो उस को मेरे लिये भी गवारा न करो।" उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि "हम ऐसे करें तो हमें क्या मिलेगा ?" फ़रमाया : जन्नत।

❷...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं "मुद्दआ़ येह है कि शोर मचाना और आवाज़ बुलन्द करना मकरूह व नापसन्दीदा है और इस में कुछ फ़ज़ीलत नहीं है गधे की आवाज़ बा वुजूदे बुलन्द होने के मकरूह और वह़शत अंगेज़ है नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को नर्म आवाज़ से कलाम करना पसन्द था और सख़्त आवाज़ से बोलने को नापसन्द रखते थे।"

❸...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "इस सुवाल की ह़िक्मत येह है कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام अपने अ़सा को देख लें और येह बात क़ल्ब में ख़ूब रासिख़ हो जाए कि येह अ़सा है ताकि जिस वक़्त वोह सांप की शक्ल में हो तो आप की ख़ात़िर मुबारक पर कोई परेशानी न हो या येह ह़िक्मत है कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को मानूस किया जाए ताकि हैबते मुकालमत का अषर कम हो।" (मदारिक वग़ैरा) उस अ़सा में ऊपर की जानिब दो शाखें थीं और उस का नाम "نبعه" था।

हव्वा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنھَا, हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنھَا, हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنھَا, हज़रते सय्यिदतुना आसिया رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنھَا और हज़रते सय्यिदतुना मरयम बिन्ते इमरान رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنھُمَا हैं ﴾32﴿......सब से अफ़्ज़ल दरया सीहून, जीहून, दिजला, फ़ुरात और मिस्र का दरयाए नील हैं ﴾33﴿......सब से अफ़्ज़ल पहाड़ तूर है ﴾34﴿......सब से अफ़्ज़ल चोपाया घोड़ा है ﴾35﴿......सब से अफ़्ज़ल महीना माहे रमज़ानुल मुबारक है। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْٓ اُنْزِلَ فِیْهِ الْقُرْاٰنُ (پ۲، البقرۃ:۱۸۵)" **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** रमज़ान का महीना जिस में कुरआन उतरा।" ﴾36﴿......सब से अफ़्ज़ल रात शबे क़द्र है। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : (پ۳۰، القدر:۳) "لَیْلَةُ الْقَدْرِ ۙ خَیْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ O" **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर।" ﴾37﴿...... اَلطَّآمَّةُ से मुराद क़ियामत है ﴾38﴿......वोह दरख़्त जिस की बारह (12) शाखें हैं, हर शाख़ में तीस (30) पत्ते, हर पत्ते में पांच रंग, दो सूरज की रोशनी में और तीन साए में, तो वोह दरख़्त साल है, बारह महीने इस की बारह शाखें हैं, तीस पत्ते तीस दिन हैं और पांच रंग पांच नमाज़ें हैं, तीन साए में या'नी मग़रिब, इशा और फ़ज्र, दो रोशनी में या'नी ज़ोहर और अ़स्र ﴾39﴿......वोह ऐसी चीज़ जिस में रूह नहीं और न ही उस पर हज वाजिब था फिर भी उस ने का'बए मुबारका का त़वाफ़ किया तो वोह हज़रते सय्यिदुना नूह नजिय्युल्लाह عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की कश्ती है ﴾40﴿......**अल्लाह** तआ़लाने कमो बेश एक लाख चोबीस हज़ार (1,24,000) अम्बिया पैदा फ़रमाए ﴾41﴿......इन में से तीन सो तेरह (313) रसूल हैं ﴾42﴿......चार अश्या जिन का ज़ाइक़ा और रंग मुख़्तलिफ़ है मगर अस्ल एक है तो वोह आंख, नाक, मुंह और कान है। आंख का पानी नमकीन, मुंह का पानी मीठा, नाक का पानी तुर्श और कान का पानी कड़वा होता है ﴾43﴿......नक़ीर एक झिल्ली है जो घुटली के ऊपर होती है ﴾44﴿......क़ित्मीर अंडे के छिलके को कहते हैं ﴾45﴿......फ़तील से मुराद घुटली के अन्दर का गूदा है ﴾46﴿......अस्सबद और ﴾47﴿......अल्लबद भेड़ और बकरी के बालों को कहते हैं ﴾48﴿......अत्तिम्म और ﴾49﴿......अर्रिम्म हमारे बाप हज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युलाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से पहले की जिन्नात क़ौमें हैं ﴾50﴿......गधा जब शैतान को देखता है तो कहता है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (नाजाइज़) जिज़्या (टेक्स) लेने वाले पर ला'नत फ़रमाए।" ﴾51﴿......कुत्ता अपने भौंकने में कहता है وَیْلٌ لِاَهْلِ النَّارِ مِنْ غَضَبِ الْجَبَّارِ या'नी दोज़ख़ियों के लिये हलाकत है कि **अल्लाह** तआ़ला के ग़ज़ब में हैं।" ﴾52﴿......बेल अपने डकार ने में कहता है : "سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ." ﴾53﴿......घोड़ा अपने हनहनाने में कहता है : "पाक है मेरी हिफ़ाज़त फ़रमाने वाला जब जंगजू लड़ते हैं और मर्दाने कार लड़ाई में मसरूफ़ होते हैं।" ﴾54﴿......ऊंट अपने बिलबिलाने में कहता है : حَسْبِیَ اللّٰهُ وَكَفٰی بِهٖ وَكِیْلًا या'नी मेरे लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही काफ़ी और वोही मेरा कारसाज़ है।" ﴾55﴿......मोर अपनी चीख़ो पुकार में कहता है اَلرَّحْمٰنُ عَلَی الْعَرْشِ اسْتَوٰی O (پ۱۶، طٰهٰ:۵) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह बड़ी मेहर वाला उस ने अ़र्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक़ है।" ﴾56﴿......तीतर अपनी सीटी में कहता है,

"بِالشُّكْرِ تَدُوْمُ النِّعَم" या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करने से ने'मतें हमेशा रहती हैं।"
﴿57﴾......बुलबुल अपने नग़्मों में यूं गोया होता है : "سُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ٥ (پ۲۱،الروم:۱۷)"
तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो **अल्लाह** की पाकी बोलो जब शाम करो और जब सुब्ह हो।"[1]
﴿58﴾......मेंडक अपनी तस्बीह में कहता है : "سُبْحَانَ الْمَعْبُوْدِ فِی الْبَرَارِیْ وَالْقِفَارِ سُبْحَانَ الْمَلِکِ الْجَبَّارِ या'नी पाक है जंगलों और चटयल मैदानों में अ़ज़ीम मा'बूद, पाक है खुदाए जब्बार।" ﴿59﴾......नाक़ूस अपनी आवाज़ में कहता है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है, वोह ह़क़ है। ऐ इब्ने आदम ! इस दुन्या के मशरिक़ व मग़रिब में देख ! किसी को हमेशा बाक़ी रहने वाला न पाएगा।" ﴿60﴾......ऐसी मख़्लूक़ जिस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इल्हाम फ़रमाया, वोह जिन्नों में से है, न इन्सानों में से और न ही मलाइका में से तो वोह शहद की मख्खी है। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "وَاَوْحٰی رَبُّکَ اِلَی النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِیْ مِنَ الْجِبَالِ بُیُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا یَعْرِشُوْنَ ٥ (پ۱۴، النحل:۶۸)" **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम्हारे रब्ब ने शहद की मख्खी को इल्हाम किया कि पहाड़ों में घर बना और दरख़्तों और छत्तों में।"
﴿61﴾......जब दिन आता है तो रात कहां जाती है ? और ﴿62﴾......जब रात छा जाती है तो दिन कहा चला जाता है ? येह तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पोशीदा इ़ल्म में है, किसी नबी या मुक़र्रब फ़िरिश्ते पर भी ज़ाहिर नहीं।

मज़्कूरा तमाम जवाबात देने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद बिस्त़ामी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی ने पूछा : "क्या तुम्हारा कोई सुवाल बाक़ी है ?" उन्हों ने कहा : 'नहीं।" तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने बड़े पादरी से फ़रमाया : "बताओ आस्मानों और जन्नत की चाबी क्या है ?" उन का बड़ा पादरी ख़ामोश रहा तो सब ने उसे कहा : "आप ने इतने सुवाल पूछे और इन्हों ने सब के जवाब दिये, अब इन्हों ने एक ही सुवाल किया और आप जवाब देने से आ़जिज़ आ गए।" पादरी ने कहा : "मैं आ़जिज़ नहीं आया लेकिन मुझे डर है कि मैं जवाब दूंगा तो तुम तस्लीम नहीं करोगे।" उन्हों ने कहा : "क्यूं नहीं, हम मानेंगे, क्यूंकि आप हमारे बुज़ुर्ग हैं, आप जो भी फ़रमाएंगे हम सरे तस्लीम ख़म करेंगे।" तो बड़े पादरी ने कहा : "आस्मानों और जन्नत की चाबी कलिमए त़य्यिबा لَااِلٰـهَ اِلَّااللّٰـهُ مُحَمَّدٌرَّسُوْلُ اللّٰه है।" जब दीगर पादरियों और राहिबों ने सुना तो वोह सब के सब मुसलमान हो गए। उन्हों ने गिर्जाघर तोड़ कर उसे मस्जिद में तब्दील कर दिया और अपने अपने ज़ुन्नार भी तोड़ दिये। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद बिस्त़ामी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی को ग़ैब से आवाज़ आई : **"ऐ अबू यज़ीद ! तू ने हमारे लिये एक ज़ुन्नार बांधा तो हम ने तेरी ख़ात़िर पांच सो ज़ुन्नार तोड़ दिये।"**

---

[1]....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं "पाकी बोलने से या तो **अल्लाह** तआ़ला की तस्बीह़ व षना मुराद है और उस की अह़ादीष में बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हैं या इस से नमाज़ मुराद है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से दरयाफ़्त किया गया कि क्या पंजगाना नमाज़ों का बयान कुरआने पाक में है ?" फ़रमाया : "हां।" और येह आयतें तिलावत फ़रमाईं और फ़रमाया कि इन में पांचों नमाज़ें और इन के अवक़ात मज़्कूर हैं।"

एक महफ़ूज़ क़ल्आ और उम्दा ज़िरह :

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! येह सब कुफ़्र की तारीकियों में भटक रहे थे पस **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने इन्हें नूरे हिदायत से रोशन किया और मर्दूद होने से महफ़ूज़ फ़रमाया। येह सब मुबारक कलिमए त़य्यिबा की बरकत है। इस पाकीज़ा कलिमे की शान देखो ! इस की बरकात कितनी अ़ज़ीम हैं और येह ह़ाजात को कैसे पूरा करता है। लिहाज़ा अपनी ज़बानें इस मुबारक कलिमे से तर रखो ताकि इस के एह़सान की बरकत और करम की ह़लावत को पा सको और उस की अमान के ह़रम में दाख़िल हो जाओ। बिला शुबा येह महफ़ूज़ क़ल्आ और उ़म्दा ज़िरह है।

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने अपनी किसी आस्मानी किताब में इरशाद फ़रमाया : "कलिमए त़य्यिबा की कषरत करो। बेशक येह मेरा क़ल्आ है और जो मेरे क़ल्ए़ में दाख़िल हुवा वोह मेरे अ़ज़ाब से महफ़ूज़ हो गया।" (حلية الاولياء، محمد بن على الباقر، الحديث ٣٧٨٠، ج٣، ص٢٢٣)

एक सह़ाबिए रसूल फ़रमाते हैं : "जिस ने ख़ुलूसे दिल से कलिमए त़य्यिबा पढ़ा और ता'ज़ीम के साथ इसे खींच कर पढ़ा तो उस के चार हज़ार गुनाह मुआ़फ़ होंगे, अगर उस के गुनाह चार हज़ार न हुए तो उस के घर वालों और पड़ोसियों के गुनाह़ मुआ़फ़ हो जाएंगे।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इरशाद फ़रमाते हैं : "दिन रात में कुल चोबीस (24) घंटे हैं और कलिमए त़य्यिबा के ह़ुरूफ़ भी चोबीस हैं तो जो कोई एक बार कलिमए त़य्यिबा पढ़ता है तो उस का हर ह़र्फ़ एक घंटे के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाता है। पस जब बन्दा हर रोज़ एक मरतबा कलिमए त़य्यिबा पढ़ता है तो उस पर कोई गुनाह बाक़ी नहीं रहता, तो जो इस की कषरत करता है और इसी को अपना मश्ग़ला बना लेता है उस का क्या मक़ाम व मर्तबा होगा !"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर गुनहगार हो तो कलिमए त़य्यिबा का वज़ीफ़ा पढ़ो। बेशक येह गुनाहों और नाफ़रमानियों को मिटा देता है। और अगर इत़ाअ़त गुज़ार हो तो भी इस मुक़द्दस कलिमे के ज़रीए़ ईमान की तजदीद कर लो। बिला शुबा येह ईमान को जिद्दत देता और ख़ुदाए ह़न्नान व मन्नान की त़रफ़ से अम्नो अमान और मग़्फ़िरत का परवाना दिलवाता है।

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْن

बयान 48 : निकाहे अली व फ़ातिमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا)

हम्दे बारी तआला :

तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के लिये हैं जो अज़ीम, महमूद, करीम, मक़्सूद, क़दीम और मौजूद है। जिस ने अहले हक़ीक़त के लिये आस्माने तौफ़ीक़ के कनारों से सआदत के सितारे ज़ाहिर फ़रमाए और आरास्ता वुजूद को दरजए शुहूद के आईनों में चमकाया। तो जिस ने मत़लूब को समझा वोह मक़्सूद को पहुंचा। उस ने मौसिमे बहार को दरख़्तों के नए पत्तों के ज़रीए मुज़य्यन किया कि वोह ख़ूब सूरत व उ़म्दा पोशाक में, नर्म व नाज़ुक टहनियों के साथ झूमते हैं। और उन के पत्तों में ख़ूब सूरत आवाज़ वाले परन्दों को दरख़्तों के मिम्बरों पर ठहराया कि सहर के वक़्त मालिक व मा'बूद عَزَّ وَجَلَّ की हम्दो षना करते हैं। उस ने अ़क़्ल को जुम्ला दलाइल में से इन्सानी आ'ज़ा और आंखों पर ह़ाकिम बनाया और अ़क़्ल ने उन्हें अल्लाह तआला की कारीगरी के अ़जाइबात में ग़ौरो फ़िक्र का हुक्म दिया। चुनान्चे, इन्हों ने अंगूर और गन्दुम के दानों के ख़ोशों का मुशाहदा किया तो ग़ौरो फ़िक्र के बा'द बनाने वाले की क़ुदरत पर हैरत ज़दा हैं कि किस त़रह उस ने सरकशी व मुन्किरीन (को समझाने) के लिये मुख़्तलिफ़ मौजूदात को पैदा फ़रमाया और क़त़ई दलाइल क़ाइम फ़रमाए।

पाक है वोह ज़ात जिस ने सख़्त व मज़बूत़ चट्टानों से नहरें जारी फ़रमाईं, दरख़्तों से फूलों को ज़ाहिर किया और लकड़ी से फलों को निकाला। उस ने आस्मान को चांद व सूरज से आरास्ता किया। बत़ह़ाए मक्का को ह़ज़रते अबू बुक्र सिद्दीक़ व उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) से फ़ज़ीलत बख़्शी। ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को ह़ज़राते ह़सनैने करीमैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) से नवाज़ा और उन के नानाजान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को सब से ज़ियादा इ़ज़्ज़त व शरफ़ अ़त़ा फ़रमाया। कितने ही उस के मुश्ताक़, ह़सरत व यास के पैकर बने हुए हैं कि उस के शौक़ में आ'ला नसबों ने जफ़ाकश टांगों के ज़रीए अन्थक कोशिशें कीं। पस उन्हों ने हिजरो रुकावट के जंगल को त़ै कर लिया फिर जब वोह उस मजलिस में पहुंच जाते हैं तो तू उन्हें झूमता हुवा देखेगा और जब कोई ह़ुदी ख़्वां उन के सामने ह़म्दे इलाही عَزَّ وَجَلَّ का नग़मा गुनगुनाता है तो उन के रुख़्सारों पर आंसू रवां हो जाते हैं।

इन्सानी हूर :

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, रह़मते आ़लमिय्यान, सरवरे कौनो मकान, सय्यिदे इन्सो जान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़ज़ीलत निशान है : "फ़ाति़मा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا) मेरे जिस्म का टुकड़ा है, फ़ाति़मा इन्सानी हूर है।"

(صحیح البخاری ، کتاب فضائلِ اصحاب النبی ﷺ،باب مناقب فاطمة،الحدیث۳۷۶۷،ص۳۰۶)

(تاریخ بغداد،الرقم۶۷۷۲ ، غانم بن حمید بن یونس، ج۱۲،ص۳۲۸"انسیة" بدلہ " آدمیة")

मरवी है : “हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْھَا ने एक दिन सरकारे वाला तबार, महबूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बिइज़्ने परवर दगार صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में जन्नती फल देखने की ख़्वाहिश की तो हज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ السَّلام सय्यिदुल कौनैन صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में जन्नत से दो सेब ले कर हाज़िर हो गए और अर्ज़ की : ऐ मुहम्मद (صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ख़ुदाए रहमान عَزَّ وَجَلَّ जिस ने हर शै का अन्दाज़ा रखा, फ़रमाता है : “एक सेब आप (صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) खाएं और दूसरा ख़दीजा (رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا) को खिलाएं फिर हक़्क़े ज़ौजिय्यत अदा करें, मैं तुम दोनों से फ़ातिमतुज़्ज़हरा को पैदा करूंगा।” चुनान्चे, हुज़ूर नबिय्ये मुख़्तार, महबूबे ग़फ़्फ़ार صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَیْہِ السَّلام के कहने के मुताबिक़ अमल किया।”

जब कुफ़्फ़ार ने आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से कहा कि हमें चांद दो टुकड़े कर के दिखाएं। उन दिनों हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا को हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا का हम्ल मुबारक ठहर चुका था। हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا ने फ़रमाया : “उस की कितनी रुस्वाई है जिस ने हमारे आक़ा मुहम्मद صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को झुटलाया। आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सब से बेहतर रसूल और नबी हैं।” तो हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا ने उन के बत्ने अत्हर से निदा दी : ‘ऐ अम्मी जान ! आप ग़मज़दा न हों और न ही डरें, बेशक अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ मेरे वालिदे मोहतरम के साथ है।”

जब मुद्दते हम्ल पूरी हुई और हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا की विलादत हुई तो सारी फ़ज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا के चेहरे के नूर से मुनव्वर हो गई। नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को जब जन्नत और उस की ने'मतों का इश्तियाक़ होता तो हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا का बोसा ले लेते और उन की पाकीज़ा ख़ुश्बू को सूंघते। और जब उन की पाकीज़ा महक सूंघते तो फ़रमाते : “फ़ातिमा तू इन्सानी हूर है।”

सय्यिदा फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا का निकाह :

जब आस्माने रिसालत صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا का आफ़्ताबे हुस्नो जमाल चमका और उफ़ुक़े अज़मत व जलाल पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا का बद्रे कमाल तुलूअ हुवा, तो नेक ख़स्लत ज़हनों में आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا का ख़याल आया, मुहाजिरीन व अन्सार के मुअज़्ज़ज़ीन ने पैग़ामे निकाह दिया। लेकिन रिज़ाए इलाही عَزَّ وَجَلَّ के साथ मख़्सूस ज़ात ने इन्कार करते हुए फ़रमाया : “मैं ख़ुदाई फ़ैसले का मुन्तज़िर हूं।”

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ और हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने भी पैग़ामे निकाह अर्ज़ किया तो उन से भी आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येही इरशाद फ़रमाया : “येह मुआमला अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है।”

अबू बक्र व उमर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) की सय्यिदुना अली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को तरग़ीब :

एक दिन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके़ आ'ज़म और हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआ़ज़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) मस्जिदे नबवी शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में तशरीफ़ फ़रमा थे कि हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का ज़िक्रे ख़ैर चल निकला तो हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : "तमाम मुअ़ज़्ज़ज़ीन ने पैग़ामे निकाह़ अ़र्ज़ किया और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्कार करते हुए येही इरशाद फ़रमाया : "येह मुआ़मला अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है।" लेकिन हज़रते अ़ली (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم) ने पैग़ामे निकाह़ अ़र्ज़ नहीं किया और न ही इस का तज़्किरा किया। मेरा ख़याल है कि इन्हों ने ग़ुर्बत के सबब ऐसा नहीं किया। मेरे दिल में येह बात आती है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ और रसूल (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ने हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का मुआ़मला शायद इसी लिये रोका हुवा है।" फिर हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : "आप इस बारे में क्या कहते हैं कि हम हज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم के पास चलें और उन से शहज़ादिये रसूल का मुआ़मला ज़िक्र करें, अगर उन्हों ने तंग दस्ती की वजह से इन्कार किया तो हम उन की मदद करेंगे ।" हज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू बक्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ आप को इस काम की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।" (आमीन) फिर येह सब मस्जिदे नबवी शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से निकल कर हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم की तलाश में इन की मस्जिद जा पहुंचे लेकिन उन्हें वहां न पाया। (फिर जब पता चला कि) हज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उस वक़्त किसी अन्सारी के बाग़ में उजरत पर ऊंटों के ज़रीए़ पानी निकालने में मसरूफ़ हैं तो येह तीनों सह़ाबी उन की जानिब चल दिये। जब हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने उन सब को देखा तो पूछा : "क्या मुआ़मला है ?"

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़ली ! (बात येह है कि) क़ुरैश के मुअ़ज़्ज़ज़ीन ने बिन्ते रसूल के लिये पैग़ामे निकाह़ दिया लेकिन आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह कह कर लौटा दिया कि "येह मुआ़मला अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है।" और (हम देखते हैं कि) आप हर अच्छी आ़दत से कामिल तौ़र पर मुत्तसिफ़ हैं और हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के क़राबत दार भी हैं तो आप के लिये इस में क्या रुकावट हैं ? मुझे उम्मीद है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन का मुआ़मला आप के लिये रोका हुवा है। रावी फ़रमाते है : "हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم की आंखें अश्क बार हो गईं और अ़र्ज़ की : "ऐ अबू बक्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ! आप ने मुझे ऐसे काम पर उभारा है जो रुका हुवा था और मुझे ऐसे काम की त़रफ़ मुतवज्जेह किया जिस

से मैं गाफ़िल था, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे शहज़ादिये सरवरे कौनैन पसन्द हैं और ऐसे रिश्ते के लिये मेरे जैसा और कोई नहीं लेकिन गुर्बत ने मुझे इस से रोक रखा है।" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "ऐ अ़ली ! ऐसा न कहो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के नज़्दीक दुन्या और जो कुछ इस में है, उड़ते गुबार की मानिन्द है।"

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बारगाहे मुस्तफ़ा عليه التحية و الثناء में हाज़िरी :

फिर हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने ऊंट खोला और अपने घर चल दिये। घर जा कर ऊंट बांधा और जूते पहन कर हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के घर की त़रफ़ चल दिये, दरवाज़ा खट-खटाया तो हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने पूछा : "कौन ?" तो सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उठो और दरवाज़ा खोलो। येह वोह है जिस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मह़ब्बत करता है और येह भी उन से मह़ब्बत करता है।" हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने अ़र्ज़ की : "मेरे मां बाप आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) पर कुरबान ! येह कौन है ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "येह मेरा भाई है और मुझे सारी मख़्लूक़ से बढ़ कर प्यारा है।" हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं : "मैं इस तेज़ी से उठी कि चादर में उलझने लगी थी। मैं ने दरवाज़ा खोला तो देखा कि हज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब तक उन्हें पता न चला कि मैं ओट में हो गई हूं, वोह अन्दर दाख़िल न हुए। फिर हाज़िरे ख़िदमते अक़्दस हो कर उन्हों ने सलाम अ़र्ज़ किया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने जवाब इनायत किया फिर फ़रमाया : "बैठो।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने बैठ गए और ज़मीन कुरैदने लगे गोया कोई ह़ाजत अ़र्ज़ करने में ह़या कर रहे हों।

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़ली ! कोई काम है तो बताओ हमारे हां तुम्हारी हर ह़ाजत पूरी होगी।" हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर कुरबान ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जानते हैं कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे अपने चचा और चची फ़ात़िमा बिन्ते असद से लिया, मैं उस वक़्त एक ना समझ बच्चा था। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी राहनुमाई फ़रमाई, मुझे अदब सिखाया, मुझे शाइस्ता बनाया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ पर मां बाप से बढ़ कर शफ़्क़त व एह़सान फ़रमाया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़रीए मुझे हिदायत बख़्शी और उस शिर्क से बचाया जिस में मेरे वालिदैन मुब्तला थे (इन की वालिदा फ़ात़िमा बिन्ते असद बा'द में ईमान ले आईं थीं)। या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ही दुन्या व

आख़िरत में मेरा वसीला और ज़ख़ीरा हैं, और मैं येह पसन्द करता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप के ज़रीए मेरी पुश्त पनाही इस तरह फ़रमाए कि मेरा भी एक घर और बीवी हो जिस में चैन हासिल करूं । येही ग़रज़ लिये मैं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुवा हूं, या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी लख़्ते जिगर हज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا का अक़्दे निकाह मेरे साथ फ़रमाना पसन्द फ़रमाएंगे ?"

आस्मान पर निकाह और फ़िरिश्तों की बारात :

हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं : "मैं ने देखा कि हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का चेहरए अन्वर ख़ुशी व मसर्रत से खिल उठा । फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुस्कुरा कर हज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के चेहरे को देखा और इस्तिफ़सार फ़रमाया : "ऐ अ़ली ! क्या तुम्हारे पास कोई चीज़ है जिस से तुम फ़ातिमा (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا) का ह़क़्क़े महर अदा कर सको ?" हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अ़र्ज़ की : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर मेरी हालत पोशीदा नहीं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जानते हैं कि मैं एक ज़िरह, तल्वार और पानी लाने वाले एक ऊंट के इ़लावा किसी चीज़ का मालिक नहीं ।" तो शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अपनी तल्वार से तो तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करोगे लिहाज़ा इस के बिग़ैर गुज़ारा नहीं और ऊंट से अपने घर वालों के लिये पानी भर कर लाओगे और सफ़र में भी इस पर अपना सामान लादोगे, लेकिन ज़िरह के बदले में, मैं अपनी बेटी का निकाह तुझ से करता हूं और मैं तुझ से ख़ुश हूं, और ऐ अ़ली ! तुम्हें मुबारक हो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन पर फ़ातिमा से तुम्हारा निकाह करने से पहले आस्मान में तुम दोनों का निकाह कर दिया है और तुम्हारे आने से पहले आस्मानी फ़िरिश्ता मेरे पास हाज़िर हुवा जिस को मैं ने पहले कभी न देखा था । उस के कई चेहरे और पर थे, उस ने आ कर अ़र्ज़ की : " السلام عليكم या रसूलल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) मुबारक मिलन और पाकीज़ा नस्ल की आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को बिशारत हो ।"

मैं ने पूछा : "ऐ फ़िरिश्ते ! क्या कह रहे हो ?" उस ने जवाब दिया : "या रसूलल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) मैं सबत़ाईल हूं और अ़र्श के एक पाए पर मुक़र्रर हूं, मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गुज़ारिश की, कि वोह मुझ को इजाज़त दे कि मैं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को बिशारत सुनाऊं और हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام भी मेरे पीछे पीछे फ़ज़्ल व करमे इलाही عَزَّوَجَلَّ की ख़बर ले कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पास पहुंचने वाले हैं ।" सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, बिइज़्ने परवर दगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अभी उस फ़िरिश्ते ने अपनी बात पूरी भी न की थी कि हज़रते जिब्राईले अमीन (عَلَيْهِ السَّلَام) ने आ कर सलाम किया और एक सफ़ेद रेशम

का टुकड़ा मेरे हाथों पर रख दिया जिस में दो सत्रें नूर के साथ लिखी हुई थी।" मैं ने पूछा : "ऐ मेरे दोस्त जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) येह ख़त कैसा है ?" तो उन्हों ने बताया : "या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दुन्या पर नज़रे रहमत फ़रमाई और अपनी रिसालत के लिये मख़्लूक़ में से आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का इन्तिख़ाब फ़रमाया और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये एक हबीब, भाई, दोस्त और वज़ीर चुन कर उस के साथ आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बेटी हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا का निकाह फ़रमा दिया।" मैं ने पूछा : "ऐ जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ज़रा येह तो बताओ कि येह मेरा हबीब कौन है ?" तो उन्हों ने जवाब दिया : "आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का चचा ज़ाद और दीनी भाई हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सारी जन्नतों और हूरों को आरास्ता पैरास्ता होने, शजरे तूबा को ज़ेवरात से मुज़य्यन होने और मलाइका को चौथे आस्मान में बैतुल मा'मूर के पास जम्अ होने का हुक्म दिया है, और रिज़्वाने जन्नत ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से बैतुल मा'मूर के दरवाज़े पर मिम्बरे करामत रख दिया है। येह वोही मिम्बर है कि जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को तमाम अश्या के नाम सिखाए थे तो उन्हों ने इस पर खुत्बा दिया था।

फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से इस मिम्बर पर राहील नामी फ़िरिश्ते ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के शायाने शान उस की हम्दो षना की तो आस्मान फ़रहत व सुरूर से झूम उठा।" फिर हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने मज़ीद अर्ज़ की : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे वह्य फ़रमाई कि "मैं ने अपने महबूब बन्दे अली का निकाह अपनी महबूब बन्दी और अपने रसूल की बेटी फ़ातिमा से कर दिया है, तुम इन का अक़्दे निकाह कर दो।" पस मैं ने अक़्दे निकाह कर दिया और इस पर फ़िरिश्तों को गवाह बनाया और उन की गवाही इस रेशम के टुकड़े में लिखी हुई हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं येह ख़त आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के हुज़ूर पेश करूं और इस पर सफ़ेद कस्तूरी की मोहर लगा कर दारोग़ए जन्नत, रिज़्वान के हवाले कर दूं। जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मलाइका को इस निकाह पर गवाह बनाया तो शजरे तूबा को हुक्म दिया कि वोह अपने ज़ेवरात बिखेरे। जब उस ने ज़ेवरात की बोछार की तो मलाइका और हूरों ने सब ज़ेवरात चुन लिये और हूरें क़ियामत तक येह ज़ेवरात एक दूसरे को तोहफ़े में देती रहेंगी और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से येह अर्ज़ करूं कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ज़मीन पर हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की शादी हज़रते अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से कर दें और मुझे येह भी हुक्म मिला है कि हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को दो ऐसे शहज़ादों की बिशारत दूं जो इन्तिहाई सुथरे, उम्दा ख़साइल व फ़ज़ाइल के हामिल, पाकीज़ा फ़ित्रत और दोनों जहां में भलाई वाले होंगे।" मक्की मदनी सुल्तान, रहमते आलमिय्यान, सरदारे दो जहान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अली (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ) अभी फ़िरिश्ता बुलन्द न हुवा था कि तुम ने दरवाज़े पर दस्तक दे दी। मैं तुम्हारे मुतअल्लिक़ हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ नाफ़िज़ कर रहा हूं, तुम मस्जिद में पहुंच जाओ, मैं भी आ रहा हूं। मैं लोगों की मौजुदगी में तुम्हारा निकाह करूंगा और तुम्हारे वोह फ़ज़ाइल बयान करूंगा जिन से तुम्हारी आंखें ठन्डी हों।"

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تعالٰی وَجہَهُ الکَرِیم इरशाद फ़रमाते हैं : "मैं बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से निकला तो इतनी जल्दी में था कि खुशी व मसर्रत से अपना होश भी न था । रास्ते में हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنہُما) से मुलाक़ात हुई, उन्हों ने पूछा : "ऐ अ़ली (رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنہُ) ख़ैरिय्यत है, क्या हुवा है ? कि तुम इतनी जल्दी में हो ।" तो मैं ने बताया : "रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ने मेरा निकाह़ अपनी शहज़ादी से कर दिया है और येह भी बताया है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने मेरा निकाह़ आस्मानों में किया है, अब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे पीछे पीछे मस्जिद में तशरीफ़ ला कर इस का ए'लान फ़रमाएंगे ।" वोह दोनों भी येह सुन कर खुश हो गए और मस्जिद की त़रफ़ चल दिये । ब खुदा عَزَّ وَجَلَّ जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए तो उन का चेहरा खुशी से दमक रहा था । आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ बिलाल (رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنہُ) मुहाजिरीन व अन्सार को जम्अ़ करो ।" हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنہُ ब हुक्मे नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले गए । इमामुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपने मिम्बरे अक़्दस के पास तशरीफ़ फ़रमा हो गए यहां तक कि जब सब लोग जम्अ़ हो गए तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मिम्बरे अक़्दस पर जल्वा अफ़रोज़ हो कर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की ह़म्दो षना की और इरशाद फ़रमाया : "ऐ मुसलमानो ! अभी अभी ह़ज़रते जिब्राईले अमीन (عَلَیْهِ السَّلَام) मेरे पास आए और येह ख़बर दी कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने बैतुल मा'मूर के पास मलाइका को गवाह बना कर मेरी बेटी फ़ात़िमा (رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنہَا) का निकाह़ अ़ली (رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنہُ) से कर दिया है, और मुझे भी हुक्म फ़रमाया है कि मैं ज़मीन पर इन का निकाह़ कर दूं । मैं तुम सब को गवाह बनाता हूं कि मैं ने अपनी बेटी का निकाह़ अ़ली (رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنہُ) से कर दिया है ।" फिर हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मिम्बर से नीचे तशरीफ़ ले आए और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा (كَرَّمَ اللّٰہُ تعالٰی وَجہَهُ الکَرِیم) से इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़ली (رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنہُ) खड़े हो कर खुत़्बए निकाह़ पढ़ो ।"

खुत़्बए निकाह़ :

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تعالٰی وَجہَهُ الکَرِیم ने खड़े हो कर अल्लाह तआ़ला की ह़म्दो षना की और येह खुत़्बा पढ़ा :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَشُكْرًا لِاَنْعُمِهٖ وَ اَیَادِیْهِ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْکَ لَهٗ وَلَا شَبِیْهَ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ
نَبِیُّهُ النَّبِیْهُ وَرَسُوْلُهُ الْوَجِیْهُ وَصَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَعَلٰی اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَ اَزْوَاجِهٖ وَ بَنِیْهِ صَلَاةً دَآئِمَةً تُرْضِیْهِ وَبَعْدُ!

या'नी सब ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के लिये हैं और उस के इन्आ़मात व एह़सानात पर उस का शुक्र है, मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वोह यक्ता है, उस का कोई शरीक व मिष्ल नहीं और गवाही देता हूं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं, उस के मुअ़ज़्ज़ज़ नबी और अ़ज़ीमुश्शान रसूल हैं, उन पर और उन की

आल व अस्हाब, अज़्वाजे मुत़हहरात और अवलादे अत़हार رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِنَّ اَجْمَعِيْن पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ऐसी दाइमी रह़मत हो जो हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ुश कर दे (आमीन) ।" इस के बा'द फ़रमाया : "निकाह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म पर अ़मल है और उस ने इस की इजाज़त दी है, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी शहज़ादी ह़ज़रते फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का निकाह़ मुझ से कर दिया है और मेरी इस ज़िरह को बत़ौरे ह़क़्क़े महर मुक़र्रर फ़रमाया है, मैं और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इस पर राज़ी हैं, तुम लोग आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से पूछ लो और गवाह बन जाओ ।" तो सब मुसलमानों ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे जोड़े में बरकत अ़त़ा फ़रमाए और तुम्हें इत्तिफ़ाक़ अ़त़ा फ़रमाए ।" फिर हुज़ूर नबिय्ये पाक साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी अज़्वाजे मुत़हहरात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ के पास तशरीफ़ लाए और उन्हें ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के निकाह़ पर दफ़ बजाने का हुक्म दिया तो उन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के पास दफ़ बजाया ।(1)

सय्यिदा फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का जहेज़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم इरशाद फ़रमाते हैं : "मैं ने अपनी ज़िरह ली और बाज़ार में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को चार सो दिरहम में फ़रोख़्त कर दी । जब मैं ने दिरहमों पर और उन्हों ने ज़िरह पर क़ब्ज़ा कर लिया तो मुझ से फ़रमाने लगे : "ऐ अ़ली ! क्या अब मैं आप से ज़ियादा ज़िरह का और आप मुझ से दराहिम के ह़क़दार नहीं ?" मैं ने कहा : "क्यूं नहीं ।" तो कहने लगे : "फिर येह ज़िरह मेरी त़रफ़ से आप को हदिय्या है ।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : "मैं ने ज़िरह और दिरहम लिये और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के हुस्ने सुलूक की ख़बर दी तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें ख़ैरो बरकत की दुआ़ दी और फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को बुला कर मुठ्ठी भर दिरहम उन्हें दिये और फ़रमाया : "इन दराहिम के इवज़ फ़ात़िमा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) के लिये मुनासिब अश्या ख़रीद लाओ । ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी और ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا को ख़रीदी हुई अश्या उठाने में मदद के लिये साथ भेजा । ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इरशाद फ़रमाते हैं : मुझे हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने तिरसठ (63) दिरहम अ़त़ा फ़रमाए थे, मैं ने रूई से भरा हुवा मोटे कपड़े का बिस्तर, चमड़े का दस्तर ख़्वान, चमड़े का तकया जिस में खजूर के पत्ते भरे हुए थे, पानी के लिये एक मश्कीज़ा और कूज़ा और नर्म ऊन का एक पर्दा

(1)....शादी में दफ़ बजाने के मुतअ़ल्लिक़ सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "दफ़ कि बिला जलाजल या'नी बिग़ैर झांझन का हो और तालसम (या'नी सुर) की रिआ़यत से न बजाया जाए और बजाने वाले न मर्द हों न ज़ी इ़ज़्ज़त औ़रतें, बल्कि क़नीज़ें या ऐसी कम हैषिय्यत औ़रतें । और वोह ग़ैर मह़ल्ले फ़ित्ना में बजाएं तो न सिर्फ़ जाइज़ बल्कि मुस्तह़ब व मन्दूब है । ह़दीष में मशरूत़ दफ़ बजाने का हुक्म दिया गया और इस की तमाम क़ुयूद को फ़तावा शामी वग़ैरा में ज़िक्र कर दिया गया ।" (फ़तावा रज़विय्या, जि.21 स.643)

ख़रीदा। फिर मैं, ह़ज़रते सलमान और ह़ज़रते बिलाल (رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने थोड़ा थोड़ा कर के वोह सामान उठा लिया और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर कर दिया। जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने देखा तो रोने लगे और आस्मान की जानिब निगाह उठा कर अ़र्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ऐसे लोगों को अपनी बरकत से नवाज़ जिन का शिआ़र ही तुझ से डरना है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم इरशाद फ़रमाते हैं : "आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बक़िय्या दिरहम ह़ज़रते सय्यिदुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के ह़वाले कर दिये और इरशाद फ़रमाया : "इन दराहिम को अपने पास रखो।" फिर एक महीना तक शर्मो ह़या के बाइ़ष मैं आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर न हुवा। जब कभी रास्ते में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मुलाक़ात होती तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते : "ऐ अ़ली (رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ) मैं ने तुम्हारा निकाह़ उस के साथ किया है जो तमाम जहानों की **औ़रतों की सरदार** है।"

सय्यिदा फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की रुख़्सती :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم इरशाद फ़रमाते हैं : "जब महीना गुज़र गया तो मेरे भाई ह़ज़रते अ़क़ील رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ मेरे पास तशरीफ़ लाए और कहने लगे : "ऐ मेरे भाई ! आज तक मैं इतना ख़ुश नहीं हुवा जितना येह सुन कर ख़ुश हुवा कि तुम्हारी शादी बिन्ते रसूल से हो गई है, अब अगर आप इन को अपने घर भी ले आएं तो इस से हमारे दिल ख़ुश होंगे।" मैं ने जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! मैं भी येही चाहता हूं लेकिन मुझे सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से शर्म आती है।" उन्हों ने कहा : "मैं आप को क़सम देता हूं कि आप मेरे साथ चलें।" लिहाज़ा हम आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में मुलाक़ात के इरादे से घर से निकले तो रास्ते में हमारी मुलाक़ात आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ादिमा ह़ज़रते उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا से हो गई। हम ने उन से तज़्किरा किया तो कहने लगीं : "ज़रा इन्तिज़ार करें, हम औ़रतें आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से ह़ज़रते फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के मुतअ़ल्लिक़ बात करती हैं कि (इन मुआ़मलात में) मर्दों की निस्बत औ़रतों की बातें ज़ियादा मुअष्षिर होती हैं।" वोह वापस मुड़ कर ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا के पास गईं और उन्हें और फिर दूसरी अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُنَّ को सारी बात बताई तो सब उम्मुहातुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُنَّ इकठ्ठी हो कर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हुजरए मुबारका में ह़ाज़िर हुईं और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चारों त़रफ़ बैठ कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) हमारे मां बाप आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान ! हम एक अहम मुआ़मले में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ह़ाज़िर हुई हैं, काश ! अगर आज ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا ज़िन्दा होतीं तो इस से उन की आंखें ठन्डी होतीं।"

हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡھَا फ़रमाती हैं : "जब हम ने हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡھَا का तज़किरा किया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आबदीदा हो गए और इरशाद फ़रमाया : "ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡھَا की मिष्ल कौन हो सकता है ? उस ने मेरी उस वक़्त तस्दीक़ की जब सब ने मुझे झुटला दिया और अपने माल से मेरे दीन व दुन्या के मुआ़मलात में मेरी इमदाद की ।" तो हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡھَا ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) हां वाक़ेई हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡھَا ऐसी ही थीं मगर वोह अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के पास जा चुकी हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ यक़ीनन हमें उन के साथ जन्नत में जम्अ़ फ़रमाएगा । आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चचाज़ाद और दीनी भाई हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ अपनी बीवी हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡھَا की रुख़्सती चाहते हैं ।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म फ़रमाया : "उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡھَا को अ़ली (رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ) को बुलाने के लिये भेज दो ।" हज़रते उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡھَا जब निकलीं और हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ को अपना मुन्तज़िर पाया तो उन से अ़र्ज़ की : "हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बुलावे पर लब्बैक कहें ।"

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہ تَعَالٰی وَجۡھَہُ الۡکَرِیۡم फ़रमाते हैं : "जब मैं उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡھَا के साथ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुवा तो तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡھُنَّ अन्दर कमरे में तशरीफ़ ले गईं, मैं आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने सर झुका कर बैठ गया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : "क्या तुम अपनी ज़ौजा के साथ रहना चाहते हो ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर कुरबान !" आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बड़ी महब्बत व इ़ज़्ज़त से, اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज रात से तुम अपनी ज़ौजा के साथ रहा करोगे । हज़रते सय्यिदुना अ़ली کَرَّمَ اللّٰہ تَعَالٰی وَجۡھَہُ الۡکَرِیۡم फ़रमाते हैं : "फिर मैं आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस से ख़ुशी व मसर्रत की ह़ालत में उठा ।"

हज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ का वलीमा :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल, रसूले मक़्बूल, बीबी आमिना के गुलशन के महकते फूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡھَا को आरास्ता करने का हुक्म दिया और हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡھَا के पास रखे हुए दराहिम में से दस दिरहम हज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہ تَعَالٰی وَجۡھَہُ الۡکَرِیۡم को दिये और इरशाद फ़रमाया : "इन से खजूर, घी और पनीर ख़रीद लो ।" आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : "मैं येह चीज़ें ख़रीद कर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो गया । आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने चमड़े का एक दस्तर ख़्वान मंगवाया और आस्तीनें चढ़ा कर खजूरों को घी में मसलने लगे और फिर पनीर के साथ इस त़रह़ मिलाया कि वोह ह़ल्वा बन गया फिर इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़ली (رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ) जिसे चाहो बुला लाओ ।" मैं

मस्जिद गया और आप صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सहाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْھِنَّ اَجْمَعِین से कहा : "आप صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की दा'वत क़बूल करें।" सब लोग उठ कर चल दिये। जब मैं ने आप صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की, कि लोग बहुत ज़ियादा हैं तो आप صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने चमड़े के दस्तर ख़्वान को एक रूमाल से ढांक दिया और इरशाद फ़रमाया : "दस दस अफ़राद को दाख़िल करते जाओ।" मैं ने ऐसा ही किया। सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم खा कर निकलते गए लेकिन खाने में बिल्कुल कमी न हुई यहां तक कि आप صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बरकत से सात सो अफ़राद ने वोह ह़ल्वा खाया।"

इस के बा'द आप صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते फ़ातिमा और ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا को अपने पास बुलाया और ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَهُ الْكَرِیْم को अपने दाएं और ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا को अपने बाएं त़रफ़ बिठा कर सीने से लगाया और दोनों की आंखों के दरमियान पेशानी पर बोसा दिया और फिर ह़ज़रते फ़ातिमा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا) को ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَهُ الْكَرِیْم के ह़वाले कर दिया और इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़ली ! मैं ने कितनी अच्छी ज़ौजा से तेरा निकाह़ किया है।" फिर उन दोनों के साथ उन के घर तक पैदल चले। फिर घर से बाहर निकल कर दरवाज़े के किवाड़ पकड़े और येह दुआ़ फ़रमाई : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम दोनों को इत्तिफ़ाक़ व इत्तिह़ाद अ़त़ा फ़रमाए, मैं तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द करता हूं और तुम दोनों को उस की ह़िफ़ाज़त में देता हूं।"

शादी की पहली रात :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَهُ الْكَرِیْم ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا से मह़ब्बत भरी गुफ़्तगू करने लगे यहां तक कि जब रात का अन्धेरा छा गया तो वोह रोने लगीं। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَهُ الْكَرِیْم ने पूछा : "ऐ तमाम औ़रतों की सरदार ! क्या आप ख़ुश नहीं कि मैं आप का शोहर हूं और आप मेरी बीवी हैं ?" कहने लगीं : "मैं क्यूं कर राज़ी न होऊंगी, आप तो मेरी रिज़ा बल्कि इस से भी बढ़ कर हैं, मैं तो अपनी उस ह़ालत व मुआ़मले के मुतअ़ल्लिक़ सोच रही हूं कि जब मेरी उ़म्र बीत जाएगी और मुझे क़ब्र में दाख़िल कर दिया जाएगा, आज मेरा इ़ज़्ज़त व फ़ख़्र के बिस्तर में दाख़िल होना कल क़ब्र में दाख़िल होने की मानिन्द है। आज रात हम अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में खड़े हो कर इ़बादत करेंगे कि वोही इ़बादत का ज़ियादा ह़क़ रखता है।" इस के बा'द वोह दोनों इ़बादत की जगह खड़े हो कर रब्बे क़दीर عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करने लगे।

इ़बादत हो तो ऐसी :

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! येह ऐसे लोग हैं कि जिन का पुख़्ता अ़ज़्म, ख़्वाहिशात और मक़्सूद न तो दुन्या और उस की लज़्ज़ात थीं और न ही नफ़्स की राह़त व ख़्वाहिशात। बल्कि उन की बुलन्द हिम्मतों की परवाज़ हमेशा बाक़ी रहने वाले ठिकाने की त़रफ़ थी। यक़ीनन उन का ज़िक्र क़ुरआने पाक में लिख दिया गया और उन को बिशारत दे दी गई :

﴿١﴾ اِنَّمَا یُرِیْدُ اللّٰهُ لِیُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَیْتِ وَیُطَهِّرَكُمْ تَطْهِیْرًا ۝ (پ۲۲،الاحزاب:۳۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** *तो येही चाहता है ऐ नबी के घर वालों कि तुम से हर नापाकी दूर फ़रमा दे और तुम्हें पाक कर के ख़ूब सुथरा कर दे।*(1)

उन दोनों मुबारक हस्तियों ने अपनी लज़्ज़ात के बिस्तर को छोड़ दिया और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की इबादत में मसरूफ़ हो गए, रात क़ियाम में तो दिन रोज़े की ह़ालत में बसर होता ह़त्ता की तीन रोज़ इसी त़रह़ गुज़र गए। फिर वोह दोनों अपने बिस्तर पर आराम फ़रमा हुए। चौथे दिन ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** तआ़ला आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को सलाम भेजता है और इरशाद फ़रमाता है कि अ़ली और फ़ात़िमा ने तीन दिन से नींद और बिस्तर को तर्क कर रखा है और इबादत और रोज़ों में मसरूफ़ हैं, तुम उन के पास जाओ और उन से इरशाद फ़रमाओ कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम्हारी वजह से मलाइका पर फ़ख़्र फ़रमा रहा है और येह कि तुम दोनों बरोज़े क़ियामत गुनहगारों की शफ़ाअ़त करोगे।" आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़ौरन उन के घर तशरीफ़ लाए तो वहां ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को पाया तो इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "किस चीज़ ने तुझे यहां ठहराया है? ह़ालांकि घर में एक मर्द भी मौजूद है।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم! मेरे मां बाप आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान! जब कोई लड़की शादी की पहली रात अपने ख़ावन्द के पास आती है तो उसे एक ऐसी औ़रत की ज़रूरत होती है जो उस की देख भाल करे और उस की ज़रूरियात पूरी करे। लिहाज़ा ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ज़रूरियात पूरी करने के लिये मैं यहां ठहर गई।" इस पर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की चश्माने मुबारक नमनाक हो गईं और दुआ़ फ़रमाई : ऐ अस्मा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तेरी दुन्या व आख़िरत की तमाम ह़ाजात पूरी फ़रमाए।

ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم को आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की नसीह़त :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : "वोह सुब्ह़ इन्तिहाई ठन्डी और शदीद सर्द थी, मैं और फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا एक ही चादर में मह़्वे आराम थे। जब हम ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक आवाज़ सुनी तो जल्दी से खड़े होने लगे मगर

---

❶...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं "या'नी गुनाहों की नजासत से तुम आलूदा न हो। इस आयत से अहले बैत की फ़ज़ीलत षाबित होती है और अहले बैत में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के अज़्वाजे मुत़ह्हारत और ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत फ़ात़िमा ज़हरा और अ़ली मुर्तज़ा और ह़सनैने करीमैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) सब दाख़िल हैं। आयात व अह़ादीष को जम्अ़ करने से येही नतीजा निकलता है और येही और ह़ज़रते इमाम अबू मन्सूर मातरीदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मन्क़ूल है। इन आयात में अहले बैते रसूले करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को नसीह़त फ़रमाई गई है ताकि वोह गुनाहों से बचें और तक़्वा व परहेज़गारी के पाबन्द रहें, गुनाहों को नापाकी से और परहेज़गारी को पाकी से इस्तिआ़रा फ़रमाया गया क्यूंकि गुनाहों का मुर्तकिब उन से ऐसा ही मुलव्विष होता है जैसा जिस्म नजासतों से। इस त़र्ज़े कलाम से मक़्सूद येह है कि अरबाबे उ़क़ूल को गुनाहों से नफ़्रत दिलाई जाए और तक़्वा व परहेज़गारी की तरग़ीब दी जाए।"

आप صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें देख कर इरशाद फ़रमाया : "मैं तुम्हें अपने ह़क़ का वासित़ा देता हूं कि इसी ह़ालत में रहो यहां तक कि मैं भी तुम्हारे साथ शामिल हो जाऊं।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡہَهُ الۡكَرِيۡم फ़रमाते हैं : हम इसी ह़ालत में रहे और आप صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आ कर हमारे सरों के क़रीब तशरीफ़ फ़रमा हो गए और अपने क़दमैन शरीफ़ैन हमारे दरमियान में रख दिये तो मैं ने आप صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का दायां पाउं पकड़ कर सीने से लगा लिया और ह़ज़रते फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने बायां पाउं थाम लिया। फिर हम दोनों आप صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दमैन शरीफ़ैन को सर्दी से बचाने के लिये मलने लगे ह़त्ता की वोह गर्म हो गए। आप صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें दुआ़ए ख़ैर दी और फिर ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ को बाहर जाने का हुक्म दिया। जब वोह चले गए तो ह़ज़रते फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से पूछा : "ऐ मेरी बेटी ! तू ने अपने शोहर को कैसा पाया ?" उन्हों ने जवाब दिया : "वोह बेहतरीन शोहर हैं।" फिर आप صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ को बुलाया और इरशाद फ़रमाया :

"अपनी ज़ौजा से नर्मी से पेश आना, बेशक फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا मेरे जिस्म का टुकड़ा है, जो चीज़ इसे दुख देगी मुझे भी दुख देगी और जो इसे ख़ुश करेगी मुझे भी ख़ुश करेगी, मैं तुम दोनों को अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के सिपुर्द करता हूं, और तुम दोनों को उस की ह़िफ़ाज़त में देता हूं। उस ने तुम से नापाकी दूर कर दी और तुम्हें पाक कर के ख़ूब सुथरा कर दिया।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡہَهُ الۡكَرِيۡم फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! इस हुक्मे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द मैं ने न तो कभी ह़ज़रते फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہَا पर गुस्सा किया और न ही किसी बात पर उन्हें नापसन्द किया यहां तक कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने उन को अपने पास बुला लिया, बल्कि वोह भी कभी मुझ से नाराज़ न हुई और न ही किसी बात में मेरी नाफ़रमानी की और जब भी मैं उन को देखता तो वोह मेरे दुख दर्द दूर करती दिखाई देतीं।"

وَصَلَّى اللّٰه عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی آلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِين

बयान 49 : मौत और इस में गौरो फ़िक्र का बयान

हम्दे बारी तआला :

सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने तन्हा मुख़्तलिफ़ अश्या और मख़्लूक़ात को पैदा किया। वोह जिस्म, तक़्सीम और हैअत व सूरत से मुनज़्ज़ा है। शक्ल, मिष्ल, जगह और जहत से बहुत बुलन्द है। आ'यान, अलवान और कैफ़िय्यात से पाक है। क़दीम अस्मा व सिफ़ात से मौसूफ़ है। जो उसे पुकारता है उस के क़रीब है मगर मसाफ़त वाली क़ुर्बत से नहीं। जो इख़्लास भरी दुआओं के ज़रीए उस से मुनाजात करता, उस की दुआ को क़बूल फ़रमाने वाला है। वोह गुनाहों को मुआफ़ करता, ऐबों को छुपाता, अपने बन्दों की तौबा को क़बूल करता, बुराइयों से दरगुज़र फ़रमाता है। वोह दिल के पोशीदा राज़, छुपे अफ़्कार और ओझल उमूर को जानने वाला है। वोह ऐसा ख़बरदार है जिस पर ज़मीनो आस्मान की ज़र्रा भर चीज़ मख़्फ़ी नहीं। वोह ऐसा सुनने वाला है कि आवाज़ों का इख़्तिलाफ़ उस की समाअ़त से पोशीदा नहीं। वोह ऐसा देखने वाला है कि अन्धेरों में रैत पर च्यूंटी के रैंगने का निशान उस से ओझल नहीं। वोह अकेला है, उस का कोई षानी नहीं। वोह यक्ता, बेनियाज़ और बेटों और बेटियों से पाक है। वोह हमेशा से है हमेशा रहेगा और हर कोई फ़ना हो जाएगा, वोही उन की मौत का फ़ैसला फ़रमाता है।

पाक है वोह जो ज़िन्दों को मारने और मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है। इन्सान जिस वक़्त दुन्या में शहवात की लज़्ज़त के सबब धोके में मुब्तला होता और ग़फ़्लत के समन्दर में ग़र्क़ होता है तो ऐसे में जब उस के पास मौत आती है तो वोह उसे अपनी सख़्तियों के जाम घूंट घूंट पिलाती और इस पर अपने मसाइब को डाल देती है, उस वक़्त मौत की सख़्तियां उसे घेर लेती हैं और अपनी शिद्दत से उसे ह़सरतों में मुब्तला कर देती है। जिन लज़्ज़तों में वोह खोया हुवा था, मौत उसे उन से जुदा कर देती है। मां बाप को रुलाती और बेटे बटियों को यतीम कर देती है। मरने वाले के मसाइब व आलाम पर इ़ब्रतों का पहरा बैठ जाता है। लोग उसे कन्धों पर उठा कर वीरान क़ब्रिस्तान की त़रफ़ ले चलते हैं। और वोह अपनी क़ब्र में रेज़ा रेज़ा हो जाएगा। इस तन्हाई में सिर्फ़ अच्छे बुरे आ'माल उस के साथ होंगे। वहां तक़्वा व इ़बादात, भलाई व सदक़ात, नमाज़ और दुआओं के इ़लावा कुछ काम न आएगा। तो क्या अ़क़्लमन्द इन्सान, मरने वाले की पकड़ व हलाकत से अब भी इ़ब्रत ह़ासिल नहीं करता? तह़क़ीक़ पसीने वाली क़ब्रों ने मुर्दे पर क़ब्ज़ा कर लिया। आक़ा व ग़ुलाम कहां गए? तो फिर इन्सान ज़िन्दा रहने में किस त़रह़ त़म्अ़ करता हैं।

ह़ालांकि, दलाइल व मो'जिज़ात के मालिक, दो आ़लम के दाता, मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "बेशक मौत की सख़्तियां बहुत हैं।"

(صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب مرض النّبی صلی اللہ علیہ وسلم ووفاتہ، الحدیث ٤٤٤٩، ص ٣٦٥)

ऐ ग़फ़्लतों के शिकार ! अपनी मौजूदा ह़ालत से ख़बरदार हो जा। और आख़िरत के त़वील सफ़र के लिये ज़ादे राह तय्यार कर ले। क्यूंकि ज़िन्दगी थोड़ी सी बाक़ी है जब कि जाने वाले के लिये मौत की सख़्तियों के जाम तय्यार हो चुके हैं।

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : "एक दिन मैं ने रसूले पाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को मुजाहिदीन के षवाब और उन के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के जन्नत में तय्यार कर्दा अज्रो षवाब के मुतअ़ल्लिक़ बयान फ़रमाते सुना तो अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم क्या मुजाहिदीन के इ़लावा भी आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के किसी उम्मती के लिये इतना अज्र है ?" तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हां ! जो शख़्स रोज़ाना बीस मरतबा मौत को याद करे (तो वोह भी मुजाहिदीन की मिष्ल अज्रो षवाब पाएगा)।" (قوت القلوب،ذكر التداوى وتركه للمتوكل،ج٢،ص٥٣،بتغيرٍ)

मलकुल मौत का ए'लान :

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, हु़ज़ूर जाने रह़मत, माहे नबुव्वत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "कोई घर ऐसा नहीं जिस के दरवाज़े पर मलकुल मौत (या'नी मौत का फ़िरिश्ता) रोज़ाना पांच मरतबा न खड़ा होता हो। जब वोह ऐसे इन्सान को पाता है जिस का रिज़्क़ ख़त्म हो चुका होता और उ़म्र मुकम्मल हो चुकी होती है तो उस पर मौत का ग़म डाल देता है, फिर मौत की सख़्तियां उस बन्दे को ढांप लेती हैं। फिर जिस की घर वाली अपने बाल मुन्तशिर करती, चेहरा पिटती, गिर्या व ज़ारी करती और हलाकत व तबाही को पुकारती है तो मलकुल मौत कहता है : "तुम पर हलाकत हो, येह आहो बुका क्यूं करते हो ? मैं ने तो किसी का रिज़्क़ नहीं छीना, न किसी की मौत उस के क़रीब की, न किसी के पास हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ के बिग़ैर आया और न उस के हुक्म के बिग़ैर किसी की रूह़ क़ब्ज़ की और मैं तो तुम्हारे पास बार बार आऊंगा ह़त्ता कि तुम में से किसी को ज़िन्दा न छोड़ूंगा।"

हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) की जान है ! अगर लोग मुर्दे का ठिकाना देख लें और उस का कलाम सुन लें तो अपनी मय्यित को भूल जाएं और अपनी जानों पर रोने लगें। यहां तक कि जब मुर्दे को तख़्त पर रखा जाता है तो उस की रूह़ तख़्त के ऊपर फड़ फड़ाते हुए पुकारती है : "ऐ मेरे अहलो इयाल ! दुन्या तुम्हारे साथ इस त़रह़ न खेले जिस त़रह़ मेरे साथ खेली। मैं ने ह़लाल व ग़ैरे ह़लाल माल जम्अ़ किया फिर वोह माल दूसरों के लिये छोड़ आया, इस का नफ़्अ़ तुम्हारे लिये है और नुक़्सान मेरे लिये। पस जो कुछ मुझ पर गुज़री है इस से मोह़तात़ रहो (या'नी इ़ब्रत ह़ासिल करो)।"

(الفتوحات المكية لابن عربى،الباب الموفى ستين وخمسمائة فى وصية حكمية......الخ، ج٨، ص٤٦٥)

हर उ़ज़्व मौत का शिकार :

कहते हैं, मौत की तक्लीफ़ वोही जानता है जो उस का शिकार होता और उस की तकालीफ़ से दो चार होता है। मौत की तक्लीफ़ तल्वार के वार से ज़ियादा दुश्वार है। उस का दर्द क़ैंचियों से काटे जाने और आरों से चीरे जाने से भी ज़ियादा सख़्त है। इस लिये कि तल्वार से कट जाने की तक्लीफ़ बदन में सिर्फ़ उस वक़्त तक रहती है जब तक इस में क़ुव्वत (या'नी ह़यात) बाक़ी रहती है। इसी वजह से ज़ख़्मी चिल्लाता और फ़रयाद करता है जब कि मौत का मुआ़मला तो इस के बर अ़क्स है क्यूंकि मुर्दे के दिल पर त़ारी होने वाले कर्ब व इज़्तिराब की शिद्दत उस की आवाज़ को ख़त्म कर देती और क़ुव्वत को कमज़ोर कर देती है। मौत जिस्म के हर उ़ज़्व को इस त़रह़ बेकार व बे ज़ोर कर देती है कि उस से क़ुव्वते फ़रयाद भी छीन लेती है। अ़क़्ल को मदहोश और ज़बान को ख़ामोश कर देती है। साथ ही दीगर आ'ज़ा की त़ाक़त का भी ख़ातिमा कर देती है। मुर्दा चीख़ो पुकार कर के राह़त चाहता है लेकिन करे क्या ? क़ुदरत नहीं। अगर्चे नज़्ए़ रूह़ के वक़्त सुनने की क़ुव्वत बाक़ी रहती है। रूह़ निकलते वक़्त सीने और गले से गाए, बेल की मिष्ल आवाज़ें निकलती हैं। चेहरे का रंग सियाही माइल ख़ाकी रंग में बदल जाता है। आंखों के सियाह ढेले पपोटों की त़रफ़ बुलन्द हो जाते हैं। ख़ुसिये (या'नी फ़ोत़े) भी अपनी जगह से उठ जाते हैं। उंगलियां ज़र्द पड़ जाती हैं। हर उ़ज़्व जुदा जुदा मौत का शिकार होता है। सब से पहले पाउं फिर पिन्डलियां फिर रानें मौत की ज़द में आ जाती हैं। यूं हर उ़ज़्व बार बार शिद्दत व सख़्ती और कर्ब व इज़्तिराब से दो चार होता है। बिल आख़िर जब रूह़ गले तक पहुंचती है तो दुन्या और अहले दुन्या नज़रों से ओझल हो जाते हैं और ह़सरत व नदामत उसे घेर लेते हैं।

मरवी है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم किसी मरीज़ के पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया : "बेशक मैं इस की तक्लीफ़ जानता हूं, इस की हर रग, जुदा जुदा मौत की अज़िय्यत का शिकार है।"

(البحر الزخار بمسند البزار،مسندسلمان الفارسی،الحدیث ۲۵۱۲،ج۶،ص ۴۸۰)

मरवी है, सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए़ रोज़े शुमार, महबूबे ग़फ़्फ़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पास ब वक़्ते विसाल पानी का एक प्याला था। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपना दस्ते अक़्दस इस में डालते फिर इसे चेहरए अन्वर पर फेरते और फ़रमाते : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, बेशक मौत की सख़्तिया बहुत हैं।" (صحیح البخاری،کتاب الغازی،باب مرض النبی ﷺ ووفاته،الحدیث ۴۴۴۹،ص ۳۶۵)

एक रिवायत में है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم येह दुआ़ फ़रमाते : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ पर मौत की सख़्तियां आसान फ़रमा।"

(احیاء علوم الدین،کتاب الذکر والموت ومابعدها،باب ثالث فی سکرات الموت......الخ،ج ۵، ص ۲۱۰)

एक रिवायत में सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ़ के अल्फ़ाज़ येह हैं : ''मौत की सख़्तियों में मेरी मदद फ़रमा।'' . (جامع الترمذی،ابواب الجنائز،باب ماجاء فی التشدیدعندالموت،الحدیث ۹۷۸،ص۱۷۴٤)

हज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : ''ऐ मेरे बाबा जान ! हाए ! आप की तक्लीफ़ पर मुझे कितना ग़म हुवा !'' तो इरशाद फ़रमाया : ''आज के बा'द तुम्हारे बाप पर कोई सख़्ती न होगी।''(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب التاریخ، باب وفاتہ ﷺ، الحدیث ٦٥٨٨،ج٨،ص٢١٤ ۔سنن ابن ماجۃ، ابو اب الجنائز، باب ذکر وفاتہ ودفنہ ﷺ، الحدیث:١٦٢٩،ص٢٥٧٤)

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم जिहाद की तरग़ीब दिलाते और फ़रमाते : ''अगर तुम शहीद न होगे तो मर जाओगे। उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! तल्वार की हज़ार ज़र्बें भी मेरे नज़्दीक बिस्तर पर मरने से आसान हैं।'' (موسوعة لابن ابی الدنیا،کتاب الذکرالموت،الخوف من اللّٰہ تعالٰی،الحدیث۱۸۷،ج۵، ص ۴۵۱)

हज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''अहले ईमान पर मौत दोनों जहान की तमाम तर होलनाकियों से ज़ियादा दर्दनाक है। मौत की तकालीफ़ क़ैंचियों से काटे जाने, आरों से चीरे जाने और हंडियों में उबाले जाने से सख़्त तर हैं। अगर मरने वाला उठ कर दुन्या वालों को मौत की तक्लीफ़ से आगाह कर दे तो इन का जीना दूभर हो जाए और नींद का सब मज़ा जाता रहे।'' (الموسوعة لابن ابی الدنیا،کتاب الذکر الموت،الخوف من اللّٰہ تعالٰی،الحدیث۱۷۰،ج۵، ص ۴۴٦)

मन्क़ूल है : ''ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के इन्तिक़ाल के बा'द जब उन की रूह़ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हुई तो ख़ुदाए रह़मान عَزَّ وَجَلَّ ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : ''ऐ मूसा ! तुम ने मौत को कैसा पाया ?''अ़र्ज़ की : ''मैं ने ख़ुद को चिड़या की मानिन्द पाया। जब उस को ज़िन्दा कड़ाही में भूना जाए तो न वोह मरे कि राह़त पाए और न नजात पाए कि उड़ जाए।'' (احیاء علوم الدین،کتاب الذکروالموت ومابعدھا،باب ثالث فی سکرات الموت...... الخ ،ج۵،ص۲۱۰)

दूसरी रिवायत में है : ''मैं ने ख़ुद को ज़िन्दा बकरी की मिष्ल पाया जिस की खाल उतार दी जाए।'' (احیاء علوم الدین،کتاب الذکروالموت ومابعدھا،باب ثالث فی سکرات الموت...... الخ ،ج۵،ص۲۱۰)

अल्लाह तआ़ला का फ़रमाने आ़लीशान है :

﴿۱﴾ وَجَآءَتْ سَکْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِکَ مَا کُنْتَ مِنْهُ تَحِیْدُ ۝ (پ۲٦،ق:۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती ह़क़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था।*

''بِـالْـحَقِّ'' से मुराद मुआ़मलए आख़िरत की ह़क़ीक़त है कि जब मरने वाला आगाह होगा और ब चश्मे सर मौत को देखेगा, और मलकुल मौत का मुशाहदा और उसे देख कर दिल में पैदा होने वाला ख़ौफ़ और घबराहट एक ऐसा अम्र है जिस की ह़क़ीक़त बयान करने से हर बयान करने वाले की इ़बारत क़ासिर है और उस की हौलनाकी का इह़ात़ा करने से हर वज़ाह़त करने वाला आ़जिज़ है। इस की ह़क़ीक़त वोही जानता है जो इस मरह़ले से गुज़र चुका हो। चुनान्चे,

ख़ौफ़नाक सूरत :

मन्क़ूल है : "हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام से फ़रमाया : "क्या तुम मुझे वोह सूरत दिखा सकते हो जिस में तशरीफ़ ला कर नाफ़रमानों की रूह़ क़ब्ज़ करते हो ?" हज़रते सय्यिदुना इज़राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने कहा : "आप عَلَیْہِ السَّلَام सह नहीं सकेंगे ।" हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने कहा : "क्यूं नहीं (मैं देख लूंगा) ।" उन्हों ने कहा : "आप मुझ से अलग हो जाइये ।" हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अलग हो गए । फिर उधर मुतवज्जेह हुए तो मुलाह़ज़ा किया, काले कपड़ों में मलबूस एक सियाह फ़ाम शख़्स है जिस के बाल खड़े हैं, बद बू आ रही है, उस के मुंह और नथनों से आग और धुवां निकल रहा है । (येह देख कर) हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर बेहोशी त़ारी हो गई । जब होश आया तो मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام अपनी अस्ल ह़ालत पर आ चुके थे । आप عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : "ऐ मलकुल मौत (عَلَیْہِ السَّلَام) मौत के वक़्त सिर्फ़ तुम्हारी सूरत देखना ही फ़ासिक़ व फ़ाजिर के लिये बहुत बड़ा अ़ज़ाब है ।"

(احیاء علوم الدین، کتاب الذکر والموت ومابعدھا،باب ثالث فی سکرات الموت...... الخ،ج۵،ص ۲۱۰)

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने कुछ लोगों को मय्यित पर रोते हुए देख कर इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम मय्यित पर रोने की बजाए ख़ुद अपनी जानों पर रोते तो तुम्हारे लिये बेहतर था कि मय्यित को तो तीन हौलनाक मराह़िल से नजात मिल गई है : (1)....मलकुल मौत को उस ने देख लिया (2).....मौत का ज़ाइक़ा भी उस ने चख लिया और (3)....उसे (बुरे) ख़ातिमे का ख़ौफ़ भी न रहा ।" लिहाज़ा अ़क़्ल मन्द इन्सान को चाहिये कि अपनी जान पर रोए कि येही उस के ज़ियादा लाइक़ है और उसे इस बात से हरगिज़ ग़ाफ़िल नहीं होना चाहिये कि मौत उस की तलाश में उस के पीछे पीछे है ।

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! मौत जैसा वाइज़ व मुबल्लिग़ कोई नहीं, मगर तुम इस से इ़ब्रत व नसीह़त ह़ासिल नहीं करते । वोह तुम्हारी तलाश में है और तुम उस से बे ख़बर । क्या तुम्हारा येह गुमान है कि तुम्हें दुन्या में हमेशा रहना है ? (सुनो !) मौत का जाम हर एक को पीना है । तौशा साथ ले लो, क़ाफ़िला चलने को तय्यार है । दुन्या की रंगिनियों से धोका न खाना कि येह तो आ़रिज़ी हैं । झूटी उम्मीदों से बचो कि इन का ज़ह्र ज़ह्रे क़ातिल है । कब तक ग़फ़्लत व जहालत की चादर ओढ़े रहोगे ? कब तक दुन्यवी माल और अहलो इ़याल के धोके में रहोगे ? कब तक इस ह़क़ीर व ज़लील दुन्या को आख़िरत पर तरजीह़ देते रहोगे ? ह़ालांकि येह तुम्हारी हलाकत व बरबादी के लिये कोशां है । कब तक अपने से पहले जाने वालों के पास पहुंचने को भूले रहोगे ? कब तक कषरते मलामत व इ़ताब तुम में बे अषर रहेगी ? कब तक अपना सारा माल व अस्बाब छोड़ कर कूच करने को याद

नहीं करोगे ? आखिर कब तक तुम्हें नसीहत समझ नहीं आएगी ? बेशक तुझे कहा गया "जाग जा ओ बे ख़बर ! जाग जा । तेरे जैसे कितनों के साथ ख़्वाहिशात खेलीं ।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

﴿۲﴾ اَلْھٰکُمُ التَّکَاثُرُ 0 حَتّٰی زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ 0 (پ۳۰،التکاثر:۲،۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हें गाफ़िल रखा माल की ज़ियादा तलबी ने यहां तक कि तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा ।

या'नी माल व अवलाद की ज़ियादा तलबी ने तुम्हें मौत की तय्यारी से गाफ़िल रखा । हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अज़ाबे क़ब्र से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह तलब करो ।"

﴿۳﴾ کَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ 0 (پ۳۰،التکاثر:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हां हां जल्द जान जाओगे ।

या'नी मौत की सख़्तियों और हौलनाकियों के वक़्त तुम जान लोगे ।

﴿۴﴾ ثُمَّ کَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ 0 (پ۳۰،التکاثر:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर हां हां जल्द जान जाओगे ।

या'नी मौत के बा'द क़ब्र में मुन्कर नकीर को देख कर तुम जान लोगे ।

हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "जब किसी बन्दए मोमिन को क़ब्र में रखा जाता है तो उस की क़ब्र सत्तर गज़ लम्बी और सत्तर गज़ चोड़ी कर दी जाती है । उस पर ख़ुश्बूदार ठन्डी हवाएं चलाई जाती हैं । उसे रेशमी लिबास पहनाया जाता है । फिर अगर उस के नामए आ'माल में कुछ तिलावते क़ुरआन भी हो तो इस का नूर ही उसे क़ब्र में काफ़ी होता है । और इस की मिषाल दुल्हन की सी है कि वोह सोती है तो उस का महबूब तरीन शख़्स ही उसे बेदार करता है फिर वोह इस तरह बेदार होती है गोया अभी उस की नींद बाक़ी है । और फ़ाजिर व फ़ासिक़ और काफ़िर की क़ब्र को इस क़दर तंग कर दिया जाता है कि उस की पस्लियां टूट फूट कर एक दूसरे में पैवस्त हो जाती हैं । उस पर ऊंट की गर्दन की मानिन्द मोटे मोटे सांप छोड़ दिये जाते हैं । वोह उन का गोश्त खाते हैं यहां तक कि हड्डियों पर ज़र्रा बराबर गोश्त भी नहीं छोड़ते । फिर गूंगे, बहरे और अन्धे फ़िरिश्तों को लोहे के गुर्जे दे कर उस पर मुसल्लत कर दिया जाता है । तो वोह उन गुर्जों से उसे मारते हैं, उन्हें सुनाई नहीं देता कि उस की चीख़ो पुकार सुन कर तरस खाएं, न उन्हें दिखाई देता है कि उस की हालते ज़ार देख कर उस पर नर्मी बरतें । उसे सुब्हो शाम आग पर पेश किया जाता है ।" (الامان والحفیظ)

(مصنف عبدالرزاق، کتاب الجنائز، باب الصبر و البکاء و النیاحۃ، الحدیث ۶۷۳۱، ج۳، ص۳۷۴، بتغیر)

﴿या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें क़ब्र व आख़िरत की तय्यारी करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा । اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم﴾

क़ब्र की डांट :

सरवरे ज़ीशान, रह़मते आ़लमिय्यान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जब मय्यित को क़ब्र में उतार दिया जाता है तो क़ब्र उस से ख़िता़ब करती है : "ऐ आदमी तेरा नास हो ! तू ने किस लिये मुझे फ़रामोश कर रखा था ? क्या तुझे इतना भी पता न था कि मैं फ़ितनों का घर हूं, तारीकी का घर हूं, फिर तू किस बात पर मुझ पर अकड़ अकड़ कर चलता था ?" अगर वोह मुर्दा नेक बन्दे का हो तो एक ग़ैबी आवाज़ क़ब्र से कहती है, "ऐ क़ब्र ! अगर येह उन में से हो जो नेकी का हुक्म करते रहे और बुराई से मन्अ़ करते रहे तो फिर ! (तेरा सुलूक क्या होगा ?)" क़ब्र कहती है, "अगर येह बात हो तो मैं उस के लिये गुलज़ार बन जाती हूं।" चुनान्चे, फिर उस शख़्स का बदन नूर में तब्दील हो जाता है और उस की रूह़ रब्बुल आ़लमीन عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह की त़रफ़ परवाज़ कर जाती है।" (المعجم الكبير،الحديث٩٤٢،ج٢٢،ص٣٧٧)

क़ब्र की पुकार :

ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُ इरशाद फ़रमाते हैं : "क़ब्र रोज़ाना पांच मरतबा येह निदा करती है, ऐ आदमी ! तू मेरी पीठ पर चलता है जब कि मेरा पेट तेरा ठिकाना है। ऐ आदमी ! तू मेरी पीठ पर हंसता है जल्द ही मेरे अन्दर आ कर रोएगा। ऐ आदमी ! तू मुझ पर ह़राम खाता है अ़न क़रीब मेरे पेट में तुझे कीड़े खाएंगे। ऐ आदमी ! तू मेरी पीठ पर खुशियां मनाता है अ़न क़रीब मुझ में ग़मगीन होगा।"

किसी ज़ाहिद से पूछा गया : "आप कैसे हैं ?" उस ने जवाब दिया : "उस शख़्स का ह़ाल कैसा होगा जो बिग़ैर ज़ादे राह के सफ़र करता है, कल जब मलकुल मौत आएंगे तो उस के पास कोई हुज्जत न होगी और जो वह़शत नाक क़ब्र में बिला मूनिस रहेगा उस का ह़ाल कैसा होगा ?"

गिर्यए उ़षमानी :

मन्क़ूल है, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُ जब किसी क़ब्र के क़रीब खड़े होते तो इस क़दर रोते कि आप رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُ की दाढ़ी मुबारक तर हो जाती। इस बारे में आप رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُ से इस्तिफ़सार किया गया कि आप رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُ जन्नत व दोज़ख़ के तज़किरे पर नहीं रोते मगर जब किसी क़ब्र के क़रीब खड़े होते हैं तो इस क़दर गिर्या व ज़ारी फ़रमाते हैं, इस का क्या सबब है ?" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : "मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, शफ़ीउ़ल मुज़निबीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : "बेशक आख़िरत की सब से पहली मन्ज़िल क़ब्र है। क़ब्र वाले ने इस से नजात पाई तो बा'द का मुआ़मला आसान है और अगर इस से नजात न पाई तो बा'द का मुआ़मला ज़ियादा सख़्त है।"

(جامع الترمذی،ابواب الزهد،باب ماجاء فی فظاعة القبر......الخ،الحديث٢٣٠٨،ص١٨٨٤)

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! इस से बचो कि तुम राहे हिदायत से भर जाओ या तौबा का अ़हद कर के इसे तोड़ दो। जल्दी से दिल में इख़्लास पैदा कर लो। हर ह़ाल में कामों के अन्जाम को याद करने वाले बन जाओ। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र व ह़म्द करते हुए हमेशा उस की इ़बादत को अपने लिये लाज़िम किये रखो। और इस बात से डरो कि जब परहेज़गारों को नफ़्अ़ मिल रहा हो तो तुम नुक़्सान में न रह जाओ। गोया मैं तुम्हें देख रहा हूं कि मौत ग़लबा व इक़्तिदार के साथ तुम पर मुसल्लत़ हो चुकी है।

रूह़ की दर्दनाक बातें :

मन्क़ूल है, "जब रूह़ जिस्म से जुदा होती है और इस पर सात दिन गुज़रते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ करती है, "ऐ रब्ब عَزَّوَجَلَّ मुझे इजाज़त अ़त़ा फ़रमा कि मैं अपने जिस्म का ह़ाल दरयाफ़्त करूं।" तो उसे इजाज़त मिल जाती है, फिर वोह क़ब्र की त़रफ़ आती है, उसे दूर से देखती, और अपने जिस्म को मुलाह़ज़ा करती है कि वोह मुतग़य्यिर है और उस के नथनों, मुंह और आंखों से पानी रवां है। वोह अपने जिस्म से कहती है, "बे मिषाल ह़ुस्नो जमाल के बा'द अब तू इस ह़ाल में है !" येह कह कर चली जाती है। फिर सात दिन के बा'द इजाज़त ले कर दोबारा क़ब्र पर आती है और दूर से देखती है कि मुर्दे के मुंह का पानी ख़ून मिली पीप, आंखों का पानी ख़ालिस पीप और नाक का पानी ख़ून बन चुका है। तो उस से कहती है, "अब तू इस ह़ाल को पहुंच चुका है !" येह कह कर परवाज़ कर जाती है। फिर सात रोज़ के बा'द इजाज़त ले कर इसी त़रह़ दूर से देखती है, तो ह़ालत येह होती है कि आंखों की पुतलियां चेहरे पर ढलक चुकी हैं, पीप कीड़ों में तब्दील हो चुकी है, कीड़े उस के मुंह से दाख़िल हो कर नाक से निकल रहे हैं। तब वोह जिस्म से कहती है, "तू नाज़ो ने'म में पलने के बा'द अब इस ह़ाल को पहुंच गया है।"

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! अपने ह़ालात पर ग़ौर करो, मौत के बा'द तुम्हारा क्या बनेगा। क्यूं कर तुम दुन्या में वापस लौट सकोगे कि तुम ज़िन्दगी को खो चुके होगे। तुम अपने अन्जाम से यक्सर बे ख़बर हो। लम्बी लम्बी उम्मीदों के दरया में डूबे हुए हो। तुम्हारे कान नसीह़त की बात सुनने से बहरे हो चुके हैं और तुम्हारे दिल इस्लाह़ी बातों को क़बूल करने से अन्धे हो चुके हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तक़्वा व नेक अ़मल के इ़लावा किसी चीज़ ने क़ब्र में किसी को फ़ाइदा न पहुंचाया।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बारगाह में अ़र्ज़ की गई : "हमें नसीह़त की कोई ऐसी बात इरशाद फ़रमाइये जिस से हम नफ़्अ़ उठाएं।" तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम लोगों को दुन्या के कामों में मश्ग़ूल देखो तो तुम आख़िरत के कामों में मश्ग़ूल हो जाओ और जब उन को अपनी ज़ाहिरी ह़ालत आरास्ता करते देखो तो तुम अपने बात़िन को आरास्ता कर लो, और जब लोगों को बाग़ात और मह़ल्लात की ता'मीर में मसरूफ़ पाओ तो तुम अपनी क़ब्रों की ता'मीर में मसरूफ़ हो जाओ और जब लोग दूसरों के उ़यूब देखने में मश्ग़ूल हों

तो तुम अपने उ़यूब की तलाश में मश्ग़ूल हो जाओ, और जब लोगों को मख़्लूक़ की ख़िदमत करते देखो तो तुम तमाम मख़्लूक़ के परवर दगार, ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ की इबादत में खो जाओ।"

ऐ मेरे इस्लामी भाई ! मुनादी की निदा आने से पहले अपने नफ़्स को ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार कर। सब्र की ज़िरह पहन कर शैत़ान से जिहाद कर। सरकशी व गुनाह के काम छोड़ कर अपने छुटकारे की तलाश कर। तुझ पर ऐसे आ'माल लाज़िम हैं जो क़ियामत में तुझे फ़ाइदा दें और अ़ज़ाब से नजात दिलाएं।

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "आदमी बुढ्ढा हो जाता है मगर उस की दो चीज़ें जवान रहती हैं : (1)....हि़र्स और (2)....लम्बी उम्मीद।"

(صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب كراهية الحرص على الدنيا، الحديث١٠٤٧، ص٨٤٢)

पस हि़र्स भी हलाक कर देने वाली दो आफ़तों में से एक है।

इब्ने आदम की हि़र्स :

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : "अगर इब्ने आदम के पास सोने की दो वादियां भी हों तब भी येह तीसरी की ख़्वाहिश करेगा और इब्ने आदम का पेट क़ब्र की मिट्टी ही भर सकती है।" (صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب لو ان لابن آدم......الخ، الحديث١٠٤٨، ص٨٤٢)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, नबिय्ये मोह़तशम صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे जिस्म के किसी हि़स्से को पकड़ कर इरशाद फ़रमाया : "दुन्या में एक अजनबी और मुसाफ़िर की त़रह़ रह और अपने आप को क़ब्र वालों में शुमार कर।" (سنن ابن ماجة، ابواب الزهد، باب مثل الدنيا، الحديث٤١١٤، ص٢٧٢٧)

ऐ गुनाहों के ह़रीस ! ऐ मौत के झटकों से ग़ाफ़िल ! (सुन !) यक़ीनन मौत अचानक आ जाएगी। माल व गुनाह की त़म्अ़ किसी अ़क़्ल मन्द का काम नहीं। तू गुनाहों में जल्दी करता और तौबा को आयन्दा साल तक मुअख़्ख़र करता है। क्या तुझे मा'लूम नहीं कि ग़नी का (क़र्ज़ की अदाएगी के मुआ़मले में) टाल मटोल करना ज़ुल्म है ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुझे जवानी, सिह़्ह़त और फ़राग़त की दौलत से ग़नी कर दिया फिर भी तू तौबा में टाल मटोल करता है। दुन्या पर बादशाहत करने वाले, बड़े बड़े जाबिर और लिडर कहा चले गए ? बन्दों पर बड़ाई चाहने वालों को क्या हो गया ? कहां हैं क़ातिल और ह़म्ला करने वाले ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मौत के तीर उन सब में पैवस्त हो गए, वोह अब क़त्लगाहों में पड़े हैं। और मौत ने उन्हें फ़र्श और क़ालीन के बा'द पछाड़ कर पथ्थर की सिल और चट्टान के दरमियान रख दिया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इब्रत निशान है :

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ۝ (پ٢٦،ق:١٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था।*

या'नी मौत की सख़्तियों का सामना, मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام को देखना और बन्दे पर इस का जन्नत या दोज़ख़ का ठिकाना ज़ाहिर होना ज़बरदस्त उमूर हैं और येह सकराते मौत के वक़्त ज़ाहिर होंगे और येह हक़ है, इस को हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, रसूले मोहतशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ईमान बिल ग़ैब में बयान फ़रमाया है। फिर इस के बा'द मुन्कर नकीर के सुवालात का मर्हला है कि मय्यित को क़ब्र में उतारे जाने के बा'द सब से पहले इसी से दो चार होना पड़ता है। और मौत की सख़्तियां बयान हो चुकी हैं और येह हर शख़्स पर उस के आ'माल के मुताबिक़ होंगी।

इन को सकरात कहने की वजह येह है कि येह होश उड़ा देती हैं और ज़ेहन को ग़ाइब कर देती हैं जैसे कोई नशे की हालत में होता है, और इस की वजह येह होगी कि आदमी पर इस के अच्छे बुरे आ'माल और इन की जज़ा मौत के वक़्त ज़ाहिर होगी। ग़ीबत करने वाले के होंटों को आग की क़ैंचियों से काटा जाएगा, ग़ीबत सुनने वाले के कानों में जहन्नम की आग की सीख़ें पिरोई जाएगी और ज़ालिम का जिस्म टुकड़े टुकड़े हो कर हर मज़लूम के पास पहुंच जाएगा। हराम ख़ोर को जहन्नम का कांटेदार दरख़्त, ज़क़्क़ुम खाने को दिया जाएगा। इसी तरह दीगर अफ़्आ़ल की जज़ा और सज़ा दी जाएगी। इन सब का ज़ुहूर मौत की सख़्तियों के वक़्त होगा और मय्यित को यके बा'द दीगरे इन से गुज़रना होगा, और आख़िर में इस की रूह क़ब्ज़ की जाएगी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿۵﴾ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ۝ (پ٢٦،ق:١٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *येह है जिस से तू भागता था।*

या'नी येह वोह मौत है लम्बी उम्मीदों और दुन्या में ज़िन्दा रहने की हिर्स के सबब जिस से तू भागता था।

सर और दाढ़ी के बाल सफ़ेद हो गए :

हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हज़रते सय्यिदुना नूह़ नजिय्युल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बेटे हज़रते सय्यिदुना साम عَلَيْهِ السَّلَام की क़ब्र से गुज़रे तो बनी इसराईल ने अ़र्ज़ की : ''ऐ रूहुल्लाह (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ फ़रमाएं कि वोह इस क़ब्र वाले को ज़िन्दा करे ताकि हम इस से मौत का तज़किरा सुनें।'' चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस क़ब्र के क़रीब दो रक्अ़त नमाज़ अदा करने के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से हज़रते सय्यिदुना साम बिन नूह़ عليهما الصلوٰة والسلام को ज़िन्दा करने की दुआ़ की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें ज़िन्दा फ़रमा दिया। वोह सर से मिट्टी झाड़ते हुए खड़े हो गए, उन के सर और दाढ़ी के बाल सफ़ेद थे। हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इस्तिफ़सार

फ़रमाया : “ येह सफ़ेदी तो तुम्हारे ज़माने में नहीं थी।” उन्हों ने फ़रमाया : “या रूहल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام मैं आवाज़ सुन कर समझा कि क़ियामत क़ाइम हो चुकी है, इस के ख़ौफ़ से मेरे सर और दाढ़ी के बाल सफ़ेद हो गए।” ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने पूछा : “तुम्हारे इन्तिक़ाल को कितना अ़र्सा हो चुका ?” उन्हों ने बताया : “चार हज़ार साल, मगर अब तक मौत की सख़्ती और कड़वाहट मुझ से नहीं गई।”

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! जब एक बोसीदा ठिकाने की त़रफ़ लौट कर जाना है तो फिर येह ग़फ़्लत कैसी है ? जब उ़म्र बहुत क़लील है तो फिर येह सुस्ती क्यूंकर है ? बेशक डर सुनाने वाले नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तुम्हें डर सुना चुके तो फिर गुनाहों में अपना वक़्त बरबाद करने में क्यूंकर मसरूफ़ हो ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम्हारा मह़बूब के दरवाज़े से हट जाना तुम्हारे लिये बहुत बुरी तदबीर है। तुम्हारी येह अकड़ कब तक रहेगी ? याद रखो ! ख़ुदाए निगहबान सब कुछ देख रहा है।

ऐ इस्लामी भाइयो ! क़ियामत को याद करो क्यूंकि क़ियामत का मुआ़मला बहुत सख़्त है। अपनी बक़िय्या उ़म्र नेकियों में गुज़ारो कि मरने के बा'द ह़सरत व नदामत कोई फ़ाइदा न देगी। अपने दिल वा'दा व वई़द को समझने के लिये ह़ाज़िर रखो। अपना मुह़ासबा करो इस से पहले कि तुम से ह़िसाब लिया जाए। तुम पर निगहबान मुक़र्रर है। मौत के लिये तय्यार हो जाओ। वोह तुम्हारे बहुत क़रीब है। उस ने न आज़ाद लोगों को छोड़ा है, न ग़ुलामों को रहने दिया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ۝ (پ٢٦، ق:١٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती ह़क़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था।*

कहां हैं तुम्हारे दोस्त, अह़बाब जो मौत का शिकार हो गए ? कहां हैं तुम्हारे आबा व अजदाद जो इस दुन्याए फ़ानी से कूच कर गए ? कहां हैं मालदार और उन के जा नशीन ? अब वोह सब अपने गुनाहों पर नादिम हैं। काश ! वोह पहले ही इस की हौलनाकी जान लेते जिस के ग़म ने बच्चों को बुढ्ढा कर दिया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने नसीह़त निशान है :

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ۝ (پ٢٦، ق:١٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती ह़क़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था।*

तअ़ज्जुब है तुझ पर, ऐ शख़्स ! तुझे कैसे कैसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बुलाया गया और तू अकड़ा रहा। जब भी वाइ़ज़ीन तुझे उस की त़रफ़ बुलाते हैं तो तू इन्कार व सरकशी करता है। तेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने कितनी बार तुझे सरकशी से मन्अ़ फ़रमाया मगर तू फिर भी बाज़ न आया। ऐ ज़िन्दा जिस्म और मुर्दा दिल वाले ! (सुन !) बहुत जल्द तू ह़सरतों और मौत की सख़्तियों के वक़्त वोह कुछ देखेगा जो तू नहीं देखना चाहता।

चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ۝ (پ٢٦،ق:١٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था।*

ऐ ग़ाफ़िल ! सुन ! मौत ने कितनों को उन के घरों से बाहर कर दिया और ने'मतों से लुत्फ़ अन्दोज़ होने वालों से ऐसे बोसीदा घरों को आबाद किया जहां कोई नहीं जा सकता। उस ने कितनों को गुनाहों के बोझ समेत क़ब्र के घढ़ों में फेंक दिया। कितने रुख़्सारों को तरो ताज़गी और उन की सुर्ख़ी के बा'द मिट्टी में ज़लील कर दिया। पस ऐ शख़्स ! अभी अपने गुनाहों पर रो ले इस से पहले कि तू रोता रहे और तेरा रोना धोना तुझे कोई फ़ाइदा न दे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ۝ (پ٢٦،ق:١٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था।*

ऐ ग़ाफ़िल शख़्स ! ग़फ़्लत की चादर उतार कर अभी से बेदार हो जा और यक़ीन कर ले कि येह दुन्या एक परेशान ख़्वाब के सिवा कुछ नहीं, बहुत जल्द येह फ़ना के घाट उतर जाएगी, येह ठहरने के क़ाबिल नहीं। अ़न क़रीब तुझे मेरी बात समझ आ जाएगी। जब पर्दा उठ जाएगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पकड़ यक़ीनी हो जाएगी तो सब पोशीदा अश्या तुझ पर मुकम्मल तौ़र पर ज़ाहिर हो जाएंगी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ۝ (پ٢٦،ق:١٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था।*

अफ़्सोस है तुझ पर ! क्या तुझे नहीं मा'लूम कि तू रोज़ाना मौत के सफ़र की एक मन्ज़िल तै़ कर लेता है ? क्या तुझे ख़बर नहीं कि तेरे राई के दाने बराबर अ़मल भी शुमार किये जाते हैं ? और बहुत से उम्मीद रखने वाले अपनी उम्मीदों के हिसाब में नुक़्सान उठाते हैं और मौत की वजह से अपने मक़ासिद तक नहीं पहुंच सकते। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ۝ (پ٢٦،ق:١٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था।*

ऐ घाटे व ख़सारे के कामों में उ़म्र ज़ाएअ़ करने वाले ! ऐ ख़्वाहिशात की पैरवी कर के नूरे ईमान को बुझाने वाले ! ऐ नफ़्सानी ख़्वाहिशात के नशे में बद मस्त ! तू कब होश में आएगा ? क्या अभी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करने का वक़्त नहीं आया ? या तू ने उस की नाराज़ी से अमान पा कर जान छुड़ा ली है ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ۝ (پ٢٦،ق:١٩)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था।*

ऐ बारगाहे खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ से मुंह मोड़ने वाले ! तू कब तक उस की बारगाह से रू गर्दानी करता रहेगा ? (होश में आ) दुन्यवी मक़ासिद की त़लब में तेरी जवानी चली जाएगी और तुझ से मुंह मोड़ लेगी। तुझ पर अफ़्सोस ! क्या तू नहीं जानता कि तेरी उ़म्र ख़त्म हो रही है, तेरे आ'ज़ा हर लम्ह़ा टूट फूट का शिकार हो रहे हैं, सफ़रे आख़िरत के लिये ज़ादे राह इकठ्ठा कर ले, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! सफ़र बहुत त़वील है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ۝ (پ٢٦،ق:١٩)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था।*

ऐ मह़ाफ़िले वा'ज़ में सिर्फ़ अपने जिस्म के साथ ह़ाज़िर होने वाले ! तेरा दिल तो अस्बाबे दुन्या में मश्ग़ूल है। ऐ अपनी उ़म्र का अकषर ह़िस्सा ज़ाएअ़ कर के भी तौबा न करने वाले ! ऐ वोह शख़्स जिस को नाफ़रमानियों और गुनाहों ने तारीक ह़िजाब वाला लिबास पहना दिया ! ऐ वोह शख़्स जिस पर ख़्वाहिशाते नफ़्सानिय्या ने तक़्वा का हर दरवाज़ा बन्द कर दिया ! अपने आप पर रो और अपने गुनाहों को शुमार कर कि बा'ज़ अवक़ात रोना धोना और गुनाहों को शुमार करना भी फ़ाइदा देता है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ۝ (پ٢٦،ق:١٩)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था।*

क्या तुझे मा'लूम नहीं कि मौत तेरी ताड़ में है। उस ने दूसरों का शिकार किया और अ़न क़रीब तेरा भी शिकार करेगी। क्या तुझे नहीं मा'लूम कि इस ने उन तमाम लोगों के साथ क्या किया ? क्या मौत से ग़फ़्लत किसी शहर या गाऊं में तुझे उस से बचा लेगी ? क्या तू अल्लाह मजीद عَزَّوَجَلَّ के इस मुबारक फ़रमान को दिल के कानों से समाअ़त नहीं करता। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ वाज़ेह़ त़ौर पर फ़रमाता है :

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ۝ (پ٢٦،ق:١٩)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था।*

ऐ नुक़्सान देह चीज़ों की त़रफ़ मुतवज्जेह होने वाले और नफ़्अ़ मन्द चीज़ों से मुंह मोड़ने वाले और अपनी उ़म्र बरबाद करने वाले ! (सुन !) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उ़म्र को शुमार कर रखा है और इस पर एक निगहबान मुक़र्रर फ़रमा दिया है (ग़ौर तो कर !) मज़बूत़ मह़ल्लात और मह़फ़ूज़

क़ल्ओं में बन्द रहने वाले कहां चले गए ? तकब्बुर करने वाले ज़ालिम और नाशुक्रे कहां हैं ? क्या मौत ने उन्हें उन के महल्लात और बंगलों से निकाल कर उन की लम्बी लम्बी उम्मीदों की रस्सी न काट डाली ? क्या सख़्तियां और जुल्म करने वाले क़ब्रों की तारीकी में तन्हा नहीं रह गए ? क्या उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने हक़ीक़त निशान नहीं सुना था :

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ۝ (پ۲۶،ق:۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था ।*

ऐ सब से बढ़ कर रह़्म फ़रमाने वाले ! हम पर अपना ख़ास रह़्मो करम फ़रमा । (आमीन)

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْن

बा जमाअ़त नमाज़ की फ़ज़ीलत

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم *का फ़रमाने फ़ज़ीलत निशान है :*

"صَلَاةُ الْجَمَاعَةِ تَفْضُلُ صَلَاةَ الْفَذِّ بِسَبْعٍ وَ عِشْرِيْنَ دَرَجَةً

तर्जमा : *बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ना अकेले पढ़ने से सत्ताईस गुना अफ़्ज़ल है ।"*

(صحيح البخاری ،کتاب الاذان ،باب فضل صلاة الجماعة ،الحديث ٦٤٥،ص ٥٢)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا *ने फ़रमाया : "जो शख़्स मुअज़्ज़िन की आवाज़ सुन कर उस का जवाब न दे उस ने भलाई का इरादा नहीं किया और न ही उस के साथ भलाई का इरादा किया गया ।" नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहूरो बर* صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم *ने फ़रमाया : "जो शख़्स चालीस दिन बा जमाअ़त नमाज़ पढ़े और उस की तक्बीरे ऊला (या'नी पहली तक्बीर) फ़ौत न हो तो* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *उस के लिये दो बराअतें लिख देता है :*

(1) मुनाफ़क़त से बराअत (2) दोज़ख़ की आग से बराअत ।"

(جامع الترمذی ،ابواب الصلاة ،باب ماجاء فی فضيلة التكبيرة الاولى ، الحديث ٢٤١ ،ص ١٦٦١ ،بتغير)

बयान 50 :

आ़ली रुत्बा ख़वातीन

ह़म्दे बारी तआ़ला :

तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जो अपनी रबूबिय्यत में मुअ़ज़्ज़ज़ है। हमेशा से है हमेशा रहेगा। वोह अपनी हमेशगी में हर ऐ़ब से पाक है। हमेशा से यक्ता व बे नियाज़ है। उस की हमेशगी (वाली सिफ़त) का कभी इदराक नहीं किया जा सकता और ख़याल व नज़र उस के एक होने को शुमार नहीं कर सकते। वोह मद्दे मुक़ाबिल हम पल्ला, बीवी और अवलाद से पाक है। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है : ''وَاَنَّهٗ تَعٰلٰی جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا۝ (پ۲۹،الجن:۳) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और येह कि हमारे रब्ब की शान बहुत बुलन्द है न उस ने औ़रत इख़्तियार की और न बच्चा।'' लिहाज़ा जिस ने उसे तशबीह दी या उस की मषल बताई वोह अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ है तो हरगिज़ वोह उस के सिवा पनाह न पाएगा। जिस ने समन्दरे तौह़ीद के साह़िल को भी तशबी और ह़द मुक़र्रर करने वाली आंख से देखा वोह इन्तिहाई ह़सरत व यास की मौत मरेगा और जिस ने बारबार ता'रीफ़ करने वाली और पाकी का इक़रार करने वाली आंख से देखा वोह ह़क़ाइक़ की गहराइयों पर मुत्तलअ़ होगा और वोह ह़िक्मतों और ख़ालिस ह़िस्से को इकठ्ठा कर लेगा। पर वोह आ़रिफ़ीन हैं जो उस की मा'रिफ़त के मैदान में खो जाते हैं तो उन्हें सआ़दत मन्दों वाली ज़िन्दगी अ़ता की जाती है। वोह ख़ाइफ़ीन (या'नी डरने वाले) हैं जो उस के ग़लबे व इक़्तिदार के क़हर की आग से जल जाते हैं तो वोह शुहदा की मौत पाते हैं। वोह मुह़िब्बीन (या'नी मह़ब्बत वाले) हैं कि राह़त व इत़मीनान, मुनाजात का लिबास पहने उन के पास ही घूमते रहते हैं तो वोह आसूदा ह़ाल ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।

पस अगर तू उन्हें देखेगा तो वोह उस ह़ालत में होंगे कि उन पर क़बूलिय्यत के आषार वाज़ेह़ हैं। तब्दीली ने उन को नए नए कपड़े पहना दिये हैं। ह़वास बाख़्तगी ने उन को ऐसा जाम पिला दिया जिस के बा'द वोह किसी चश्मे से मीठा पानी त़लब नहीं करते। उन की आंखें आंसू बहाती हैं। दिल ख़ौफ़ज़दा हैं और उन के जिगर रन्जो ग़म से पिघल रहे होते हैं। येही वोह लोग है जिन से उन के रब्ब عَزَّوَجَلَّ ने रुश्दो हिदायत का इरादा फ़रमाया है। उन्हों ने दुन्या को यक़ीन की आंख से देखा तो जान लिया कि बेशक इन्सान को यूंही बिला ह़िसाबो किताब नहीं छोड़ दिया जाएगा। उन्हों ने बेदारी की समाअ़त को खोले रखा तो सुना कि ह़म्दे इलाही عَزَّوَجَلَّ के नग़मे गुनगुनाने वाला गुनगुना रहा है। पस उन्हों ने अपने बुलाने वाले (या'नी दुन्या व माफ़ीहा के सामाने ग़फ़्लत) को छोड़ दिया और अपने गुनगुनाने वाले की त़रफ़ बुलन्द होना शुरूअ़ कर दिया। तो दलील व बुरहान (या'नी किताबुल्लाह) उन्हें पुकारती है :

''اِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى۝ (پ۳۰،اللیل:۱۲) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *बेशक हिदायत फ़रमाना हमारे ज़िम्मे है।''*

तलाशे ह़क़ की राह में उन का पहला क़दम येह होता है कि उन में से नादारों को ऐसी ख़िलअ़त और लिबास अ़त़ा किया जाता है जिस के सबब वोह ए'ज़ाज़ व बड़ाई में बादशाहों से बुलन्द रुत्बा हो जाते हैं। और वोह उस सफ़र के लिये ज़ादे राह ह़ासिल कर के शब बेदारी की सुवारियों पर सुवार हो जाते हैं। फिर जब उन पर सह़र की पुर कैफ़ हवाएं चलती हैं तो वोह बसीरत व मन्ज़िल को पा लेते हैं।

पारसा ख़वातीन की शान में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿1﴾ فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ط (پ۵،النسآء:۳۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो नेक बख़्त औ़रतें अदब वालियां हैं, ख़ावन्द के पीछे ह़िफ़ाज़त रखती हैं जिस त़रह़ अल्लाह ने ह़िफ़ाज़त का हुक्म दिया।*

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ" से मुराद फ़रमा बरदार ख़वातीन हैं। और "حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ" से मुराद अपने शोहर की अ़दमे मौजूदगी में अपनी शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त करने वालियां हैं।" एक क़ौल येह भी है कि इस से मुराद शोहर के राज़ की इस त़रह़ ह़िफ़ाज़त करने वालियां हैं जिस त़रह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़िफ़ाज़त का हुक्म दिया।

(تفسیر بغوی ،النسآء،تحت الآیۃ۳۴،ج ا ،ص۳۳۵،بدون لفظ"ابن عباس")

जब कोई औ़रत रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने और ह़ुसूले षवाब के लिये अपनी शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त करती और अपने आप को शोहर के लिये पाक रखती है तो उस के लिये इ़ज़्ज़त व जन्नत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर हो जाती है। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿2﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۝ اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۝ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَآئِمُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ فِىْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ ۝ (پ۲۹،المعارج:۲۹-۳۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह जो अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करते हैं। मगर अपनी बीबियों या अपने हाथ के माल कनीज़ों से कि उन पर कुछ मलामत नहीं। तो जो इन दो के सिवा और चाहे वोही ह़द से बढ़ने वाले हैं और वोह जो अपनी अमानतों और अपने अ़हद की ह़िफ़ाज़त करते हैं। और वोह जो अपनी गवाहियों पर क़ाइम हैं। और वोह जो अपनी नमाज़ की ह़िफ़ाजत करते हैं। येह हैं जिन का बाग़ों में ए'ज़ाज़ होगा।*

मन्क़ूल है कि "एक सालेह़ शख़्स ने जंगल में किसी लड़की को तन्हा लंगड़ा कर चलते हुए देखा तो पूछा : "कहां से आई हो ?" उस ने जवाब दिया "मह़बूब के पास से।" फिर पूछा : "कहां जाना है ?" जवाब मिला : "मह़बूब के पास।" उस नेक शख़्स ने पूछा : "इस जंगल में तन्हा चलते हुए तुम्हें वह़शत मह़सूस नहीं होती ?" तो उस लड़की ने बुलन्द आवाज़ से इस आयते मुबारका की तिलावत की :

﴿3﴾ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِى الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ط وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ط وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ (پ۲۷، الحدید:۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जानता है जो ज़मीन के अन्दर जाता है और जो इस से बाहर निकलता है और जो आस्मान से उतरता है और जो इस में चढ़ता और वोह तुम्हारे साथ है तुम कहीं हो और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है।*

फिर उस ने उस आदमी को मुख़ात़ब कर के कहा : "बहादुर नौजवान ! जिस शख़्स ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन्सिय्यत ह़ासिल कर ली वोह दूसरों से वह़शत मह़सूस करता है और जो रिज़ा का त़ालिब है तो वोह उस के फ़ैसले पर सब्र करता है।"

दोनों हाथ सोने की अशरफ़ियों से भर गए :

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमान जुरजानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی फ़रमाते हैं : "मैं एक दिन बसरा जाने के लिये कूफ़ा से निकला तो रास्ते में एक ख़ातून पर मेरी नज़र पड़ी, उस ने ऊन का जुब्बा पहना और बालों का दूपट्टा ओढ़ा हुवा था और वोह चलते हुए कह रही थी : "ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ उस की मन्ज़िल कितनी दूर है जिस का राहनुमा नहीं। और उस का रास्ता कितना वह़शत नाक है जिस का हम सफ़र नहीं।" आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मैं ने क़रीब जा कर उसे सलाम किया। उस ने सलाम का जवाब दिया और पूछा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए, आप कौन हैं ?" मैं ने अपना नाम बताया तो कहने लगी : "ऐ उ़षमान ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप की उ़म्र दराज़ फ़रमाए, कहां का इरादा है ?" मैं ने कहा : "बसरा का।" पूछने लगी : "किस काम की ग़रज़ से ?" मैं ने जवाब दिया : "अपनी किसी ह़ाजत के लिये।"

येह सुन कर वोह कहने लगी : "आप तमाम ह़ाजात पूरी करने वाले को ह़ाजत क्यूं नहीं बताते कि वोह आप की त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाए और आप को इतनी मशक़्क़त न झेलनी पड़े ?" मैं ने कहा : "मुझे अभी उस की मा'रिफ़त ह़ासिल नहीं हुई।" उस ने कहा : "ह़ुसूले मा'रिफ़त में कौन सी चीज़ रुकावट है ?" मैं ने जवाब दिया : "गुनाहों की कषरत।" उस ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह बहुत बुरी बात है, गुनाह न किया करो। अगर आप अपनी रस्सी को उस की रस्सी से मज़बूत़ बांध दें तो वोह आप की ह़ाजत पूरी फ़रमा देगा और आप को कोई मशक़्क़त भी न उठानी पड़ेगी।" उस औ़रत की येह बात सुन कर मुझे रोना आ गया। फिर मैं ने उस से दुआ़ की दरख़्वास्त की तो उस ने दुआ़ दी कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी इत़ाअ़त करने और नाफ़रमानी से बचने पर आप की मदद फ़रमाए। जब मैं लौटने लगा तो अपनी जेब से दिरहम निकाल कर आधे उस को दिये और कहा : "येह रख लें, आप के काम आएंगे।" उस ने पूछा : "येह आप ने कहां से ह़ासिल किये हैं ?" मैं ने बताया : "मैं पहाड़ पर चढ़ कर वहां से लकड़ियों का गठ्ठा इकठ्ठा करता हूं फिर इस को अपनी गर्दन पर उठा कर मुसलमानों के बाज़ार में फ़रोख़्त करता और इस के बदले रक़म ले लेता हूं।" उस औ़रत ने कहा : "हां ! येह ह़लाल की कमाई है और इन्सान जो अपने हाथ से कमाता है उसे खाना ह़लाल है, लेकिन ऐ उ़षमान ! अगर आप सह़ीह़ मा'नों में अपने पालने वाले रब्बे जुल जलाल عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त करें और उसी पर कामिल भरोसा करें तो पहाड़ों की बुलन्दी से लकड़ियों का गठ्ठा उठाने की ज़ह़मत न करना पड़ेगी।" मैं ने कहा : "फिर तो मेरे लिये रिज़्क़ का कोई ज़ाहिरी सबब बाक़ी न रहेगा, मैं कहां से खाऊंगा और कहां से पियूंगा ?" उस ने कहा : "ऐ उ़षमान ! क्या आप चाहते हैं कि मैं आप को येह दिखाऊं कि मैं ने अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से कैसा मुआ़मला और उस

पर कैसा भरोसा किया है ?" मैं ने कहा : "क्यूं नहीं, ज़रूर दिखाएं।" चुनान्चे, उस औ़रत ने अपने हाथ बढ़ा कर होंटों को अभी जुम्बिश देना ही चाही थी कि उस के दोनों हाथ सोने की अशरफ़ियों से भर गए। फिर उस ने कहा : "ऐ उ़षमान ! येह लें, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह सोने की अशरफ़ियां ऐसी हैं कि इन पर किसी बादशाह व सुल्त़ान का नाम मुनक़्क़श (या'नी लिखा हुवा) नहीं और याद रखें कि अगर आप अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत करेंगे तो वोह आप को तमाम मख़्लूक़ से बे नियाज़ कर देगा और सिर्फ़ वोही आप के लिये काफ़ी होगा।"

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन लोगों की क्या शान है जो रातों को जाग कर सख़्त तारीकी में अपने मह़बूब से मुनाजात करते, कषरत से इ़बादत करते हैं, यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने कलाम में इन्ही लोगों की मद्ह़ की है :

﴿4﴾ اِنَّ الْمُسْلِمِیْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ وَالْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ (پ۲۲،الاحزاب:۳۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औ़रतें और ईमान वाले और ईमान वालियां।* (1)

ज़ालिम आक़ा के हाथ शल हो गए :

मन्क़ूल है, "बसरा में अस्मा नामी एक इ़बादत गुज़ार कनीज़ रहती थी। बहुत ह़ुस्नो जमाल, शीरीं ज़बान और ख़ूब सूरत आंखों वाली थी। उस का आक़ा भी ख़ुशह़ाल और साह़िबे इक़्तिदार था। एक दिन उस का ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के इजतिमाअ़ से गुज़र हुवा। उस वक़्त आप लोगों को वा'ज़ व नसीह़त कर रहे थे, वोह वा'ज़ सुनने वाली औ़रतों की जानिब जा कर खड़ी हो कर वा'ज़ सुनने लगी। आप क़ियामत और जहन्नम की हौलनाकियों और जहन्नमियों के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तय्यार की हुई ख़ौफ़नाक सज़ाओं, ज़न्जीरों और त़ौक़ वग़ैरा का ज़िक्र कर रहे थे। उस कनीज़ ने मर्दों, औ़रतों को आप के बयान के सबब गिर्या व ज़ारी करते हुए देखा तो उस के दिल में रिक़्क़त पैदा हो गई, उस के रौंगटे खड़े हो गए, आंखों से आंसू बहने लगे और उस की बेक़रारी व इज़्त़िराब में इज़ाफ़ा होता चला गया।

जब ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए और उस को आंसू बहाते देखा तो लोगों से पूछा : "येह कौन है ?" बताया गया : "येह अस्मा है।"

1...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका का शाने नुज़ूल बयान फ़रमाते हुए लिखते हैं : "अस्मा बिन्ते उमैस जब अपने शोहर जा'फ़र बिन अबी त़ालिब के साथ ह़ब्शा से वापस आईं तो अज़्वाजे नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मिल कर उन्हों ने दरयाफ़्त किया कि क्या औ़रतों के बाब में भी कोई आयत नाज़िल हुई है ? उन्हों ने फ़रमाया : "नहीं।" तो अस्मा ने ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि "ह़ुज़ूर ! औ़रतें बड़े टोटे में हैं।" फ़रमाया : क्यूं ?" अ़र्ज़ किया कि "इन का ज़िक्र ख़ैर के साथ होता ही नहीं, जैसा कि मर्दों का होता है।" इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन के दस मरातिब मर्दों के साथ ज़िक्र किये गए और उन के साथ उन की मद्ह़ फ़रमाई गई और मरातिब में से पहला मरतबा इस्लाम है जो ख़ुदा और रसूल की फ़रमां बरदारी है। दूसरा ईमान कि वोह ए'तिक़ादे सह़ीह़ और ज़ाहिर व बात़िन का मुवाफ़िक़ होना है। तीसरा मर्तबा क़ुनूत या'नी त़ाअ़त है।"

फिर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अपना चेहरए अन्वर उस की त़रफ़ किया और अपने वा'ज़ के तीर उस के दिल में पैवस्त करने के इरादे से कहा : "ऐ अपनी नर्म आवाज़ से चीखने वाली ! मैं देखता हूं कि तू क़ियामत से ख़ौफ़ज़दा है गोया तू अपने किसी अ़ज़ीम जुर्म का ए'तिराफ़ कर रही है और उस के सबब ख़ौफ़ में मुब्तला है। तू ने किरामन कातिबीन और मुह़ाफ़िज़ फ़िरिश्तों को कई साल ज़ह़मत दी। कभी कभी गुनाहों में रातें गुज़ार दीं। कितने नौजवानों को तूने अपनी लचक दार आवाज़ से ज़लीलो ख़्वार किया। अपने हुस्नो जमाल से कितनों को फ़ितने में डाला। कितनों को बुरे काम में रात भर बेदार और उन्हें रब्ब عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त और नमाज़ से ग़ाफ़िल रखा। मुह़ाफ़िज़ फ़िरिश्ते तेरे बुरे आ'माल पर गवाह होंगे। तेरे गुनाहों से वोह भी पनाह मांगते होंगे। क़ियामत की रुस्वाई से पहले ही जल्दी से तौबा कर ले और पुल सिरात़ से पाउं फ़िसलने से क़ब्ल ही अपने अन्दर ख़ौफ़े इलाही عَزَّوَجَلَّ पैदा कर ले। मसाइबे आख़िरत याद कर के अपने आप पर कुछ आंसू बहा ले, तुझे तस्बीह़ और दुआ़ बहुत ज़रूरी है।" उस बांदी ने जवाब में कहा : "ऐ सालेह़ ! माज़ी में मैं जहालत व ग़फ़्लत की शिकार और अपनी इस्लाह़ से बे ख़बर थी। मुझे कहां ख़बर थी कि मेरे साथ येह होगा। बल्कि मेरा आक़ा तो चाहता है कि मैं अ़र्सए दराज़ तक गाती रहूं लेकिन अब मैं अपने पिछले गुनाहों से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सच्ची तौबा करती हूं और अ़हद करती हूं कि अब कभी भी गाना न गाऊंगी।"

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अस्मा ! याद रख जो गानों की आवाज़ बुलन्द करता और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी पर डटा रहता है, उस का ठिकाना वोह सियाह आग है जो त़ाक़तवर व तुवाना जिस्मों को भी पिघला कर रख देगी। और ज़िल्लत व रुस्वाई उस का मुक़द्दर बन जाएगी।" फिर उस बांदी ने पुकार कर कहा : "ऐ सालेह़ ! पोशीदगी छट गई। बात़िल का ख़ातिमा हो गया और ह़क़ ज़ाहिर हो गया और वफ़ा ने क़ुर्बत से नावाज़ा है।" येह कह कर वोह अपने घर चली गई, अपने आक़ा के एक ग़ुलाम से कहा : "ऐ ग़ुलाम ! तुम जानते हो कि मैं तुम पर कितनी शफ़ीक़ हूं, तो तुम मेरे मुआ़मले को छुपाए रखना। येह मेरे कपड़े तुम ले लो और अपना जुब्बा मुझे दे दो और सुनो ! मेरा येह राज़ किसी से मत कहना।" फिर उस बांदी ने अपना लिबास उतार कर ग़ुलाम का जुब्बा पहन लिया और अपने बाल काट कर आक़ा के घर में ही किसी ख़ुफ़्या मक़ाम पर जा छुपी। सारी सारी रात इ़बादत करती, सारा सारा दिन रोज़े से रहती, सह़री के वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा व इस्तिग़फ़ार करती, गिर्या व ज़ारी करती और ख़ूब गिड़ गिड़ाती। उस का आक़ा उस की जुदाई पर ग़मगीन होने की वजह से उस की तलाश में कई जगहों की ख़ाक छानता रहा। फिर जब वोह ज़र्द रू और दुबली पतली हो गई तो अपने आक़ा की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई, रोज़ों और रातों के क़ियाम की कषरत ने उसे कमज़ोर कर दिया था, वज्द व इ़श्क़े इलाही عَزَّوَجَلَّ से उस का हुस्न मांद पड़ गया था। उस ने आक़ा को सलाम किया, सलाम का जवाब देने के बा'द आक़ा ने पूछा : "तुम कौन हो ?" उस ने जवाब दिया : "मैं आप के दिल का चैन व सुकून आप की बांदी अस्मा हूं।" आक़ा ने दरयाफ़्त किया : "तुम्हारी येह ह़ालत कैसे हो गई ?" उस ने बताया : "नाफ़रमानियों की नुह़ूसत, जहन्नम और उस की हौलनाकियों

के ख़ौफ़ ने मेरा येह ह़ाल कर दिया है।" आक़ा ने कहा : "अगर तू इस से बाज़ न आई और अपने कपड़े पहन कर खुद को न संवारा और अपने नफ़्स पर सख़्तियां करना तर्क न कीं तो मैं तुझे बांध कर सख़्त सज़ा दूंगा।" बांदी ने जवाब दिया : "आप की सज़ा तो ख़त्म हो जाएगी लेकिन मेरे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अ़ज़ाब कभी ख़त्म होने वाला नहीं, तो अब जो आप के दिल में आए करें।"

येह बात सुन कर आक़ा ने अपने गुलामो को हुक्म दिया कि इस बांदी को बांध कर कोड़ो से मारो, बांदी ने अपना सर आस्मान की त़रफ़ उठा कर पुकारा : "ऐ अ़ज़मत वाले आक़ा عَزَّوَجَلَّ ऐ वोह ज़ात जिस के लिये अस्माए हुस्ना हैं ! ऐ मेरे इस आक़ा के भी मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ मेरी मदद फ़रमा और ऐ हलाक होने वालों को पनाह देने वाले ! ऐ ग़म ज़दों की पोशीदा और अ़लानिय्या मदद फ़रमाने वाले ! मुझे अपनी पनाह अ़त़ा फ़रमा।" जब उस के आक़ा ने मारने के लिये कोड़ा उठाया तो उस के हाथ शल हो गए और उस ने मह़सूस किया कि किसी ने पीछे से उस को खींचा है लेकिन जब पीछे देखा तो कोई दिखाई न दिया। फिर अचानक एक आवाज़ आई : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की वलिय्या को छोड़ दे।" येह सुन कर वोह धडाम से ज़मीन पर गिरा और बेहोश हो गया, और उस के हाथों से ख़ून बहने लगा, उस की बांदी अस्मा खड़ी हुई और उस के हाथ से ख़ून साफ़ करते हुए कहने लगी : "ऐ मिस्कीन शख़्स ! अपने गुनाहों और ख़त़ाओं से तौबा कर के अपने मालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त इख़्तियार कर ले।" जब इफ़ाक़ा हुवा तो उस ने बांदी से कहा : "ऐ नफ़्स को मारने वाली ! मुझे मा'लूम न था कि तुम इस मक़ाम पर पहुंच गई हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अब मैं तुम्हारे रास्ते में रुकावट खड़ी नहीं करूंगा बल्कि तुम्हारा रफ़ीक़ बन कर हमेशा तुम्हारे साथ रहूंगा।" फिर वोह दोनों इकठ्ठे इत़ाअ़त व इ़बादत में मश्ग़ूल हो गए और अपना माल व दौलत तर्क कर के ब ख़ुशी क़नाअ़त इख़्तियार कर ली।"

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! जब औ़रतों ने मर्दों की त़रह़ आ'माले सालेह़ इख़्तियार किये और उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरे रह़मत का क़स्द किया, उन से आ'माले सालेह़ा ज़ाहिर हुए तो उन के अह़वाल अच्छे हो गए, वोह अपने मक़ासिद के ह़ुसूल में कामयाब हो गईं, ऐ अपने आ'माले क़बीह़ा पर इसरार करने वाले और कषरते ग़फ़्लत के सबब तौबा में टाल-मटोल करने वाले ! तू किस त़रफ़ जा रहा है ?

इ़श्क़े इलाही عَزَّوَجَلَّ में दीवानी :

ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़त़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं "एक रात मुझ पर रिक़्क़त त़ारी हुई तो मैं ग़मगीन हो गया, आंख भी नहीं लग रही थी, मैं ने अपने दिल में सोचा क्यूं न मैं क़ब्रिस्तान जाऊं, मुमकिन है ज़ियारते क़ुबूर, यौमे आख़िरत और दोबारा ज़िन्दा उठाए जाने के मुतअ़ल्लिक़ ग़ौरो फ़िक्र से मेरा ग़म ज़ाइल हो जाए। चुनान्चे, मैं क़ब्रिस्तान चला गया, लेकिन वहां भी मैं ने अपने दिल को कुशादा नहीं पाया तो फिर मैं ने सोचा कि बाज़ार चलता हूं। हो सकता है कि लोगों से मिल जुल कर मैं अपनी बेक़रारी दूर कर सकूं। चुनान्चे, मैं ने ऐसा ही किया, फिर भी मेरे दिल की तंगी दूर न हुई। फिर मुझे पागल ख़ाने का ख़याल आया कि मजनून और पागल लोगों और उन के

अफ़्आल को देख कर शायद मेरे दिल की घुटन ख़त्म हो जाए। वहां दाख़िल होते ही मैं ने अपने दिल से ग़म को दूर होता हुवा महसूस किया। मैं बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ यहां आने के लिये तू ने मुझे चलाया और बेदार किया।" तो मुझे एक आवाज़ आई : "यहां हम तुम्हें अपनी हिक्मत के तहत लाए हैं।" हज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "मैं पागलों की त़रफ़ बढ़ा तो एक ज़र्द रू बांदी पर मेरी नज़र पड़ी, उस के हाथ उस की गर्दन के साथ बंधे हुए थे और वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र में मश्ग़ूल थी फिर मैं ने सुना कि वोह इस मफ़्हूम के चन्द अश्आ़र पढ़ रही थी :

"मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करती हूं कि बिग़ैर किसी जुर्म के मेरे हाथ गर्दन के साथ बांध दिये गए हैं हालांकि न तो मैं ने ख़ियानत की और न ही चोरी। मेरे सीने में भी एक दिल है जिसे मैं जलता हुवा महसूस करती हूं। ऐ मेरे दिल की आरज़ू ! तू यक़ीनन ह़क़ पर है। अगर मैं ने तुझे पूरा न किया तो मह़ज़ अपनी गुफ़्तगू से तुझे धोके में मुब्तला कर रखा है।"

हज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "मैं ने पागलों के क़रीब खड़े हुए लोगों से पूछा : "इसे क्या हुवा ?" तो उन्हों ने जवाब दिया : "इस की अ़क़्ल ज़ाइल हो चुकी है, इस लिये इस के आक़ा ने इसे क़ैद कर दिया है।" जब बांदी ने उन की येह बात सुनी तो गहरी सांस लेते हुए कुछ अश्आ़र पढ़ने लगी, जिन का मफ़्हूम येह है :

"ऐ लोगो ! मैं ने कोई जुर्म नहीं किया, बल्कि मैं तो दीवानी हूं और मेरा दिल ही मेरा मह़बूब दोस्त है और तुम ने मेरे हाथ बांध रखे हैं, ह़ालांकि मैं ने सिवाए मह़ब्बत के कोई जुर्म नहीं किया, मैं तो अपने मह़बूब की मह़ब्बत में फ़ना हूं और उस के दर से हटने वाली नहीं, तुम जो कुछ मेरे लिये बेहतर समझते हो वोह मेरे लिये बुरा है और जो मेरे लिये बुरा समझते हो वोह मेरे लिये बेहतर है।"

हज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "उस का येह कलाम सुन कर मैं रोने लगा, मेरा दिल बेक़रार हो गया, जब उस ने मेरे चेहरे पर आंसू बहते हुए देखे तो कहने लगी : "ऐ सरी ! अवसाफ़े इलाहिय्या عَزَّوَجَلَّ सुन कर आप का येह ह़ाल हो गया तो अगर आप को उस का कमा ह़क़्क़ुहु इरफ़ान ह़ासिल हो जाए तो फिर आप का क्या ह़ाल होगा ?" मैं ने कहा : "तअ़ज्जुब है मुझे येह बांदी कैसे पहचानती है ? जब कि मेरी इस से पहले कभी मुलाक़ात नहीं हुई।" तो उस ने कहा : "ऐ सरी ! जब से मुझे मा'रिफ़त ह़ासिल हुई है, मैं जाहिल नहीं रही। जब से इबादत में मश्ग़ूल हुई हूं तो कभी ग़ाफ़िल नहीं हुई, जब से विसाल हुवा कभी जुदाई नहीं हुई, जब से उस का दीदार किया तब से ह़िजाब ह़ाइल न हुवा, और अहले दर्जात तो एक दूसरे को पहचान लेते हैं।" फिर उस ने इस मफ़्हूम के अश्आ़र पढ़े :

"मा'रिफ़ते इलाही عَزَّوَجَلَّ की ह़क़ीक़त मेरे बात़िन के नूर में मुतह़क़्क़िक़ हो चुकी है, अब मेरा दिल ख़ालिसतन अपने मह़बूब ही के लिये है, अब मैं हमेशा अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के अवसाफ़ बयान करती रहूंगी। क्या कोई आ़जिज़ ग़ुलाम अपने आक़ा के अवसाफ़ बयान कर सकता है ?"

हज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं "मैं ने कहा : मैं तुम्हें महब्बत का तज़किरा करते हुए देख रहा हूं और येह कि तुम पर वज्द का ज़ुहूर होता है, तुम किस से महब्बत करती हो ?" उस ने जवाब दिया : "उस ज़ात से जिस ने अपने रहमो करम से हमें अपनी मा'रिफ़त अ़ता फ़रमाई, जिस ने अपने इन्आ़मात से हमें अपना महबूब बना लिया, जिस की अ़ता के बादल हम पर बरसते हैं, जो दिलों के बहुत क़रीब है, ग़मों को दूर करता और नाफ़रमानों से दरगुज़र फ़रमाता है।" फिर मैं ने पूछा : "तुम्हें यहां किस ने क़ैद किया है ?" उस ने कहा : "हासिदीन और बुग़्ज़ रखने वालों ने, उन्हों ने मुझ पर ज़ियादती की और मुझे मजनूना का नाम दे कर यहां डाल दिया हालांकि वोह ख़ुद इस नाम के ज़ियादा हक़दार हैं।" फिर उस ने इस मफ़्हूम के चन्द अश्आ़र पढ़े।

"ऐ वोह बुज़ुर्ग व बरतर हस्ती जिस ने मेरी तन्हाई को देख कर मुझे अपने वस्ल के क़ुर्ब से मानूस और कैफ़ो सुरूर की लज़्ज़तों से आगाह किया ! मैं ग़ाफ़िल थी उस ने मुझे बेदार किया, मैं ऊंघ रही थी उस ने मुझे जगा दिया।"

हज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "मैं ने उस का नाम पूछा तो बोली : "नाम को छोड़िये जो आप ने मेरी बातें सुनीं पहचान के लिये वोही काफ़ी हैं।" अभी गुफ़्तगू जारी थी कि उस का आक़ा भी आ गया, उस ने अपनी बांदी के निगरान से पूछा : "तोहफ़ा कहां है ?" निगरान ने जवाब दिया : "उस के पास हज़रते सय्यिदुना शैख़ सरी सक़ती عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الْقَوِى मौजूद हैं, उन्हों ने उस से ऐसी गुफ़्तगू की, कि वोह उन की बातें बड़े ग़ौर से सुनने लगी।" उस का मालिक भी उन के पास चला आया और आप को देख कर ता'ज़ीमन दस्त बोसी की और अ़र्ज़ की : "या सय्यिदी ! आप की बरकत से येह बांदी नर्म दिल हो गई है।" आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "तुम्हें इस की कौन सी आ़दत बुरी लगी ?" तो उस ने जवाब दिया : "या सय्यिदी ! येह बांदी सारंगी बजाती थी, मुझे अच्छी लगी मैं ने बीस हज़ार दिरहम में इसे ख़रीद लिया क्यूंकि येह बहुत ख़ूब सूरत थी और मुझे इस का सारंगी बजाना भी बहुत पसन्द था। मुझे उम्मीद थी कि मैं इस से दूगना नफ़्अ़ हासिल करूंगा। एक दिन मैं इस के पास आया, सारंगी इस की गोद में थी और येह इस मफ़्हूम के चन्द अश्आ़र गुनगुना रही थी :

"तेरे हक़ की क़सम ! मैं ने न तो अपने अ़हद को तोड़ा और न ही अपनी महब्बत के साफ़ सुथरे चश्मे को गदला किया बल्कि मेरा सीना और दिल तो महब्बत से भरा हुवा है पस मुझे किस त़रह क़रार और सुकून मिल सकता है। ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तेरे सिवा मेरा कोई मा'बूद नहीं पस तू भी मुझे अपनी बन्दी देख कर मुझ से राज़ी हो जा।"

जब येह नग़मे से फ़ारिग़ हुई तो बहुत देर तक रोती रही, और सारंगी को ज़मीन पर मार कर तोड़ दिया और चीख़ने चिल्लाने लगी, इस की अ़क़्ल ज़ाइल हो गई, मैं समझा कि येह किसी की महब्बत में गिरिफ़्तार है लेकिन जब मैं ने इस की हालत के मुतअ़ल्लिक़ ग़ौर किया तो महब्बत का कोई निशान देखने में न आया।" हज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "मैं ने उस बांदी से पूछा : "क्या इसी त़रह हुवा जैसा कि इन्हों ने बताया है ?" तो उस ने जवाब में कुछ अश्आ़र पढ़े, जिन का मफ़्हूम येह है :

"हक़ तआ़ला ने मेरे दिल को मुख़ातिब फ़रमाया तो वा'ज़ व नसीहत मेरी ज़बान पर जारी हो गई। पस उस ने जुदाई के बा'द मुझे अपना कुर्ब अ़ता फ़रमाया, और मुझे अपनी ख़ास बन्दी बना लिया। जब उस ने मुझे निदा दी तो मैं ने भी ब रिज़ा व रग़बत उस की निदा पर **लब्बैक** कहा।"

ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने उस के आक़ा से फ़रमाया : "तुम इस को आज़ाद कर दो मैं इस की क़ीमत अदा करता हूं।" उस का आक़ा ज़ोर से चिल्लाया और कहने लगा : "आप तो फ़क़ीर हैं, इस की क़ीमत कहां से चुकाएंगे?" मैं ने कहा : "जल्दी न करो तुम यहीं रहो, मैं इस की क़ीमत का एहतिमाम करता हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "मैं अपने घर गया, मेरी आंखो से आंसू बह रहे थे और मेरा दिल उस बांदी के सबब ग़मगीन था, मैं ने वोह रात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गिर्या व ज़ारी करते, उस की त़रफ़ तवज्जोह करते और अपनी ह़ाजत बर आने के लिये उसी पर तवक्कुल करते हुए गुज़ारी। सहूरी के वक़्त दरवाज़ा खट-खटाने की आवाज़ आई तो मैं ने पूछा : "दरवाज़े पर कौन है?" जवाब मिला : "आप का दोस्त हूं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से किसी काम के लिये ह़ाज़िर हुवा हूं।" मैं ने दरवाज़ा खोला तो ख़ूब सूरत और साफ़ सुथरे लिबास में मल्बूस एक नौजवान खड़ा था, उस के साथ एक ख़ादिम, शम्अ़ और पांच बदर (या'नी माल की वोह थेली जिस में दस हज़ार दिरहम हों) ऊंटों पर थीं। मैं ने पूछा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़म फ़रमाए, तुम कौन हो?" उस ने जवाब दिया : मैं अह़मद बिन मष्नी हूं, मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी अ़ता व बख़्शिश से नवाज़ा है और उस ने बुख़्ल नहीं किया और मुझे इतना माल अ़ता फ़रमाया कि इन्सान उस को उठाने से आ़जिज़ हैं, मैं सो रहा था कि एक आवाज़ आई : "ऐ अह़मद! क्या तुम हम से एक मुआ़मला करोगे?" मेरी नींद उड़ गई, मैं ने कहा : "मुझ से ज़ियादा और कौन इस बात का ह़क़दार होगा कि उस से मुआ़मला किया जाए?" आवाज़ आई : "पांच बदर माल सरी सक़ती को दे दो कि वोह तोह़फ़ा नामी कनीज़ के मालिक को दे कर उस को गुलामी की क़ैद से छुड़ाएगा और तुम हमारी जानिब से जहन्नम से आज़ादी का परवाना पाओगे कि हम ही उस पर नज़रे इनायत फ़रमाने वाले और लुत़्फ़ो करम करने वाले हैं।" चुनान्चे, मैं माल ले कर आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गया और सारी सूरते ह़ाल भी बयान कर दी है।" ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सजदए शुक्र अदा किया। जब नमाज़े फ़ज्र पढ़ ली और दिन की रोशनी फैल गई तो मैं अह़मद बिन मष्नी का हाथ पकड़ कर उसे पागल ख़ाने ले गया, तोह़फ़ा का निगरान दाएं बाएं देख रहा था लेकिन जब उस ने मुझे देखा तो कहने लगा : "ख़ुश आमदीद! तोह़फ़ा के पास चलें, वोह बहुत ग़मज़दा है और उस का तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में बहुत बड़ा मक़ाम व मर्तबा है इस लिये कि कल शाम मुझे ग़ैब से येह आवाज़ सुनाई दी थी : "तोह़फ़ा का तअ़ल्लुक़ तो मुझ से है, वोह मेरी नवाज़िशात से किसी लम्ह़े भी ख़ाली नहीं होती, उस ने कुर्ब की घड़ियां पाईं तो बुलन्द मर्तबा ह़ासिल कर लिया।" मैं जल्दी से बेदार हुवा और हातिफ़े ग़ैबी के कलाम को दोहराता रहा यहां तक कि मैं ने आप को देख लिया।" ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "हम तोह़फ़ा के पास गए तो उस को इस मफ़्हूम के अश्आ़र पढ़ते हुए सुना :

“मैं ने सब्र का दामन थामे रखा यहां तक कि मेरा सब्र तेरी मह़ब्बत पर फ़ख़्र करने लगा, मैं ने अपनी दीवानगी को छुपाए रखा लेकिन तुझ से अपने मुआ़मले को मख़्फ़ी न रख सकी, तेरी मह़ब्बत में मेरा बेड़ियां पहनना और क़ैद की तंगी सहना ही मेरा सब्र है, अगर तू मुझ पर इस ह़ालत में राज़ी व ख़ुश है तो ज़माने की त़वालत की मुझे कोई परवाह नहीं कि तू ही मेरा सब से बड़ा ग़म गुसार है, और ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ बेशक तू ही मेरा पालने वाला और मेरी मुसीबत टालने वाला है।”

ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़त़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : “अश्आ़र पढ़ने के दौरान ही उस का मालिक भी रोता हुवा आ गया, मैं ने कहा : “आप ने ज़ह़मत क्यूं की ? हम ख़ुद आप के पास तोह़फ़ा की क़ीमत ले कर आए हैं, और मज़ीद पांच हज़ार दिरहम बत़ौरे नफ़्अ़ भी लाए हैं। उस ने कहा : “अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं नहीं लूंगा।” मैं ने कहा : “दस हज़ार दिरहम चाहते हो ?” उस ने क़सम खाते हुए कहा : “मैं नहीं लूंगा।” मैं ने कहा : “इतना मजीद नफ़्अ़ चाहते हो ?” उस ने तीसरी बार कहा : “ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं नहीं लूंगा और अगर आप मुझे दुन्या और इस का तमाम माल व अस्बाब भी दे दें तब भी क़बूल नहीं करूंगा, मैं इस को रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये आज़ाद करता हूं।” मैं ने पूछा : “मुझे बताओ, माजरा क्या है ?” उस ने कहा : “या सय्यिदी ! रात को ख़्वाब में किसी ने मुझे सख़्त कलिमात के साथ मलामत करते हुए कहा : “ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन ! तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की वलिय्या की तौहीन करता है।” मैं कांपते हुए बेदार हो गया अब मुझे दुन्या ज़लील लगने लगी है और अपनी तमाम अश्या को छोड़ कर अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ भागना चाहता हूं। येह कह कर वोह रोता हुवा जिधर मुंह आया चल दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़त़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : “मैं अह़मद बिन मष्नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा तो उन को भी रोते हुए पाया। उन पर क़बूलिय्यत के आषार नुमाया थे। मैं ने पूछा : “तुम क्यूं रोते हो ?” कहने लगे : ‘मैं अभी तक अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ को राज़ी न कर सका और न ही अपना माल क़बूलिय्यत के मक़ाम पर पाता हूं, अब मैं येह सब उस की रिज़ा के लिये सदक़ा करता हूं।” मैं ने कहा : “येह सब तोह़फ़ा की बरकतें हैं !” फिर तोह़फ़ा खड़ी हुई, अपना लिबास तब्दील कर के ऊन का जुब्बा पहन लिया और बालों का दूपट्टा ओढ़े मुंह आस्मान की त़रफ़ बुलन्द कर के चल पड़ी, हम भी इस के साथ ही चलने लगे। वोह येह कहती हुई जा रही थी :

“मैं उस की बारगाह की त़रफ़ भागी और उसी की मह़ब्बत में रोई और ह़क़ तो येह है कि वोही मेरा मालिके ह़क़ीक़ी है, मैं हमेशा उसी की बारगाह में ह़ाज़िर रहूंगी यहां तक कि अपनी आरज़ूओं के मुत़ाबिक़ अपना ह़िस्सा वुसूल कर लूं।”

हम उस के पीछे पीछे चलते रहे यहां तक कि वोह येह कहती हुई शहर से बाहर निकल गई :

“ऐ लोगों को ख़ुशी और मसर्रत देने वाले ! मेरा सुरूर तो तू ही है। ऐ लोगों को ज़िन्दगी अ़त़ा करने वाले ! मेरी राह़त तो तुझी से है, मेरे लिये जन्नत व दोज़ख़, मेरी ने'मतें और मेरा ग़मगुसार सब कुछ तू ही तू है।”

ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़त़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : “फिर चलते चलते वोह हमारी निगाहों से ओझल हो गई, उस के मालिक और अह़मद बिन मष्नी ने कुछ अ़र्सा मेरी सोह़बत इख़्तियार

की। जब उस के मालिक का इन्तिक़ाल हो गया तो हम हज के इरादे से बैतुल्लाह शरीफ़ पहुंचे। तवाफ़े का'बा के दौरान हमें येह दर्द भरी आवाज़ सुनाई दी : "मैं ने तेरी महब्बत में रुस्वाइयां झेलीं, अब तेरे कुर्ब की उम्मीद वार क्यूं कर न होऊं कि तू ही अपने इश्क़ में गिरिफ़्तार उन दिलों की शिकायत दूर करने वाला है जो हिज्रो फ़िराक़ का शिकार हैं। ऐ नफ़्स ! अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने गुनाहों की वजह से तेरा मुहासबा कर लिया तो तू बरबाद हो जाएगा लिहाज़ा अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से अफ़्वो दरगुज़र और रिज़ा मांग ले।"

हज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "मैं ने इस आवाज़ वाले को तलाश किया तो मुझे एक औरत दिखाई दी जिस की अक़्ल और हालत कुछ ठीक दिखाई नहीं दे रही थी, उस ने मुझे देख कर कहा : "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم ऐ सरी !" मैं ने जवाब में وَعَلَيْكِ السَّلَام कहने के बा'द पूछा : "तुम कौन हो ?" वोह कहने लगी : ख़ुदाए वहदहू लाशरीक की मा'रिफ़त के बा'द भी इज़्हारे ना वाक़िफ़िय्यत हो रहा है, आप अभी तक हिजाब में हैं, आप के दिल पर इश्क़ ने क़ब्ज़ा नहीं जमाया।" येह कहने के बा'द उस ने बताया : "मेरा नाम तोहफ़ा है।" मैं ने पूछा : "ख़ुद को लोगों से अलग थलग करने के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुझे क्या नफ़्अ़ दिया ?" उस ने कहा : "मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने मेरी तमाम उम्मीदें और आरज़ूएं पूरी कर दीं और मेरे दिल को अपने ग़ैर से ख़ाली कर दिया।" इस के बा'द वोह रोती रही और उस पर बेचैनी की कैफ़िय्यत तारी हो गई। फिर उस ने अपना सर उठा कर यूं अ़र्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अहले तक़्वा कामयाब हो गए, मुत्तक़ीन ने नजात पाई, और वोह शख़्स ज़लीलो रुस्वा हुवा जिस के हिस्से में बद बख़्ती आई, ऐ मालिके हक़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी बारगाह में इल्तिजा करती हूं कि अपने विसाल और मुलाक़ात से कुर्ब अ़ता फ़रमा और मुझे अपने पास बुलाले कि मुझे दुन्या में रहने की हाजत नहीं।" फिर उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और ज़मीन पर तशरीफ़ ले आई। हम ने उसे हरकत दी तो देखा कि उस की रूह क़फ़से उ़नसुरी से परवाज़ कर चुकी थी। जब अहमद बिन मुसन्ना عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى की उस पर नज़र पड़ी तो उन के दिल पर रिक़्क़त तारी हो गई और वोह भी ज़ोर ज़ोर से रोने लगे, फिर उन्हों ने भी बुलन्द आवाज़ से चीख़ मारी और ज़मीन पर गिर पड़े और हमेशा के लिये दुन्या से कूच कर गए। हज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "मैं दोनों की तजहीज़ व तक्फ़ीन के बा'द वापस आ गया। मुझे इस वाक़िए से बहुत तअ़ज्जुब हुवा।"

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उन लोगों की ख़ूब शान है जिन्हों ने अहकामे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ की बजा आवरी में कोई कोताही न की, काइनात को निगाहे इब्रत से देखा और ग़ौरो फ़िक्र किया और लग़्ज़िशों को याद कर के फ़िक्रे आख़िरत की और इब्रत हासिल की, इन को येह बात समझ आ गई कि मक़्बूल बन्दे अपने महबूबे हक़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ से जा मिले और अपने मक़ासिद पाने में कामयाब हो गए।

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ اَجْمَعِيْن

बयान 51 : ईदों की ईद

हम्दे बारी तआला :

सब ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो वुजूद के वुजूद से भी पहले से है। फ़ज़्लो करम और जूद जिस की सिफ़ात हैं। अपनी यक्ताई में अवलाद, आबा और अजदाद से मुनज़्ज़ा है। अपनी ज़ात में बीवी, बेटा, बाप और अपनी तरफ़ हर मन्सूब से पाक है। ऐसा अ़लीम है कि रैत के ज़र्रात, पानी के क़त्रात और ख़ोशों और बालियों के दानों की ता'दाद को जानता हैं। ऐसा बसीर है कि ख़ुश्क व तर में इन्तिहाई सियाह व तारीक रातों के अन्धेरों में भी छोटी सी च्यूंटी की ह़रकात को देखता है। ऐसा ह़कीम है कि उस ने अपनी ह़िक्मत से मज़बूत और सख़्त चट्टानों से दरयाओं को जारी फ़रमाया। और ख़ुश्क लकड़ियों से ताज़ा फ़ल निकाले। अ़क़्लें उस की मिषाल नहीं दे सकतीं। अत़राफ़े आ़लम उस का इह़ात़ा नहीं कर सकते। मिक़्दार उस को रोक नहीं सकती। ज़माने उसे फ़ना नहीं कर सकते। आंखें उस का इदराक नहीं कर सकतीं। वोह ही तन्हा इ़बादत के लिये लाइक़ है। ऐसा अ़त़ा फ़रमाने वाला है कि कोई उस की अ़त़ा को रोक नहीं सकता और कोई भी उस के फ़ैसले को टाल नहीं सकता।

ऐसा करीम है कि बन्दे को अपनी बारगाहे आ़ली से कितनी ही मरतबा रू गर्दानी करते हुवे देखता है फिर भी उसे बहुत बड़ा षवाब अ़त़ा फ़रमाता है। ऐसा ह़लीम है कि गुनहगार को अपनी रह़मत में छुपा लेता है ह़ालांकि कई मरतबा उसे अपनी नाफ़रमानी में मुस्तग़रक़ देखता है। ऐसा ग़फ़्फ़ार है कि गुनाहों को बख़्श देता, ऐ़बों को छुपाता और गुज़श्ता ख़त़ाओं से दरगुज़र फ़रमाता है। ऐसा क़ह्हार है कि बड़े बड़े जाबिर उस के ग़लबे को रोक न सके। वोह सब पर ग़ालिब है और उस ने शिकस्त व रीख़त को बड़े बड़े ह़म्ला आवरों का मुक़द्दर कर दिया। और जिस ने उस के मुक़ाबले में इ़नाद की तल्वार को खींच कर तान लिया उस ने अपने क़ुर्ब से दूरी के नेज़े से उस पर वार कर दिया। उस ने अपने अन्वार व तजल्लियात के इदराक में कोशां फ़िक्रों को ह़ैरत ज़दा कर दिया। उस ने अपने क़दीम जलाल की ह़क़ीक़त तक अ़क़्लों को रसाई से ग़ाफ़िल कर दिया। उस ने ज़बानों को फ़साह़त व क़ादिरुल कलामी के बा वुजूद अपने अफ़आ़ल के राज़ के इशारात को बयान करने से गूंगा कर दिया। उस ने दिलों को अपना इह़ात़ा करने से ह़ैरत में डाल दिया पस वहम व ख़याल से उस का क़स्द नहीं किया जा सकता।

वोह हमेशा से है। बुज़ुर्गी वाला है। बहुत अ़त़ा फ़रमाने वाला है। तन्हा व यक्ता है। बेटे और बाप, शरीक व मुआ़विन से पाक है, अपने मुशाबेह व मुमाषिल और मुख़ालिफ़ व मुक़ाबिल से बुलन्द तर है। तमाम ने'मतों पर उस का शुक्र अदा किया जाता है। हर ख़ूबी व फ़ज़ीलत से सराहा जाता है। जो अपने कमज़ोर और नाफ़रमान बन्दे को अपनी रह़मत के पर्दे में छुपा लेता है। वोह हर लम्ह़ा उसे देख और उस का मुशाहदा फ़रमा रहा है। वोही है जिसे रब्ब कहा जाता और जिस की इ़बादत की जाती है। ह़क़ीक़ते यक्ताई में मुन्फ़रिद है। ख़याली अवहाम से पाक है। वोह अपनी बक़ा में फ़ना व

मिष्लिय्यत से पाक है। हरविनहां व इयां चीज़ को जानता है। अ़क़्लें उस की अ़ज़मत व बड़ाई में हैरत ज़दा हैं। वोह उस के लिये कोई जगह पहचान न सकीं। अफ़्कार ने उस की शाने बे नियाज़ी को शुमार करने का इरादा किया मगर अ़क़्ली उ़लूम से उस की मा'रिफ़त नहीं हो सकती। वोह मुशाबेह व रिश्तेदार से बुलन्द व बरतर है। हिस्सादार व रफ़ीक़ से पाक है। तौबा करने वाले की तौबा क़बूल फ़रमाता और रुजूअ़ करने वाले को महबूब व दोस्त रखता है। उस के दरवाज़े पर कोई दरबान है न कोई रोकने वाला। जिस ने उस के इलावा से उम्मीद लगाई वोह बद बख़्त और ख़ाइबो ख़ासिर हुवा। और जिस ने उस की अ़ता के दरवाज़े पर पड़ाव डाला वोह मक़ासिद व मत़ालिब पाने में कामयाब हो गया। जो उस के कुर्ब की ह़लावत को चख लेता है वोह उस की कुदरतों के अ़जाइब व ग़राइब को देखता है। जो तमाम जहान से मुंह फेर कर उस से लौ लगाता है वोह उसे बुलन्दी और आ'ला मरातिब पर तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाता है तो तंगी व परेशानी दूर हो जाती है। सह़ूर के वक़्त ख़ास तजल्ली का ज़ुहूर होता है और पुकारा जाता है : "है कोई मग़फ़िरत का त़लबगार। है कोई तौबा करने वाला।" और मांगने वालों की ह़ाजतों को पुरा किया जाता है। और जूदो बख़्शिश की ख़िल्अ़तों से तौबा करने वालों को नवाज़ा जाता है।

पाक है वोह जो सब का मा'बूद है। जिस की वह़दानिय्यत की गवाही आस्मान और उस में मौजूद तमाम अ़जाइबात ने दी। जिस की रबूबिय्यत का इक़रार ज़मीन ने मशरिक़ व मग़रिब हर जगह किया। पाक है वोह ज़ात जिस ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुजतबा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को अपना ख़ास नबी बनाया। वोह नबी जो हमेशा क़ाइम रहने वाला दीन ले कर तशरीफ़ लाए। जो तमाम अख़्लाके़ ह़मीदा के ह़ामिल हैं। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े नफ़्से वुजूद को शरफ़ बख़्शा। सआ़दत को दर्जए कमाल अ़ता किया। और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को बुलन्द मरातिब पर फ़ाइज़ फ़रमाया। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इस मुबारक महीने (या'नी रबीउ़न्नूर शरीफ़) में ज़ाहिर फ़रमाया। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को हर ऐब से पाक व सलामत पैदा किया। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत की वजह से (ईरान के आतश कदा में एक हज़ार साल से रोशन) आग बुझ गई। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी से बुत औंधे मुंह गिर पड़े। ऐवाने किसरा लर्ज़ा बर अन्दाम हो गया। सख़्तियां और मसाइब दूर कर दिये गए, शयात़ीन को आस्मान पर जाने से रोक दिया गया, और उन के कान आस्मानी कलाम सुनने से बहरे हो गए। जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है :

لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍO دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌO (پ٢٣، الصّٰفّٰت:٨-٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : आ़लमे बाला की त़रफ़ कान नहीं लगा सकते और उन पर हर त़रफ़ से मार फेंक होती है। उन्हें भगाने को और उन के लिये हमेशा का अ़ज़ाब।"

येही वोह नबिय्ये मुकर्रम और रसूले मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हैं जिन पर कुरआने मजीद में येह आयते मुबारका नाज़िल हुई : اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ ۨالْكَوَاكِبِO (پ٢٣، الصّٰفّٰت:٦)
तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक हम ने नीचे के आस्मान को तारों के सिंगार से आरास्ता किया।"

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को लूई बिन ग़ालिब की अवलाद से पैदा फ़रमाया। आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को तमाम मशरिक़ व मग़रिब वालों पर फ़ज़ीलत दी। आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की समाअ़ते मुबारका ऐसी कि अ़र्श पर क़लम के चलने की आवाज़ सुन लेते हैं और बसारते मुबारका ऐसी कि सातों आस्मान नज़र में हैं। ज़बान मुबारक ऐसी कि कभी अपनी मरज़ी से कलाम फ़रमाया, न ही कभी झूटी बात मुंह से निकाली (क्यूंकि आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की हर बात वह़्ये इलाही عَزَّ وَجَلَّ से है)। हाथ ऐसे मुक़द्दस कि जिन की बरकात खाने पीने वाली अश्या में आ़म व ज़ाहिर। क़ल्बे अत़्हर ऐसा जो कभी ग़ाफ़िल होता, न ही कभी सोता, हर घड़ी हर लम्ह़ा इ़बादते इलाही में मश्ग़ूल रहता। क़दम मुबारक वोह जिसे ऊंट बोसा दे तो उस का ख़ौफ़ दूर हो जाए। गोह (एक जानवर का नाम है) आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाई। दरख़्तों ने आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को सलाम किया। पथ्थरों ने आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से कलाम किया और खजूर का तना आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत में दीवाना हो गया।

मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबिय्यों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़्रो बर صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''كُنْتُ نَبِيًّا وَّآدَمُ بَيْنَ الْمَاءِ وَالطِّيْنِ'' या'नी मैं उस वक़्त भी नबी था जब कि ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पानी और मिट्टी के दरमियान थे।''

(الفتوحات المكية لابن عربى،الباب العاشر فى معرفة دورة الملك......الخ،ج١،ص٣٥١)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद मक्की और ह़ज़रते सय्यिदुना अबूल्लैष समर क़न्दी رَحِمَهُمُ اللہُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : ''जब ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को जन्नत से ज़मीन पर उतारा गया तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : ''या अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ब ह़क़्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी लग़्ज़िश मुआ़फ़ फ़रमा और मेरी तौबा क़बूल फ़रमा।'' तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''ऐ आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) तुझे मेरे मह़बूब صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की पहचान कैसे ह़ासिल हुई ?'' अ़र्ज़ की : ''या अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ जब तू ने मुझे पैदा किया तो मैं ने अपना सर तेरे अ़र्श की जानिब उठाया तो उस पर येह लिखा हुवा पाया, لَاۤ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ مُحَـمَّـدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه तो मैं ने जान लिया कि तेरे नज़्दीक इस हस्ती से बढ़ कर क़द्रो मन्ज़िलत वाला कोई नहीं, पस मैं ने तेरी बारगाह में इन का वसीला पेश किया।'' जब ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने दुआ़ की तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने इन की तौबा क़बूल फ़रमाई और अपने ह़बीबे करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बरकत से उन की लग़्ज़िश मुआ़फ़ फ़रमा दी।''

(المستدرك،كتاب آيات رسول الله صلى الله عليه وسلم،باب استغفار آدم عليه السلام، الحديث٤٢٨٦،ج٣،ص٥١٧،بتغير)

नूरे मुह़म्मदी صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की चमक दमक :

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने नूरे मुह़म्मदी صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की पुश्ते मुबारक में बत़ौरे अमानत रखा और इन को जन्नत में ठहरा कर फ़िरिश्तों से सजदा कराया, इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को इस वदीअ़त किये गए नूर की क़द्रो मन्ज़िलत की पहचान कराई और फ़रमाया : ''दोनों पाक व साफ़ हो कर तस्बीह़ व तक़्दीस करो फिर

अपनी अहलिय्या ह़व्वा का ह़क़्क़े ज़ौजिय्यत अदा करो कि मैं तुम दोनों से अपने फ़ैज़े आषार नूर का ज़ुहूर फ़रमाने वाला हूं।" पस आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ के मुत़ाबिक़ अ़मल किया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने नूरे मुह़म्मदी صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़व्वा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا में मुन्तक़िल फ़रमा दिया। येह शबे जुमुआ़ और रजबुल मुरज्जब की बारहवीं रात थी। फिर आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इस नूर को ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़व्वा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की पेशानी में सूरज की मानिन्द दाइरे की सूरत में देखा करते। जब ह़ज़रते सय्यिदुना शीष عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पैदा हुवे तो नूरे मुह़म्मदी صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की पेशानी में मुन्तक़िल कर दिया गया। जब आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बड़े हुवे और जवानी की ह़ुदूद में क़दम रखा तो ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने आप عَلَيْهِ السَّلَام से अ़ह्दो पैमान लिया कि वोह इस ख़ुदाई राज़ को किसी पाक बाज़ बीबी में ही मुन्तक़िल फ़रमाएंगे ताकि येह किसी पाक बाज़ मर्द तक ही मुन्तक़िल हो। इस त़रह़ येह मुबारक नूर नेक मर्दों की पुश्तों से नेक औ़रतों के रह़मों में मुन्तक़िल होता रहा यहां तक कि वोह वक़्त आ गया कि येह ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ तक पहुंच गया।

जब येह नूर ह़ज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की त़रफ़ मुन्तक़िल हुवा तो इस की बरकत से वोह हर क़िस्म के ख़ौफ़ से बे परवाह हो गईं, जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने नूरे मुह़म्मदी صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم को रफ़ीउ़श्शान सुलबों से बुलन्द रुत्बा सय्यिदा आमिना رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के बत़्ने अत़्हर की त़रफ़ मुन्तक़िल फ़रमाया तो इस मुन्तक़िली के साथ ही बड़ी बड़ी निशानियां ज़ाहिर होने लगीं। सारी मख़्लूक़ एक दूसरे को बिशारतें देने लगी, ज़मीनो आस्मान में ए'लान कर दिया गया : "ऐ अ़र्श ! वक़ार व सन्जीदगी का निक़ाब ओढ़ ले। ऐ कुरसी फ़ख़्र की ज़िरह पहन ले। ऐ सिद्रतुल मुन्तहा ! ख़ुशी से झूम जा। ऐ हैबत और रो'ब व दबदबा के अन्वार ! तुम भी ख़ूब रोशन हो जाओ। ऐ जन्नत ! ख़ूब आरास्ता व पैरास्ता हो जा। ऐ मह़ल्लात की ह़ूरो ! तुम भी बुलन्दी से देखो। ऐ रिज़्वान (बाग़बाने जन्नत) ! जन्नत के दरवाज़े खोल दे और ह़ूरो ग़िलमां को सामाने ज़ीनत से आरास्ता व पैरास्ता कर के काइनात को ख़ुश्बूओं से मुअ़त्तर कर दे। ऐ मालिक (दारोग़ए जहन्नम) ! जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दे। क्यूंकि आज की रात मेरी क़ुदरत के ख़ज़ानों में छुपा हुवा नूर और राज़ अ़ब्दुल्लाह से जुदा हो कर आमिना के बत़्न में मुन्तक़िल होने वाला है। और इस नूर के मुन्तक़िल होते ही आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا का ख़ालिस यक़ीन ज़ाहिर हो गया और आंतें आप के पेट के बच्चे से लिपट गईं।

आप صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم के शिकमे मादर में मुन्तक़िल होने के **पहले महीने** शाहे ईरान के मह़ल "किसरा" में ज़लज़ला बर्पा हो गया। **दूसरे महीने** काइनात बिशारतों से मुनव्वर हुई। **तीसरे महीने** दरयाए सावा ख़ुश्क हो गया। **चौथे महीने** वादिये समावाह ख़ुश्क हो गई। **पांचवें महीने** बह़ीरा त़बरिय्या रुक गया। **छटे महीने** मालिके ह़क़ीक़ी के पोशीदा राज़ की बिना पर आप صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم के वालिदे मोह़तरम इस जहाने फ़ानी से कूच कर गए। **सांतवे महीने** ईरान का आतश कदा बुझ गया, **आठवें महीने** ऐवाने किसरा में दराड़ पड़ गई और किसरा ज़लीलो ख़्वार हुवा। **नववें महीने** किसरा के सर से ताज गिर गया और उस की मुसीबत व तक्लीफ़ शिद्दत इख़्तियार कर गई,

उस ने काहिनों और राहिबों से इस बारे में दरयाफ़्त किया तो उसे बताया गया कि बनी अदनान के सरदार की विलादत का वक़्त क़रीब आ चुका है और वोह नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم होंगे और उन को दलील व बुरहान के साथ मबऊ़ष फ़रमाया जाएगा, नीज़ उन के अवसाफ़ तौरात व इन्जील और ज़बूर में मौजूद हैं और उन का दीन तमाम अदयान पर ग़ालिब होगा।

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी ज़ैद رَحْمَةُاللّٰه تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत माहे रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ की बारह तारीख़ पीर के दिन आ़मुल फ़ील में हुई।"

(السيرة النبوية لابن هشام، ولادة رسول الله ﷺ، ج١، ص١٦١)

जिस सुहानी घड़ी चमका त़यबा का चांद :

इस अ़ज़ीमुश्शान नबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की दुन्या में तशरीफ़ आवरी पर सारी काइनात ख़ुशी से झूम उठी। इस माहे मुबारक की पहली रात हज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को अ़जीब कैफ़ो सुरूर ह़ासिल हुवा। **दूसरी रात** आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को ह़ुसूले मत़लूब का मुज़्दा मिला। **तीसरी रात** आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से कहा गया कि आप के शिकमे अत़हर में जो हस्ती है वोह हमारी ह़म्द बजा लाने और शुक्र अदा करने वाली है। **चौथी रात** आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने मलाइका की तस्बीह़ सुनी जो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद का ए'लान कर रहे थे। **पांचवीं रात** आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने ख़्वाब में हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को देखा जो आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को नूर वाले और बुलन्दियों के मालिक नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बिशारत दे रहे थे। **छटी रात** आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को ऐसा दाइमी फ़रह़त व सुरूर ह़ासिल हुवा कि इस के बा'द आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا न कमज़ोर पड़ीं, न आप को कभी थकावट हुई। **सातवीं रात** अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने अपनी रिज़ा का नूर फैलाया तो वोह हर त़रफ़ फैल गया। **आठवीं रात** विलादते शहे दीं का वक़्त क़रीब आने की वजह से मलाइका ने हज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के काशानए अक़्दस का चक्कर लगाया। **नववीं रात** आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की सआ़दतों और तवंगरी की इब्तिदा हुई। **दसवीं रात** आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की थकावट व तक्लीफ़ जाती रही। **ग्यारहवीं रात** ह़ुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इस जहाने फ़ानी में तशरीफ़ लाए तो सारा घर नूर से मुनव्वर हो गया, आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا का शको शुबा और डर ख़त्म हो गया, सफ़ा व मर्वा पहाड़ ख़ुशी से झूम उठे, आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुन्या में जल्वागर होते ही अपने परवर दगारे ह़क़ीक़ी عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में सजदा किया और अपनी उंगली आस्मान की जानिब इस त़रह़ बुलन्द की जैसे कोई शख़्स आ़जिज़ी व इन्किसारी से अपने मालिक के सामने हाथ बुलन्द करता है। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुश्बू काइनात में बिखर गई, मलाइका ने तकबीर व तहलील (अल्लाहु अक्बर और لَآاِلٰهَ اِلَّااللّٰه) के ना'रे लगाए और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के अ़ज़मत व जलालत वाले चेहरए अक़्दस के मुबारक नूर से सारी ज़मीन बुक़्अ़ए नूर (या'नी नूर का टुकड़ा) बन गई।

हज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि "मैं ने सफ़ेद बादलों को आस्मान से उतरते हुवे देखा जिन्हों ने नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को मुझ से छुपा लिया फिर मैं ने किसी कहने वाले को येह कहते सुना : "ऐ फ़िरिश्तों इन्हें मशरिक़ व मग़रिब का त़वाफ़ कराओ, इन्हें तमाम समन्दरी मख़्लूक़, जंगलों, जानवरों और ख़ाली जगहों में रहने वाले जिन्नों के पास से गुज़ारो और इन्हें हर ज़ी रूह़ पर पेश करो ताकि वोह इन्हें इन के नाम और अवसाफ़ के साथ पहचान लें, नीज़ इन्हें सब अम्बिया عَلَیْھِمُ السَّلَام की जाए विलादत का भी चक्कर लगवाओ ताकि इन की बरकत के आषार व निशानात उन को भी आ़म हों।"

हज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا मज़ीद फ़रमाती हैं : "फिर वोह बादल आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से दूर हो गए तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़ेद ऊनी कपड़े में लिपटे हुवे थे और नीचे सब्ज़ रेशम बिछा हुवा था। तीन अफ़राद बड़ी तेज़ी से आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की जानिब बढ़े एक के पास सुर्ख़ सोने का त़श्त, दूसरे के पास मोतियों से जड़ा हुवा कूज़ा और तीसरे के पास सब्ज़ रेशम का रूमाल था। उन्हों ने चेहरए ह़बीब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को कूज़े के पानी से धोया फिर रूमाल से तस्दीक़ की मोहर निकाल कर पुश्ते नबवी صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर षब्त कर दी। इस के साथ ही आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सआ़दत और तौफ़ीक़ मुकम्मल हो गई, फिर किसी की आवाज़ आई : "इन्हें लोगों की निगाहों से छुपा दो और इन्हें ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बरगुज़ीदगी, ह़ज़रते सय्यिदुना शीष عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मा'रिफ़त, ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की रिक़्क़त व नर्मी, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की गहरी दोस्ती, ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की फ़रमा बरदारी, ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का सब्र, ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बुर्द बारी, ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का ह़ुस्नो जमाल, ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की सुरीली आवाज़, ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का हुक्म, ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ह़िक्मत, ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़ाक़त, ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का ज़ोह्द और ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ख़न्दा पेशानी अ़त़ा कर दो, बल्कि इन को तमाम अम्बिया व मुरसलीन عَلَیْھِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के अख़्लाक़े ह़मीदा से मुत्तसिफ़ कर दो।"

(رسائلِ میلادِ مصطفی،باب مولد النبی صلّی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلّم لابن حجر مکی علیہ الرحمۃ،ص ٢٤،مختصرًا)

पाक है वोह ज़ात जिस ने शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को सब नबियों का सुल्त़ान बनाया और इन के ज़िक्रे ख़ैर को हर त़रफ़ फैलाया, इन्हें बुलन्द मर्तबा अ़त़ा फ़रमाया, इन की विलादते बा सआ़दत पर फ़ारस की आग बुझ गई, बसरा के मह़ल्लात रोशन हो गए, बुत मुंह के बल गिर पड़े और ऐवाने किसरा में हलचल मच गई।

आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ही शफ़ाअ़ते कुब्रा के मालिक हैं, आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़रीए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने न सिर्फ़ मौजूदात को शरफ़ बख़्शा बल्कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को तमाम मौजूदात के लिये दुन्या व आख़िरत में बाइ़षे रह़मत बनाया।

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है : "हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सब से ज़ियादा शुजाअ़ व बहादुर, सब से ह़सीन और सब से ज़ियादा सख़ी थे। (صحیح مسلم، کتاب الفضائل، باب شجاعته صلی اللّٰه علیه وسلم، الحدیث۲۳۰۷، ص۱۰۸۵) तमाम लोगों से ज़ियादा बुर्दबार थे। (احیاء علوم الدین، بیان جملة من محاسن اخلاقه ﷺ، ج۲، ص۴۴۱) तमाम लोगों से ज़ियादा करीम थे। (اخلاق النبی علیه السلام لابی الشیخ الاصبهانی، باب ماروی فی کظمه الغیظ وحلمه، الحدیث۵۷، ج۱، ص۶۰) सब से ज़ियादा आ़बिदो ज़ाहिद थे तमाम लोगों से ज़ियादा फ़सीह़ कलाम करने वाले थे। (احیاء علوم الدین، کتاب آداب المعیشة واخلاق النبوة، ج۲، ص۴۵۰) और सब से ज़ियादा आ़जिज़ी व इन्किसारी फ़रमाने वाले थे। (المرجع السابق، بیان جملة من محاسن اخلاقه ﷺ، ج۲، ص۴۴۴) ईमान के ए'तिबार से सब से ज़ियादा सह़ीह़ और सब से बढ़ कर इन्साफ़ फ़रमाने वाले थे, नीज़ वसीउ़ज़्ज़र्फ़ थे, क़ैदियों पर रह़म फ़रमाते, बड़ों की इ़ज़्ज़त करते, ख़न्दा पेशानी से मुलाक़ात करते, गर्मियों की शिद्दत में भी रोज़ा रखते और तारीक रातों में क़ियाम करते। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को रब्बे क़ुद्दूस عَزَّوَجَلَّ ने यूं मुख़ात़ब फ़रमाया :

﴿۱﴾ یٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِیْرًا ۙ وَّدَاعِیًا اِلَی اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِیْرًا ۝

(پ۲۲، الاحزاب:۴۵، ۴۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी)! बेशक हम ने तुम्हें भेजा ह़ाज़िर नाज़िर और ख़ुश ख़बरी देता और डर सुनाता। और अल्लाह की त़रफ़ उस के हुक्म से बुलाता और चमका देने वाला आफ़्ताब।*

ऐ मेरे प्यारे इस्लामी भाइयो! जब सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, बिइज़्ने परवर दगार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी हुई तो ज़िन्दगी में रौनक आ गई और बात़िल ख़त्म हो गया, ईमान का चराग़ जला तो फिर कभी न बुझा। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मीलादे मुबारक की ख़बर देने वाली लत़ीफ़ व ख़ुशगवार हवा सारी काइनात में चली और आप के नूरे मुबारक से सारी काइनात ने इ़ज़्ज़त व शराफ़त का लिबास पहन लिया। जब इस का गुज़र फ़ारस की ज़मीन से हुवा तो इस ने (सदियों से जलने वाले) आतश क़दे को बुझा दिया, और अहले फ़ारस में से सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इसे मह़सूस किया, आप बड़ी तेज़ी से हुसूले ईमान की ख़ात़िर मन्ज़िलें तै करते हुवे हुज़ूर सय्यिदुल कौनैन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे नाज़ में ह़ाज़िर हुवे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की वह़दानिय्यत का इक़रार कर के दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो गए, ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने जान लिया कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़्वाहिश क्या है। उन की कोशिश राइगां न गई बल्कि उन्हों ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने अक़्दस से येह मुज़्दए जां फ़िज़ा सुनने की कामयाबी ह़ासिल कर ली कि "سَلْمَانُ مِنَّا" या'नी सलमान फ़ारसी (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) हम में से हैं।" (الطبقات الکبریٰ لابن سعد، الرقم ۳۵۹ سلمان فارسی، ج۴، ص۶۲)

जब इस लतीफ़ व खुश गवार हवा का गुज़र अरज़े रूम से हुवा तो सब से पहले अहले रूम के सरदार हज़रते सय्यिदुना सुहैब रूमी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस की महक को महसूस किया तो ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अज़्मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक्दस में हाज़िर हो कर दामने इस्लाम को थाम लिया और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दीदार से फ़ैज़याब हो कर सहाबिय्यत का शरफ़ हासिल किया। जब मीलादे मुबारक की लतीफ़ व खुशगवार हवा मुल्के यमन की सर ज़मीन पर पहुंची तो इस की महक सब से पहले हज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने ज़ाहिरो बातिन में महसूस की और मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को पाने के लिये बिग़ैर किसी ज़ाहिरी मुआवज़े के अपनी जान लड़ा दी और बा वुजूद वतन की दूरी के मुस्तफ़ा जाने काइनात صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाए तो सय्यिदे आलम ने उन की ता'रीफ़ करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "मैं यमन की तरफ़ से खुश्बूए रहमान عَزَّ وَجَلَّ पाता हूं (या'नी यमन रहमानी तजल्लियात के ज़ुहूर का मक़ाम है। (مرقاۃ،ج١٠،ص٢٤٦)" (المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی ھریرۃ،الحدیث١٠٩٧٨،ج٣، ص٦٤٩)

आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ के मक़ाम व मर्तबा और अज़्मत व शान के लिये येही बात काफ़ी है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ को इरशाद फ़रमाया : "ऐ उमर (رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ) जब तुम उवैस क़रनी (رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ) से मिलो तो उसे सलाम कहना और कहना कि वोह तेरे लिये दुआए मग़फ़िरत करे क्यूंकि वोह क़बीलए रबीआ और मज़र के बराबर लोगों की शफ़ाअत करेगा।"

(سیراعلام النبلاء،الرقم٣٧٢،اویس قرنی،ج٥، ص٧٤)

जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मीलादे मुबारक की लतीफ़ व खुश गवार खुश्बूदार हवा हबशा पहुंची तो वहां सब से पहले हज़रते सय्यिदुना बिलाल हबशी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने लबैक कहा और उन्हें तस्दीक़ की तौफ़ीक़ ने ईमान तक पहुंचा दिया, फिर आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ अज़ानें दिया करते और यूं अपने ईमान का ए'लान करते और दीने इस्लाम के लिये परेशान रहते और हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़िक्रे ख़ैर के झन्डे जगह जगह गाड़ दिये तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की ख़ास तौर पर ता'रीफ़ फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया : "ऐ बिलाल (رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ) तुम मेरे तज़्किरे आम करते और मेरी क़द्रो मन्ज़िलत लोगों में उजागर करने की कोशिश करते हो, येही वजह है कि जब मैं जन्नत में दाख़िल हुवा तो मैं ने अपने आगे आगे तुम्हारे चलने की आवाज़ सुनी।"

(جامع الترمذی،ابواب المناقب،باب اتیت علی قصر......الخ،الحدیث٣٦٨٩،ص٢٠٣١،فیہ"خشخشتك امامی"فقط)

ऐ मेरे प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस हबशी गुलाम की तरफ़ इनायते रब्बानी सबक़त ले गई जब कि सरकारे आली वक़ार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ुरैशी चचा पर शक़ावत व बद बख़्ती ग़ालिब आ गई। जब हज़रते सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने रूम में

मा'रिफ़त की बू पाई तो महब्बते रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में सरगर्दां व हैरान हो कर जंगलों में निकल गए और जब क़बूलिय्यत की लतीफ़ व खुश गवार हवाएं हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ पर चलीं तो घर वालों, वतन और सब से जुदा हो कर महूज़ ज़ियारते नबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की तलब में निकल खड़े हुवे। और जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने इस फ़रमाने आलीशान से हज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ को अच्छे वस्फ़ से मौसूफ़ कर दिया कि "मैं यमन की तरफ़ से खुश्बूए रहमान عَزَّ وَجَلَّ पाता हूं।"

जब येही नसीमे सहर यमन से गुज़री तो इस की महक पा कर हज़रते सय्यिदुना आमिर رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ ने बुतों की पूजा छोड़ कर इस्लाम का दामन थाम लिया और क़दम बोसिये रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से मुशर्रफ़ हो गए और फिर महब्बत व इश्क़े रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में मौत को गले लगा लिया। आप رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ का वाक़िआ अहले अक़्ल व दानिश के लिये हैरान कुन है और वोह येह है कि इस्लाम लाने से क़ब्ल हज़रते सय्यिदुना आमिर رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ एक बुत की पूजा किया करते थे, आप की एक बेटी फ़ालिज व जुज़ाम की बीमारी में मुब्तला थी और चलने फिरने से क़ासिर थी, आप अपने बुत के पास बैठ जाते और अपनी बेटी को भी उस के सामने बिठा लेते और फिर कहते कि मेरी येह बेटी बीमार है इस का इलाज कर दे, अगर तेरे पास इस की शिफ़ा है तो इसे मुसीबत व बीमारी से छुटकारा दे दे, कई साल उस बुत से अपनी हाजत पूरी करने का मुतालबा करते रहे लेकिन उस ने उन की हाजत बरआरी न की। जब आप رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ पर तौफ़ीक़ व हिदायत की बादे इनायत चली तो आप رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ ने अपनी ज़ौजए मोहतरमा से इरशाद फ़रमाया : "कब तक इस बहरे व गूंगे पथ्थर की इबादत करते रहेंगे जो न आवाज़ निकालता है, न बात करता है, मैं इसे दीने हक़ गुमान नहीं करता।" आप رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ की बीवी ने अर्ज़ की : "आप हमें किसी रास्ते पर ले चलें। उम्मीद है कि हम राहे हक़ पा लेंगे, यक़ीनन इस मशरिक़ व मग़रिब का कोई तो खुदा होगा।"

हज़रते सय्यिदुना आमिर رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ अपने घर की छत पर बुत के सामने बैठे थे कि अचानक आप رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ ने एक नूर देखा जिस ने आफ़ाक़ को भर दिया और सारी मौजूदात को रोशनी से चमका दिया और फिर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ की निगाहे बसीरत से पर्दे हटा दिये ताकि आप ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो जाएं, फिर आप رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ ने देखा कि फ़िरिश्ते क़ितार दर क़ितार एक घर के गिर्द जम्अ हैं, पहाड़ सजदा रेज़, ज़मीन साकित व जामिद और दरख़्त झुके हुवे हैं, खुशियां उरूज पर हैं और फिर एक आवाज़ सुनी कि हिदायत देने वाले नबिय्ये मोहतरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत हो गई है, इस के बा'द आप अपने बुत के पास आए तो वोह भी औंधा पड़ा हुवा था, आप رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ ने अपनी बीवी से कहा : "येह क्या हो रहा है? किस चीज़ का ज़ुहूर हो रहा है? येह कैसी ख़बर सुनाई दे रही है?" फिर बुत को घूर कर देखा तो वोह कह रहा था : "तवज्जोह से सुनो ! एक बहुत बड़ी ख़बर का ज़ुहूर हो चुका है और वोह येह कि आज वोह हस्ती दुन्या में तशरीफ़ ला चुकी है जो काइनात को शरफ़ व इफ़्तिख़ार बख़्शेगी,

वोह नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ला चुके हैं जिन का सदियों से इन्तिज़ार किया जा रहा था, जिन से हृज़र व शजर गुफ़्त्गू फ़रमाएंगे, चांद उन की ख़ातिर दो टुकड़े होगा और वोह बनी रबीआ व बनी मज़र के सरदार हैं।"

हृज़रते सय्यिदुना आमिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी ज़ौजा से इस्तिफ़सार फ़रमाया : "क्या तुम सुन रही हो ? येह बे जान पथ्थर क्या कह रहा है !" उस ने अर्ज़ की : "इस से उस मौलूदे मोहृतरम का इस्मे गिरामी तो दरयाफ़्त करें।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पूछा : "ऐ वोह ग़ैबी आवाज़ जो इस सख़्त पथ्थर की ज़बान में गुफ़्त्गू फ़रमा रही है ! तुझे उस ज़ात की क़सम जिस ने तुझे कुव्वते गोयाई अता फ़रमाई ! ज़रा येह तो बताओ कि इस पैदा होने वाली हस्ती का इस्मे गिरामी क्या है ?" आवाज़ आई : "हृज़रते सय्यिदुना मुहृम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जो साहिबे ज़म ज़म व सफ़ा या'नी हृज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बेटे हैं, आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़मीन तहामा है, आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दोनों कन्धों के दरमियान मोहरे नबुव्वत है और सख़्त गर्म धूम में बादल आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर साया फ़िगन रहेगा।"

हृज़रते सय्यिदुना आमिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी अहलिय्या से इरशाद फ़रमाया : "चलो, आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की तलाश में निकलें, ताकि हम आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सबब राहे हक़ पा लें।" अभी वोह दोनों मियां बीवी येह गुफ़्त्गू कर ही रहे थे कि उन की बेटी जो नीचे घर में बीमार पड़ी थी, अचानक उन के पास छत पर आ खड़ी हुई और उन्हें पता भी न चला, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने देखा तो पूछा : "ऐ बेटी ! कहां गया तेरा वोह दर्द और बीमारी जिस में तू हमेशा से मुब्तला थी ? और कहां गया तेरा बे क़रारी की वजह से रातों को जागना ?"

बेटी ने जवाब दिया : "ऐ मेरे वालिदे मोहृतरम ! मैं ने ख़्वाब देखा कि मेरे सामने एक नूर है और एक शख़्स मेरे पास आया। मैं ने उस से दरयाफ़्त किया : "येह नूर किस का है जो मैं देख रही हूं ? और येह शख़्स कौन है जिस का नूरे मुबारक मुझ पर चमक रहा है ?" मुझे जवाब मिला : "येह नूर बनी अदनान के सरदार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का है जिन से सारी काइनात मुअत्तर हो गई है।" मैं ने फिर पूछा : "इन का इस्मे गिरामी क्या है ?" तो जवाब मिला : "इन का नामे मुबारक मुहृम्मद और अहृमद صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है, क़ैदियों और मुसीबत ज़दों पर रहृम और मुजरिमों को मुआफ़ फ़रमाएंगे।"

मैं ने पूछा : "उन का दीन क्या है ?" जवाब मिला : "दीने हृनीफ़।" मैं ने पूछा : "इन का नसब क्या है ?" जवाब मिला : "कुरैशी अदनानी।" मैं ने पूछा : "येह किस की इबादत करेंगे ?" जवाब मिला "ख़ुदाए वहृदहू लाशरीक عَزَّوَجَلَّ की।" मैं ने पूछा : "ऐ मुझ से ख़िताब फ़रमाने वाले ! तू कौन है ?" जवाब मिला : "मैं उन की आमद की बिशारत देने वाले फ़िरिश्तों में से एक हूं।"

मैं ने अर्ज़ की : "जिस दुख दर्द में मैं मुब्तला हूं इस के बारे में तेरा क्या ख़याल है ?" जवाब दिया : "बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ में उन की अज़मत और जाहो मर्तबा का वसीला पेश करो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ख़ुद इरशाद फ़रमाया है : मैं ने अपना राज़ और अपनी बुरहान उन को वदीअत कर दी है, अब जिस ने भी उन के वसीले से मुझ से दुआ की मैं उस को ज़रूर क़बूल करूंगा

और क़ियामत के दिन अपने नाफ़रमान के हक़ में भी उन की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाऊंगा।'' पस मैं ने अपने हाथ फैला दिये और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मर्तबए कमाल का वासित़ा दे कर दुआ़ की और अपने हाथ जिस्म पर फेर लिये। अब जब कि मैं बेदार हुई तो बिल्कुल तन्दुरुस्त हो चुकी थी जैसा कि आप मुझे देख रहे हैं ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपनी ज़ौजा से फ़रमाया : ''यक़ीनन इस मौलूदे मसऊ़द صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़बर ख़ुश आइन्द और बड़ी दिल आवेज़ है, हम आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़जीबो ग़रीब निशानियां सुन और देख रहे हैं, मैं तो ज़रूर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत में वादियां और घाटियां उ़बूर करता हुवा आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह तक रसाई ह़ासिल करूंगा।

चुनान्चे, वोह क़ाफ़िले के हमराह घर से निकल खड़े हुवे और मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا का क़स्द किया। वहां पहुंच कर ह़ज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के घर के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया, और फिर काशानए अक़्दस के दरवाज़े पर दस्तक दी। जवाब मिलने पर अ़र्ज़ की : ''हमें उस नौ मौलूद हस्ती صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करा दें जिस के नूर की बदौलत अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने मौजूदात को मुनव्वर फ़रमाया है और जिस की वजह से उस के आबाओ अजदाद शरफ़ वाले हो गए हैं।'' इस पर ह़ज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने इरशाद फ़रमाया : ''मैं हरगिज़ इस हस्ती صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को बाहर नहीं निकालूंगी क्यूंकि मुझे यहूदियों की जानिब से तक्लीफ़ पहुंचाए जाने का ख़त़रा है।''

उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''हम ने तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत में अपने वत़न से जुदाई गवारा की, ह़बीबे ख़ुदा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का हुस्नो जमाल देखने के लिये अपना दीन छोड़ा और अपने बदनों को थकावट से चूर चूर कर दिया।''

ह़ज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने इरशाद फ़रमाया : ''अगर ऐसा है तो फिर इन्तिज़ार करो, कुछ देर तक मज़ीद सब्र करो, क़त़अ़न जल्द बाज़ी से काम न लो फिर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا कुछ देर के लिये दरवाज़े के पास से हट गईं और दोबारा वापस आ कर उन्हें इरशाद फ़रमाया : ''अन्दर आ जाओ।'' जब शम्ए रिसालत के परवानों ने इजाज़त पा कर बारयाबी का शरफ़ ह़ासिल किया तो अन्वारे ह़बीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के जल्वे देख कर निषार हो गए और बे इख़्तियार तकबीर व तहलील के ना'रे ज़बानों पर जारी हो गए, और फिर जब रुख़े ज़ैबा से निक़ाब हटा तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अक़्दस से ऐसी रोशनी नुमूदार हुई जिस की किरनें आस्मान तक जा पहुंचीं। येह देख कर सब ख़ुशी व मसर्रत से बे ख़ुद हो गए। क़रीब था कि रो'ब व दबदबे से बेहोश हो जाते लेकिन संभल गए और आगे बढ़ कर क़दम बोसी की सआ़दत ह़ासिल की और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान ले आए।

ह़ज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने उन से इरशाद फ़रमाया : ''जल्दी करो क्यूंकि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दादाजान ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने वा'दा ले रखा है कि मैं आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को लोगों से छुपा कर रखूं और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के शान व मर्तबे को मख़्फ़ी रखूं।''

वोह हबीबे खुदा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह से इस हाल में जुदा हुवे कि उन के दिलों में महब्बत की आग भड़क रही थी फिर हज़रते सय्यिदुना आमिर رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنۡهُ ने बेखुदी में अपना हाथ दिल पर रख दिया और कहा : "मुझे वापस हज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهَا के दरे दौलत पर ले चलो, उन से दूसरी बार रुख़े मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के हुस्नो जमाल की ज़ियारत की भीक मागते हैं। लिहाज़ा वोह सब इन की येह बे क़रारी देख कर वापस चल पड़े। जब हज़रते सय्यिदुना आमिर رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنۡهُ ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा तो दौड़ कर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दमैने शरीफ़ैन से लिपट गए और घुटी घुटी सांसें लेने लगे और फिर इसी हालत में इस जहाने फ़ानी से कूच कर गए और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने इन की रूहे पाक को जन्नत में पहुंचा दिया।

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! आशिक़ों और सच्ची महब्बत करने वालों के येही अवसाफ़ होते हैं।

ऐ मेरे प्यारे इस्लामी भाइयो ! उस महबूबे खुदा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के अवसाफ़े हमीदा सुन लो, जिन्हों ने सारी काइनात को इज़्ज़त और हुस्नो जमाल से मुज़य्यन कर दिया है कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक नूर आफ़ाक़ में चमक रहा है, और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को रो'ब व दबदबा और फ़ज़्लो करम का लुबादा ओढ़ा रखा है, महज़ आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकत से हज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهَا से हम्ल की तकालीफ़ को आसान कर दिया और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इस जहाने फ़ानी में भेज कर पूरी काइनात को आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की महक व खुश्बू से मुअत्तर कर दिया।

सय्यिदतुना हलीमा सा'दिय्या رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنۡهَا की सआदत मन्दी :

हज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهَا ज़ुहूरे नफ़ास की वजह से कमज़ोरी महसूस करने लगीं और इस ग़म में मुब्तला हो गईं कि वोह रसूले अकरम, नबिय्ये मोहतशम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को अपना दूध न पिला सकेंगी तो जानवरों, परन्दों और हवाओं में से हर एक येह दुआ करने लगा : "या अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ हमें इजाज़त दे कि हम तेरी मख़्लूक़ में तुझे सब से ज़ियादा पसन्दीदा व अज़ीज़ हस्ती की परवरिश की सआदत पाएं।"

फ़िरिश्तों ने अर्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तू जानता है कि हमें तेरे महबूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से कितनी महब्बत है लिहाज़ा तू हमें उन की परवरिश करने की इजाज़त अता फ़रमा ताकि हम आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अक़्दस के नूर से शरफ़ पाएं और इस की बरकत से कुछ हिस्सा पाएं।" इन सब की इल्तिजा व फ़रयाद के जवाब में अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं इस बात पर क़ादिर हूं कि इन की परवरिश बिग़ैर किसी सबब और दूध पिलाने वाली के करूं लेकिन मैं फ़ैसला फ़रमा चुका हूं और मैं अपनी हिक्मत व दानाई के तहत जब किसी को कुछ अता कर दूं तो कभी उस से वापस नहीं लेता और मैं ने अज़ल में अपनी हिक्मत के मुताबिक़ येह लिख दिया था कि इस दुर्रे यतीम और नफ़्से करीम को हिक्मत वाली हलीमा के इलावा कोई दूध नहीं पिलाएगा।"

उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़लीमा सा'दिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने शहर में कि़याम फ़रमा थीं तो ज़बाने कु़दरत ने उन को पुकारा और हु़दी ख़्वां ने ह़लीमा की सआ़दत मन्दी का यूं नग़्मा गुनगुनाया :

"ऐ ह़लीमा सा'दिय्या ! उठ जा और उस हस्ती की रज़ाअ़त का शरफ़ ह़ासिल कर ले जिस का हु़स्नो जमाल यक्ता है, और अगर वोह हस्ती न होती तो मरीज़े इश्क़ गिरिफ़्तारे मह़ब्बत न होता, और न ही फ़रह़त व सुरूर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ले जाता, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तो वोह हस्ती हैं कि जिन का हु़स्न बे मिषाल है, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ातिर तो उ़श्शाक़ ने अपनी गर्दनें तक कटा दी । ऐ ह़लीमा सा'दिय्या ! जब बारगाहे मुस्त़फ़ा (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) में ह़ाज़िरी की सआ़दत ह़ासिल करेगी तो ऐसे कु़र्ब की बिशारत पाएगी कि इस के बा'द कभी भी किसी तक्लीफ़ का सामना न करेगी, आप की रज़ाअ़त की मेंहदी तेरे हाथों में रची हुई है, जब वद्दोह़ा के रोशन व मुनव्वर चेहरे की ज़ियारत करे और चांदी से मुज़य्यन व आरास्ता लब व रुख़्सार के जल्वे और बे मिष्ल हु़स्न देखे तो अपने शोहर से कहना : "किसी कि़स्म का ख़ौफ़ न खा कि इस बा बरकत हस्ती के सदके़ हम अपना हर मक़्सूद पाएंगे ।"

आ़म तौ़र पर अहले मक्का की आ़दत थी कि वोह अपने शीर ख़्वार बच्चों को रज़ाअ़त के लिये मक्का से बाहर भेज देते थे, ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़लीमा सा'दिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इरशाद फ़रमाती हैं : "एक साल हम क़ह़त़ का शिकार हो गए न तो आस्मान से बाराने रह़मत बरसा और न ही ज़मीन ने कुछ उगाया, हम चालीस (40) औ़रतें शीर ख़्वार बच्चों की तलाश में मक्का आईं ताकि उन बच्चों को दूध पिलाने के इ़वज़ उन के घर वाले हमारी कुछ मदद करें, हम मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हुईं तो अहले मक्का अपने बच्चों को ले कर का'बए मुअ़ज़्ज़मा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا आ गए, हर बाप अपने बेटे के पहलू में खड़ा हो गया, अब हर औ़रत आगे बढ़ती और एक शीर ख़्वार बच्चा उठा लेती लेकिन जब मैं ने अपनी बारी पर देखा तो सिवाए एक बच्चे के किसी को न पाया और उस के पहलू में भी कोई न था, मैं ने उस बच्चे के वालिद के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो मुझे बताया गया कि येह यतीम है, इस का बाप उस वक़्त दुन्या से कूच कर गया था जब इस की मां ह़ामिला थी और अब वोह (या'नी बच्चे की मां) कमज़ोर व नातुवां है ।" मैं ने अपने ख़ाविन्द से कहा : "इस दुर्रे यतीम के सिवा अब कोई बच्चा बाक़ी नहीं ।" तो उस ने कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाए, इसी को ले लो, हम ख़ाली हाथ वापस नहीं जाएंगे, उम्मीद है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इस का अज्रो षवाब अ़त़ा फ़रमाएगा ।" और मुआ़मला भी ऐसा ही था ।

ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़लीमा सा'दिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : "मैं ने उस दुर्र यतीम को ले लिया, मैं उस वक़्त ख़ुद भी बच्चे की पैदाइश की वजह से कमज़ोरी का शिकार थी और मेरी छाती में कमज़ोरी और भूक की वजह से दूध का एक क़त़्रा भी न था । लेकिन जब मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को उठाया तो मेरी कमज़ोरी कु़व्वत में बदल गई और जब अपना पिस्तान आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दहने मुबारक में रखा तो दुध बहने लगा, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ूब सैर हो कर पिया और मैं ने एक ग़ैबी आवाज़ सुनी : "ऐ ह़लीमा सा'दिय्या ! तुझे येह हाशिमी शहज़ादा मुबारक हो ।"

हज़रते सय्यिदतुना ह़लीमा सा'दिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं : "फिर मैं अपनी सुवारी पर सुवार हुई जिस की ह़ालत येह थी कि कमज़ोरी से चल भी न सकती थी। अब वोह क़ाफ़िले की बाक़ी तमाम सुवारियों से आगे आगे भागने लगी। इस पर सब लोग हैरान थे। जब हम ने खुश्क दरख़्त तले पड़ाव किया तो वोह सर सब्ज़ हो गया और जब हम आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ले कर तारीक घर में दाख़िल हुवे तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरए अन्वर चराग़ की त़रह़ चमकने लगा यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का नूर चराग़ के नूर पर ग़ालिब आ गया।"

मैं ने अपने शोहर से अ़र्ज़ की : "क्या आप ने भी मुलाह़ज़ा किया है जो मैं देख रही हूं?" तो उन्हों ने जवाब दिया : "क्या मैं ने न कहा था कि येह मुबारक हस्ती है!" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं : "जब हम घर पहुंचे तो हमारे पास जो बकरियां थीं वोह बहुत कमज़ोर थीं। हम ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने हाथों पर उठाया और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ले कर उन बकरियों के पास से गुज़रे तो देखा कि उन की ह़ालत तब्दील हो चुकी थी। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बरकत से हमारे रिज़्क़ में कषरत हो गई ह़त्ता कि बाक़ी तमाम दूध पिलाने वाली औ़रतें आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की वजह से हम पर रश्क करने लगीं।"

हज़रते सय्यिदतुना ह़लीमा सा'दिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं : "जब मैं आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ वाला पिस्तान आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दहने मुबारक में रखती तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم दूध नोश फ़रमाते लेकिन जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रज़ाई भाई की त़रफ़ वाला पिस्तान आप के मुंह में रखती तो दूध न पीते, लिहाज़ा मैं ने जान लिया कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अ़द्लो इन्साफ़ फ़रमाने वाले हैं।"

हज़रते सय्यिदतुना ह़लीमा सा'दिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं : एक मरतबा बारिश न हुई तो सब लोग कहने लगे : "ऐ ह़लीमा सा'दिय्या (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا) तुम्हारे पास जो मुबारक बच्चा है, अगर तुम इस को अपने साथ ले लो तो हम इस की बरकत से बारिश त़लब करें तो येह हमारे लिये ख़ैरो बरकत का बाइ़ष होगा।" आप फ़रमाती हैं : "मैं आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ले कर बाहर आई तो लोगों ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने हाथों पर उठा लिया और शहर से बाहर जा कर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से बारिश त़लब की तो देखते ही देखते बादल ने इस क़दर मूसलाधार बारिश बरसाई कि हमें डूबने का ख़दशा लाह़िक़ हो गया।"

हज़रते सय्यिदतुना ह़लीमा सा'दिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं : "आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुद्दते रज़ाअ़त की तक्मील तक हमारे पास क़ियाम पज़ीर रहे। जब हम ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की वालिदए मोह़तरमा के पास वापस ले जाने का इरादा किया तो मेरे ख़ावन्द कहने लगे : "हम किसी त़रह़ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को वापस ले आएंगे, हम ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बदौलत कई बरकतें और रह़मतें ह़ासिल की हैं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि "हम आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ले कर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की वालिदए

माजिदा की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुवे तो अ़र्ज़ की : “हम ने आप के जिगर गोशे की बदौलत बहुत ख़ैरो बरकत ह़ासिल की है, हम आप से अ़र्ज़ करते हैं कि मज़ीद एक साल इन को हमारे पास रहने दें।” तो ह़ज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने इरशाद फ़रमाया : “ठीक है, तुम इन को अपने पास रख सकते हो।” लिहाज़ा हम आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को दोबारा पा कर बे इन्तिहा ख़ुश हुवे।

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने रज़ाई भाई के साथ मिल कर बकरियां चराया करते थे, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रज़ाई भाई एक दिन अपनी वालिदा से अ़र्ज़ करते हैं : “ऐ अम्मी जान ! मेरा ह़िजाज़ी भाई जब कभी किसी ख़ुश्क वादी में क़दम रखता है तो उस वादी की ताज़गी व हरयाली लौट आती है, और जब बकरियों को पानी पिलाने की ख़ातिर कुंवें के पास तशरीफ़ लाता है तो पानी ख़ुद ब ख़ुद कुंवें के मुंह तक बुलन्द हो जाता है और जब धूप में सो जाए तो बादल आ कर उस को सूरज की तपिश में साया मुहय्या करता है, सोते हुवे उस के पास दरिन्दे आते और क़दम बोसी करते हैं।” तो ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़लीमा सा'दिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ मेरे बेटे ! अपने भाई का ख़याल रखना।”

एक दिन दोनों भाई अपनी आ़दत के मुत़ाबिक़ खेलने की ग़रज़ से बाहर निकल गए। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का रज़ाई भाई घर वापस आया तो उस का रंग उड़ा हुवा था। वोह आ कर कहने लगा : “ऐ अम्मी जान ! मेरे ह़िजाज़ी भाई को देखिये, वोह ज़ख़्मी हो गया है।” पूछा : “उन को क्या हुवा ?” उस ने बताया : “मैं और मेरा भाई खेल रहे थे कि रोशन चेहरों वाले तीन अफ़राद आए, उन्हों ने सब्ज़ लिबास पहने हुवे थे, उन के पास तश्त और सोने चांदी का कूज़ा था, उन्हों ने मेरे भाई को उठाया और फिर लैटा कर सीनए मुबारका को शक़ कर के क़ल्बे अत़हर को बाहर निकाल लिया।” ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़लीमा सा'दिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं : “हम तेज़ी से आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ भागे तो हम ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को बिल्कुल सह़ीह़ व सालिम व ख़ुश व ख़ुर्रम पाया, न तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को कोई तक्लीफ़ थी और न ही आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सीनए मुबारका पर कोई निशान था।”

(السیرۃ النبویۃ لابن ھشام، ولادۃ رسول اللہ ﷺ ورضاعتہ، ج۱، ص۱٦٤، بتغیرٍ)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने इरशाद फ़रमाया : “अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام, ह़ज़रते सय्यिदुना मीकाईल عَلَیْہِ السَّلَام और ह़ज़रते सय्यिदुना इसराफ़ील عَلَیْہِ السَّلَام को भेजा, इन के पास एक तश्त और कूज़ा था, जिस में जन्नत का पानी और मोहर बन्द पाकीज़ा शराब थी और सब्ज़ रेशम का रूमाल भी था। ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को लिटाया और हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ से आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का सीनए मुबारका शक़ फ़रमाया,

फिर क़ल्बे अत़हर को शक़ कर के उस में से एक काले रंग का लोथड़ा निकाल दिया और अ़र्ज़ की : "ऐ सय्यिदल मुरसलीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ल्बे अत़हर में येह शैत़ान का हिस्सा था।" फिर क़ल्बे अत़हर पर पानी उंडेल कर मुकम्मल त़ौर पर धोया गया इस के बा'द फिर पहले की त़रह इस की जगह पर वापस रख दिया। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सीनए ख़ुश्बूदार में इस शक़ किये जाने के बा'द दोबारा सीये जाने का निशान मौजूद था।

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب الاسراء برسول اللہ ﷺ ...... الخ، الحدیث ۱۶۲، ص ۷۰۶ مفہوماً، راوی انس رضی اللہ تعالی عنہ)

ह़त्ता कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इस ज़ाहिरी दुन्या से पर्दा फ़रमा गए। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿اَلَمۡ نَشۡرَحۡ لَکَ صَدۡرَکَ ۙ﴿۱﴾﴾ (پ ۳۰، الم نشرح : ۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क्या हम ने तुम्हारे लिये सीना कुशादा न किया।* (1)

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते सय्यिदुना मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام से इरशाद फ़रमाया : "इन का दस उम्मतियों के मुक़ाबले में वज़्न करें।" जब ह़ज़रते सय्यिदुना मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام ने वज़्न किया तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उन सब पर ग़ालिब आ गए इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते सय्यिदुना मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया : "तमाम अहले ज़मीन के मुक़ाबले में वज़्न करें।" जब उन्हों ने वज़्न किया तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फिर भी सब पर ग़ालिब रहे। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ही बदरे कमाल और हुस्नो जमाल का ह़सीन ताज, और शरफ़ व बुज़ुर्गी का हिलाल हैं, तमाम फ़ज़ाइल और क़ाबिले फ़ख़्र बातों के मालिक हैं और कल बरोज़े क़ियामत दुरूदो सलाम का नज़राना पेश करने वालों की शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे। (اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ)

प्यारी प्यारी दुआ :

या अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ हम तेरे ह़बीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मीलादे पाक में ह़ाज़िर हैं, हमें मह़ज़ आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकत से इ़ज़्ज़त का लिबास अ़त़ा फ़रमा, जन्नतुल फ़िरदौस में आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस अ़त़ा फ़रमा, और जन्नत में दीदारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से बहरामन्द फ़रमा।

1....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "या'नी हम ने आप के सीने को कुशादा और वसीअ़ किया हिदायत व मा'रिफ़त और मवई़ज़त व नबुव्वत और इ़ल्मो ह़िक्मत के लिये, यहां तक कि आ़लमे ग़ैब व शहादत इस की वुस्अ़त में समा गए और अ़लाइक़े जिस्मानिय्या अन्वारे रूह़ानिय्या के लिये मानेअ़ न हो सके और उ़लूमे लदुन्निय्या व हुक्मे इलाहिय्या व मा'रिफ़ते रब्बानिय्या व ह़क़ाइक़े रह़मानिय्या सीनए पाक में जल्वा नुमा हुवे और ज़ाहिरी शर्ह़े सदर भी बार बार हुवा इब्तिदाए उ़म्र शरीफ़ में और इब्तिदाए नुज़ूले वह़्य के वक़्त और शबे मे'राज जैसा कि अह़ादीष में आया है। उस की शक्ल येह थी कि जिब्रीले अमीन ने सीनए पाक को चाक कर के क़ल्बे मुबारक निकाला और ज़ेरे त़श्त में आबे ज़मज़म से ग़ुस्ल दिया और नूर व ह़िक्मत से भर कर उस को उस की जगह रख दिया।"

या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने नबिय्ये करीम रऊफुर्रहीम صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आले मुबारक का सदक़ा ! हमारी इमदाद, मुआ़वनत और ग़म गुसारी फ़रमा, हमें जन्नत में ठिकाना अ़ता फ़रमा और आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकत से क़बूलिय्यत और इ़ज़्ज़त व शरफ़ के मरातिब अ़ता फ़रमा।

या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम तुझ से हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के आल व अस्ह़ाब عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के वसीले से सुवाल करते हैं कि हमारे गुनाह बख़्श दे और हर क़िस्म के ख़ौफ़ व हलाकत से हमारी ह़िफ़ाज़त फ़रमा, जन्नतुल फ़िरदौस में हमें आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार नसीब फ़रमा, हमारे ज़ाहिरी व बात़िनी छोटे छोटे आ'माल भी क़बूल फ़रमा, मह़ज़ अपनी क़ुदरते कामिला से हम सब पर रह़्मो करम फ़रमा और हमारी बख़्शिश फ़रमा कि यक़ीनन तू ही मुआ़फ़ फ़रमाने वाला और बख़्शने वाला है। ऐ सब से बढ़ कर रह़्म फ़रमाने वाले ! हम पर अपना ख़ास रह़्म व फ़ज़्ल फ़रमा। (आमीन)

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ

__दा'वते इस्लामी__ के सुन्नतों की तरबिय्यत के __मदनी क़ाफ़िलों__ में सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए __मदनी इन्आ़मात__ का रिसाला पुर कर के हर मदनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दा'वते इस्लामी के) ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से __पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने__ और __ईमान की ह़िफ़ाज़त__ के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

बयान 52 : ज़ियारते रौज़ए रसूल صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

हम्दे बारी तआला :

तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने अपने नेक बन्दों को शरफ़ व फ़ज़ीलत वाले घर (या'नी ख़ानए का'बा) और सब से बड़े मज़ारे अक़्दस (या'नी रौज़ए रसूल صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) की तरफ़ बुलाया। उन के लिये इस राह को आसान कर दिया और तौफ़ीक़ को उन का राहनुमा बनाया तो वोह अपने मक़ासिद व मतालिब तक पहुंचने में कामयाब हो गए। उस ने इन को अपने दरवाज़े पर खड़ा कर के अपनी बारगाहे आली का क़ुर्ब बख़्शा तो उन को इज़्ज़त व मरतबा मिला और वोह अपनी क़िस्मत पर नाज़ करने लगे। उस ने उन को ज़ियाफ़त व मेहमानी के साथ ख़ास फ़रमाया तो उन्हों ने उम्मुल क़ुरा (या'नी मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا) की हाज़िरी के लिये बे आबो गियाह मैदानों का सफ़र तै किया। और उस ने इन बयाबानों के सफ़र में इन के लिये लज़्ज़त रख दी, उन के दिलों में ईमान को नक़्श फ़रमा दिया और उन्हें अपनी रिज़ा व ख़ुश्नूदी का मुज़्दा सुनाया। पस उन्हों ने बैतुल्लाह शरीफ़ का मुकम्मल तवाफ़ किया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वादिये मिना(1) में उन्हें ख़ुश ख़बरी दी। मक़ामे ख़ैफ़(2) में ख़ौफ़ व मशक़्क़त और तमाम ख़तरात से राहत व चैन बख़्शा। उन्हें फ़ैज़ान के लिये मैदाने अ़रफ़ात(3) पहुंचाया ताकि उन के गुनाहों और नाफ़रमानियों को मिटा दे। इस लिये वोह अपने गुनाहों को छोड़ कर बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में हाज़िर हुवे। उन्हों ने मुज़्दलिफ़ा(4) में ख़ुशी व मसर्रत के साथ पाक बारगाह से षवाब पाया। मश्अ़रे ह़राम(5) के पास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन के लिये अपनी रिज़ा का इन्आ़म लिख दिया इस तरह कि इन्हें जहन्नम से नजात अ़ता फ़रमा दी। उन बन्दों ने सरों को बरहना कर लिया। बाल मुन्डवा दिये। अपने मेहरबान बहुत ज़ियादा मुआ़फ़ फ़रमाने वाले मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ व तक़्दीस कषरत से करने लगे। उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर अपनी क़ुरबानियां पेश कीं और जानवरों को ज़ब्ह़ किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन से बहुत बड़े अज्रो षवाब का वा'दा फ़रमा लिया और उन के गुनाहों के दफ़्तरों को मिटा दिया। रमिये जिमार (या'नी शैतान को कंकरियां मारने)(6) के वक़्त, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन को ग़मों से नजात अ़ता फ़रमाई। फिर जब उन्हों ने तवाफ़े वदाअ़(7) कर लिया और

---

(1).......**मिना :** मस्जिदुल ह़राम से पांच (5) किलो मीटर पर वोह वादी जहां ह़ाजी साहिबान क़ियाम करते हैं। "मिना" ह़रम में शामिल है (रफ़ीक़ुल ह़रमैन, स. 42) (2)....**ख़ैफ़ :** मिना के क़रीब मक्का में एक जगह का नाम है (لسان العرب، ج۱، ص۱۲۰۹) (वहां एक मस्जिद है जिसे) मस्जिदे ख़ैफ़ कहा जाता है। येह मिना के जुनूबी पहाड़ के दामन में वाक़ेअ़ है (जिस की वजह से इसे मस्जिदे मिना भी कह दिया जाता है)। (3).....**अ़रफ़ात :** मिना से तक़रीबन ग्यारह (11) किलो मीटर दूर मैदान जहां 9 ज़ुल हिज्जा तमाम ह़ाजी साहिबान जम्अ़ होते हैं। अ़रफ़ात ह़रम से ख़ारिज है। (रफ़ीक़ुल ह़रमैन, स. 42) (4)....**मुज़्दलिफ़ा :** "मिना से अ़रफ़ात की तरफ़ तक़रीबन पांच (5) किलो मीटर पर वाक़ेअ़ मैदान जहां अ़रफ़ात से वापसी पर रात बसर करते हैं। और येह सुन्नत है और सुब्ह़े सादिक़ और तुलूए आफ़्ताब के दरमियान कम अज़ कम एक लम्ह़ा वुक़ूफ़ वाजिब है। (रफ़ीक़ुल ह़रमैन, स. 42 43) (5)....**मश्अ़रे ह़राम :** मुज़्लिफ़ा के क़रीब एक पहाड़ का नाम है जिसे जबले क़ुज़्ज़ह भी कहते हैं। (बहारे शरीअ़त, जि. अव्वल, हिस्सए शशुम की इस्तिलाह़ात, स.70) (6)......**जमरात :** मिना में तीन मक़ामात जहां कंकरियां मारी जाती हैं पहले का नाम "जम्रतुल उख़रा या जम्रतुल अक़बा" है। इसे बड़ा शैतान भी बोलते हैं। दूसरे को जम्रतुल वुस्ता (मंझला शैतान) और तीसरे को जम्रतुल ऊला (छोटा शैतान) कहते हैं। (रफ़ीक़ुल ह़रमैन, स. 42) (7).....**तवाफ़े वदाअ़ :** ह़ज के बा'द मक्कए मुकर्रमा से रुख़्सत होते हुवे किया जाता है। येह हर आफ़ाक़ी (या'नी मीक़ात के ह़ुदूद से बाहर रहने वाले) ह़ाजी पर वाजिब है। (रफ़ीक़ुल ह़रमैन, स. 35)

लौटने का पुख़्ता इरादा किया तो अपने शौक़ को मुकम्मल तौर पर बारगाहे नबिय्ये मुख़्तार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में जल्द हाज़िरी की तरफ़ मुतवज्जेह कर दिया। वोह नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जिन को अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने बे शुमार मो'जिज़ात और निशानियां दे कर मबऊ़ष फ़रमाया। उन्हें सब से अशरफ़ व आ'ला क़बीले में पैदा फ़रमाया। उन के ज़रीए मज़र और नज़्ज़ार क़बीलों को इ़ज़्ज़त व शरफ़ बख़्शा। उन के दीन को सब से सीधा रास्ता और उन की शरीअ़त को सलाह़ व ख़ैर बनाया। पस हुरूफ़े तहज्जी में से हर ह़र्फ़ इन के मक़ाम व मर्तबे की अ़ज़मत व रिफ़अ़त पर गवाह है। चुनान्चे,

हुरूफ़े तहज्जी और शाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

(1)....''الف'' आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के क़द व क़ामत की तरफ़ इशारा करता है। (2)....''باء'' से मुराद आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बहजत या'नी हुस्न व ख़ूब सूरती है जिस ने चांद और सूरज को रोशन किया और चमकाया। (3)......''تاء'' से मुराद ताईद है जो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की हर शैतान मर्दूद से ह़िफ़ाज़त करती है। (4).....''ثاء'' से मुराद षबात है जिस की वजह से आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हर ह़ाल में षाबित क़दम रहे लिहाज़ा हमेशा अ़द्ल फ़रमाया किसी पर ज़ुल्म न किया। (5).....''جِيـْـم'' से मुराद जूदो वफ़ा है जिस की तरफ़ हमा वक़्त मुतवज्जेह रहे। (6)....''حاء'' से मुराद ह़िल्म व बुज़ुर्गी है जिसे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये पसन्द फ़रमाया। (7).....''خَاء'' से मुराद इख़्तिसास व सफ़ा है या'नी अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को बे शुमार ख़ूबियां अ़त़ा फ़रमा कर हर त़रह़ के मैले पन से पाक व साफ़ रखा। (8).....''دَال'' से मुराद दवामे एह़सान या'नी बारगाहे इलाही عَزَّ وَجَلَّ से नेकी व भलाई पर हमेशगी की तौफ़ीक़ अ़त़ा हुई पस आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की हैबत व जलाल से बुत औंधे मुंह गिर गए। (9)....''ذَال'' से मुराद ज़िल्लत से ह़िफ़ाज़त है या'नी आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते आ़ली से ज़िल्लत व रुस्वाई दूर रही ह़त्ता कि वोह ख़ुद ही ह़क़ारत व ज़िल्लत में मुब्तला हो गई। (10)....''رَاء'' से मुराद रह़मत है जिस के साथ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को मबऊ़ष फ़रमाया। (11)....''زاء'' से मुराद आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का बे मिष्ल ज़ोह्द व क़नाअ़त है। (12).....''سِيـْـن'' से मुराद सियादत व सरदारी है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को तमाम मख़्लूक़ की सरदारी से सरफ़राज़ कर के मुमताज़ फ़रमाया। (13).....''شِيْن'' से मुराद शफ़ाअ़त है कि रह़मतुल्लिल आ़लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बरोज़े क़ियामत गुनहगारों और नाफ़रमानों की शफ़ाअ़त व सिफ़ारिश फ़रमाएंगे। (14).....''صَـــاد'' से मुराद सियानत व ह़िफ़ाज़त है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की हर ऐ़ब से ह़िफ़ाज़त फ़रमाई और अमानत की

तल्वार आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ कर दी। (15)...."ضَــــاد" से मुराद ज़िया व अन्वार हैं जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अ़त़ा फ़रमाए। (16)......."طَاء" से मुराद त़रीक़े इक़्बाल (या'नी राहे उ़रूज) है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये खोल दी। (17)...."ظَاء" से मुराद ज़ुल्म व गुमराही है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत को ज़ुल्म व गुमराही से निकाल दिया। (18)......"فَــاء" से मुराद फ़रह़त व मसर्रत है कि आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक से बिशारतें और खुश ख़बरियां सुन कर मसरूर हो गई। (19)....."قَــاف" से मुराद क़ाबा क़ौसैन (या'नी दो हाथ का फ़ासिला) है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को शबे मे'राज इस क़ुर्ब से मुशर्रफ़ फ़रमाया। (20)....."كَاف" से मुराद कलामे इलाही है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने झूट से पाक अपने ला रैब कलाम के ज़रीए आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इ़ज़्ज़त व बुज़ुर्गी अ़त़ा फ़रमाई। (21)....."لَام" से मुराद लुत़्फ़े इलाही है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर शको शुबा से मुनज़्ज़ा लुत़्फ़ो मेहरबानी फ़रमाई। (22)....."مِيم" से मुराद मन्न (या'नी एह़सान) है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को असरार पर मुत्त़लअ़ फ़रमा कर आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर एह़सान फ़रमाया। (23)......"نُــون" से मुराद नूरानिय्यते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नूर की दुन्या में जल्वागरी होते ही ईरान का एक हज़ार साल से शो'ला ज़न आतश कदा बुझ गया। (24)...."هَا" से मुराद हैबत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ऐसा रो'ब व दबदबा अ़त़ा फ़रमाया जिस से बड़े बड़े त़ाक़तवर शह सुवार ज़ेर हो गए। (25)....."وَاؤ" से मुराद वक़ार है कि आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم कमाले वक़ार व बुर्दबारी से मौसूफ़ हैं। (26)....."يَاء" से मुराद यक़ीन है जिस के ज़रीए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को तमाम जहानों में इम्तियाज़ अ़त़ा फ़रमाया। आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अम्बिया व मुर्सलीन का "ख़ातम" (या'नी आख़िरी नबी) बनाया और फ़ज़्लो फ़ख़्र के साथ क़ुरआने ह़कीम में उन की ज़ाते वाला सिफ़ात पर येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई :

﴿۱﴾ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِؕ وَالَّذِیْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ (پ۲۶،الفتح:۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुह़म्मद अल्लाह के रसूल हैं और इन के साथ वाले काफ़िरों पर सख़्त हैं।

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : "जिस ने मेरी क़ब्रे अक़्दस की ज़ियारत की उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो गई।"

(سنن الدارقطنی، کتاب الحج ،باب المواقیت،الحدیث ۲۶۶۹،ج۲، ص ۳۵۱)

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلِہٖ وسلم का फ़रमाने हिदायत निशान है : "तीन मसाजिद के इलावा किसी और मस्जिद की त़रफ़ कजावे न बांधे जाएं : (1)....मस्जिदे ह़राम (2)....मेरी मस्जिद (या'नी मस्जिदे नबवी शरीफ़) और (3)....मस्जिदे अक़्सा।"(1) (صحیح مسلم، کتاب الحج،باب فضل المساجد الثلاثہ،الحدیث،۱۳۹۷،ص۹۰۹)

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تعالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم से मरवी है, ह़ुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "जिस ने मेरी वफ़ात के बा'द मेरी ज़ियारत की गोया उस ने मेरी ह़यात में मेरी ज़ियारत की, और जिस ने मेरी क़ब्रे अक़्दस की ज़ियारत न की उस ने मुझ से जफ़ा की।"

(سنن الدار قطنی، کتاب الحج،باب مواقیت الحج،الحدیث۲۶۶۸ص۲ص۳۵۱_فردوس الاخبارللدیلمی،باب المیم،الحدیث۵۷۰۸، ج۲ص۲۵۲)

जन्नत की क्यारी :

ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "जिस ने मेरे क़ब्र में जाने के बा'द मेरी ज़ियारत की गोया उस ने मेरी ह़यात में मेरी ज़ियारत की, और जो ह़रमैने त़य्यिबैन में से किसी ह़रम में मरा वोह बरोज़े क़ियामत अम्न वालों में उठाया जाएगा, और बेशक मेरी क़ब्र और मेरे मिम्बर की दरमियानी जगह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है।

(صحیح البخاری، کتاب فضل الصلاۃ فی مسجد مکۃ والمدینۃ،باب فضل مابین القبروالمنبر، الحدیث۱۱۹۵، ص۹۳_

سنن الدارقطنی، کتاب الحج ،باب المواقیت،الحدیث ۲۶۶۸، ج۲، ص ۳۵۱)

---

❶.....मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान علیہ رحمۃ المنّان फ़रमाते हैं : "या'नी सिवाए इन मस्जिदों के किसी और मस्जिद की त़रफ़ इस लिये सफ़र कर के जाना कि वहां नमाज़ का षवाब ज़ियादा है, ममनूअ़ है। जैसे बा'ज़ लोग जुमुआ़ पढ़ने बदायूं से देहली जाते थे ताकि वहां कि जामेअ़ मस्जिद में षवाब ज़ियादा मिले, येह ग़लत़ है। हर जगह की मस्जिदें षवाब में बराबर हैं। इस तौजीह पर ह़दीष बिल्कुल वाज़ेह़ है। वहाबी ह़ज़रात ने इस के मा'ना येह समझे कि सिवा उन तीन मस्जिदों के किसी और मस्जिद की त़रफ़ सफ़र ही ह़राम है लिहाज़ा उ़र्स, ज़ियारते क़ुबूर वग़ैरा के लिये सफ़र ह़राम। अगर येह मत़लब हो तो फिर तिजारत, इलाज, दोस्तों से मुलाक़ात, इल्मे दीन सीखने वग़ैरा तमाम कामों के लिये सफ़र ह़राम होंगे और रेल्वे का मह़कमा मअ़त्त़ल हो कर रह जाएगा और येह ह़दीष क़ुरआन के ख़िलाफ़ ही होगी और दीगर अह़ादीष के भी। रब्ब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "قُلْ سِیْرُوْا فِی الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا کَیْفَ کَانَ عَاقِبَةُ الْمُکَذِّبِیْنَ۝" **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम फ़रमा दो : ज़मीन में सैर करो फिर देखो कि झुटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुवा।" (साह़िबे) मिरक़ात ने इसी जगह और (अ़ल्लामा) शामी ने ज़ियारते क़ुबूर में फ़रमाया कि चूंकि इन तीनों मसाजिद के सिवा तमाम मस्जिदे बराबर है इस लिये और मस्जिदों की त़रफ़ सफ़र ममनूअ़ है और औलिया उल्लाह की क़ब्रे फ़ूयूज़ो बरकात में मुख़्तलिफ़ हैं। लिहाज़ा ज़ियारते क़ुबुर के लिये सफ़र जाइज़ (है)। क्या येह (बद मज़हब) जोहला अम्बियाए किराम की क़ुबूर की त़रफ़ सफ़र (से) भी मन्अ़ करेंगे?"

(مرأۃ المناجیح شرح مشکاۃ المصابیح، باب المساجد ومواضع الصّلوۃ، الفصل الاوّل، ج۱، ص۴۳۱_۴۳۲)

इमाम यह़्या बिन शरफ़ुद्दीन नववी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللہِ الْقَوِی "शर्ह़े मुस्लिम" में लिखते हैं हमारे अस्ह़ाबे शवाफ़ेअ़, इमामुल ह़रमैन और मोह़क़्क़िक़ीन के नज़्दीक येह (या'नी मज़ारात वग़ैरा के क़स्द से) सफ़र करना न ह़राम है, न मकरूह, अलबत्ता फ़ज़ीलते कामिला इन तीन मस्जिदों की त़रफ़ सामाने सफ़र बांधने में है।" (شرح المسلم للنووی،سفرالمرأۃ مع محرم الی حج وغیرہ، ج۱،ص۴۳۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : "जो मेरी वफ़ात के बा'द मेरी ज़ियारत करेगा और मुझ पर सलाम भेजेगा तो मैं जवाब में दस बार उस पर सलाम भेजूंगा और दस फ़िरिश्ते उस की ज़ियारत करेंगे और वोह सब उस पर सलाम भेजेंगे और जो अपने घर में मुझ पर सलाम भेजेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ में रूह़ लौटा देगा यहां तक कि मैं उस पर सलाम भेजूंगा।" (سنن ابی داؤد، کتاب المناسك، باب زيارة القبور، الحديث ٢٠٤١، ص ١٣٧٣، مختصر)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है, शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने मेरी वफ़ात के बा'द ह़ज किया और मेरी क़ब्रे मुबारक की ज़ियारत की गोया उस ने मेरी ह़यात में मेरी ज़ियारत की।" (سنن الدارقطنی، کتاب الحج، باب المواقيت، الحديث ٢٦٦٧، ج٢، ص ٣٥١)

आ'राबी को नवीदे बख़्शिश मिल गई :

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की तदफ़ीन के तीन दिन बा'द एक आ'राबी आया और उस ने अपने आप को क़ब्रे अक़्दस पर गिरा दिया और रौज़ए शरीफ़ा की ख़ाके पाक सर पर डालने लगा फिर अ़र्ज़ करने लगा : या रसूलल्लाह اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْکَ या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल ! आप पर सलामती हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़मत नाज़िल फ़रमाए।" जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया हम ने सुना और जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल हुवा उस में येह आयाते मुबारका भी है :

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ۝ (پ٥، النسآء: ٦٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ मह़बूब तुम्हारे हुज़ूर ह़ाज़िर हों और फिर **अल्लाह** से मुआ़फ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअ़त फ़रमाए तो ज़रूर **अल्लाह** को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं।*[1]

---

❶.....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : (या'नी अगर) मा'सिय्यत व नाफ़रमानी कर के (अपनी जानों पर ज़ुल्म करें)। इस (आयते मुबारका) से मा'लूम हुवा कि बारगाहे इलाही में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का वसीला और आप की शफ़ाअ़त कार बरआरी का ज़रीआ़ है।" (यहां पर आ'राबी का मज़्कूरा वाक़िआ़ ज़िक्र करने के बा'द सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :) इस से चन्द मसाइल मा'लूम हुवे। मस्अला : **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में अ़र्ज़े ह़ाजत के लिये उस के मक़्बूलों को वसीला बनाना ज़रीअ़ए कामयाबी है। **मस्अला :** क़ब्र पर ह़ाजत के लिये जाना भी "جَآءُوْكَ" में दाख़िल और ख़ैरुल कुरून का मा'मूल है। **मस्अला :** बा'दे वफ़ात मक़्बूलाने ह़क़ को या के साथ निदा करना जाइज़ है। **मस्अला :** मक़्बूलाने ह़क़ मदद फ़रमाते हैं और उन की दुआ़ से ह़ाजत रवाई होती है।"

मैं ने अपने आप पर ज़ुल्म किया है और अब मैं आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बरगाह में हाज़िर हुवा हूं ताकि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे रब्ब तआला से बख़्शवाएं।" क़ब्रे अक़्दस के अन्दर से निदा आई : "ऐ शख़्स ! तुझे बख़्श दिया गया ! ! !"

(تفسیرالقرطبی، سورۃ النساء،تحت الایۃ ٦٤،الجزء الخامس تحت ج٣،ص١٨٤)

हज़रते सय्यिदुना अबुल हसन सूफ़ी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर पर खड़े हो कर अ़र्ज़ की : "ऐ हमारे रब्ब عَزَّ وَجَلَّ हम ने तेरे ह़बीबे करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अत़हर की ज़ियारत की, अब तू हमें नामुराद न लौटा। आवाज़ आई : "ऐ बन्दे ! हम ने तुझे अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अक़्दस की ज़ियारत की इजाज़त ही तब दी जब तुझे पाक कर दिया। अब तू और तेरे साथ ज़ियारत करने वाले मग़फ़िरत याफ़्ता लौट जाए, बेशक अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तुझ से और उस से राज़ी हो गया जिस ने उस के प्यारे नबी मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अक़्दस की ज़ियारत की।"

हज़रते सय्यिदुना अबुल फ़ज़्ल رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है : "एक आ'राबी ने हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए मुत़ह्हरा पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तू ने अपने मह़बूब बन्दों के मज़ारात के पास ग़ुलाम आज़ाद करने का हुक्म दिया है, येह तेरे मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का मज़ार है और मैं तेरा बन्दा हूं। पस तू मुझे अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे मुबारक के क़ुर्ब की वजह से नारे दोज़ख़ से आजादी का परवाना अ़त़ा फ़रमा दे।" हातिफ़े ग़ैबी की आवाज़ आई : "तू ने सिर्फ़ अपने लिये जहन्नम से आज़ादी का सुवाल किया, तमाम मख़्लूक़ के लिये क्यूं नहीं किया ताकि मैं उन सब को अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे पाक के सदक़े नारे जहन्नम से आज़ाद कर देता ? ऐ आ'राबी ! जा, हम ने तुझे आज़ाद कर दिया ! ! !"

सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने रोटी अ़त़ा फ़रमाई :

हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन उ़ला علیہ رحمۃ ربِّ العلٰی फ़रमाते हैं : "मैं ने मदीना शरीफ़ में ह़ाज़िरी दी, मुझ पर भूक का ग़लबा था, हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا के मज़ारे पाक की ज़ियारत की और सलाम किया, फिर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मैं आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा हूं, भूक और फ़ाक़े से मेरी ह़ालत ऐसी हो चुकी है जिस को सिवाए अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के कोई नहीं जानता, मैं इस रात आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का मेहमान हूं।" फिर मुझ पर नींद ग़ालिब हुई। ख़्वाब में नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे रोटी इ़नायत फ़रमाई। मैं ने निस्फ़ रोटी खा ली, जब बेदार हुवा तो रोटी का आधा टुकड़ा मेरे हाथ में था। मैं ने जान लिया कि नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने आ़लीशान

हक़ है : “जिस ने ख़्वाब में मेरी ज़ियारत की उस ने हक़ीक़त में मेरी ही ज़ियारत की, कि शैतान मेरी सूरत में नहीं आ सकता ।” (صحیح البخاری، کتاب التعبیر، باب من رای النبی ﷺ فی المنام، الحدیث ٦٩٩٤، ص ٥٨٤)

फिर मुझे निदा की गई : “ऐ अब्दुल्लाह ! जो भी मेरी क़ब्र की ज़ियारत करेगा उस को बख़्श दिया जाएगा और कल बरोज़े क़ियामत मैं उस की शफ़ाअत करूंगा ।”

हज़रते सय्यिदुना अबुल फ़ज़्ल मुहम्मद बिन नईम علیہ رحمۃ اللہ الرحیم फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन या'ला किनानी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه कषरत से नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर की ज़ियारत किया करते थे, और आप को अकषर ख़्वाब में नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार भी हो जाता । एक दिन ज़ियारते क़ब्रे अत़्हर के क़स्द से निकले लेकिन पाउं में चोट लगने के सबब ज़ियारत से मह़रूम हो गए, ह़ज करने वाले जा रहे थे, आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने एक रुक़्आ़ लिख कर किसी ह़ाजी को दिया और फ़रमाया : “जब तुम मज़ारे अक़्दस पर पहुंचो तो मेरा येह रुक़्आ़ मज़ार शरीफ़ के क़रीब रख कर अ़र्ज़ करना : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم किनानी आप صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में सलाम अ़र्ज़ करते हुवे अ़र्ज़ गुज़ार है कि आप صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जानते हैं किनानी को आप صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से किस चीज़ ने रोक रखा है ?” चुनान्चे, जब उस शख़्स ने ऐसा किया तो हज़रते सय्यिदुना किनानी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को ख़्वाब में हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई । सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ किनानी ! तुम्हारा ख़त़ पहुंच गया है और हम ने तुम्हारा उ़ज़्र भी क़ुबूल कर लिया है ।”

हज़रते सय्यिदुना उ़तबी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : “मैं आप صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर के पास बैठा हुवा था कि एक आ'राबी को ऊंट पर आते देखा । ऊंट से उतर कर वोह नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हुवा और यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : السلام علیکم या सफ़्वतल्लाह صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم, السلام علیکم या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आप पर सलाम हो, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पसन्दीदा रसूल صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आप पर सलाम हो ।” **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई है :

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ۝ (پ٥، النسآء:٦٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ मह़बूब तुम्हारे हु़ज़ूर ह़ाज़िर हों और फिर* ***अल्लाह*** *से मुआ़फ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअ़त फ़रमाए तो ज़रूर* ***अल्लाह*** *को बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला मेहरबान पाएं ।*

और मैं ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया है, अब मैं आप صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हूं और अपने गुनाहों की मग़फ़िरत चाहता हूं, आप صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मेरी शफ़ाअ़त फ़रमाइयें ।” हज़रते सय्यिदुना उ़तबी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं :

"मुझ पर नींद का ग़लबा हुवा और मुझे आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार नसीब हुवा तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ उ़तबा ! इस आ'राबी को बिशारत दे दो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इसे बख़्श दिया।"

(المغنی لابن قدامة، کتاب الحج، باب الفدية و جزاء الصيد، مسئلة ٦٩٩، فصل يستحب زيارة قبر النبی صلى الله عليه وسلم، ج٥، ص٤٦٥)

मन्क़ूल है कि "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को रौज़ए रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर ह़ाज़िरी देते हुवे देखा कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपने हाथ उठाए ह़त्ता कि मैं समझा कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ नमाज़ शुरूअ़ करने वाले हैं, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में सलाम पेश किया फिर वापस लौट गए।" (شعب الايمان للبيهقی، باب فی المناسك، فضل الحج و العمرة، الحديث ٤١٦٤، ج٣، ص٤٩١)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने वह्ब رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं कि "जब इमामे मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में सलाम अ़र्ज़ करते तो क़ब्रे अत़हर के क़रीब हो जाते, अपना रुख़ क़ब्रे अत़हर की त़रफ़ कर के सलाम अ़र्ज़ करते और दुआ़ करते लेकिन क़ब्रे अक़्दस को हाथ से मस न करते।"

ज़ियारते रौज़ए अक़्दस करने के दस फ़वाइद :

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, बिइज़्ने परवर दगार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अक़्दस की ज़ियारत करने वाले के लिये दस करामात या'नी इ़ज़्ज़तें हैं : (1).....वोह बुलन्द मर्तबा होगा (2)......हुसूले मक़्सद में कामयाब होगा (3)......उस की ह़ाजत पूरी होगी (4)......उसे अ़तिय्यात ख़र्च करने की तौफ़ीक़ मिलेगी (5).....वोह हलाकत व बरबादी से अम्न में रहेगा (6).....उ़यूब व नक़ाइस से पाक होगा (7).....उस की मुश्किलात आसान होंगी (8)......ह़ादिषात से उस की ह़िफ़ाज़त होगी (9).....उसे आख़िरत में अच्छा बदला मिलेगा और (10).....मशरिक़ व मग़रिब के रब्ब عَزَّوَجَلَّ की रह़मत मिलेगी।"

मन्क़ूल है कि "एक शख़्स ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़्वाब में देख कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जो हुज्जाजे किराम वग़ैरा आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर सलाम अ़र्ज़ करते हैं क्या आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उन की बात समझते हैं ? तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हां ! उन की बात का जवाब भी देता हूं।"

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! इस मह़बूबे करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सिफ़ात पर ग़ौर करो कि वोह कितनी जमील हैं, वोह अपने क़रीब ह़ाज़िर होने वाले की कितनी इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई फ़रमाते हैं और उसे जवाबे सलाम से नवाज़ते हैं, अगर तू दूर से भी सलाम अ़र्ज़ करे तो वोह तेरे

सलाम का जवाब मरहमत फ़रमाएंगे, तू शफ़ाअ़त त़लब करेगा तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तेरी शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे, तू आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अक़्दस की ज़ियारत से मुन्क़तेअ़ है जब कि वोह हमेशा तेरी ह़ाज़िरी के मुश्ताक़ हैं, तू दुन्या में मश्ग़ूल होने के सबब और माल जम्अ़ करने की ख़ात़िर सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर होने के लिये तय्यार नहीं मगर वोह ख़्वाब में भी जल्वे दिखा देते हैं, अगर तू दरबारे रिसालत में ह़ाज़िर होने का अ़ज़्म करता है तो सुवारी पर सुवार हो जा, और अगर इन्साफ़ से काम ले तो तुझे सर के बल चलना चाहिये न कि क़दमों पर।

ह़रम की ज़मीं और क़दम रख के चलना   अरे सर का मौक़अ़ है ओ जाने वाले

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم दुन्या में तेरे गुनाहों की पर्दापोशी फ़रमाने वाले हैं, कल बरोज़े क़ियामत तेरी शफ़ाअ़त फ़रमाने वाले हैं, सलामती के घर या'नी जन्नत तक तेरे रहबर व राहनुमा हैं।

आज जो ऐ़ब किसी पर नहीं खुलने देते !   कब वोह चाहेंगे मेरी ह़श्र में रुस्वाई हो

(ज़ौक़े ना'त)

क्या तू ने कोई ऐसा मह़बूब भी देखा है जो अपने मुह़िब्बीन से ऐसा मुआ़मला करता हो या उन पर इतना मेहरबान हो ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हरगिज़ नहीं, तू ने न देखा होगा, और न ही देखेगा। इस के बा वुजूद तू कैसे ठहरा हुवा है ? या कैसे तुझे अफ़्सोस व ह़सरत नहीं होती ? मह़बूबे ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने तुझे किताब व सुन्नत से आगाह किया तो तू देखने वाला हो गया। तुझ से जन्नत का वा'दा फ़रमाया। वोह तुझे बिशारत देने वाले हैं। पस ऐ ह़ुज़ूर की मह़ब्बत के दा'वेदार ! तू अपने दा'वे में झूटा है। तुझे उन की सुन्नतों से कहां मुवाफ़क़त है ? तेरे अफ़्आ़ल उन के अफ़्आ़ल व अक़्वाल के ताबेअ़ कहां हैं ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुझ पर उन की पैरवी का नामो निशान तक नहीं, क्या तुझे मा'लूम नहीं कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सख़्त भूक में रात बसर करते थे ? सुब्ह़ तहज्जुद की नमाज़ अदा करते थे और रोज़ों के सबब ख़ाली पेट रहते थे ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर ख़ज़ाने पेश किये गए लेकिन आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने नज़र उठा कर भी न देखा। तमाम रात अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में जाग कर गुज़ार दी, दस्ते त़लब फैलाए और सर झुकाए रखा और अपनी ख़ल्वतों में अपनी उम्मत के लिये गुरौह दर गुरौह जन्नत में दाख़िले का सुवाल करते रहते।

तमन्नाए ज़ियारत की दुआ़ :

या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर और आप के आल व अस्ह़ाब رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن पर दुरूदो सलाम भेज। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें उन की ज़ियारत से बहरामन्द फ़रमा और आख़िरत में उन की शफ़ाअ़त से बहरामन्द फ़रमा और हमें

उन के क़ाफ़िले में इकठ्ठा करना और उन का रुख़े रोशन दिखाना और उन के हौज़े कौसर से सैराब करना और हमें उन लोगों में से करना जो उन की सोह़बत में रह कर कामयाब हुवे और उन के रास्ते से न हटाना और हमें दुन्या व आख़िरत की भलाइयां अ़त़ा फ़रमाना और अपनी रह़मत से अ़ज़ाबे जहन्नम से बचाना। ऐ मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ तू सब से बढ़ कर रह़म करने वाला है। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर और आप के आल व अस्ह़ाब رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن पर बे ह़द व बे शुमार दुरूदो सलाम भेज।

وَصَلَّى اللّٰه عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْن

"لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ"

पढ़ने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने एक दिन में सो मरतबा येह कलिमा "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ" पढ़ा तो येह उस के लिये दस ग़ुलाम आज़ाद करने के बराबर है और उस के लिये सो नेकियां लिखी जाएंगी, उस के सो गुनाह मिटा दिये जाएंगे और येह कलिमा उस दिन शाम तक शैत़ान से उस की ह़िफ़ाज़त करेगा और उस दिन उस से अ़मल में कोई न बढ़ सकेगा मगर जो इस से ज़ियादा मरतबा पढ़े।"

(صحيح بخاری، کتاب الدعوات، باب فضل التهليل، رقم ٦٤٠٣، ج ٤، ص ٢١٨)

बयान 53 : मनाक़िबे ख़ुलफ़ाए राशिदीन

﴾ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के फ़ज़ाइल ﴿

ह़म्दे बारी तआ़ला :

सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो मेहरबान, गुनाहों को मिटाने वाला, हि़ल्म वाला और बुराइयों पर पर्दा डालने वाला है, रात को दिन में दाखि़ल फ़रमाने वाला है। हर चीज़ उस के पास एक अन्दाज़े से है। उस के फ़ैसलों में उ़क़ूल व अज़्हान ह़ैरत ज़दा हैं। अहले बसीरत और निगाहे इ़ब्रत वाले उस की शाने अबदिय्यत (या'नी हमेशा रहने वाली सिफ़त) के मैदान में टिकटिकी बांधे देख रहे हैं। वोह अपनी बुलन्द इ़ज़्ज़त व इक़्तिदार से जाबिर बादशाहों पर ग़ालिब है। वोही वाहि़द व क़ह्हार है। उस ने अपनी ग़ालिब क़ुव्वत से शाहाने फ़ारस (या'नी इरान के बादशाहों) की शानो शौकत और क़ुव्वते इक़्तिदार को टुकड़े टुकड़े कर दिया, पस वोही अ़ज़मत वाला ज़बरदस्त है। उसी ने काइनात को वुजूद बख़्शा और ज़माने की तदबीर फ़रमाई। किसी भी मददगार और मुआ़विन का मोह़ताज नहीं। कोई उस की क़ुदरत में बराबरी नहीं कर सकता और उस के इ़लावा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं। उस का एह़सान हर जगह और जमीअ़ अत़राफ़े आ़लम को शामिल है या'नी हर एक पर एह़सान है। वोह अन्धेरी रात में सियाह च्यूंटी के क़दमों की आवाज़ को जानता है। ज़मीनो आस्मान और समन्दरों की गहराई में मौजूद कोई शै भी उस से पौशीदा नहीं। बन्दे के उलट पलट होते वक़्त भी उस के दिल की बात जानता और उस के इरादा व त़लब के वक़्त भी उस के दिल पर मुत्तलअ़ होता है। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

''سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۭ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ۝ (پ۱۳،الرعد:۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बराबर हैं जो तुम में बात आहिस्ता कहे और जो आवाज़ से और जो रात में छुपा है और जो दिन में राह चलता है।''

पाक है वोह मा'बूद जो अपने बन्दों में से जिसे चाहता है बरतरी व बर्गुज़ीदगी अ़ता फ़रमाता है। जिसे चाहता है अपने लिये ख़ास फ़रमाता है। जिसे चाहता है दूसरों से मुमताज़ कर देता है। जिसे चाहता है अपने क़ुर्ब व मईय्यत के लिये मुन्तख़ब फ़रमाता है और जिसे चाहता है पसन्द फ़रमाता है। उसी का इरशादे आ़ली है : ''وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُؕ(پ۲۰،القصص:۶۸)''

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारा रब्ब पैदा करता है जो चाहे और पसन्द फ़रमाता है।''[1] ...और... उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुजतबा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपना मुन्तख़ब

1.....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : **शाने नुज़ूल :** येह आयत मुशरिकीन के जवाब में नाज़िल हुई। जिन्हों ने कहा था कि ''**अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नबुव्वत के लिये क्यूं बर्गुज़ीदा किया। येह क़ुरआन मक्का व त़ाइफ़ के किसी बड़े शख़्स पर क्यूं न उतारा। इस कलाम का क़ाइल वलीद बिन मुग़ीरा था और बड़े आदमी से वोह अपने आप को और उ़र्वा बिन मसऊ़द षक़फ़ी को मुराद लेता था। इस के जवाब में येह आयते करीमा नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि रसूलों का भेजना उन लोगों के इख़्तियार से नहीं है। **अल्लाह** तआ़ला की मरज़ी है, अपनी हि़क्मत वोही जानता है, उन्हें उस की मरज़ी में दख़्ल की क्या मजाल।

नबी और मुख़्तार रसूल बना कर बरतरी व बुज़ुर्गी अ़ता फ़रमाई....., ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ को ख़ास फ़रमा कर तस्दीक़ और वक़ार व हैबत की खुसूसिय्यत से नवाज़ा...., ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ को दुरुस्त राए के लिये दूसरों से मुमताज़ फ़रमाया पस शहरियों और देहातियों के लिये आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ का ज़िक्र बाइ़षे ह़लावत और पाकीज़गी है...., ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ को कुरआने पाक जम्अ़ करने के वासिते़ अपने कुर्ब व मइय्यत के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया पस उन्हों ने कुरआने पाक को छे या सात नुस्ख़ों में जम्अ़ करवा दिया...., और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ को लश्करों के मुन्तशिर करने, अ़जाइबात को ज़ाहिर करने और ज़ुलफ़िक़ार (या'नी तल्वारे ह़ैदरी) के अ़द्लो इन्साफ़ को आ़म करने के लिये पसन्द फ़रमाया। येही वोह हस्तियां हैं जिन के ह़क़ में अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने अपने ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने अक़्दस पर येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई :

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ ﴿۲﴾ (پ۲۶،الفتح:۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुह़म्मद अल्लाह के रसूल हैं और इन के साथ वाले काफ़िरों पर सख़्त हैं।

चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ ग़ार में ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रफ़ीक़ हैं....., ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ असरारे इलाही पर आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के वज़ीर व अमीन हैं...., ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ दुश्मन के हाथों मक़्तूल और अपने घर में शहीद होने वाले हैं...., और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہ تعالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा के बेटे, आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के इ़ल्म के वारिष और दुश्मनों पर पलट पलट कर ह़म्ला करने वाले शहसुवार हैं...., येही वोह मुक़द्दस हस्तियां हैं जो सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के खुलफ़ा, वुज़रा और नेक सीरत पेशवायाने उम्मत हैं...., इन्हों ने ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से अपने अ़ह्द को पूरा किया....., और इन्हीं की सआ़दत मन्दियों के सबब दीनी अक़्दार बामे उ़रूज पर पहुंचीं...., और आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो चाहा और पसन्द फ़रमाया, इन्हों ने इस पर आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुकम्मल पैरवी और बैअ़त की।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ से मरवी है, ह़ुज़ूर सरापा नूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर, फ़ैज़ गन्जूर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने मेरे किसी सह़ाबी को खुश किया उस ने मुझे खुश किया और जिस ने मुझे खुश किया उस ने अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ को खुश किया और जिस ने अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ को खुश किया तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के ज़िम्मेए करम पर है कि वोह उसे खुश कर के जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे।"

ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : "इन चार की मह़ब्बत सिवाए मोमिन के किसी के दिल में जम्अ़ न होगी : (1)....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ (2)....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ (3)....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ और (4).....ह़ज़रते अ़ली बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ।" (حلیۃ الاولیاء،عطاء بن میسرۃ، الحدیث ۶۹۳۶، ج۵، ص ۲۳۰)

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अज़मत निशान है : “मैं क़ियामत के दिन इस हाल में आऊंगा कि मेरी दाईं जानिब अबू बक्र सिद्दीक़, बाईं जानिब उमरे फ़ारूक़, पीछे उषमाने ग़नी और मेरे सामने अ़ली बिन अबी ता़लिब (رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنۡهُم) होंगे और अ़ली के पास लिवाउल ह़म्द होगा, इस पर दो कपड़े के टुकड़े होंगे, एक सन्दस का और दूसरा इस्तिब्रक़ का।” एक आ'राबी ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : “मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! क्या ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली लिवाउल ह़म्द को उठा सकेंगे ?” इरशाद फ़रमाया : “क्यूं नहीं उठा सकेंगे कि इन को बहुत सी ख़ूबियां अ़ता की गई हैं : मेरे सब्र जैसा सब्र, ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام जैसा हुस्न और ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام जैसी कुव्वत अ़ता हुई। लिवाउल ह़म्द अ़ली बिन अबी ता़लिब के हाथ में होगा और उस दिन तमाम मख़्लूक़ मेरे लिवा (या'नी झन्डे) के नीचे होगी।”

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबी ता़लिब كَرَّمَ اللّٰه تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है, ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अबू बक्र (رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنۡهُ) पर रह़्म फ़रमाए, इन्हों ने अपनी बेटी मेरी ज़ौजिय्यत में दी, मुझे अपनी ऊंटनी पर सुवार कर के मदीनए पाक ले गए और बिलाल को अपने माल से आज़ाद किया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उ़मर رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنۡهُ पर रह़्म फ़रमाए, वोह ह़क़ बोलते हैं अगर्चे कड़वा हो। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उषमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنۡهُ पर रह़्म फ़रमाए, मलाइका इन से ह़या करते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अ़ली رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنۡهُ पर रह़्म फ़रमाए, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अ़ली رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنۡهُ जहां चले ह़क़ को इस के साथ चला दे।”

(جامع الترمذی،ابواب المناقب،باب مناقب علی......الخ الحدیث ٣٧١٤،ص٢٠٣٤)

मरवी है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنۡهُ से इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू बक्र ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे नूर के जोहर से पैदा फ़रमाया, पस इस जोहर पर नज़रे करम फ़रमाई और मुझे अपनी बारगाह में खड़ा किया तो मुझे ह़या से पसीना आ गया और पसीने के चार क़त़रे गिर पड़े। ऐ अबू बक्र ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पहले क़त़रे से तुम्हें पैदा फ़रमाया, दूसरे से उ़मर को, तीसरे से उषमान को और चौथे से अ़ली को पैदा फ़रमाया, ऐ अबू बक्र ! तेरा, उ़मर, उषमान और अ़ली का नूर मेरे नूर से है।”

हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया व मुरसलीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : “बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरे सह़ाबए किराम को तमाम मख़्लूक़ पर फ़ज़ीलत दी सिवाए अम्बिया व मुरसलीन के, फिर मेरे सह़ाबा में से चार को फ़ज़ीलत दी : अबू बक्र, उ़मर, उषमान और अ़ली (رِضْوَانُ اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِنّ اَجْمَعِيْن)”

(المجروحین لابن حبان،الرقم٥٦٨عبد اللّٰه بن صالح کاتب اللیث المصری،ج١،ص٥٣٥)

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰه تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ निशान है :

"बेशक अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने तुम पर अबू बक्र, उ़मर, उ़षमान और अ़ली की महब्बत को फ़र्ज़ कर दिया है, जैसे नमाज़, रोज़ा, ज़कात और ह़ज को तुम पर फ़र्ज़ किया है तो जो इन में से किसी एक से भी बुग़्ज़ रखे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस की न नमाज़ क़बूल फ़रमाएगा, न ज़कात, न रोज़ा और न ही ह़ज। और उसे क़ब्र से जहन्नम में फेंक दिया जाएगा।" (فردوس الاخبارللدیلمی،باب الالف،الحدیث۶۱۹،ج ۱،ص۱۰۱)

ख़ुलफ़ाए राशिदीन عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की अ़ज़मत व शान :

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : "मेरे ह़ौज़ के चार कोने हैं : पहले कोने पर अबू बक्र, दूसरे पर उ़मर, तीसरे पर उ़षमान और चौथे पर अ़ली होंगे। जो अबू बक्र से महब्बत करे और उ़मर से बुग़्ज़ रखे उस को अबू बक्र सैराब नहीं करेंगे और जो उ़मर से महब्बत रखे और उ़षमान से बुग़्ज़ रखे उस को उ़मर सैराब नहीं करेंगे और जो उ़षमान से महब्बत करे और अ़ली से बुग़्ज़ रखे उस को उ़षमान ह़ौज़ से नहीं पिलाएंगे और जो अ़ली से महब्बत करे मगर उ़षमान से बुग़्ज़ रखे उस को अ़ली सैराब नहीं करेंगे तो जिस ने अबू बक्र से महब्बत की उस ने दीन को क़ाइम किया और जिस ने उ़मर से महब्बत की वोह ईमान वालों में लिखा जाएगा, और जिस ने उ़षमान से महब्बत की वोह नूरे मुबीन से मुनव्वर हुवा और जिस ने अ़ली से महब्बत की तो उस ने भलाई का काम किया और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ भलाई करने वालों को पसन्द फ़रमाता है। और जिस ने इन तमाम के मुतअ़ल्लिक़ ह़ुस्ने ज़न रखा वोह मोमिन है और जो बद गुमानी करे वोह मुनाफ़िक़ है।"

(الثقات لابن حبان، کتاب من روی عن اتباع التابعین ،الرقم۱۰۳۳۱،محمد بن مقاتل العبادانی،ج۵، ص۴۴۹۔
العلل المتناهية لابن الجوزی، حدیث فی فضل الاربعة،الحدیث۴۰۸،ج ۱،ص۲۵۴)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "हम हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इजतिमाए पाक में बैठे हुवे थे तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ ह़ाज़िर हुवे, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिक़्बाल करते हुवे फ़रमाया : "अपने माल के साथ ग़म गुसारी करने वाले और दूसरों को ख़ुद पर तरजीह़ देने वाले को ख़ुश आमदीद !" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवे तो इरशाद फ़रमाया : "ह़क़ व बात़िल के दरमियान फ़र्क़ करने वाले को मरह़बा ! उस शख़्स को ख़ुश आमदीद जिस के ज़रीए अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने दीन को कामिल किया और मुसलमानों को इ़ज़्ज़त बख़्शी।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ ह़ाज़िर हुवे तो इरशाद फ़रमाया : "मेरे दामाद और मेरी दो बेटियों के शोहर को ख़ुश आमदीद ! जिस में मेरा नूर जम्अ़ हुवा, जो अपनी ज़िन्दगी में सआ़दत मन्द और मौत में शहीद है, उस के क़ातिल के लिये नारे जहन्नम की बरबादी है।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ह़ाज़िर हुवे तो इरशाद फ़रमाया : "मेरे चचाज़ाद भाई को ख़ुश आमदीद ! मुझे और इसे एक नूर से पैदा किया गया है।"

(فردوس الاخبارللدیلمی،باب الخاء،الحدیث۲۷۷۶،ج۱،ص۳۷٤مختصرًا)

(फिर फ़रमाया :) ऐ गुरौहे मुस्लिमीन ! इन तमाम की महब्बत मोमिन के दिल में ही इकट्ठी हो सकती है और मुनाफ़िक़ के दिल में यक्जा नहीं हो सकती। जो इन को महबूब बना ले अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस को महबूब बना लेता है और जो इन से बुग़्ज़ रखे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उसे ना पसन्द फ़रमाता है।"

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ से मरवी है, एक दिन हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अकबर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं जन्नत में दाख़िल हुवा। इसी दौरान जब कि मैं उस के बाग़ों, नहरों और दरख़्तों के गिर्द घूम रहा था कि मेरा हाथ एक फल से मस हुवा, मैं ने उसे पकड़ा तो वोह मेरे हाथ में चार टुकड़ों में बट गया, हर टुकड़े से एक हूर निकली, अगर वोह अपना एक नाख़ुन ज़ाहिर कर दे तो तमाम ज़मीनो आस्मान वालों को फ़ितने में मुब्तला कर दे, और अगर अपनी एक हथेली ज़ाहिर कर दे तो इस की रोशनी सूरज और चांद की रोशनी पर ग़ालिब आ जाए, अगर वोह तबस्सुम करे तो अपनी ख़ुश्बू से ज़मीनो आस्मान की दरमियानी जगह को कस्तूरी से भर दे, मैं ने पहली से पूछा : "तुम किस के लिये हो ?" बोली : "हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ के लिये।" मैं ने उसे हुक्म दिया : "तुम अपने शोहर के महल की तरफ़ जाओ।" तो वोह चली गई। दूसरी से पूछा उस ने कहा : "मैं हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ के लिये हूं।" उसे भी मैं ने हुक्म दिया कि तुम अपने ख़ावन्द के महल में चली जाओ।" तो वोह भी चली गई। तीसरी से भी पूछा : "उस ने जवाब दिया : "ख़ून से लत पत ज़ुल्मन शहीद किये गए, हज़रते सय्यिदुना उषमान बिन अफ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ के लिये।" उसे भी मैं ने अपने ख़ावन्द के महल की तरफ़ जाने का हुक्म दिया वोह भी चली गई। चौथी से सुवाल किया तो वोह कुछ देर ख़ामोश रही फिर उस ने कहा : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने मुझे हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہا के हुस्न पर पैदा किया और मेरा नाम उन के नाम पर रखा और हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہ تعالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم के उन के साथ निकाह होने से दो हज़ार साल क़ब्ल अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہ تعالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم से मेरा निकाह कर दिया था।"

येह शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइषे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم के खुलफ़ाए राशिदीन, अन्सार और सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْھُم हैं, इन्हें बरोज़े क़ियामत इज़्ज़त वाले घर या'नी जन्नत की तरफ़ एहतिराम व इकराम के साथ ले जाया जाएगा।

मन्क़ूल है, हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ और हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, बिइज़्ने परवर दगार صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم के किसी काम में मश्ग़ूल थे कि नमाज़े अस्र का वक़्त हो गया। हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ को आगे बढ़ कर इमामत कराने का कहा तो आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ ने अर्ज़ की : "आप इस के मुझ से ज़ियादा हक़दार हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को मुक़द्दम फ़रमाया और आप की ता'रीफ़ की।"

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "मैं आप से आगे नहीं बढूंगा क्यूंकि मैं ने सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इरशाद फ़रमाते सुना : "उ़षमान कितना अच्छा इन्सान है, मेरा दामाद है और मेरी दो बेटियों का शोहर है, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने उस में मेरा नूर इकठ्ठा कर दिया है।"

हज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "मैं आप से आगे नहीं बढूंगा क्यूंकि मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने उ़मर के ज़रीए इस्लाम को मुकम्मल फ़रमाया।"

(الریاض النضرۃ فی مناقب العشرۃ،مناقب امیر المؤمنین عمر،فصل تاسع،جزء ثانی،ج ۱، ص ۳۱۳ "اکمل"بدلہ"اعز")

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "मैं आप से आगे नहीं बढूंगा क्यूंकि मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि "उ़षमान से फ़िरिश्ते भी ह़या करते हैं।" (صحیح مسلم،کتاب فضائل الصحابۃ،باب من فضائل عثمان بن عفان،الحدیث ۲۴۰۱، ص ۱۱۰۰)

हज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "मैं आप से आगे नहीं बढूंगा क्यूंकि मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि " अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने उ़मर के ज़रीए दीन की तक्मील फ़रमाई और मुसलमानों को इ़ज़्ज़त बख़्शी।"

(الریاض النضرۃ فی مناقب العشرۃ،مناقب امیر المؤمنین عمر،فصل تاسع،جزء ثانی،ج ۱، ص ۳۱۳ "اکمل"بدلہ"اعز")

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "मैं आप से आगे नहीं बढूंगा क्यूंकि मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि "उ़षमान क़ुरआने पाक को जम्अ़ करेगा, और येह रह़मान عَزَّ وَجَلَّ का मह़बूब है।"

(المستدرک،کتاب التفسیر،باب جمع القرآن لم یکن مرۃ واحدۃ،ج۲ص۲۰۳،مفہوماً)

हज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "मैं आप से आगे नहीं बढूंगा क्यूंकि मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि "उ़मर कितना अच्छा इन्सान है, बेवाओं और यतीमों की ख़बर गीरी करता है, उन के लिये उस वक़्त खाना लाता है जब लोग आ़लमे ख़्वाब में होते हैं।" (جامع الترمذی،ابواب المناقب،باب مناقب معاذ بن جبل،الحدیث۳۷۹۵،ص ۲۰۴۲،مختصراً)

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "मैं आप से आगे नहीं बढूंगा क्यूंकि मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने जैशुल उ़सरह (या'नी ग़ज़वए तबूक का लश्कर) तय्यार करने वाले उ़षमान की मग़्फ़िरत फ़रमा दी है।"

(الکامل فی ضعفاء الرجال لابن عدی،الرقم۱۶۹اسحاق بن ابراھیم ،ج ۱،ص۵۵۳،بتغیر)

हज़रते सय्यिदुना उ़षमान رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "मैं आप से आगे नहीं बढूंगा क्यूंकि मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह दुआ़ फ़रमाते सुना कि "या अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उ़मर बिन ख़त्ताब के ज़रीए इस्लाम को इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमा।" और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

ने आप का नाम फ़ारूक़ रखा । और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के ज़रीए़ ह़क़ व बाति़ल के दरमियान फ़र्क़ किया ।''

(سنن ابن ماجة، كتاب السنة، باب فضل عمررضی اللہ عنہ،الحدیث۱۰۵،ص۲۴۸۳ ـ الطبقات الكبرىٰ لابن سعد، الرقم ۵۶،اسلام عمر،ج۳،ص۲۰۵)

इस वाक़िए़ की ख़बर जब हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को हुई तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दोनों के लिये दुआ़ फ़रमाई और एक दूसरे से हुस्ने अदब के साथ पेश आने पर इन की ता'रीफ़ फ़रमाई ।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُ और मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हुजरए अक़्दस के पास ह़ाज़िर हुवे । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُ से अ़र्ज़ की : ''आप आगे बढ़ कर दरवाज़े पर दस्तक दें और इसे खोलने की देरीना इल्तिजा करें ।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ऐ अ़ली ! आप आगे बढ़िये ।''

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : मैं ऐसे शख़्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस के मुतअ़ल्लिक़ मैं ने आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि ''मेरे बा'द किसी ऐसे शख़्स पर सूरज तुलूअ़ व ग़ुरूब न होगा जो अबू बक्र सिद्दीक़ से अफ़्ज़ल हो ।''

(الثقات لابن حبان، كتاب اتباع التابعين ،الرقم۲۶۸۹عبد الملك بن عبدالعزيز،ج۴،ص۵۷)

(حليه الاولياء،عطاء بن ابی رباح ، الحديث ۴۳۱۵،ج۳،ص۳۷۳)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : मैं ऐसे शख़्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस के मुतअ़ल्लिक़ हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''मैं ने सब से बेहतरीन ख़ातून (या'नी ह़ज़रते फ़ाति़मा رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْهَا) सब से बेहतरीन मर्द (या'नी ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُ) को अ़ता की ।''

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : ''मैं ऐसे शख़्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस के ह़क़ में हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''जो ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के सीनए मुबारका को देखना चाहे वोह अबू बक्र सिद्दीक़ का सीना देख ले ।''

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ''मैं ऐसे शख़्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस की शान में हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''जो ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और उन का हुस्न, ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और उन की नमाज़, ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और उन का ज़ोह्द और मुझे और मेरी सूरत देखना चाहे वोह अ़ली को देख ले ।''

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : "मैं ऐसे शख़्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस के हक़ में नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब क़ियामत की घड़ियों में ह़सरत व नदामत के दिन तमाम मख़्लूक़ जम्अ़ होगी तो हक़ तआ़ला की त़रफ़ से एक मुनादी निदा करेगा : "ऐ अबू बक्र ! तुम और तुम से महब्बत करने वाले जन्नत में दाख़िल हो जाएं।"

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : "मैं ऐसे शख़्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस की त़रफ़ ग़ज़्वए हुनैन और ग़ज़्वए ख़ैबर के दिन नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने खजूर और दूध हदिय्यतन भेजा और इरशाद फ़रमाया : "येह फ़त्ह़ व नुसरत के त़ालिब की त़रफ़ से अ़ली बिन अबी त़ालिब की त़रफ़ हदिय्या है।"

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : "मैं ऐसे शख़्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस के हक़ में सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : " ऐ अबू बक्र ! तुम मेरी आंख (की ठन्डक) हो।"

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : "मैं ऐसे शख़्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस के हक़ में ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अ़ली जन्नत की सुवारियों में से किसी सुवारी पर आएंगे, और एक मुनादी निदा करेगा : "ऐ मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) दुन्या में आप का ह़सीन वालिद और ख़ूब सूरत भाई था, ह़सीन वालिद हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह हैं और ख़ूब सूरत भाई हज़रते अ़ली हैं।"

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : मैं ऐसे शख़्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस के हक़ में अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब क़ियामत का दिन होगा तो दारोग़ए जन्नत हज़रते रिज़्वान जन्नत और जहन्नम की चाबियां लाएगा और कहेगा : "ऐ अबू बक्र ! अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ आप को सलाम कहता है और फ़रमाता है कि येह जन्नत व दोज़ख़ की चाबियां हैं जिसे चाहो जन्नत में भेज दो और जिसे चाहो जहन्नम में भेज दो।"

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : "मैं ऐसे शख़्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस के हक़ में हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हज़रते जिब्राईल मेरे पास ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह ! अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को सलाम कहता है और फ़रमाता है कि मैं आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से और अ़ली से महब्बत करता हूं तो मैं ने सजदए शुक्र अदा किया, (फिर फ़रमाया :) मैं फ़ातिमा से महब्बत करता हूं तो मैं ने फिर सजदए शुक्र अदा किया, (फिर फ़रमाया :) मैं ह़सन व हुसैन से महब्बत करता हूं तो मैं ने फिर सजदए शुक्र अदा किया।"

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : "मैं ऐसे शख़्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस के ह़क़ में सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अगर अबू बक्र का ईमान अहले ज़मीन के ईमान के साथ तोला जाए तो अबू बक्र का ईमान उन सब पर भारी हो जाए।"

(شعب الايمان للبيهقى،باب القول فى زيادة الايمان......الخ،الحديث ٣٦،ج ١،ص ٦٩،راوى عمر رضى الله تعالى عنه)

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : मैं ऐसे शख़्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस के ह़क़ में सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अ़ली क़ियामत के दिन अपनी अवलाद और ज़ौजा के साथ ऊंटों की सुवारियों पर सुवार हो कर आएंगे, लोग पूछेंगे : "येह कौन से नबी हैं ?" तो एक मुनादी निदा करेगा : "**येह अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **का दोस्त अ़ली बिन अबी त़ालिब है !!!**"

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : मैं ऐसे शख़्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस के ह़क़ में नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "कल बरोज़े क़ियामत अहले मह़शर जन्नत के आठों दरवाज़ों से येह आवाज़ सुनेंगे : "ऐ सिद्दीक़े अक्बर ! जिस दरवाज़े से चाहो (जन्नत में) दाख़िल हो जाओ।"

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "मैं ऐसे शख़्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस के ह़क़ में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "(जन्नत में) मेरे और ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मह़ल के दरमियान अ़ली बिन अबी त़ालिब का मह़ल है।"

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : "मैं ऐसे शख़्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस के ह़क़ में हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "आस्मान वाले मुक़र्रबीने बारगाहे इलाही, नूरी फ़िरिश्ते और मलाए आ'ला रोज़ाना अबू बक्र सिद्दीक़ का दीदार करते हैं।"

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : मैं ऐसे शख़्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस की शान में और जिस के घर वालों की शान में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿٣﴾ وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ۝ (پ٢٩،الدهر:٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और खाना खिलाते हैं उस की मह़ब्बत पर मिस्कीन और यतीम और असीर को।* (1)

❶...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते है : "या'नी ऐसी ह़ालत में जब कि ख़ुद इन्हें खाने की ह़ाजत व ख़्वाहिश हो और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस के येह मा'ना लिये हैं कि **अल्लाह** तआ़ला की मह़ब्बत में खिलाते हैं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और ह़ज़रते फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और उन की कनीज़ फ़िज़्ज़ा के ह़क़ में नाज़िल हुई। ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बीमार हुवे। उन ह़ज़रात ने इन की सिह़्ह़त पर तीन रोज़ों की नज़्र मानी। **अल्लाह** तआ़ला ने सिह़्ह़त दी। नज़्र की वफ़ा का वक़्त आया। सब साह़िबों ने रोज़े रखे। ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक यहूदी से तीन साअ़ (साअ़ एक पैमाना है) जव लाए। ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत ने एक एक साअ़ तीनों दिन पकाया लेकिन जब इफ़्त़ार का वक़्त आया और रोटियां सामने रखीं तो एक रोज़ मिस्कीन, एक रोज़ यतीम, एक रोज़ असीर (क़ैदी) आया और तीनों रोज़ येह सब रोटियां उन लोगों को दे दी गईं और सिर्फ़ पानी से इफ़्त़ार कर के अगला रोज़ा रख लिया गया।"

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने इरशाद फ़रमाया : मैं ऐसे शख़्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस की शान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ यूं बयान फ़रमाता है :

﴿۴﴾ وَالَّذِیْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ0 (پ۲۴،الزمر:۳۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो येह सच ले कर तशरीफ़ लाए और वोह जिन्हों ने इन की तस्दीक़ की येही डर वाले हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से हज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को सलाम कहता है और फ़रमाता है कि सातों आस्मानों के मलाइका इस वक़्त अबू बक्र सिद्दीक़ और अ़लिय्युल मुर्तज़ा की त़रफ़ देख रहे हैं और इन के माबैन होने वाले हुस्ने जवाब और हुस्ने अदब को समाअ़त कर रहे हैं, आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उन के पास तशरीफ़ ले जाइये और तीसरे फ़र्द हो जाइये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व रह़मत ने उन्हें अपनी लपेट में ले रखा है, और उन के साथ हुस्ने अदब और हुस्ने इस्लाम व ईमान को ख़ास कर दिया है। चुनान्चे, हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उन दोनों के पास तशरीफ़ ले गए उन को वैसे ही पाया जैसा कि हज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बयान किया था फिर आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दोनों के चेहरों को बोसए रह़मत से नवाज़ा और इरशाद फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर तमाम समन्दर सियाही हो जाए, तमाम दरख़्त क़लम बन जाएं, आस्मान व ज़मीन वाले किताब बन जाएं तो भी तुम्हारे फ़ज़्ल व मर्तबा और तुम्हारे अज्रो षवाब को लिखने से आ़जिज़ आ जाएंगे।"

इन्सानी चेहरे वाला जानवर :

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی फ़रमाते हैं : "मैं ने मक्कए मुकर्रमा में एक नसरानी को त़वाफ़ करते हुवे देखा जो अस्क़ुफ़ के नाम से मश्हूर था, मैं ने पूछा : "किस चीज़ ने तुम्हें अपने आबाओ अजदाद के दीन से मुन्ह़रिफ़ किया ?" उस ने कहा : "मैं ने उस से बेहतर चीज़ इख़्तियार की।" मैं ने पूछा : "येह सब कैसे हुवा ?" तो उस ने अपना वाक़िआ़ बयान किया : "मैं समन्दर में एक कश्ती पर सुवार था, थोड़ी दूर पहुंचने के बा'द कश्ती टूट गई। मैं उस के एक तख़्ते पर लटक गया, समन्दर की मौजें मुझे धकेलती रहीं यहां तक कि किसी जज़ीरे में डाल दिया, उस में कषीर दरख़्त थे जिन के फल शहद से ज़ियादा मीठे और मख्खन से ज़ियादा नर्म थे। एक साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ नहर थी। मैं ने इस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया और कहा : अब मैं येह फल खाऊंगा और नहर से पानी पियूंगा जब तक कि कोई रास्ता नहीं मिलता। जब रात हुई तो मैं जानवरों के ख़ौफ़ से दरख़्त पर चढ़ कर किसी टहनी पर सो गया, रात का कुछ हिस्सा गुज़रने के बा'द मैं ने सत़्हे आब पर एक जानवर को ब ज़बाने फ़सीह़ तस्बीह़ करते हुवे देखा, जिस का मफ़्हूम कुछ यूं है।

“अल्लाह अ़ज़ीज़ो जब्बार के सिवा कोई मा’बूद नहीं, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल और चुने हुवे नबी हैं। अबू बक्र उन के ग़ार के रफ़ीक़ हैं, उ़मरे फ़ारूक़ शहरों को फ़त्ह़ करने वाले, उ़षमान घर में शहीद और अ़ली कुफ़्फ़ार पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तल्वार हैं, इन से बुग़्ज़ रखने वालों पर अ़ज़ीज़ो जब्बार की ला’नत हो, उस का ठिकाना जहन्नम है और वोह बहुत ही बुरा ठिकाना है।”

वोह जानवर येही कलिमात बार बार दोहराता रहा, तुलूए़ फ़ज्र के बा’द उस ने फिर चन्द कलिमात कहे, जिन का मफ़्हूम कुछ इस त़रह़ है :

“अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा’बूद नहीं जिस का वा’दा व वई़द सच्चे हैं और मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं, हिदायत देने वाले और राहनुमाई फ़रमाने वाले। अबू बक्र को सह़ीह़ राए की तौफ़ीक़ दी गई, उ़मर बिन ख़त्ताब कुफ़्फ़ार पर आहिनी जंगले की त़रह़ (सख़्त) हैं, उ़षमान फ़ज़ीलत वाले शहीद हैं और अ़ली बिन अबी त़ालिब ज़बरदस्त कुव्वत वाले हैं। इन से बुग़्ज़ रखने वालों पर रब्बे मजीद की ला’नत हो।”

जब वोह जानवर ख़ुश्की पर पहुंचा तो मैं ने देखा कि उस का सर शुतर मुर्ग़ जैसा, चेहरा इन्सान जैसा, टांगें ऊंट की टांगों की त़रह़ और दुम मछली की दुम जैसी है, मैं हलाकत के ख़ौफ़ से भागने ही वाला था कि उस ने मुझे देख कर कहा : “रुक जाओ, वरना हलाक हो जाओगे।” मेरे रुकने के बा’द उस ने मुझ से मेरे दीन के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो मैं ने जवाब दिया : “नसरानिय्यत।” उस ने कहा : “ऐ नुक़्सान उठाने वाले ! बरबादी है तेरे लिये, दीने इस्लाम इख़्तियार कर ले कि तू मोअमिनीन जिन्नात की क़ौम में पहुंच चुका है, इन से सिवाए मुसलमान के कोई नजात नहीं पा सकता।” मैं ने पूछा : “इस्लाम कैसे लाऊं ?” उस ने बताया : “इस बात की गवाही दे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा’बूद नहीं और मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं।”

चुनान्चे, मैं कलिमए शहादत पढ़ कर मुसलमान हो गया फिर उस ने कहा : “तेरा इस्लाम कामिल तब होगा जब तू ख़ुलफ़ाए अरबआ़ से राज़ी रहेगा।” मैं ने कहा : “तुम्हें येह बात कैसे मा’लूम हुई ?” उस ने जवाब दिया : “हमारी एक क़ौम नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़फ़िल में ह़ाज़िर हुई, उन्हों ने आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को येह इरशाद फ़रमाते सुना : जब क़ियामत का दिन होगा तो जन्नत लाई जाएगी, वोह अ़र्ज़ करेगी : “या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू ने मुझ से वा’दा किया था कि तू मेरे कोनों को मज़बूत़ करेगा।” अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : “मैं ने तेरे कोनों को ख़ुलफ़ाए अरबआ़ से मज़बूत़ कर दिया है और तुझे ह़सन व ह़ुसैन से ज़ीनत बख़्शी है।”

फिर उस जानवर ने मुझ से पूछा : "तुम यहां ठहरना चाहते हो या अपने अहलो इयाल की तरफ़ लौटना चाहते हो ?" मैं ने कहा : "मैं अपने घर वालों की तरफ़ लौटना चाहता हूं।" उस ने कहा : "तो फिर यहां खड़े रहो, एक कश्ती का यहां से गुज़र होगा।" मैं वहां खड़ा रहा। वोह जानवर समन्दर में उतर कर मेरी आंखों से ओझल हो गया फिर एक कश्ती गुज़री जिस में चन्द अफ़राद सुवार थे। मेरे इशारा करने पर उन्हों ने मुझे भी सुवार कर लिया। उस में बारह नसरानी थे। जब मैं ने उन को अपना वाक़िआ बताया तो सब के सब दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो गए। फिर मुझे यक़ीन हो गया कि इन लोगों का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां ज़रूर कोई राज़ है कि इन की बरकत से मुझे इस्लाम की दौलत मिली और बुलन्द मक़ाम नसीब हुवा।"

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْن

नमाज़ी और सायए रहमत

*हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि "हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तीन अश्ख़ास को अपने सायए रहमत में जगह अता फ़रमाएगा जिस दिन इस के इलावा कोई साया न होगा (1) अमानत दार ताजिर (2) आदिल हुकमरान और (3) दिन में सूरज की रिआयत करने वाला।" (या'नी वक़्त में नमाज़ पढ़ने वाला)*

(كنز العمال، كتاب المواعظ......الخ، الحديث ٤٣٢٥٢، ج١٥، ص٣٤٦)

बयान 54 : सलातो सलाम का बयान

हम्दे बारी तआला :

सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस की ख़ुश्बूए महब्बत से सच्चे दोस्त नर्म, हवा बन कर उभरे। उस ने रात के आख़िरी हिस्सों में उन से महब्बत भरी गुफ़्तगू की, पस वोह उन का हम नसीन हो गया। उस ने मुनाजात की तन्हाई में पहले उन को पाक व साफ़ प्यालों से ख़ालिस शराब (या'नी जामे महब्बत) पिलाई फिर उन पर तजल्ली फ़रमाई तो वोह उस की महब्बत में दीवाने हो गए। उन्हें अपनी महब्बत का जाम पिलाने वाला उन की दीवानगी को जानता है। उस ने हिदायत के लिये उन को बसीरत से सरफ़राज़ फ़रमाया, तक़्वा व परहेज़गारी की दौलत से माला माल किया और सीधे रास्ते पर चलाया। उस ने उन की त़रफ़ मेहरबान रसूल और साहिबे अ़ज़मतो शराफ़्त नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को भेजा और अपने प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ज़्लो शरफ़ के लिये अपनी मुक़द्दस किताब "कुरआने करीम" में येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई :

هُوَالَّذِیْ یُصَلِّیْ عَلَیْكُمْ وَمَلٰٓىِٕكَتُهٗ لِیُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِؕ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِیْنَ رَحِیْمًا۝ (پ۲۲، الاحزاب: ۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोही है कि दरूद भेजता है तुम पर वोह और उस के फ़िरिश्ते कि तुम्हें अन्धेरियों से उजाले की त़रफ़ निकाले और वोह मुसलमानों पर मेहरबान है।"* (1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़रीए आबे ज़म ज़म और ह़त़ीमे का'बा को मुशर्रफ़ फ़रमाया। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को मुज्तबा और मुस्त़फ़ा की शानों से ख़ास किया। उस ने अपने मुबारक नामों में से दो नामों "रऊफ़ व रह़ीम" के साथ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का नाम रखा। लिहाज़ा जिस ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शरीअ़त की पैरवी की उस ने बहुत बड़ा फ़ज़्ल पा लिया और जन्नत में ताज़गी और ने'मतों को ह़ासिल कर लिया। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कितने ही क़ैदियों को आज़ाद किया। कितने ही बे यारो मददगार मसाकीन को पनाह दी। कितने ही टूटे दिलों को जोड़ दिया, फ़क़ीरों को ग़नी कर दिया और यतीमों पर रह़म फ़रमाया। ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को वसीला बनाया पस उन्हों ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते गिरामी पर दुरूद शरीफ़ भेजा तो इ़ज़्ज़त व करामत के साथ लौटे। ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ नजिय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इन के तुफ़ैल दुआ़ की तो डूबने से मह़फ़ूज़ रहे। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उन के वसीले से बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की तो

(1)...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं "**शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि जब आयत اِنَّ اللهَ وَمَلٰٓىِٕكَتَهٗ یُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِیِّ नाज़िल हुई तो ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जब आप को अल्लाह तआला कोई फ़ज़्लो शरफ़ अ़त़ा फ़रमाता है तो हम नियाज़ मन्दों को भी आप के तुफ़ैल में नवाज़ता है। इस पर अल्लाह तआला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई।"

आग इन पर ठन्डी और सलामती वाली हो गई । जब ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल ज़बीहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम की कषरत की और उन के सदक़े मदद के ख़्वास्तगार हुवे तो फ़िदये के ज़रीए़ मदद फ़रमाई गई और येह ने'मतें इज़ाफ़े के बा'द बर क़रार रहें। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ा तो उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से हम कलामी का शरफ़ अ़त़ा हुवा और ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए़ मह़शर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की आमद की बिशारत व खुश ख़बरी दी तो उन्हों ने रिफ़्अ़त व सबक़त को पा लिया। और रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते वाला सिफ़ात ही है जिस पर दरख़्तों और पथ्थरों ने सलाम पढ़ा और मुक़द्दस फ़िरिश्तों ने दुरूदे पाक भेजा तो अब वोह रब्बे लम यज़ल عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस ने'मत पर नाज़ां हैं।

ऐ नाफ़रमानों के गुरोह ! तुम्हें किस चीज़ ने मक्की मदनी सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरदारे दो जहान صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ने से ग़ाफ़िल कर रखा है। दुरूदे पाक तो वोह अ़ज़ीम इ़बादत है जो बड़े बड़े गुनाहों को मिटा देती और पढ़ने वाले को इ़ज़्ज़त व तकरीम अ़त़ा करती है। पस तुम हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर कषरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ा करो और उन की ऐसी ता'ज़ीम व अदब करो जिस का तुम्हारे मौला عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें हुक्म फ़रमाया है। इस त़रह़ तुम जन्नत और उस की ने'मतों से सरफ़राज़ किये जाओगे और अ़ज़ाब व नारे दोज़ख़ से बच जाओगे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उस शान को बयान फ़रमाया जो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े आ़लिय्या और मख़्लूक़ के मुतअ़ल्लिक़ है। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ○ (پ٢٢، الاحزاب: ٤٣) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और वोह मुसलमानों पर मेहरबान है।*

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के उस उम्मती को जन्नत में फ़ज़ीलत व मर्तबे की बिशारत दी है जिस ने आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ा। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

" تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ ۚ وَاَعَدَّ لَهُمْ اَجْرًا كَرِيْمًا ○ (پ٢٢:الاحزاب:٤٤) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उन के लिये मिलते वक़्त की दुआ़ सलाम है और उन के लिये इ़ज़्ज़त का षवाब तय्यार कर रखा है।"(1)

---

❶...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं "मिलते वक़्त से मुराद या मौत का वक़्त है या क़ब्रों से निकलने का या जन्नत में दाख़िल होने का। मरवी है कि ह़ज़रते मलकुल मौत किसी मोमिन की रूह़ उस को सलाम किये बिग़ैर क़ब्ज़ नहीं फ़रमाते। ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि जब मलकुल मौत मोमिन की रूह़ क़ब्ज़ करने आते हैं तो कहते हैं कि तेरा रब्ब तुझे सलाम फ़रमाता है और येह भी वारिद हुवा है कि मोअमिनीन जब क़ब्रों से निकलेंगे तो मलाइका सलामती की बिशारत के त़ौर पर उन्हें सलाम करेंगे।" (जमल व ख़ाज़िन)

तो ऐ इस्लामी भाइयो ! तुम मम्बए जूदो सख़ावत, क़ासिमे ने'मत, सरापा रहमत, शाफ़ेए उम्मत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ की कषरत करो कि दुरूदे पाक ग़मों और मुसीबतों को दूर करता और बीमारियों से शिफ़ा देता है। और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ने का हुक्म तो खुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दिया है। वोह तुम्हें ख़बरदार करते हुवे, समझाते हुवे, याद दिलाते हुवे और सिखाते हुवे इरशाद फ़रमा रहा है :

﴿١﴾ اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝

(پ٢٢، الاحزاب:٥٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक* ***अल्लाह*** *और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर। ऐ ईमान वालों ! उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो।*

हज़रते सय्यिदुना अबू तलहा رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ रिवायत फ़रमाते हैं कि मैं सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइषे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवा, आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरे पर बिशाशत (या'नी खुशी) के आषार थे, मैं ने अर्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मैं ने कभी आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को आज की तरह इतना खुश व खुर्रम और हश्शाश बश्शाश नहीं देखा।" तो इरशाद फ़रमाया : "आज मैं क्यूं कर खुश न होऊंगा कि अभी मेरे पास जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आए और अर्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का जो उम्मती आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर एक बार दुरूद भेजे इस के इवज़ उस के लिये दस नेकियां लिखी जाती हैं, दस गुनाह मुआफ़ होते हैं और दस दर्जात बुलन्द होते हैं और मालिके हक़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ भी दुरूदे पाक भेजने वाले की मिष्ल कहता है।" (المسند للامام احمد بن حنبل، حديث ابی طلحة، الحديث ١٦٣٥٢، ج٥، ص٥٠٩)

एक दूसरी रिवायत में है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुरूद पढ़ने वाले पर उस के क़ौल की मिष्ल रहमतें और बरकतें लौटाता है।"

रुख़े मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की नूरानिय्यत :

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : "मैं वक़्ते सहर कुछ सी रही थी कि सूई मेरे हाथ से गिर गई और चराग़ बुझ गया। इतने में हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले आए, आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अक़्दस के नूर से सारा कमरा जगमगा उठा और सूई मिल गई। (बरादरे आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं) :

सूज़ने गुम शुदा मिलती है तबस्सुम से तेरे
शाम को सुब्ह बनाता है उजाला तेरा (ज़ौक़े ना'त)

मैं ने अर्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का चेहरए अन्वर कितना रोशन है ? तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ आइशा (رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهَا) हलाकत है उस के लिये जो बरोज़े क़ियामत मुझे न देखेगा।" मैं ने अर्ज़ की : "बरोज़े क़ियामत

आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से कौन महरूम रहेगा ?" आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बख़ील ।" मैं ने पूछा : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बख़ील कौन है ?" इरशाद फ़रमाया : "वोह है जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न भेजे ।"

(دلائل النبوة للاسماعيل الاصبهانى،فصل،الحديث١١٧،ص١١٣)

(السنن الكبرى للنسائى، كتاب العمل اليوم والليلة، باب من البخيل،الحديث٩٨٨٥،ج٦،ص٢٠)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : "मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूद पढ़ना तुम्हारे लिये त़हरात है और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से मेरे लिये (मक़ामे) वसीला का सुवाल करो ।" सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُم ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم वसीला क्या है ?" इरशाद फ़रमाया : "जन्नत में सब से आ'ला दर्जा है जो सिर्फ़ एक शख़्स को मिलेगा और मुझे उम्मीद है कि वोह मैं हूं ।" (مصنف ابن ابى شيبة،كتاب الفضائل،باب ما اعطى الله تعالى محمداﷺ،الحديث ١٤٦،ج٧، ص٤٤٢)

(جامع الترمذى،ابواب المناقب،باب سلوا الله لى الوسيلة،الحديث٣٦١٢،ص٢٠٢٤)

हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो मुझ पर जुमा'रात की शाम को दुरूदे पाक पढ़ता है फ़िरिश्ते अपने हाथो में चांदी के वरक़ और सोने के क़लम ले कर नाज़िल होते हैं और जो मुझ पर जुमा'रात की शाम, शबे जुमुआ़, रोज़े जुमुआ़ और जुमुआ़ की शाम को दुरूदे पाक पढ़ता है वोह उस का दुरूद लिखते हैं । पस जुमुआ़ के दिन मुझ पर कषरत से दुरूदे पाक पढ़ो ।"

(نزهة المجالس،باب فضل الصلاة والتسليم......الخ،ج٢،ص١٨٠)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है , हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "जो मुझ पर जुमुआ़ की रात या जुमुआ़ के दिन एक बार दुरूदे पाक पढ़ता है अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस की सो उख़रवी ह़ाजात और तीस दुन्यावी ह़ाजात पूरी फ़रमाता है और मेरे पास एक फ़िरिश्ता भेजता है जो मेरी क़ब्र में दाख़िल हो कर मुझे उस दुरूद पढ़ने वाले के नाम व नसब और ख़ानदान के मुतअ़ल्लिक़ बताता है फिर मैं उसे अपने पास सफ़ेद सह़ीफ़े में मह़फ़ूज़ कर लेता हूं ।"

(شعب الايمان للبيهقى،باب فى الصلوات/فضل الصلوة على النبىﷺليلة الجمعة،الحديث ٣٠٣٥،ج٣،ص١١١،بتغيرٍ)

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : "बेशक अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के कुछ सियाह़त करने वाले फ़िरिश्ते हैं, वोह मशरिक़ व मग़रिब में मुझ पर दुरूद पढ़ने वाले का दुरूद शरीफ़ मुझ तक पहुंचाते हैं । पस जो शख़्स हर जुमुआ़ के दिन मुझ पर अस्सी (80) बार दुरूदे पाक पढ़ेगा उस के अस्सी साल के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे ।"

(سنن النسائى، كتاب السهو،باب التسليم على النبىﷺ،الحديث١٢٨٣،ص٢١٧٠)

(تاريخ بغداد،الرقم٧٣٢٦وهب بن داؤد بن سليمان ابو القاسم المخرمى،ج١٣،ص٤٦٣)

ताजदारे ह़रम, शाहे अ़रबो अ़जम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "मुझ पर मह़ब्बत व शौक़ से दुरूदे पाक पढ़ा करो इस लिये कि वोह मुझ तक पहुंचता है।"

(سنن ابی داؤد، کتاب المناسک ،باب زیارۃالقبور،الحدیث ۲۰۴۲،ص۱۳۷۳،مفهومًا)

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है, नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "क़ियामत के दिन लोगों में मेरे क़रीब तर वोह शख़्स होगा जिस ने मुझ पर कषरत से दुरूदे पाक पढ़े होंगे और जो लोग अपनी मह़फ़िल में मुझ पर दुरूदे पाक नहीं पढ़ते बरोज़े क़ियामत उन पर ह़ुज्जत होगी। अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहे तो उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा दे और चाहे तो मुआख़ज़ा फ़रमाए।"

(جامع الترمذی ،ابواب الوتر ،باب ماجاء فی فضل الصلاۃ علی النبی صلی اللہ علیہ وسلم، الحدیث ٤٨٤، ص ١٦٩١ ،جامع الترمذی ،کتاب الدعوات ، باب ما جاء فی القوم یجلسون......الخ، الحدیث ٣٣٨٠،ص١٩٩٩ ، الزهد لابن المبارک ،باب فضل ذکر اللّٰه عزوجل ،الحدیث ٩٦٢،ص ٣٤٢)

ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "जिस दिन सायए अ़र्श के सिवा कोई साया न होगा उस दिन तीन क़िस्म के लोग अ़र्शे इलाही عَزَّوَجَلَّ के साए में होंगे।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم वोह कौन हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "(1).....जिस ने मेरे किसी उम्मती की परेशानी दूर की (2)......जिस ने मेरी सुन्नत को ज़िन्दा किया और (3).....जिस ने मुझ पर कषरत से दुरूद पढ़ा।"

(شرح الزرقانی علی موطأ الامام مالک، کتاب الشَّعَرِ،باب ماجاء فی المتحابین فی اللّٰه، تحت الحدیث ١٨٤١ ،ج٤،ص٤٦٩)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : "जिस ने किसी किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा जब तक मेरा नाम उस किताब में रहेगा मलाइका उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे।" (المعجم الاوسط،الحدیث ١٨٣٥،ج١،ص٤٩٧)

सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है : "जो मेरे ह़क़ की ता'ज़ीम करते हुवे मुझ पर दुरूदे पाक भेजता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से एक फ़िरिश्ता पैदा फ़रमाता है जिस का एक पर मशरिक़ में, दूसरा मग़रिब में, उस की दोनों टांगें सातवीं ज़मीन में और गर्दन अ़र्श के नीचे होती है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे फ़रमाता है : "तुम मेरे बन्दे पर इसी त़रह़ दुरूदे पाक भेजो जिस त़रह़ उस ने मेरे नबी पर भेजा।" पस वोह फ़िरिश्ता ता क़ियामत उस बन्दे पर दुरूद भेजता रहेगा।" (فردوس الاخبار للدیلمی ، باب الالف ، الحدیث ١١٣١ ،ج١،ص١٧٠)

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस्तिग़फ़ार के सबब तुम्हारे गुनाह बख़्श देता है, पस जो सच्चे दिल से इस्तिग़फ़ार करे उस को बख़्श दिया जाता है और जिस ने "لَاۤاِلٰـہَ اِلَّااللّٰـہُ"

कहा उस का मीज़ान (या'नी नेकियों का पलड़ा) भारी होगा और जो मुझ पर दुरूद भेजे मैं क़ियामत के दिन उस का शफ़ीअ़ होऊंगा।" (الترغيب فى فضائل الأعمال وثواب ذلك لابن شاهين ،باب مختصر من فضل الاستغفاروثوابه، الحديث١٧٨، ج١، ص٢٠١)

हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "बेशक अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने मेरी क़ब्रे अक़दस पर दो फ़िरिश्ते मुक़र्रर फ़रमाए हैं। जब किसी मुसलमान के पास मेरा ज़िक्र होता है और वोह मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो फ़िरिश्ते उस के जवाब में कहते हैं : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तेरी मग़्फ़िरत फ़रमाए।" उस के जवाब में अ़र्श उठाने वाले और दीगर फ़िरिश्ते आमीन कहते हैं जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न भेजे तो वोह दोनों फ़िरिश्ते कहते हैं : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तेरी मग़्फ़िरत न फ़रमाए।" और अ़र्श उठाने वाले और दीगर फ़िरिश्ते उस के जवाब में आमीन कहते हैं।" (المعجم الكبير،الحديث٢٧٥٣،ج٣،ص٨٩)

हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "जो लोग किसी मजलिस में जम्अ़ हों और फिर मुझ पर दुरूदे पाक पढ़े बिग़ैर एक दूसरे से जुदा हो जाएं तो वोह मुर्दार गधे से ज़ियादा बदबू छोड़ कर जुदा होते हैं।" (السنن الكبرىٰ للنسائى، كتاب العمل اليوم والليلة،باب من جلس مجلسا......الخ،الحديث ١٠٢٤٤، بدون "الحمار") और जिस इजतिमाअ़ में मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ा जाता है वहां से पाकीज़ा ख़ुश्बू फूटती है यहां तक कि वोह आस्मान की बुलन्दी तक पहुंच जाती है, फ़िरिश्ते कहते हैं : "येह उस इजतिमाअ़ की ख़ुश्बू है जिस में मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद पढ़ा गया है। यक़ीनन आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर भेजे गए दुरूदे पाक की ख़ुश्बू तमाम ख़ुश्बूओं पर फ़ौक़िय्यत रखती है, मलाइका इस को फ़ौरन पहचान लेते हैं और तमाम ख़ुश्बूओं से इस का इम्तियाज़ कर लेते हैं।"

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, बिइज़्ने परवर दगार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : "जिस ने मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ा वोह दोज़ख़ में नहीं जाएगा।"

हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "जिस ने मुझ पर सो बार दुरूदे पाक भेजा तो आग उस से सो साल की दूरी पर हट जाएगी।"

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "तुम में से ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़ने वाले के लिये जन्नत में ज़ियादा बीवियां होंगी।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है, हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ मुह़म्मद ! जो आप पर दुरूद भेजेगा मैं उस पर दुरूद भेजूंगा और जो आप पर सलाम भेजेगा मैं उस पर सलाम भेजूंगा।" (المسند للامام احمد بن حنبل ،حديث عبدالرحمٰن بن عوف ،الحديث١٦٦٤، ج١ ص ٤٠٧)

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "बन्दा जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपनी किसी ह़ाजत का सुवाल करता है लेकिन इस के बा'द मुझ पर दुरूदे पाक नहीं पढ़ता तो उस की ह़ाजत बादलों तक बुलन्द होती है। फिर जब वोह मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस की ह़ाजत पूरी हो जाती है और दुआ़ भी क़बूल हो जाती है और उस के लिये आस्मान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं।"

हु़ज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "जो मुझ पर दुरूद भेजता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर मुक़र्रर फ़िरिश्तों को हु़क्म देता है कि तीन दिन तक इस का कोई (बुरा) अ़मल न लिखें।"

(المستطرف فی کل فن مستظرف،باب ۸۴ فیماجاء فی فضل الصلاۃ......الخ،ج۲،ص۵۰۵)

मरवी है : "जब क़ियामत के दिन मोमिन की नेकियां और बुराइयां तोली जाएंगी तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से कुछ सह़ीफ़े उस की नेकियों वाले पलड़े में रखे जाएंगे जिस की वजह से नेकियां बुराइयों पर ग़ालिब आ जाएंगी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "येह तेरा वोह दुरूदे पाक है जो तू ने मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर भेजा था जिस के सबब तेरी नेकियों का वज़्न ज़ियादा हो गया, मैं ने इस को तेरे लिये मह़फ़ूज़ कर रखा था।"

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने सुब्ह़ो शाम येह दुरूदे पाक पढ़ा :

اَللّٰھُمَّ یَا رَبَّ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ وَّاَجْزِ مُحَمَّدًا صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہ وسلَّم مَّا ھُوَ اَھْلُہٗ

या'नी या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ऐ (ह़ज़रत) मुह़म्मद (صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) और उन की आल के रब्ब عَزَّوَجَلَّ (ह़ज़रत) मुह़म्मद (صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) और उन की आल पर रह़मत भेज और (ह़ज़रत) मुह़म्मद (صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) को उन के शायाने शान जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमा।" तो उस ने आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्तों को एक हज़ार सुब्ह़ तक (इस का अज्र लिखने) पर लगा दिया। (نزھۃ المجالس،باب مناقب فاطمۃ الزھراء رضی اللہ تعالی عنھا،فصل فی تزویج حواء ...... الخ،ج۲،ص۲۱۷،مفھومًا) और उस ने अपने नबी का ह़क़ अदा किया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की और उस के वालिदैन की मग़फ़िरत फ़रमाए और (ह़ज़रत) मुह़म्मद (صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) और आले मुह़म्मद (صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) के साथ इस का ह़श्र फ़रमाए।" (आमीन)

ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का ह़क़्क़े महर :

ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को पैदा फ़रमाया और इन में रूह़ फूंकी और इन्हों ने अपनी निगाहें खोलीं तो जन्नत के दरवाज़े पर येह लिखा हुवा देखा, لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللہِ तो अ़र्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क्या तू ने किसी ऐसी हस्ती को भी पैदा फ़रमाया है जो तेरे नज़दीक मुझ से

भी ज़ियादा मुअ़ज़्ज़ज़ है ?" तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की जानिब से जवाब मिला : "हां ! वोह तेरी अवलाद में से एक नबी है ।" फिर जब अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदतुना अम्मां ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنہا को पैदा फ़रमा कर ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام में शहवत रखी और आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام ने उन से निकाह़ की ख़्वाहिश की तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : 'इस का ह़क़्क़े महर अदा करो ।" आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام ने अ़र्ज़ की : "इस का ह़क़्क़े महर क्या है ?" अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "इस नाम वाले पर सो मरतबा दुरूदे पाक भेजो ।" अ़र्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ अगर मैं ऐसा करूं तो क्या तू मेरा निकाह़ इस से कर देगा ?" तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने फ़रमाया : "हां ।" चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर सो मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा और येह ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنہا का महर था । फिर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام का निकाह़ ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنہا से कर दिया । (نزھۃ المجالس،باب مناقب فاطمۃ الزھراء رضی اللہ تعالی عنھا،فصل فی تزویج حواء ...... الخ،ج۲،ص۳۱۷،مفھومًا)

ऊंट बोल उठा :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنہُما से मरवी है : "एक आ'राबी अपनी ऊंटनी को मस्जिद के दरवाज़े पर बांध कर आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर बैठ गया । जब उस का मक़्सद पूरा हो गया तो खड़े होने का इरादा ही किया था कि कुछ लोगों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इस आ'राबी के पास जो ऊंटनी है, वोह चोरी की है ।" नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे और इरशाद फ़रमाया : "तुम क्या कहते हो ?" वोह सर झुका कर अपनी उंगली से ज़मीन कुरेदने लगा, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने ऊंटनी को क़ुव्वते गोयाई अ़त़ा फ़रमाई तो उस ने दरवाज़े के पीछे से अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को बशीर व नज़ीर बना कर ह़क़ के साथ भेजा ! इस शख़्स ने मुझे नहीं चुराया बल्कि मुझे किसी और ने चुराया है इस ने तो क़ीमत दे कर मुझे उस से ख़रीदा है, येह मुजरिम नहीं है ।"

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस आ'राबी से इस्तिफ़सार फ़रमाया : "ऐ आ'राबी ! तुझे उस ज़ात की क़सम जिस ने तेरी बराअत के लिये ऊंटनी को क़ुव्वते गोयाई अ़त़ा फ़रमाई ! येह तो बता कि सर झुका कर ज़मीन कुरेदते हुवे तू ने क्या कहा था ?" उस ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ने अ़र्ज़ की थी :

اَللّٰھُمَّ لَسْتَ بِرَبٍّ اِسْتَحْدَثْنَاکَ وَلَامَعَکَ شَرِیْکٌ فِیْ مُلْکِکَ اَعَانَکَ عَلٰی

خَلْقِنَا اَنْتَ کَمَا تَقُوْلُ وَفَوْقَ کُلِّ مَا نَقُوْلُ، اَسْاَلُکَ یَا رَبِّ اَنْ تُصَلِّیَ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّتُبَرِّئَنِیْ بِبَرَاءَۃٍ مِّمَّآ اَنَا فِیْہِ

या'नी या अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तू ऐसा रब्ब عَزَّ وَجَلَّ नहीं कि जिस को हम ने अपने पास से घड़ लिया हो, और न ही तेरे मुल्क में तेरा कोई शरीक है जो हमारी तख़्लीक़ पर तेरी इआ़नत करे, बेशक तू वैसा ही है जैसा कि तू फ़रमाता है और तू हमारे बयान से भी बहुत बुलन्द है, या अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ मैं तुझ से सुवाल करता हूं कि

मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और उन की आल पर रहमत भेज और मुझे इस मुसीबत से छुटकारा अता फ़रमा।'' तो हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : 'उस ज़ात की क़सम जिस ने मुझे हक़ के साथ मबऊष फ़रमाया ! मैं ने गलियों में मलाइका का इज़्दहाम देखा जो तेरे इन कलिमात को लिख रहे थे, पस जो शख़्स ऐसी मुसीबत में मुब्तला हो जिस में तू मुब्तला हुवा और येह कलिमात कहे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस मुसीबत से नजात अता फ़रमाएगा।'' (المستدرك،کتاب آیات رسول اللّٰہ عزّوجلّ......الخ، الحدیث ٤٢٩٤، ج٣، ص ٥٢٢)

मन्क़ूल है, मुहद्दिषीने किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہ क़ियामत के दिन अपने क़लमदान लिये हाज़िर होंगे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से फ़रमाएगा : ''ऐ जिब्राईल ! इन की तमाम हाजात पूरी कर दो क्यूंकि येह दुन्या में नबिय्ये करीम (صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) पर कषरत से दुरूद भेजते थे, और इन्हें हाथ पकड़ कर जन्नत में दाख़िल कर दो।''

बा आवाज़े बुलन्द दुरूद पढ़ने वालों की बख़्शिश हो गई :

एक बुज़ुर्ग का बयान है, ''मेरा एक गुनाहगार पड़ोसी था। उस की वफ़ात के बा'द मैं ने उसे ख़्वाब में जन्नत में देखा तो पूछा : ''तुम्हें येह मक़ाम कैसे मिला ?'' उस ने बताया : ''मैं एक इजतिमाए ज़िक्र में हाज़िर हुवा। एक मुहद्दिष साहिब को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान बयान करते सुना कि ''जो शख़्स रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर बुलन्द आवाज़ से दुरूदे पाक भेजे उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है।'' येह कहने के बा'द उन मुहद्दिष साहिब ने बा आवाज़े बुलन्द दुरूदे पाक पढ़ा फिर मैं ने और तमाम अहले इजतिमाअ ने दुरूदे पाक पढ़ा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसी दिन हमें बख़्श दिया।'' (فضائل درودوسلام بحوالہ سعادۃ الدارین،ص١٥٨)

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमीना के लाल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''एक दिन जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने मेरे पास हाज़िर हो कर अर्ज़ की : ''ऐ मुहम्मदे मुस्तफ़ा (صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) मैं आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ऐसी ख़ुश ख़बरी ले कर हाज़िर हुवा हूं जो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से पहले किसी के पास लाया न बा'द में (लाऊंगा), और वोह येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : ''(ऐ महबूब !) तेरा जो उम्मती तुझ पर तीन मरतबा दुरूदे पाक पढ़ेगा अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और अगर बैठा था तो खड़े होने से पहले उसे बख़्श दिया जाएगा।'' येह सुन कर आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सजदए शुक्र अदा किया।'' (المستطرف فی کل فن مستظرف،باب ٨٤ فیماجاء فی فضل الصلاۃ......الخ،ج٢،ص ٥٠٥)

मन्क़ूल है कि एक औरत अपने बेटे को मरने के बा'द क़ब्र में अज़ाब में मुब्तला देख कर बहुत ग़मगीन हुई और गिर्या व ज़ारी करने लगी। फिर उस औरत ने दोबारा अपने बेटे को रहमत व नूर की छमा छम बारिश में देख कर उस के मुतअल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो उस ने जवाब दिया : ''एक शख़्स इस क़ब्रिस्तान से गुज़रा उस ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ कर इस का षवाब तमाम मुर्दों को पहुंचाया तो इस की बरकत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया।''

एक आ़रिफ़ का बयान है कि "मैं एक रात नमाज़ पढ़ते हुवे तशह्हुद में सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बिइज़्ने परवर दगार صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया, मुझ पर नींद का ग़लबा हुवा और मैं सो गया। ख़्वाब में आक़ाए दो जहां, सरवरे ज़ीशां صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का दीदार नसीब हुवा। आप صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तू आज हम पर दुरूद भेजना भूल गया ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की षना में मश्ग़ूल था।" आप صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या तुझे मा'लूम नहीं कि मुझ पर दुरूदे पाक पढ़े बिग़ैर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी षना भी क़बूल नहीं फ़रमाता, वोह ऐसी कोई दुआ़ क़बूल नहीं फ़रमाता जिस में मुझ पर दुरूद न भेजा गया हो और कोई ह़ाजत पूरी नहीं फ़रमाता जब तक कि मुझ पर दुरूदे पाक न भेजा जाए, क्या तुम ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह मुबारक फ़रमान नहीं सुना ?

صَلُّوْا عَلَیْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا O (پ۲۲،الاحزاب:۵۶) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो।*

सरकार صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने चेहरे की सियाही दूर फ़रमा दी :

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "मैं ने दौराने त़वाफ़ एक शख़्स को हर क़दम पर हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ते हुवे देखा तो उस से पूछा : "ऐ भाई "لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ, سُبْحٰنَ اللّٰہ" के बजाए दुरूदे पाक का विर्द किये जा रहे हो, इस में तुम्हारा क्या राज़ है ?" तो वोह पूछने लगा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को मुआ़फ़ फ़रमाए, आप कौन हैं ?" मैं ने बताया : "मैं सुफ़्यान षौरी हूं।" तो उस ने कहा : "अगर आप अहले ज़माना में अजनबी न होते तो मैं आप को इस का राज़ न बताता, मैं अपने वालिदे गिरामी के साथ ह़ज्जे बैतुल्लाह के इरादे से चल पड़ा। अषनाए सफ़र मेरे वालिदे मोह़तरम बीमार हो गए तो मैं अपने वालिदे मोह़तरम के इलाज मुआ़लजे के लिये रुक गया। इलाज के दौरान उन का इन्तिक़ाल हो गया जब कि मैं उन के सर के क़रीब खड़ा था, उन का चेहरा सियाह हो गया। येह देख कर मैं ने फ़ौरन पढ़ा : "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ O (پ۲،البقرة:۱۵۶)" **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हम अल्लाह के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना।"(1) फिर मैं ने उन के चेहरे पर चादर डाल दी। अचानक मुझ पर नींद का ग़लबा हुवा और मैं सो गया, मैं ने एक शख़्स को देखा कि उस से ज़ियादा ह़सीनो जमील मैं ने कभी नहीं देखा था। उस का लिबास इन्तिहाई साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ था और उस से ऐसी ख़ुश्बू आ रही

---

(1)....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "ह़दीष शरीफ़ में है कि वक़्ते मुसीबत "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ" पढ़ना रह़मते इलाही का सबब होता है। येह भी ह़दीष में है कि मोमिन की तक्लीफ़ को अल्लाह तआ़ला कफ़्फ़ारए गुनाह बनाता है।"

थी जो मैं ने कभी न सूंघी थी। वोह क़दम ब क़दम चलते हुवे मेरे वालिदे मोह़तरम के क़रीब तशरीफ़ लाए और उन के चेहरे से चादर हटा कर अपना मुबारक हाथ चेहरे पर फेरने लगे। वालिद साहि़ब का चेहरा अचानक चमक उठा। फिर वोह पलटने लगे तो मैं उन के कपड़ों से लिपट गया और उन से दरयाफ़्त किया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए, आप कौन हैं ? जिन के सबब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरे वालिदे मोह़तरम पर इस वीराने में येह एह़सान फ़रमाया है।" उन्हों ने पूछा : "क्या तुम मुझे नहीं पहचानते ? मैं साहि़बे क़ुरआन मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) हूं, तुम्हारे वालिदे गिरामी तो गुनाहगार थे लेकिन मुझ पर कषरत से दुरूदे पाक भेजते थे। जब येह इस बीमारी में मुब्तला हुवे तो मुझ से फ़रयाद की और बेशक जो मुझ पर कषरत से दुरूदे पाक पढ़ता है मैं उस की फ़रयाद रसी करता हूं।" फिर मैं बेदार हुवा तो देखा कि मेरे वालिदे गिरामी का चेहरा बिल्कुल सफ़ेद हो चुका था। (تفسیر روح البیان، سورۃ الاحزاب، تحت الآیۃ ۵۶، ج۷، ص۲۲۵)

ऐ मेरे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर कषरत से दुरूदे पाक पढ़ो। बेशक आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजना गुनाहों की बख़्शिश का सबब और सीधे रास्ते की त़रफ़ हिदायत का बाइ़ष है, दुरूदे पाक भेजने वाला जहन्नम के अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रहेगा और जन्नत में अबदी ने'मतों का मुस्तह़िक़ होगा।

एक रिवायत में है कि "हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद पढ़ने वालों के लिये दस इ़ज़्ज़तें हैं :

(1)....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत (2)....नबिय्ये मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त (3).....मुअ़ज़्ज़ज़ मलाइका की मुवाफ़क़त (4).....मुनाफ़िक़ीन व कुफ़्फ़ार की मुख़ालफ़त (5)....ख़त़ाओं और गुनाहों की मुआ़फ़ी (6).....ह़ाजात की तक्मील (7).....ज़ाहिरो बात़िन की रोशनी (8).....जहन्नम से नजात (9)....जन्नत में दाख़िला और (10).....रब्ब عَزَّوَجَلَّ के सलाम की बिशारत।"

बारगाहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में हमारी इल्तिजा :

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू हमारे सरदार मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर रह़मत भेज जिन को तू ने तमाम मख़्लूक़ पर फ़ज़ीलत और बुलन्द मक़ाम अ़त़ा फ़रमाया, दीने इस्लाम की त़रफ़ हिदायत देने वाला और राहे जन्नत की त़रफ़ रहनुमाई करने वाला बनाया। या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ या रब्बल आ़लमीन ! हमारी त़रफ़ से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक भेज जैसे तू ने हमें दुरूद भेजने का हुक्म दिया है।

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त़्त़र पसीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के गुरोह में उठा, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

की इत्तिबाअ़ में कामयाबी ह़ासिल करने वालो में रख, हमें शरीअ़ते मुह़म्मदिय्या علیٰ صاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام का मुत़ीअ़ बना, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत पर चला और सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की इक़्तिदा करने वाला बना।

या अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ हमें ह़ौज़े कौषर पर ह़ाज़िर होना नसीब फ़रमा आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का दीदार अ़त़ा फ़रमा, इन की शफ़ाअ़त से मह़रूम न फ़रमा और ऐ जलाल व इकराम वाले ! हमें अपनी रह़मत से रह़मत व रिज़्वान वाले घर में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस अ़त़ा फ़रमा।

وَصَلَّی اللّٰہ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی آلِہٖ وَصَحْبِہٖ اَجْمَعِیْن

हुस्ने सुलूक की फ़ज़ीलत

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "अगर कोई किसी का कफ़ील (या'नी परवरिश करने वाला) है तो उस को चाहिये कि वोह उस के साथ हुस्ने सुलूक करे।" एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी न अवलाद है न बीवी और न ही ख़ानदान, सिर्फ़ एक मुर्ग़ी है।" आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अगर तू ने उस के दाना पानी में एक दिन भी कोताही की तो अल्लाह तबारक व तआ़ला तुझे हुस्ने सुलूक करने वालों में न लिखेगा।"

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : "तुम में सब से बेहतर वोह है जो अपने अहल के साथ अच्छा सुलूक करता है और मैं तुम सब से ज़ियादा अपने घर वालों से अच्छा सुलूक करने वाला हूं और औ़रतों की इ़ज़्ज़त सिर्फ़ करीम शख़्स ही करता है और उन की इहानत व तौहीन सिर्फ़ कमीना व बद बख़्त ही करता है।" (قرۃ العیون مترجم،ص۸۳۔۸۴)

बयान 55 : لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहने के फ़ज़ाइल व कमालात

(अल्लाह हम सब को इस कलिमे का अहल बनाए और हमारा इस कलिमे को पढ़ना अपनी बारगाह में क़बूल फ़रमाए । आमीन)

ह़म्दे बारी तआ़ला :

तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस की ह़क़ीक़त को उस के इलावा कोई नहीं जानता। वोही गुनाहों को बख़्शता है और वोही ऐ़बों को छुपाता है। वोही दुखों को दूर करता है और वोही शिकस्ता दिलों को जोड़ता है। वोह अपनी नज़ीर और मुशाबेह से बुलन्द तर है। शुकूक व शुब्हात से पाक है। वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। वोह "मह़मूद" है कि सख़्तियों और तकालीफ़ पर सिर्फ़ उसी की ह़म्द की जाती है। वोह "मश्कूर" है कि खुश ह़ाली और तंग दस्ती हर ह़ाल में उस का शुक्र अदा किया जाता है। वोह ही ह़क़ीक़ी "करीम" है कि ह़क़ीक़ी जूदो करम से सिर्फ़ वोही पहचाना जाता है। वोह "रह़ीम" और "मह़बूबे आ'ज़म" है कि रुकूअ़ व सुजूद सिर्फ़ उस के लिये है। वोही "**क़दीमुज़्ज़ात**" और "**बदीउ़स्सिफ़ात**"(या'नी बे मिष्ल सिफ़ात वाला) है कि दुखों को दूर करने के लिये उसी को पुकारा जाता है : وَاِنْ یَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَؕ (پ۷،الانعام:۱۷) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर तुझे अल्लाह कोई बुराई पहुंचाए तो उस के सिवा इस का कोई दूर करने वाला नहीं।"

ऐ बन्दो ! तुम्हारा हर मुआ़मला उसी की त़रफ़ लौटता है, तुम्हारा रिज़्क़ उसी के ज़िम्मे है, वोह तुम्हें काफ़ी है और वोही तुम्हारा परवर दगार है : ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَۚ (پ۷،الانعام:۱۰۲) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येह है अल्लाह तुम्हारा रब्ब और उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं। ....पथरीली ज़मीनों की चमक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़मत को बयान कर रहीं है और उस की यक्ताई पर निशानियां क़ाइम हैं : وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ (پ۲،البقرة:۱۶۳) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं।".....सरकश और गुमराह लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वुजूद का इन्कार क्यूं कर करते हैं ? ह़ालांकि वोह ज़िन्दा है, उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की वह़दानिय्यत को कैसे झुटलाया जा सकता है ? या कैसे उस की यक्ताई का इन्कार किया जा सकता ? जब कि वोह फ़रमा रहा है : شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَۙ (پ۳،ال عمران:۱۸) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अल्लाह ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं।" .....उस ने अपनी ह़िक्मते बालिग़ा से अश्या का अन्दाज़ा रखा और अपनी क़ुदरते कामिला से अन्धेरे और रोशनी को पैदा किया और هُوَ الَّذِیْ یُصَوِّرُكُمْ فِی الْاَرْحَامِ كَیْفَ یَشَآءُؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ (پ۳،ال عمران:۶) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोही है कि तुम्हारी तस्वीर बनाता है माओं के पेट में जैसी चाहे उस के सिवा किसी की इ़बादत नहीं।" ...वोही ऐ़बों को छुपाने वाला और कमज़ोरों पर रह़्म फ़रमाने वाला और وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَیْبِ لَا یَعْلَمُهَاۤ اِلَّا هُوَؕ (پ۷،الانعام:۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उसी के पास हैं कुन्जियां ग़ैब की इन्हें वोह जानता है।''....तो वोह क्यूं उस की बख़्शिश न फ़रमाए जो उस की बारगाह में रुजूअ़ लाए। इस लिये कि उस की येह शान है : غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيدِ الْعِقَابِ لا ذِى الطَّوْلِ ط لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ط (پ٢٤،المؤمن:٣) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** गुनाह बख़्शने वाला और तौबा क़बूल करने वाला सख़्त अ़ज़ाब करने वाला बड़े इन्आ़म वाला उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं।'' ....तो ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को एक मानने वाले ! बारी तआ़ला के हर ऐब से पाक होने की तल्वार से उन लोगों की गर्दनें उड़ा दे जो उस को मख़्लूक़ जैसा बताते हैं और ख़ुद को उन बातों से बचा जो वोह बकते हैं और : فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِىَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ط (پ١١،التوبة:١٢٩) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर अगर वोह मुंह फैरें तो तुम फ़रमा दो कि मुझे **अल्लाह** काफ़ी है उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं।''....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के औलिया हर वक़्त उस की ख़फ़ी तदबीर से डरते हैं, वोह किसी वक़्त उस की इबादत से ग़ाफ़िल होते हैं न उस के ज़िक्र में सुस्ती करते हैं जब कि कुफ़्फ़ार को येह दुश्वार है (जभी तो ईमान नहीं लाते) : فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ج لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ج (پ١٨، المؤمنون:١١٦) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो बहुत बुलन्दी वाला है **अल्लाह** सच्चा बादशाह कोई मा'बूद नहीं सिवा उस के।''.....तो ऐ बन्दे ! तेरा धोके बाज़ दुश्मन शैतान तुझे धोका न दे दे, और तू किसी कुफ़्र पर डट न जाना और दुन्या की ज़ियादा त़लबी में पड़ कर फ़ख़्र व तकब्बुर में मुब्तला न हो जाना और : وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ م لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ قف (پ٢٠،القصص:٨٨) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** के साथ दूसरे ख़ुदा को न पूज उस के सिवा कोई ख़ुदा नहीं।'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

﴿١﴾ شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ لا وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا م بِالْقِسْطِ ط لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ O اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ قف

(پ٣،ال عمران:١٨،١٩)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** **अल्लाह** ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं और फ़िरिश्तों ने और आ़लिमों ने इन्साफ़ से क़ाइम हो कर, उस के सिवा किसी की इबादत नहीं, इ़ज़्ज़त वाला ह़िकमत वाला। बेशक **अल्लाह** के यहां इस्लाम ही दीन है।*

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''का'बा के गिर्द तीन सो साठ (360) बुत थे, जब मज़्कूरा आयते मुबारका नाज़िल हुई तो तमाम बुत सजदा रेज़ हो गए।''

(تفسيرالقرطبى،سورة آل عمران ،تحت الآية١٨،ج٢،الجزء الرابع،ص٣٤)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने कैसान से मन्क़ूल है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी अ़जीब तदबीर, पुख़्ता सनाअ़त और मोह़कम उमूर से ख़ुद अपने लिये अपनी मख़्लूक़ के सामने गवाही दी कि उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं।'' (تفسير زاد المسير لابن الجوزى،سورة آل عمران ،تحت الآية١٨،ج١،ص٣١١)

ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ालिब क़त़्त़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं कि ''एक दफ़्आ़ मैं ने तिजारत की ग़रज़ से कूफ़ा में ह़ज़रते सय्यिदुना आ'मश رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰى عَلَيْه के क़रीब पड़ाव डाला। एक रात जब मैं ने बसरा जाने का इरादा किया तो वोह रात को तहज्जुद की नमाज़ पढ़ रहे थे जब इस आयते मुबारका पर पहुंचे :

''شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ لا وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًام بِالْقِسْطِ ط لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ O اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ قف.''

तो कहने लगे : “मैं भी उस की गवाही देता हूं जिस की अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने गवाही दी, और इस गवाही को अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के सिपुर्द करता हूं, येह अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के पास मेरी अमानत है। फिर उन्हों ने इस आयते त़य्यिबा को कई बार दोहराया। मैं ने दिल में सोचा कि ज़रूर इस के मुतअ़ल्लिक़ उन्हों ने कुछ सुन रखा है। चुनान्चे, मैं ने उन के साथ मिल कर नमाज़ अदा की और रुख़्सत होते वक़्त अ़र्ज़ की : “मैं ने आप को येह आयते मुबारका बार बार पढ़ते सुना है, क्या आप ने इस के मुतअ़ल्लिक़ कोई (फ़ज़ीलत) सुनी है ?” तो उन्हों ने फ़रमाया : “अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! मैं एक साल तक नहीं बताऊंगा।”

चुनान्चे, मैं ने उन के दरवाज़े पर वोह दिन लिख दिया और साल गुज़रने का इन्तिज़ार करने लगा, साल गुज़रने पर मैं ने अ़र्ज़ की : “ऐ अबू मुह़म्मद ! साल गुज़र चुका है।” तो इरशाद फ़रमाया : “मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू वाइल رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत कर के बताया है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “क़ियामत के दिन इस आयते मुबारका को पढ़ने वाला लाया जाएगा तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाएगा : “मेरे इस बन्दे का मेरे पास अ़हद है और मैं सब से ज़ियादा अ़हद को पूरा करने का ह़क़दार हूं, (ऐ फ़िरिश्तो !) मेरे बन्दे को जन्नत में दाख़िल कर दो।” (المعجم الکبیر،الحدیث۱۰۴۵۳،ج۱۰،ص۱۹۹)

मन्क़ूल है : “जिस ने सोते वक़्त मज़्कूरा आयते मुबरका पढ़ी अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस से एक फ़िरिश्ता पैदा फ़रमाएगा जो ता क़ियामत उस (पढ़ने वाले) के लिये इस्तिग़्फ़ार करता रहेगा।”

(تفسیر القرطبی،سورۃ آل عمران ،تحت الآیۃ۱۸،ج۲،الجزء الرابع، ص۳۴)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ (پ۲۴،المؤمن:۳) की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि “अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस के गुनाह बख़्शने वाला और तौबा क़बूल करने वाला है जो उस की वह़दानिय्यत की गवाही दे।”

और “شَدِیْدِ الْعِقَابِ ۙ (پ۲۴،غافر:۳)” की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : “उस शख़्स को सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है जो उस की वह़दानिय्यत पर ईमान न लाए।” इरशादे बारी तआ़ला है :

اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ۘ۝۸۷ (پ۱۶،مریم:۸۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मगर वोही जिन्हों ने रह़मान के पास क़रार रखा है। (1)

....

❶.....मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अह़मद अन्सारी क़ुरत़ुबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस आयत के तह़्त अ़हद की तफ़्सीर बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : “ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि “रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने सह़ाबा عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان से येह फ़रमाया : “क्या तुम इस बात से आ़जिज़ हो कि सुब्ह़ो शाम रब्ब عَزَّ وَجَلَّ के पास एक अ़हद लो ?” अ़र्ज़ की : “वोह किस त़रह़ ?” फ़रमाया : “सुब्ह़ो शाम येह कहो !” “اَللّٰھُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَیْبِ وَالشَّھَادَۃِ اِنِّیْ اَعْھَدُ اِلَیْکَ فِیْ ھٰذِہِ الْحَیٰوۃِ بِاَنِّیْ اَشْھَدُ اَنْ لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ لَا شَرِیْکَ لَکَ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُکَ وَرَسُوْلُکَ فَلَا تَکِلْنِیْ اِلٰی نَفْسِیْ فَاِنَّکَ اِنْ تَکِلْنِیْ اِلٰی نَفْسِیْ تُبَاعِدْ نِیْ مِنَ الْخَیْرِ وَتُقَرِّبْنِیْ اِلَی الشَّرِّ وَاِنِّیْ لَا اَثِقُ اِلَّا بِرَحْمَتِکَ فَاجْعَلْ لِّیْ عِنْدَکَ عَھْدًا تُوَفِّیْنِیْہِ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ اِنَّکَ لَا تُخْلِفُ الْمِیْعَادَ” या’नी ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ऐ आस्मानों और ज़मीन को पैदा करने वाले ! ऐ पोशीदा व ज़ाहिर को जानने वाले ! मैं तेरे पास इस ज़िन्दगी में एक अ़हद रखता हूं। वोह येह कि मैं गवाही देता हूं कि तेरे सिवा कोई मा’बूद नहीं। तू अकेला है। तेरा कोई शरीक नहीं। और मैं गवाही देता हूं कि ह़ज़रते (सय्यिदुना) मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) तेरे बन्दे और............,

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं : "अ़हद येह है कि इस बात की गवाही देना कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं।"

(المعجم الاوسط،الحدیث ۹٤۸۱،ج٦،ص ٤۸۱ راوی ابن عمر،الأسماء والصفات للبیهقی،باب ما جاء فی فضل لکلمة،الحدیث ۲۰۵،ج۱،ص۲۱۹)

फ़रमाने बारी तआ़ला है :

﴿۳﴾ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى (پ۲٦،الفتح:۲٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और परहेज़गारी का कलिमा उन पर लाज़िम फ़रमाया।*

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہ تَعَالٰی وَجْھَهُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : "**कलिमतत्तक़्वा**" से मुराद لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहना है।"

(المستدرك ، کتاب التفسیر،تفسیر سورة الفتح ،باب کلمة التقوی......الخ ،الحدیث ۳۷٦۹،ج۳،ص ۲٦۱)

फ़रमाने बारी तआ़ला है : اِلَیْهِ یَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّیِّبُ (پ۲۲، فاطر:۱۰) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उसी की त़रफ़ चढ़ता है पाकीज़ा कलाम।" "اَلْكَلِمُ الطَّیِّبُ" से मुराद لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहना है।" अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿۴﴾ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ج (پ۸،الانعام:۱٦۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जो एक नेकी लाए तो उस के लिये उस जैसी दस हैं।*(1)

यहां "اَلْحَسَنَةُ" से मुराद لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहना है।"

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : "कलिमए त़य्यिबा एक मज़बूत़ ज़िरह और मह़फ़ूज़ क़ल्आ़ है जिस ने कलिमए त़य्यिबा पढ़ा वोह हर क़िस्म की बुराई से ह़िफ़ाज़त में हो गया। इस लिये कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه के ज़िक्र से अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ की अ़ज़मत व बुज़ुर्गी बयान करो क्यूंकि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه मेरा क़ल्आ़ है, तो जो मेरे क़ल्ए़ में दाख़िल हुवा वोह मेरे अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ हो गया।"

(احیاء علوم الدین، کتاب اسرار الصلاة،باب ثالث،بیان تفصیل ما......الخ، ج۱، ص۲۲۷)

(बक़िय्या) .....रसूल हैं। मुझे मेरे नफ़्स के ह़वाले न कर, क्यूंकि अगर तू ने मुझे मेरे नफ़्स के ह़वाले कर दिया तो वोह मुझे भलाई से दूर और बुराई के क़रीब कर देगा। मैं तेरी रह़मत के इलावा, किसी चीज़ पर भरोसा नहीं करता, मेरे इस इक़रार को बत़ौरे अ़हद नामा मह़फ़ूज़ फ़रमा और क़ियामत के दिन मुझे पूरा बदला अ़त़ा फ़रमा। बेशक तू वा'दे के ख़िलाफ़ नहीं करता। जो येह कहेगा अल्लाह तआ़ला उस पर मोहर लगा कर अ़र्श के नीचे रखेगा और जब क़ियामत का दिन होगा तो एक मुनादी निदा करेगा कि कहां हैं वोह लोग जिन का अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के पास अ़हद है? वोह शख़्स खड़ा होगा और उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा।"

(تفسیر قرطبی،سورۂ مریم، تحت الآیه: ۸۷، ج٦، ص ٦۳)

1 ...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْهَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं "या'नी एक नेकी करने वाले को दस नेकियों की जज़ा और येह भी ह़द व निहायत के त़रीक़े पर नहीं बल्कि अल्लाह तआ़ला जिस के लिये जितना चाहे उस की नेकियों को बढ़ाए। एक के सात सो करे या बे ह़िसाब अ़त़ा फ़रमाए। अस्ल येह है कि नेकियों का षवाब मह़ज़ फ़ज़्ल है। येही मज़हब है अहले सुन्नत का और बदी की उतनी ही जज़ा, येह अ़द्ल है।"

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं "अगर गुनहगारों को मा'लूम हो जाए कि لَآاِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ में क्या अज्र है तो इस का ज़िक्र कषरत से करें। दिन रात में चौबीस (24) घन्टे हैं, और لَآاِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ के हुरूफ़ भी चौबीस हैं, हर हर्फ़ एक घन्टे के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है।"

मन्क़ूल है : "जब बन्दा दिन या रात के किसी लम्हे में कलिमए तृय्यिबा पढ़ता है तो उस के नामए आ'माल में जो ख़ताएं और गुनाह होते हैं वोह मिट जाते हैं और इन की जगह नेकियां ले लेती हैं।" (مسند ابی یعلی الموصلی،مسند انس بن مالك، الحدیث ۳۵۹۹، ج۳،ص ۲۷۲)

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सब से अफ़्ज़ल बात जो मैं ने और मुझ से क़ब्ल अम्बिया ने कही वोह لَآاِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहना है।"

(الموطأ للامام مالك ،کتاب القرآن ، باب ماجاء فی الدعاء ،الحدیث ۵۰۹ ،ج۱،ص۲۰۳)

हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हक़ीक़त निशान है : "मुझे लोगों से जिहाद का हुक्म दिया गया यहां तक कि वोह अल्लाह तआला की वहदानिय्यत पर ईमान ले आएं।" (صحیح مسلم،کتاب الایمان،باب الامربقتال الناس......الخ، الحدیث ۲۱،ج۶۸٤)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है, सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइषे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है لَآاِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ पढ़ने वालों पर न क़ब्र में कोई वहशत होगी और न क़ब्रों से ज़िन्दा उठने में और न ही क़ियामत में। गोया मैं उन्हें देख रहा हूं, जब वोह अपने सरों से मिट्टी झाड़ते हुवे क़ब्रों से निकलेंगे और لَآاِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहते हुवे जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे, फिर वोह कहेंगे : "اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْٓ اَذْھَبَ عَنَّا الْحُزْنَ، اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَکُوْرٌ" या'नी सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने हम से ग़म को दूर फ़रमाया, बेशक हमारा रब्ब बख़्शने वाला, शुक्र क़बूल करने वाला है।" (تاریخ بغداد، الرقم ۵۳۸۰ عبد الرحمٰن بن واقد، ج۱۰،ص ۲٦٤،احیاء علوم الدین، کتاب الاذکار والدعوات،باب اول،فضیلة التھلیل، ج۱، ص ۳۹٤، المعجم الاوسط، الحدث۹٤۷۸،ج٦ ، ص ٤۸۰)

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अर्ज़ की गई : "कौन सा अमल सब से अफ़्ज़ल है?" इरशाद फ़रमाया : "मरते वक़्त तेरी ज़बान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से तर हो।" (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق،باب الاذکار،الحدیث ۸۱۵،ج۲،ص ۹۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने फ़िरिश्तों से फ़रमाता है : "कलिमए तृय्यिबा पढ़ने वालों को मेरे क़रीब कर दो, बेशक मैं उन से महब्बत करता हूं।" (فردوس الاخبارللدیلمی، باب الیاء، الحدیث ۸۱۱۵،ج۲،ص ٤٦۰)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मोअमिनीन सच की मजलिस में अज़ीम कुदरत वाले बादशाह के हुज़ूर हाज़िर हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की पैदाइश से पहले ही अपनी महब्बत और अपना फ़रमा बरदार होना उन के लिये मुक़द्दर फ़रमा दिया था तो वोह वहबी (अ़ताई) विलायत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली बन गए। यक़ीनन आयाते तृय्यिबात में उन की मदह फ़रमाई गई है।" चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿۵﴾ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗۤ ۙ (پ٦، المائدة:٥٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह **अल्लाह** के प्यारे और **अल्लाह** उन का प्यारा।*

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम अपने मुर्दों को لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه की तल्क़ीन करो कि येह गुनाहों को मिटाता है।"

(الموسوعة لامام ابن ابی الدنيا ،كتاب المحتضرين ،الحديث ٣/٢،ج٥،ص٣٠٣)

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस का आख़िरी कलाम لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه हुवा वोह जन्नत में दाख़िल होगा।"

(سنن ابوداؤد، كتاب الجنائز، باب فی التلقين، الحديث ٣١١٦، ص١٤٥٨)

हज़रते सय्यिदुना सनाबही رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं हज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ की हालते नज़्अ़ में उन के पास हाज़िर था। (उन की हालत देख कर) मैं रोने लगा तो उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : "चुप हो जाइये, आप क्यूं रोते हैं ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मुझ से गवाही तलब की गई तो मैं आप के हक़ में गवाही दूंगा, अगर मुझ से शफ़ाअ़त का कहा गया तो मैं आप की शफ़ाअ़त करूंगा, अगर मुझ से हो सका तो आप को हर क़िस्म का नफ़्अ़ पहुंचाऊंगा।" फिर इरशाद फ़रमाया : "क़सम ब ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ मैं ने हुज़ूर रहमते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से सुनी हुई तमाम अहादीष, जिन में आप के लिये भलाई थी, आप को बयान कर दी हैं मगर एक हदीष बयान नहीं की, वोह आज बयान कर देता हूं और इसे मैं ने अपने दिल में महफ़ूज़ रखा है (फिर इरशाद फ़रमाया) मैं ने ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को येह इरशाद फ़रमाते सुना : "जो इस बात की गवाही दे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और येह कि मैं उस का रसूल हूं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दोज़ख़ की आग हराम फ़रमा देता है।"

(المسندللامام احمد بن حنبل ،حديث عبادة بن الصامت ،الحديث ٢٢٧٧٤، ج٨، ص٤٠٢)

हज़रते सय्यिदुना अबुल अस्वद दोइली رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मुझे हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने बयान फ़रमाया कि "मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवा। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आराम फ़रमा रहे थे और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ऊपर एक सफ़ेद कपड़ा था फिर दूसरी बार हाज़िर हुवा तो भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आराम फ़रमा रहे थे। तीसरी बार हाज़िर हुवा तो

आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बेदार थे। मैं बैठ गया, आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो कोई لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहे, फिर इसी ह़ालत पर मर जाए तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा।" मैं ने अ़र्ज़ की : "अगर्चे वोह ज़ानी और चोर हो।" तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अगर्चे वोह ज़ानी और चोर हो।" मैं ने फिर अ़र्ज़ की : "अगर्चे वोह ज़ानी और चोर हो।" इरशाद फ़रमाया : "अगर्चे वोह ज़ानी और चोर हो।" चौथी बार पूछने पर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अबू ज़र की नाक ख़ाक आलूद हो।" (सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह कलिमा अज़ राए मह़ब्बत फ़रमाया)। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इस हाल में वहां से निकले कि आप कह रहे थे : "अबू ज़र की नाक ख़ाक आलूद हो।" (صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب الدليل على من مات......الخ، الحديث ٩٤، ص ٦٩٤)

बाज़ार में दाख़िल होने की दुआ :

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जो बाज़ार में दाख़िल हुवा और बुलन्द आवाज़ से येह कलिमात कहे : لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ دَائِمٌ لَا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرِ وَ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये दस लाख नेकियां लिख देता है, उस के दस लाख गुनाह मिटा देता है और दस लाख दर्जात बुलन्द फ़रमा देता है।"

(جامع الترمذی، كتاب الدعوات، باب مايقول اذا دخل السوق، الحديث ٣٤٢٨، ص ٢٠٠٥)

जब ह़ज़रते सय्यिदुना कुतैबा बिन मुस्लिम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने येह ह़दीषे पाक सुनी तो रोज़ाना अपनी सुवारी पर सुवार हो कर बाज़ार जाते और येह ह़दीषे पाक बयान कर के लौट आते, उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ वहां के अमीर थे। (الاحاديث المختارة، مسندعمرفاروق رضى الله تعالى عنه، الحديث ١٨٧، ج ١، ص ٢٩٧)

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! देखो ! इन अहले तौह़ीद का किरदार देखो ! शर्मो ह़या इन को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र फैलाने से न रोकती थी और येह लोग तमाम मख़्लूक़ के सामने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पाकी बयान करने से पीछे नहीं हटते थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है : فَاذْكُرُوْنِیْۤ اَذْكُرْكُمْ (پ٢، البقرة:١٥٢) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो मेरी याद करो, मैं तुम्हारा चर्चा करूंगा।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने रोज़ाना सो बार لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ कहा तो येह उस के लिये दस ग़ुलाम आज़ाद करने के बराबर है, उस के लिये सो नेकियां लिखी जाएंगी और सो गुनाह मुआ़फ़ होंगे, उस दिन शाम तक शैत़ान से ह़िफ़ाज़त होगी और इस से अफ़्ज़ल किसी का अ़मल न होगा मगर उसी शख़्स का जो उस से ज़ियादा अ़मल करे।" (صحيح البخاری، كتاب الدعوات، باب فضل التهليل، الحديث ٦٤٠٣، ص ٥٣٨)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, बिइज़्ने परवर दगार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे रह़्मत बुन्याद है : "जिस ने दस बार لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ कहा वोह ऐसा है जैसे उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की अवलाद से चार जानों को आज़ाद किया।" (صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب فضل التھلیل، الحدیث ٦٤٠٤، ٥٣٨)

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अपने मुर्दों को لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ की तल्क़ीन करो और उन्हें जन्नत की बिशारत दो क्यूंकि दाना और बा ख़बर मर्द व औ़रत इस कलिमे को सुन कर खुश होते हैं।"

(صحیح مسلم، کتاب الجنائز، باب تلقین الموت......الخ، الحدیث ٩١٦، ص ٨٢١۔ موسوعۃ للامام ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب خوف من اللہ، الحدیث ١٦٩، ج٥ ص ٤٤٦)

ऐ मेरे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाए। (आमीन) देखो तो सही ! कलिमए इख़्लास لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कितना अ़ज़ीमुश्शान है और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के नज़्दीक इस का मक़ाम कितना बुलन्द है। इस का ज़िक्र कषरत से करो ताकि अज्रे कषीर पाओ, इस से षवाबे कामिल और अज्रे वाफ़िर मिलता है। मोमिन, काफ़िर से मुमताज़ हो जाता है। और जो बन्दा मुअज़्ज़िन को सुने और जिस त़रह़ मुअज़्ज़िन कहता है उसी त़रह़ कहे और जब मुअज़्ज़िन कहे لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ तो वोह भी لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहे और फिर तबर्रूकन अपने चेहरे और दाढ़ी पर हाथ फेर ले तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस के हर उस बाल के इ़वज़ जिस को उस के हाथ ने छुवा एक नेकी लिखता है और एक गुनाह मिटा देता है।

एक सह़ाबिये रसूल का फ़रमान है : "जिस ने لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ की ता'ज़ीम की ख़ात़िर इसे बुलन्द आवाज़ से कहा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस के चार हज़ार गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा देगा।" और येह भी मन्क़ूल है : "अगर उस के चार हज़ार गुनाह न हों तो उस के घर वालों और पड़ोसियों के गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा देगा।" (فردوس الاخبار للدیلمی، باب المیم، الحدیث ٥٥١١، ج٢ ص ٢٣٣)

फ़ज़्ले ख़ुदा वन्दी عَزَّ وَجَلَّ पर क़ुरबान :

मन्क़ूल है : "क़ियामत के दिन एक शख़्स को मीज़ान पर लाया जाएगा और उस के नामए आ'माल के (99) दफ़्तर (रजिस्टर) निकाले जाएंगे जिन में से हर दफ़्तर पर उस के गुनाह दर्ज होंगे और वोह दफ़्तर ता ह़द्दे निगाह वसीअ़ होंगे, उन को मीज़ान में रखा जाएगा फिर उंगली के पोरे

जितना काग़ज़ का एक टुकड़ा निकाला जाएगा जिस में अल्लाह तआला की वह्दानिय्यत और हज़रते मुहम्मद صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की रिसालत की गवाही लिखी होगी। जब उस टुकड़े को तराज़ू के दूसरे पलड़े में रखा जाएगा तो वोह गुनाहों पर ग़ालिब आ जाएगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ महज़ इस कलिमे لَآاِلٰہَ اِلَّااللّٰہ की बरकत से उस को मुआफ़ फ़रमा कर जन्नत में ले जाने का हुक्म फ़रमा देगा।"

(تفسیر الطبری،سورۃ الاعراف،تحت الآیۃ۸، الحدیث ۱۴۳۴۱،ج۵،ص۴۳۴۔ فردوس الاخبارللدیلمی،باب الیاء، الحدیث ۸۴۷۲، ج۲، ص۴۹۸)

कलिमए तृय्यिबा के इस क़दर फ़ज़ाइल हैं कि इन्हें शुमार नहीं किया जा सकता।

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए मदनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दा'वते इस्लामी के) ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

बयान 56 : रह़मते इलाही की वुस्अ़त का बयान

ह़म्दे बारी तआ़ला :

सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जो ऐसा "रह़ीम" है कि अपने रह़म दिल बन्दों पर बे इन्तिहा रह़म फ़रमाता है। वोह ऐसा "करीम" है जो नाफ़रमानों पर भी जूदो करम की बारिश बरसाता है। वोह ऐसा "ह़लीम" है कि जब किसी गुनाहगार को अपनी लग़ज़िश व नाफ़रमानी पर ह़सरत व नदामत करते हुवे मुलाह़ज़ा फ़रमाता है तो उस की पर्दापोशी फ़रमाता है। वोह ऐसा "अ़लीम" है कि दिलों के भेद जानता है, निय्यतों पर मुत्तलअ़ है और ज़मीनो आस्मान की कोई शै भी उस से पोशीदा नहीं। वोह ऐसा "अ़ज़ीम" है कि किसी भी गुनाह को मुआ़फ़ करना उस के लिये दुश्वार व मुश्किल नहीं। वोह किसी ऐ़ब को देखता है तो मह़ज़ अपने फ़ज़्ल व ने'मत से छुपा देता है क्यूंकि उस की रह़मत उस के ग़ज़ब पर ह़ावी है। उस ने मोअमिनीन को गुनाह और गुमराही से निकालने के लिये इरशाद फ़रमाया : "وَرَحْمَتِیْ وَسِعَتْ كُلَّ شَیْءٍؕ (پ۹، الاعراف:۱۵۶)" **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मेरी रह़मत हर चीज़ को घेरे है।" पस वोह लग़ज़िशों और गुनाहों को बख़्श देता है। और जिस शख़्स ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़राम कर्दा काम को मजबूर हो कर इख़्तियार किया वोह गुनाहगार न होगा। जिस ने उस की बारगाह में तौबा कर ली वोह उसे नजात अ़त़ा फ़रमाएगा और जिस ने उस पर तवक्कुल व भरोसा किया वोह हर मुआ़मले में उसे काफ़ी हो जाएगा।

ऐ तौबा करने वालो ! तुम्हें अ़ज़ाब से बचने की ख़ुश ख़बरी हो। तुम इस ने'मत पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करो। क्यूंकि तुम्हारे रब्ब عَزَّوَجَلَّ ने अपनी ज़ात पर रह़मत को लाज़िम कर लिया और तुम्हारे लिये सआ़दत मन्दी लिख दी है। उस ने अपनी मा'रिफ़त का इरादा करने वाले आ़रिफ़ीन के लिये इ़ल्म को ज़ाहिर फ़रमा दिया। जन्नत में अपने मह़बूब बन्दों को अपने दीदार की इजाज़त अ़त़ा फ़रमा दी। और उन्हें अपनी उन्सिय्यत व मह़ब्बत के जामों से सैराब किया तो वोह उस की बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हो गए...., डर वालों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये ताबे'दारी और आ़जिज़ी को लाज़िम कर लिया और अपनी गुज़श्ता ख़त़ाओं पर आंसू बहाए तो उस ने उन के लिये येह फ़ैसला फ़रमा दिया : قُلْ یٰعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِؕ اِنَّ اللّٰهَ یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِیْعًاؕ (پ۲۴،الزمر:۵۳) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की **अल्लाह** की रह़मत से ना उम्मीद न हो बेशक **अल्लाह** सब गुनाह बख़्श देता है।"....पस उस ने मग़फ़िरत के ज़रीए अमान का ताज इन के सर पर सजा दिया जिस से पहचाने जाते हैं।

ऐ अपनी ज़िन्दगी के अय्याम ग़फ़्लत में ज़ाएअ़ करने वाले ! ऐ अपने नामए आ'माल को गुनाहों से भरने वाले ! अपने मौला عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ ख़ुलूस दिल और फ़रमां बरदार नफ़्स के साथ मुतवज्जेह हो जा क्यूंकि उस ने आ़म शफ़ाअ़त के मालिक, अपने मह़बूब नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इरशाद फ़रमा दिया है : فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُوْ رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍۚ (پ۸،الانعام:۱۴۷) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर अगर वोह तुम्हें झुटलाएं तो तुम फ़रमाओ कि तुम्हारा रब वसीअ़ रह़मत वाला है।

तो उस ने कितने ही गुनाह मुआफ़ फ़रमा दिये, कितने ही दिल ख़ुश कर दिये और कितने ही पशेमानों को सनदे क़बूलिय्यत जारी फ़रमा दी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

﴿١﴾ قُلْ یٰعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰۤی اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِیْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ۝ (پ٢٤، الزمر:٥٣)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की अल्लाह की रहमत से ना उम्मीद न हो, बेशक अल्लाह सब गुनाह बख़्श देता है, बेशक वोही बख़्शने वाला मेहरबान है।*

मज़्कूरा आयते मुबारका में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने गुनहगार, नाफ़रमान, फ़ासिक़ व फ़ाजिर और सरकश बन्दों को मुख़ातब फ़रमाया जिन्हों ने येह समझ लिया कि उन की मग़फ़िरत न होगी और वोह रहमते इलाही عَزَّوَجَلَّ से मायूस हो गए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

قُلْ یٰعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰۤی اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ (پ٢٤، الزمر:٥٣)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न हो।*

या'नी उस के अफ़्वो करम और मुआफ़ फ़रमाने से मायूस न होना। इस के बा'द इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ اللّٰهَ یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِیْعًا ؕ (پ٢٤، الزمر:٥٣)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक अल्लाह सब गुनाह बख़्श देता है।*

या'नी वोह उस के गुनाह बख़्शता है जो तौबा करे, ज़ुल्म से बाज़ आ जाए और बुरे अफ़्आल से मुआफ़ी तलब कर ले। और फ़रमाया : اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ۝ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक वोही बख़्शने वाला मेहरबान है। या'नी उस के लिये **ग़फ़ूर** है जो तौबा करे और अपने गुनाहों पर नदामत का इज़्हार करे और उस के लिये **रहीम** है जो बुरे अफ़्आल तर्क कर के नेक आ'माल की तरफ़ राग़िब हो जाए।

हज़रते सय्यिदुना इब्ने सीरीन عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِیْن फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ने इरशाद फ़रमाया : ''कुरआने करीम में कोई आयत (रहमत के ए'तिबार से) मज़्कूरा आयत से बढ़ कर वुस्अत वाली नहीं।'' (الموسوعة لابن ابی الدنیا،کتاب حسن الظن باللّٰه، الحدیث٦٨، ج١، ص٨٤)

हज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते यज़ीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है, मैं ने हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इस आयते मुबारका की तिलावत करते हुवे सुना :

قُلْ یٰعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰۤی اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِیْعًا ؕ (پ٢٤، الزمر:٥٣)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम फ़रमाओ ! ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की अल्लाह की रहमत से ना उम्मीद न हो, बेशक अल्लाह सब गुनाह बख़्श देता है।*

फिर आप صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया और उसे कोई परवाह नहीं (या'नी सब के गुनाह बख़्श दे तो भी उसे कोई परवाह नहीं) ।" (جامع الترمذی،ابواب تفسیر القرآن، باب من سورة الزمر،الحدیث۳۲۳۷ص ۱۹۸۲)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के मुस्ह़फ़ में है : "اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا لِمَنْ يَّشَآءُ" **तर्जमा :** बेशक **अल्लाह** सब गुनाह बख़्श देता है जिस के चाहता है ।" (इस में لِمَنْ يَّشَآءُ का इज़ाफ़ा है) (تفسیر القرطبی،سورة الزمر،تحت الآیۃ۵۳،ج۸،الجزء الخامس عشر،ص۱۹۶)

हज़रते सय्यिदुना अबू कुनूद علیہ رحمۃ اللہ الودود बयान फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ मस्जिद में दाख़िल हुवे तो एक वाइज़ को देखा जो लोगों को वा'ज़ व नसीहत कर रहा था और आग और बेड़ियों का ज़िक्र कर रहा था । आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने उस के पास खड़े हो कर इरशाद फ़रमाया : "ऐ वा'ज़ करने वाले ! लोगों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से क्यूं मायूस करते हो ? फिर येही आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ O (پ۲۴،الزمر:۵۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की **अल्लाह** की रह़मत से ना उम्मीद न हो, बेशक **अल्लाह** सब गुनाह बख़्श देता है, बेशक वोही बख़्शने वाला मेहरबान है ।*

(شعب الایمان للبیهقی ، باب فی الرجا من الله،الحدیث۱۰۵۳،ج۲،ص۲۱)

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : "पहली उम्मतों में एक शख़्स कषरते इबादत से अपने नफ़्स पर सख़्ती करता और लोगों को रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ से मायूस करता । जब उस का इन्तिक़ाल हुवा तो किसी ने ख़्वाब में देखा कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर है और अ़र्ज़ कर रहा है : "ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ मेरे लिये तेरी बारगाह में क्या (अज्र) है ?" तो बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ से जवाब मिला : "आग ।" अ़र्ज़ की : "मेरी इबादत व रियाज़त कहां गई ?" इरशाद फ़रमाया : "तू दुन्या में लोगों को मेरी रह़मत से मायूस करता था, आज मैं तुझे अपनी रह़मत से मायूस कर दूंगा ।" (جامع معمر بن راشد مع مصنف عبدالرزاق،کتاب الجامع ،باب الا قناط ،الحدیث۲۰۷۲۸،ج۱۰،ص۲۶۱)

ऐ मेरे प्यारे इस्लामी भाई ! अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे अपनी बारगाह में मुआ़फ़ी से मायूस करने का इरादा फ़रमा ले तो कौन है जो तेरे गुनाह बख़्शेगा ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ख़ुद इरशाद फ़रमाया :

﴿۲﴾ وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ قف (پ۴،ال عمران:۱۳۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और गुनाह कौन बख़्शे सिवा **अल्लाह** के ।*

और फिर अपने वसीअ़ अ़फ़्वो करम के पेशे नज़र फ़रमाया :

اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ (پ۲۴،الزمر:۵۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक **अल्लाह** सब गुनाह बख़्श देता है ।*

सय्यिदुना वह़शी और इन के दोस्तों का क़बूले इस्लाम :

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْھُما से मरवी है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने वह़शी की त़रफ़ एक क़ासिद भेजा जो उस को इस्लाम की दा'वत दे। जब वह़शी को पैग़ाम मिला तो उस ने अ़र्ज़ की : "ऐ मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) आप कैसे मुझे दा'वते इस्लाम दे रहे हैं ? ह़ालांकि आप तो फ़रमाते है कि "जिस ने किसी जान को क़त्ल किया या शरीक ठहराया या ज़िना किया क़ियामत के दिन उस के लिये अ़ज़ाब दुगना कर दिया जाएगा और वोह हमेशा उसी में रहेगा।" मैं ने तो येह सब काम किये हैं, क्या मेरे लिये कोई रुख़्सत है ?" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई : اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا (پ١٩،الفرقان:٧٠) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मगर जो तौबा करे और ईमान लाए और अच्छा काम करे।"

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ब ज़रीअ़ए क़ासिद येह आयते मुबारका वह़शी और उस के दोस्तों की त़रफ़ भेजी तो उस ने अ़र्ज़ की : "येह शर्त़ तो बहुत सख़्त है, मुमकिन है मैं इस पर अ़मल न कर सकूं, क्या इस के इ़लावा (कोई रुख़्सत) है ?" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई : اِنَّ اللّٰہَ لَا یَغْفِرُ اَنْ یُّشْرَکَ بِہٖ وَیَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِکَ لِمَنْ یَّشَآءُ (پ٥،النسآء:٤٨) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक अल्लाह उसे नहीं बख़्शता कि उस के साथ कुफ़्र किया जाए और कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआ़फ़ फ़रमा देता है।"(1)

येह आयते मुबारका जब वह़शी की जानिब भेजी गई तो उस ने फिर कहा : "अभी येह शुबा बाक़ी है कि मुझे नहीं मा'लूम कि मेरी मग़फ़िरत भी होगी या नहीं ? क्या इस के इ़लावा (कोई रुख़्सत) है ?" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई :

"قُلْ یٰعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓی اَنْفُسِہِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَۃِ اللّٰہِ ؕ اِنَّ اللّٰہَ یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِیْعًا ؕ اِنَّہٗ ھُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ۝"

येह आयत वह़शी और उस के दोस्तों की त़रफ़ भेजी गई तो वह़शी ने कहा : "हां ! येह (हमारी बख़्शिश की गारन्टी) है" चुनान्चे, वोह और उस के दोस्त ह़ाज़िर हुवे और इस्लाम क़बूल कर लिया। सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہ تعالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم क्या येह हुक्म ख़ास इन लोगों के लिये है या तमाम मुसलमानों के लिये ?" इरशाद फ़रमाया : "येह तमाम मुसलमानों के लिये है।" (المعجم الکبیر،الحدیث ١١٤٨٠،ج١١،ص١٥٧)

1....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं "मा'ना येह हैं कि जो कुफ़्र पर मरे उस की बख़्शिश नहीं, उस के लिये हमेशगी का अ़ज़ाब है और जिस ने कुफ़्र न किया हो वोह ख़्वाह कितना ही गुनहगार, मुर्तकिबे कबाइर हो और बे तौबा भी मर जाए तो उस के लिये ख़ुलूद नहीं, इस की मग़फ़िरत अल्लाह की मशिय्यत में है, चाहे मुआ़फ़ फ़रमाए या उस के गुनाहों पर अ़ज़ाब करे। फिर अपनी रह़मत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाए। इस आयत में यहूद को ईमान की तरग़ीब है और इस पर भी दलालत है कि यहूद पर उ़र्फ़े शरअ़ में मुशरिक का इत़्लाक़ दुरुस्त है।"

ऐ मेरे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मोमिन को जहन्नम का अ़ज़ाब देने और हमेशा उस में ठहराने का इरादा फ़रमाया होता तो अपनी मा'रिफ़त व तौह़ीद कभी उस के दिल में न डालता, क्यूंकि वोह खुद इरशाद फ़रमाता है :

﴿۳﴾لَا يَصْلٰىهَآ اِلَّا الْاَشْقَى ۝ الَّذِیْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝ (پ۳۰،اللیل:۱۵،۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *न जाएगा उस में मगर बड़ा बद बख़्त जिस ने झुटलाया और मुंह फेरा।*

ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "हमें बताया गया है कि कुछ लोगों ने ज़मानए जाहिलिय्यत में बहुत गुनाह किये थे। जब इस्लाम आया तो इन को येह ख़ौफ़ था कि इन की तौबा क़ुबूल न होगी। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस आयते मुबारका में इन को मुख़ात़ब फ़रमाया :

قُلْ يٰعِبَادِیَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ (پ۲۴،الزمر:۵۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की अल्लाह की रह़मत से ना उम्मीद न हो, बेशक अल्लाह सब गुनाह बख़्श देता है, बेशक वोही बख़्शने वाला मेहरबान है।*

(تفسیر طبری،سورۃ الزمر،تحت الآیۃ ۵۳،الحدیث ۳۰۱۷۸،ج۱۱،ص۱۵)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : "अगर तुम इतनी ख़त़ाएं करो कि वोह आस्मान तक पहुंच जाएं फिर तौबा करो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़रूर तुम्हारी तौबा क़ुबूल फ़रमाएगा।" (سنن ابن ماجۃ،ابواب الزھد،باب ذکر التوبۃ،الحدیث۴۲۴۸،ص۲۷۳۵)

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "ऐ मेरे बन्दो ! तुम रात दिन गुनाहों में बसर करते हो और मैं गुनाहों को बख़्शता रहता हूं और मुझे कोई परवाह नहीं। पस तुम मुझ से बख़्शिश त़लब करते रहो मैं तुम्हें बख़्शता रहूंगा।" (صحیح مسلم،کتاب البر و الصلۃ،باب تحریم الظلم ،الحدیث۲۵۷۷،ص۱۱۲۹)

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है , हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे रह़मत बुन्याद है : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ रात के वक़्त अपना दस्ते क़ुदरत फैला देता है ताकि दिन में गुनाह करने वालों की तौबा क़ुबूल फ़रमाए और दिन में अपना दस्ते क़ुदरत फैला देता है ताकि रात के वक़्त गुनाह करने वालों की तौबा क़ुबूल फ़रमाए यहां तक कि सूरज मग़रिब से तुलूअ़ हो।" (صحیح مسلم،کتاب التو بۃ،باب قبول التو بۃ......الخ،الحدیث۲۷۵۹،ص۱۱۵۶)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर तुम गुनाह न करो और बख़्शिश का सुवाल न करो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़रूर तुम्हारी जगह ऐसी क़ौम ले आएगा जो गुनाह कर के बख़्शिश का सुवाल करेंगे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की मग़फ़िरत फ़रमा देगा।" (صحیح مسلم ،کتاب التو بہ،باب سقوط الذنوب......الخ،الحدیث۲۷۴۹، ص۱۱۵۴)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, मैं ने नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "ऐ इब्ने आदम ! अगर तेरे गुनाह आस्मान की बुलन्दी तक पहुंच जाएं फिर तू मुझ से मग़्फ़िरत का सुवाल करे तो मैं तेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दूंगा और इस की ज़र्रा बराबर परवाह न करूंगा। ऐ इब्ने आदम ! अगर तू ज़मीन के बराबर ख़ताएं ले कर मेरी बारगाह में हाज़िर हो तो मैं उस के मुताबिक़ तेरी बख़्शिश फ़रमा दूंगा बशर्ते कि तू ने मेरे साथ किसी को शरीक न ठहराया हो।"

(جامع الترمذی، کتاب الدعوات،باب الحدیث القدسی ......الخ، الحدیث ۳۵۴۰،ص۲۰۱۶)

हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीमुश्शान है : "मेरी उम्मत रह़्म की हुई उम्मत है, उस का अ़ज़ाब दुन्या में ही ज़लज़लों और फ़ित्नों के ज़रीए हो जाएगा। जब क़ियामत का दिन होगा तो मेरे हर उम्मती को एक किताबी (या'नी ईसाई या यहूदी) दिया जाएगा और कहा जाएगा कि येह तेरी त़रफ़ से जहन्नम में जाएगा।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الفتن،باب مایرجی فی القتل،الحدیث۴۲۷۸ ص ۱۵۳۴_المسند للامام احمد بن حنبل،حدیث ابی موسی لاشعری،الحدیث۱۹۶۷۸،ج۷ص۱۵۶،بتغیرٍ)

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बरोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ हमारे सामने ख़ुश हो कर तजल्ली फ़रमाएगा और इरशाद फ़रमाएगा : "ख़ुश हो जाओ, ऐ मुसलमानों के गुरौह ! तुम में से हर एक की जगह जहन्नम में यहूदी या नसरानी को डाला जाएगा।"

(احیاء علوم الدین، کتاب ذکرالموت ومابعده، الشطر الثانی ،سعة رحمة اللّٰه علی سبیل التفاؤل بذلك،ج۵،ص۳۱۲)

हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द सा'दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने काइनात की तख़्लीक़ से दो हज़ार साल क़ब्ल उम्मीद के एक काग़ज़ पर एक मुआ़हदा लिखा फिर उस को अ़र्श पर रखा और निदा दी : "ऐ उम्मते मुह़म्मदिय्या ! बेशक मेरी रह़्मत मेरे ग़ज़ब पर सबक़त ले गई, मैं तुम्हारे सुवाल करने से पहले ही तुम्हें अ़त़ा कर दूंगा और मग़्फ़िरत का सुवाल करने से क़ब्ल ही तुम्हें बख़्श दूंगा, तुम में जो मुझ से मिले और येह गवाही देता हो कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) मेरे बन्दे और रसूल हैं तो मैं उसे जन्नत में दाख़िल कर दूंगा।" (فردوس الاخبارللدیلمی،باب الواو،فصل فی تفسیرالقرآن،الحدیث۷۴۰۲،ج۲،ص۴۰۳)

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जब क़ियामत का दिन होगा तो अ़र्श के नीचे से एक मुनादी निदा करेगा : "ऐ उम्मते मुह़म्मदिय्या ! सुन, मेरा जो ह़क़ तेरे ज़िम्मे था वोह मैं ने मुआ़फ़ कर दिया, अब एक दूसरे को मुआ़फ़ कर के मेरी रह़्मत से जन्नत में दाख़िल हो जाओ।" (احیاء علوم الدین، کتاب ذکرالموت ومابعده،الشطر الثانی ،سعة رحمة اللّٰه......الخ،ج۵،ص۳۱۳)

हज़रते सय्यिदुना हसन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोजे़ शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, बिइज़्ने परवर दगार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सो रह़मतें हैं उस ने एक रह़मत अहले दुन्या की त़रफ़ उतारी तो वोह इन्हें इन की मौत तक काफ़ी हो गई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस रह़मत को क़ियामत तक रोके रखेगा फिर क़ियामत के दिन इसे निनानवे (99) रह़मतों में मिला कर अपने औलियाए किराम رَحِمَھُمُ اللہُ السَّلَام और इत़ाअ़त गुज़ारों के लिये सो (100) रह़मतें मुकम्मल फ़रमा देगा।"

(المسند للامام احمدبن حنبل ، مسند ابی هريرة ،الحديث ١٠٦٧٥ ، ج ٣ ، ص ٥٩٤ ،بتغيرٍ)

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवे तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को रोता हुवा देख कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आप क्यूं रो रहे हैं?" तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने जवाब दिया : "मेरे पास जिब्राईल आए और मुझे कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ह़या आती है कि वोह किसी ऐसे शख़्स को अ़ज़ाब दे जो इस्लाम में बुढ्ढा हुवा हो, फिर इस्लाम में बुढ्ढे होने वाले को ह़या क्यूं नहीं आती कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी करता है।" (كشف الخفاء ،حرف الهمزة مع النون ،الحديث ٧٤١ ،ج ١ ،ص ٢١٧ ،مختصرًا)

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन सह्ल رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़्वाब में ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन अकषम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم को देख कर पूछा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया?" तो उन्हों ने जवाब दिया कि मुझे बुला कर इरशाद फ़रमाया : "ऐ बुढ्ढे! मैं ने अ़र्ज़ की : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुअ़म्मर के ह़वाले से, उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ोहरी के ह़वाले से, इन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वा के ह़वाले से और उन्हों ने उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के ह़वाले से येह बात बताई कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बयान फ़रमाया : "ह़ज़रते जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने मुझे बताया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "मुझे ह़या आती है कि मैं किसी सफ़ेद बालों वाले को अ़ज़ाब दूं जो इस्लाम में बुढ्ढा हुवा हो।" और मैं तो बहुत उ़म्र रसीदा हूं।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने सच कहा, मुअ़म्मर ने सच कहा, ज़ोहरी ने सह़ीह़ कहा, उ़र्वा भी सच्चा है, आ़इशा ने भी ठीक कहा, मेरे नबिय्ये करीम ने भी सच फ़रमाया, जिब्राईल ने भी सच बताया और मैं ने भी सच फ़रमाया है। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे दाईं त़रफ़ जन्नत में जाने का हु़क्म फ़रमाया।" (تاريخ بغداد،الرقم ٧٤٨٩ يحيى بن اكثم، ج ١٤، ص ٢٠٦، بدون عائشة رضى الله تعالى عنها۔ كشف الخفاء،حرف الهمزة مع النون،تحت الحديث ٧٤١، ج ١، ص ٢١٧)

हज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अज़मत निशान है : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने ज़मीनो आस्मान की तख़्लीक़ के दिन सो रहमतें पैदा फ़रमाईं। हर रहमत ज़मीनो आस्मान के दरमियान तह दर तह रख दी गई है। इन में से एक रहमत ज़मीन पर नाज़िल हुई। इसी से वालिदा अपनी अवलाद पर, वहशी दरिन्दे और परन्दे एक दूसरे पर मेहरबान होते हैं, यहां तक कि घोड़ा अपना पाउं अपने बच्चे से दूर कर लेता है कि कहीं इसे चोट न लग जाए। जब क़ियामत का दिन होगा तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इस रहमत को दूसरी निनानवे (99) रहमतों में मिला कर सो मुकम्मल फ़रमा देगा और बरोज़े क़ियामत इस से अपने बन्दों पर रहम फ़रमाएगा।" (صحیح مسلم، کتاب التوبۃ،باب فی سعۃ رحمۃ اللہ......الخ، الحدیث۲۷۵۲/۵۳، ص۱۱۵۵)

मेरे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से बढ़ कर कोई रहीमो करीम नहीं। इस ने'मत पर उस का शुक्र अदा करो।

बे अमल लोगों पर भी रहमते ख़ुदावन्दी عَزَّ وَجَلَّ :

जिस हदीषे पाक में क़ियामत और पुल सिरात का बयान है उस के आख़िर में अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ फ़िरिश्तों को हुक्म फ़रमाएगा : "जिस के दिल में एक ज़र्रे के बराबर भी नेकी पाओ उसे जहन्नम से निकाल दो।" फ़िरिश्ते बहुत से लोगों को निकाल कर अर्ज़ करेंगे : "ऐ हमारे रब्ब عَزَّ وَجَلَّ जिन के मुतअ़ल्लिक़ तू ने हुक्म दिया अब उन में से कोई भी बाक़ी न बचा।" तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाएगा :

﴿۴﴾ رَحْمَتِیْ وَسِعَتْ کُلَّ شَیْءٍ ؕ (پ۹، الاعراف: ۱۵۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मेरी रहमत हर चीज़ को घेरे है।

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते थे : "अगर तुम इस हदीषे पाक के मुतअ़ल्लिक़ मेरी तस्दीक़ नहीं करते तो चाहो तो कुरआने पाक की येह आयते मुबारका पढ़ लो :

﴿۵﴾ اِنَّ اللّٰہَ لَا یَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّۃٍ ۚ وَاِنْ تَکُ حَسَنَۃً یُّضٰعِفْہَا وَیُؤْتِ مِنْ لَّدُنْہُ اَجْرًا عَظِیْمًا ○ (پ۵،النسآء:۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह एक ज़र्रा भर ज़ुल्म नहीं फ़रमाता और अगर कोई नेकी हो तो उसे दूनी करता और अपने पास से बड़ा षवाब देता है।

फिर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाएगा : "फ़िरिश्तों ने शफ़ाअ़त कर ली, अम्बिया ने शफ़ाअ़त कर ली, अब सिर्फ़ अरहमर्राहिमीन की ज़ात बाक़ी है।" पस वोह (अपनी शान के मुताबिक़) जहन्नम से एक मुठ्ठी भर कर ऐसे लोगों को निकालेगा जिन का तौहीद पर ईमान के इलावा कोई नेक अ़मल न होगा, उन का जिस्म कोइला बन चुका होगा। अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उन को जन्नत के दरवाज़े पर आबे हयात की नहर में डालेगा तो वोह ऐसे निकलेंगे जैसे सैलाब के कीचड़ से दाना उगता है, वोह मोतियों की सूरत में निकालें जाएंगे उन की गर्दनों में सोने के पट्टे (या हार) होंगे। अहले जन्नत उन को पहचान कर कहेंगे : "येह अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के आज़ाद कर्दा बन्दे हैं, जिन को वोह बिग़ैर किसी

अ़मल और नेकी के जन्नत में दाख़िल करेगा।" उन से कहा जाएगा : "जन्नत में दाख़िल हो जाओ, जो कुछ तुम देखोगे वोह तुम्हारे लिये है।" वोह अ़र्ज़ करेंगे : "ऐ हमारे रब्ब عَزَّوَجَلَّ तू ने हमें वोह कुछ अ़ता किया जो मख़्लूक़ में से किसी को न दिया।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "तुम्हारे लिये मेरे पास इस से भी अफ़्ज़ल चीज़ है।" वोह अ़र्ज़ करेंगे : "इस से अफ़्ज़ल शै कौन सी है ?" तो इरशाद होगा : "मैं तुम से राज़ी हो गया हूं, अब कभी नाराज़ न होऊंगा।"

(صحیح مسلم ،کتاب الایمان،باب معرفة طریق الرؤیة، الحدیث١٨٣، ص ٧١١)

मरवी है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अवलादे आदम में से एक करोड़ दस लाख (1,10,00,000) के ह़क़ में ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाएगा।"

(المعجم الاوسط، الحدیث ٦٨٤٠،ج٥،ص١٣٨،"الف الف"بدله "مائة الف الف")

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : "मेरी शफ़ाअ़त मेरी उम्मत के कबीरा गुनाह वालों के लिये है।" ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "जिन्हों ने कबीरा गुनाहों का इर्तिकाब नहीं किया उन्हें शफ़ाअ़त की क्या ह़ाजत ? या'नी वोह शफ़ाअ़त के मोह़ताज नहीं।"

(جامع الترمذی،ابواب صفةالقیامة،باب منه حدیث شفاعتی لاهل الکبا ئرمن امتی، الحدیث ٢٤٣٦،ص١٨٩٧)

एक रिवायत में है, एक आ'राबी ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मख़्लूक़ का हि़साब कौन लेगा ?" इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह तबारक व तआ़ला।" उस ने अ़र्ज़ की : "क्या वोह ख़ुद लेगा ?" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हां।" तो वोह आ'राबी मुस्कुरा दिया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से मुस्कुराने की वजह पूछी तो उस ने अ़र्ज़ की : "करीम जब किसी पर क़ुदरत पाता है तो मुआ़फ़ कर देता है, जब हि़साब लेता है तो दरगुज़र फ़रमाता है।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "आ'राबी ने सच कहा, जान लो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से बड़ा करीम कोई नहीं, वोह सब करीमों से बढ़ कर करीम है।"

(شعب الایمان للبیهقی،باب فی حشرالناس بعدما......الخ،الحدیث٢٦٢،ج١،ص٢٤٦)

फिर उस आ'राबी ने अ़रबी में चन्द अश्आ़र कहे, जिन का मफ़्हूम कुछ यूं है :

(1)....करीम का ह़क़ जब किसी शख़्स के नज़्दीक मुतअ़य्यन हो जाए तो वोह अपनी इ़ज़्ज़त की वजह से उसे मुआ़फ़ फ़रमा देता है।

(2).....वोह नाफ़रमान से दरगुज़र कर के उस के गुनाह बख़्श देता है हा़लांकि उस का गुनाहगार और मुजरिम होना षाबित है।

मशहूर ह़दीसे पाक है, "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने काइनात की तख़्लीक़ से क़ब्ल येह तै़ कर लिया था कि मेरी रह़मत मेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब होगी।"

(احیاء علوم الدین،کتاب الخوف والرجاء،بیان دواء الرجا......الخ،ج٤،ص١٨٤)

रिवायत में है, ''जब क़ियामत का दिन होगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अ़र्श के नीचे से एक किताब निकालेगा जिस में लिखा होगा, मेरी रह़मत मेरे ग़ज़ब पर सबक़त ले गई और मैं अरह़मर्राह़िमीन (या'नी सब से बढ़ कर रह़म फ़रमाने वाला) हूं फिर वोह अहले जन्नत के बराबर (जहन्नमियों को) दोज़ख़ से निकाल देगा।'' (احیاء علوم الدین،کتاب الذکر والموت ومابعدھا،سعة رحمة الله علی سبیل التفاؤل بذلك،ج٥،ص٣١٢)

मरवी है : ''एक आ'राबी ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को इस आयते मुबारका :

وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا ﴿۲﴾ (پ٤،آل عمران:١٠٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम एक ग़ार दोज़ख़ के कनारे पर थे तो उस ने तुम्हें इस से बचा दिया।*

की तिलावत करते हुवे सुना तो अ़र्ज़ की : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर रह़मान व रह़ीम عَزَّوَجَلَّ उन्हें जहन्नम में गिराने का इरादा फ़रमा लेता तो फिर उन्हें इस में गिरने से न बचाता।'' ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इरशाद फ़रमाया : ''आ'राबी की इस बात को पल्ले बांध लो ह़ालांकि येह फ़क़ीह नहीं।'' (احیاء علوم الدین،کتاب الذکر والموت ومابعدھا،سعة رحمة الله علی سبیل التفاؤل بذلك،ج٥،ص٣١٣)

मन्क़ूल है : ''क़ियामत के दिन जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे की पर्दापोशी चाहेगा और उसे सब के सामने रुस्वा न करने का इरादा फ़रमाएगा तो उस का गुनाहों भरा नामए आ'माल उस के दाएं हाथ में अ़त़ा फ़रमाएगा। वोह बन्दा इस की वजह से ख़ौफ़ ज़दा होगा जो उस के नामए आ'माल में होगा क्यूंकि उसे मा'लूम होगा कि उस के गुनाह बहुत ज़ियादा हैं। चुनान्चे, नामए आ'माल में जहां गुनाह लिखे होंगे वहां वोह आवाज़ आहिस्ता कर लेगा और अपने दिल में कहेगा : ''سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरी तो एक नेकी भी नहीं।'' जब कि लोग कहेंगे : ''سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस बन्दे के नामए आ'माल में तो एक गुनाह भी नहीं।'' जब वोह आहिस्ता आवाज़ में पढ़ कर फ़ारिग़ होगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : ''ऐ मेरे बन्दे ! तेरी नेकियों को मैं ने अपनी मख़्लूक़ पर ज़ाहिर किया और तेरी बुराइयों की दुन्या व आख़िरत में पर्दापोशी फ़रमाई, ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! इस को मेरे अ़फ़्वो करम से जन्नत में ले जाओ।''

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अपनी उम्मत के गुनाहों के मुतअ़ल्लिक़ दुआ़ की और अ़र्ज़ की : ''या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू इन का ह़िसाब मेरे ह़वाले कर दे ताकि इन की बुराइयों पर मेरे इ़लावा कोई और आगाह न हो।'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वह़्य फ़रमाई : ''येह तेरी उम्मत है, मैं इस पर तुझ से ज़ियादा रह़म फ़रमाने वाला हूं, मैं इन का ह़िसाब किसी के ह़वाले नहीं करूंगा ताकि मेरे इ़लावा कोई इन की बुराइयां न देखे।''

(احیاء علوم الدین ، کتاب الخوف والرجاء ، بیان دواء الرجاء......الخ،ج٤،ص١٨١)

हज़रते सय्यिदुना मुआविय्या बिन कुर्रा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊद رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "सूरतुन्निसा की येह चार आयात इस उम्मत के लिये दुन्या व माफ़ीहा (या'नी दुन्या और जो कुछ इस में है) से बेहतर हैं :

﴿٧﴾ اِنَّ اللّٰہَ لَا یَغْفِرُ اَنْ یُّشْرَکَ بِہٖ وَیَغْفِرُ مَادُوْنَ ذٰلِکَ لِمَنْ یَّشَآءُ ج (پ٥،النسآء:٤٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह उसे नहीं बख़्शता कि उस के साथ कुफ़्र किया जाए और कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआफ़ फ़रमा देता है।

﴿٨﴾ وَلَوْ اَنَّھُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَھُمْ جَآءُوْکَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰہَ وَاسْتَغْفَرَ لَھُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰہَ تَوَّابًا رَّحِیْمًا ○ (پ٥،النسآء:٦٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ महबूब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों और फिर अल्लाह से मुआफ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअत फ़रमाए तो ज़रूर अल्लाह को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं।

﴿٩﴾ اِنْ تَجْتَنِبُوْا کَبَآئِرَ مَا تُنْھَوْنَ عَنْہُ نُکَفِّرْ عَنْکُمْ سَیِّاٰتِکُمْ وَنُدْخِلْکُمْ مُّدْخَلًا کَرِیْمًا ○ (پ٥، النسآء:٣١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अगर बचते रहो कबीरा गुनाहों से जिन की तुम्हें मुमानअ़त है तो तुम्हारे और गुनाह हम बख़्श देंगे और तुम्हें इ़ज़्ज़त की जगह दाख़िल करेंगे।

﴿١٠﴾ وَمَنْ یَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ یَظْلِمْ نَفْسَہٗ ثُمَّ یَسْتَغْفِرِ اللّٰہَ یَجِدِ اللّٰہَ غَفُوْرًا رَّحِیْمًا ○ (پ٥،النسآء:١١٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कोई बुराई या अपनी जान पर ज़ुल्म करे फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहे तो अल्लाह को बख़्शने वाला मेहरबान पाएगा।

(شعب الایمان للبیھقی،باب فی معالجۃ کل ذنب بالتوبۃ،الحدیث ٧١٤١،ج٥،ص٤٢٥،بتغیرٍ۔المعجم الکبیر،الحدیث٩٠٦٩،ج٩،ص٢٢٠)

हज़रते सय्यिदुना अबू ग़ालिब علیہ رحمۃ اللہ الغالب फ़रमाते हैं : "मैं अबू उमामा के पास शाम के वक़्त जाया करता था। एक दिन उन के पड़ोस में एक मरीज़ के पास गया तो वोह मरीज़ को झिड़क रहे थे और फ़रमा रहे थे : "अफ़्सोस है तुझ पर, ऐ अपनी जान पर ज़ुल्म करने वाले ! क्या मैं ने तुझे भलाई का हुक्म न दिया और बुराई से न रोका था ? तो वोह नौजवान बोला : "ऐ मेरे मोहतरम ! अगर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ मुझे मेरी मां के सिपुर्द कर दे और मेरा मुआमला उसी के हवाले फ़रमा दे तो मेरी मां मेरे साथ कैसा मुआमला फ़रमाएगी ?" तो उन्हों ने जवाब दिया : "वोह तुझे जन्नत में दाख़िल कर देगी।" तो उस ने अ़र्ज़ की : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ मुझ पर मेरी वालिदा से भी ज़ियादा मेहरबान है।" फिर उस की रूह क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। चुनान्चे, जब उस के चचा ने उस के साथ क़ब्र में उतर कर उसे दफ़्न किया और क़ब्र को बराबर कर दिया तो उस ने घबरा कर चीख़ मारी। मैं ने पूछा : "क्या हुवा ?" तो कहने लगा : "इस की क़ब्र वसीअ़ कर दी गई और नूर से भर दी गई है।" (شعب الایمان للبیھقی،باب فی معالجۃ کل ذنب بالتوبۃ،الحدیث٧١١٥،ج٥،ص٤١٧)

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में क़ैदियों को लाया

गया। इन में एक औ़रत भाग रही थी। उस ने एक क़ैदी बच्चे को उठा कर अपने सीने से लगाया और उसे दूध पिलाने लगी। आप صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इस औ़रत को देख कर बताओ ! क्या येह अपने बच्चे को जहन्नम में डाल देगी ?" अ़र्ज़ की गई : "नहीं, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! कभी नहीं।" तो आप صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ अपने बन्दों पर इस से कहीं ज़ियादा रह़मो करम करता है जितनी येह औ़रत अपने बच्चे पर मेहरबान है।" (صحیح مسلم،کتاب التو بۃ،باب فی سعۃ رحمۃ اللّٰہ......الخ،الحدیث ۲۷۵٤،ص ۱۱۵۵)

ऐ मेरे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ अपने बन्दों पर मां से भी ज़ियादा मेहरबान है तो फिर बन्दा उस की इत़ाअ़त की त़रफ़ आगे क्यूं नहीं बढ़ता और उस की नाफ़रमानी से मुंह क्यूं नहीं मोड़ता और अपने आगे ऐसी चीज़ क्यूं नहीं भेजता जिस का नफ़्अ़ इसी की त़रफ़ लौटेगा। अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

﴿۱۱﴾ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَاللّٰهِ ط (پ۱،البقرہ:۱۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अपनी जानों के लिये जो भलाई आगे भेजोगे उसे अल्लाह के यहां पाओगे।*

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन सुलैम सुवाफ़ फ़रमाते हैं, हम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ के पास उस शाम ह़ाज़िर हुवे जिस शाम उन का इन्तिक़ाल हुवा था। हम ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! आप कैसा मह़सूस कर रहे हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "मैं नहीं जानता कि तुम्हें क्या कहूं, हां ! तुम अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का अ़फ़्वो करम देखते रहोगे जब तक तुम्हारा ह़िसाब नहीं होगा।" हम उन की रूह़ क़ब्ज़ होने तक वहीं उन के पास रहे।"

(الموسوعۃ للامام ابن ابی الدنیا،کتاب حسن الظن باللّٰہ، الحدیث ۸۵، ج۱، ص۹۵)

क़ब्र की तन्हाई और रह़मते ख़ुदावन्दी عَزَّ وَجَلَّ

मन्क़ूल है : अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का लुत़्फ़ो करम बन्दे पर उस वक़्त बहुत ज़ियादा होता है जब उस को क़ब्र में उतारा जाता है और सख़्त मिट्टी उस के नर्म व नाज़ुक रुख़्सार पर रख दी जाती है और उस के क़ुर्ब में रहने वाले, मह़ब्बत करने वाले जब बे वफ़ाई कर जाते हैं। जब मय्यित को अव्वलन तख़्ताए ग़ुस्ल पर रख कर उस का लिबास उतार दिया जाता है तो वोह अपने अह़बाब से मायूस हो कर पुकारता है : "हाए बरबादी व रुस्वाई !" उस की निदा सिवाए अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के कोई नहीं सुनता। अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस का जवाब देते हुवे इरशाद फ़रमाता है : "मेरे बन्दे ! मैं ने दुन्या में तेरी पर्दापोशी की, आख़िरत में भी पर्दापोशी करूंगा।" जब मय्यित को चारपाई पर रख कर घर से सूए क़ब्रिस्तान चल पड़ते हैं तो वोह चिल्लाता है : "हाए तन्हाई !" अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है : "ऐ मेरे बन्दे ! अगर तू आज तन्हा है तो मैं हमेशा तेरे क़रीब हूं। ख़ौफ़ न रख मैं तेरे गुनाह मिटा दूंगा, क़ब्र में तेरी तन्हाई पर रह़म करूंगा, मैं तेरी तन्हाई में तेरा मूनिस हूं।" जब लोग

इस को लह़द में उतार कर उस के नर्म नाज़ुक रुख़्सार को सख़्त मिट्टी पर रख कर पलट जाते हैं तो वोह चीख़ता है : "हाए तन्हाई !" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "ऐ मेरे बन्दे ! क्या तुझे वह़शत होती है जब कि मैं तेरा अनीस हूं, क्या तू अकेले पन की शिकायत करता है जब कि मैं तेरे क़रीब हूं। ऐ मेरे बन्दे ! क्या मैं तेरा रब्ब नहीं हूं ?" अ़र्ज़ करेगा : "क्यूं नहीं। ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "ऐ मेरे बन्दे ! कैसे तू ने उस चीज़ को छोड़ दिया जिस का मैं ने तुझे हुक्म दिया था ? और कैसे उस का मुर्तकिब हुवा जिस से मैं ने तुझे मन्अ़ किया था ? क्या तुझे मा'लूम न था कि तुझे मेरी त़रफ़ पलटना है ? तेरे आ'माल मेरे सामने पेश होंगे ? क्या तू ने मेरे अ़हद को भुला दिया था ? या तू मेरे वा'दे और वईद का मुन्किर था ? अब तेरे दोस्तों ने तुझे तन्हा छोड़ दिया, माल तेरे हाथ से छूट गया, माल ने तेरे मक़सद में तुझे कोई नफ़्अ़ न दिया, न दोस्तों ने तुझे तेरे बुरे आ'माल से बचाया। अब तेरे पास क्या उ़ज़्र है ?"

बन्दा अ़र्ज़ करेगा : "ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मेरा दिल मालो दौलत की मह़ब्बत में गिरिफ़्तार हुवा, इन दोनों ने मुझे गुनाहों पर आमादा किया, अब मैं तेरे जवारे रह़मत में हूं और तेरा इस रात मेहमान हूं तू मुझे अपनी आग से अ़ज़ाब न देना, अगर तू ही मुझ पर रह़म नहीं फ़रमाएगा तो फिर कौन रह़म करेगा ?" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "ऐ मेरे बन्दे ! लोगों ने तुझे छोड़ दिया और अगर वोह तेरे पास रहते तो भी तुझे उन से नफ़्अ़ न होता, उन्हों ने तुझे मेरे दरवाज़े की त़रफ़ मुतवज्जेह कर दिया और मेरे रह़मो करम पर छोड़ कर गए हैं। ऐ मेरे बन्दे ! ठन्डा सांस ले और आंखों को भी ठन्डा कर ले कि तू आज रात मेरा मेहमान है और करीम अपने मेहमान को मह़रूम नहीं छोड़ता। ऐ फ़िरिश्तो ! अह़सन त़रीक़े से इस की मेहमान नवाज़ी करो और इस पर इस के घर वालों और क़राबतदारों से ज़ियादा मेहरबान हो जाओ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, ह़ुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : "अगर तुम्हारी ख़त़ाएं आस्मान तक पहुंच जाएं फिर तुम तौबा करो तो ज़रूर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी तौबा क़बूल फ़रमा लेगा।" (سنن ابن ماجة ، ابواب الزهد ، باب ذكر التوبة ، الحديث٤٢٤٨،ص ٢٧٣٥)

रह़मते इलाही हर गुनहगार व नेकूकार को शामिल है :

मन्क़ूल है, ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपनी मुनाजात में अ़र्ज़ किया : "या रब्ब عَزَّوَجَلَّ ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "लब्बैक या मूसा !" आप عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू तो मालिक है, मेरी किया ह़ैषिय्यत कि तू मुझे लब्बैक कह कर जवाब दे।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे येह पसन्द है कि कोई बन्दा मुझे "या रब्ब" पुकारे तो मैं उसे "लब्बैक" कह कर जवाब दूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام

ने अ़र्ज़ की : "या रब्ब عَزَّوَجَلَّ क्या येह हर मुत़ीअ़ बन्दे के लिये है ?" इरशाद हुवा : "हां ! बल्कि हर गुनहगार बन्दे के लिये भी है।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : "फ़रमा बरदार के लिये तो उस की इत़ाअ़त के सबब है और गुनहगार पर येह करम किस वजह से ?" तो जवाब इरशाद हुवा : "ऐ मूसा ! अगर मैं भलाई करने वाले को उस की भलाई का बदला दूं और बुराई करने वाले पर उस की बुराई की वजह से एह़सान न करूं तो **मेरा जूदो करम कहां जाएगा।**"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पांच पसन्दीदा कलिमात :

मन्कूल है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि फ़ुलां ज़मीन में मेरे एक वली का इन्तिक़ाल हो गया है तुम वहां जा कर उस को ग़ुस्ल व कफ़न दो और उस की नमाज़े जनाज़ा अदा करो और मिट्टी में उस को दफ़्न कर दो कि वोह जन्नत में तुम्हारा पड़ोसी है।" चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तशरीफ़ ले गए। उस को बयाबान में मुर्दा पाया। उस के पास कोई न था और न ही दुन्या में उस की मिल्किय्यत में कोई चीज़ थी। लोग उस की बुराई बयान करते और हर क़िस्म के गुनाह का मुर्तकिब क़रार देते। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ग़ुस्ल व कफ़न दे कर उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और उसे दफ़्न कर दिया। फिर अ़र्ज़ की : "या रब्ब عَزَّوَجَلَّ मैं ने इस मय्यित के मुतअ़ल्लिक़ तेरे हुक्म पर अ़मल किया लेकिन लोग तो इस की बुराई बयान करते हैं, और हर क़िस्म के गुनाह का मुर्तकिब कहते हैं।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : ऐ मूसा मेरे बन्दे सच कहते हैं , लेकीन मैं उन से ज़ियादा वोह कुछ जानता हूं जो वोह नहीं जानते। जब उस की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उस ने पांच कलिमात से मुझ से मुनाजात की, जिस के सबब मैं ने उस की मग़फ़िरत फ़रमा दी। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : "वोह पांच कलिमात कौन से हैं ?" इरशाद हुवा : "ऐ मूसा ! वोह पांच कलिमात येह हैं :

(1).....ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ तू जानता है कि मैं नेकों से मह़ब्बत करता हूं अगर्चे ख़ुद नेक नहीं हूं।

(2).....या रब्ब عَزَّوَجَلَّ तू जानता है कि मैं फ़ासिक़ों से बुग़्ज़ रखता हूं अगर्चे मैं ख़ुद फ़ासिक़ हूं।

(3).....या रब्ब عَزَّوَجَلَّ अगर मुझे मा'लूम हो जाए कि मेरे जन्नत में दाख़िल होने से तेरी मिल्किय्यत में कोई कमी आ जाएगी तो मैं तुझ से जन्नत का सुवाल न करूं।

(4)....या रब्ब عَزَّوَجَلَّ अगर मुझे मा'लूम हो जाए कि मेरे जहन्नम में दाख़िल होने से तेरी मिल्किय्यत में इज़ाफ़ा होगा तो मैं जहन्नम से तेरी पनाह न मांगूं।

(5)....या रब्ब عَزَّوَجَلَّ अगर तू मुझ पर रह़्म न करेगा तो फिर कौन करेगा ?

ऐ मूसा ! मैं ने उस पर रहम किया और क्या मेरे करम के लाइक़ था कि मैं उस को ख़ाइब व ख़ासिर लौटा देता। जब उस ने येह कलिमात कहे तो मैं ने उस से दरगुज़र फ़रमाया और उस की मग़फ़िरत फ़रमा दी और मैं ही बख़्शने वाला, मेहरबान हूं।''

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें दीन की समझ अ़ता फ़रमा, मुश्किल उमूर की तशरीह़ करना सिखा और हमें ज़िल्लत व रुस्वाई से मह़फ़ूज़ फ़रमा, ऐ हमारे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ऐ ह़क़्क़े मुबीन ज़ात ! हमें अपनी रह़मत से अपना कामयाब बन्दा बना दे। या अरह़मर्राह़िमीन ! हम पर अपना ख़ास रह़मो करम फ़रमा। (اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم)

وَصَلَّى اللّٰه عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْن

अल्लाह तआ़ला के नज़दीक नापसन्दीदा लोग

दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन तीन शख़्सों से न कलाम फ़रमाएगा, न उन्हें पाक करेगा और न ही उन पर नज़रे रह़मत फ़रमाएगा बल्कि उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब होगा और वोह तीन येह हैं : बुढ्ढा ज़ानी, झूटा बादशाह, और मुतकब्बिर फ़क़ीर।''

(صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب بيان غلظ تحريم ......الخ،الحديث:٢٩٦،ص٦٩٦)

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन चार लोगों को क़त्अ़न पसन्द नहीं फ़रमाता : (1) कषरत से क़स्में खाने वाला ताजिर (2) मुतकब्बिर फ़क़ीर (3) बूढ़ा ज़ानी और (4) ज़ालिम हुक्मरान।'' (سنن النسائی، كتاب الزكاة،باب الفقير المختال،الحديث:٢٥٧٧،ص٢٢٥٤)

مآخذ و مراجع

نمبر شمار	کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
	قرآن مجید	کلام باری تعالیٰ	ضیاء القرآن پبلیشرز لاہور
1	کنز الایمان فی ترجمۃ القرآن	اعلیٰحضرت الامام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمٰن متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	ضیاء القرآن پبلیشرز
2	خزائن العرفان	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مرادآبادی علیہ رحمۃ اللّٰہ الہادی متوفّٰی۱۳۶۷ھ	ضیاء القرآن پبلیشرز
3	تفسیر قرطبی	الامام محمد بن احمد القرطبی رحمۃ اللّٰہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی ۶۷۱ھ	دارالفکر بیروت
4	تفسیر الکبیر	الامام فخر الدین الرازی علیہ رحمۃ اللّٰہ الباقی متوفّٰی ۶۰۶ھ	دار احیاء التراث بیروت
5	تفسیر روح البیان	الامام الحافظ اسماعیل حقی البروسوی رحمۃ اللّٰہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی۱۱۳۷ھ	کوئٹہ پاکستان
6	تفسیر زاد المسیر لابن الجوزی	الامام ابو الفرج عبدالرحمن بن علی بن الجوزی القرشی علیہ رحمہ متوفّٰی۵۹۷ھ	المکتبۃ الشاملۃ
7	تفسیر البغوی	الامام ابو حمید الحسین البغوی علیہ رحمۃ اللّٰہ القوی متوفّٰی ۵۱۶ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
8	تفیسر ابن کثیر	الامام الحافظ عمادالدین ابن کثیر متوفّٰی۷۷۴ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
9	الد ر المنثور فی التفسیر بالماثور	الامام الحافظ جلال الدین السیوطی الشافعی رحمۃ اللّٰہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دار الفکر بیروت
10	صحیح البخاری	الامام محمد بن اسماعیل البخاری رحمۃ اللّٰہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی۲۵۶ھ	دار السلام ریاض
11	صحیح مسلم	الامام مسلم بن حجاج نیشاپوری رحمۃ اللّٰہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی ۲۶۱ھ	دار السلام ریاض
12	جامع الترمذی	امام محمد بن عیسیٰ الترمذی رحمۃ اللّٰہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی۲۷۹ھ	دارالسلام ریاض
13	سنن ابی داؤد	الامام ابو داؤد سلیمان ابن اشعث رحمۃ اللّٰہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی۲۷۵ھ	دارالسلام ریاض
14	سنن نسائی	الامام احمد بن شعیب النسائی رحمۃ اللّٰہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی۳۰۳ھ	دارالسلام ریاض
15	سنن ابن ماجۃ	الامام محمد بن یزید القزوینی ابن ماجہ رحمۃ اللّٰہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی۲۷۳ھ	دارالسلام ریاض
16	صحیح ابن خزیمہ	الامام ابوبکرمحمد بن اسحاق بن خزیمہ رحمۃ اللّٰہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی ۳۱۱ھ	المکتب الاسلامی بیروت
17	الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	الحافظ محمد بن حبان رحمۃ اللّٰہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی۳۵۴ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
18	کتاب المراسیل لابی داؤد	الامام ابو داؤد سلیمان ابن اشعث رحمۃ اللّٰہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی۲۷۵ھ	مدینۃ الاولیاء ملتان پاکستان
19	مسند ابی یعلی	ابو یعلی احمد الموصلی رحمۃ اللّٰہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی۳۰۷ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
20	مسند للامام احمد بن حنبل	الامام احمد بن حنبل رحمۃ اللّٰہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی ۲۴۱ھ	دارالفکربیروت
21	الزھد للامام احمد بن حنبل	الامام احمد بن حنبل رحمۃ اللّٰہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی ۲۴۱ھ	دار الغد الجدید المنصورۃ
22	البحر الزخار المعروف بمسند البزار	الامام ابو بکر احمد بن عمرو البزاررحمۃ اللّٰہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی ۲۹۲ھ	مکتبۃ العلوم والحکم
			المدینۃ المنورۃ
23	المعجم الکبیر	الحافظ سلیمان بن احمد الطبرانی رحمۃ اللّٰہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی۳۶۰ھ	داراحیاء التراث بیروت
24	موسوعۃ لامام ابن ابی الدنیا	الحافظ ابو بکر عبد اللّٰہ بن محمد بن عبید ابن ابی الدنیا رحمۃ اللّٰہ تعالیٰ علیہ	دارالکتب العلمیۃ
		متوفّٰی ۲۸۱ھ	
25	مکارم اخلاق لابن ابی الدنیا	الحافظ ابو بکر عبد اللّٰہ بن محمد بن عبید ابن ابی الدنیا رحمۃ اللّٰہ تعالیٰ علیہ	دارالکتب العلمیۃ
		متوفّٰی ۲۸۱ھ	
26	المعجم الاوسط	الحافظ سلیمان بن احمد الطبرانی رحمۃ اللّٰہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت

27	السیرۃ النبویۃ لابن کثیر	الامام الحافظ عمادالدین ابن کثیر متوفّٰی ۷۷۴ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
28	السیرۃ النبویۃ لابن ہشام	ابو محمد عبدالملک بن ہشام متوفّٰی ۲۱۳ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
29	کتاب العظمۃ	ابومحمد عبد اللّٰہ بن محمد بن جعفر بن حیان علیہ رحمۃ الرحمٰن متوفّٰی ۳۹۶ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
30	سنن الدارمی	الامام عبد اللّٰہ بن عبدالرحمن رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۲۵۵ھ	باب المدینہ کراچی
31	الاسماء والصفات للبیہقی	الحافظ احمد بن الحسین البیہقی رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	المکتبۃ الشاملۃ
32	المستدرک علی الصحیحین	الامام محمد بن عبد اللّٰہ الحاکم رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۴۰۵ھ	دار المعرفۃ بیروت
33	دلائل النبوۃ للاصبہانی	اسماعیل بن محمد بن الفضل التیمی الاصبہانی علیہ رحمۃ اللّٰہ الوالی متوفّٰی ۵۳۵ھ	المکتبۃ الالفیۃ
34	دلائل النبوۃ للبیہقی	الحافظ احمد بن الحسین البیہقی رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
35	السنن الکبرٰی للنسائی	الامام احمد بن شعیب النسائی رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
36	السنن الکبرٰی للبیہقی	الامام احمد بن الحسین البیہقی رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
37	شعب الایمان للبیہقی	الامام احمد بن الحسین البیہقی رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
38	البدایۃ النہایۃ لابن کثیر	الامام الحافظ عمادالدین ابن کثیر متوفّٰی ۷۷۴ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
39	ترتیب المدارک وتقریب المسالک	عیاض بن موسیٰ المعروف بالقاضی عیاض رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۵۴۴ھ	المکتبۃ الشاملۃ
40	الاحادیث المختارۃ	الشیخ الامام ضیاء الدین ابو عبد اللّٰہ الحنبلی المقدسی رحمہ اللّٰہ متوفّٰی ۳۹۶ھ	دار خضر
41	الثقات لابن حبان	الحافظ محمد بن حبان رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۳۵۴ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
42	مؤطا امام مالک	الامام مالک بن انس رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۱۷۹ھ	دار المعرفۃ بیروت
43	المصنف لابن ابی شیبۃ	الامام عبد اللّٰہ بن محمد بن ابی شیبۃ رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۲۳۵ھ	دار الفکر بیروت
44	الجزء المفقود من الجزء الاول المصنف	الامام عبد الرزاق الصنعانی رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۲۱۱ھ	پاکستان
45	مصنف عبدالرزاق	الامام عبد الرزاق الصنعانی رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۲۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
46	الحدیقۃ الندیۃ شرح الطریقۃ المحمدیۃ	عارف باللّٰہ الامام عبدالغنی النابلسی علیہ الرحمۃ اللّٰہ الغنی متوفّٰی ۱۱۴۳ھ	پشاور پاکستان
47	تاریخ بغداد	الامام ابو بکر احمد بن علی الخطیب البغدادی رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
48	تاریخ الخلفاء	الحافظ الامام جلال الدین السیوطی الشافعی علیہ رحمۃ اللّٰہ القوی متوفّٰی ۹۱۱ھ	باب المدینۃ کراچی پاکستان
49	الکامل فی ضعفاء الرجال	الامام ابو احمد عبد اللّٰہ بن عدی الجرجانی رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۳۶۵ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
50	حلیۃ الاولیاء	الامام الحافظ ابو نعیم الاصفہانی رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
51	فتح الباری شرح صحیح البخاری	الامام الحافظ ابن حجر العسقلانی الشافعی رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
52	اخبار مکۃ للازرقی	محمد بن عبد اللّٰہ بن احمد المکی الازرقی متوفّٰی ۲۴۴ھ	مکتبۃ الشاملۃ
53	اخبار مکۃ للفاکہی	الامام ابو عبد اللّٰہ محمد بن اسحاق الفاکہی متوفّٰی ۲۸۵ھ	باب المدینۃ کراچی پاکستان
54	سیراعلام النبلاء	الامام شمس الدین محمد بن احمد الذہبی رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۷۴۸ھ	دار الفکر بیروت

55	المجروحین لابن حبان	الامام الحافظ محمد بن حبان رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۳۵۴ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
56	الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ	الامام الحافظ احمد بن علی بن حجر العسقلانی رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
		متوفّٰی ۸۵۲ھ	
57	کشف الخفاء ومزیل الالباس	الامام اسمٰعیل بن محمد بن الھادی رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۱۱۶۲ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
58	قوت القلوب	الشیخ ابو طالب محمد بن علی المکی علیہ رحمۃ اللّٰہ القوی متوفّٰی ۳۸۶ھ	مرکز اھل السنۃ برکات رضا
59	اعانۃ الطالبین لشرح قرۃ العین	العلامہ ابو بکر عثمان بن محمد شطا الدمیاطی البکری علیہ رحمۃ اللّٰہ القوی متوفّٰی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
		۱۳۰۰ھ	
60	الاعلام للزرکلی	خیرالدین زرکلی متوفّٰی ۱۳۹۶ھ	دار ابن حزم
61	معجم المؤلفین	عمر رضا کحالۃمتوفّٰی۱۴۰۸ھ	مؤسسۃ الرسالۃ
62	وفیات الاعیان لابن خلکان	ابوالعباس شمس الدین احمد بن محمد بن خلکان علیہ رحمۃ المنان	المکتبۃ الشاملۃ
		متوفّٰی ۶۸۱ھ	
63	تاریخ دمشق لابن عساکر	الامام الحافظ أبی القاسم علی بن الحسن المعروف بابن عساکررحمہ اللّٰہ متوفّٰی	المکتبۃ الشاملۃ
		۵۷۱ھ	
64	العلل المتناھیۃ لابن الجوزی	الامام ابو الفرج عبدالرحمن بن علی بن الجوزی القرشی علیہ رحمۃ اللّٰہ القوی متوفّٰی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
65	الریاض النضرۃ فی مناقب العشرۃ	الامام شیخ ابو جعفر احمد الشھیر الطبری متوفّٰی ۶۹۴ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
66	تحفۃ الاحوذی شرح جامع الترمذی	الامام الحافظ محمد بن عبدالرحمن کفوری متوفّٰی ۱۳۵۳ھ	باب المدینۃ کراچی پاکستان
67	المستطرف فی کل فن مستظرف	شھاب الدین محمد بن ابی احمد ابی الفتح رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۸۵۰ھ	دار الفکربیروت
68	کتاب الجامع	الامام الحافظ معمر بن راشد الازدی علیہ رحمۃ اللّٰہ القوی متوفّٰی ۱۵۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
69	مناقب امام اعظم للکردری	محمد بن محمد معروف بابن البزار الکردری علیہ رحمۃ اللّٰہ القوی متوفّٰی	کوئٹہ پاکستان
		۸۲۷ھ	
70	مناقب امام اعظم للموفق	الموفق بن احمد المکی علیہ رحمۃ اللّٰہ القوی متوفّٰی ۵۶۸ھ	کوئٹہ پاکستان
71	صید الخاطر ابن الجوزی	الامام جمال الدین ابی الفرج بن جوزی علیہ رحمۃ اللّٰہ القوی متو فّٰی ۵۹۷ھ	المکتبۃ الشاملۃ
72	صفۃ الصّفوۃ	الامام جمال الدین ابی الفرج بن جوزی علیہ رحمۃ اللّٰہ القوی متو فّٰی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
73	تذکرۃ الاولیاء	شیخ فرید الدین عطار علیہ رحمۃ اللّٰہ الغفّارمتوفی۶۰۲/۶۱۲ھ	انتشارات گنجینہ
74	تاریخ الاسلام للذھبی	الامام شمس الدین الذھبی علیہ رحمۃ اللّٰہ القوی متوفّٰی ۷۴۸ھ	المکتبۃ الشاملۃ
75	الطبقات الکبریٰ لابن سعد	محمد بن سعد بن منبع الھاشمی البصری علیہ رحمۃ اللّٰہ القوی متوفّٰی ۲۳۰ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
76	الطبقات الکبریٰ للشعرانی	الامام ابوالمواھب عبدالوھاب الشعرانی قدس سرہ النورانی متوفّٰی۹۷۳ھ	دار الفکر بیروت
77	فردوس الاخبارللدیلمی	الحافظ شھرویہ بن شھر دار بن شھرویہ الد یلمی رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ	دار الفکر بیروت
		متوفّٰی ۵۰۹ھ	
78	کنز العمال	العلامۃ علاء الدین علی المتقی الھندی رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی۹۷۵ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
79	الترغیب والترھیب	الامام زکی الدین عبد العظیم المنذری رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۶۵۶ھ	دار الفکربیروت
80	الجامع الصغیر	الامام الحافظ جلال الدین السیوطی الشافعی رحمۃ اللّٰہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
81	فیض القدیر شرح الجامع الصغیر	الامام محمد عبد الرءُوف المناوی رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۱۰۳۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت

82	اتحاف السادة المتقین	العلامة مرتضیٰ الزبیدی رحمة اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۱۲۰۵ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
83	مشکوٰۃ المصابیح	الشیخ محمد بن عبد اللّٰہ الخطیب التبریزی رحمة اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۷۴۱ھ	دارالکتب العلمیة بیروت
84	مرأۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح	حکیم الاُمّت مفتی احمدیارخان علیہ رحمة الرحمن متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنزلاھور
85	کشف الخفاء ومزیل الالباس	الامام اسمٰعیل بن محمد بن الھادی رحمة اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۱۱۶۲ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
86	شرح زرقانی علی المؤطا	محمد بن عبد الباقی بن یوسف الزرقانی علیہ رحمةاللّٰہ الوالی متوفّٰی ۱۱۲۲ھ	دارالاحیاء التراث
87	التمھید لابن عبد البر	الامام یوسف بن عبد اللّٰہ محمد بن عبد البر رحمة اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
88	سنن الدار قطنی	الامام الکبیر علی بن عمرالدار قطنی رحمة اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۳۵۸ھ	ملتان پاکستان
89	الترغیب فی فضائل الاعمال وثواب	ابوحفص عمربن احمد المعروف بابن شاھین رحمة اللہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۳۸۵ھ	المکتبةالشاملة
	ذالک		
90	تعلیق الممجد	مولانا عبد الحی لکھنوی علیہ رحمة اللّٰہ القوی متوفّٰی ۱۳۰۴ھ	باب المدینة کراچی پاکستان
91	الموضوعات	الامام ابو الفرج عبدالرحمن بن علی بن الجوزی القرشی علیہ رحمة القوی متوفّٰی ۵۹۷ھ	دارالفکربیروت
92	الفتوحات المکیة لابن عربی	الامام الشیخ محی الدین ابن عربی علیہ رحمة اللّٰہ القوی متوفّٰی ۶۳۸ھ	دارالفکربیروت
93	غذاء الألباب فی شرح منظومة الآداب	--------------------	المکتبة الشاملة
94	وسائل الوصول الی شمائل الرسول	الامام المحقق المحدث علامہ محمدیوسف بن اسماعیل نبھانی متوفّٰی ۱۳۵۰ھ	دارالمنھاج بیروت
95	الروض الانف	الامام ابوالقاسم عبد الرحمن بن عبداللہ الخثعی السھیلی علیہ رحمة اللّٰہ الولی متوفّٰی ۵۸۱ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
96	احیاء العلوم الدین	الامام ابوحامد محمد بن احمدطوسی الغزالی علیہ رحمة اللّٰہ الوالی متوفّٰی ۵۰۵ھ	دار صادربیروت
97	التذکرة الحمدونیة	محمد بن الحسن بن محمد بن علی بن حمدون البغدادی متوفّٰی ۵۶۲ھ	المکتبة الشاملة
98	نزھة المجالس	العلامةعبد الرحمن بن عبدالسلام الصفوری الشافعی متوفّٰی ۸۹۴ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
99	تنبیہ الغافلین	الامام ابوحامد محمد بن احمدطوسی الغزالی علیہ رحمة اللّٰہ الوالی متوفّٰی ۵۰۵ھ	پشاور پاکستان
100	ربیع الابرار	ابوالقاسم محمد بن عمرو بن احمد الزمخشری متوفّٰی ۵۳۸ھ	المکتبة الشاملة
101	الفتاوٰی الھندیة	ملانظام الدین رحمة اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۱۱۶۱ھ وعلمائے ھند	کوئٹہ پاکستان
102	الفتاوٰی الرضویة	المجددالاعظم الامام احمدرضاخان القادری الحنفی رحمة اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	رضافاؤنڈیشن لاھور
103	بہارِشریعت	صدرالشریعة مفتی محمدامجدعلی الاعظمی رحمة اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنزلاھور
104	ماثبت بالسنة	الشیخ المحقق عبدالحق محدث دھلوی رحمة اللّٰہ تعالٰی علیہ متوفّٰی ۱۰۵۲ھ	باب المدینہ کراچی
105	لسان العرب	العلامة ابوالفضل جمال الدین محمدبن مکرم ابن منظورالافریقی متوفّٰی ۷۱۱ھ	مؤسّسة الأعلمی للمطبوعات بیروت
106	جامع کرامات اولیاء(مترجم)	الامام المحقق المحدث علامہ محمدیوسف بن اسماعیل نبھانی متوفّٰی ۱۳۵۰ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنزلاھور
107	کوثر الخیرات	شیخ الحدیث حضرت علامہ مولانا محمد اشرف سیالوی دامت برکاتھم العالیة	ضیاء القرآن پبلی کیشنزلاھور
108	فیضانِ سنت	امیر اھلِسنت حضرت علّامہ مولانا محمد الیاس عطّار قادری دامت برکاتھم العالیة	مکتبة المدینة باب المدینہ کراچی
109	رفیق الحرمین	امیر اھلِسنت حضرت علّامہ مولانا محمد الیاس عطّار قادری دامت برکاتھم العالیة	مکتبة المدینة باب المدینہ کراچی
110	بُرے خاتمے کے اسباب	امیر اھلِسنت حضرت علّامہ مولانا محمد الیاس عطّار قادری دامت برکاتھم العالیة	مکتبة المدینة باب المدینہ کراچی

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की तरफ़ से पेश कर्दा क़ाबिले मुतालआ कुतुब

﴾शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰى عَلَيْه﴿

(1) करन्सी नोट के शरई अहकामात :
(अल किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम फ़ी क़िरतासिद्दराहिम) (कुल सफ़हात : 199)
(2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़)
(अल याक़ूतितुल वासितह) (कुल सफ़हात : 60)
(3) ईमान की पहचान (हाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़हात : 74)
(4) मआशी तरक़्क़ी का राज़
(हाशिया व तशरीह तदबीरे फ़लाहो नजात व इस्लाह) (कुल सफ़हात : 41)
(5) शरीअत व तरीक़त
(मक़ालुल उ-रफ़ाअ बि इ'ज़ाज़ि शर-इ व उ-लमाअ) (कुल सफ़हात : 57)
(6) षुबूते हिलाल के तरीक़े (तुरुक़ि इस्बाति हिलाल) (कुल सफ़हात : 63)
(7) आ'ला हज़रत से सुवाल जवाब
(इज़्हारिल हक़्क़िल जली) (कुल सफ़हात : 100)
(8) ईदैन में गले मिलना कैसा ?
(विशाहुल जीद फ़ी तहलीलि मुआनि-क़तिल ईद) (कुल सफ़हात : 55)
(9) राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल
(रद्दिल कहूति वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फु-क़राअ) (कुल सफ़हात : 40)
(10) वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़
(अल हुक़ूक़ लि त़र्हिल उक़ूक़) (कुल सफ़हात : 125)
(11) फ़ज़ाइले दुआ (अहसनुल विआअ लि आदाबिद्दुआअ मअ शर्ह ज़ैलुल मुद्दआ लि अहसनिल विआअ)
(कुल सफ़हात : 326)

﴾शाएअ होने वाली अरबी कुतुब﴿

अज़ : इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत
मौलाना अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن

(12) किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़हात : 74)
(13) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़हात : 77)
(14) अल इजाज़ातुल मतीनह (कुल सफ़हात : 62)
(15) इक़ा-मतुल क़ियामह (कुल सफ़हात : 60)
(16) अल फ़ज़्लुल मौहबी (कुल सफ़हात : 46)
(17) अज्लल ए'लाम (कुल सफ़हात : 70)
(18) अज़्ज़म-ज़-मतुल क़-मरिय्यह (कुल सफ़हात : 93)
(19,20,21) जद्दिल मुम्तार अ़ला रद्दिल मुहतार
(अल मुजल्लद अल अव्वल वषानी)(कुल सफ़हात : 713,677,570)

﴾शो'बए इस्लाही कुतुब﴿

(22) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़ह़ात : 160)
(23) इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़ह़ात : 200)
(24) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़ह़ात : 33)
(25) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़ह़ात : 164)
(26) इमतिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़ह़ात : 32)
(27) नमाज़ में लुक़्मा के मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 39)
(28) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़ह़ात : 152)
(29) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़ह़ात : 43)
(30) निसाबे मदनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात : 196)
(31) काम्याब त़ालिबे इ़ल्म कौन ? (कुल सफ़ह़ात : तक़रीबन 63)
(32) फ़ैज़ाने एह़्याउल उ़लूम (कुल सफ़ह़ात : 325)
(33) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़ह़ात : 96)
(34) ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़ह़ात : 50)
(35) तह़क़ीक़ात (कुल सफ़ह़ात : 142)
(36) अर-बई़ने ह़-नफ़िय्यह (कुल सफ़ह़ात : 112)
(37) अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़ह़ात : 24)
(38) त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 30)
(39) तौबा की रिवायात व हि़कायात (कुल सफ़ह़ात : 124)
(40) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़ह़ात : 48)
(41) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हि़स्से) (कुल सफ़ह़ात : 275)
(42) टी वी और मूवी (कुल सफ़ह़ात : 32)
(43 ता 49) फ़तावा अहले सुन्नत (सात हि़स्से)
(50) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़ह़ात : 24)
(51) ग़ौषे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़ालात (कुल सफ़ह़ात :106)
(52) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़ह़ात : 100)
(53) रहनुमाए जदवल बराए मदनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात : 255)
(54) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़ह़ात : 24)
(55) मदनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़ह़ात : 68)
(56) दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़ह़ात : 220)
(57) तर्बिय्यते अवलाद (कुल सफ़ह़ात : 187)
(58) आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 62)
(59) अह़ादीषे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 66)
(60) फ़ैज़ाने चहल अह़ादीष (कुल सफ़ह़ात : 120)
(61) बद गुमानी (कुल सफ़ह़ात : 57)

﴿शो'बए तराजिमे कुतुब﴾

(62) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल
(अल मुत्जरुर्राबेह फ़ी षवाबिल अ़-मलिस्सालेह़) (कुल सफ़्ह़ात : 743)
(63) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन) (कुल सफ़्ह़ात : 36)
(64) हुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़)(कुल सफ़्ह़ात : 74)
(65) राहे इल्म (ता'लीमुल मु-तअ़ल्लिम त़रीक़ुत्तअ़ल्लुम) (कुल सफ़्ह़ात : 102)
(66) बेटे को नसीह़त (अय्युहल वलद)(कुल सफ़्ह़ात : 64)
(67) अद्दा'वति इलल फ़िक्र (कुल सफ़्ह़ात : 148)
(68) आंसूओं का दरिया (बह़्रुद्दुमूअ़) (कुल सफ़्ह़ात : 300)
(69) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (क़ुर्रतुल उ़यून) (कुल सफ़्ह़ात : 136)
(70) उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम) (कुल सफ़्ह़ात : 412)

﴿शो'बए दर्सी कुतुब﴾

(71) ता'रीफ़ाते नह़्विय्यह (कुल सफ़्ह़ात : 45)
(72) किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़्ह़ात : 64)
(73) नुज़्हतुन्नज़र शर्ह़े नख़्बतुल फ़िक्र (कुल सफ़्ह़ात : 175)
(74) अर-बईनिन न-वविय्यह (कुल सफ़्ह़ात : 121)
(75) निसाबुत्तज्वीद (कुल सफ़्ह़ात : 79)
(76) गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़्ह़ात : 180)
(77) वक़ा-यतिन्नह़्व फ़ी शर्ह़े हिदा-यतुन्नह़्व
(78) सर्फ़ बहाई मुतर्जम मअ़ ह़ाशिया सर्फ़ बनाई

﴿शो'बए तख़्रीज﴾

(79) अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन (कुल सफ़्ह़ात : 422)
(80) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़्ह़ात : 679)
(81) बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (ह़िस्सा : 1 से 6)
(82) बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (ह़िस्सा : 7 से 13)
(83) बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम (ह़िस्सा : 14 से 20)
(84) इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़्ह़ात : 170)
(85) आईनए क़ियामत (कुल सफ़्ह़ात : 108)
(86) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़्ह़ात : 59)
(87) सह़ाबए किराम का इश्क़े रसूल (कुल सफ़्ह़ात : 274)

﴿शो'बए अमीरे अहले सुन्नत﴾

(88) सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का पैग़ाम अ़त्तार के नाम (कुल सफ़्ह़ात : 49)
(89) मुक़द्दस तह़रीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़्ह़ात : 48)
(90) इस्लाह़ का राज़ (मदनी चैनल की बहारें ह़िस्सए दुवुम) (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(91) 25 क्रिस्चैन क़ैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़्ह़ात : 33)
(92) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़्ह़ात : 24)

(93) वुज़ू के बारे में वस्वसे और इन का इलाज (कुल सफ़हात : 48)
(94) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ सिवुम (सुन्नते निक़ाह)(कुल सफ़हात : 86)
(95) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़हात : 275)
(96) बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में हिकमत (कुल सफ़हात : 48)
(97) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़हात :48)
(98) पानी के बारे में अहम मा'लूमात (कुल सफ़हात : 48)
(99) गूंगा मुबल्लिग़ (कुल सफ़हात : 55)
(100) दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़हात : 220)
(101) गुम शुदा दुल्हा (कुल सफ़हात : 33)
(102) मैं ने मदनी बुर्क़अ़ क्यूं पहना ? (कुल सफ़हात : 33)
(103) जिन्नों की दुन्या (कुल सफ़हात : 32)
(104) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ दुवुम (कुल सफ़हात : 48)
(105) ग़ाफ़िल दर्ज़ी (कुल सफ़हात : 36)
(106) मुख़ालिफ़त महब्बत में कैसे बदली ? (कुल सफ़हात : 33)
(107) मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़हात : 32)
(108) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ अव्वल (कुल सफ़हात : 49)
(109) कफ़न की सलामती (कुल सफ़हात : 33)
(110) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ चहारुम (कुल सफ़हात : 49)
(111) चल मदीना की सआ़दत मिल गई (कुल सफ़हात : 32)
(112) बद नसीब दुल्हा (कुल सफ़हात : 32)
(113) मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिग़ा कैसे बनी ? (कुल सफ़हात : 32)
(114) बे क़ुसूर की मदद (कुल सफ़हात : 32)
(115) अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़हात : 24)
(116) नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग (कुल सफ़हात : 32)
(117) आंखो का तारा (कुल सफ़हात : 32)
(118) वली से निस्बत की ब-रकत (कुल सफ़हात : 32)
(119) बा बरकत रोटी (कुल सफ़हात : 32)
(120) इग़वा शुदा बच्चों की वापसी (कुल सफ़हात : 32)
(121) मैं नेक कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)
(122) शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)
(123) बद किरदार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
(124) खुश नसीबी की किरनें (कुल सफ़हात : 32)
(125) नाकाम आ़शिक़ (कुल सफ़हात : 32)
(126) नादान आ़शिक़ (कुल सफ़हात : 32)

(127) हैरोइन्ची की तौबा (कुल सफ़्हात : 32)
(128) नौ मुस्लिम की दर्दभरी दास्तान (कुल सफ़्हात : 32)
(129) मदीने का मुसाफ़िर (कुल सफ़्हात : 32)
(130) ख़ौफ़नाक दांतो वाला बच्चा (कुल सफ़्हात : 32)
(131) फ़िल्मी अदा कार की तौबा (कुल सफ़्हात : 32)
(132) सास बहू में सुल्ह का राज़ (कुल सफ़्हात : 32)
(133) क़ब्रिस्तान की चुड़ेल (कुल सफ़्हात : 24)
(134) फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़्हात : 101)
(135) हैरत अंगेज़ हादिषा (कुल सफ़्हात : 32)
(136) मॉडर्न नौ जवान की तौबा (कुल सफ़्हात : 32)
(137) क्रिस्चैन का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़्हात : 32)
(138) सलातो सलाम की आशिक़ा (कुल सफ़्हात : 33)
(139) क्रिस्चैन मुसलमान हो गया (कुल सफ़्हात : 32)
(140) चमकती आंखों वाले बुज़ुर्ग (कुल सफ़्हात : 32)
(141) म्यूज़िकल शो का मतवाला (कुल सफ़्हात : 32)
(142) म्यूज़िकल नौ जवान की तौबा (कुल सफ़्हात : 32)

﴾मजलिसे तराजुमे कुतुब की तरफ़ से पेश कर्दा कुतुब﴿

बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی के इन रसाइल के अ-रबी तराजुम शाएअ हो चुके हैं :

(1) बादशाहों की हड्डियां (इज़ामुल मलूक)
(2) मुर्दे के सदमे (हुमूमिल मय्यित)
(3) ज़ियाए दुरूदो सलाम (ज़ियाइस्सलाति वस्सलाम)
(4) शजरए आलिया क़ादिरिय्या रज़विय्या अत्तारिय्या

﴾इन रसाइल के सिन्धी तराजुम भी शाएअ हो चुके हैं﴿

(1) ज़ियाए दुरूदो सलाम
(मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی)
(2) ग़फ़्लत (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی)
(3) अबू जहल की मौत
(मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی)
(4) एह्तिरामे मुस्लिम
(मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی)
(5) दा'वते इस्लामी का तआरुफ़ ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में ब कषरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है, आशिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते षवाब सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना ''फ़िक्रे मदीना'' के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।'' اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''मदनी इन्आ़मात'' पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''मदनी क़ाफ़िलों'' में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

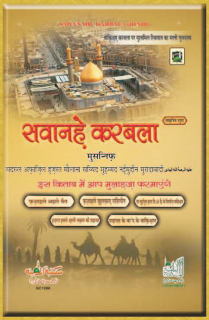

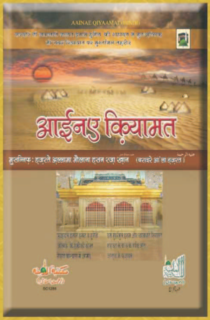

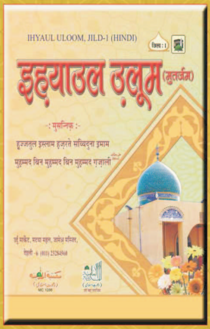

MAKTABATUL MADINA

421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID

DELHI - 110006, PH : 011-23284560

email : maktabadelhi@gmail.com

web : www.dawateislami.net

MC 1286